

6-11-18, 19^{38, 42} दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र
45, 46, 49, 51, 52, 53

दयान दार—१५८

व्यवस्थापक—प्रद्य मन्सास तलवाङ्क.



अग्नि आदि देवता क्यों कहलाते हैं ?

—मनोहर विद्यालयाकर

अग्नि-बना वाता देवता सूर्यो देवता चंद्रमा देवता
वसुको देवता इंद्रा देवतादि वा देवता मरुतो देवता

विष्णुदेवा देवता ब्रह्मदेवित्ववन् द्रो देवता वरुणो देवता यज्ञः १५।०

ऋषि विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

अग्निं विद्वन् देवता—

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

विशेष इस मंत्र का अर्थ है

❖ दीवाली दयानन्द की ❖

लेखिका श्रीमती सुशीलादेवी बिद्यालकृता साहित्यरत्न

एक बार महर्षि अरवि द से किसी ने

ने पूछा—आप दयानन्द जी को स्वामी

दयानन्द या महर्षि दयानन्द क्यों नहीं

कहते ? सिक दयानन्द ही क्यों कहते हैं ?

महर्षि अरवि द ने कहा—महर्षि जो भारत

भूमि पर अनेक हुए हैं और स्वामी भी

जहां जहां दृष्टिगोचर हो जाते हैं पर तु

भारत की भूमि पर दयानन्द जसा आज

तक न कोई हुआ है न होगा । इसलिए

मैं तो उ ह दयानन्द ही कहूंगा । वरतु

दीन दक्षिणो प दया करके ही आनंदित

रहने वाल दयानन्द अपने आप में एक ही

से । दीवाली की रात्रि है । अष्टिदयानन्द का

पूज्य शरीर रोम रोम छासो से भरा पड़ा

है । कोई साधारण व्यक्ति होता ता करा

हते कराहते ही करा रात्रि पर उठा

लेता वर तु वहाहे दयानन्द । उस पीछा

असह्य पीछा में भी प्रभु पर अनिवचन व

बाबा ! मांभो न पुछा स्वामी को अप कहा

है ? उत्तर मिला— ईश्वरदेहा में । सच

मुझ ही दिल दे ता ऐसा परशुमणिार द

किरक का बड़ी की खुशी न मुबारक

पीछा की चंडियों को भी सबका जान द

वातन बना अनोखा ही व्यक्ति द

दयानन्द । स्वामीजी को अपने दद कांतिता

नहीं थी । चिंता थी ता यह कि जाते जाते

भी धरने दिया न प्रकाश की किरण

बिखेर कर जाए । ० गुरुदत्त बिषय की

नास्तिक से । प्रभु बिश्वास के लिए भी ता

प्रभु की कृपा की आवश्यकता है न यवैष

वगततन स वहुप्रभु कृपा का पछोड़

गुरुदत्त बिश्वास की गता पट्ट व ही

स्व की न भवता है कहा

१ सच बिश्वास दयानन्द का बाल दो ।

२ सबा लागे मेरे पीछ जा जाओ ।

३ ० गुरुदत्त बिश्वास की बिषय

सामने की निशा में खड़ा रहने के लिए कथा

५० गुरुदत्त बिश्वास अष्टि दयानन्द के

अन व मन्त्र से अष्टि के साथ तक

वितक क त वे । पर तु उनम प्रभ

विश्वास जाना न हो सका । महर्षि से

कहते स्वामीजी ! आपके कथ अष्टिप है

पर तु क्या कक । मन न बिश्वास नहीं

जमता । अष्टि कहते बहु समय भी आया

जा विश्वास जमगा । अष्टि ने स बा ।

इत प्रभरे दीए का प्रकाशित करता है ।

अष्टि दयानन्द न प्रभुभक्ति क म प्र

प्रा । आ बि वानि दन अविद्विष्टाति

परामुख । धर्मप्रद तन स साधुम । द्या

को अनन्य सुपुत्रा रात्र भी प्रभ प्राण याम

द्वारा अपन स्वास बाहर निकासो को

अपन प्यारे प्रभ की गद म जा पृथ

ईश्वर तरी ईश्वर पूज ही गुरुदत्त दक्ष रहे

यकि यह कीमत भी अकथ गमित है जिसके

सहारे से इस पीछा में भी अष्टि के बेहतर

पर बिध्य तज है । चमक है । मुसकान है ।

माना प्यारे प्रभ के अष्टि का जाहू

हो । अष्टि का भी बाधाधिक बाधित है ।

धररा छोट चुका था । प्रभु बिश्वास

का प्रकाश मन न व्याप्त हो गया था ।

यह भी अष्टि की भी दीवाली रजनी को

तमपति कह जा सट पगति जमन

करती । क्या प्रकाश की किरण पाकर रह

सकता काली घरता ।

१७४६ बरदान पूज बाबरपत्नी

निज द्वाबाद (आश्रम प्रवच)



एकता का बल ।

पञ्चाब के महागुरु रणजीतसिंह अपनी राजधानी लाहौर में थे कि उ ह उनक

गुरुचरो ने खबर दी कि कबीली लुटेरो का एक दल सरहद व चूक के पेशावर के शहर में

पुस गया है और उसे लूट रहा है । महााराजा रणजीतसिंह ने तुर त इलाके के सेनापति

को बुलाया और पूछा— आपने पेशावर नगर की सुरक्षा क्यों नहीं की ? सेनापति

ने कुछ सकोच से कहा— महााराजा हमारे पास शहर वर वबर १५० सैनिक व और

कबीली लुटेरो की सहाय बह हजार भी फलत हम उनका मुकाबला नहीं कर सके ।

महााराजा रणजीतसिंह ने आपन साथ बैसल बह की सिपाही लिए और वहु पेशावर

से लुटेरो की ओर पर टूट पड़े । उन सैनिका की वीरता और तलवार के हमले के

के समूह कबीली लुटेरे टिक नहीं सके वे भागते ही नजर आए । लोटकर महााराजा ने

सेनापति से पूछा— मेरे साथ बितने सिपाही थे और कबीली बिलत सिप ही थे ? सेना

पति ने कहा महााराजा आपके साथ बैसल बह सा सिपाही थे और कबील बह हजार

थे । महााराजा ने कहा— इतने पर भी वे हार गए क्या कारण है ? आपका महापुरी

और रोजबने ने कहा— महााराजा ने कहा— नही मेरे अकेले की बाहुरी से नहीं

पर सबकी मिली हुई बहादुरी के कारण । इसी एकता से एक एक की दुस्मनो के सबा

लाख के बराबर हो गिया ।

—नरेंद्र

५२२ ईश्वरप्रमन सारीबाबरी
दिल्ली ६

जहाज से मृत्यु पर विजय

ओरेम बहादुर के तलाश देवा मृत्युमात्रात ।

इ जोड़ बहादुर देवेस स्वराष्ट्र ।। अथर्व ११५ १६

जहाज और तप से वेदो ने म प्र का हूर किया । इन्द्र न जहाज से हा देवा अवस्था दिव्य शक्ति सम्प न इन्द्रा के लिए तेज एव सुख को धारण किया ।

ओम आर्य सन्देश

सत्य एव न्याय का पक्षधर

पक्ष के हवी अ क मे बहीदा की आयसमाज कारीबाव म प के एक उ नारी आय काव कर्ता ने बही वेदना मे एक प्रश्न उठाया है कि जिस आयसमाज की स्थापना मे बहुमन्यक जनता के सहयोग के साथ प्रत्येक व्यक्ति एव मिश्र का योगदान रहा कावकाव आयसमाज म शिवा यास र वर व उनके नाम का उल्लेख है नाहीर मे आयसमाज की स्थापना एक मुस्लिम मन्त्रन के घर हुई फिर बाव कारण है कि उसी आयसमाज का पाकिस्तान मे पक्ष स्पष्ट न बरित न वही ? उनका तथा उन जैसे बिबा रिका का कथन है कि जिस प्रकार हमारे दान द मरस्सती स एव याव के पक्षधर के जैसे उनके अनुयायी नही रह गए है । महर्षि दयान द सरस्वत मुस्लिम विषय बिब सय माग ना उ होने बहा निराकार मयबा की स्तुति की बहा उनके रीगम्बर एव धर्म प की पुनिकपक आलाचना करते मे कभी सहाज नही किया । धियोसाफिस्ट आगमना के निम्नानो मे अनुकूल प पर तु महर्षि न बिना ओ बह से ब मानव का नाम नहीगम्बर मानने से इ कार कर दिया । महर्षि का भारतीय या बिदेसी मप्रदाया एव मन मना तपो से किसी उ द्रव या अनुयायनही बा इयके बाबजू उ होने मेक धर्मा के मौलिक म मिश्रता की एकाता म उनके साम्प्रदायिक दूषणा की कलाई खालने मे कना मगोषी किया । बहु म विषय के आशुता का उपक अन्ध और बुद्ध त शो का ठीक से ममक कर वेदानुकुल मय वयकाषा क सम्पन्न क लिए निर नर अलत रहन उ इवी कारण इन्की म य एव यावयिका का सभा स्वीकार करत ये ।

आयसमाज नर्या और इतके मध्याक महर्षि का से देशे पिछनी सभा गानवी से देश बिदेशा म गज रहा है । इसके प्राथमिक जीवन मे इसके सदस्यो एव कायकान्वि की स यमिष्टा एव उषय लशयो के लिए साधारण करन की बलि सभी सर हते य । स्वकीयता के सयष का प्रश्न होता था छद्मा समाज म व्य त कुरीतियो बरान्यो की दूर करने एव जनता के दुख से य को दूर कर का जब कभी कोई भी प्रवत उठाया था तब उनमे महर्षि के अनयाया आयव पु मदा आन रहने ये प्राकृतिक सामाजिक एव राष्ट्रीय बिदेशा आन पर ये ममत आवाज क नवा सदावा आये रहने ये राष्ट्रीय चारित्रिक जन जीवन क व अग्रणा प पर तु आज स्थिति इव बेनी नही रह ग । यह ठीक है कि आज मसार पर म ५ ६ हजार से भी अधिक गिनती मे आयसमाज कायत है । इन मन्त्राओ के ज मगत महर्षी शिष्य सस्थाए अज्ञान को दूर करने मे प्रयनशील है इसी तरह हरिजनांदादारी सारी सु नति प्रीतिवाच निवारण म की बही नर्या म बायजन एव महर्षा का कर रही है । इतर लख आज क सारा यह भी हलन्कनीय है कि आज आयसमाजो एव कायमन्त्राओ का मौलिक स्वयं बहूत बिषय हो गया है और बिषय मर मे इत बिचारधारा को धमकीकार करने बाज भी काटि काटि आयबनो की गिनती की जा सकती है पर तु स्के बाबाज अन्की सप्रदाया व समाज म कमी इराई अ बाय एव म बाबा को दूर करन मे कदावा सता उसक समयको का एता जबा प्रचख सामुहिक उ माह देखने को नही मिलता ।

यही कारण है कि आज बहुत सारे शास्त्राय देखने को नही मिलत सिधो मुसलमाना ईसाइयो अथवा हि धर्म क धर्मप गमत दुरास्था एव मुनताओ की ओर इ गित कर सच्चे मानवधम का सेता गजान वाले नही मिलते । ऐसे स्मरण रहना हामो कि महर्षि दयान द सरस्वती का प्रयोगो एव मसबादा से परिपुष्य बरित बिषय हि दु मन्त्राज के म रूप मे आयसमाज का शास्त्र नही किया था । उन्होंने ता भारतीय बिदेशी सभा सन्त्राणो की कुरीतियो एव ब धविष्याओ आत धाराओ का उग्रपुलन कर आज निवारण से परिपुष्य मानव धर्म के प्रतीक वैदिक धर्म का से देश सुनया था । जब बहु निराकार मयबाव का स्वरूप करते ये उसका गुणानुवाद करते य तब ईसाई मुस्लिम और सिख उनके धर्मो मे पड़ुवते ये पर त उनके पड़ुवने पर ये उनके मतो की कुरीतियो और दुरास्थो का परीक्षा करन मे रती मर भी सकोष नही करते ये । यदि महर्षि ५५ वष की आयु मे हो बलि नही बढ जाते तो मन्त्रधम का कि बहु अपनी धारा की स्थिति मे उन प्रवेशो का दुरा कायाका कर जाने बहा आज पाकिस्तान

का बिदेशी निर्माण कर गए हैं । महर्षि निर्माण के बाद की लघा आयसमाज के जीवन की दूषरी घाताब्दी मे शक्ति हत महर्षि के हाग प्रशंति माग का अनुमरण कर बराई को बुआई और ब-आई को अ-आई कहन की उदाहोर सन्वाई का अनंतरण कर सके ता अय व वयो मे महर्षि और आयसमाज का म देव ऐस मन्त्रा म म्या त ह सफा जहू वह आज दिखाई नही दे रहा ।



चिट्ठी पत्री

त्रिभाषा सूत्र के प्रगतगत
हिंदी प्रनियाव विषय

मह जानकर अ य त प्रस नमा हूड कि नि प्रशासन म ११ १० ८४ का हिंदी शिक्षक सम्मेलन म की गई व पणा के अनसार नवी तथा नस्वी बसाका म त्रिभाषा सूत्र के अनगत हिंदी का अनियाव विषय बनान का नियम किया है । इन नियम क लिए दिल्ली प्रशासन व वषाण का राज है और के द मरकार मे आहूत कन ह कि बहु सत नियम को गीन स्वीकार करे और यह निजी क स्मनो म यथाशीघ्र लागू किया जा नके । ग्यारहवीं तथा बारहवीं बसाजा म सभी विषया का माध्यम हिंदी रखा जाना चाहिए । ग्यारहवीं तथा रद्दी बस क विद्यार्थी भारतीय मयि व अ न स स्थित न रहेगा इस उद्देश्य से न्न कलाभा म किसी एव भारनाय म या का बिक व अनियाव किया जाना चाहिए ।

बस्तुतः हिंदी का उनका उचित प्रतिष्ठित स्थान बसत सभी मित्रा सब सभी उन्न शिमा की तथा म्मा पण व नोकरे की परोमाखा म स श्र प को भी अनियावान मानान का जाए ।

डा० इण्णाला प्रधान आयसमाज एव मयज हिंदी उपमिति
अयमनाय मरस्वती बिहार निम्ना १००० ६

पाकिस्तान मे धायदमाज का प्रस्तित्व क्यों नहीं ?

महर्षि न्याय न मरस्वती के अनुयायियो से मैं कहुया वनन समय म आज मगज पर गांधीवादी एव गोवलकरवादी गुन का वषल छाया हुआ है यनि आय मगज के अस्तित्व पर इवकी स्थापना स संकर म के विभाजन का तम और तबन वतमान समय तक बिगत निया जाए ता यह निष्पत्ति निमलता है कि सभी मना मे प्रबल पुष्टाव करत हुए भी आयसमाज का पुषक अतिन व बनाए रखन न मयात उषेता का गई है अ यथा आज भी पाकिस्तान म आयसमाज मयि अतिन व बनाए रखना एव भारत की गम्भीरति पर जोरदार प्रभाव डाल सक्ता था । यह एक मौलिक तथ्य है कि आयसमाज के हार म नव म न के अने है । अय अनयो की पुकार है कि महर्षि न्याय न क सच्चे अनुय यिया का आयसमाज का मयम विगुड स्वरूप म उभारकर बिबन्ध पी बोन म क लिए अपना करर म पना क हित ।

—प्रा धम दधीश आचार कज साधारण माग बरना । ०००१

क्या दय यज्ञ ता युग की कल्पना है ?

भी युधिरत ओ मीमांसा म अन्वी बरिह मर मीमांसा म पठ ८० पर निखा है कि देशाध का अथ आधि वैदिक तथा आध्यात्मिक जनन है पर तु जना तव म तनके साथ वेदाध का एक योग अ न यज्ञ भी ममिगत हो गया । मनुष्या की बुद्धि का हाल देखकर ऋषियो ने त ता युग के आरम्भ मे अ न्नीन न्त पीणमना विविध क्षीत यज्ञा की कल्पना की उनर काल म वेणय के वास्तविक अ न्नीन हो ग । और गीण यानिक अथ हो प्रधाण हा एव मना का यज्ञ कय के माय कोलनिक गठन धन वमकावत म मन्त्रो का ओ विमिशन किया गया बहु इव प्रकार कायनिक है—अन र मचरित विद्याल के लिए रवी गई रायगण की चौपाइया का गमनाला के प्याश का माष गठन धन है । अत यज्ञो के पराव ह ने क कारण यानिक अ न्नीन है । मना का यानिक अर्थ तो ऊपर मे जोडा गया है । वसका वे न काय को मय्य क नही माशान काई सत्य नही है । यवो किशो को आरम्भ त ता युग के आरम्भ स हुआ । अत य माओ वे न मे पन्पात यवो यना का विधान कैसे हा सक्ता है ? अत वे न के निमना म वज हृदि कनु आदि कन्वी का निर्देत है उनमे की त ता युग क आरम्भ किए गग द्रव्य मय यज्ञा का वणन नही है । श्रीमान ओ यदि यज्ञ कय त ता युग के प्याश का कल्पना है तो की स्वाभा दयान अ ओ अनय स याग प्राधान्य स्कार विधि कानि पुस्तका म यज्ञ करने का विधान यथा किया है ? और यज्ञ के लाभ वेद म कया निव है ? तथा याववर निरागमि राज महाराज ऋषि महर्षि स यज्ञ करते व यदि अब भी यज्ञ करते ता सब सूखी हो जाय ।

—आकाश स्वामी रामेश्वरान क गुडुलुज प । डा कयना (हरियाणा)

उत्तराखण्ड के सीमान्त प्रदेश मे राष्ट्र और धर्म-रक्षा अभियान

—स्वामी वेदगुनि परिराजक, अध्यक्ष—बैदिक सन्धान, नजीबाबाद, उ० प्र०

राम कृष्ण और ऋषिमुनियों की सन्तानों । उत्तराखण्ड के सीमान्त प्रदेश यशवाल के पीछी, चमोली, उत्तर काशी और टिहरी जनपदों के निवासियों की अविद्या और निरपत्ता का अशुचित ताम उठाने के लिए ईसाई इन क्षेत्रों में स्कूल कालिओ तथा अस्पतालों का जाल बिछाने के लगे हैं । ईसाईसौहृ के जन्म दिन पर तेल, माहुन बनिमान, कापी पसिली आदि वा मनुष्य वितरण करते हैं । दूसरी ओर उस सत्र के नवग्र हिन्दू तीर्थ शिन्धुओं से भी घृणा करते हैं । यह स्थिति यदि अग्रिम चलती रहा तो वहाँ के अविद्या-अज्ञान दलित हिन्दू ईसाई बन जायेंगे और स्वतन्त्र इन सीमान्त प्रदेश की दशा भी नापा लज्जनी हो जायेगी ।

नागालैण्ड को ईसाई बहुलक्षेत्र बन चुका है वहाँ के ईसाई नरेंद्र दुग नामाओ की भीन ने छापायार युद्ध का प्रशिक्षण देकर सन्ध्यात्रण दिए और अब समग्र क्षेत्र कथ से लोग देवा से निद्राह कर रहे हैं तथा भारत सरकार व देश के लिए घिरा दर्ब बने हुए हैं । यशवाल जैसे सीमांत प्रदेश में जो एकसम धीन की सीमा पर अज्ञान है यदि ईसाइयत बढती है ता चीन यद्धा भी सन्ध्यात्रण बाटने और उन हिन्दू ईसाई बने लोगों को छापायार युद्ध का प्रशिक्षण देने में नही चुकेगा । उस समय की स्थिति की कल्पना करके भी रामाच हो जाता है । इस स्थिति को उत्पन्न होने से रोकन और दश के लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण अवसर न आने देन क लिए बैदिक सन्धान नजीबाबाद ने कृष्णकल्ह हाकर काय प्रारम्भ कर दिया है ।

अविद्या म पठ हुए दलित निधन जना का काय कर्म के साथ-साथ यद्वा क सर्वणों में भी इस बात का प्रचार करना अन्धकारवश है कि यह दलित बालों के साथ मुक्त के पात्र नही, अशुचि उन्ही ऋषि-मुनियों और राम कृष्ण की सन्तानें हैं, जिनके आप हैं । वे भी आप वे और उन की सन्तान होने से व्याप और ये सब आप (हिन्दू) हैं । इस प्रकार के प्रचार से सर्वणों में दलितों के प्रति घृणा की सन्ध्यात्रण होगी । ऐसा होने से ईसाइयत की गति मन्द हो जायेगी और ईसाइयत से सैदाधिक्य टकर लेकर उसका प्रचार रोकना संभवेगा । यदि उन लोगों के साथ सर्वणों का घृणा का व्यवहार बना रहा तो लाख प्रयत्न करके भी ईसाइयत की बाढ़ को रोकना जा सकता । इसी कारण बैदिक सन्धान नजीबाबाद न वहा

के प्रचार के लिए साहित्य वितरण का काय प्रारम्भ किया है । इस समय 'हिन्दू नदी आर्य' पुस्तक पाच सहस्र छपवाकर वितरित कराई जा रही है और अब बर्ष जन्म से नही अशुचि गुण कम से छह सहस्र छप रही हैं । इसे छपवाने के लिए दान प्राप्त हो चुका है । इसके गुरुत्वात्त पत्राचार 'आर्यसमाज बधा है' पुस्तक की भी लागत ४००) रु है । इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द प्रणीत सत्याग्र प्रकाश नामक ग्रन्थ का वितरण भी यशवाल क्षेत्र में कराना है । ४००) संख्या सत्याग्रप्रकाश का वस्तु है । इसके साथ ही ईसाई मत के विषय में भी पुस्तक तैयार की जा रही है उनके प्रकाशन और वितरण के लिए भी दानी सहानुभावों का सहयोग आवश्यक है ।

आर्यों सावधान !

आर्यसमाज की यह निबन्धता रही है कि वह जाति-भ्रमन नही ठोक सको और महर्षि दयानन्द सरस्वती के वाक्यों में 'सत्यमात्र जाति भेद को समाप्त किए बिना बर्ष व्यवस्था का रूप ठोक नही हो सकता ।'

हम दिन-रात यम व्यवस्था के गुण-कर्मनुसार होने के पक्ष में पूजाधार माधम करने और लेखक स्थिति तथा जन्मगत जाति भेद का छुड़न करे किन्तु जातिभेद को तोड़न के लिए तैयार कदापि न हो ता हम ऋषिपर दयानन्द के सिध्य और वेद के भक्त नही अशुचि द्राही प्रमाणित हो जाते हैं ।

बैदिक सन्धान, नजीबाबाद मे मार्च सन, १९६३ मे संकटों आधस्ताओ को अपने जातिभेद निवारक विभाग की प्रचारकनी व विज्ञापन भेजी थी, परन्तु श्वेद यह है कि सी एक भी आर्यसमाज का इस कार्य में सहयोग प्रदान नही हुआ हो तो ही बात नही, अपितु प्रतिज्ञा भी उल्लंघन नही हुई ।

सन्धान न अपनी विज्ञापन समाजों को सहायित भेजी थी कि आपसमाजे अपने अपने क्षेत्र से एक-एक, दो-दो सदस्य भी सन्धान के जातिभेद निवारक विभाग के लिए बना देगो तो सहजो न सही, संकटों सदस्य तो बन ही जायेंगे और इस प्रकार जातिभेद निवारक की ओर हमारा यह एक पग होगा ।

व्यवस्था यह बनाई गई है कि जो व्यक्ति अपने सन्तानों के विवाह जाति-भ्रमन तोड़कर सत्याग पाठे, से सदस्य बने

तथा ऐसे व्यक्ति जिनके सम्पुत्र बन्धों के विवाह का प्रत्यक्ष बोध न हो, इस कार्य में सहायताएं सदस्य बने । सदस्याता कुलक १०० रुपए मासिक अथवा १० रुपए मासिक रखा गया है । साथ ही यह सूचना भी दी गई थी कि कम से कम २५० रुपए का भार देकर बैदिक सन्धान के आजीवन सदस्य बनने वाले सन्ध्यात्रण निवारक विभाग के सदस्य माने जायेंगे । यदि कुछ समाजे ऐसी हो, जो जातिभेद तोड़कर अपनी सन्तानों के विवाह कर सकने का साहस करने वाले तथा धन द्वारा इस कार्य को प्रोत्साहन देने वाले सदस्य भी न के सके तो कम से कम २५० रुपए भेज कर भी समाजें स्वयं तो सदस्य बन सकती हैं, किन्तु ऐसी किसी एक भी समाज न नही किया ।

आर्यजन स्वयं भी तोषे और अपनी समाज के साप्ताहिक और अन्तरय अतिशेखन में भी इस प्रश्न पर विचार करे कि सत्यमात्र परिस्थितियों में, जब इस्लाम और ईसाइयत होने हृष्यने की दुरी धावित के साथ जुटे हुए हैं बिना इस प्रकार के ठोस पग उठाए क्या साप्ताहिक और जातिभेद अतिशेखन और उत्तरे होने वाले पूजाधार माधम होने क्या संभवे ?

जब कही से भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही हुई तब मन को बड़ी उल्लंखनी । हमारे जीवन के कोई बैदिक आधार नही, हमें वेदों का सत्याग्रह करते नही । बैदिक सत्कार और काय पवन-

पद्धति के अनुसार पर्व हृष्यने अपनाए नही तथा जातिभेद ठोक कर हम-सन्तानों के विवाह करने को तैयार नही तो कृष्णतत्वा विश्वमार्गम् के जोष सगाने मात्र से क्या होगा ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि 'आजो सगाने-सगाने राज्य पाट, वन-धाम सब पर तो चौका तथा दिशा और कही जाकर सब भी करीये ।' सोचना पड़ता है कि यदि मुसल बाज होते और हमारी इस चौकोनी पीड़ादायक स्थिति की दैवते तो वह उठते कि स्वाहा-स्वाहा करने करते सम्मता, सङ्कृति, आधार-व्यवहार सब कुछ तो स्वाहा कर देंगे और कही जाकर सब भी करीये ।' क्या आज जन इस दिशा में विचार करने को तैयार हैं ? यदि हा तो दुर्द निश्चय के साथ बाधे बहिए, आपका स्वागत है । यदि नही, तो परिणाम भीमने और दलितार के पृच्छे पर यह शक्ति कराने को तैयार रहिए कि विश्वादा जगन्नाथ ने तो महर्षि दयानन्द के नश्वर शरीर की हत्या की थी, उनके वास्तविक हत्यारे तो उनके मिशन की हत्या करने वाले उनके शिष्य ही हैं, जो भीष तो 'महर्षि दयानन्द की जय, बैदिक धर्म की जय और आर्यसमाज अमर रहे' क सगाने रहे किन्तु बाधरग द्वारा यह सिद्ध करते रहे कि वास्तव में हम न तो महर्षि दयानन्द के मिशन में न वेदमन्त्र और न आपसमाजी ही हैं ।

अन्ध-निष्ठा से आर्यों स्त्री समाज का उत्तम सम्पन्न

१९२०-६५ छुकरार हनुमान रोड, आर्यों स्त्री समाज का वाणिज्योत्सव माया बहिन ईश्वरदेवी की अत्युत्तम मे हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ । यज्ञ, स्तुति प्राशन बहिन कृष्णा जो बहरी से मौज्जब से विधिवत-बड़ी अन्ध निष्ठा से हुई ।

भी कृष्ण रसबन्त की प्रेरणा से पहायत्र की बहिनो ने भजनो से समा ही बाध दिया । रघुमत्त कलत की छायाओ ने रत्नारण कायकर्म प्रस्तुत किया । बाणी की महता' विधेय प्रेरादायक और प्रसाधकानी रही । अन्ध्यापको ने भी भजन सुनाए ।

आर्य कन्धा गुरुकुल राजेन्द्र नगर की छायाओ मे वद पाठ किया । ४० फाति ने आचार्य देवीधर्म' प्रिया पर प्रसाधकानी व्याख्यान दिया । बहिनो ने नायकविहार होकर गुरुकुल की कन्धाओ को पुरस्कार तथा माधुपाय दिया ।

भीमती कृष्णा महेन्द्र को कबिताए हृदयप्रादी रही ।

दिल्ली की प्रमुख स्त्री समाजों की प्रतिनिधि बहिनो ने बहुत योगदान किया । विश्वेयकर, मरिच मान, करोसबाग और राजात्री गावन, दीवानहारा स्वावित ने भजनो और कबिताओ की हो-हो सीनी रही । नृत्यमय प्रदान शांति सचिक ने अपनी विशेक्ष यात्रा के सत्समरग सुनाए ।

भी उधा वासनी और भी ४०० शक्तिप्रभा के व्याख्यान मन्त्रमुग्ध करने वाले थे । विदुषी बहिनो का स्वागत भी बैदिक-साहित्य से किया गया । डा० चन्द्रप्रभा तथा प्रकाश शास्त्री की कबिताए मनमोहक रही ।

—प्रकाश आर्या अविधो

भी सत्यमेव जयतेक द्वारा वेद प्रचार

आयसम ज आमवहियार हरिनगर एल्ल आका मे १५ अक्टूबर से २१ अक्टूबर तक प्रात ६-३० से ८ बजे तक भी सत्यमेव जयतेक न यक्ष का सत्पावन एव वेदोपदेश किया । प्रतिनिध राधि को ८ से १० तक भी की रामनामों के चरित्रों का आश्रय प्रस्तुत किया ।

यात्रा-पर्यटन : वैदिक परम्परा में

ऐतरेय ब्राह्मण की एक कथा के अनुसार जब राजा हरितश्मन् का पुत्र उत्पन्न हुआ और बहुत बड़ा हो गया तब वह जन में पर्यटन के लिए निकल पड़ा। जब उस की यात्रा को देखने की इच्छा होती थी, तब-तब इस उल्लेख करते हैं—पर्यटन करते रहो, पर्यटन करते रहो, 'वरैर्वित चरै-र्वित'। पर्यटन का माहात्म्य बताते हुए कहा गया है कि जो बिचरण करता है उसे ही मनुष्य मिलता है—चरन् न मनुष्य विनति'। दृष्टान्त सूर्य का दिया गया है कि देखो, सूर्य प्राणों में उदय होकर गगन में यात्रा करता हुआ प्रतीती में पहुँच जाता है और फिर प्रतीती से प्राणी में, वह यात्रा करता हुआ यकता गयी है।

सूर्य के सवान हो वेदों के अन्य प्रधान देव भी यात्री हैं। उनके हाथों का भी काष्ठाकारिक बन्धन मिलता है। इन्द्र के हाथ 'हृदि' हैं, अग्नि के 'रोहिण', वायव्य के 'हृति' अश्विपुत्रों के 'परास' पृथिवी के 'बज्र', मरुतो की 'पुष्यरिष्य', उषा की 'अरुणवागो', सविता के 'परास', यह-स्वति के 'विश्वरूप' और वायु के 'निजुत'। वेदों पर्यटन के समान मनुष्य के अपने पैरों, अक्षर, रज, जलधारा, आकाशवायु, धनिमान, विश्वतमान आदि गणित हुए हैं। अत्रेन्दे में 'मृग्यु' की समुद्र यात्रा के प्रथम में उसके असीम मान के दृढ़ भाव तथा अश्विपुत्रों द्वारा उने समुद्र में डूबने से बचाकर मानो द्वारा सकुलन यथास्थान पहुँचा दिए जाने का बर्णन मिलता है। 'मृग्यु' समुद्र तार से भोग्य पदार्थों की अवाप्त-निर्वाप्त करने भाषा व्यापारी हैं।

किसी काल में धार्मिक दृष्टि से भारत में समुद्र यात्रा निषिद्ध ठहरा दी गयी थी, परन्तु वेदों में समुद्र यात्रा के कई प्रयोग आते हैं। अश्विपुत्रों द्वारा 'मृग्यु' के समुद्र उद्धार का वर्णन वैदिक—

तिस्र आश्विनरहाश्विर्ब्रह्म
नामस्य मृग्युम् अहम्पु एतज्जम् ।

समुद्रस्य धनन्ताद्रथ्यं पारे
चित्रि रथो गतपदिभि पदवर्त्तम् ॥

ऋ ११६४

यहा समुद्रयात्री 'मृग्यु' की दृष्टि से बचाने की दृष्टिसे पुनः की कार्यकुशलता गणित की गई है। जो तीन दिन और तीन रात्रि सप्ताहात्त पल्लवे हैं ऐसे यात्री में पडाकर अश्वि मृग्यु को उसके पिता के पास लाते हैं। इस काय में तीन प्रकार के रथों का प्रयोग करते हैं—जलवायन, स्वस्थवायन और आकाशवायन। उन रथों में सैकड़ों कर्मा यन्त्र लगे होते हैं और अग्नि, वायु आदि छह अल्ल भूते होते हैं।

अत्रेन्दे में कहा है कि इन्द्रदेव ध्रुव इन्द्रिय से पर्यटन करने वाले अश्वेक यात्री के रथ की रक्षा करते हैं—एवं त्वमिन्द्रो रश्मिन्म प्राणं तुतावत (ऋ १० १७१ १)। वेद के अनुसार 'वैतल' पर्यटन का भी महत्त्व है। अथर्ववेद में वैतल चलने या दोबने की सामता को बाधनीय बताते हुए लिखा है कि—हे पुत्र, यदि तू घोड़े जैसी तेज बाण से तीन या पांच योजन दौड़ सकता हो और उसी बाण से फिर लोट सकता हो, तभी तूके पुत्रों का पिता बनने का अधिकार है—

यद् भावति यिजोवन,

पञ्चषोऽनयमाश्विनम् ।

सत्त्वत्त पुनरायति,

पुत्राणां नो ब्रतं पिता ॥

अथर्व १ १११ ३

—शं-रामनाथ वेदालकार

वैदिक साहित्य में यात्राएँ कई प्रकार की पाई जाती हैं। यात्रा विजय-यात्रा, संश्लेषिक यात्रा, व्यापार यात्रा, सास्कृतिक यात्रा। राजा भोग चक्रवर्ती सम्राट् बनने के लिए अक्सर भयंकर यात्रा करते थे, जिस में घोड़े की साथ लेकर सैनिक सब्ब पर्यटन करते थे। जो घोड़ा का पकड़ने का साहस करता था, उसके साथ युद्ध होता था और उसे पराजित कर अपने अधीन कर लिया जाता था। यह एक प्रकार की विजय-यात्रा होती थी।

छात्रोपय उपनिषद् में सत्यकाम आबाल को उसके धार्मायं चार सौ गाएँ भोग कर कहते हैं कि इन्हें ले जाओ, इनके साथ साथ परित्रणन करते रहो जहा ये जाएँ, जाने दो। जब चार सौ की हजार हो जाएँ तब लोट कर आना। सत्यकाम पर्यटन करता रहता है और इसी काल में प्रकृति-निराश्रय करते-करते अह्यन, अग्नि, हस और एक अलक्षर पक्षी मरुद् के स्वभाव आदि को देखते-देखते उसे क्रमशः ब्रह्म के एक एक पाद का ज्ञान होकर अनुभाव ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है। यह सत्यकाम का वैशेषिक पर्यटन है।

छात्रोपय उपनिषद् में ही आर्यजित् का पुत्र वसुदेव पर्यटन करता-करता पचास वेश के अश्वियों की सभा में जा पहुँचता है। राजा प्रवाह्यु वैश्वित उससे पांच प्रश्न पूछते हैं। एक का भी उत्तर उसने नहीं बनाता। सब जानचर्चा होती है और पात्रों रहस्यात्मक प्रश्नों का उत्तर उसे मिला जाता है। इसी प्रश्न में प्राचीन धातु, सत्यकाम, इन्द्र मन्त्र, जन और बुद्धि नामक पांच व्यक्तित्व विभिन्न स्थानों से वैशेषिक विचित्र के लिए एकत्र होते हैं

और 'आत्मा कौन है ब्रह्म क्या है?' इन विषयों पर चेतनान्तर प्रगता है।

बृहदारण्यक उपनिषद् में जनक के यज्ञ में कुछ देव और पचाम देव के सभी प्रमुख ब्राह्मण वाकर एकत्र होते हैं। जनक की यह विज्ञाता होती है कि इनमें सबसे बड़ा विद्वान् कौन है। वह एक हजार गाएँ इकट्ठी कर अश्वेक के दोनों ओगों पर दस-दस स्वर्ण-मुद्राएँ बाणकर ब्राह्मणों की सम्मोचन कर कहता है कि आपने जो सबसे बड़ा ब्रह्मविद् हो वह इन गावों को हाक ले जाएँ। किसी को साहस करते न देख याज्ञवल्क्य अपने शिष्य सामथवा को कहते हैं कि इन गावों को हाक कर ले चलो। याज्ञवल्क्य का दुस्साहस समझकर सब कुम्भित हो जाते हैं और उसके ज्ञान की परीक्षा लेने के लिए उससे एक एक करके प्रश्न पूछते हैं। यह भी एक अच्छा शिक्षण-विधिर हो गया है, जिसमें अनेक रहस्यमय प्रश्न सामने बाते हैं और याज्ञवल्क्य उन सबका सही उत्तर देते चलते हैं। इस प्रकार के शिक्षण-विधिर उपनिषद् काल में प्रायः सगते रहते थे।

छात्रोपय में एक पवतक उपलिता यात्रायात्रा की कथा मिलती है, जो प्राचीन पत्नी के साथ हिरण्योपनी के एक प्राम में जा पहुँचा था। वहा उसे निशा में एक हाथीवायन से भूट्टे डूबती ही जाने को लिख पाएँ। उन्हीं से उसने शुभा शान्त की। अगले दिन उसे पता चला कि कोई राजा

यत्र कर रहा है। वह वही जा पहुँचा और यत्र के पुरोहितों को बेलेंज दे देता कि यदि तुम अपने अपने काय के देवता की बिना जाने यज्ञ-काय कर रहे हो तो तुम्हारा मुर्दा मिर जाएगा। धन्य में उस का पापिष्य देखकर राजा ने उसी की मुख्य पुरोहित के रूप में बर लिखा। इस प्रकार उपनिषदों में कोई विद्वान् यज्ञ-तन्त्र अपनी विद्वता का सिद्धा बसाने के लिए भी पर्यटन करते दिखाई देते हैं।

व्यापार यात्राएँ भी होती हैं। इस प्रत्यय में मृग्यु की समुद्र यात्रा का उल्लेख पूरा किया जा चुका है। अथर्ववेद के भाजिष्य सूक्त में भाषा पृथिवी के मध्य में विद्यमान भाषाया मार्गों द्वारा बयन है—

ये पन्नामो बहो देवयाना
अन्तरा धावापृथिवी सचरन्ति ।
ते मा नुषन्ता पयसा भूतेन
यस्य कौलस्य भाषायाहाराणि ॥

अथर्व १ ११ २

अपनी वस्तुवृत्ति के प्रकार के निमित्त साप्ताहिक यात्राओं का संकेत भी वेदों में मिलता है। इन यात्राओं द्वारा हम अपनी वस्तुवृत्ति को विवर में रूपा कर देते हैं—सा सप्तवृत्ति प्रथमा विषयवारा (यजु० ७ १४)। प्राचीन आर्यों लोग इत वैदिक सन्देश का अनुकरण करते अमेरिका, चीन, जापान, मुगला आदि में अपनी सप्तवृत्ति का प्रचार करते रहे हैं। विभिन्न देशों की चित्रकला, मूर्ति, प्राचीन सिक्कों आदि से ये तथ्य प्रमाणित होते हैं।

१११६ कृष्णभाग पतञ्जल (नैनीताल)

एक की महत्ता

ले० स्वामी स्वर्णपानम्, धर्मिष्ठाना वेदप्रचार वि, दि आ प्र सभ

एक की श्रेष्ठ को व्याप्त, सकल प्रपञ्च विचार ।

सर्वोत्तम प्रिय नाम यह, मुमुरो बारम्बार ॥

एक रहे है खिलाड़ी, एक वेद से लेव ।

एक नरक की चूक से, जो जात है फल ।

एक दो गायी रेल में, छिजे रहे अनेक ।

ले जाता है लीचकर, सबको इनत एक ॥

एक मृग आकाश में, देशा है प्रकाश ।

एक सत्य के वचन का, करे सभी निश्वास ॥

एक ही मना सत्य है, कुश की राखे लाखी ।

एक ही युद्ध विचार से, सफल होय सब काक ॥

एक भृगिना चन्द्र से, जितने चाहती रात ।

एक इहल के साथ में, घोषा देय बारात ॥

एक बकेले ने किया, वेदों का प्रचार ।

दयावान् अष्टिराय का, जाने सब सत्तार ॥

जाना सबको एक दिन, छोड़ जगत जजाल ।

सकसे किर मरता रहा, एक काम विकरास ॥

एक त्रत धारण कर, जो स्त्वस्व का लाल ।

एक ईश की धारण यह, पावो परमानन्द ॥



चण्डीगढ़ का प्रश्न अबोहर-फाजिल्का से जुड़ा

प्रधानमन्त्री का कथन चण्डीगढ़ पंजाब का ही है, अर्द्ध-सत्य है—प्रो० खेरसिंह

सप्ताचार पत्रों में प्रकाशित प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के उस वक्तव्य पर जिसमें उन्होंने कहा है कि 'चण्डीगढ़ तो पंजाब का ही है' पर अपनी प्रतिक्रिया करते हुए हरयाणा राजा बाहिरि के अध्यक्ष प्रो० खेरसिंह ने प्रधानमन्त्री के कथन को खर्द मर्या कहा है। उन्होंने स्मरण करवाया है कि प्रधानमन्त्री ने चण्डीगढ़ के बन्दे अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने का एवज दिया था। अतः चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जाता है। अबोहर फाजिल्का पर हरयाणा का पूरा अधिकार है। उन्होंने स्पष्ट किया कि साहू कमीशन के प्रतिवेदन के अनुसार चण्डीगढ़ को हिन्दी भाषी क्षेत्र मानकर हरयाणा में शामिल करने का निर्णय था, परन्तु प्रधानमन्त्री ने बकाली नेता सप्त फनेहमिह को जता बचाने के लिए हो पाहू कमीशन के निषेध को बदलकर चण्डीगढ़ पंजाब को जता बकाली-फाजिल्का हरयाणा को देने का एवज दिया था।

प्रो० खेरसिंह ने अपने वक्तव्य में प्रधानमन्त्री को सुझाव दिया है कि चण्डीगढ़ पंजाब को देने से पूर्व अबोहर फाजिल्का हरयाणा को लौटा जाए। अन्यथा हरयाणा की जनता इस अन्याय को सहन नहीं करेगी।

बालावास में शराब का ठेका बन्द होने पर आर्य विजय-महोत्सव

आर्यमाज के कार्यकर्ताओं की ओर से शाम बालावास जिला हिसार में १४ अक्टूबर से शराब के ठेके पर धरना आरम्भ किया गया। यह धरना निरन्तर ६ मास तक जारी रहा और धरना स्थल पर प्रतिदिन यज्ञ, सस्त्र तथा शराब के विरोध प्रचार किया गया। इस प्रकार शराब की बिनी बन्द हो गई। हरयाणा के इतिहास में यह हम प्रथम का एक प्रथम सशस्त्र धरना है।

अन्ततः जनसंघ के सामने शराब के ठेकेदार तथा सरकार ने ८ अक्टूबर को इन यात्रा का ठेका बन्द कर दिया। इसी उपलक्ष्य में बालावास में १४ अक्टूबर को आर्य विजय महोत्सव बुधवार से मनाया गया। इस अवसर पर हाथी, साबवा, कबारी, मुजादपुर, उमरा, सुलतानपुर, धनाना, भोजपुर, गारणपुर, कला, गुरा, नवा, दुपेडा, सोमी, मुकलान, भीरनवा, कार्यनगर, दोराना, मानसा, लोथान, राहुपुर, सागा, हिसार, दिल्ली, राहुक, मिचानी, निचानी, साक बादि स्थानों से सारी सख्या में नर-नारी उपस्थित हुए।

आर्यसमाज निर्माण विहार नई दिल्ली का बायिकोत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार (बसुना पार्क) नई दिल्ली का बायिकोत्सव १० अक्टूबर के २१ अक्टूबर, १९८४ तक सेन्ट्रल का निर्माण विहार में बने सभासोह पुष्प मनाया गया। १८ से २० अक्टूबर तक प्रातः ५ बजे से सायंक ५ बजे तक बड़ा प्रमाणिक मेघावी, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय सिराया (हस्ताबाद) थे। रात्रि को भी मेघावी की प्रशस्तिवाली प्रवचन होते रहे।

२१ अक्टूबर को प्रातः १० बजे सभ की पुर्णहति हुई जिसमें श्री विद्याप्रकाश सेठी, श्री सूर्यदेव, प्रधान दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा, श्री कुन्दलाल भाटिया, सनातन धर्म मन्त्री (श्रीति विहार वाले) ने भाग लिया। १० बजे से १ बजे तक राष्ट्रीय एकता सम्मेलन ला रामगोपाल सावधाने, प्रधान सार्वदेविक सभा को अध्यक्षता से बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें श्री रामचन्द्र विकल सदस्य राज्यसभा, बाबाय हरिदेव ब० ० विद्यामित्र मेघावी व अन्य विद्वानों ने अपने विचार रखे। अन्त में श्री विद्या-प्रकाश सेठी के कर कर्मनो द्वारा सत्याग्रहका परोक्षाओं ने उत्तीर्ण बन्धों को प्रयाण-पत्र देते गए।

आर्यसमाज जिनय नगर बाई ब्लाक सरोजिनी नगर

नई दिल्ली के तत्वावधान में वेद प्रवचन सरोजिनी माफिद पाक (पंजाब नेगल बँक के सामने) सोमवार ५ नवम्बर १९८४ से १० नवम्बर १९८४ तक रात्रि ७.३० से ९ बजे तक आर्याय पुस्तोत्सव जी वेदका किया करने। श्री सूर्यदेव स्नातक (रेडियो सिरार) के मनोहर मञ्चन होते।

नवयुवकों को प्रोत्साहन दीजिए

आर्यसमाज एक पवित्र धार्मिक सन्स्था है, यह एक शान्तिकारी आन्दोलन है। धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक उन्नति के लिए आवश्यक आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। वेद ईश्वर की कल्पना बाणी है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और कुतना सुनाना सभी भाषाओं का परम कर्तव्य है। वेद और मनुस्मृति के आधार पर सही विद्यादी दयानन्द ने 'सत्याग्रहप्रकाश' जैसे अमूल्य ग्रन्थ को लिख कर रास्ते से भटके लोगों को नई दिशा दी। वेद को छोड़कर सत्याग्रहप्रकाश जैसा अन्य ग्रन्थ नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य का स्वयं भी अध्ययन करें और दूसरों को भी स्वाध्याय करने को प्रेरणा दें। आज की युवा पीढ़ी आर्यसमाज से विमुख होती जा रही है। सभी पुराने आर्यसमाजियों को नव-युवकों को प्रोत्साहन देना चाहिए उन्हें आर्यसमाज में आन आने का अवसर देना चाहिए अपनी धर्मपत्नी, लड़के, लड़कियों व परिवार के अन्य सदस्यों को आर्यसमाज में लाना चाहिए जिससे वे आर्यसमाज के कार्यक्रमों में रुचि लें।

—उत्पलकर सात भाग १०० डाकडिपो बोर्ड कलानी, मिचानी (हरियाणा)

आर्यसमाज महासम्मेलन ११ नवम्बर को होगा

आर्यसमाज (बनारसली) गवर्नर माग में ६० से बायिकोत्सव पर ११ नवम्बर को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक आयुधवृक्ष परिरक्ष के तत्वावधान में आयुधवृक्ष महासम्मेलन किया जाएगा। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री आर्यनरेश होने और अध्यक्षराष्ट्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री विद्याप्रकाश सेठी करेंगे। सम्मेलन का उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महासमर्थी डा० धर्मपाल ब्राह्म करेंगे। मुख्य अतिथि आर्यसमाज पश्चिम बिहार के प्रधान श्री हीरालाल भावसा होने। प्रो० सारस्वत मोहन महीवी डी ए बी कालेज अबोहर, प्रो० वेदमुन वैदालभाडी डी ए बी कालेज करनाल बादि के भाषण होने और आयुधवृक्ष आनन, पंच बैठक, लाठी तुलधार, जूरी-कराटे बालिग के प्रदर्शन करेंगे।

आर्यसमाज गोविन्दपुरी का बायिकोत्सव

आर्यसमाज गोविन्दपुरी (कालका की) नई दिल्ली-१६ का ११ बायिकोत्सव २५ से २८ अक्टूबर तक मनाया गया। उसमें स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मात्म में यज्ञ हुआ। रात्रि का स्वामी दीक्षानन्द होने और कथा हुई। २६ अक्टूबर के दिन आर्य महिला सम्मेलन किया गया। २८ अक्टूबर को आर्य सम्मेलन में स्वामी दीक्षानन्द जी एवं प विद्यकुमार शास्त्री के भाषण हुए। श्रुति सत्र आर्य ली समाज के सहयोग से किया गया।

दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

दंत मंजन
लोग युक्त

मन्मोही की सुजन

23 जडी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

दाने से बचने के लिए

अब नये पैकिंग में उपलब्ध

सुह की दुर्लभ

उठा बाईं घाती लगना

सात का दर्द

महाशिवरात्री की हट्टी (प्रा०) लि०

9/44 इण्डियन एरिया कीर्ति नगर - नई दिल्ली 15 फोन 536609, 537987 537341

गुरुकुल शुक्रताला का वार्षिकोत्सव

नवप्रचाराध्य बसो की विशेष व्यवस्था

वैदिक योग धर्म गुरुकुल शुक्रताला का बीसवा वार्षिकोत्सव ५ से ८ नवम्बर तक हो रहा है। इस अवसर पर नव प्रचारण महासभा भी हो रहा। जिसकी पूर्णाहुति ८ नवम्बर को होगी। ५ नवम्बर को योग साधना विधिर आवाजित होगा। उत्सव पर बह्मचारि योगासन आश्रम ल ठी सरिया माहना जकोर तोहरे काच गीतन आदि के कार्यक्रम प्रदर्शित करे।

उत्सव का आयोजन कार्तिक पूर्णिमा क अवसर पर किया जा रहा है जब बगाला के लिए लाहान नर नारी बगाल तट पर बसे शकनाल आत है। बायसमाज का स देश प्रचारित प्रचारित करने के लिए यह बगाला अवसर है दि ली बाय प्रतिनिधि सभा की आर से गुरुकुल जाने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। ७ नवम्बर का रात ७ बजे आश्रममात्र करील बाग से बग बलली और बायसी ८ नवम्बर को दोपहर २ बजे होगी। बस दिल्ली साय ५ बजे पहुँचेंगी। इस से अधिक सवारियां होने पर उ हे सम्भ विषय सवाज से किया जाएगा। प्रति भाषित बसो का किराया ३२ है निवास और भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई है। यह गुरुकुल दि ली से ८० मील दूर मुम्बई नगर के पास है जो सञ्जन अनी काग स जाना चाह जा सकते हैं। इस अवसर पर गिनी आय प्रतिनिधि सभा की ओर से उपदेशक प्रचारक और प्रचार वाहन के बने की व्यवस्था की गई है। लोको का बारक्षण दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा कार्यालय (३१०१४० फोन) बा आयममात्र करीलबाग ५६४५८ पर ५ नवम्बर तक कराया सकते हैं। बग व्यवस्था के सवाज की रामलाल मलिक है।

मस्जिद मोठ क्षेत्र में प्राम प्रचार

मस्जिद मोठ क्षेत्र में गिनी बाय प्रतिनिधि सभा और दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के संयुक्त उत्सवाधान मा दि० २७ १० ८४ चौथी मज्दैन पटवारी की व्यवस्था में बाय प्रचार क स सम्पन्न हुआ थी ईश्वरचंद मारल इस अवसर पर मुख्य बलिधि थे। सभा के मनोपेक्षाकरी चुनौतीबास और श्री वेदव्यास जी ने सु दर उप देश किया। सभा की प्रचार वाहन भी वहा पर मई जियमे कसेट और साउन्डलीकर बादि गया है।

स्मरण रखें कि विसम्बर के प्रतिम सप्ताह में दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के उत्सवाधान में ज प्रीय महर्षि निधिप क्षान्दी मनाई जाएगी। अपना सक्रिय सहयोग करें।

सोबान में शुद्धि सत्कार

हिंदू धर्म से बिहड़कर मस्जिद सम्प्रदाय मा गए हुए धाम तुमलीपुर पो० पचकड़ा जिला कैबाबाद निवासी दा राजपुत महानुभाबा का उन की हन्डा तुवार सोबान बायसमाज प्राण मे बाय सख्यो एव बघ प्रतिष्ठित सन्तो की उपस्थिति में ता० १६ ५ ८४ को शुद्धकर पुन वरिध धर्म मे सम्मिलित किया गया तथा उक्त शुद्ध किए गए शाकीर हसनबा का श्री शकपालसिंह तथा मुहम्मद मुस्लिमना का शिवपालसिंह नामकरण किया गया।

सोबान बायसमाज प्राण मे ता० २२ २ और २४ सितम्बर ८४ को वेद कथा एव वेद प्रचार काय सम्पन्न हुआ।

करनाल में श्री देवीदास

बाय का प्रतिनिधन

करनाल बाय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उत्सवाधान में बायो जित महर्षि दयानन्द बलिदान सप्ताह सवारोह के अवसर में विम्प्यात महिला उद्धारक बायसमाजी नेता श्री देवीदास बाय (काकपुर) का नागरिक अभिन दन किया गया। अभिनन्दन पत्र में हजारो पत्रित क बायो व महिलाओं को पुष्पो से सुक कराने विधियों को हिंदू धर्म शासित करने तथा अन्य समाज सुधार के कार्यों की प्रेरित प्रेरणा की गई।

शत शत प्रणाम :-

(शरर एम ए)

बातुडू हिमालय श जू दुल्य उज्ज्वल महान

सम्पत्ति पर पावन चरित्र तथा समान।

कोकहाय सत्कार गिनी बीजन जन्य पाषण्ड दम्भ के लिए तब विहाह रूप को दया अहिंसा स य माय के चम का—आ अबला दीन भ्रमण दलित के की कार

को पयोदधि से शात बिजिया से मिले

को प्रखर तेज से सूप व दमा से शीतल

निर्भीक तपस्वि पवित्र ट कौन न धारि—अ बाय ध्यधिर दय न न को श्मृति र

को जगद्गुरु निज भीजन अप्रति करन बाज

विष दो पी कर पी पीदा हरने वाले

ओ तेजस्वि आ का तवर्ण जा स यकाम

गुगुपुस हमार्य धम धम सब तमका प्रथम।

स्वराज्य सन्त्र के उदगाता महर्षि दयानन्द

४ नवम्बर रविवर रात्रि ८ १५ पर बाकागुव पी व दि ला ए क इ स प्रा० जयदेव बाय की एक व ना प्र प्ररित होगा जिसका विषय है—स्वराज्य स म न क प्रथम उदगाता—महर्षि दयानन्द।

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मों पायक महेश्वर कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या—यज्ञ शान्तिप्रकरण स्वतंत्रवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोंपदेशकों—

सत्यपाल पथिक ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयूष सोहनलाल पथिक शिवराजवर्ती जी के सर्वोत्तम भजना व केसम्प तथा प ब्रह्मदेव विद्यालंकार के भक्तो के सप्ताह।

आय समाज के आय भी बात न कैसेटोंक के सजीवक क लिए लिए



कन्सोर्टीम इलेक्ट्रोनिक्स (डीपब्लू) प्रा लि
14 मस्जिद 11 फेस 11 अशाह विहार दहली 5
फोन 118326 744170 टेलेस 31-46 3 AKC IN

— प्राप्ति स्थान —

यह कैसेट लिस्सी बाय प्रतिनिधि सभा

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली पर भी मिलते हैं।

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Grover's

Paris Beauty

पैरिस ब्यूटी

शान्ति
सन्स

ब्रा.पैन्टी.बनियान अन्डरवियर व बेबीपैन्टी आदि

पैरिस ब्यूटीसेल्स कारपोरेशन

2665 ए/2 बीकन पूरा अजमल एनारोह
कठौल बाग नई दिल्ली ११०००५ ४
दूरभाष 569224 574120 582036

नागालैण्ड में बेध प्रचार कार्यक्रम

दिल्ली आर प्रतिनिधि सभा के सचनोपदेशक श्री बेध यास बाय ने ८ अक्टूबर म २० अक्टूबर तक भारत के पूर्वोत्तर अन्तर्ग में अवस्थित नागालैण्ड की यात्रा की। इस यात्रा म स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती श्री पन्थीराज मास्त्री कापाम्पल श्री वेदप्रकाश भेट्टा और श्री तनेजा भी गए थे।

दीमापुर में १२ अक्टूबर से १८ अक्टूबर तक दयानन्द सेवाश्रम के विद्यालय में स्वामी दीक्षानन्द जी ने महायज्ञ कराया। रात्रि को बेधोपदेश एवं सचनोपदेश का आकाशवाणी कार्यक्रम हुआ जिसमें स्थानीय जनता ने उत्साह से भाग लिया। एक विद्यार्थी कार्यक्रम म १४ अक्टूबर के दिन साप्ताहिक सभा के प्रधान श्री राममोपाल खालसावे तथा सभामंत्री श्री आम्प्रकाश त्यागी ने जनता का उद्बोधन किया।

बसहटा पर्व और राखण पर्व—

आवसन्धे के अक्टूबर के एक में श्री कृष्णदास का सेवा राम वादरभीय ही नहीं अनुकरणीय भी हैं पढा। लखक की मायनाओ से सहस्रत होना आवश्यक है किन्तु ऐतिहासिक तथ्य यह है कि राम ने राखण का पर्व आचरित में नहीं। अतः पर्व में किया या जमा कि बाल्मीकि रामायण से विरहित होता है। वस्तुतः यह पर्व बिजयदशमी का है जो शास्त्रमय में स्वीकृत विजय यात्राओं तथा अस्त्र शस्त्रों के प्रदशन से सम्बद्ध है। इस विषय म मैं अधिक जानकारी के लिए महात्मा अमर स्वामी रचित पुस्तक या राखण विजयदशमी का मारा गया था? पढ़ने की सत्सुति करता हूँ।

डा० भवानीलाल भारतीय बच्चोंगड

मस्जिद मोठ में शराम प्रचार कार्यक्रम

७ अक्टूबर को ॥ से ६ बजे तक चौधरी भद्रसेन पटवारी की अध्यक्षता में मस्जिद मोठ में प्रचार मण्डल के त्रि-वाचक म. महिला मण्डल आर जनरल स्टोर मस्जिद मोठ के समग्र शराम प्रचार कार्यक्रम हुआ। इसमें मंगलाचार्य श्री बुनीनाल और मंगीताचार्य बेन्ध्यास का भजन हुए।



आर के.डी.य. सभा दिल्ली द्वारा आयोजित १०१४ महर्षि निर्वाण उत्सव पर रामलीला मैदान में आयोजित विद्यालय सभा को सम्मोहित करती हुई के.डी.य. स्वास्थ्य उपमार्ग की सुशी कुमुद बेध बोधी। मंच पर साप्ताहिक सभा के प्रधान आरामनाथ खालसावे स्वामी विद्यानान्द सरस्वती डा० भवनाथ महायज्ञ प्रमोद आर सुमेध श्री रतनचन्द सूत सल सभा के अवसर पर भाषण देते हुए श्री खिलीस बेधालकार।



उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,
हरिद्वार की औषधियां
सेवन करें

आशा कार्यालय ६३, गली राजा केदारनाथ

फोन नं० २४६८३८

बावडी बाजार, दिल्ली-६

गुरुकुल चर्च

भीमसेनी सुरमा

पापविनाश

गुरुकुल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

दिल्ली आर प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरकारीनाथ वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा माटिया प्रैस २४७४ रुबनपुर नं० २

— विभागीय दिल्ली २४ मे प्रकाश १९८४ मण्डल आर आर दिल्ली १

फोन ३१०१४०

रवि. नं० बी (सी०) ७५६

आइम् कृष्णन्तो दिव्यमार्गम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ६ अंक २ रविवार ११ नवम्बर १९६४ आय मन्वर १६.००५३००५ २५ कानिक २०४१ ग्याम गान् १५०

अलगाववादी देशी-विदेशी षड्यन्त्रों का घृणित परिणाम

प्रधानमन्त्री इन्दिरागांधी की हत्या : भारतीय लोकतन्त्र को गहरी क्षति

गुप्तचर व्यवस्था प्रधानमन्त्री की रक्षा करने में सर्वथा विफल रही

राष्ट्र के नेताओं को मावपूर्ण श्रद्धांजलियां

नई दिल्ली । ३१ अक्टूबर १९६४ के दिन प्रातः ६। बज प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी पर उनके सफर-रथग नई दिल्ली स्थित निवास स्थान पर उनके दो सुरक्षा अग्ररक्षकों द्वारा गालियां मारकर हत्या कर दी गई। अखिल भारतीय मातृविज्ञान संस्थान में उनके १६ गोलीबोले से छलती शरीर ने प्राण त्याग दिए। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या का सभी राजनीतिक दलों और नेताओं द्वारा साक्षर न पर भारी आघात बताया गया। मूलपत्र प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई ने कहा— साक्षर तन्त्र की आतंकवाद और मत्ता घाता से बर्णना सभी का कृतव्य है। दलित मजदूर किसान पार्टी के नेता श्री धरम सिंह ने कहा— यह मानना पड़ा कि देश के इतिहास में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उनकी हत्या में प्रत्येक देशभक्त को आघात पहुंचा है। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा— उनकी हत्या से मनुष्य राष्ट्र की गहरा आघात पहुंचा है। जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चंद्र सेखर ने कहा— महात्मा गांधी की हत्या के बाद यह हमारे मातृजनिक जीवन का सबसे दुःखदायक घटना है। काय स (ब) क व्यपक्ष श्री जयजीवनराम ने कहा— 'श्रीमती गांधी की हत्या से देश पर भारी विपदा आ गई है। उनकी हत्या से स्पष्ट है कि हमारी गुप्तचर व्यवस्था प्रधानमन्त्री की सुरक्षा करने में पूर्णतया असफल रही है।

साप्ताहिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शास्त्रिजी और महासचिव श्री आनंदकाश्यामी ने श्रीमती गांधी के जीवन पर कायदापुत्र हमले की निन्दा करते हुए उस देश का विघटन चाहते सभी अलगाववादी देशी विदेशी यहूद पक्षों का परिणाम कहा। उन्होंने भारतीय जनता और राजनातिक दलों से अपील की है कि उन्हें देश को अस्थिर करने के लिए प्रयत्नशील और राष्ट्र के मान्दों को पहुंचा कर उनका कडा सखुत मुकाबला करना चाहिए।

हिंसा देश के लिए कड़ी चुनौती

इन्दिरा जी का बलिदान राष्ट्रीय एकता के लिए

—श्री बाल्ले

साधुसमाज अजमेर के प्रधान तथा दयानंद कॉलेज धर्मवेदाङ्गि आर्य समाज की शिक्षण संस्थानों में श्री श्री रीर देवकाल के नेयरमें भी दत्तात्रय बाल्ले ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के असाधारण निधन पर शोक मयदता व्यक्त की है।

उप पर किए गए कायदापुत्र और विस्वासाघाती धाकधम की निन्दा करते हुए उन्होंने कहा है कि हमारे देश की राजनीति में हत्या और हिंसा का उदाहरण सारे देश के लिए चुनौती है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश की अखण्डता स्वतंत्रता और एकता के लिए जीवन पर दत्तात्रेय को सख्त किया, उसी के लिए यह उनका ऐतिहासिक बलिदान हुआ है।

सम्पादक—मरेन् विद्यावाचस्पति

भारत मा के रूप में

बलि दे दो

इन्दिरा जी के बलिदान पर श्री शास्त्रिजी द्वारा हाल साधुसमाज में गाथा प्रस्ताव

आर्यमन्त्र आर्यमन्त्र हाव के मात्ता हिक सत्यं क वाग् भारत का प्रव नमथा श्रीमती इंदिरा गांधी की दत्तात्रेय हृद पर प्रस्ताव पारित किया गया। समा का सभोचित करते हुए मातृजनिक समा का प्रधान सभी रामगोपाल न १ ममान न कहा कि श्रीमती गांधी की दत्तात्रेय हृद स सभुका सवार हिक गया है। श्रीमती गांधी ने जिन लोगों पर विश्व स कत्क विस्वाभाषण करके आधुनिकत करदिय अमर जगन न हो गया इंदिराजी का नाम। भारत का स्वतंत्रता अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा करन हुए उहोहन अपने शरीर की अतिम व द भो खि दे दो

गांधी का शत्रुगति अतीत भारत माता का बलिदान करक ही लोग जयजय कर करते थे। उ हाने ता साक्षात् म रत म ता का रूप भारण करक अपन का बलि दान किया है



श्रीमती इन्दिरा गांधी

व द हमसा बरेगा भारत देश मम म अमर जगन न हो गया इंदिराजी का नाम।

विद्वत् में सम्मानजनक स्थान दिलाया

प्रधानमन्त्री की हत्या अत्यन्त निन्दनीय

दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव का वक्तव्य

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुबब ने एक प्रव बल्लभ ने घोषित किया है कि देश की लोकप्रिय नेता प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की जयजय हृद की सारा आधुनिकत कडा खम्दा मे ति दा करता है। श्रीमती गांधी ने देश को विश्व क राष्ट्रा एव शत्रुगति अतीत में सम्मानजनक स्थान दिलाया था। हृद आर्य इतिहास के समय प्रण लेता चाहिए कि राष्ट्र की अखण्डता के लिए प्राणपण से काय करते रह्ये।

शहादत से सीख लें : अखण्डता रखें

इन्दिरा जी का निधन मानव मात्र की क्षति—शास्त्रिजी ने दिल्ली। साप्ताहिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुबब ने एक प्रव बल्लभ ने घोषित किया है कि देश की लोकप्रिय नेता प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की जयजय हृद की सारा आधुनिकत कडा खम्दा मे ति दा करता है। श्रीमती गांधी ने देश को विश्व क राष्ट्रा एव शत्रुगति अतीत में सम्मानजनक स्थान दिलाया था। हृद आर्य इतिहास के समय प्रण लेता चाहिए कि राष्ट्र की अखण्डता के लिए प्राणपण से काय करते रह्ये।

व्यवस्थापक—प्रमुन्मत्ताल तसबाव



परमात्मा हमारी राक्षसी व धूर्तों से रक्षा करे

—प्रेमनाथ एडवोकेट

पाहि नो बने रखस पाहि पूर्वराज्य ।

पाहि रचित उतवा जिबासतो बहुमानो यमिच्छत ॥

(॥ १३६१/१२)

बीर काण्व-श्रुति अग्नि देवता, विराट् पण्या बृहती छन्द, मध्यम स्वर ।

छात्रार्थ—[बृहद्माननो] हे महान् तेज वाले [वृषिष्ठय] अलवतम [महान् अतस्तु बल वाले] [अग्ने] आज त्वत्स्व सर्वं पुण्यो हुष्टो को दण्ड करने वाले [न] हमारी [रखस] राक्षस अर्थात् हितापीन हुष्ट त्वत्स्वाम मनुष्य से [पाहि] रक्षा करो [मान] हमारी [पूर्व] विश्वास प्राप्तक कभी कपटो [वा] [अराज्य] दान बर्ष रहित क्षत्रिय मनुष्य से [पाहि] हमारी रक्षा करो । [उत्त] और [रचित] श्याप्रवित्त हितक प्राणियो से [वा] अथवा [को हुष्ट अथवा पाणल] [जिबासत] [हमे मारने की जो इच्छा करता है उससे भी [पाहि] हमारी रक्षा करो ।

आख्या—इस वेदमन्त्र से परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमें राखे, पत्नी, स्त्रियों छत्रण (जो धन होते हुए भी कुछ भी दान नहीं करते) मनुष्यों वा हितक (अप्राप्त स्वार्थी) जो भी से हमारी रक्षा करे । कोई भी प्रार्थना हमारी सफल नहीं हो सकती जब तक हम उसके लिए स्वयं पुरा पुश्ताप न करें, व्यक्तिगत अथवा मिलकर अथवा शासन (सरकार) की सहायता से । इसके लिए हमें बलवान् होना चाहिए और सब साधनों उप-साधनों से सुसज्जित होना चाहिए, आपस में नेतृत्व-साधन से एक दूसरे की सहायता करते हुए रहना चाहिए वा शासन पुरा प्रजातामिक होना चाहिए और शासनवर्ग से कोई भी कटुता स्वार्थी हितक नहीं होना चाहिए । इसके लिए हमें शीघ्रसमा अथवा विधानसभा आदि के चुनावों में बिना किसी जाति आदि के भेदभाव के धार्मिक (सदाचार) विद्वानों को ही मत-

दान करना चाहिए । ताकि हमारे देश में अथवा ससार में रामराज्य (शांति संपन्न) हो हो ।

अग्ने हन वेद मन्त्र से परमात्मा को 'अग्ने' कहकर सम्बोधित किया गया है । 'अग्नि' मन्त्र अथ-मनुष्य शत्रु से निकला है जिसके अर्थ हैं भ्रान, भयन, प्राप्ति वा दुःखा के । परमात्मा ज्ञानस्वरूप सर्वत्र व्यापक, सबको प्राप्त करने वा पुनः के योग्य होने से उसको 'अग्नि' कहते हैं । वह अगनी (हमारा सच्चा नेता) वा हुष्टो का दाहक होने से भी उसकी अग्नि कहते हैं ।

रखस—'रखस' शब्द के अर्थ हैं 'राक्षस' के अर्थात् जो अपने स्वार्थ की रक्षा करता है और इसके लिए छल, कपट, चोरी, डाका वष आदि करता है । अराज्य—यह शब्द 'रा' शत्रु से निकला है, जिसके कार्य 'दान' करते के हैं और दान धर्म से रहित क्षत्रिय हुष्ट मनुष्य है उसको अराज्य कहते हैं अर्थात् परमात्मा हमें 'अराज्य' जो दानधोल नहीं उससे भी हमारी रक्षा करे । इस क्षत्र का दायामन्त्र का राक्षस से कोई सम्बन्ध नहीं ।

भावार्थ—सब मनुष्यों को चाहिए कि वे सब प्रकार रक्षा के लिए सर्वा-भिरक्षक परमात्मा से सर्वदा प्रार्थना करें और अपने आप भी बलवान् हो या हुष्ट त्वत्स्वाम वाले प्राणियो से रहें रहें वा सब पापों से दूर रहें । और वासक (प्रधान मन्त्री, मुख्य मंत्री आदि की भी छत्री, कपटो, चोरी डाकूओं व हत्यारों आदि से रक्षा के लिए बाध्य करें, जिससे देश में शांति का राज्य हो और जना सुखी हो ।

बी०-१०३, नीति भाग, नई दिल्ली-४६

जोधपुर में महर्षि निर्वाण शताब्दी

१०-११-१२ नवम्बर, १९८४ को जोधपुर में प्राचीन स्तर पर महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाई जा रही है । जनकत कानैज के पाम दयानन्द माग, जोधपुर में यह शताब्दी कार्यक्रम किया जा रहा है ।

प्रार्थयसमा लक्ष्मीनगर का बाबिकोत्सव

आयसमा लक्ष्मीनगर, विस्तार, दिल्ली ५२ से आयसमाज का दूसरा बाबिकोत्सव रविवार, ११ नवम्बर, १९८४ को प्रातः ८। से दोपहर १।। बजे तक की रत्न सिंह समारोह की अध्यक्षता में मनाया जा रहा है । इस अवसर पर श्री अशापा शास्त्री, श्री रामचन्द्र विक्रम, पवन कुमार शास्त्री, श्री जैमिनी शास्त्री आदि के भाषण होते ।



सेवा की सच्ची भावना ।

उस वर्ष पञ्जाब में गयकर अकाल पड़ा था, जैसा कि बूढ़ी की याद में भी कभी नहीं हुआ था । उन दिनों पञ्जाब में महाराजा रणजीत सिंह का राज था । उन्होंने ऐलान करवा दिया 'हुकम महाराज का, शाही कोठार हूर अकूरतमन्द के लिए खुले हैं', 'हूर अकूरत मन्द एक बार में जितना अनाज उठा सके, ले जाए ।' ऐलान होते ही अकूरत मन्द प्रजा उमक पड़ी, गांवो-साहरो से अकाल से पीड़ित लोगों का सिलसिला बन गया । उन दिनों साहीर ने एक सद्गुरुहृष्ट बुद्ध सज्जन कहते थे । कट्टर सनातनी विचारों के, जीवन में कभी उन्होंने कभी हाथ नहीं पसारा था, अन्धेरा होने पर वह साहीर कोठार के द्वार पर पहुँचे, वहाँ दरवाजा खुला था, किसी तरह की कोई जाच-पकताय छुछाछ नहीं हुई । उन्होंने बड़ी भिन्नक से अपनी बावर फैलाई, उसके कोने में मोठा-सा नाज बाधा, अधिक अनाज उठाना उनके लिए कठिन था । इतने में पगड़ी बांधे एक भावभीन बड़ा आमा । उसने कहा—“भाताजी, आपने तो बहुत कम अनाज लिया ।” बुद्ध सज्जन बोले—“कसल में मैं नुहा लाचार हूँ, इस अकाल में थोड़ा अनाज लेना ही ठीक है, जिससे सब अकूरतमन्दों को बच मिल जाए ।”

उस आगमनक से बुद्ध सज्जन की गठरी कोल दी । उसने भरपूर अनाज भर दिया । बुद्ध सज्जन ने कहा— मैं इतना अनाज नहीं उठा सकता और न इसकी मरफक की दाँस ही दे सकता हूँ । बूढ़े सज्जन हियकते ही रहे, उस अजनबी ने बहु अनाज का गट्टर उठा लिया और चल पड़ा । घर के द्वार पर दी बच्चे सहते थे, बोले—“आमा—कहा चले गए थे ?” बुद्ध पुरा रहा । अजनबी ने पुरा—“घर में कीते बड़ा मरफक नहीं है ?” बुद्ध बोला—ससका था, पर काजूस की सलाई में कुर्बान हो गया, अब बहुत है और मेरे ये दो पोते ।” वह अजनबी बोला—“माई जी, धन्य हैं आप, जिनका भेटा देश के लिए कुर्बान हो गया ।”

रोशनी से बुद्ध सज्जन ने उस अजनबी को पहचान लिया । वह स्वयं महाराजा रणजीत सिंह थे, बुद्ध पोते थे बोले— इतने कोने में मरफा ठेकी । और बुद्ध की प्रार्थना करने लगे, बोले—“आज बड़ा पाप हो गया, आपसे बोका उठवाया ।” “महरी, बहु पाप नहीं मेरी किस्मत है कि मैं एक छात्र के परिवार की सेवा कर सकूँ । आप सबकी सेवा करना मेरा फर्ज है, जब तक जीवन है, आप हमारे साथ ही रहिए ।”

—नरदत्त

दक्षिण-पूर्वी एशिया

(थाईलैंड, मलायेशिया, सिंगापुर, जावा और बाली की द्वितीय सांस्कृतिक तीर्थयात्रा)

१६ जनवरी, १९८५ से २ फरवरी १९८५ तक को सप्ताह की यात्रा का कुल व्यय १३५० रुपये प्रति व्यक्ति (जिसमें हवाई जहाज द्वारा जाना-माना, वातामन-सित होटलों में निवास, जीवन बचो द्वारा वसोयल स्थानों का व्यवस्थापन तथा साक्षा-हारी प्राप्त काल और साथ काल का भोजन भव्य शामिल है ।)

दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में अब से सावल पाया सदी पहले तक हिन्दू धर्म एव भारतीय संस्कृति का प्रचार था । बड़ा बानी नाम का एक ऐसा द्वीप है, जिसमें अब भी पञ्चीस लाख के लगभग हिन्दू रहते हैं, और जिते सच्चे अर्थों में 'सबु आया-सत' कहा जा सकता है । जाबा के निवासियों में भी पंतीस लाख के लगभग हिन्दू हैं । इन द्वीपों में धनके ऐसे मन्दिर व लोग स्थान भी हैं, जिनका हरिद्वार व रामेश्वरम् के समान महत्त्व है । इस तीर्थयात्रा में सम्मिलित होकर दक्षिण-पूर्वी एशिया के साक्षो हिन्दुओं के साथ एकानकला व सम्पर्क स्थापित कीजिए, और भारत के विशाल सांस्कृतिक साम्राज्य की एक जनक देखिए । साथ ही, बड़ा के हिन्दुओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिवाली तथा धर्मनाम के कार्य से परिचित कराइए ।

विवरण के लिए सम्पर्क करें—

—श्री अशोक मिश्रा

ट्रबल ट्रस्ट, नो-२४, निशामुनी ईस्ट, नई दिल्ली-२६

टेलीफोन-६८००४१

धर्मपूर्वक धन की प्राप्ति

कोडेम् भूधुब एवं सुप्रजा ब्रह्मा विष्णु ।

सुवीरा भीरं सुप्रजा पीवं । यत्पूर्व ८५३

इन भूमीक, अन्तरिक्ष लोक और पृथ्वीक की उत्पत्तियोंमें वे पड़ुसते हों तथा सन्तानों से अच्छी सन्तानों वाले और पोषक पदार्थों से अच्छे पाषाण अथवा गोमय पदार्थों वाले हों ।

आर्यसन्देश

एक युग बीता : नए युग की शुरुआत

हमारे महान राष्ट्र पर सट कर की काली घटाए कई बार चिरो हैं हर बार बहु सही बाबाओं विराधो एव प्रतिभुत्वं परिचितिमे ये जूता हुवा बतता गया है । सन् १९४८ ई० की ३० जनवरी को म गांधी का जन बलिदान हुवा था, उस समय हमारी राजनीतिक स्वाधीनता को प्राप्त किए हुए कुछ महीने ही व्यतीत हुए थे परन्तु उस समय देश का नेतृत्व करने के लिए प० जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई, डा० राजेन्द्रबाबू जैसे परीक्षित एवं परबे हुए नेताओं का पथ-प्रदर्शन उपलब्ध था । १९६५ में २५ मई के दिन जब प० नेहरू का देहावसान हुवा था तब देश के सम्मुख एक बड़ा प्रश्न था कि प० नेहरू के बाद कौन ? परन्तु जल्दी ही श्री लाल बहादुर शास्त्री एक श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने-अपने समर्थों से देश की बागडोर सम्भाल ली यह प्रदर्शित कर दिया कि हो सकता है अनुभव की दृष्टि से वे नई पीढ़ी के रहे हों परन्तु अपनी निष्ठा, दृढ़ता और अनुभव देशप्रेमि से वे किसी से भी पीछे नहीं रहे, दोनों ने अपने नेतृत्व से प्रभावित कर दिया कि स्वकीय निष्ठा और तपे हुए समर्पण से राष्ट्र लिए उच्चतम नीतिवादात्मक स्थापित का सकते हैं ।

त्रिपक्षिणी इन्दिरा गांधी को नेहरू जी ने अपने प्रतिष्ठ पत्रों में लिखा था— 'इतिहास का अध्ययन धन्यता होता है । परन्तु यह कही बेहतर है कि लुप्त इतिहास 'लेखा जाए ।' इन्दिरा जी ने अपने पयस्वी जीवन से सिद्ध कर दिया कि अपने पिता की तलहट्टि यह भी साहस की नैपथी थी । उन्होंने युग के भी प्रत्येक समस्या का अध्ययन कर स्वतः अपना मन बनाया । जिस प्रकार की अप्रष्ट बाबाओं एवं प्रतिभुत्वं परिचितिमे का उन्होंने सामना किया उससे दूसरा कोई भी व्यस्ति पतल हो सकता था वे परिचितिवा चाहते सन् १९६६ में राष्ट्रपति के पद के निर्वाचन का प्रश्न रहा हो अथवा १९७१ में बनम' देश के सम्बन्ध में पाकिस्तान से युद्ध हो। अथवा हिन्द महासागर में अमेरिकी सातवें बेड़े की उपस्थिति हो अथवा सन् ८५ में उपग्रह के सड़ को ज्वलत करने का समय रहा हो । उन्होंने पूरी दृढ़ता, साहस और लगन से भीषणतम परिस्थितियों और बाधाओं का सामना कर प्रदर्शित कर दिया कि बड़े मनोबल और की अदम्य साह-बाजी की सच्ची प्रतीक थी । अपने कार्यों से उन्होंने सामान्य जन के सिद्धांत की प्रतियुक्त को तो साह ही अत्यन्तस्पर्श का विस्मय भी प्राप्त किया ।

३१ अक्टूबर की प्रातः देशी-विदेशी साम्राज्यवादी अणुबाबादी ताकलों के हस्तक प्रसार से भारतीय राष्ट्र एवं जनता को बाकाश्वको की प्रतीक भीमती इन्दिरा गांधी का पार्ष्वि शरीर निष्ठाएं हो गया है । उनके असाधारण दुःख निम्न से बाधु-निक आत का एक युग बीत गया है और एक युग की शुरुआत हुई है । अभी तक सफट की परिधिया गहराने पर देश को या तो अनुभवकी एवं परीक्षित नेतृत्व का साम निगता था, अथवा उसे ऐसे भारी मिले जो अनुभवकी और परीक्षित तन थे, परन्तु उन्होंने ऐसे समय तक अनुभवकी व्यक्तियों के सान्निध्य से सहित प्रथम प्रवेशन पाया था । प्रातः देश के इतिवृत्त पर अणुबाबादी जातकवाद की दुष्प्रतिष्ठाएं फिर धाई हैं, ऐसे समय यदि प्रमुख राजनीतिक दल राष्ट्रीय हिंदों के लिए एक न सयुक्त होकर कार्य कर सकें और राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न कर सकें तब तब राष्ट्र की प्रगतिगत समाधान हो सकता है । इन्दिरा जी के असाधारण निम्न से भारतीय राजनीति को एक बहुपक्षीय मूल्य पंथा हो गया है जिसे भरने के लिए सभी राष्ट्रहितियों को प्रयत्नशील होना चाहिए । कार्योत्पन्न एवं कार्योक्त को हम सफट की यकी से राष्ट्रीय शक्ति की अधिकाधिक शक्ति, सच्चा और प्रभावित बनाने का प्रयत्न कर जानी दिशा-निर्धारण से अपना उत्प्रेक्षणीय योगदान करना चाहिए जैसा कि उन्होंने राष्ट्र के नव वागमय एवं स्वाधीनता सपने के दिनों में प्रस्तुत किया था ।

आर्य विद्वानों, समाधान करो या सशोधन करो ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र में जो मन्त्रों का नाम संस्कार विधि ग्रन्थ में बताया है उसमें अनेक परिशुद्धि नहीं, वर्तमान में प्रचलित सन्ध्या पुस्तकों में प्रायः १६ मन्त्रों का क्रम बताया है, परन्तु ऋषि ब्राह्मणानुसार मन्त्रों की संख्या २१ है । इसके अतिरिक्त आरम्भ में सन्ध्या का उच्चारण बताया है । शनो देवी० मन्त्र द्वारा तीन स्थानों पर आचमन बताया है । इस प्रकार विधि विधान में शास्त्रोक्त होकर सन्ध्या करे । प्राथमिक करों को पुनः पुनः पुनः पठना तो समय लगता ही है, परन्तु देखा यह जाता है कि आचमन खाना पूजित के लिए तीन मिनट या पांच मिनट से ज्यादा समय सन्ध्या में नहीं लगता ।

अथ नित्य सन्ध्या यथोपासनाविधि यन्—सदा स्त्री पुंस्य १० बजे शयन और रात्रि के प्रह्वर ब्रह्मवेसा में ४ बजे उठकर प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके धर्म अर्थ का विचार करना और धर्म और अर्थ के अनुष्ठान व उद्योग करने में पीडा यदि हो उपाधि धर्मोन्मत्त पुण्यायं को कभी नहीं छोड़ना चाहिए । किन्तु सदा शरीर और बाल्या की रक्षा के लिए युक्त वाह्यार विहार बोधय सेवन सुषमादि से निर-सद उद्योग करके व्यावहारिक और परमाणु कर्तव्य कम की सिद्धि के लिए ईश्वरोपासना को करना । इस परमेश्वर की कृपा दृष्टि और सन्ध्या से महा किन्तु भी सुमगल से सिद्ध हो सके इसके लिए निम्न वेद मन्त्रों से ईश्वर की प्राधान्य स्मरणार निमग्न करे ।

ओ३म् प्रातरग्नि० आदि आद्यैरे के मन्त्र ७ सुस्त ५१ मंत्र १ से ५ तक का पाठ करे । उत्पत्त्यात् बोध-दत्तकावच, मुक्त प्रशान्त करके स्नान कर । सन्ध्यापासनादि नित्य कर्म नीचे लिखे अनुसार यथा विधि उचित समय में किया करे ।

आरम्भ में मन्त्र उच्चारण करे, ओ३म् तत्सत् यद्वा आदि किञ्चित् संहित करे । फिर इन मन्त्रों का एक-एक आचमन करे । ओ३म् अमृतोत्पत्तरमासि स्वाहा, ओ३म् अमृता पिबामस्मि स्वाहा ओ३म् सत्यं वा धीमहि मां यथा स्वाहा इसके अनन्तर पायवी मन द्वारा शिक्षा बाधकर सदा । आचमन मन—तना देवी द्वारा तीन आचमन, अथ इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र—ओ३म् नाक बाध्वा आदि, अथ ईश्वर प्रार्थना पूर्व मंत्रां—ओ३म् भू भुवः स्वः पुराण विरचित आदि, आध्यात्म मन्त्र—ओ३म् भू भुवः आदि, अथमर्पण मन्त्र—ओ३म् कृत्स्न सत्यं वा आदि तीन मन्त्र ।

अथ महासा परिष्कार मन्त्र—आ३म् प्राचीं मे ऊर्ध्वो पयतः ६ मन्त्रों द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करे । अथोपस्थान मन्त्रा—उत्पत्त्यात् परमात्मा का उत्पत्तान् बभूव परमेश्वर के निकट मैं और मेरे आदि निम्न परमात्मा है, ऐसी बुद्धि एवं भाषण करके करे ।

उपस्थान मन्त्रों में अन्यान्य प्रचलित सन्ध्या पुस्तकों में एक महत्त्वपूर्ण मन्त्र को हटा दिया है । मन्त्रों का क्रम भी बदल दिया है । यह आज अनो की भारी भूल है ऐसा जान पड़ता है । उपस्थान मन्त्र ३० क्रम और सन्ध्या महर्षि द्वारा निर्धारित निम्न प्रकार संस्कार विधि गृह्य प्रकरण में विद्यमान है । अथ उपस्थान मन्त्र—

ओ३म् जातवेदे सुब्रह्मण्यं सुब्रह्मण्यं मरालीयम् नि हर्हाति २४ ।

सन पयसति दुर्गाभि बिस्वा बोधेन सिन्धु दुग्मात्मा० ॥

ओ३म् अथ देवाना ममादिति आदि ॥२॥

ओ३म् उज्य जात वेदेस देव हर्हति केवः आदि ॥३॥

ओ३म् उदय तमस्स्वरिष्य पयसम् आदि ॥४॥

ओ३म् उत्पत्त्यात् हित आदि ॥५॥

पुनः—गायत्री मन्त्र, अथ सपथम्—हे ईश्वर दयानिधि आदि, ओ३म् नमः सन्ध्या-नाथ क आदि मन्त्र से परमात्मा को समस्कार करके या नो देवी इस मन्त्र से तीन आचमन करके अग्निहोम का आरम्भ करे ।

आर्य विद्वानों से निम्न प्रश्न आध्यात्मिक है कि उत्पत्त्यात् कमानुसार मन्त्रों का सशोधन करा जाय । इस क्रम का सम्बन्ध ऋषि सन्ध्या के बाह्यार पर बाह्यारुत्त निवासी आय सधु की सोलसाल की शारदा द्वारा प्रकाशित पुस्तक अथ नित्य सन्ध्या यथोपासना विधि' नि शुक्रम मयाकर ऋषि ब्राह्मणानुसार अपने परिष्कार को अद्यावत् बनावे, यही निम्न प्रार्थना है ।

—कल्पयेत्तं यथाप्रथो वैदिक सन्ध्या आचमन, पुनःकर

महर्षि दयानन्द निर्वाण विद्वान् एक दीपावली पूर्वे आर्यसमाज विभागी चौक कडवा में ऋषि दयानन्द निर्वाण विद्वान् एक दीपावली पूर्वे दिनांक २४-१०-८५ को समारोहपूर्ण मनाया गया । पूर्व पद्धति के अनुसार बृहत् सन्ध्या प्रार्थना के पश्चात् श्री रामचन्द्र जी अर्थात् प्रभात ४० वं बरवा में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर सारांशित भाषण दिया, यी ५० नमः किछोर ओ द्वितीय में श्रेष्ठ की वर्तमान परिस्थिति और हमारा कर्तव्य पर अपने विचार रखे ।

जीवन ज्योति क प्रतीक

—जमनसाज प्रधान कार्यसमाज अखीक विहार दिल्ली-५२

पर्वीनथा त्याहारो का मानव के जीवन मे एक उच्चा स्थान है। स्त्रीयों कोकामध्य बाल्यवापार तिलक यहा तक कहा करते थे कि त्याहारो को मानना ही कि देश राष्ट्र के जीवन ज्योति का प्रतीक है। जितने जितने उमाह, उल्लास थड़ा और प्रेम से कोई राष्ट्र अपने त्याहार मानता है, उन्ही श्रुपात मे उस राष्ट्र के निवासियों मे जीवन ज्योति ममस्मया बाहिए हुमादे देश मे जितनी अधिक ममस्या म त्याहार मनाए जात है सम्भव विश्व मे त्याहार के भीम अर्थय मे नही मनाए जात होगे। इसारे कुछ त्याहार श्रुतपुरक और कुछ महापुरुषो के नाम से सम्मिपगत है। कुछ राष्ट्रिय त्याहार भी है परन्तु इन मब मे नीन बडे त्याहार मयाथा पनि मयाथा श्रुपयोनन राम क नाम स सम्मिपिन है—रामनबमो—आ प्रसिधत्त बैन शुभवा नमो का देश चिह्नो मे बडे उमाह से मनाई जाती है परन्तु दो त्याहार विजयचमो का त्याहार अखीक मास की शुक्ला १० बी को मनाया जाता है। जिनके सम्भव मे कहा जाता है राम की राक्षसपति रावण पर विजय इस दिन हुई की और तीसरा त्याहार दीपावली विजय दशमी के ठीक बीस दिन बाद जाता है। कार्तिक की कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है कि अयोध्यावासियो मे की राम जी की राक्षण पर विजय प्राप्ति करके बापम नौटने पर दीप माला का उमभ मनाया था परन्तु इतिहास बराम जीवन क मबसे प्रमाणित ग्रन्थ वास्वीक रामायण से दैत त्याहारा का इन तिथियो मे पडना वदाचित प्रमाणित नही होता। मे मब घटनाए मसेप मे इन प्रकार है —

अयापापिन राजा दशरथ जब बुढा-मधा को प्राप्त हुए नब उन्हीन राज्य क मनिषा, गुजनाला और अन्य अन्धका जाओ का गुनागन नब ममभुख राम—अपन उपाट पुत्र का राज्य का काम बराम नौपन का प्रमण रखा और उन्की अनुमति मे राम का पुत्रराज क लिए सब मामरी जुटान के आदेश दिए गए। यह बैन राम का महीना था।

यहा रहते रायद श्रुतु बीत गई हेमन्त का आरम्भ हुन। कुछ ममभ पस्वाका राम छन-पट से माता बीत को हुर कर ले गया। उसको अपनी अशक वाटिका मे रखकर, डरा-ममका कर मोता को अपनी पत्नी बनान मे अमकन रहा, तो उसने सीता का एक वप का सम्य सोचने के बान्ते दिया और जब हुनुमान नीता को लका मे निवात उस एक वर्ष मे से केवल दो मास ही छब रह गए थे।

इति प्रत्यक्ष तानु राजा ब्राह्मणा निदणवत्। बैन चोपयवत्। सौतु श्रीमानय मास पुष्प पुष्पितकानन। रौरावयाय रामभ्य मबमेशोपकल्प्यताम्।।

परन्तु विधि का विधान बडा विचित्र है। आरम्भी सोचता कुछ है, परन्तु परमाम्यदेव की कुछ और ही रचना है।

बैनमाम क पुत्र नखन मे निष्पाय राम को अयाथा का युवराज बनने की बजाय दण्ड दासी ममस्या तथा कैकेयी के पडनर रचन क कारण लाघु बेध मे पिता की आशा से वन जाना पडा और जब मरत की राम को बापम सीटाने वन म गत वन चिन्तक पत पर कुटी बनाकर रहते व।

‘अनन्तर गु तन्त्रितविचित्र दृष्टर मरत। तदा एणकुटी तात तब ती वसतो ध्रुवः’।।

मम मण्डली क घाघह करन की राम न १४ वर्ष के वनवास की अर्वाधी की समाप्ति से पुन सीटने से इस्कार कर दिया तो रायत राम की पाहुनए सेकर राम से बैसह वर्ष की समाप्ति पर सीटने की प्रमिना वचन मे प्राप्त वले गुए और यह कहते हुए कि यदि बीसह वष के अनिम दिन राम न सीटने हो मे (मरत) पिता बनाकर दानि मे प्रवेश कर दूंगा।

अरत के सीटने पर राम ने चिन्तक ओर कर किसी अर्थ स्थान पर जान का निवधय किया और इस प्रकार वन मे पुनते पुनते और चिन्त आशयो की आभा बीया देखते दस वर्ष बीत गए और दण्ड-काण्य मे एक सुन्दर स्थान पचवटी मे कुटी बनाकर बैन वन वर निवात को १८८३ से निवधय किया।

हुनुमान जी न राम का सीता का नवदे विषा और रावण द्वारा ही दी शो मान की अवधि बनाई, तो राम बड बाहुन होकर बाने वरि मीना एक माम नब भी जीयीया न बहुत ममका, मे न उसक बिना एक वष भी नही जी सकना। अत राम न मुण्डी को जल्दी न लका पर चबाई करने को कहा और उत्तरा-फाल्गुनी नखन मे चबाई कर ती और जब रावण पर क्षौराम न विजय प्राप्त की, तब बीसह वर्षो मे से केवल एक दिन बैन था, अत राम जी उनी दिन अयोध्या जाना चाहते थे, इसलिए बहु रावण के पुत्रक विमान म ठीक १४वर्ष की समाप्ति पर बीसोथा वा पहुँचे।

इस वलनामक से स्पष्ट है कि राम रावण कुछ फालुन बैन मास मे हुमा और बीसह वर्ष भी बैन मास मे

ही समाप्त होते हैं। अत विजयदर्शनी का त्याहार अखीक मास मे न मना कर कही बैन मास मे मनाया बाहिए और इसी प्रकार दीपावली, विजय दशमी मे दूसरे ही दिन कही बैन मास मे पडती है। यह तो हुई इन दोनो त्याहारो का राम से सम्भव रखने वाली बात। न जाने कब से यह प्रथा बनी। इतिहासवास्थियो का यह कर्तव्य है कि ठीक ठीक खोजकर सही तिथिया इन त्याहारो को निषधत करे।

दीपावली त्याहार का एक अपना ही विशेष महत्व है, इसको राष्ट्रीय त्याहार कहना भी कुछ अनुचित न होगा। यह श्रुतपुरक और फनवी त्याहार की कहा-साता है हुमे मजदो मे इसे ‘नवशलेष्टि’ भी कहना ठीक ठीक होगा क्योंकि इस अवसर पर ग्वावनी (खरीक) की फसल के अनाज उबार, मकका, बाजरा, उदद, चावल, गुड-मकरन निमादि सभी जा जाते हैं और सभी नाग इसको लक्ष्मी-पूजा क रूप मे मनाया बडा पुण्य समझते हैं। लक्ष्मी के स्थापन क लिए मारी राशि चरो मे राधानो खलते है ताकि कही अमावस्या की घार घषरी राति मे प्रकाश क अभाव मे लक्ष्मी वापम न पवो जाय।

इसी लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए कुछ भुत, पुन लोण गुडा सेलकर आनय नूटते हैं, क्योंकि ऐसे लोगो का अन्धविश्वास है कि को इस दिन गुना नही सेवता, बहु मरक मे जाता है जबकि वेद मे गुना सेवना, दुष्कर्म पाप बताना है। जैनियो के लिए भी यह दिन कुछ कम महत्वपूर्ण नही है। क्योंकि बाज के दिन उन्के अन्तिम तीर्थ-कर महावीर स्वामी मे निर्वाण प्राप्त किया था। बाज के ही दिन मन् १६०६ मे स्वामी राम ने मना माता की गोद मे जीवित ममाधि सी थी, परन्तु इन दिवस का महत्तर एक एक वष से गये अर्धुन को बड गया है।

अब इस कार्तिक की अमावस्या के दिन गुग अवर्षक महर्षि दयालक मरस्वती के इस महत्तर देव को त्याग कर पुन व विजय प्राप्त कर—इस्वर मनी इच्छा पुन हो। कड़न-कड़न अगमजनी अगम्या माना जी पम पाणयो गाद मे किउ म पाया था। उनी दिन मे अन्ध जा म—त्याहार का श्रुति निभांगम्य अथवा श्रुति बानिनाम के रूप मे प्रतिवर्ष मनाते



आर्यसमाज तिलकनगर का ३५ वा बाबिकोत्सव

आवसमान तिलकनगर, नई दिल्ली १८ का ३५ वा बाबिकोत्सव ११ नवम्बर से १८ नवम्बर तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर दही दिगो प्राप्त ७३। से इ बडे तक मान्यदेव यज्ञ ५० यमपाल मुधापु के ब्रह्मपुत्र के हो रहा है। प्रतिदिन राति को ८ से ८-५५ बजे तक ५० चुनौलाजी के अग्रयोपदेश तथा ८-५५ से ८-५५ तक ५० यमपाल मुधापु के बेयोपदेश होते हैं। १८ नवम्बर को पुषाङ्गिरीत हो के अत बाद की रामगोपाल शास्त्रावली, श्री सुर्वदेव की, महाशय धमाला की ८० बनीपाव की, एष श्री रामगोपाल के प्रबचन हो।

है।

मत बडे अवसर मे उनकी बनिधान वलावली बडे सगारोहपुनक मनाई गई की और उसके बाद पूरे वर्ष विमान-विमान म्मनो पर बहु उत्सव मनाया जा रहा है जो नीन अवसर पर।

दीपावली हर वष आती है और बाय-बन्धु श्रुतिमन उनके अयोध मे बडी अनेक घटनाओ की चर्चा करके अपने को क्षुप्त-क्षुप्त समझते हैं, परन्तु जरा ध्यान देकर देखें तो सी स्था श्रुति द्वारा ओडे अर्धुन कामें किस हल तक वे पूरे कर पाये। मत एक सो एक बर्षो मे। देश के बापार, नैतिकता का पतन श्रुति के समय से भी कभी अधिक इस समय हो गया है। महर्षि एक जाति क बैन विधि के लिए काम नही करते थे। नरु तो समस्त विधयो की मानवता के कल्याण के लिए धारा जीवन प्रवलीत रहे और इही मानव-कल्याण के लिए उन्होंने अपनी १८-१८ बडे की समाधि का दिव्य अनाम भी त्याग कर ही टो-नपचरो के प्रहार महे और विष के प्याले भी पीए। उन्होंने वेद को स्वत प्रमाण माना कर इसके आधार पर स्थापन किया और प्राचीन श्रुति-मुनियो की विस्तृत परम्पराओ को फिर से जीवित किया।

यह महान् देशयोदा के और देशो को सम्पन्न, शांतिप्राप्ती स्थापनकी ओर, स्तानपन सता बाना सेवना चाहते थे। सामाजिक कुुरावियों के बडे शत्रु, मे और बडे विचित्र और प्रसिद्धतावाचक मे भी अनेको श्रुति मे कुुरावियों के बडे गह को भू-चूर करके रख दिया। उन्होंने प्राणीय देवताओ को गुलाकर स्वयं गुन-राती होते हुए ही हिन्दी की राष्ट्रप्राप्ति के रूप मे स्वीकार किया और अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी मे ही लिखे। देश की एकता अखण्डता के लिए यह जीवन वर प्रमल-पील है।

दीपावली निर्वाण दिवस पर श्रुति के प्रति सभी अंधाविश्वास यही होनी कि हनु म गन्धुट होकर आपसी भेदभावों को गुलाकर निकाम भाव से श्रुति के बहारे होए ही पुति मे यलाकर्षित सहयोग देकर श्रुति के श्रुति से उज्ज्वल हुनो का प्रयत्न करे।



जनता शांति और सद्भाव बनाए रख

श्री शालवाले द्वारा व्यापक हिंसा की भर्त्सना

सार्वभौमिक कार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान साभा राममोयाम भास्कराने ने दिल्ली में जोर देना के विभिन्न स्थानों में हुई हिंसा की भर्त्सना की तथा आम जनता से शांति तथा आजीव सद्भाव बनाए रखने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारत को एकता के लिए अपने प्रयास व्योधावर किए। उनके बादलों के अनुसार राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करते ही हम उन्हें मन्त्री अद्यावत बर्णित कर सकेंगे।

स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी के लिए

आर्यसमाजों में शोकसमाए

सभा प्रधान श्री सुप्रेमेश चौर प्रधान श्री डा. बर्माल ने दिल्ली की सभी आर्यसमाजों के अनुरोध किया कि वे अपने साप्ताहिक बैठकियों में स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी के लिए शोक समाए तथा शांति व्रत धारण करें। शोक प्रस्तावों की प्रति राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और गृहमंत्री को भेजें तथा समाचार पत्रों में भी दें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क का उद्घाटन

महर्षि दयानन्द सरस्वती निबन्धोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती निबन्धों का प्रथम दिन २५-१०-८४ को प्रातः ८-३० से १०-१५ तक महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क में इस क्षेत्र की समस्त समाजों के साथ पुरुष (महोदय) प्रतीक विहार क्षेत्र १-११ रानी बाग पंजाबी बाग तथा विनय के सहयोग से भा. स्वा.नी. कल्याण की अध्यक्षता में बड़े उत्साह तथा धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर गृह मन्त्री तथा विदेश मन्त्री श्री प. राजीव गांधी थे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क का उद्घाटन श्री दीपचन्द बन्धु (उपमहापौर) द्वारा किया गया। इस पार्क के नाम करण करने का श्रेय इस क्षेत्र के श्री विनय भास्कर श्री साहिब सिंह जी वर्मा को प्राप्त है। जिनके व्यक्तिगत अथक प्रयासों से दिल्ली में पहली बार एक बहुत बड़े पार्क का नाम महर्षि के नाम पर रखा गया।

श्री दरबारी लाल का स्वागत किया गया। महर्षि का अद्यावत देते हुए समस्त समाजों को इस पार्क में प्रतिवर्ष इसी प्रकार उत्सव मनाने के लिए प्रेरणा दी तथा अपना गुण सहयोग देने का कथन दिया।

दिल्ली भाषा प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुप्रेमेश जी का स्वागत किया गया। श्री स्वामी विद्यानन्द जी ने अद्यावत देते हुए आर्यसमाजों को सर्वत्र रहकर और अधिक शक्तिशाली बनने का आह्वान किया।

उपमहापौर श्री दीपचन्द जी बन्धु के स्वागत के लिए आए सहस्रों मन्त्री भा. कार्य पलिक स्कूल के बच्चों द्वारा बजाया गया गीत वास्तव में साराहणीय था।

कार्य विद्यानन्द भाषसमाज के साथ पुरुष (महोदय) तथा कुशाभी हस्त-राज मॉडल स्कूल अथक विहार के बच्चों के द्वारा रंग कार्यक्रम उपस्थित सभी जनो को देखे थे।

मनेन्द्र शक्ति विद्यालय विनय के बच्चों ने भी बालुरी वादन के अतिथि का मन मोह दिया।

मुख्य अतिथि ने मंच पर बोले हुए अपना समाज के अटूट सम्बन्ध बताया और कहा कि आर्यसमाज जैसी श्रेष्ठ सभा समाज में कोई दूसरी नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि हमें पार्टी विशेष से दूर रहकर समाज कल्याण में लगे रहना चाहिए।

श्रीमती सुधमा भार्या ने अपने मधुर गीतों से श्रोताओं को मुग्ध किया। श्रीमती प्रेमवील महेन्द्र जी उपस्थिति में मंच की सीमा में चार बाज लगा दिए।

स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी भार्या (अतिथि सलून) वालों के श्रेष्ठ सुधुष की वेषधारी जी ने पार्क के सम्पन्न में लगाए गए महर्षि के नाम, गणपति तथा शिवाजी से जुड़ी गीतों गीतों का गायन करके ३००० रुपये सहस्र नहल किया।

मंच टेन्ट बाकि की व्यवस्था श्री दरबारी लाल जी ने स्वयं कराकर समाजों की अनमनीय प्रिया।

भारतीय संस्कृति का अपमान-लता

बम्बई। स्वर कोहिका सदा मनेकरने कहा है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी को हत्या से बहुरी भारतीय संस्कृति हिन है, जिससे अहिंसाओं के लिए विशेष सम्मान है।

सदा मनेकरने ने श्रीमती गांधी को अद्यावत बने के लिए बुलाए गए एक समारोह में मंचन बोलेने से पूर्व यह बात कही।

हलांकि ने श्रीमती गांधी की हत्या करने के बाद ही सत्ता की चर्चा की थी भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ पढ़ाई है। उन्होंने भारत का अपमान किया है, उन्होंने जारी संस्कृति को हस्त-अहस्त कर दिया का अभाव हिंसा नहीं है। पूजा को पूजा से सम्मान नहीं जा सकता। पूजा को प्यार से ही सम्मान हो सकती है।

आर्य स्त्री समाज अशोक बिहार का वार्षिकोत्सव

भा. स्त्रीसमाज अशोक बिहार क्षेत्र-१ दिल्ली ५२ का १०वा वार्षिकोत्सव शुक्रवार दिनांक १६-११-८४ को आर्यसमाज अशोक ५२ अशोक बिहार दिल्ली ५२ ने श्रीमती सरला महता की अध्यक्षता में बोंहूर १२॥ से ४॥ तक हो रहा है, जिसमें श्रीमती डा. आर्य देव बाता प्राचार्या सन्तान विधिविद्यालय के बोसनी भाषण, श्रीमती ईश्वर देवी जी तथा अन्य विदुषी बहिनों के प्रबन्धन होये।

यह की बहो श्रीमती आर्यदेवी अशोक जी तथा कविता पाठ कविनी श्रीमती पद्मा सर्वा ने रत्न बोले के होये।

सभी कार्य बहिनों ने इसमें भाग लेने के लिए भागविष्ट किया जाता है। भा. समाज अशोक अशोक बिहार क्षेत्र-१ ५२ का वार्षिकोत्सव श्री १२-११-८४ से १८-१२-८४ तक होगा।

मंचन श्री पवित्र जी के रात्रि को हुवा करेगे। लक्ष्य कोटि के विद्याओं के भाषण श्री होये।

सभी आमंत्रित हैं

सर्वोच्च श्रीमती प्रेमवील महेन्द्र होयी। —पद्मा लताबा मन्त्री भा. स्त्रीसमाज

दाँतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

दंत मंजन
लौंग युक्त

मसूनों की सूजन

23 जडी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

मुठ की दुर्गन्ध

उष्ण गर्म पाणी लगना

दाँतों का अद्भुत
दंत मंजन
लौंग युक्त

दाँत का खट

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०
६/६४ कृष्णमिन्दुल पब्लिश कीर्ति कानर, भा. दिल्ली १० १०६ 538609 537987 537241

एक सामयिक ग्रन्थ तूफान के दौर से पजाब

तूफान के दौर से पजाब—लेखक श्री क्षितीश दालकार प्रकाशक—विड वॉर्ड पब्लिकेशन्स ८००।७१५ नेहरू प्लेस, नई दिल्ली १८। पृष्ठसंख्या २२०, अविन्द्य का मूल्य ४८।

यह ग्रन्थ है किमसुख से खैबर तक और लद्दाख से सिंधु की सीमा तक केना विल्टन मुसलमान का ४० वर्ष का खालसा राज केवल दस वर्ष की अवधि में विशिष्टी प्रकरण विद्वित स्वामी पारस्परिक कृत के कारण विद्वित साम्राज्य से बिलीन हो गया था। खालसा राज के समय होते ही समस्त सिख सैनिकों को निहत्ता करके बैठन देकर घरों पर बापल पम्की छुट्टी पर भेज दिया गया, दूसरे सेना में सिखों की भरती बन्द कर दी गई। तीसरे सिखों ने बिना किसी विरासत के हथियार बाल दिए। कुछ ही वर्षों में बेरोकथार खालसा सैनिक सिखों के समुह बेतरतीब घुसने लगे। उस समय सर जान भारत और साह बलहोमी न दमन की अवस्था सुनिचा देकर खालसा सिख सैनिकों की विद्रोही पुरवियों और मुस्लिम सैनिकों के विरुद्ध प्रतिपक्ष की भावना से भर दिया। जागीरों और पैसों के आदानादान से वे फिर सिखों के हाथ के खिलाफे बन गए, उन्होंने आबादी की सहाई में प्रथम को का साथ दिया।

बाद की अवधि की समीची है परन्तु भी टोके के पक्षों की महाराजा रणजीत सिंह के खालसा राज की समाप्ति करने वाला साह बलहोमी जूते पहनकर स्वामन्दिर गया था और उसके स्वागत में बहादीवाली मजारी गई थी स्वामन्दिर की बाबिया अथ जो को सोप दी गई थी सिंह समा का सत्य एक प्रथम हो सकार था परन्तु सहजगरी हिन्दू नहीं, सन् १८४७ के स्वतन्त्रता युद्ध में प्रथमों के विरुद्ध लोहा लेने वालों का गद्गार कहा गया था और उस के लिए प्रथम-शोकावर करने वाले नामधारी कृपाणा की पंच-प्रश्न कहा गया।

पिछले जून मास में पाकिस्तान, अमेरिका कनाडा और ब्रिटेन विगत तत्वा के सहयोग से भारत के परिवर्तनकारक से खालिदाद बनाने का प्रथम प्रयत्न रहा था। विगत ३ वर्षों से पजाब में हत्याओं, बर्कियों, लस्यार और अराजकता का मन्त्र प्रचलित था प्रथम एक दस काण्डों से जस्त होकर केन्द्रीय सरकार को बहा आपरेषन न्यू स्टार करना पड़ा। आपरेषन के फलस्वरूप बहुप्रकरणों को अकारण गया पजाब में पब्लिक का नया माहौल बना। इस प्रकरण के बाद जूद बालकवादियों ने सुरक्षा सैनिकों के माध्यम से उन्हें अस्वाक्य ३३ अज्ञात के दिग भारत की लोकप्रिय प्रथम-मन्त्री की हत्या करा दी है।

पिछले वर्षों में पजाब तूफान के भीषण दौर से गुजरा है उस दौर की भीषण प्रतिक्रिया प्रथम-मन्त्री हिन्दिरा जी की हत्या से भारतीय राष्ट्र को भी सहरी पड़ी है, पजाब की यह घाटी समस्या क्या है उसकी पुष्टि किम जिन तत्त्वों ने वैचार की है, और उनका समुचित समाधान क्या हो सकता है इन सबका सामयिक विवेचन प्रस्तुत सामयिक ग्रन्थ में किया गया है राजनीतिज्ञान के अध्येताओं के साथ सामान्य पाठकों के लिए भी यह ग्रन्थ पठनीय है।

‘एकला चलो रे!’

मह दिवसी ‘एकला चलो रे’ श्री गुरदेव रवीन्द्राश की यह कविता श्रीमती हिन्दिरा माथी की कुल्ले कुनीया पद्यदीपा कविताओं में से एक थी। इस कविता के लिए हिन्दिरा माथी को दिल में एक खास जगह थी। अक्सर भी इस कविता को बगला में सुनाया करती थी।

हल्ता से एक माह पूर्व ही एक विशिष्टी लक्ष्मी ने उन्हें एक कविता नेजी की जिसे उसके दिल में कही महाराई में छुड़ा था। श्रीमती माथी उस लक्ष्मी का एकला चलो रे भेजना चाहती थी इसलिए उन्होंने इस कविता के कई अनुवाद कराए और उनमें छाटकर खुद अपनी कलम से उसमें फर बदल किए ताकि वो भावना वा कविता में बाहरी है वो उसमें भा सके। श्रीमती माथी ने अपनी कलम से उस लक्ष्मी को एक सत सिखा कि गुरदेव की कविता का मैंने यह टूटा फूटा अनुवाद किया है।

आह इंदिरा !

रखक भी भसक बन जाय नहीं मिलेनी कही भिगल।

कूर कमीने ह्यारा ने, कंभा रबा बिनोना बास।

छोन लिया क्यों हाथ हमसे ? इंदिरा जहा अदभुत वास।

कंभा बिधि का बचपत वास, चौकाकुल है चाल भास।

—प्रकाश प्रकाशक (सीपीए)

इन्दिरा हत्या-योजना का ब्लू प्रिंट कनाडा

स्थित उग्रवादियों ने मेजा था।

मह दिवसी ६ नवम्बर। विश्व प्रथममन्त्री श्रीमती हिंदिरा माथी की हत्या के विषय में केन्द्रीय गुप्तचर ब्यूरो को कुछ ऐसे सूत्र मिले हैं, जिनसे हत्या के षडयन्त्र में कुछ विदेशी सगठनों का हाथ होने तथा उन के द्वारा कुछ कविताओं के माध्यम से आतिया फैलाए जाने की पुष्टि हुई है। इसके साथ ही इन कविताओं वाले सुराग से जांच की दिशा दी बतल गई।

गुरु मास के सूत्रा के अनुसार श्रीमती माथी की हत्या के निमित्त में गुप्तचर ब्यूरो के अधिकारों वार विभिन्न कविता को परस्पर जांचकर जांच पड़ता कर रहे हैं। वे कविता राम मनाहो साहिबा भग्यलता में अर्थात् हत्यारा सतवत सिंह उसे छाप दिवसे वाला चारणीयत सिंह को दुष्टता में पायल हाकर तीसरा बल्य तास में मर्तों हो और कुछ सूत्रा के अनुसार विश्व माग माग बनाया जाता है, एक बरिष्ठ पुलिस अधिकारी और हत्या का एक अन्य साथी को फिलहाल हिरासत में है।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में

निर्वाण शताब्दी के श्रवसर पर

मध्य स्मारिका का प्रकाशन

अपनी रचनाएं और विज्ञापन भेजिए

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फ़िल्मी गायक महेश्वर कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कृतियों

संस्था—यश, शांतिप्रकाश, स्वस्तिवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनों-पेशाकों—

सत्यानास पथिक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीपूष, सोहनलाल पथिक, शिवराजबली जी के सर्वोत्तम भजनों के वमन्स तथा

५ बुद्धिबल विद्यालयावर के भजनों का संग्रह।

आप समाज के अन्य भी बन्त स कैसेटस के सूचीपत्र के लिए लिख

कन्टैक्टमन इन्फोर्मेन्स (संस्था) प्र नि

14 मार्किट 11 फेस 11 अराक विहार वल्ली 52

फोन 7118326 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN

— प्राप्ति स्थान —

यह कैसेट दिल्ली श्राव्य प्रतिनिधि सभा,

1४ हनुमान रोड नई दिल्ली पर भी मिलते हैं।

सत्य के प्रचारार्थ

केवल
₹800/-
सेंकेड

केवल
₹400/-
सेंकेड

मृत्युार्थ प्रकाश

यह घर पहुँचाएँ

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध संस्कृत पण्डितारण करनेवालों के

आकार (20×30 15 पृष्ठ ४२२ की दर) लिप्यप्रचारार्थ

(23×36—16 पृष्ठ ४२० की दर)

आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट

४५५, रवारी बागाना, दिल्ली-६ दूरभाष : 23४360/233112

30वें संस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

श्रद्धा-सुमन

सत्य का सदा छाया अनन्त ने, रही सत्य की परम्परा ने।
छलबाता रहा सदा अपने को कभी न पाश्चै हठा कदम ने।
बलिपथ पर हो खलता सीरो का कम रहा है।
निम्न और नुड निश्चय उनका मन रहा है।
बलिपथ के अन्तिम छोर पर अमर व का कुम्भ मरा है।
जो भी है उस छोर पे पहुँचा उसने उसका वरण करा है।
बलिपथ के ये धनुयायी, युगपुरुष सभी कहलाते हैं।
जनमानस की सेवा कर, ये सभी अमर हो जाते हैं।
मानवता के लिए समर्पित हुए महा अनमिन बलिदान।
उनम हुआ आज नवाभक्ति, इन्दिरा जो का नाम।
मुझे अपने अभिक्रम के मारत का ऊँचा मान किया।
जो भी निश्चय लिया देशहित पूर्ण उसे तत्काल किया।
मुम अमर हुई मुम अमर हुई मुमको प्रणाम हुमांग है।
मुम परम सत्य मे लीन हुई, मुमको प्रणाम हुमा है।

—आनन्द रत्न कपूर

इन्दिरा दहेज-हत्याओं के विरुद्ध प्रबल जनमत पैदा करने की पक्ष मे थी

दिवान प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भारतीय महिलाओं के जीवन स्तर और उनकी स्थिति में सुधार लाने की प्रबल समर्थक थी लेकिन वह यह भी चाहती थी, कि भारतीय महिलाओं भारतीय समाज की बड़ी समस्याओं को ध्यान में रखकर अपनी समस्याओं पर विचार करें।

उनका विचार था कि हमारे देश के महिला आंदोलनो जहाँ पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त करने का लक्ष्य है और भारतीय स्थिति में बहुत अन्तर है। उनकी इच्छा थी कि महिलाओं को अपने व्यक्तित्व का इस ढंग से विकास करना चाहिए कि समाज के जित न उसका अत्यधिक प्रभाव हो सके। उन्होंने स्पष्ट किया था कि जैसे पुरुष और महिलाओं न एकजुट होकर भारत की आजादी के लिए संघर्ष किया था उसी प्रकार अब भारत न विकास और प्रगति के लिए एकजुट काम करें।

॥ आश्चर्य ॥

आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय
(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये) के लिए

दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

सारा नाम बैंक मनीषाई/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्वी माता चतुर्वेदी आय चर्मरोग नेत्र चिकित्सालय सी १, जनकपुरी नई दिल्ली १८

के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर प्रकट किए जाएंगे।

निवेदन

रामगोपाल खानवान मरसक लुचदेव महाशय धर्मपाल बामप्रकाश भाय
चिकित्सालय एक प्रधान दिल्ली भाय प्रति प्रधान भाय मन्वी महाशय
सा० आ० प्रति० मन्वा, निधि मन्वा केंद्रीय मन्वा चूनीलाल चेरि डू
सौत्र यने महा मन्वा श्री डूग प्रा० विविदि ८ ४० की नगर चौकी नकल न
नई दिल्ली ११००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,
हरिद्वार की औषधियां
सेवन करें

शाखा कार्यालय - ६३, गली राजा केदारनाथ

नम नं० २६६८३८

बागड़ी बाजार, दिल्ली-६

गुरुकुल चाय
आपकी दृष्टि को
आपकी शक्ति को
आपकी शक्ति को

भीमसेनी सुरमा
आपकी शक्ति को
आपकी शक्ति को
आपकी शक्ति को

पारोकिन
आपकी शक्ति को
आपकी शक्ति को
आपकी शक्ति को

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी
हरिद्वार

दिल्ली भाय प्रतिनिधि मन्वा के लिए जी० आ० बमराव भाय द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा माटिया प्रेस, २५४४ रजपुरा नं० २,
बागड़ीनगर, दिल्ली ११ मे मुद्रित १११ हुनुमान रोड नई दिल्ली-१

जोन ११०१५०

रवि नं०, बी (सी०) ७५६

ओझ्म आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

वर्ष ६

अंक ३

रविवार १८ नवम्बर १९८४

आय नव नर १९८० म३३०८४

३ मागशीष २०४१

दयानन्दाम्—१५८

इन्दिरा जी का निधन मानव मात्र के लिए महती क्षति सभी राष्ट्रवादी शक्तियां शहादत से सीख ले : अखण्डता की रक्षा करे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दोबारा हाल में शांति-यज्ञ व श्रद्धांजलियां

नई दिल्ली। इन्दिरा गांधी युगमानवी थी, वह भारतीयता का जीवन्त प्रमाण थी, यह अत्यन्त बेद की बात है कि पञ्जाब के लोगों ने जहाँ लाजपत राय मदनलाल खीरा और मगत सिंह जैसे शहीद बीज राष्ट्रवादी रहे थीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की जमन्य हत्या का अपराध किया। ११ रविवार ११ नवम्बर को प्रातः १० बजे बीजान हाल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा थीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में आयोजित एक श्रद्धांजलि सभा में लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जख्खर ने उक्त उद्गार प्रकट करते हुए आगे कहा— युद्ध आत्मा, कम व तपस्या से ही यह युगिल पाप बीजा जा सकेगा। कितने दुःख की बात है कि रक्तक हो मसक हो गया। ठीक उही प्रकार जैसे एक बाक ने साधु के बेग में सतत इन्दिरास के बाड़े पर कम्पा कर लिया था।

इस अवसर पर केन्द्रीय ऊर्जा मन्त्री श्री पी. वित्तसकर ने थीमती इन्दिरा गांधी के शिडीय गुणों व बहादुरी की प्रशंसा की। प्रमुख पत्रकार श्री बीजान हारका कोसला ने थीमती गांधी की राष्ट्रमाता की सत्ता केते हुए आनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा में साधवैशिक सभा के प्रधान आत्मा रामगोपाल आलवाले, दैमिक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री बिनोद कुमार मिश्र आदिसमाज के मुद्रय विद्वान् मयासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती आदि ने दिवगत आत्मा की श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व एवं कार्यों से प्रेरणा लेन का आह्वान किया।

शांतिस्थियों के विषय कायवाही हो

श्रद्धांजलि सभा से पूर्व दिवगत आत्मा की संपत्ति के लिए शांति यज्ञ किया गया। सभा में एक प्रस्ताव स्वीकृत कर घोषित किया गया कि देशी विदेशी उग्रप्राणवादी, अलगाववादी शाक्तों के हस्त प्रहार से भारतीय राष्ट्र की जमाता जि आकाशवाणी की प्रतीक थीमती इन्दिरा गांधी की श्रद्धांजलि हत्या से भारत की स्वतन्त्रता एकता अखण्डता और प्रगु-सत्ता की रक्षा उन्हीने शरीर की अन्तिम बूढ़ तप भारत माता की बेदी पर बलिदान कर था।

थीमती गांधी एक महान् आत्मा थी उन्हीने भारत की अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अस्मानजयक स्थान दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निवाही। उनका निधन केवल भारत के लिए ही नहीं आर्यु आर्य मातृभूमे के लिए एक महती क्षति है। इस अवसर पर सभी राष्ट्रवादी शक्तियों की खणकी शहादत से सबक लेकर राष्ट्र



ऊर्जा मन्त्री श्री पी० वित्तसकर श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए।

बाएं से लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जख्खर माधवैशिक सभा के प्रधान श्री आलवाले को आध्यक्ष श्री मरहाहा आया।

इन्दिरा जी शताब्दी की सबसे महान् महिला

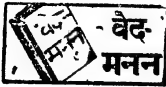
आयसमाज सत्यन के प्रधान प्रो० सत्यदेव एन० भारद्वाज ने ब्रिटन स्थित भारतीय उष्णायुक्त की मातृभूमे भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की सत्यन मेजकर भारत की प्रधानमन्त्री थीमती इन्दिरा गांधी पर किए कायरतापूर्ण आतक हत्ये की तीव्र आसना करते हुए थीमती गांधी को इस शताब्दी की सबसे महान् महिला घोषित किया है। आशा है कि पूज्य परम्पराओं का मानन करते हुए भारत को समृद्ध शक्तिशाली और बलदे देशों के लिए अग्रकण्ठीय बनाया जाएगा।

पुलिस अधिकारियों की सराहना

आयसमाज बीजान हाल के प्रधान श्री सुयदेव एन० वित्तसकर ने पिछले दशे दौरान आदमी कोक में क्षत्र में स्थानीय जतता की जान माल की सुरक्षा में स्थानीय पुलिस अधिकारियों की दूरदृष्टिता व काम कुशलता का सराहा है कसत महा में किसी आत्मिक श्री स्थान की क्षति नहीं पहुँची।

श्रद्धांजलि निमित्त हवन अन्न-कीर्तन

रविवार ११ नवम्बर को सप्त सत्य एव विद्वत् वि की समाज के अध्यक्ष आचार्य अग्रगण्य देवे के सां निधय में १३ थीमती एस्टेट नई दिल्ली २ में विविध श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर दिवगत प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की स्मृति में श्रद्धांजलि परक हवन अन्न-कीर्तन किया गया।



परमात्मा सब सृष्टि के उत्पादक

आर्यसमाज को आय का एक प्रतिशत या अधिक क्यों ?

—राजेश्वर

स्वयम् पारे रजसो ज्योमन स्वभूत्योना बबसे भूतलन ।

नकृषे भूमि प्रतिमानमोजोतिं स्व परिपूर्येया सिधम् । ॥ ५८ ॥ १।२।१२॥

भागरिस सज्ज ऋषि, इन्द्र देवता,
निर्गुणेश्वर, छन्द, वैवत स्वर ।

अन्धा—हे परमेश्वरभूत परमात्मन् । [स्वम्] आप [स्व] इस सत्ता के [रजस] पृथिव्यादि सब लोको (सत्ता) [ज्योमन] आकाश के (भी) [पारे] पार पार्यो परे ही (और) [स्वभूत्योना] अपने अनन्त ऐश्वर्य या पराक्रम के विराजमान हो के [भूतलन] दुष्टो के मन को कर्षण प्रभावित करिस्का करके हुए [बबसे] (हमारी) शक्ति के लिए [परिपूर्ये] सब पर कर्तमान और सबको [एवि] प्राप्त हो रहे हो (किञ्च प्रापन्) [ओस] अपने कर्षण प्रभावित प्रान्त सामर्थ्य के [प्रतिमानम्] अवधि सहित लोक मान के [भूमिम्] भूमि को (क) [स्व] कुछ विशेष भय लोक, (वा) [शिवस] परमाकाश अथवा सर्वोपरि कर्षण को (और) [भूय] प्रसरित लोक का बल (इत सबको) [आकर्षण] प्रभो प्रकाश दे रहा है।

अन्धा—[परिपूर्ये] सर्व प्राप्ता प्राप्त गगनादि विविध प्रकार के सब लोक लोकात्मनो की ठीक परिमाण से ज्ञान-पुरुष रचना करने वाला परमात्मा ही है। बहु धनम् है बहु इस समस्त सृष्टि के अन्तर और बाहर भी व्यापक हो रहा है। उसका कार्य कोई भी सा सकता। बहु धनस्त ऐश्वर्य या अनन्त बल वाला भी है।

और हमारी रक्षा के लिए दुष्टो के मन को सदा विरस्तार कर रहा है जिससे उन को पाप करने समय भय, शका व लज्जा उत्पन्न होती है और फिर भी यदि हम कुछ करते हैं तो इस लिए कि हम इसके लिए पूर्ण पुरुषार्थ नहीं करते हैं बल्कि जिस को हम बनाए डारा जासकायध (प्रधानमन्त्री) मुख्यमन्त्री आदि) बनाते हैं वह ऊँचे जाकार का बच्चा बसलान मन वाला नहीं होता और अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता। यदि हम अपनी सहायता स्वयं नहीं करेंगे, तो परमात्मा हमारी सहायता नहीं करेगा।

भाषार्थ—परमेश्वर सबसे उत्तम और सब दुष्टो से परे अपने अनन्त ज्ञान का अनन्त सामर्थ्य के इस समस्त भगत को धर्मपुत्र रचना करने वाला है और सर्वत्र व्यापक होकर इन सब लोकानो को की ठीक व्यवस्था को कर रहा है और सब चीजों को उनके वाप-पुष्पो का फल यथोचित देकर पूर्ण स्वाधीन सिद्ध हो रहा है। ऐसे ही समस्त (प्रधानमन्त्री अथवा मुख्यमन्त्री) को भी चाहिए कि ठीक साधन द्वारा प्राप्ता को कुछ देवे अर्थात् कोई बोर-आऊ, हवापार, छली, कपटी, विषयी, गुह्यारी, आलसी अथवा विद्याहीन देश में न रहे और प्राप्ता की रक्षा पूर्णता करे।

बी १०३, नीतिबान, नई दिल्ली-४६

भारत में आर्यसमाज के प्राचीन सगठन व विवेक में राष्ट्रीय सगठन प्राथमिक (कम से कम १० सभासद) आर्यसमाजों से भाग का १० प्रतिशत लिया करते हैं। प्राचीन सगठनों की प्राथमिक आर्यसमाजों से शिकायत रहती है कि प्राथमिक सभासदों की आय के बसाबा अन्य आय (किराया आदि) का भाग नहीं मिलता प्राथमिक आर्यसमाजों परेशान हैं कि समासत् उनकी आय का एक प्रतिशत नहीं देना चाहते। बहुत कोड़े से ऐसे समासद हैं जो लेखका से एक प्रतिशत या अधिक देते रहते हैं। अभी अधिक आर्यसमाजों तो ऐसी ही हैं जिनके सारे अधिकारी भी १२ नही देते हैं। सभासदों में बड़ा तक प्रेरणा भरने की बात है वह कार्य तो पुरोहित एव वरिष्ठ कर करते हैं। सगठन या प्राथमिक समाज के अधिकारी जो व्यवस्था को इस प्रकार से करे कि एक प्र० मिल ही जाए, बहुत इससे भी अधिक हो मिले। प्राथमिक आर्यसमाज ने जो उपनिवेश-पुस्तक हो इनसे निम्न सूचनाएँ हो—१ समासद बनने की शिक्षा, २ नाश। इसके साथ बर्न-व्यवस्था-निष्ठा-उत्पत्ति आदि की वस्तुका मान रहे उपनाम नहीं हो। ३ पिता का नाम या पति। अथवा पत्नी। नाम, ४ स्वधर्म नाम। निष्पत्ति स्त्री समासद हैं जो उसका बन्ध, पति का नहीं। ५ व्यवसाय। अपनी मेहनत की आय का साधन। ६ पुत्र प्राप्त। जिससे पिट्टी मिले, साथ ही कोई बर पशुनामा चाहें तो पहचन हके। ७ स्व धर्मित आय —

अपने शारीरिक या बौद्धिक धन द्वारा प्राप्त भाग को एक भाग है। यदि मेहनत की कमाई से बचत होती है जो अधिकारी (बैंक) में बना है तो उसका भाग भी। साथ ही अपनी मेहनत से कोई मकान बनाना या बनाए हैं तो उनका किराया भी।

उपनिवेश पत्रिका में दिनांक १ से ३१ तक सकेतित होती है। अतः सभासद अपने हस्ताक्षर जितने दिन चाहिए, उस दिन कर देना। भाग प्रयोग को जो स्थान है उसमें भी सभासदों के हाथ की निष्ठा-वट होनी चाहिए। कोकार एक प्रतिशत आदि की रसीद अपने हाथ से बनाए। समासद स्वयं ही भाग प्रयोग को अपने का अधिक उत्तरदायी बानेगा। आर्यद्वी के लिए जो बागा (कासम) है उसमें से तीनो सोत मिले जायेंगे। हर जोत में जो भाग उस भाग विशेष में होवे वह समासद द्वारा लीजा जाय।

जिना मेहनत की आय भी हो जाही है। जैसे अन्धारा। भाग या कर्ष के को

उपहार मिलते हैं—यदि कुछ, तो उसका भी सकेत हो। पिशा या दाश आदि की ओर से निशा धन व उसका भाग भी जायबाद व उसका किराया ये तो उपहार हैं ही। उसकी पत्नी अधिकारी से किसी प्रत्यय में उसको कोई वस्तु मिले या धन-सम्पत्ति आदि ये सभ उपहार ही हैं। कारण इनकी प्राप्ति से उसकी अपनी मेहनत तो कुछ है नहीं। सगठन आर्यसमाजों से प्राप्ति चाहे बिनाह के समय अथवा बिनाह के बाद में बहुत तो सारी उपहार है।

आर्यसमाज, वेद प्रतिपादित भागम पद्धति को स्वीकार करता है। किसी भी प्रकार का वधपात या वैयक्तिक अथवा धर्महीन अधिकार वैयक्तिक नहीं है। भागम अन्ध की बढाती है, सब ओर यानी ६ विधाओं को ही है उनके लिए अय्य करता है। अतः भाग्य समासद होने को सार्वक करता है तो पितृव्य-मातृव्य पत्नी के काला-पिता के वध सा अय्य किसी से किसी भी प्रकार का उपहार नहीं दिया जाए। 'उपहार' है जो मासिक या वार्षिक भाग है उसका एक प्रतिशत ही क्या बहु तो पुरी ही भागवत्भाग को ही जानी जाय। यदि समासद कुछ अन्य लोक कल्याणकारी उद्यमों का भी सदस्य है तो उपहार को भाग में से उनको भी ले सकता है। परन्तु भाग्य समासद के लिए योग्य तो यही है कि कम रहित-नैतिक अधिकारी आदि की आय स्वयं के उपयोग में नहीं ले। ऐसा होने से आर्यसमाजों की भाव जटित से बच जायगी। एक प्रतिशत स्वयंभावाय देने से ही आर्यसमाजों को भाग बन्धी भाग में बढ सकेगी।

समासदों की भाग का एक प्रतिशत या अधिक ? इस बारे में हर प्राथमिक आर्यसमाज में परिचर्चा हो जायगी की जाए। किस किस प्राथमिक समाज में किसने सदस्य एक प्रतिशत देते, मिलते अधिक प्रतिशत देते। ये आर्यद्वी को एकत्र किए जाए। एक प्रतिशत या अधिक भागों को पराधिकारी का प्रतिनिधि बनाने में बरीयदा दी जाए। सार्व आर्यसमाज सगठन को योग्य है कि सब भाग पत्रों में बहु नियन्त्रण प्रस्थापित कराए। प्राचीन-राष्ट्रीय सापेक्षिक समा की भाग बढाने का वातावरण इस गति से बनना।

स्वाध्याय-मुक्त

गणेश कुटीर, दोहालाल नगर,
जयदेवर-१०१०१



धर्म की दुहाई ।

महामारत के युद्ध का प्रमाण है। औरयो और पाण्डवों की सेनाओं के मध्य भोजन युद्ध चल रहा था। औरयो के रहते ही प्रधान सेनापति भीष्म पितामह और युध द्रोणाचार्य युद्ध में से बिदा हो करके थे। औरयो की सेनाओं का नेतृत्व योद्धा कर्ण को सौंपा गया था। कर्ण ने एक वर्षाकार बाण छोटी पर चडाकर फेंका चतुर सारथी भी कृष्ण ने रथ के पीछे की लगातार लीचकर उन्हें दुष्टों के पर डेठा दिया। रथ नीचा हो गया, पिटुह पृथ्वी में गड गए, कर्ण का तीरछिपर पुर गुजरते हुए उसके शिर को मिरा गया, युद्ध के नियमों के अनुसार कर्ण को युद्ध बन्द कर देना चाहिए था, परन्तु वह युद्ध करता रहा, श्री कृष्ण ने पहिलू को निकाल दिया और अपने न लबता रहा, कुछ ही देर में अर्जुन के तीर से कर्ण बेहोश हो गया, अर्जुन ने युद्ध बन्द कर दिया।

इतने में कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी में जस गया, कर्ण ने अर्जुन को सभा-धर्म की दुहाई दी तब भी कृष्ण ने उत्तर दिया—जब भीम को जह्द-भरा भोजन दिया था, तब तुम्हारा धर्म कहा गया था, जब बाबा कुली संवत पा०० को के जलन के लिए लाक्षणिक का निर्माण किया गया था, तब तुम्हारा धर्म कहा गया था, तेरह बरस का बनवास गुप्त होने पर जब तुम लोगों ने पाण्डवों का राध नहीं लीटाया, तब तुम्हारी धर्म की दुहाई कहा गई थी, अकने बालक अमिमन्त्र को छह महारथियों द्वारा मारते समय तुम्हारा धर्म कहा गया था आतासी लोनों द्वारा धर्म की दुहाई सोना नहीं देती। मैं कर्ण लखे लगा, उसका बाण से अर्जुन ने सुन ही लिया। अन्तर पर कर्ण पहिलू को पडे से लकालने लगा, तब तक अर्जुन संवत हो गया था, उसने कर्ण के सम्मुखने ल पहिलू ही उसकी धर्म पर निशाना बना दिया।

—नरेश

अथवा न् शांतिप्रद हो ।

बोझू वनो मित्र । व वन वनो प्रवासस्थान ।

व न हन्ती बहुल्यति सनो विष्णुवृक्षकम् । ॥ ७० १-१० ६,

यन् ७३६, वर्ष १९६६

मित्र स्वरूप अथवा हमारे लिए सुखकारी हो, सर्वेच्छ परीक्षेपर सुखदायक हो, त्यागकारी ईश्वर हमारे लिए शांतिप्रद हो, नियामक हन एव सर्वविधो बहुल्यति तथा कल्याणकारी विष्णु रूप परीक्षेपर हम सबके लिए कल्याणकारी हो ।

ओम्

आर्यसन्देश

शक्तियों के संघर्ष में हमारा वायित्व

आर्यसमाज सामान्यतः प्रत्यक्ष राजनीति में भाग नहीं लेता, परन्तु वह राष्ट्रीय रामरज पर चले बने हुए हिंसक राष्ट्रविरोधी घटनाओं की उपेक्षा भी नहीं कर सकता । पिछले दो-तीन वर्षों से देश के परिस्थितियों के बीच प्रसार के हिंसक राष्ट्रविरोधी अलगाववादी कृत्य हो रहे हैं, जिनसे देश का यह स्वदेशीय जीवन सन्तुष्ट हो उठा था, उसे निम्नजगत् करने के लिए जून के प्रथम सप्ताह में केन्द्रीय सरकार को आतंकवादियों के अन्तुष्टर स्थित गड का निम्नजगत् करने के लिए सैनिक कार्यवाही करनी पड़ी । उस कार्यवाही के बाद प्रथम में स्थिति कुछ निश्चित हुई कि ३१ अक्टूबर के दिन भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी की उनके सुरक्षा सैनिकों ने ही हत्या कर दी । इस घटना से सारा देश स्तब्ध एवं किन्तु अविश्वस्य सा हो गया । देश का विषय है कि कुछ गुप्तवादी लोगों ने इस घृणित कृत्य पर अपनी प्रशंसा व्यक्त की । यह देश की बात है कि इसकी भी अत्यन्त भीषण प्रतिक्रिया हुई । देश के अनेक स्थानों पर अन्धधन्यता और अराजकता स्थापित करने की कोशिश की गई । यह उतनी भी बात है कि प्रारम्भिक अवस्था के बाद अब देश के शांति स्थापित हो गई है ।

देश में शासन बाहे किन्हीं की दल का हो, परन्तु प्रत्येक राष्ट्रवादी को कुछ मौलिक बुनियादी विषयों में स्पष्ट नीति प्रगोषण करनी चाहिए । आधुनिक प्रजातन्त्री राष्ट्रों की तरह इसे यह प्रगोषण करना चाहिए कि देश उन्नति कैसे करे, वह किस प्रकार की नीति-नीति प्रगोषण करे, वह किस प्रकार के बाह्य को मान्य करे, उसमें स्वतन्त्रता रखने के बावजूद राष्ट्र को आंतरिक अन्धधन्यता एवं बाह्य आक्रमणों से सुरक्षित करने के लिए किसी प्रकार का मतभेद नहीं होना चाहिए । गम्भीरों के राजा चित्रमण्डल द्वारा मोरव पक्ष के नेताओं को गिरफ्तार करने पर युधिष्ठिर द्वारा अपने भाइयों की ही हुई सीख हमारे लिए आज भी माग्यपूर्ण हो सकती । युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को परामर्श दिया था—कोरव ने ही और हम भाई पाव । हमारे बापकी विद्या का मान्य हो सकते हैं, उन्हें सुझाने के लिए हमें यत्नशील होना चाहिए । परन्तु यदि हमारे विषय कोई बाह्यी शांति आए हो हमें मिलकर एक सौ पाव के रूप में अन्धधन्यता करना चाहिए । आज हमारे राजनीतिक तथा स्वस्थ प्रजातन्त्री की इस पीढ़ी को मानकर राष्ट्रीय अन्धधन्यता के कार्य करें तो अनेक समस्याएं सुलभ सकती हैं ।

हमारे साथ हमें यह भी स्मरण रखना होगा कि भारत की स्वतन्त्रता देश की केन्द्रीय सत्ता के दिवंग होने से अनेक बार खतरे में पड़ी है । जब-जब केन्द्र कमजोर हुआ, देश बंट गया और विदेशी यहाँ प्रमुख स्थापित करने में सफल हुए । इसी के साथ हम यह भी नहीं सुन सकते कि हमारे देश में जयन्त, और गीराज और हमारे गृहपर पंचमांगी सदा रहें हैं, जिनके बोध से देश का पराजय का सामना करना पड़ा । देश की प्रजातन्त्रता की हत्या सुझा सैनिकों द्वारा साक्षी विदेशी युद्ध की भुल सेने के कारण हो सकते हैं । स्पष्ट है कि हमारे देश में वह राष्ट्रप्रतिष्ठा, अकारणीय और नैतिकता नहीं है जो हमारे देशों में है । देश भर में—कम से कम आर्यजनों में नैतिकता एवं अर्थिक के अनेक मापदण्ड को स्थापित करने में आर्यसमाज अपनी यक्ष्मि भूमिका प्रस्तुत कर सकता है । भारत में ईश्वरी आसुरी शक्तियों के संघर्ष की घड़ी में कुछ सहस्र-सहस्र का शक्ति सन्धे आर्यजन अपनी सन-सन बन की बहुल्यि देखर शास्त्रीय मस्कीति एवं वैदिक मानवीय उत्पन्नान की प्रतिष्ठा में अपनी गौरवपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं ।



आर्यसमाज सगठन और पौरोहित्य अधिष्ठाता

सांवेदिक-राष्ट्रीय-प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि समाजों में वेदप्रचार कविष्ठाता हुआ करता है । ठीक ऐसे ही पौरोहित्य अधिष्ठाता भी हर स्तर पर हैं । सांवेदिक का पौरोहित्य अधिष्ठाता, सुचनाएं प्राप्तकर्ता रहे, राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिष्ठाताओं से । उनका मार्गदर्शन भी करता रहे । इसी प्रकार से राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिष्ठाता प्रवेश पौरो अधि, जिला पौरो अधि किया करें । जिले स्तर पर जैसे पौरो अधि हो जैसे ही हर प्राथमिक आर्यसमाज में पुरोहित हो । सबकी विधि (शास्त्रीय-आधुनिक-सामाजिक) उन्नति करने की समता उत्पन्न करना भी एक कार्य है पौरो अधि का । जिला पौरो अधि के बाये प्रथम (या कि तत्परातिता) स्तर पर पौरो अधि बन सके तो बहुत अच्छा । अन्यथा तब तक जिला पौरो अधि प्राथमिक आर्यसमाजों का कोष (ग्राम पंचायत या नगर सभ्य) तक रहे । सत्तल योग के माध्यम से शास्त्रीय-आधुनिक उन्नति तथा परिवार (या कुटुम्ब) मधुरता से सामाजिक उन्नति करने का स्वतः प्रयास पौरो अधि करेंगे । गोष्ठी या विधिर कोई भी एक माध्यम बनाया जा सकता है इस कार्य के लिए ।

आर्यसमाज यवन में जो पुरोहित सब आर्य समाजों की परिवार (पत्नी-संतानों) गोष्ठी कराके ही नियमित रूप से । आर्यसमाजानुसार भाव पत्नी, भाव पुत्री (या पुत्री) इन इनकी गोष्ठीया भी कराई जाए । अलग-अलग तथा घुरे परिवार की सम्मिलित गोष्ठीयों के अतिरिक्त पुरोहित हर समाज के परिवार में जाया करें । जहाँ सबकी सम्मिलित तथा व्यक्तित्व चर्चाओं के माध्यम से पारिवारिक स्वास्थ्यवर्द्धन करें । ताकि समाज के परिवार जनों में परस्पर मित्रता-अनुत्तरा बढती रहे, मोर ये परस्पर व्यक्तित्व विकास करते रहे । यह कार्य सत्तल प्रभाषणों की हो सकता है कि जो आर्य समाजस्थ नही है वो 'आर्य पुरोहित' को बुलाते लें । पुरोहित हर समाज की सत्तानों का पुरा विवरण भी रहे ताकि आर्य पुत्र (या पुत्री) के विवाह सम्बन्धी माग दर्शन कर सके । कार्य का विवरण पुरोहित रहे, प्रथम (या जिला) पौरो अधि की । ऐसे ही प्रवेश-राष्ट्रवादीकरीकरी पौरो अधि की विवरण जाये । यदि कोई समाज रंवार हो । तो उस क्षेत्र के पुरोहितों को प्रशिक्षित किया जा सकता है ।

—रामस्वरूप द्वारा स्वास्थ्य-सुख, गणेश कुटीर, गेडाताल माग, अक्टूबर-१९७०१

“महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और इतिहास चिन्तन”

विज्ञानी के प्रत्यक्ष से समुचित देश में एक प्रत्यक्षी उत्साह फैल गया और हमने समग्र विद्या कि देश सगठित हो गया । परन्तु समुचित समाज रूपी पौरो अधि है दराई और छिद्र मुक्त रूप से काय किया करते हैं । उनके कारण हम किसी उच्च आदर्श को विरहाल तक बनाए नहीं रख सकते । विज्ञानी ने इन दराई को बंदी की बनी बनाए रखना चाहा । वह युगपत के आक्रमण से एक ऐसे हिन्दू समाज की रक्षा करना चाहता था, जो आधुनिक के विभाजन और अलग-अलग को ही जीवन का स्वस्थ समझता है । वह विषमता से भरे हुए पाप-अशुनी समाज को समुचित आरत का विधान बनाया चाहता था, इसलिए मानो वह बापू की दीर्घाई के अन्तर्गत रहा था । यह अन्धधन्यता को सम्भव बनाने आ रहा था । जाति पात से मुक्ति तब तक होनी थीतरी से फटे और बिखरे हुए हिन्दू समाज का आरत जैसे विद्यास महाश्री पर स्वस्थ स्थापित करने मनुष्य की शक्ति से बाहर और निसर्ग के विरुद्ध है । (शिवाजी एण्ड हिज डाइम्स, पृष्ठ-४३०-४३७)

अर्थका यर्षन्त पौरा, जोकरा कुञ्ज, शारीबाय रोड, बम्बोदर २६००१

स्वामी यथानन्द और महात्मा गांधी

दि ७ अक्टूबर के आयमदेश में डा कमलेश्वरी गोकना में उपपुस्त गीपक लेख के अन्तर्गत महात्मा गांधी के स्वामी यथानन्द एवं आर्यसमाज विषयक विचारों की सुन्दर विवेचना की है । वहा यह स्मरणिय है कि २६ मई १९२४ से 'यय इण्डिया' में महात्माजी ने सत्तावर्षप्रभाषण को एक निराशाजनक युक्त तथा स्वामी यथानन्द को सहिष्णु, अनुदार तथा हिन्दू धर्म को सहीमें बनाने वाला आदि लिखा था । कालान्तर में दिल्ली के साक्षात्कार में मल्लिनाथ शीपक पुस्तक लिखकर महात्माजी को इन आपत्तियों का उत्तर दिया था । यह पृष्ठ १९३३ में प्रकाशित हुआ था । इसका उद्घाटन इन्होंने हीकीकरी शीपक से प्रकाशित हुआ ।

डा अमलीवाल शारीबाय, पच्छीयग

दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

— डा० सत्येन्नु बिद्यासकर

हजारों पर्यटक प्रतिभास भारत से बाईसह और सिंगापुर जाते हैं। उनमें से कुछ पूर्ण विद्या में और भागे बहकुर हाग-काग तक चले जाते हैं और कुछ आधात तक। पटकको के लिए ये दश विषय आक-रक रहते हैं। सिंगापुर और हागकाग कस्टम्स की (आयात कर से मुक्त) नगर हैं। वहा टीसीबिन, चिबिया, ऊनी बल्म और बीबीयो आदि सस्ते मूल्य पर प्राप्त किए जा सकते हैं। आधुनिक, भौतिक सम्पत्ता का उत्कर्ष आपात में देखने को मिलाता है। और हागकाग तथा पटाया (बाईसह की एक नगरी) विभासिता के प्रसिद्ध सन्देह है। इन सब की ओर पर्यटकों का आकर्षक होना सदा स्वाभाविक है।

पर सिंगापुर के दक्षिण-पूर्व में इण्डो-नेशिया के ओ पी ई, उनको और भारत के पटकको का बसी ध्यान नहीं गया। प्रकृति की रमणीयता तथा आधुनिक सुख-सम्पत्ता की दृष्टि से ये द्वीप विश्व के किसी भी पर्यटन-स्थल से कम नहीं हैं। बासी द्वीप में अनेकरी, आस्ट्रेलिया, जापान और यूरोप में लाखों पर्यटक प्रमग के लिए आए हैं। और दक्षिण-पूर्व एशिया में एक पर्यटन क्षेत्र के रूप में उसकी बड़ी भव्यता है। पर भारत से कोई भी पर्यटक या यात्री नहीं गयी जाता। यह बात इस कारण और भी बलवती आकर्षक की है, क्योंकि बासी द्वीप के ६५ प्रतिशत निवासी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, और धर्म तथा संस्कृति की दृष्टि से भारत के साथ उसका अनित्य सम्बन्ध है। केवल बासी में ही नहीं, अपितु इण्डोनेशिया के जावा व समूक आदि द्वीपों में भी लाखों हिन्दुओं का काम निवास है, और ये द्वीप सांस्कृतिक दृष्टि से अब तक भी भारत से प्रभावित हैं। सोलहवीं सदी के आरम्भ तक इस्लाम धर्म के प्राय सभी द्वीपों में हिन्दू धर्म का प्रभाव और बहुत के राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। उस समय तक दक्षिण-पूर्व एशिया का यह क्षेत्र बहुतरास का ही भूगर्भ था। पिछली चार सदीयों में इण्डो-नेशिया के बहुतरास निवासी को इस्लाम को अपना धर्म चुने हैं। पर अपनी पुरानी सांस्कृतिक परम्पराओं का उन्होंने परि-रालास नहीं किया है। वहा की भाषा, कला, रीति-रिवाज, त्योहार, उत्सव, मनोरंजन आदि सब पर भारत का पुरा-पुरा प्रभाव आज भी विद्यमान है। हिन्दू धर्म का बासी बहा लोप नहीं हुआ है। इण्डोनेशिया के ओ लोप हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, उनको सदा अग्रो लाभ व लगभग हैं, जिनमें से पक्कीस लाख से लगभग बासी द्वीप में निवास करते हैं, और दस लाख के लगभग समूक द्वीप में। इण्डोनेशिया के ये हिन्दू श्रीजी, माटीरम् से हुए और केनीया आदि हिन्दुओं के समान दश

वेद की बर्षों में वहा जाकर नहीं बसे हैं। भारतीय हिन्दुओं के समान ये भी हजारों बर्षों से हिन्दू धर्म का अनुकरण कर रहे हैं। बासी द्वीप तो सन्धे बर्षों में हिन्दू प्रवेश या आरंभ राज्य है। कोई-कोई भारतीय हिन्दू पिछली सदी में वहा बलव्य गए हैं, और वहा के भी कोई-कोई विद्यार्थी आदि निकले-तन व हिन्दू विश्वविद्यालय सत्त्वाओं में शिक्षा के लिए आए हैं, पर सुदूर दक्षिण-पूर्व एशिया के इन लाखों हिन्दुओं के साथ भारत का सम्बन्ध नाम मात्र का ही रहता है। गुप्तकाल के काल (चौथी-छठी सदी) के परम्परा विज्ञानों व पण्डितों की कोई भी सम्पत्ति इस क्षेत्र में नहीं गई, जिसके कारण इण्डोनेशिया के हिन्दू धर्म का भारत के हिन्दू धर्म के साथ सम्पर्क नहीं रहे गया, और सम्पर्काल में भारत में जिस परिवर्तन विद्यमान का आधुनिक वहा, और इण्डोनेशिया के हिन्दुओं के रूप में यह महत्वपूर्ण स्थान इस देश के हिन्दू धर्म में प्राप्त कर लिया, इण्डोनेशिया के हिन्दू लोग स्वपरिचित रहे।

यह सुनकर कोई बात है, कि इस क्षेत्र के हिन्दुओं के साथ सम्पर्क स्थापित करने की ओर कतिपय महागुणों का ध्यान गया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू पर्यटकों की एक मण्डली भारत से दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा के लिए गई और बाईसह तथा सिंगापुर के साथ-साथ वह जाया और बासी द्वीपों में भी गई। इस मण्डली में बीस नव-वर्षीय थे, जो सभी सुशिक्षित एवं उच्च-वर्ग के थे। परा-प-कारिणी सभा के प्रधान स्वामी जागान्म सरस्वती (अनार्य उच्च पंडित विद्यो तथा एक विद्या के साथ), चित्रकला के ज्ञान-रूपी रवि प्रताप-रंगार श्री नेन्द, धर्मशास्त्र कर्मज्ञ के प्रतिनिधि श्री लक्ष्मीनारायण आत्मा, विश्व हिन्दू परिषद् के प्रचार-मन्त्री श्री वत्सार्थ विहारी, बार्ध्वाचार्य आर्यम हृदिकर के डा० मेहता, लक्ष्मण विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डा० आदि देवबाबा, कानपुर के प्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यनारायण जायसवाल, डा० कमला प्रमदा श्रीमती रत्नमो देवी, श्री रामाशा ठाकुर आदि कितने ही सम्पन्न एवं सुशिक्षित नर-नारी इस यात्रा-मण्डली में सम्मिलित हुए थे। मैं भी इस यात्रा में साथ गया था। यात्रा की सत्र व्यवस्था ठीक तरह टूट (२०, १५ निवासिन्स इस्ट,) गई रिल्ली द्वारा की गई थी, और इस यात्रा की ओर से यात्रा का प्रबन्ध श्रीमती उषा निखा के हाथों में था। इण्डो-नेशिया की यात्रा पर गई इस पर्यटक मण्डली को मध्य बर्षों में भारतीय द्वीप प्राप्ति-पत्र रहा जा सकता है। तीन दिन बैंगकाक तथा पटाया का परिभ्रमण

कर २५ सितम्बर, १९८४ की रात के नी बसे हम जकार्ता पहुँचे। जकार्ता जावा का सबसे बड़ा नगर है, और इण्डोनेशिया की राजधानी है। उसकी जनसंख्या ७५ लाख से भी अधिक है। शाम चौकत और सांस्कृतिक रंगाने में वह किसी भी आधुनिक नगर से पीछे नहीं है। जकार्ता की भूमि पर पर रकते ही मुझे राजा गुणवर्मा का स्थान आया, जो छठी सदी में इस प्रदेश का शासक था। उस समय इस नगरी का नाम जकार्ता न होकर ताकम था। राजा गुणवर्मा में बहा एक नहर का निर्माण कराया था, जिसका नाम 'मसी' था। पन्द्रहवाया नहर वहा पहले से विद्यमान थी, जिसे पूर्ण वर्मा के पिता राजाविजय ने बनवाया था। मोरोठी नहर के निर्माण के पुरा हो जाने पर राजा गुणवर्मा ने एक हजार बर्षों बादको ओ दक्षिणा में प्रदान की थी। मैं शाकम नगरी के प्राचीन शिक्षा लेकों के स्मरण में मन था। नमस्ते शाकम सुकर मेरा ध्यान मग हुआ। सामन देखा, ओ इण्डोनेशिया की पारिभाषिक के हिन्दू सदस्य की गुणवर्मा राजा स्वागत करने के लिए खड़े थे। भारत से आए रहने विज्ञानों को अपने देश में देखकर उन्होंने प्रसन्नता से सभी की, और बगले विन का कायस्थ निर्वासित कर इस अपने होटल में बने गए। जकार्ता में हमने बहुत कुछ देखा, पर ६५ एकड़ के विस्तृत क्षेत्र में निर्मित लघु इण्डोनेशिया में हम विशेष रूप से आकृष्ट तथा जाग-याग आदि में बहुत वतार रहे। लघु इण्डोनेशिया में विश्व द्वीपों की संस्कृति को खोजी रूप से प्रस्तुत किया गया है। जावा, बासी, गुमात्रा, कम्बिनम (कोलिन) आदि सभी द्वीपों के लिए उची लोको के यन्त्र बनाए गए हैं। और उची प्रकार के योजन आदि की बहा व्यवस्था की गई है, जैसे कि उन द्वीपों में यन्त्रों का प्रयोग करते हैं। उनके प्राकृतिक दृश्य भी वास्तविकता के अनुकरण हैं। सिनी इण्डोनेशिया का जनसंक्रमण कर सारे देश का यन्त्रों बासी के सामने स्पष्ट हो जाता है।

लघु इण्डोनेशिया के समीप ही एक मध्य हिन्दु मन्दिर है। इस सुदूर देश के हिन्दू किस रूप से दक्षिण प्राय-द्वीपों का करते हैं, इसे देखने का अवसर हमें इस मन्दिर में जाकर प्राप्त हुआ। साथ कास का समय था। जाते के अधिक नर-नारी बहा उत्पन्न थे। जिनके के प्राय में एक ऊँचे बन्दूको पर सब बैठे हुए थे। हम भी एक ओर बैठ गए। प्राय-द्वीप-उप-

सना प्रारम्भ हुई। ओईयू धर्म व स्व के गायत्री मन्त्र के साथ सत्त्वा के मन्त्रों का उच्चारण प्रारम्भ हुआ। सब उपस्थित नर-नारीयों में समस्त स्वर में वेद के मन्त्रों तथा महाभारत आदि के लेखों के प्राय-द्वीप-उपसना की। जकार्ता के हिन्दुओं की सत्त्वा के बाव हम सबने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विहित विधि से सत्त्वा तथा प्राय-द्वीप मन्त्रों का पाठ किया। किला अनुत्तुन्य था। हम इण्डोनेशिया की भाषा नहीं समझते थे। और वहा के लोग हिन्दी से अनभिज्ञ थे पर हमें परस्पर कोझने वाली हम सबने एकालसका की भाषा उल्लन करने वाली वेद शास्त्री की वे धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा थी, जिन्हें हमने समान रूप से विरासत में प्राप्त किया था। ओईयू के नाम, गायत्री मन्त्र तथा वेदिक गुणों में महाभारत के लेखों को हमें इस क्षण से एक मननत रूप से बाध रहा था, कि संकोक वने कीत जाने पर भी उसके सुदृढ मन्त्रों में डील नहीं आई थी। की गुणवर्मा इस अवसर पर हमारे साथ थे। वह भी अपने देश के हिन्दुओं के गुणवर्मा में अन्य पण्डितों के समान ही भाग ले रहे थे। पारिभाषिक के सत्य होने के नाते उनमें उच्च व श्रेष्ठ होने की भावना आधुनत नहीं हुई थी। हमारे स्वागत में जकार्ता के हिन्दू मन्दिर में बसना की भी व्यवस्था की गई थी। हमने इण्डोनेशिया के हिन्दू भाष्यों के साथ बैठकर सत्त्वा, मन्त्राल, धाम, ब्रह्म आदि महर्षि किए। सब को यह अनुभव कर रहे थे, कि तो सुदृढ मन्त्रों के ही हिन्दु संकोक बर्षों के परम्परा काज फिर मिस कर एक साथ बैठे हैं। मैं और संस्कृति की उमने ऐसी एकात्मता है, जिसे हम हजारों मीलों की दूरी बिधिस कर सही है और न संकोक बर्षों का अन्तराह।

ओ दिन जकार्ता का परिभ्रमण कर हम लोग जकार्ता गए। यह मध्य जावा का प्रमग नगर है। ओ पीछे का विशाल बौद्ध महापरिचल उसके ओ पीछे है। उस की गिती ससार के सात आर्यों में की जाती है, जिसे देखने के लिए कपरेई यूरोप, जापान आदि सत्ते देश के लाखों प्रतिवर्ष लोग जकार्ता जाते हैं। इण्डो-नेशिया का एक धर्म द्वीपस्थता है। जिसके सीरेन बर्षों राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। इण्डो राजधानी कीविजय भी। सीरेन राजा बर्षे प्राय-द्वीप में। अपनी धार्मिक का विस्तार करते हुआओं सदी से उन्होंने जावा को भी जीत लिया था। श्रीविजय (गुमात्रा) के इस वैभववासी बौद्ध सम्राटों ने ही जावा में योगजकार्ता के समीप कोरोबोर के महापरिचल का निर्माण कराया था। महापरिचल भी विशाल बन्दूको व बन्दूको से मिसकर बना है, (शेष पृष्ठ पर)

9/44 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति नगर नई दिल्ली 16 फोन 538608 537987 537364

समाज का कार्य देश-विदेशों में फैलाएं

दयानन्द के आदर्श पर चलें : ऋषि मेला सम्पन्न

इस वर्ष बीसवीं की परवर्त १०१ वा समारोह अबेर स्थित ऋषि उद्यान में दिनांक २७, २८, २९ अक्टूबर की बुधवार से मनाया गया। समारोह के अन्तर्गत पर बुधवार की रातन ऋषिवासी से ऋषि उद्यान स्थित विद्यालय परिसर में यह सम्पन्न किया गया। २६ अक्टूबर को विद्यामित्र मेधावी कुलपति गुरुकुल तिरापु के ब्रह्मायुध से बस का प्रारम्भ हुआ।

वेदशास्त्र का कार्य श्री० रामवीर शास्त्री, ५० यदुनोहर शास्त्री, ५० रामदेव एण प्रो यमवीर बाटि विद्वानों ने सम्पन्न किया। स्वामी जीमानन्द जी सरस्वती डा० सत्यदेव बाटि के परामर्श पर हुए। इसमें बतितरिख इस अवसर पर कार्य कल्या महाविद्यालय की छात्राओं तथा भवनोपदेशक श्री पन्नालाल जी पीयूष ने अपने मधुर संगीत और भजनों के माध्यम से कार्यवाही का परिचय कराया।

अन्तिम दिन २९ अक्टूबर को यशपाला में विविध कार्यक्रम समाप्त दीक्षा का सम्पन्न हुआ। कर्मपथेन भागप्रस्थ ने स्वामी जीमानन्द जी महाराज से सत्यास की दीक्षा लेकर देश में भुव-भुव कर भागप्रस्थ के प्रचार का सन्देश दिया।

यज्ञ के अवसर पर अलग-अलग विषय की श्रीकृष्ण शास्त्रा श्रीमती कमला शारदा श्री कर्मचारी जी पुनः संपलीक, श्री यमसिंह जी कोठारी संपलीक श्री पुनम चन्द जी आनंद व अन्य अनेक स्वामीय एण बाहर से पधारि सभानों ने यजमान बनकर अपनी श्रद्धा पूर्ण ऋषि उद्यान की।

ऋषि मेले का विविध प्रारम्भ यज्ञ के पश्चात् पञ्चांगोत्सव से हुआ। २७ अक्टूबर को प्रातः काव यज्ञ के उपरान्त सभा प्रधान कार्य भगवत् के प्रसिद्ध सत्यासी स्वामी जीमानन्द जी महाराज ने यज्ञ का उत्तोलन कर ऋषि मेले का प्रारम्भ किया। इस अवसर पर स्वामी जी ने कार्यभार का भाङ्गान किया और बाह्य भाव समाज को वेद और विवेक से ऊँचा करने के लिए सखित होकर हमें बड़ी सत्कथा से अपने व्यक्तित्व पर कार्य को छोड़कर वेद-वेद तक सत्य के लिए जाना चाहिए।

कार्यसमाज अतिथि के तत्पश्चात्कार्यकारी

प्रधान—श्री रीतनलाल, उपप्रधान—श्री वमरलाल, मन्त्री—श्री कृष्णकुमार उपमन्त्री—श्री विद्यादीपाल, कोषाध्यक्ष—श्रीमती कमला जी माटिया, निदेशानिरीक्षक—श्री श्रीमन्महाशय शर्मा

दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक लीखाया

(पृष्ठ ६ का खण्ड)

मन्दिर का यह सुविशुद्ध परिवार किन्तु प्रथम एव कार्यक्रम होता, इसकी कल्पना में ही प्रसन्न है एक सांस्कृतिक यात्रा तथा यज्ञ का भाङ्गान होने लगता है।

शिव-महादेव के विद्यालय मन्दिर के बतितरिख अन्य भी बहुत से मन्दिर प्रारम्भन के को न में हैं। इनमें चण्डी कासमन, चण्डी सरी, चण्डी मे-पुत और चण्डी सर जोधपुर के मन्दिर उल्लेखनीय हैं। हमने इन पर भी दृष्टिपात किया और यह सत्य स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आ गया कि अब से कुछ सदी पुनः तक सम्पन्न जाया में हिन्दुधर्म का प्रचार था।

अब जाया के बहुलक निवासी इस्लाम को अपना चुके हैं पर उन्होंने अपनी सत्कृति का परिचय नहीं किया है। प्रारम्भन के मन्दिरों का दर्शन करते हुए हमने एक कृष्ण परिवार से बातचीत की। पृष्ठ पर बात हुआ कि वे सब सुसलमान हैं, पर उस परिवार की सुशिक्षी का नाम सुखी था। और सलमान ने दुष्कृत तथा सुखी। जाया में सर्वत्र यही दशा है। हम चाहते थे कि पूर्वी जाया की जाए। इसकी सदी के द्वितीय चरण में इन्डोनेशिया की राजधानी पूर्वी जाया के केन्द्र होने प्रारम्भ हो चुकी थी। वहाँ के सब राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे, और उन्होंने बहुत से मन्त्र व विद्यालय मन्दिरों का निर्माण कराया था। पूर्वी जाया के इन मन्दिरों ने सु-

भावा मन्दिर सभ से प्रसिद्ध हैं। समय के अनुसार से हम इनका दखबीकन नहीं कर सके। इस बीम में बीम वाली दीप जाना चाहते थे जो वर्तमान समय में भी वस्तुतः एक हिन्दू प्रदेस है। २८ अक्टूबर को तीसरे पहर हम बावों की राजधानी नेमपसरा पहुंच गए थे।

ए-११३२ सफरजग एन्सेब, नई दिल्ली-२६

ऋषि मेले पर टकारा चले

महर्षि दयानन्द बन्ध स्वामी टकारा में टकारा ट्रस्ट की ओर से ऋषि मेला १६, १७, १८, फरवरी १९८५ को मनाया जाएगा। दिल्ली से एक विशेष रेलगाड़ी का प्रस्थान किया जा रहा है। इस समय ऋषि दयानन्द बन्धस्वामी टकारा में अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, गोवाला बाहर से जाने वाले बतितरिखों के लिए अन्तिम गृह बाटि कार्य बुधवार रूप से चल रहे हैं। जिन कार्यों पर ट्रस्ट का अवाई साक्षर रूप बाधक व्यय हो जाता है। ऋषि मेले के अवसर पर ऋषि सगर की ओर ट्रस्ट द्वारा नि शुल्क व्यवस्था होती है। बत ऋषि भक्त दानी महाशय इस के लिए अधिक से अधिक दान की राशि महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा पिन-२६३६५० अथवा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के उप कार्यलय—आयसमाज मन्दिर माग नई दिल्ली को बैंक, डाक अथवा मनोबाहिर द्वारा भिजवाने की कृपा करें।

गुरुकुल होशंगाबाद का समुचित विकास होना

दिनांक २१-१०-८४ को गुरुकुल होशंगाबाद में व्यवस्था समिति की बैठक हुई जिसमें निर्णय किया गया कि, गुरुकुल की (कृषि गोशाला) यज्ञ शाखा का विकास सुव्यवस्थित रूप से किया जाएगा। गुरुकुल होशंगाबाद की व्यवस्था पर आय प्रतिनिधि सभा (५० प्र० विरम) ११२००० रु० प्रतिवर्ष व्यय करती है। इस भागामी वर्षों में ६० एकड़ जमीन हरित कृषि के माध्यम से बाटे को कम किया जाएगा।

* वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्म गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सम्पन्न—यज्ञ, शान्तिप्रकाश, स्वातंत्र्यवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनों पर शोके—

सत्यपाल पथिक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूष, सोहनलाल

पथिक, शिवराजवती जी के सर्वोत्तम भजनों के केमेट्स तथा

प बुद्धदेव विद्यालकर के भजनों का संग्रह।

आय समाज के अन्य भी बतल से कैसेट के सूचीकरण के लिए लिख



कन्ट्रोलिंग इन्डोनेशिया (एशिया) प्र लि

१४ सखित ॥ पेश ॥ अज्ञात विहार वलती ५२

फोन ७११८३२६ ७४१७० टेलैक्स ११-४६२३ AKC IN

— प्राप्ति स्थान :—

महर्षि कैसेट दिल्ली भाग्य प्रतिनिधि सभा,

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली पर भी मिलते हैं।

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Paris Beauty

पैरिस ब्यूटी

गोवर
सन्स



ब्रा, पैन्टी, बनियान, अन्डरविअर व बेबी पैन्टी आदि

पैरिस ब्यूटी सैल्स कापेरेशन्

२६६५ ए/२ ब्रिजम सूर्य अजयलम रजो रोड
कॉलोन बाग नई दिल्ली-११०००४
दूरभाष ५६९२२४ ५७४२००-५८२०३६

ऋषि निर्माण शताब्दी
हम मिलकर सभी मनाएंगे

ऋषि निर्गन्धर्व-दासी हन, मिथकार सती भगएए॥
 देव बन्यकार दयावान् नुम, सर्वेस सुभाएए॥
 सहराएए बौम पताका, दयानान् नुम बसाएए॥
 उडे सुभाए, सुभाए हन की, वेद मन गुभाएए॥
 होवा बरायण चासिमन, सकट डूट भगएए॥
 कर नव बनिधा बन्यकार, सब भाग दशाएए॥
 सती करये प्रेम परवर, दुष्कृष्णहार मिताए॥
 निज देश धरं प्रेम, मन, मन, बौध्म कण्ठ सिसाए॥
 पावन शैलिक शव इरिया, भूले उडे भगए॥
 है वेद प्रभासित सख ज्ञान, जन-जन को पाठ पढाए॥
 ग्रथ, भाग मायक द्रव्यो ले, दनाक दूट मिताए॥
 दहेज जाविक कुमुदए, ले, ले, दनाक कएए॥
 सन दिध्या नव-विहार प्यार की, बन्दी मरुद भगए॥
 करकट विचार मिताए को, सुख सात सुभा बरहाए॥
 ऊष, भीम बीर प्रेम-भाषी हन, सकल को ले भगए॥
 निज निधि पावन्की हन, मिथकार सती भगए॥

अभिष्ठाता वेद प्रचार विभाग से०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती,

वेदविद्यालय गौतमनगर में विद्यवांशति महायज्ञ
श्रीमह्यायन वेदविद्यालय, ११६ गौतमनगर, नई दिल्ली-४६ में १८ नवम्बर से ६ दिसम्बर ८४ तक विद्यवांशति महायज्ञ स्वर्णाय प्रथममग्नी श्रीमती इन्दिरा गांधी के पवित्र सपनों को साकार करने के लिए चारों वेदों के ऋषि पारामर्श महायज्ञ के माध्यम से सम्पन्न होगा।

यज्ञ समय—प्रातः ६ से ९। साय—३ से ६।

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,
हरिद्वार की औषधियां
सेवन करें

शाखा कार्यालय - ६३, मसी राजा केदारनाथ

જોન નં. ૨૬૬૮૩૮

बाबडी बाजार, दिल्ली-६

अधन्य हत्या की निन्दा

वार्धसमाज सल्लापुड़ा वाराणसी के साप्ताहिक अधिवेशन में एक प्रस्ताव द्वारा मान्य की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की जयन्ति हत्या की निन्दा की गई। वार्ध समाज सल्लापुड़ा का होने वाला ३८ वा वार्षिक उत्सव जो १५ नवम्बर से १८ नवम्बर ८४ तक होने वाला था उसको स्थगित किया गया।

॥ ओ३म् ॥

आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय
(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपए) के लिए

दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

सारा वान चेक/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री माता चन्ननदेवी आर्य बर्माथं नेत्र चिकित्सालय, सी-१, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८
के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदकः

रामनोपाल शालावाले सरसरक	सुयदेव	महाधय बमपाल	ओमप्रकाश बायें
चिकित्सासय एब प्रधाण,	दिल्ली बायें प्रति-	प्रधाण आय	मन्त्री महाधाय
सा० बा० प्रति० सभा,	निधि सभा	केन्द्रीय सभा	मुन्नीसाल बेरि
सौमन्य से महाधिपा ही ह्दी प्रा० लिमिटेड, ६/४४ कीलिनय	औद्योगिक जेन		
			नई दिल्ली ११००१



दिल्ली कार्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री डा० बर्मपास द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा आदित्य प्रैस, २५७४ रजपुरपुरा न० २,
बाबाीनगर, दिल्ली-३३ में मुद्रित ११५, हुनुमान रोड, बर्डी दिल्ली-१ को न ३११५० रजि० न०, डी (सी०) ७५६

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक मुखपत्र

शुक्र एक प्रति १० पैसे वर्ष ६ अंक ४ रविवार २५ नवम्बर १९८४ आर्य सन्देश १९६००५३०८४ ३ मासकीय शु० २०४१ बि० दवानन्दाब्द—१३८

निर्वाण शताब्दी को निर्माण कार्य में बदल दो-सभा प्रधान

दिल्ली में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी, व्यापक स्तर पर दिसम्बर १९८४ के

अन्तिम सप्ताह में मनायो जायेगी।

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री सुप्रेम ने बताया कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा दिसम्बर १९८४ में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी आयोजन कर रहा है। इस अवसर पर अत्यन्तमात्र का महत्त्व पर पहुचाने के लिए सभी के विभिन्न स्तानों पर यज्ञ, मन्त्र एवं वेदोपदेश आयोजित किए जायेंगे। प्रधान श्री श्रीमयाश्री श्रीर धर्मदत्त तिल के कार्यक्रम समुहिक रूप से केन्द्रीय स्तान पर आयोजित किए जायेंगे। वेद तथा आर्य वेदों के आधार पर सविज्ञा ईष्ट छत्राकर अत्यन्तमात्र का जनसाधारण में प्रचार करने हेतु विस्तृत किए जायेंगे। दिल्ली के प्रत्येक भू में ग्रामी पुनर्वास कार्यालयों और विभिन्न बस्तियों तक में हनुमान् सङ्घों के अत्यन्तमात्र का सर्वत्र पहुचाना चाहते हैं।

सभा प्रधान ने दिल्ली की सभी आर्यसभाओं, सभी समाजों की ए. बी. स्कूलों तथा अन्य आर्य सभाओं के अधिकारियों तथा सभी महानुभावों से अपील की है कि वे इस कार्य को सुचारु रूप से करने में लगन, धन, बल से सहयोग दें। क्योंकि सहयोग के बिना हम कार्य अत्यन्त रूप से सम्पन्न करना सभा के लिए सम्भव न हो सकेगा। उनके अतिरिक्त धर्म का उपयोग आर्यसमाज का सर्वोच्च धर्म-धर्म पर पहुचाने में किया जाएगा। नूतने आयोजनों का आह्वान किया कि वे निर्वाण शताब्दी को निर्माण कार्य में बदलने, सिद्ध दूरी शक्ति लगा दें।

हरियाणा प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन

आर्यवीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन जो कि गत ३४ नवम्बर को नूतन तथा प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था। अब राष्ट्रपति ने वह माननीय श्री श्रीमप्रकाश जी (राजीव), हनुमान् साक्षरद्विक आर्य प्रतिनिधि समा, नई दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित। तथा विस्मर दत्त खन्नावार एव रविशार की भीमनगर मुद्रागम में होगा। इसमें १००० आर्यवीर युवा मण्डल में भाग लेंगे। देश के मूल-मूल आर्य विद्वान् भी सम्मेलन को अन्तिम कर देंगे।

आर्यसमाज पाण्डव नगर का पांचवा

वार्षिकोत्सव

६ दिसम्बर १९८४ रविवार को प्रातः ६ बजे से १३ तक समस्तपुर छोड़, श्री गुलाबी की सड़क के निकट निर्वाणश्रीन आर्यसमाज मन्दिर प्लाट नं० ई-१६१ रायच नगर में बड़े समारोह से मनाया जाएगा। आर्यसमाज के उत्साही एवं कर्तव्य सभा श्री निवासावर ने बताया है कि इस अवसर पर बड़े-बड़े स्थायी, महात्मा एवं उपदेशक तथा मन्त्रोपदेशक पधार रहे हैं। आर्यसमाज पाण्डव नगर की २०० वर्ष की वृद्धि दात में निम्न गई है। इस पर निर्माण कार्य चल रहा है। सपरिचार पधारकर यज्ञ नाम उदघोष। इस अवसर की यज्ञागार का विस्तारवास्तु प्रसिद्ध उदघोषपति श्री विद्या प्रकाश जी सेठी कर रहे। यज्ञ निर्माण पर लगभग दो लाख रुपये व्यय होंगे। यह सारा व्यय दानी महानुभावों के सन्धिक सहयोग से ही होगा। आयोजनों से आग्रहा है कि अधिक से अधिक सहयोग करें।

श्रीमती इन्दिरा गांधी के ६५वें जन्मदिवस पर चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय का संकल्प

—श्रीमप्रकाश आर्य

महाशय युगीसाल कैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित माता चन्नन देवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं वास्तु द्वारा प्रातः काल यज्ञ के पश्चात् श्रीमती इन्दिरा गांधी जी को मन्दाजलि देते हुए प्रतिभा की नई किशत गांधी की प्रति प्रतिमान मन्त्री के २० सुग्री कायक के अत्यन्तमात्र का निवारण में कोई कसर छोड़ कर नहीं रखी जायेगी।

स्मरण रहे कि गत गांधी के लगातार यह चिकित्सालय स्व प्रधान मन्त्री का जन्मदिन मनाता चला रहा है। जिसमें नेत्र चिकित्सालय ५०० से १००० तक निमुक्त नेत्र आर्यदेखन किए जाते हैं। हजारों बच्चों एवं ग्रामी में जाकर हजारों नई बहनों के नेत्र परीक्षण किए जाते हैं और बचाववा बाटी जाती है। स्व प्रधान मन्त्री जी के २० सुग्री कायक के अत्यन्तमात्र चिकित्सालय में एक चलता फिरता नेत्र चिकित्सालय बनाया है, जो ग्राम ग्राम में जाकर जहाँ नेत्र बिना किसी जाति धर्म आदि भेद भाव के परीक्षण करता है, तथा राष्ट्रीय एकता का भी प्रचार करता है।

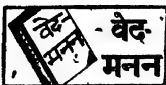
अखिल भारत वर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार

समा की श्रोर से विदेश यात्रा

सभा प्रधान श्री रामलाल मलिक ने बताया कि इस विनी विदेश यात्रा के लिए दिल्ली शाख में २३३८५ रात्रि को ६ बजे बंकाक के लिए प्रधान होगा। पटम्बर (बंकाक) वार्डनेश कुआला लम्पूर, पिंगा (मंगोलिया) सिगापुर, बम्बई होते हुए दिल्ली २४८५ रात्रि २ बजे वापस पहुँचेंगे। विस्तृत निवारण के लिए आर्यसमाज क्रोलवाग १६७४५८ आर्यसमाज बनारसकी ३४३०१८ श्री रामलाल मलिक ५६७२६२ ५६७२५१ पर सम्पर्क करें।

प्रधानमंत्री राजीव गांधी के लिए दीर्घायु कामना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की निमज्ज हस्ता पर दिल्ली की विभिन्न आर्यसभाओं की विशेष बैठकों में शांति यज्ञ श्रद्धाजलि मण्डल आयोजित की गयी। इन बैठकों में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की दीर्घायु के लिए भी कामना की गई। आर्यसमाज अथवा नगर सन्धी नगर में और दक्षिण दिल्ली में प्रचार मन्दिर ४० आर्यसमाजों तथा केन्द्रीय आर्य मुख परिसर दिल्ली में उपरोक्त आर्यधर्म के प्रस्ताव शाल हुए।



परमात्मा सबको ३. चर्छ
प्रकार जानता है हम
भी उन्हें जाने ?

—प्रेमनाथ एडवोकेट

विजानीह्ययान य च अस्यबो बहिमत रन्धयाशासद्व्रतान ।

साकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेना ते सघतादेषु चाकन ॥ ऋ० १।५१॥

आगिरम मय्य ऋषि इन्द्र देवना
विराड जगती छ द ऋषत स्वर ।

॥ शायं हे मन्त्रको यथा योग्य
 ज्ञानेन वान ईश्वर । आप [आयान]
 धार्मिक विद्वान् पर्योपकारी मनुष्या को
 [विजानाहि] विषय रूप से जानने हो
 [न] और [ने] जा [दस्य] को
 हाक विचारणाधारी मूल स्वार्थी बनाय
 मनुष्य है उनको भी जानन हा । आप
 कृपया यह जा दस्यु है इनको [विहित]
 उनम सत्य ध्यानाहार आदि की सिद्धि
 ना करि मयन क लिए [र दम] ममल
 वद शक्ति वीजिए (तथा) प्य भाषण
 द्रष्टव्य वीज से रहन आचारविशेषो पर

समस्त जगत अदभुत रचना करने वाले हैं। और समस्त धार्मिक हाकर इन मां होकर लोकांतरों को आने के अवसरों को कर रहा है। जो मां अपने जीवों को उनके पाप पुण्यों का फल भोग्योक्ति कर पुण-भ्यापन करने लगती हैं। ऐसे ही समा- (प्रधान मंत्री जयप्रसाद मुखर्जी) को जी चाहिए कि ठीक सासन द्वारा प्रज को सुख देने अर्थात् जीं और शास्त्र-हत्यारा छली कपनी विषयों के बुझारी देश में आसली बगुना विभाहीन में और प्रजा की रक्षा वा उसका पालन पुनस्तथा करें।

श्री १०२ नीति बाग नई दि ली ४६

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की देश-व्यापकता

सत्यव्रत सिद्धान्तालंकारः

गुरुकुल निष्ठा प्रणाली व मूल
निष्ठाले के विषय में पूजा आ सकत है।
किन्तु भाष्य परीक्षे में भाष्य व्यापकिक
है। क्या उह किम्बा तब किया आ सकत है।
है आज का गुरु उह ज्योसे पुर पवनत
क निग नैया मुहो उहो सुमारे प्रणाली
मनार गुरुकुल निष्ठा पद्धति म प्रतर्निहि।
है प्रथम प्रश्नको जवाब आ परप्रणाली
जीवन बिज्ञान नही चाहता। कहू कहाँ
है कि- ये गप नही करुना दूसरो को तरह
आहोत को दिखयो। उह आहोत का
समझा बाहिये समझोये मे पुरर कभी
सावर बाहिये सदिया म नीजर तथा होत
चाहिये आहोत प्रभावत जिये रेखितो
तथा लीजीवन बाहिये। सस सबहिये
उधका वेदन हिमोदित बढाव बाहिये।
म जतन तथियो का मान्न है है वेतुको
अपहानि क समझ मान्न है म पिता का
सा उमे मान्न है मन्न है उनक लिये
गुरु पूर मनारभा सवक है वतन व
ह। गुरुको मान्न का ह प्राधान्य को
बा नरह वहे अवन गुरु व गुरु मकर
सममान्य देवे के लिए नैया नही आ
प्राज्ञाकाविक के शिष्य पुरमान्न म रहत
हम प्रमन्न मरुता का दिशा बतयो। बहो
तन निष्ठा मरुता म मनु को मान्न का
अनुसर करते का क्यु है गुरु को शिष्य
को उमेक होमियाण क्यु क्यमान्न को
हुआम को दीमणन है जोर कुछ नही को
आज जिन्दा बडा विद्यालय है उतनी
बने तथि गुरु को र्थिकक स्थान म
पध्यातो तथि गुरु को हो अन्य थावर
रह स्थानो मे पध्या जाता है परन्तु

पब्लिक स्कूल के नाम से उनमें एक सैकड़ों गुणा ज्यादा लिया जाता है। पब्लिक स्कूल—यह एक जालू सिक्का हो गया है न इसमें पब्लिकपना रहा, न स्कूलपना रहा। पब्लिक स्कूल यह नाम रख लिया ताकि ज्यादा अनुना शुल्क वसूल किया जा सके या बच्चों को भ्रष्टाचारन महान सिखा दिया जा सके।

ऐसी स्थिति में गुरुकुल के बड़े आदेश जिनकी पिछल लेख में चर्चा की गई है, कहाँ तक समयानुकूल तथा व्यवहारिक है। अयापकता वैसे ही मिलने जैसे मिल रहे हैं। आजीविका के लिए अव्यापक काम तरन बाल बच्चों का जीवन बनाने के लिए तप त्याग और तपस्या करने वाले नहीं।

शिक्षा को ही मानते हैं जो सामान्यतः एक
कारण को मानते हैं। जब धर्मज्ञ लोग पाते
आए नव इन उर्द्धवेषों से तो राजाजनों
महाराज तथा जनता का भाव भ्रमण तथा
विचलन हो गेता सो शासन करने में सुविधा
होना आसि आ प्रजापुत्रो को नृपुत्रात् इत्या
जकाराश्रय मैलन को होत। इस युग में
वैदिक आचारानुसार का ह मुद्रा। विराम से
शिक्षा के क्षेत्र में जिस आदर्शोत्पत्ति ने जन्म
लिया वह मुद्रुकुल शिक्षा प्रणाली को
आदर्श बना। प्रमुद्रुकुल शिक्षा प्रणाली को
आदर्श तथा विराम स्मृति तैपार
जाए जो प्राचीन वैदिक सङ्कलित से ओत
प्रोत हो आसीन सङ्कलित तथा आदर्शो
की जीवन में पचाइए तथा को सङ्कलित
के लिए आने को प्रजापुत्रो बना के।

इस प्रणाली का बीज ऋषि दयानन्द

इस स्वल्पावकाश में था परन्तु इसके मूल रूप विषा महीना-महीना घुराती को में गुप्त कुविद्या विद्या प्रगती को कल्प हूँकार के समीप रहूँ था। जिस समय हूरिआ के समीप काहुँ था। श्रामेय गुप्त को स्वा पना हूँ इस समय स्व पन्तना का हूरि पर्वतना के मध्य की प्रतिक्रिया का रूप हूरि विषा के लव में प्रकटल था। शिशा का माध्यमि विषा के लव गया हूरि दायन गणित व्यापित शैलिकी कादि विषा को धावकी के स्थान में हिलि में पध्या जग था, इन विषयो पर हिलि में हूरि पुनर्के प्रकाशित की गई। विषा विषी को बुद्धभासी नीर दावत में दिखिषा पर। विषाविषी की दित्तवर्ष ऐरो रलो गई डैनी में विषी की हाती है। उरतना का बार बर उरतना, वध्या-प्रशतना के लव नि उरतना प्रार को योयान जसा दद देरुऊ व्यापयान कुली जसा जसा उरतना पर हूरि हूरि सर्वो मही सवना गुप्ता बायन न कृता कादि विन वयाई हूरि रमी गई जिसे देरुकर वरसक बरस देता का वि यहा तो मीनिक तैवर विर जता है।

सरकारी क्षत्रो मे प्रमिद्ध बा कि मुद्
कुल कामको मे क्षाति के रूनिक् तयार
काइ जाते हैं। हाई किचनडर का सुनकर
साइ भेटन साइ केम्पोरल तथा बरता
निया के प्रथान म नी रम्जे योशोनाल्ड
पुनुमुने खलने के विए आए थे। वे लोग
बाहेर थे कि मुकुल सरकारी मदद न ल
ताकि काजि नासिकायिओ का सल मुकुल
जे उदासीन हा जाय। महामा मु जोराम
ने न सरकार के हाथो जाना अब्जीकार
कर दिया।

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद देश का स्वरूप बदल गया। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात् समाजसिद्धि का जन्म बहमन गया, उसमें अनुसूचि मुसुलम विद्या पद्धति का सरकार को किसी प्रकार की सहायता न देने की नीति थी बहमन थी। सरकार अपनी भी सरकार बाहरी थी कि मुसुलम विद्या पद्धति के मर्म मिटाने के लिये नही उनमें समझता प्राप्त के लिये मुसुलम पद्धति के मन्वानको के हाथ दुइ किन्ना जाए। हु कु भी जाति के मि मिताकार के मिम दुइ से हन जाति के मिम देना मुसुलम देना उही का किन्ना रूप देने से हुन समझ नही हुन। हुन सकल नही हुए—हकना यह कारण नही का हुनने सरकारी सहायता माग करना बुझ किन्ना हुन हुन कागम मगल नही हुन गोष्ठी हुन की बहामन के साथ बहामन हुन।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जो आधारभूत सिद्धान्त हैं वे शिक्षा क्षेत्र में सर्वमान्य हैं कोई उन उनसे इन्कार नहीं कर सकता। गुरु का अपने छात्रों को पुनर्गत मान कर उनके साथ जीवन बिताना, सब छात्रों का एक साथ रहना, अपने को दूसरों के साथ भाई भाई

बाई का सम्बन्ध रहना जैसा परिवार में होता है, ऊपर नीचे का भेदभाव न होना न जापतता का भेदभाव होना, जल्दी तोप जल्दी उठना सम्बन्धों पर करना, सम्बन्धों पर तब हस्तक्षेप का जीवन बिताना भोजन करना और व्यायाम बाई स घाँवर को हृष्ट पुष्ट बनाना—कौन हो शिक्षा पढ़ति है वो इन बातों को स्वीकार न करेगी। इसी का नाम बाई-बास है इसी का नाम गरुडस बास है

गुरुकुल कागरी को विद्वद्विद्यालय
को मानना प्रथम हो चुकी है, पर तु सत्य
मे गुरुकुलीयता नहीं आ। विद्वद्विद्यालय
मे छात्र साक्षिकता पर चक्कर बाधते हैं
जाते हैं, और पढ़कर अपने-अपन घरों को
बल जात हैं। प्रोफ़ेसर का भी इन्हीं हाथ
हैं। अन्य-सुखी कालों को तरफ से पढ़ा-
कर अपने घर आ बैठते हैं। रहना सगुल
उनका उठी तरह का है जसा दुखद अथवा-
पको का होता है। तथैवर्था का किसी
प्रकार का माना-माना नहीं है। व गुरुकुल
मे रहने वाल गुरुया आश्रय नहीं है
लेखपर रीढ़ तथा अप्रत्यक्ष है

गुरुकुल शिक्षा पद्धति का मुलाधार तो गुरुकुल कायदा ही है। बताया मैं गुरुकुल कायदा को दो भागों में बाटा जा सकता है। एक भाग यह कह है जो भाग पद्धति पर ही चल रहा है, दूसरा भाग यह है जिसमें गुरुकुल पद्धति के सिवाय भाग को रहने या हो जाने से नहीं पड़े भाग का गुरुकुल, गुरुकुल कहा जाने पहले भाग के लिए है रह है। पहले भाग में छात्रों को सच्चा बालक है परन्तु दूसरे भाग का गुरुकुल है, दूसरे भाग में छात्रों को सच्चा कम है परन्तु यथावत् बालक ही गुरुकुल है। एक गुरुकुलवाले ने से निकलने का उपाय यह है कि हम गुरुकुल भाग को बदला बनाए कि इस भाग में पढ़न वाले छात्र ही पढ़ने भाग में प्रवेश करें। और और तो पढ़ने शिक्षा भाग का कि पहले भाग से निकर पढ़ने में शिक्षा भाग का छात्र ही रह पाए, ऐसे छात्र जिसमें गुरुकुल के विचारों विचारों में कुछ से शिक्षा भाग का पढ़ने का रहना है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति को देख व्यापक बनाने की पहली बात यह है कि निर्दल भाग ही के विचारों विचारों से निष्कल विचारों विचारों को ही छात्र भर पाए जो गुरुकुल शिक्षा पद्धति में रह जायें बिना सोना जामना जाना पीना, बोलना जाना, देन भुजा—एक उछल गुरुकुली ही।

जहाँ तक पुस्तक शिक्षा का प्रश्न है हमें यह समझकर चलना चाहिए।
गुरुकुल शिक्षा पद्धति वास्तव में जीवन की पद्धति है। शिक्षा के साथ ही हम जहाँ सस्कृत साहित्य, दशन तथा वैदादि प्राचीन ग्रन्थों एवं उनको जिससे पर विशेष ध्यान देते हैं वहाँ पाश्चात्य विद्वानों को भी पाठ्यविधि में स्थान देते हुए एवं ध्यान में रखते हुए (यदि पक्ष १ पर)

दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

(२) बाली द्वीप में

जब हम हवाई जहाज द्वारा बाली पहुँचे तब एक अद्भुत दृश्य देखने में आया। हवाई जहाज पर बाह्य गीत की मन्था बजा था, और दार्शनिकों के लगभग बायको और गायिकाओं द्वारा मंगलमंगन गाया जा रहा था, हवाई जहाज से उतरते हुए गायिका की ओर गायिकाओं की यह मण्डली आगे बढ़ने लगी। सबके हाथों में पुष्पमालाएँ तथा फूलों के गुच्छे थे। हम कहते रहते थे कि इन्डोनेशिया के कोई मन्त्री न उच्च प्रशासक बाली आए हैं, जिनके स्वागत में यह धावोजन किया गया है। पर हमारा आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जबकि स्वागत के लिए आगे बढ़ती हुई नृत्यमणालय हमारे सम्मुख रुक गई। जे हमारी मन्थनों के नेता के गले में पुष्पमाला बाँधना चाहती थी। भार्यसमाज के मुखड़े नेता स्वामी आमामन् सरस्वती हथारे सभ थे। मेरे सकेत पर जब एक कृत्यांगना उनके गले में माला बाँधने लगी, जो स्वामी की कोमलपुत्रा हुआ। पर मेरे बन्धुगोत्रपर उन्हींके यह औपचारिक सम्मान स्वीकार कर लिया। अन्य सब गायिकाओं को पुष्पमण्डल समर्पित किए गए। बहने बाली की परम्परागत कला के अक्षरालय सुन्दर रूप से बनाया गया था। हमारे इस यात्राद्वारा स्वागत का आयोजन देव देव द्वारा किया गया था।

हमारे स्वागत के लिए बाली के अनेक हिन्दू नेता एक विमान भी हवाई जहाज पर आए हुए थे। हमने उनके साथ अपने दिन का कार्यक्रम निर्धारित किया, और हम विश्वास के लिए होटल चले गए। वनस्पति (बाली की राजधानी) के जिस होटल में हम ठहरे, वह समुद्र तट पर एक रमणीक ठगान था। निम्नान् के निम्न छोटी छोटी कुटिया बनी हुई थी। बाहर के देखने पर वे प्रोटेस्टिया दिखाई देती थी, पर उनके अन्दर आधुनिक वैज्ञानिक युग के सब सुख सम्पन्न विद्यमान थे। प्रत्येक कमरे में साय पुष्प, बायमन्था बायमन्था ठगने पानी के साथ साथ गरम पानी के जल भी थे। सब कमरों में टेलीफोन भी थे, और उनकी सज्जा आधुनिक ढंग से की गई थी, कुटी के अन्दर दूरदर्शन देखा प्रतीत होता था मानो हम रमणीक प्राङ्गनिक वातावरण के होटल पर उद्यमान में अवस्थित किसी बाल्यधुनिक होटल में ठहरे हुए हैं। लोग अकार्ता का हमारा होटल भी कुछ ही दूरी का था। जाया और बाली के भारत की ओर प्रार्थना सांस्कृतिक परम्परा अभी तक सुरक्षित है, ये होटल उनके चरित्र पर ही थे। इनके दरवाजों तक पर नृत्यमणालय की भाँती स्वागतलिया उल्लेख थीं, और हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र चित्रित थे।

२६ सितम्बर, एशिया की भाँती की उद्यमान युनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट आफ हिन्दू धर्म में एक विशेष आयोजन किया गया। इन्डोनेशिया में सरकार का एक विभाग सर्व मन्त्रालय (मिनिस्ट्री आफ रिजिजन) के नाम से भी है। इसके अन्तर्गत हिन्दू धर्म के लिए एक पुष्पक ग्राह-रेस्ट्रेंट (मिसेडालय) है, जिसके ग्राह-रेस्ट्रेंट जमरल पद पर भी पुष्प बाँधी पुष्प नियुक्त है। श्री पूज वेदशास्त्री के प्रकाशक पश्चित है। गीता, मनुस्मृति, ईशोपनिषद्, वेदाङ्गपर उपनिषद् आदि का बहु इन्डोनेशियन भाषा में अनुवाद कर चुके हैं, और आजकल वेदों का अनुवाद करते में लगे हैं। अन्येद सामवेद और अथर्ववेद का बहु अनुवाद कर भी चुके हैं, और इनके कुछ ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए हैं। इस सबका प्रकाशन इन्डोनेशिया की सरकार द्वारा किया जा रहा है। सरकार के हिन्दू ग्राह-रेस्ट्रेंट की ओर से बाली की उद्यमान युनिवर्सिटी के तत्कालीन प्रोफेसर इन्स्टीट्यूट आफ हिन्दू धर्म का प्राधान्य किया जा रहा है। हमारी बहुत इच्छा थी, कि इस सत्रायाम में जाकर बाली के हिन्दू विद्वानों के साथ सम्पर्क करें, और वहाँ प्रचलित हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। भी पुष्प के प्रत्यक्ष से इसके लिए सन्धिगत आयोजन की व्यवस्था हो गई। हिन्दू धर्म के ये महान विद्वान एक नेता हीन प्रयोगज से अकार्ता पर एक हजार मील से भी दूरस्थ बुरी पर स्थित जेन पक्षर आएँ और उनके निवेदन में हमें उस आयोजन में सम्मिलित होने का सुख-सुख मिलता था जिससे बाली के अनेक प्रमुख विद्वान उपस्थित थे। हमें यह जान कर सुख आश्चर्य हुआ कि इन्स्टीट्यूट आफ हिन्दू धर्म में जो हजारों के लगभग विद्यार्थी वैश्वशास्त्र, हिन्दू दर्शन, कर्मकाण्ड, पुराण, महाभारत तथा सांस्कृतिक इतिहास के विषयों पर पढ़ रहे हैं। भारत में भी कोई ऐसा विद्यालय नहीं है, जिसमें इतनी अधिक मन्थना विद्यार्थी हिन्दू धर्म के अध्ययन में रहें हो।

हिन्दू धर्म सत्यान (इन्स्टीट्यूट) में हमें बाली में हिन्दू धर्म का जो स्वरूप है उससे परिचित प्राप्त करने का अवसर मिला। हिन्दू धर्म बहुत प्राचीन है। सत्य समय पर उनके मूल विचार-सम्प्रदायों तथा पुष्प पद्धतियों का विकास होता रहा है। भारत में हिन्दू धर्म के किन्ते ही स्वरूप हैं। क्षत्र, वैश्य, शूद्र आदि विभिन्न सम्प्रदाय हिन्दू धर्म के अन्तर्गत हैं। अद्वैतवाद, विशिष्ट द्वाैतवाद और नैवैयाता की हिन्दू शास्त्रिक विचारधारा में विद्यमान है। प्रतिभा पुष्प के साथ साधक कर्मकाण्ड और नियुक्त ग्रन्थ

की पुष्प की भी हिन्दू धर्म में स्थान प्राप्त है। वेदशास्त्र में विद्यमान रूप से निष्ठा रखते हुए भी हिन्दुओं के विभिन्न सम्प्रदायों की पुष्प पद्धति तथा साधकिक मन्थनों में भारी अन्तर है। ऐसे धर्म में अस्वाभाविक नहीं है, कि भारत से हमारे मील की दूरी पर स्थित बाली के हिन्दू धर्म की पुष्प पद्धति तथा मन्थन भारत के हिन्दू धर्म से कुछ भिन्न हो सखाप में उसका परिचय प्रस्तुत है। बाली के हिन्दू धर्म के साथ मूल विद्वान हैं। ऐसेधर्मवाद, आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म, कर्मफल और मोक्ष। ईश्वर एक है। ब्रह्मा विष्णु और शिव एक सत्य के ही तीन रूप हैं। सृष्टि के उत्पादक के रूप में ईश्वर ब्रह्मा

— डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

कहता है। सृष्टि के पालनकर्ता के रूप में उसे विष्णु कहते हैं और जब वह सृष्टि को अपने में विघटन करता है तो उसे शिव या महेश्वरी की सजा दी जाती है। बाली के हिन्दू यह नहीं मानते कि शिव सृष्टि का संहार करता है। उनका मत है कि सृष्टि या प्रकृति की अनादि व अनन्त है। प्रलय में परमेश्वर सृष्टि का विघटन करता है, परन्तु नहीं। शिव की इस सोच-परिचय को बाली के हिन्दू विश्वेश्वरी कहते हैं। वही उनका अन्तर्गत या एकमात्र उपास्य देव है। जिसे हम मूल्य कहते हैं, वह बहुत शरीर की मूल्य होती है, आत्मा की नहीं। आत्मा की अमर तथा अमर है। पञ्च महाभूतों से निर्मित शरीर के अन्त के साथ आत्मा का अन्त नहीं हो जाता। अपने अन्त के अनुरूप आत्मा का पुनर्जन्म होता है।

मन्थनकर्म में इन्डोनेशिया के हिन्दू देवी देवताओं की प्रतिभाओं को मन्थनों में प्रतिष्ठापित कर उनकी दुष्ठा किया करते थे, पर वर्तमान समय में बाली के हिन्दुओं की पुष्प पद्धति के प्रतिभाओं या मूर्तियों को पुष्प का स्थान प्राप्त नहीं है। महा प्रत्येक परिवार के घर में एक पुष्पस्थान होता है। जिसके एक भाग को पुष्पस्थान कहा जाता है। पञ्चास में परिवार के लोग विसम्पा करते हैं। पितृव्या का अन्त वेदाचार्य से लिए गए हैं। मन्त्रोच्चारण करते हैं पञ्चात्त पञ्चाजि आता है। इस ब्रह्म-यज्ञ के अतिरिक्त अन्य धर्म भी किया जाते हैं, पर केवल विशेष अवसर पर। पितरों की पुष्प बाली में प्रचलित है और परिवार के पुष्पस्थानों का अन्त भाग हमें पुष्प के लिए प्रयुक्त किया जाता है। परिवार के पुष्प स्थानों के अतिरिक्त विशेष धाम में एक-एक स्त्रीय पुष्पस्थान (जिसे बाली में 'पुत्' कहते हैं) होता है। जो सार्वजनिक सामूहिक पुष्प के काम आता है। इसी

प्रकार प्रत्येक जिले में एक एक स्त्रीय पुष्पस्थान या 'पुत्' की सजा है और सम्पूर्ण बाली का एक सञ्चालित या साधकिक मन्दिर है, जिसे वे बाली का मातृ मन्दिर कहा जाता है। यह केवल बाली के हिन्दुओं का नहीं अपितु सम्पूर्ण इन्डोनेशिया के हिन्दुओं का सम्प्रदाय 'पुत्' है और वहाँ पुष्प के लिए सारे देश के श्रद्धालु नर-नारियों का आगमन होता रहता है। विश्व हिन्दू परिषद में इसे विश्व भर के हिन्दुओं के लिए तीर्थ के रूप में स्वीकार कर लिया है और अब भारत के हिन्दुओं के विपरीत भी इसका यही महत्त्व हो गया है, जो बालीनाथ या रामेश्वरम है। यद्यपि बाली में प्रतिष्ठा का प्रचलन नहीं है, पर कतिपय देवमूर्तियाँ अब भी वहाँ विद्यमान हैं, और जहाँ उनके प्रति भावों की रखती है। ऐसी एक प्रतिमा अगस्तो दुर्गा की है।

इन्डोनेशिया के हिन्दुओं का यह विश्वास है, कि महर्षि आर्यभट्ट ने महा भ्रातृ धर्म का प्रचार किया था। आर्यभट्ट के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा है। हमने यह अवसर युष्मा की देखा, वहाँ महर्षि ने तपस्या की थी और वहाँ रहकर उन्होंने धर्म की स्थापना की थी। अन्तर्गत के पञ्चात्त महर्षि मार्कण्डेय इन्डोनेशिया गए थे। बाली के हिन्दू यह सत्यारूप के रूप में उनका भी आस्थापक मानते हैं। पुनः-पुनः मान्य एक अन्य धर्मवादी की दक्षिण पूर्वी एशिया के लोचन धर्मवादी के लिए गए थे बाली के लोग उन्हें भी सम्मान-पूर्ण स्मरण करते हैं।

जताते के जीवन पर हिन्दू धर्म का क्या प्रभाव पड़ता है? इस विषय में श्री वास्तर शर्मा ने हमें कुछ महत्त्वपूर्ण बातें बताईं। डा० शर्मा लखन (भारत) की गोहाटी युनिवर्सिटी में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं, और गण सदा साय से बाली की उद्यमान युनिवर्सिटी में वेदुत्पन्न पर जाकर संस्कृत के प्रोफेसर पद पर कार्य कर रहे हैं। उन्हीं इन्डोनेशिया भाषा का समुचित ज्ञान है, और बाली के जनजीवन का उन्हें अच्छा परिचय है। उन्होंने हमें बताया कि सदा साय से बाली निवास में चोरी की कोई चारवात उनके सुनने में नहीं आई। वहाँ के लोग भाषण में सवरे-मनाते भी नहीं हैं। यदि किसी की मोटर साइकिलें बायस में टकरा जाएँ, और किसी को बाट भी लग जाए, पर ले लेंगे या एक दूसरे को भी लगे लगे के बलाय मुस-कराते हूँ। ओ३म् स्वस्ति' कहकर बायने-अपने रास्त पर चले जाते हैं क्योंकि वे नमस्कार पर विवेक रखते हैं, no मानते हैं कि जिसका दोष होता उसे परमेश्वर कर्मफल देगा ही, परन्तु सब से क्या साया। हिन्दू समाज का गैरही उन्मज्ज कर भीनी यानी फाहियान में भारत में (शेष पृष्ठ १५ पर)

मानव-जीवन का सर्वश्रेष्ठ मार्ग

वैदिक साहित्य और साथ ही संस्कृत साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पशुपत्नी, कौटिल्य—येगने इत्यादि योनियों के प्रति अत्यन्त स्नेह और प्रयत्न पापों के फलस्वरूप है। अथर्ववेद ४.२२ मन्त्र 'उन्मथयामु' इत्यादि के अनुसार उल्लु, भेदिना, कुत्ता, बिडिया (कोक) मिट्टा, गन्धर्व ६ राक्षसों से बचने और इन्हें अत्यन्त कर देने की प्राथम्य की गई है। इस के विपरीत वैदिक यज्ञ है जिस मन्त्र की ५ बार पढ़ा जाता है—अमृत हव्य आत्मन् के प्रजा, पशु, महाबल, अन्न और अन्न की खाने वाले—अन्नाद्य इनकी बुद्धि की प्राथम्य की गई है। यज्ञ से यज्ञ स्वतंत्रतापन के मन्त्रों में प्राण की गई है—पीपीत्यस्त बहोयजमानस्य पशूः पाहिं गोए के स्वामी हो और यजमान के पशुओं की रक्षा करो। शान्ति करण के मन्त्रों में 'समुद्रमुत्तं गाम्' 'स नो अस्तु द्विप्रे बहुयज्ञे' और 'यो शान्ति' मन्त्र में एक-दूसरे से प्रकार के पदार्थों में और उनके द्वारा शान्ति की कामना की गई है।

अमानव योनि, प्रेरक आदर्श

इसके साथ यह भी ध्यान देने योग्य साध्य है कि साहित्य—विशेषकर 'संस्कृत साहित्य' के लेखकों की विभिन्न उपमाएँ हैं, ये सब पशु-पक्षियों आदि अथर्व वेदों पर हैं। उदाहरण के लिए शक्ति पर परमपूज्य के लिए सिंह, लोचन के लिए कमल, पवित्रता और शुद्धता के लिए 'दूध' अमृत योनी अने के लिए परम हथ, मोडे स्वर और गान के लिए कोकिल आदि और प्रतीक्षा के लिए 'पातक' मन्त्र की जायना के लिए मधुकर (ममर), भारत का राष्ट्रीय पक्षी 'मयूर' आदि अथर्व वेदों में पाये जाते हैं, प्रत्यक्ष, सुन्दर नायिका के लिए तोता (कुतु), आवाज में बजने के लिए 'पातक', बालाकी-पुत्रता के लिए सोमदी, स्वर्णिमस्मित के लिए कुत्ता, सीमा सरल अर्थात् के लिए गौ, परिश्रमी के लिए बैल, अन्धकार में भी प्रकाश के लिए चण्ड, देवा और परिश्रम के लिए हानी, मस्ती और उल्लस-भूत के लिए मृग, मेहनत के लिए बैल, चमत्कार के लिए बदर, पुत्रता के लिए गीवद देवेन के लिए सप्त शरी प्रकाश योनी के कल्पद्रुम, चन्द्र, पारिजात वृक्ष, अशोक, मालवी, केतकी शक्ति, शिखा, नायिक, शाल्विक नीम, हनु (गन्ना), कपास, कटोरा, बास, सता इत्यादि के अथर्व वेदों में पशु-पक्षी, पदार्थ इत्यादि की उपमाओं से भारत का संस्कृत साहित्य भरपूर जाता है जब कि मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणि कहा जाता है।

धृव सत्य मानव सर्वश्रेष्ठ है

यह सत्य यही है कि मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि उसके पास बुद्धि, मन, भाषा सहित यह अदम्य शक्ति प्रमाणा है जिस के सहारे सबकुछ प्रमाणा परमात्मा से सब ओर प्रकाश की रायना और उसके लिए अर्पण सक्ति रहता हुआ जब पतन के अन्धकारमय गर्त से निकल हिमालय की सर्वोच्च कोटी तक पहुँच सकता है। निरव इतिहास इस प्रकार के अत्यन्त जीवन के अर्थसाथ से आपूर्ति है। अथर्ववेद में मन्त्र प्रभु से प्रार्थना करता है—

आर्षादी दीनानाथ सिद्धान्तालकार

पुण्ड्र हर्षिया अर्थशास्त्राचार्य महोदय अन्तरिक्षात् दिव्यमहोदय दिवो नाकस्य पृथुस्त्य व्योमोति राहस्य।

अन्तरिक्ष की पीठ से अन्तरिक्ष पर पहुँच। अन्त से धौलोक और धौलोक से सुक्ष्म प्रज्योति की प्राप्ति कर। पर कैसे? क्या प्रार्थना करनी? नहीं—इस के लिए नोतिहारी ने तीन मार्ग बताए हैं—

प्रथम मार्ग—पिपीलिका

१ पिपीलिका मार्ग—पिड्डी का मार्ग। मन्त्र के पक्ष के एक कोश में अथर्व वेदों में पिड्डी उल्लेख आता है। उस पर वे आना पावती है। यह मन्त्र कण की अपने मुँह में बाल पीने-पीने की भाँति बड़ी हुई छत पर बाल पीने-पीने करती है। आप ध्यान से पिड्डी के क्रिया-कलाप का निरीक्षण करें। जहाँ एक ओर बायाँ बड़ 'हो' है वहाँ साथ ही दाहिने में निम्न वे वाली चिह्नित के मुँह से मुँह लगा फर्क पर फेरे इसके बारे में यह लम्बे देवी जाती है। एक प्रत्यक्ष विज्ञान में इस मुँह और अति स्थान प्रयोग के बाद फिरका तक अध्ययन करने के बाद अपनी पुस्तक में लिखा है कि 'साधन और पारस्परिक एकता और होहार की दृष्टि से पिड्डी मनुष्य से किसी अधिक आगे है। बलुत्त योमार्ग पर चमने के लिए नियमित और बहुत जले ही स्वल्प रंग सहित प्रत्यक्ष अन्तरिक्ष में गीता में योमार्ग का निम्न उल्लेख साधक के समुच्च अर्थात् रहना चाहिए—

यत्न मैं स्वरयेत्तु दुष्टायां पुष्टीतया।
आय सत्यममर कृत्वा न कश्चिदि
विनयेत्तु। ६५५

सर्वान्—यैय के कानु की गई बुद्धि की सहायता से पीने-पीने अपने मन में साधारण विषयों के उदाहरण रहते का ज्ञाना कर। इन दोनों साधनों के बाद मन की भाषा के आधारी है। इसकी फलप्रति कही फिर किसी प्रकार की चिता

न करे।

महामात्र, उद्योग पर्व ३३।४२ में व्यासमुनि कहते हैं कि जिस प्रकार दीपक बन्धीक (अपना भित्ति से पीने-पीने कर कर बनाता है), इसी प्रकार किसी प्राणि को कष्ट न देता हुआ पर लोक सहायता के लिए भय का पीने-पीने सचय करे। नोतिहारी कहते हैं 'प्रतिबिम्ब मनुष्य अपने आचरण की प्रवृत्तान कर यह देखे कि क्या मैं पशु भाग पर चल रहा हूँ सबवा श्रेष्ठ पुरुषों के मार्ग पर। है मनुष्य। बार-बार साधना होकर यह देखे कि क्या मैं पशु तुल्य हूँ अथवा यह पशु पुरुषों की तरह। पुनःही जीवन का आन के विषय याद रखी हूँ वस्तु हो जाएगा।

२ कृषि मार्ग

हूतरा कृषि—मानव मार्ग है। सदा चरल, अन्तरिक्ष और एक जाला व दूध से हूतरा जाला व दूध पर सदा उन्नत मारते रहना। मारा जीवन इस प्रकार चमत्ता में ही नष्ट कर देता, इस मार्ग का यही परिणाम होता है।

पुष्ट ४ का लेख

देवा का जब यह मुँह देण के दातनकाल में भारत जाया था। ३० वर्षों के अनु-सार हिन्दू धर्म से प्रभावित वाली के अन्त जीवन का भाव भी यही उन्मथ रूप है। वाली के हिन्दू जन परस्पर मिलते हैं तो 'यो स्वस्ति अस्तु' कहकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। विद्या व बर्ग लोग आशीर्वाद देते हुए 'यो दीर्घायितु' तथा 'यो बलिष्मयस्तु' भी कहते हैं। वहाँ के जनजीवन पर संस्कृत भाषा के इस प्रभाव की देखकर गीत की अनुपुष्टि होती है। केवल वाली में ही नहीं अपितु अन्यत्र भी संस्कृत का यही प्रभाव विद्यमान है। वहाँ के होटलों के नाम स्वस्तिक 'अम्बर रत्न' और 'आय' आदि हैं। एक कैम नाम 'अम्बोकोह' है। इन्डोनेशिया में राजपति की 'कपाल नगर' कहा है। वहाँ की भाषा में नगर का अर्थ है राज्य और संस्कृत में मूर्धा का अर्थ है। इन्डोनेशिया के हुमाई बहूँ की दीवारों पर रामायण की कथा कथाविधा चित्रित है। बाली में अनेक करते ही यह अनुभव होने लगता है, कि हम आचार्य के ही आ गए हैं। जहाँ की प्रत्येक अर्थसाहित्य विद्या का भाव है, और जहाँ बहुत से लोगों को गायत्री मन्त्र कण्ठस्थ है।

इन्डोनेशिया में वर्मसिद्धा सबके लिए अनिवार्य है। हिन्दुओं की हिन्दुधर्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है और सबसे उत्तीर्ण हुए, बिना कोई विचारों ऊपर की कक्षा में नहीं आ सकता। यही कारण है कि वहाँ के सब निवासि अपने

३ विह्वल मार्ग

विह्वल अर्थात् आकाश में बहुत ऊँचा उठने वाले पक्षी को कहते हैं। मरसे में कुछ अर्थसाहित्य उठने वाले पक्षी की तरह उठने उन्मथ चरित के होते हैं कि सामान्य पुरुष उनकी ओर आकर्षण और प्रेम से तन्मय हो देख तो सकता है। पर उनका उस सामान्य अर्थसाहित्य कि लिए सम्मम नहीं होता। कबीरदास न ऐसे महापुरुषों के लिए ही आश्चर्य कहा था ऊँचा ऊँचा सब कोई कहे, ऊँचन में ताव खड़े।

बैठन की छाया नहीं। फल पाना अति दूर।

योगबोशनी का मार्ग—दुष्ट सुनि महाकवि कालिदास न रघुवीर के प्रारम्भ से ही भीराम के जीवन की तुलना उस भाव बल के की है जो छाया और फलो से वन्द्य है। बके छाया की इसके नीचे बैठ पूर्ण शान्ति और भूक मिटाने के लिए फल—लोभी की यथेष्ट प्राप्ति होती है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न मानव को करना चाहिए—अपने बौद्ध हस्तों के कल्याण के लिए। इसे ही योगबोशनी के प्रथम पाद में 'जीवन की बुद्धिपूर्ण' कहते हुए दीपकानि निरन्तर और अन्धकार का पालने का उपदेश दिया गया है। के सी ३० की अशोक विहार दिल्ली-४२

धर्म से परिचय रखते हैं।

बाली के राज्यपाल की मन्त्र हैं। हम उल्लेख भेंट करने के लिए उल्लेख में अपने स्वस्थ सत्य में से दस मिनिट निवास कर उन्होंने हमसे मिलना स्वीकार कर दिया। पर हम हम उनसे बात करने बैठे, तो लक्ष्य का किसी ओर अन्धकार नहीं रहा। एक बन्दे तक उनसे बातचीत होती रही। भारत की विश्वनाथनी से मिलकर उन्होंने कहा सचियों के बाद भारत के इतने विज्ञानों में हमारे देश में पदार्थन किया है। भारत से हमारी पर्यटक अमेरिका, यूरोप, जामाक आदि जाते हैं। पर दक्षिण पूर्व एशिया के इस क्षेत्र में भारतीय यात्रियों की यह पहली मन्त्रा रही है। प्रकृति की रमणीयता की दृष्टि से यह देश अनुपम है। भारत के साथ हमारा सम्बन्ध हमारी साल पुराना है। हमारी ओर आपकी सांस्कृतिक तथा धार्मिक परम्परा एक एक है। इन दशा में हमारे और आपके सम्बन्धों में बुद्धि हानी चाहिए। युद्ध आधा है, कि नॉर्थमन में भी भारत के विज्ञानों व यात्रियों की मन्त्राविद्या बाली आती रहगी। राज्यपाल महोदय न जन-प्राय द्वारा हमारा आतिथ्य किया और हमारे मान फाटो की निम्नवादी। जिस आनीयता का साथ भीमन्त्र में हम से भेंट की, उससे सबके हृदय गन्धर्व हो गए।

उसी दिन साप्ताहिक हिन्दुधर्म सत्यन में एक अन्य आनीयन हुआ, जिसमें स्वामी बोधामन्त्र संस्मृती के सिध्य महाचारी

(सब पृष्ठ ८ पर)



महर्षि का संदेश विश्व में फैलाओ

अरबी भाषा में सत्यार्थप्रकाशका प्रचार-प्रसार ।

बम्बई में महर्षि निर्वाण शताब्दी

बम्बई महानगरी की समस्त भावसमाजों की ओर है आजसमाज साप्ताहिक के तत्वाधान में रामनीला मण्डल चर्चने में महर्षि दयानन्द बख्शदान शताब्दी स्मृति में प्रकाशित की अध्यक्षता में १८ १९ अक्टूबर को मनाई गयी। कार्यक्रम १५ अक्टूबर का फिनी कलाकारों एवं संगीतकारों ने महर्षि दयानन्द की सतीतमय श्रद्धा जति से प्रारम्भ किया। श्रावणमासिका सुभी जयन्ती शिवरात्रि एवं दीपक चोहान भाई के माते हुए हम तेरे उपकर न भूलें। यह है तुमका महापुरुष तेरे हम जगा दिया गीत बहुत मराहे गए।

१८ अक्टूबर को विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों ने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाजित्वा प्रस्तुत की। बक्ताओं ने महर्षि को युगदुष्ट समाजसुधारक अथर्व विद्याका क उद्गमक एवं आध्यात्मिक संहति का पुनरुद्धारक बताया। डॉ० सुधा ने कहा 'आदि गुरु महर्षि के अथर्व विद्या के अर्थ में वेत गये वे युति का एक चलाकर दयानन्द की ओर उनके अन्तर्भावों में उहे पुन गले लगा लिया। अध्यक्षता भाषण में स्वामी म प्रकाश ने कहा 'महर्षि ने मोहिं दुष्ट समाजता एवं अविश्वास से भटकती भाव जाति को सही म गन्धन प्रकर एकता क तृप्त म बचन की काण्डिका की। २० अक्टूबर का मना म '१० अमरप्राय आय की स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा कि महर्षि के संदेश को फलने के लिए हमें जिनकी तरवार करने हूँगे जा भारतीय मरुति सत्यता का म विदेश तक पहुंचा कर सय की प्रतिष्ठा कर। डॉ० अमरेश काय न मकल किया कि वह एक लाख स यावत्प्रकाश अरबी भाषा म प्रकाशित करके स्वामी म्यान द मरुति के संदेश का वि व के कांको में पहुंचाये।

ग्रन्थियों की राजनीतिक भूमिका रोकें

हरयाणा रक्षावाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिंह

का आह्वान

हृदय का रसावहारी एवं भाव प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने एक वक्तव्य म कहा है 'दरबार महाज अमरसर के ग्रन्थियों की चर्चा प्राज्ञ कल अ न गाना तथा समाचार पत्र म हो रही है। जिस प्रकार मन्दिर म पुरोहित होन से उसी प्रकार प्रशासन म की नियंत्रण किए जाते हैं वतमान म मुख्य म की अपना म प्रचार काय छोडकर राजनीति क दलगत में फसने लगे हैं। उ होने हाम ही म विर मणि बकाशी म की तन्त्र ममिति को सय करके नष्ट ममिति का गठन किए हैं। सन्त्र प्रकाशसिंह मजीठ कायकर्मी प्रथम का इमलिए हटाया है क्योंकि उ ह न प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदरा गांधी को लोक संदेश देना चा

रामकृष्ण का आदर्श अपनाएं

नेपाल में व्यापक वेद प्रचार

श्री ५ महाराष्ट्र के जय दिवस पर दिनांक ६ नवम्बर से १६ नवम्बर तक क्षेत्रीय शताब्दी प्रकाश के प्राणय में गांधी महापुरुष तथा वेद प्रवर्धन हो रहा है। जिसमें स्वामी कात्यायन द जी श्री प रामान 'सास्त्री की प गंगाधर बास्ती उपदेशक तथा श्री दयान 'स वार्धा भजन प्रवेशक पधे हुए हैं। दिनांक १० ११ २३ को श्री रामाबा बरारी मनावाक की अध्यक्षता म हुई जिसमें अ य कीर दल के गजन प्र प्रकाश शालते बाराणा सि किशोरी की वेश के युवक और युवतिया का जीवन परिचर ऊना होना चाहिए सभी राष्ट्र की उन्नति होती है। अत राम की हृष्ट के जीवन परिचर बाहल अपना कर अपना तथा अपने राष्ट्र की ऊचा उठाएं।

गुरुकुल संस्थाओं द्वारा हमले की भत्तना

महासभा गुरुकुल विधायी हरियाणा असहाय कला (सोनीपत) एवं कया गुरुकुल सनापुर कला के बरिष्ठ सदस्यों एवं विभिन्न मिशन संस्थाओं की संयुक्त बैठक म उपस्थित सुभाषिणी देवी की अध्यक्षता में प्रस्ताव स्वीकार कर भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की निमम हृदय की कड़ी भत्तना की गई। साथ ही श्री पृ विद्याभारी हरियाणा संस्थाओं के प्रधान की० भारद्वाज के आधिकारिक निवेदन पर लोक प्रकट किया गया।

मानवता के लिए बड़ी चुनौती

सर्वजातीय सर्वस्व पचायतद्वारा

जघन्य हत्या की निन्दा

नेरी जिता रोहताक। नवम्बर की सर्वजातीय सर्वस्व पचायत के सम्मेलन म २३ भाषों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकार कर कोषित किया। प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी की उनके प्रभारकों द्वारा निमम हृदय देश की एकता और अखण्डता के लिए ही नहीं बल्कि मानवता के लिए भी बड़ी चुनौती है। साम्प्रदायिकता के जहरीले रम में रहे हुए एक सम्प्रदाय के लोगों के हाथों विश्व की महान नेता की हत्या एक अजय अपराध है और देश की अस्तित्व और एकता पर गहरी कोट है। सर्वजातीय सर्वस्व पचायत का यह सम्मेलन इस घणित अपराध और घबराव की ओर निरा करता है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की वैध व्यापकता

(पृष्ठ २ का शेष)

रखते हैं कि हमारी शिक्षा गुरुकुलीय जीवन पद्धति को अपना मूल समझ और जीवन निमाण की उस दिशा की सब मूढ समझ। गुरुकुल जीवन पद्धति एक आदोलन है जिसका उ वय उम म नव का निर्माण करना है जिस प्रचर का मानव हम समाज में देश म और विश्व में फैलना चाहते हैं। ऐसा मानव जो अथ पदान के सब प्रयोगों में से मुक्त होकर शब्द मानव जीवन का निर्माण करे। इसके लिए नीव का काम गुरुकुल जीवन पद्धति के उन मूल तत्वों का मरने से ही किया जा सकता है अथ शिक्षित हाकर भी हम अधिष्ठित रहते इस प्रकार की जीवन पद्धति का गुरुकुल विश्वविद्यालय में के प्र बनावर सभी माल हू बाहर हूर राज्य म शासन की योजना का दा व्या पक रूप देने से ही नव मानव का निर्माण हो सकता है। देश का आविष्कारता पुस्त कीय शिक्षा के साथ साथ गुरुकुलीय जीवन के सिद्धांतों को व्यापक रूप देने की है। डब्लू ७७ ए प्रटर फैलाध नई दिल्ली ५५

दंतों की हर बीमारी का धरेलू इलाज



23 जडी बूटियों से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

दंतों का डाक्टर



अब नये पैकेज में उपलब्ध

विश्वप्रसिद्ध

महाशिवजी की हठी (प्रा०) लि०

8-44 इण्डिया स्ट्रीट, दिल्ली-110002, कार्ड दिल्ली-110002, 538000 537987 537941



मसूरी की सुजन



मुह की दुर्गंध



ठंडा गर्म पानी लगना



दांत का दर्द

आर्यसमाज जयपुर का बापिकोलेमव नवनीतलास सत्यप्रिया ट्रस्ट का आनोपयोगी कार्य

आर्यसमाज भायल के ४४ वें वार्षिकसत्र पर २६ दिसम्बर को श्रीमती प्रेमशील की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन हुआ। श्रीमती उषा शास्त्री एवं माता लाज-बली श्री न. वामन समय में नारी का कर्तव्य विषय पर उद्बोधन किया। सन्ध्यासिनी श्रीरा प्रसिद्धी न. कन्दर्पती तारे का उद्वाहण होते हुए सत्यजीवता द्वारा परिवारों को सुखी करने का परामर्श दिया।

मार्च २७ अक्टूबर को नवनीतलास सत्यप्रिया ट्रस्ट के तत्वावधान में श्रीमती सत्यप्रिया बल्लविषय बनाया गया। शार्मिक परीक्षाओं में प्रथम द्वितीय, तृतीय बाने बाने छात्र-छात्राएँ पुरस्कृत किए गये। आर्य माठवाला जगपुरा को ट्रस्ट की ओर से १००० का दान दिया गया।

महर्षि निर्वाण दिवस कविराज लखानन्द की बन्धुता में मनाया गया। इस अवसर पर बंश रामफिरोर श्री कर्णवैद्य शास्त्रीजी बजलास बास्ती, श्री बल्यदेव मजनीपदेष्क ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला।

श्रीमती सत्यप्रती सदा बाय सैक्रेटरी स्कूल में धार्य श्रीरागना प्रसिध्द विवर की सफल छात्राएँ पारितोषिकों से सम्मानित की गईं।

मानव-जीवन का सर्वोच्च षष्ठ मार्ग (पृष्ठ ५ का खेप)

रामबीर तथा ब्रह्मचारी विरजानन्द वैद-
क्यों ने योगासनो का प्रदर्शन किया।

ब्रह्मचर्य के वासन तथा योगाभ्यास से
मनुष्य कितनी शक्ति प्राप्त कर सकता है

जिसे से कि मोक्ष की छत्र त
पाडी जा सकता है, इसे कियाम

देशकर सब कोई बाधवचकित र
स्वास्थ्य के दो हथार के लगभग छात्रो

तथा आचार्यों पर इस प्रदर्शन का
बच्छा प्रभाव पडा। इन्कोमेतिथा

हिन्दुओं की दृष्टि में गया जल का बहुत
महत्त्व है। ये उसे पवित्र मानते हैं। गया

के बातिरिक्त मय्या, नर्मदा, गोदावरी
बादि अन्य भारतीय नदिया भी उनकी

दृष्टि में पवित्र हैं। बहा के हिन्दुओं को
उपहार में देने के लिए हम बगानस साय

ने गए थे। उसे उन्होंने कृतब्रह्मपूजक स्को-
नार किया।

गली में हम उन कार्कण पयंटन
को के अवलोकन के लिए भी गए, पर

मिए बहा का प्रधान कार्कण बहु
त था, जिससे भातर की प्राप्ती

म था। शास्त्रिक परम्पराएं बीत-
ती थीं। हम बहा की भाषा नहीं जानते

र बहा के लोग हमारी भाषा नहीं
बनाते थे, पर वह जानकर कि हम भी

दिहू हैं उनके मुकमल पर बालीयता
के जो भाव उजागर हो जाते थे, उनके

माधुर्य को बम्बो द्वारा प्रकट नहीं किया
जा सकता।

ए १/११२ सफरखण एनक्लेव,
नई दिल्ली-२६

आर्यसमाज पहाड़गज बुना मण्डी का ४८वाँ उत्सव

आर्यसमाज पहाड़गज बुनामण्डी नई दिल्ली का ४८वाँ वार्षिकोत्सव १६ से २५ नवम्बर तक मानाया जाएगा। इस अवसर पर १६ से २४ नवम्बर तक प्रात ६ से ८ बजे तक चतुर्वेद वातक यज्ञ तथा उपदेश का कार्यक्रम होगा। इन्हीं दिनों रात्रि को ८। से १० बजे तक वेदका हाजी। २३ नवम्बर को प्रात ११ से ५ बजे तक बाय महिला सम्मेलन २४ नवम्बर को रात्रि के ७-३० से १० बजे तक बाययुवक सम्मेलन होगे। २५ नवम्बर को प्रात ८ से १० तक यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद १० से १२-३० तक रात्रि छा सम्मेलन होगा।

॥ ओ३म् ॥

आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणधीन नेत्र चिकित्सालय
(अनुमानित लागत दो करोड रुपए) के लिए

दिल कर दान दीजिए

दान की राशि आचकर

म जी० ८० के अत्यंत करमुक्त होगी।

सारा राश

मनीप्रादर/बंक ट्रास्ट द्वारा

मन्नी, माता जलनदेवी बाय

नेत्र चिकित्सालय, सी-१, जनकपुरी, नई दिल्ली-४८ के तले पर जेबा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर प्रकित किए जाएंगे।

निवेदक

रामगोपाल बालबाले सरस्वत सूर्यदेव महाधाय धर्मपाल धीमप्रकाश बाय

चिकित्सालय एवं प्रधान, दिल्ली बाय प्रति- प्रधान बाय मनी महाधाय

सा० बा० प्रति० सभा, निधि सभा केन्द्रीय सभा बुलीमास बेरि इ

संस्थान से महाशिक्षा श्री लुडी शा० निमिदित, ६/४४ कीर्तिनगर बौधोपिक सेन

नई दिल्ली ११०००

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शाखा कार्यालय - ६३, गली राजा केदारनाथ

फोन नं० २६६८२८

बाबरी बाजार, दिल्ली-६

गुरुकुल चोय
गुरुकुल चोय का उपयोग करने से आपको बहुत लाभ मिलेगा।

भीमसेनी सुरमा
भीमसेनी सुरमा का उपयोग करने से आपको बहुत लाभ मिलेगा।

फायोकिन
फायोकिन का उपयोग करने से आपको बहुत लाभ मिलेगा।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी
हरिद्वार

दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के लिए श्री बा० बमपाल द्वारा सत्याहित एवं प्रकाशित तथा माटिया प्रँव, २५७४ पुरुषपुरा नं० २, पानीपतर, दिल्ली-३१ में मुद्रित ११५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

फोन ३१०१५०

दि. १० नो. (ती.) ७५.६

आर्य सन्देश

ओम्

कृष्णन्तो विश्वमार्यम्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वष ६ प्रथम १५ दिवस १६८५ आय सप्ताहर १६०५५०५० १० मासवीय सु० २०४१ वि० दशानन्दाम्—१५८

जनतन्त्र का आठवां महाकुम्भ प्रारम्भ चुनाव रणभेरी बजी : नामांकन पत्र भरे गए

‘सुराज्य बनाने के लिए अपना मत दे’ आर्य समाज की घोषणा

नई दिल्ली। भारत के लोकतन्त्र की आठवीं ससद के लिए चुनाव घोषणा हो चुकी है। २४ दिसम्बर एव २७ दिसम्बर ८४ को लगभग ३८ करोड़ मतदाता विरम के सबसे बड़े जनतन्त्र के लिए ५१५ प्रतिनिधियों का चयन करेंगे।

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने देश की स्वतन्त्रता और जनतन्त्र के लिए सतत प्रयत्न किया है। देश के हित को आर्य समाज ने सर्वत्र सर्वोपरि माना है और ठीक उसी दिशा में प्रयत्नशील रहा है। क्योंकि यह आर्य समाज का अपना स्वभाव है, कर्तव्य है। आर्य समाज का अपना मत है कि देश के सुराज्य स्थापित किया जाए। फलतः यहाँ पर स्वस्थ स्वच्छ न्याय पराजय लोकतन्त्र प्रकाशन के लिए राष्ट्र के समस्त नागरिक विवेक से काम लेंगे ऐसी आर्य समाज की मान्यता है।

राम गोपाल शालवाले की विहार यात्रा

सफलता पूर्वक सम्पन्न

डा० दुसनराम से विचार-विमर्श

दिनांक २४ नवम्बर ८४ गया रेलवे स्टेशन पर सैकड़ों की संख्या में विभिन्न आय पत्रों के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने लावा राम गोपाल शालवाले का स्वागत स्वागत किया। रेलवे स्टेशन पर श्री प्रतिनिधि सभा के प्रधान पंडित बाबुदेव शर्मा, मन्त्री हरिदास उवाहा बार्बाबीर दल के सचिव रामाश्व वैरागी नवादा के मंत्री द्वारा का-प्रसाद आदि धातुजन स्वागतार्थ उपस्थित थे।

रेलवे स्टेशन से लावाजी आय पत्रागार मन्दिर में पधारे जहाँ हजारों की संख्या में लोग जनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लोगों ने सावधानिक प्रमाण का हादिक स्वागत किया और उन्हें पुष्प मालाओं से लाद दिया। लावाजी का ओजस्वी माधव हुआ। इसी प्रकार के कार्यक्रम विहार के अ व आय पत्रागार—नवादा रजोकी में भी हुए। पटना में लावाजी ने दुसनराम से मठ की। मठ में समस्त आयद्वजनों ने सभा प्रधान को रेलवे स्टेशन पर आय मीनी विदाई दी।

वैदिक धर्म-महासभा का चुनाव

हाल ही में वैदिक धर्म-महासभा के पदाधिकारियों का आ चयन किया गया थे निम्न प्रकार से है—

स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती—सम्पादक एव प्रधान। महात्मा आनन्द मुनि बाणप्रसी—उप प्रधान। स्वामी अश्व मुनि जी—उप प्रधान। स्वामी गारक्षा सरस्वती—उप प्रधान। डा० सुखदेव देव बाबाय (एम० ए० पी० एच० बी० रोहताक)—महा-मन्त्री। बास ब्रह्मचारियों सहित म्नायवती शास्त्री।—मन्त्री एम० ए० प्रभाकर—स्वामी भागानन्द सरस्वती—मन्त्री। श्री अरविह बाय कातिकारी—प्रचारकत्री एव कीर्ताम्बिका।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

देश में डाकघरों की स्थिति

- १५ अगस्त १९४० को स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय हमारे देश में केवल २२ ११६ डाकघर थे।
- ३० सितम्बर, १९८४ तक डाकघरों की संख्या बढ़कर १,४४ ७७२ हो गई।
- ग्रामीण क्षेत्रों में डाकघर इस प्रकार से फैले जा रहे हैं कि ग्रामीणों को डाकघर पहुँचने के लिए दूरी किलोमीटर के अधिक न चलना पड़े। पिछले और जनजाति क्षेत्रों को डाकघर जोड़ने में प्राथमिकता दी जा रही है।
- बचत करने की जादत बनाने के लिए अत्यधिक डाकघर में बचत बैंक की सुविधा है और यह देश का सबसे बड़ा बैंकिंग तन्त्र है।
- देश की कुल पाच लाख पेटिकाओं में से चार लाख से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में हैं।
- देश के विभिन्न भागों के लोगों के बीच सम्पर्क को कड़ी देने के कारण डाक तन्त्र राष्ट्रीय एकता का एक प्रभावी यन्त्र बन गया है।

भारत का समुद्री तट

- भारत का समुद्री तटवर्ती क्षेत्र ६०८० कि० मी० लम्बा है तथा इस तट रेखा पर १० प्रमुख तथा ८५ छोटे बन्दरगाहों के बलाभा अवसर छोट छोट बन्दरगाह हैं।
- हमारे देश में समुद्र में चलन वाले ८० लाख जों भार ० टों स अधिक जहाजों का नेवा है।
- भारत का विदेशी व्यापार १० ००० करोड़ ६० का है और लगभग यह पूरा व्यापार समुद्र से होता है। विदेशी व्यापार की ३३ प्रतिशत से अधिक की दुलाई भारतीय जहाजों द्वारा होती है।
- जलपटीय क्षेत्र में तेल की खान के लिए देश में २० करोड़ ६० का निवेश हुआ है और हम औद्योगिक ३०० लाख टन तेल निकालेंगे।
- हमारे पास हिन्द महासागर में अधिकतम विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र है जिसमें सैनिक एवं जैव सम्पदाओं का विशाल भण्डार है।
- भारत में समुद्री सतह के खनन में अग्रणी निवेशक की स्थिति प्राप्त कर ही है और सैनिक सम्पदाओं के विभिन्न क्षेत्रों को खान के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

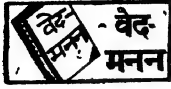
वाई० बी० चट्टाण नहीं रहे

भूतपुत्र उप प्रधान मन्त्री वष वृष्ट स्वतन्त्रता मैनानी एव देश के मध्य राजनेता की वषवत राय चट्टाण का १२ नवम्बर का दिल्ली में दशहोसा हो गया। उनको बापु ७१ वष की थे।

हिन्दु परिवर्ध के अध्यक्ष का निधन

विष्णु हिन्दु परिवर्ध के अध्यक्ष महाराजा मधनत सिंह जी का निधन हो गया। उन्हें हित का दौरा पड़ा था। वे ६० वष के थे।

अध्यक्ष—डा० गणेशोलास



परमपिता परमेश्वर न सृष्टि के आदि में बाज से एक अरब छियावें करोड़ घाट लाख और हजारों बज्र पूज मान्य-रक्षणा के लिए चार ऋषियों की भास्माभी के एक-एक वेद का ज्ञान दिया ज़रूरिए वेद का नाम श्रुति भी है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है यह तर्क सुविधा भास्य प्रमाण एवं स्वयं वेद प्रमाण से भी विदित किया जा सकता है। जैसा कि मयूकंद ने कहा है —
तस्मादप्यज्ञातं सर्ववृत्तञ्च सामानि जज्ञिरे।

छान्दामि जज्ञिरे तस्माद यजुस्तस्माद जायत ॥
(यजु० ३१।७)

यात्री उसी परमेश्वर से ही ऋग, साम, यजु और अथर्व वेदों की उत्पत्ति हुई।

एसा ही हम अथर्व वेद का एक और अर्थ लेते हैं —
जस्मायुषो ब्रह्मातसन् यजुस्तस्माद पाकभूत।
सामानि यस्य सोमामन्यभर्गाङ्ग रसो मयुज ॥

स्कन्ध ७ बृहद् कथम त्विषेयम् ॥
अथर्व १-०-३३।

अर्थात् उस (स्कन्धम्) सर्व ज्ञात की भावना करने वाले परमेश्वर की वेदों का प्रकाश जानो। ऐसे वेद तथा मनुष्यवृत्ति आदि में अपने को प्रमाण है। हम शत रूप ब्राह्मण का एक प्रमाण और भी लेते हैं—
महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी पत्निया पत्नी अर्चनी की बता रहे हैं—एव बाह्व अरे बाल्य महतो नूनम् नि स्वमिमेन्न ऋषेभो मयूकंद सामवेदान्यर्वाङ्ग रसे शत० का० १४ प्र० ५।

अर्थात् मैं मंथी। जो आकाशादि के बाह्य तत्त्व व्यापक परमेश्वर हैं उसी ऋग, यजु० साम और अथर्व यचारों वेद उत्पन्न हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर से ब्रह्मण महत होता है, वैसे सृष्टि के प्रारम्भ के वेद ईश्वर से प्रकट होते हैं और वेद ईश्वर अथर्व को जाता है, वैसे ये प्रथम ईश्वर अथर्व को जाता है, वैसे ये प्रथम ईश्वर अथर्व को ज्ञान के अन्दर विद्यमान रहते हैं। यन्मा नाय कभी नहीं होता।

अब कुछ ब्रह्मका जो साधनामान कर देता भी उचित है—

(१) निराकार ईश्वर से शब्द रूप वेद कैसे उत्पन्न ?

समाधान यह सांनिधान ईश्वर जिना मुक्त प्राण के भी उन्मा काय कर सकता है। जैसे हमने विचार के समय मुखादि की आधरवचना नहीं होती है। जन्म मायम्य-मान ईश्वर अद्भुत महाज्ञ सृष्टि की रचना

निराकार होते हुए भी करने से पूर्ण समर्थ है वैसे ही वेद ज्ञान प्रदान में भी बृह निराकार होकर भी समर्थ है।

(२) ससार की उत्पत्ति में जीव समर्थ नहीं है पर व्यकरणमादि की भाति वेद भी बना सकता है।

समाधान—जैसे मनुष्य मकान, सड़क, पुल, नहर, रेल, जहाज, रोकट आदि ईश्वर की सृष्टि से पदार्थ लेकर ही बना सकता है वैसे ही ईश्वर के लिए वेद ज्ञान के बाह्य ही भवना ज्ञान विस्तृत कर पुस्तक की बना सका है। प्रणय्या नहीं।

आगर किसी बालक को एकान्त में रखकर पाला जाय और उससे बातचीत न किया जाय तो उसे मरण पत्यन्त मनुष्यपने का ज्ञान भी नहीं हो। सभी की बिना शिक्षाये कोई कुछ नहीं जानता जैसे कि बन्धी मनुष्य कुछ भी उन्नति नहीं कर पाता है। बेरोपेय के बिना मनुष्य पशुवत ही रहता, प्रत्य रचना की बात ही क्या ? जैसे भेड़िये के पास का बालक देखा जा सकता है।

(३) स्वाभाविक ज्ञान से मनुष्यो के विकास कर वेद बनये।

समाधान—उपरोक्त बालक और बन्धनारी जैसे स्वाभाविक ज्ञान कुछ भी उन्नति नहीं कर पाते हैं वैसे ही स्वाभाविक ज्ञान, वैसा ही को समझने में मान सहायक होता है उससे ज्ञान बढ़ाकर मनुष्य अपना विकास कर सकता है। जैसे सभी की विद्वानों को शिक्षा बय या विद्वानों के प्रश्नों को पढ़ें बिना कोई भी विद्वान नहीं हो सकता है।

ईश्वर सब विद्यापुस्तक है शत वेद भी सब सब विद्याओं के पुस्तक ग्रन्थ है।

वेद में प्राति कारान्-गुरान्, गुरान् बाह्व-जिन्, मीन्, योह, बाह्व-जिन् की बातों का प्रचार ईश्वरीय ज्ञान के रूप में हो जाने तथा इनका सृष्टि-कर्म युक्त प्रमाण तथा विज्ञान से विरोध होने तथा सामान्य राशय, गहीश्वर, उन्नत, स्कन्द स्वामी, वंशस्य मूलर आदि के गलत वेद आश्यों से इनका युक्ति और सच्चाई से विरोध होने के कारण, तथाकथित मन्त्रहो की धर्म मानने तथा वेद, धर्म और ईश्वर के नाम पर एवं परस्त्री आदि के नाम पर उणी प्रारम्भ होने के कारण तथा वेद विच्छेद वेद के नाम पर प्रचार हुआ ज्ञान के कारण, वैज्ञानिक आदि इन बातों को गलत मानने लगे पर, किन्तुने भी सच्चे वेद भाष्य की जो कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पूर्ण प्रमाण गहित किया है देखा उन्हीं की भाति वेद पर वेद गयी और बही

वेद की पंथता और महत्ता का पूर्ण कायल हो गया।

जैसा कि महर्षि बरविन्द ने भी लिखा है—स्वामी दयानन्द ने वेद भाष्य कुची से भी है।

मैसूर मूलर ने कट्टर ईसाई होने के कारण सन् १८५६ ई० में वेद के सचय में लिखा है—

यानी वैदिक सुनो की एक बड़ी तस्मा बचकाना कठिन, अथम और साधारण है।

वह तो उसे बरबाहे का गीत तक मानता था। मैसूरमूलर ने १८६६ ई० में भारत के सचिव दूधर बाफ बारगाइल की पत्र लिखा था—

यानी भारत का प्राचीन धर्म मूल प्राय है। और यदि ईसाई धर्म उसका स्थान नहीं लेता तो यह किन्तुका शेष होगा ?

वही मैसूर मूलर स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य और धर्मों की बेलाकर "यास्त हुमे क्या सिखा सकता है।" नामक पुस्तक में लिखा है—

यानी मानव मस्तिष्क का जैसा भी बाधाधरन अपने स्वाध्याय के लिए उद्यत बनना चाहिए—वह चाहे धर्म हो या

फिक्सीसकी (विमान) साह स हो या कला, कानून हो या व्यवहार परमाच विद्या (ईश्वर) या वेद पुत्रा सुन्दे भारत में ही जाना चाहिए। फिक्सीस कल्पन मूल्य-मान पदार्थों में से कुछ पदार्थ केवल भारत में ही हैं। बागे यह कहता है—

यानी कठिनता से ही पठन-पाठन का महकमा कही होगा जिसने भारत के प्राचीन साहित्य से नया प्रकाश न लिया है।

इसी प्रकार वर्तमान समय में भी कम से कम एक दर्जन इसान अपने को एव ही तथा जमाइत इस्लाम के प्रधान आदि भी ऋषि दयानन्द सरस्वती के वेद भाष्य एवं धर्मों से प्रभावित हो वेद प्रचार में लग गये। जत हुने भी ऋषि दयानन्द के धर्मो एवं उनके वेद आश्यों को लेखकर वेद भास्य की सत्यता और सावभोगिता को स्वयं जानना एवं सब को जमाना चाहिए।

लेखक—विशेषरी कु० सिंह
का स० निदेशक
५०२, कैप्टी बल आश्रीय
सेना अवन राम कुलम उरुम
नई दिल्ली-६६

हास्य विनोद

जैसा सचान जैसा जवान

बालक के नवाज सिराजुद्दौला ने अपने हिन्दू दरबारियों से प्रश्न किया, "प्राय लोगों के पचाय में प्रहण तथा उद्योगिक सम्बन्धी बातें पहले से बता दी जाती हैं। पर प्रक्रम के बारे में आपका उद्योगिक क्यों चुप रहता है ? वे चारे पश्चित कुछ उत्तर न दे सके। छप्पा नगर के राजदरबार में एक हूबोब दरबारी गोपाल भाव रहता था। वे उसके पास गते और उससे जबाब देने को कहा। वह सिराजुद्दौला के दरबार में हाजिर हुआ। वहा जब वही प्रश्न किया गया तो वह बोला, "हज़ूर हम हिन्दुओं के मुँह बलाये जाते हैं। हम हिन्दुओं की आत्मायें सीधी स्वर्ग तथा आकाश की ओर जाती हैं। वहा से वे प्रश्ने कुटुम्बियों को आकाश तथा नखन आदि की सब बातें बताती रहती हैं। वहा युवाक हो सुखयमानों के मुँह बमीन में दफनाये जाते हैं। उनकी सड़े बमीन के भीतर जाती हैं और प्रक्रम उद्योग तो बमीन के भीतर से होता है। इसलिए यह सब ज्ञान अपनी कौम बासो से मुक्तिये वहा की बातें वही बता सकते हैं।

नवाब साजबाब हो गये।

हेयो इल्लिक्कल्लस धार्यसमाज को शोक

बायेंसमाज हेयो इल्लेक्कल्लस की एक सभा में प्रधानमन्त्री भीमती इन्दिरा गांधी के कुछ निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद हो रहे जयन्त कृत्यों को समाप्त कर देय में शांतिपूर्ण स्थिति कायम करने की माग की गयी।

सभा में इन्दिरा आत्मा की भाति के लिए दो मिनट का मौन धारण कर परम-पिता परमेश्वर से प्रार्थना की।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी

कार्यक्रम

□ गोधामात्रा

□ वैदिक साहित्य का
विवरण

□ विभिन्न क्षेत्रों में सब पञ्च

और वेदोपदेश

□ साधनजित ब्रह्मार्पण सभा

आर्य सन्देश

हिन्दू सिख एक है ।

विषय में मिलने की सिख है। व सदा से हिन्दू थे, हिन्दू हैं और हिन्दू रहेंगे भी। श्री गुरु गोविन्दसिंह का जन्म पटना में २२ १२ १६६६ ई० में हुआ था। श्री गुरुगोविन्दसिंह जी महाराज ने केस कृपा, कड़ा कृपाण और कच्छ करण करार करे बचन बनाया इससे पूर्व के गुरुको ने इन्हें रखने की प्रेरणा नहीं दी थी। वह किसी से छिपा नहीं है कि भारत में पहले किस देसकी से हिन्दुको और गुरुको को विषयी बनाने के लिए विषय किया जाता था। विषयियों के सबने के लिए बचने गुरु गोविन्दसिंह जी महा राज ने इशारे सेना का समर्थन करके उन्हें पनाकरार से बचिपित्त किया और कड़ा सिख सदा शासक के एक सहाज सब गोविन्दसिंह कहलाता। 'पण प्यारे भारत के विभिन्न आदिओं के लोग थे। आई हमाराम कानी थे बमदास दिल्ली के बाट थे, श्रीकमलचन्द हारका के कोबी थे हिन्दुस्तान अजन्मापुत्री के कटार थे, और साहबबन्ध बिन्दर के हज्जाम (गार्ड) थे। गुरु जी मुगल बादशाहों के साथ कई बार लड़ाई लड़े। सेना को सुसज्जित वापिस के लिए और मुगलों की सारि की दीक्षा करने के लिए वे जीवन पयत्न मुद्रस्त रहे। गुरुजी ने अपना जीवन बपरिहार हिन्दू हिन्दु स्तान बच और मोक्षा में उत्सव कर दिया। वेहिं वेहे बाबा गुरु को भजाऊ गोवाला का बुज जग से मिटाऊ।' सिख तो वह भूत रहे हैं कि परमात्मा को निरन्तर भजने वाले माता अपने बाते गुरु महाराज ने जब हिन्दुको पर सकर तथा धनपतन सेना तो कृपाण को माताकपी रक्षा कश्च बना लिया। वे जीवन पयत्न सबकर भी दिल्ली के विहासन को विषयियों से मुक्त नहीं करा सके। दुस्तर हमारी फूट घोर कमजोरी को जानते थे। फलतः उन्होंने कई राजाओं की प्रभोभन देकर मिला लिया था। अपनी स्वाय को पराजयक राजाओं ने गुरु जी को हिन्दू बन रखाप याचना को दुस्तरा दिया। फलतः हमारा मन्थनकर्मी और सिन्धकर्मी हिन्दू समाज विभाजित हो गया। संकटों की गुलामी के बाव जब हम स्वतन्त्र हुए तो बाज सिख राष्ट्रपति भी भारत के विहासन पर विराजमान हैं। क्या वे हिन्दू सिख सम्प्रदायवादी पाकिस्तान में अज्जर पद पर विराजमान हैं? बाप नकारात्मक उत्तर देत। भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से हिन्दुको और सिखों को भावक और वेह भापि से ककब मिट्टी को तरह निकाल देका गया। बसबस नारियों ने अपनी रक्खा रक्षा के लिए दूककर या भागवदाह करके अपने प्राणी की बलि चढा दी। उन्होंने हिन्दुको के धन सम्पत्ति, इज्जत, जवान डेटे डेटिडो तथा योगी के प्राण छीन लिए। प्रथम गुरु की नानकदेव जी को जन्मभूमि ननकाना साहेब पजा साहेब और पजाबी की राजधानी साहोब जी। इते विषयियों के हाथ से हम स्वतन्त्र नहीं कराते हैं। इसके विपरीत आज विषयियों के उकसाने पर उनका साथ देने के लिए भारतीय सिखों ने अपने ही हिन्दू भाइयों पर बापात करना प्रारम्भ कर दिया। सिख भाइयो! बाप कहते हैं कि स्वयं मदिर की पवित्रता बनाई रखी जाय। बाप चाहते तो गुरुद्वारा की पवित्रता के लिए प्रारम्भ से ही उपराधियों को मदिर में मरण (उरजोह) नहीं देते। पजाब में बस रही हिला की बातकन के बिलान सिख एक मुठ होकर भाजाज उठाते। सैनिक प्रवेश के पवित्रता नय नहीं हुई अस्तित्व स्वयं मदिर की पवित्रता और मदिर योगी सुरक्षित रह गये। नहीं तो उपराधियों स्वयं मदिर को उठा देते। इविरा जी ने स्वयं मदिर बना लिया पर इविरा जी को नहीं बचने दिया। स्वयं मदिर टूटे घोर बन जो मने। नकिन हमजारी योग मिल गये। जिस की गोद बाली हो गई। जिस बहन की माय उग्रज गई। जिसके माता पिता मारि बहन रति गुरु समाय हो गये क्या उन्हें बस प्राण हा सकते हैं? देश के अन्दर ये घमनाक काण्ड से देश कमजोर होगा। दुस्तर बाप पर हावी होयें और बाप सभी समाज हो जायेंगे। वह कुरकी होली बन बाँ बाँरा, प्र म वासि स्थापित करें और देश की एकता अखण्डता को बनाये रखें। तासिस्तान समक उपराधियों के विपद देश के सभी सिख एक होकर भाजाज बुझ इ करें। इसी में बूझ और देशवासियों का मसा है। अब सिख मारि गुरुको की बाणी और कुर्बानी को मुसलत जा रहे हैं। हम सब उनकी बाणी पर नहीं चलते। श्रीराम को हिन्दू भी और सिख भी मानते हैं। फिर एक क्या है? गुरु कन्ध साहब म तो अनेको अग्रह राय के मास तथा ब्रह्मा विष्णु महेश भादि के मास प्राये हो हैं। गुरु जी ने भी कहा कि श्रीराम गुण प्रायो।' श्रीराम मोहन वाले सभी गुरु के सिध्य हैं। सिख देश दायी रखने वाले ही सिध्य हैं ऐसी बात नहीं। कही भी हिन्दू सम्मेलन होता है तो गुरुको के नाम पर दार सज्जा दी जाती है। गुरुको के पिता और जीज्जत प्रदक्षि किन्ने जाते हैं तथा उनके अनुकरण करने की प्रणा दी जाती है श्री गुरु गोविन्दसिंह के योगी पुन रहे हिन्दू बनकर हस्ते-मुहते सरहिन्द की

श्रीधारी ने पुन दिये गये। मगर विषयी नहीं बने। गुरु तेगबहादुर ने दिल्ली में कीछ कटा दिया। लेकिन हिन्दू बच भी रक्षा से मुह नहीं मोड़ा और न विषयी बने। ऐस हो अनेको बान मुर्दागिया देकर नर नारियों ने अपनी जीवन माथा अमर कर दी। २६ सितम्बर १६८५ और जुलाई १६८५ में तीन बार भारतीय बायुवाओं का अपहरण कर साहोब ने जाया गया तथा अपहरण कर्त्ताओं को शस्त्र दिये गये। पाकिस्तान के उपराधियों की सैन्य विस्था दी गई। पाकिस्तान के मुसलमान गुरुमुक्ती जानते हैं। उन्होंने अपने केश बांधी बढाये और पजाब में मुसलत किया। सिखों से दोली कर उन्हें गुपराह किया।


यही नीति है 'भूट हाथी राज करो की। मदिरों गुरुद्वारा ने गा नाट कर फेंकना गुरुबच रामायण गीता भादि की जसना या विषय स्वको को विनष्ट करना इत्यादि सन्धे सिख कभी नहीं कर सकते। सत्ता की इस कुर मार में सको नर नारियों बच्चे व्यबसायी अफसर सेना, भादि मारे गये। ऐसा करने से सिखों की बलि हुई? सम्पत्ति लूटे गये दुकानों में बाग बगानी गई। उपराधियों सिखों ने खुद सिखा को मारा। ये सब क्यों हुए? अत्यन्त पाकिस्तानी सिखों के नेष में पकड़ गये। पाकिस्तानी शास्त्रन बराह हूरा हूरा इन सब बावों से भी भारतीय सिखों और अलगाववादियों की बाँस नहीं बुझी जिस दिन पजाब भारत से अलग हो जायेगा। ठीक उसके बाद बह पाकिस्तान का ज ब बन जाएगा। उसके साथ साथ कमजोर भी। बह भारत तो सिख भाइयो का है। दुस्तरों से फिर उठाकर गुरुको की बाणी का प्रचार कर और अखिख भारत को पुन अखण्ड बनाकर गुरु के सपनों को साकार करें।

लेखक 'कातिकारी सुर बिचमनर बाई' समसोपुर (बिहार)


मैं बाधुनिक भारत के महान पथ प्रवक्ता स्वामी दयानन्द के प्रति प्रशंसात्मक प्रशस्त करता हूँ जिन्होंने सत महापुरुषों और अनुष्ठानों के बीहड़ जगम में से जिसमें देश के पतन के कास में गहरी बास उग बायी थी माग को परिच्छिन्न किया ताकि हिन्दू लोग परमात्मा के प्रति निष्ठा और मानव सेवा का सादर और बिबेकपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें।

—रवी ह माथ ठाडुर

दर्दों की हर बीमारी का घरेलू इलाज




दंत मंजन
लौंग युक्त




मन्दा की अजून


23 जंकी बुटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि




आज नये पैकिंग में उपलब्ध



मुठ की दुख



ठंडा गर्म पानी लगाना



दास का दर्द

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

B/44 इण्डियन स्ट्रीट सीतल नगर नई दिल्ली 15 फोन 538809 537987 537349

**राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय
नवजागरण और महर्षि दयानन्द**

—श्री रामगोपाल जी शास्त्रवाले

यह कहने में हमें सकोच नहीं है कि इस समय राजनैतिक बल धर्म निरपेक्षता की धाड़ में भारत के बहुमत की पग-पग पर धबधबला कर रहे हैं। इस सबका मुकाबला करने के लिए धार्मिक समाज को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड पगठन खड़ा करके ईशान्द, मुसलमान और सिक्खों के बलगावबाव के नारे का देश भर में सक्रिय विरोध करते हुए जन भान्दोलन खसाना चाहिए।

संसार के इतिहास में प्रायः देखा जाता है कि समय समय पर मानव-जाति को ढंढने के लिए कुछ विशेष आत्माएँ इस धरती पर अवतीर्ण होती हैं। मूर्च्छि की उत्पत्ति एवं अरब सत्तावैष क़रीब वर्ष पुरानी हो चुकी है। महापुरुषों की लम्बी सूची में अनेक पराक्रमी व चक्रवर्ती राजा-महाराजा, ऋषि मुनि, बड़े-बड़े योद्धा एवं उन्नत कोटि के महा-मानव इस धरती पर पैदा हुए एवं अपना-अपना काम करके उसकी छाप संसार पर छोड़ गये।

ससार की राजनीति में सभसे पहले सम्राट् वैभवसित मनु हुए, उन्होंने राज्य-प्रणाली का आविष्कार किया और वेद के आधार पर उस समय की जनता को अपने-अपने कर्तव्य के पालन की ओर भ्रमर किया। इसी प्रकार सदिया बीतती गई और बड़े-बड़े महापुरुष अपना अपना काम करते चले गए, किन्तु इतिहास में उनकी अमर गाथाएं आज भी सुरक्षित हैं।

प्राचीनतम भारत में लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व महाभारत के युद्ध के पश्चात् बड़े-
 बड़े राजाओं और महाराजाओं का ह्रास हुआ और वैदिक यमों का होलियन ग्राइस के
 महाभारत के पश्चात् भारत में यमों का होलियन हुआ, उसका विप्लवम होलियन के
 यमों के निरीक्षा का समुदाय है। रावनीति विराट्ट के सहाय-सा मानिय विराट्ट
 भी इस देश के प्राचीन वैदिक यमों में अनेक स्थानों में बट गया। सामान्य का उक्त युद्ध
 और वामनामों के कारण यम और बीर भीमें में जन्म लिया। किन्तु साराज वैष्णव तथा
 साम्राज्य आदि अनेक सभ्यताओं में विभक्त हो गया, विशेष परिणाम लक्ष्म वनीयवाराज
 का प्राथमिक ज्ञान।

जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार का सामना करने के लिए सरकारों भारतीय
धर्म पर उदरे और इन मान्यताओं का ह्वालाबाध करके विप्रेर उन्हीने अर्द्धे ह्वा
का प्रविष्टावत किया। अतः नास्ति भोग इष्टानि च यथा - य एव और ईश्वर की
स्तुति व सत्ता से ह्वाकर करते थे, वही मान्यता सरकार ने प्रकृत का खनन कर एक
ईश्वरवादी धर्म और प्रकृति के अनादि सिद्धांत का प्रविष्टावत किया और धर्म के नाम पर
ईश्वर, अमृतवादी, मुक्त-आद, मुक्त छात आदि का भोग विरोध किया कि धर्म के
ह्वाके कारण राज्य का भी ह्वाव हो गया। इसविप्रे उन्हीने एक देश की राजनीतिक
परिस्थितियों को सुधारने का काम किया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू जाति थे राज-
नीतिक और मानिक बेचना पाई हुई।

सन् १८५७ ई० मे महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। अपने अमर ग्रन्थ सत्याय प्रकाश' में खुले रूप में अपने देश में अपने राज्य का समर्थन किया और विदेशी राज्य की बुराईयों पर खले रूप से अपने विचार जनता के सामने रखे।

सन् १९८६ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक प्रवेश वि० शुभमे की, जिन्हु उन्म सभय कांग्रेस के सामने पुर्ण स्वतन्त्रता का कोर लक्ष्य देही था, बरिक्त लक्ष्य देही था कि विभागीय होर पुनिस बरिक्ती भारतीय हो। इसी आधार पर वि० शुभमे ने तत्कालीन शासको के पुनिसार-विमय किया। जिन्हो इतरो १० वष पुर्ब ही मरुपुर्ष देवानन्द ने शायरमाज की स्थापना करके पुर्ण स्वतन्त्रता की माग कर दी थी, जिसे १६ वष पश्चात् कांग्रेस ने लोहर-बज्रिये मे प० जवाहरलाल की अग्रगण्यता मे स्वीकार किया था।

स्वामी दयानन्द ने १८७२ ई० में कलकत्ता के प्रमोद कानन में बैठकर तत्कालीन वायसराय मि० लाड नार्थब्रुक के साथ जो भेंट की थी, उसमें वायसराय महोदय ने महर्षि दयानन्द से कहा था—“स्वामी जी ! आप ईसाई, मुसलमान, पौराणिक व धर्म

सादित बनने का साधन करते हैं, प्राणीकी भाव को कोई संतदा हो नहीं है? प्रत्यक्ष प्राणीकी सुखसा का प्रश्नक ही कविता जाण्वा है। यहि विषयमान-न के अन्तर दिना था—
 “सुखी, सुखी, सुखी, सुखी का शान्त मैं तेरे बचन-मन में कठिनी कादर का सदा गाना है। मुझे
 सर्वसंनिधमान् ईश्वर पर विन्यास है, यही मेरा सलसक है।” इस पर बायसराय ने बड़े
 गम्भीर भाव से कहा—“सुखीराज।” यदि हिसार प्राण इतना व्यक्त है तो बाप जब
 उपदेश करते हैं तो परमात्मा से प्राणिक का कविता करे कि धर्मको का कविता बहुत तिनो
 तक चलता रहे। बायसराय की यह बात सुनकर महर्षि प्रधानका का चेहरा आनन्द की
 तरह तान हो गया। उन्होंने कहा—“धर्म का सुनकर बहुत दिन तक चले, ऐसी प्राणना
 मैं नहीं कर सकता। मैं तो मायावादी से यही प्राणना करता हू कि वह किंदा प्रमाणा दिन
 होना जब धर्म पर भारत दोषालक से बचे जाये।” इस सुझावको के बाद ही धर्मपं
 सत्प्राण का रक्षेया की व्यवस्था के प्रति बहुत कोश हो गया और उनके निवेष्टे ही...
 आई। ही- तथा दिए गए एवम् उन्हावे के पदधनन किए जाने लगे।

जोधपुर में ३० अली मदन खा, जिसने महर्षि का इलाज अन्तिम समय में किया था, वह भी प्रयोजन का पिछूटा है। राष्ट्रीय और धार्मिक चेतना का अग्रदूत महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक वर्ष में आज के ठीक १०१ वर्ष पूर्व दीपावली के दिन इस संसार को सर्वत्र के लिए त्याग दिया।

३ नवम्बर से ८ नवम्बर, ८३ तक हमने युगपुरव महर्षि दयानन्द का निर्वाण शताब्दी-समारोह सोल्हग मनाया था। लोग पूछते हैं, भावसमाज का जनता को क्या कार्यक्रम देना चाहिए। येरा कहना है कि महर्षि दयानन्द ने भावसमाज क दस नियम बनाकर धर्म के सिद्धांत का जो स्वरूप हमारे सामने रखा है, वह हमना पूरा है कि उससे बाहर कोई चिन्तन की चीज ही नहीं रह जाती।

मैं ज्ञान बन्धन से इसना ही कहना चाहता हू कि वे बापसी भ्रम से मन मुदाब को दूर करें, यही, आत्मसाज की प्रगति में रोड़ा है। हमें एक-दूसरे पर विश्वास करके समझते का प्रयास करना चाहिए। यज्ञों के माध्यम से हम सामिक वृत्ति का प्रचार करें, घर-घर में वैदिक ज्योति जगए और इसका प्रचार-प्रसार करें।

नया जन आन्दोलन अपेक्षित

२७ वर्ष की राजनीतिक स्वतन्त्रता का विश्वासोक्त करते हुए यह कहते हैं हमें सकोच नहीं है इस समय राजनीतिक स्वतन्त्र निरपेक्षता की भाङ्गम भारत के सम्बन्ध की पन-पन पर अवहेलना कर रहे हैं। हा सच्चा मुक्तवादा के लिए आवश्यक किन्तु जाति का अन्धक सत्यन खड़ा करते दुर्भाग्य, मुसलमान की रक्षकों के अत्याचारों के बारे का हल मत है सन्धि विरोध करते हुए हृदय जल-आन्दोलन बनाया चाहिए। आज बुधवार होकर काम करने का अवसर नहीं है, अपितु प्रचार की भी कमी आवश्यक है। प्रथम दिन दिवाली भी देखें आगकरो है।

दक्षिण पूर्व एशिया की सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा

दक्षिण पूर्व एशिया की जो सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा श्रीमती इन्दिरा गांधी की निधन के फलस्वरूप स्थगित कर दी गयी थी उसकी तिथिया अब २ फरवरी १९८५ से १६ फरवरी १९८५ कर दी गयी हैं।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें —

श्री बंधोक त्रिखा, टेवल ट्रस्ट, बी-24 निजामुद्दीन इस्ट, नयी दिल्ली-13
(इरमाष-980216)

वार्षिक चुनाव

जयें समाज शान्ति नगर, सोनीपत, (हरियाणा) की प्रबन्धक समिति का गठन निम्न प्रकार हुआ - श्री वेंक जयकृष्ण दास (सरसक), श्री रामसाधु मदान (प्रधान), श्री हरिचन्द स्नेही (मन्त्री), श्री मेहूरचन्द, कोषाध्यक्ष

श्री बगवते भक्तार्थी, 10 भास्वस्तो विल्ली, 5 मे सुभाष विद्या है कि बायं
सन्देशे साष्टिक विद्या वप मे सुभाष विद्या किमे बायं। जैसे उपदेशको की सम्पत्ती सुधी व
प्रकाशित की जाय साय की साय भावने यह भी बताया कि मयिदाविल्ली, विष्णुको, जाय
विद्या, बोरी राजनीति विद्या महापुरुष की जीवन भाषा विद्या विष्णु रूप से अपनी
बाहिर। विवेक कि धार्य सुखे रजिका का स्तर सुभाष वा रहे। बायं सन्देश के
साष्टिक मय्यव मे उनके सुभाष को स्वीकार करके तपस्विव वप का सम्पान कार्य
शरण-पद विद्या है।

राम जन्म भूमि के मुक्ति हेतु प्रकाशवीर शास्त्री के प्रयास

—स्वामी मेवमुनि परिव्राजक

उन दिनों भारत के प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू व भारत सरकार न देश में साम्प्रदायिक तनाव के कारणों को दूर करने तथा हिन्दू मुसलमानों में साम्प्रदायिक सम्बन्धों का उपन करने की योजना के नाम पर यह निश्चय किया था कि जो मस्जिदें हिन्दुओं के अधिकार में हैं वह हिन्दुओं से लेकर मुसलमानों को दे दी जाय।

सन १९४७ में पाकिस्तान बन जाने पर जिन स्वामियों के मुसलमान उभर चले गये व बहा की मस्जिद बकार हो गयी थी। पाकिस्तान से बहार होकर लाहौर की सभा में हिन्दू इधर भारत में जाये वे बहोने जहा जहा पाकिस्तान गये हुए मुसलमानों के मकान रिस्त पड़ गये वह उ ही मकानों में रहने लगे। जिन स्वामियों तथा जिन मन्दिरों के जिन आश्रमों के सभी मुसलमान पाकिस्तान भाग गये वे बहा की मस्जिद बकार पड़ी थी। पाकिस्तान से भागे जाये सरणार्थी बनूँगे वे ऐसी मस्जिदों में भी रहना पारम्भ कर दिया था।

भारत सरकार की योजना उन्हीं मस्जिदों को मुसलमानों को देने की गयी थी। मुसलमानों ने वहाँ ऐसी कोई मांग नहीं की थी। न तो सचदे और न सचदे से बाहर ऐसी कोई आवाज सुनाई दी थी। सुनायी देती भी तो कहा से और क्या सुनायी देता जिन मस्जिदों में पाकिस्तान से जाये हुए हिन्दू सरणार्थी बसे हुए थे उन आश्रमों में कोई मुसलमान था ही नहीं तो बहा कौन नमाज पढ़ने जाता था किस प्रकार उन मस्जिदों के लिए आवाज उठती ?

वास्तव में बात यह है कि स्वतन्त्र भारत में प्रथम बार उन दिनों भारत सरकार के गणधीनत्व में वध निरपेक्षता का उद्घाटन था रहा था और उस समय के भारत सरकार के प्रमुख श्री जवाहरलाल नेहरू ने मुसलमानों की मस्जिदें सौंपने की योजना बनाकर उस उद्घाटन को प्रकट किया। यह मस्जिद रिस्त करायी गयी। उन बर्बर होकर बाएँ भारत गये हिन्दुओं को एक बार फिर सरणार्थी बना दिया गया और इस प्रकार वापस के लौटने में बहने पुन्य वापस के सय महिन्ना पुन की जाने या बनवाने में हत्या कर दी।

मस्जिद रिस्त करायी गयी और जलसाय सचकों को बाह्यन किया

गया कि वह उठे सम्मान। पता नहीं कहा कहा है मुन्ना भोग लाकर उन मस्जिदों में अन्नान देने और नमाज पढ़ने के लिए बड़ा दिय गया। उनमें से वे बहुत ही मस्जिदों को तो बर्बाद कर मुन्ना उपलब्ध नहीं हो सके।

सचदे-केसरी स्व परिव्राजक प्रकाश और श्री शास्त्री उन दिनों लोक सभा के सदस्य थे। १९६१ की श्री कृष्ण जय अष्टमी के अवसर पर उन्होंने लोक सभा में यह प्रश्न एक प्रस्ताव के रूप में उठाया उन्होंने अपने प्रस्ताव में कहा था कि मैं भारत सरकार को इस मायना सचदेय हूँ कि देश में साम्प्रदायिकता के विषय को समाप्त करने के लिए विभिन्न मन्त्रों के नागरिकों में पारस्परिक सम्बन्ध उत्पन्न करना आवश्यक है इस सिलसिले में पाकिस्तान बनने पर बहुत से मुसलमानों के उधर चले जाने के कारण बकार पड़ी जिन मस्जिदों में पाकिस्तान से जाये हुए सरणार्थी बसे गये थे भारत सरकार ने उन मस्जिदों को मुसलमानों को सौंपने की योजना बनायी है उसी के सचदे में मेरा यह कहना है कि साम्प्रदायिक तनाव का कोई भी जिन्हें शेष नहीं छोड़ा जाना चाहिए। इसीलिए मेरा यह प्रस्ताव है कि श्रीकृष्ण जयान्ठमी के शुभ अवसर पर योगीराज श्रीकृष्ण के जन्म स्थान मथुरा में श्रीकृष्ण जय मन्दिर का शुभकार मुगल सम्राट और नज्बे द्वारा बनवायी गयी मस्जिद हिन्दुओं को दिला दी ज व तथा साथ ही विदिशा (मध्य प्रदेश) का विजय मन्दिर राम जन्म स्थान कनोया की व बरी मस्जिद विरवायन महादेव काशी के मन्दिर का भी भाग मुसलमानों के अधिकार में है वह और सम्भल जिला गुरदासवाह का हरिद्वार महादेव का मन्दिर का मस्जिद बना हुआ है हिन्दुओं को दिला दिया जाय।

उससे ठीक अगले दिन वाय सभाय दीवाना हाल दिल्ली की उस महती सभा में श्री श्री कृष्ण जयान्ठमी के उपलक्ष्य में आयोजित की गयी थी श्री शास्त्री जी ने अपने भाषण में लोक सभा के अपने उत्तर प्रस्ताव की चर्चा करते हुए कहा था कि मैं यह जानता था कि लोक सभा में मेरे इस प्रस्ताव पर बिचार भी नहीं होगा तो फिर भी मैंने इस प्रस्ताव को रखा था तो इसलिए कि इसकी चर्चा लोक सभा की फ़ाइल में आ जायेगी जो

एक दलानेव के रूप में सुरक्षित रहेगी और भविष्य में भारत की भावी सन्तानों को प्रेरणा का कारण बनेगी तथा उठे यह स्मरण करायी कि यह मायना भारतीयों में श्री कभी नहीं गयी थी।

जब सन १९८४ में ठीक २३ वष बाद हम श्रीकृष्ण मन्तर राधादासियों से कहना चाहते हैं कि प्रयत्न व श्रीकृष्ण जयान्ठमी मनाने वाले क्या वाय लोग सचदे केसरी स्वामी श्री परिव्राजक प्रकाश और शास्त्री के उन उद्गारों से सहमत

हैं जो उन्होंने १९६१ की श्री कृष्ण जयान्ठमी के अवसर लोक सभा में प्रकट किया थे और क्या उन मायनाओं का मुन्नाकरण कर बाप उनको रक्षा के लिए सवार हैं जो उ हुनै उस सभा में स्थल की थी। यदि हा तो सगठित होकर इसके लिए प्रयत्न कीजिए यदि प्रयत्न किया तो सफलता बापके पास होगी बापके वाले सचदे के निर्वचन से पहले ही इस आवाज को उठाया।

स्वामी पंच

ले० स्वामी स्वकृपानन्द सरस्वती प्रथिष्ठाना वेव प्रचार

[काव्यमय वदन्तार]

कुछ सन्त द्रष्टा हुए जहा पर सचन वस का भी छाया।

मिल करके एक पचायत की जो हुवा फलसा ससकया।

बचा काल ये पंच बह प्रधान बने पचायत कर।

प्रस्ताव पास यह कर दीना बात व प्रम संहित कर कर।।

बोल गये ये वय। जाति व धु। पुन बाज न बाये हकत से।

हम ने न तुम्हारी वय बरता है कोई भाई दहसन से।।

तुम सचते रहते बापस में बदनाम नाम है स्वामी का

बच सको नहीं वादर करिये धपने ये हेमनाम का।।

एक तो जमाना बहुत दुरा मुन्निन है नहीट भरता।

महर्षाई की ओर पड़े हैं बच विल की मीर नहीं बरता।।

बर बर दहकरे जाते हैं कुता कुकर कह कर बोले।

कुछ भाई बह मायपाली को बठ काल ने बोले।

बूढा कौला जाति बचुओं अब लभना परस्पर करे बन्ध।

जो करे उल्लभन उसका भी ये दण्ड करे मितकर प्रबन्ध।

हो गया पाप प्रलाना सजी ने पची क्य माता कहना।

भाई भाई सब लख नहीं आपस में मिल जूल कर रहना।

उस बच के ऊपर एक चोल उधकर दुरी से बाइ दी।

एक म न का टकबा सगा चोच में उठा कहीं सवाई की।

बा बजन अधिक उस दुकन में था रखा बाच मे दाब सिरा।

गया छूट चोच से बकसात पचो के चोच में आन गिरा

देखा जो बीच मात पचा तो मुह म पानी भर बाया।

बट काच वय पर टट पडा दूबा भी भागे को भाया।

हो गयी वय पचायत सब होन लागी छीना छपटी।

क्या कर सभासद बचारे जब वय होय अक्षिया कपटी।।

ऐसे ही पंच स्वामी जो स्वाय हित दूट-दूट पड़ते।

जपनी ही उधरपुष्टि का मित्रों के साथ लख रहते।।

यह स्वाय सगठन की रस्ती का पल में ठोड़ काइ देत

कहे स्वकृपानन्द स्वामी पल में प्रय ठोड़ देते।।

दिल्ली प्राय और दल की बढक

बाय और दल दिल्ली प्रदेश का एक जयान्ठम बढक दिनांक २ दिसम्बर १९८४ रविवार को प्रात ११ बजे वायसभाय नूना मन्त्री पहाड़ गज मई दिल्ली ५५ में होगी। सभी जाति बचुओं के विनम्र बचुओं है कि सचय पर पचार कर बाय नीरो का उल्लाह बढाय। प्रयत्न बायसभाय के प्रधान तथा मन्त्रियों से विशय प्रायना है कि निश्चित सचय पर अवसर पचाईं तथा अपनी बायसभाय से कम से कम दो बाय बीरो की साथ बाय।

अध्यक्ष वैदिक सन्धान नजीबाबाद उत्तर प्रदेश



हैदराबाद सत्याग्रह

भारतीय स्वाधीनता सम्मान योजना गृहमन्त्रालय की शिफारिश

—बहुमन्त्रालय स्नातक

सन् १९७२ मे स्वतन्त्रता रत जपनी के अवसर पर केन्द्रीय सरकार ने स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन का आरंभ किया। यह १००० रुपए वार्षिक बाय के कम बायो को ६ मास का कारावास, मुमियत नकरबन्ध (भात की मुमि मे होये पर) वा सम्पत्ति बन्ध होये बाओलन के दौरान बपन होये बायो रोजवार के सोत समायत हो जाने पर मिसली बी। जाबादी के दुबे की रिमासतो मे प्रवातलनो बाधिकारो तथा भात मे वियस के प्रस पर पीठिको को भी इयेने बामित्त किया गया बा। बाद मे १९८० मे ४००० रुपए की सीमा इतारक बन्ध रिमासतो की दिया जाता हुक करके उसका नाम सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी योजना १९८० कर दिया गया। इस दिशा मे बायसक प्रशासनिक एव विलास कबम केन्द्रीय सरकार ने उठाये। भात मे वियस के प्रस पर पीठिको को भी इयेने की बामित्त किया गया बा। बाद मे १९८० मे ४००० की सीमा इतारक बन्ध रिमासतो की दिया जाता हो हुक करके उसका नाम स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना १९८० कर दिया गया, इस दिशा मे बायसक प्रशासनिक एव विलीय कबम केन्द्रीय सरकार ने उठाये। भारत सरकार ने इस काम को करने के लिए गृहमन्त्रालय के अन्तर्गत गृहमन्त्री और राज्य के गृहमन्त्रियों के अतिरिक्त बाड सरद सदस्यो की एक समिति पठित की। इससे पहले यह गृही बनी थी। गत वर्ष तक इसकी ६ बैठको मे स्वीकृत बनेक कुम्भनो को सरकार ने माना है। गुरुवर्ष सरद सदस्यो को यह सम्मान पेंशन अतिरिक्त दी जाती है। सर्वनाम मे केन्द्र सरकार इन सम्मानिको की ३०० और इनकी शिखाय पली को २००) वार्षिक देती है।

१९७२ की तावत्रपन देने की योजना १९७६ मे बन्द कर दी गयी। वरन्तु १९८० मे यह पुन जारी कर दी गई और केन्द्रीय सरकार के अनुवीर पर उनको निमुक्त शिफारिश, भाषा बादि की सुविधा की बहुवी की राज्य सरकारों दे रही है। पेंशन की सीमा मे जो राज्य सरकारो के द्वारा दी जाती है, निम्न-चिन्त है: १००-१२० के बीच। इस सम्बन्ध मे बामित्त आन्डोलन मानक धार्यसमाज ने सामुहिक रूप से हैदराबाद बाय सत्याग्रह १९९६ के पीठिको के लिए कोई माग नहीं की। गुरुवर्ष निजाम रिवासत के बाधिकार बायसमाजी पीठिको मे ब्यक्तिगत रूप मे काप्रप्रवेश कन्तिठ की महराष्ट्र राज्यो के काप्रती नेठाओ के प्रमाश पनी, जेस तथा यातनओ के प्रमाश स्वरूप १९७२ की योजनाओ मे सहत यह माग उठाया है। सेष भारत मे भी कुछ लोगो को बायसमाज नाम के छोडे बने पर पेंशन मिसी है। बेद यही है कि बाय तक इस सम्बन्ध मे समयेत रूप मे कोई प्रयास नहीं हुआ है। सायरेसिक बाय प्रतिनिधि सभा क बयमान प्रमाण की रामनगोषा शासनाले ने गत वर्ष २० नवम्बर की ठकासी प्रमाणमन्त्री स्वी श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक विल्लुप पत्र विसकक प्यान बीबा। जिस पर गृहमन्त्रालय ने हैदराबाद बायसमाज के १९९६ के सत्याग्रह को इस योजना के अन्तगत धरतीकार कर दिया।

इन पत्रियों के सेवक ने भारत सरकार की सेवा मे श्रवित होये समय १९४३ मे सत्य रूप मे सय लोकेसवा बायोग को विसक दिया बा कि हैदराबाद बायसमाज मे सगमय ६ माह बहु जेस मे रहा बा। जब १९४२ की योजना स्वतन्त्रता सेनानियों के लिए निम्नलिखित उलने १९७४ मे तावत्रपन पाये (सेत ४००० वार्षिक के ज्यादा बा) और इस र्थ को सरकारी कर्मचारिको ने गत वर्ष २० नवम्बर की ठकासी के लिए स्याप दुर्वक मान की परन्तु कुछ नहीं बसा। सरकार का उत्तर बा कि उन्स बाओलन की सरकार ने स्वतन्त्रता बाओलन का प्रस अभी तक नहीं माना है। इस सम्बन्ध मे ठकासीन मुमयमान-बी को सय पुर्वे भी जो बायेवद दिए गये मे और गृहमन्त्रालय से उनका उतर नकारात्मक मिसा। मेरे इस मायले के बारे मे साबेदिक सभा के गुरु पृ प्रमाण एव गुरु पृ सरद सदस्य और मेरे जेस के सवामी श्री नरेश सलातक ने सबवित सन्विको को पत्र लिख और बायसमाज बाओलन के हुरगामी राष्ट्रीय प्रमाश का उन्सक किया परन्तु सरकार ने कुछ नहीं माना। जनाड भवनमेठ के गृहमन्त्री की बरपल्लुह से बायेवद करने पर पर भी परिमाण सुय रहा।

बन्त मे मीने २०-१३-८३ की स्व प्रमाणमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को अन्तिम पत्र डाक द्वारा ब्यक्तिगत सवोचन के साथ मिसा। जिसमें सरकार के पिछले निर्णयो को अलकलता और पुनर्विचार के लिए मिसा गया। उन्कोने यह पत्र गृह मन्त्रालय को बायसक कायबाही के लिए भेज दिया। सवर मीने बरसिक भारतीय स्वाधीनता सेनानी सगन को विसद नोट और परिशिधो के साथ भेजने के बसाभा इस सम्बन्ध मे दिधी-घडेनी पनी मे बायसक उठाई और सगन के सदस्यो के साथ बैठकों की।

धार्यसमाजो जनाओ को यह जानकर हर्ष होया कि गृहमन्त्रालय की सम्बन्धित सवाहकार समिति ने सर्वसम्पति से हैदराबाद के बायसमाज सत्याग्रह को स्वाधीनता सघास के रूप में स्वीकार कर लिया है और यथोचितस की मजुरी के लिए भेजने का निश्चय किया है।

बाधा है कि स्व इन्दिरा गांधी के बीचनकास मे जो निष्पत्ति मिसा गया है, उसे यथियन्तस की भी स्वीकृति बरसय प्राप्त होगी। सम्पन्न कराने के लिए उद्योग कर रहे हैं। एक गुप के बाय उन स्वाधीनता सेनानियों और उनके बारिको के लिए यह एक सच्ची ब्यदावित होगी।

आर्य केन्द्रीय समा दिल्ली राज्य को अन्तरंग समा की बैठक

समा के महासमित्री श्री सुप्रेमि ने एक विसर्जित द्वारा बताया कि बाय के केन्द्रीय समा दिल्ली राज्य की अन्तरंग सभा की एक बस्यावसक बैठक स्वाधीनता ब्यदान बलिदान विसत, केन्द्रीय के बायिक बरिबेसय तथा दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा द्वारा धामो-बित महर्षि इवानय निष्पत्ति सताम्ती के सम्बन्ध मे विचार करने हेतु पनवार १ दिसम्बर १९८४ को साय ४-३० बजे बायसमाज मन्दिर, कटोस बाय, नई दिल्ली मे सभा प्रधान श्री महर्षिध बरमलज जी की अध्यक्षता मे होगी।

निर्वाण विसर के अवसर पर विसेष लेख

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजीकृत)

को आवश्यक बैठक

सभा के महासमित्री डा० बरमलज ने एक विसर्जित द्वारा बताया कि दिल्ली प्रेष सगल बायसमाज, निम्न सभाओ, विसास तथा बाय सम्बद्ध सगलओ के बाधिकारिको एव बायसमाज की एक बस्यावसक बैठक महर्षि इवानय निष्पत्ति सताम्ती के सम्बन्ध मे बायसमाज की अन्तिम कपरेशा और पत्र सगल की योजना बनाने हेतु गुरुवर्ष २९ नवम्बर १९८४ को मय्याहोवर ४-३० बजे बायसमाज मन्दिर, १५ हुलियन रोड नई दिल्ली मे होगी।

कानपुर मे सिखो को मुसलमान होने से बचा लिया गया कानपुर। हास के हिसक रगो मे यहा से काको सिखो की बाय सभावी नेठा श्री देवीदास बाय ने समय पर मुसलमान होने से बचा लिया। यटना इस प्रकार बतायी जाती है कि हिन्दु सिख के नाते से हुए सपने मे नवाबजज छात्रो भी थे। काको सिख बाइयो मे बरने परिवारो के साथ छात्रो मे मुसलमानो के बहा धरन थी की। सिखो के मन मे उस समय हिन्दुओ के बिसद उल्लेखना सी थी। उस उल्लेखना को और बरकाया गया। और उन्हे परामश दिया गया कि वह मुसलमान हो जायें। इसके लिए वह तैयार हो गये। मन्दिर मे पर्व परिवर्तन का कार्य बरमाना गया।

कर्नूल के बीच सिखो के केन्द्रीय बाय सभा व जिलाबाय प्रतिनिधि सभा कानपुर के बायसमाजी देवीदास धार्य को फोन द्वारा सूचना दी। इस पर भी बाय ने गुरुस ऐसे सिख बाइयो के सम्पर्क किया। और उन्से कहा कि मम सोसा बाजी की बलु नहीं है। काको सगम्भने के बाद उनका जोष खात किया। श्री बाय ने उनका बाय मन्दिर मे रहने का बासह किया। इन पर इन सिख परिवारो ने मुसलमान होने का विचार बदल दिया और मीके पर पठुषने के लिये भी बाय का बरमलज किया व उनसे कुछ सहमता भी प्राप्त की।

ध्यासप्रकाश साहनी

एक परिवार की शुद्धि

हिन्दु शुद्धि मरसमोष समिति सगलका मयी मे ता० ८-११-८४ को बाय के ४ बजे श्री हरिहर्ष प्रमाण बायसमाज बाय भोरा रसल्लुप जिना सोमोपते के यहा श्री वेदप्रकाश साहनी गुरुहोतु बायसमाज सगलका मयी से परिचारिक यक करारया गाव के काको रनी और पुषय सम्पत्तिन हुन बायसमाज सगलका मयी के भी बायि-कारो व सरस्य बाए हुए थे। १० ब्यक्तियो ने यमोपवीत पारण किए। स्वामी सगनयन ने को हिन्दु शुद्धि मरसमोष समिति सगलका के महासमित्री है वैदिक धर्म की विसोबसा और शुद्धि की बायसमाज पर प्रकाश बताया। इस अवसर पर श्री कपरहित पुन श्री नरेश मुसा जाट ने स्वेच्छा से परिवार सहित वैदिक धर्म की सेवा की।

प्रार्थनसमाज बेलामेघ (समस्तीपुर) में देवयज्ञ

(१) आध्यात्मिक बेलामेघ (समस्तीपुर) में २०-१०-८६ को देव यज्ञ तथा मंत्रब्रूण और नाट्यो को जोड़कर करार देव दान कमलेश्वर आय ने किया। अपने पुत्रों को वाणिज्य व्यवहार पर इस कार्यक्रम में कागितकारी मूर विवेकचरण आय ने कहा कि असाध्य की सहायता करना ही सच्ची पुत्रा अंत और सबसे बड़ा धर्म है। इस अवसर पर श्री नमस्त्र किछोर शास्त्री श्री चन्द्रेश सत्याधीन न अपने अपने विचार प्रकट किए।

(२) आध्यात्मिक समस्तीपुर में राष्ट्रीय शौरता सप्ताह की बैठक कागितकारी मूर विवेकचरण आय की अध्यक्षता में की गई तथा जिल के सभी प्रमुख म कायक्रम चराने के लिए एक समिति बनाई गई सचिवक श्री मवल किछोर शास्त्री नगरपालिका अध्यक्ष श्री परमेश्वर चौधरी कबीर आश्रम के महन्त श्री प्रो० मदन जी (मधु) प्रो० अवलेश्वर श्री अविष्यता श्री भातीलास श्री तथा दीनदयाल कालरा जी। इस बैठक में एक प्रस्ताव पास किया गया कि प्रत्यागियों स गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाये के लिए लिखित आवाहन ल। लिखित आवाहन बनता की गही देने पर जनता उह काले काले दिवाकरनी हुयारे बापस आओ के नारे लगाये।

(३) समस्तीपुर में ११-११-८६ को आध्यात्मिक विवेक हिन्दू परिषद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय जनसंघ, विद्यार्थी परिषद तथा गायत्री परिवार के सदस्यगण ने। कागितकारी मूर विवेकचरण की अध्यक्षता में एक बैठक म गायत्री महायज्ञ करने पर विचार किया गया। इस बैठक में ए० बी० एम० कई अधिकारी गण तथा सहूर के कई प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। विवेकचरण की ने कहा कि हमारा देश धर्म सत है। इसलिए सभी राजनैतिक पार्टी धार्मिक मस्याए जो कि हु राष्ट्र में आस्था रखत हैं उन्हें एक जुट होकर हिंदू राष्ट्र मोहवा पर प्रतिबन्ध न भुलनचाना को मत नही देत का और नही छोडने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए सुसंरिठियों को निकाला जाए अक्षयानवादी तत्त्वों के खिलाफ गिन युक्कर युक्कर आवाज उठानी चाहिए। कोई भी सत्ता अपने अपने बंधन में कायम को कर। लेकिन सहयोग सची का होना चाहिए। इससे हम सची मंत्रब्रूण होगे और हमारा जा उद्देश्य ही उनको प्रति हा सकेगी और फिर यह देश आशीन कहलाने लगेगा। पाकिस्तान में हमन युक्क सची समाप्त हो गए। इस देख में इस्लाम कैसा तो बहा की सची तरह के हुवन युक्क पाठ समाप्त हो जाये।

शोक समा

भारत की मूलभूत प्रचलनसची मोसती हिन्दवा गायी के निधन पर देश भर के आध्यात्मिकों ने उनके शरण आयोगित शोक समाओं के संदेश को हमारे कार्यालय को निम्नतर प्राप्त हो रहे हैं उनमें से कुछ निम्न हैं —
प्रांतीय आध्यात्मिक समा अधीकगणर कीजवत आय समाज सान्नाकुज बन्ध १ मोसतीम नदी योनि स इन विश्वेक विहार दिलनी किर्दारिण कालोनी साहबरा दिल्ली।

जिला हिसार में वैदिक धर्म प्रचार

दिनांक 10 से 16 नवम्बर 1984 तक हिसार जिले के निम्न ग्रामों में कच्ची सातरक कला बनाया गया, भूरा बासाबास में वैदिक धर्म के प्रचार का प्रोत्साहन किया गया। निम्न निम्न विद्वानों में भाग लिया—आय अगत के प्रकाश विद्वान बा सुदशन देव आचार्य महामनी वैदिक धर्म महाप्रभा स्वामी धेवान्न बा जो स्वामी आनन्द पुनि स्वामी रामानन्द जो स्वामी कीर्तिदेव जो बा नारायणदेव प तेजपाल भजनीपदेशक (आय प्रतिनिधिसमा हरियाणा) बहा चारिणी बहन कलावती आचार्य कल्या मुकुल गायीवार बहन सावित्री महाप्र रिशाल बिहू बादि विद्वान सभासी उप

देशक बादि के महबुब प्रबन्ध एवं प्रजन हुये। उपरान्त विद्वानों ने इन गांव में प्राप्त काय यज्ञ व माय काय ईश्वर वेद पाण्डव अहेश्वर चराच, कौरी, अष्टाचार बन्द करो बादि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। गांव के प्रति ठिठ सोमों ने इन आध्यात्मिकों का हृदय से स्वागत किया। सभी को व कया युक्त गुल गणियार को दिल जान कर दान दिया।

सत्यार्थ प्रकाश

—श्री राधेश्याम आय विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना सुल्तानपुर उ प्र

सत्य माय विद्वानों वाला ज्ञान—विषय बढ़ाना बाया।
सूर पर फेंकी गहूँ समिदा—को निमित्त त मिदाने बाया।
जिससे दिव्यालोक ग्रहण कर हुवा प्रकाशित भू—आकाश।

दिव्य बहो सत्याप्रकाश।।

प्राति समस्त मिदाने वाला बुर ब्रमाद भगाने बाया।
सारी बरती पर निमग्न हो—इका सत्य बजाने बाया।
अवेय धरत है इसके चौहद—मन्य विषय सुचर समुन्नास।

दिव्य बहो सत्याप्रकाश।।

सन्धा इस विद्याया जिमने जीवन माय बताया जितने।
सारे विषयों की सेखी—क्षण में मूल मिलाया जितने।
कानि प्रपना बन युक्क का मा की सहस्र जगाया प्राध।

दिव्य बहो सत्याप्रकाश।।

पाषाणों को मलकार मानवता का मिला सहारा
पील सुखी मत मता तने की—जाग उठा भारत सारा।
जिसके रहते कभी विषय बन किंचित होगे नही हुराश।

दिव्य बहो सत्याप्रकाश।।

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्म गायक महेश्वर कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

संध्य—यज्ञ शान्तिप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनीपेशाके—

सत्यपाल पवित्र ओमप्रवक्ता वर्मा पन्नालाल पीयूष लोहनलाल

पवित्र शिवरात्रिजी के सर्वोत्तम भजना क केमेटस तथा

प द्रुदेव विद्यालंकार के भजनी का संग्रह।

आय मगान के अन्य भी बरत स कैसेटस क सचीपत्र के लिए लिख



कन्वेन्शन इन्फोर्मिक्स (प्रिन्टिंग) प्रा लि

14 मकिट 11 फेम 11 अराक विहार देहली 52

फोन 7118326 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN

— प्राप्ति स्थान —

यह कैसेट बिल्की धर्म प्रतिनिधि सभा

११ हनुमान रोड नई बिल्की पर भी मिलते हैं।

अतमता का एक मात्र विश्वास

Groversons



Pari's Beauty
पैरिस ब्यूटी

गोवर्णर्स
सेल्स

ब्रा. पैन्टी. बनियान अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि



पैरिस ब्यूटी सेल्स कारपोरेशन

2665 ए/2 बीडन पुरा अजमल रवारी
करोलन बाग मंडी दिल्ली ११०००४
दूर भाष ५६९224 574200 582036

श्रीमती इंदिरा गांधी के लिए प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा शोक सभा

मुं जो कुमुद बेग जोषी के श्रीम. स्वास्थ्य राज्यमंत्री ने शोक सभा में श्रीमती ग. बी. की महामानवी की सभा दी। १७.११.८४ शनिवार मा. व. बहिन सुधी ईश्वर देवी जी की अन्तर्धान में स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री श्रीमती इंदिरा गांधी की निमग्न हल्का पर शोक सभा हुई जिसमें दिल्ली की प्रमुख बाय प्रतिनिधि बहिनो ने श्रद्धांजलिया बलिष की।

इंदिरा जी की भारतीय प्रगति की बासा विश्व शांति की बपुषुत और बहितीय राजनेत्री कहा गया। निर्भीकता से राष्ट्रहित जीने सने की अमर प्रेरणा बन गई।

सबप्रथम सभा प्रचाला श्रीमती सरला महता ने शोक प्रस्ताव पढा जिसके समयन में बहिनो ने अपनी वेदनाएं अभिव्यक्त की।

मुख्य बलिषि कुमुद बहिन जोषी बाबर बिबा बहिन शाह और कौणल्पा मलिक सभी ने उनके संस्मरण सुनाए ? बहिनो का हृदय भारी था और नेत्र सजल थे।

सभा में प्रसिद्धा की कि हृम शांति सवभाष राष्ट्र में स्थापित करके राजीव बाबी को अपना सम्पूर्ण स्नेह समयन प्रदान करणें। वही उस महान् बाल्पा के प्रति सन्धी श्रद्धांजलिवा होगी।

'शत शत तुम्हें प्रणाम'

(राजेश्वराम एडवोकेट)
भारत की हे माय बिबाते मानवता की ज्योति पुनीत।
पुष्प एक कृष्णी रहेगा तेरा सारा जगत चिनीत॥
गौरव की मायाएं तेरी बनीं परा पर दिख्य लज्जा।
गत-शत तुम्हें प्रणाम॥
अपने बीय तथा माहृष से बह मगान बनाया।
कण-कण में इस पुष्प भूमि के जापड़ ज्योति बनाया।
जब तक सरज ब द रहेगा अमर रहेगा तेरा नाम।
शत शत तुम्हें प्रणाम॥
बपुषु की बहु प्रगति राष्ट्र की कहुती अमर कहानी।
शक्ति पुनः हे इंदिरा गांधी और जसी बलिवाली॥
दीन-बलिष की बहु रक्षिका तुम को पुष्प का बाज प्रणाम।
शत शत तुम्हें प्रणाम॥

पहलबाय अवि प्रकाश का अन्तर्राष्ट्रीय बिबाह सन्मग्न नई दिल्ली ४ नवम्बर पुष्प हनुमान के विषय राष्ट्रीय पहलबाय अवि प्रकाश (बाकर बिल्ली निवासी) पुष्प श्री मायेराम बाय का पुष्प बिबाह बापुष्पती सखी (मि. पुष्प) पुष्प श्री भुवा का-कुली टोकिनी (बापल निवासी) के साथ बिना दहेज बैदिक रूप से सम्पन्न हुवा। दिल्ली के प्रमुख मायगिरी पत्रकारी पहलबायो ने बर बपु को बाधीर्बाद बिबा। इस अवसर पर विभिन्न सत्बाओ को एक एक रुपया दान दिया गया।

॥ ओ३म ॥

आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (अनुमानित लागत दो करोड रुपए) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि बायकर अधिनियम जी० ८० के अन्तगत करमुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बक ड्राफ्ट द्वारा मन्त्री माता जननदेवी बाय बर्मास नेत्र चिकित्सालय सी० १ जनकपुरी नई दिल्ली १८ के बते पर भेजा जाए।

दानदाताओ के नाम चिकित्सालय की शिला पर प्रकित किए जाएणें।

निवेदक

रामपोषल शासबाते सरशक सुपवेक महाबाय बमपाल बायनप्रकाश बाय
चिकित्सालय एव प्रधान िल्ली बाय प्रति प्रधान बाय मन्त्री महाबाय
शा० बा० प्रति० सभा निधि सभा के-द्रीय सभा बुनीबाय चेरि ट
शौबय से महाशिवा दी हूदी बा० लिमिटेड ६/४४ कीलनगर औद्योगिक क्ण
नई दिल्ली ११००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

आका कार्यालय ६३, गली राणा केदारनाथ

फोन न० २६६८३८

बाबडी बाजार दिल्ली ६

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

प्रकृत
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल बाय
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

भीमसेनी सुरमा
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

पापेकिल
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार

दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के लिए श्री बा० बमपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रस २२७४ रचबगपुर न० २

गौबीनगर दिल्ली ११ में मुद्रित। ११४ हनुमान रोड नई दिल्ली १

फोन ३१०१४०

रबि० न० डी (सी०) ७३६

आर्य सन्देश

औषम्

कुण्डन्तो विश्वामित्र

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मुख्य एक प्रति १० पैसे

वर्ष ६

पृष्ठ १२

रविवार, १० फरवरी, १९८३

आर्य सप्ताह १६९०८३३०८४

फाल्गुन २०४१

दयानन्दवाच—१९०

महर्षि दयानन्द शताब्दी दिल्ली का अभूतपूर्व

श्रद्धाञ्जलि समारोह धूमधाम से सम्पन्न

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह एवं केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त

मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए ।

स्वामी दयानन्द स्वतंत्रता के अग्रदूत एवं

महान् समाज सुधारक थे—महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के समायन समारोह में समायन भाषण करते हुए राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने कहा—

मुझे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह का उद्घाटन करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस देश की उन महान् विभूतियों में से थे जिन्होंने समाज में फैली कुुरीयों को मिटाते, लोगों को धर्मविश्वास से युक्त दिलाने और स्वयं तथा परबलियों के कल्याण के लिए

निर्भीक होकर धावाज उठाई थी। उन्होंने भारतीय समाज में नई जागृति पैदा करने की कोशिश की। वे अपने समाज सुधारक थे।

उन्होंने भारतीय समाज को एक नई रोशनी देकर उसे फिर से अपने पैरों पर खड़ा होने की प्रेरणा दी। उन्होंने शिक्षा का प्रसार, प्रखरों

का उद्धार बाल विवाह का विरोध और विधवा विवाह का प्रचार कर के समाज में एक नई क्रांति पैदा की। वे स्त्री शिक्षा और नारी स्वतन्त्रता पर बल देते थे ताकि समाज का यह धम किसी भी प्रकार से पीछे न रह जाए।

श्रद्धि दयानन्द अपने देश-

भक्त थे और उन्होंने भारत के नव जागरण में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और देश में स्वदेशी आन्दोलन की नींव रखी। सन् १८५७ को प्राजाद्री का पहली सड़ाई में भारतीयों को जो प्रशक्ता मिली थी उस से हार न मानते हुए उन्होंने युग भर कहा—

तेषु वृष्ट २ पर

महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रकाश-स्तम्भ थे-

राजीव गांधी

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्राप्त प्रधान मंत्री का संदेश

महर्षि दयानन्द हमारे राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रकाश स्तम्भों में से एक थे। वे हमारे प्राचीन गौरव के अथक प्रचारक थे, लेकिन साथ ही वे अथक विश्वास के कठुर विरोधी थे। वे विवेक सम्पन्न जीवन दर्शन के समर्थक थे। महर्षि जी जैसी महान् विभूतियों से ही हमारे देश की सांस्कृतिक परम्परा कायम रही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण शताब्दी के अवसर पर मैं उनको अपनी बधाइयों से धीपत करता हूँ।



महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समायन समारोह शासकटोरा हवेली स्टेडियम में सच पर प्राचीन शायें थे—

राष्ट्रपति जी ज्ञानी जैलसिंह, शिक्षा मंत्री जी कुण्डन्त पन्त, समाज प्रचार की सुपेरेव जी स्वामी वैष्णवनाथ जी, वेड म्हादय वर्मनाथ जी एवं तथा मन्त्री डॉ० वर्मनाथ जी।

हे नर ! तू अपने को जान

सुरेन्द्रनाथ वेदासकार

एम० ए० ए० सी० ६ ए० ६ १,
बीबरा विहार

सुरसॉर्सि महामन्त्र

०८८ प्रियव्या सीद ।

भासाऽनर्गलमप्राण

ज्योतिषा दिवमुत्तमान

तेजसा दिश उदद्गृह ।

यजु० १७ । ७२

ह मनुष्य (सुख प्राप्त) तू को
बाना ऊनी उमान लेने वाला है (वह
स्वप्न यदि) महान् प्रालम्बा वाला है तू
(गुणवत्ता गुण वीर्य) तुम्हें के गुण पर
बैठ (भासा) अपनी चमक से (अनर्गलम)
आनन्द का (आनन्द) भर दे (ज्योतिषा)
ज्योति से (विद्युत्) लोक को (उत्तमान)
ऊपर भाग ले (तेजसा) तेज से (दिश)
दिशाओं को (उदद्गृह) धरातल हे नर ! तू
सुख है ५ की उमान लेने वाला है ऊनी
वह शास्त्र ना न वा है जीव तू यह
स्वप्न है गुण भासा वाला है तुम्हें की
विद्यमान पर बैठ वहा बैठकर ऐसा
चमक कि अपनी चमक से अन्तरिक्ष को
परिणत कर दे क्षात्री जगत्प्रभु करती
ज्योति से अनीक को यम ले प्रते तेज
से दिशाओं को उडाने ।

मनुष्य के लिए कितना प्रेरणादायक है
यह मन्त्र सफलता न सविष्य के गम से
किताब हुई है न वह अन्तर्मह है वह तुम्हारे
निष्ठ है तुम्हारे पकड़ के भीतर है ।
सुखधरम धने भाषा नहीं वह भाषा
है । स्वयं भाषा न मेरे दिली तुम्हें जीव नगी
है वह तुम्हारे अन्तर है । समार की समी
आनन्द वलन जीवन का सारी सफलताएँ
तुम्हारे पास था ५ । अपनी गतिन
में विषय स 'मन प्रना प्राणा' ।
ऊचा रथ धनु ५ उस के नि
अपना सविष्य को 'मन्त्र' लना चाहिए
मह भान कहता है—

हम रा शरीर यह है शरीर का
चलान व या जावना चलन है । गतिन
के प्रा है यन्त्र यन्त्र बीबा रा
मनुष्य जान नन है तो वह अन्तरि की
चरम मोक्ष न व जाता है धरे
मनुष्य मन्त्र अन्तरि करने वाले
मुप्रां हा तुम मन्त्र भा वाले म भाग
हो । उसे वह मन्त्र ५ ५ शरीर जिन विन
वह वह मन्त्र न यगा तो उय 'न उस
सह प्रसन्न हो जाएगा कि वह एक पर
का एक देण का या एक अति का नहीं
किन्तु समुदाय तुम्हें का पुण्य ५ । तब
वही जब अपने को विषय का एक
समन्वय । विषय में एकता का अनुभव
करेता शरीर अपनी अन्तरि की शरीर अपनी
महानता को शरीर जाने के भाग को जान
जाएगा तब इस एकत्व भावना का वह
परिणाम होगा कि पदार्थ ही उस का

स्वभाव हो जाएगा शरीर तब वह अपनी
व्यक्ति से अन्तरिक्ष को भर देगा । उस
विषय 'आनन्द' बीबात्मा की मानविक
चमक इस जगत् को चमकीय कर देगा ।
हे जीव ! तू अपनी चमक को जानना
नहीं समझता नहीं । इस वयत को
भाव्य विषय के रूप में परिवर्तित करने
की समता रखने वाले राय कृष्ण
शकुरायाय स्वामी दयानन्द स्वामी
अद्वयनाथ महामा यात्री की गति तुम
में भी है । वस तू अपनी क्षित्री ज्योति
को प्रकट कर चमका सब तेरा तब विन
विन तो एक ऐसा कौशला कि विषय के
सब प्राण तेरा तब के प्रकाश में अपना
महान शरीर घनाय दूर कर सकने । तब
तू अपनी अन्तरि से न होकर सब की
अन्तरि में अपनी अन्तरि समन्वये अपने
को देख । इस अन्तरिक्ष को अपनी चमक
समका अपनी ज्योति से अनीक की
मन्त्र प्रती तथा दिशाओं को उडान कर ।

ह नर तू साधारण आदमियों की
तच्छु वयो बैठा है तू तो वह धर्मि है जो
कि क्षात्रे प्रसीध से सम्पूर्ण सत्कार को
आनन्द करने काता है । तू उतु अपनी को
जान तू सुख है व यमन ५ ।

राष्ट्रपति का भाषण

स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता के प्रेरक

कोई कितना ही करे, परन्तु जो
स्वदेशी राज्य होता है वह
सब से उत्तम होता है । विदेशी
राज्य कभी प्रशंसा नहीं होता ।
सन १८६३ में इन के गुप्त स्वामी
विराजमान ने गुप्त दक्षिणा के रूप में
ऋषि दयानन्द से यह वचन लेकर
उन्हें विदा किया था कि वह अपना
सारा जीवन लोक कल्याण के लिए
लगा दे । इसी की पूर्ति के लिए
ऋषि दयानन्द अगले २० वर्षों तक
देश भर में भूम भूम कर जन कल्याण
स्वदेश प्रेम और सत्य का प्रचार
करते रहे । अला लाजपत राय
और स्वामी अद्वयानन्द जैसे महान
लोक नेता उन्हीं को देन हैं । उन्हीं
के संदेश से अनेक भारतीय नर
नारी स्वतन्त्रता सभाम में कूब
पड थे ।

वह समाज में सभी वर्गों की
अन्तरि के समर्थक थे । उन्होंने प्रायः
समाज की स्थापना करते समय जो
१० नियम बताए थे उन में से ६ वा
नियम यह रहा था कि प्रत्येक को
अपनी ही अन्तरि से समुत्पन्न नहीं
रहना चाहिए बल्कि सब को अन्तरि

में अपनी अन्तरि समझनी चाहिए ।
यह समाज के लिए उन का मूल मन्त्र
था और इसी के लिए उन्होंने समाज
के हर कमजोर वर्ग को ऊँचा उठाने
की कोशिश की थी ।

वे भारतीय संस्कृति भारतीय
भाषा और भारतीय शासन के हामी
थे । वे देश के लिए स्वदेशी भाषा
चाहते थे और इसी के लिए उन्होंने
अनेक ग्रन्थों की रचना हिन्दी भाषा
में की थी । जिसे लगभग १०० साल
बाद स्वतन्त्र भारत में राज भाषा
का दर्जा हासिल हुआ । उन्होंने इन
ग्रन्थों की रचना उस समय खड़ी
हिन्दी में की थी जब कि प्रभो लोक
हिन्दी गद्य का पूरी तरह विकास भी
नहीं हुआ था । इस प्रकार से उन्होंने
हिन्दी के विकास में भी महत्वपूर्ण
योगदान दिया था ।

श्री अरविन्द घोष ने उन के
विषय में कहा था—

वे परम्परा को इस विचित्र
गुच्छ के एक धनोष्ठी योद्धा और
मनुष्य तथा मानवीय सत्ताओं
का संस्कार करने वाले महान्
सिद्धि थे ।
मह देश स्वतन्त्रता के अग्रदूत, महान



महान् दयानन्द विन स शताब्दी पर स्मारिका का उद्घाटन करते हैं । राष्ट्रपति ज्ञान यम ७६
'आनन्द' की ६० वीं वृत्त एवं 'समयोपपन्न' शालाको

समाज मुधारक अथ विद्वांस और
कविवाद की वैशिष्ट्य को जानने वाले
महान यामी महर्षि दयानन्द
संस्कृति का सदा श्रेणी है ।
महान् विद्वान् सदा श्रेणी है ।
उन के प्रति अद्वा व्यक्त करते हुए
कहा है—
मैं सादर प्रणाम करता हूँ

उस महान् गुप्त स्वामी दयानन्द
को जिन की दूर दूरि ने प्रातः
की प्रातः में सत्य और एकता
का बीज बोला ।

आज देश की एकता और
अखण्डता के लिए जो चुनौती दी जा
रही है—स का सामना करने के लिए
हम सब को ऋषि दयानन्द द्वारा

दिशाएँ एग द प्रम और भारता
यता के सून मन्त्र से प्रणाल लेनी
चाहिए ।

इन शब्दों के साथ मैं महर्षि
दयानन्द सरस्वती को अपनी
अद्वयनि अर्पित करता हूँ ।

। जय हिन्द ।

वेदों में समाज शब्द की उदभावना का मूल स्रोत

—पं० बुद्धदेव विद्यालंकार

बड़ा से लेकर जैमिन मुनि-परम्यन्त
 भीमचर्या में जिते बेहसलन का निर्माण
 किया था उसके तोरण द्वार पर अग्रभात्
 मनु का प्रमद वाक्य प्राच भी प्रकृत है—
 'देवो दलितो बर्णमूलम्'। यहाँ वेद शब्द
 से ऋक् यजु, साम और अथर्ववेद एव
 प्रसिद्ध शब्द से कुरुत्ता जोरित होती है।
 मनु द्वारा मुक्त बर्ण ब्रह्म वाच्य एव
 कर्त्तव्य का वाचक है। यहाँ का बर्ण शब्द
 समाज-निर्माण का और प्राथम शब्द
 व्यवस्थित-निर्माण का वाचक है। किसी भी
 स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण व्यवस्थित और
 समाज के समन्वय में है।

स्थिति पर सब समाज एक ढङ्ग के दो
 तिनारे हैं। जब तक इन्हो लोग न जागे
 तक हम न राष्ट्रियता को न विवर्धित।
 भूमि से समाज यह जाता है कि स्थिति
 समाज का; और समाज स्थिति का निर्णायक
 होता है। और साथ ही कि इन दोनों
 तन्त्रों को आधार बनाकर धर्मिक कार्य
 का अर्थ होता है। साथ का गुप्त समाज-
 वादी है। साम्राज्य का गुप्त माना जाता
 है। स्थिति के आधार पर ही इन दोनों जगहों
 की पहचान पूर्व है। कि स्थिति प्राकारान्त
 प्रभावित है। इन दोनों के आधार पर ही
 रूप और नीति जैसे राष्ट्र का निर्माण
 होता है। समाजवादी पर स्थिति सहाय्य
 निर्माण ही चुका है। विद्यालयों, विज्-
 नालयों में इन्हने प्रवेश विषय का रूप
 धारण कर रखा है। इन मूलतत्त्वों को ही
 के सन्तुष्ट के वेव में ही कोई व्यवस्था है
 या नहीं, पर पर बिचार कर समाजवा-
 द है, परन्तु गुप्त समाज के रूप में पर
 बिचार न करके साक्ष वेतों में समाज शब्द
 की उच्चारण का मूल लोत तक ही
 सीमित रहे।

[illegible]

हैं। बेवो में उसकी लिए शायद-पशु का प्रयोग हुआ है। प्रायः प्राण्य पशुओं की लसका एक नही पाई है और शतप्रक शङ्खान्न के अनुसार सर्वप्रथम मनुष्य, ध्रुवन, हीन, त्विषी और सप्त वे श्रुत वे प्रजा हैं। इन सभी पशुओं की जहाँ एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना संभव है, वहाँ प्राणी हीन के साथ भी मिलकर रहना चाहते हैं। जब तक मिलकर रहने की भावना मनुष्येतर पशुओं में है तब तक उस श्रुत का नाम श्रुत है। जैसे ही उस भावना की उच्छास्ति मनुष्यपात्र मनुष्य में हुई, तो उस समूह का नाम समाज ही गया।

राज्य पशुओं के परिपोषण में सक्षम
 पशु राज्य है। धन बाहु का धर्म बतित है,
 समाज राज्य में भी बहुत धन बाहु प्रमुख
 है। जैसे ही गति में एकटा धार्मिक
 कतिब समाज का निर्माण हुआ। उससे
 धाने ज्यों ही भागी में एकटा धार्मिक
 समाज में एकताहीन है उससे उत्पन्न
 प्रभाव्य है कि जब मनुष्य के व्यक्तियों
 के मनन हो जाते हुए। इसी को कहेंगे
 समन से समाज प्रभाव्य में एकताहीन
 जाता। 'व्यवहारे के समाज मूल में यावत्
 निष्ठा जाता है। 'सम्यक्चक्र' तुम सब
 विचार बनो, 'व्यवहारे' तुम सब
 मितकर जावत भी करो, 'स' को मनाई
 जावत' तुम सब के मन भिन्न हो।
 जब तक व्यक्तियों समाज का पावन
 उठती है, तब तक वह समन-प्रभाव्य
 कहलाती है। जैसे ही वह स ब मनाई
 ये एकताहीन हो जाती है, तब ही समाज
 निम्न हो जाता है। इस प्रकार समाज-
 निर्माण से विवेक हुआ एक उभार, आ-
 धार और एक विचार का होना धान-
 व्यवहारे, बहुत ही तीनों में भी एकता होनी
 आवश्यक है।

जरा यह मैं ना विषय है कि वर्तमान सामाजिक शास्त्र-विज्ञान उद्भवाना-कारण को समझना कि वह है उन सभी भावनाओं को वेदों में धर्मज्ञ उद्धान्ताओं में प्रकट किया गया है वेदों और ज्ञानकर प्रदर्श्यों द्वारा कि वेद और वैदिक मान्यता में समाज शास्त्र का प्रयोग नहीं हुआ है। प्रत्यय विषय चुके हैं कि सामाजिक शास्त्र में धर्म, प्रत्यय, जिस की सहायता को द्वारा है, उस शक्ति को किनी धर्म साधन के द्वारा एक कर देने का नाम समाज है उपाय पाठ को धर्मज्ञान के द्वारा एक कर देने का नाम समाज है।

वेद और वैदिक साहित्य में भ्रम और भ्रमा शब्द ब्रह्म, जीव और प्रकृति के वाचक हैं। इन की यह सत्ता दो कारणों से है। एक तो निरन्तर वृत्तिशील होने के कारण 'न जायते इति भ्रम'। इन तीनों

में ही तो प्रलय है और प्रलय जित
है। कृपित को चमत्कार था, उस को
चमत्कार वाली संश्लिषायी सत्ता बस और
एकालिषायी सत्ता थी, दोनों ही वेदों
को धरम्यता है। जब वह प्रलय हो
होकर प्रलय में प्रलय सत्ता से चमत्कार
एही हो। उस जगत् नामा समन-अमन-
या काल के सत्त्व में नायक सत्त्व है।
लेकिन जब यह सत्त्व जीव में नहीं जाओ
है, तो वह प्रलय को और प्रलय का
प्रलय स्वतन्त्रता से करता है, उसे किसी
चमत्कार को भी धारण करने नहीं होनी।
उस को प्रलय उत्पन्न होनी है।
उस समय और सामान्यता में प्रलय सत्त्व
है। वेदों को प्रलय प्रकृति को प्रलय और
सामान्यता धारित नहीं, जिस के चमत्कार
में बस और प्रलय है, उसे प्रलय प्रलय-
प्रलय प्रकृति में वह प्रलय को
सामान्यता धारित है, जहाँ की
अमन्यता किसी को प्रलय प्रलय प्रलय
प्रलय प्रलय प्रलय प्रलय प्रलय प्रलय
प्रलय प्रलय प्रलय प्रलय प्रलय प्रलय

नाम नाम्ना ओहसीति धुरा सूर्यात्पुरोवसः ।
यवज्ज प्रथमं तद्गुणवत् स ह तत् स्वराम्ब-
मिधाय यस्मान्नाम्यत् परमस्ति भूतम् ॥

जिब बाबू नागनाथी धर्मपूज मिल्ल
महानाथ जी सावारी की घुम जावत
उमरावा बाबा हेतु पूरा पर्यटन; पूरा उमर
होत के बाबूय के होत सौ सुई सोई
उग हेतु की दुई बिधाना हेतु, हे वगुड
गतिबिध, बाबानाथ धर्मपूज दूक होत,
निष्कर्ष होत हूब बिस्वविश्व बाबनाथ
की प्राण होत हे पराज उज्जुत बाबनाथ
कीर कीर होत हे. हूब बाबू में सुटि-
रवाजी की पुरबबबबब हे नेकर बबबबब
स्वराज बाबनाथ तक का वगुड हे। भोई
हूब सून हे जिये जिये बाबनाथ का जमक
हूब कहत हे। जमक-जमके सावारी का
निगलिण उमर-जमक प्राण (बहुनि)
बाबानाथ बाबनाथ में रहेगी, बाबनाथ
विश्वराज बाबनाथ में रहेगी। जैसे-जैसे
दूध बाबनाथ में उज्जुत का बिचार बाबनाथ,
बीर होत प्रजापति बाबनाथ बाबनाथ,
वोई होत बाबनाथ (बुडु ३११६)
हलस की दूध बीरबाबनाथ में बाबानाथ
बाबनाथ में बिजानाबाबनाथ में उज्जुत
कहते। बाबनाथ बिसेण रट् डमसल विराट
बाबनाथ में बिसेण राजन उज्जुत विराट
कहते। बिसेण राजन विराट बाबनाथ की

विशेषता यह है कि उस संवहन को सभी व्यक्तियाँ स्वयं राजते इति स्वराट् प्रवक्ष्या को प्राप्त हों। यह अभिप्राय है 'स्वराज्य-मिषाव' शब्द का ऐसे व्यक्तियों का एक होकर नति करना कि जिस का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं राजमान हो, समाप्त कहनायेया।

[illegible]

बिराहं वा इवमथ आसीत्तस्या आतापा-
 तर्धं न विमेषिष्यमेवेदं न विध्यतीति ॥

सौवर्णाजस्ता गार्हपत्ये न्यक्रामत् ॥
मूत्रमेधी गृह्यपत्तिर्भवति य एवं वेद ॥

सौवकाभत्साह्वनीये न्यक्रान्त ॥
यन्त्यस्य वेषा वेषवर्ति प्रियो वेषानां सज्जति

य एव वेद ॥

यस्यार्तो बलिणीयो वासतेयो भवति य एव

सौदकामरसा सभायां न्यक्रामत् ॥

सौवक्रामस्ता समितौ ग्यक्रामत् ॥

यन्त्यस्य सामात सामित्या अभात य एव
विद ॥

स्यामन्त्रमामन्त्रणीयो नवति य एव वेद ॥

सृष्टि के आरम्भ में सर्वप्रथम विराट्

अवस्था थी, अज अवस्था तो थी, सम्राट्
अवस्थान थी । अज अवस्था तो थी, परन्तु

समाज व्यवस्था न थी, व्यक्तियाँ थीं, पृथक्-
पृथक् तो थीं, परन्तु संगठित न थीं, वह राज

भी गतिशील तो थी, परंतु एक होकर(सं)
गतिशील (अज) न थे ममाज न थे। सर्व-

प्रथम विराट् अवस्था में उत्क्रांति हुई और दो व्यक्तियों ने परस्पर एक-दूसरे को

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वैदिक कैसेट

का अन्त कहानी
सन्ध्या-यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि
परिचय अजयपुरेश्वरों-

सत्यपाल पाथक, आभप्रकाश वमा, पन्नालाल पीयूष, सोहनलाल
शिवराजयती जी के सर्वोत्तम भजना के कैसेट्स तथा
बजरदेव विद्यालकर के भजनों का संग्रह ।

आय नमाज के अन्य भी बहुत स केसेट्स के सूचीपत्र के लिए लिखें

14 नार्कट-11, फ़म-11 अग्रफ़ विभाग दतली-52
फ़ोन 7118326, 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समापन समारोह पर

आर्यसमाज ने आजादी का भव्य महल
बनाया है

रामचन्द्र विहल, ससत सदस्य



महर्षि व्यासजन्म प्रायिक सामाजिक
 दायन्य प्राप्त नही हो सका। एक महर्षि
 एतन्मूर्ति प्रोच यः उच्यते कथा वा-
 विदेही राजा प्रसन्न क ताप दुःखमुक्तं व्यस
 हारये नन्दे बाला भा य-काले प्रायः
 अस्मिन् इन्दुही दो अस्मात् पत्राभिर्न प्राप्त
 ये शस्यं कालि कदा ॥ २४० ॥ की कालि
 की सुवर्षा मां यं वर्गं वृषावन्त इतरा हो
 यः ॥ ३० ॥ नन्दनराज प्रथम प्रपत्तिपति
 थ । उनका प्रपत्ति था ही राजाकी
 विरोधिनि स्थान की रूप्य काल विदेही
 ये प्रपत्ति कालि का सुवर्षा कले रवे ।
 ये के सत्यत साय कन्तु एतन्मू
 महर्षि एतन्मू कालि मौर ने एक प्रायिक
 एतन्मू प्रमेक कालि एतन्मू कालि काय
 के ये मद्रुष्टि देव क १०१ । एक ही
 प्रायिकमा की विदेहा एतन्मू ही विदेहे
 येन की प्रायिक के लिए प्रायिक न स्थित
 एतन्मू स्थित न दिया हो । प्रायिक व्यासजन्म
 के सुयोग स्थित हो । प्रायिक व्यासजन्म
 ये स्वतन्त्रत के तैत प्रायिकनि कडकर प्राय
 स्थित । विदेहाप्राय प्राय के मन्त्र प्राय
 के बाय प्रायक समान प्राय हो गयी हो ।
 स्थानि व्यासजन्म न कांसे प्राय
 प्रायिक । प्रमृष्टन प्राय के प्रायिक
 के व्यासप्रायक कन्तु एतन्मू एतन्मू प्रायिक
 प्रायिक प्रायिक की जन्मता न उच्यते की
 सप्त दशाने

दिली म जब स्वामी श्रद्धानन्द
गुरुकुल "प्र" म रहते थे वहां उनसे
मिलते तथा प्रेरणा मन प जवाहर लाल
नेहरू महात्मा गांधी तथा सुभाषचन्द्र बोस
बाया करते थे ।

सा० लाजपत राय से लेकर शहीद भगतसिंह चन्दावर आजाद, रमप्रसाद बिस्मिल सभी आर्य समाजी परिवारों की सन्तानें थीं।

मैं निमकोच होकर कह सकता हूँ
यदि महर्षि दयानन्द और उन द्वारा प्रस्ता-
वित धर्मसमाज न होता तो देश आजाद
न होता। धर्मसमाज के कवियों गायकों
ने गीत बना बना कर देश की निराशा
जनता में आशा का संचार किया।

ऐ मादरे हिन्द गमगीन न हो
दिन अच्छे आने वाले हैं।
आजादी का पैगाम तुम्हें
हम जल्द सुनाने वाले हैं।

महाविद्यालय की कृपा से प्रायः समाज ने स्त्री शिक्षा प्राप्त की। विधवा विवाह, राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार, स्वदेशी का प्रचार, हरिजन उद्धार, युष्माकृत निर्धारण कोई भी ऐसा कार्य जो राष्ट्र को मजबूत करने वाला कार्य है। हमें जो प्रायः समाज ने शुरू न किया हो। ना के राष्ट्रीय कांग्रेस ने इन्हीं प्रायः कार्य को राष्ट्रीय कार्य को अपनाया।

घाघरीय मितन के बाद धार्यसमाज राजनीति से उदासीन हो गया है। धार्य समाज ने घाघरीया का महान् बहुमत हथुकी को लौटा दिया उसमें नाहू, भूत न पाये को नहीं देखने वाला गरीबी। उसे न धार्यकर कलहा हुआ राजनीति में घाघरी कुटुम्ब धार्यक समाजपर गरीब ने राजनीतिक सेवना है। गरीब सेवना नहीं है जिनकी सेवा देशान्तर के धार्यराज्यियों के मुखा-मेष्ठे बहुत कम है। घे घाघरी याग मज्जा लेते हैं। धीरे धार्य बस दूर बसे देखते रह जाते हैं। जब जब देश पर धार्यनिकर वधेरी सफ़्त याग घाघरसमाज देश की शक्ति के लिए हथुया बाधे धार्या है। धाया ज्वलन उदाहरण है हथुारे धार्यने धाघरी नदी धियिका की हथुया के बाद देश क्षित्त गया। धार्यसमाज धाघरी शीत देश राजनीति पर नाचबन धार्यन के याग में उन्होंने राष्ट्रधित्व ने मजा देस को धाघ धाघ के भन्नेर को समझकर गुण कासिरी को छानद दिया। जब नमयन कासिरी को धाघरी नदी देश को निचजजकारि धर्यिणी को नमनकारि वासी समय की धाघाया को नो धायसमाज की राष्ट्रधित्व की प्रतापी को।



महाभाग्य राक्षसपुत्री की भाव्य प्रति-
निधि तमक के पतिविकारी गुरु, देविषो
श्रीराम भक्तों ने । धृष्टका पाण्डवी की को
मुने इस प्रसन्न पर पार नये कि नहीं महापु-
द्वानाथ की को अश्वत्थामि प्रपित नये ।
सह्यः प्रायः राक्षसपुत्री की महा पत्नये है
श्रीराम को भारत की योग से अश्वत्थामि
प्रपित करने का प्रथिकावत उत्तरी की है ।
इहमी कृष्ण की प्रमत्तता है कि वे स्वयं
पत्नये है । महापु द्वानये देव के कीने के
महापुत्नी के से हृदय । हमारा प्राणी देव
है, हमारी सत्ता का इहमी इहमी है ।
है गौरवमय इहमी है । इहमी है ।
है । हमसे बुरा-पात्रों का इहमी है ।
विश्व के इहमी की हृदय के देवों पराजय
का बन्धुत्व की सह देव की है । जय-जय
इहमी के यह दश कक पत्र, निराप-
श्रुतिया हृदय की हृदय का हृदय, जय तमक
से इहमी के बन्धन महापुत्र पंदा हृदय ।
किन्तुने हृदय की जय जीवन विराय है ।
है जयना की है । एम महापुत्नी के महापु-
द्वानाथ की है । मयकना ही है ।
है श्री रामपुत्र की जे में महापु । मय महापु-
त्री की जीवने से महापु द्वानय स्वयं के सत्तये
है । वे नो सोच दुष्टि श्रीराम कर्ज तीनों के
है । लेकनि मय जीव का प्रम-
प्राय तमक निराय । जय मय की जय

[illegible]

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त का स्वागत करते हुए सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

३६३६५०



जिला राजकोट (गुजरात)

दिल्ली कार्यालय—आयसम, ज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

रजत जयन्ती विशाल समारोह निमन्त्रण

मान्यवर

सादर नमस्ते

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १६, १७, १८ फरवरी १९८५, सोमवार, रविवार, सोमवार को ऋषि जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का विशाल समारोह होने जा रहा है। देशदेशान्तर से पचारे धार्मिक विद्वान् तथा कलाकार ऋषिभक्त अपनी श्रद्धाञ्जलि ऋषि के प्रति अर्पित करेंगे। इस बार स्वामी सत्यपति महाराज की अध्यक्षता में महर्षि मेला से पूर्व 'योग शिक्षण शिविर' का भी आयोजन किया गया है, जो कि १० फरवरी में १६ परवरी तक चलेगा। जो महागुणवा इस में सम्मिलित होता चाहे। तुरन्त उपरोक्त पते पर सूचित करें।

ऋषि मेले पर धारास भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा-ट्रस्ट की ओर से होगा।

टंकारा ट्रस्ट के प्राचीन निम्न कार्य चल रहे हैं—

- १ ऋषि जन्म-गृह का प्रबन्ध
- २ अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय
- ३ गो-सर्वधन केन्द्र (विशाल गोशाला)
- ४ दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र गृह
- ५ धार्मिक-गृह
- ६ धार्मिक साहित्य प्रचार केन्द्र, पुस्तकालय तथा नार्चनलिक वाचनालय।

ऋषि जन्म स्थान टंकारा की कुछ विशेष आवश्यकताएँ भी हैं। पानी की भयकर कमी, ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग का एक सेठ के व्यक्तिगत कब्जे में होना तथा टंकारा की मस्जिदों का अपेक्षित विकास। ये तीन मुख्य कार्य हैं जो टंकारा स्मारक के पूर्ण विकास में बाधक हैं। टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की मस्जिदों का विकास तथा वहाँ के कार्य का कठिनाइयों की दूर करने के लिए टंकारा-ट्रस्ट के अधिकारी तथा ट्रस्टी जनता-जनार्दन के सहयोग से प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं।

आप भक्तों की सूचनायें यह भी लिख दें कि टंकारा में वा गोशाला है, उस में ३० गोवं हैं। इस गोशाला से विधायियों को शुद्ध दूध मिलता है। परन्तु हर वर्ष गोशाला में २५०००/- का घाटा हो जाता है जो कि आप जैसे ऋषिभक्तों और गोभक्तों के दान से ही पूरा होता है।

आप में आग्रह और नवनिष्य प्राप्ता है कि इस विषय पर आपका सहयोग हो। आपका सहयोग ही यदि दशनीय और पूर्णतया विकसित न हुआ तो धार्मिक समाज जसी महान् सत्ता कैसे विश्व में अपना छिर उठा कर सकती है।

प्रति वर्ष सहस्रो ऋषिभक्त ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पधारते हैं। उन के आवागमन और भोजन आदि का पूरा प्रबन्ध नि शुल्क टंकारा-ट्रस्ट की ओर से किया जाता है। इस के अतिरिक्त उत्तर भारत के यात्रियों के लिए प्रतिवर्ष ट्रेन तथा स्थान बसों का भी प्रबन्ध किया जाता है। बसों द्वारा आप टंकारा के अतिरिक्त अन्य दर्शनयोग स्थानों को भी देख सकते हैं।

विनम्र निवेदन

आप में विनम्र निवेदन है कि आप टंकारा प्रबन्ध पचारे और इस सारे कार्य को मुचास रूप से चलाने के लिए अपना आर्थिक सहयोग भी दें। यह राशि आप कास बैंक, कास बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीऑर्डर से 'टंकारा सहायक समिति' के नाम से इस के कार्यालय आयसम, ज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भिजवा सकते हैं।

आप से साधुरीय प्रार्थना है कि अपनी ओर से अपनी धार्मिक समाज की ओर से, अपनी स्त्री समाज की ओर से, अपनी शिक्षण संस्थाओं की ओर से अधिक से अधिक राशि भेजें।

विशेष सूचना—टंकारा ट्रस्ट को दो जाने वाली राशि कर से मुक्त है।

निवेदक,

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा
के अधिकारी तथा ट्रस्टीगण

आप बधाई के पात्र हैं

२० सारीस को अत्यन्त रूप से दिल्ली नही पृथ पाया, लेकिन टी० बी० पर सदा सभाकार पत्रों के धारक समारोह की पूरी जानकारी प्राप्त हो गई। यह धारा कार्य विश्व क्रम और अनुशासन के द्वारा सम्पन्न हुआ, उसका सारा सफल श्रेय केवल आपका देना अतिशयोक्ति न होगी, बल्कि आप जैसे कर्मठ, परिश्रमी तथा आत्मरुक् कार्यकर्ता होने, वहाँ कोई भी बड़े से बड़ा कार्य पूरा किया जा सकता है। टी० बी० के पत्रों पर मैं विशेष रूप से आपको बूझ रहा हूँ। लेकिन आप ही उस समय भी प्रबन्ध के कार्य में न जाने कहा-कहा भाग-नींव कर रहे होंगे। वास्तव में आप जैसे व्यक्ति को भवन की नींव के पत्थर की तरह है। नींव का पत्थर बनने की पूरी जम्बूकी तथा सुरक्षा प्रदान करता है लेकिन हमें वह दिखाई नहीं देता। वास्तव में आपकी ही भावना शुद्ध जैसे साधारण युवक को धारण करने की श्रेष्ठता देता है, इसीलिए मैं समय-समय पर आपसे निम्नकर मार्गदर्शन तथा नवीन योजनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करता हूँ।

आपने शाकटिकीय स्टेडियम में हस्तों तक कार्यक्रम की सहज इतने से करा सारा साथ में युवक की प्रशिक्षण करा डाली, आपकी जो भी प्रसंगा की जाए कम होगी।

—श्री० धर्मचन्द्र शास्त्री

यह पत्र समारोह समिति को एक कार्यकर्ता के लिए नहीं बल्कि उन सभी का प्रशिक्षण पत्र है जिन्होंने नाम की कामना न करके समारोह को सफल बनाने में योग दिया।

दाप

—रामेश्वर 'हिमाशु'

जग में दयानन्द दीप,
को तुमने जला दिया।
प्रज्ञान-आभिरावित है जग,
वे दुन्देगा क्या हैं।
मनो भी भगवान् की भक्ति से,
बन को गए वे हूय।
विमुक्त प्रपन्ने कर्म से,
सब हो गए वे हूय।
तब बरा पर जान का,
इक यन्त्र बना दिया।
उभने फिर 'प्रकाश' का,
कल्ला बहा दिया।

शास्त्र में भी बड़ी हुई,
मुसामी के पास में।
स्वच्छी राख बन्धनी—,
हमें वह पाठ पढा दिया।
उभने फिर अपने स्वयं का,
नी रंग बिधा दिया।

श्री २५ विधा दिया ॥

अमर रहे मणतन हमारा

राजधानी कार्य

हियारि से ये हिंदू बलवि लक
जा जाए केतना सुधाविर।
भारत के प्राणन के मारे
विस्तार को बचाव बलिह।

पासाणों के मद पर फिर से
बले समय हो तीव्र बुधारा।
अमर रहे मणतन हमारा॥

मानवता के तपस्व विरले—
हूए वरा पर हो धारवस्त
मानवता का धनुष सब
भू का हो पतनी मुख पस्त।

वेद ज्ञान की दिव्य गण ने
धनुस् पान करे जग धारा।
अमर रहे मणतन हमारा॥

सब सनातन धन सुदृष्टिक
बेदों का फीले भरती पर।

सम्प सुसंस्कृत धर्म बन सब—

बनुधा के भारी नर नारी
कुम्भतो विदमयामय का—
गये भू पर अविश्व नारा।
अमर रहे मणतन हमारा॥

सुखी तथा समृद्ध भूमी हों
जुलि मुनिकों के हृदय धनुषांगी।
ज्योतिष्मान करे मानव मन
फटे स्वान विद्या की कार्य।

बड़ सुख पर नियम होकर
भारत यह प्राणों से धारा।
अमर रहे मणतन हमारा॥

आय विद्यालयों के प्रबन्धकों प्रिंसिपल सहोदरों के नाम

प्रावश्यक परिपत्र दूरभाष ३१०१५०

आय विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा प्रत्येक आय विद्यालय कक्षाओं में नैतिक विद्या की पुस्तकें लगवाई जाती हैं। उन्हीं के अनुसार पार कक्षाओं की परीक्षाओं का आयोजन भी करती है।

परिषद् इस सब नीति प्रशिक्षण (कक्षा ५) नीति शिक्षाकारी (कक्षा ८) नीति ज्ञानी (कक्षा १०) नीति विचार (कक्षा १२) की परीक्षाएँ करी विद्यालयों में २५ फरवरी १९८५ सोमवार को आयोजित करेगी। परीक्षा काल कक्षा की वेदा से प्रति सप्ताह निश्चय मिले जायेंगे। पुस्तकें द्वारा सीधे सभाओं अमर मणतन की सुविधा न हो तो कार्यालय की सुविधा करें। जिनके पास पुस्तक का 'चुकी' है व उनकी सहायता और परिषद् कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली में निजवानों की कृपा कर।

अचलेश

दिल्ली

कानूनी

आय विद्या परिषद् दिल्ली

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१

कुप्याचन्द्र पन्त

(पृष्ठ ६ का लेख)

विचार है कि वे प्राकृतिक विचारों का
तिरस्कार करते व इस नहीं है व
विज्ञान के औद्योगिकरण आदि का पर न
के। अमर राट की सव्यवस्था को
"होम" पहले समझा राज ब वस्यवना
इस बात की है कि हम नव नव उनका प्रा
न करें बलिक देश की एकता धरत त
स्वाभिमन्यु के लि दे चरित्र है।
नवयुवकों में धाम एक काय प्रण ला को
पैदा करें व सारे धारा की जि हैं ह— दे

सामने महीने ने रखा है उनको धाम
हमने अपने चरित्र म डालकर साथ
बनाया है। महीने ने सम्पक धारा के रूप
में हिंदी के महान् को समझकर उसे सीधा
और अपनाया और बाब में उसे राष्ट्र
धारा के रूप में प्रचारित किया महान्
दयानन्द प्राकृतिक नायक के निमित्तों
में प्रयुक्त थे।

आज इस भारत की धास्यता के
लिए हूँ यदि बलिगन का देना पर तो
हम पीछे न रहें।

दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



23 जड़ी कुटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

दातों का हान्टर



अब नये पैकेज
में उपलब्ध

२१ ग्राम

महाशिया टी टुम्पी प्रो. लि.

9-44 इन्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति नगर गाँव दिल्ली काष्ठ 638609 537587 53734



मन्सूरी की लाल



की टा



की टा



दात का हान्

गोतिका

राजनिवास विद्यालय

- परमेश के गुण गाते बसो।
मद्रमधारा बहाने बसो॥
राहों में धार जो धवरोष बन।
कञ्जसुप्त मन से हटाने बसो।
धामल्य बढता को नियम कर।
पुष्पाध मे जयमगाते बसो।
तब धुध धनुषार दुर्गमिना।
सधुषार निज मन बनाते बसो॥
ईश्वर के वत में ब्रती भक्त बन।
सुख धाम सब को बनाते बसो॥

उत्तमता का एक मात्र विश्वास



Groversons

Paris Beauty
पेरिस ब्यूटी

ग्रावर
सन्स

ब्रा. पैन्टी. बनियान. अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि



पेरिस ब्यूटी सेल्स कापेरेशन

2665 ए/२ बीकानेर पुरा अजमेर राजस्थान
करोल बाग नई दिल्ली ११०००९
दूरभाष 562724 574200 582036



आर्यसमाज ढाकनेर दिल्ली में बृहद् यज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार

दिल्ली भाय प्रतिष्ठित सभा के सत्ताबधान में भायसमाज मन्दिर ढाकनेर में १३ जनवरी से २० जनवरी तक महर्षि दयानन्द विद्या ढाढी हस्तेवास के साथ मनाई गद्। प्रतिष्ठित प्रातः ६ बजे से ११ बजे तक बृहद् यज्ञ हुम्। यज्ञ के बड़ा पुण्य स्थान ब्रम्हदान ६ आ व विरम निनासहित यज्ञमार्गे में सैकड़ो भयमयी षडालुगो सहित भाय। सभा सबकी मंगेराम भाय जात्रप्रकाश बाबू उदयसिंह, मेहरसाज पवार ५० मुनीसाज बित्तिसिंह भाय, रिहासदाय रजसिंह भायप्रकाश गुप्त मुक्याभायक पुर्नसिंह हरासिंह बना। यज्ञ के पश्चात् महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन तथा भाय विद्यामार्गे पर कथावाचक भा मेहरसाज पवार द्वारा कथा हुई।

१६ जनवरी को दिल्ली देहात की भायसमाजों के पराधिकारियों तथा सुप्रसिद्ध मन्ना सेना एवं कायकताभा न गंग लिया। बृहद् यज्ञ के पञ्च न षड्राजि सभा में मन्ना भायानन्द तथा सरस्वती का भायत्वा एवं प्रत्यावायक जायज सुने के लिए प्राणीय हुम्का एवं नारायण प्रबुद्ध भायकाय का भावर उमरपडा। दो हजार से आ अधिक क इस विद्याल जनसुहृ को सम्भाषित करते हुए स्वाभा भायानन्द की महाराज ने हरिणाभा दोर दिल्ली देहात में भायसमाज क काय का प्रभाषकारी वचन ध्यस्तुत किया। प्रथम बार ऐसे विद्याल सल्लय में भाए गल्ल से एम् ५० पाठ सम्भायको की तात्पल्लनवारा हा वल्ल बद्। प्राणीय वल्लुगो न मी भाय भायवचन के मुख स्वरूप को पहल्लत हुए सभाय पर वचन की प्रविसा सी। प्रवचन के पश्चात् दिल्ली देहात क भायसमाज क कायकताभा का बैठक दिल्ली दहात केद प्रचार मल्ल के प्रभात की भायवचन वा की प्रथमलता न हुई। इसम प्राणी में भायसमाजों की स्वापना एवम् हुम्का भायवचन दिला भाय प्रतिष्ठित सभा के साथ कराने का विरचय किया वया। भा मंगेराम भाय ने सुलुल भायसमाजों में नवजीवन लाते के लिए कटिबद्ध हुने का भायान्त किया। आ मेहरसाज पवारने सगी भायलुगो का भायार प्रवचन किया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शती

एव

मानव जागृनि सप्ताह

दिल्ली भायसमाज भाय गुरा (पायलरूप हाय) कमी नमी, दिल्ली-७ में १३ जनवरी ८५ से २० जनवरी ८५ तक कमी पुनर्भाय स समयाय वया। विश्व में निरप्रतिष्ठि प्रातः की ५० मन्त्रप्राय शास्त्री की प्रथमलता में सामयवीर वय, बिहने वैषाढी, निरालेखन्द शास्त्री ने। प्राति ७-१० बजे में महाया कमीसाज भा एव रामवीर की के सुगुणुर मल्ल हुने रहे। श्री गैरमचर बीपर जो द्वारा देवकथा के रूप में भायक भागृनि के लिए देवमयी की भायत्वा करते रहे। २० जनवरी को विशेष सत्ताब के साथ महायज्ञ की पुर्नसिंह में सहस्रो भाजि भाजिमित हु।

कमी

आर्यसमाज आर्यपुरा

कमी नमी, दिल्ली-७

कन्या गुरुकुल हाथरस

भागरा निवासी श्री बी० त्रिलोक सिंह जी, बोर्ड भाफ रेवेन्यू के पूर्व सदस्य ने छात्रवृत्ति की स्थानीय निधि के लिए षड हजार रुपये दान दिये हैं। भागरा निवासी श्री विष्णुदेव पोहार एडवोकेट ने कन्या गुरुकुल में प्रतिष्ठित हाल वय के निर १०० रुपये भासिक देने का सुन सङ्कल्प लिया है।

आवश्यकता है-

कन्या गुरुकुल के लिए आवश्यक प्राप्त चिकित्सक और अनुभाषी नर्स की आवश्यकता है। साथ ही आर्य निवासी की ऐसी महिलाओं की आवश्यकता है जा छात्र कन्याओं की देखभाल कर सकें।

गुप्ताधिष्ठात्री

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

विज्ञापन सूचना

भायसमाज लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी के लिए मीय पुरोहित दाहुर। अपनी योग्यता अनुभव और सत्कारिता कवने में दस्ता सम्मली विवरण भेजे। वय व्यवहार मनी, भायसमाज मन्दिर, लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी, (निवास स्थान व बिजली भाधि की सुविधा नि शुल्क हुमी)।

शास्त्रार्थ संग्रह

भायसमाज के इतिहास में भाय तक जितने भी शास्त्रार्थ हुए हैं, उन सब का एक संग्रह श्री स्वामी भ्रमर स्वामी की प्रकाशित कर रहे हैं। सतः भाय सब से प्रायना है, यदि भाय के पास शास्त्रार्थ विवरण सामग्री हो तो कुपया रजिस्ट्री द्वारा २५ फरवरी तक बिजमाने का कूट कर। पुस्तक भाय के भाय पुस्तक के उपहार सहित तथा भाय के सहयोग का उल्लेख करते हुए भाय की सामग्री सादर बिजवा दी जायेगी।

पता-भ्रमर स्वामी प्रकाशय विभाग

३/३६, दशरानन्द नगर,
गाजियाबाद (उ० प्र०)

प्रबन्धक

शास्त्रार्थ संग्रह प्रकाशन समिति

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारको की आवश्यकता

सांकेतिक भाय प्रतिष्ठित सभा में देशान्तर प्रचार पर विशेष भाय देने का निरचय किया है। सिक्के से बनी के दीपय विरल के एलेक सेतो में भायसमाज का लक्ष्य पड़ता। मौरिख, इतिहास भायार निरिहाय जैसे सेतो में यद् एक प्रमुख कलित के रूप में उभरा। विरल के निर सेतो में वय एक भायसमाज का वचन भायन हो चुका है। उसका लेख कुल्ल भायिलो की स्वत मेरणा और भायार से यद् विहाय प्रचारको की कठिन साधना की हो। भायसमाज में इन सेतो में वैदिक यज्ञ के प्रचार के साथ ही सामाजिक कालि के भायोन्नत और रायनसिक सेरणा वयने में भी प्रमुख मुमिका वया की। पर अब ऐसा अनुभव हो रहा है कि वैदिक प्रचार मल्ल होना आ रहा है, स्मोकि विरल स्तर पर पठित प्रचार की कमी रही। प्रवी तक विरल के बहुत सीमित वय ने ही भायसमाज का प्रचार हो गया है, इसे विरलभायी कवने की भायलकता है ताकि विरल भायवता का कवना हो सके। सतएव इस ऐसे महाराजों की जानकारी प्राय करना, पाछे ही बी कवनाय प्रचार के काय में भायना समय देने को उत्तर हों।

इच्छुक महाराजों से निवेदन है कि वे इस विरलित के रूप में हम से एक व्यवहार करने का कूट करें। वयने पत्रोत्तर में वे अपनी भायु, वैषाधिक भायल्ल, भायलो का भाय, भायसमाज से सम्बन्ध, प्रचार काय का वल्लुव, प्रकाशनी की सूची एवम् कथ्य भायवचन भायकारियों का विवरण देने का कूट करें। वयने भाय का भाय भाय भायवचन भायकारियों के तीर ऐसे प्रबुद्ध भाय भायों का भाय और सभा की बिहने, जो भायके कायों के विरल में कमी-भायि वयने हो। वय की वृषित करने का कूट करें कि वे बिजना समय दत काय में से वयने हों। वयी महाराजों को वयने प्रथम पत्र में ही गुप्त विवरण दे देना योग्य होना। भायार है कि देशान्तर प्रचार में सहयोग प्रदात करते हेतु भाय अपना वल्लुव लयव भी भाय करे। कवनाय,

पत्रवीर

डा० भायल्ल कवनाय

उपनी सभा दय

एलेक-विह प्रचार उपरिस्थि

आर्यसमाज दीवान हाल में यज्ञ और वेद प्रचार



आर्यसमाज दीवान हाल में महर्षि दयानंद गिरिधर शास्त्री के उपस्थित में आयोजित यज्ञ एवं वेदप्रथा समारोह युक्त सम्पन्न हुई। इस अवसर पर प्राप्त काष्ठ ३ श्री ५० राजपद का ध्वजस्तंभ से श्री ५० यशपाल सुभाष एवम् ५० सुन्दर कुमार पुत्री के द्वारा सम्पन्न हुआ। रात्रि में श्री ५० राजपद के आर्यस्त्री प्रवचन हुए। बिनासे केक धाम नर नारी जीवन का लिताग्रद गिआओ द्वारा प्रभावित हुए।

१३ जनवरी यज्ञ में भारतीय लोक स न के साक्षर आ जयप्रकाश धरवाल ने १ यज्ञ में भाग्युति प्रधान का।

मन्त्री

मूलचक्र गुप्त

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली

स्मारिका प्राप्त के लिए ध्यान द

जिन धाम लेश के प्राहो को स्मारिका नहीं मिली व १७ फरवरी विजि की फिरोजबाह कोठवा मंदान में समा कार्यालय से या १६ हनुमान रोड से अपनी प्राहक सन्ध्या बिनाकर कभी भी से सकते हैं।

—सम्पादक

आर्यसमाज तीमारपुर, दिल्ली में शताब्दी समारोह पर यज्ञ तथा वेद प्रवचन

१३ जनवरी २० से जनवरी तक प्राप्त यज्ञ एवं साधकाल प्रवचन श्री ५० विनय चन्द्र पाराशर के द्वारा सम्पन्न हुए। श्री तुलसीराम की की नवन मन्त्री द्वारा मधुर प्रवचन हुए। भारी जनसमूह ने इस अवसर पर वरमान एव मधुर मन्त्री द्वारा यज्ञ साम उठाया।

रायचन्दर शाह

प्रधान

आर्यसमाज तीमारपुर दिल्ली

ईसाई युवती की शुद्धि विवाह

६ १२ ५४ को आर्यसमाज मन्दिर अटल कैलाश २ में कुमारी उषा श्री की उनकी इच्छानुसार शुद्ध करके वैदिक (हिन्दू) धर्म में लेकर नाम उषा रखकर श्री चेतन सोनी से विवाह कराया गया वर बन्धु दोनों पक्षों ने गव-वन्धनी का आशीर्वाद दिया।

रघुनन्दन गुप्त

पत्नी आर्यसमाज

अटल कैलाश II नई दिल्ली ५८

प्रयाग निकेतन, जवाहर नगर में महायज्ञ

पूर्णहृति रविवार १० जनवरी को ११ ३० बजे होगी

स्व० स्वामी प्रभु धामिनी श्री महाप्राय के ६८८० जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित यज्ञ के ध्वजस्तंभ हैं युक्त महारामा दयानंद। स्वामी दीवानन्द महाराज बलदेव ५० राजप्रसाद देवानन्दर श्री यन्त्रीराज शास्त्री श्री नरेश ब्रह्मचारी धामि विद्यानों के बीचनीयवोनी विचार भी सुने को मिलेंगे।

आधि सपर—१२ बजे आधि सपर का आयोजन है। भारी लग्गा में पधारकर यज्ञ साम उठाये।

निबन्धक

प्रतिगोपी परिवार

प्रयाग निकेतन

३१ नू० बी० जवाहर नगर दिल्ली ११०००७

आर्यसमाज कृष्णनगर में ऋग्वेद परायण यज्ञ एवं स्वागत

आर्यसमाज मन्दिर कृष्ण नगर दिल्ली ५१ में १७ १२ ५४ से १२ १२ ५४ तक स कीय कर प्रतिनिधि समा बनानगर के तत्वावधान में ऋग्वेद परायण यज्ञ महर्षि दयानंद बलिवान गताम्नी समारोह के रूप में मनाया गया। बिनासे श्री प्रोम प्रकाश श्री शास्त्री सतीश शाली के प्रवचन एवं ५० आर्यदेव की स्तुति के भजन हुए। धर्मस्थ दिन २२ १२ ५४ को मास्टर दीनदयाल जी धाम एवं श्रीमती उषा शास्त्री के आ प्रवचन हुए। आला रामचोपाध शास्त्र बाने का आर्यदेविक धाम प्रतिनिधि समा के प्रधान बने जान पर वि की प्रतिनिधि मया के प्रधान भी मयदेव की के तत्वावधान में स्वागत किया गया पूर्णहृति प्रवचनों वगने एवम् प्रमिन न क प बात आधि सपर भी किया गया।

जयदीनशाह भाटिया

आर्यसमाज मन्दिर

कृष्ण नगर दिल्ली ५१

श्री रामचोपाध शास्त्रबाने का स्वागत करते हुए आर्यसमाज कृष्णनगर के प्रधान श्री डा० जगन द।

केवल 800 सैंकिड

सत्य के प्रचारार्थ

केवल 400 सैंकिड

मृत्यार्थ प्रकाश

यह घर पहुँचाए

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध संस्करण वितरण करने वालों के

आकस (28-30 16 पूरक ४४२ की दर) लिए प्रचारार्थ

आकस (23-36-16 पूरक ४२० की दर)

आर्यसाहित्य प्रचार ट्रस्ट

३५५ पंजी रावनी, दिल्ली-६ दूरभाष- 23६३६०/233112

30 सैंकिड से उपरोक्त मूल्य देय होगा।



औरम् आर्य सन्देश कृष्णन्तो विश्वमर्षम्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति २० पैसे वर्ष ६ पत्र १३ रविवार १७ फरवरी १९६३ प्रायः सप्ताह १९६०-६३-६४ फाल्गुन २०५१ दशम दशक—१९०

शिवरात्रि के महापर्व पर विश्व भर कीआर्यसमाजों में ऋषि बोधोत्सव की धूमधाममहर्षि दयानन्द विश्व के महान् धर्मोद्धारक एवं समाजसुधारक थे

एच० के० एल० भगत

प्रायसमाज साहूदरा दिल्ली द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर मुख्य प्रतिनिधि के रूप में बोलते हुए केन्द्रीय सप्त दीप मंत्री श्री एच. के. एल. भगत ने महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये श्री १ समाज सुधार के कार्यों की विस्तृत जानकारी देते हुए उन्हें महान् सुधारक धर्मोद्धारक एवं क्रांतिकारी बताया। उन्होंने आर्य समाज के द्वारा किये गए महान् कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा—समस्त सुधार के काम स्त्री शिक्षा प्रखरो और सस्कृति और सम्यता की रक्षा सब आर्यसमाज ने प्रपनाया है। मैं समझता हूँ सरकार का २० सूचों कार्यक्रम जो राष्ट्रीय कल्याण का सूत्र है वह आर्यसमाज ने पूरा ही



प्रपनाया हुआ है। उन्होंने आर्यसमाज को उसके द्वारा किये गए महान् कार्यों के लिए साधुवाद दिया।

प्रत्यक्षीय भाषण करते हुए श्री रामगोपाल सातवाल ने कहा ऋषि दयानन्द ने प्रायसमाज को एक प्रबल धार्मिक के रूप में जन्म दिया है। प्रायसमाज अपने जन्म से ही आर्याष्ट्रीय तत्त्वों से भाष्यय अत्यन्त प्रशान् ज्ञानान् ज्ञानान् से लभ्य बला बाया है। इस अवसर पर हन ऋषि के कार्यों की पूजा करने का व्रत ग्रहण कर।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुयदेव ने कहा—ऋषि दयानन्द ने राष्ट्रभक्ति मातृभक्ति पितृभक्ति पुत्रभक्ति (प्रायसमाज) और प्राणिसमाज के प्रति प्रेम प्रकट किया। उन्होंने वग जाति से ऊपर उठकर मनुष्यता का पाठ पढ़ाया। उन्होंने कहा—महर्षि द्वारा सम्पादित प्रायसमाज दश समाज की विषय परिस्थितियों में भी अपने सुधारवादी धर्मिकोण से सततन रहा है। हमें आज और भी अधिक प्रबल होकर कार्य करते रहने की प्रेरणा मिलनी चाहिए।

ऋषि मेला (ऋषि बोधोत्सव)

रविवार, १७ फरवरी १९६४

स्थान—फिरोजशाह कोटला मैदान

प्रातः ८०० बजे यज्ञ
प्रातः ९१० बजे ध्वजारोहण
प्रातः १००० बजे खेल-कूद प्रतियोगिताएँ
प्रातः ११३० बजे भाषण प्रतियोगिता
विषय—राष्ट्रीयता के महर्षि दयानन्द का योगदान
बोपहर १०० बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम
अपराह्न २०० बजे सांस्कृतिक समाज

प्रधानातिथी—माता रामगोपाल सातवाल
मुख्य प्रतिनिधि—श्री बलदेव बाबू (प्रमुख लोकप्रिय)

मुनी मुमुक्षु मेन जोशी

प्रमुख वक्ता—श्री श्रीप्रकाश कुमारी

श्री मिश्रभुमार वारधी श्री शिवाजी कुमार वेदान्त

श्री मुनीपुत्र कुमारी (वर्तमान विचार) श्री व० श्रीप्रकाश सातवाल

प्रतिनिधि के अधिक सहाय के प्रतिनिधि प्रतिनिधि कर सहाय का सहाय कर सहाय

नोट—मुख्य वक्ता आर्यसमाज के उत्सव समिति का समय पर उपस्थित करने का कष्ट करे।

पत्रिका—मुख्य वक्ता—श्री श्रीप्रकाश कुमारी

मुख्य कोषी सभा, दिल्ली राजकीय (परीक्षा)

१६, हुनुमान रोड, नई दिल्ली

दयानन्द थे ऋषि दातार

हरन निवासी

कीर्ति विचारक बना जगत में जब छाया वा विचार प्रसार ?
विश्व प्रेम का विजय रहा वा किस के उर में लहरें मार ?
कीर्ति विचारक के वक्तव्य में लाया कीर्ति बल्लभ प्रसार ?
हवा दुर्धम से ज्ञान मुक्ति से दूर किसने किसने प्रसार ?
दयानन्द के दयानन्द के दयानन्द के ऋषि दातार ॥ १ ॥

कीर्ति जितने वह प्रबल हीन की धुरी पर किसने किसने प्रसार ?
कीर्ति बना वा कलुषाचार बलाप विजय के करने पार ?
दुष्टाचार प्रबल प्रसार दिया कीर्ति प्रबल प्रसार ?
नारायण वर केकर उठता कीर्ति प्रसार कीर्ति प्रसार ?

दयानन्द के दयानन्द के दयानन्द के ऋषि दातार ॥ २ ॥

कीर्ति जितने जितने सहाय का किया सहाय जितने जितने प्रसार ?
कीर्ति जितने जितने प्रसार का किया सहाय जितने प्रसार ?
नारायण वर केकर उठता कीर्ति प्रसार कीर्ति प्रसार ?
दयानन्द के दयानन्द के दयानन्द के ऋषि दातार ॥ ३ ॥

नारायण वर केकर उठता कीर्ति प्रसार कीर्ति प्रसार ?
कीर्ति जितने जितने सहाय का किया सहाय जितने प्रसार ?
नारायण वर केकर उठता कीर्ति प्रसार कीर्ति प्रसार ?
दयानन्द के दयानन्द के दयानन्द के ऋषि दातार ॥ ४ ॥

इन्द्र वर्धन्तो अमृतं कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । अग्रजान्तो अराक्षन् ।

ऋ० ६ । ६२ । ५

पदार्थ—(इन्द्र) परमेश्वर का (वशन्त) पुत्रपान करने हुए (अमृत) कर्मों को करने हुए (विश्वम्) आर्य ऋषियों विश्व को वश करने हुए (अराक्षन् अग्रजन्त) अराति भावना तथा क्रूरपणों को दूर करने वाले कर्मों ।

गीतिका

परमेश के गुण गाते कर्मो ।
सर्वमेश्वर महति कर्मो ॥
राहो मे भाए जो श्वरको बन ।
कणुसपन मन से हटाते कर्मो ॥
आत्मस्य ब्रह्मा को निर्गुण कर ।
पुरुषार्थ से जगमगाते कर्मो ॥
तब सुद अमृतदार दुर्भगिना ।
समुदाय निज मन बनाते कर्मो ॥
ईश्वर के व्रत मे शरी मेक बन ।
गुण धार्य सब को बनाते कर्मो ॥

उपास्य गायता नर पवनानार्यन्दव । अग्निदेवा इत्यक्षते ।

शाम उत्तराष्टिक ११।१।

पदार्थ—(नर) हे उपासक नेता जनो (अग्नि) देव परमात्मवैभवं के लिए (वेदान्) अग्नि हवस्यो दिव्य गुणों के सह करने के लिए (अमृत) तुम सब (हवसे) पवनानार्य अक्षात्मक पवनकर्त्ता ब्रह्म रूप प्राण प्रभु के लिए (उर) उपासना करो (गायत) शक्ति मान करो ।

गीतिका

आर्य ब्रह्म के अग्निवाणी नर ईश्वर का गुण गायन कर ।
करत मनुष्यपुत्र पवन का नर अमृतकर का गुण गायन कर ॥
पवन करने बाबा है जो जगसे जीवन मन कर पावन ।
पवनान कोन रख शायर का आराधन का अनुपासन कर ॥
तु दिव्य गुणों को सत्य किये आत्मिक अक्षर ईश्वर होकर ।
आक्षात्मक कान्त प्रशान्त परम सर्वेश्वर का श्रुति गायन कर ॥
देवों का सगवतर्हो जो बा देवी सम्पत्तिता है ।
इस परम सहीने प्यारे का गुण गायन का ब्रह्महृदय कर ॥
तु कल्याण मरण से आजा दे दे दे ईश्वर को शाना प्यारे ।
आनन्द कद अक्षिपानन्द कल्याण का गुण गायन कर ॥

अन्वा अग्निना भवत शीर्षाणोऽह्य इव ।

तेषां को अग्निनुत्पन्नाभिन्ना हन्तु वर वरम् ॥

पदार्थ—(अग्निना) हे अग्नीही जन (अन्वा) अग्नीही कर्मो हो । (शीर्षाण) शिर उच्छिष्ट, दुर्गम गतिष्कर्महोम (अह्य) वर । (अह्यन्तु) (अह्य) हो । (तेषां को अग्निनुत्पन्नाभिन्ना) तुम ज्ञानाग्नि द्वारा परे कर्म के लिए जानो । (वर वरम् इव) अग्नि को पुन-पुनकर परमेश्वर परे ।

जो प्यार नहीं करते वो ही मदाना प्राणी ।
आपों के होते भी आर्यो है अग्निमान्नी ॥
है नहीं दूर अष्टा को स्वार्थ अर्थ-देवी ।
गतिष्कर्म हीन है वे अग्निवर्गी अग्निमान्नी ॥
शिर फिरे शेष-विष से अग्निवृत्त इतने बांनि ।
बुर भी उस से बलने की करते आधानी ॥
आमानि जन्म पुन पुनकर बाहुर कर देवे ।
अमानि रख पी से दुर्भवा आनी आनी ॥
कर लीह लगी से है यही बुद्धिमान्नी ॥
जन् लीह लुका हारा कर सत्य विद्वान्नी ॥

अग्नौ अग्नी देवीरभिष्टय आगो भवन्तु पीतये ।

आगो रश्मि जलन्तु नः ॥

पञ्च १५ । १२

पदार्थ—(देवी आगो) अग्नि प्रकाशक सर्व व्यापक प्रभु (न अभिष्टये पीतये) न चक्षुः) हृदयकोष्ठ आत्मस्य रस प्राण के लिए कल्याणकारी हो । (न अग्नौ अग्नि जलन्तु) हमारे लिए शुभ की सर्व वृष्टि करे ।

यही अग्नि है तुम से आरम्भ ।
आग वृष्टि कर तुमकर वृष्टि कर कल्याण अमान्नी ॥
है नर को अग्निमान्नी आग्नेय जीवन वरदाने बांनि ।
व्यापक विश्व अमान्नी आग्नेय आग्नेय वृष्टि बरसाने बांनि ॥
दिव्य व्यापक कल्याणी आग अक्षात्मिक आग ॥
है आत्मस्य कल्याणकारी मेरे प्रभु है अक्ष-अमान्नी ॥
कल्याण नर है विश्व अमान्नी हृदय जीवन वरदाने अमान्नी ।
कर अमान्नी सब शीर अक्षा को आग्नेय गुण रख आग ॥
अमान्नी आग्नेय अमान्नी हृदय आग, हरेने सब दुःख अमान्नी हृदय आग ॥
आग दिव्य अमान्नी हृदय आग, करने सब कल्याण हृदय आग ॥
हो आगाव दिव्य रख नर-नर कर जीवन सहाय ।

आगावत्तरण—आग्नेय आग्नेय आग्नेय
अमान्नी, तुमकर नगर, (अग्नि)

आर्य पर्व सूची (१९८५)

साप्ताहिक आर्य प्रतिनिधि सभा आयमानाओं की सूचना के लिए स्वीकृत आर्य पर्वों की सूची प्रकाशित किया करती है ।

अर्ग १९८५ की सूची इस प्रकार है—

सं०	पर्व	शीर्षाणि	आर्यवर्ग	अग्निवर्ग	दिन
१	मकर संक्रांति	१ माघ २०५१	माघवर्ग २, २०५१	१४-१-१९८५	शनिवार
२	वसन्त पञ्चमी	१२ माघ २०५१	फा० शु० ५, २०५१	२५-१-१९८५	शनिवार
३	सीताष्टमी	१ फा० २०५१	फा० अ० ८, २०५१	१२-२-१९८५	मंगलवार
४	दशम्या शीतपर्व	६ फा० २०५१	फा० अ० १३, २०५१	१७-२-१९८५	रविवार
५	श्रीराम नवमी	११ फा० २०५१	फा० शु० ३, २०५१	२२-२-१९८५	शुक्रवार
६	नवम्याष्टमी (होली)	२४ फा० २०५१	फा० शु० १५, २०५१	६-३-१९८५	शुक्रवार
७	नव शिवरात्रि	६ चैत्र २०५१	चैत्र शु० १, २०५१	२२-३-१९८५	शुक्रवार
८	आयमात्र स्थापना दिवस	१७ चैत्र २०५१	चैत्र शु० १२, २०५१	३०-३-१९८५	शनिवार
९	होली पूर्णिमा	३४ चैत्र २०५१	आयमात्र शु० ३, २०५१	२०-४-१९८५	शनिवार
१०	आयमात्र उपान्त	१४ आयमात्र २०५१	आयमात्र शु० १५, २०५१	३०-४-१९८५	शुक्रवार
११	शीर्षाणि जन्माष्टमी	२२ आयमात्र २०५१	आयमात्र अदि ८, २०५१	७-५-१९८५	शनिवार
१२	गुरु शिवरात्रि-दिवस	२३ आयमात्र २०५१	आयमात्र अदि १०, २०५१	८-५-१९८५	शुक्रवार
१३	निजय रात्री	६ कार्तिक २०५१	आयमात्र शु० १०, २०५१	२२-५-१९८५	मंगलवार
१४	महर्षि निजय दिवस (सीतावली)	२७ कार्तिक २०५१	कार्तिक अदि ३०, २०५१	१२-६-१९८५	मंगलवार
१५	अक्षय्य तृतीया दिवस	८ पौष २०५१	अक्षय्य शु० १२, २०५१	२३-१२-१९८५	शनिवार

टीप्पणी—१ इन्द्र पर्व के वैदिक वर्ग के प्रचार और वैदिक संहिता के प्रचार का महान् शासन बनाता आदि ।

२ देवी तिथियों के पठन जाने से अग्नीही शरीर में परिवर्तन हो सकता है ।

प्रोग्रामाध्यक्ष
श्री आर्य

लघु कथा (अर्ग्य)

आवश्यकता

आगे की मेज पर दूरे परिवार के साथ बैठे टिप्पण बाबू सहायकार ने अपने चेहरे से कहा "बेटा, मैं सोचता हूँ बड़े के पास किसी तरह का काम ।"

"बाबू जी आप ठीक ही सोच रहे हैं कि तुम अपने बड़े के पास बड़ी सब चीजें हो जायेंगी ।"

"बाबू, मेरा मेरा जाने है ?"

हा बाबू की अपनी लौकिक भी तो छुट्टी पर गया है, दूध, राशन, सब्जी, ये सब माने के लिए घर में कोई तो होना चाहिए, बड़े के अपनी दिवसों में बिना दी ।

"हा बाबू जी, मनु ठीक कह रहे हैं, वे ही शीर दिवस की परीक्षा ही इसी माह में है, मैं जानती हूँ कि तुम में कमजोर है, आप देख लेंगे तो ।"

बाबू सहायकार को बहकता का पत्र आने की आशा—"मैं एक माह के लिए घर से जा रहा हूँ, आप बाबाजी तो घर छोड़कर ही जाते हैं" बाबू की का मन निमग्नता उठा और वह अचानक ही उठ गये ।

१७/५/२३३ मनीष नगर, कायपुर

सम्पादकीय

घटना और बोध

बहु १८३६ की महाशिवरात्रि को जब एक छोटी-सी घटना ने बालक ब्रूलक्ष्म के जीवन में महान् क्रांति कर दी। धीरे-से सच्चे शिव की लोभ में एक दिन घर से निकल पड़े। घटनाएं अपने आप में छोटी या बड़ी नहीं होती। उनके परिणाम से ही उनको छोटा या बड़ा कहा जाता है। हमारे जीवन में इतस्ततः अनेक घटनाएं घटित होती रहती हैं परन्तु उनका प्रभाव हमारे जीवन में क्रांति नहीं कर पाता। इसलिए उनका घटित होना इतना भी महत्वपूर्ण नहीं। प्रत्येक घटना एक शिक्षा है, बही भी होती है। जेम्स वाट की कैतली के उद्घाटन को आप से उठते गिरते देख चमत्कारिक अनुमान हुआ कि आप में धार्मिक-धार्मिक होती है। यही व्यक्ति आप के जीवन का आविष्कारक महान् वैज्ञानिक बना। न्यूटन की बाग में पेड़ से टूटकर गिरते सेब की देख यह किंतुल्य जगत्, फल लीचे ही क्यों गिरा? ऊपर क्यों नहीं गया? वे घटती की मुख्य शक्ति का कारण शक्ति के सम्यक् हुए। इसी सिद्धांत पर अनेक विज्ञान के साधारण चमत्कार उन्हीं जगत् को दिए। समर्थ गुरु रामदास की पवित्र धारा "साधवार्त" कहने मात्र से वैराग्य-विश्व की गंध में गुप्त

मूलशक्ति एक घटना से ही सच्चे शिव की लोभ में गृहत्याग कर जले धीरे-मही प्रदानन्द के नाम से विश्व विख्यात हुए। बहुत धीरे-चाचा की मृत्यु उनके वैराग्य का कारण बना। महाराज बुद्ध भी सब को देखकर ही उसारी की चरमरता से विनम्र होकर महान् त्याग मन को चल पड़े थे। पर महाराज बुद्ध के वैराग्य ने कर्तव्य विमुक्तता अधिक की।

महंति दयानन्द को एक ही बार बोध हुआ, ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए, अनेक बार जीवन के घटना क्रमों ने उन्हें बोध कराया।

योगी महाराज समाधि के प्रानन्द मन, एक पीकार से हिल उठते हैं। विषया या अपने बच्चे को लाश की नदी में बहा उस पर लिपटा बोधवा भी अपनी लाज को आपने के लिए उतारकर चलो जा रही है। धीरे अपनी गरीबी बचती पर पीकार कर रही है। उस कारण एक स्त्र से महंति को प्रारत की दीन दशा और गुलामी का महसूस करपा। धाको से विहीन सुविचारप्रानन्द ने भी स्वामी दयानन्द को ज्ञान, विज्ञान धीरे देख, समाज के प्रति कर्तव्य बोध कराया।

महंति दयानन्द ने सच्चे शिव की उपासना का ससार को बोध दिया। महंति दयानन्द को एक मनुष्य से लेकर समाज धीरे राष्ट्र से लेकर विश्व तक की मूल मूल समस्या एवं विषयता के विनाफ सशक्त शान्दोलन धार्यसमाज कह दिया बोध है। इसीलिए तो इन महापुरुषों ने कहा था— 'समष्टि कार्य दुवता, उसाह धीरे समन्वयताकता की दुष्ट से धार्यसमाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता।

—सुभाषचन्द्र बोध

जहा जहा धार्यसमाज है वहा-जहा जीवन-अपीति है।

—सहायता पायी

धार्यसमाज एक वास्तविकता है जिस से जन साधारण का धार्य-जनक उत्पान हुआ है।

इतिहासकार सुभाष सरकार

धार्यसमाज दिशाबोध है परन्तु व्यक्ति से ही समाज बनता है मात्र धार्यसमाज है व्यक्ति-अर्थित से वचारिक क्रांति एवं दिशा बोध की। जो प्रत्येक दयानन्द भक्त धीरे वैदिक धर्मों को पूर्ण करना है। जीवन के प्रत्येक प्रतिक्रम से हमें बोध ग्रहण कर सकते हैं।

—सहायता सुभाष

आरक्षण की नीति पक्षपात का योक्त

भारत सरकार के द्वारा चलायी गयी धारक्षण नीति बहुत ही सरलताक है। कुछ वर्ष या बारि विशेष के आधार पर वेदवार करते हुए कम योग्यता वाले व्यक्ति को अधिक योग्यता वाले व्यक्ति से नीचे की तरफ लेने वाली तथा-कीमत धारक्षण नीति प्रतिभा के सामने धीरे राष्ट्रपति उन्नीति के सामने धार पायी है। एक इन्वीन्विट यदि कम योग्यतावाला, केवल बारि के आधार पर किसी बाध का पुत्र बनाने, कारखाना निर्माण के कार्य पर बनाया जाने धीरे योग्य व्यक्ति की उपासना की जाने यह देश के साथ विषयताकता होगा। देश व्यक्ति के द्वारा बनाया गया बाध, यह किन्तु विनोत का पक्षेय? कारखाना क्या उन्नीति करेगा? कम योग्यता का बाधक किन्तु रोगियों का धाररेखन कर प्राप्त सेवा? इस पर विचार किया जाना चाहिए। यदि धीरेविट धिख पीछि बन के रूप से विचार की धारक्षण की नीति का समर्थन करते हैं तो यह इस प्रकार होगा बारिह को पिछड़ा कर अग्रगण्य वर्ग है उनको सिद्ध शिक्षा, पुस्तक, पिछिका सुविधा उपलब्ध करायी जानी चाहिए। योग्यता में किसी प्रकार का वेदवार नहीं किया जाना चाहिए इस नीति से उचित सुचोचन किया जाये।

समर्पित ज्ञान्ती

धार्यसमाज कायकारी

कुलपति सम्मेलन गुरुकुल काशी विश्वविद्यालय की संस्तुति

आरक्षण आवश्यक है—

१६ जनवरी के विविध परिचर्चा सत्रों में यह निश्चय किया गया कि सर्वमान सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक धर्मस्थानों के परिश्रेय में भारतीय शिक्षण संस्थाओं में अनुसूचित और जन-जातियों के लिए धारक्षण जारी रखा जाय। युग युग से चले आ रहे शोषण तथा भेदभाव के विरुद्ध एक युवावर्ग के रूप में, शैक्षिक तथा धार्मिक विकास में योगदान के रूप में शक्ति तथा प्रभावशाली स्थान प्राप्त करने के साधन रूप में, अनुसूचित वर्गों में प्रतिभा के प्रोत्साहन तथा उसके अनुचित विकास के लिए समानता तथा सामाजिक स्तर के उत्थान के लिए सर्वमान में दिए गए आश्वासनों की पूर्ति के लिए मानवतात्मक एकता तथा सामाजिक न्याय प्रदान करने के लिए तथा एक जातिविहीन समाज के निर्माण के लिए धारक्षण आवश्यक है।

प्रार्यसमाज इस बात की विचारिणीयों में जागृति के लिए निशुलक शिक्षा, निशुलक भोजन, पुस्तक छात्रवृत्तियाँ चिकित्सा कण्ड तथा प्रार्य-निर्मेरता को प्रेरणा तथा सुविधाएं दी जाय। प्रशिक्षण के लिए कक्षाएं तथा श्रमरिण पाठ्यक्रम शुरू किए जाय। उनकी धार्मिक स्थिति सुधारने के लिए रोजगार के धार्मिकसाधन उपलब्ध कराये जाय। शिक्षा का व्यवसायीकरण करते हुए अनुसूचित वर्गों के विद्यार्थियों के लिए पोलिटिकल विचारित किये जाय। अनुसूचित वर्गों के विद्यार्थी शिक्षा प्रभुओं ने छोड़ इसके लिए उन्हें तथा उनके अधिभावकों को विशेष प्रोत्साहन दिया जाये। धार्मिक शिक्षाप्रदान शुरू करने के लिए—प्राथमिक स्तर पर उनकी सामाजिक आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप में पूर्णता देने के लिए इन वर्गों के भेदाधी छात्रों को विशेष रूप से ऊपर लाने के लिए धार्मिक सामाजिक शैक्षणिक मनोविज्ञान तथा राजनैतिक रूप से धारक्षण नीति का पुनर्मल्यांकन किया जाना चाहिए शिक्षा समानता तथा समान अवसर दिये जाने के सिद्धांत पर धारारित हो धारक्षित विद्यार्थियों को उनकी मान्यभाषाओं में शिक्षा प्रदान करने तथा सामाजिक प्रशासनिक सेवाओं में उनका उपयोग करने को छेड़ हो। सब लोग सुखी हो, वे समान रूप से जानि वस वर्ग तथा किसी भी भेद-भाव से मुक्त होकर राष्ट्रीय धारा में ब्रूड सकें। इसके लिए एक मानवतात्मक बाता-बरण बनाने के लिए प्रचार तन्त्र का मजबूत होना प्रार्यसमाज है।

दांती की हर बीमारी का घरेलू इलाज



21 जडी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

दाने का डाक्टर



अब नये पैकेट
में उपलब्ध

4 ग्राम

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

5/14 इण्डियन स्ट्रीट, कोलकाता नई दिल्ली 15 जिन 529808 ७727 537341



मनुष्य की पूजा



मृत की दुःख



उत्तम का धर्म



दान का दर्द

सत्य के प्रबल समर्थक : स्वामी दयानन्द

—प्रकाशचोर साहू



भायनम न कीदृशता नो जकर
१८५७ मे हुई। पर इससे पहले ही स्वामी
दयानन्द ने ऐसे ही कुछ और सनतों की
की नीच चालों को। उत्तर प्रदेश के भाय
समाज की स्थापना स एक सान पुन नैनी
साल मे स्वामी की न पसा ही एक सगउन
बनया जिसका नाम सत्य सोधक समाज
था। प्रतीत ऐसा होता है—बहादुरसाज
प्राधान्यसमाज धादि सन्तों से लगता
विधान माना थायस्माज समबल स्वामी
की प्रथमिक रहा। इसीलिए उन्होंने
भाय मे उसे अपना लिया। पर साधक
धीरे साधक धीरे धीरे स्वामी दयानन्द
उसका काम प्रचार करता जाहू न
उसका प्रामास सत्य सोधक के नाम से ही
धम्मा पता लगता है। सत्य का प्रचार
करते समय स्वामी जी क मन मे न तो
कोई पुनर्विचार ही था और न ही दूसरे चर्चा
पावों की चर्चा किसी बात को उठोने यह
कहा यह ही अग्रिम सत्य है कोई विन्दु
इस पर लग ही नहीं सकता। बल्कि कही
किसी तो उनस लको मे यह ही सकेल
मिलता है—नो इस उन्होंने लिखा है
उसमे भाल सथो से यदि परिचयन की
मुझाह। लिखा है तो यह निःसंकोच कह
करिना जाय।

सत्य सोधक समाज की ही राह पर
चलन हुए ऋषिभ्यान्तन मे धानी प्रसूज
सत्य का नाम की सत्याप्रकाश रहा।
सत्य की सत्य मे पचने के लिए स्वामी
जी ने इसके बीहड़ सुलुलालो मे यो तो
प्राय हर प्रमुख नियम की ही उठाया है।
सत्य का प्रारम्भ को उन्होंने दिनी धार्मिक-
ता की धार मे मिलन मिलन को स
कल रही ईश्वर की साध दुकानो की घस
विषय बना है। यही से उन्होंने किया है।
यह सत्य का नाम जब दीन सोधक यानी
की पयवी प्रामास सत्य सोधक को स
दुरा भना कहते थे। स्वामी जी न सप्रमाण
उन सब मानो की आस्था करते हुए कहा
यह तो सब ही। नाम उस एक धार्मिक
सहित के है फिर प्रकाश किस बात का है ?
नीचा के स यो यह तो सारे रास्ते यह

पाते ही एक मजबूत पर है। ऐसे ही और
भी धनेको साधक प्रत्य सत्याप्रकाश
मे स्वामी जी ने उठाये। अन्तमा जाति,
नियमो की प्रिया से बलित रचना बाल-
बिवाह, मुद्र विवाह और पुनर्विवाह का
नियम धादि धनेको साधक धार्मिक
ऐसे व विधेये देण और समाज दोनो सुहा
हो रह थे। स्वामी जी ने धाने भाषणो
मे और वनो मे ऐसे बड़े धाने हाथो
लिया। भारत मे प्रचलित सभी मह-
मत्तारो को यह धाना मानते थे। इसी-
लिए उनको कमजोरियो का भी इस प्रथ
मे उन्होंने प्रम उठाया है। सत्याप्रकाश
की इस भूमिका मे बड़े ही निरपेक्ष भाव से
उन्होंने यह लिखा है—

येस इस प्रथ क बनाने का मुख्य
प्रयोजन सत्य धर्मा का प्रकाश करना है।
मे और को सत्य है उसको सत्य और को
मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन
करना सत्य धर्मा का प्रकाश समका है।
यह सत्य नहीं कहलाता यो सत्य के स्थान
मे प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष के स्थान में सत्य का
प्रकाश किया जाए। किन्तु यो पचाय बैठा
है उसको बैठा ही कहना निम्मा और
मानना सत्य कहलाता है। यो मनुष्य
पक्षपाती होता है यह धाने प्रत्यक्ष को भी
सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य
को भी प्रत्यक्ष कह करने मे प्रवृत्त होता
है। इसीलिए यह सत्य मत को सत्य नहीं
ही सकता। इसीलिए विद्वान् धानो का
यही मुख्य काम है कि उपदेश का लेख
झरा सब मनुष्यो के धाने सत्यासत्य
का स्वरूप समर्पित कर दे। पचात्
स्वयम् धाना दिखावित समक कर सत्याप
का सत्य पर ही प्रमाण का परित्याज
करके सत्य मानन मे पड़ें। मनुष्य की
धाना सत्यासत्य की जानने वाली है।
तथापि धाने प्रयोजन की सिद्धि हेतु हठ
दुराग्रह और प्रियविचार दोनो सत्य को
कल धन्य मे गुप्त जाता है। परन्तु इस
प्रथ मे ऐसी बात नहीं है और न किसी
का मन दुकाना या किसी को हाजि पट्टी-
पाने का सात्यन है।

इसके धार्मिक निरिधायीयक और
बना किसी की हो सकता है। दूसरा कोई
होता तो सत्य धाना सत्य मे धन को
सधोषन की मुझाह नहीं है। पर स्वामी
जी का सत्यिक इस विषय में बहुत साध
था—सत्य की सोध जारी रखी बाहिए
और जब भी कोई नया सत्य धाने धाने
तो उसे बुने हुए से स्वीकार कर लेना
बाहिए।

धार्मिकसाध के सत नियमो मे एक
नियम के तो सत्य ही यह है—'सत्य' के
प्रमाण करने और प्रत्यक्ष के स्थान मे
सर्वथा उचित रहना बाहिए। इन सत
नियमो मे नो सत्य के धार्मिक बल स्वामी
जी ने सत्य पर ही दिया है। सत्य मे से ही
नियमों में जो सत्य का स्पष्ट उल्लेख भी
है। पहले ही नियम मे धाना है—
'सत्य सत्य विद्या और पदार्थ विद्या से
जाने जाते हैं उन सब का धार्मिक मुक्त
परस्पर है। पाषण्डों में—सत्य काय
बलानुसार सत्य और प्रत्यक्ष को विचार
करके करने बाहिए। इसी तरह तीसरे
नियम के प्रारम्भ मे लिखा है—'वेद सब
सत्य विद्याओं की प्रतिक है। उसका
पठना और पचाना सब धर्मों का परम
धर्म है।' वेद का ज्ञान किसी जति धन्य
देस विषेण की समर्पित नहीं है। मनुष्य
मात्र के कल्याण के लिए धार्मिक विद्वान्
मे भिन्ना यह ईश्वरगत ज्ञान है। प्रामुख्य
को मित्र की धर्म से देखने का धारण ही
सब से पहले वेद मे ही दिया।

स्वामी दयानन्द के समाज सुधार
कार्यको और सैद्धांतिक सत्याप्रकाशों की
उन दिनों देश विदेश दोनों ही धम्मा
पुन मसी हुई थी। विद्योद्योगिक सोसा-
यटी के सत्यासत्यता को धार्मिकसाध के
विचारो से इतने प्रभावित थे कि एक बार
तो उन्होंने सोचावटी को धार्मिकसाध के
मिलाने का निराश ही थे किन्तु। स्वामी
जी से बहुत दिनों तक इस सत्यनय मे उन
का पत्र-व्यवहार हो गया। सत्य मे उक्त
सोसायटी के सत्याप्रकाशो मे से दो प्रमुख
व्यक्ति वर्तन सत्यका और ईश्वर मेले-
नदली कर्षर्ष धाकर स्वामी जी से मिले।
कई दिनों तक यही विचार विनिमय
चलता रहा। सत्यनय की बातो पर दोनो
पक्ष सहमत भी हो गये। पर यह ही बात
ऐसी रही जिससे लेन मने न पद सही।
धार्मिकसाध के दोनो नियमों में जो यह
बाध है—'वेद सब सत्य विद्याओं की
प्रतिक है। उससे वे सत्य सत्य को विधो-
सिक्तिकता उठावटी जाने हुदना बाहिए
मे। उनका कहना था—सत्ये दूसरे बर्ण-
धनो का सत्यासत्य कहना होता है। स्वामी
जी मे उनको बात बड़ी गम्भीरता से सुनी
और सहमत वे उत्तर देकर कहा
सत्य पर तो धार्मिकसाध की नींव ही मने
रही है। यदि सत्य ही सत्य से मिलन
मया तो यह क्या बाधगा। सत्य से सत्य-
भोले का धार्मिक और प्रत्यक्ष को प्रामुख्य
देना है। इस तरह विधोसिक्तिक सोसा-
यटी की वह विषय वातां बोध मे ही टूट
गई।

ऐसा ही एक प्रमुख उदाहरण मे
स्वामी दयानन्द के जीवन मे धाना। महा-

पद्मा उदयपुर उनकी विद्या पर मुक्त मे।
स्वामी जी की महीनों-महीनों यह कर बहा
उपदेश करते रहे और सत्याप्रकाश तथा
वेदध्यान के लिखने का काम भी उनका
नहा चला रहा। महापद्मा उदयपुर ने
एक बार स्वामी जी से कहा—महापद्मा
यह तो आप जानते ही हैं यह मेरी यही
एकलिंग महादेव की की मही है। मैं और
मेरा परिवार तो उनकी परीश्रुता का रक्ष-
नावा है। पर मेरी बगल धाप बैठा
विद्वान् साधु यदि इस परीश्रुता को सभाते
तो किन्तु धम्मा हो। धर्म प्रचार मे भी
यह सहायक होनी और दूसरे भले काम
मे भी इसका सुदुर्भाव हो सकेगा। पर
महापद्मा एक छोटी सी बात इसके साथ
यह है—पुनर्विद्या का जो सत्य सत्य
करते हैं वह कर बल करना पड़ेगा।
भले ही धाप सत्य बाहिए प्रति न पुर्जे।
स्वामी जी उठे और कमंडलु हाथ मे लेकर
उदयपुर से चल निरा। कहने लगे राख्न्—
एक बोध मे मेरी रिवाजत सत्य का सकला
हू। इसका प्रयोग देख कर मुने सत्य से
विमाना पाहता है। मैं तो उस राजा की
बाजा का पालन करने सवार मे धाना है
जिसकी रिवाजत मे जीवन भर दौड़ना तो
भी उसे पाते नहीं कर सका।

कोकेशा की विरोधपा यह दो प्रसो-
भन ऐसे हैं जिनमे साराधन मनुष्य सत्य
कर देता है। पर स्वामी जी को यह
उभे प्रसोभन की धन्य पत्र से विमान न
सकें। तीसरी निमित्त बल सत्यो की और
भी। जब उनसे अनुत्तर मे किसी के
कामीर धाना मे प्राणो के सत्य का सत्य
विचारक रोचना कहा तब स्वामी जी ने
कहा—सत्य का प्रचार करने मे यदि मेरे
हाथो की प्रमुखिया की मोमपत्ती की
तच्छ विस्तारित करने के बाद धार्मिक और
उनमे प्रत्यक्ष का धारण हू। होने मे सत्य
मिलेगी तो मैं अपने प्रवान को सकल
समर्पण। तैहू बाट तो उनके धारो पर
विष का प्रयोग किया गया। कभी पाने या
कभी दूध मे धार कभी भोजन मे, कहकर
मिलान कर दिया था। कर्णधन मे तो एक
जातीर ही मे सत्यनय से ही उन पर बार
कर दिया। पर स्वामी जी ने सत्यनय
रोककर ज्यो ही उसका गढ़ा पकडा तो
ऊपर का सब ऊपर और नीचे का नीचे
बन हो गया। सत्यनय ही उसके हाथ मे
सूकर गिर पड़ी। इसी तरह हरिद्वार के
सने कुम्भ के मेने मे उन दिनी पाण्डव के
विषय धाराय उठाना किन्तु कालिभ काम
था। यह भी सब बल कि सभी-सामी कोई
न हो। पर सत्य पर ज्यो धारणा मे उनमे
न जाने कहा का साध कर दिया। जो
यह धर्मोले की सत्यनय सत्यनय पठाका
हाथ मे लेकर बहा डट गये।

सत्याप्रकाश मे स्वामी जी ने कई
सिद्धि सैद्धांतिक सत्याप्रकाशो की प्रसिद्धाव
किया है जो सत्याप्रकाश मे धान सत्य धार्मि-
कसाधियों के भले से नीचे भी नहीं उतर
सकी। इन्मे एक निमित्त का रिवाजत भी
(सत्य पुन ११)

यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

वैद्यक शिक्षाकाल उपधायाय

(१) यज्ञकर्म—यज्ञ मानव जीवन का परम धार्मिक कर्तव्य कर्म है। जब तक मनुष्य अपने जीवन को यज्ञमय नहीं बना लेता, उसका मानव जीवन सफल नहीं होता। यज्ञदर्शन के आर-भ में ही रहने में ही यज्ञ प्राप्त होता है कि 'इमे लोको ज्ञा बाध्य स्य वेदो व सविता प्रार्थयन्ते येनस्यमाय कर्मोऽस्य' हे सविता देवता! हम सब को ज्ञान, बल, शक्ति उर्जा और पराक्रम के लिए येनस्यम कर्मों में दीक्षित करो। यही येनस्यम कर्म यज्ञ का स्वरूप है। शास्त्र पर ब्राह्मण का श्रुति स्पष्ट घोषणा करता है 'यको नै येनस्यमस्य कर्म' १।३।१४ इस प्रकार स्पष्ट विहित है कि मानव जीवन में यज्ञ-कर्म का बड़ा प्रभाव है और प्रत्यक्ष पूर्वक यज्ञ कर्मों से सभी को विमुक्त नहीं होना चाहिए। मनु हाराज लिखते हैं—'पर्व-वर्षासु महायज्ञान् यथाशक्ति न हास्यते' १।३।५१२। गीता में योगिदारा अवगत्य श्रीकृष्ण की स्पष्ट घोषणा है यज्ञ ब्राह्मण-कर्म न त्याज्य धार्यवेद्यं तत्। यको ब्रह्म तस्यपर्वन् सत्वानि मनीषिण्यन् ॥ महावि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी अपने कुछ स्वार्थप्रकाश और मनुस्मृत्युक्त प्रथम उत्पत्तिपर्यन्त यज्ञ की महिमा गाई है और प्रत्येक नर-नारी के लिए यज्ञ करने का विधान किया है। निम्न यज्ञ के मनुष्य धारण है और मनुष्य क्या परलमाणी भी विना यज्ञ पूर्ण नहीं। सृष्टि के आरम्भ में उसने ही मनुज यज्ञ किया जब सृष्टि-निर्माण किया। 'सह स्रजः प्रजा सृष्टुषा पुरोहता प्रजापतिः' गीता। इस प्रकार यज्ञ एक महान् कर्तव्य है और इस का प्रभाव जनसाधारण के मध्य होना आवश्यक है।

(२) यज्ञ का धर्म—यज्ञ शब्द यज्ञ चातु से बनता है जिसका धर्म है, देवपूजा संघटितकरणी और दान। इन तीनों तरह के कर्मों की सफल वर्तमान युग के परि-स्थिति से लयान्वी पन्थी और देवताओं के नाम पर माना प्रकाश की उलटपिचन प्रणालियों को ठीक रूप में जाना पड़ता। संघटितकरणी और दान का धर्म हर एक व्यष्टि की सम्मानना प्रदान। यज्ञ केवल मात्र हवनकुण्ड में मोड़ी सवित्रा प्रयत्न-जित करके पोषा घृत और सामग्री मात्र मांस देते का नाम नहीं है। इसकी उचित विवेचना की आवश्यकता है।

(३) वैज्ञानिक युग विज्ञान का युग है। वैज्ञानिक परिचिन्त्य में प्रत्येक बात का स्पष्टीकरण आवश्यक है। आज का मानव किसी भी बात को कहने मात्र में मानने के प्रवृत्ति उलट नहीं है परन्तु वह प्रत्येक बात को वैज्ञानिक दृष्टिकोण में पर्यटना चाहता है। कोई भी कार्य करने में पहले या किसी भी तात्त्विक विश्लेषण के लिए विज्ञान उसकी सहायता से सर्वप्रथम दृष्टि का प्रयास करता है। धर्म यज्ञ कर्म की वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पूर्ण रूपेण

समझना पड़ता, क्यों कि वैदिक शास्त्रमय में मनुष्य का बहुत बड़ा पक्ष है। वैसा ऊपर कहा जा चुका है। शास्त्र पर ब्राह्मण की स्पष्ट घोषणा है—'यको नै येनस्यम कर्म' इस घोषणा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना पड़ता है। इसका ही मूल शास्त्र ब्राह्मण को एक कर्म और यज्ञ के बहुरूप उद्घोषण कर रहा है कि यज्ञपूर्ण प्रत्यक्ष यज्ञप्रथागत का ही स्वरूप है—एवं नै प्रत्यक्ष यज्ञो यत् प्रजापतिः। जिस प्रकार सूर्य इस विस्तृत यज्ञ का केन्द्र है। उसी प्रकार यज्ञकुण्ड इस यज्ञ का केन्द्र है—इदम् यज्ञ यन्मन्त्रमाणि। इस प्रकार यदि यज्ञपूर्ण विषय ब्राह्मण की रचना पर गौरवपूर्ण विचार किया जाय तो इस को यज्ञ का प्रतीक कहा जा सकता है।

(४) यज्ञ धारण समर्पित से व्यष्टि में इस यज्ञ के स्वरूप की देखने का प्रयास करें। जैसे सत्ता के अन्दर माना प्रकार के सुख और विनाश में सूर्य का प्रमुख स्थान है, वैसा यज्ञ शरीर के निर्माण और विनाश में धर्म रूप प्राण की ही प्रधानता है, उसी प्रकार यज्ञ को भी मुख्यमान करने के लिए धर्म की ही प्रधानता है। यह धर्म ही यज्ञ का देवता है, पुरोहित है, श्रुति, होवा और रत्न, बाता है। श्रुतिवेद के धनुश्वर 'धर्मयोगो रत्नमयः यन्मन्त्र देशमन्त्रश्च होवात्पुरुषोत्तमः' १॥ इस प्रकार एक एक बात स्पष्ट उल्लेख सामने आ जाती है कि यज्ञपूर्ण विषय (विवाद शरीर) के साथ सूर्य, प्राणी मात्र के शरीर के साथ प्राण और यज्ञ के साथ धर्म का एक ही प्रकार का सम्बन्ध है। जैसे सूर्य अपने ताप, प्रकाश से तथा धर्म की शक्तियों के माध्यम से मेरी हुई उर्जा के द्वारा सत्ता में फल-फल, धर्म, वनस्पति, भौतिक धार्मिक नियम करता है, यज्ञपूर्ण पृथिवी की रत्न-प्राप्ति बनाता है, जैसे स्वयं प्राण अपने विनिर्माण कर्मों में शरीर के शब्द प्रवेश करके जीवों पैदा करता है, सबीनो मज्जित का निर्माण करता है और शरीर के पोषण के लिए धावकपदार्थों के निर्माण में सहयोग करता है, ठीक उसी प्रकार यज्ञकुण्ड में प्रयत्नजित धर्म की यज्ञीय पदार्थों को धावकपद करने वाले उनके सूक्ष्मातिवृत्त कर्मों से विमल करके उनके अन्तर्गच्छि कल्याणो लक्षित हो हजारी भूमा विस्तार करने आ गाय के कल्याण के लिए यज्ञमय और उपरुक्त बनाता है। जो कुछ हमारे पूर्वज श्रुति शिष्टान्त यज्ञ के माध्यम से जन-कल्याण का कर्म करते थे। वहीं सब कुछ धावक वैज्ञानिक धर्म प्रयोगात्मक पदार्थों का उचित सफलकर करके धाम्येय तत्त्वों का निर्माण से कर रहे हैं। निश्चित धर्म की धर्मोक्ति का निर्माण की उरी पद्धति पर ही हो रहा है। आज का वैज्ञानिक इस बात पर विचार रखता है कि किसी

यज्ञ के निराल में Tablets से ज्यादा चासकारी Liquids हैं और Liquids से ज्यादा Gaseous form में ही हुई देवा-हवा है। शरीर प्रभावी बनाने के लिए Tablets की जगह पर Injections और Injection की जगह से Gaseous form में वसाओं का परीक्षण सर्वमान्य हो चुका है। जिन जड़ी-बूटियों परभा नौतिक पदार्थों की विनिर्माण के रासायनिक प्रयोगों द्वारा Tablets, liquids या Gaseous form में चास का Chemist दवाओं का रूप दे देता है, उन्हीं तमाम जड़ी-बूटियों और नौतिक पदार्थों की हमारे पूर्वज ब्राह्मण यज्ञमय की प्रयत्न-जित धर्म में इस तरह सम्युचित विषय के निराल के लिए प्रयत्न में दिया करते थे। कुछ धर्मोक्त मानसम दवाओं की विचार का विचारोक्ति के बहु कहने का दुस्ताहस करते हैं कि यज्ञ में ज्ञाना पदार्थों को बनकर राख हो जाता है और यज्ञपूर्ण के पुन में यह सब करना स्वयं है इतने मज्जित-नै-यज्ञ है कि प्रयत्न तो वे यज्ञ की प्रक्रिया को समझें और फिर विज्ञान के सिद्धान्त को समझने का प्रयास करें। विज्ञान के आधार पर Matter can neither be created to destroyed (Indestructibility of matter) पर्यन्त न तो बनाया जाता है और न विनाश जा सकता है केवल धाम्येय तत्त्वों के प्रभाव से रासायनिक परिवर्तन करते उनको वसाओं में परिवर्तन किया जा सकता है। बिना मर्त्य विषय या दिने कोई रासायनिक क्रिया सम्भव ही नहीं है। इसी को विज्ञान की भाषा में Endothermic reactions और Exo thermic reaction की वसा ही बताते हैं। इस प्रकार विज्ञानोक्त के माध्यम से पदार्थों का उचित सफलकर करके विभिन्न प्रकार के रासायनिक परिवर्तन के द्वारा मर्त्यों के शिष्ट के लिए उन्हीं सुख करता हो सब का प्रयोग है। chemist दवाओं का पुन्य सेकर मर्त्यों का हिस्सा करता है परन्तु यज्ञमान यज्ञ के द्वारा विना धर्म्य विषय ही सत्ता-साधारण का हिस्सा बनना कर्तव्य कर्म समझता है।

इस प्रयत्न में एक बात और निवेदन करना चाहता हूँ। धाव के पुन में वायु, जल, धर्म धार्मिक हवा पदार्थों में प्रयत्न की विभीषिका का उपयोग है। शरीर संसार के सामने इस प्रयत्नों को निराल के लिए एक समस्त उत्पत्ति हो गई है। मेरा विश्वास है और मैं निश्चित हूँ कि यदि यज्ञ-यज्ञ सब का करता प्रायः हो जाय तो यह सब कुछ सुख सकता है और विषय सुख की साथ से सकता है। शिकारों में एक विषय विचारण की स्थापना हुई है, जिस का नाम ही है Agn-hotra university है। इस विषयविचारण में माना प्रकार के प्रयोग किए जा रहे हैं और जन्तु यज्ञ की प्रक्रिया पर विभिन्न वास्तव्यार्थों की निराल रही है। इस विचार में यज्ञों के वैज्ञानिकों का प्रयास और पटी-

सक स्वरूप है।

(५) यज्ञ बोझ-या यज्ञ में प्रयुक्त धर्म के स्वरूप की भी यज्ञा करना उचित समझता है। धर्म तीन प्रकार की होती है। (१) पवनान (२) पाक (३) शुचि।

पूरी पर की धर्म को पवनान कहते हैं। इसी को निर्गम्य धर्म न कहते हैं। पाक पवनान धर्म न कहते हैं तथा शुचि धर्म न कहते हैं। यज्ञा तब तक स्वयं स्वयं का वर्ण मिलता है, पवनान पायिष धर्म का स्वरूप है जो यज्ञ (Solid) है। यज्ञधर्म की धर्म 'पाक' धर्म (Liquid) है और धर्म न कहते हैं धर्म निराल (Gaseous form) में है। यही Solid Liquid Gas धर्मों के तीन स्वरूप हैं, जिनके परिवर्तन में धर्म ही साक्ष्य है। धाव का विज्ञान बाहे विज्ञान की धर्मोक्त होया हो पर धर्मोक्तों की बीच और उनके ज्ञान के धाम्येय धर्मो की यह विज्ञान धारणा है।

धर्मोक्तों में धर्म तब से माना है उपा-जन्तु और पुन के साहित्य से प्रायः धर्म के द्वारा हम तमाम धर्मोक्तों को ब्रह्मण्य से पिण्ड में और सत्त्वित से व्यष्टि में देखने का प्रयास किया और सर्वोत्कृष्ट वैज्ञानिक हवा से इस प्रकार की धर्मोक्त की धर्मोक्त के धर्म प्रयत्नजित करने का विधान किया है। धार्ये इस यज्ञ की धर्म का वैज्ञानिक स्वरूप की देखने का प्रयास करें—

यज्ञ यज्ञतु से धावक यज्ञ का केन्द्र सूर्य है—

स य विष्णुर्धर्म स त य स य यज्ञोऽस्ते स धार्मिक।

४०.४५.१।१।५ इसी व्यापक यज्ञ का धर्म हमारे प्राचीन धर्मोक्तों और विज्ञानों में धर्म से यज्ञ और विज्ञान से इस पृथिवी पर चरित करने का यत्न किया। और यज्ञ-वेदी की रचना का धर्म के मध्य में यज्ञ-कुण्ड बना उस से धर्म की स्थापना करने की व्यवस्था की।

यज्ञ संघटित बात है कि शरीर धर्म से यज्ञ की धर्म पैदा होती है। पुराने समय में दो कर्मधर्मों के धर्म से धर्म प्रयत्नजित करके यज्ञकुण्ड के लिए प्रयोग करने की व्यवस्था की। धावक धर्म की कर्मों को यज्ञ इस प्रकार पैदा होता है जो के यज्ञ करने का यत्न करते हैं न यह धर्मप्रयत्नजित किस बात का उत्पत्ति स्पष्ट करता है, इस का वैज्ञानिक पक्ष विचारणीय है—

धर्मोक्त, पृथिवी लोभ और धर्मोक्त धर्म से तीन लोभ हैं। धर्मोक्त लोभ ऊपर धर्मोक्त मध्य में और पृथिवी लोभ से नीचे या बीच में। यह इस धर्मोक्त से पृथिवी लोभ का सम्बन्ध धर्म के माध्यम से स्थापित करने के लिए धर्म की व्यवस्था की गई। माना तथा धर्मोक्त के धर्म से धर्म पैदा होती है। धर्मोक्त की भाषा में यही Positive धर्म Negative

Charges हैं जिन से विद्युत् पैदा होती है। वैदिक मान्यत्व में स्थान-स्थान पर विभिन्न रूपों में इसी बात को कहा गया है। उदाहरणार्थ बौध्म की सम्भावना के लिए धर्मित तथा सोम, ऊष्मा तथा शीत, बिजल तथा वरुण, बुधोक्त तथा पृथिवी का पारस्परिक सम्बन्ध बड़ा धारकत्व है। यज्ञवेद के एक मन्त्रों को देखिए— 'विष्वातो धामे नेता पदाग्निः पृथिवी भूरी बुधोक्त को मिलाते हैं धर्मात्मा की अग्नि का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण योगदान है। जो कि एक मान्यता का काम करती है। हम लोगों ने विज्ञान में ऊष्मा के विकीरण का सिद्धांतों में Conduction, Convection और Radiation के बारे में पढ़ा है। क्या यहाँ वेद में बुधोक्त की अग्नि पृथिवी पर पहुँचाने के लिए Radiations की पुष्टि नहीं होती। बाइबे के वैज्ञानिकों और बुधोक्तों के लिए बहुत कुछ विचार-स्थायी और अनुत्पन्नता का विषय है।

इसी अग्नि की अग्निविषय में धर्मात्मा सम्बन्ध के द्वारा यज्ञवेद में स्थापित करने का विज्ञान विषय है।

४. इस सम्बन्ध में यज्ञवेदी और यज्ञवेद के वैज्ञानिक स्वरूप का भी विवेचन प्रयोजित है। पृथिवी के ऊपर जहाँ यज्ञ की वेदी बनती है उसी को यज्ञ का केन्द्र स्थापित भी माना जाता है। यह यज्ञवेदी शरीर विज्ञान की भाँति है। इस यज्ञ वेदी को मान्यता विष्णु का रूप कहा है। यज्ञो वे विष्णु। यहाँ एक पौराणिक उदाहरण की चर्चा कर देना उचित प्रयोज्यता है। जो कि कहते हैं कि विष्णु ने मान्य रूप में बलि को खसा था और तीनों लोगों को तीन पयों में भाग दिया था। इस का रहस्य अन्वेष के निम्न मन्त्र से स्पष्ट हो जाता है—इद विष्णुविष्णवे मेधा निष्ये पयम्। अ० १. २२

यह यज्ञ वेदी और यज्ञ का प्रभाव है कि देवता को क्या साधारण मनुष्य भी तीनों सोमों का रासायनिक सफाई है और अग्निहोत्र धातु कर्ष के द्वारा तीनों सोमों में अपने पय को फैला देता है। यही सब कर्म मान्य विष्णु के रूप में तीन पयों में सब कुछ प्राप्त होता है।

यज्ञवेदी की रचना को किसी भी सन्दर्भता और यज्ञवेदी से देखा जाए उसका ही मुख्य और मुख्य विचार मान्यता मान्यता की व्यापक रूप में प्रत्येक मन्त्रिणी की अग्निविषय में यज्ञ के सम्बन्ध से बड़ी कुशलतापूर्वक चित्रित किया है। यज्ञ की व्यक्तियों के सम्बन्ध से समस्त पृथिवी के निवासों का वैज्ञानिक सफाई और आन प्राप्त किया जा सकता है।

यज्ञवेद का निर्माण भी किताब वैज्ञानिक और अग्निविज्ञान (Geometrical Science) से परिपूर्ण है, इस का उल्लेख भी विचारणीय है। यज्ञवेद में अग्निचयन के लिए ३६० हट्टों का विज्ञान है। मान्य शरीर में भी ३६० अस्थियाँ होती हैं। और यज्ञवेद में निम्न की संख्या भी ३६० ही होती है। इस विचार की पुष्टि शतमय ब्राह्मण में उल्लेख है। एक पारम्परिक वैज्ञानिक डॉक्टर R. Hoernle ने भी अपनी पुस्तक Medication of Ancient India Part I Osteology में इस बात की चर्चा की है कि शरीर के इस विचारण की पुष्टि की है। क्या बाइबे के वैज्ञानिकों के लिए यह सोच का विचार नहीं है कि ३६० हट्टों, ३६० अस्थियाँ और ३६० दिनों का मान्य जीवन और पृथिवी के वातावरण के साथ क्या सम्बन्ध हो सकता है?

इस यज्ञवेदी का इतना महत्त्व है कि यज्ञो ३११ में इसे वैज्ञानिक गुण कहा है। 'देवताजि इति देवताजि यज्ञवेदमात्राये।' इस पद में देवता देवता को प्राप्त कर लेता है। जो इस यज्ञ के को समक लेता है, वह वारे ब्रह्माण्ड का को समक लेता है। यज्ञवेद के चारों तरफ में, यज्ञवेदी को अग्नि प्रकाश से सजाया कि एक महत्त्व का विषय है और धारकत्व कर्तव्य है। केवलों के अन्वेष यज्ञवेद, पत्तों के मुख्य और अग्नि के मुख्य से शरीर वेदी बड़ी रहनी चाहिए। मेजाएल वल से शरीर वेदी चाहिए। इस वेदों के देवता को शरीर वेदी का वैज्ञानिक रहस्य है। यह केवलों के लिए वा वेदी को धारकत्व बनाने के लिए ही नहीं है, बल्कि इन के द्वारा CO₂ (कार्बन-

डाइ ऑक्साइड) वा इसी प्रकार की और धारकत्व विषयों की को को यज्ञवेद से निकलती है, यज्ञ कर की बाती है और यज्ञ का प्रभाव पृथिवी साम्राज्य ही होता है।

यज्ञवेद के निर्माण में एक और बात भी विचारणीय है। अग्नि देवताय सत्यवेदी से कुछ बनाने का विस्तृत वर्णन अपने गुरुगुरु अन्व संस्कारविषय में बड़े विस्तार से किया है। इतन कुछ के नीचे की तथा ऊपर की चौड़ाई तथा कुछ की ऊँचाई का अनुमान वैज्ञानिक मेट्रिकोस से मनेयता का विषय है। विभिन्न प्रकार के डग के कुछ बनाने की प्रथा के पीछे भी व्यापकित की विभिन्न रचना का विज्ञान किया है।

६ यज्ञवेद के धर्मर किश प्रकाश मान्यताय कता पाणिप, इस का भी वैज्ञानिक-स्वरूप बड़ा रोचक है। अग्नि देव एतन् मान्यता है—अग्निदेव अग्नि-विष्णु विष्णुमात्र। प्रकाशित ने अग्नि को पृथ्वी के केन्द्र में रखकर प्रवर्तित किया। इस मन्त्राश से समझ स्पष्ट इस बात का शरीर के कि प्रकाशित के द्वारा विज्ञान अग्नि का मान्यता पृथ्वी के गर्भ में हुआ यह अग्नि प्रवर्तित नहीं की है। यह प्रवर्तित अग्नि के पृथ्वी का रूप था जिसे हम मान्यता परमाणु कह सकते हैं। यही मान्यता परमाणु को धर्मर प्रवर्तित हुआ और फिर पाणिप परमाणुओं में हस्तात् के कारण इन के धर्मर Electric Charges की प्रकृति हुई और फिर दृश्य रूप में पदमान्यता परमाणु वर्णन के द्वारा किशायी हो उठे तथा अग्नि का प्रवर्तित रूप प्रकट हो उठा। इस प्रकार की किशाने पृथ्वी के धर्मर विषय पदार्थों की मान्यता प्रकाश के रूपों में परिचित कर दिया और धर्मर अग्नि का सफाई कि निर्माण हुआ जिसने पदार्थों के धर्मर विज्ञान शक्ति को कई गुना विकसित करने मान्यता प्रकाश के वस्तुओं का निर्माण किया और पृथ्वी रसमयों बन गये। वेदों के देवता को शरीर प्रोपचित कम-कुल नस्यति, धर्मर पाणिप ने महत्त्व उठा यह सब कुछ पृथ्वी के केन्द्र में प्रवर्तित द्वारा स्थापित करने का प्रकट और व्यापक रूप बन गया। इसी कारण पृथ्वी को धर्मर की पत्नी कहा है। पृथिव्यामे पत्नी। गी० उ० २. १। विज्ञान संस्कार में पति इसी बात को स्मरण करने प्रवर्तित करता है कि 'बोधय पृथिवी त्वम्।' पति अग्नि का यह है और पृथिवी का रूप है पत्नी। उत्तरवेद कथन की पुष्टि में यज्ञवेद का यह कथन प्रस्तुत है—'माता पुत्रं बोधयन्ते सावित्रि विस्तृतं गर्भं मा।' यज्ञो ११. २७। जिस प्रकार माता अपने पति का अतिशय अपने गर्भ में धारण करती है उसी प्रकार पृथ्वी धर्मर को अपने केन्द्र में धारण करती है। उसी प्रकार पृथ्वी धर्मर को अपने केन्द्र में

धारण करती है।

बस इसी किशाने एक छोटा सा विज्ञान हमारे अग्निविषय में यज्ञवेद में अग्नि का मान्यता करने के विचारों को फिर कुछ प्राण करने के लिए उसे प्रवर्तित करने का धारकत्व किया। महर्षि देवताय यज्ञवेद सत्यवेदी ने इन दोनों किशायों को सम्मान करने के लिए दो मन्त्रों का विधान किया है। मनुष्यों को जीवन से उन्नतित और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अग्नि का अनुमान कता पड़ता है और अग्नि प्रवर्तित करने पड़ती है। अपने पुरुषाय और तप से इस प्रवर्तित धर्मर को घने सूर्य के समान उज्ज्वली और प्रकाशमान करना पड़ता है। शतपथ ब्राह्मण में एक धारकत्व है—अग्निर्वै यज्ञ-व्याख्याय विष्णु वराह्ये। अ० ११. १६ यदि यज्ञ की अग्नि प्रवर्तित होती होनी तो उस यज्ञ में शरीर हुई धारुतिता अग्नि हो जाती है। प्रवर्तित अग्नि पर शरीर धारुतिता अग्नि बन जाती है और शरीर होता है तथा बड़ी देवताओं को शरीर होता है। स ब्रह्मविष्णु अग्निविष्णु 'अग्निविष्णु' अग्निविष्णु ने किशाने बुद्धिमान पुरुष यज्ञ के रहस्य को स्पष्ट किया है। स्वयं यज्ञमान परमान्यता द्वारा रने हुए इस ब्रह्माण्ड में विस्तृत विज्ञान यज्ञ की करने का सङ्कल्प होता है और अपने जीवन से सत्कामान्य को प्रवर्तित करने जीवन यज्ञमान बना जाता है।

७ ब्रह्माण्ड का यज्ञ सूर्य के ताप के द्वारा बन रहा है तथा परमान्यता सत्ता का स्वात्मन है। पत्नी का यज्ञ, यज्ञवेद में प्रवर्तित अग्नि के द्वारा बन रहा है। इसी यज्ञमान उक्त का स्वात्मन है। यही प्रकाश शरीर के धर्मर का यज्ञ प्राणों के द्वारा बन रहा है। और धारुता इस का स्वात्मन बन रहा है। इस प्रथम में वैज्ञानिकी उत्पन्निक की एक स्पष्ट प्रेरणा है—

अधोपशुभ्रतन्मयमग्निं प्रमन्यतायाम् उपाशुभ्र। एतमोरत्तादेवोपम्य प्राशुभ्र। यदोप्यस्य स पुरुष। अथ य पुरुष को अग्निर्वैष्णवोऽग्निः। मैत्रायणी उ० २. १ धर्मर प्राण और धर्मर प्राण उपाशुभ्र और धर्मरमय के पारस्परिक वर्णन से उन्नता उन्नत होती है। बड़ी पुरुष और प्राणियों में वैज्ञानिक अग्नि है। यही अग्नि शक्ति २८ °C से बढ़कर १००° F के ऊपर पहुँच जाती है तो धर्मर शरीर २७° F के नीचे पहुँच जाती है तो जीवन समाप्त हो जाता है। प्राणी के धर्मर प्राणमयक स्वरूप सदा के लिए बन्द हो जाता है। जैसे शरीर की शक्ति से यज्ञ समाप्त हो जाती है अग्नि के कारण शरीर का यज्ञ समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार यज्ञ के धर्मर प्रवर्तित अग्नि का भी प्रभाव है। किशाने मात्रा में किशाने उन्नता की धारकत्वता है यह विचारणीय है कि प्रकाश की सत्ताय देव धर्मर को

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध किशाने गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि देवानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या—यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वतन्त्रवाचन आदि

प्रसिद्ध अन्वेषवेदवाचन

सत्यपाल पणिक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल प्रीत्यू, सोहनलाल पणिक, शिवराजवती जी के सर्वोत्तम भजनों के कैसेट तथा प दृष्टदेव विद्याधरकर के भजनों का संग्रह।

आर्य समाज के अन्व की पूत से कैसेटों के सूचीपत्र के लिए निम्न



कन्टोक्कन इन्स्टीट्यूट (सी०) प्र वि १०, मास्कि-11, फेल-11, अशोक विहार, देहली-52 फोन 7118326, 744170 टैक्स 11-4623 AKC IN

इस बीच समय द्वारा परमाप्ति प्राप्त करना हमें यह याद दिलाते रहे हों कि यह विचार कर्मों की श्रृंखला, यथोक्त भावनाओं से बनते हुए ही जीने की इच्छा को तुरंत कर्म द्वारा खरीद कर्मों का लेना पड़ता है। भय का भाव ही संस्कार वासनाओं का लेना। जान-नाज जन्म-मरण का चक्कर इन्हीं संस्कारों के कारण होता है।

धर्मवादीयों ने इस मान का बर्णन निम्न प्रकार से किया है। प्रायः सदाचार्य तूष्णीं ईशोपनिषद् के आद्य में सद्गुरु का प्रायः यह उक्ति दी है कि यशस्वी हो, उन्हें हमें पत्नी है, उन्हें हमें कलह की श्रावण विषयता नहीं है। यह मन्त्र्य्य वेद विषय है।

संसार में कोई प्राणी ऐसा न मिलेगा, जो अपने अस्तित्व की रक्षा न करना चाहता। 'मैं भित्ति बांध' यह भाव का प्रकाश कोई प्राणी करना नहीं चाहता। इस के विपरीत यदि कोई उस के विनाश का यत्न करे तो वह अपनी रक्षा के लिये जो कुछ उस के बने हुए प्रयत्न करता है। यह अस्तित्व को प्रकाश की 'वैयक्तिक' और 'सामाजिक'। इन दोनों का परस्पर गहरा सम्बन्ध है यदि व्यक्ति विकृत या तटस्थ हो जाये, तो समाज का प्रयत्नजु हो जाता है और समाज का अस्तित्व न रहे, तो व्यक्ति के अस्तित्व का कोई प्रश्न ही नहीं रहता। हमारे धार्मिक साहित्य में व्याहृतिया, श्री गुरु, श्री भुव, श्री स्व, श्री ब्रह्म, श्री उप, सत्यम् ये शब्द हैं। मनुष्य के अस्तित्व निर्माण का रहस्य तथा उस की सामाजिक अस्तित्व के विकास का उदाहरण इस व्याहृतियों में गायन के द्वारा की जाति परा दुष्ट है। इन में के प्रकृति की व्याहृतियों को महाव्याहृति कहा जाता है और वेग को केवल व्याहृति कहते हैं। इन व्याहृतियों के द्वारा मनुष्य के अस्तित्व का निर्माण तथा उस की रक्षा निम्न प्रकार होती है। यह इस लेख का प्रस्तावक विषय है।

व्याहृति—व्याहृति नाम ऐसे वस्तुत्व का जिस में धर्मक रहस्यों का समग्र बोध शक्ती में किया गया है। जिस संहिता में मान्य में गुरु और अस्तित्व महत्त्वपूर्ण उपदेश भरा हो उसे व्याहृति कहते हैं। व्याहृतियों के धर्मों का उल्लेख किया जायेगा।

'श्रीम् गुरु'—यह प्रकृति व्याहृति है। 'गुरु' इसकी उत्पत्ति 'गुरु' शब्द से हुई है। 'गुरु' शब्द के प्राति धार्मिक श्री की धर्म धर्म हैं, परन्तु सत्ता इन सब में मुख्य है। जो कह सकते हैं कि सत्ता में ही शेष सब धर्म समाये हुए हैं। सत्ता का धर्म है 'अस्तित्व'। इसलिए यह शब्द अनेक वेदा है कि मनुष्य का सब से पहला कर्तव्य अपने अस्तित्व की रक्षा करना है। मनुष्य के अस्तित्व को विचार रखते के लिए उसे जिना साधनी, जिना साधनी प्रमाण विश्व कार्यक्रम की आवश्यकता है उन सब की रक्षा करना ही अस्तित्व की रक्षा के लिए आवश्यक हो जाता है।

• इस पहले लिख भावे हैं कि अस्तित्व को प्रकाश के हैं। एक अस्तित्व और दूसरा सामाजिक। ये दो प्रकार के जीवन ही मनुष्य का कार्यक्षेत्र है। मनुष्य में विनता कार्यक्षेत्र अपने अस्तित्व के लिए है उसका ही समाज के लिए भी है उस तीर ठीक है, अन्यथा उस के जीवन का एक पक्ष धमुरा है। इस के बिना मनुष्य अस्तित्व है। यद्यपि कई लोग स्वच्छा से धारणवास रखते हैं तथापि उन का अस्तित्व उद्भव सामाजिक द्विष्ट के लिए अपने पास की साक्ष्यशाली बनाती ही होता है। साधु सच सत्य में रहते हैं, शास्त्र शास्त्राकार करते हैं, परन्तु

सत में श्रुति धर्मानुस जैसे सम्पूर्ण महा-दुष्ट धमुरा उन शक्ति धर्म का प्रयोग जनता की सर्वांग सुखदायी की सर्वाङ्गी उत्पत्ति के लिए ही करते हैं। इस प्रकार अस्तित्व, जतीय तथा राष्ट्रीय अस्तित्व की रक्षा करने का उद्देश्य इस प्रकृति व्याहृतियों से मिलता है। भाव मानव अपने सामाजिक अस्तित्व को मुला सँवा है, यही कारण है कि समाज का सहयोग न होने से वह अपने अस्तित्व अस्तित्व का भी पूर्ण विकास नहीं कर पाता जिसका अस्तित्व इन अपने अस्तित्व स्वार्थ की हानि के होते हैं उनके अपने सामाजिक कल्याण के स्वार्थ की हानि से नहीं होते और यही सत्ता हमारी हानि के अर्थ हमारे सामाजिक बनू की होती है, इस प्रकार परस्पर सहयोग न होने से इन दोनों ही धर्मों के अस्तित्व स्वार्थों से अलग रह जाते हैं। ऐसे अवसर पर गम्भीर दृष्टि-पात्र कर हमें निर्णय करना चाहिए कि हमारा सामाजिक जीवन हमारे लिए विकास प्रयत्न जैसा का सकार है। यह सामाजिक जीवन ही तो है जो विशेष का विनाश कर देता जो यही पर बैठाता है जो का फिर कोष्ठ संयोग का समाधान करता है और ये का मान मान कर हम के अन्य भाव को अलग करते हैं जाहल

व्यक्ति और समाज व्याहृतियों की छाया में

लेखक स्व० स्वामी धर्मानन्द जी महाराज

करता है। 'गुरु' शब्द का दूसरा अर्थ है प्राति। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए मनुष्य कुछ न कुछ प्राप्त करना चाहता है, 'भूमि, भवन, भवन, भवन, भवन, भवन, भवन, भवन'।

प्राय से ही उस की प्राति की वस्तुएं हैं। इन के प्राप्त कर लेने पर उस के अस्तित्व का पूर्ण निर्माण होता है। इन में से प्रत्येक वस्तु की प्राति के लिए जितने ही मनुष्य पशु प्राति सहयोगियों की आवश्यकता पड़ती है और जिना सामाजिक जीवन को सुन्दर बनाये उचित रूप में प्रत्येक सत्यमान नहीं। जबुद्ध के बासीरुद्ध धर्मव्यवस्था के अन्तर्गत है। सब की आत्माओं को अपनी आत्मा में और अपनी आत्मा को सब की आत्माओं में समको, सामाजिक भावना को और ही सुन्दर बनाये के लिए धर्मोत्पन्न करने के मर्म में 'का'—सब की आत्माओं को अपनी आत्मा और अपनी आत्मा को सब की आत्मा समको।' तात्पर्य यह हो है कि अपना उद्देश्य उस की सुखी बनाने का यत्न करो। नैवा सुन्दर मार्ग हैं—हम के जिन में का और मैं के किनास का मुक्त निर्माण धर्म-मार्ग है। सब यह व्याहृति हमें अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अस्तित्व और समाज दोनों का साध साध ही निर्माण सिखाती हैं।

श्रीम् गुरु—'गुरु' यह शब्द भी गुरु शब्द से ही बना है। इसलिए इस के भी सत्ता और प्राति दोनों धर्म में बोधा सा समार भी है। गुरु का धर्म है अस्तित्व का निर्माण करना और गुरु का धर्म है निर्माण की मानना करना। गुरु व्याहृति के कार्यक्षेत्र में शरीर और दैत्य का प्रयोग है और गुरु के कार्यक्षेत्र में हृदय का प्रयोग है। गुरु का मन्त्रम पृथ्वी से है तो गुरु का कार्य क्षेत्र हमारे स्वर शरीर का निर्माण करता है और गुरु के कार्य क्षेत्र में हृदय शरीर को उन्नत बनाता जाता है। स्वर शरीर तथा स्वर इन्द्रियों को चाहे किसी भी उन्नति करनी चाये, परन्तु गुरु शरीर के प्रभाव तत्त्व धर्म-करण का उन्नत हुए बिना अस्तित्व और समाज दोनों की एक साथ उन्नति करनी कठिन होता है। यह ठीक है कि स्वर शरीर के द्वारा हम अनेक पदार्थों का निर्माण और उस की प्राति कर सकें, परन्तु धर्म करण में उत्तर भावनाओं का विकास जिन बिना उन प्राति की पूर्ण वस्तुओं को समाज का समाज हमारे लिए कठिन होगा। भाव के गुण में गुरु का धर्म विनाश जा रहा है गुरु का नहीं। यह ही कारण है कि आज प्राणी-जगत् गुरु के नाश में रहा है। गुरु का धर्म उन्नी को का

प्रवेश है। इस कार्यक्षेत्र को धर्मानन्द के बाव ही हमारा अस्तित्व प्रकट होता है और इसे यह वस्तु मिल जाती है जिसकी प्राति के बाद भी कुछ प्राप्त करने योग्य नहीं रह जाता।

हम पहले लिख भावे हैं कि इन तीनों व्याहृतियों की महाव्याहृति कहते हैं। सबसे में इनका भाव मान लेने के बाद पाठक यह समझ सके कि ये तीनों व्याहृतियों मनुष्य जीवन में पूर्ण सत्य पर गुरु प्रकाश डालती हैं। इसलिए इनका यह नाम मार्गक है। इन तीनों महाव्याहृतियों द्वारा प्रकट किये परम सत्य की प्राति न लिए ही वेग धर्म व्याहृतियों के वास्तव का अनुसरण धर्म-सत्य है, यह भाव धर्मों की बार व्याहृतियों में स्पष्ट किया जायेगा।

श्रीम् गुरु—यह व्याहृति का अर्थ है महत्त्व-अर्थमान। सत्य के कार्यक्षेत्र में धर्मकर सत्ता होते ही मनुष्य को समझ देने का चाहिए कि मैं महत्त्व हूँ। इन मनुष्य ऐसा समझ कर कार्यक्षेत्र में धर्मकर सत्ता होता तो उनके लिए यह सम्भव है कि किसी समय वह अपने महत्त्व पर धर्मो गुरु धर्मकरण को उत्तर का एक संकेत और अपने आत्मिक स्वभाव महत्त्व को प्राप्त कर सकेंगा। परन्तु जिनमें अपने धर्म को पहले ही हीन समझ लिया है उसका धर्म धर्म को महत्त्व की ओर धर्मरत होता कठिन दूर की बात है दूसरे के महार से भी अपने बहना प्रयत्नम हो जाता है। न उसका अस्तित्व उन्नत होता है और न वह समाज का धर्म ही बनने योग्य होता है। भारत न होने वर्य की ओर भारत के ही नहीं सारे संसार के ही वर्य वर्य की विचारधारा में ऐसी ही धर्मव्यवस्था केने में था रही है। भारत के उन्नत वर्य ने उन्हें सत्य-सत्य पर, महाव्यवहारिकविधि जिन जिन उन्नत सत्यो से सम्बोधित किया धर्मन सत्य की ओर धर्मन न देने के कारण ने गुरु उनके अस्तित्व हीन स्वयं के माय दुन्दे के कारण हीन ही होते चले जाते।

धर्मानन्द श्री धा-ना से परस्पर भेद क्या है। मानव शरीर और मानव शरीर एक जैसे ही नहीं हैं। भेद केवल इतना ही है कि एक ने अपने महत्त्व को समझ कर उस मार्ग धर्मकर निर्माण किया है और दूसरा जान में पड़े हुए मिट्टी से लपकत ही तत्त्व समझ को छोड़ ही समझना का रहा है। अस्तित्व वर्य की इन मानवों को धर्मानन्द ने इस वर्य का ही दास नहीं है समाज का जो इसके पतन में महारा भाग है। स्वाधीन समाज में अपने दास ही बनाने रखने के लिए अथवा किसी और कारण से, इनके महत्त्व को मिलावता के धर्मरत से बाहर निकलने ही नहीं दिया। अपने इस धर्म के फल को भी समाज ने कम नहीं दिया। भारत के पहले (वेद पृष्ठ ११ पर)

स्वर शब्द का अर्थ है जिनके के बाद पाठक समझ सके कि हमारे प्रकृति व्याहृतियों के द्वारा प्रकट किए गये, स्वर और हृदय दोनों ही दोनों के कार्यक्षेत्र का अस्तित्व स्वयं स्वयं की प्राति है। यद्यपि बड़ा सभी परस्परविधि के धर्मर

आर्यवीर दल शिविर

समस्त आर्यवीर वन्द्युओं को सुचित किया जाता है कि नई तथा नूतन १९८५ में मनाया गया हजारों वाग में शिक्षक प्रशिक्षण आर्यवीर दल शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसकी निश्चित तिथि तथा स्थान की घोषणा शीघ्र ही की जाएगी। विचार कर आर्यवीर को सुविधा के लिए सभी की छुट्टी में ही शिविर मनाया जा रहा है। शक्ति विद्यालय तथा महाविद्यालय के श्रमिक से शक्ति छात्र भाग में स्वर्ण। तैयार रहे, सूचना की प्रतीक्षा करें। आपकी सारी सुविधाओं का ध्यान रखा जाएगा।

निवेदक

राधाभा बेंगनी

प्रधान सचालक, आर्यवैदिक आर्यवीर दल,
बिहार

वार्षिकोत्सव सूचना

आर्यवीर वन्द्युओं को

आर्यसमाज आर्यवीर का ३३वां वार्षिकोत्सव बिलास २, ३ मार्च १९८५ धनि तथा राखार को हार्दिकता से साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मैजिक कालटेन को बजने के अनुसार कुत्ती कबड्डी और बुद्ध वेदमञ्चोत्सव, आर्यमठम्बी पर आयोजन तथा निवेदक प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। साथ महान भोजनपाल आर्यसमाज के नवोदय मन्दावी महात्माओं के जीवनदायी प्रबन्धनों की समुचित व्यवस्था है।

मेहर लाल

वन्दी

आर्यसमाज आर्यवीर

दिल्ली-४०

वेद प्रवचन

आर्यसमाज शाहीनबाद बाग में उत्पन्नमान में श्री वेदप्रकाश मेहता के निवास स्थान पर स्वामी दयानन्द जी मरन्गी महाशय का वार्षिक और राखार की वेद प्रवचन हुआ। इस अवसर पर श्रमिक शक्ति जन उत्साहपूर्ण उपस्थित रहे।

रघुवीर वेदालकार

भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली में २७/१२/८५ को माताहिक मरुजु के हकीकतवादी के बलिदान विचार के उपलब्ध में माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को विशिष्ट पुरस्कारों एवं प्रत्येक प्रतियोगी को प्रोत्साहन से पुरस्कार पुरस्कार किया गया। पुरस्कार विवरण का प्रबन्ध भी बाला किनोरीलान जी के द्वारा किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम तथा प्रेरणादायक एवं सफल रहा।

सरोजक

आर्यसमाज आर्यवीर

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली ६

आर्यसमाज भवन निर्माण के लिए धनराशि की अपील

आर्यसमाज किदवई नगर नई दिल्ली की स्थापना १९६० में हुई थी। परन्तु उस समय भवन भव्यता रूप में बनाया गया था। जो इस समय पूर्ण रूप से जीर्ण-दोष हो गया है। इन काम में आप सभी वार्षिक महान-माधवों की सहायता एवं सहयोग की आवश्यकता है। भवन में लगभग २५ हजार की लागत धाने की सम्भावना है। कृपया धनराशि बैंक, डाक नम्रीशार्दर, आर्यसमाज ६ २६८ किदवई नगर नई दिल्ली २३ के पत्र पर बिजबाई।

निवेदक

वन्दी

मनमथल वन्दी

आर्यसमाज नीलोखेडी में वेद प्रवचन

आर्यसमाज मन्दिर मांको खेडी, कलसल में महात्मा वैद्य रामकिशोर की ११ से १० फरवरी तक वेदका हो रही है और की १० बुन्नीमास के मधुर मनन भी होते।

वन्दी

वीरमाधव

आर्यसमाज राजौरी गार्डन में वेद कथा सम्पन्न

४ फरवरी से १० फरवरी तक आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली में श्री १० यथाल सुभाषु एम ए द्वारा मनीहूर वेदकाथन से सम्पन्न हुई। कथा के पूर्व भी विनय मूल्य धर्म के मधुर मनन हुए।

वन्दी

मन्थकिशोर मन्थिहा

आयकर परिसर (आई० टी० ओ०) में वेदप्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार बाह्यन द्वारा आयकर परिसर (इनकम टैक्स ऑफिस) में बिलास ३ फरवरी से ८ फरवरी १९८५ तक मन्थाल मोजन के विषय में समय बसे प्रचारण से सम्पन्न हुआ। यह प्रपन प्रकार का एक नया प्रयोजन होने पर काफी सफल रहा। अन्य प्रेमी राज्य कर्मचारियों ने काफी उत्साह दिखाया तथा इस अवसर पर साहित्य वितरण भी हुआ। कार्यक्रम की सफलता का श्रेय स्वामी स्वकृतानन्द, १० वेदव्यास तथा दोलक कलाकार ज्योति प्रसाद को है।

प्रचार वन्दी

आर्य प्रतिनिधि सभा, हुनुमान रोड नई दिल्ली

पुरस्कार घोषणा

आचार्य भोजनन आर्यनी पुरस्कार १९८५ सचय विद्या सभा ट्रस्ट कमयुटी की ओर से इस विरचविद्यालय द्वारा प्रति वर्ष एक ऐसे विद्वान को सम्मानित किया जाता है जिसका कि वेद प्रचार में उत्कृष्टतम योगदान रहा हो।

गत वर्ष में यह पुरस्कार कम्य आचार्य रामप्रसाद वेदालकार, श्री वन्दी आर्य भारतीय श्री विनयन विद्यालकार आचार्य श्री सत्यकाम विद्यालकार को दिया जा चुका है।

सचय विद्यासभा ट्रस्ट कमयुटी ने इस वर्ष उत्तम पुरस्कार वैदिक विद्वान् पण्डित मनमदत वेदालकार को प्रदान करने की स्वीकृति दी है।

आर्यवन्दे कि यह पुरस्कार विरचविद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर कुशाधिपति होदयन द्वारा सेंट किया जाता है। इस पुरस्कार में १००० रुपये की राशि एवम कमयुटी सेंट किया जाता है।

मन्थवीर

वीरेश बरोडा

कुलसचिव, मुकुटन कायदी, हरिद्वार

आर्यमुकुल एरवा कटरा, इटावा

अपील

इस मुकुल में १५ ब्रह्माणी वेदाम्भयन कर रहे हैं। जिनका भोजन छादन रहन सहन आप सभी वन्दी महाशयों की सहयोग पर निभर है। यह मुकुल ऐसे निरक्षर क्षेत्र में विद्यमान कार्य कर रहा है जहाँ ईश्वर मुसलमान धार्मिक धनराशि का अन्वय करके समस्त भीम जनता को भरपा रहे हैं। यह मुकुल म्थि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षण लेनी पर आधारित है। गत आप का सहयोग परमात्मक है।

आचार्य स्वामी रामवेध

आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१० फरवरी राखार वार्षिकोत्सव के शुभानुसर पर इस क्षेत्र के काफी धार्मिक वन्दी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस उत्सव की अध्यक्षता श्री रामवीरपाल मालबाले ने की। तथा प्रचार की सुविधा तथा प्रचारिता, राखार स्वाती स्वकृतानन्द, मा० श्रीमप्रकाश आर्य प्रावि वीरकार एवं वन्दी ने अपना प्रेरणाप्रद कथना दिया।

प्रचार—

नारायण दास कल्ला

आर्यसमाज फ़िलमिल, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

इस समाज में एक 'सत्य प्रबन्ध' व ब्रह्माला के ऊपर 'मुन्ध' बनाने का कार्य वन्दी के द्वारा नई काफी दिलो में रका रहा है। वन्दी वन्दी वन्दी धनराशि के धार्मिकों व हुनर वन्दी सत्यनो के प्रार्थना करते हैं कि इस धार्मिक कार्य की पूरा करने में हमारी सहायता करें। कम्यवा—

निवेदक—सुवर्णप्रकाश (प्रचार)

भाषण प्रतियोगिता

श्रद्धि बोधोत्सव के उपसभ्य में प्रायः युवक परिवर्ध (पञ्जीकृत) दिल्ली की ओर से सर्व्व की भाति दिनांक १७ फरवरी १९८५ को श्रद्धि मेले के अवसर पर मुख्य-मन्त्र से प्रातः ११.३० बजे भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

विषय— राष्ट्रोत्थान में महर्षि न्यानन्द का योगदान

कायक्रम की अध्यक्षता माननीय डा० धमपाल जी करगे ।

प्रतियोगिता में एक सस्या से एक छात्र/छात्रा चार मिनट तक बोल सकेगी।

प्रथम द्वितीय तृतीय छात्र छात्राओं को दो दो प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जायेंगे।

निवेदक —

प० देवव्रत वामन्नु
प्रधान

मूलबन्द गुप्ता
संयोजक

श्रीमप्रकाश
सूत्री

आय युवक परिषद् (पञ्जी०) दिल्ली ।

आर्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल
खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

सारा बाल चेक/मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री माता चन्ननदेवी प्रायः वर्षायां नैत्र शिबिरात्तातः बी-१ जनकपुरी नदी दिल्ली ३५
के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएंगे।

निपेक्षक

दामोदरानंद बालबाले सरस्वती	सूर्यदेव	महाशय बर्मपाल	श्रीमद्वाराध धार्य
बिक्रिस्तानस एव प्रधान,	प्रधान विल्ली धार्य	प्रधान धार्य	मन्त्री महाशय
सां धां प्रति सभा	प्रतिनिधि सभा	केन्द्रीय सभा	बुलीधान केरि
श्रीजय्य मे महाशयि या हृदी	प्रां लिमिटेड	६/५५ कोटिनगर,	धौबीक लेन
	मन् विस्वी-११००१		

वार्क सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के माहक बने, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका—

(१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।

(२) जायों (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं की याद दिलाती है।

(3) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आत्म चेतना जागृत करती है।

(४) भारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रसंगों, महापुरुषों तथा धार्मिक संस्कारों को प्रकाश में लाती है।

(५) ऋषि मुनि तपस्वी आप्तविद्वानों की वाणी का बोध कराती है।

(६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।

(७) नव्य लेखकों, कवियों, चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों, साहित्य सेवियों को प्रोत्साहन देती है।

(८) धार्मिक, सामाजिक और साध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।

(१६) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र आरम्भक ब्राह्मणग्रन्थ नीति, रामायण, नीति, ऐतिहासिक, बहुमूल्य मार्ग ग्रन्थ जिन को अधिकांश लोगो ने पढा वो क्या देखा भी नहीं, समस्त प्राध्यायिक जगत् को जिन ग्रन्थो पर सदा गर्व देती है। उन सबी के बहुमूल्य नीति हर सन्तह बटोर कर आपकी धजली भर देती है।

(१०) घतएव देर न कीजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में अनेक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पद प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की अम्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी जायेगी ।

सम्पादक •
आर्य सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,
फोन . २६६८३८ चावडी बाजार

આવડી બાજાર, વિસ્તી-૬



दिल्ली कार्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ कोन ३१०१५० के लिए श्री डा० वर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
 वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ मे मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी) ७५९

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति २० पैसे

बप ६

सक १४

रविवार, २४ फरवरी १९८६

आय सन्वत् १९६०=५३००४

फाल्गुन २०४१

दशमन्वत्—१६०

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न

महामना मनीषी स्वामी दयानन्द का जीवन युग-युगों तक संसार को प्रेरणा देता रहेगा

लोकसभा अध्यक्ष-श्री बलराम जाखड़

दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित ऋषि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर आयोजित करते हुए श्री बलराम जाखड़ ने कहा—आज का दिवस बोध का, कुछ जानने का, सत्य को जानने का दिवस है। आज उस महामना मनीषी ऋषि की सच्चाई का बोध हुआ था। इ सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए गृहत्याग कर चल पड़े। समस्त विश्व को उन्होंने सत्य पथ दिखाया। वे ऐसे उच्चकोटि के आर्यस्य पुत्र थे जिनका जीवन युग-युगों तक संसार को प्रेरणा देता रहेगा।

सम्बोधन करते हुए कहा—आचीन भारत में राजा अश्वपति ने ऋषियों को कहा था मेरे राज्य में कोई चोर व्यक्ति नहीं होना चाहिए। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो यज्ञ रोपकार न करता हो। आज मेरे राज्य में प्रवेश कर जन्म जल ग्रहण कर। दुर्गम्य से मार्ग ऋषियों के देश में चारित्रिक पतन पताकाड़ा पर है। तथा भारतीय संसद और विधान सभाएं इससे प्रसूती नहीं हैं भविष्य जीवन से पूर्ण

विधानसभा और संसद के लिए लड़े हुए प्रत्यासिद्धि को धोखा करनी चाहिए कि वे किसी प्रकार के नाटक प्रत्येक का प्रयोग नहीं करते नया उनका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन निर्देश एवं स्वच्छ है। ऐसे लोग ही देश का कल्याण कर सकते हैं। इनके साथ देश के प्रत्येक नागरिक को अपने महर्षियों से प्रेरणा लेकर जीवन और चरित्र को सुधारना चाहिए। मैं प्रधानमन्त्री

मन्त्रछता लाने के लिए किये जा रहे प्रधानमन्त्री के प्रधान का स्वागत करता हूँ उन्होंने सरकार से मांग करते हुए कहा संस्कृत हमारी देववाणी है जिस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है उसकी रक्षा के लिए शासकीय सेवाओं में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। तथा संस्कृत के अध्ययन एवं प्रवर्धन हेतु माध्यमिक विद्यालयों में ही संस्कृत प्रतिभाईयों को प्रोत्साहित करने चाहिए।

श्री बलराम जाखड़ ने आह्वान करते हुए कहा—ऋषि दयानन्द ने संस्कृत, संस्कृति को रखा करने के लिए बल दिया था। संस्कृत सभी भाषाओं को जननी है, गाय हमारी माता है उसकी पूरा सुरक्षा की जानी चाहिए। उन्होंने कहा—मैं अनुरोध कर्ण, आज हमें मानव कल्याण के बापस न देकर महर्षि दयानन्द द्वारा बताये गये मन्त्रों का अनुसरण करना चाहिए। मैं संसद में यथासंभव जो कुछ हो सका अवश्य करूंगा।

श्री प० राजगुरु शर्मा ने



चित्र २—श्री बलराम जाखड़ भाषण करते हुए, मंच पर बैठे हुए श्री सचिवालय के आर्य श्री गृहीराज शाल्मी श्री प० राजगुरु शर्मा श्री योगप्रकाश त्यागी श्री महाशय कमलश्री श्री आचार्य रामगोपाल शाल्मावे विचार दे रहे हैं।

श्री रामगोपाल शाल्मावे ने कहा श्री को गम्भीर पशु धोषित कर श्री की सुरक्षा की जाए तथा संस्कृत के अध्ययन करने वालों को विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

श्री पृथ्वीराज शाल्मी ने नामा लेख और उद्देश्य से अपने कार्य की चर्चा करते हुए कहा कि ईसाई पानी के गिलास पर गरीब लोगों का ईमान लुट रहे हैं। भग्न सरकार को बर्मान्तरण रोकने के लिए कानून बनाना चाहिए क्योंकि हमसे राष्ट्रद्रोह उत्पन्न हो रहा है।

इस अवसर पर श्री योगप्रकाश त्यागी एवं श्री सचिवालय शाल्मी ने श्री अपने विचार प्रस्तुत किये।

यज्ञ पर अनेक स्त्री पुरुषों ने दोष त्याग एवं परोपकारी

कार्य करने का संकल्प ग्रहण

किरीयवाह कोटला मैदान में धर्म केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में आयोजित यज्ञ प्रातः ८ बजे प्रारम्भ हुआ। इस यज्ञ में श्री महाशय वर्धमान, श्री के० ए० माटिया श्री दीप राम टन्कर एवं श्री योगेश धर्म यज्ञमान रूप में उपस्थित हुए। यज्ञ के ऋषिकृ के रूप में श्री प्रकाश चन्द्र शाल्मी एवं श्री प० यशपाल सुबाणु किया।

ने मन्त्रोच्चारण तथा यज्ञ संचालन किया। श्री प० सुबाणु ने इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को यज्ञ पर व्रत ग्रहण करने का उपदेश दिया। जिससे प्रेरित होकर लगभग ५५ स्त्री एवं पुरुषों ने यज्ञ पर अपने दोष त्याग एवं परोपकारी एवं माध्यमिक किया।

ध्वजारोहण यज्ञ के पश्चात् ध्वजारोहण पर श्री सूर्यदेव ने भाव जनता को सम्बोधित करते हुए कहा—हमारी संस्कृति और सभ्यता का प्रतीक ये ध्वज हमें राष्ट्र एवं धर्म के प्रति कर्त्तव्य निभाते रहने का सन्देश देता है। हम अपने आपको और

विश्व को अष्ट धर्म बनाने का संकल्प ल। ध्वजारोहण के पश्चात् श्री मूलचन्द जी के मनोजन मे खेल क्रम एवं भाषण प्रतियोगिता का आद्य छात्राओं का कार्यक्रम हुआ। जिसमें युवा पीढ़ि ने महर्षि के राष्ट्रीयत्वान सम्बन्धी निर्देशों पर प्रकाश डाला।

वह मृत्यु से नहीं डरेगा

बसपाल सुभाषु

अक्रान्ति धीरो अमृत स्वयम्भू रसेन तृप्ति न कुतश्चनो न ।
तमेव विद्वान् न बिभ्राय मृत्योरारम्भान् धीरमजर युवानम् ॥

अप्रै० १७०५४४

धर्म—परमेश्वर अक्रान्त" कामना रहित, "धीर" धीर अचलमानस, अमृत 'अविनाशी कभी न मरने वाला' "स्वयम्भू" स्वय-भू अपने आचार से सदा विद्यमान, रसेन तप्त धानन्दरस से तृप्त 'कुतश्चन न डरन कभी भी-मृत नहीं मृत्युतारहित' 'तमेव धीरम् अजर युवानम्' उर धीर, अजर, सदा नवीन युवा 'आत्मनस्य' अपने आत्म परमात्मा को 'बिभ्राय' न मृत्यो बिभ्राय' जानकर ही मृत्यु मृत्यु से नहीं डरता । मृत्यु से निर्भय हो जाता है ।

अर्थ—अमृत अज्ञान को जान कर मृत्यु से डर से बचे निर्भय रहेंगे ।

अन्वय—अज्ञान काल में जन्म-मरण का चक्र चलता रहा है, धीर चलता रहेगा । क्या विद्वान् क्या मूर्ख मरीच-धारी बनवान निवर्तन, योगी-भानी सब मृत्यु की पकड़ में हैं । काल बसा काल है 'वे' पैर बाधे—एसी मृत्यु धारि धीर धीर पैर बाधे—मृत्यु की धारि सभी पर बह आसन करता है ।

"मृत्युरीते विप्रा मृत्युरीते चतुष्पथाय ।

मृत्यु—मृत' मित्रि यु' मित्रता-मित्रता को मिलना धीर बुद्धि शान्ता । वह यम रूप परमात्मा इस जीव को 'मृत' अर्थात् चतुष्पथुत सरीर से जोकना धीर (यम के रूप में) धन्य करता है । मृत्यु की विधोति 'अ' एक पल में जुबना धीर एक में घलन हो जाना ही मृत्यु है । केवल मात्र इतनी ही प्रक्रिया का ज्ञान न होने से ही समस्त प्राणीमानस म मृत्यु का भय व्याप रहा है । मृत्यु से डरना दर्शन की भाषा में धर्म निवेद्य कहना है जिससे प्राणी भ्रमानी समीचीन रहें । सारा ससार भय से जमी रहता है । सब से बड़ी सदा मौत सब से बड़ा दुःख मौत इसी से टर डीर डर रहा आदमी ।

वद क कवि करता है—

तमेव विद्वान् न बिभ्राय मृत्यो ।

उसे जानकर मृत्यु का "रनभी" रखा ।

तमेव विद्वान् न बिभ्राय मृत्यो नान्य पन्था विद्वेत्प्रमाण ।

यजुर्वेद ३१-१८

उस परमेश्वर का जानकर ही मृत्यु में पाए हूँ जा सकता है धीर कोई गान्त' है ही नहीं ।

"चा डर गया, किसी अनजानी वस्तु का दसकर जीव पना बचने का रास्ता है केवल मा की मोदी । मनी से मोक्षी गैरता क्या धारक मा के दानन

की पकड़ कर सहना-सहना हाथ ऊपर उठाता है । धारुणों से बेहूरा मीमा है । मा ने मौत में ले लिया, धर उसे किसी का डर नहीं, जो हाथ काप रहे थे वे सब लन गये, मुट्ठीअ कच गयी धीर युवका ठानता है धर उस डरानी मयाह बस्तु पर ।

काल के पके से डरे अनुभू । पर-मात्मा हाथ सब की मा है, वह जयधम्मा है उसकी मोदी, उसकी सत्य सभी मनी से मुक्ति विमाने वाली है । उसकी उपासना कर उसकी गोदी में बैठें । पर पहले उसकी मोदी में बैठने योग्य बन । देख वह कैसा है ?

अक्रान्ति धीरो अमृत स्वयम्भू —

वह कामनाओं से रहित है धीर हम कामनाओं से घिरे हैं । ये कामनाएं ही हमारा बन्धन बन गई हैं । जो बन्धन हमने बाध लिये हैं उससे निष्काय होकर ही बसा जा सकता है । सवार बाटिका का वह मासी धीर है, उसके बन्दी कोई लालि नहीं जो उसे अकस्मिक रूप से वह बन्धनामान है धीर सब हट एक कोके पर कापने लगत हैं, पोसा हा भी दुःख हमारे दिन को बहना जाता है । पर जो उसका सम्बन्ध लेता है वह धीर हो जाता है । एतत् से मारी विद्याल दुःख को वह तृण समकर फेल जाता है । मृत्युच सत्य कहलाता है क्योंकि सारी मरलु वसां है । आत्मा समर है, इस इन्द्र का योग्य सारी 'इन्द्रस्य गुण सत्ता' परमात्मा अजर अमर है, तो ए भी अमृत का मृत अर अपने पुत्रों से मृण, बर्न, महान कर्मा से सब प्राप्त कर समर हो जा । 'किन्तु वह तनी सचन है कि जब न उस स्वयम्भू (अपने आचार से विजमान परमात्म-स्वयम्भू) के स्वाधिक मृण को अपने जीवन न उतारता । अर्थात् आचार स्वय बनेवा दूसरे के सहारे की धारकता नहीं करेगा ।

अर धानन्दन प्रभु रसेन तप्त धानन्दरस से भर-परा है । धानन्द का मोल निरन्तर बह रहा है । तू ईर्ष्या, डप बुणा की धाम म मनसता, करता रहा है । सपलस्य अहृत दूर तारा भजान उछाली रहती है । धा, मासी की मन्तो न न उस धान-सदृशक गो मोदी म बैठें, कुछ पल के लिए धानन धारन । विमल कर दे केवल मा की मोदी का चरम सुख, तुलु दुगु पुषी से प्यारे आतक को धाह्नाय से चमत्कर कर देगा । उस मस्ती म कलस्य के उन्माद में अरकर सवार बासा में प्रयत्न हो । पर देख ! कोई भुटि कोई

कनी जीवन में मत खूने देना । नहीं तो धर्म में हूँ निरदा धीर फिर उठना धीर की कठिग हो जाएगा । तेरा धार्य की पूर्ण बहा है, 'न कुतश्चनो' कही से मृत्यु नहीं है । धीर तुलु मृणमानी, चतुष्पामी, हीमताओं से बने हो । याच रस एक योग ही धमरसा के स्वयम्भू धारि को जीवन पट से रिक्त कर देता है । इन चिह्नों के बचना होना, जीवन नैय्या की एक खेब से, एक पौष से ही दुष्कने का सतारा हो जाता है । उस अनुकम्पीय के अपनी तुलना करते हुए, धमनस्य करते हुए अनुभव बना ।

धरा की है इबासल, बुधा सा ही बाह ।

विद्याला की इस अनुभव सुनिष्ठ से उस विभिन्न विचारका की हूर कम से, हूर बहुत से देख । उसकी सक्ति हमारी के वेब में, सिधु की मरफती सहरो में विद्याई देती । उसका तेज प्रभु की किछो में बुद्धि-योग्य होता । उसका वेब पहुँचो की प्रच-सता में नजबो के प्रशासन में विद्याई देता, उसका धानन रस कुली के सौर्य धोर युगम में फल निर्दरी में प्रतीय होता । यही रस पश्चिमी के स्वरो में बहक रहा है । हर रचना में उसकी पूर्णता दिखाई पड़ती है, कोई भी रचना कही से भी मृत्यु नहीं है । फिर उसी परमात्मस्वयम्भू की हूर आत्मा में, हर प्राणी में दल । सब एक विद्याला की सपना है सबसे हमारा महारा माता है, सब अपने हैं हमारे अपने । फिर किस को किसका दर, सर्व नय, धानन के ही दर्शन होने । साराबक बैकना ही बर्न है, अपनी धानन से विन्य व्याहार करता ही धमन है ।

मृत्यो अ मृत्यु मृत्योति व इह मानेय पक्षति ।

ऋषिवर महामना

नाथशरार प्रायं

स्वशक्ति से किसी बरव्याप्ति—

उठा विद्या बरहरी के मुन्नीय को,

मन्त्र प्रसूता कसिताम्बरा मयी—

कछार में ऐसी पावागामी—

प्रबुद्ध कृपा क्षुण पावकामना—

प्रबुद्ध की बाहुली पुण्य मगना,

समाज की जैसे रसत अन्धकार—

मत्सल्ला की सुपुत्रा पत्योनी ।

सतर्क अन्ता क्षीराम्भु की यिनी—

जहां न को कहेसता कठोरा,

ध्यायाड का चंचलसीमनेय था

मुपुन था वह सीतन कपाय का ।

मुपरी शुक्रा, नवभास्व प्रयागमा—

असा सखन वह पुष्पी मन्त्रक था ।

विरल निमा पीडा के कुपुण्य से

स्वधातकी को स्वद्वय दाह है ।

विद्वान् से अमरवाद सा धर्मि—

अनुपामी से योगिन राय था,

करस्य धनोक्त वद को विधा—

उसरा चला शूचिबर महायता ।

स्वराज्य का शूचिर्क भनष्टा—

सोकेर कृत बर्मा का इतार्थ था,

बडे उसी का हृद धीट विनये—

अखन चेता स्वराष्ट्र के लिए ।

सम्पादकीय

आर्य सन्देश

धर्मवीर पं० लेखराम

अमर बलिदान

धर्म पर बलिदान होने वाले वीर योद्धा पं० लेखराम का स्मरण आते ही एक दिव्य धाकड़ि मानसस्मरण पर उभरती है। एक ऐसे माझी की याद घाती है जो उनकी नदी के प्रवल वेग का विपरीत धारा में अपनी नाव खेता चलना है और कभी थकता नहीं निराश भी नहीं होता। ससार ऐसे लोगों को उमसल करता है। धर्म की धून के धनो पं० लेखराम का जीवन महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म के प्रति पूरा समर्पित था। व धरणी धर्म-प्रचार यात्रा में कभी थके नहीं रहे नहीं। विदेशी घडवन्धो के जाल में भारतीय संस्कृति बिगल शाताब्दियों से जकड़ी बली खा रही है। इस देश के भोल भाल नागरिकों का खल वल से धर्म परिवर्तन किया जाता रहा है। १९वीं शदी में हिन्दू धर्म उस कच्चे घाटे के दीपक की तरह हो गया था जिते घर में रख तो चहें ला जाय और बाहर रखते हैं तो कोए उठा ल जाए। किसी के छने नाम से ही धर्म से भ्रमण जाति से भ्रमण कर दिया जाता था। ऐसे कच्चे धाने जसे अम को तोड़ने के लिए धनेक मत्तलमन्थो ईसाई धर्म मुसलमान हिन्दुओं को प्रपने जाल में अकरोने चल जा रहे थे। उस काल में महर्षि दयानन्द द्वारा दिया गृहि सुदानन चक पं० लेखराम ने आने हाथ में उठा लिया। और उसका ऐसा कुशासन के साथ संचालन किया धनेक बिछड़ आई फिर हिंदू होकर अपने पुराने घर में लौट आये। उनके जीवन की इस घटना से तो धरणी रोमाञ्चित हो जाता है। जब उन्हे पता चला धर्मक धाम में कुछ लोग मुसलमान होने जा रहे हैं। वे उस समय घर बैठे भोजन करने ही जा रहे थे कि पत्र द्वारा उन्होंने सुना मित्रो उसी भवस्था में उठकर व रसगोरी द्वारा उस गांव के लिए चल पड़े। उस गांव में कोई देव-स्थान नहीं था उन्होंने बलती गाड़ी से छुआग लगा दी। रोल से गिरने से उन्हें भी लगी जून से रगे बरबो से ही व उस स्थल पर पहुँचे जहाँ कुछ हिन्दू भडकाव में आकर अपना धर्म परिवर्तन करने जा रहे थे जैसे ही उन्होंने पं० लेखराम को और उनके त्याग को देखा वे भाव बिभोर हो गये। उन्होंने यह कह कर धर्मपरिवर्तन से अपना निश्चय बदल लिया कि जिस धर्म में ऐसे हमारे रक्षक आई हैं जो अपनी जान पर खेल कर हम को बचाने आये हैं हम उस धर्म को कदापि नहीं त्याग सकत।

पं० लेखराम ने अपने जीवनकाल में धनेक पुस्तक लिखी जो लगभग ३१ हैं। ये सभी पुस्तक विद्याथियों के प्रश्नों के उत्तर में लिखी गयी। महर्षि दयानन्द के प्रामाणिक जीवन बराल को लिखने का धर्म भी धर्मवीर लेखराम को ही बाता है। देश के काने काने में जाकर उन्होंने बलमय तन्त्र एकत्रित किया। हिन्दू देवी देवता और संस्कृति पर कीच उछालने वाले धनेक मुसला उनकी विषमियों से उन्होंने धनेक धालारा भी किये। उनकी विद्वत्ता से तत्परहारी से विषमार्थ जनों में श्रुतक फल गया। उन पर मिर्जापुर प्रयाग लाहौर मेरठ दिल्ली बम्बई की प्रदालनो में मुकदमे भी बाल गए परन्तु प्रदालन द्वारा उनके लवो भाषणो में कोई भी धासध की बात न पाकर मुकदमे खारज कर दिए गए। बाओ और से लोहा लने से मुसलमान भलाच नुबूद हो गए। ऐसे ही एक नौच हत्यारे की व बलि चर गये।

उन्होंने धर्ममार्ग के भन्ध भवन की बनाने में नीच का काय किया है। ऐसा उपदेशक ऐसा लयक ऐसा धर्मर लेखक ऐसा क्रांतिकारी पाकर धायसमाज गर्वित है। उनके बीमे से २००० रुपये मिल। व उन्होंने गुरुकुल कागड़ी में दान कर दिए छात्रवृत्ति के लिए। उसी छात्रवृत्ति से पं० दुर्गदेव विद्यालकार जेसा कोविन्द विद्यान धायसमाज को मिला है। धन्य है और लखराम धन्या है उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी। धन्य हैं महर्षि दयानन्द जिन्हें ऐसे बलिदानो शिष्य मिल।

धर्मसमाज का अतीत बलिदानियो से भीषित है परन्तु आज हम उन वीर बलिदानो गहीदो की शीघ कथाओ को सुलते जा रहे हैं। स्वामी अद्यानन्द और महात्मा हसराम को तो फिर भी स्मरण किया जाता रहा है

शहीद लखराम कुछ उभेखित हो रहे हैं। यदि वीरता को न पूजा न मराहा तो वीरता को जननी बाक हो जायेगी। क्योंकि—

प्रणय गहीदो स यदि हम न लगे
धारावी बली हुई साक हो जाएगी।
यदि वीरो को पूजा हम नहीं करगे
तो सब मानो वीर। बाक हो जाएगी।

वसपाल सुधासु

स्मारिका के प्रति

मान्यवर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा की धोर स प्रकाशित स्मारिका का धवनोकेन किया। यद्यपि इस स्मारिका का आशोजन सयोजन एवं प्रकाशन सभी कुछ समीचीन है पर इसका सबप्रथम सम्पादकीय लय महर्षि दयानन्द एक ग्याति स्तम्भ सचमुच इस स्मारिका की भी एक ग्योति है। सन धनुच्छेदीय इस लघु निबन्ध में लयक ने महर्षि के सर्वज्ञाए ग्यि गुरा को मञ्जुल धीय प्राञ्जल भाषा में जिस साहित्यिक विधा स प्रस्तुत किया है वह स्मारिका में अपना एक धनोम्य प्रतिपादित करती है।

तत् तिसम्बर के धायसन्देश के एक धक में स्वामी अद्यानन्द जी को प्रदत्त लयक की एक धनपम अद्याञ्जलि भी देवन को मिली थी। परन्तु उसस भी कही अधिक बढ चढकर महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित यह अद्याञ्जलि है।

स को पन्कर में इस विचार में वर गया कि क्या महर्षि के प्रति इसल भी मन्ध कोई अद्याञ्जलि हो सकती है? यद्यपि कान्यो व निरखवि विबुधा च पृथिवी इस उक्ति के धनसार किसी क्षमता की धातिन कहना कठिन है पर तु मेरा मन यह निश्चित रूप स स्वीकार कर रहा है कि महर्षि के प्रति यह खसोतन अद्याञ्जलि है।

परम पिता परमात्मा ऐसी प्रतिभ के धनी क्त्वितक सुधासु एक नही धनेकानेक समुत्पन्न करे जा धरणी ग्यि प्रतिभा की नय रश्मियो स धाय-साहित्यिक गयन को सदा समालोचन करते रहें। इम मगल कामना के साथ।

मगनामिलाषी

सुरेन्द्र कुमार शर्मा महिष्ठाबाय

दिनांक १० २ ८५

स्मारिका सम्पादन

आप की मेरी हुई स्मारिका प्राप्त हुई बहुत बहुत धन्यवद। स्मारिका का संपादन बहुत धन्यवाद है लय-धन्य भी है प्रणयधायक व ज्ञानवदक भा सभी कविताएँ धन्यो सुन्दर हैं। धाय कोनो से इस स्मारिका क सम्पादन में न्यत्र धन्यकोए वीरचित और गुरुधाहृत वा सु भर धनियन धनियन गिया है

हार्दिक वरदा

प्रियलभ नामो सिंह

बबो (मरठ)

लेखक महानुभावो से—

हम आपके लेख एवं कविता का स्वागत करते हैं किन्तु—

१. अपने लेख वद दगन उपनिषद स्मृति कल्पसूत्र धारण्यक ब्राह्मणग्रन्थ गीता रामायण नाति ऐतिहासिक धाय व धो की धायद परम्परा की ध्यान में रखकर भज। किसी एक विषय से सन्निधित लेख भी अपेक्षित है।
२. सत्यम वाटिका सत्यम के लिए वेदायदेश (मन्त्र व्याख्या) जो सरल एवं भाव पूरा हो को नितान्त आवश्यकता है।
३. ईश्वर कविता क्त्वि दयानन्द एवं बलिदानो वीरो का शीघ कथा सुलभ अतिशय को प्रकाशित किए जा सकये।
४. जिस लेखक एवं कवि की रचना और लेख प्रकाशित होये उन् धायसन्देश में वष तक विशेषक सजित नि शल्क दिया जाता रहेगा।
५. किसी लेख एवं कविता में धनोकेत होने की दवा में वापस भेजने के लिए हम बाध्य नहीं है।

—सम्पादक धायसन्देश

यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

५. मुक्तिविज्ञान में इन बातों का एक
 ठोस स्वरूप हमें इस प्रकार के सामने पड़े
 विषयों द्वारा मिलेगा—
 १. निम्न प्रकार जीवन की
 रक्षा के लिए बाह्य-उपाय-मार्ग नौवीं
 का हाना विज्ञान में ही उसी प्रकार मुक्ति-
 रक्षण के लिए धर्म या वास्तविक
 का हाना भी परम आवश्यक है। यही
 विज्ञान वास्तु धर्म या धर्मिक प्रतीति का
 लोभ है। धर्म अथवा का फ्रिड है
 वास्तु वास्तविक की ओर अद्विष्ट यत्नरूप
 का प्रयत्न है वैज्ञानिक-प्रयोगों के द्वारा
 इस बात पर विचार करने का एक
 प्रयत्न ही जानी है—धर्म अथवा का
 प्रयत्न विज्ञान के नियमों का विज्ञान हाना
 है। वास्तु विज्ञान मनुष्य की परम वांछी
 परिधि विज्ञान है वास्तविक विज्ञान का
 कर्म विज्ञान है अर्थात् यो गति का प्रमाण
 होता है। यो धर्म ही हो न हो मुक्ति-
 रक्षण के लक्ष्य में समान होता है।
 धर्म के द्वारा ही अन्धकार वशाओं की
 मुक्ति हो रही है इस बात की ओर यो
 नये नये अनुसंधान के मुक्ति विज्ञान का
 एक यत्न बाध विज्ञान में प्रयुक्त किया
 इसके वैज्ञानिक रहस्य पर अनुसंधान
 प्रयत्न है।

६. यज्ञ की समिधा —

[illegible][illegible]

१० ब्रह्म स प्रयुक्त ब्रह्म—

यज्ञ के ध्वज प्रयोग से आने वाले पदार्थों के ऊपर भी विचार करना आवश्यक है। महर्षि स्वामी दय नंद ने चार प्रकार के व्योम के प्रयोग का वर्णन अपने ग्रन्थ सम्प्रकारविधि में लिखा है।

(१) सुगंधित—कस्तूरी केशर
अगर तगर ध्वेत चन्दन इत्यादिची जाय
फल जावित्री आसा ।

(२) पुष्टि कारक—यत दूध फल
क^० अ^० बाबल गहू उज्ज आदि ।

(३) मित्र गवकर सह छुधारे
द स भावि ।

(४) रागनाणक—गोपलता मिलोय
घादि औषधिया ।

इन पदार्थों के साथ भात लिखड़ी (बिना नमक) खीर लड्डू मोहन भाग आदि पदार्थों को भी यज्ञ में डालने का विधान है।

उपरोक्त विधान से स्पष्ट विदित होता है कि यज्ञ में फल प्राप्त करने के लिये धर्म और शौर्यकोष को ही शक्ति प्राप्त चाहिए। नर प्रथम में शतपथ ब्राह्मण का निवेदन स्पष्ट है—**यज्ञिनाह्वय यज्ञः** नरस्पतिविद्यया हविः वनस्पतिविद्यया हि यज्ञीया नहि नृभ्यः यमना नरस्पतिवो न स्तुत्य म्माहा—वनस्पतिविद्यया हविः। ग० १०११। अथवा यज्ञः के धर्म नरस्पतिना का ही प्रथम हाना चाहिए। वित्त उपकरण प्राप्त करने और यज्ञ करने का ही उद्देश्य है जो कि नरस्पतिना का ही उद्देश्य है। अतः प्रथम में शतपथ ब्राह्मण में यज्ञकर्म और उज्ज्वल का उल्लेख करने लायक है।

तद्वैतजनको वैदेह याजवल्क्य पप्रच्छ
वेत्याग्निहोत्र याजवल्क्य वेदसम्प्राप्ति
किमिति पप्रएवति ।२ यतः पयो न स्यात्

लेखक शिवाकांत उपाध्याय

केन जुहुया इति । श्रीह्रियवाग्यामिति ।
यद श्रीह्रियवौ न स्वात्मानं केन जुहुया
इति वा आत्मनो भोक्त्रव इति । यथा
ऽऽरण्या भोक्त्रेभ्यो न स्युः केन जुहुया इति ।
वास्तव्यते इति । यद वास्तव्यं न स्वात्मानं
केन जुहुया इत्यविमर्शित । तदापो न स्युः
केन जुहुया इति । ३ । स होशान् न वा
इह तद्धि किंचनासीदधीत सत्यं यद्वदा
यामिति । तस्य वास्तव्यमत्यहोना
येनृष्यतते दशमोऽपि हो वाच । ४ ।

शत० ११।२।२ ४

जनक ने याज्ञवल्क्य से पूछा—हे याज्ञवल्क्य क्या तुम अग्निहोत्र का उत्तर जानते हो? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि सम्राट मैं अग्निहोत्र का तब जानता हूँ।

अनक ने पूछा—किस पदार्थ से हवन करना चाहिए? दूध से। यदि दूध न मिले तो जौ कावक से। यदि वी धानवक न मिले तो जवली घनाज से। जवली घनाज १५५ पादि कुछ भी न मिले तो जल से द्वारा हवन करना चाहिए और जब जल भी न मिले तो मिला पानी से यह करना चाहिए? इस घर यात्रावस्थ में उत्तर दिया कि यदि कुछ भी पास न हो तो स्रज का अड़ा से हवन करना रहना चाहिए। इस प्रकार का उत्तर सुनकर अनक ने शायदबस को दृष्ट हो गीए जान ने वी और कहा कि आप को टीक प्रकार से आने है।

उपरोक्त कथानक से स्पष्ट है कि यनीय पद्याय अज्ञ। फल फूल वनस्पति प्रीयभी आदि हो हो सकते हैं। दूसरी ओर हृषिक नहीं बन सकते। लोग यम के अन्ध भ्रमजाल वश ब्रह्मवा शब्दकतावश ऐसे पद्याय को ग्राह्य देते हैं जिनका निषेध है प्रीय यम की नीय बात है। अन्धे श्रम के कारण पर तुरे प्रभाव वाला यम अस्मिन्कारक हो जाता है।

इस प्रसंग में एक बात की चर्चा
 आवश्यक बनती जाहती है। कुछ लोग यह
 प्रश्न भी की बार बारकर उनका मास
 मानते हैं और प्रमाण में पल्लु बलि वाले
 प्रसंगमें यह प्रकार का उदाहरण देते हैं।
 प्राकृतिक इस प्रकार के प्रामाण्य प्रसार
 सतिता प्रादि पत्रिकाओं में बहुत जोर से
 लिए जा रहें हैं। बंद के मनो का दुष्ट
 विनिर्माण कर के अपने पक्ष में उस प्रकार
 की सलत वालो का प्रमाण बंद से निहा
 लने का दुस्साहस भी कुछ ही भयंकर
 रहे हैं।

बदमत्र के दुष्ट विनियोग का निम्न उदाहरण देखने योग्य है—पद्मश्रुति के समयक जब ककरी के बच्चे (सैमने) को फासी लगाकर मारते हैं तो यजुर्वेद

के निष्ठाविशिष्ट मन को पवते हैं
 मनुष्य का बेवकाल पासेन प्रसि मुष्ठाभि।
 मृत्तुः दानं मनसो नृणां नृते हि विद्वानो
 की हवि । मुकुंष्टं भविष्या विमन से युक्त
 ब्रह्म ज्ञान के पासे मे बाधा हू । (मन्या
 दयानन्द भाष्य) ब्रह्म नृणां के पासे मे प्रत्या
 सासन का कोई विधान नहीं है । परन्तु
 वयं माताहारादि ने इस मन का वलत ब्रह्म
 करके इस का प्रति-निधिमोचन कराहा
 है मृत्तुः पदं कति पिच्छं ब्रह्म का दुर्ग्राह्य
 प्रारम्भ कर दिया । इसी मन से अमल मन
 के निम्न प्राणेश हैं ब्रह्म स्वा माता म
 नाम्नु पितानु पिता स्वामन्नु नु स्वा
 समुष्ण । १० । १६ ।

इसका अर्थ करते हुए माताकारियो ने वेणीशा की कि हे बकरी के बच्चे तुम्हें मारने के लिए तुम्हारे माता पिता भाई बच्चे सब धनुर्मति के क्या को नृदिमान व्यक्तित्व उपरोक्त हैं क्या को सब नाम सकता है। बकरी के माता पिता कछा मिलिये और अपने ही बच्चे को मारने का धनुर्मति क्यों और कैसे देंगे। यज्ञ का उचित लोग के कि माता पिता बच्चे बग सब लोग अपनी समस्त को प्राणायो के हक के अपनी शिक्षा और ह्वायय प्रावि नुशो मे सत्य न करन की धनुर्मति हैं।

एक और प्रसंग देखिये—यजुर्वेद का मन्त्र है—**वाच ते शुन्धामि प्राणं न श्वामि जन्तुस्ते शुशामि ओजन्ते शशामि नाभिन्ते शशामि मेढन्त शुशामि पयन्ते शुशामि अरित्रास्ते शुशामि ।**

यजुर्वेद ६।१४

इस मंत्र का दृष्ट विनियोग किया गया और निम्न प्रकार से इस के गलत अर्थ का प्रचार हुआ।

गजमान की पत्नी बकरी के पारे
 बच्चे का विभिन्न धनोका ग्यस्त करके
 कहती है कि मेमने ने तेरी बाणी ग्राह्य
 वल्लू, कान नाहीं उल्लेखिये गुनाहवा
 तेरे परलिय को लुब्ध कहती है । एक बास
 विचारणीय है जब बकरा झी मर गया तो
 बास को छू कर भास कुल दुष्ट किया
 वा लकटा है धोर कोन दुष्ट प्रकार की भास
 बास को सुनेवा । साहा तो मरी पत्नी है
 पर गुब्बिकरण हो रहा है । कौन उचित
 विवचना है । सख मत्र का उल्लिख धन
 निम्न प्रकार है—भासवा अपने पिछव छे
 कहवा है कि मैं तुझको बाणी ग्राह्य
 वल्लू, कोन नाहीं धाविय को लुब्ध करवा
 जिसस गुन पाछे गुणी मे प्रवृत्त है ।

जिन लोगों ने उपरोक्त मन्त्रों का दृष्टि-विश्लेषण किया है उनके सामने एक और प्रश्न उपस्थित हो गया। इसी ध्यात्म्य का प्रत्यक्ष प्रमाण बाणीया का मन है। प्रकरण के अनुसार बाणीय ध्यात्म स्वरूप स्थिति को बाणीयादि देता है कि वाक्य तत् प्राणायामनाम प्रत्यक्ष ध्यात्म्यनाम चतुस्तथा ध्यात्म्य-ताम श्रोत्र तत् प्राणायामनाम। ६।१५

नेरी वही उन्मत्त हो प्राण बलादि गुण युक्त हो शरीर निवर्तन को काम

सबसे कुछ व्याप्य हो गया तैरे दिन सुखपूर्वक होतें । परन्तु मन माहाहारियो ने इस मन को भी धरौने का प्रयास किया और जन्म का कुछ विनियोग करके इसे मरे हुए बकरे के लिए धामोर्जन बना दिया, मरे हुए बकरे के कपड़े कट्ठा है कि—'हैं मरे हुए बकरे ने तैरी बाणी कले कूने, तैरा प्रण कले कूने, तैरी बल, कर्न-कूने, तैरे कान कले कूने और तैरे बिल सुख सासिल से होते ।

इस प्रकार की धम्मम धोर धसलत हूत का प्रथम इन पशु बलि का विधान करने वाले पाबलिबन्धो ने तैरो के मनो का मनल विनियोग करके सोरो ने किया और यमो ने पशु बलि का आत्मक धोर मसल प्रचार किया ।

यहा एक बात स्पष्ट कर देना चाहना हू कि पशुबलि मे मांस-भक्षियो ने मनयो का कुछ विनियोग धोर उनका मनल उट-पटल धर्म इस्तिथि कर दिया कि इन मनयो का प्रयोग पशु सत्पन मे किया गया है । पशु धोर सत्पन दोनो शब्दो को न समझने के कारण यह झूठ हो गई । पशु भूत की उत्पत्ति व्याख्या समझने पर यह झूठ न होतो । पशुत्वोति पशु । पशु का धर्म है बालक । अर्थात् १५२१७६ विनि-च्छाजम् मातुरत्ता उपत्तत्वा नामा क्वा पशो को मान्यमाना । यहा पशुधो का धर्म बालक ही है । Graeth ने की इसमे पशु का धर्म Babies ही किया है ।

सत्पन का धर्म भी सारना लिया हुआ जो कि सम्भव नहीं है । सत्पन का धर्म है सम्पक प्रकारेण जान देना । पशु सत्पन का धर्म पशुधो को सत्पन न होकर पशुधो को सम्पक प्रकारे से जान देना । सत्पन क धर्म सारना नहीं हो सकता । इसमे सत्पन का प्रमाण उल्लेख-नीय है ।

जीवमेव देव ना ह्वित्तममूता-
मां । ३।१२।४

देव भोग भोवित है मुनें नहीं—इस लिए उनको हवि भी समीच हो सकती है मुनें नहीं । जीव नैवेद्याना हवि । इस पशु पशु सत्पन का धर्म हुआ कि विनियोग करने पशुमे ध्यायन से विद्यावाह्य होने की धारणा करे और ध्यायन छडे उल्लिख निशान देकर उपरोक्त मन्त्रो द्वारा धारोबलि धोर उदका निर्माण करे ।

इस प्रकार मे पशु शब्द का वैज्ञानिक पक्ष भी विचारणीय है । शतपथ ब्राह्मण मे एक स्थाप पर धाता है—(अत्रा-पति) तेषु (पशुषु) एवम् (धर्मिण) प्रप-त्यत्त तस्मात्तैरे ते पशव । ग ६।१।१४ प्रजापति ने इन पशुधो मे धर्मिण को देखा, इसी कारण इन्हे पशु कहते हैं । ये पशु धुधोकर धोर क्षमरिज लोक के अन्दर चलन मे कल धोर देणु हैं जिन्हे रात्रि या कलमे मे देखा जा सकता है । इस्तिथि इन्हे पशु कहते हैं (धर्म्योति पशु) यहा इन पशुधो का शरीर नहीं है जो धुधो पर चले रहते हैं । इन पशुधो मे धामोर्जन कल है, इसके अन्दर बकरे हैं । इन पशुधो के

अन्दर ते विकीरय होता रहता है तथा निजिबल क्षमरिज मे ये पशु ध्रमण करते रहते हैं । इसी धामोर्जन लको को यज्ञ के अन्दर प्रयोग करने का विधान है । यजुर्वेद मे स्पष्ट धाता है—देवा यज यज्ञ तन्वावा धमन्तु युष्मन् पशुम् । विद्वान् जो यज्ञ करते हैं उसमे पशु पशुधो को बांधते हैं । य ३।१।१६ बाधना शब्द यहा खण्टि करण की धोर हमारा अर्थ धाकाट कर रहा है न कि पशुधो के बांधने की धोर । सोरो मे पशु का वैज्ञानिक स्वरूप न समझ कर यज्ञ के निमित्त पोषा—मषा, बकरा आदि साकर बाधना शुरू कर दिया और देखते देखते इन पशुधो की

बाधा होता है । इन उदाहरणो मे स्पष्ट है कि यहा पशु शब्द का धर्म पोषा मषा या माय धादि के रूप मे पशु नहीं है यहा तो पशु मे धणु परमत्ता के रूप है । नै बौधोक, क्षमरिजलोक मे धामोर्जन शक्ति के साथ विचरण कर रह है । इन्ही पशुधो को यज्ञ के निमित्त उपयोग मे लाया जाता है ।

इन पशुधो मे धर्मिण व्याप्य है और उनकी धमक से ये कण धमकते हैं । एक धोर प्रथम प्रस्तुत करना उचित होगा । धामोर्जन बाध पशु । १०० ब्रा १।६ धामोर्जा पशव । १०० ब्रा १।१५३ धर्म पशुधो धर्मिण तस्मात् धमो

दानवता के पथ पर बढ़ते मानवता के आज चरण राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति

मानवता का होता है उपहान
नष्ट हुआ है उपहान का विस्वाह,
जन्मल ही जन्मन का बधोरी—
तस पर, हुआ मरण सा बाह ।

बिबरा है बहू हृद-दुःख,
हवि है पुंगु का लाव,
अपित हुई है बीच मरव स—
मात्र मनुजता की ही नाव ।

नर हैं उनी बन धर्मिणा
बडा रक्त का धनुचित पाप,
धातो है वसुधा कण कण से—
धनुज हुतिवो की कडू बाप ।

लुटि ल्याग तथा बलिबाण,
कुटिल स्वर्गिक स्वाभिमान,
लोपा पका हुआ है गुण का—
धर्मिय धर्मिजटा नवबलिमाण ।

धुर्मिजन्तियो का बाजबाण,
बिरता भोरे तिमिर का बाण,
दुराग्रही मानव की हुति—
विधातो वैरक कथ विमज ।

करता है गुण हहाकार,
रक्त बडात भ्रमण भ्रमण
सर्वनाथ की ज्वालाधन मे—
जन्मता धू कर सतार ।

नही रहा धम कल्याचरण,
कही उपरब कही मरण,
दानवता के पथ पर बढ़ते—
मानवता के बाध जरण ।

धुज-दुष्ट है, बरबादी,
विषयोपुष्प धावारी,
निक की सतह मे है फली—
धमक-धमक ही धावारी ।

बाह्य-प्रतिष्ठा व उत्साह,
करते प्रतिष्ठा धार्यवाह
धातो वसुधा के प्रतिष्ठा के—
कल्याणारी धवीमिता धाह ।

पाशक प्रवृत्तियो की सन्धि
करती धमनी कण्ठ गुण्टि
बलि बेकर करन रहते हैं—
सत्पन्तियो की, ह्रम गुण्टि ।

है धाह्यत धारा धामजव
वेता इस जगदी का कण कण
मनुष्यो । धर उगे । बही गुण—
स्वीकारो, धमन विमजव ।

गुण का है इतिहास गुणता
मनुष्य मनुष्य का धर्मिण नता
धारी प्रभु मे कोनो गुण—
धर्म्य धर्मिण मे, धर्मना धाता ।

बलि शरणम् हो गई जगति बहुत स्पष्ट
बर्णन है—

राष्ट्र का धर्ममेव । धम्म हि नो ।
धर्मिबर्ध कषा । धार्य मेव । शतपथ
ब्राह्मण । शतपथ ब्राह्मण मे एक प्रथम
पर इन धर्मो यो धोर बकरो का बर्णन
मिलता है —

सत्र वा धर्मन्तो वैश्व कः पशु
मातुरागो ब्राह्मणस्य । ३।६।५।१४
पोषा धर्मिय के धनुद्वक गुण-
बाता है वैश्व धुद-धमे के गुण
बाते हैं तथा ब्राह्मण बकरो के गुण-

पशो यत्न । शत ६।१।५।१२

इन उदाहरणो मे स्पष्ट विहित होता
है कि जिन पशुधो का यज्ञ मे बर्णन है
सामान्य पशु नहीं है । ये पशु धर्मिण मे
रक्षा करते हैं और ये पशु धामोर्जन परमत्ता
धुधो के धमरिज लोक होते हुए प्रकी
लोक तक भ्रमण कर रहते हैं । एक
पशु धमका परमत्ता Electrically
Charged Graficles जो वो Positive
Charge के साथ लीनो लोको मे
धुधते रहते हैं । जैमिनी ब्राह्मण मे एक
बर्णन मिलता है—धमतामन् पशु ।

जै ३।१।१० यहा पशु धात अकार के
बर्णन करते गये हैं । यह धात अकार के
Charged कणो का ही बर्णन है का प्रकाश
गुप्त है धोर धमनी रमियो का विकीरय
करत रहत है ।

ततो रेतस्य पशवोऽपि सुचस्पत ।
जै १।१५०

धामोर्जावक मसलक यज्ञ ।
जै २।१३१

ये धर्मिण धोर मसल के Sarticles धमकन
बाते होते हैं । इन धात प्रकार के पशुधो
(Charged Sarticles) के धमन विभि-
न्तता का कारण भी जैमिनी ब्राह्मण मे
बडे वैज्ञानिक दृष्ट्य का सकेल करता है ।

अनातिरिक्तो विमृणो प्रजनतो । जन्म
धर्म्यस्य धर्मिणस्य धर्म्यस्य जन्म
क्षमरिजस्वार्थि नै विमृणत प्रजा पशव
प्रजावन्तो । ३।२।६१ ।

माना प्रकार के विमृण की क्रिया धर्म्य
धर्म्य से विचारन Charged Sarticles
'पशु' की उत्पत्ति हातो है । धमरिज
के धमन बाहु धारा धर्मिण धुधो धादि
के परमाणु विभिन्न परिस्थितियो मे
विभिन्न भिन्न स धमोर्जन पण धारा
धमक प्रकार के पशुधो का निर्माण करत
है । इन परमाणुधो का दिव्यस Red-
ecting Properties भी भिन्न भिन्न होता
है ।

मीमासा दशन मे धर्मिणलोक का
बयन मिलता है । इस धर्मिणलोक के
धात प्रकार भी इन्ही धात तल्ल
Charged Sarticles की Reflecting
Properties का धारण है ।

इन समान उपरोक्त उदाहरणो द्वारा
यह बात स्पष्ट हा जाती है कि यज्ञ के
पशु धामोर्जन परमाणु ही हैं धोर इनका
धर्मिजव मात भी सम्भव इन साधारण
पशुधो मे नहीं है । धान यज्ञ के अन्दर
बकरो कोडे धादि पशुधो की बलि का
कोई बयन समझ विधान नहीं है । सुभी
पाठक धोर धात वलन वैज्ञानिको का
यह उत्तराधित है कि इन समान धातो
को विज्ञान के परिप्रेक्ष्य मे देखने धोर
समझने का प्रयत्न कर । समग्र वैदिक
साहित्य इस प्रकार क धर्मो वैज्ञानिक
दृष्ट्यो से परिपूरण है । हूने प्रयास पूरक
इत धातो को परमोर्जन पदेश धोर
बलि देणु यहा पशु को समग्र रूप से
बन्द करने धोर करान का सफल लेना
होया ।

धाम धमो का पठन पाठन बन्द होने
के कारण धोर परमपराधो मे वीरानिकता
के निमित्तवेश के कारण यमो का वास्तविक
सिद्धान्त समस्त धामोर्जन स्वरूप धामोर्
सामने बहुत धुधते रूप मे प्रकट होता है
धात धादि परमपराध उनका वैज्ञानिक
स्वरूप, उनकी महता धोर उपयोगिता
हमारी धुधद्वक स बहुत उपर की वन्दु
होना पकती है । धि भी प्रयास धम्य
होना चाहिए । उनी दिता मे एक हला
सा प्रयास प्रस्तुत करने का प्रयत्न इस
निबन्ध मे किया गया है । — यज्ञ मे
प्रमुख विधाधो का वैज्ञानिक न्यरूप

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में सन्दर्भ सेवा

जगदीश विद्यालकार

पुस्तकालय सम्बन्ध, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तकालय धर्मोत्पत्ति के प्रेरणा श्रुति दयानन्द—गुरुकुल पुस्तकालय की स्थापना भी गुरुकुल कायरी की स्थापना के साथ ही हुई। गुरुकुल की स्थापना स्वामी श्रदानन्द जी ने १९०२ में श्रुति दयानन्द सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को मूल रूप देने हेतु की। श्रुति दयानन्द सरस्वती ने धर्मसमाज की स्थापना करते हुए अपना यह मत भी प्रकट किया था कि धारसमाज के माध्यम से प्रत्येक धर्म जन स्वाध्याय में शक्ति प्राप्त करे उसी विद्या की वृद्धि तथा प्रविष्टा का नाम हो सकता है। श्रुति दयानन्द ने प्रदान की शान की ओर ध्याय जनो को प्रवृत्त करत हुए धारसमाज के सविधान में इस व्यवस्था को धारीकृत किया जिसके अनुसार धारसमाज के पदाधिकारियों ने पुस्तकालयपालक का प्रतिस्थापित किया।

धारसमाज की इस संरचना में पुस्तकालयपालक के पद का मुख्य श्रुति दयानन्द सरस्वती की उक्त दिव्य शक्ति की प्रकाशित करना प्रत्येक धर्मजन के धार्य को श्रुति ने यथा प्रोत्साहित किया कि प्रत्येक धार्य स्वाध्याय में लीन रह तथा विद्या की वृद्धि करे। पुस्तकालयपालक के इस पद की व्यवस्था के साथ श्रुति दयानन्द का यह एक प्रमुख स्वप्न था कि प्रत्येक धार्य समाजधन प्राप्त करने को पहचानने हेतु वेद वेदों का पारायण निरन्तर करता रहे। स्वामी श्रदानन्द ने भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही पुस्तकालय निर्माण की ओर गम्भीरता से ध्यान दिया।

धारसमाज और गुरुकुल पुस्तकालय—

स्वामी दयानन्द सरस्वती को भारत में पुस्तकालय धारोपन का विनामोद कदा था सकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उन समय समाजों की स्थापना के साथ ही प्रत्येक समाज में एक पुस्तकालय की कल्पना की तथा उन पुस्तकालयों की देख रेख हेतु पुस्तकालयपालक के पद का मुख्य किया।

सत्यायवकाय के रूप में स्वामी दयानन्द ने जिन दृष्टि का जन सदाय के रूप में सामने रखा, वह दृष्टि भी हजारों सन्दर्भों से सत्यायव के तत्त्वों को उद्धारित करने के महान् सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में धारोपित है। वैदिक विषयों पर प्रमाण सहित जवाब देना बाबा ऐसा सुन्दर सन्दर्भ ग्रन्थ विषय के पुस्तकालय को स्वामी दयानन्द से प्राप्त हुआ।

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में भी श्रुति दयानन्द के इन विचारों का प्रतिबिम्ब बहुत रूप से देखने को मिलता है।

श्रुति दयानन्द के समस्त ग्रन्थ तथा उन ग्रन्थों पर लिखी विस्तृत समीक्षाएँ गुरुकुल कायरी में धार्य सापारिक सङ्ग्रह के रूप में प्रयत्न कृत से सजावित है। इसके प्रतिरिक्त वैदिक सिद्धांतों एवं धार्य सापारिक ग्रन्थों मूल्यों पर प्रकाश डालने वाले सहस्रो ग्रन्थ भी इस कृत के साथ सङ्ग्रह है।

गुरुकुल के छात्रों का तथा गुरुकुल के पुस्तकालय का अंतरण प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। गुरुकुल में प्रत्येक छात्र ज्ञान की जिज्ञासा प्राप्त करने हेतु पुस्तकालय की शरण में जाता है, तथा पुस्तकालय के द्वारा उसकी उक्त ज्ञान भूषा को विपुल वैदिक साहित्य के माध्यम द्वारा पूर्ण किया जाता है। पुस्तकालय में रखी उपस्थिति पत्रिका के अनुसार गुरुकुल में पढ़ने वाला हर गुरुवार छात्र पुस्तकालय का उपयोग करने पुस्तकालय धारा है।

सन्दर्भ सेवा

पुस्तकालय की मदद सेवा या धर्मि-प्राप्त समर्थन हेतु पहले सम्पूर्ण सेवा के अनुसार सन्दर्भ मन्त्र का प्रविष्टाव धर्म ग्रन्थों का पालन चाहिए। सर्व मन्त्र सङ्कट उत्पन्न हो (धार्मिक या भुक्त) का धार्य सन्त्र कर्तव्य है। धर्मोप-एक माय वाचने वाला, सरोजित करने वाला, निशाने वाला जो कि प्रतिपादित करते हैं। जो धार्मिक सन्त्रों का सरोज। पुस्तकालय के सन्दर्भ में दो विन्दु हैं पाठक तथा पुस्तक पाठक का पुस्तक में लय हो जाना ही सन्दर्भ सेवा की चरम सत्ता है।

पुस्तकालय के द्वारा पाठकों को दी जाने वाली वैयक्तिक सहायता को ही मन्त्र सेवा कहा जा सकता है। सन्दर्भ सेवा का केन्द्र विन्दु पाठक ही होता है जिम्मा प्रत्यक्ष पुस्तक से कराया जाता है। एक विदेशी विप्रेत्य केम धार्मिक गायन ने पुस्तकालय की सन्दर्भ सेवा की व्याख्या इन शब्दों में की—“अध्ययन और शोध का हेतु पुस्तकालय सङ्ग्रह की व्याख्या करने में प्रकट सरोजोत्पत्ति और धर्मोप-पत्रिका वैयक्तिक सहायता को सन्दर्भ काय कहते हैं।”

उपरोक्त परिभाषा के सन्दर्भ में गुरुकुल पुस्तकालय का मन्त्रिक उपयोग वहाँ को छात्र, प्राध्यापक एवं सरोजोत्पत्ति करने वाले शोध श्रेष्ठता निम्न प्रकार से उठाते हैं।

बाह्यिक पाठ्य सामग्री में सहायता—

गुरुकुल में पढ़ने वाला प्रत्येक छात्र प्राध्यापक एवं शोधकर्ता पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री निम्न प्रकार से

कोजने का कार्य करता है।

१. ५० प्रतिशत छात्र, प्राध्यापक एवं कर्मचारी सम्बन्ध पुस्तकालय कर्मचारी से पुस्तक में नाम या लेखक के आधार पर शोध कर्मचारी से बाह्यिक पुस्तक प्राप्त करते हैं। इस कार्य में पुस्तकालय में २० वर्षों के कायद कुलिकपट्टर गोविन्द एवं प्रत्यक्ष का बाह्यिक पुस्तकों के सम्बन्ध में धर्मित सन्दर्भ अनुभव का लाभ वहाँ के छात्र एवं प्राध्यापक स्वरूप से उठाते हैं। पुस्तक का नाम कहते ही य कर्मचारी उस पुस्तक को पाठकों तक पहुँचा देते हैं। इन के धर्मितरूप पुस्तकालय के २० प्रतिशत पाठक बाह्यिक पाठ्य सामग्री कोजने हेतु पुस्तकालय में उपलब्ध विषयानुसार रजिस्ट्रारों की सहायता लेते हैं। जिस के धर्मितरूप उन्हें पुस्तकालय के विषयवार सङ्ग्रह की जानकारी प्राप्त हो जाती है। बाह्यिक पुस्तक का वर्गीकृत नम्बर इन रजिस्ट्रारों में देखने में मिल जाता है। जिसे पुस्तकालय कर्मचारी को देकर प्राप्त कर लेते हैं। २० प्रतिशत पाठक वर्ष केठेलाय की सहायता से बाह्यिक सामग्री कोजने की शक्ति करते हैं।

२. नवीनतम विषय साहित्य की जानकारी निम्न सन्दर्भ ग्रन्थों के आधार पर दी जाती है।

१—गुरुकुल इन प्रिन्ट (गुरु ए ए) १९८३—धर्मितरूप में १९८३ तक प्रकाशित सम्पूर्ण पुस्तकों की जानकारी लेखक विषय एवं शोधक के अनुसार।

२—ब्रिटिश मुद्रित इन प्रिन्ट १९८४—सक की समस्त पुस्तकों की जानकारी।

३—ब्रिटिश नेशनल बिब्लियोप्रांति ब्रिटन में उपलब्ध सम्पूर्ण प्रकाश की १९८३ तक की पुस्तकों की सूचना।

४—इन्डियन बुक्स इन प्रिन्ट १९८४—मात्र में १९८४ तक प्रकाशित सम्पूर्ण पुस्तकों की जानकारी देने वाला सन्दर्भ ग्रन्थ।

५—पुस्तक समीक्षा पत्रिकाओं द्वारा नवीनतम पुस्तकों की जानकारी पुस्तकालय में निम्न पुस्तक समीक्षा पत्रिकाएँ जाती हैं।

१—गुरु रिप्यू डाइजेस्ट
२—इन्डियन
३—इन्डियन बुक क्रोनिक्ल
४—इन्डियन बुक इन्स्टीट्यूट
५—साहित्य परिचय
६—पुस्तकालय सूचक पत्रिका
७—विभिन्न प्रकाशकों के केठेलाय को विषयानुसार व्यवस्थित हैं, धर्मोत्पत्ति

हेतु पाठकों को उपलब्ध हो सकते हैं।

शोध के श्रेष्ठ निश्चित करने में सन्दर्भ सहायता—

गुरुकुल का कोई छात्र शोध उपरि हेतु प्रयोजन करणा चाहते हो उसे पुस्तकालय के द्वारा शोध के उसके शक्ति के विषय की जानकारी दी जा सकती है तथा बहुत से शोध छात्र धर्मना विषय प्रश्न में इस सन्दर्भ सेवा का लाभ उठा रहे हैं। शोध छात्रों को सेवाएँ निम्न प्रकार से दी जा रही हैं।

१. पुस्तकालय के सन्दर्भ विभाग में भारत के सभी विश्वविद्यालयों में १९८३ तक किये शोध कार्यों की जानकारी एक्स-निगेशन धर्मिक इन्डियन यूनिवर्सिटी द्वारा सजावित “बिब्लियोप्रांति धर्मिक इन्डियन डिस्ट्रिक्ट १९७०-१९८३” नामक सन्दर्भ ग्रन्थों की सहायता से दी जाती है। इन ब्रह्मचारी सन्दर्भ ग्रन्थों से शोध छात्रों को यह जानकारी हो जाती है कि उनके शक्ति के विषय में शोध कार्य भारतीय विश्वविद्यालयों में कहाँ हुआ है तथा किसके निदेशन में वह कार्य किया गया है।

२. इसी प्रकार मन्त्र विज्ञान, कला तथा विज्ञान के शोध छात्रों को भारत वर्ष के विश्वविद्यालयों के ही शोध कार्य की जानकारी हो रही हो जाती है कि विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों में उनके शक्ति के शोध से जो क्या-क्या कार्य हुआ है शोध की जानकारी “ब्रिटिश नेशनल डिस्ट्रिक्ट ए ए ए ए” के माध्यम से दी जाती है। यह सन्दर्भ ग्रन्थ बाह्यिक पत्रिका के रूप में विभिन्न विश्वविद्यालयों में ए ए ए के निम्नता है। इनके आधार विषय का वर्गीकरण के अनुसार किये गये शोध कार्यों का सार सर्वेक्ष की प्रकृति होता है। पुस्तकालय में सहायता—

पुस्तकालय में प्रत्यापकों द्वारा वेद साहित्य की रूप करने की सन्तुष्टि देने हेतु उन्हें निम्न प्रकार की सन्दर्भ सहायता पुस्तकालय में उपलब्ध कराई जाती है।

(क) विषयवार पुस्तक विदेशीयों के नवीनतम केठेलाय पुस्तक चयन (२)

डाइजट विभागों को भेजे जाते हैं।

(ख) पुस्तक समीक्षा पत्रिकाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

(ग) नवीनतम पुस्तकों को प्रदर्शित किया धारोपित की जाती है। पुस्तकालय डाइजट विभागों से प्राध्यापकों द्वारा पुस्तकालय हेतु २५ लाख रुपये मूल्य की शर्मनोले पुस्तकों का चयन किया गया।

३. विश्व में प्रकाशित पत्रिका साहित्य की जानकारी—विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों को विश्व में प्रकाशित उन के विषय में सम्बन्ध पत्रिकाओं ए ए उन में

वेद गुरु १९९२

आर्य जगत् के समाचार

कुष्ठ निवारण धाम का शुभारम्भ

नागवा। धामसमाज द्वारा सहायित धातुवैदिक धर्माध्यक्ष के तत्वावधान में कुष्ठ निवारण धाम का शुभारम्भ महाभारत प्रोग्राम १०० एम० वाणी रात्रि पाल मध्य प्रदेश के कर कमलों द्वारा दिनांक २३ १ ८२ को सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर राज्यपाल महोदय न उपस्थित बिहास जन समूह की सम्बोधित करने हुए कहा कि धामसमाज के सत्यापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज सुधार के लिए महान क्रांतिकारी कार्य किये हैं उनके द्वारा स्थापित धामसमाज की भा समाज सुधार एवं राष्ट्र निर्माण के कार्यों में प्रमुख भूमिका रही। धातुवैदिक चिकित्सा पद्धति का हजारी वर्षा पूर्व हमारे यहाँ धार्मिकार किया गया था। धातुवैदिक से ही वैद्यकीय जगत् ने ऐतिहासिक का धार्मिकार किया। सुधी की बात है कि इसके महत्त्व को हम फिर से महसूस करने लगे हैं। हमें इसमें धातुवैदिक जगत् के तरीके अपना कर इसके विकास के पथ पर धाम बढ़ाना है। कामधेनु शोधविधियों के कुष्ठ निवारण में सफलता मिले यही सही शुभ कामना है।

समय से पूर्व समारोह स्थल पर राज्यपाल महोदय के पधारने से जगत का हृदय द्रव्य हो गया। स्वागत द्वार से कुष्ठ निवारण धाम तक कठार से लड़ी गयी बालिकाओं ने धाम के शुभागतन पर पुष्प बधा करने स्वागत किया। तब प्रथम सत्पत्नी धामने यज्ञ वेदी पर हो रहे यज्ञ में घट से पुर्णहोति दी। इसके बाद दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् निवारण ध म का शुभारम्भ किया। धाम का बड़ा हिस्सा सुल्लिखित ईसाई अनुवाद के प्रतिनिधियों ने मानाओं से स्वागत किया इसके साथ ही धाममान नाम का घोर से था डा० एम० माधविया धातुवैदिक धर्माध्यक्ष के तत्वावधान में द्वार से था वेवाराधाम धाम नगरपालिका नामवा की द्वार से श्री बन्धुवी पोरवाल ने पु० माताओं से स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बी० ए० कगटा उपस्थिता बालिधर देवान नामवा द्वारा की गई तथा सत्पत्नी की टी० बी० सिंह ने किया। कार्यक्रम की सफलता में श्री बी० ए० तिवारी की प्रमुख भूमिका रही समारोह की सफलता की गई।

प्रयत्न—बोर्बलिट राठी

मन्त्री—धामसमाज नामवा

पञ्चायत केसरी साता साजपतराय के सत्यरथों का सफल

एक निवेदन

प्रति सम्पूर्ण पञ्चायत केसरी साता साजपतराय का परिचय देने की धाम एमना नहीं है। जैसा व्यवस्थित है वे महान् सत्यरथ धर्मकी राजनेता राष्ट्रहित के मन्त्र प्रहरी स्वतंत्रता प्रादानन क धर्मर सही प्रभर विचारक कुशल सम्पादक क्वाति प्राण सलक धामन्वा यन्ता प्रवर्तित प्राणशास्त्री धार्मिक विकास के प्रबल उपायक सगठित धम धारालन के जनक तथा सनाय सुधारक ने। उनके बनेक धामन भरित उपलब्ध है जिसमें उनके जीवन सभा सत्यतोषु की धाम कतापो की विनय विवरण मिलता है। पर उनकी सत्यरथ प्रधान कार्य सुल्लिखित नहीं मिलती। सत्यरथ व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा चरित्र की मूर्त तथा धर्मर विवेकताओं की उद्घाटित करने हैं।

मैं साता साजपतराय के सत्यरथ सल्लिखन के काम में गत धनक वधा से सभा हुआ हूँ तथा इस काम में पर्याप्त सल्लिखन भी मिली है। सेवा विवेक क सत्यरथ १३० व्यक्तियों के सम्मरण प्रधान लेख प्राप्त हो चुके हैं। सत्यरथ लिखने के वे ही धार्मिकारी हो सकन हैं जिनका साता जी से व्यक्तित्व सम्पर्क रहा हो—यह सम्पर्क निम्न का रहा हो सम्पर्क दूँ का—जिन्होंने उनके धामन्वा में रहते हुए उन्हें सेवा सम्पर्क हो बिना महान् भावों से साता जी का सम्पर्क रहा हो उनमें मेरा विनय प्रार्थना है कि वे धर्मर सत्यरथ प्रधान लेख लेजने का कर्त्त कर। उन महान् भावों के नाम तथा पत्र की सूचना के लिए भी नियेदन है जो साता जी क विषय में सम्पत्तिगत धार्मिकारी रखत हैं।

धारा है पञ्चायत केसरी की स्मृति में सम्पत्ति इस पुनीत कार्य में सब सम्पर्कों का सहज तथा पुष्प सहयोग प्राप्त होगा।

सिद्ध करण

एन १७ कोटरा कुलतामावा भोजपुर ४६३-००३

बलवीर हकीकत राय को याद किया गया

धामसमाज गन्धर्व म्यू बीटी नगर में बमबीर बाल हकीकत राय का बलिदान विषय बड समारोहपूर्ण बनाया गया। धामके स्कूल क छात्र छात्राओं ने साप्ताहिक नाट्य एक सामूहिक मान ने धाम ने केर बलिवादी वीर क कार्यों को स्मरण किया।

इस अवसर पर राजनीति महासभा धमपास की ने समय १५.०० ३० क पारितोषिक सिल्वर बीज कप में तथा बहुत ही शान्तवचक सुल्लिखित विजयी छात्रछात्राओं की प्रधान की।

तीराराम धाम

संयोजक—धमबीर बाल हकीकत राय बलिदान समिति।

आर्यसमाज दरियागज का निर्वाचन

धामसमाज दरियागज नई दिल्ली २ का धार्मिक चुनाव दिनांक १० २ ८२ में विशिष्ट सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न धार्मिकारीयण धाम सम्पत्ति के चुने गये।

- १ श्री बी० बी० सिंह—यधान
 - २ श्री धमपाल गुप्ता—उपप्रधान
 - ३ श्री एच एम मदनमनर
 - ४ श्री श्रीरामपाल स्वामी—मन्त्री
 - ५ श्री देव सादक धाम—उपमन्त्री
- धर्मर महत्त्वों क चुनने का धार्मिकार धार्मिकारी सब को सभा ने प्रधान किया।

मन्त्री धामसमाज दरियागज नई दिल्ली २

सीताष्टमी एवम् ऋषिबोधोत्सव

प्राचीन धाम पालिका सभा क सत्यावधान में धाम कना मुकुल नू राधेश्वर नगर में २७ फरवरी को ब्राह्म ११ ३० बजे में ४ १० तक श्रीमती कातिपत्री धामिहोत्री की अध्यक्षता में समारोहपूर्ण बनाया जा रहा है।

इस अवसर पर श्रीमती सुमदा वर्मा श्रीमती पद्मा वर्मा साधिका (मेन्ट), डा बालि प्रभान श्रीमती सुमदा मन्त्रीया धार्मिक धर्मने धाम एक कविता पत्र करने।

प्रधाना सत्यरथ महान् सत्यरथ—प्रधाना धार्मिक

अन्तराष्ट्रीय युवा वय पर कुम्बाल दूर्गमिन्द का धर्मपूर्व आयोजन

नेता जी सुभाष शाखा प्रथम, भगतसिंह शाखा द्वितीयः सर्वोत्तम खिलाडी का पुरस्कार आशी थाऊ ने जीता



केन्द्रीय धाम युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वाधान में युवा वय के उपसभ में सल्लिखन विषय पर २६ व २७ जनवरी ८२ को खेलसा स्टेडियम माडल टाउन दिल्ली में कुम्बाल युवाकाओं का आयोजन किया गया। परिषद् की धार्मिकी के इस आयोजन में १२ टीमों ने भाग लिया जिस में नेता जी सुभाष शाखा राजी भाग प्रथम व विकास नगर की सत्यरथ शाखा द्वितीय तथा पुष्प तथा बहुधुर नगर का तीसरा स्थान रहा।

इस के अतिरिक्त यवोच पुरी जहागीर पुरी किलमय ऋषि नगर, मुद्रा, जि नगर सभी यवोच सत्यरथ पुरा बावली की टीमों ने भाग लिया। प्रथम स्थिति साता की बीज तथा खिलाडियों को मैदान दिए गए। सर्वोत्तम खिलाडी का पुरा बाऊ विकास नगर की कुम्बाल खेलता खिलाडी के प्रतीक चिह्न में विशेष पुष्पक किया गया।

सल्लिखन धार्मिक

गुरुकुल कागड़ी पुस्तकालय

(सेब पृष्ठ नं ८)

प्रकाशित सामग्री की जानकारी निम्न स्तरों से होती है वो का रही है।

(क) अधिकांश विषयों में धनराष्ट्रीय स्तर पर सर्वोपयोगिता का रही है जो अब उन विषयों में प्रकाशित सामग्री का स्तर सर्वोपलब्ध करती है। जैसे सांस्कृतिक एम्बुलेंस प्राधिक-मनोविज्ञान की १००० पत्रिकाओं का स्तर सम्मान प्रस्तुत करती है। निम्नोक्त विषय एम्बुलेंस, नौसैनिक विज्ञान की १००० पत्रिकाओं का स्तर प्रस्तुत करती है। विदेशीय एम्बुलेंस कला एवं विज्ञान में विभिन्न विषयविधाओं में स्वीकृत प्रत्येक पाठ्यक्रम के १५०० शोध कार्यों के द्वारा समर्थन दिया जाता है। इसी प्रकार कान्ट्रेन्स के नाम से साप्ताहिक पत्रिका में कला एवं विज्ञान की १०० धनराष्ट्रीय पत्रिकाओं की विषय सूचिका दी जाती है। मैक्सिमल एम्बुलेंस के द्वारा समर्थन के विषय में प्रकाशित अधिकांश साहित्य का स्तर सर्वोपलब्ध किया जाता है। ये सब पत्रिका स्वयं अपने पुस्तकालय में सर्वत्र हेतु हर समय विद्यमान रहते हैं।

(ख) बहुधा प्राध्यापकों की 'बायबिल' हस्तलेखन परिचोदिकाएँ निर्देशिका के माध्यम से यह जानकारी भी प्रविष्टि की जाती है कि उन के विषय में पत्रिका 'साहित्य' कहा जाता है किन्तु उन्हें का निष्कर्ष होता है। भारतीय पत्रिकाओं की जानकारी प्राध्यापकों की बायबिल के माध्यम से परिचोदिकाएँ एवं ग्रंथ एवं एम्बुलेंस बायबिल निर्देशिका के द्वारा भी जाती है।

६ वैदिक सिद्धान्तों की मुख्योपलब्धि करने वाले प्रकाशकों की प्रविष्टि का प्रमाण लघु पुस्तक के स्थापना सूची से जुड़ा हुआ है। बहुधा यहाँ पढ़ने वाले को वे तथा प्राध्यापकों के वैदिक सिद्धान्तों के सदन जानने की जिज्ञासा रहती है। इस दृष्टि से पुस्तकालय के रूप में हम ने बहुत केनन धाक नेमोनिश' का सर्वथा नवीन प्रयोग किया। उस के अन्तर्गत विचारों का लेखक के द्वारा याद किए गए समय १००० वैदिक मंत्र एवं वर्णन सूची या सचयन किया गया जिने वर्गीकृत विषयानुसार बांटा गया। बहुधा को भी विज्ञान स्तर वैदिक सिद्धान्त पर प्रमाण जानना चाहे उस याद किए गए मन्त्रों का उदाहरण तथा सदन बिना किसी विलम्ब के दे दिया जाता है। इस प्रकार की सर्वोपलब्धि से सदन कर्ता का वैदिक बाध्यता में गहरी रूढ़ि होना भावश्यक है यह एक सर्वथा नवीन प्रयोग है तथा गुरुकुल पुस्तकालय के पुस्तकालय-मन्त्र की हैसियत से लेखक इस का निमा-न्यत्र सर्वोपलब्धि से कर रहा है। इस

प्रकार की एम्बुलेंस पुस्तकालय नेत-वाध, प्रविष्टि, कर्म फल मोक्ष, मोक्ष सत्कार आदि के बारे में गुरुत्वं सर्वत्र किए जाते हैं।

गुरुकुल प्रकाशन सर्वत्र सेवा—गुरुकुल कागड़ी विषयविधाओं द्वारा शोध एवं प्रकाशन के वेद में सत ८० वर्षों में बसा भारी बोझ हुआ है। अधिकांश लोगों को इस की जानकारी न होने से उन्हें गुरुकुल साहित्य के क्षेत्र में योगदान नमाने बिसवस पैदा हो गया। बाहर के विद्वानों के तथा गुरुकुल के छात्रों एवं प्राध्यापकों को भी बहुत से प्रकाशनों एवं विषय प्रवृत्तियों की जानकारी अब निम्न प्रकार से उपलब्ध कराई जा रही है।

१ पुस्तकालय के द्वारा गुरुकुल विषय-विधान्त के सम्पूर्ण विषय एवं प्रकाशन कार्यों की एकीकृत कर दिया गया है। जिस का अन्तर्गत निम्न सूचनाएँ पाठकों तथा विज्ञान शोध छात्रों की एक ही प्रकाशन में उपलब्ध हो जायेंगी।

(क) गुरुकुल के स्थापकों द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य।

(ख) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य की जानकारी।

(ग) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित धर्मोपदेश साहित्य की जानकारी।

(घ) गुरुकुल द्वारा स्वीकृत वी० एच० बी० शोध प्रश्नों की सूची।

(ङ) शोध कार्य प्रवृत्ति में।

(च) गुरुकुल में स्वीकृत शोध उप-क्रम।

(छ) गुरुकुल के प्राध्यापकों के प्रकाशन।

(ज) गुरुकुल छात्रों की हस्तलिखित पत्रिकाएँ।

पुस्तकालय में उपलब्ध उपयुक्त सम्पूर्ण साहित्य का पुस्तक सङ्ग्रह गुरुकुल स्थापक प्रकाशन सङ्ग्रह के नाम से बनाया गया है।

१ मोविमर विनिष्पन्न एम० ए० सङ्ग्रह दम्बिस विश्वास १८६६ पु० ११५३।

२ वायव्य ०० 'रेफरेन्स वर्क' १९३० पु० ४।

३ रामायण एम० धार० रेफरेन्स सविस् एम्बुलेंस १९०४, पु० ३३।

४ बिबल की० एम० माइड टू रेफरेन्स बुक पु० ३० एडिशन उपलब्ध।

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिन्ली गायक महेंद्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर वक्ता

सन्ध्या—पञ्च, शान्तिप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनोपदेशकों—

सत्यनारायण पथक आमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीपुष सोहनलाल पथक, शिवराजवती जी व सर्वोत्तम भजना कं कमल तथा प बुद्धदेव पिछालकार के भजनों का सङ्ग्रह।

आय समाज क अन्य भी बहुत स कमलट के सूचीपत्र क लिए लिख



कन्सेप्शन इन्टरनैशनल (इण्डिया) प्रा लि

14 मकट 11 फल 11 अशाक विहार दहली 52

फोन 7118326 744170 टैलेक्स ११-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट सभा कार्यालय १२ हनुम न् रोड पर भी उपलब्ध है।

दंतों की हर बीमारी का छद्म इलाज

एम डी एच

दंत मंजन
लौंग युक्त

23 जडी बुटियों से निर्मित
आधुनिक औषधि

दाँतों के डाक्टर



अब नये पैकिंग
में उपलब्ध

मैकमुर

महाशायी की हट्टी (प्रा०) लि०

9/64 इण्डियन एरिया कीर्ति अरर अहिंसी 5 फाल 539805 537987 537341



मन्त्रों की युक्ति



गुरु की सुलभता



उमा वर्मा पात्री



दात का दर्द

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Paris Beauty

पैरिस न्यूटी

ग्रावर
सेल्स

ब्रा.पेन्टी.बनियान अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि



पैरिस न्यूटी सेल्स कार्पोरेशन

2445-8/2 बीकनपुर अन्डरवियर एन्डरवियर
कॉलोन बंगला नई दिल्ली - ११००४८
दूर भाष 569224 574200-582036

आर्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय
(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)
के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के
अन्तर्गत कर मुक्त होगी।

सारा बान चैक/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

भग्वी, माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,
बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

राममोपाल शालवाले सूर्यदेव महाशय धर्मपाल शोमप्रकाश आर्य
सरलक्ष चिकित्सालय प्रधान दिल्ली प्रधान भवनी
एब प्रधान, सा० द्रा० आर्य प्रतिनिधि आर्य केन्द्रीय महाशय कुन्तीलाल
प्रति० सभा सभा सभा बेरिङ्ग
सौजन्य से महाशियाँ ही हट्टी प्रा० लिमिटेड, ६/४४ कोतिलनगर
औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएं

क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) आर्यों (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं की याद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आरम्भ बेतना जागृत करती है।
- (४) भारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रसंगों, महापुरुषों तथा आदर्श संस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (५) ऋषि मुनि तपस्वी ध्यातविद्वानों की वाणी का बोध कराती है।
- (६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मञ्जुर सन्देश लाती है।
- (७) नये लेखकों कवियों चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों, साहित्य लेखियों को प्रोत्साहन देती है।
- (८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।
- (९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र, भारव्यक, ब्राह्मणग्रन्थ गोता रामायण, नागिन, ऐतिहासिक, बभ्रुव्य आर्ष ग्रन्थों, जिन को अधिकांश लोगों ने पढ़ा तो क्या देखा भी नहीं समस्त आध्यात्मिक जगत् की जिन ग्रन्थों पर सदा गर्व रहेगा उन के बहुमूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर आपकी धाजनी सभी भर देती है।
- (१०) प्रत्येक देरन कीजिए भाज ही घपना बार्कि चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में धनेक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की ग्रन्थ मनोहारी स्वार्थिका नि मुक्त दी जायेगी।

सम्पादक आर्य सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

The advertisement is a collage of images and text for Gurukul Kangri Pharmacy. It features several medicine bottles and boxes with labels in Hindi. The products shown include 'Gurukul Chai' (गुरुकुल चाय), 'Mansooni Kuryam' (मंसूनी कुर्याम), 'Panchavikar' (पंचविकार), and 'Aam' (आम). Each product is accompanied by a brief description of its benefits. For example, 'Gurukul Chai' is described as a 'miraculous medicine' (अमोघ दवा) for various ailments. The text 'गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी' is prominently displayed at the top and bottom of the advertisement. The bottom part of the advertisement also includes the text 'हरिद्वार' (Haridwar).

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,
फोन . २६६८३८ आषाढी बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १६, हुनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१३० के लिए की ३० वर्षपाल द्वारा सम्पादित एब प्रकाशित तथा
वैदिक ज्ञेय, गली नं० १४, औषाधकण्ड, दिल्ली-११ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५३

आर्य सन्देश

ओड़म

कृष्णन्तो विश्वमर्षम्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

कुल एक प्रति ५० पैसे

बन्ध ५४

पृष्ठ १५

रविवार, ३ मार्च, १९६३

आर्य सप्ताह १९६०=५३०=५

काल्पुन २०५१

दयानन्द-१९०

देश के कोने कोने में आर्यसमाज मन्दिरों की स्थापना की जाये —रामगोपाल शालवाले

२४ जनवरी रविवार को आर्य समाज मन्दिर नारायणा बिहार, दिल्ली का उद्घाटन करते 'ए' सार्व-देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा— वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए तथा धार्मिक वाली पीढ़ी को सम्स्कारित करने के लिए देश के कोने-कोने में आर्यसमाज मन्दिरों का निर्माण आवश्यक है। बिस्व में हम स्वयं बड़ रही हैं, मानवता का ह्रास हो रहा है, भ्रष्टान्ति के घरे बड़ रहे

हैं। आज आवश्यकता है ऋषि दयानन्द के संनिको और अनुयायियों की जो सशर में प्रम प्यार और सेवा सहयोग का वीरक जलाय। ऋषि दयानन्द के ग-देश की चर-चर में सुनाने की आज नितान आवश्यकता है। उन्होंने आह्वान करते हुए कहा—आधो हम अपने तुल्य स्वार्थ और धीर हृदय भाव से ऊपर उठकर आर्य-समाज के मिशन की धीर भी धाने बढाय। श्री शालवाले ने आर्यसमाज नारायणा बिहार के कार्यकर्ताओं एवं

सहयोगियों की भव्य भजन एवं सन्दर यमशाना बनाने पर प्रशंसा की।

इस भव्य यमशाना का उद्घाटन श्रीपाद स्वामी दीक्षानन्द जी ने किया। इस अवसर पर श्री स्वामी विद्यानन्द जी पं० शिवकुमार शास्त्री एवं पं० मन्थिबदानन्द शास्त्री भी उपस्थित थे। आर्यसमाज ना त्यागा

बिहार के उद्घाटन के भवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी। बिनका नेत्र व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूरदेव ने किया। इस अवसर पर अनेक वक्ता, टेम्पुधो श्री पवन श्री पुरषो तथा सहयाया के छात्र छात्राया ने वड वड क भाग लिया। □

स्वामी श्रद्धानन्द जन्म-दिवस

दिल्ली नगर निगम द्वार प्रायो बिन स्वामी श्रद्धानन्द जन्मदिवस ममारोहुरुक भनाया गया इस अवसर पर महापौर श्री महेश्वर सिंह साधो ने कहा—भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास पर जब हम चिन्तित डारते हैं तो आर्यसमाज हमें हर कोने पर सजा दिवाई देना है। "सर्गो उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द को धरून एवं दलिनोद्वारक तथा भारतीय स्वतन्त्रता सपना का महान् मोटा बनाया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूरदेव ने उद्बोधन करत हुए कहा—स्वामी श्रद्धानन्द समय की बुनोती का प्रबल जवाब थे। धर्म श्री साम्राज्य के काल में भारतीय शिक्षा और सम्यता की मजाक डडाई जाती थी। ऐसे बुनोतीपूर्ण वातावरण में उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना कर ससार की आश्चर्य-चकित कर दिया। उन्होंने इस

प्रणाली में प्राचीन ज्ञान-विज्ञान से लेकर प्राधुनिकतम विज्ञान, तकनीकी तथा भौतिक धर्मोक्तिया विज्ञान की प्रयत्ना अथवा प्रकाश हेतुन की जिं र्से एक विज्ञान जगल में जिना किमा मरकनी महायता के इनना बजा वर्ण किया जा रहा है।

उन्होंने कहा—स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन एक शिक्षा में नही सर्व-ज्ञेय दिवाई पन्ना है। ब अनाथ रक्षक दलिनोद्वारक व दलुतोद्वारक, रिन्हु गुल्लम एकना के प्रनोक, एक नरस्त्री पत्रकार-बिज्ञक के रूप में भी दिवाई प-ते हैं।

आर्यसमाज जनकपुरी

आर्यसमाज जनकपुरी की ज्वाक में श्री स्वामी श्रद्धानन्द जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महाशय धर्मपान ने ध्वजारोहण किया तथा अनेक विद्वानों ने स्वामी श्रद्धानन्द को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

गो-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग

२४ फरवरी, रविवार, आर्यसमाज कीतिनगर के वाषिकोत्सव पर बोले हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने गो-रक्षा की अपनी मांग को दोहराते हुए कहा—भारत सरकार को गो-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू करना चाहिए। गो की राष्ट्रीय पशु घोषित करना चाहिए। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को बाध दिलाते हुए कहा

कि गत वर्ष कीर्ति नगर म ही एक मास की कट्टी के विचार से आर्य-समाज ने काय किया था और हम अपने उद्देश्य में सफल हुए थे। आज हमें अपनी यह मांग और भी जा दार शब्दों में उठानी चाहिए। साथ ही हमें गोपालन के लिए भी हर सम्भव सहयोग देना चाहिए।

ये आवाज कहां से आई !

बोने बीच फूट के फिलने बैर की ज्वाला ये सज्जवाई।
जहर बोलेने सानो की यह आवाज कहा से आई।।

माई-माई हम सचिको थे ये एक ही मा के बेटे।
फिलने आकर हम सब की ये सौलस भाव गुलाई।।

हूर मुकिल में सवा सहा हम मुक मुक के रहते थे।
सन्तो की थिला तक की, है फिलने प्राव गुलाई।।

क्यो छाया ये सलदा क्यो बहनी रातों।
क्यो सानोस हूर स्वर है कहा बचती की सलदा।।

सवा सल्लाज रहा यहाँ पर हुरारी इन माला बहनी का।
है फिलने कुम्भ में फिले ये, यह फिलने लूट मलाई।।

सुक के बाविर आपस में हम सब रक्खें मलाई का।
बीचन के हूर बो न ये आर्यों। हम हूर करे कुलाई।।

सब का मन खुलता है हूर बरखाबी के कारन।
लूट परलतो की रातों ये कब फिल की यहाँ गुलाई।।

—हम रक्खें नजर एखो पर, जो घर में प्राव सगाते।
सब कोई भी कम हुआरा ना 'रहो' हूर गुलाई।।

—गोहत्याकार धर्म 'धर्म'—
कीलैक बच-साहोव।

सत्संग वाटिका

पाप-निवारण

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

त्व हि त्रिविधतोमुख त्रिविध परिभूरसि । अप न शोशुचदश्चम् ॥

—धर्मवर्ष ०४ । ३३ । ४

काय एव कोष एव रमोऽनुलस्यनुभूम् ।

महासतो महापापीना विश्वेदेविनिष्कृष्टे रित्यम् ॥

गीता ०२७ । ३७

रमोभूय से उत्पन्न, बहुत अधिक जाने बाधा, महापापी काम और मोक्ष ही मनुष्य को पाप से कीचते हैं—ये ही वस्तुएं जानू हैं।

महाभारत में लोग को जी पाप का कारण बताया गया है—

पापानां विश्वप्रसिद्धाण लोकेन्य द्वितीयाः ।

तुभ्याः पापं व्यवस्थानं नरा नास्तिमुत्तमम् ॥

—महा० वन० २०७ । ४८

हे द्वितीयोत्तम । लोग को ही पापों का पर जानो । जिन्होंने शास्त्रों का बहुत ध्यान नहीं किया है, ऐसे लोगों मनुष्य ही पाप करने का विचार करते हैं।

ऐसा का निदान । इस इसकी कोशिक कोशिकी चाहिए । ईसाई कहते हैं कि ईसा पर ईमान लाने से, मुसलीमान कहते हैं हुजूरत मोहम्मद पर ईमान लाने से और पौराणिक कहते हैं मया से दुःखी बनाने से पाप नष्ट हो जाते हैं परन्तु ये बातें तर्क और युक्ति विरुद्ध हैं। धर्म ग्रंथों में पाप से बचने के उपाय निम्नरूप में बताये गये हैं—

व्यापयेनानुत्तमैव तपसाऽभ्यसेन च ।
पापक्षुण्ण्यन्ते याप्यत् तथा दानेन चापि ॥

—मनु० ११ । २२७

धरने पाप को बर्बादभारण से प्रकट करने में, पचाताप करने में कठिन तपस्वरण से वेदाध्ययन अपासि से और धारण से पूरे हुए भस्मिनी को दान देने से पाप मनुष्य पाप से छूट जाता है।

ये पाप उच्छेद हैं जिससे पाप से दोषा दुष्टा स्थिति पाप के वस्त्रकारों से बच जाता है और उसको धर्मों पापस्थिता दुष्टि नष्ट हो जाती है। उसकी दुष्टि का मुक्त पाप न हटकर धर्म की ओर मुक्त जाता है। धारण, तपिक एक-एक उपाय विचार करें।

१ व्यापय—मैन यह मुक्त कम किया है, इस प्रकार अपने मुक्त से अपने पाप के कवन करने का नाम 'व्यापय' है। मनुष्य पाप को बुरा समझता है, धन उस खिणाय का प्रयत्न करता है जिससे दूसरी की धर्म से वह मुक्त का पाप न बने। यदि मनुष्य पाप को अपने मुक्त से स्वीकार कर तो उसका धारण पाप से बचने का प्रयत्न करता है, क्योंकि वह समझता है कि मुझे पाप को खिणाय तो

है नहीं फिर मैं पाप कर्म को छोड़ क्यों न हूँ ? विद्वानों के समय अपने पाप को स्वीकार करना और एकान्त में परमात्मा के साथ अपने पापों का कवन करना और उनसे छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना करना पाप से बचने का हेतु है।

२ धनुताप—पचाताप से भी मनुष्य पापों से बचता है। पाप करने समय होने से [लोक] मैंने प्रमाण से यह क्या कुर्म मैं किया है, इस प्रकार मानक से है। मनुष्य पापों से बच जाता है। 'फिर ऐसा नहीं करूँगा'—इस प्रकार प्रतिज्ञा द्वारा वह परिच होता है।

धरने दुःखपूर्ण पर पचाताप या धनुताप करना किन्तु मनुष्य है। पचाताप का धर्म है बाधा 'धनु' का भी धर्म है। ताप का धर्म है उष्णता, गर्मी। धनुताप और पचाताप—दोनों दो बाधाओं से ही प्रतीत होता है यानी मुक्त, स्वयं, स्वर्गोत्तरी धार्मिक मानना अपने दुःखपूर्ण के कारण वन्दी हो गई है और वह एक वन्दी हुई शापपूर्ण जट्टों के क्षणिक विधान है। धन 'धनुताप' पापों, दुःखपूर्ण के पचाताप होना जाता यह धार—पूर्वकर्मों को भस्मीभूत करके उस क्षाणा को सुखरूप में निर्वसन्न प्रदान करना।

धनुताप से मनुष्य कैसे पवित्र हो जाता है, इस विषय में एक धार्मिकीका पदमा पठित।

एक युगुप्त वीक्षित होने के लिए कबीर के पास गया। बीता देने से तुम्हें कबीर की ने कहा—

केला तुम्हें की मरने वाला
दे गूँबी मे बंगनी, मैं
फले बल तु पटनी लाला,
नहीं ताल के पास न जाना।
कुंवा बावली कोष के लाल
तुम्हें मर के लाला दे, देता।
तुम मे मर के मगनी।

कैला धनुत्य जल मैगवाहा है।
मुद्रा, नदी, ताल, तर्षाया लाल, पौधर का जल नहीं। उन्हें उस जल से क्या काय ? तुम का साय था—'तुम'। तुम धाब मुक्त दोषा देने थाये ही परन्तु क्या तुम नहीं जानते कि तुम पर धावराय पडा हुआ है। अपने कुर्मों पर जब तक धनु पचाताप नहीं करते तक तब मैं तुम्हें बीता नहीं दे सकना। तुम धनुताप करो। अपने पापों के लिए हतना धनुताप करो, हतना दो की तुम्हारे नेमों के जल से यह तुम बच जाए।

वेद मे कहा है—

इधमापः प बहुत यत्किं च धुरितं नयि ।
यहामर्षिमुद्रोह यदा वेद उतामुत्तम् ॥
—इ० १० । १ । ८

हे जसो ! मेरे गरीब और मर्न से तो दुःखभावा, दुष्ट इच्छा, मानना या निमित्त (विषय ११ पर)

धर्मार्थ—हे (विश्वतोमुख) सर्वद्वन्दा और सब धर्म में उपदेश करने वाले प्रभो ! (हि) मयोक्ति (त्वम्) तू (विश्वतः) सब धर्म धारो धोर (परिभू) परिध्याप्य (असि) है धन (न) हमारे (अयम्) पाप को (अयमो) गुणद) जलाकर भस्म कर दे नष्ट कर दे।

व्याख्या—मन्त्र मे एक ही उपदेश है, परन्तु है ध्यान उपधोमी और कल्याण-कारी। इस विषय उपदेश पर चिन्तन और मनन कीजिए—

अप न शोशुचदश्चम् ।

प्रभो ! हमारे पाप को जलाकर भस्म कर दे।

पाप एक रोग है और यह शारीरिक रोगों से अधिक भयकर है। यह रोग मनुष्य को निराल बनाकर दुष्टि को नष्ट-प्रकट कर देता है। पापी को दुःख की प्राप्ति नहीं होती। महर्षि मनु कहते हैं—

धर्मात्मको नरो यो हि
वस्य धाम्यन्तु बन्धन ।
हिरण्यवश यो नियत
मेधासो मुक्तमेते ॥

—मनु० ४ । १३०

जो मनुष्य धर्मात्मक है, जिसका धन पाप के द्वारा उदासित है जो मर दूसरी को बताता रहता है, वह इस लोक में सुखी नहीं होना फलना और ज्ञानवा नहीं। नाथसंन्यासी तोके सच कलति शौरिक । धर्मावलम्बमानसु कर्तुमर्थाति कुलति ॥

यदि मालाति युष्मद् न येतुर्गुण मनुष्य ।
न त्वेव तु कुतोऽन्य कर्तुमर्थाति निवर्तत ॥

—मनु० ४ । १७२-१७३

अनुशास किया हुआ धर्म लोक में शी-पु-वी के सब तन्माल फल नहीं देता। जैसे पृथिवी बोने ही फल नहीं देती किन्तु शी-वीर-पुष्पमूल होती है वैम ही पाषण्म की न-कान ही फल नहीं लाता किन्तु शी-वीर-पुष्प ही फल लाता है। धर्मन पापस्थता की जड़ों को काट देता है।

यदि पाप का फल स्वयं का नहीं सिन्तान तो पुत्रों को मिलना है यदि पुत्रों को भी नहीं मिलता तो पुत्रों की ओर प्रयोग से धन न मिलता है। किया हुआ धर्म कभी भी निराल नहीं होता।

—त्र विषय मे एक मुन्दर दृष्टान्त है। एक विद्वत्पास न मध्यम था। पानी पीने के लिए वह एक नदी में प्रविष्ट हुआ।

उसकी प्यास तो बुझी, परन्तु वह कीच मे फस गया। बहुत और लम्बाया परन्तु निकल न सका। प्यास दूर हुई धन भूष खताने बनी। तीन दिन पचात् एक मोक्ष उभर से निकला। तेरे ने कहा—“मेरे पास था तेरे पिता का एक सन्देश है, उसे सुन जा।” मोक्ष बोला— तुम्हें तेरे पाप धारने से दूर लगता है तू दूर से ही कह दे। तेरे ने कहा—“तेरा पिता और तेरा पिता दोनों मित्र मे धन मुक्त से तुम्हें कोई हासिल नहीं होगी। तू मेरे निकट जा। मैं तेरी पीठ पर हाथ फेरकर तेरे पिता का सन्देश तुम्हें मुकाऊंगा। यदि मैं तेरे पास जाऊ तो मेरी सत्ताप के धारण धार्ये।” मोक्ष धारण करके कुछ धारण बंद गया। तेरे ने धरणी सारी धारण लगाकर एक छलान लगाई परन्तु मोक्ष तक पहुँचने से पूरा एक दूर पर आ गया, उसकी धारण निकल धार्ये। तेरे की यह धारण तेरे मोक्ष मुक्तका हुआ धारण बंधा। तेरे ने मुझ, ‘मो मोक्ष’। यदि तुम्हें पता हो तो यह क्या है कि मैंने तो सत्ताप पर धारण की बात मैं ही को मुक्त फल को मिलता।” मोक्ष ने उत्तर दिया— यह तो तेरे धारण न जो कसन साईं भी उसका फल मिला है तेरे कसन नगी सत्ताप के धारण धारणी।

पाप का फल तो मोक्षवा ही पकता है, धन पापों न बचने का प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु मोक्ष धोचन से पूर्व मनुष्य पाप स्वो करता है, वह जानना भी आवश्यक है।

पाप का कारण क्या है ? ईसाई और मुसलमानों न जीवन की करना की हुई है। वही धारें पाप करता है। यदि जीवन ही पाप करता है तो स्वयं को उस ही विमना चाहिए। वस्तुतः यह एक विमना रूपना है।

मनुष्य कम करने मे स्वतन्त्र है। वह जो कुछ चाहता है करता है। अपनी कर्म-स्वतन्त्रता से ही वह पाप में प्रवृत्त होता है। मैन मे धन विषय पर उत्तम प्रकाश डाला गया है। धर्मन मे श्रीहृण से मुझ—

अथ केन प्रयुक्तोऽप पापं करितं पृथक् ।
अतिप्रयुक्तपि बाणैर्न बन्धादिव निमोचति ॥

—गीता० ३ । ३६

ह वाष्पोंयं मनुष्य इच्छा न होने दृष्ट की जबर्जस्ती से, दवाकर जोता था कि जिसकी उपाय से पाप करता है। अर्थ हृण से उत्तर दिया—

सम्पादकीय

आर्य सन्देश

प्रकृति का महोत्सव

भारत देश अपनी गरिमामयी परम्पराओं से, प्राध्यात्मिक सम्पदाओं से, संस्कृति सभ्यता की विशेषताओं से सम्पन्न रहा है। इन्हीं विशेषताओं से एक विशेषता है यहाँ के पर्व (पीहार)। मसूर के मयी बरस सम्प्रदाय एवं जातियों से घोर वैश्या से कोई न कोई दिन नियत है जब वे अपने समस्त दुःख बर्ष गुला कर उत्सव मनाते हैं। व्यक्ति विवाह भवसागर से चिरा न रहे एक ही रस में वह खिन्न न हो जाये, वह जीवन के समस्त रंगों रसों का स्वाद ले सके हवी पारणा को ही लेकर सम्भवत हमारे पूर्वजों ने पर्वों की सरचना की थी। समस्त विषय में मय से अधिक पर्व भारत में ही मनाये जाते हैं।

बसन्त ऋतु का आगमन हो गया है। नौ रसों से रसित नव रंगों के परिधानों से विभूषित प्रकृति अपनी नाट्य कला का समस्त युवन में परिचय दे रही है।

सम्बल की ऊँची-ऊँची बालियों पर खिलते लाल-लाल फूल, बेत में फूलती पीली-पीली सरसों, बागों में महकती घमराई बन की कटीखो झाड़ियों में सजे फूलों के गुच्छे, युक्त वृक्षों की चोटियों से निकलते झरूर पर्वत की उजड़ी भू खन पर उगती हरी-हरी घास घोर ऊँचे शिखर से सरती के सीने पर गिरता गर्जता करता, मचलती इजलाती नदियों की निर्मल धारा, बासों के कुरट्ट से बाती पपीहे के सभुर रागिनी, कोयल धीरे बुलबुलों की हूक से गुंजते उपवन यह महोत्सव है उस परम विद्या की सृष्टि का, जो महोत्सव धर्मराम चल रहा है। हर ऋतु मोहक उत्सव लेकर आती है और कह कर जाती है मानव क्यों न निराश है, उठ। उत्सव मना गुनगुना खिलखिला मूम मूम कर उस परम ध्यानव्यवस्था के गीत गा। जब प्रकृति में उत्सव है फिर मानव जीवन में पर्वों का, उत्सवों का उल्लास क्यों न हो, ऐसा ही एक उल्लास है होती। जी हाँ, होली जो यज्ञ का अग्रपत्र है। नवीन फनल के धागमन की बुधों का महोत्सव है। समस्त वेद माव शुलाकर गले मिलकर एक हो जाना और भानन्द सिन्धु से दूब जाता इसका सन्देश है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया था—उत्सव धनार जाति धानन्द धमार गीत। उत्सव ही हमारी जाति है और धानन्द ही हमारा गीत है। सब कुछ भूलकर धानन्द-उत्सव में मस्त हो जाना पर्व है।

वेद में कहा है—हसा मुद हसा मुत। प्रसन्नता में मूम धीरे हसते-नाचते जीवनयापन कर। जीवन में सत्य है। कठिनाइयाँ भी हैं परन्तु उन्हीं से दुःख ही होते रहते हैं जीवन कुसुम सुरक्षा जाता है।

इन ऋतु में गेहूँ बना, मटर, सरसों, जो धारि के पकने की दशा में यह पर्व मनाया जाता है। रस में फसल काटने पर किसान अपने सगे सम्बन्धियों एवं मित्रों की दावत देकर उत्सव मनाते हैं। जापान में पान की फसल कटने पर उत्सव मनाते हैं। चावल की रोटियाँ एवं भावक द्रव्यों से धानन्द मनाते हैं। इङ्ग्लैण्ड में पोल (May Pole) का उत्सव मनाया जाता है। सेंट वॉलन्टाइन के (St Valentine's day) सेंट वेल्सटाइन का दिवस मनाया जाता है।

इस प्रकाश की उत्सव परम्परा होली भी है। परन्तु धाव यह पर्व बड़ा विकृत रूप में चुका है। धर्मस्य धीरे धमिष्ट बनकर रंग फकना, गरीबों को मात्र वस्त्र की रंग देकर उत्सव का देण था गोबर, कीचड़, तेजान, रेत आदि प्रसन्न होकर फेंक देना मनुष्यता से नीचे गिरना है। होली के पर्व को भाग, शराव पीकर ऊँचम मचाने वालों ने भी गन्धा कर दिया है।

रंग की धाव में अश्लीलता भी है। हमारी संस्कृति में भागी

धारि को माना की दृष्टि से देवा जाना है उन के माथ अश्वत्था का व्यवहार होली की धार लेकर करना प्रथमता है। सभी सम्प्रजनों की ये दोष दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। इर नौबदा को अपनी हिंस्रता धीरे धर्मन से दीन दु विद्या के आसु पोछ ऋषियों के पुत्र खिलाने रहना चाहिए। 'जोष' ने सच कहा है—

नवीन युग के उपामना की धमिलाना की नुमे कमन है
तु धव नये विचारा के भगवान पदा कर।
बहार में तो जमीन से हो बहार उग आती है,
गर तु मर्द है तो लिबा में बहार पदा कर॥

—सशापन सुधासु

अपने पाठकों से

धारा पाठकों के अनेक पत्र प्रति सप्ताह मिलते रहते हैं। आपकी प्रसन्नता प्रशस्ति लिए हम धाराग्री हैं। स्मारिका के लिए धारा के अनेकों अनेक पत्र प्रशस्ति में लिखे मिले हम उन से कुछ हो प्रकाशित कर पाये। सभी को प्रकाशित करने के लिए स्थानाभाव है। केवल मात्र सम्पादकीय के लिए भी बहुत पत्र मिले हैं जो धारा के द्वारा स्नेह सित्त थे। पिछले दो मास में लगभग २०० आहक तीव्रता के शाय बने हैं, इस से धारा के प्रम अनुग्रह का विशिष्ट प्रमाण मिलता है। हम धारा की धाराधारा के अनुग्रह इस पत्र को सजाने में सलन हैं।

हमारे कुछ पाठकों की शिक्षायत की कि इन के पृष्ठ बढाए जाए, यह शिक्षायत हम ने उन की दूर कर दी है। पाठकों की माग पर ससग बाटिका स्तम्भ हम ने शुरू किया है जिस में हर बार ससग में सुनाया जा सकने वाला वेद व्याख्यान हुया करेगा। सहर्ष हम यह भी सुचित कर रहे हैं कि एक धमिन विशेषांक २४ मार्च को भूमधाम से प्रकाशित कर रहे हैं। यह विशेषांक धमने डग का धनोत्सा ही होगा। धारा है धारा का प्रेम स्नेह, एवम् आशीष इस साप्ताहिक पत्र को अवश्य मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं के साथ—

सम्पादक—सशापन सुधासु

शुभकामना

श्रीगुरु सुधासु जी।

सादर बन्दे मानव्य।

धार्य सन्देश के पिछले धकनों को बेक कर मन प्रसन्न हो गया।

धारिकी सम्पादन श्री मेरलादायक धारा संस्कृति धनविनी है। धारा है धारा के कुशल सम्पादन में धारासन्देश धारा नवम् में अधिष्ठ प्राप्त करेगा।

धाराधम सुधन

सशापन धाराधम देहरादून २४०००

स्मारिका बहेद अच्छी

'धार्य-सन्देश के विशेषांक के रूप में छद्मी मध्य मनोहारी गाना स्मारिका प्राप्त हुई। स्मारिका वास्तव में धाराधम एवं प्रभावशाली थी। इसका सुवर्णद्वि सुन्दर एवं धोमनीय था। इसमें सभी लेख पठनीय एवं गिमाप्रद थे। जिन्हें पढ़कर काफी प्रेरणा मिली तथा काफी जानकारी प्राप्त हुई। स्मारिका में सम्पादकीय न्त का तो धमन ही महत्त्व रहा। स्मारिका के इस कुशल सम्पादन के लिए बधाई स्वीकार करें।

—रामधुरा धाय

धारा ० पो-दुल्लाद नहाना (शोनीपन)

धार का 'स्मारिका पत्र प्राप्त हुआ धन्यवाद धन्यवन करन पर पता बसा कि धारा ने हर की सफलता के लिए बहुत प्रयत्न किया है। इस मयलता हेतु धारा सब को बहुत-बहुत बधाई हो।

निवेदक—योगेन्द्रपाल सेठ

प्रधान धाराधम धाराधम

भारतीय संस्कृति के गौरव-स्तम्भ : वेद

—आचार्य रामानन्द झास्त्री
महोपदेयक बिहार प्रामां प्रतिनिधि सभा बिहार

'वेद' का अर्थ ज्ञान है। यह ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा के द्वारा आर अक्षिपों के हृदय में प्रेरित हुआ। जिस के नाम धनि, वासु, वायव्य धीर धनिरा हैं। वेद स्वयं कहते हैं—

जसेन वाच पवमोमसन् ।
सायनमक्षिपन् अक्षिपु प्रविधाया ॥

अर्थात्—परमात्मा के द्वारा अक्षिपों के हृदय में वाच वाणी परब्रह्म होकर धार्य है परम्परा के द्वारा 'सृष्टि' कहलाई है।

पूज्य ने कहा गया है कि 'वेद' का अर्थ 'ज्ञान' होता है। यही ज्ञान आर भाग्यो में विभक्त है। उन्हें ही 'अक्ष', धनु, साम एवं अक्षर्य वेद के नाम से पुकारा जाता है।

मनवान् मनु का कहना है कि—
सुत मय्य अक्षिपन्मय्यं वेदात्
प्रविष्ठापति अर्थात् प्रसीत, वर्तमान तथा अक्षिप्य का ज्ञान वेदों से प्राप्त होता है।

क्योकि सर्व वेदादि विवेचनी—
अर्थात् कम्पुल ज्ञान वेदों से ही अका-
शित हुआ है।

महाभारत के रचयिता वेदव्यास जी कहते हैं कि—'सप्तसिधु वेदविदो वेदे सर्वं
प्रकथितं भूयः'।

अर्थात् वेदों का ज्ञाता सब कुछ जानता है क्योंकि वेद से ही सारी विचार्य प्रका-
शित हुई हैं।

वेदव्यास जी इनका ध्याते बहकर कहते हैं कि—'यो यद्वा (वेदों में) है वही अक्ष्यन्
है वही को यद्वा गयी है, वह कही गयी है।'

महावि स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने आर्यसमाज के तीक्ष्ण निरूप में लिखते हैं—
'वेद सब सत्यविद्याओं का प्रसिद्ध है। वेदों का पठन एवं पठना सब धर्मों का परम धर्म है।' शिवा, कण्व, निषध, निरुत्त, व्याकरण और ज्योतिष, इन्हें वेदाङ्ग कहते हैं। इनक द्वारा वेदों का उल्लार्य जाना जाता है।

आर्यवर्ष, अक्षुर्वेद मन्त्रवर्ष, वासु-
कना, शास्त्रिणा धारि धर्मों के अर्थां
भूमियों ने लिखा है कि—यह सब ज्ञान
हूय ने वेदों से प्राप्त किया है।

सायन्, व्यास, वेदोपनि, योग, पूर्व-
मीमांसा एवं वेदाङ्गि दशन धार्यों का
संश्लेष यही है कि वेदों की अक्षीयवेत्ता
सिद्ध की जाय।'

वेदों के महावि विद्वान् वेदसमुद्र मनु-
मुक्त धर्मों ने कहा है कि—'लोको-
पारम्पर्य अक्षीयों का उल्लेख अक्ष्यने में
उपस्थित है।' उन्हे ही अक्ष्यवेद के माधवीय-

सूक्त में १० पावचाय वासकि विचारों
का पूर्ण विवेचन किया है।

मैत्रमसूत्र के शब्दों में अक्ष्यवेद के अक्षर
सारे अक्षिपन धर्मों के सूक्त शीघ्र है। उन
का यह भी कहा है कि—अक्ष्यवेद विव्य
की सबसे प्राचीन सुलक है। इतनी पुरानी
होते हुए भी इसमें पुराणिक धर्मका अक्ष-
विदाम में परिवर्तन नहीं हुआ है। अक्ष्यत्
कही पर इसम पाठ-भेद नहीं मिलता है।
इसका कारण परम्परा से वेदों का पवपाठ,
पनपाठ, अक्षपाठ धारि = प्रकाश से पढ़ने
की परम्परा तथा पढ़ने की विधि है।
इसी प्रकार संकेतों पश्चिमतों ने वेदों को
कण्ठस्थ किया है।

आचार्यविज्ञान-वेत्ता यह जानते हैं कि
सृष्टि की आरम्भिक अक्षरणा में कुछ ही
भाषाएँ थीं। कुछ लोग यह भी कहते सगे
हैं कि एक ही भाषा थी, जिस से सारी
भाषाएँ अक्षर्य रूप में प्रकट हुईं।
आरम्भिक की पुरानी सुलक, जिसमें 'मोक्ष
टेन्टामिष' कहते हैं, ने कहा गया है कि
आरम्भ में एक ही भाषा थी, यहीवा ने
बहुल कर दिया। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है
कि यह 'भाषा' वेद की भाषा ही हो सकती
है। यही हम बहुल अक्ष्यों को न लेकर
केवल ईश्वरधर्मों शब्दों को ही लेते हैं—
पारसी अक्षने ईश्वर की 'अक्षुलमया' कहते
हैं। अक्ष्यवेद में अक्ष की 'आक्षुलमय्य' कहा
गया है। इसी प्रकार यही अक्षने ईश्वर
की 'यहीवा कहते हैं अक्षि वेद में यक्षुलम
वाय्व इन्द्र के लिए धारा है, जिसका अर्थ
अक्षिपयिषाणी होता है। मैत्रमसूत्र का
कहना है कि—'क्षीय' अक्ष्य से ही 'अक्षल'
अक्ष निकला है। कुराल के प्रसिद्ध आक्ष-
कार मुद्रमय धर्मों ने अपने कुराल नाय्य
में लिखा है कि—'अक्षला अक्षुलमय्य अक्ष्य
है, यह अक्षने ईश्वर के लिए पुरान
काल से बोला जाता है।

आलक्षण्य के वेदाधी की परम्परा बन्द
हो गई। केवल कण्ठस्थ करने तथा पाठ-
मा की परम्परा अक्षिपत रही। अक्ष की
परम्परा की अक्षत् विव्याह पनपन, अक्ष-
वाह आक्षि सकारों ने अक्षों का विविधो-
पना प्य गया।

श्रीलोक संस्कृत भाषा धीरे वेद की
भाषा में अक्षर्य है। शैलिक सक्षुल तथा
वेद के आक्षर्य तथा शैलिक कोष से अक्षिप
अक्षिप वेदाक्ष्य करने सगे, जिससे वेदाक्ष्य
हूयित हो गया। यही मैं कुछ शब्दों का
उल्लेख करता हूँ—

शैलिक अक्ष्य अक्षीय उल्लेख
अक्षरा विविदी वेत्ता

मृतान् पानी मारी-विशेष
कञ्च मेवाक्षी अक्षि-विशेष
सीता इस का अर्थय मारी-विशेष
विश्याविज सर्वमिज अक्षि-विशेष
विष्णु भूय ईश्वर का विष्णु

इत्यादि वेदाक्ष्य में स्वर की भी प्रधा-
नता होती है। इस प्रकार मनमानी अक्ष्य
चल गया है।

वेदमन्त्रों में पञ्च-विज्ञा भी अक्ष्य पक्षी
जिसके लिए वेदमन्त्र महाभारत में कहते
हैं कि—'पूर्व अक्षिप्य एतद् नेतृ वेदेयु
विद्यते। अर्थात् 'पूर्व' ने इसे चलाया है अक्ष्य
वा वेदों में पञ्चविज्ञा नहीं है।

राजा कृष्णल के यहा बहुत पञ्च
भारने अर्थात् बलि के लिए साए सगे हैं।
कुड ने कहा कि—'है राजन। यहीने के
आक्षुल भी हूय से हूयन किया करते हैं।'

अक्ष्य से ४०० वर्ष पूर्व के लगभग
विजयनगर में राज्य पश्चित आक्ष्य आक्ष्य
में अक्षिक पश्चित की सहायता से वेदों का
नाय्य किया किन्तु वेदाक्ष्य में अक्षि तथा
अक्षिपयिषाक्ष अक्षीयों को लेकर इतिहास-
पर अक्ष्य कर सिये। जैसी अक्षिवा अक्ष्यने
अक्षने नाय्य की भूमिका में की थी उसका
पासन अक्ष्यने ही किया। अक्षी-अक्षी
अक्षीय अक्ष्य भी लिख दिया। जिससे
वेदाक्ष्य हूयित हो गया। मैत्रमसूत्र में उसी
के अनुसार अक्ष्यवा सर्व किया तथा उसका
अक्ष्यमय भी किया।

महीधर तथा अक्ष्यादि नाय्यकारों ने
वेदाक्ष्य नामनाय के अनुसार किया, जिससे
प्राक्ष अक्षी से हूयय में वेदों के अक्षि भूषा
होने लगी। लोग यही समझते सगे कि वेदों
में कुछ नहीं है, अक्ष-ईश्वरधर्म का उल्लेख
है। अक्ष्य वासु अक्ष्यी पहाह धारि
की पूजा है इत्यादि।

ऐसी स्थिति में यहीव स्वामी दयानन्द
का आक्षुल्यन हुआ। स्वामी जी ने वेदाक्ष्य
की शैली अक्षुल्य की तथा नरलाया कि वेदों
का अक्ष्य निषध निरुत्त व्याकरण धारि
आक्षीय अक्षीयों के आधार पर कण्ठस्थ बाह्य है।
अक्ष्यने अक्ष्य धर्मों का विवधन करया।
यहा पर केवल एक मन्त्र मनु के तीर पर
उपस्थित करता हू। अक्षुर्वेद का अक्ष्य है—

ये आक्षिप परिपक्षयि अक्ष्यम् ।
य अक्ष्यत् अक्षिपयिहरीति ।

यह मन्त्र राज-प्रकरण का है—

ये (को) आक्षिपय (ने) को परि-
पक्षयि—अक्ष्यम् (परिपक्ष्य अर्थात् जोय्य)
हो गया। इससे अक्षीय—(अक्ष्य) निकलती

है इसे (निरुत्त) निकाली।'

अर्थात् जोका जब युवा होता है तो
उससे एक विशेष नाम निकलती है। इसी
से अक्ष्य-अक्ष नामक अक्षिप की शैली ही
अक्ष्यवाली होती है। राजा का बाह्य कि
ऐसे जोर को कार्य में लगाने। किन्तु
विदेशी आक्षकारों ने लिखा है कि यत ने
जोका मारकर शाली जब वय जाने तो
अक्षमान उसे बाते।

कुछ लोग वेदों का इतिहासपरक
अक्ष्य कर उसमें अक्ष्य और अक्ष्य की
अक्षीय का अक्ष्यन करते हैं। किन्तु अक्ष्य
समझना बाह्य कि अक्ष्य' कोई बाह्य
नी अक्षिपु को सक्षुलमय्य है अक्षी
'आक्ष्य' है। अक्षीय अक्ष्यको अक्ष्यमय्यम्
कहा गया है। अक्ष्यत् 'आक्ष्य' नामधेय
इतिहास अक्ष्य और अक्ष्य का युग गयी,
अक्षिप्य अक्षीय में अक्षीय अक्ष्य विचार ही
कुड तथा अक्ष्य विचार ही इन्द्र है।

यही 'अक्ष-अक्षुल्य' के युग का अक्ष्य
है। इसी का अक्ष्यपर कही अक्षीय कहा
गया है अक्षीय अक्ष्य को 'अक्षीय' कहा गया
है। महाविद्वान् अक्षर्य अक्ष्यवेदकर ने अक्षीय
पुस्तक Who Were the Shudras में
स्पष्ट लिखा है कि अक्ष्य बाह्य से गयी
धारि। आक्षत् साक्ष्य कहते हैं कि—

को लोग 'अक्ष्य' अक्ष्य से अक्षीय नामक
अक्षीय का अक्ष्यन करते हैं। अक्ष्य ने अक्ष्य अक्ष्य
करते हैं अक्षीय 'अक्ष्य' अक्ष्यवेद का अक्ष्य
है। अक्ष्यअक्षीयने अक्ष्यवेद के लिए कहा गया
है। अक्ष्यने अक्षिपयि अक्ष्यकर का अक्ष्यय
भी उल्लेख किया है।

मैत्रमसूत्र ने एक व्याख्यान में कहा
या कि अक्ष्य आक्षिपयिषाक्ष अक्ष्य गयी
अक्षिपु आक्षिपयिषाक्ष अक्ष्य है। अक्ष्य के दो
अक्ष्य अक्ष्यय है—आक्ष्य तथा अक्ष्य अक्ष्य
आक्ष्य।

कुछ नाय्यविज्ञान के आधार पर अक्ष्य
कर वेदों का अक्ष्यय करते हैं किन्तु
महावि दयानन्द दयानन्द के आक्षुल्य से
शैलिक सूक्ष्म का उल्लेख हो गया है। धीरे-
धीरे लोग समझन सगे हैं कि वेद ही
अक्ष्य के अक्षि प्रकाशय-मय है। वेदों के
अक्षिप की पूजा नहीं है सारे अक्ष्य के
अक्षिपों को विज की अक्षि से अक्ष्यन का
अक्ष्य है। शैय, अक्षि अक्ष्य-आक्ष्य
का वेद वेदों में नहीं है? अक्ष्य वेदों का
अक्ष्यय एवं पठन पाठन होना बाह्य।

अक्ष्यको अक्ष्यमय्यम् ।

इसके बाद कमरूप (खोर) सागर के तटीय पहाड़ी प्रवेशों को रोड़ता हुआ सिकन्दर प्रकवानिस्तान की ओर बढ़ गया। अब उसको अपनी जीतों पर समझाओगे

त्रार्यपथिक अमर शहीद पं० लेखराम जी के बलिदान दिवस तथा होली के पवित्र पर्व के एक ही दिन ६ मार्च को पढ़ने पर हमारा कर्तव्य

—बलमलाल शर्मा विशार

उपासनी गायना नर पवनानायेन्द्वे । ध्रुविदेवा इयक्षते ।

भाषा—ग्रन्थ उद्देश्य कहत है कि ह मनुष्ये महनीय विष्णुगुण लाल समावेशी पुरुषो के परिचो का बह षष्ठ प्रकार से मनन करने उनके पश्चिमी पर चलकर अपने परिच को जी उनक सम न गमन बनाओ ऐस बहुत करणीय महान् अस्तिथो की प्रथमाय के गीतमय इतिहास में कुछ कही गयी है । धाराधनाय का इतिहास बलिदानो का इतिहास है स्वमे धाराधनाय के कथा प्रसिद्धि देयान न जी उत्पत्ती के प्रथमय ऐसे महान् अस्तिथि हुए हैं जो देव जाति और पाण्ड की निष्काम भाव से देवा को करतेश कुछ स्व र्ग और धन विरोधी नारी के कथनम का त्रिकार हुए और विष्णव शारी धनर राक्षसा जन्मनाय के द्वारा हुए से लाक्षण विप दिवे जाने के कारण देव की वेदी पर अपने प्राणी की बलि देव । इसके पश्चात् धाराधनाय स्वायत्त के महिष पञ्चास साठ वर्षों से बलिदानो की शरीर की वध वा त्रिहारी देवी है । इन से न कुछ वर्षा न लोगो के कुंठे और लोभी का त्रिकार हुए और कुछ न निष्काम हीराबाय की जेब न परम प्रथमाय धनर व न स्वायत्तप्रकाश का भावोन्मत्त करते हुए अपने जीवनो की दानि की । इन से महिष की बलि के बाद धनमयी धनर न गृहीत १० लेखराम जी का नाम स्वायत्तान् न लिखने योग्य है किन्तु धाराधनाय का प्रचार करते हुए हिंदू जाति की रक्षा में अपने जीवन की बाहुनि ३१ वन की छोटी सी धातु में है ७ मार्च सन् १९६७ से देवी । यह जालिम धमा व मुकुलमान युक्त पवित्र जी के पास कुछ होने के लिए धारा वा परन्तु उसने सुरा पेट से जोर कर उनका जीवन समाप्त कर दिया । इस महान् पुरुष द्वारा उप लिख धाराओं को जीवन न धाराय करके देव और जाति के गौरव को ऊंचा कर सकते हैं । १० लेखराम जी महिष स्वामी धनमय के लक्ष्य भक्त और योग हिन्दु जाति के निष्ठावान् सवक है । पवित्र जी का प्रसिद्ध प्र य मरुद्वि एव वैदिक धर्मिया और हिन्दुओं की ईसाई मुकुलमान न बनन ज्ञेय न स्वयन्त हाहा वा । धारा का गीत न ३८ ५५ वा जीवन बह मनुष्य और प्राणीन का एक प्रणालायक कहती है । धा उपासनी व महान् विद्वान् के धनवा धनरी के की पवित्र है । वही कारण वा कि मुकुलमान के आने से धानाबाय से धारके कुरान के प्राण और धनवा न की टिप्पना का देखक बह बह मोलव चर्चन रह जाते है । लखराम जी बह मुकुलमानाधनाय है । धन्य धनों की नृपियो पर धन्य इस मुकुलमान से प्रकाश शानते है कि उसने

निष्ठा प्रचार की कटुता एव विश्वोपरान न धाने पाता वा । और वही कारण वा कि धाय के स्व स्थानो में धनी धनों के लोभ विचलन मुकुलमान कीय मारा कल्या ने क्षमितिज हाकर रह गते व ? यद्यपि धाय सभा धनों का लक्षण मन्धन समाप्त रूप से करते थे तो भी मुकुलमानो के बलनाय साथ धन धनो को धाय के प्रति कोई विशेष शिकायत न की यद्यपि धाय की शूरा धानवा का न धनवी तरह समझते थे । पञ्चास सातान धन धनो के लोभोत्प्रेक १० दानपातु की सा धाय की हिन्दु धन जाति का परम उत्तक मानते थे और कहा करते थे कि १० लेखराम जी के होते हुए हिन्दुओं की बह कोई भी कोमली गृही कर सकता । मुकुलमान विचलनकर शक्यते कादिवानी धाय से बहुत दूर रहते थे और धाय की जान के लोभ १० रहते थे इसका एकमात्र कारण यह वा कि धाय उनको बार-बार उन्माय के वास्ते बाध्माने रहते रहे थे और उनके भूत कमानो का मूठ होकर बचाव करते थे और उन्माय सतत पाया पीड करत थे कि उन को नई नवाज न देते बन पड़ता वा । जब ही शक्यतिथो की कोई उत्तक प्रकाशित होती धनवा कोई सेव पदमे को मिलता थाय दुल्लभ क्षमिस्व मुकुलमान द्वारा देव वा स्वायत्तान् न सेवका ऐसा माया छेद करते कि वे दग रह जाय करते व । उन्होंने इससे कुटकार पाने के लिए धनके स्वामी पर धाय पर कोटों के धर्मियो बनाये परन्तु बाहरी नेट बन्वाई गया किन्ती धायि धनी बाह्य धाय निर्दोष किन्न हुए । प्रचार नाचों में धाय रहते व्यस्त रहते थे कि धाय का हाई वा एकमात्र पुत्र की मुकुल जी बन्धन की किसी प्रकार की बाधक नहीं होती थी । धर्म धर्म याका का बहादुर धाय तकसीय भी किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न करती थी । कई बार तो हिन्दुओं का मुकुलमान बनने से बचाने के लिए प्राणी की बाबी लपकाकर लपटी दन से छानाव कपाकर व्यावसाय रहा प चलते । ऐसे व निर्भीक प्रचारकार हमारे लेखराम जी ।

पवित्र जी का व्यभिचलन जीवन बहा साहा धारमर न काओ दूर वा । यह बालकपन से ही पापुत्रा धार्मिक धायो के पदम से हाँ नल थे । दूरी परिपक्व ३ वन का धायु में उन्होंने विवाह किया और कुल लाल वन बनी शास्त्री से सहस्र की तुम्हणीया दुर्ग की रानी परन्तु प्रचार का निरंतर चलत रहा धाय धाय समाज धनवा हिन्दु धन व कोई भी धायय सहज नहीं कर सकते थे । धाय का कायस्थ न बहा धायक बन गया वा ।

किसी भी हिन्दु को मुकुलमान धनवा ईसाई बना लेना वह तक ही सम्भव वा जब तक कि धाय को इसका ज्ञान न होता जैसे ही धाय को पता चलता थाय दुल्लभ दोषपूर्ण करते और उनको पतिव्र हेमि से नचा लेते व । धायने बहा सहस्रो धान्वाय किने बहा सपनम तीन दमन छोटी बनी युल्लके की विधो । महिष स्वामी दानमय की तरह धाय का जी पुण विस्वाव वा कि वैदिक धिंसा के प्रसार क बिना सारा का उद्धार कनिज है । इस हेतु बह विदेशो से जी प्रचार करने क विार धनवा की बोधना वा बनाने थे । उन्होंने कुछ तुल्लको का धनरी ने भी अनुवाद किया वा । परन्तु पुर्णवियस कुटुम्बानी विरोधी मुकुलमानो ने उनका पीछा न छोडा और लैका कि पहिले लिख चुक है । ७ मार्च सन् १९६७ को बाहरी ने उनक पेट में सुरा पोतकर एक पद में उनकी हत्या कर दी और सर्वेव के लिए उस वैदिक जयमलते हुए धाय को प्रस्त कर दिया ।

याद रहे लेखराम जी का नमिधान हिन्दू जाति की रक्षा करते हुए हुआ । परन्तु कुछ है कि हिन्दु जाति फिर से बर्त प्रस्त है । विधायी लोग धनर देवो तथा पापवात्य देवों की विपुल मरुद्वि के बन नूते पर प्रमितिज धानम होय पिछक हिन्दुओं को एव तथा किन्न हरजनो और शकुनो की प्रतीमन देखक धनवा धन धनका कर उनको वध परिवर्तन करने पर भावित कर रहे हैं । मीमांसीपुत्र लैतो मटाए फिर से घटने लगी है । यही गृही विम हिन्दू जाति के लोगों की मुकुलमान न होने देने धनवा पहिले से हुए मुकुलमानो को हिन्दु धन से वापस लाने के लिए हुलाया स्वामी बलमलाल ने शुद्धि का पत्र बसाया वा और जिसके परिणाम स्वप्न उनको एक विधायी मुकुलमान ने उनकी छावो ने मोतो लान कर उनको हत्या की को धाय बहो सेव पुत्र मुकुलमान होने वा रहे । यदि ऐसा ही होता रहा और दन न चले तो वह युल्लम रह गयी है कि जब धाय की गुरुलमय हिन्दू जाति धाय स्वप्न पोपिती की जाये और विधायी लोग दन स्मिति का राजनैतिक धाय उठाकर धनवा वा स्व स्वप्नित कर दें । स्मिति बनी बहकर है । इस व ७ लेखराम जी के बलिदान दिवस पर सभी हिन्दू विधाय कर धाराधनाही सभी नेव धनो की मुलाकर कछ ऐसे लोभक उठाने की बोधना बनाये जिसत व धन कर स्मिति का साधना करके विधायो के नापाक हत्यारे जिन्न कर व और उनको मूठ की धानी वा । यह वध और जी महान्मुल्य इक्षतिथो है कि होनो का पवित्र वध और लेखराम जी का बलिदान दिवस हमारी धाय में धनो की लारी को है

धनुरा एक ही दिन ६ मार्च को धा पडा है जब कि दन हिन्दी लिपियो के अनुवाद बलिदान दिवस कलसुन लुदीया (लेखराम लुदीया) और होनो लुदीया अनुसू विधायो को होने हैं को कभी भी एक दिन नहीं पडा करते । १० लेखराम जी का जहा एक मात्र गृही श्रेया वा कि सब हिन्दू सपय और धनर छोटे बडे सब लिखकर लमजिज होकर एक सख हिन्दू जाति के लीर पर धनवा धारिस्व स्वायि कर । बहा होनी का एक श्रेय मज्जुस मिशन वा है कि सब लोग धारो नेव धाय मुलाकर छोटे-बड धनी लिखकर रहीं और पुरको का इव बने के लिए बह भी बहना है कि धाय के धिन को भी धनरुप नहीं है धनी एक कुदरे की सहानुभूति के पात्र है । देव का पवित्र श्रेयध भी यही है कि वन छोटे बडे के साथ लिखकर धाय कर और धानम रह ही ।

कलेविप्रकिन्नान् व राधान्हे ।

अथैव १०१११७३

धन धाराय सब का कठम है कि हन समय के प्रभाव को देख और हिन्दू जाति को विनाश के राहो में विरते से नचाय । गृही स्वय की मुलाय है ।

उल्लिख्य बालस धनय भाग निशोचत ।

धनो धारा पवित्र की की जीवन तातिना पर उचित्य कर ते—

लैखराम नाम के धाय लखील बह बसा बिना केवलम (फिलिस्तीन) में गहवा लारा हिन्दू के बर ने जन्म—

विहारी स्मृत ने देव लारी पदमे के लिए स्मृत ने दक्षिण—

धाय गम्हारिह क धाय पिपावर जाला—

धाय की नौकरी स्वायत्तान् होने पर १० की का शायर वर—

पुत्रिध ने नौकरी लेबाकर ते—

केवलमय क यधनों क लिए धन मेव जाला—

नौकरी छोडना—

देवाय ने धायधनाय स्वायत्ता—

क्रम नेने पर गहवाय मृगीनार के साथ प्रचार काय—

३१ वन की धायु ने २६ पवित्र लक्ष्मी देवी से विवाह—

पुत्र वध—

पुत्र मृत्यु—

एक धर्मिक मुकुलमान द्वारा पेट में सुरा पोत कर हत्या—

धनम लखार बाहरी में सहस्र कोनों का धन धाना ने स्मितिज होना—

७ मार्च १९६३

आर्य जगत् के समाचार

आर्य आदर्श विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली में
ऋषि बोधोत्सव तथा भाषण प्रतियोगिता

भाष आदर्श विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली में 'ऋषिबोधोत्सव तथा भाषण प्रतियोगिता' भाष मेन्ट्रीय सभा के तत्वावधान में तथा स्वामी विद्यानन्द की सरस्वती की भाष्यसता में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की तीव्र प्रेरणादायक घटनाएँ विषय पर प्राथमिक कक्षा के छात्रों की भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कार्यक्रम रोचक, रेरेणुदायक तथा शिक्षाप्रद रहा। स्वामी जी ने बच्चों को भाषी-बोध दिया तथा गुरुकार दिए। दीक्षा बड़ा प्रथम तथा भीतू भाऊजा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किए। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द का सारा जीवन घटनाओं से बना पड़ा है। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। यह बोधोत्सव हमें भी बोध कराने वाला है कि हम भी कुरीतियों, बुराईयों, तथा बुरे विचारों से समझीता न करें। सदा वृत्ता से उनका मुकाबला करें।'

संयोजक—महावीर तथा

दिल्ली सभा द्वारा वेद प्रचार

मैं ११-२५ को हुमात पीरमा किताबें कात से करी १२-३० बजे दोपहर गया था। वहाँ से ३८ मं दिने सभा को उसके सीडे सरकारी कार्यालय है बहुत पर सार्ब प्रसिद्धि सभा जिल्ला का प्रचार माहल में कर गया। वहाँ पर भी ५० संस्थेय की स्नातक के प्रजन न उपवेश तथा श्रद्धेय स्वामी स्वर्णचामनजी के प्रचार का बोधो पर काफी प्रभाव रहा। वहाँ दैनिक प्रचार की कार्यवस्था है। क्योंकि वहाँ पर कई राजकीय कार्यालय है जोत सलब से दायिक प्रमाणों प्रचार रहे।

वेदप्रचुकार धाम्नी भाषसमाज मन्दिर, रवेस नगर

कृषि अनुसंधान सेवा परीक्षा में हिन्दी माध्यम

कृषि अनुसंधान सेवा परीक्षा में कुछ समय पहले तक धंधेजी माध्यम ही था। सन् १९८५ में होने वाली परीक्षा में सभी विषयों के प्रश्नपत्रों के उत्तर हिन्दी में देने की वृत्त रहे। यह परिवर्तन सभी धंधे से स्वागत योग्य है। हिन्दी-भाषी लोगों को विचारविमोक्ष को इस सुविधा का पूरा साज उठाना चाहिए। वे हिन्दी में अपने विचार बहुत धुन करके प्रकाश व्यवस्थ कर पाएंगे तथा उनकी सफलता के अवसर पहले की अपेक्षा दायिक होंगे।

हिन्दी-भाषी लोगों ने कृषि विचारविधान को भी चाहिए कि वे अपनी सभी कलाओं में विभिन्न कृषि विषय हिन्दी माध्यम से भी पढ़ाए जाने की व्यवस्था करें। इस समय विचारविधा का काफी समय धंधेजी भाषा का धन्धा ज्ञान प्राप्त करने से लग जाता है। हिन्दी माध्यम होने से उस समय का काफी भाग बच सकेगा जिससे वे कृषि विषयों में पारंगत होने में सक्षम होंगे। वहाँ-वहाँ उन्मूलन की कृषि विधा हिन्दी माध्यम से देने की व्यवस्था है उनकी मुचना प्रयास 'महामन्त्री हिन्दी व्यवहार सलज्ज ६-६, २६ वसंत बिहार नई दिल्ली १९०५०' को देने का कष्ट करें। जिन कृषि शिक्षण संस्थानों में यह सुविधा प्रयोग नहीं है, वहाँ के अधिकारियों से सम्पर्क करके उसकी व्यवस्था करने के लिए यकीन की प्रयत्न करना चाहिए।

हरिनाथ कृष्ण

महामन्त्री, हिन्दी व्यवहार सलज्ज,

डी-३५, मारवा एक्स्टेंशन, पान एक, नई दिल्ली-११०५६

आर्यसमाज मन्दिर सैजपुर

आर्यसमाज मन्दिर, सैजपुर बोधा, धर्मप्रचारार्थ के दायिक मुनाओं में प्रथान की योग्यताम सरोरीयम उपप्राप्त की मुत्तायमस क्षारायम, मनी की हुरीसास गुरदासमल उपमनी की नेभाराम मालमुक्त, कोषाध्याय की दोसलरायम जी न निरीक्षक की सरोमीयम मोहनमाल जी मधुनिधित से मुने यए।

वार्षिकोत्सव

'दाय कम्पा मुकुल मरेसा दिल्ली का दायिक महोत्सव विनाक ६-१० मार्च १९८५ क्षमिबार, रविबार को मुल भूमि में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस मुष धनसय पर धनके सयासी, महात्मा विधान उपवेशन बमनीक तथा मास्मीय राष्ट्रीय वेता पवार कर उवेशामुल पान करायेंगे।'

निवेष्टिका—भाषायी कम्पा मुकुल मरेसा, दिल्ली

आवश्यक सूचना

वैदिक बलि मन्त्र की ओर से वैदिक सन्यास प्राथम गाविभावादे में १६ मार्च से ३१ मार्च १९८६ तक स्वाध्याय संस्कृत शिक्षण विधिवर लयाया जायेगा। प्रत सय हप्पक मन्त्र यतिवर्गों (सन्ध्या), मैण्डक हस्तुपनी तथा मानप्रतियोगी) से प्रायणा है कि समय पर पहुँच कर धनसय साज उठावें। सन्यासप्रकाश, सकारप्रति धायि पुस्तकें काफी लेखनी तथा च्छु अनुसार वरन् अपने साध धनसय सावें। योजना का प्रबन्ध धायम की ओर से होगा।

निवेष्टक

धायक स्वामी सदानन्द

वैदिक यति मन्त्र

ऋषि बोधोत्सव शिवरात्रि

आर्यसमाज मद्रा होशियारपुर, मदानन्द बाजार, बालनगर
भाषसमाज मद्रा होशियारपुर (स्वामी मदानन्द बाजार, बालनगर से १५ फरवरी १९८६, प्रात ८ बजे से १२ बजे तक ऋषिबोधोत्सव शिवरात्री परने के उपलक्ष्य में बडे समारोह से मनाया गया। सन्ध्या प्रायण के परवात् स्थलित यज्ञ सम्पन्न हुआ। स० १० डावा हमार स० स्कूल के तथा डावा माडल मन्त्र हाई स्कूल के धाम्यक तथा क्षात्र एवं धन्य दायिक विचारपारा के जन सैकडों की सन्या में सम्मिलित हुए यज्ञ के परवात् स्कूल के क्षात्र तथा क्षात्राओं तथा विधिवर धनुसमान की क्षत्ता, योगेशप्राथ वेड प्रथान सजा की ऋषिप्राथ सिद्ध की एम्बोकेट, श्री प्रो० प्रानवसहार जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की बडी भावनीनी मदानन्दजी मॅट की।

महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल का द्वितीय वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल चौमा का द्वितीय वार्षिकोत्सव प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर प्राथम वर पाठायन यज्ञ का माय मुष्णा ११ रविबार, सुटिड सन्ध १९६०५१२८८ दयानन्द १९० की की बमवेर की वमील के बमवासनब से मुनाप्रम ६ प्रा एव यज्ञ का समापन माय मुष्णा १५ मङ्गलवार उव-मुसार ता० ५-२-८६ के यममान की सरोमीयारायण की गोस्वामी सपत्नी के कर-कर्मण द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रथम विषय के बड़ा धीर वक्ता सावेसिक सन के उपमनी एवं मन्त्र भारतीय धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रथम श्री ० राजकुम सार्वा ने। प्रायने मुकुल की भूमि पर से दायिकमय हुदने की कार्यवाही कर्ता अधिकारियों की कम्पाय दिया। पुन-इस भूमि पर किसी की भी मद्दी बहाया जाये इस धारेश के साज तन मन यज्ञ के सहयोग देकर गुरुकुल की सरोमीय उन्मति की प्रतिज्ञा की। द्वितीय व दायिक पिन के बड़ा मुकुल के दयिष्ठता महात्मा दायसेव की वामसय कृपाल देवसता उन्मैल निरासी ने। उनके दायिकम से निम्नाकित ठो प्रस्ताव पारित किये यवे तथा एक महिशा धीर १२ मुषकों ने सरोमीयकित धाय करके मुव्सलन जोखने की प्रतिज्ञा की।

१—महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल चर्चार्थ धाम्युविक बोधपालस बनयाया सार्वभम चौमा धाय में वरत यह सासकीय धाम्युविक बोधपालस है वतमान में बने हुए यमन में सहयोग। जिया धाय तत्परवात् धाम्युविक उपकरणों से मुषल बोधपालस यवन हेतु एक सास की राति प्राप्त करने हेतु निमित्त धायर कानन बडी-दिवा धाम्युविक, सारगपुर, मुजासपुर उजर्न हन्दौर, मोपाल के दायिकर्तव्यों की मोटिल की बाये। धाम्युविक यमन एवं की स्वामी मदानन्द द्वार का विनायास करवाये हेतु केम सासम तथा मन्त्र न रत सासम के वरिष्ठ अधिकारी सार्वसिक सन के प्रथम एवं किसी वेड दानसता स सम्पक स्थापित किया जाय। इस कार्य हेतु की ५० रागुष की सार्वा मद्र की डा० मोहनमाल की क्षता नवीन प्र० सन्याक सासमाटी धायर तथा की मेरुनाम सन नैव सन्याक धामर को नियुक्त किया बाये।

२—इस क्षं की ५० वर्ष पूर्व आर्यसमाज ने ईसाकाल के चमल से मुषल करायता था। परवात् कार्य सुपुत्र धनसय में हो गया था। पुन इस क्षं न की वरिष्ठ एवं नैतिक धिवाये हेतु दायिक शिक्षा का कोम बमवेर से हुवाक प्रथम क्ष माह में १२५ मुषक को ग्रीव शिक्षा में वीसित किया जायेगा। इस कार्य हेतु की कारोपनी की धनस, की विवर्षि की धार्म कानन की ररेसयन की सार्म हजरेपरा, की सरोमीयारायण की गोस्वामी तथा की बोधुसप्रकाश की वेडर विवर्षाक हजरेपरा, की ररेसयन की सपित का कनर केमिडी ही कार्य का उवाचन करें। परवात्, हुरीसास के साज कार्यक्रम समाप्त हुआ।

भाषिष्ठता

स्वामी प्रानमन्द सरस्वती

आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय
(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)
के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के
अन्तर्गत कर मुक्त होगी।

सार्वजनिक बैंक/परीषद्/बैंक द्वारा

मन्त्री, माता चन्नबदेवी आर्य वर्मा नेत्र चिकित्सालय,
बी-१ जनकपुरी नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

रामगोपाल शोलवाले महाशय बमपाल शोलवाले आर्य
सरलक चिकित्सालय प्रधान दिल्ली प्रधान मन्त्री
एच प्रधान सा० आ० आर्य प्रतिनिधि आर्य केन्द्रीय महाशय बुल्लोसाल
प्रति० सभा सभा सभा बैरि इ
सौजन्य से मन्त्रालयों की हस्त प्र० सिमिडेड २/४४ कोलिनगर
औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

निबन्ध प्रतियोगिता

स्वर्गीय श्री लालमन आर्य की पुण्य स्मृति में एक
प्रशिक्षित भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया
जा रहा है। निबन्ध के विषय निम्नांकित हैं।

१- महर्षि दयानन्द के सपनों का अर्थ

२- वर्तमान चारित्रिक संकट,

अभ्यर्थियों का समाधान

किसी एक विषय से किसी से २ हजार शब्दों से अधिक एवं विषय की सीमा
प्रतिधा सेवना प्राप्त होगी। निबन्ध विजेता की धनिय क्षति २० मार्च,
१९८१ ई।

प्रथम पुरस्कार १००० रुपये, द्वितीय ५०० रुपये,
तृतीय ३०० रुपये ५ सातवां पुरस्कार प्रत्येक की
१०० रुपये।

प्रतिष्ठित विद्वानों का एक निष्ठावक मध्यम निबन्धों का सुपरीक्षण करेगा,
जिस का निम्न सर्वमान्य होगा।

निबन्ध विजेता का पता—

श्री निलकराज गुप्त

संयोजक—श्री लालमन आर्य, निबन्ध प्रतियोगिता

प्रधानाचार्य—हमारा माडल स्कूल, पञ्जाबी बाग,
नई दिल्ली-२६

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें



माला कार्यालय—६३, माला राजा कैदरबाग,
फोन २६६८३८ बाबडो बाबाग, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि तथा ११ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ कोम ११-१६ के लिए श्री डा० बर्नबाब द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक ज्ञेय मन्त्री डा० १४, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-११ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५६

संलग्न वाङ्मय

जीवन में तप का महत्त्व

—प० विहारीलाल शास्त्री काव्यनीय

पवित्र ते वितत ब्रह्मसुस्पते प्रसुभात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतपततनूनं नदामो ध्रुवसुते श्रुतास इद्वहन्तस्तस्मात्तत ॥



सत्कार मान्य व मे सत्कार है। इसे व्यर्थ हो उदासीनो ने प्रहार बना दिया। इस मे एक से एक सत्कार मान्य भरे पड़ हैं। दिव्य रत्न दिव्य धोषधिया धन्य धनेक धर्म, चमत्कार विमाने वाली ध्वनि ध्वनि धोर बाहुएं इसी सत्कार मे हैं। जिसकी इसी सत्कार से निकली की रात को विन बना रही है धोर महीनो का काम निमनो मे कर हालसी है। ऐकसरे (पूर्य की किरण विषये) इसी सत्कार का चमत्कार है, जो धारी के भीतर हृदियो को प्रकाश दिना देतो है। वहलन रोमियो को इससे नाम प, चला है जिसकी की चिकित्सा से भी रोमियो को अपार नाम हुआ है। रोमियम जैसी भातु जिस पाश कनि ही कहुना चाहिए इसी सत्कार की भी देत है। रोमियो सन्नि कितना प्रभुसुत है जिसके कारण जहामी मे बड़े बड़े सगुन के बल स्पष्ट पर ही स्पष्ट-वाङ्मयो से वाक्कील करिये गाने का रस कीजिये। एक सेव के आत्मान सता के आत्मान प्रहरे प्रहरे सेव मे अपने कनरे मे बड़े बड़े सुनिप। इतनी बहाच मे, प्राकाल मे स्वर्ण-उल्ले मे सुनि बायो से वाक्कील करते रहिए। यह सब चमत्कार इसी सत्कार मे से निकल पड़े। यूरोप का सब विमान-वैमान इसी सत्कार मे तो पल्ल किया रहा बा। वैज्ञानिक यो इस ऐकसरे की इसी स्वच स तो मही मान जाये। इसी निद्री मे से जल में से धनिम बायो मे से, यह दिव्य चमत्कार प्रकट हो गए। केवल युगु पाप का फल है। मेहनत की, जान लडाई बुद्धि को कष्ट दिया इन्द्रियो को थकावा जीवनो को गमा दिया उपस्था मे दीवाने हो म, तब यह दिव्य चमत्कार देखने को मिले। जब जन किता तो प्रकटित देवी की हृद किशोर विस्मयो को पाया। विमान तप किए था पानी मे से प्रकाश (विद्युत) निकल सकता था। क्या यह बात समझ में आयी की कि पानी के मिलने मे भी एक गुप्त शक्ति है जिससे बिजली मिल सकती है। पर धारा बम्बई नगर को मही पानी के कानो से पातु हुई बिजली प्रकाश प्रदान कर रही है। येक कल का कानन इसी की बदौलत चल रहे हैं। इन नगर मे धनेक बार गुन है। तप कर प्रकट होने। उज्जयिनी नदी रहे कुं नही पापया। एक उड़ कवि कहते हैं—

हृन्दी के शबर में धार
स्वाहिय है चमक बाधो।
कच्चे न रही बहिन
फिरी दृष्ट मे एक आधो।

जिम प्रकार मौलिक सखा से धनेक गुन धार व जो प्रकट हो गए धोर अभी हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक तप

कर रहे हैं ठीक इसी प्रकार धार्म्यात्मिक सत्कार मे भी धनेक गुप्त चमत्कार हैं, जिनकी चमकी छाया धाम मेस्वरजिम, हिन्दुाटिम, वाटरीडिम, लंबक पर क्को को बुलाना प्रादि किमार्गो मे दीक्ष पडी है। परन्तु इन कारो मे धनी हमके कर्ता हो प्राप्ति के शिकार हैं। हमसे उभर काम है योग, धनेके द्वारा धार्म्यात्मिक चित्तुसियो का बर्धन होता है। जब योग करता है तब —

उपर्यर्थ विमल बिशोचन की है।
निद्रि हो सुख मय-रचनी के ॥

तुल्य उत्पन्न ब्रह्मनिष्ठ युग की सेवा कर तप से, यम को पकाय कर अत्यंतगु की धोर से जाने वाले धाम्यात रूप तप से इन्द्रिय द्वारा सदा सम्य करने वाली मनोवृत्तियो को रोककर धर्मसुमो की करने रूप तप से जब मनुष्य धाम्यात्मन धर्म को प्राप्त कर लेता है तब धार्म्यात्मिक चित्तुसियो के ही मयि वह इष्टकल हो यत। जब तो गया बीता, धोर बहिर बराबर सोच करता बना गया धोर तप से न विचला तो पूर्ण चित्तुसि तप, परम ऐक्य तप कहा कि जहा बाकर फिर फिर गुन देत पड़े, पड़े बाएया। मही बड़ा तप है। उसी के लिए धार्मिक जगत् धाम्यक है। उसी की त्तुसि प्रापंचा मे चमकन हमारी रचनी है। ज्ञान धाम्यात युक्त फिरी की मरि से उसी की उपलभा मे सदासत्तात्व्यादी नुके पने जा रहे हैं। धर्मशास्त्रा सबको है। धार्मिक की चित्तुसि बाह्या है पुरुषता का धर्मसाधो है। हा उसमे पाने का उपाय उसका धोर है। यह बातु में तेज दूध रहा है। उसे भी उसकी समता है। वह शक्त धोर परिचरनकील प्राकट रूपो मे विराम हाहता है जो धर्मशोभी राह है। विरति तो एक-रन यत्नर तप मे ती तो सकती है यह तो केवल मही ती है। यह धरूप है इन्द्रियाणीत है वायसमोचर है। इसलिए नास्तिक कहता है कि वह मही है। जब प्राय मे विद्युत है प्राकाल मे ईश्वर व्या-प है परन्तु विमानयुग क्लृप्तबुद्धि धामीक कदा भी नहीं पाना मही है वैनातिक तो प्रायण कर चुका धोर उस शक्त को पिना चुका है यह कैम निष्पे करे। एकी प्रकार ब्रह्मनिष्ठ धर्मियो न बड़ा व

साक्षात् किना धोर साक्षात्कार की योग्यता रखने वाले निराल हृदयो को, धाक रखने वालो को उसका प्रत्यक्ष करावा भी परन्तु धर्मशोभी हृदयो के लिए तो बर्धन कगना कठिन ही बा। काय मे रत है, हृदयो को उसका प्रभु-मय होता है परन्तु काय वासनावहिय वयो को मही। इसी प्रकार चित्त-ब्रह्माय सब मे रत रूप बड़ा (रौ वौ त) सनाया हुया है परन्तु उस को विना तप के मही पका जा सकता। मही बात येव यमवात् उपर्युक्त मय मे बताते हैं—
(ब्रह्मसुस्पते) मे वेप के पति प्रभो (से) धाम्यात (पवित्र) पवित्र ब्रह्मान्य (बर्धयितव्य) सब बर्धयितव्य है। (अनु) धार सबके स्वामी (मात्राधि) धारीतो है (विषयत) सब धोर (पर्येषि) व्यापक हो धर्मोवृत्तियो धारी मे सब सब बर्धय व्यापक है बट-बट में धाम्यात धाम्य सनाया हुया है परन्तु—
(धर्मयुक्त) विषये अपने धारी को, यम की बुद्धि को योगाधि में मही उपलभा धोर (धाम) कच्चा है, धाम्यात की धामि में मही तपा है (न तपसुते) यह धाम्य के उस पवित्र रक की मही चक सकता, (पुरुषत इद्वहन्त-स्तस्मात्तत) धाम्य तप योगाधि में मे कर गए हैं मे ही उसे धारण करते हुए धाम्यी प्रकार चकते हैं। ब्रह्मान्य पवित्र है, धर्मन केना हुया है, हमारे धारी के व्यापक है पर हम उसे विना तप के मही पा सकते। उपनिषद् कहती है तपसा तपः कुरु (युष्मक) बड़ा तप से पुना जाता है। कभीर बाह्य भी कहते हैं—

हृवक करे धिम विमल की
धोर गुन चाहे यम।
धोर रहे धिम पयनी
पुत न येत उपाध ॥
धर्मो विना कष्ट उठाए भगवात् से मिना मही हो सकता। धूरी धरमय कहता है—
उरं वायद कि धार धायव व किनार।
ई दीवते सतरद दशा कुरवा न दिव्य।
धर्मो ईश्वरयो सम्पत्ति हर फिरी की मही मित सकती। भगवात् के बर्धन पाने को बहुत समय चाहिए।

धनेकमयसिद्धिस्ततो याति परां शिष्यः।
(मीमांसा)

धनेक मय सिद्धि करनी होती है तब परमपति मिमकी है। सारास मही है कि विना तप किने धर्मवात् की मही पा सकते। परन्तु तप धाम्यमय होना चाहिए। साधन वह जो धाम्य तप पुरा है। धार साध्य तप मही पुरेधाता तो वह साधन धर्म है धोर पुरेधने वाले में, यदि साध्य व। सत्य मही है, तब भी साधन धर्म है। तप साधन है, ईश्वर धर्म साध्य है इसलिए ईश्वर प्रति को सत्य करने तप किना जाने धोर तप की मही विधि हो तो ईश्वर प्राप्ति मे साध्य हो धत धाम्यमय हो तप होना चाहिए, एक मनुष्य बाह्या है दूध केना धोर देना करता है को। उसके धम में मही मही परन्तु यह साधन साध्य के लिए ठीक मही। साध्य (युक्त की प्राप्ति) के लिए उसे भी की सेवा करनी बा है। एक मनुष्य भी धारीक यम करता है धोर एक पुरुषमान भी। पुरुषमान का सत्य है धर्मने धारीक धर्मवात् को गुप्त करना यात उसके यम गुप्त धोर सुष्ट हो जाते हैं। मनुष्य का सत्य है मनुष्यी पाना, यत मनुष्यी वा चमता है। इस लिए तप की विधि धोर सत्य साध्याने नुसार होना चाहिए। भारत मे किमवा धोर साधु लोग धाम्यमय तो बहुत उल्ले है परन्तु उल्ले धार्मिक काम गुन मही होता। धाम्यात धार का ठीक न होता तप के बर्धन मे योग बर्धन धाम्यातक मय धिम कहते हैं को। इद्वहन्त, इद्वह व विमल-विप्राते, स्वात्ताने, काष्ठीयोनकापोना व, उतापि चय यथायोग क्लृप्त धाम्यातधाम्यातपानाधि।
युक्त स्वान, स्वात, धात, काट के समान योन नहना, क्लृप्तधाम्यात धाम्यात प्रादि यत तप है।

श्रीलॉ का विशाल निःशुल्क शिविर

जाना दीवानचम्य मय्य सत्तामी के उसकस्य में दीवानचम्य द्रुष्ट द्वारा दीवान मय्य नसिम होय मदास होदर २ जून मन्थर मार्ग, मई विसवी-१ मे निःशुल्क नेत्र शिविर सनाया जा रहा है। १५, १६, १७ मार्च को प्रात ८ बजे से रोमियो की जाय होगी। धारपरम्य वाले रोमियो को उसी दिन धार्मिक कर किना जायगा।
नोकन दवायरी, धारपरम्य तवा कसे का मय्य सत् दीवानचम्य द्रुष्ट द्वारा किना जायगा। कुरुपा धर्मने विस्तर, नोकन के बर्धन साध कार्य।

निवेक
दूरपात्र १५३३३६
असोक मन्थरीवा

★ दयानन्द वचनामृत ★

मैंने धर्मार्थसमाज का उद्यान लगाया है। इसमें मेरी धन्यता मालो की सी है। पोषो में बाद भागते समय राख और मिट्टी मालो के खिर पर पड़ हो जाया करती है। भुम्र पर राख और हल बाड़े जितना पड़े, भुम्रें इसका कुछ भी ध्यान नहीं, परन्तु वाटिका हरी भरी बनी रहे, और निश्चिन्त फूलें फलें। □

सम्पादकीय

अनन्त

आर्य सन्देश
एक भारी षड्यंत्र

"भारत तरह तरह के फलबो से भर गया है, वह हलाक दोन हीन है, उसमें मोत का काला साया महरता नजर आ रहा है। हिन्दू बम ने हिन्दुओं में इस और-अन्य विषयात सवा सवा के लिए भर दिया है। हिन्दुओं के लाखों देवता हैं उनकी कोई एक समान पूजा पढ़ति नहीं है और वे बम के नाम पर रहता करत है। भारत की ६६ करोड़ जनता को दु सो और ज्यादा स मुक्ति पान के लिए ईसा मसीह का अनुयाया बन जाना चाहिए।" ये शब्द पठकर आपका कसा लगा है? इस स भी कटु उचित शब्द धर्मांतर के इर्वाकलक संगठन ने ५ जनवरी की भूयाक के अपने टेली-विषयन प्रसारण में कहे। दो घण्टे के प्रसारण में भारत की बहुसंख्यक जनता का जिस बद् रूप में प्रस्तुत किया है, उसके न केवल हिन्दुओं का बालक सारे हिन्दू बम का अपमान हुआ है, अपितु यह सारे भारत देश का अपमान है।

ऐतद्वाक्य धर्म के यदि देखा जावे, दुनिया में मुझा का उचित भूषणत ईश्वरपत से हा हुआ है। जितना अन्धविश्वास बाइबिल और ईसापत में है इतना शायद कहा हो। ईसाध्या ने जितना जून अपने हो बाइया (ईसाई) का बहाया है उतना उन्होंने दूसरे का नहीं बहाया। जितन सत्यकथन करने वाले, माटन, दुहर या क्लॉकन गवालयों, ब नो धार्मिक अननिहत लोगो का सतापित किया और मृत्यु के गाल में पड़वाया उतना पाप शायद हा किसी मजहब में कमया हो। हमारी धर्म निन्दा करने की नहीं है, हमारा उच्छ्रित ता 'यसुध्व कट्टमकम्' की उच्छ्रित है, जहा सारा भरता के दु सो को अपना दुख समझ जाता है। हमारी पावन वेद म्चा कहती है—

निश्चय यस्या सर्वाभि भूतानि समीक्षास्ते।

समस्त प्राणिमात्र को हम भिन्न की धर्म से देख। सर्वां भासा मय भिन्न भन्तु। सब अथाए हमारी भिन्न हो जाय। हमारी धर्म सस्कृति ने तो ईसाई बम, मुसलमान बम, हिन्दू बम का उपदेश ही है, महा तो कहा गया है—मनुष्य भेद, भिन्न भेद, अस्मानित सीख। इससे बड़ा बम और क्या हो सकता है।

इर्वाकलक संगठन ने अपने प्रसारण में बम की अपील की की है जो ईसाई मिशन के धर्म परिवर्तन के काम भाये। और बाप जानते ही है यह पैसा भारत में ईसाईकरण के लिए प्रयोग किया ही जा रहा है। इस बद्-धम्य से नागालैण्ड और मिशोरम, गोवा में ईसाईयत के बहुत से घा हो गया है। अथ उनका लख मण्डियुर, निपुरा, मेघालय तथा कार्लख का क्षेत्र पड़ता है।

भारत भारत सरकार ने तुलत ही कोई विशेष कदम नहीं उठाया तो भारत के अनुजो के नापाक इरादे बकर सफल हो जायेंगे।

भारत सरकार की चाहिए, आध्यात्मी, जनसाधो, गिरिजन सेवा भाष्य किता के नाम पर की ईसाई संगठनों की करोड़ों रुपया अनुदान दिया जाता है वह तुलत बम कर दिया जाये तथा इस प्रकार के प्रसारणों का विरोध किया जाये।

पब्लिक स्कूलों की संस्कृति

भारतीय परिवेश की उपजाऊ भूमि में पब्लिक स्कूलों का विकराल वृक्ष दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। इस वीषे का बीज अंग्रेजों द्वारा बोया गया, अंग्रेजों के मानसपुत्र तथाकथित उच्चवर्ग द्वारा पोषा गया। आज इस वृक्ष के कुफल भारतीय संस्कृति पर गिरकर सदाश पड़ा कर रहे हैं। कान्वेंट स्कूलों में बच्चों का पढ़ाना फंशन नहीं, मजबूरी का होता जा रहा है। मेरे एक परिचित की सुपुत्री का सम्बन्ध एक सम्प्रान्त परिवार से होने की बात चली, लड़के वालों में साफ-साफ कहा—'देखो जो लड़का सान्पट में पड़ा है, इतने हजार रुपये पढ़ाई में व्यय हुए हैं लड़को आ पब्लिक स्कूल की पढ़ी होनी चाहिए।' जहा विवाह सम्बन्धों में पब्लिक स्कूल से पढ़ वर वर को बड़ाया दिया जाता है वहां नौकरी में तथा समाज में पढ़-लिखे व्यक्ति की सम्म कहलाने का भी अधिकार मिलता है।

इसबब से दुरो, दुरी, विन्नेस्टर, रम्बो धार्मिक नगमण एक दर्जन ऐसे स्कूल हैं जो तथाकथित उच्च शिक्षा और सम्मता के जनक कहलाते हैं। ये स्कूल बेहद सचीने तथा भ्रमरखाहों के लिए सुरक्षित बने हुए हैं।

भारत में भी अंग्रेजों ने यही मूख खला प्रारम्भ की। पहले इनमें राज बस के समुत प्रविष्टि हुआ करते थे, उसके बाद वे व्यापारी वर्ग के अधिक भाग वाले व्यक्तियों के लिए सुरक्षित हो गये। आज भारत में व्यापित प्राण ये स्कूल सट बेवियर (कलकत्ता), सेट पावज (शार्जिन) ला मार्टिनेल, (लखनऊ) विश्व काटन (खिमता), सारिख स्कूल इनमे बड़े-बड़े राजबता, अभिनेता करोड़पतियों के बच्चे शिक्षा पा रहे हैं। इन पब्लिक स्कूलों में बच्चों को प्रवेश दिलाया भी किया जाता है। भारत भर में जितने भी विख्यात पब्लिक स्कूल हैं, अधिकांश ईसाधर्म के द्वारा ही संचालित हैं और इनमें पढ़ने वाले छात्र अपनी संस्कृति अपना धर्म अपने महापुरुष राम, कृष्ण धार्मिक तथा अपने पर्व त्योहार मूलतः जा रहे हैं। और एक दिन ऐसा आयेगा जब संचालने की नीति पूर्णतः सिद्ध हो जायेगी। उसके स्वन के अनु-सार ये भारतीय तन से भारतीय होने पर मन से पूर्ण ईसाई हो चुकेंगे। ईसाधर्म ने अपनी प्रचार योजना में मूलतः दो लक्ष्य रखे हैं, शिक्षा पर अधिकांश तथा भस्मतालों का प्रसार। आज उनकी यह योजना मूर्ततः प्रचार कर चुकी है। अन्धे भस्मताल, अन्धे स्कूल सब ईसाधर्म के हाथ में हैं, इनके माध्यम से ही वे ईसाईकरण में लगे हैं। भारत सरकार को इस समस्या को समझते हुए इन सबका राष्ट्रीयकरण कर लेना चाहिए। शिक्षा क्षेत्र में केन्द्र नीच का ये मिटाकर देख के वाली कलकत्ता का अभियन्ता उल्लख करना चाहिए।

धर्मसंघर्ष की कार्य योजना ईसाई, मुस्लिम तत्त्वों के बढते उत्तर-नाक पक्षों से अपनी संस्कृति और सम्मता को बचाना है। देश में भारतीय-तत्त्व बढते जा रहे हैं, इसका एक कारण यह भी है कि हम मजब नही हैं। स्वामी दयानन्द ने जिस शिक्षा पद्धति को सवार के सामने सलाह नौर-पूर्ण पद्धति है। उसके अपनाने के लिए हमें भरसक प्रयत्न करना चाहिए। महात्मा मुन्शीराम के सामने जब यह दुनीती भायो, घर में अपनी ही बच्चों को जब यह गाते सुना—ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोन। ईसा मेरा कृष्ण कहूँगा, ईसा मेरा राम रहेगा। उन्हें दिखायी दिया राम कृष्ण की उच्छ्रित गिरती जा रही है बस स्वामी दयानन्द की शिक्षा पद्धति के स्वन का एक धारस नमूना उच्छ्रित हरिदास ने मुकुल कागड़ी के रूप में स्थापित किया। जिसे देखने इत्येव के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री रेन्जे मंडानलक भाये, और देखकर अध्यापिक प्रशंसा की।

आज भाष्यकता है इस बात की, जितने स्कूल ईसाई खोलते जा रहे हैं, हम उनके मुकाबले पर उनी स्तर के वैदिक संस्कृति के भद्रक स्कूल खोलें और वही सुविधार्थ देवान करें।

—सुधापाल सुधाशु

तथाकथित विश्वविजेता सिकन्दर, सम्राट पोरस से

लेखक—पी० एन० श्रीक

धनुर्मासी घटनाओं में यह स्पष्ट हो जाता है कि उग्रसेन बाराहा भगवन्त एव न्यायप्रेमिय विभ्राजित हैं। गुजराती इतिहासकारों की पन्था यही रही है कि इस विषयगत कर प्रसन्न नयेष कूर ह्यथाभी शौर समुद्र समुद्र नगरिको का व्यवस्था सिकन्दर उस समय प्रत्यक्ष प्रकृतिगत हुआ था जब बन्दी बनाये जाने पर पोरस ने उससे निर्भीकता से अपने साथ राधा जैसा नववधवार करने को कहा था कि सिकन्दर ने न केवल उसे उसका प्रवेश उद्घाटनवाच बापव कर दिया था, अपितु अपनी ओर से भी कुछ और प्रवेश पोरस को द दिया।

“भीमपायी महाकाव्य का सम्पादन करने वाले श्री ई० ए० ब्रम्हो बेंब ने अपनी नूतन में सिकन्दर के जीवन और उसने विजय अभियानों का वर्णन समित्त किया है। उनका कहना है कि, “केवल के युद्ध में सिकन्दर की प्रथम सेना का प्रविष्टास भाग भाग गया था। सिकन्दर ने धनुष्य कर लिया था कि यदि मैं नवांश शरीर रज्जुवा, तो मुझे बच से अपना मांस कर दूंगा। घल उसने युद्ध बन्द कर देने के लिए पोरस से प्रार्थना की। भारतीय परम्परा के सत्यानुसार ही पोरस ने उग्रसेन, सन्तु का वचन मंजूर किया। तब रात दोनो ने एक संधि पर हस्ताक्षर किए। अन्य प्रदोषों को अपने आश्रयस्थान न करने के लिए पोरस की सहायता सिकन्दर ने की।

सिकन्दर ने पराजय के लिए भी बैब द्वारा दिया गया कारण यह है कि उसके युद्ध में अपने हथको शस्त्रों की सति से दुखित हो चुके थे। उन्होंने अपने शस्त्रमय देव दिश और अपने नेत्रों से शान्ति के लिए प्रयत्न करने की प्रार्थना की। श्री बैब का कहना है कि शान्ति की प्राप्ता करन समय सिकन्दर ने निवेदन किया था—भीमया पोरस! मेरे शत्रु का कर दीजिए। मैंने आपकी शूरता और शायस्य विरोधार्थ कर ली है। अब इन कर्मों को ही और अधिक सह नही सकूँगा। मुझे हृदय हो मैं अब अपना जीवन समाज करन का इरादा कर चुका हूँ। मैं नही चाहता कि मेरे सैनिक मेरे ही समान विचरते हों। मैं वह क्षपणका हूँ जिसने इन सैनिकों का कराल काल के माते में धकेल दिया है। किसी राजा को यह सोचना नही देता कि वह अपने सैनिकों को इस प्रकार मर्ते में मर्ते में धकेल दे।

धनुर्मासी घटनाओं द्वारा प्रस्तुत ऐसे न्याय साधनों के होन हुए भी इतिहासकार उपर्युक्त उद्देश्य की प्रविष्टास कहने और इसीलान उनका प्रसहयता करने के द्वारा यह पर धर हुए हैं। तर्क के लिए यह मान लेने पर भी कि उर्ध्वत उद्देश्य प्रविष्टास ही है तब यह प्रश्न करते हैं कि पोरस के लिए हा इरियस के लिए भी भाति कृत

माने सिकन्दर ने न केवल पोरस को जीवन दान दिया अपितु उसको बन्दी अवस्था से मुक्त किया उसको उसका समकूल राज्य सौदा दिया और वसुधावना वषा पुरकार रूप कुछ और प्रदोष भी मर्ते में द दिया। यह उनका ही अनुकूलितवृत्त है। जिसने यह कहना है कि किसी गुरुकार-वितरण-समारोह में सहसा प्रकट होकर अपना भीष तीव्र मति से झुझावस्था में हिलाने वाला उपकर विचर प्रकल्पात् होता है।

श्री ई० ए० ब्रम्हो बेंब का कहना है कि शान्ति की प्राप्ति कराते समय सिकन्दर ने निवेदन किया था—“भीमया पोरस! मुझे ज्ञाना कर दीजिए। मैंने आपकी शूरता और सामय्य विरोधार्थ कर ली है। अब इन कर्मों को मैं और अधिक सह नही सकूँगा। मुझे हृदय हो मैं अब अपना जीवन समाज करन का इरादा कर चुका हूँ। मैं नही चाहता कि मेरे सैनिक मेरे ही समान विचरते हों। मैं वह क्षपणका हूँ जिसने इन सैनिकों को कराल काल के माते में धकेल दिया है। किसी राजा को यह सोचना नही देता कि वह अपने सैनिकों को इस प्रकार मर्ते में मर्ते में धकेल दे।”

ही गुरुकारा हुआ धाकक राजकुमार

वन गया और गुरुकार वितरण करने

समा।

यही तथ्य, कि पोरस ने सिकन्दर से अपना प्रवेश कोने की सौदा कुछ होता ही था, प्रविष्टास करता है कि सिकन्दर ने न केवल शान्ति के लिए अपना वाचना की प्राप्ति यह भी कि उसका पराजय इतना गंभीर था कि उसे अपने कुछ भू सन भी पोरस को मर्ते करने पड़ें थे। इन गुणगुनी बर्णनों पर की विवेचना करते हुए कि सिकन्दर ने कुछ भू-प्रदेश जीतने में पोरस की सहायता की थी यह भी चिन्तक स्पष्ट है कि अपना चमक चिन्तक बुर बुर हो जाने पर सिकन्दर ने प्रत्यक्ष रूप भीषावस्था में पोरस का सहायक हो सेवा करवा लीकर कर दिया और भारत से प्रविष्टास कर प्रविष्टास होने क अवस्थक पोरस के सामय्य कुछ नू प्रदे जीतने का वचन दिया। यह हा सहायता है कि वह प्रतिरस्त भू प्रेश पोरस का ने जल नाज बना लाने वाले सत्यसा के राजा धामिक और राजनयिक-उपस्थापना बनाए रखने वाले अभिजात राजा रहा हो।

सिकन्दर का सामय्य प्राचीन भारत की प्रविष्टासक नीति-विचार से ठीक कर देता बुर-बुर हो गया था कि पोरस के साथ युद्ध के परमात् उनके सैनिकों ने अपने युद्ध करने से भाग इन्कार कर दिया। यह भी भाति चमका की जा सकती है कि जब पोरस प्रवेशा ही सिकन्दर और धामिक को मिली-जुली शान्ति कर के युद्ध में मिला नकता था ता सिकन्दर कभी भी मित्त नही से पार नहीं जाता यदि केवल धामिक की राष्ट्रप्रतिष्ठ और स्वायत्तिय पोरस के प्रति उनके ग्नु भाव की भाव न हो जाता।

राज्य पर हो जाता कि पोरस भी कर लेने के परमात् यह स्पष्ट है कि सिकन्दर की उन प्रदोषों से होकर जाने की अनुमति नही मिली थी, जिनको अपने पक्ष में बोधा था

यह विशिष्ट तथ्य भी कि धमिगारा ने सिकन्दर से मिलने से इन्कार कर दिया था सिकन्दर की पराजय का संकेतक है। बैसा कि बाबा किया जाता है, यदि वास्तव में सिकन्दर ने पोरस की शान्ति का परामय किया होता तो सभी तक तटस्थ रहते बाबा धमिगारा शान्ति बनाए रखने एवं मित्रता धर्मेन करने के लिए कटपट सिकन्दर के पास बैठकर बसा होता।

यह भी धमिगारा की प्राप्ति कराते समय सिकन्दर ने निवेदन किया था—“भीमया पोरस! मुझे ज्ञाना कर दीजिए। मैंने आपकी शूरता और सामय्य विरोधार्थ कर ली है। अब इन कर्मों को मैं और अधिक सह नही सकूँगा। मुझे हृदय हो मैं अब अपना जीवन समाज करन का इरादा कर चुका हूँ। मैं नही चाहता कि मेरे सैनिक मेरे ही समान विचरते हों। मैं वह क्षपणका हूँ जिसने इन सैनिकों को कराल काल के माते में धकेल दिया है। किसी राजा को यह सोचना नही देता कि वह अपने सैनिकों को इस प्रकार मर्ते में मर्ते में धकेल दे।”

श्रीक-इतिहासकारों के अनुसार तो हमें विचार्य कर लेना चाहिए कि सिकन्दर की सेनाएँ बिना प्रतिरोध के बिना किसी रोक-टोक के जेनाम तथा रात्रि नही पार कर गई थी। यह स्पष्ट रूप में प्रतीति है कि जब पोरस ने अपने सत्तावा सन्तु सिकन्दर को धामिक के उत्तरी प्रदेश और जहाँ से सिकन्दर के पथिक भी और बरस सौट जाने से रोक दिया था और पोरस ने विधान-सद्व्यवस्था अपने प्रवेश के मार्ग से सुरक्षित पले जाने से सहायता देने का वास्तविकता दिया था, यदि सिकन्दर बलिष्ठ भी और जाता।

पोरस का बोर से यह प्रत्यक्ष दूर-दृष्टिता का वह था क्योंकि यदि उनसे सिकन्दर को धामिक के सेनाधर्माधी और नवा से धपानानिस्तान जाने की अनुमति ले ली होती, तो बैसा कि अनुमति मुत्तिय प्रामथम्यकारिगरो से प्रनेक बार किया, बैसा ही सिकन्दर ने भी कृतपतापुत्रक धन्य धाकक करन के लिए सेना का पुन एकत्रीकरण किया होता।

यों ही सिकन्दर की सेनाओं ने रात्री नदी पार की त्यो ही भारत की द्वितीय सत्तावा पक्ति में अपना उद्देश्य दिखारा। पोरस ने अपने ही भू प्रेश द्वारा उनको सर शासक मुहूर-रचना में सम्यक कर दिया था। किन्तु उसे ज्ञात था कि हमारे वीर शान्तिवो द्वारा गुप्त समरदशा एवं उत्साह पूर्वक धारिष्ठि करन के धन्य भावों से भी मिक दर कल्पन नहीं जा सकता था। इतना ही नहीं, जब यह धन्य राते से लौटकर जाता तब उसकी बापसी पर उसकी गुरी चमकी बलाई जाती और बिस्व विजेता होना तो दूर उसे तो ब्रह्म-हाथ एवं धमिगारा का ये प्नु था सिवा जाता। यही धमिगारा था। यह इतिहास को यह वचन ही ध्यान रखना चाहिए कि एक परगुप्त सन्तु की धमिगारा पोरस का प्रमथान उस भारीय महात्मा नेता और राजनीतिक के कर्तुं धन्य विद्या बाला

उसकी सेना को बुर बुर कर दिया था, और निमेष कोशकृष्ण एवं धारिष्ठि-कर्ता के रूप में ही सिकन्दर को वाह बर नेत्रों के लिए बल्य कर दिया था।

रात्री और व्यास नदी के मध्य नाम में सिकन्दर की सेनाओं को धनेक विद्वत् सहायता सज्जी पकी थी। प्राचीन काल में पारसी सेनाएं इतनी साधनाएं एर उत्तम की कि वे किसी भी प्रकार का संरक्षण प्रतिरक्षण सहन नही करती थी। प्रत्येक नागरिक एक सैनिक था। राष्ट्र-धर्म का त्याग किसी भी प्रकार अप-वित्र बढायाम नही वे पाता था। व्यास के तट पर पड़ते पड़ते सिकन्दर के सैनिकों ने और अपने कोई भी बलाई न करने से बच इन्कार कर दिया क्योंकि सत्ताधारी होने के कारण उनको प्रत्येक एक पर रोका गया था। विद्वत् सरस्य प्रतिरोध किया गया था के भूले रहे थे, उनको पर की याद दृष्टाने सभी की सत-विशाल एवं युद्ध करने से बच पड़े थे। प्रत्येक युद्ध सत्र युद्ध के पोरस के साथ उनका युद्ध एतिया में बीषा एवं विचार्य महात्मा धर्म्य था। इसकी मयावह स्तुतिवा सेने लिए हृदयकवित कर देने वाली थी।

जिन मार्गों से सिकन्दर बाजस रहा था, उनमें उसका धायाम धमिगारा भी होने के कारण सिकन्दर के भूके मर्ते सैनिकों ने प्रस्तावना नागरिक-समुदायों को जूना चुक कर दिया। किन्तु इस तथ्य को ज्ञानी सलामों ने इस बल्य शक का प्रयास कष्टक स्तुतुत किया गया है कि पोरस के सत्ताधर्मिक धायाम के परमात् और धमिक प्रदोष का जीवन एवं दूर का मात एक कर देने के लिए सिकन्दर बलिष्ठ और युद्ध युद्ध था।

सिकन्दर जिन भी प्रमथक काल के मार्गों से बाजस था। प्रत्येक काल पर उसकी शोचनीयताका भी प्रत्य सेना के धमिगारा बर्ण पारसीवो द्वारा दुष्टुर्ध्म धामिगारा भुषमर्ती एवं रोमी न बल्य होकर सत्ता में कम ही कम होने था।

इस भाषणी के समय सभाजी नामक एक भारतीय जन धामिगारा सिकन्दर के मुताबी रासनी मुकुम का कदा मुकुमना किया। इनमें होने वाली धमिक मुठभेदी में सत्य सिकन्दर भी भाग्यवत था। एक समय में तो उस क टुकड़-टुकड़े कर लिए जाने वाले थे। प्रदृष्टास ने उसेव किया है “ भारत में धर्म्य धमिक बल्लार सत्तावा जालि सलामी कोने के द्वारा सिकन्दर की हेतु क टुकड़े-टुकड़े होने ही वाले थे धमिगारा छाटी टो टुकड़ी और स्वर-धमिगारा की ही दत बर्च कोनों के हीर-धमिगारा के मयावह सलामी से परेशान पाकर यह दत स नी के प्रथम में बूट पड़ा। उन कोनों में हाथापाई तक से धमिक धामिगारा किन्तु। एककी कर्तुं धमिगारा

आर्यसमाज के पुराने साहित्य सेवी पं० बद्रीदत्त शर्मा जोशी

डा० भवानीलाल भारतीय

पत्रकार और लेखक पं० बद्रीदत्त जोशी का जन्म १८६६-६७ ई० (१९२५ वि०) में काशीपुर जिला नैनीताल में हुआ। इनके पिता पं० मुखोत्तम जोशी ब्राह्मण साहित्य एवं ज्योतिष के प्रकाशक विद्वान् थे। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा बद्रीदत्त जी को अपने पिता से ही मिली। पर १२ ही उमर का कारखी शिक्षण भी हुआ। १८८१ में वे मुरादाबाद जाते और वहीं की संस्कृत पाठशाला में प्रविष्ट होकर उन्हीं व्याकरण एवं साहित्य का प्राप्ति अध्ययन किया। इस पाठशाला में प्रवेश के समय उनकी आयु मात्र १५ वर्ष की थी। यहाँ उन्हें पं० भवानीलाल जोशी से रचना का प्रयोग प्राप्त हुआ। जो भगवत युग के धर्म्य ब्रह्मचारण थे। उनके धाराधन विषयों में प्रसिद्ध पत्रकार पं० पणसिंह वर्मा तथा सुप्रसिद्ध सत्ताधनधर्मी विद्वान् पं० ज्ञानाप्रसाद मिश्र की थे। स्व० साहू व्यामसुन्दर की प्रेरणा से जोशी जी धर्म्यसमाज में प्रविष्ट हो गए। जब पं० खडकत वर्मा धर्म्यसमाज मुरादाबाद के उपदेशक पद की त्याग कर कलकत्ते प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक भारतमित्र के सम्पादक बन कर चले गए, तो उपदेशक का पद पं० बद्रीदत्त जोशी को मिला। धर्म्यसमाज मुरादाबाद का प्रांशिक मुक्त पत्र धर्म्यसमाज का सम्पादन भी कुछ काल तक उन्होंने किया था। जब धर्म्य प्रतिनिधि समाज पत्रिकागण प्रवेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की स्थापना हुई और मुन्नी नारायण प्रसाद (महात्मा नारायण स्वामी) को इस समाज का मन्त्री बनाया गया, तो पत्रिका बद्रीदत्त समाज के कार्य में भी मुरादाबाद रहत हुए सहयोग देने लगे। उन दिनों समाज का कार्यालय मुरादाबाद में ही था। यह स्मरणयोग है कि मुन्नी नारायण प्रसाद के हृदय में धर्म्यसमाज के प्रति आस्था के बीज का बलन करने का तथा उनका उपनयन उत्कार कराने का भी जोशी जी ही थे।

१८९० से १८९६ तक पं० बद्रीदत्त जोशी ने धर्म्य प्रतिनिधि समाज के उपदेशक पद पर कार्य किया। इन वर्षों में उन्होंने अनेक भाषणों किए तथा अनेक स्वामीयों पर धर्म्यसमाज में स्थापित की। मुरादाबाद में सत्ताधीन राजत गोकुलचन्द्र से मिली-पुजा पर उनका प्रसिद्ध भाषण भी हुआ था। १८९६ में धर्म्य प्रतिनिधि समाज में त्यागपत्र दे दिया और नेरठ कालेज सोसायटी में चले गए तथा संवत्सर पाँच वर्ष तक ऐंठो वैदिक स्कूल जी० ए० जी० कल-

पुर का (पुराना रूप) में वर्षवारस के धर्म्यपाठ रहे। जी० ए० जी० कालेज बेहारापुर के स्थापक मुखी ज्योतिषस्वरूप धारा हुआ भाव रखते थे। १९०१ में जोशी जी नेरठ से धर्म्यर धर्म्य और वैदिक मन्त्रालय में सन्त मन्त्रालय का कार्य करने लगे। तीन वर्षों तक बाह्य राज विद्यालय के मार्गदर्शन में कार्य करने के उपरान्त वे पुन नेरठ जा गए।

१९०५ में प्रसिद्ध टिहरी वास्पाईं हिंदी महाभाषा बीमान् कीर्तिदाह महा-पुर के निगमण पर हुआ। टिहरी वरस में धर्म्यसमाज के नेता मुखी ज्योतिष-स्वरूप को धर्म्य विद्वान्स्वरूप के साथ वास्पाय हेतु धामजित किया। तब पं० खडकत जोशी महामहोपाध्याय धर्म्य मुनि पवित्र तुलसीराम स्वामी धर्म्यसमाज के प्रबन्धका के रूप में धर्म्यजित हुए। १३ दिन तक यह शास्त्रार्थ महाप्राज्ञ के सभा-पत्रिक में सम्पन्न हुआ सत्ताधन धर्म्य के प्रबन्धका रायबहादुर पवित्र धर्म्यजित तब तथा बाह्यर सत्ताधन धर्म्यसमाज के पवित्र गादुरान वास्पाईं थे। इस घटना के पश्चात् जोशी जी कागपुर चले जाते और जी० ए० जी० कालेज सोसायटी की ओर से धर्म्यप्रचार करने लगे। प्रचार हेतु अब उन्हें महाप्राज्ञ धर्म्य तथा बिहार प्रांशिक आलोच के सुप्रसिद्धों में भी बना पड़ता था। कागपुर की जी० ए० जी० कालेज सोसायटी के सत्ताधनधन में प्रकाशित होने जाते धर्म्य सत्ताधन उर्ध्व मासिक का सम्पादन की धारण सत्ताधन ८ वर्ष तक किया।

१९१३ में जोशी जी कागपुर से पुन मुरादाबाद चले आए और धर्म्यसमाज के प्रचार तथा धर्म्य लेखन के कार्य में जुटे रहे। १९१६ में धर्म्यसमाज के जी० ए० जी० आस्थाधर्मी प्रेत में यह महाप्राज्ञ के सत्ताधन का कार्य किया। १९१७ में इसाहाबाद जाते और हिन्दी प्रेत में कार्य करने लगे। कागपुर में मुद्रित्व स्थित कन्सा पाठशाला में धर्म्यपाठ बन गए। यहाँ आठुर ब्रह्मसमाज सिंह जी प्रेरणा से धारणते विषया विद्याह के सत्ताधन में एक मुक्तक सिद्धी जिस पर धारणों एक सत्ताधन रूपों पारितोषिक स्वयं आठुर साहू में प्रदान किए और स्वयं से मुक्तक की तीन हजार प्रतियां छपाईं। १९२० में जोशी जी मुरादाबाद चले जाते। पं० खडकत वर्मा की सत्ताधन प्रेत में प्रकाशित होने वाले संस्कार का सम्पादन करने लगे। १९२५ में मुरादाबाद की सत्ताधनधर्मी

आर्यसन्देश विशेषांक

२५ मार्च धर्म्यसमाज स्थापना दिवस पर धर्म्यकल्पे का हम स्मरणीय सप्ताहणीय विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं। विद्वान् लेखक अपने लेख निम्नांकित विषयों पर लेखने की कृपा करें।

- १ स्वामी धर्म्यसन्देश में धर्म्यसाहित्य क्या? को महान् वेत ही है।
- २ महर्षि धर्म्यसन्देश धर्म्यसमाज तकनीकी के पोषक एवं वैज्ञानिक है।
- ३ भारतीय समाज के बाहराल में धर्म्यसमाज का योगदान।
- ४ धर्म्यसमाज क्या बाह्यता है?
- ५ हिन्दी भाषा के उत्थान में धर्म्यसमाज की भूमिका।
- ६ वैदिक धर्म्यसाहित्य।
- ७ धर्म्यसमाज की धर्म्यसमाज की लेखनी परम्परा में धर्म्यसन्देश।

लेख लेखने का पत्र—

सम्पादक—धर्म्य सन्देश साप्ताहिक
१५, हुन्नाम् रोड, नई दिल्ली-११०००१

कैसे होली आज मनाएं ?

—राधेधाम धर्म्य विद्याभ्यासप्रति
मुद्राफिर बागा, मुद्रावागपुर (३०३०)

युव रहा है जहाँ धर्म्य हो
मानवता का क्रन्दन,
होता जहाँ निरन्तर नियमित
दानवता का, पशु प्रवृत्ति का
कलुषित-कुटिल-कृमार्थ-स्वार्थ का
स्वागत व धर्म्यनन्दन,
होता नहीं मनुजता का
सुचिता का, समरसता का,
संस्मृता का स्यन्दन,
जसम जलता हो, जलती हो
पञ्चनदी की धरती,
धर्म्यसमाज का यह वेस जल रहा
भारत माँ की पुण्य धर्म्यसत्ता
जलती हो निधि-वासर,
होता हो
मुन्यरी, गरीबी, सहर्षाई का
टाढव नर्तन
अष्टाचारो का फेला हो
जल धर्म्यनन्दन-विवर्तन,
जहाँ सरे बाजार
नारी की अस्मत् लुटती हो
नव सधुर्षों की जहाँ बलि की
हृदि चढती हो
बहि धाज हम
कैसे—
होली का त्योहार मनाएं ?
देस जल रहा, जलती है मानवता,
फिर—
क्या होली धाज जलाएं ?

संस्कृत पाठशाला में धर्म्यपाठ करने। १२ वर्ष पश्चात् १९२७ में प्रेत विद्यालय लाठीवेत में सत्ताधन धर्म्य स्वीकार किया। पश्चात् मुद्रावाग महाविद्यालय व्याख्यातुर से तीन वर्ष तक यह धर्म्य-पाठ कार्य करते रहे। बीच में वेड बनें तब (१९२५ के वर्ष डक) पुनः काँचें के पत्र

कर व्याख्यातुर का बने। स्वयं धर्म्य पश्चात् मुरादाबाद चले गये और वहीं सन्धे लेखन कार्य में संलग्न रहे। १९४६ ई० में ८३ वर्ष की आयु में साधका निधन हुआ।

आर्य जगत् के समाचार

दिल्ली की आर्यसमाजों के नाम अत्यावश्यक-परिपत्र

आर्यसमाजों का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९८३ को समाप्त हो रहा है। आप ३० अप्रैल १९८३ तक निम्नलिखित विवरण तथा वार्षिक तथा कार्यालय के निवृत्ताने की कृपा करें।

- १ १ अप्रैल १९८४ से ३१ मार्च १९८३ तक का वार्षिक विवरण।
- (अ) यज्ञ संस्कार, मुद्रियाँ, प्रत्यक्षीय विवाह, दिन के समय धाराधारण रीति एवं बिना सहज कराये विवाहों का तथा समारोहों का विवरण।
- (भा) समाज के अधीन चल रही संस्थाओं, विद्यालयों, चिकित्सालय, मुक्तकाल्य सेवा समिति आदि का विवरण।

२ १ अप्रैल १९८४ से ३१ मार्च १९८३ तक धाम धर्म विवरण।

३ सर्वस्यदा मुक्त का वशात वेद प्रचार मूलनम १०१ रुपये और धर्मसन्देश का वार्षिक मुक्त २०/- रुपये।

आशा है कि आप समयवशात कामवाही करते सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे।

निवेदन— डा० कर्मपाल

महामन्त्री दिल्ली धर्म प्रतिनिधि समा

आर्य केन्द्रीय मभा दिल्ली की मासिक बैठक

आर्य केन्द्रीय मभा की धामानी मासिक बैठक आर्यसमाज मन्दिर मार्ग टाउन दिल्ली-६ म १० मार्च १९८३ को अपराह्न ४-०० बजे धर्मसमाज स्थापना विषय (२२-३-८३) के धायोजन के सम्मन्ध में विचार करते हेतु आयोजित की गयी है।

आपने विमर्श प्रजुरी है कि इस बैठक म पचार कर अपना पुर्ण सहयोग प्रदान करें।

महामन्त्री—सुखदेव

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज विरसा साइलस का वार्षिकोत्सव १८ फरवरी से २४ फरवरी तक पूरबाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री व० रामकिशोर वैद्य की वेद कथा हुई। तथा श्री व० हरिविन्ध, आचार्य गुरुकुल गीतन नगर द्वारा साम्प्रैय पारायण यज्ञ हुआ।

मन्त्री—बलकृष्ण शर्मा

अनाथ महिला का विवाह

३२-०३ को धर्मसमाज समस्तीपुर के सखाप ने २४ रही एक अनाथ कम्पा अजमा कलवती का विवाह सरकार श्री माल बाहु सिंह धाम वाली पुत्र बिना समस्तीपुर के साथ बड़ ही भूमधाम से सम्पन्न हुआ। समस्तीपुर की वनवा रा धर्मसमाज के इस रचनात्मक कार्य का बहुत प्रभाव पड़ा है।

मन्त्री—नवल किशोर

वैवाहिक विज्ञापन

२८ वर्षीय, गुरुकुल लासक, एम० ए० हिन्दी, सहाज, धर्म प्रचारक तथा निजी कारोबार में यच्छी धाम (बात दातीय) बर के लिए एक दुयोगा धर्म सुभार कम्पा चाहिए। सहेज एवं बात बनन नही।

पत्र धर्मधार का पता—

श्रीबाराज साहनी
धर्मसमाज मार्ग टाउन
सोनीपत (हरियाणा) १३१००१

भाषण प्रतियोगिता का पुरस्कार

आर्य मुक्त परिषद (रवि० दिल्ली) के सत्याग्राम ने वृद्धि बोध उत्सव के शुभ अवसर पर 'राष्ट्रीय धाम का योगदान' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कीला फिरोजशाह नई दिल्ली में महात्म कर्मपाथ की (प्रधान धर्म केन्द्रीय सभा, दिल्ली) की अध्यक्षता में आयोजित से सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में २३ धर्म संस्थाओं के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया जिसमें सर्वश्रेष्ठ पाठ्योपेक्षक व 'सत्यप्रिय वन 'विजयोपहार' धर्मसमाज कोभी रीड के छात्र राजू विद्यानिक ने प्राप्त किया।

उसी वनता बन्धो को उत्साहपूर्वक पुरस्कार स्वल्प हीन ही ६० का वैदिक साहित्य परिषद् द्वारा एवं एक हजार रुपये की नगद राशि सभा ने उपस्थित धर्म जनता द्वारा विवरण की गई।

—कमल किशोर धर्म

आर्यसमाज की कृपा

आर्यसमाज सीताराम बाजार के मन्त्री श्री बाबू राम गुप्त के पास २३ फरवरी ८३ को मोल डाकखाना गई दिल्ली में बैठा था। वे महा सविस्मृत पोस्टमास्टर हैं? अमानक उनके कपरे में उन के पोस्टमास्टर की सेवा सिंह धाम बिना स्थापनास्तर उसी दिन बन्दई ने हुआ था। उनके साथ तय पोस्टमास्टर की थे।

मुझे क्षम्य प्रसन्नता हुई जब दोनों पोस्टमास्टरों ने स्लेड-रिटिड से गुप्त की की सेवा और की सेवा सिंह ने मुस्कराते हुए उन्हें एक प्रसन्नता दिया जिस ने डा० पो० मास्टर के तौर पर उन के मित्रातुर्बक कार्य की सहाता बहुत सुभार बन्यो में की गई थी।

मैंने उस पत्र को पढा और गुप्त की की बधाई दी। उनका केवल यही कह था कि 'यह सब धर्मसमाज की कृपा है, उस मा की ही यह एक बड़ी जिज्ञा है कि आपने कर्तव्य का पालन कम समय कर की-जाय से करो।

श्रीमप्रकाश, त्रिचिपस

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-२ का वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज अशोक विहार (गुरुकुल) फेज-२ का वार्षिक निर्वाचन वित्तीय २४ फरवरी ८३ को धार्या की वीरनाथ जी विद्यामालकार की अध्यक्षता में सर्व सम्पत्ति से निम्नलिखित प्रकार से सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री पी० एन० खरीन

मन्त्री—श्री अशोक बचन

कोमाध्यक्ष—श्री बलदेव राज सचदेवा

अमरता सदस्यो के पुनरे का अधिकार प्रदान की की सभा ने प्रदान किया।

मन्त्री, आर्यसमाज अशोक विहार, फेज-२

वार्षिक यज्ञ, उत्सव

सम्पन्न धाम धामतय वैदिक सत्याग्र धाम, धामतय मगर, धामिधाम २८ वार्षिक यज्ञ यज्ञोत्सव विनाक ७ धर्म रविवार से १४ अप्रैल १९८३ रविवार तक यज्ञोत्सव धर्मोपेक्षक धामोपेक्षक किया गया है जिसमें उच्चकोटि के मित्रान, सन्तारी व अमरगोपेक्षक वधार रहे हैं।

—श्यामी प्रेमनाथ सरस्वती

वार्षिक चुनाव

आर्य मुक्त परिषद् (रवि०) दिल्ली का वार्षिक चुनाव १७ मार्च, १९८३ रविवार को धर्म समाज वीरनाथ हाव, बावनी पौक, दिल्ली-६ में सम्पन्न हुआ।

—कमल किशोर धर्म

आर्यसमाज गंगारज प्रयाग का वार्षिकोत्सव

इस धर्मसमाज का वार्षिकोत्सव १३ मार्च से १० मार्च तक होने का रहा है। इस अवसर पर धर्म विद्यालय, धामक पचार रहे हैं।

मन्त्री—विमलकुमार सिंह

मजिल्द मय के प्रचारार्थ

मजिल्द १००/ सैंकड़

मजिल्द ५००/ सैंकड़

मृत्यार्थ प्रकाश

यह घर पहुंचाए

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध संस्करण वितरण करने वालों के

अमर मजिल्द ७/ अजिल्द ५/ लिख प्रचारार्थ

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

५५५, टायरी बांदली, दिल्ली-६ दूरभाष: २३८३६०-२३३११२

आह्वान

—स्व० कुंवर बुललाल धर्म्य मुसाफिर

गफलत में क्यों रहे हो भारत के भी निवासी।

जानो हुआ सबैरा हिन्दुता के जनालो।

हुमिया की रैर कोये बेसो तो कहा पहुँची।

फिर अपनी दुहा पर हुम इक तवाह् हासो ॥

● सब मानिये कि नेसन पत्र में उठ उठो हो।

हुम इसको उठाने का बीजा बयर उठा सो ॥

फूट और अविद्या ने घबेर मचाया है।

इन मुसलों को अपने घर से धरती निकालो ॥

पलायन की चट्टानें बढने लगी हैं।

क्या देखते हो इनकी निज बुल के पीछ हासो ॥

मीच और चपुत कह कर दुकरा रहे हो जिनको।

भारे हैं वे तुम्हारे इनको गले लगा लो ॥

धन्य हो तुम किसी को मिले न तो 'मुसाफिर'।

गमती से बयर कोई फिर जावे तो उठा लो ॥

बोधोत्सव एवं यज्ञ

धर्मसमाज पब्लिशर विहार द्वारा २४ फरवरी १९८२ को 'अभि बोधोत्सव चतुर्थ' (सप्तक) एक पाचवी महायज्ञ के साथ यज्ञी पुनर्वास में मगना गया। यज्ञ के बहाना माता बाबा राणी की बी व यज्ञ के सरोजक की भरत सिंह कुल था। उन्होंने ४ पुनर्वासियों को यज्ञवास बनाया। इस बख्तर पर समाज के प्रधान श्री हीरालाल भावसा ने 'अभि बोध सन्ध्या' विषय पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् 'अभि सवर' का भी प्रायोगिक किया गया था।

हरिपति बखर

A १/११० पब्लिशर विहार, नई दिल्ली-१३

निर्वाचन सम्पन्न

धर्म केन्द्रीय तथा पुष्पगोष्ठी का साधारण अधिवेशन १७-२-८२ को धर्मसमाज भीमनगर, मुम्बई में हुआ। इस के वर्ष १९८२ के लिए निम्नलिखित अधिकारियों का चुनाव श्री श्रीरत्न दीवान की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री मुन्शीराम सबवेरा

उपप्रधान—श्री सत्यनारायण धर्म्य

महासचिव—श्री कन्हैयालाल धर्म्य

संघी—श्री श्रीमन्मोहन राजवाड़ा

कोषाध्यक्ष—श्री विद्यापुष्प शास्त्री

सचिव—श्री दीनलाल देवा

सेवा निरीक्षक—श्री हरिहर बाली

इस अवसर पर धर्मसमाज भीमनगर, मुम्बई की ओर से सहयोग का धारो-मन हुआ।

निरीक्षक

कन्हैयालाल धर्म्य

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेंद्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या—यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनोपदेशको—

सत्यपाल पंडित ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयूष, सोहनलाल पंडित, शिवराजबती जी के सर्वोत्तम भजना ४ संग्रह तथा ५ बृहदेव विद्यालंकार के भजनों का संग्रह।

आप समाज के अन्य भी बच्चों में संग्रह के सचीपत्र के लिए लिख

कुन्दवीरम इनवर्शन (इण्डिया) प्रा. लि.
14 भक्ति 11 फस 11 अशाह विहार दहली 52
फोन 7118326 744170 टैलेक्स ११-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट तथा कार्यालय १३ हुनुमान् रोड पर ना उल्लेख है।

दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



23 जडी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

दांतों का खटकर



अस नये पैकिंग
में उपलब्ध

महाशियां ही हट्टी (प्रा०) लि०

B/A-4 इण्डियन एरिया कीर्ति नगर, नई दिल्ली 15 फोन 538608 537987 537341



मसुहो की मुख



मुह की दुर्गन्ध



उष्ण गर्म पानी लगाना



दात का दर्द

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons



Paris Beauty
पेरिस ब्यूटी

**गोवर
सन्स**

ब्रा पेंटी बनियान अन्डरवियर व बेबी पेंटी आदि



पेरिस ब्यूटी सैलून क्लॉसेट

2665-ए/2 बीकनपुरा अजमेर नगर रोड
कलौली बाग नई दिल्ली-११०००५

आर्य जगत् की शान
२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आचमदेव अधिनियम जी० ८० के
अनुरोध कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी आर्य घमथ नेत्र चिकित्सालय,
बी-१ जनकपुरी नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
कित किए जाएंगे।

निवेदन

१	२	३	४
महाशय वसुधा	श्रीमप्रकाश बाबू		
बल्लो	प्रधान	मन्त्री	
लिनिधि	आय केन्द्रीय	महाशय पुष्पलाल	
१	समा	के० ३०	

द्वि प्र० लिमिटेड ६/४४ कोतनगर

१६ नव, नई दिल्ली-११००१

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बनें, और बनाएं

क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) आर्यों (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं की याद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आरम्भ चेतना जागृत करती है।
- (४) भारतीय संस्कृति के मूल बिसरे प्रसंगों, महापुरुषों तथा भावार्थ संस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (५) ऋषि, मुनि, तपस्वी आत्माविद्वानों की वाणी का बोध कराती है।
- (६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का प्रौढनीपयोगी मञ्जरु सन्देश लाती है।
- (७) नये लेखकों कविओं, चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों साहित्य लेखियों को प्रोत्साहन देती है।
- (८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मनविष को प्रकाशित करती है।
- (९) वेद उपनिषद्, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र, धारण्यक ब्राह्मणग्रन्थ, रामायण, नीति, ऐतिहासिक, अमूल्य आर्य ग्रन्थों पश्चिकाक्ष लोगों में पढ़ा दी क्या देखा जो न कबगत् को जिन ग्रन्थों पर सदा गर्व होता हूँ सप्ताह बटोर कर आपकी

पटना धार्मिक चन्दा २० रु०

महर्षि दयानन्द निवास

सम्बन्ध मनोहारी स्था-

आर्य सन्देश

उ. न. ११ स्थ

ग. क. ११ डी फा

हरिद्वार की औषाधया

सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,

फोन २६६८३८

बाबडो बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा १५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ ज्ये. ११०१६० के लिए की जा-कर्मपाल द्वारा सम्पादित एक प्रकाशित तथा
वैदिक वेद, गली नं० १७, केदारनाथ, दिल्ली-११ में मुद्रित। रवि० नं० डी० (सी०) ७५६

आर्य सन्देश

ओड़म्

कृष्णन्तो मिश्रमार्गम्

विषय विचर

दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सूचना एक प्रति ५० पैसे

बर्ग ६ पत्र ६७

रविवार, १० मार्च, १९२६

पार्सल नम्बर १६६०५३०५४

फाल्गुन २०४१

वर्षाभ्यास—१६०

पंजाब का उपेक्षित हिन्दू और अकाली नेताओं के तेवर

सत लोंगोपाल के साथ सात धर्म्य अकाली नेताओं की जिद्दों पंजाब समस्या हल करने में सहयोगी बनने हैं। लगभग सभी राजनैतिक वर्गों द्वारा स्वागत भी किया गया है, परन्तु अकाली नेताओं के तेवर इसी बदले नहीं हैं। शिरो-मणि प्रबन्धक इन्द्रेजी के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री प्रेमसिंह लालपुरा ने अपनी मार्ग पुनः दोहराई हैं। जब तक वे सात मार्ग पूरी नहीं होती, उनका अल्टीमेटम बरकरार है। उन की मान्य है—अभी अकाली नेता जिद्द किसे जम्मे। अखिल भारतीय सिख

छात्र फेडरेशन पर से प्रतिबन्ध हटे। उन सिख संस्थानों को फिर से गृहल किया जाये, जो स्वर्ण मन्दिर में सैन्य कार्यवाई के दौरान अपनी बंदूकों से जोश में बाहर निकल आए थे। अकाली दल की तदर्थ समिति के अध्यक्ष श्री सुरजन सिंह उकेदार का कहना है—पंजाब और अन्य स्थानों पर गिरफ्तार अकाली नेताओं और सिख युवकों को रिहा किया जाए, विशेष न्यायालयों की समाप्ति हो, पंजाब में काला काजून समाप्त हो।

दूसरी ओर १३ मार्च से २७ मार्च

तक दिल्ली में धाल इम्पिया सिख कांफ्रेंस ने “विरोध विवस” मताने का निश्चय किया है। वे दिल्ली दलों में मरे लोगों को न्यायिक जांच के लिए २७ मार्च को रोट क्लब पर करना भी चाहे। विस्मय की बात तो यह है इन अकाली नेताओं का बयान भी झटल नहीं है। लगता यह है कि इनके पीछे उग्रवाद की शक्ति अधिक प्रभावी है। जब तक उग्रवाद को सत्ता से नहीं दबाया जाता और शांतिप्रिय नेताओं को विस्थापन में नहीं लिया जाता समस्या का समाधान सम्भव नहीं।

पंजाब में गैर सिख या हिन्दू ५० प्रतिशत से कम नहीं हैं। सिखों के आश्रय से अधिक नामावरी, निर-कारी, उदासी, रामास्वामी बनई सिख, राम गडिये और कम्पुनिस्ट सिख अपने को प्रलय कीम नहीं मानते। इन सबको मिला-जुलाकर ही बहुसंख्या है। ये सब हिन्दू समाज के प्रथम हैं। प्रो. सरकार को चाहिए कि अकालियों से बातचीत करते समय पंजाब के हिन्दू प्रतिनिधियों को शामिल किया जाये तभी समस्या का सही हल सामने आ सकता है।

देश में प्रजातंत्र और उसका हृदय ठीक कार्य कर रहा है

विधानसभा के निर्वाचन में अधिकतर राज्यों में कांग्रेस (बाई) की सबसे लोकप्रिय विधा, जो इस बात को प्रकट करता है कि देश की सामान्य जनता ने राष्ट्रीय एकता और अलख्यता को ही इस चुनाव का भी मुख्य मुद्दा माना है। परन्तु साथ ही जिन राज्यों में जनता ने यह समझा कि कांग्रेस (बाई) का स्मिर विकल्प है वहा पुन विरोधी दलों को अवसर प्रदान किया। इससे बहु निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देश में प्रजातन्त्र और उसका हृदय ठीक स्थान पर है। इन चुनावों ने पुन यह दर्शाया कि विषय में सबसे परिपक्व लोकतन्त्र भारत में ही है।

साथ ही यह भी सिद्ध कर दिया कि चुनावों में जनमानस का स्वागत ही सर्वोपरि होता है। चुनावों में प्रयुक्त प्रचार साधन धार्मिक की बात गीए हैं। जनता नये सिरे से देश का पुन-निर्माण चाहती है, यह भी अवस्थित है। पिछले लोकसभा निर्वाचन के उपरांत युवा प्रजागमनी माननीय राष्ट्रीय बांधी ने प्रशासनिक एवं न्याय व्यवस्था का सुधार, काले धन पर आधारित समानांतर धर्म्य-वस्था की समाप्ति, पड़ोसी देशों से स्पष्टवाचिता एवं विरोध पक्ष की धार देने सम्बन्धी जो घोषणाएँ की जनका बहुत व्यापक प्रभाव हुआ। प्रपति के धनक कार्यक्रम समग्रद

क्ष से चलेंगे, ऐसा विश्वास प्रकट किया गया। ३५ वर्षों में दलबन्धन रोकने का प्रभावकर उपाय नहीं हो सका। वह एक मार्ग के अन्दर ही दलबन्धन विरोधी कानून के रूप में सामने आ गया, जिससे लोकतन्त्र की मर्यादा की रक्षा की जा सके। इस विषयक के पारित होने से विरोधी दलों की भी अधिक लाभ होगा, जिनके विधायक सत्ता पक्ष की ओर सजता से धारणित हो जाते हैं। पत्रकारों की स्वतन्त्रता से भी लोक-धर्म्यव्यक्ति को बढ़ावा मिलेगा। पर साथ ही पत्रकारिता के लिये पीत पत्रकारिता से भी बचना चाहिए।

केन्द्र सरकार को उपरोक्त प्रगतिशील एवं जनहितकारी नीतियों ने जनमानस को प्रभावित किया और उसका परिणाम विधानसभा चुनाव परिणामों के रूप में सामने है। निःसन्देह बहुमत ने पुन भी राज्यों बांधी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त किया है। इस सर्व में एक विचार-शील बात जरूर है। वह यह कि चुनाव इतने सहज हो गए हैं कि ६६ प्रतिशत लोग चुनाव नहीं लड़ सकते। इस प्रश्न पर अवश्य विचार होना चाहिए धर्म्यका धाम जनता की चुनाव-प्रक्रिया में दिलचस्पी नहीं रखेगी, जो जनतन्त्र के लिए घातक होगा। —डा० आनन्द प्रकाश

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस

२४ मार्च, १९२६ को आर्यसमाज मन्दिर मालवीय नगर में प्रातः ८ बजे से १ बजे तक आर्यसमाज स्थापना दिवस बड़ समारोहपूर्ण बनाया जा रहा है। प्रभूक उच्चकोटि के विद्वान् एवं नेता पचार रहे हैं। इस अवसर पर श्रद्धा लयन का भी आयोजन है।

—रामसरन दास आर्य, अभी

स्थापना दिवस पर प्रसाद वितरण

आर्यसमाज छात्राधार भाग की ओर से मुंगी मोपदी कालोनी में प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक वेद प्रचार एवं मिथुन वितरण का आयोजन किया गया है।

—डा० रघुवीर “कुमुद”, प्रचार

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के उत्सवाधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस का भव्य समारोह

२४ मार्च, रविवार को २ बजे से ५ बजे तक विद्वान् भाई पटेल हाउस रफी मार्ग नई दिल्ली के प्राणल में ब्रजभाष में बनाया जा रहा है। इस अवसर पर बनेक गन्ध-माय्य प्रतिष्ठित विद्वान् एवं देश प्रसिद्ध नेता पचार रहे हैं।

अध्यक्ष—श्री रामगोपाल शालभासे

वक्ता—श्री बंन भुवि सुधील कुमार, श्री सोताराम केसरी, श्री रामचन्द्र ‘बिक्क’, श्री ५० सिद्धकुमार शास्त्री, डा० बाबूसाहेब उपाध्याय

अधिक से अधिक सख्या में पचार कर धर्मलाभ उठाया।

महामंत्री—सूर्यदेव

कृष्णार्क—वसन्तार ‘सुभाष’ पृ० २०

अवस्थापक—डा० गलेखीलाल

प्रधान सभापक—डा० सर्वपाल

सत्संग वाङ्मय

सुख का आधार 'सेवा'

ह्याम सुन्दर स्नातक, आर्य महोपदेशक



यह मे समझने की धरती धारुनं सीनी है। यह मन मे कहा है— सेवा करने का धम्मल करना चाहिए। यह जो एक प्रकार की साधना है। पुण्य है। धम्म न इसन मुक्त भित्तिरा है। जो एसा गही करते उनकी मति का इस वेद मन मे रहान है। कहा है— मरिडार न विन्दते उसे मुक्त गही भित्तिरा जो गरीब की सेवा गही करता। उसे दुःखराहा है। उसकी बर मसीही को देखकर इतराता है जो साक्षा पीठा हो कर नी पाया धामे साधगृहीन सुभी क्षणद्वयल के लिए मन को खीए कठोर कर नेता है छोर सेवते पुरो हो चिन्त' उसके सामने सेवन करता है। (मौज करता है)।

हर्ष लुक मे धामे कहा है— अनुपु को दूरवर्ती बनना चाहिए सेवा करना बहुत कठिन कार्य है और है। परन्तु सेवा करने वान धरणा हो रहस्यार कर रहे हैं क्योंकि को हि सत्तल रक्षेय बन्ना अनुप के सब लिए एक धम्मल गही रहते। यह के भक्त क समान यह जीवन है— सुख-दुःख दोनों जीवन क साथ

यो आश्राय चामानाय पितृज्जवान् सन् रक्षिताय उपजग्मुः ।
स्मिर मन कृणुते सेवते पुरोतो चित् मडितार न विन्दते ।



साध करते हैं। जब अनुपु देखे कि तिन भन्ते है हो रोटी धाराम मे मिल रही है, गही उपजुक्त धम्मल है सेवा का। पर सेवा उसकी करे जिसका उहारा कोई नहीं, को कृप है सुभी है। वेर मे इसे इस रूप मे कहा है—

ओश्व मुल्लोपात् इन् पावसायास
सम्पन्न आशीयस्य
अनुपपत्तेर न्यम्ना ।
को हि धर्मोने रक्षेय चक्षा धम्मलम्
उपतिष्ठति राय ॥

यह धर्म मस है हाथ का पाव है कम हो। सेवा भी उसी की होती है जिसने पहले की हो। धम्म ह्म दूखो का ध्याम करते हैं कम हमारा भी दूखे ध्याम करने, परमाह करे।

इस धम्म मे एक बात विशेष है। ससार मे सब मे प्रयाह मुणु है। यह मुणु केवल मरीन को मुंके की गही धाती। जेसु—तुल भी मौल के पाट चारते है। जो दूखो की, दुःखियो की सेवा करते है। अपनी समताओं के धम्म-मत दूखो को मनागित्त करते हैं, मे दुःखी गही होते कश्चित गही होते। इसके विपरीत इण्ड अर्थात् जो अपनी पिता

धरने धर्मिल वा सन्धिच वन या साधना धम्मल मे प्रान्त बन धारि मे दूखो का भना गही करते मे समन धामे पर मुक्त मे भित्त रहते है। कहा है—

ओश्व न वा च सेवा धम्मिल न च बुधु,
इतिवित्तमुपपच्छति मुल्लम् ।
उतो रति मुल्लो मोयवस्मिन्,
उत्तमुत्तुर् अविडार न विन्दते ।

किन्ती की धम्म-प्रान्त धम्मिल को मुणु धम्मलम्भी है। धम्मर औपच-धाम की विविधता मे है। एक बात ध्याम देने योग्य है— बहुत से भक्त तोय — धम्मिक जन एसा धाम भेते है कि जो भी हार पर धामे हो। इसी मुणु-पता का ध्याम धर्म धामरक्त कहा है।

इत्याय इतिवित्तमुल्लोपात् धीयते ।
अप्यच्छात्तु मुणु वस्तु न तैत्त मुणु धम्म ॥
मुल्लोपि मे मुणु की मे लिता है जो धम्मर होकर भी कार्य करने की क्षमि होने पर भी काय न कर के निगा मारते है जो धामे धम्म मे उन्ही धरते मे एतु, धरते है। उत्कारविकि मे धीर लक्ष्याप्रयास मे गृहीत स्वामी दयालव जो धरलक्षो मे भी धम्मो के कर एतत् निगा है। गृहीत धम्म है—

(मार्के) हे तु अल्पानिगच्छन्ति
पुण्यम् धम्मरक्षितम् ।

धम्म कम ह्म देखते है कि धर्म का उहारा लेकर धम्मर केवडे मेवडे मे मुणु के मुणु धानी धम्मियो की Colonies (कॉलोनीयो) मे) बाकर धम्मर मुंके धम्मर बहुतो मे सेवा गमते हैं। कोई धामा के नाम है, कोई धम्मर के नाम से तो कोई धम्मर बनवाना है। धम्म लक्ष मेव धाम को हे लक्ष मे हैं। प्राय लोग कस जाते हैं। यह रोच धम्म उत्तरोत्तर बड़ हो रहा है साधना की क्षमिति है। मे लोग विद्याहीन होते है एम्पली धम्म की धम्मर मे लयाते हैं। इस से पाप बढ़ता है। निगा भेने मे, साधना भेने मे भी विवेक एत साधना की चाहिए।

मुल्ल प्राति के चार धम्मर है—
उपसमा के धर्मिलिप धर्म धानि, लोय धीर सेवा। इस लक्ष मे सेवा पर धम्मर ध्याम निवे है। धामा है स्वाभावधीन पाठक धार एत करी। धम्म मे समान करने से पूर्व की धम्मरती राजयोगीधार्म की के जीवन की धम्मर की लेखनीय करता है। बहुत पुरानी बात है लक्ष ध्याम मे धा कर पाठक मे उन के धम्मर ल्या मुणुर्—मेरी येव कर गई है, मेने धम्मर बना है, मे पठा है। मैं Advo-
cate हूँ, नकारात करता हूँ। इन्हीं धम्मर का धारदता। इसने मे उन्ही साधर पीन कर के निगी डाटा धम्मर। अब ह्म ह्म ह्म निगा धामे लेव बर मे धामुमुक्त धामे हो मुक्ति लेव कर गम्भ रह गये। सेवा कीलिए परन्तु लक्ष होकर। सेवावर्ध परम-दहम योगिधामधम्म ॥

पता ४०० २०१ डेवर कैमाल, नई दिल्ली

हम प्रसन्न रहें

सुरेशचन्द्र वेदालकार

विश्वदानी सुमनस ह्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
तथा करतु वसुपतिवसुना देवा भोगानो धवसामभिष्टा ॥

शुक्र ०९/१२/५४

हम (विश्वदानी) सदा, स्ववक्त (सुमनस) य धनित प्रसन्न मन (ह्याम) रहे (तु) य व (उचरन्तम्) उदय होते हु (पश्येम) नु का (पश्येम) देखत रहें। (वसुना) एवमा का (वसुपति) देवधर्म पति (वसन्त) रवी का (भोगान्) वक्त करने य रा धार (धवसामभिष्टा) रक्षेय करन क सा. धान वाला य धरत वस्तु (वसुपति) देवा करे।

इस ससार न तुल और चिन्ता, मे अनुप का व रहते है। इस व भी चिन्ता का महादुःख धर्माधिकार मे धन-

वरक्त कर न चल रहा है। जो अमे वेदार्-विक उन्नति हो रही है एक नई मयवता का विकास हो रहा है य किन्ता बहती जा रही है। ससार न सीनी ह्म ध्यामियो रोना धीर दुःखो का कारण किन्ता है। चिन्ता ही मनुष्य के सुखवध जीवन क लिए सस सब बोधा है। स ह्म के एक कवि मे लिता है—

चिन्ता चिन्तामय मुक्ता
विन्दुनामविशेषिता ।
सबीव दहते चिन्ता,
निर्वीज दहते पिता ॥

इसी माय को ध्याम करते हुए दूखे कवि ने इस बात को इस प्रकार कहा है—
चिन्ताचिन्ताद्वयमेव

चिन्ता एक मरीवती ।
चिन्ता दहति निर्वीज
चिन्ता दहति लवीकम् ॥
चिन्ता धीर चिन्ता की तुलना मे चिन्ता धर्मिक नयकर है। चिन्ता निर्वीज धरती को जसाती है धीर चिन्ता लवीक धरती को जसती है। चिन्ता मनुष्य को ऐसे का जाती है जैसे बुन लक्ष्मी को धरद न भा जाना है। चिन्ता धरती का नाश कर गती है। उसम ह्म की बोधाधिकार, उत्तरवाप हो जाता है। धान चिन्ता को धारणा चाहिए। चिन्ता धरित धीर लक्षाम पर प्रभाव डालती है। मुने एक उक्त की कथा का स्मरण हो जाता है। मे पान न रहूँ हूँ। उन्ही पान लते लते उससे य धर्मिक समर्थ हो गया था जिसने बर्ष उन्हीमे नास्तिक नीकरी की की। श्रेय लोग धम्मर उनके विषय मे बर्ष करत रहते है कि धम्मर के वरधार मे उनके काय धामर हो गए हैं। इस धम्मी

धातु मे भी न सदा प्रसन्न धीर बुद्ध नकर धामे मे। एक धार एसा ध्याम कि जब के धम्मर पैशन लेते टूटती मे एतु ती टूटती के पैशन देने वाले धातु मे कहा बाधु की, धातका पैशन का कायक धरत उकर हो ध्याम है, मिल गही रहा। धामर धहीने रोनी महीनो की ल नीवियपा। धातु की, मुक्कटते हुए बने धार। धही धरता रोनी धातमे लयाधार ह्म पर उन्ही लक्ष की कोई चिन्ता य ह्म है। एक धार उन्का कायक मिल गये। धातु मे उससे ध्याम-धातका की धीर उन्ही पैशन वन गया। मे बडे धीर से हूँ। धमी उसकी ह्म की धातमे लयाधार उकर देवते लरे। एक मे ऐसे ह्मने का कारण हुआ। धातु की मोने मे तो समझता का कि मेरा वहा का (वसुपति का) हो धातमे लयाव हो गया है पर मनीने मे बता बना कि उन्हीने धम्मर प्रसन्नता का कारण धीर धीरधु-धु का कारण चिन्ता न करता धीर प्रसन्न रहना बढाया। उन्हीने यह ही धिय एत ११ पर)

वर्तमान दिल्ली, पूर्व नाम इन्द्रप्रस्थ में निमित पाण्डवों के सामन्तारिक राजा जरासंध के क्रूरों ने बैठी हुई द्रौपदी ने भू से "अन्धों के अन्धे ही होते हैं" बरि : शब्द नहीं कहे होते तो शायद सम्भव

पाठकम् । बोधे का क्या तीर निकल सकता है पण्डु बाणी का बाण जीवन भर कलकला रहा है । प्रसाध और मानसिद्ध पुष्पराज और जयकन्त के इतिहास सभी पुराने नहीं पढ़े हैं । परिष्कारित मानसिद्ध और जयकन्त परावो से मिलकर एक नया सत्यानास करा बैठ । पानीपत की तिमिर खड्गों में मोखा बस के मराठो ने धरतपुर के राजा बुरजसल और इन्दोरी के महाराज होकर की बाणी के बाणों से घायल न किया होता तो बरबो बापस रातो रात पर होता जाते ? इन महा भयकर परिणामों की रेतकण ही मानस पुकार कर कहता है कि—

‘जिह्वाभूषे मनुजकम्’

प्रभो ! मेरी बाणी में मनु भर दो । इसे मनुज कर दो । मनुजों की बाणी ही सब और की की जननी है । घत सतपथ शत्रुघ्न से बाणी का कायपेनु रहा है ।

‘बाण्यं कायपेनु’

बाणी इत्यल कामनाओं की प्रीति की छाविका है । कोई भी काय तसार में ऐसा नहीं जो मोटी बाणी से पूरा न हो सके । कहा है कि—

‘प्राण बाणी बन हरे’

‘कीर्तन बाणी देव ।’

एक जिह्वा के कारसे,

काम बाणुनी कर लेव ।’

महान्या बाण्यो प्रवर बाणकम महाराज ने अपने सात्व से राबहुत का निषेध सखन मुद्रमायी होना माना है । पायबो ने योगेश्वर की कृष्णकृष्ण महाराज को सम्मन है इसीलिए प्रस्ताव प्रतिनिधि बनाया हो । निष माना ने कहे नये बाणन विरोधी पर की क्षणता प्रमाण निष नहीं रहते । धर्मिय सत्य की होना हो गये से नीचे नहीं उतर पायेगा । घत घत व्यास की ने कहा—

‘सत्य बुधाश्च पिय बुधाश्च’

न बुधाश्च सत्यम प्रियम् ।’

मित्राणो से कहा क्या योग नी बाणन बुधयात से स्वीकार कर लेता है महाकवि हनुनी ने मोटी बाणी की ही बरीकरणा मन्त्र कहा है—

‘बरीकरणा एव मन्त्र है’

‘सत्य है मन्त्र कडोर’

हाथ ही रहीम ने जुते जाने का सस्ता मुद्रमा लिका—

‘जिह्वा कह नीतर मैं जुते बात कमान ।’

ससार ने हम बेकते हैं कि धर्मक मनुज्य भवत ही कटुमायी होते हैं । उनकी कर्मका बाणी के कारण बात की बात में नाराई हो जाती है । ऐसे कडोर श्रावी भोगों के लिए बेद के बाणुन की एक कवि ने जो प्रकट किया—

‘कुपय को मानसक है सली बयान ने ।’

इससे नहीं लगाई है हठकी बयान में ॥

यह बाणी की धारन सत्य और मनुष्य एकता बाये । कुछ से विमुक्त

के निम्न सन्धो ने मैदान से साकर लडा कर दिया—

‘सुनिम बाधिया पायं ।’

‘सम्पते मुद्रमाहीनम् ।’

ये की प्राप्ता म यु कदा का सफा है—

‘मैत सन्ध्यामनुषा नीम ल्प ।’

एक साधारण से सफाहरी की बाणी की घोट ने महाकवि काविसाद बना दिया । जिस का सफुल साहित्य ने एक ही स्थान है । बाणी के एक हा बाण ने जेय से प्रसन्न मनयुक्त को सत्य तुलसीदास बनाकर छोड़ा । बात हा तो भी सच नहीं । देव भारत की दो भाषाओं के होते निम यने दो महाकवियों के रूप ने ।

‘वीरयुधि राजस्थान के तो रूप कण ने मे ६ कारें और लसकारें छात्र की गुणार्थ होई है कि—

‘अज्ञान से युक्त । मानवानम्’

सब धूरबी बजावत पत्नी के जेय-पास ने कहे कह उठ कि—नाह मुझे निषयायि युद्ध कि प्रवीनयम् । इस निषय धौरकार युद्धो जैसी बाणी को युक्तक लक्षणी मणन उठी और अपने पति की सब की माया में मोती—

‘ऊत ने बसिसे हस्ते कवी ने सत्य बाहित ।’

‘मोती राममुल्ल नाथ ।’

‘बाण तो पति सवारो रस बाहि ।’

‘लसवार बसातो हू बाणु नै’

‘बुकि पहिल तो बर माहि ॥’

सद्धानी की इस स्वनिमान बरी भावा न बुधावत को किन्कोर बा दिया और हाथ की सीधा हाथ तसवार की मुठ पर बा पडा । बर फिर क्या बा कुपित बाणन कुमार सखी की नील बनकर टूट पडा । बाणी का प्रमाण सत्य बनकर बसका । बयपुर के महाराज जवाहिर को महाकवि बिहारी की मोटी घोट—

‘कली कली ने हो बिन्धो’

‘रास्ते पर से घाई ।’ जिससे बयविह की कमान सीधी हो गई । युद्ध और बनबनराई न सिवा की और पुष्पराज को कली की दुर्बल नहीं होई दिना । ★

पता — बेर सतन ककर बेडा नेट ।

वार्षिक निर्वान

धर्मसभा पुरपुर का वार्षिक निर्वान दिनांक २७ २८ से विभिन्न सन्धन हुआ । बिबदे निम्न वार्षिकारी सबे सम्पति से चुने गये ।

प्रधान — श्री तुलसीराम धार्य

उप प्रधान — श्री बय बयराज धार्य

श्री महा — हिमाराज धार्य

मन्त्री — श्री सुलतान धार्य

उपमन्त्री — श्री विरेन्द्र कुमार धार्य

की केसवत धार्य

कोपाध्यक्ष — श्री विष्णु कुमार धार्य

युक्तोपाध्यक्ष — श्री डाकिराजधार्य धार्य

सूचना एवं प्रसार मन्त्री—

डा० चमराम सिंह धार्य

हिन्दी बोली ‘आई’ से

रचयिता—सुरेन्द्रकुमार शास्त्री

हिन्दी बोली आई म नू आई मैं खली नई । मेरे कारण नू आई की नू आई मैं खली नई । मैंने तुम को घोट विलास तुने मरी बानी बोली । जब पादें बारी ससद मे, तुने निज बोली बसली ।

नू पत्नी स्वदेवी बोली म, पर सायप विदवा ने कवी ली । उपकार मेरे धन भूख गई क्या हृषा तुने वतला पगली ? नहि ऐसा गतिविधि रही तेरी क्या बस्थनी बनता धमला ? मेरे ही ठुक्को पर चलत मेरा ही चार हरण करतो ।

मैं बनी राधु की जब साया मेरा धवमानन बरता लकर के दणप बिदेही म सम्मान तुने मिस पायगा ? कोई रैवा होगा कवी जा तुम को सखी सिलायगा । विषयसम्पत्ती पवित का जो तुम को याद दिलायगा ।

मो घाई ! इस कसब मे बेवो नहि दोष बरसा तेरा है । बन्धे सन्धे विहो की नू आई धान न तेरा है । रहते हैं नाम दसकिया को, न की तो मुक्त को मुक्त गय । टी० बी० पर राट्ट प्रसारण मे पदकी ने भी बोल गय ।

हिन्दी हिल साया करते जो हिन्दी पर धावा बोले गये । राधी पर मान यह आनन्द न सस्कन मे जितकी सायप हुई । श्री नारायण की ऊहा हुई, स-कृत म यह ध सायप हुई । बलराम नारायण निमन करके हिन्दी की नैया पाव कर ।

‘राबीष बिदेही नैया के उनसे मिलकर सुविचार करें । धन समय है क्या विधानो का, उनसे हिन्दी ने पाय बने । बययें धन भी धानने पच की, सब तक जो यह मुहय बन ।’

फार्म ४ नियम ८ के अन्तर्गत

आर्यमन्देश साप्ताहिक की घोषणा

प्रकाशन स्थान	नई दिल्ली
प्रकाशन धनवि	साप्ताहिक
मुद्रक का नाम	डा० चर्मपाल भारतीय
(क्या भारत का नागरिक है ?)	
(यदि विदेशी है तो भूत देस)	दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ।
पता	डा० चर्मपाल भारतीय
प्रकाशक का नाम	
(क्या भारत का नागरिक है ?)	
(यदि विदेशी है तो भूत देस)	दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली ।
पता	यशपाल सुभाष भारतीय
सम्पादक का नाम	
(क्या भारत का नागरिक है ?)	
(यदि विदेशी है तो भूत देस)	दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली ।
पता	

उन व्यक्तियों के नाम न पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूजों के एक प्रतिष्ठान से धार्मिक के सम्बन्धित या विरोधकारी हो ।

मैं डा० चर्मपाल एतद्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं ।

डा० चर्मपाल

प्रकाशक के हस्ताक्षर

दिनांक १७ मार्च १९६३

द्रौपदी चीर-हरण एक कोरी कल्पना : महाभारत की अन्तः साक्षी

लखक महावीर नीर विद्यालकार मुस्कल कागडी विद्यालय विभाग हरिद्वार

प्राचीन पुरातात्विक सर्वेक्षण के न० १०० महाविशेषक श्री प्रो० बबबायी साहू का कथन है कि रामायण और महाभारत कोई काल्पनिक इतिहास नहीं है किन्तु उसके मूल में सत्यता है। भले ही जलसे बाद में कवि की कल्पना की 'राम' और सबदन के कारण बड़ बड़ कर बात बिना गयी हो। श्री साहू ने महाभारत नाम की सगता जानने के लिए हलियापुर में 'अथर्व बरनावा कुपुत्र मधुरा, श्रान्तिस्त धारि का उ ब्रतन व सर्वेक्षण करके उपरोक्त बिचार परिष्कृत किये हैं। इसमें कोई शक नहीं कि मूल रूप में ब्रह्मना में सत्य है। महाविद्यालय में भाष्यने प्राच सत्यप्रकाश में महाभारत की लोक कल्पना में निरुद्ध अक्षि की चर्चा की है। स्वामी जी के बिचार पदवीय महो मननीय हैं।

हम भी महाभारत की मूल सत्यता के आधार पर उस कथन का निष्कर्ष करने को हमारे हृदयों में प्रथम यथा की बहस वाद प्राचीन वसन्तका नहीं है। महाभारत की विधिषट् पटना है— द्रौपदी की सती सत्य में अपमान कीरन वस के विनाश में सब पटना का महान् महान् है। न जुगा (पुत्र) होता भी न यह पृथिव्य कालिका। विनाशकाले विपरीत बुद्धि। प्राणी प्राणी पृथ्वीपर परस्पर कट कट कर मर गए। वेद के ज्ञाता होने पर भी विधिषट् में जुगा केला। वेद कहता है— धर्मनो रीत्य कृतिषु कृत्स्न कृते है। सकुमि की प्राणाकी के हार गए। कभी भी। स्वयं हारने पर प्राणी को दाव पर अगमने का क्या अधिकार था? बर।

द्रौपदी का मरी सत्य में अपमान जुगा। उसे कटुदमन कहे गए पुत्रालन में उसकी केव रक्षि पक्ष कर बबरहस्ती सत्य में लाकर और अपमान किया। किन्तु द्रौपदी विदुषी भी उसके स्वयं रूप से समझती है जुगा कि— महापुरुष भविष्य में अपने दाव हार जाने के बाद धर्म मुझे दाव पर लाकर हार है तो ही केव हाकर दासी व व को प्राप्ति हो गयी। इस बात को सुनकर जहाँ दूसरे लोग मुझे सहाकर वा केर कर रहे हैं वह वा कहें सत्य में मध्य विदुषी भी न समझीष्य हाथगोली का प्रयोग कर द्रौपदी के सत्य में लाए जाने और उसके अपमान को महान् कुकृत्य और समीक्ष कृत्य लाकर कोरों के विनाश की आशका परिष्कृत की। समस्त पुरुष मण्डी की विनाश की है कृते है—

न हि दासीव्यापनाया कृत्या अभिपुन्यते ।
अनीडेन हि दासीवा वसे मस्येति ने मति ।
समा पव ११।८

अवगमन विष्णु ने भी सत्य में जो

साहस का परिचय दिया वह इतिहास की महान् पटना है। विष्णु ने सब समासों के प्रश्न किये तो किसी ने उसे उत्तर न दिया। तब विष्णु बोला—

साधारणी क सर्वथा पाषाणानामिनिष्ठा
चित्तेन पुत्र ज्ञानेन पाषाणैश्चैव पश्य ।
इय क कोलित कृत्या लोकेन पराजिता
एतत् सर्वं विचार्य नम्ये न विज्ञातिमिमात् ।

यब यह बात विष्णु ने कही तो सत्य में हताया सहा हो गया। महाभारत

महाभारत की अन्त साक्षी के आधार पर—जब जुगा केला गया और द्रौपदी को सत्य मध्य अपमानित किया उस समय श्री कृष्ण की मही राज अपनी द्वारिकापुरी से श्री और हस्तिनापुर से भी धर्मि दूर थे। इस लिए एक महान् पुरुष को भी हरण जैसी वीरस्य पटना में विनित करना विद्यामानों की प्रज्ञा का श्रेष्ठ उदाहरण नहीं।

ने पड़िये—

एतत्त्वा महान् वात सत्यानुवर्तिष्ठत ।
तत्पन रिदुर जी ने कहा—

द्रौपदी प्रत्यन्तस्य रोरणीति ह्यामवत् ।
न क विवृत स प्रत्य सत्य बर्णित दीक्षते ॥

हाथ ही विष्णु की बात को पुत्र करते हुए विदुषी की कृते है—

विष्णोर्न यथा प्रभुत्वान्तरा प्रनो राधिप ।
नमोतेति हिंसा प्रत्य विवृतान्तरा यथायति ।

इस प्रकार विष्णु और विदुर जी ने द्रौपदी के सत्य प्रत्य वाद जाने का गौर विरोध किया। प्रथम सत्य को वा उक्तथा। तब कुछ मण्डी का विरोध होने लगा। मरी सत्य में अथक विरोध होता वेव। यथा—

त ई यज विदुरस्तत्पदेवी
जुगाय जुगायताया च ।
नीमो प्राणी मोदमय विद्वान्
स्वचित् स्वस्तीर्यपि वसाह्वयम् ॥
ततो गान्धारी विदुरस्य पि विदुषा
जुगाय कोरन सत्य राज ।
निर्वन्धनासुपुरातिष्ठ सत्पत्नयो
दावा वावर्तित बजाये ॥

पाठक प्रत्येकी में स्वयं रूप से कुछ मण्डी के विरोध ने एक कालि का उपरोध है निर्दोष द्रौपदी के अपमान को क्या पाष्य द्वितीय प्रजा पुत्रप्राप्त वह स्वयसी भी। सत्यप्राप्त पुत्रप्राप्त की दाव कुली से बोले—

होतेति पुर्वीन मण्डुव सत्य
समानां कुपुत्रजानाम् ।
निश्च सत्यप्राप्ति कुर्वित
विश्वेस्तो द्रौपदी वसन्तीत्यु ॥

महापुरुष पुत्रप्राप्त ने महान् विप

प्राणी स्वयं गौपदी का विनाश में नेवा एव पाषाणों को दासनाय से मुक्त कर दिया यथा दाकर एक प्रथम समाप्त हो जाता है। न यहाँ तक भी हरण की बात है न कुछ यह प्रत्य यही समान हो जाता है कि पुत्र प्रत्येक बात में श्रौतिककथा का पुत्र देने वाली ने प्रत्येक की बहु मरणा की है कि प्रथमा प्रथम पुत्रा द्रौपदी के भी हरण का देकर वा कृत्य की का उक्तका वरत बढ़ाते विनित कर दिया है। जब कि और हरण जैसी पटना महा हुई

बन गए है।

इसी प्रकार श्री कृष्ण मद्राज जब धर्म के लिए हस्तिनापुर जाते है तब गौपदी को उसे बचन कटती है ने प्रत्य 'वर्णा का प्रथमा रूप ही है। यह कहती है दासना में जा मरी सत्य में उस बात को प्रत्य अपमानित किया वा उससे वह सब तक जल गयी है। मेरे उस अपमान को मत मूलन। प्रभुन की कृपा की म रहते है कि पाप बुद्धि हुआ मने जैसे द्रौपदी को सत्य मध्य बोधा का उस अपमान को केव जुगाया वा कथा है।

प्रकारान्तर के हेव सत्य महाकर्मि भात के इष्टप्राप्त्य नाटक के की जुग उवा हरण ने रहे है। यथा—द्रौपदी केव प्रत्यपमानातिष्ठत । सत्य—एव जुगा सत्य द्रौपदी के महाकर्मि मूलकथा। सत्ये सात होता है कि सत्य के सम्य तक भी हरण जैसी पटना अपमान की धर्मिपु पुत्रालन द्वारा द्रौपदी के केव प्रत्यपमान सत्य मध्य लाकर उसे अपमानित करने की पटना का हो महत्त्व वा।

इसी सत्य में हम यह भी लय महाभारत की अन्त साक्षी के आधार पर रसना बाहेने कि जब जुगा केला गया और द्रौपदी को सत्य मध्य अपमानित किया गया उस समय श्री कृष्ण को महापुरुष अपनी द्वारिका पुरी से भी और हस्तिनापुर से भी धर्मि दूर थे। इसलिए एक महान् पुरुष को और-हरण जसो बुद्धिमान पटना में विनित करना बुद्धिमानों की प्रज्ञा का श्रेष्ठ उदाहरण नहीं। परिण उद्योग पव का वह लोक—

अवगमन प्रभु ने हृदया नायकपति ।
यव मोक्षित कृत्या कृत्या
वा हृदयविष्णु वा ॥

धर्मात् विदुष सत्य कीरन सत्य में द्रौपदी का अपमान हो रहा था (श्री कृष्ण) हस्तिनापुर से बहुत दूर था उस समय कृष्ण ने क्षातमाय से मोक्षि कहकर जो युद्ध जुगाया वा उसका मेरे उपर अथ वसन्तका ही का रहा है मेरे हृदय से दूर नहीं होता। प्रत्येकी कोरों का सहार किन दिया उसका भार दूर नहीं होता। वस्तुतः यह अर्थव्यवस्था के सम्य कृत्य महा होता वा पृथक् पृथक् हो तो महाभारत नहीं हो गया होता। कर्मात् कृत्य उस समय के महान् मयम महान् पराधीन महापुरुषानीय न नृद्वीपि द्रौपदी राक्षसी नेवत ने।

(विष पृष्ठ ८ पर)

वह कहती है—श्री कृष्ण पुत्रे राज्य के विना जाने का सत्य दुख नहीं मृए ने हारने और बर्नावा होने का भी मेरे सत्य में सत्य महान् वृ मही है। पराउ जरी सत्य में मेरी सुपरी चुपटी पुत्रप्राप्त गौपदी ने रोते हुए को बुद्धिमान के कटु वचन मुने ने मही मेरे लिए महान् जुगा का कारण

सत् चित् कौन है ? और यह ध्यानम् यात्रा क्या है ? यहाँ हम इसकी चर्चा करते । जीवान्मा का स्वरूप सत्य और चैतन्य है उसमे ध्यानम् का (सुख का) समाज है । इस ध्यानम् प्रथमा श्रुत की प्राप्ति मे ही जीवान्मा मलिन रहता है । उसकी यही मलिनता उसकी ध्यानम् के लिए यात्रा है जिसमे प्रमादित किमा से लजा हुआ है । जीवान्मा का सत् चित्त स्व-रूप जिस क्षण ध्यानम् स्वका (सुखमय) हो जाएगा । उसी पल उसकी यह यात्रा समाप्त हो जाएगी । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय-मय पर धनैकानेक सम्प्रदायों मे अन्य लिता । धनैक प्रम सुख वैदा धृष्ट, विमलम् ध्यान-धनैक तरीके से इस ध्यानम् (सुख) की प्राप्ति का मार्ग जोना शोर उभे मलता के समस्त रस्ता, अनता मे उसे कितना समझा कितना साधन, बहु लो कहना कठिन है किन्तु समय के साथ इन मार्गों मे सही-गठा ध्या बई शोर मनुष्य मनुष्य के बीच दीवारें खड़ी होती गई ।

प्रथम यह है कि मनुष्य ध्यानम् (सुख) नक नहीं पावेक नही पाता है ? इस को न उसमें बहुत बड़ा जोख भी हो उसका पालन की किमा किन्तु क्षात्रात्तर से प्रत्येक मनुष्य को सत्य से दूरतरफ मराने ा प्रयास मे उसके विकटित उत्पन्न कर, ५२ मनुष्य मरने मे मदक पाता । इसका कारण यह है कि मनुष्य ससार मे कुछ इस प्रकार स रहता है कि वह शरीर और

सत् चित् की आनन्द यात्रा

श्रीमती सुभाषिणी वर्मा, बिलासपुर

आत्मा को एक में बिना लेता है, इस ध्यानम् की शोर जाने बानी यात्रा को भी सघटीर पूर्ण करता बाहता है । शारीरिक सुख की पूर्ति के लिए प्राथमिकिक सुख सुविधा के सामान एकत्र कर ध्यानम् का एक कल्पित प्रभन बना लेता है । ये सुख सुविधा के सामान साधन ही सत्य है सत्य नही, साध्य तो कुछ हीर ही है । किन्तु इसे इस साध्य को समझा है उसीमे पूजा-पाठ या उपासना को प्रथमा है । ध्यान पूजा-पाठ उपासना के नाम पर जो सुख करते हैं वह भी केवल कर्मकाण्ड होता है । चाहे वह इतन हो सत्य सुति पूजा हो, चाहे मजन कीर्तन हो । उसका किन्ति मात की प्रमाण हमारे धन्यतरफ पर नही पकता है और यही कारण है कि हम अपने ध्यानम् की धनुषति नही कर पाते हैं । पूजा-पाठ प्रथमा उपासना वह प्रक्रिया है जो मनुष्य के धन्यतरफ की मन्मोह कर रख मे, उसका धन्यन कर मे, मनुष्य का धन्यतरफ निचर कर सामने का बाए । ऐसा हो नही पाता है । इसका कारण यह भी है कि पूजा-पाठ-उपासना मोठ समय के लिए होती है । प्रथम समय

मनुष्य बाह्य प्रम मे किमाधीन रहता है और बाह्य प्रम का पूर्णित मातावरण मनुष्य पर प्रकृत प्रभाव डालता रहता है ।

हमें भीने की कुछ ऐसी कमा चाहिए कि हम अपने मे ही भी सके । यह बात निश्चिदा सत्य है कि मनुष्य बिना कुछ किए नहीं रह सकता है । मनुष्य समुत्पन्न विन किसी न किसी कार्य में धन्य रहता है । इसलिए ध्यानम् प्राप्ति का जीवा-रस एव जन सामान्य के लिए एक ही उपाय है कि वह अपनी एक र्ण बना मे, उसके धनुषक कार्य मेकर उसमें रय बाए, रय रय जाने की वह साधना कह सकते हैं । साधना मनुष्य को हवा ध्यानम् वैरी है, वह साधना चाहे धनीत की हो, चाहे कमा की हो, चाहे धन्यिक की हो, या सवाज लेता की हो । साधना का रूप कुछ ऐसा होना चाहिए कि मनुष्य स्वय की पूज जाए, उसी मे कोन हो जाए । एक बार ऐसी साधना मे नीन हो जाए मे प्रभव-नीय ध्यानम् की प्राप्ति होती है । साधना करके वैरीए, ऐसी साधना, बिना साधक और साध्य का भेद निट बाता है । जिस क्षण, जिस पल ऐसी साधना में नीन हो

जाएँ, सत् चित्त जीवना का वह क्षण, वह पल बन्य होगा । उस क्षण उत पल ही उत परल ध्यानम् का क्षात्राकार हो जाएगा । और मनुष्य जीवना बन्य बन जाएगा ।

साधना से सत् कुछ विन बाता है साधना कभी धन्यरी नही रहती है । अपने ही कीर की ध्यानम् की धनुषति में कम समय मनेगा । किसी को प्रथम सत्सत्ता प्रथम मिलेगी । सत्सत्ता के रहस्य के सम्बन्ध में किसी मनुष्यक ने कभी लेखक टाइटल से पूजा, धन्य की सत्सत्ता का रहस्य क्या है ?

“वेदो—एक रहस्य का नाम है वेदों ।” टाइटलटम मे मुक्कराते हुए कहा—“ससार मे ऐसा कोई काम नही किसे दुरा न किमा जा सकता हो सत्य में किने करते बाले मे वीये हो ।”

नममुक्क मे कहा—“किन्तु एक काम ऐसा है जो बहुत वेद रखने पर भी नही किमा का सकता ।”

“कह क्या ?”

“मलनी मे मानी मरता ।”

“कौह । इतने कम बडी बात है ।”

टाइटलटम मे मुक्कराते हुए कहा—“इसे भी किमा का सकता है बसर्ष कि मानी के जमेन तक कोई वेद रख सके ।”

अत परमानन्द की प्राप्ति की हो सकती है बसर्ष कि हम मे उतना वैरी हो ।

□

पृष्ठ ७ का लेख

द्रोपदी चीर हरण एक कोरी कल्पना

म ध्याप महाभारत के न-पर्व का एक उदाहरण देखिये । जिस समय पाण्डव वनवानी हो जाते हैं नब भी कृष्ण की उनके कुल न-मगन पहुँचे बही दन-वज रहित पहुँचे । बाते होये मनी । बागो हा बातो मे भी कृष्ण की मे बडे कष्ट से कहा—

एव निहस्य समरे सोम क्षात्र निपाद्य न ।
धातान्ति नुरागम्य सुहृदां श्रीमतामहम् ॥

४० पं ५० ४०

तबलेतु कारख राजन् बहव मागसाहस्यम् ।
नाम्य परवीर्यम् न हि बोधित सुवीर्यम् ॥

४० पं ५० ४१

मय्यभ्यतेजसा गौर भूत न मरिता तथा ।
प्रक्षाल्य किं करिष्यामि मिल्नेतेरुवोदकम् ॥

४० पं ५० ४२

धर्मत् राजन् बोधकि मैं सोम और हात्स को मुझ मे भूषित करने के निमित्त हात्स को दे रहा हूँ । (हात्स मे धनुष-भयवर विरोधक पशुओं से युक्त एक बाल निमित्त किमा बा बिमला नाम लोम बा, इसमे भयवर भारक शक्ति भी, बिसे नष्ट करने मे क्षम्य भी को बडा परियन और पराक्रम करता पशु) इतनीए, भूत

धना मे उपस्थित न हो सका । यदि मैं यहाँ पहुँच गया होता तो दुर्वाच्य भीषित नही रह सकता था प्रथमा मेरे बही पहुँचने पर जुझा होता ही नही । किन्तु राजन् ! भय पर मे पुन टूटे हुए के समान धन मुझे बसाधो मैं धन्यका नही प्रिय कलमा ।

पाठक ! यह एक कवी की 'भीर-हरण' की वैचता को कुलीती वैकर उसे धनैक बोधित कर देता है, उसकी मायशा के प्रम को धन्यिक कर देता है । भीर-हरण बीसी घटना महाभारतीय इतिहास मे हुई नही, इसे हमे सत्य परिचय मे लेकर देखना चाहिए । किन्तु और बिकल मयली के साहित्यिक एव ऐतिहासिक प्रमाणों का बही मायश है : द्रोपदी के कीर धन्यमालि करने के लिए दुर्वाच्य की प्रमा से दुःसाधन के बडे कथम और दुःकृत्य करने को उषत हाथ बिकली मयली के विमुक्ति होने और प्रजापति के विरोध एव उत्पत्ति के कारण बही क का । समस्त क्षात्रसभ और कुलराज्य तथा मायारी एव मयलीगी मटना की महा-भारतीय इतिहास मे उल्लेख क्या बाए । ●

सास्य के लिए लाभप्रद दोहे

—स्वामी स्वस्मानन्द सरस्वती

अत काम को विनय मे, बाए भुनके रोच ।
बस किट्ट बोने बडे, मिटे कम्प का रोच ॥

प्रथम पूज बोधन करे, ठेक ठेक लेना ।
एव स्वयं नीरीय ठग, सुकी हरे क्षात्रम् ॥

मावर, मनुष्या, धन्यका, जो काये मयसाय ।
पुजा बडे कम्पी मिटे, भूत साक हो बाय ॥

अनर कम्प है उर मे, पूज बिहा हो बाय ।
रय मने का नीबिये, नीह अरकर बाय ॥

नर कनयोर् विनाय है, री कर हतमा काम ।
साय साह्य के बाधे, नीबे हुए बायाम ॥

हरण, बहेडा, बायका, भीभी नीय निबोव ।
जो हनका लेख करे, सुनकर काया होय ॥

बाय, वन्याय बायका, जो नही करे प्रयोव ।
उषते अरकर बायने, बाधि-बाधि के रोव ॥

हरण, बहेडा, बायका, बस मे रको निबोव ।
छीटे बाये बाय मे, निर्वन ज्योति होय ॥

सम्पत्ती धार्यसमाज एकीकृत

अजिल्द १०० सेंकडा **अजिल्द ५०० सेंकडा**

मृत्यार्थ प्रकाश

पर पार पड़ारो

सफेद कागज मुद्रित छपाई

मुद्रित प्रकाश वितरण करनेवालों के लिए प्रकाश

23x36-16 मुद्रित ४२० की दर

अजिल्द १००-अजिल्द ५००

आप साहित्य प्रचार ट्रस्ट

४५५, भारी बावली, दिल्ली ६ दूरभाष: २३८३६०-२३३११२

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध एक मी गायक महेंद्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनों पर शब्द-सत्यवादी पं. डॉ. ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूष, सोहनलाल चौधरी, शिखरदास जी व सर्वोत्तम भजनों के कैसेट्स तथा प. ब्रह्मदेव विद्यालयाय के भजनों का संग्रह।

आप मगध के अन्य भी वगुन स कैसेट्स के मूवीपत्र के लिए लिखें

कन्सुलीय इन्टरनेशनल (इण्डिया) प्रा. लि.

१४ मॉन्टे-११, पत्त-११ अशाक विहार, देहली-५२

फोन ७११८३६, ७४४१७० टेलैक्स ३१-४६२३ AKC IN

वैदिक कैसेट तथा कावच, १५ हनुमान रोड पर भी उपलब्ध है।

प्रसन्न रहें
(पृष्ठ २ का शेष)

कहा कि मैं अपने पुत्र, पोती और प्रपौत्रों के भेलता हूँ, पिता मैं नहीं रहता। यही मेरे बीचोबीच का रहस्य है। वेद में कहा है, स्वर्ग और नहीं नहीं इस पृथ्वी पर ही है। जन्मेव १०-१२-४१ मय कहता है—

चहूँ सत्ता बा विरोध विषयमायुष्यं सुखम्।

कीठनी पुनर्नोपिर्विद्वानो स्वे पृष्ठे॥

मेरी सोच, इस सत्ता के रहने, सत्ता मत होयों हमारा पुनर्नो और पोती के साथ केवल हूँ अपने मायुष्य विषयो।

विद्या और ब्रह्मसत्ता के मनुष्य का आत्मिक ह्रास होता है। उदाह, सुख, धर्म और धर्मिक नष्ट हो जाती है। विद्या, बुद्धि और उच्च के संविधाव की बर्धना है। यह टीसी केवल स्वर्ग ही है जो भी रहता अपने पक्षियों, सन्धियों और विद्वानों को भी अपना दुःख देता चर्चता है। इसलिए यह मैं प्रार्थना की गई है—'हे प्रभो, इस सत्ता प्रसन्न रहें, आनन्द रहें, 'सुखता' रहें। ऐश्वर्य के स्वाभी ब्रह्म के केवल यही मांग है कि हे आत्म के सागर आत्म का एक कण हूँ जो और उसके लिए हूँ 'सुखता' बनायों। इस आनन्द रहें।

यह जीवन केवल फूलों की गंधा मही, इसमें काटे की हैं। इन काटों को हटाने का मार्ग है 'सुखता' होकर धर्म बर्धो-बाधो करने। प्रसन्नता तुम्हारा वरण करेगी।

६ ए ई-१, मोहरा मिर्जापुर

प्रवृत्ति समस्या
(पृष्ठ ६ का शेष)

सत्ता के विषय को हटाने में सत्ता सत्ता होगी। महर्षि का कथन है कि—'जब बालु और बूटि जन को बिनाबने बाधा सब दुर्गम मनुष्यों के ही निमित्त से उत्पन्न होता है तो उसका निवारण करना भी उनको योग्य है।' और निवारण का उपाय है हृदय-यत्न। महर्षि का सुस्पष्ट कथन है कि 'यह कार्य धर्म किसी प्रकार से निवृत्त नहीं हो सकता।' यह सत्य है धर्मसत्ता हृदय-यत्न के प्रचार और प्रचार द्वारा विषय का विषय हटाने के लिए धर्म धर्म। यह धर्म-सत्ता ऐसा कर सका तो फिर विषय पर मेरी कर्म में उसे बेर नहीं लगेगी। पर यह कार्य कहीं से नहीं करने के होता।

धर्म निवारण, चन्द्र नगर, मुराबाबा-२४४०३२

दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

दंत मंजन
लौंग युक्त

२३ जड़ी बूटियों से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

सर्वे का डक्टर

उस नये पैकेट में ३२ टैबलेट्स

महाशिव की हट्टी (प्रा०) लि०

८/१४ इण्डियन एजिड सील नगर - आई टिपनी १५ कोल: ६३८६०६, ६३७९६७ ६३७९६१

मसूरी की मुजरा, सुई की मुजरा, उखा माँ वाली लमना, दात का सर्व

तुम भारत के भाग्य विधाता थे

रक्षिताः

समुद्रबन्ध तुल्य विद्यावाचस्पति

तुम स्वराज के आध्यात्म के धार्मिक राष्ट्र के जनसत्ता के भारत के भाग्य विधाता के धार्मिक सत्ता के निर्वर्तता के वेदवर्ष के प्रवर्धन के नटकों के मार्गदर्श के आह्वान के विरोधी के सत्ता के प्रतिरोधी के

तुमने मुकाम को राष्ट्रभाषा की सीढ़ियों को नई धारा की चर्च को नई परिभाषा की हर सच की निराशा को नये भारत की सुधि को सर्वत्र ज्ञान की सुधि की करे करे तुम्हारा मुकाम वषट्क सत्ता के सत्ता

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Grover'sons

Pari's Beauty

पेरिस ब्यूटी

ग्रावर सन्स

ब्रा पैन्टी, बनिचान, अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि

अकाल टाईम
११००००
२२२२२२

17

आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अंतर्गत कर मुक्त होगी ।

सारा बाल पेंक/मनीप्रार्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

મત્રી, માતા ષ્વન્નનદેવી આર્ય ધર્મરથ નેત્ર ચિકિત્સાલય,

बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

राजगोपाल शास्त्राचार्य	द्वयंवेध	महाशय बर्मपाल	शोलप्रकाश शर्मा
संरक्षक चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	जम्मी
एवं प्रधान, सा०शा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महाशय कुशीलार्थ
प्रति० सभा	सभा	सभा	केरि० दु०

सौजन्य से . महाशियाँ बो हट्टी प्रा० लिमिटेड, ६/४४ कीर्तिनगर,
श्रीकोमिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताओं को अजागर करती है।
 (२) धर्मों (हिन्दुत्व) को महान् प्रत्यक्षता की याद दिलाती है।
 (३) भारतीय ध्यान-वर्ण की वैचारिक प्रकृति से भारतवर्ष जानबूझ करती है।
 (४) भारतीय संस्कृति के भूत-विद्वेष प्रसंगों, महानुभावों तथा धार्मिक संस्कारों की प्रकाश में लाती है।
 (५) जलिय, भूमि, तत्पुत्री धार्मिकताओं को धारणों का बोध कराती है।
 (६) प्रत्यक्ष-वर्ण की पवित्र भाषाओं वेद का जो नवीनयोगों नज्दर लखके लाती है।
 (७) वेदों सेककों, कविता, चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों, साहित्य सेवियों को प्रोत्साहन देती है।
 (८) धार्मिक, सामाजिक और धार्मिकताओं से जन-मन्दिर की प्रकाशित करती है।
 (९) वेद, उपवेद, दर्शन, उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र, धारम्यक, शास्त्राचार्य नीति, राजनीति, नीति, ऐतिहासिक, बहुमुख धार्मिक, जिन को धार्मिकता लोगों ने पढ़ा तो क्या वेला भी नहीं, समस्त धार्मिकता जगत् को जिन ग्रन्थों पर सदा यथं देखना उन के बहुमुख नीति ही हूय सत्ताह बढीर कर धार्मिक धार्मिकता हूय देती है।

-(१०) अण्व्य देर न कोजिए बाज ही मरणा काबिक चल्ता २० रुपये भेजिये, तब से अनेक विशेषांक तथा महत्त्व दयानन्द निर्वाण सताब्दी पर प्रकाशित, ५० रुपये मूल्य की मध्य मनोहारी स्मारिका नि मुक्त दी जायेगी ।

सम्पादक : प्रार्थि-सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

खाला कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,
फ़ौरन । २६६८३८

आयडी बाजार, दिल्ली-४

देवकुल



शुद्ध दूध का
सबसे अच्छा नमूना
है।
इसमें बहुत
सुखी चीजें
हैं।
आप इसे अपने
बच्चे को दे सकते हैं।

उपहार



**हिमासनी
कुरम**

सभी प्रकार
के उपहारों में
सबसे अच्छा है।
आप इसे अपने
बच्चे को दे सकते हैं।

अभिरक्षणी कुरम



आप इसे अपने
बच्चे को दे सकते हैं।

फार्मसिन



• सबसे अच्छा दवा
• सभी प्रकार के रोगों
• के लिए है।
• आप इसे अपने
बच्चे को दे सकते हैं।




गुरुकुल कांगड़ी प्राथेसी हरिद्वार

दिल्ली धर्म प्रतिष्ठान तथा १४, मुगल रोड, नई दिल्ली-१ फोन : ११०१४ के लिए जी.डा. बर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा

— ८८ — श्री. ३९, में अतिरिक्त, एडि. सं. ३० (३०) ३४३

आर्य समाज

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति २० पैसे

वर्ष ६ अंक २०

रविवार ७ अक्टूबर १९६५

आर्य समाज १९६०-६३-०५५

वै.सं. २०५५

द्वितीय भाग - १९९१

देश की स्वाधीनता व एकता के लिए आर्यसमाज ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है —हंसराज भारद्वाज

आर्यसमाज स्थापना-दिवस पर आर्य नेताओं का उद्बोधन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के स्थापनादिन २४ मार्च १९८५ को आर्यसमाज का ११०वां स्थापना-दिवस समारोह विट्टल भाई पटेल हाउस के प्रांगण में दिल्ली की सभी आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थाओं द्वारा बड़े तालमेल से मनाया गया।

इस अवसर पर बोले हुए समाचार के मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्य विधि मंत्री श्री हनुमान भारद्वाज ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आज देश की एकता व अखण्डता को हमें हर कीमत पर बनाये रखना चाहिए तथा देश को बाहरी शक्तों से सामना करने के लिए हमें एक जुट होकर कार्य करना है। इस अवसर पर आर्यसमाज ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि भारत आर्य भूमि की मुख्य भूमि है। समय-समय पर यहाँ महापुरुषों ने जन्म लिया है। इसी भारत भूमि पर आर्यसमाज के स्थापनादिन महर्षि दयानन्द ने जन्म लिया और उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना कर देश में फैली विभिन्न कुरीतियों का इन्कार विरोध किया।

दिल्ली के मन्गोपरी श्री महेंद्र सिंह साहनी ने कहा कि जब मैं भारत की आजादी के आन्दोलन का इतिहास पढ़ता हूँ तो मेरे सामने यह

चित्र ही मुझे एक चिट्ठी मिली है जिसमें लेखक ने अपना नाम नहीं दिया है लेकिन पता नहीं दिया। उक्त चिट्ठी में मुझे कहा गया है कि १०



आर्यसमाज स्थापना दिवस पर बोले हुए श्री महर्षि साहनी महर्षि वेंडु साहनी से श्री रामगोपाल शास्त्री केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री हनुमान भारद्वाज श्री वल्लभ भास्कर श्री शोभाबाई अग्रवाल श्री शिखी दुगार श्री महाशय धर्मपाल जी।

एकदम स्पष्ट हो जाता है कि उस इतिहास में से यदि आर्यसमाज के इतिहास को निकाल दिया जाय तो ऐसा लगता है कि उसे आजादी के आन्दोलन को ही निकाल दिया हो। उन्होंने भाव विज्ञान होकर कहा कि

लेखक को जवाब तो नहीं दे सका परन्तु इस नावजिन सभा घोषणा करता है कि मैं हिन्दु के साथ हूँ न सिखों के साथ हूँ ता देश की प्रामाणिकता है। इतक जिन हिन्दुओं ने देश की आजादी में अपना योगदान दिया है और देश की एकता और अखण्डता बनाये रखने के लिए जूझ रहे हैं। उन हिन्दुओं के साथ भी हूँ वैसे सिखाया जाता है। परन्तु देश साथ गहरा करके बनाया देश सिखों चाहते वाले या नून होनी खेलने वाले सिखों के साथ कि भी ही हूँ उन में नहीं हूँ।

उन्होंने पंजाब की समस्या में बर्बाद है हुए कहा कि जब मैं उस भाषियों ने अपनी अन्तर्भावना में भावना फनायी है तब स पंजाब में विकास रुक गया है। तद्वात पंजाब के खेत उजड़ गये हैं और कारवा बन्द हो गये हैं। पंजाब के नाम पर वन्दूक की गोली से अपना इशारा पूरे करने वालों ने जहाँ सारे देश के अपने विरुद्ध कर लिया है वहाँ पंजाब (शेष पृष्ठ १० पर)

पंजाब समस्या पर श्री शालवाले प्रधानमंत्री जी से मिले

सार्वभौमिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शास्त्री आज प्रातः प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी से मिले। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की समस्या और उस पर हिन्दू जनता के विचारों से उन्हें अवगत कराया। बातचीत के दौरान श्री शास्त्री ने पंजाब में वातावरण के सुधार के लिए सरकारी की भूमि नहीं के नजरबन्द हिन्दू नेताओं

की भी अधिकार रिहा करने की मांग की।

श्री शालवाले ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कलेश्वर के धन से गुरुद्वारा में अन्तर्भाव के ट्रैफिक देने के प्रावधान तथा हाम में चण्डीगढ़ आदि से हुए विधायक भट्टाचार्य की और भी प्रधानमंत्री की का ध्यान आकृष्ट करते हुए आग्रह किया कि (शेष पृष्ठ १० पर)

डा. हरिप्रकाश ने गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता पद का कार्यभार संभाला

सार्वभौमिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शास्त्री श्री धर्मप्रकाश त्यागी (भरौ) तथा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, पं० सत्यदेव विशालनगर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार से पधारे। श्री रामगोपाल शास्त्री ने अपने साथियों के साथ श्री गुरुकुल कांगड़ी कार्यसिंघाट जहाँ पहले ही संकट कार्यकर्ता एवं कमचारी उनकी प्रतीक्षा कर रहे

थे। प्रम. एवं स्टाफ के वातावरण में उक्त अवसर पर डा० हरिप्रकाश ने गुरुकुल कांगड़ी कार्यसिंघाट के व्यवसायधक्षक पद से त्यागपत्र दिया तथा श्री बलदेव धामुगुलालनगर कार्यसिंघाट के व्यवसायधक्षक पद पर नियुक्त किया गया।

कार्यसिंघाट के हाल में संकट कार्यकारी एवं अधिकारियों के मध्य अर्थ (शेष पृष्ठ १० पर)

आध्यात्म सुधा

ले० यशपाल आर्य बन्धु

ओ३म विश्वानि देव सवितदूरितानि तस्यसुव ।

यदभद्र तन्त आसव ॥ यजू० ३०।३

★

हमारी आत्मा ही भावनाएं हमारे मुख से निकलकर हमारे मुक्त मन का निर्माण करता है। (कल्याण प्रायनाक पृष्ठ ३८३)

यही भाव लेकर जब हम इस मंत्र पर ध्यान करते हैं तो चाहते वाली बात हमारा हाथ पुष्ट हो जाती है। क्योंकि इस मंत्र में जो दुष्णों का बुरा करने की प्रायश्चित्त है उसमें यदि हम स्वयं दुष्ण

[illegible]

यह सब एम. ए. नायडुवरिक्तिका जो कहते सकेत कर रहा है। यह महह है कि प्रथम होतु हुजुमो पुरो मुख्मोको जो ल्यावना है कि प्रिय सहकुपो जो बापल काना। मह प्रत्यन भाव्याहृष्टिफिक्त है। प्रथम हजु कथ्ये मणिम पात्रो जो स्व स्व कल्ले है कि प्रिय उमये स्वाविक्रिय प्रथम डाकोते है। यहि सुम है प्रथम स्वव्यव मही भूति जो उमये बातेना प्रथम कथ्ये प्रथम जो मनिन हो जायेना। धन भाव्य ह्युविक्रिय मोने है कि प्रथमना। धन भाव्य ह्युविक्रिय जो पथिक कर जो उमये मनिनता जो हूर करे कि प्रिय हयुविक्रिय जो बापल काना। यहि सुम भावना प्रथम प्रथम केवम हयुविक्रिय जो हूर करणे मे कल्लो जो मये दो जो यह कथ्ये मही उपरयविक्रिय है कि प्रिय उम प्रथम की कथ्ये मोने प्रथममे प्रथम की हूर जो मये मोने प्रथम जो भापल हो जाये दो फिक्त कहना हो क्या। मय प्रथम हयुविक्रिय जो हूर करणे की बात कहना है प्रथममे प्रथम प्रथम की।

हम मन्त्री की एक विधानसभा छोड़ भी है। वह यह सिद्ध यह मन्त्र बहसमान हो ही है। एक पक्षवादी दृष्टि से ही 'न्याय' हम सभी दृष्टि को त्याग कर सन्तुष्टि को चारों तरफ । एक प्रमुख सन्तुष्टि को प्राप्त हो छोड़ शेष शक्ति समाप्त प्रकृति को तो क्या नहीं बनाता । क प्र म हा छोड़ शेष प्रकृति को नहीं बनाता । सीखिए कि हमें बहसमान का प्रयोग होकर यह कहा गया है कि यह सब युक्त सन्तुष्टि को प्राप्त हो ही है छुट्ट कर सन्तुष्टि सुख को प्राप्त करना तथा पक्षों को प्राप्त हो। धारासमाप्त का निम्न भी है कि प्रत्येक को अपनी ही उ नति में सन्तुष्टि भी प्रत्येक चाहिए । पर हम सब मिलकर दुःखों दुःखमय को त्यागने छोड़ सन्तुष्टि को प्राप्त करने के लिए युक्तमान छोड़ शेष सन्तुष्टि को निज प्रकृति देख है हमारे सहायता की इच्छा प्रकृति है उनसे सहयोग ।

—आय निवास चरनवर
मराठाबाद ५४४०३२

को रिहा करने पर विचार कर रही है।

श्री शास्त्रवाल ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री जी ने आद्यवासन दिया है कि चुनाव के समय जिन नीतियों की घोषणा की ही सरकार उससे पाछे नहीं हटेगी। उन्होंने यह भी बताया कि पचास के हितबुद्धी को एक शिष्टमण्डल छोड़ ही प्रधान मंत्री को स मिलकर प्रपन्नी स्थिति स्पष्ट करेगा। प्रधानमन्त्री जी ने शिष्टमण्डल के मिलावे की स्वीकृति दी है।

सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

[illegible]

शुभकामनाएं प्रकट की।

प्रचार विभाग
समाचारिका सभा, दिल्ली

पंजाब समस्या

(पृष्ठ १ क गण)
पञ्चम मन्त्रा के सम्बन्ध में पञ्चा
के विशिष्ट सिद्धि से भी प्रधान
मन्त्री जी का विचार विमल करने
आवश्यक है ।

श्री शास्त्री ने बाद में एक प्रसंग में कहा कि प्रधानमन्त्री ने उनसे आश्वासन दिया है कि सरकार पंजाब के नजरबन्द हिंदुओं

★ वक्तावृत्त ★

“ईसाइयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियों को सावधान करने का सेहग यदि किसी व्यक्ति के सिर बाँधने का स्त्रीभाष्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द जी की ओर इशारा किया जा सकता है। १९वीं सदी में स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है उनमें हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानों तथा अन्य धर्मावलम्बियों को भी लाभ पहुँचा है।”

—पीर मोहम्मद यूनुस

सम्पादकीय

भिड़रावाले के उत्तराधिकारी बनने की होड़

पंजाब की समस्या अब केवल भ्रष्टाचार और सरकार की समस्या नहीं रह गई है, सारे देश का हित इसके साथ जुड़ा हुआ है। अब कुछ समय पूरा उपवासियों और पृथक्तावादियों ने देश की एकता और अखंडता को चुनौती दी तो अब साथ राष्ट्र चिंतित हो उठा था। पंजाब भारत का सीमावर्ती राज्य है और अगर यहाँ कोई बदबू होती है इसका बखर अन्य राज्यों पर भी अवश्य पड़ता है। प्रधानमन्त्री का यह कथन बर्बाद है। भ्रष्टाचारी नेताओं का ग्ल प्रारम्भ से ही ऐसा रहा है कि यदि उनकी एक मांग स्वीकार की जाती है तो वे अन्तः अपनी दूसरी मांग सामने रख देते हैं। उनकी धाम धारणा बल गई है सरकार आन्दोलन की चमकियों से डरकर मुक जायेगी। उनके दबाव में आकर सरकार का मुकना समस्या की बढ़ावा देता है। वेते भी समझौते का माग दिखाई पड़ते हैं पूर्व ही उपवादी कोई भी धमका करके नातावरण बिगाड़ कर देते हैं।

साबने और बिचार करने पर दिखाया यह होता है पंजाब सरकार की अब ये राजनैतिक प्रसिद्धिवादी हैं। इसी से राजनैतिक वातावरण में अहड़त पुनः रहा है, सोभो-सन्धी बात नहीं कही जाती। नित नयी मांग वाते समझौते के लिए पेश की जाती रही हैं। पंजाब की जनता की समस्या देश के अन्य राज्यों की जनता की समस्या जसी ही है। परन्तु साम्प्रदायिक आधार पर राजनीति चलाते का परिणाम यह हुआ पंजाब दो बेमो के बट गया है। जहाँ मुटुबन्दी हो, साम्प्रदायिकता का बोलबाला है। वहाँ पर धार्मिक और स्थिरता को कल्पना नहीं की जा सकती।

जेल से छूटने के बाद हरबन्दाह लोगोवाल अपने घर को पुष्ट करने में लगे हैं। उनका यह कहना है कि जब तक केन्द्र सरकार उनके सामने घुटने न टेक दे, वे बातचीत नहीं करेंगे। सरकार (उनकी भाँप के अनुसार) पीछे के बाँधियों को खोद दे, सिविल सुइट फरेशन से प्रतिक्रिया देता तो भ्रष्टाचारी नेता कहते हैं हम प्रखल होगे। भ्रष्टाचारी नेताओं का बुल करने के लिए ही यदि सरकार कायम है तो वह मानव्युत्तर प्रस्ताव को भी मान लेगी। फिर बातचीत को जरूरत ही कहाँ रह जायेगी? इस समय भ्रष्टाचारी नेता और हुरद से बड़ बड़ कर उच्चेक भाषण दे रहे हैं। खी सही कसर गिरोगिए मुहारा कनेटी ने पूरी कर दी है जिसने एक प्रस्ताव में सेना से विद्रोह करने वालों की प्रतीति कर दी है। कुछ भ्रष्टाचारी नेता जिनमें डेकेदार सुरजन सिंह और उनके साथी शामिल हैं श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या को उचित ठहरा रहे हैं।

अब बनरस सिंह भिड़रावाले से इन मुख्य मुद्दों से प्रत्यक्ष अपना मुँह बड़ा कर लिखा था, तब तबबबी ने उसका समर्थन किया था और श्री लॉगोवाल ने उसका विरोध करने के बजाय उससे भी

‘महर्षि दयानन्द भारतमाता का उन प्रसिद्ध और उच्च ध्यानधर्मों में से थे, जिनका नाम समार का इतिहास में सर्वत्र चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहा। वे भारतमाता के उन सुपुत्रों में से हैं जिनके व्यक्तित्व पर जिनता भी अभिमान किया जाए वोडा है। नपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट एवं विजेता समार में हो चुक है, परन्तु स्वामी जी उन सब से बड़कर थे।’

—खदोजा बेगम एम.ए.ए.

बड़ बड़कर उस जक भाषण देने शुरू कर दिये थे। परन्तु अब जनरल सिंह भिड़रावाले तो नहीं हैं पर अब वे नेता उनके उत्तराधिकारी बनने की होड़ में शामिल हैं। भिड़रावाले को खीद करार दे रहे हैं। कुछ ऐसे सिर फिरे हैं जो भिड़रावाला जीवित है कहकर तिलकर पंजाब की धामीण बनता को बराला रहे हैं। इसर तबबबी कह रहे हैं सरकार पहले मानव्युत्तर साहिब प्रस्ताव स्वीकार करे तब बातचीत की जायेगी। लन्दन ‘भावजर्वर’ में उन्होंने एक बन्धन्य प्रकाशित कराया है। जिसमें बहु सिलों के लिए प्रत्यक्ष विधान प्रत्यक्ष भन्दा प्रत्यक्ष सरकार की माँग करते हैं। उनके एक साथी ने कहा कि २५ वर्ष के लिए पंजाब का वासन सिलों के हवाले कर दिया जाए और दो कीमती के आधार पर चुनाव कराए जाय। मतलब यह है कि भ्रष्टाचारी दल का ही शासन होगा बाहिण। मास्टर तारासिंह ने एक बार कहा था कि मोर्चा लगाने पर जो कुछ मिल जाए उसे स्वीकार कर लो परन्तु अपने सत्य को कभी निगाहों से धोमल मत होने दो।

उपवादी फिर अपने विलों से बाहर निकलने लगे हैं

अब शुरू से ही भ्रष्टाचारी नेता पंजाब की जनता को उस जित करत में लगे हैं। भ्रष्टाचारी व किशो भने की प्राप्ता नहीं करनी बाहिण। वह समझौता करना नहीं चाहते क्योंकि वह जानते हैं कि कोई भी समझौता किया तो जिन लोगों को तरह तरह के सब बाय दिखाकर उन्होंने उस जित कर रखा है वह उनकी जान के दुस्सन बनकर सामने धा जायेंगे। वेते भी भ्रष्टाचारी ऊट की नकेल उपवासियों के हाथ में है। जब तक उपवाद का इलाक कठोरता से नहीं होगा समस्या मुह बाये मामने खड़ी हो रहेगी। शुधमन्त्री की चन्हाए ने राज्य सभा में कहा कि पंजाब में उपवासियों की मदद ब प्रोत्साहन देने वाले स्थलमन्त्रिर ब अन्ध धमसबलो में शरन तकरा करने वाले ब उपवासियों की प्रसिद्ध देते वाले विवेदी तत्त्वों की पगताल का काय जारी है।

हाल ही में कुछ पकड़े गये सिविल उपवासियों से दिल्ली में पुल-ताख की गयी तो उन्होंने स्वीकार किया कि पाकिस्तान में जिन-जिन सिलों में प्रसिद्धाए प्राय ३०० उपवादी भारत में प्रसिद्ध हो गए हैं। पंजाब से जो खबरें धा रही हैं उनसे पता चलता है कि पंजाब के तीन सीमा से लगे जिलों—मुवासापुर अमृतसर और फिरोजपुर के साथ जाने वाली सीमा से मुवासाह नौबतगो की पाकिस्तान केजने का भन्दा जोर-शोर स चल रहा है। कहा जाता है सैनिक कारवाई से पहले लगभग १५०० उपवादी भागने में सफल हो गये थे। समभवत वे अपने विलों से निकलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जैस-जैस पंजाब स लेगा हटनी शुरू हुई है, उपवासियों की गतिविधि फिर बढ़ती जा रही है।

भारत का माग सबक योग्य युवा हाकी में है पर वह समय ही बना पायेगा कि हमारे कर्त्तव्यार इस मबर से नैया से पान में फितने कुछ सिद्ध हो पायेंगे?

—यसराज सुधांशु

सरस्वती ने सक्रिय भाग लिया था

से भारत के हर क्षेत्र में हलचल मच गई। पुराने आचार-
रिवाज गये, धीरे-धीरे को लौटने वाला या एक ही जगह
सब-सब भारत सदियों की नींद छोड़कर आगे को कदम
बढ़ाने लगा।

[illegible]

भाकर भारतीय-संस्कृति को तिलाजलि दे दी या रूढ़िवाद से अपने को मुक्त न कर सके। श्रृष्टि दयानन्द ही एक ऐसे विचारक थे जिन्होंने भारतीय संस्कृति को छोड़ा भी नहीं, पाश्चात्य संस्कृति को लियाधीर नम से बन भी नहीं।

(क) सामाजिक क्षेत्र में रुढ़िवाद पर प्रहार— श्रृष्टि दयानन्द को विचार का दृष्टिकोण सर्वथा मौखिक दृष्टिकोण था। ये मूल वस्तुमात्र तथा श्रद्धा को पिछड़े तथा धर्मसे ये विनाशकर बनना चाहते थे। यही कारण है कि सिध मूल को साथ बिपट्टे रहने वाले रुढ़िवाद का सामाजिक सत्र में भी उग्रदूत बहिराङ्कित था। समाज में ये स्थिरता के पक्ष पाते नही थे बरिश्तशिक्षा के पक्षपाती थे।

उनके कर्मका वा समाज नीतिवादी के मन्त्रा वा जो मुख बसा वा रहा वा सामाजिक-नीति में उसी को बुलाया जाहता वा । नीति नीतिवा का इस देश में वाताही हो चुका वा । बसा निवाह निधना-निवाह निषाध दंडनी की प्रदा- में सभ प्रवर्तन परन्तुपर इह देश में दंड ही बुनी ही । इनके निषध नीतिने का उदाहरी को साहज नही होता वा । अहि प्रधानने इह सभ कतिबाजरी की जहा सामाजिक नीति के उजागर करे में इह सभ कतिबाजरी नीति के नी ही इहे कतिबाज मारत दिया । अतुनीने एके हिन्दु नीतिनी एतुनीको समाज के समुदाय रक्षा एता एतुनीको नी नी वतने में सते राहें शिटकोनी से खयाय निन्य वा उससे अर्या वा । इस काल में नी को सामान सुधारक हुए में बीर हीने समाज का सुधार कर रहने में । अतुनीने एता ही ही प्रहार में समाज की सभ कतिबाजी उजागर करी । अतुनीने समाज के सुधार का नारा नी नी समाज, सामाजिक नीति वा नारा बसाया । अहि प्रधानने के उजागर का परिणाम वा कि किनी को प्रतिभावान्ता का सभ बरक भया । जहाँ वतने रीतिगो नीतिवाताम् का राम बसाया जाता वा वहा कम्पाको नी पवने के लिए सामाजिक नीती बाने नी । अहि प्रधानने हवा सामाजिक सुधारनी में वाधाररतुत येव दंड ही अहि जहा दुसरी में हिन्दु भरी को समाज करने का प्रयत्न निन्य वा अहि सभे दामा-न हिन्दुको का हिन्दु रहने हुए उरुनी नीतिनी के रह में रह दिया ।

उन्होंने हिन्दू धर्म को हिन्दू धर्म रखते हुए उसकी ध्वस्त से काबा पटने का यत्न किया। यही कारण है कि १६ वीं शताब्दी के समकालीन समाज सुधारकों में जितनी

सफलता उन्हें मिली उतही सफलता अन्य किसी को नहीं मिली। ऋषि दयानन्द ने समाज सुधार की जो कल्पना बना दी उसी को लेकर २० वीं शताब्दी के सामाजिक तथा राजनैतिक नेताओं ने कार्य किया। महात्मा गांधी के २० वीं शताब्दी के आन्दोलन को समझने के लिए ऋषि दयानन्द के १९ वीं शताब्दी के आन्दोलन को समझना आवश्यक है।

(ग) राजनीतिक क्षेत्र में कठिनाई पर प्रहार—पृथ्वी स्वयम्भू को विचारधारता का आधार कठिनाई का उद्भूतमान करना था। गणनीयता के रूप में जिसका राज स्वभा रहा हो। नदी गीर्वाह—पृथ्वी कठिनाई विचार स्वभा रहा था। इस दोष पात्रक स्वभा पात्रक विचार होता होत हुए ही इस विचार पर प्रहार किया। स्वभावपात्रकता न उद्भूति विचार—प्राधान्यविचार को ही प्राधान्य के प्राधान्य प्रकाश परस्पर के प्राधान्य के स्वभाव दोष पर राज्य करने की प्रकाश की प्रकाश किन्तु प्राधान्य के ही प्राधान्य का प्रकाश, स्वभाव स्वयम्भू विचार प्राधान्य इन समय नहीं है। जो मुक्त हो तो विचारविचार के प्राधान्यको रहा है। मुक्त होत प्राधान्य स्वभाव है। दुर्दिन स्व प्राधान्य है स्व स्वभावविचार को प्राधान्य प्रकाश के स्व प्राधान्य प्रकाश है।

सर्वोच्च के प्रसिद्ध वाक्य Good government is no substitute for self-government तथा उच्च दयान्वय के उत्तर नरसिंह ने कोई उत्तर नहीं है। दादा भाई नारोबी तत्काल क्षाति ने इसी विचार को धारण किया। धार्यवसिष्ठ ने बाह्य यह कह मनो को बता है कि जिस व्यवस्था वाद का प्रयोग कौशल के मज से होना चाहिए नारोबी ने १९०६ में किया था उसका प्रयोग 'नरसिंह दयान्वय' ने १९४७ में किया था। दृष्टि व्यवस्था १-२५ के शर के समक्ष ३३ २४ वर्ष के नवयुवक ने और अपर उस समय उनके इसी विचार के, जो उन्होंने सत्याग्रह के समय से धारित किए इसी संकेत नही कि वे इस क्षाति के समय अपने मन से किफायत उठे होंगे। जो नही ठीक है उच्च प्रसिद्ध विरोध नही करना—यह भावना नरसिंहाजी नावना है और इसी नरसिंहाजी भावना पर दृष्टि व लक्ष्य से क्षाति का सामाजिक तथा राजनीतिक ानम सोधी बात

पंजाब समस्या के समाधान के लिए पंजाब के सभी धार्मिक संगठनों तथा राजनीतिक पार्टियों को विश्वास में लेकर ही सरकार निर्णय करे

दिल्ली १२ मार्च। पंजाब समस्या के समाधान करने की दिशा में केन्द्र सरकार के प्रावेष पर शिरोमणि थकाली दल एच शिरोमणि मुख्तार प्रबन्धक कमेटी के स्वागत नजरबन्द नेताओं की रिहार्ड का कतिपय करते हुए सांवेदिक कार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान की रामगोपाल साहसवाले ने एक वक्तव्य में कहा कि पंजाब समस्या का उचित समाधान करने के लिए पंजाब में रहने वाले ४३ प्रतिशत हिन्दुओं को भी विस्थापन में लिया जाना चाहिए।

श्री सासबासे ने कहा कि अकालिबो
का वर्तमान नेतृत्व विभाजन का उग्र
अपरोक्ष है। अस्तित्व परकाय की समस्या

सभी बैर बकासियों विशेष रूप से आर्य समाज सेनातन धर्म, जैन, नामधारी, राक्षसात्मकी धर्म सभी वनों और राजनीतिक पार्टियों की विषयवस्तु से लेकर हम की जानी चाहिए। अपनी बकासियों की संस्कृति करने वाली नीति से उस प्रांत तथा क्षेत्र से सर्वे प्रभाव की स्थिति नहीं रहेगी। रिहा किये गये नेताओं की संस्कृति रूप से हिंसक कार्यवाही की निम्ना एक प्रयास करने से अपना उद्देश्य प्राप्त प्रकट करना जरूरी है।

समाचार पत्र में प्रकाशित बहाली नेता श्री सुरजिन्दर सिंह द्वारा प्रकट भारतीय सविधान के दायरे में साहित्य-स्थान बनाने की माँग पर टिप्पणी करते

हूए भी धातुवाले ने सरकार को घागाह
 दिया कि प्रकाशिन को मौजूदा कर
 धायोले बेगनिलेरोस्ता का स्वल्प सभ
 भग्न समाप्त हो गया है। प्रकाशिन को
 भाग का सम्पन्न दिखको का केवल एक
 सीगन बर्य कर रहा है किन्तु व प्रपनी
 भाग को खारे सिक्को के नाम तथा पञ्जा
 ने रहने वाले भग्न बर्यो के नाम पर लडा
 कर रहे हैं जो समष्टा समवर्गानिक प्र
 धनुनित है। राष्ट्रीय एकाता श्रीर बख्शउ
 के धायोले ने भग्नउद सभ को धायो सड
 मति लेते ही सरकार पञ्जा भग्नया का हल
 को प्रो प्रकाशिन को किंशो भी प्रनुनि
 भाग के सामने न उठे।

इस सम्बन्ध में सभा प्रधान जी ने कहा कि सभी जागरूक वर्गों को श्रम लियों की सेवा तथा विदेशों में चल रही मतिविधियों पर कड़ी नजर रखनी चाहिए।

प्रचार विभाग

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

दक्षिण दिल्ली वेद प्रमार
मण्डल द्वारा आर्यसमाज
स्थापना दिवस

धार्यसमाज मध्यविषय नगर मे रविशङ्क
 दिहली येव प्रचार मन्थल द्वारा धार्यसमाज
 स्थापना विषय प्रचारको से सम्मल
 हुवा । इस प्रबल पर मुक्त प्रतिधि श्री
 ललितसमान सासदा बी० बुन्द दिह
 चरमयन दक्षिण मुक्त बी० (नगरनिगम)
 श्री बैरवद्वारा वृत्त सत्यमेव नगर निगम
 मे धार्यसमाज और महर्षि दयानन्द के
 उपचारों को स्मरण किया । धार्यसन्देश
 के सम्पादन श्री सदाशिव शुभाष, डिवाइ-
 नरन ए० मदनमोहन शास्त्री ने प्रपन
 किया। भाषणो से जनता को मनुमुक्त
 विद्या तथा वैदिक धर्म की विष्णुताओं
 से अवगत हो सका ।

रामचरण दास शाय



भार्यसन्देश विधेयाक का विमोचन करते हुए दायें ओर एक के एल भगत तथा समा प्रधान श्री सुमंजस ।

आर्यसन्देश विशेषांक का विमोचन

११ मार्च । भार्यसमाज बीबाग हाल दिल्ली में मर्यादा पुस्तोत्सव नाम के अन्वेषण पर एक विशेष आयोजन किया गया । इस अवसर पर सार्वभौमिक भार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री रामगोपाल गायकवाट महामन्त्री श्री भोग प्रकाश स्वामी डा० बाबलपति उपाध्याय, श्री

प० लक्ष्मणानन्द भार्यी, दिल्ली भार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री सुमंजस तथा सचरीय कार्यमन्त्री श्री एल० के० एल० भगत उपस्थित थे । उपस्थित विद्वान् नेताओं ने श्रीरामचन्द्र श्री भोग मर्यादाओं पर प्रकाश डाला । इस अवसर पर भार्यसन्देश के स्थापना दिवस विधेयांक का श्री एल० के० एल० भगत ने विमोचन किया ।

आवश्यक सूचना

सार्वभौमिक आर्यवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर हजारीबाग आर्यसमाज मन्दिर में १५ मई से ३० मई ८५ तक

सार्वभौमिक आर्यवीर दल विहार की ओर से १५ दिनों के लिए आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर हजारीबाग आर्यसमाज में समाया जा रहा है । इस अवसर पर केन्द्र से माननीय प्रधान उपाध्याय श्री बाबलपति गुरु तथा उप सभापति श्री देवदास व्यासभाषायाँ एवं कई कुशल शिक्षक पवार रहें हैं । विद्यार्थी उनके अनुवाचन से यह कृ पाठन, व्याख्यान, साठी तथा अनेक साधन उद्घाटन कला कोलास का लाभ प्राप्त करेंगे । भार्य बीर दल सर्वत्र विविधो द्वारा युवकों में चरित्र निर्माण एवं अनुवाचन का पाठ पढ़ाकर बाला पिता का वैभव, भ्राताकारी एवं अपने देशभक्त भावपूर्ण वैचार करता है ।

यस सभी बच्चों से तथा सभी भार्यसमाजों से निवेदन है कि अपने भार्यसमाज से कम से कम ३ युवक अवश्य भेजें ।

नियम निर्देश

१. अपने शुल्क २५) करने मात्र ।

आर्यों । गुरुकुल कांगड़ी हरीद्वार चलो देहली से स्पेशल बसें चलेगी

गुरुकुल कांगड़ी हरीद्वार का उत्सव १२, १३ १४ मार्च १९८३ को हो रहा है । इसमें भाग लेने हुए भार्य परिवारों की सुविधा के लिए ११-४-८३ रात्रि १०-३० बजे भार्यसमाज मन्दिर भार्य, नई देहली व स्टेशन केसाठ, नई देहली से स्पेशल बसें चलेगी की १४-४-८३ रात्रि देहली वापस आयेगी । यात्री अधिकृत स्वयंसेवक द्वारा वि भी देखेंगे । भार्य अर्थ केवल ६५/- रुपय है । निवास एवं भोजन की व्यवस्था पहले की रात्रि गुरुकुल में होगी । चलने वाले आई-एन, सम्पूर्ण करें ।

१ श्री प्राधान्यक बर्द, DS, कैसाठ काबोली, नई दिल्ली फोन-६४१६११४
२ श्री बके-अ भावनीय, भार्यसमाज मन्दिर भार्य नई दिल्ली, फोन ३४४३७१
३ टकारा डिजिटल ईश, गुडगारा रोड, गुडगारा । फोन-२६०७

विधेय-गुडगारा पिता के भार्य परिवार कोला-कुली से बस में बैठ सकते ।

विनीत
(श्री रामचन्द्र गुरु प्रबन्धक वाषा, ४६६ भीमनगर, गुडगारा)

पाठकों और ग्राहकों से निवेदन

भार्यसन्देश साप्ताहिक यदि मिलने में आपकी विफल होता है तो कृपया अपना पता भेज करे । यदि आपका पता गलत लगा है या आपका पता बदल गया है तो आप कार्यालय को सूचित करें ।

—अध्यक्षक

आर्य नेताओं का उद्बोधन

(पृष्ठ ३ का लेख)
की सबसे अधिक हानि की है । क्या वे पञ्जाब की पानी की समस्या को नून की दरिया बहाकर हल करना चाहते हैं और पञ्जाब गहिर का भारदोषी की हृदयियों से निर्माण करना चाहते हैं । हनी प्रकार पञ्जाब गहिर पञ्जाब में नही सारे देश से बनाया है, इसी प्रकार देश का सबसे बड़ा बाघ पञ्जाब के रहने वालों ने नही बल्कि सारे देशवासियों ने बनाया है । अगर आज पञ्जाब की ज़रूरत हो तो सारा देश उसके लिए अपनी सब नदिया उठेल सकता है, बस उन्हें पञ्जाब के हमारे इन बहकें हुए माइनों को खुल्लिखें ।

श्री ० चिन्मयार भार्यी ने बताया कि किस प्रकार भविष्य दान्य ने सत्य सनातन वैदिक धर्म पर पडे अज्ञान के कारण को हटाकर उसका बुद्धि गणत सङ्गठन रूप श्रकट किया । दिल्ली विश्व विद्यालय के प्रख्यात डा० भार्यपति उपाध्याय ने भार्यसमाज स्थापना-दिवस को समस्त भार्यसमाजियों का जन्म दिवस बताया हुए इसे साप्ताहिक रूप में मनाये का वाद्वान किया ।

श्री० बलराज मधोके ने श्री साभी के विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि पञ्जाब की शसली राज-बागी वषधीन नही लाहौर होनी चाहिये और हिन्दुओं और सिखों को इसी माग की लेकर सब होना चाहिए । इससे जहा देश में नव जेतना धायेगी वही पञ्जाब समस्या का समाधान का रास्ता की निक-लेगा ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में सार्वभौमिक भार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान सारा रामगोपाल गायकवाट ने कहा कि सार्वभौमिक आर्य दान्यन में सर्वप्रथम अर्थमें भार्य समाज की स्थापना की थी । आज ही उन्होंने भार्यसमाज के गौरवपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डालते हुए भार्य-जनों से कहा कि भारतहीनता की भावना की शोककण्डलिनियों के कार्य में तन-मन-बल से जुट जाय चाहिए । यही भार्यसमाज के गौरवपूर्ण कार्यों की कार्यकला है । भार्य केन्द्रीय समा के महामन्त्री श्री सुमंजस देव ने भार्य संस्थाओं से आये हुए सभी भार्यजनों की स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दी तथा साहित्य श्रम के पक्का तथा विशिष्ट नई ३

२ श्रीनाथि शुल्क नि शुल्क रहेगा ।

३ श्रीने विज्ञान के लिए ऋतु अनुसूच वरी, वावर कस्य लाने । ४ लोटा, भारी कटोरा तथा कान तक की लाठी ।

५ भारी हाफ गैट, सवेक वैदिक कमीच काला कण्ठ और सेन्धी गयी खेदेय मोके तथा बाउन तूजे हरी छोरी बन्धी सीटी, मोट बुक बाल पेन आदि ।

प्रत्यक्ष-१६ बच क उपर छातु के शुल्क भोग लेंगे ।

रामाज्ञा बैरागी

सभापति

सार्वभौमिक आर्यवीर दल, विहार

प्रिंटिंग प्रेस करीगों की आवश्यकता है

हिन्दी-अंग्रेजी के कम्पोजीटर और पेंसल प्रिंटिंग प्रेस के कारिगर् (मशीन मैन) की कीर्ष आवश्यकता है । अन्धक देखन व अन्ध सुविधाए ।

सम्पूर्ण करें —

(अध्यक्षक) कुपल किशोर

वैदिक गुडगाराय, भार्यसमाज गुडगारा तथा भील्ला, भार्यसमाज दिल्ली-६

हृत्मास ५११२३७

आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बक ड्राफ्ट द्वारा

मम्मी, माता चल्ननदेवी आर्य वर्मायं नेत्र चिकित्सालय, जी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएंगे।

निवेष्टक

रामचोपाल शालग्राम	सुर्यदेव	महाशय वर्मापल	योगप्रकाश शर्मा
वरकल चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	मम्मी
पूर्व प्रधान डा०आ०	आर्य प्रतिनिधि	दाय केन्द्रीय	महाशय कुन्नीपल
प्रति० बना	समा	समा	देरि० कु०

लौक्य से महाशिया वी हट्टी प्रा० लिमिटेड ६/४४ कोलिनगर, औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) आर्यों (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं को याद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आरम्भ चलना जागृत करती है।
- (४) भारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रयोग, महामुण्डों तथा धार्षिक मस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (५) ऋषि मुनि नपसों प्रातःविद्वानों को बाणी का बोध कराती है।
- (६) परमेश्वर की पवित्र बाणी वेद का बोधनोपयोगी मधुर स्वरूप लाती है।
- (७) नव नेलकों कवियों, चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों साहित्य लेखियों को प्रेरणाह्वन देती है।
- (८) धार्मिक, सामाजिक और प्राकृतिक ज्योति से मन मन्दिर को प्रकाशित करती है।
- (९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र, धारम्यक ब्राह्मणग्रन्थ गीता रामायण नीति, ऐतिहासिक अमृत्य आर्य ग्रन्थों जिन को अधिकांश लोग ने पढ़ा तो क्या देखा की नहीं समस्त प्राकृतिक जगत् को जिन ग्रन्थों पर सदा गर्व रहेगा उन के बहुमूल्य ज्ञान ने आपत्त मार्गदर्शन करती है।
- (१०) जनएव देव न काजिए आज हो अपना धार्मिक चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में अनेक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण सताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की मध्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क वी जायेगी। स्मारिका और विशेषांक का स्टैंडक कम है। अतः यह सुविधा अमूल्य तक ही है।

सम्पादक आर्य सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

देकड़
गुरुकुल चाय
भूमिसेनी सुरम
फायरिल
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी
हरिद्वार

धाका कार्यालय—६१, गली राजा केदारनाथ,
कोल. २१६८३८
बागडो बाजार, दिल्ली-६

सुसंस्कृत
ओम् गुरुकुल कॉलेज
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मुख्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ६ भाग २१ रविवार, १४ अगस्त, १९६५ आर्य सप्ताह १९६०-६१ से २०६२ विसाख २०४२ सप्तमनाम्न - १९१

अकालियों से तब तक कोई बात न की जाये जब तक गैर-

अकाली सिख और पंजाब के हिन्दू नेता उनके साथ न हों

श्री रामगोपाल शालवाले ने शिष्टमण्डल के साथ प्रधानमन्त्री को ज्ञापन दिया

८ अगस्त, नई दिल्ली। श्री राम-गोपाल शालवाले ने नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला। शिष्टमण्डल ने प्रधानमन्त्री को राष्ट्रीय अलखला की रक्षा के लिए किए जा रहे प्रत्येक प्रयत्न में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया तथा एक ज्ञापन भी दिया। इस शिष्टमण्डल में अनेक आर्य सप्ताहों के प्रतिनिधि शामिल थे। सावधानीपूर्वक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्राव बन्दे सागर, महाभूमि श्री श्रीमत्प्राज्ञ त्यागो, कोषाध्यक्ष श्री होमनाथ मखाड़, श्री ५० राज गुरु धर्म, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हृषीदेव, महाभूमि श्री डा० धर्मपाल, श्री महादेव धनपाल श्री वेदप्रताप वैदिक, आंखितोषा वेदानकार आदि थे।

प्रदत्त ज्ञापन इस प्रकार था—
भारत में अस्थिरता तथा करने की साजिश से इसकी चारों ओर से घेरने और सामाजिक विघटनकारी शक्तियों को प्रोत्साहन देने की जो प्रवृत्ति चल रही है। उससे राष्ट्र के सामने काफी भयंकर संकट पैदा हो गया है। राष्ट्र को एक और अलखला के लिए तथा एक राष्ट्रपिता का निर्वाण करने के लिए हमारे निम्न सुझाव हैं—

१ भारत के सविधान में सम्प्रदाय निरपेक्षा को स्वीकार करने के कारण किसी साम्प्रदायिक पार्टी को राजनीतिक मायना नहीं मिलनी चाहिए। न ही किसी बग विरोध के लिए अलग से बिल कोड हो और न ही अनुचित धारणा का प्राथम्य दिया जाये।

२ अकाली दल भी एक साम्प्रदायिक दल है वह सिक्खों का केवल एक सीमित वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए उसको राज-

नीतिक मायना देना सविधान की दृष्टि से अनुचित है।

३ राजनीतिक पार्टी के रूप में उसकी मायना रद्द नही की जाती तो तब तक उस दल से कोई बातचीत न की जाय, जब तक वे अकाल दल से स्व० माननीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की निन्धा न करें, उसके लिए पब्लिसिटी प्रकट न करें और भारत की एकता और अलखला के लिए तथा भारतीय सविधान के पालन के लिए प्रतिज्ञा न करें।

४ अकालियों के किसी ऐसे शिष्टमण्डल से बातचीत न की जाये जिसमें उसी ही सप्ताह में गैर अकालियों के और पंजाब हिन्दुओं के भी प्रतिनिधि न हों।

५ धानलपुर महाब्रह्म प्रस्ताव देश के विघटन का दस्तावेज है। उसी के विरोध में आपने धाम जनता से कोट गांधी से और जनता ने आपकी अपूर्व बहुमत से जिनारा था। उस धानलपुर प्रस्ताव पर किसी भी तरह की बात करना जनता के उत्पन्न होगा।

६ हिन्दू नेताओं को बेलो से बिना रिहा किये केवल अकाली नेताओं को छोड़ना पक्षपात पूर्ण कार्रवाई है।

७ अकाली नेता भी लोगोपाल के जेल से छूटने के बाद दिखे गये वक्तव्यों से यह स्पष्ट हो गया है कि वे भारत सरकार की सत्ता को स्वीकार नहीं करते और उससे बातचीत के सदाभावना अर्थों को उसकी कमजोरी समझते हैं। मुख्तारों ने हथियार रखने पर उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। श्रीमती गांधी की हत्या की निन्धा करने की भी तैयारी नहीं है और उनके वक्तव्यों में से यह भी प्थनि निकलती है कि आपकी इन्दिरा

गांधी से बड़ा दुश्मन समझते हैं और राष्ट्रपति की को अपशब्द कहते से बाज नहीं आते हैं।

मुख्तारों एक तो पंजाब के बाहर के मुख्तारों पर लागू न किया जाये। और अखिल भारतीय मुख्तारों एकट न बनाया जाये।

८ विदेशों में जो सिक्ख भारत विरोधी कार्रवाई को निरत हैं और वाकिस्तान के लिए कार्यरत हैं। एक सप्ताह के बाद उनका भारत में विद्यमान सारी सम्पत्ति ज्वन की जाये।

९ जो उपजादी गिरपराज किये गये हैं उनके ऊपर पंजाब के बाहर विशेष अदालत में मुकदमे चलाये जायें और उनसे कोई रिशवात न की जाये।

११ अकाली नेताओं ने छूटने के बाद जो वक्तव्य दिये हैं उनसे पंजाब के हिन्दुओं में असुरक्षा की भावना पुन व्याप्त हो गयी है। उन्हें लगना है कि फिर जून १९८५ से पूर्व की स्थिति घा रही है। अकाली नेताओं को छोड़ने की एजेंडायी करवाई से

यह असुरक्षा की भावना और बढ़ गई है।

१२ अमोहर काजिला हरि यागा की देने की और लिक नहर की बनाने की व्यवस्था तुरन्त की जाये। चूकि तेसा न करने से जहाँ हरियाणा की जनता में ज्यादा असन्तोष बढ़ रहा है, वहाँ श्रीमती इन्दिरा गांधी के दिखे हुए वचन की भी भग किता जा रहा है। इससे देश की सीमा पर भी सक्क की समावना बढ़ती है।

१३ विभाजन से पूर्व और उसके बाद भी पंजाब के सामाजिक जीवन में धायपमाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है और धायसमाज ने गाज तक बिना किसी राजनीतिक स्वार्थ के निष्कार्ण भाव से देश सेवा के ध में प्रण की निभाया है। इसलिए पंजाब की किन्हीं भी समस्या के समाधान में धाय नताओं के परामर्श पर विचार करना रहा सरकार के हित में होगा। बहा 'स्टडी हित में भी होगा।

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

२१ अगस्त, रविवार ६ बजे प्रात से १२ बजे तक
स्थान—तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

अध्यक्ष—स्वा० सत्यप्रकाशनाम
मुख्य अतिथि—श्री ० सी० पन्त (क०जी विधानमन्त्री)
वक्ता—स्वा० रामगोपाल शालवाले (प्रधान सावधानीक सभा)
५० सिखकुमार आल्लो, प्रो० रत्नसिंह
प्रि० कुण्ठासिंह धायं श्री अखिलीस वेवालकार
सत्योक्त श्री रामनाथ सहगल
अखी आर्यसमाजो एव आर्य सप्ताहो से निवेदन है कि सारी सक्ता में बहुचक्र कार्यक्रम को सफल बनाय।

निवेदक डा० धर्मपाल
महामन्त्री—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सत्संग वाटिका

धन स्वाट्ट ह—हम लाभ मूल्य और
पन्धरा की तरह कदाएँ के पथ पर
समयावर चल । न चार्थ धनकाई याव
के पथ पर धर्म रहें ।

व्याख्या—धन हम लाभ विचार कर
के लेख मूल्य क्या करता है ?

मूल्य एकाकी रहति । (मनुवंश)
मूल्य धर्मका चरिता है ।

मूल्य र एहमे स वेग व रहे है है
मानव धर्म कस-व-भाव परीकार
सब्य मान्य मे धरन की तरफ लाभ न की
वेता हो वो भी परकाह मीत धन धनका
ही धनने स य वर धाने बढते रहो ।
एकला मनो रे (रवि रवीन्द्र) यही बात
ब्रह्मण्य धर्म की कहता है—

भक्त्यु र्नि विन्दते मनु
भक्त्यु र्नामु उज्जुभवतः ।
भक्त्यु पथ्य भक्त्यायु

यो न तद्वत्ते भक्त्यु । चरैति चरैति ।

हे मनुष्य चरने वाला काम करने
वाला यानि पुण्यार्थां व्यति हो सपत्नका
पता है । बही कम धन काम और
मोक्ष को सिद्ध कर सकता है । धारणी
नही । जरा मूल्य को मोक्ष देसो को चरने
के प्रभाव कभी नहीं करता है । धन चरने
रहो । प्रत्यक्षता रहो । उद्यम करने रहो ।
कामों वा साधनाधि शरीर वा पातकानि ।
अत गात्र न मा ह न यही सही बता है—

उद्यमेन हि सिध्यति
कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि कुलस्य सिद्धयः
प्रतिपत्तिर्युगे युगे ॥

धर्मात् प्रत्यक्ष करने से हो होने
कार्यों मे सरलता मिलती है । मान मनो
रथ चरने = कथा नहीं । जैसे गुण को
विह के मूल्य मे धनने धा प्रवेश नहीं
करते सिद्ध को पुण्याकार कर हा धने प्राप्त
करता पड़ता है ।

देव देव धारणी पुकारा ।

जैसा कि वाल्मीकिय रामायण मे
रामच जन्म से सीत हरण क पन्था
कहते = नाय न मनु यह देशन दुख
सिद्धाया मै पुण्य मे श्रेय का ज्ञान
दूषा और स होन उद्यम भा दिया भाग्य
कृष्ण की नहीं है । हमारा म न रिद्धा
कर्म की नहीं है । धन भाग्य न गरी-
धाराया हाकर देन जल को सन धनचर
रिद्धा नना बाह्यि ।

महर्षि इवानन्द धर्म स्वमन-या
मन्त्रव्य न पोषणा करते हैं—मै पुण्याय
को भाग्य म ब = मानना हा । बिम्बे
से सदाय से म नुचरता और विचरने से
सब बिगड़ता है । सान ही के कहते हैं ।
यम का पत सबय इहलोक और परलोको

आदर्श जीवन का वैदिक सन्देश

व्याख्याकार—विन्देश्वरी प्रसाद सिंह

स्वस्ति पन्थामनुचरेम स्याधिन्दमसाविन ।
पुनदवताघ्नना जानता समनमहि ॥



मोमो मे मिलता है

पुन जब हम मूल्य पर धर्मागत
करते हैं तो राते हैं कि मूल्य विषय मे
धनना काम करता है । धानस्य प्रभाव मे
धन धन की समय नष्ट नहीं करता है ।
यहा इस मन मे परस्पर हमें यह देखने
के रह है—मानव धानस्य प्रभाव मे
समय नष्ट मत करो । समय बहुत ही
मूल्यवान है ।

ईश्वर न सवार के महान् व्यक्तित्व
की बोधोत्त वन्दे का समय ही दिया है
और हमें भी उठना ही चिया है संकल्प
भर का भी धारन नहीं है । पर के उन्नी
समय का सदुपयोग करके सदाय मे धन
तय बन गये । कानीयव वाल्मीकि धर्म
मे जब तय करने समय के मूल्य को नहीं
समझा था सदाय मे सबसे पिछली पंक्ति
के हो तो मे पर जैसे ही उन्नीमे समय का
मूल्य समझा सदाय के धनभी पंक्ति मे
धा गये ।

जितने भी समय के मूल्य को समझा
वही विद्वान् बन गया धनवान लेख
महान् बन गया । जिसने भी समय के
मूल्य को नहीं समझा वही पिछड़ गया ।

धरन भरते समय हमारे पास धरनो
भी स नि हो और हम उनके बढते मे
कम निमनो का समय प्राप्त करना भी
बाहो हो पण्य नहीं कर सकते हैं ।

अत गात्र न पोषणा करता है—

धायुष्य सत एकोपित न
पन्थ स्वलोकोदिनि ।
स लेखिपयक नेति
का नो नानिस्तोत्रिका ॥

यानि धरनो नला सुयोग्य मे भी
एक क्षण की भी धानु न प्राप्त होने वाली
है । ऐसे जो बकार कर नष्ट कर देता है
उसमे बही और का हाति हो सही है ।
अत समय का मूल्य समझने हुए
इक्ष्वा मूल्य मनुष्याय करन

मूल्य के कार्यों के कार्यों को देखते हैं
तो हम पाते हैं कि सब समय प्रक रिच
होकर सब को प्रकाशित करता है । यहा
ईश्वर हम यह नष्ट कर रहे हैं कि
मानव तुम सत्य स्वाम्याय उतासा
बोधाभ्यास मे उप हमम सन्ध्याय से

स्वयं जान के प्रकाश से प्रकाशित
होकर सब को ज्ञान दिया करो जिससे
मनुष्य धनान के चरने मे न पड़े । हम
की बाह्यता का मय

सुनो नवीं ज्योतिष्य स्वाहा और
प्रतिनवीं ज्योतिष्य स्वाहा म भी
ईश्वर हम वही उपदेश कर रहे हैं कि जो
परस्पर हमें धनना काम देने जाता है ।
उसकी प्रश-नाते के लिए हम यज्ञ करते हैं
बाह्यता ज्ञान है ।

यानी हमें स्वयं ज्ञानवान होकर
धनान धनर मिदान मे धनचय ही सच
पता बाह्य है । साथ ही हमें दान धनचय
देते रहना बाह्य और सर्वमन्त्रेय नाम
माहा नाम विधिपते । (मनु)

ज्ञान विद्या जब हमारे पास होती तनी
तो हम उसका दान कर सकते हैं । धन
पूरा ज्ञानवान विद्वान् होकर सब वचन
शुद्धि न की यावना से सदा ज्ञान दान
करते हुए ही अपना जीवन विद्वाना
बाह्य है ।

पुन इस मन्त्र मे ईश्वर यह उपदेश
दे रहे हैं कि जैसे मूल्य सब लोगों को
नियम मे पनासा धायकर से सब को
धारण करता वही ताप पक्षम दिन
राति वासार्थ का कारण होता है वैसे
ही हमें भी वेधन्य बनकर सदाय के
कार्यों मे निष्काम भाव से योगदान देते
रहना बाह्य इत्यर्थ धरने को उपदेश हमें
ईश्वर सब के माध्यम से दे रहे हैं ।

पुन जब हम पन्धरा की मोर देखते
हैं तो राते हैं कि कमान धनना प्रकाश न
होते ट ीय से प्रकाश से जनसमान
होकर सब को प्रकाश देन रहता है । धन
हम भी इय ज्ञानय स ज्ञानवान होकर
ज्ञान का सत्य दीवना बाह्य है ।

धन का पन्थ पथ मे मोरों की
जवन धारम करता है और कृष्ण पथ
मे धोने धारे पटन । पृथ्वी धरन्वा मे
यह मूल्य बन जाता है और दूसरी धरन्वा
मे उसका नामोनिशान भी मिल जाता
है । अत मोरों की धरनी धरन्वा सुचार
कर हम भ द बन सकते हैं और धरन
धरनी धरन्वा के प्रति हम सत्यरह
रहे मोर = से मोरों की निगाह की मोर
जाने दिया तो एक दिन हमारा मानो

निगाह एक मित्र जयिषा । अत सावधान
बनुचें मे ईश्वर एक जबह हमें उपदेश
देते हैं कि एक धरन्वा मे इस सवार में
कोई भी नहीं रह सकता है । यह वा तो
नीचे जायिषा धरन्वा ऊपर । हम हमने
धरनी धरन्वा सुचारने के लिए प्रयत्न न
किया तो नाम मान के विचार से भी
हम एक दिन सभवास को वृद्ध जायिषे ।
और धरन्वा सुचारने के लिए प्रयत्नशील
होकर हम सब कुछ ही प्राप्त कर सकते
हैं ।

पुन पन्धरा मय धर्म वातने पर
हम पाते हैं कि पन्धरा का उठना मान
ही प्रकाशित हो जाता है जितना कि वह
प्रकाश के नीचे के सामने होता है पत
हम उठना ही प्रकाशित हो पायिषे जितना
हम प्रकाश ज्ञान के नीचे के पास रहते हैं ।
जितना भी हम प्रकाशित हो उठना
प्रकाश हमें प्र जमा की तरह ही देते रहता
बाह्य है ।

जब वरुण के समय जब मूल्य और
पन्धरा के नीचे प्रिषी धा जाती है तब
जितना मान उस मूल्य प्रकाश के बलि
होता है उनमे पर प धरना उा जाता है ।
अत हम भी जब कभी ज्ञान के मोर मे
धनन हो जायिषे धननाधन्यकार मे उन्नी
धनचय मे दृष्टते चले जायिषे । अत
धनन कहता है—स्वाम्याय प्रभाव ।
स्वाम्याय से प्रभाव मत करो ।

इसी कारण पर धनान् मनु मयपना
पोषणा करते हैं—

यो हिमो धनयोष्य
नमसमन्त्रं कृते धनयः ।
स मोष नैव दुःखमयं दास
पथति सामय्य ॥

यानि देव ज्ञान से रिद्धि दिव्य पुत्रा
पुत्र पौत्र सति धूरव को ज्ञान ही
जाता है । सी कारण उन्नीमे दिव्य के
कर्मों मे हवन सन्ध्या और स्वाध्याय को
धनियव स्थान दिया है । निय कन मे
पनाय प्रकाश को तच्छु हो की भी
नियम प्रकाश को वृद्धि स्थान नहीं
दिया । इसी कारण मनु मे पोषणा की-
नियम्य धरन्वत्त नियम्य यथा धनमन-
दिन । त हि धादु धरन्वोपय उपचरं
धन्यम् उचते । यानी नियमय होकर
धनियवियव वयाधनय हो सब धरने से
धन्यतय व है । परम कथन है ।
महर्षि दयानन्द धायधनय के सीसेर
नियम मे पोषणा करते हैं—वद सत्य
विचारो का पुनश्च है ।

येक का पना पनामा और धनना
सुनना सब धार्यों का परम मय है । इसी
म तरह सब धनानन्द सारा समय देवधि
के धन्यतय प्रचार और योगम्याय मे ही
मगाते हैं ।

पन्धरा पर जब पुन हम सति ज्ञानसे
हैं तो पाते हैं कि सब पन्धरा धनियव की
(केतुपुट ११ पद)

★ वचन-सन्देश ★

नवीन क्रांति का बीजारोपण

"स्वामी दयानन्द युग प्रस्था, युग निर्माता थे। मेरे सत्कारों पर ऋषि दयानन्द का पर्याप्त प्रभाव है। स्त्रियों की वैवाहिकार दिनाकर महिलाओं में नवीन क्रांति का बीजारोपण किया। नारी की स्थिति में सुधार की अनवरत चेष्टा करते रहे। नारियों की बेवना देखकर वह कहा करते थे, माई! इससे अधिक हृदय विदारक दुःख क्या हो सकता है। विधवाओं की दुःख भरी आँहों से इस देश का सर्वनाश हो रहा है।

दयानन्द ने वदों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत कर, वैदिक धर्मग्रन्थ प्रणाली में एक नूतन युग का सूत्रपात किया है। इन्हीं सब कार्यों के लिए हम सब उनके ऋणी हैं।

—श्रीमती महादेवी वर्मा

दयानन्द और आर्यसमाज

"आर्यसमाज एक जीता जागना सघ है। वह प्रायः खुली रखकर दुनिया की ओर देखने वाली एक सगठित संस्था है। दयानन्द सरस्वती जैसा तेजस्वी ब्रह्मचारी और समाज हितवीही ही निर्णयता से किसी राजा से भी कह सकता था कि 'तू कुत्ता मत बन।'

जिस समाज में स्वामी दयानन्द ने लेकर स्वामी श्रद्धानन्द तक बलिदान देने वाले वीर उत्पन्न हो जाते हैं, उस समाज का तेज सदा उज्ज्वल ही रहने वाला है।

—काका साहब कालेकर

सम्पादकीय

राष्ट्र की प्रतिष्ठा का सवाल है—पंजाब

पंजाब की हुरी भरी बरती, बीरता, बलम्य उसाह और आज्ञा का प्रताक रही है। गीत संगीत, नाच रंग की यहाँ की अपनी एक भव्य पहचान है। बोल तावों की गमक पर उछलते नाचते गमक करते असमस्त युवक, ऊँची लान छेले सेतो में हल चलाते हलवाहे, बागों में फूले बालकर पातों लुछा मनवाते युवतियाँ, ऊँची कद काठों के बिधाल सने वाले डड दुल्हा का प्रवेश है पंजाब। यहाँ बीर बहादुर हुए हैं आकाश वारता के प्रताक, तो शान्ति सन्तोष के प्रतीक सन जा कम नहीं हुए। बिदेसी आक्रान्ता जब पहली बार पंजाब के रास्ते भारत में आये पंजाब की हुरी भरी बरती की देख उन्होंने कहा था बुधा। हम सा जन्मत क स्वाभ ही देखते हैं। ये लाभ सा सबकुछ जन्मत में ही रहते हैं।

प्रारम्भ से ही यह प्रदेश भारत का हृदय रहा है। सना भक्तों, बीर बिरता के इस प्रदेश को शान्तिदायक और बालदान से सबा हुआ है। हलवा, गीत, नाचले लुछी मनात इस पंजाब में धन लून और भाव, आकाश और भूतलवा का अभाव नहीं बिन विदा देता है। युवा ता यह है सत कहलान बाल तबकाकालत धामिका द्वारा हो। यह भवन बनाया गया है। जनम भक्त, सना, शान्तिवा का उपदेशाभूत मिलना या उन्हा के द्वारा हलवाले अहुर बाटा जा रहा है।

अहुर उवलत, भक्तालत य सत

अब तक जो लाभाल का शान्त और समकाला का समर्थक माना जाता रहा है। लालन में जिस रास्ते पर कदम बड़ा रहे है उसका मानवल बालदान ही का है सनाहा। सत करतार गुफहारे में एक दीवान का सम्भावित करत हुए उन्होंने कहा—युग पर यह कहने के लिए दबाव डाला जा रहा है कि सत भिरावाले से हमारा काफ मानता नहा है। उन्होंने कहा, हमारे शारीरिक सम्बन्ध दूट सकते हैं लेकिन धार्मिक सम्बन्ध कभी नहीं टूट सकते। उन्होंने नेतावनी दी— यदि सरकार पंजाब सम्बन्ध शोध हल नहीं करती सा शिख युवकों के अन्ध धक्कता लावा सत कुछ बलाकर ताल कर देगा।

सोमान्त गाव कलानौर के मुखारा बन्दा बहादुर ने सत लोगोवाल की उपस्थिति में एक दीवान य श्रीमती इन्दिरा गांधी के कथित हत्यार सतवल सिंह को मा त्थार कोर का करेसी नाटो की माना पहनाकर सम्मानित किया गया। बलाताओं में अपने भावण में सतवल सिंह को जिन्दा शहीद घोषित किया। हरचन्दविह लोभोवान में भावण में कहा—समकाला होने का तब तक सवाल नहीं उठता जब तक आनन्दपुर प्रस्ताव सभेउ बकाली दल की माँग स्वीकार नहीं कर ली जाती। बटाला में उन्होंने यह सत कह दिया—(इन्दिरा गांधी की हत्या के बारे में) सतवल सिंह और बेमलसिंह ने बही काम किया है जो बहाल जमन सिंह ने जनल शानर की हत्या करके किया था। दीवान में तासिल्लान जिन्दाबाद, और शिरावाले जिन्दाबाद के

नारे लगाने गये।

फिर टकराव की स्थिति

पंजाब के हायात दिन पर दिन बिगडते ही जा रहे हैं। भड कती भाग की सरकार जितना शांति करने के प्रयत्न करती है उतने ही उपबादी और बकाली नेता उसे और बडका देते हैं। २३ मार्च को हुरेनी बाला सीमा की यात्रा पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी गये। यह उनको साहसिक यात्रा थी। उन्होंने सदाबनामया बातावरण बनाने के लिए पंजाब के लोगों के लिए अमूल्य हृदय में कुछ बोधलाए की हैं। पंजाब में लोग बोध बनाया जायेगा। जिससे विजली और पानी की किसानों की किल्लत न हो। दूसरी बोधला पंजाब में रेल के डिब्बे बनाने का बडा कारखाना लगाया जायेगा जिससे रोजगार की भारी सम्भावनाए बडे और बेरोजगारी हटे। जब कि अन्य प्रांतों के युवाबले पंजाब में बेरोजगारी बहुत ही कम हैं। किसानों की जिनस की मूल्यवृद्धि तथा गृह पर बोस, भारतीय सक्कलियों का कन्ट भी पंजाब में स्थापित करने की बोधलाए की। इन बोधलाओं से बादा की जा सकनी थी कि सम्भवत बकाली नेताओं का सत कुछ नम्र होगा। परन्तु उनकी शक्ति तो कही और म्नी है ये जिना बालासतानी परबम लहराये बटना नहीं चाहते। बकाली नेताओं की रिलाई श्री इसीलिए की गई थी कि सम्भवत बाली की मेज पर बनर कुछ समकाले की स्थिति बड होगी। किन्तु बकाली दल टकराव के रास्ते पर खुलकर भावा विदाई दे रहा है। उपबादी धानकालियों के हाथ में पूरी शक्ति पाती जा रही है।

सरकार का दायित्व

अबपर की तरह लम्बी होती जा रही इस मयस्या का समाधान जल्दी से जल्दी सोजा जाना चाहिए। देशभक्त सिन्ध और हिन्दुओं को विश्वास में लेकर जनता के हित को ध्यान में रखकर उन्हें एकस पाटी मानकर एकतरफा निर्णय कर देना चाहिए। उपबादियों से निषटने के लिए सरकार को अपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। जिस प्रकार सिन्ध लोफिस्तान (पाकिस्तान) में जिया ने अपने दमन चक्र से स्थिति शांति की है उस तरह का दमन चक्र भी सम्भव हो परन्तु उपबादियों को शांति करने का रास्ता तो अपना ही होना चाहिए।

बिरोधी दलों की भूमिका

राष्ट्र की बिगडती समस्या किसी पार्टी की नाक का सवाल नहीं है, सचमुच यह देश की नाक उज्ज्वल का सवाल है। इसे हट प्रकार से हल करने के लिए समस्त दलों की मिलकर हल करना चाहिए। अब समय आ गया है कि देश की प्रतिष्ठा दाव पर है, हलके लिए सभी राजनैतिक नेताओं के योगदान का समय आ चुका है हमें अपने समस्त अवयव गुलाकर भारत मा के फटे भावव को सीना चाहिए, यह समय ही गुलाक है।

—बलपाल सुभा

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव मान के विचारों के क्रान्ति लाके लिए आर्यसमाज की एक सक्षम माध्यम बनाया। यो तो महर्षि के लेख के अनुसार उनके क्रान्तिकारी विचार ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त के विचार ही हैं जिन का भूल आधार वेद ही हैं। आर्य जाति अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे और मानव मान का जीवन की शिक्षा मिल सके, यह महर्षि की तीव्र प्रवृत्ति थी। तब से वर्षों के इतिहास में आर्यसमाज ने मानव समाज के हित के लिए अनुमूर्खी विकास योजनाएं बनायीं उन्हें क्रान्तिकारी भी किया। इससे बौद्धिक वर्ग विशेष रूप से प्रभावित हुआ। सभी की भाव बढ़ने की प्रेरणा भी प्राप्त हुई। परन्तु जीवन का अनुमूर्खी विकास कार्यक्रम सिधिल न हो जाए धीरे चलता रहे। इस दिशा में विचार करना आज फिर आवश्यक है। इसी विचार से महर्षि ने आर्यसमाज के कार्यक्रमों की रूपरेखा मेरी शक्ति से निम्नांकित प्रकार से होनी चाहिए—

१ आर्यसमाज के मन्दिर केवल बाह्य पूजा पदति के ही केन्द्र न बनें, अपितु उनमें आने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्राथम्यरूप, धार्मिक भावना और धर्मतत्त्वों को प्राप्त कर सके, ऐसी व्यवस्था हो।

२ आर्य जाति की पूजा पदति में 'यज्ञ' का विशेष स्थान है। वस्तुतः यज्ञ मानव जाति के सर्वकल्याण काय का भावपूर्ण कर्म है। इस की प्रत्येक धार्मिक क्रिया की सत्य, अर्थात् यज्ञ के साथ करने ही पर मान की जाया की जा सकती है। यदि बोधा ध्यानापूर्वक इसे किया जाये तो निरवयव ही किया जायना की मुक्ति होगी। उचित नहीं है कि केवल बाह्य कर्म न बनाकर जीवन में इसी पूरा साधना अर्थात् अनासक्ति—इदं न मन की भावना को जीवन में उतारा जाए।

३ वेदोपदेश—वेद ईश्वर की अक्षरशीली बोली हैं जो मानव तथा जीवज समस्त में जीवन की प्रत्येक अवस्था में विचार देने में समर्थ हैं। इसीलिए वेदार्थपूर्ण यज्ञ कर्म के अन्तर्गत महर्षि ने वेदोपदेश का हीना आवश्यक बताया है। उचित ही है कि वेदोपदेश के लिए प्रत्येक व्यक्ति को

चित्तन के आधार पर अनुकूल भाषा में अर्थात् देश की भाषा का ध्यान रखते हुए वेदप्रवचन करे। आर्य जन वेद का स्वाध्याय कर उसके प्रवचन का भी अभ्यास करे। आर्य जनो की यदि यह सुविधा प्राप्त न हो सके, तो पुस्तक से ही वेद प्रवचन पढ़ा जाये अथवा सुयोग्य विद्वानों के कंठों का सदुपयोग भी किया जाय लाभकारी हो सकता है। ध्यान रहे कि वेदोपदेश से पूरा वातावरण को सात्त्विक बनाने के लिए प्रत्येक स्तर पर धार्मिक संगीत भी आवश्यक है।

४ योग साधना—महर्षि दयानन्द ने यो तो योग रूप में सन्ध्या के मन्त्रों से योग करने का संकेत अथवा जाप का भी संकेत दिया है। उसका परम उद्देश्य जीवन में अनासक्ति होकर अन्तर्मुखी होते हुए आत्मा तथा परमात्मा का दर्शन लाना है। योग साधना के लिए प्रायशः कार्य सहित जप का अभ्यास और मन्त्रार्थ चित्तन का अभ्यास आवश्यक है।

५ शिक्षण—प्रत्येक आर्यसमाज की धर्म, सङ्कति, सम्पत्ता और आत्म-चित्तन के विचारों का प्रसार करने के लिए शिक्षा को भी उसी दिशा में ढालना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा नवयुवक तथा नवयुवतियों को भी मौलिक और आध्यात्मिक जीवन की शिक्षा आर्यसमाज दे सके। शिक्षा एकांगी न हो अर्थात् केवल मात्र अक्षर ज्ञान ही शिक्षा का लक्ष्य न हो। जागरण उसका उद्देश्य हो। आर्यसमाज की सभी शिक्षा सत्त्विकों से नैतिक धार्मिक शिक्षा अर्थात् वैदिक धर्म का धर्म वर्गों से तुलनात्मक परिचय प्राप्त हो।

६ नवयुवक तथा नवयुवतियों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के लिए वैदिक धर्म के विषय में समाज, भाषण और कविताओं आदि का कार्यक्रम केकर प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही शारीरिक विकास के लिए व्यायाम आदि की रचना का कार्यक्रम भी होना चाहिए और सभी प्रकार से नवयुवक अनुशासनमय होने हुए वर्धमान हों।

७ पिछड़े वर्ग से सेवा—प्रत्येक प्रांत की प्रतिनिधि समारंभ अपना करतव्य धारण कि उनके प्रांत में कब से अन्ध एक है। 'सिद्धार्थ' ही

भावना नहीं रही। आवश्यक है कि इस कार्यक्रम को पुन शुरू किया जाये। कम से कम एक मास में एक सप्ताह अवकाश कुछ दिन जैसी भी सुविधा हो सभी सदस्यों के सुख-दुख का पता और सहायता की आवश्यकता को जाना जाय, जिससे सभी आर्य सम्पर्क आर्यसमाज के द्वारा नष्ट परिवार का रूप ले सक।

यदि उपरोक्त विचारों को भावी वर्षों में सक्रिय रूप से अपनाया जाये, तो मेरे विचार में निश्चय ही आर्यसमाज की उन्नति होगी।

प्रो. प्रकाश त्यागी (नर्म)
सावधेयिक भाव प्रतिनिधि समाजिकी

सिंह जाग ! वीर जाग !!

—डा० कृष्णलाल आचार्य

सम्पूर्ण विद्यामय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली ११००७

सिंह जाग वो रहा है तू कहाँ पहा
वीर जाग सो रहा है नवो यहाँ पहा।
बास बास नोके लगे हैं शत्रु धाज
नीब छोड़ फिर भी हुमा तू नहीं बहा।
तेरी मानुषी है वह तेरी न-मनुष
तू यही पहा यही का धन का बहा।
उपनिषद् का वेद का है ज्ञान को बहा
राम कृष्ण की कथाओं की तू पहा।
विश्वकामन्द स्वामी दयानन्द के महात्मा
धर्मोपदेश का किया है तुने पाव।
धर्मिक शिक्षा मानवीय की देलत की
प्रेमपरा नवने मात्स्य का धर्मिक माव।
पूर्व विद्या देलत के करवट तो एक न
तुने जयज यो रहा उसको तो देख ले।
माधिया उवा की यह लखे के रही
ब्रह्म धर्मकार की तू तोड़ मेम न।
बाबुरज नवगुप्त नवी को बघोड़ की,
मासवेस विक्रमादित्य की भी नीतिवा।
उद्युतपुत्र विजयवज्र प्रताप सोच को
गुप्तों नहीं है विद्या की नीतिवा।
हामा नौवीं रानी नेमन्या वैशम्प
महासिंह विजयवज्र आभाय की पुकार।
हुमाय विद्यावज्र नवी वीर के विजे
मानुषीय के लिए बहू को विचार।
पूर्व इन के भाव निरा धर्मकार धाव
नूल नवी नूल नहीं इस सौध-स्वाम को।
स्वदेश-वेध-माया प्रेम की मयाल ले
कहा हृदय में वर्म की बघकती धाव को।
धाव बग कि बल लेख कम है न नूल,
धावना मा रहे एक स्वर से वेद-माव।
कुछ भी कर तू वेद-ज्ञान को नहीं गुमा,
वही तेरा आधार है भी वही विशुद्ध।
धावत बघकामन्द न नूलमा
मिया के हाथ हाथ से उठा ले भाई को।
माया तेरी नुगि है, इसी का गुल तू
वेद-गुल वर्मों सरे वलायें भाई को।
सिंह जाग बगने रूप को पहचान ले
इस बग को, भी नवम-नवन को जान ले।
अपनी रचना को, अपनी भाषा को धर्मक,
लेख तेरी भाषा है, उनी में भाव से न

लोकायत दर्शन भी इसी का ही
 भाग है। यह दर्शन के दो वर्गों में है-

आध्यात्मिक जगत् को आर्यसमाज की देन

जबका धाय तक कोई बुद्धिबुल उत्तर नहीं दिया। ये विचार वर्गों ने तर्क, बुद्धि और विज्ञान की कसौटी पर टिक नहीं पाये।

हूडरी विचारधारा ने केवल नाम परिवर्तन मात्र है। जब के स्थान पर चेतन शब्द का प्रयोग है। बौद्ध मतम्हों का आधार बही है। ईश्वर की सत्ता को कहीं भी स्पष्ट रूप से नकारा नहीं गया। बरन् ऐसा लगता है कि वैदिक विचारधारा में जो व्यावहारिक बुद्धि या धर्म थी, बौद्ध धर्म उसकी प्रतिक्रिया मात्र है। कालान्तर में बौद्धधर्म की इस विचारधारा के परिणाम स्वरूप अब पंच प्रत्यक्ष होने का नया ऊर्ध्वतन हुआ और धार्मिकता जीवन का एक पक्ष की ओर उन्मुख हुआ तो उसकी भी प्रतिक्रिया हुई और नया माना जाने लगा कि चेतन सत्ता का अस्तित्व नहीं है पर नहीं बहू है। वेध सत्त बुद्ध धर्म नुसार है निम्न है। बहू तत्त्व निर्गुण-का कारण बही ने हुआ। इसी विचारधारा की धारा सकारणय ने सन्तुष्ट किया।

धार्मिक सत्कर बहात के भाष्य ने शोकक जगत् की बहू का परिणाम मानते हैं।

'वैतनमेक बहू सत्य परिलक्षमाण
भाष्य कारुण्यनि स्मितम्।'

—शाकल्य भाष्य २।१।२९

इस प्रकार बहू चेतन और किसी ब्रह्मत्वा में जब रूप होकर भी प्रतीत होता है। स्पष्ट है कि चेतन यह जब ही सत्ता है जो जब का चेतन होता भी स्वीकार कर लिया जाता चाहिए। अन्तर केवल अनुभूतिमात्र है। फिर ने-बहू और विवेचन की कसौटी पर एक बात तो निश्चित है कि जब सत्ता जब और चेतन सत्ता चेतन ही रहेगा। दोनों के अस्तित्व के स्वतन्त्र तथा मूल रूप में स्वीकार करना सत्य बुद्धि सत्य है।

इस प्रकार हमने देखा कि तीन प्रकार की इस धार्मिक विचारधारा ने एक बहू प्रत्यक्ष प्रकृति तत्त्व की महत्त्व देती है। हूडरी चेतन धार्मिक की भी महत्त्व प्रदान करती है। तीसरी बहू और चेतन दोनों की ही बहू का रूप स्वीकार करती है। तात्त्विक विवेचन के आधार पर तीनों ही अपने से अनुप्रायत और एकपक्षीय है। इनकी भी विज्ञान, बुद्धि और तर्क की कसौटी पर बुद्धिबुल स्वीकार नहीं किया जा सकता।

हम यहाँ हमका जो मूल नेव है उसे ध्यानत सही में स्पष्ट कर रहे हैं। १ - बाला जोला नहीं है, जब कि जीवात्मा जोला है। वैदिकधर्म के साथ सम्बन्ध अस्वरूप में जीवात्मा और जीवात्मा

है। प्रकृति योग्य तत्त्व है।

हा नुपरां सुभा सत्ताया

भाष्य सत्य परिलक्षकते।

सत्योऽयं निष्पन्न स्वाध्यायन-

धर्मन्योऽयं धर्मन्योऽयं ॥

अध्याय १।१६।३०

वेद का यह प्रति प्रकृति सत्य है। इसमें मूल तीन तीनों तत्त्वों का सत्य है। जीवात्मा भोक्ता परमात्मा धर्मोक्ता और योग्य तत्त्व युक्त तत्त्व के रूप में प्रकृति का उत्पन्न हुआ है।

नैवास्तवत उपनिषत् ने भी इसी को-

भोक्ता योग्य प्रेरितार क मत्ता

भक्त प्रोक्त विविध बहू सत्य।

इस प्रकार ये तीन धर्माति धर्मिता है—वेद और भी धर्म प्रकृति।

धार्मिक सत्य ने महति ध्यानत का बही नैवात्ता का सिद्धा ही बहुत सत्य है। धर्मसमाज इसी मान्यता का प्रचार और प्रसार करता है। इससे धार्मिक सत्य की सभी विवेचनियों का स्व ही समान्य हो जाता है। यह विचार ही तक और बुद्धि की कसौटी पर अपने ने पूर्ण है।

६ षड्दर्शन समन्वय

धर्मक विज्ञानों की चारणा रही है कि षड्दर्शन परस्पर विरोधी हैं। नास्त-विकता कुछ और है। साध्यात्मिक धर्मक विज्ञानों ने स्व स्व पक्ष के पूर्ण-बहु की भावना से ऐसा मत बनाया और उसी रूप में उसे प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है। मूलरूप से साध्यात्मिक की ऐसी भावना जिसकुल नहीं की। महति ध्यानत ने इस विष्णु मत्ता का तो समाधान प्रस्तुत किया है वह ध्यानत बलाकार पूर्ण एवं सत्त सत्य है। धाय-समाज की बही मान्यता है। यह धर्म-योग्य समाजधर्मो है।

समार्थप्रकाश के अन्तर्गत सत्त्वसात के बहूधारा में प्रकाश है 'नैवा एक विद्या मे धर्मक विद्या के धर्मको का एक हूडरी ने निम्न प्रतिपादित होता है, नैवे ही सृष्टि विद्या के निम्न निम्न ३ धर्मको का धर्मको में प्रतिपादन करने से हमने कुछ भी विरोध नहीं है।'

समार्थप्रकाश के अन्तर्गत सत्त्वसात के बहूधारा में सम्य उपाधाय काय, विद्या ज्ञान और विचार, तत्त्वों का नेव तथा निमित्त कारण धर्मत्वं अनाये वादा इन ३ धर्मको के धर्मको में किसी भी पक्षों का धर्मत्वं के धाना धर्मन्वय है। नीमात्मा वैदिकत्व, न्याय, योग, साध्या और वैदिकत्व इन ३ धर्मों की एक-एक व्याख्या का रूप है। धर्म नैवे कहीं भी विरोध नहीं है।

इस प्रकार षड् दर्शन एक हूडरी के विरोधी न होकर एक हूडरी के पूरक हैं। बुद्धि रचना की प्रक्रिया का पूरा म्या स्थान है।

७ मुक्ति से पुनरावृत्ति का सिद्धांत

धार्मिकत्व सत्य ने महति ने मुक्ति से पुनरावृत्ति का जो समीर विचार दिया है वह निश्चित रूप से मनीन है यहाँ सब सम्प्रदायों की मान्यताओं के साथ इस सिद्धांत का तुलनात्मक विवेचन दिया जाए ठीक तो यही है परन्तु नेव के ध्यानत सत्य ही जाने के कारण उन खोब रहे हैं। धर्म धर्मक धारणक के बिना महति ध्यानत की धार्मिकत्व जगत् की नेव है। निम्नका प्रचार धाय समाज करता है परन्तु स्वान्याय के अर्थ से उन्हें भी छोड़ना पड़ रहा है। इस धर्मत सिद्धांत का सत्य रूप से विवेचन धारणक है।

न्याय दशन ने तत्त्वतः विरोधी धर्म 'धर्म' और साध्य दशन ने धर्म विविध-दुःखात्मक निवृत्तिपरिणामप्रधान कह कर सब प्रकार के दुःखों की धारण निवृत्ति की योग्य का स्वरूप बताया है।

इस ध्यानत पक्ष का धर्म धार्मिकों ने यह किया है कि इस प्रकार दुःख की निवृत्ति होने पर जीवात्मा फिर कभी सत्ता न गयी भाता। महति ध्यानत की मान्यता यह है कि धारण और धारणत जीवात्मा ने ऐसी धारणत नहीं कि वह ध्यानतकात तक ही ब्रह्मात्मन का योग करता रहे। वर्तनी के इस धारणत पक्ष का पक्ष महति के धारणत न करके 'धाय' धर्म किया है। वह कात ही इतना है कि उसके लिए 'धाय' पक्ष का प्रयोग धारणतय धर्मका धारणतय से जानने जाना नहीं है। नीमात्मा की महति ने धारणत कात कहा है। इस परात काव न गणना करके धारणत भी बताई है। इस प्रकार धारणतय न धर्मत से पुनरावृत्ति की बात को स्वीकार किया है।

धायसमाज ने इन प्रकार वैदिक मान्यताओं का प्रचार प्रसार करने के धार्मिकत्व जगत् से जो इति लाने का प्रयास किया है उसका बहुत प्रभाव पड़ा है। धर्म विद्याओं और धारणत की सभी मान्यताओं के प्रभाव की रोकने में जो भी सफलता मिली है उसका धर्म धाय समाज की ही है। ॥

आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका विश्व आर्य सम्मेलन

आप की यह जानकारी प्रसन्नता होगी कि उपरोक्त सभा, तारीख १४, १५, १६ दिसम्बर की अपने होरक महोत्सव और विश्व धार्मिक सम्मेलन का आयोजन कर रही है जिसके लिए सार्वदेशिक सभा (रामलीजा मदान नई दिल्ली-११०००२) की अनुमति मिल चुकी है। हम धारा करते हैं कि भारत से और धर्म देशों से धार्मिक व्यक्ति यहाँ आकर इसे सकल बनायें। इसके लिए ध प निम्नलिखित तैयारियाँ अभी से वाजु कर दें।

१. अपना पापमोक्ष बनावा नेव। उसमें प्रयास करने धर्म देशों के साथ साठव धर्मोका का नाम धर्मय लिखा नेव। स धाय रूप से साठव धर्मोका के लिए भारत सरकार अनुमति नहीं देती है। पासपोर्ट के सम्बन्ध में अपने स्थानीय विदेश सचिव के एवम धाय की मार्गदर्शन दे सकेंगे। आप होने भी लिख जिससे ह नया की बीसा (Visa) प्राप्त धायको नेव देते।
२. भारत की राष्ट्रीय धार्मिक प्रतिनिधि सभाएँ सार्वदेशिक सभा से सम्पर्क स्थापित करें। सम्मेलन है कि उन्हें धार्मिकों का धार्मिक कोटा न मिले, तो धाय स्वतन्त्र प्रयत्न करें।
३. धर्म आई बहूनी ही स्वतन्त्र रूप से पासपोर्ट और यहाँ के प्रवेश पाने की अनुमति के प्रयत्न करें।
४. अपने सामर्थ्य और प्रयास के लिए धायधर्म बनरारि इकट्ठी कर और धायधर्म के नियमों की समझ लें।
५. इस सम्मेलन में हम से भी धाय धर्म व्यवहार वाजु कर दें, जिससे हम धायको आवश्यक मार्गदर्शन दे सकेंगे।

भी एल० रामभरोस

प्रधान
धार्मिक प्रतिनिधि सभा, साठव धर्मोका

१० नरसेव वैशाल्यार

प्रधान
नेव निवृत्त, साठव धर्मोका

३५ कास स्ट्रीट, ४०००१ डरबन, साठव धर्मोका।

न मया लक्षितं कश्चित्
स्वप्नोऽप्यास्मरतिभ्रमः ॥

राज्यारोहण के लिए ब्रूसाये जाने

ये बच्चे से बड़ा त्याग करने के लिए भी तैयार रहते हैं। अत्याचार और अत्याय का प्रतिकार करने में ये सदा धाये रहते हैं। अत्यन्त सौम्य कोमल एवं मृदु स्वभाव वाले राम अवसर आने पर अत्यन्त कठोर भी बन जाते हैं। उत्तररामचरित-कार भवभूति के शब्दों में —

‘वञ्जासि कुरुगस्मिन्नुपि कुडुमासि’
 बन्धु ने श्री कीर्तोर तथा पुण्य ने श्री
 कीर्तय राम का श्रीकीर्तोर बरिच समझा
 सामान्य बुद्धि के अन्वित के लिए समझ
 ही नहीं है। जीवन के शारङ्गिक काम ने
 गुरु गुरु माता, पिता, पुत्र तथा पुन्य ही
 अन्वितों की आज्ञाकारी ने उत्तर देते
 हैं। कर्त्तव्य प्राप्त ने उनकी उपमा किसी
 वस्त्र ने नहीं ही का सकती। जलधरु में
 पिबन्धुन्य कर के वस्त्र नही उत्पन्न
 वीर तथा शान्ति की का परिचय निरखता
 है। माता-पिता की वाता का एकात्म्य
 प्राप्त नहीं सम्भव भिय है। इसपरि ने
 अपने राज्याधिकार के शान्तिवचन शान्ति
 की ही उत्पन्न कर वञ्जासि के लिए प्रवचन
 करते हैं। शक्ति के वस्त्र —

[illegible]

साँस्कृतिक विरासत

भारतीय संस्कृति विषय की ग्रन्थ प्राचीनतम संस्कृतियों में अपना अद्वितीय स्थान रखती है। विषय की अनेक प्राचीनतम संस्कृतियों का जोष हो गया है, परन्तु भारतीय संस्कृति का प्रभाव जहाँ तक यह विषय सम्बन्धी है। भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों का धन्य है समन्वय करने प्रायः के मुख में ही अपना मस्तक धारण किए हुए है। इसके पीछे बहुत से कारण हैं।

भारत बर्ष प्रभाव देव है । भारतीय
संस्कृति बर्ष प्रभाव है । बर्ष से हमारा
चालन कर्तव्य से है । हमारी संस्कृति
का भारतीयन विद्वान् महा रहा है कि
बो बर्ष का भास करेवा संस्था विनाश
हो जाएवा । इसकी युक्ति के लिए इति-
हास के पन्ने अने परे है । इतिहास साक्षी
है कि, जिस किन्ही से हमारे बर्ष पर
प्राप्तत विना संस्था क्षतिरह ही पर
नया । यही कारण है कि भारतीय जीवन
की समस्त बाणों में बर्ष की भावना
प्रभाव है । व्यापक रूप में यह का धर्म
आत्म बर्ष से है ।

हमारी संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। आज से पचास वर्ष पूर्व तक भारतीय संस्कृति को ही हमारी प्राचीन संस्कृति माना जाता था परन्तु १९२२ ई० में हुई सिन्धुवादी की खुरारें से हमारे समक्ष एक नई संस्कृति आयी। इस संस्कृति को एक भाषीय संस्कृति की प्रथम आकांक्षित संस्कृति मान सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में अण्डे विचारों का अपने में सम्मिलन कर लेने की एक बड़ी प्रवृत्ति पावित है।

इसने धार्मिक, यूनानी, सिक्ख, लक, हूज, मुसलमान, ईसाई सभी जातियों के सम्मुख खुश का ग्रहण कर लिया। विश्व युद्ध विरोधकान्द ने भारतीय संस्कृति की पावन सक्ति की बड़ी उपपन्न की है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपना देश प्यारा होता है, वह अपने प्रतीक की उपस्थितियों के प्रति स्वाभाविक र्व का अनुभव करता है। श्रीर भारत तो वह महान् देश है जिसने न सिर्फ दुनिया को बहुत कुछ दिया है वरन् दुनिया के विभिन्न

कबीरी से बाहे ब आत्मसम्यक बनकर आए प्रबुद्धा औदार्य उनकी सांस्कृतिक उपलब्धियों को निःसंकोच ग्रहण कर, उन्हें आत्मसात् कर, अपने महान् सस्कृति के सागर में उन्हें विलीन कर हजारों वर्षों पुरानी इस सस्कृति का सावतार विकास किया। इस सांस्कृतिक बरोहर पर नये होना स्वाभाविक है।

हमारी महान् सत्त्विक की एक महान् शरीरहृद् है सुनिर्मित और सदा का शुका-राज, कबीर तथा ईशान्य का वह पुन विमल है मानव-मानव की समताता की स्वीकार किया गया। पण्डितों की लक्ष्मे-दार टिप्पणियों से पूरा परन्तु आकाश द्विज से तैयार की गयी, निम्नमावणी को दोष काहें बल्ल के रूप में ही क्यों न हो—आकाश की ओरके माना मात्र

घपनाया गया, जात-पात पूछें नहीं कोई ।
हरि को मर्ष से हरि के होई ।

इस सङ्कल्प में बहिष्कृत्या एवम् उपा-
रणी की भावना विविध रूप में पानी
पायी है। बिना हीराहास पर हमें नबेर
दीवाने के आगे दिखाए गए हैं। मुहम्मद
में बहिष्कृत्य के कारण बनें मुद्द हुए,
बिचने बनें पोर बनें की बाजार सति
हूँ। लेकिन भारत में इस प्रकार के मुद्द
कमी नहीं हुए। घनेकटा में एकटा
हमारी विविधता रही है। कई बनों का
एक सम्प्रदाय का यहाँ पत्तनक हुआ,
पर किसी की अन्तर के कारण मुद्द बनें
नहीं हुए। विभिन्नता में बाजारपुत्र पक्ष-
अंदा हमारी सङ्कल्प की एक बनी विभि-
नता है। यह है बिनास बिचने हमें
पायी है। यह हमें मान्य बिचने है।

यह नव वर्ष सभी को सुखद शांति मंगलमय हो

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

यज्ञाग्नि से विद्य-विगन्त हो, कुरन्ति ध्यायि विषय भव क्षय हो
वैदिक विचार कारानुबन्ध, शिव जग-जग का परिपूर्ण हृदय हो

श्रीम पताका घर-घर कूहे, श्रुतिवर दयानन्द की जल हो
सत्यव प्रेरक अटल मत, धर्मों का ध्रुव सम ह्य निरचल हो

नित्यक वेद पराक्षित हों, वैदिक धर्म की अविवरण व्यय हो
प्रमाण तब का मास हो, समस्त मा ज्योतिर्नय हो

एवम् एतत्तु प्रमाणं प्रसिद्धं विप्रो बुद्धो यत्तु सर्वं वाच्यं यो
यत्तु विप्रो बुद्धो यत्तु सर्वं वाच्यं यो

दर्शनशास्त्र का आदिगुरु

लेखक—प्राचार्य रामानन्द शास्त्री उपप्रधान आय प्रतिनिधि सभा बिहार पटना

फिती बासि की महारा सनभने के लिए भौतिक महारा का विकास पर्याप्त ही मही है। भूतब की बहुत जाहिया जैसे देखिबोन इतिपिगिनम धारि सम्मती की धृष्टि से बहुत उमल की किनु धाव परा काव्य मे है। फिती जाति का बहपन बाभने के लिए यह जानना परमानवक है कि उस जाति की दार्शनिक विचारधारा क्या है। विज्ञान का सम्बन्ध ज्ञान प्रथमा बुद्धि मे है किन्तु दखनशास्त्र तो धारानुत प्रुति होता है। दखन धर्मोप निम्नम वा धिक्क विलियम ह्यु परिहारा है। इसलिए बहोन शास्त्र फिती जति को उल्लेखि की बासा है। भारतीय प्रका इर फिक्कन मे प्रथमी प्रथमा जो इन्हिने विरगुण है। यूरोपीय दार्शनिक थेसिज (Tholes) फिक्के दखन शास्त्र का पिता कहने है धाव मे १५०० को वष पुन युगान के धावो निरा नामक धाम मे उल्लेख हुवा था। उस ने जब तक के धृष्टि का विकास किया। उसके पश्चात् और युगानी बाव निम्नो मे फिती ने धारि वा वातु परव से विमान की कल्पना की। युगानी धारि की मे विराने और पाश्चात्यारत मे उल्लेख नाम पर ही धारि बल विरा भारत की धृष्टि मे से सब दार्शनिक धर्मोनी है।

धारानिक इतिहास मे विहित हुवा है कि प्रगत्या गौतम बुद्ध के समय प्रचलित धार मे २५०० ही वष पुन मे सब विद्वान भारत मे विष्णुस प्रचलित हो गए थे। दखन बुद्ध ने अपने प्रवचनो मे ८७ दार निर विद्वानो का उल्लेख किया है। गौतम बुद्ध ने घर मे निष्कलर धाराध काल मे से शास्त्रशास्त्र की विज्ञा प्राप्त की थी।

भारतीय दखन शास्त्र की परम्परा भेरी के शास्त्र होती है। ज्ञानमे के नार भीम युग मे हने सुख दार्शनिक बातो का उत्पन्न उल्लेख निम्नता है। यही विचार उत्पन्न शास्त्र मे धारि विकसित हुवा है। बुद्धशास्त्र तथा धर्मोप मे वन धार निर धारना का भी उल्लेख निम्नता है। विधिवादिपरि विरुद्धवक्त के इच्छावेषा विचारि प्रचारित कागिगरेर अवात धानु प्रचारित प्रचारित वेषा विरुद्ध भुक्क मे। ये राभा राजनीति मे निरुण मे। दखनी शास्त्र आनन्द का धारुधम की। राभा धारुधपति के लिए कहा जाता है कि उसके राव मे और उग्रम दरवी विना कनिगनी किफु की हुक्क प्रुति (मिस्तर) अविचारि तथा अविचारि विरुद्ध नहीं की।

धारुधमनु की रावानी धावी मे अवातक की इच्छावेषा निम्न मे। सब

की धारनी विज्ञा का बडा धारिधम वा। उन्हीने साग जनपदो के दार्शनिको की रीतिरुक्क किया वा। कोई धाकर धारुधम कर मे। उनपरिब कहते है कि—

दुखभावाविर्हनुमानो धाव धाव।
स होवाध धारुधमक काव्य कहुते मे प्रवचाराति। स होवाध धारुधमक, तहल्लेकतवा धारि दखनी जनको जनक इति ब नापा दारुधनीति।

इतने स्पष्ट विहित होता है कि कल दार्शनिक को अपनी विचार पर कितना धारि विकास वा। राभा प्रवाहल दखन के विचारो मे। पश्चात बड भारी दार्शनिक हुए उपनिषद् मे उनका की सिद्धांत धारुधनीय गाता जाता वा।

राभा जनक उनमे धारणी मे। बूह दारुधमे के एक धारुधम का उल्लेख किया है—

जनको ह बनेहो बहुरविलेख यजन इति तथ ह कुपुनकाशासा। बाह्यशा धारिधमेना कहुवा। तथ ह बाह्यशा वेंहदुख विनिश्चिता बहुरक विर बह। बाह्यशासागमनुमानतय वा। स तथा तहल्लेखनो दखन सब धारि। एकधाराय भूतल्लेखदडा बहुरु। तां होवाध प्रधाव ताकता नकनको यो की बहुरिक्क स गाता वा उल्लेखता विरि।

प्रचलित राभा जनक मे बहुरविलेख से सम्मान एक वा किया। उनमे अग्रवाधान के बाह्यशा उपरिब मे। उस समय जनक विरुद्ध को यह जानने की इच्छा हुई कि उनमे धारुधम विद्वान् कौन है। उन्हीने बोधना की—बाह्यशा। ये एक उल्लेख है प्रलेक के प्रुक्को मे सब सब धार लेने नह हए है। जो कोई धाव मे कोष्ठ विद्वान् हो है उन्ही हाकर मे जाये।

भारी सना मे लगनाहा वा वना। तब शास्त्रवल्क धारि ने अपने विरुद्ध धीम भवा की धारि विरा। सोव्य। इन धारो की होवाध धारुधम मे ने गले। सब मही मे बाह्यशा धारुधम धारुधम होवा। धारुधम धाव मेने सब जनक के होवा की धारुधम मे। उनके धारुधमार्ग नाव भवमे मे वन का वैधानिक एक धारुधम धारि दखन का विरुद्ध करणा। तब बाह्यशाधम धारुधम धाव। उन्ही बाव भवमे मे धार का रहल्लेख जनका। भुक्तुताह्यार उल्लेखधारुधम धारुधम नाकनी उल्लेख धारुधम धारुधम मे धारो की। उन्ही सवा सी। उनपरिब मे विज्ञा है उन्ही अग्रार तीरुधम धारमे

तीरो की प्रुक्को की प्रवचन पर उल्लेख सब को विधाना बनाते है। उसी अग्रार धारो मे धारमे उन्ही का निगाना बाव भवमे की बनाव। बाववल्क मे विज्ञा भेकर धारो इच्छावेषा की होव है।

बाववल्क की दो रियावा भी—
काव्याधनी और नैयमी। नेचारा काव्या धनी तो रोटी रकने धारि नह कावो मे ही सवी रहती की कि नैयमी तो उन निष्क (परिब) मे भाग लेती की। वह परव विरुद्धी की। उनमे ही बाववल्क मे प्रुक्का वा कि मनुष्य की बहुरिक्क होता है।

बाववल्क मे उल्लेख बहुत धरुधम सवाधान विर। धाव के दार्शनिक उर पर सता है। धारि कहते है—

म का बरे यानु काव्याध पति विरुद्धे भवति धारुधमनु काव्याध पति विरुद्धे भवति।

मगोलपुरी पुनर्वास कालोनी में वेद प्रचार

मनुष्य को प्रविलेख की धारुधमकता होती है जबकि धार धीम कुता वस्ती धारि नैयतिक धार मे परिणु होता है। वल्ले को वेंचरा विधाने की धारुधमकता नहीं होती है। साना रायगोपाल की धारुधम प्रधाव स बदे सब धाव धारि निधि तथा मे मगोलपुरी मे महाधम धुनीमान उल्लेख के वेद प्रचार विधाव द्वारा धारुधम किए गे कायक का उल्लेखन करते हुए अल किए साना जी ने कहा कि मगोलपुरी के निवाशियो के लिए यह स्थिति धरुधम है जबकि मानवधुत्वा का इन कायकरो मे म अर्थ के धार धार कर कते है। इस धार को

कोई वस्तु विर मही है धारिनु धारुधम ही विर है उसी को जानो मही धार उल्लेख है विरुद्धे सारा अवल धार के धारि नत मल्लेख है। सारा वस्तु धारुधम से उल्लेख है इसलिए उल्लेख ज्ञान धारुधम है।

दखनशास्त्र का धारुधम मही के होता है।

मही की जानना ही दखनशास्त्र का परम सख है। भारतीय उल्लेखन की भी धारुधमविज्ञा मही है। यूरोप मे नकशाधम का मुबल नभी विज्ञा के लिए हुवा वा कि भारत मे इसका सखन धारुधमविज्ञा के लिए हो हुवा।

यूरोपीय नकशाधम के निरा धारुधम नह जाते है जो निर दर महान् के मुक्क मे। निर दर के मर जाने पर उन्ही निरुद्धी कहु कर तिरनूक कर दिया गया वा। भारतम उल्लेखन तो राजा कल्ले के दरबार मे उपस्थित सखना नामक रकी के मुक्क से सुना गया विरुद्धे उ उल्लेख की युक्कियो मे सारी सना भी गौन कर दिया वा। यूरोप मे विज्ञा विज्ञा उन्ही मे सब मही से नह है।

प्रधान कर्ता यही धारुधम है जब हुने हने धारुधम धीम मे परिताव कर सक। उन्हीने कवाया कि वेद का कल्पेन कल्ले धिनुक्को के लिए मही है वह सभी के लिए है। मानवधम सक धीमि व होकर धारुधमविज्ञा के लिए है। इस धारुधम पर वन भी सखन के पश्चात मह सखन मपल की प्रम न धाय के उल्लेख सना डा० धारुधम प्रकाश उल्लेखी धारुधमि सना १० राबनुकी की मर्मा प्रधान प्रतिनिधि सना मध्यधारुधम मे उपस्थित जनो को सगुचित विना। कायकम का मगोलपुरी व धुनीमान जो धारुधम मे निम्नता।

दयानन्द की देन (पृष्ठ ५ का वेध)

उन्ही केवल प्रव की इच्छाधुति का साधन न कल्लाया। इन्ही अग्रार महर्षि दयानन्द मे धारणी वैधानिक धारि द्वारा नारी धारि की निर से उल्लेखन के पर पर धारुधम करणा।

महर्षि दयानन्द ने अपने धारुधम सखन धारुधम तर सवा निरुधिता के कारण नामक धारुधम को कल्पा के धार पर बने की प्रेरणा दी। कल्पनी विरुधमार्ग का उल्लेख केकर एकता के मुक्क मे धारमे के उल्लेखन धारुधम।

उपग्रम धारुधम की स्वतन्त्रता का धीमारीयल महर्षि दयानन्द ने ही विना

वा। धार मे धारुधमि धारुधम धारुधम से इति एक विरुद्धी धारुधम का प्रम उल्लेख मे धारुधम। सख को प्रहल्ल करने धीर धारुधम की धीमि मे सवा उल्लेख धारुधम धारुधम। धारुधम का उल्लेख धारुधम वा नह सता है।

महर्षि दयानन्द मे धारुधम धारुधम मही धारुधम धारुधम के कल्पा के लिए को देन की है वह धारुधम तह मही फिती ने मही की।

२००/ए की सार्व, धीमिधमक धारुधम धारुधम-२०१६०

आदर्श जीवन

(एक २ का चित्र)

आपनी निष्कलम धर्मता को बसा जाता है हम की वह पुन आनी धर्मता एका रने के लिए प्रयत्न करता हुआ एक दिन कोष्ठम धर्मता को प्राप्त कर लेता है। इस हने सभी विराग नही होना चाहिए और अपनी धर्मता का मुखात्ते हुए हम वरम सफल हो सकते हैं।

पुन जब प्रिया का बाद चन्द्रमा प्रभाव बप ऐसा नही करता तो विनाश प्रारम्भ हो जाता है। धत विनाश और आपरवाही प्रभाव मे प्रयत्न विविध सभी

नही करता है। इत्यादि धर्मको धिमाए हने चन्द्रमा से मिलती है।

पुन जब हम हुए की तरफ देखते हैं तो पाते हैं कि सुख को जब बाधाएँ (बाधक) पेर नेता है तो सुख चबसा नही उसके पुन करता है और विचयी होजा है। यहा ईश्वर हम यह लम्बे वते है कि बाधाओं से बचा भी विचरित मत होओ। उनम डूबते बल बाधो। ऊना उठो धामे बओ तुम धन व विचयी होगे। विरतिमा धर्मव्यम दूर होकर रहेगी।

इस सहाय मे विरतिमा भी हमे धर्म-तम बनाने के लिए ही बनी है। वह ईश्वर की तरफ से हमाने परीक्षा है।

उपर्यें बूझकर हम विचयी होते हैं। सफल होते हैं निश्चय बने जाते हैं। सहाय मे विरतिमा मे भी व्यक्ति को महानु बनान मे कम योगदान नही दिया है।

इम प्रकार हम देखते हैं कि एक एक वेद मन्त्र मे कैसे कैसे धर्मपुत्र ज्ञान विज्ञान परे पड हैं। सब ही वेद मन्त्र एक न एक बरकर आँद हैं। जितना ही उनमे हम धर्मप्राप्त करने उतना ही धान्यम और ज्ञान विज्ञान हम प्राप्त करत चन जायेंगे।

इसी लिए वेदो के परम मन्त्र दन दधान्यम उपदेश मन्त्रही के उपदेश मे बताते हैं कि ज्ञान योग एक एक वेद मन्त्र

को लेकर गहन मनन चित्तन समाधि मे ईश्वर से धर्मज्ञान प्राप्त करत मे और धर्मपुत्र भावें सहाय की देने प। इस रूप भी ज्ञविभाषायानुसार सब मन्त्रो का गहन मनन करत हुए नई-नई बातें सहाय का देते रहे जिससे सहाय का उत्तरोत्तर हित होता रहे। क्योंकि सहाय का उप-कार करना सबका मुख्य उद्देश्य शाना बाह्य। ओम् नमः शः

विन्सरी प्रसाद सिंह
४० सहायक निदेशक
५०२ के १५ जल धामोय
रेवा मवन रामा कुच्छ गुमम
नं० दिल्ली ६६

दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



23 जली बुट्टियो से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

उत्तम का घरेलू



उत्तम का घरेलू
मे उपलब्ध

महाशिया की हड्डी (पा०) लि०

9/64 उपरविष्टान्त परिस कोसि सार जई दिल्ली ११०00 539009 537957 537341



मसुहो की मुलम



मुह की दुर्गन्ध



उष्ण गर्म पानी लगाना



दात का दर्द

घरेलू उपयोगी बातें

- ऊनी कपड़ों को बोझी और बरसाती हवा से बचाने के लिए उस पर लुबकारी पिसी हुई फिटकरी छिड़कें।
- घर के बाहर उन चीजों से बचने प्रकाश नही मिलता गुरुता निमित्त पानी डालें। हमसा लाने बने रहेंगे।
- एक घर पानी मे एक घन्टा के निश्चय निमाकर रेसमी कपड कोर्न हनेसे न तो व सिङ्कने और न ही क-होये।
- नये रेसमी पोचो को पहनने से पहले खूब घरम पानी मे बोर्न बोझे डीसे नही होये।
- ऊनी व रेसमी कपड़ो से यदि रंग छूटने का डर हो तो उन्हें बरस हा नमक रोते के पानी मे बोर्न रन नही छूटोना और कपड को साफ व चमक दार मुले।
- नये रसीन सूती कपड़ो को धोने से पहले यदि उन्हें कुछ देर बोझ नमक मिले पानी मे किसी दिवा जाए तो उसका रन बहुत दिनों तक धम्भा बना रहेगा। स्परम रहे पानी घरम करने की आवश्यकता नही है।
- रेसमी कपड़ो से चमक लाने के लिए

जुके हुए कपड़ो को बोझी की रिशत मिले साफ पानी से बोझी डेर के लिए डूबोये नई।

दा या तीन रण का स्वेटर पोसे लमय बोझा हा नमक डालने मे कभी भी नरान नही होना।

□ बचे हुए घाटे का लमीरा हात से चपत्ते के लिए उसे पोलीथिन की रीथियो मे गासकर डिब्ब म रखना चाहिए। जब घाटे की धावबकला हो तो १५ मिन्ट पहले ही बेसी को पानी मे रन दीछिड़ छाटा १५ दिन भी नरान नही होना।

□ यदि लकड़ी का फर्निचर घुसका हा लकरी लगा है तो लकरी के रोले मे पानी मिमाकर साफ करिए फर्निचर मे लकरी लीनी चमक का बायेगी।

□ नेत्र पालिका शक जाय हो उनमे कुछ नुई न रिशत भाग दीछिड़, उच्छे पानी हो जायेगी।

□ यदि कोन नम जात हो उनमे बोझी की निमाकरीन शान दीछिड़ छल्ले की तरफ मुमायन हो जायेगी।

□ बादी के कागुपल खपना चीजो को उस पानी मे साफ करिए जिसमे छासु उबाने मने हो या उन घर पने का लेप कर दें। एक्के घर पुनन कपडे से रसकर साफ कर दें।

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Pari's Beauty
पैरिस न्यूटी

गोवर
सन्स

ब्रा पेंटी बनिथान अन्डरवियर व बेबी पेंटी आदि

पैरिस न्यूटीसेल्स कॉर्पोरेशन

2465 ए/२ बीकानेर एरा अजमेर एरा रोड
कटोरा बाग नई दिल्ली-१५०००८-८
दूर भाष 569234 574200-582036

वैवाहिक-विज्ञापन

एक १३०४ २० मासिक धाम जाव विपुल धमाउपेट के लिए नि स न, ल २२ स्वस्थ सदा लग्ना विधवा या ८१ त्यस्ता की धाम यकता है। सम्पक कः—

श्री अमरनाथ सन्ना
मरान न० ३०३ सेक्टर न० १९ ए०
परीदागद (प्रतिष्ठा न०)

पुरोहित की आवश्यकता

धार्मिकमय दीन पार्क मे एक मनोव्य विद्या पुरोहित की आवश्यकता है। जित्त बेतन दक्षिमा प्रदान की जायेगी। इच्छुक महानुधाम मोत्र सम्पर्क कर।

प्रधान, लाला इन्द्र मारामय
ए १६ बीन पार्क नई दिल्ली

आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की रकम आर्केनर प्रविर्णिम ५०० व. के अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सादर ध्यान : बेंगलूरिआर्केनर/बेंगलूरि द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी आर्य धर्माध्य नेत्र चिकित्सालय,
बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

रामगोपाल दासदाते	सुमन	महेश्वर चरणदास	योगदास आर्य
संस्कृत चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	समी
एन० प्रधान, वा० वा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केजीव	प्लासिड कुलीसाल
प्रति० सभा	सभा	सभा	बेरि० दु०

सौजन्य से महासिपाही जी हुरी प्रा० लिमिटेड, ६/४४ सीलिम्बर,
प्रोबोसिक रोड, नई दिल्ली-११००१

“आर्य जगत्” साप्ताहिक

- १ यह किन्हीं दिनों का सबसे प्रस्ताव और राष्ट्रवाद का प्रवेश योग्य है।
 - २ राष्ट्रीय समस्याओं पर दृष्टि के सुविचारित दिशा-दिशा राबनीक केवों की की प्रभावित करती है।
 - ३ यह बच के नाम पर पाक्यों और कन्वैन्सियों का कट्टर विरोधी है। और वैश्व बच के उन्मूलन स्वयं का प्रस्ताव है।
 - ४ यह समान ने कौनो सुविधों का निवारण कर सामाजिक न्याय के लिए प्रेरित करता है।
 - ५ यह बन्धुत्व मात्र की शारीरिक और शारीरिक उन्मूलन का मार्ग सुझाता है।
 - ६ किशोरी के बलि का और उनके स्वास्थ्य का निर्माण इसका विशेष लक्ष्य है।
 - ७ लोकल गरीबों से बचाकर गरीब उत्थान की लक्ष्य पिछा का समर्थन देता है।
 - ८ वैश्विक मस्तिष्क पर अपनी या पेशाओं द्वारा किए गए धामधामों का बचें मुक्त उत्तर देता है।
 - ९ आर्य सत्त्वों और वासनाओं की मस्तिष्कियों का परिचय देता है।
 - १० व्यक्तिगत उन्नयन और राष्ट्र ने शक्ति के लिए बचें अन्वेषण के बचें अन्वेषणों को खोजित करना चाहता है।
- यदि इनमें से एक की लक्ष्य प्राप्त की गयी है तो प्रायः ही इसके बाविक दा प्राचीन राष्ट्र के बनिने।
- बाविक शुल्क २५/- व० और प्राचीन सत्त्व २५१/- व०।
- प्राप्ति स्थान—आर्य प्रबोसिक प्रतिनिधि सभा
आर्यसमाज मन्डिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१

अर्द्ध श्री रामगोपाल सातवाले का अभिनन्दन

आर्यसैनिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सत्त्वों प्रमाण अर्द्ध श्री रामगोपाल जी सातवाले के सम्मान में आगामी १२ मूल, १९८५ को दिल्ली में एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। सावा जी ने अपने जीवन काल में वैश्विक वम के प्रकार आर्य जाति के उत्थान, धर्मधामा के खडन को सुदृढ बनाने एवं राष्ट्रीय बारा के सत्त्व ने गौरवशाली भूमिका निभाई है। उनका जीवन और उनके कार्य अनुकरणीय है।

इस अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन धर्म की समर्पित किया जायेगा। प्रमुख कार्यकर्ता का एक कार्यकारी हल इस समारोह की सम्मेलन के लिए कार्यरत है। अर्द्ध सावा जी के सम्मान में आर्य प्रेरणा-धामक लक्ष्य, सत्त्वपूर्ण एवं शुद्ध हल सामग्री होगी।

कृते डॉ० धामध प्रकाश
उपमन्त्री—आर्यसैनिक सभा, दिल्ली
एव
समोजक : अभिनन्दन समारोह

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

The advertisement for Gurukul Kangri Pharmacy is presented in a hexagonal grid layout. At the top, the text 'उत्तम स्वास्थ्य के लिए' (For Best Health) is on the left and 'गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी' (Gurukul Kangri Pharmacy) is on the right. The central part of the grid contains several hexagons, each featuring an illustration of a medicine bottle or box with its name in Hindi. The names include 'गुरुकुल चर्च' (Gurukul Charch), 'भीमसेनी सुरमा' (Bhimseeni Surma), 'प्रायः' (Prayash), and 'गुरुकुल चर्च' (Gurukul Charch). Below the grid, the text 'गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी' (Gurukul Kangri Pharmacy) is written in large, bold letters, followed by 'हरिद्वार' (Haridwar). The entire advertisement is framed by a decorative border.

शाखा कार्यालय—६३, गली राधा केदारनाथ,
फोन : २६६८३८ आषाढी बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ कोष ३१०१३० के लिए जी डा० धर्मप्राय द्वारा कन्वैन्सित तथा
वैश्व नेत्र, गली न० १४, सीमाकनकर, दिल्ली-११ में गठित। उच्च न० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक

ओ३म्

गुणगुह्यो विश्वमार्गम्

आर्य सन्देश

पुस्तकालय

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

264
Rie
24.4.85

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

वर्ष ६ अंक २२

दिवसवार २१ अंश १६०६

आर्य संवत्सर १९६०=५३००५३

दिनांक २०४२

द्वयान्वयम्—१६१

सम्पादकीय

महात्मा हमराज दिवस अंक

मानवता के चमकते ध्रुव तारक महात्मा हंसराज

भगवत्काल से सृष्टि का चक्र घूमित गति से चल रहा है। अवस्थित जन इस घटती घाम पर जन्मे बीर मूल्य को प्राप्त हो गये। भगवत् कालाव से उभरते चमकते अनेक विस्तार दिखते दिखते आसों से झोकल हो जाते हैं किन्तु युग-युगों से ध्रुवतारा अपने स्थान पर अनिम्न है। अवि-यारों में भूले अटके पथिकों का यह सदा विचरक रहा है। ऐसा ही मान-वता का मूलरूप ध्रुवतारक है महात्मा हंसराज। पंजाब की घटती का यह साल अपने समय में प्रान्त पर मे बो० ए० की परीक्षा में द्वितीय भाग्य था। बाहुता तो उस समय में अशुभ सदकारों नौकरों प्राण्य कर समृद्धि लक्ष्मी के कूलों से सुवासित पथ पर चल पड़ता। परन्तु उन्होंने स्वीकार किया शिक्षा सरस्वती का माय जो काटो की चुनन से बहक रहा था। यह सहज ही सीमा सरल माय नहीं था। कठक-साबक कटाली कश्मिरी, हितक जान-बूझो को बयकर गजना के बीच सं गुजरने वाला एक लम्बा माय, जिसको मजिल बहुत दूर थी। सचमुच त्याग, तपस्या और बलिदान का मार्ग दुस्तर ही होता है। और इसे कोई माई का लाल ही अपनाता है। महर्षि दयानन्द को शिक्षा नीति के प्रसार का महान् सक्-न बारण्य किया, महात्मा हंसराज ने। ४०० ए० बी० स्कूल एवं कालिजा के महान् गट बूज के रोपण का काय किया इस महायना ने। देश-देशान्तरो प्रदेय, प्रान्तों में दयानन्द एगो बरिद स्कूल एवं कालिज का कलाव उस महान् ब्यापक व की याद दिलाता है। उन्होंने कहा था बरिद वम एवं धायसवाज के प्रचार का एक माय गुर है उक्त बलिदानों को एवं समर्पित त्यागी सेवाक। मे इसी एक विचार पर समूर्ण जीवन चलाते रहे। बिना वेतन मिले, मुझे पेट पड़कर भारत की गुलाब घटती पर देख के आनी कणधार को शिक्षित करते रहे।

महात्मा हंसराज ने यह पथ उस समय रखा था जब समस्त भारत के जन-जन को अग्रविजय और ईसा मजोह की सेवो में शामिल करने का अग्रयन्त्र लार्ड मेकाले को शिक्षा नीति के अनुवाचनवाया जा रहा था। शिक्षा नीति एवं पद्धति तब केवल माय भयभर शासकों के द्वारा अपनी योजना के अनुसार दी जा रही थी। ऐसे विचल काल को महान् चुनौती बरकर रख हुए महात्मा हंसराज। महर्षि दयानन्द के इस बीर वार विषय ने सेवा दिया और त्याग का भी महान् सुख था। भयम मैं यह कहूँ कि सेवा और त्याग का यह देवता था तो अविचलानित न होगी।

महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए वहाँ उन्होंने अपना जीवन दान दिया, साथ ही अकाल नोडित जनता के लिए उनका सेवा कार्य एक देवत्व-पूर्ण कार्य था। उन्होंने १८६५ से १९२१ तक बोकानेर, राजपूताना, झरत, गज्यायैक बरौदा, बयच गज्याय, वरौडा, लूसीसवड पंजाब आदि के बरकर अकाल में तथा कश्मिर के दूरस्थ के महाविद्यालय के समय



उनके द्वारा किया गया सेवा कार्य तथा राहन कार्य उस महात्मा के मान-वता के चरमोर्क का परिचायक है। युग-युगो तक मानव भाषा के लिए महात्मा हंसराज का पवित्र जीवन दिया प्रदान करता रहेगा। सचमुच आज उस महान् नायिक की स्मृति रूप लहरो रह-रहकर उनके प्रति अग्राय अथा जगा रही हैं—

लहरो ते लह लहरकर पतवार हाथ में बाधे।
जो बस बीर सागर का उस तुफानी बेला में ॥
जब अमर के ओंके में उन्माद भरा था सागर ॥
मूह फाड़े तकते ये जब लहरो के मुँह अग्रगर ॥
जितके श्रद्धम साहस ने डर कर मूह जरा न मोडा ॥
जितने अपनी नीका का पल भर भी साथ न छोडा ॥
उस नायिक को तकती हैं, मेरो यह भाव निगाहें ॥
"ओ" अन्त स्थल से बरबर निकली पडती हैं बाहें ॥

—बलराम सुबुद्धि

सत्संग वादिका

(सत्संग) जीवन बन के (शिखे) गुप्त प्रचुर तब न सुप्रपापन मे (सतिष्ठत्य) बसित्व हो जा मग नम ।

सम्पूर्ण सत्तार की नाभि यह यज्ञ है ।
मेरी सति और मुसति यज्ञ से सामर्थ्य
माझी होवे ।

(यज्ञ सत्तार यज्ञ धातु से बना है । यज्ञ का धर्म है देव पूजा सगतिरस्य और दान । इन मन्त्र वालों का एक सामय न कहना हो तो धन का धन है श्रेष्ठ तब या प्रसन्नतम कम । सब से श्रेष्ठ, सबसे प्रसन्न या सर्वोपरि/प्रिय/सर्वोत्तम होता है, यही प्रसन्नतम कर्म कहलाता है । जिस कर्म से श्रेष्ठो का सम्मान सबसे साध प्रसन्नता और परीकार होता है वह प्रसन्नतम कर्म है । इस प्रकार के कर्मों में अपने धार्मिको नमस्ति करने से अपना मन प्रसन्नता की ओर लग्न होता है । उत्सव यह है कि अपने धार को ऐसे कर्मों से सजाना चाहिए जिससे सजका शिष्ट हो सजका कहलाए हो । ऐसा करने से मन की शांति बढ़ती है उससे सामर्थ्य जाता ।)

“क बार की गल है कि अपनी किशोरसम्पत्ता न सत्संग चित्तजननमान मे अपने पिता स सन्तुष्टि किया पिताजी मुझे कुछ रुपये चाहिए ।”

पिता ने कहा ‘क्यों कल ही तो मैंने तुम्हें पात्र करने दिए प पिता कुछ नाराज हुए ।’

देवाम्बु ने कहा ‘हा पिता जी कम आपने मुझे खरब सातसय दिने के पर से सबके सब रुपये दिये ।’

पिता न उन्ही तीन रुपये दिये और कहा कि अपने सभास कर कर्ष किया करो । तुल बज्ज बजा सता तो अपने क विषयासपास नीकर को युवाकर जन्मोने उस सबके के वीक्षे ज्ञान दिया और कहा कि तुम युवाचर पाशो और देवो कि वह सपन का स्या करता है ।

नी. १७५ । “नने बालक को जाते हुए देखा और भी देखा कि रान्ते मे उसे एक लडका मिला । जो देवने मे प्रत्यस्त गरीब और सामान्य कम रहा था । नीकर ने लंठकर अपने क पन्ना का इस प्रकार वन किजा छोटे मालिक नन लडके के स प किनाव की एक कुदान पर मग । हाथ उ होन उस लडके को किनाव लरीक कर दी िर से जुनो की कुदान पर गये गये । वह कपण लरीक क ई तुदान पर जाकर पता सजाया पाश बनाया कि से तनी पुत्रकर्म को मे पडाई जाने वाली पुत्रकर्म की । नीकर ने नन लडके पिता की पाशो के डेन के

जीवन यज्ञ है : श्रेष्ठ कार्यों के लिए है

सुरेशचन्द्र वेदालकार

यज्ञस्य शिवे सतिष्ठत्य । यजुर्वेद २११४

अयं यज्ञो भूतनस्य नाभि । ऋक् ११६५।३५

मनस्य मे सुप्रसिद्ध ये यज्ञेन कल्पनाम् । यजु. १०।११



धाम्नु या मये घोर पुत्र के घर धाने पर जन्मेने उसे छाती से लगाकर कहा, देता । जीवन मे गरीबी की सहायता इसी तरह करते रहना । यही सच्चा कम है । पिता की इसी शिक्षा का मानन करते हुए नामक चित्तजननमान देवाम्बु चित्तजननमान के नाम से भारतीय इतिहास में बरग है । सहायता के धर्मिनायी दीने, दुखियों की सेवा दीनमनु परस्पर की प्रसिद्धि है । यही यज्ञ है ।

मोक्षमार्ग सिलक के जीवन की एक पटना है । क्या मे सिलक छात्रो को इतिहास सिखाता रहे है । छात्र सिल तो रहे है पर उनका मन गहुर लगा था । एक छात्र बैठ पाठ सुन रहा था सिल नहीं रहा था । उसके पास न तो कागजी की धार न कम । उन इस प्रकार बैठ बैस कर सिलक को जोच था मया और मे मेरे बापन यह क्या ? पाठ क्यों नहीं मिल रहे ? गुप्त की आपने की कुछ भी बतागा है मुझे प्रत्यक्ष बात ही मया है । फिर क्यों लिखू ?

सिलक मुझ हुए और बोले ‘तो फिर सुनावेगा यदि न सुना पावे तो बेंतो से चुनकी येक दना । नमस्त मे सारा पाठ सुना दिया ।’

एक दिन दही सिलक ने कहा के फल पर मुष्मली के सिलके फल पर पड़ हुए मेर कर को पाने का कह्य लूरी नेकर सजको को पीसना मुक्त कर दिया । सब से बलवत के पास धाने की उसने कहा ‘पुत्र की बर भी मनती नहीं की तब मैं सजा कयो मुष्मू ।’ उसकी इस निर्ममता से प्रभावित हुए और उसे बच नहीं दिया । सत्य और निष्कलता और क मग हो है । यही बलवत धाने चलकर लोक मान्य सिलक के नाम न प्रसिद्ध हुए और स्वर्ग्यय हमारा कम्य शिक्ष प्रधिकार है का बोधमूल पात्रा बैस को दिया ।

स्वामी स्यामन एक वा जीधपुत्र जाने सने ता शीमें से वहाँ जाने से रोकरा पात्रा कहा कि वहाँ न बाधे वह भवन बैस रहे । वहाँ के शीध वाराती है वरन स्वामी की से काय कीध-कर्म-कर्म-कर्म

धाम्नुको को नहीं बचाकर जला में तो की परकाह नहीं हुए जनाता को सच्चा मार्ग बताकर रहे । यदि वह शरीर की भी रहा तो की चिन्ता नहीं । “यज्ञ स्वामी की को बहा करने की उत्तर बैसा तो एक बचत बोधा गहुराच । वहाँ जरा नरनी बरचना वह कर बैस है । स्वामी की पुत्रकर्म और बोले ‘मै प्रत्यक्ष और धर्मन के जवनी तुमो की बच की करने के लिये हुम्माते से काय लूना, न कि नापिको की मेहुरी से तरासना । तुम किशी बात का मन नहीं है । यह है प्रत्यस्तम मार्ग बिध पर मजीय पुत्रक बचा करते हैं ।

सत्तार मे मया काम करने के लिए सुचार करने के लिये या कालिफ करने के लिए जीवन को यमयय बनाना होता है । सत्तार मे एक मग हो रहा है । सर्व वातु भन्त पुत्री और धातुय यज्ञ कर रहे हैं । बैसने नहीं शीपक की बनी अपने को बचाकर पास कर देती हैं और नरको को मार्ग सिखा जाती हैं । क्या देखते ही बीब अपने को मिट्टी में मिखा बैसा है और अपने स्थान पर अपने को कल्प से बैसा है । शीघ्र जन्तु मे जब पुष्पों लगे की तरह मन होकर तप रही होती तब यही पानी की नन्ही नन्ही बूँदें एक के बाद दूसरी धातु बसितान कर पुष्पों की भीतन कर देती हैं । वह चर मग ही हो है । पुष्प को बैसा हो न ? वह सारे सत्तार का तुल हुए करता है । वरन्तु यदि वह उससे कुछ सुनै है । धातुका हृम पर चिन्ता उसकाचर कि धातुने सत्तार का धरेरा डर भर दिया है तो पूर्व कहेया मैन कहा से पयेरा डर किया है ? बापो मुझे पोका सा विचारो तो ? मैंने तो पयेरा देमा ही नहीं है तो डर कहाँ से ककपा ? मैं तो केवल प्रकाश करवा ही जानता हू । रात सिल बसते रहना ही मुझे ज्ञान है । मुझे मे अपने बीबक का मग मुझे सत्तार प्रवीण दिया है । वहाँ करत कि उसकी मगी से प्राणि मान भीविध रहते है जून पन उत्पन्न होते हैं कल्प-सत्तारों न बा है । वहाँ कीध करवा का मार्ग कम उने इसी लिए तो सर्व करते प्रकाश

की जाता है । ‘पूर्व दाता कल्पने स्तुतय ।’

महात्मा बुद्ध, ब्रह्म, स्वामी स्यामन स्वामी मयायम और महात्मा बुद्धचर का जीवन मग है । यह ही जीवन है ही यज्ञ की शकन की साधक शकने चाहिए । पूर्व बचना जानना है । कर्मक बरलता जाते हैं । हुआ बहुत जानती है । सत्य दुखियों के बापु पोछना जाते हैं । बीबन मे शकन मुख्य वस्तु है । इन्धुवि सत्यन करना निश्चित कर सिखा है जीवन से प्रकाश से बाते हैं ।

श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नाम सत्संगता एवं सहायता के लिए सारे भारत मे जाना गहुराया है । उसकी पिता पीसा उनकी स्वाति उनकी सागा-जिक प्रसिद्धा न मग सम्पति बाधि सत्तार के जीवन मे निज निम्न मार्गों के लिये पस्तु उनके चरित्र की पूर्णता उनकी माता की नैन थी । उनकी माता का नाम मयवती देवी था । एक सच्चा को मनवती देवी नर के काम मे जुती थी । पत्रो के एक मग से करीब तनी छाती से अपने छोटे से बच्चे को चिपकाए हुए धानी । यह और उसका बच्चा दोनों वहीं से काम रहे है । बर्तीनी हुआ बच खुली थी । अपने मयवती देवी से कहा । माताजी धार को पत्रा सुराना ककपा पया हो तो है वो बहुत उब पय रही है । बच्चे को बांध लूनी । मयवती देवी का हृदय खली बचा के चर में बर्तीनी हुआ बच खुली थी । एक नई पत्रा लोकर बर्तीनी को वह पट्टे पुराने कपडे के प्राणि नये देवी, मयवती देवी के पास केवल मय वहाँ बाँधी थी । उन्हीने धाने कल की धारी की परकाह न की वह लोककर कि धारी उस मा और बच्चे को भी तो जाट मे बच्चे के लिये कुछ चाहिए था । इसी माता के पुत्र से ईश्वरचन्द्र विद्यासागर लिखते यज्ञ मय जीवन की कहाति मुझ लहाँ मुझाई देती हैं । और जिनको जन्म देकर भारत माता नीरवा-निस्त हुई है ।

मार्थक सन्तुष्टय दत्त बवाल के साहित्य में से बहुत प्रसिद्ध है । मे जिकने प्रसिद्धावले से उन्ने ही उचार भी । ऐसे ही एक धर्म बवालो लेखक ने राजकुम, राजाचार के विषय मे कहा जाता है कि के लिये ने नाटककार ने, मुद्राराक्षस ने, निम्नमत्तार ने । मत्तार यह कि साहित्य उन्ने सपने देते को राखी हो गयी । कहा जाता है कि एक नाटक मे उन्हीने धारी सारी सम्पति सता दी । वह सत्तार हो मया और उनके मुझे मरन के दिन धा गये । मे एक प्रकाशक के पास गये । यह उन्ने सपने देते को राखी हो गयी । उन्हीने अपना लेख उन्ने धारी सम्पत्ता की नहीं निया था कि एक ककपन मूँ । उनके पास था मये । उन्हीने कहा कि उनकी धारी मग मे बीबन पडी है वहाँ कर्मिक पलीन के रहे हैं । यह उनके पास था ।

(सुरेशचन्द्र वेदालकार)

तनिक और रुक जाते !

बीज रहा था निकट किनारा मिटता जाता था या अधिगारा ।
 -बमक रहा था भाव्य विचार अथु बर कपको पलकें धीरे तुम
 छोड़ गए सब माले 'अधिर' ! तनिक धीरे रुक जाते ।
 तुम तुम को बरखान मिले थे मानव की अधिमान मिले
 भारत को अमनमान मिले थे मानवता प्रकित होता बरि
 हम तुम को धनवाते स्वाधी तनिक धीरे रुक जाते ।
 तुमको कोकर बन रोता है पर रोने से सब क्या होता है
 ओ सीना है वो ही होता है कोई मानवता को जीवन भर,
 तुम तो रते बवालें स्वाधी तनिक धीरे रुक जाते ।
 जब भर को वा थाब बनाना बेह का धावन गीत बुनाना
 बम ध्वजा को पहराना धक्कन मिट जाता गरि तुम
 धीरे अधिक रुक जात स्वाधी तनिक धीरे रुक जाते ।

सोमबल विद्यालकार

एच १११ मया रोड रावेरि नगर दिल्ली ६०

दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

दंत मंजन
लोग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

कलेब शकर

दंत मंजन
लोग युक्त

आज नये फैसले
में अग्रगण्य

महाशियां ही हट्टी (प्रा.) लि०

६६४ ब्रह्मपट्टिनम एरियर सीटी नगर, मद्रास ६०००११ ६३७९७ ६३७९४१

मसुहो की मुज्ज
मुह की दुर्गन्ध
ठंडा गर्म पानी
लज्जा
दात का दर्द

मृत्यु के प्रचारार्थ

केवल 800/- में केवल 400/- में केवल 500/- में केवल 400/- में

मृत्युार्थ प्रकाश

घर घर पहुंचाये
सफेद कागज सुन्दर छपाई
सुदृढ़ संस्करण वितरण करनेवालों के
आकर्म (29x30 16 पृष्ठ ४४२ की दर) लिपि प्रचारार्थ
23x36 16 पृष्ठ ४२० की दर

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
455, रवारी बागली, दिल्ली-6 टेलीफोन: 236360/23112

११ वें संस्करण से उपरान्त न देय होगा

जीवन यज्ञ है

(पृष्ठ २ का नमूना)

बाहूते हैं तर यात्रा के लिए ऐसे नहीं ।

इस पर राय बाजू का हाथ तुरन्त जेब में गया धीरे सब जन । ब विद्या उ होन यह भी नहीं सोचा कि इसी बग से वे धरनी धाज की अनिवार्य धावाय कला पूरी करने वाले थे उस व्यक्ति ने उन्हें बन्धनवाद विद्या पर वह स्वा मानता था कि राय बाजू ने कितना बड़ा त्याग किया है ।

बन्धीय भावना जब या पराभव सिद्धि वा बसिद्धि यह या धागव सुख वा दुःख की धीरे ध्यान नहीं देती । सन्तुष्ट के ज्वार धावा है धीरे माटा की लेकिन उसकी धीरे बन्धीय बजना कभी नहीं रुकती । बन्धीय व्यक्ति विषय के उनत धीरे पराजय से निराश नहीं होता । यह करने वाले को चाहे फाली मिल या फूल की माता चाहे यह चिन्ते या धागव यह तो अवलत बन की धीरे ही बढ़ता है । ही । जीवन के विषय के नडाड मत नवाधी धीरे पर जय का रोना मत रोमो । बज ही महानु बन है ।

महामा हसराज

(पृष्ठ ५ का नमूना)

कर सके ।

निर्द्धर साहज कायम मे रहते के का न महापा की का वेड बपानी कय से न न हो गया धीरे अही उनकी मुहु का मुत कायम बना । हरिदास से मोटे पर महात्मा हसराज की सोचन यह । महा की बलवानु से उनका स्वात्म तो सुखर बना किन्तु वेड का रोड ठीक नहीं हुआ । शिवम्बर नास में बाहीर का नम धीरे कुछ दिन ठीक करता रहा । परन्तु २५ अक्टूबर १९१६ को उनके वेड ने उस समय बना नम बड महसुस हुआ धीरे धागव तेज खुमार भी हो गया । हां- विषयमय का हलाक राक हुआ । ह लल बिस्वात्मनक होते हुए भी धारोग नाम की सम्भावना व्यक्त की गई ।

सार काय बगन् महात्मा की की बीमारी के चिन्तित हो वेडा । हजारों की लक्ष्मी ने तार पज आदि से पुष्कलाह होती रही । ५ नवम्बर को कुछ हालत सुपरी की धीरे उन्हीन बाधन में भी की प-नु ६ नवम्बर को हासल निर धराक हो गई । वेड की पीका अवलत बन्धनवाद को गई धीरे न ज की धागवमिड हो गई । बाव जो उलझने लगा १५ नवम्बर के दिन स्वात्म धीरे भी बिनाह गई । महात्मा की के न-न सम्बन्धी यह उपस्थित हो बन गल के व्यापक बने उ होने धानिम साध बिधा ।

१९ नवम्बर १९८१ का यह धमाकी रात्रि नि जिस मे महा मा की ने धरने प्राणो का उत्सव कर दिया ।

महात्मा हसराज की का वेडा त हो गया मगर एक सन्धर देकर कि वैदिक बस का प्रचार त्याग धीरे तपस्का सवा बनिवानी से हो सकता है । यही माड उन्हीने अपने सम्पूर्ण जीवन से सिद्ध की ।

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Grover'sons

Paris Beauty

पैरिस ब्यूटी

ग्रीवर
सन्स

ब्रा पैंटी बनियान अन्डरवियर व बेबी पैंटी आदि

महात्मा हंसराज महान् शिक्षाशास्त्री थे

—के० सी० पन्त

महात्मा हंसराज ने वैदिक शिक्षाओं के अनुरूप मानव मूल्यों को स्थापित करने वाली शिक्षा पद्धति को अपनाकर देश के शिक्षा जगत में एक अनूतपुत्र क्रांति का सिंहासन किया था। इन शब्दों में धार्य प्रादेक्षिक सभा द्वारा तालकटोरा इन्डोय स्टैडियम नई दिल्ली में आयोजित महात्मा हंसराज कर्म दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र

पन्त ने धार्य अथा सुमन अर्पित किये। सार्वदेशिक धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल खाल-वाले ने कहा, यदि महात्मा हंसराज ने अपना जीवन शिक्षा के लिए समर्पित न किया होता तो भारत देश में आज की अवस्था कहीं अधिक नैकाले के मानसपुत्र होते और इनके प्रभाव को समान करना असम्भव हो गया होता।

धार्य प्रादेक्षिक सभा के प्रधान

प्रो० वेदम्बास ने महात्मा हंसराज के पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया। उन्होंने सी०ए०बी० सस्थाओं के इतिहास तथा भावी योजनाओं के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया प्रागामी वर्षों में सी०ए०बी० संताम्बी के अवसर पर हम केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी धार्यसमाज के सम्बन्ध में जाने के लिए सी०ए०बी० सस्थाओं को चारों ओर फैलाने का

सकल्प लेते हैं। इस अवसर पर डा० भक्तसाम पाराशर द्वारा तिलित महात्मा हंसराज पुस्तिका का भी विमोचन किया गया। प० शिवकुमार खारसी तथा प्रि० कृष्णसिंह धार्य ने भी अपने अथा सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर सी०ए०बी० शांता-लन के महत्त्व के अनुरूप कार्य करने वाले धार्यप्रादों एवं कार्यकर्तियों को भी सम्मानित किया गया।

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री को ज्ञापन पत्र दिया

आयसमाज का एक प्रतिनिधि मण्डल केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त से उनके शास्त्री अमन कार्यालय में मिला और उन्हें पत्राव समस्त के सम्बन्ध में धार्यप्रादों की भावनाओं से अवगत कराया। धार्य-समाज एक राष्ट्रीय सस्था है तथा राष्ट्र के हितों के कार्य करने के लिए पूर्णतः समर्पित है। श्री पन्त ने सा० रामगोपाल खालवाले से कुछ दिन पहले हुई बातचीत का सन्दर्भ देते हुए कहा कि पत्राव समस्त का समा-धान करते समय धार्य सभी धर्म-सन्धिकों की भावनाओं का पूर्णतः ध्यान रखा जाएगा।

प्रतिनिधि मण्डल में धार्य केन्द्रीय शिक्षा के प्रधान श्री महाशय वर्मा, दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा के महा-सुमन श्री डा० वसुधा, महाशय कुम्भीवाल ट्रस्ट के महासुमन श्री धर्मप्रकाश धार्य, दिल्ली दिल्ली वेद-अचार मण्डल के महासुमन श्री राम-चन्द्रसदा अर्था और धार्यसम्बन्ध के प्रतिनिधि श्री सुरेन्द्रकुमार द्विवेदी थे। दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हनुमन्त की ओर से एक

ज्ञापन पत्र श्री आननीय शिक्षामन्त्री महोदय को दिया गया। इस ज्ञापन में मांग की गयी कि—

(१) भारतीय इतिहास की पुस्तकों में धार्यों की विवेची प्राकान्ता होने के सन्दर्भ को पूर्णतः निकाल देना चाहिए। क्योंकि इससे राष्ट्रीय एकता की भावना को ठेस पहुँचती है।

(२) संस्कृत भाषा को पाठ्य क्रम में समुचित और प्रतिष्ठा पूर्ण स्थान दिया जाये।

(३) स्कूली शिक्षा मातृ भाषा में और विश्वविद्यालयी शिक्षा राष्ट्र भाषा हिन्दी में दी जाए।

(४) केन्द्रीय विद्यालयों के पाठ्यक्रमों पर आधारित स्कूल अधिक से अधिक लोने कार्य और पब्लिक स्कूलों पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।

(५) धार्मिक शिक्षा का पूर्ण प्रावधान किया जाये।

(६) अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा बनाये जा रहे विद्यालयों को मिलते-जुलते सुविधा सभी को दी जाये।

डा० वर्मापाल ने ज्ञापनपत्र की

उन पक्तियों को शिक्षामन्त्री महोदय को पत्रकर सुनाया जो धर्मोत्ती हिन्दू धार्यों के एक भाषण से उद्धृत की गई हैं तथा जिनमें धार्मिक शिक्षा को धार्यसत्त्व बताया गया है। शिक्षामन्त्री ने इन विचारों से सह-मति प्रकट की और धार्यवासन दिया

कि वे इस दिशा में ठोस कदम उठा लेंगे।

महाशय वसुधा जी ने कहा कि कुलीनाल धर्मार्थ ट्रस्ट राष्ट्रीय विचारधारा के अनुरूप स्कूल और कालेज लोने के लिए सहज संस्तु है।

वह भी क्या जीवन है ?

जिस में उसका उम्र नहीं वह भी क्या कोई जीवन है ?

जो भरा दुष्प्रकाश है रोमो से जर्जर है शीतल सोमो से जिसमें न कर्म की शक्ति लेव तप लेव साधना का न लेव प्रति विधिल कीए निर्बल तन है वह भी क्या कोई जीवन है ?

जिसमें सुविता सदभाव नहीं अनुराग त्याग सुप्रभाव नहीं जिसको सावा मध-मधुर है प्रति रीत हीन पर-निमर है दुःखि दम्भसुखि मन है, वह भी क्या कोई जीवन है ?

जिस से होता निव मोघ नहीं परहित में ही उपयोग नहीं जो ह्रर कर्म का साधक है, प्रभुता प्रभाव धार्यसत्त्व है एकत्र किया कुसित धन है वह भी क्या कोई जीवन है ?

जिस्के तन मन बन बुद्ध नहीं, जो स्वल्प-सवित्र अजुद्ध नहीं, जो स्वाध-स्वाधि का पातक है मानसता का अम पातक है, पशुता का प्रबल प्रदर्शक है वह भी क्या कोई जीवन है ?

★ वचन-सन्देश ★

मनुष्य कौन है ?

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत्
 भ्रम्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे। भ्रम्याव-
 कारी लक्ष्मणान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी
 डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से
 धर्मात्माओं—कि जिसके ये महा भ्राता निर्बल और मुग-
 रहित क्यों न हों—उनके उदा, उन्नति, भ्रियाचरण और
 (धर्मर्षी) चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान् और गुरुणा

भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहाँ तक ही सके वहाँ तक अन्याय-कारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो चाहे प्राण भी भले ही जाव परन्तु इस अनुष्णपनरूप धर्म में प्रयत्न कभी न होवे।

—महर्षि दयानन्द

सम्पादकीय

ਪੰਜਾਬ ਸਮਸ਼ਿਆ ਫਿਰ ਖ਼ਤਰਨਾਕ ਮੋਡ ਪਰ

भकालियों को लगभग सभी धार्मिक भाग मानी जा चुकी हैं बत्खेदारों द्वारा मेरे को इसकी स्वीकारोक्ति की है। भकालीनेताओं की ओर से, प्रसन्नचित्तों के लिए स्टूडेंट फेरेशन मे प्रतिभामें हृदयानु, भकालीया की मापों के सामने सफाई का मुकुन, प्रादिक का भाषा निरासी की विभिन्न विषय की प्रकट कर रहे हैं। देश की भव-दशा का जनाती देन बाले उपायावी विवेकी इसावी पर चल रहे हैं। एकता मौजव है धर्मात्त, कहर, लुन बराबा से देश के प्रमाणात पर उपावी का मोह-भार, मुहूर, दान। विगत मोह में हदारा देव किसात के भाग पर जिस प्रकार स धाये बढ रहा है उसकी एक बर्तित के रूप में मुनन बढ महाव्यथितों का भगव्ती होती लग रहा। भवेक विवेकी धृष्टावर ऐसीकी भारत में भयने लुन देवे जमावी मे ससम्भ है। उन्ने सभावा पर भयन काव्याया इस देश की देवनी पढ रहे हैं। सत्कारा को ऐसे भयेक सवुत निवे है, बावुसी मे पकड़ होवी मे भयेक रहस्य उजागर हूवे है। पारिस्थान मे मावखण्ण पा रहे उपावी भाव मे प्रादित हुंकार ऐसीका बढ डर से हुंया काव्य कर जाते हैं। सत्कारा जे की भावना भार मांकावा में एव धरणा पन बढ़ाती है। सवा लियों का समकोठी की दिशा मे जाने के लिए सफल होवी दिवायो पसती है, उसी एकाएक नेपथ्य से हिल्कोठी की भयकर गजना हो जाती है।

पंजाब समस्या के लम्बे होते जाने से उग्रवादियों के हाथ भी मजबूत होते जा रहे हैं। पंजाब इन्दिरा कापस के महासचिव श्री रघुनन्दन लाल भाटिया पर किया गया हमला, पंजाब के अनेक स्थानों पर गोला बर्षा और सामूहिक नरसंहार आदि घटनाओं से उग्रवादियों का फिर सक्रिय हो जाने के प्रबल प्रमाण हैं।

दूसरो ओर प्रकाली नेताओं के तोड़े बलवन्धु श्रीर महकाने वाले भाषण उन्नाववाणी को बदल जसेही हो। यी ठोहरा का यह कहना हम सरकार के बताता तमो करेक बल सिविली की समुल्लेख माग माह तो जायमी। इन्दिरा वाणी के हुल्यारे को सहीद कहना उनके विषाक्त मस्तिष्क का परिचायक है। तमामिन्दिरा नरपत्याणी की उल्लेखसोवला मिश्रप्रदावाले के साथ जाऊ उनके परिवार के से मिले। उनो हथोला माग श्रीर यह बोधपा की बी कि मिश्रदावाले से उनके कोई सयवेद नही के बल्कि दोनो का लख एक होइ। इन्दिरा महकाने को के हुल्यारे को सहीद भी बताया श्रीर उनक रिस्तेदारो को खमामाने की निगा। राष्ट्रपति नानी जैलसिग को विलो का खु नम्बर एक श्रीर प्रधानमन्त्री भी राबोवो मागो को खु नम्बर दो सी वन्हीले करार दिया है। येते पाठवारो में केवल सरकार का नम्र पडना कायरता का परिचायक है।

उग्रवादियों की तलाश सरकार ने जो स्वर्ण मन्दिर की सरायों में छापा डाला और तलाशी भी एन.कै. खतरनाक उग्रवादियों को बन्दूक हथगोलों और पिस्तौलों के साथ गिरफ्तार किया है। इससे जाहिर है प्रभी भी ये धार्मिक स्थल उग्रवादियों के ग्रह बने हुए हैं। सरकार को चाहिए देश के किसी भी सन्देशवाहक धार्मिक स्थलों में छापा डालकर

तलाशिया ल । किसी भी असामाजिक उग्रवादी तत्व क पकड़ जल्ने पर कठोर सजा दे । तथा विशेष अभियान चलाकर उग्रवादी तत्वा को सख्ती से कुचल दे ।

—यशपाल सुधाश

सम्पादक के नाम पत्र—

धर्मपरिवर्तन का कुचक्र

पिपल कुच बयों के हमारै रंग में
होखेनो, मिचियनो पिपलें खेनो के
मेहनियेनो लोको के बन्दा-होला का ब्रह्म
विक मुचित बरियन बनाना बा रहा है।
एक समय बा बब बाब के सनम
हो बहार बब पूरे हारी बरही पर बरही
की बिचार बाब का ब्रह्म बनाना हुआ।
बा बब यकनो ने नारत को पताना-
किया। जब सत्तवार के बाब पर ब्रह्मण्य के
अपरा का दुर्गुणमुक्त ब्रह्मण्य बनाना
होखेनो। बा प्रखेनो का सारा पर आवि
पण हो बाते के अपरा परासो में
देखा बाते के माध्यम में हिन्दुको को
हिन्दुत्व में सीधित करिखेनो।
हिंदीपारो के बजुम में कुस लीपे-लाने लोग
को बननो पाहरी पर रहते के पते। देव
में सीधिक ब्रह्मिवार प्रखेनो नारिक को
निवा। बाबायो के बाब तरकार की
मुठुलीकरा नीरि के नारत ब्रह्मण्य
बनाना की बरहीनो बयानाबयो को
बनाना निवा। इन्दीन में पिपल बायों
में लखिबानुम के मोनाकीपुरम व राम-
नानमुचु बयों के हारिखो का सीप
बनाना निवा। बा बब ब्रह्मण्य ब्रह्मि के नारत
बायो गरी का बर्गपरिबन देवोहावर
के बब र किया बाय। सोच बब अ-
नियेनो के बायार पर बर्गपरिबन
बनाना नारीन ब्रह्मण्य के अग्रिखो है।
बर्गनारिख के इव बरपण्डित काय ने
ब्रह्मण्य प्रकार की सत्पार सनम के
ब्रह्मण्य ब्रह्म देखे के ब्रह्म बन किया रहा
है। बर्गनारिख के अग्रिखो होकर बाय
बर्गनारिख ब्रह्मण्य की पिपल
बनने पाहरी पर अग्रिखो ब्रह्मण्य
बनाने पाहरी के अग्रिखो होकर बाय
बर्गनारिख की बाटी है यदि बब अग्रव ब-
बर्गनारिख ब्रह्मण्य पर ब्रह्मण्य कटी
रखा के रोम न बनिये, तो ब्रह्मण्य के

इसके भयंकर परिणाम राष्ट्र का भोगने पड़ेंगे ।
—राधेश्याम ध्याय

—राधेश्याम प्राय

पिन्नु बुद्धि बरसायो बनिनि सवा
 सख १३५ व ५२ सम्पन्न पयो ने बहु
 हसित भयो ने हिन्दु नौने सङ्ग
 पिक भय निरुत्तन का समागत सुभर
 हिक भय निरुत्तन बुद्धि बरसायो बनिनि ते
 मयाहानी रवाणी सेवानन्द जी ह
 सताते ने जो पोवाल के समागत सवा
 हसताते नेने के पिय पूव जेने पद
 ता सवा कि मह हिन्दु नौने का साधुकि
 हसताते ने भय परिवर्तन कोष्ट प्राधिक
 लगी व सामाजिक तिरकाण के काण्य
 निरुत्तन भयो हइ इस्के जी पुरोडाश दोर
 चिन्थी यममय का नुहाइ होर वय
 यममय १२८० ने मन रूहा हइ होर हइ।
 काण्य समय सम्पन्न वय भय परिवर्तन
 होर सवा हइ। भिष को पिन्नी का निषेध
 केनर की पूजा बना सवा सौ की सीमा से
 म्यामर की पी पीसा के मया सवा बस्ती
 पोश दोर बहराईक भावि जिनी से भय
 परिवर्तन कायका भूमिम हसत नाये
 जाने का यममय मन रूहा हइ। इस्के
 ने भय सुनिम सपत्नी के सवा सवा
 हइ, भिषे पास कोष्टा का बाहू हा
 नि, निष्ठा पय कोष्टो की सपत्नि हइ
 जिन्का बर परिवर्तन को यममय होइहा हइ
 लोकाजी ने नेनौ को प्रमोद होइहा हइ
 होर पिन्नाजी के सवा हइ बहु भोज ना
 हइ। साधुपण से बर परिवर्तन कीर कर
 कइते हइ। म्यामर नौ हिन्दु मन की सखा
 भये को कय नुहा हइ। निष्ठाका न जोर नर
 कइहा प्रमय रूहा हइ होर पुन हिन्दु
 मन से कीर हइ। भय परिवर्तन ते
 सपत्नि हइ नायेने। रवाणी की सामाज्य
 परिवर्तन को माने कय नुहाइ हइ।

—ओमप्रकाश प्रधान समिति

व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा-माला-१

आओ आध्यात्मिक जगत् में चलें !

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

इस स्थिति में युद्ध आरम्भ के साधने की
चाह करती है उसका शासक एक मास में
बह होमा कि चरवाहे को सिंहाली को
को भाड़े उतर्नियेको । किन्तु विमानों के
बे एलान करके ही वे लोक परलोक के निर
साधक रूप के उपयोगी हैं । किन्तु प्राणी
प्राणियों को भाड़े साधन लुब्ध की दोनों के
लिए निधन एक ही है । बायं करके कि
लोक शीघ्र परलोक एक ही हो गये ? इन
की तो बहार है । ये ही एक ही लोभ
केनेन माना । जैसे ही शिर पर ही
सम्भवा है । वास्तव में वे दोनों एक ही
हैं । किसी लोक के बाये युद्ध १० सगा
तो द बह जायें । जैसे १ + १ = १०
। किसी किन्तु के बाये वे युद्ध १० उबरा तो
द द बह जायें । इसाविय ईश्वर प्राणी
पुनिया में युद्ध का एक माधन है । यदि
युद्ध मान को केनेन शिखर माने शास
क शासक में ही केनेन है । ये दोनों शास जाय
बनवते हैं । दलतु युद्ध इहका विचार
नहीं करना । जननिष्ठा में ईश्वर प्राणी
पर शासाली युद्ध को एक ही बनायें ।
को ईश्वर की प्राणिक रूप होता है यह ही
शासाली युद्ध का शासनी की शास है ।

वेधो में लिखा है कि ईश्वर को अपने हृदय में ही बसा जाता है। हृदय में ही ईश्वर का ज्ञान होता है कि-तु एक शत है यह यह कि ईश्वर को यदि बसा सकता है। शत यह है जो सब प्रलय पर्व होता है कि हम जो यति नहीं परन्तु बल हो सकते हैं। यदि कोई बालक पाठशाला न जाये तो वह ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकता है? जो बसा जाता है ज्ञान तो वही पा सकता है। इसी प्रकार जो मनुष्य यति बनने का प्रयत्न करता है वह यति क्यों न बन सकेगा ?

यति का अर्थ यह है कि जो मनुष्य इन्द्रियों को सीधे मांस पर खाने का शल्य करता है वही यति है। उसी का नाम नेता है। उसी को सीडर भक्षक पक्ष प्रवर्धक भी कहते हैं।

वह पुत्र जो इन्द्रियों को नियम में रहे उन्हें धीरे-धीरे माय पर चलाये उसी को सुख मिलता है। वही ससार में सुख प्राप्त करता है। जो इन्द्रियों को विषयों की ओर न जाये और उन्हें नियम के अधीन न रहे वह तो सर्वत्र दुःखी ही रहेगा।

मनु भयवान् ने बताया है कि

भविष्य क्या है ? ये सब सत्य प्रकटी है ।
 चलाओ बिचार ले जाओ । क्या मनुष्य
 सत्य को वासी है ? क्या मनुष्य सत्य को
 चाहे मनुष्य सत्य को बुझे है ? हाँ हाँ
 सत्य सत्य सत्य वा प्रकटी को वही पड़ने
 जाते । मनुष्य अज्ञान जाते । कि सत्य
 इन्द्रियों को सत्य से बनाओ धरता
 सत्य में प्रकटी । जैसे सत्य प्रकटी
 सौदा लेकर जाते हैं जाता है सौदा सत्य
 जाता है । सत्य सत्य सत्य प्रकटी
 बाहुक मनुष्यता है । सौदा जीत जाते
 कि प्रेमी पीठ पर फाँट सवार डेठा है बहु
 सौदा ही जाता है । यदि सत्य निम्न है
 सौदाही है बाजार में सत्य जाता
 है सौदा सत्य जाता है सत्य सत्य
 जाता प्रकटी ही जाता है । सौदा सत्य
 जाता है कि सत्य प्रकटी है । बहु सौदा
 दमिय सत्यता है सौदा सत्य में नहीं पड़ता ।
 सत्य सत्य सत्य सत्य प्रकटी है

बर्फ से ढकी नोटियाँ, दूर तब
 समीत सारी दुनिया के छोटे शारे
 से दूर योगी और मुनिगो को पुकार
 तपस्वी तपस्वी जन इस यात्रा पर जाते
 सन्तों ध्यान का प्रसव क्या योगी
 विजु तुम पाना चाहते हो तो तुम्हीं
 मांगने की भावकता नही। इसी
 संकलित हो। इस युग के परम योगी
 बाबा नाथजी को तुम पाना चाहते हो
 याद काय नही पाना न ही उसे युग
 याद काय का रास्ता बता रहे हैं सन
 योगी तपस्वी मोक्ष माया से दूर
 होकर मुनिते हैं। यात्रा सन्देश के माध्य
 हर सप्ताह से पत्र पाना न मुक्ति।

[illegible]

महो !

उपनिषद कहते हैं निगम ये जगो ।
प्रलय यह है कि जब तक बोध दूर न हो ।
निगम ये कैसे पते न बोध क्या है । छात्र
साधन के साधन ये धूमो । हृदय बलाघात
ये बोध सोच मोह राम और ईश्वर । ये
बोध कही बाहर ये नहीं बाते बाहर ये
ये पेवी ये नहीं कृपित बाते । अन्तर ये ही
पैषा होते हैं । इन बोधो से ही बुद्धि अभिन
हो जाती है । इन्द्रिय राम तेज और मोम
हो को भी अनुपम लोक वेदा है यही यति
है ।

जब मनुष्य में राव का दोष बढ जाता है तो उसको छोड़ने के लिए कितने बल की आवश्यकता पड़ती है। वास्तव में बली यही है जिसने सन्नाम में राव हुए श्रीराम को मोड़ को जीत लिया है। बुद्ध मनुष्य अपने जैसे जीत सकता है ? इसके

मादियों ने गुजरात प्रकृति का मधुर भरण बहुरंगी की गुफा माह-माया रही है परम जानन की प्राप्ति के लिये। लेकिन अस्सी शक्ति परम को ही मिल सकता है। नहीं नहीं! अथर्व मलेया अवत को खोजकर प्रकृति के सवासे ने तुम महत्तम पा नन्द ने यही तो कहा था ससार नहीं रहूँ, सबकुछ मुझारे पास है। तुमने समझे बस तुमने उसे भूल गये हैं। अपने स्वामी सत्सदानन्द जी। ये महान् । उनको प्रपन्न हुआ। अथाह नमन से हम यह आप तक पहुँचा रहे हैं।

—समाप्त—

[illegible]

पैसाए हैं और मोह ने कितने मनुष्यों को
बेचैन बनाया है ?

एक बचपान् मनुष्य को जिन्ही ने
माथी दी उसने एकदो माथा एक ने
पूजा, आई। 'तुम जिन्हा बोरु बर
सकथे हो?' उसने सतार विना, वो आई
नन। 'पहले मनुष्य ने कहा 'तुम हो
एक माथी का बोरु भी नहीं उठार सकते,
इतना बोरु कैसे उठाओगे?' वही है
सो। इन दोनों का सुधार करो तो
धरणा सुधार होना तभी सुख पाने हेतु
सौर जाति का भी सुधार कर सकोगे।
मरि स्वयं नहीं सुखे तो दूसरा भी नहीं बन
सकेगा। वो भाय ही सुधार सुखा नहीं वह
जिन्ही सुखे का सुधार बना करेगा।

हृदयस्थ आप बेहो कि बिसने राव
होव का जीत लिखा उठी ने हुनर पर
विषयय वा जीत। यह कह चाह राव को
बना सकला है बिचार बाहे राव को बना
सकला है बच को बाहे हो और मोह का
प्रयोग कर सकला है। यदि उने रावराख
कारने की भावयसकला है तो धरना हाथ
धारे कर देगा उसके आन्तर छहनुसधित
होयी। यदि अनूय हस्तिय को अपने
आजीन कर दे तो उसके धर्मिष का बादी
है। यदि वह समने आजीन हो जाने हो
फिर उनेमें धर्मिष कहा? अजीन हो जाने
परे दोष मनुष्य के सब से बड़ अणु हो
जाते हैं।

धर्म में धाय के पुत्रका हूँ, धायको हम
 में से क्या कहना चाहता है ? पुत्र के पुत्र
 तो हममें से कोई नही बन्धन नहीं। धाय
 कहिये कैसे ? पुत्रिये। धायको 'पूरी'
 बन्दी स्थापु नमती हैं। धाय का नामनर है।
 धाय कहो, धाय कहो है कि धाय के पुत्री
 तैयार है। धाय धायो स्तेयनर धाय बन्धनी
 पूरी नहीं मिलेगी। किन्तु धाय कहते हैं
 'मायो का धयन हो गयी। धायको पुत्री
 भी जाती है धाय बन्दी जन्मी जाती है।
 धायको धायनर नहीं जाता। धाय तो
 स्तेयनर भी भोर है धायनर कैसे धाये ?
 उक्त समन धाय धाय के धायीन है दसतिपु
 कृत नहीं।

जाप प्रतिदिन देखते हैं बम्बे हट करते हैं। जब बम्ब्या हट जाता है तो कार्तीक पर जोर बढ़ जाता है। जागते हो क्यों? वह लक्षा लक्षक की सपना को प्रकट कर सकता है। पर नहीं बम्ब्या जाता है कि जो आसक्ति काही रहती है वे लक्ष्मी रहती हैं। जगमे जग होना है लक्ष्मी कि राग हो वीर मोह बढ़ जाता है। सवार ने लक्ष्मी आसक्ति कर लक्ष्मी है विनोद राग हो वीर मोह पर अविचार है।

एक बात और समझा दूँ : भारत की सन्तान दिन-प्रतिदिन क्यों दुर्बल होती जाती है ? माता पिता बर्तें, पण्डित बर्तें इसका योग जविकर नहीं कर रहे हैं। इसका कारण यह कि उनकी धर्मशैली की शक्ति

मनबट, बरठ २०/-
सर्ला, २०/-

आर्य जगत् की शान
२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन
नेत्र चिकित्सालय
 (अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)
के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बक ड्राफ्ट द्वारा

ममी, माता जन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,
 बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की सिला पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

राज्यसेवालय धारमचले	सुचयेव	महात्म्य सन्धान	बोधविकास सार
संरक्षक चिकित्सालय	प्रधान दिल्ली	प्रधान	ममी
एवं प्रधान डा० बा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महात्म्य कुलीमाल
प्रति० सभा	सभा	सभा	केरि० ५०

सौम्य से महात्माजी की हठ्ठी प्रा० लिमिटेड ८/४४ कीलिंगर,
 औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक
हर सप्ताह पढ़ते रहिए

- ☐ क्या आप यह मुनि तपस्वी, योगियों की अमृत वारणी पकड़ चाहते हैं?
- ☐ क्या आप वेद के पवित्र ज्ञान की सरल एवं मधुर छवियों में जानना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप उपनिषद् मोक्ष रामायण बाह्यसंन्यस्य का आध्यात्मिक सन्देश स्वयं सुनना और अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप अपने धुरवीर एवं महायुद्धों की वीर्य गाथाएं जानना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से प्रभावित हो जागृत करना चाहते हैं?

यदि हाँ तो आइये आर्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाएँ।

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए। साथ ही वृत्त में बार अनुपम मध्य विवेकाक की प्राप्ति कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये प्राचीनक २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान—

आर्यसन्देश साप्ताहिक
 ११ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,
हरिद्वार की औषधियां
सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, नयी राजा कैदरमार्ग,
 फोन : २१६८२८ चाण्डी बाजार, दिल्ली-६

The advertisement for Gurukul Kangri Pharmacy is presented in a hexagonal grid layout. At the top, the words 'वैद्यक' (Vaidik) and 'उद्देश' (Uddesh) are written in Devanagari script. The central part of the ad features several product images and descriptions:

- गुरुकुल चूर्ण** (Gurukul Churn): A small box with a label.
- गुरुकुल चूर्ण** (Gurukul Churn): A small box with a label.
- गुरुकुल चूर्ण** (Gurukul Churn): A small box with a label.
- गुरुकुल चूर्ण** (Gurukul Churn): A small box with a label.
- गुरुकुल चूर्ण** (Gurukul Churn): A small box with a label.
- गुरुकुल चूर्ण** (Gurukul Churn): A small box with a label.

Below the grid, the text 'गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी' (Gurukul Kangri Pharmacy) is prominently displayed, followed by 'हरिद्वार' (Haridwar). The ad also includes several circular logos and text in Hindi describing the benefits of the medicines.

मिली आर्य प्रतिनिधि सभा ११ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन २१०११० के लिए डा० परमेश्वर द्वारा संपादित एवं प्रकाशित सभा
 वार्षिक वेतन, नयी नं० १०, नैनासमर, दिल्ली-११ में प्रकाशित। एडि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक **आर्य सन्देश** ओड़म कृष्णमूर्ति विश्वमार्थम्

पूर्ण एक प्रति १० पैसे वर्ष ६ मक २४ रविवार, १ नव, १९०३ आर्य सन्देश १९०३-०३१०-०३३ मीमांसा २-०२ दशमस्कान्ध-२११

आर्यसमाज दीवानहाल का शताब्दी समारोह वैद-प्रचार, ग्राम-प्रचार (ग्रामोत्थान) तथा गो-संवर्धन एवं मन्दिर निर्माण के लिए इक्कीस लाख रुपये की अपील

आर्यसमाज दीवान हाल की उत्तरग सभा ने निश्चय किया है कि आगामी दिसम्बर १९०५ में आर्य समाज की शताब्दी मनाई जाये।
 वैद प्रचार, ग्राम प्रचार, ग्रामोत्थान तथा गो-संवर्धन के-प्र की सहायता के लिए १ लाख रुपये की तीन स्थिरनिधियां स्थापित की जाए।

इन अवसर पर एक विशाल-समारोह का आयोजन किया जायेगा।
 आर्यसमाज दीवानहाल के मन्त्री की मूलबन्द गुप्त ने एक बीषण। ये कला-शालाओं समारोह की तैयारी जोर-जोर से प्रारम्भ हो चुकी है। इस अवसर पर कुछ धर्म योजनाएं

इस प्रकार हैं।
 □ आर्यसमाज दीवान हाल के विषय एक सी बर्ष का इतिहास प्रकाशन
 □ नैतिक शिक्षा के लिए विद्यालयों में विशेष प्रचार योजना
 □ सामाजिक कुरीति दहेज उन्मूलन
 □ मुषको एवं बुद्धियों में मादक

द्रव्यों के बढते हुए प्रयोग के साहित्य प्रचार से रोकना
 □ नैतिक धर्म साहित्य प्रकाशन
 इस समाज तथा राष्ट्रहित के पुनीन कार्य के साफल्य के लिए श्री गुप्त जी ने आर्य भद्र पुरुषों से सन मन-बन्धन सहयोग करने की भी अपील की है।

दक्षिण अफ्रीका नैटाल में

१४, १५, १६ दिसम्बर १९०५ को

आर्य सम्मेलन की तैयारी

दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से प्रसारित एक सूचना के अनुसार दिनांक १४ से १६ दिसम्बर १९०५ को नैटाल दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन की घोषणा की गई है। इस सम्मेलन पर नैतिक सार्वभौमिकता के महान विद्वानों के विचार सुनने एवं गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त

विश्व के विभिन्न देशों में रहने वाले हिन्दुओं के साथ सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्बन्धों की प्रगाढ़ करने की योजनाओं पर तथा विचार किया जायेगा। सार्वदेशिक सभा इस आयोजन में अपना विशेष सहयोग देकर विश्व के धर्मों के सम्मुख एक ठोस सन्धि एवं व्यावहारिक योजना रखेगी।

राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज का

महत्त्वपूर्ण योगदान -श्री शालवाले

दिल्ली मुस्लिम वैदप्रचार मण्डल का वाषिर्कालिक आर्यसमाज बार० के पुस्तक सेक्टर में सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर ला० रामगोपाल शालवाले, श्री ब्रह्मवत् रत्नाकर, श्री कुर्वेच, आचार्य वैवेक, श्री चौ० विष्णुदास आचार्य अनुभव शास्त्री आदि धर्म वेत्ता एवं शिक्षार्थी ने जनमानस सम्पर्क में आर्यसमाज के साहित्य पर प्रकाश डाला। श्री आभा राम-

गोपाल शालवाले ने कहा—राष्ट्र के निर्माण में सदा से आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जाहे वह स्वतन्त्रता सशान हो, अथवा दलितोद्धारकारी उत्थान, या समाज सुधार। आर्यसमाज राष्ट्रीय एकता व सत्यवत्ता की रक्षा के लिए आर्यसमाज पूरी क्षमता के साथ जुटा हुआ है। कार्यक्रम के परभाव प्रीतिमोक्ष का आयोजन किया गया।

नये सवरे की तलाश

आधा भी नया सवरे नव जीवन देगा
 जब बैलन सब के मन का धनपात्रन देगा।
 नूबे पैदो की रोटी के दो टुक धार
 नये बनाय सन की दो हाव कफन देगा।

पर आधा के बिचरीत मीत ये प्राप्त हुआ
 न के होते पर भावण ब्यपत हुआ।
 बरती की दिव्य विभूति गुन ये तीन हुई
 दुर्गाई बैल की आधा पर आधात हुआ।

इन्हाय दलितों के हाथों बारा जाये
 इन्हे वर भी हिला का मुषकारा जाय।
 कैला भीमल नयानक ये उन्धियारा है
 जो द्वार द्वार धमियारों के द्वार जाय।

कैला है यह सन्धय धरे। कैला प्रथ है ?
 या युव मरोषिका या विष्णु धाकण्ड है।
 सता की क्षीमा सपटी ने ये हुवाएँ
 सब महाकाय के तागव की धामन्धल है।

सीपावो पर सका के तागव महराते
 कवि विचरर खाने वर ने बाते जाते।
 शिल्पासथाय दिसा प्रतिदिन गुडकाय
 आतकपाय बढे जाते।

अन्धरीत सम्मार्थी निर्वैक सजाती है
 बन्धे बन्धे दुडी म्हुएँ बक जाती है।
 ऐसा भीमल विनाय बैलकर भरती पर
 गुडन की फिर धाने ने सजुवाती है।

बधि बलकार ने बचना है गो-पाद रको,
 मालव हागव के मण्य न बैल विचार रको।
 इन विचरों की क्षमता में न सगने को,
 सजावो में निराशो का सजुवाय रको।

— किष्कम्भ
 श्री—२१ सन्धयमुद्रा—२१

★ वक्ता-सन्देश ★

आर्य कौन हैं ?

जो शान्त बैर को उजागर नहीं करता, गर्व नहीं करता, हीन भावना से ग्रसित नहीं होता, मैं सकट में हूँ, ऐसा सोचकर अतृप्ति कार्य नहीं करता, श्रेष्ठ आचरण वाला ही आर्य कहलाता है।

‘महाभारत’

सत्पुरुषों की वाणी

सत्पुरुषों की उत्तम वाणी दूसरों को जगाने के लिए, सत्यासत्य के विवेक के लिए, लोक कल्याण के लिए, जगत् में शान्ति के लिए और जीवन में वास्तविक तत्त्व के उपदेश के लिए प्रवृत्त हुआ करती है।

‘जानार्णव’

बड़े आदमी

संसार को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो धन के लिए अपनी आत्मा का बलिदान सौदा नहीं करते जिनके रोम-रोम में ईमानदारी हो जो सत्य प्रकट करने में बड़ी क्षमति के सामने नहीं झुकते, कठिन कार्यों को देवकर हिचकते नहीं जो अपने नाम का हिडोरा न पीटकर साहसी कार्य करते जाते हैं। मेरी दृष्टि में वही बड़े आदमी है। —स्वेन मार्डेन

जिसने अपने स्वरूप को नहीं जान लिया है वह परमात्मा को नहीं जान सकता। इसलिए परमपुरुष परमात्मा को जानने के लिए पहले अपने को ही निश्चय पूर्वक जानना चाहिए।

‘जानार्णव’

सम्पादकीय

आरक्षण विरोधी आन्दोलन में जलता गुजरात

गुजरात में दिन प्रतिदिन आरक्षण विरोधी आन्दोलन हिसक होता जा रहा है। गुजरात सरकार ने जब कि घटितरिक्त आरक्षण के निर्णय पर धमक रोक दिया है और हाईकोर्ट ने छात्रों को अपनी आन्दोलन समाप्त कर देने के लिए कहा है। इस आन्दोलन ने पहले साम्प्रदायिक मोड़ लिया तो धर्म जाति युद्ध में परिवर्तित होना जा रहा है। हिंसा की आग फैलती जा रही है और मानवता कराह रही है। हिंसा बाढ़े सम्प्रदाय के नाम पर हो या जाति के नाम पर उसे उचित नहीं ठहराया जा सकता। आन्दोलनकारियों का कहना है, ‘यह आन्दोलन योग्यतावाद और कुशलता प्राप्त करने के अधिकार की रक्षा के लिए अन्तिम लड़ाई है। उनके अनुसार आरक्षण से सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर पिछड़े वर्गों का ऊपर उठाने और उन्हें मध्यम वर्ग की मुख्यधारा का साथ एकाकार करने का सिद्धान्त बेतुका है।

वास्तविकता ता यह है कि योग्यता और कुशलता की न कोई जाति होती है और न कोई सम्प्रदाय। आरक्षण को यह लड़ाई एक लम्बे दूरते से चल रहा है। फरवरी, मार्च, १९८१ को भी गुजराती छात्रों के हस्तो दिमाग ने आक्रोश उभरा था। तब गुजरात के चार मेडिकल कालेजों में ३३०० छात्र पड़ते थे। एम० बी० बी० एस० में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए २५ प्रतिशत स्थान आरक्षित थे। १९८० में की को फारवर्ड पद्धति लागू की गयी। स्नातक कोर्सों में वास्तविकता, प्रवृत्ति विज्ञान, रेडियोलॉजी और पब्लिसिटी विभाग में ६५ स्थान थे, जिनमें से २५ प्रतिशत आरक्षित थे। आरक्षित स्थानों पर ५५ प्रतिशत के बजाय ५० प्रतिशत पर दासता देने का प्रावधान किया। इसका परिणाम यह हुआ कि पैनो-लोबी और रेडियो-लोबी को ५० सीटों पर आरक्षित स्थान प्राप्त छात्रों का कब्जा हो गया और शत प्रतिशत स्थान आरक्षितों के हो गये।

छात्रों ने इस और सरकार का ध्यान आकृष्ट किया और इसके बाद की को फारवर्ड पद्धति वापस ले ली गयी। लेकिन छात्र उच्च शिक्षा में वायदा आवश्यकता का मांग को लेकर अब रहे।

गुजरात की जनसंख्या गैरी तीन करोड़ है जिनमें २८ लाख ५० हजार हारजन, ३६ लाख बनवास हैं। छोटे शहरों में बसे हरिजन ३२ प्रतिशत से तो के काम में जुड़े हैं। महानगर और नगरों में ३ लाख ४० हजार हरिजनों में से कुछ आरक्षण पद्धति का साथ उठा पाये हैं।

१९८१ में गुजरात सरकार द्वारा नियुक्त बक्शी धायोग की रपट के अंतर्गत ४२ पिछड़ी जातियों के लिए ५ प्रतिशत आरक्षण स्वीकार किया था। इसके बाद फिर आन्दोलन चला और हिंसा होती रही। छात्र नैतिकता को छोड़ उद्बुध होते रहे। छात्रों के मन में भाग की, सभी छात्रों को परीक्षाओं में उत्तीर्ण किया जाये। विश्वविद्यालय में परीक्षा न लेने की मांग स्वीकार कर ली। बाद में उच्च न्यायालय ने मामला दायर किया गया। न्यायालय ने अपने निर्णय में बिना परीक्षा उत्तीर्ण करने की कड़ी धावोचना का। इसके बाद सरकार ने नया धायोग जिसमें न्यायमूर्ति श्री राण के बलाया तीन सदस्य और थे नियुक्त किया। इस धायोग की सिफारिश पर गुजरात सरकार ने उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर आरक्षण की सीटों में ४६ प्रतिशत बढ़ोतरी का निर्णय ले लिया। इसी कारण फिर धमक उठी। एक के बाद एक बनेक मोड़ इस आन्दोलन में घाते रहे हिंसा नगन नगन चरता रहा। इसी बीच पुलिस भी ‘नरकुल’ हुई। कुछ असाधारण तत्वों को भी खुला बेतनने का अवसर मिला कानून व्यवस्था के परखते उड़ते रहे। छात्रों का उद्बुध होना और राज्य सरकार का उपेक्षित व्यवहार दोनों ही निन्दनीय हैं। आन्दोलन से समस्या का हल तो नहीं निकल सका किन्तु हमारे गण्ट के कर्मचारियों की बुद्धिजीवियों के विचार इस विषय में लेते बाहिए। इस विषय को वैचारिक बहान न। विषय तो बनाया जाना बाहिए किन्तु आन्दोलन और हिंसा का नहीं। महादेवी बर्मा ने दु सौ ही ठोकर कहा है ‘आस्थाहीन छात्रों के सामने कोई स्थान नहीं है। इसके साथ यह भी दु सौ का विषय है कि कुछ तथाकथित राजनेता भी लोकतन्त्र के बीस में ऐसे आन्दोलनों को पीट धपसाते लगते हैं।

सरकार को जनमत का ध्यान रखकर शीघ्र उचित कदम उठाने बाहिए अन्यथा देश की सुख दीवारें हिलने लगगी।

योग्यता और कुशलता को प्रथम देना वास्तव में राष्ट्र के हित में है। जाति या वर्ग की दीवार आरक्षण के नाम पर खड़ी करना भी उचित नहीं है। वैदिक वर्ण व्यवस्था ही इसका एकमात्र उचित सनाधान है। जिसमें कोई ऊँचा नीचा नहीं। जो जिस काय के योग्य है उसे वही कार्य दिया जाये। अच्छा ही महर्षि धामन्य द्वारा प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था पर हमारे राजनेता और बुद्धिजीवी वर्ग विचार कर जिससे मजिब है इस तरह के प्रश्न ही न उठें।

—यशपाल सुर्वाङ्ग

कार्यक्रम संवीजक
सर्व प्रतिनिधि समा प्रकाश

सुख का मार्ग—मनुष्यों का कर्तव्य और संसार की वास्तविकता

प्रवचनकर्ता—श्रीत राग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

वेद के एक मात्र मे ष ना है कि
समार क्या वस्तु है और मनुष्य का कतव्य
क्या है ? वेदात्त वालों ने मार को
मिथ्या बताया है ।

डेवो के घराय क्या है ? जो बस्तु धार्मिक
 है उसे किसी न किसी समय जाना
 ही होगा । ब्रह्मज्याने के यही निष्कर्ष
 किया है । ब्रह्मज्यानु यह अभीष्टाति मानते
 हैं कि वैदिक कर्मों को योगपाल के धीर
 प्राज्ञपाल की योगपाल के बड़ा प्रशस्ति
 नग मया है । वस्तुतः यह समझना कुछ
 कठिन प्रतीत है कि यह प्रशस्ति प्राप्त के
 द्वारा करने के मन्त्रों के विषय है । प्रशस्ति
 प्राप्त के मन्त्र प्राप्त धीर-धीर के हैं । उन
 मन्त्रों को प्रशस्ति इतिहास कहते हैं कि
 प्राज्ञ नहीं जानते कि वैदिक विद्या यथा
 वैदिक कि नहीं । इसलिए इसका नाम
 प्रशस्ति है । क्या प्राज्ञ प्रशस्ति कि
 प्राज्ञ जैसे प्राज्ञ प्राज्ञ के जैसे प्राज्ञ प्राज्ञ हैं ?
 प्रशस्ति प्राज्ञ कहें कि प्रशस्ति प्राज्ञ हैं तो न
 प्राज्ञ प्राज्ञ प्रशस्ति हैं । प्रशस्ति प्राज्ञ हैं ।

कल्पना करो। एक मनुष्य रावी के किनारे जहाँ जल है एक घावमी उससे पूछता है, कहा जाते हो? उसने उत्तर दिया रावी के तट पर मैं रहता हूँ। उसने पूछा क्या तुम मनुष्य हो? यदि उसे एक पक्षी अपने से पकवाव न हो तो वह जहाँ कहा जाय।

एक ध्यानायक व्या० लगी। दूसरे
ध्यायमी ने गीतस जव का विभास कर
उसकी विष्णु पर एक नूतन टपका
लिया। जयदेव प्रभो बस तुम्हारी व्यास
मुक्त हैं? यदि एक बूद पानी पिना
तो उसकी व्यास नहीं मुक्तगी। सत्तो के
दाने लो। उसने मे एक दाने को सत्तो पर
रखो। बेसो का? बसला है या नहीं ?
इसी प्रकार एक एक मिष्ट मे पशव यह
देखे रहते है। इसविषय मे कहा है कि
‘यह श्रवण श्रवत्य है। प्रत्यक वस्तु मे
बसनेकी ही शक्ति विद्यमान है। चाहे इसे
समझकर भाव जा तो चाहे न जानकर
ह्राति।

पौराणिक शब्द अथर्व (पीपल) में यह गुण है कि वायु के धाने से उसका पत्त हिलता है, तुरन्त की वृक्ष के पत्त तना पीपला से नहीं हिलता इसके पत्त तनिक से वायु गन पर भी तुरन्त हिलने लग जाते हैं।

हम लोगों को मरत हुए भी देखते हैं

धीर देवा होइस हूए की । किन्तु बिचार
 कम नैस । ॥ ३॥ यिगोरी ने सोचा है
 किन बन्धा पयो होइ हो तु हू हउ तउ पयो
 ॥ ४ ॥ नव नव जगो रो पयो । किन्तु बन्धा
 पयो होइस नयम रोता है । परन्तु
 यह कही गही सोचा किन्तु बन्धा क्यों
 है ? हम को किन उच्छेदी होइ है ? यह तो हउ
 निर परोता है कि उच्छेदी धारता को परो
 जान है किन्तु उच्छेदी को सोने की लकड़
 मय । उसको जान है । यह बिचारता है
 कि मैं परोता स्वयम् को छोडकर
 धारिता के भवन ने उच्छेदी हउ यह लकड़
 मय है धारिता ने उच्छेदी हउ पयो
 बिन्दने मे था यह है परो प जोस देवे
 था त फिर उच्छेदी है यह की परो होकर
 सोता है उच्छेदी सोता है कि बन्धा नव
 मैं हउ । इस प्रकार जान का परो
 का जाता है ।

प्रत्येक मनुष्य की वहा अवस्था है
जितना हम मरने से इतने ही मरना उतना
करता है। यदि मृत्यु न हो तो प्रत्येक
प्राणी "क विनये मे फय जाला"। यदि
मरने के अनन्तर रिम ना है तब ता
यह बहा कठिन है। जेसलाने मे एक
बदी है। उठे हवा ज य कि क न ठहो
बाहर जाना है। यदि उस स्वतंत्र हम
नहीं है तब तो वह कुछ कठिन नहीं सम
जाना। रजितु यकि लाओर के जेसलाने मे ग
धमलतर यकि जे जाना है तो कठिन है।

ज्ञापित दयानन्द महात्मा बुद्ध धीर श्रम
 बन् ब्रह्मयोगा मुमुक्षु से क्यो नही डरते थे ?
 क्योकि उन्हें ज्ञात था कि ह्रम म धीर
 परमात्मन से केवल बाधा का ही नहीं है ।
 दक्षिण एतिलमी की धीर ही यह धीरों पिता
 दिया ज्ञाय उत्तमा ही श्रद्धा है । मुम ह्रम
 रहस्य को नही जानते । जिस बन्दी को
 कान खटना है उसको प्रसन्नता है । क्योकि
 वह जानता है कि कल मैं स्वतन्त्र हो
 जाऊंगा । किन्तु हमें इस बात का ज्ञान
 नही । इसीलिय हम मरने से भ्रान्त ब्रह्म
 हैं ।

कृष्ण जी महाराज ने गीता में धारमा शरीर शरीर के सम्बन्ध में लिखा है। धारमा जब शरीर में धाता है तो पट्ट वच्चा होता है फिर कुछ समय पीछे युवा धारमा को पट्ट ता ह फिर वृद्ध धारमा को। यह भेद केवल बस वय में होता है एक वच्चा जब युवा धारमा में जाता है वो उसी में मान रहता है। वच्चे को धारमा में वह स्थान था, किन्तु

[illegible]

एक लड़का था उसका नाम ऊँचो था। उसके दो भाई भी पिता थे। किन्तु वह दुबल थे वे सीनी मिलकर नाचते थे उसे पीना देखे थे। जिसका घरवादा हुआ था। एक प्राधान्य में साधु जा रहा था। उसने कहा धरे तेरी शक्ति की क्या हूँ? देखने से तो तुम्हें उन्हा हूँ? कहा है। यह मुन्ने ही वह उन्हा हुआ धीरे उन्हे परे बनेक पिता। शक्ति को उससे विमान न पिया यह बताते की वह यन्ताय कि उससे शक्ति है।

मज्झिमे निबुत्ति वक्कासतं कुरुते वे ।
वक्कासतं कोट्ठं दी कीर्यसे का धम्मारा
किमा उल्लेखी पणवसि उल्लसति की । उल्ले
खी कोट्ठं दिव्या । पणवसि की वार पणव
सि वे ही ज्ञापार धम्मरेका ती लो
धाये । य्की प्रार धाप वे य्की वे लव
नत्तिमा धोय विज्जाय विज्जायान् वे पण्ण
धाप इन । धोय नेमा नही जागते । इसी
विप कृष्ण महात्मासते वे धावुन से कहा है
कि वे पण्ण वक्कासतं नही । अवगम
धाप सव की वीर नव सल्लेखी । अवगम

धी पुरुष के लक्षण ये नहीं कि वह
ग रा या व वा होता है। और पुरुष नहीं
है जो पु ल-पु ल वाले घर सब सम्पत्तियों

में एक सा रहता है। जो मृत्यु क भय धीरे-
जीवन के क्षान्द से भरपूर नहीं होता
वही पुण्य धीर है। क्योंकि वह समझता
है कि जीवात्मा का शरीर को त्याग देना
ही मरण है। बुद्धिमान् दोनों अवस्थामें
में एक ही जैसे रहते हैं।

फोटो खेचनेमान में एक ठेकेदार की
हजी का हाथपुल ही था। यह बड़े लोक में
था। बहुत रोज़ था। पचास में तो रोज़
का बज ही गिराया भी दिखिषे। की
अच्छा दिन धामा नहीं कि याताधोने
इकट्टी में ठंका लोहा भजाने के लिए रोज़
आयम्मा किया था। अच्छे दिन ये भज-
नी भी लूख होत है। वास्तव में भज-
नी नहीं होता। जिस लिकावा ही होता
है। रोज़ा किस बात का ? प्रभु की वरो
हूँ भी उसने पावस । नी ।

अस्तु उम ठकेदार का एक बर्तकी था।
 प्रबने उसे ते देसकर पूछा 'तू जो
 रीते क्यों हो?' ठकेदार ने कहा 'मेरी
 लीका का बेहान हो गया। मलक ने कहा
 'तुना न रीतो यातो पल पल लिख है'
 ठकेदार बोला कि मेरी तो लीका का
 बेहान हो गया है और मलक कहने हैं कि
 मैं न रीऊ एक पत्नी भी कोई पाता है,
 और जब वह उठ जाता है तो रोता तो
 रोता ही है।

वह नहीं समझता कि वह तो बकरी का एक देव है। वे सब के सब कड़ाई के पास ले जा रहे हैं। अब क्या माधुम कड़ाई किस बकरी को पहुंच लेकर हल्ला कर डाले। घन्टा घानो से घाने दब दबा एक नेकरी पच्छी माधुम के भाने हल्ला करे। और उससे कहा कि घाग घन जो। घाघका क्या माधुम कि वह कौन है। राम उठाकर चलेगा जिसक उठाना मम ही घन डालेगा। इसके जलए रोना नहीं चाहिए। इसीलिए जलए और बुद्धिमान होते नही।

पायों के काल में बच्चे रोते हैं,
 किन्तु जवान और बूढ़ कभी नहीं रोते हैं।
 यदि कभी रोना पड़ता भी था, ओ
 उम्मीदों के आगोश में बाहर एक बर बनना
 हुआ होता था जिस रोज़ आधा वह खुश
 बना होता था और दो घण्टा। वे जानते हैं
 कि हम सब ओही मोत घानी हैं। बस
 बापके लीपों में रहियेगा है। हम हमिना
 का घपना घपना निम्न निम्न कारों हैं।
 बास का काम है दसना पुन का स
 कशो तो कभी देख सकता है कान देखे
 का काम नहीं कर सकता केवल सुनने का
 काम करता है। बहो कौनो जिन्दी पर
 काकाम नही करता बसका मार्ग निम्न-
 निम्न है किन्तु सय मिलकर लीपों के
 लिए एक कर रहे हैं।

नेत्रों ने ग्राम को देखा नाक ने सूंघा
घोर आराम तक उसका नाम पहुँचा
दिया। जबका काम वह देखना है कि वह
रस स मरा हुआ है कि नहीं धनुषियों के
हवाले किया। यह वह बट्टा है या भीड़,
वह विह्वल है क्या। यहाँ सब है किन्तु-

**याचार्थ अपवर्णी न्हा
नसम्पादक 'यूनीवार्स'
नई दिल्ली**

हरीश्रोम् विद्यान्तार्य
उपाचार्य उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा रायकोट (सीराय)

मुक्तल किशनगढ़ चसेडा का वार्षिकोत्सव

मई २० २० ग्राम (किशनगढ़) महात्म्य श्रीराधास्वामि मुक्तल किशनगढ़ चसेडा का साप्ताहिक वार्षिकोत्सव ४५ मई को बहोत बूम बाय से मनाया गया। मुक्तल प्रसिद्धता की बहादुरी बग़ावत में बहादुरी की हरियाणा बिना महेन्द्रगढ़ के निचले क्षेत्र में स्थित इस मुक्तल में बहोत बग़ावतों की नि बल बिना मुक्तिदायक बा ही है तथा आज बाय व्यापारशाखा कोषाखा यशदाखा की समुचित न्य बलबा है।

वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य से मुक्तल में विद्या बमाल-मुबार राउट तथा समीचीनी का आयोजन किया गया है बिने बाय समाज के उन्मोदित के धावाही बिहाइ बजरोवेर के न्य प्रतिस्पर्ध के न्य एम प्रतियोगी न भी ब राजनंती की बरा रहे।

ब बहाइन बय बबाबदाता मुना उबबाय (बासिक) बायबमाल कमीबराही बिना उ

मृत्यु के प्रचारार्थ

मजिस्ट्रेट
900/-
नैकंडा

मजिस्ट्रेट
400/-
नैकंडा

मृत्युार्थ प्रकाश

घर घर पहुँचाये

सफेद कामज मुन्दर छापाई

मुहंदासटकरणदितरणकरनेवाली के

अमर 23x36 16 फुट 820 की दर नियम प्रचाराय

अमर 23x36 16 फुट 820 की दर नियम प्रचाराय

आय साहित्य प्रचार ट्रस्ट

455 रावी बाबली दिल्ली-6 दूरभाष-233360-233312


दंतों की हर बीमारी का धरोहर इलाज

एम डी एच


दंत मंजन

लौह युक्त


23 जडी बुटिलो से निमित्त आयुर्वेदिक औषधि




मसूरी की नुजल



मुह की दुर्गन्ध




ठंडा गर्म पानी लगना



दोस्त का इन्फर

अब नये वैकिक में उपलब्ध



दात का रंग

महाशिव जी हट्टी (प्रा०) लि०

9 4 "पञ्चदिवस एतिया कीरि काल १५ दिवसी ५ फोन 838609 83 88 34"

प० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार स जिज्ञासा

महोदय

बायबदाय के उ ग्राम ब ग्राम प० सत्यव्रत की का न्य बिचार सत्य है। समे निवेदन है कृपया से प० दाव बजु की द्वारा सक्रिय स्वाभी ब्यावर् की बहाल जाबनी का प्रामाणिकता के सम्बन्ध से न्य तथ्य उपलब्ध करें ता सत्य कर कि क्या उने दस ग्राम का बह रूप मा न है हो साबदेविक से बारावाही प्रकाशित हुषा बा प्रथम बहो हो बरा कार स्वाभी सन्धिदान्य की द्वारा सत्ता दित होकर बकावित बिबा वया बरोकि प्रब बहालकीनन के नय बरोकर बय इसके बलमान रूप का प्रा नोपित करने जा रहे हैं

०० बबानीबाय भारतीय

बपन ग

वार्षिकोत्सव

बायबदाय सितकनगर (प०) मह निनी १ का वार्षिकोत्सव ५ मई १९८५ से १२ मई १९८५ तक हो रहा है बिने यत्न तथा वेदकमा न० बपानाल सुभाय की की होगी।

बिनेय सनारोह १० मई -बिब र प्रात ७३० से १०० बजे तक। बबना गण—

- १ की गवनीबाय की बाबबावे प्रमाण साबदेविक बाय प्रतिनिधि लग
 - २ की सुबदेव बा प्रमाण बिली बाय प्रतिनिधिका
 - ३ बहागय बयपास प्रब न बाय के न्य तथा बिली
 - ४ १० बबानीबाय की महात्मा बिली बाय प्रतिनिधि बबना बिली
- बाय क-२३ विद्यालय जिज्ञासा माय बिबाना

प्रवेश सूचना

रन एम प्रमाकर का (बैकन क बायो के लिए) प्रथम जुलाई १९८५ से प्रवेश बायबन है। बाय ब कनकी बाय क बायो की बायबन है। इच्छक छात्राए सम्पक करें। बाबी

बायबना बिबाना (हरिण बा)

घरेलू उपयोगी बात

- जल हुए बर बर गीस के तल की दित में रीज तन बाय बाय बायि करने पर जलन क द मान ब निने से ठीक ह वा है।
- ह की रात क बाय बर गीस पर गई हो तो उने गीस के क द म रक कर तुप म रक द फिर से मकेन बा बायेगी।
- बाय बर पर स्वाही के बाय प हो तो बाबा बा तुप बालकर रजि स्वाही साफ हो बायेगी।
- ह की को बाय रप देने के लिए बातु बाय जिब की बीक बिबाल कर दक बटा बाबी में बहा बरन ब। बर बर बाबी की बबी में बाबी बबी बा रन बिबुन बाय हो बायेगा।

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Paris Beauty
पेरिस व्यूटी

ग्रावर सन्स



ब्रा. पैन्टी. बनियान अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि

पेरिस व्यूटी सैन्स कार्पोरेशन

2445 H/2 बियन मल अन्जलन एनॉन
करोल नगर नई दिल्ली ११००४८
दूरभाष-२६१२२०-२६१२२०-२६१२२०

(विष ७५४ ११ १५)

★ वक्तव्य-सन्देश ★

शिक्षा

जिससे विद्या, सम्पत्ता, धनसम्पत्ता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अधिकादि लोग कुछ उसको शिक्षा कहते हैं।

—स्वामी दयानन्द

विद्या का मतलब है व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास।

—जैनेन्द्र

तमाम शिक्षा का सब से कीमती फल है प्रत्येक कार्य को दक्षता एवं कुशलता के साथ कर सकने का सामर्थ्य

—हन्सले

वास्तविक शिक्षा का यह एक आवश्यक अंग होना चाहिए कि बालक इस बात का ज्ञान प्राप्त करे कि जीवन सधाम में वह प्रेम द्वारा वृक्षा पर, सत्य द्वारा प्रसन्न पर और सहनशीलता द्वारा बल प्रयोग पर बहुत सहज ही विजय प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा का अर्थ है अनुष्ठान और बच्चों के शरीर, भस्तिष्क तथा भावना का सर्वांगीण विकास।

—महात्मा गांधी

सम्पादकीय

सावधान ! शिक्षा-नीति में परिवर्तन हो रहा है

भारत सरकार शिक्षा नीति में परिवर्तन करने पर विचार कर रही है। शिक्षा के ढांचे में आमूल रूप परिवर्तन करने की योजनाओं पर विचार किया जा रहा है। इस नीति में संस्कृति और नैतिक मूल्यों का कोई स्थान न रहे भारतीयता की धमनामना की जा रही है। शिक्षा की संस्कृति निरपेक्ष रखने का मतलब बुझे रूप में अधो-निक हितों के हाथों में बन्द कर देना।

सा० लाजपत राय के अनुसार अर्थों के भारत माने से पूर्व हमारी शिक्षा खोली एक व्यवस्थित रूप में प्रचलित थी। ग्राम ग्राम में पाठशालाएँ स्थापित थी। छात्र व्यवस्थित रूप में अनेक छात्रों और शिक्षा का धन्यास करते थे। त्रिदिव साप्ताह्य की स्थापना के बाद लार्ड मंकासे शिक्षा पद्धति में एक योजनाबद्ध व्यवस्था रखकर परिवर्तन किया। उसने १९३५ में अपने विचारों के नाम एक पत्र लिखा। "जो भी हिन्दु धर्म की शिक्षा ग्रहण कर लेता है वह अपने धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा व विश्वास को बँटाता है।" यही शिक्षा पद्धति भारत की भावी पीढ़ी को केवल बलक के व्यक्तित्व तक ही ले गयी। छात्र हम अर्थ-विचार के रूप में ऐसे रम गये हैं कि पत्र लिखा होने की परिभाषा हमसिख का भाषाज्ञान होना ही मान लिया गया। भारत की शिक्षा पद्धति अभी तक अर्थों की पूर्वकालिक योजनानुसार चल रही है। इसमें सुधार के प्रयास न करने, भारतीय शिक्षा खोली की उपेक्षित करने केवल मात्र पाठशालाओं की उधार ली गई तकनीकी की शिक्षा का अंग बनाया जा रहा है। हमारी भारतीय पद्धति के अन्तर्गत पर जो वैदिक शिक्षा है उसमें फिर भी बच्चे के भस्तिष्क को विकसित करने का, आत्मनिर्भर होने का प्रवर्धन है। जिसके विचारों में प्रा-निक शिक्षा के समय ही बच्चे उपकरणों पर निर्भर हो जाते हैं। बोझ सा छा लेन देन करने का गणित बोझों की भी उनकी समझा नहीं रहती। उन्हीं कैलकुलेटर का सहारा लेना पड़ता है। सरकार द्वारा कम्प्यूटर क्रांति लाने के प्रयास जारी हैं। नये युग में प्रवेश करने के अधिकार से हमें वंचित भी नहीं होना चाहिए परन्तु देखना यह भी है क्या बच्चों की मौलिक प्रतिभा को उत्कर्ष तक पहुँचाने में वे सहा-जन सहायक हो पाएँ या प्रतिभा को सकवा कर देने में अनिचायापक होंगे।

निम्न में अनेक शिक्षाविद हुए निम्न में भी हरबर्ट, सा० मोरिया मास्तेवरी, श्री हरबर्ट स्पेंसर, श्री रूडो, वेल्सलोथी और लार्ड मंकासे। डा० मेरिया मास्तेवरी ने बच्चों की शक्तों पर ध्यान रखकर प्रोत्सा-हित करने पर बड़ा बल दिया। उनके अनुसार बच्चे की बन्ध वैसा आधुनिक रूप से संतुष्टि करना अनुचित है। श्री हरबर्ट की विचार-

धारा की शिक्षा में नैतिक और आधुनिक विकास आवश्यक है। लार्ड मंकासे ने भारत में ७ मार्च १८३५ में अपनी रिपोर्ट देकर लार्ड विलि-यम बेंटिक के द्वारा शिक्षा नीति की घोषणा करा दी जिसका उद्देश्य विदित सरकार द्वारा भारतीयों में यूरोपीय साहित्य और ज्ञान शिक्षा का तथा ईसाई धर्म का प्रचार करना था। लार्ड मंकासे को भारत के भविष्य को अंधकारमय करने का पूर्ण दोष जाता है। दुर्भाग्य है कि वही दोष अब भी शिक्षातन्त्र में विद्यमान है। भारतीय मनोभाषा अपने आप में इतनी बनी है, इसमें उच्चकोटि के शिक्षाविद मौजूद हैं। यदि उनकी भारतीय पद्धति को अपनाया जाये। हमारा अपना स्वरूप और भी उज्ज्वल हो सकेगा। यो तो हमारी प्राचीन शिक्षा में मौलिक शिक्षा, नारदीय शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा, व्यास शिक्षा, पणिनीय शिक्षा अन्य विद्यमान हैं। वेद विज्ञान की एक महान् शुक्लता होने विरासत में मिली है। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि और महर्षि दयानन्द पर्यन्त भारत पुरखों ने महान् शिक्षा नीति दी है। फिर इस युग के महर्षि दया-नन्द की कुछ नीतियाँ मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ—

१ विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण प्रति धान-यक है। इसके लिए पुरकूल शिक्षा प्रणाली अपनायी जाए।

२ विद्यार्थियों के विकास, आदर्श विद्या और शिक्षा के लिए ऋषियों के ग्रन्थों के द्वारा ही पढ़ाया जाना चाहिए।

३ ईश्वरीय ज्ञान वेद का स्थान शिक्षा में सर्वोपरि होना चाहिए।

४. शास्त्र के साथ जीवनयापन के लिए प्राथमिक कला कौशल की शिक्षा भी दी जाये। इसमें कला, चित्र, आयुर्वेद, इतिहास, अनुबेद, गान्धर्व, योगतन्त्र, नाट्यकला, तथा प्रशासनिक विद्या प्रादि दी जानी चाहिए।

५. बालक बालिकाओं का सहस्रक्षण बन्द कर देना चाहिए।

६. शिक्षा, शरीर धनीर सब के लिए अनिवार्य और तबलुल, विना व्यय के कर देनी चाहिए।

७. शिक्षा में स्वदेशप्रेम, स्वसंस्कृति गौरव, ईश्वर भक्ति और आत्मनिर्भरता प्रादि गुण अवैक्षित हैं।

—यसपाल दुर्गा

एक सर्वथा उपेक्षित परन्तु समर्पित जीवन

मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए०

श्रोमप्रकाश आर्य



महर्षि दयानन्द के देव प्रतिपादित सत्यवान मुलक मयम्यो सिद्धांती विद्याओं की विचारों को जिस जूझो के साथ मुनिवर गुरुदत्त ने समयका जीवन में लाया और प्रचारित किया उस पर विचार करने अनुरूप अधिक एत एतमिह हो जाता है। जीवन में केवल एक बार और यह भी श्रुतीला सवरूप करते हुए ईश्वर के सन्ने उपलब्ध होती गति तत्पत्ती दयानन्द को उन्होंने देखा था। बारगिरान करने या सका सवा बान करने धन्यवा महर्षि के समय धर्मक में रहकर उनके सङ्गरेषो ने साथ सठाने का भी गुरुदत्त की को समय ही न मिला परन्तु कमाल यह है कि १९ बम का यह नवयुवक महर्षि के आशीर्वाद के धारणुव बय को देखने मात्र ने को कुछ प्राप्त कर पाया यह किसी हुनरे को प्रथम न हो सका। समयसमाज के प्रथमत सिद्धांत की पश्चित न्यूप्रति 'ओ एम०ए०' में सब काम लक्षण प्रम व का निम्न प्रकार से रेखान किया है—

—मनीम वेदात का सिद्धांत श्रुति धार के साथ से प्रसिद्ध है। पश्चित गुरुदत्त नये बहसत की श्रुति

सबभुव श्रुति की श्रुतिमान से ही हुई थी यह श्रुति धार नही सत् थी। परमोक्त सिद्धांत रहे श्रुति ने इन्हीं एक श्रुति देल विद्या और ने कुछ के कुछ बन गए। धनेक साधु महात्मा श्रुति के सिध्य न ने परन्तु को विद्या भाषाये के अतिम छपा कालह द्वारा इस सत्य विचारों को मिली बह किन्हीं और के हिस्से नही बांटे। गुरुदत्त ने श्रुति का सन्नेस अपने हृदय पसल पर पक्षित कर लिया और सत्यका इस्तेमाल का उत सत्यत्व मुक्त ही पर है। श्रुति का श्रुति ने आदिशो का कारण बा और वैदिक सभाओं का मदन। सब पर बम का साथ था शक्ति पर शक्ति का धारिपत्य था। गुरुदत्त ने इस भाषन का मन्त्रन का राज का श्रुति पत्य का मन्त्रो बाज साज लिया। गुरु दत्त धारुभुमि सनिक था। म्द दयानन्द की सेवा में भर्ती हो गया और दयानन्द की विद्याय अपने तन की मम को सब की बलि दे दी।

पाठक कृप ! उत्कृष्ट दिव्यो पन्नवी

फारसी पद्याम निमान भूमम विद्या रसा बम शास्त्र बमस्तुति शास्त्र शरीर विज्ञान नसा विद्या बणित तत्व ज्ञान भाषा सत्य शास्त्र धारि विविध विद्याओं में पारंगत इस नवयुवक को किस सक्ति ने सायससा की धोर का श्रुति किया ? पाषाणालो की नास्तिक्ता बढाने बासी निकम्मी विद्या धोर विचारधार के गुरुक रस सन्नी धारिक्ता का पाठ किसने पढाया ? सत्कृत भाषा ही मूल एत ईशातिक भाषा है यह मूल सत्य गुरुदत्त को किस की मृपा से ज्ञात हुआ ? क्या किसी शास्त्राय में पराक्षित होकर उनने ईश्वर की सता को स्वीकार किया ? बा किन्हीं की कष्टला शक्ति से पराशुत होकर उते बरता बाय बरतना रसा ? नही विद्वज्ज नहीं। कारण के बिना कोई काम नही हुमा करता। गुरुदत्त के जीवन की विमलनाराय में पश्चितन की विद्या कारण कहे हो सकता था महान् सत्कारी भावना गुरुदत्त के एक सुतीर विमलसु प्रभु शक्ति के रम ने धारण रती ईश्वर बमचारी दिव्य धारणा ने बिना कुछ कहे ही अपने सवाय धारिक्ता के रम ने रस राला। महर्षि दयानन्द के आशीर्वाद सत्य ने गुरुदत्त का बोबन विमल शक्तिवीथ सही कुछ बहल दिया। सत्य उते बाय है दयानन्द बन बाने की। कुत है ईश्वर के श्रुति सत्यक और बहो के प्रचार की।

एक बार किसी ने उनने कहा पश्चित ओ बासी सत्यो की है योगी होने के बारे में धनेक बाओ का ज्ञान है। धार उतका बायन बरिज नही मिलते ? अत्यन्त गम्भीर होकर उत्तर दिया कि मैं प्रयास कर रहा हूँ। प्रसक्तता ने तुम मुझा—जीवन बरिज कस खय बायेया ? बोले—धार कायन पर लिखा जीवन पक्षित समक रहे है मेरे विचार ने महर्षि का जीवन बरिज अपनी प्रभु धारु ने सिधना बाहिम और दही के लिए मैं बहलन कर रहा हूँ।

इस सत्य धारिक्ता देव और महर्षि दयानन्द के धन्यमयक प्रतिभावाली विचारक सत्य और सदाचार की समीप एक साकार प्रतिभा मुगुभासी गुरुदत्त का जन्म २६ मई १८६४ ई० की मुगुत म निमाडी बासा रायकुम्भ सराणा के बर

हुमा था। इनके बहम पिता तथा मुद दोनो ने पारस्य एक स्वाति प्राप्त कर चुके थे।

जन्म, नाम तथा प्रारम्भिक शिक्षा—

भी गुरुदत्त का राकि के आधार पर नाम मूला रखा गया। कुल गुरु ने वैरावी नाम शक्ति उपयुक्त सत्यका परन्तु १२ बम का धारु में बायक गुरुदत्त बम धारने भाठा पित्त के साथ हरिहार गया सव बहा के सोबाया रायेबाज ने वैरावी नाम बमलकर मुरासता रस विचार को बाय ने धारने कुछ कम मुगुत में पश्चितित होकर मायज्जीबन प्रचलित रहा। गुरुदत्त के पिता साक्षा रामकमल कत के स्कूल में सत्यपक थे। सब पक्षे सत्य बायक को पर पर धारने के पश्चात् अपने स्कूल में ही श्रुति कर दिया उत समय बायक की धारु ८ बय की थी। सत्य काय ने ही होमहार बायक ने सत्यकी सोबाया स्य कीमान धारिक्ता धारि पासी की मुस्तकें पर हाती। विद्विज्ज स्कूल कत से सिधित परीक्षा उत्तीर्य करने के पश्चात् धारको मुगुतान के हारि स्कूल ने प्रश्रित करा दिया गया। मुगुतान में बासा वेतनामय और बम रैयसदास धारके पश्चित निम ने।

नत्कालीन परिस्थितिया और

उनका प्रभाव

भी सत्यसत बागों दिनेवी सत्यसत नवजीवन ने सत्कालीन सत्यका का बहल निम प्रकार किया है—

धनेवी ज्ञान और स्कूलों ने पढने बासे प्राय सत्य विचारों बमपय अत्य एत म के मन्मोही सद्यु की धोर पश्चित हो रहे थे। दिव्य विचारों अपने सत्यसत बर्य के निमल और सत्यसत ने कारण सत्य प्राचीन सवातन बम के सत्यार के अत्येक बम विरोधी मुगुतमान धोर ईशाई धारि से पर बम राठोकरें का रहे थे। बाहो सत्य किर्तों किर्तों ईशाई और मुगुतान के वैगनकर से श्रुति के लिए प्रायका करते हुए श्रुति सत हो रहे थे और दिव्य सवाय के साथ धनेक सत्य सत्य और विरवाधारी ने सत्य होने के लिए

धारका कर रहे थे कि देते धन्यकार के समय में भारत के सत्य और पश्चित के ओने से वेदीयमान धारि सत्य हुमा—सका नाम धारसमाक है। इस पश्चित धारि ने सत्यसत विरोधी बहो के नवीन सिद्धांतों को प्रवीभूत कर फिर से पश्चित सवातन बम के धारिक्ता सिद्धांतों को भी धन्यामयकार ने प्रचलन हो रहे थे प्रचालित कर धार बाति के होमहार नवयुवकों को धारिक्ता बम पतन से गुरुदत्त कर दिया।

धार्यसमाज में

गुरुदत्त की ने सत्यकाल से बर्य के प्रति अतीव क्षि और अभा की परीतु धनेवी विद्या तथा सत्यसत के कतिपय सत्यो को पढने के कारण बह धारिक्ता विर्यो तम स्थित न रहे सकी। सत्य के प्रति धारिक्ता और नास्तिक्ता की धोर मुगुतन को बम प्रभाव करने में सुविधाया के सत्यसत विचारक मुची कम्पैयामान सत्य बमारी के नेल की थे। मुगुतान धार्य सत्यसत के साथ धारका सत्यसत ओने से सत्य रैयसदास तथा बासा वेतनामय की का बहा हाय है। दोनों सुगुते हुए सुगुत नवयुवक धार्यसमाज के प्रति गुरु निष्ठा बाय के धोर बही ज्ञान से सवाय का कर्त कर रहे थे। गुरुदत्त की ने प्राय विविध विचारों पर इत्तका प्रेम युक्त बाय विचार की होवा रहता था। सत्यसत इन दोनो की विमल बहो धोर महर्षि का सत्यसत प्रभाव तथा श्रुतेयसत्ताधारिक्ता के सत्यसत ने गुरुदत्त की नास्तिक्ता को बहलना प्रारम्भ कर दिया तथा २ जून १८८० को यह विमलम प्रतिभावाली युक्त धारसमाज मुगुतान का सत्यसत से सवायसत बन गया।

लाहौर में आगमन—

नवम्बर १८८० ई० ने इस्कूल की परीक्षा पास करने जनवरी १८८१ ई० ने बमनेयध कायन लाहौर की फल्टईबर कला में प्रश्रित हो गए। बाहा लाहा हरिहार जीवान बरैयसत बासा सत्य नाय बासा सत्यसत बासा वेतनामय, सासा शक्तिम तथा बासा सत्यसतबाय सत्यसत निम एत सत्यसतों ने।

आस्तिक गुरुदत्त—

कायन में पढते हुए ही धारने १८८१ के सत्य और १८८२ के प्रारम्भ में 'फ्री डेबेटिंग क्लब' (Free Debating Club) की सत्यका की तथा सत्य इस क्लब के सत्यो निगुत हुए। इस क्लब में सती सत्यो सत्यो धारिक्ता सत्यसतों के सत्यि धारिक्ता होते तथा प्रेमपूर्ण धन्यमय धन्यायसत प्रत्युक्त किया करते थे। सत्य १८८० ई० तक पश्चित गुरुदत्त की बम कनी ईश्वर के सत्यसत निमय ने बासा-मुगुतान के दो बाय का सत्य ईश्वर के सत्यसत का विरोधी ही हुमा कथना था परन्तु सत्य ८८२ ई० ने बाय पूर्ण

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा-माला—३

सुख की प्राप्ति के विभिन्न साधन

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

उपनिषदों का कथन है कि सदाय-ज्ञान और विपरीत-ज्ञान मनुष्य समाज के दो बड़े शत्रु हैं। इन दोनों ने बड़ा भयानक है। जहाँ कोई ज्ञान सन्निभ और बुद्धिमान मनुष्य हो उसे 'वचय ज्ञान' कहते हैं। उसमें मान पर चले जाना और जब कोई बलावे तो हठ करना इसे 'विरतीत-ज्ञान' कहते हैं।

कल्पना करो ध्यान लीनमन के रास्ते के भटक गए हैं। आपकी यह विचार नहीं रहा कि मैं किस मार्ग पर जा रहा हूँ, किसी ने पूछा 'आप कहा जा रहे हैं?' आपने कहा, 'लीनमन' उसने कहा, 'लीनमन का यह मार्ग नहीं, वह तो आप सीन सीन पीले छोड़ जाये हैं।' आपने हाथ जोड़कर कहा, 'महात्मा जगन्नाथ मुझे बतलाइए मैं किस मार्ग से जा रहा हूँ।' उसने कहा, 'महात्मा सीन सीन के भयानक पर एक तुम हैं। वहाँ से बायें हाथ की लीनमन-मन का मार्ग जाता है।' आपने हाथ जोड़कर कथनवाद किया। लोट पड़े, और लीनमन के मार्ग पर जाकर लीनमन पहुँच गए। उस दम की 'संलग्नज्ञान' कहते हैं।

परन्तु माता को विपरीत सन्निभ ने बेरा दिया है। उन्हें जब कहा जाए कि 'यह काम मैं करो यह सम्भव नहीं।' तो भावस्थायी मानने पर ही नहीं पाते। विपरीत सन्निभ की ही सुधार जाता है। पहले यह साहित्य कर दो कि यह मार्ग ठीक नहीं उसका है। जब उसे इस बात का ज्ञान हो जाये और मान जाये तो उसे सीधारा मान जाता तो।

यह पर तो प्रतिक्रिया उपवेश होते हैं। बड़े-बड़े और मोर ने कहा जाता है। 'माई! जिस मार्ग पर तुम चले रहे हो वह उसका है।' परन्तु इनकी यह बात कभी पूरी नहीं जाती। किसी ही बार कहा जाये कि 'जिन बात को तुम सच्चा मानते हो वह सच नहीं।' परन्तु ये एक नहीं सुनते। बड़ ही का नाम 'विपरीत-ज्ञान' को 'विपरीत ज्ञान' कहते हैं और इसीलिए यह बहुत हानिकारक है। इसी-विशे मेरे माई! व्यापकतक मे यह विज्ञान जाता है। 'कुनिया मे धर्म' उल्लापक कथना दुख पैदा करने वाले और धर्म का नाश करने वाले सदाय-ज्ञान और विपरीत-ज्ञान ही हैं।

यह उपनिषद् कहते हैं 'मया माता, मया पिता, मया पुत्र, मया और कोई नहीं

के हृदय में एक गाठ है और यह धारिका की गाठ है। इसलिए मनु मन्वान और पुनर्जीवात् महाराज ने भी कहा है कि 'बीज धारणे ध्यान के कारण धारणे धारण-करके को धारण नहीं बना सकता। पहले इस धारिका की गाठ को कोमले की कोमिल करो।' धारिका ही तो उसकी समक का कारण है। धारियों के धारिका के विषय मे कहा है कि 'युद्ध ज्ञानविद्या' धर्मन्तु योग्यतया जान ही धारिका है।

उपनिषद् कहते हैं—

निष्ठाये हृदयस्थिति
विश्रुते सर्वसमया।
धीयते नात्य क्षणीयं
सर्विन् मृत्यो पराशरे ॥

इस धारिका के छुटकारा कैसे हो? इस प्रश्न के उत्तर मे विश्व समग्र मनुष्य की सत्य कथन की प्रथम टुट जाती है तो सत्य जान मिले हो जाता है। जिस प्रकार राने को मृत लेने से उसने अपने की सक्ति नहीं रहती, मान का क्षिप्त का उठार लो तो उसकी उत्पन्न करने की सक्ति जाती रहती है। यही प्रकार सदाय-ज्ञान के मार्ग में हो जाये पर जब उनका ठीक-ठीक उत्तर मिल जाये तो सब सदाय मिल जाते हैं।

यह मनुष्य पैदा होता है तो माता के साथ उसका सम्बन्ध होता है? पिता के साथ उसका क्या सम्बन्ध है? परमपिता परमात्मा के साथ उसका क्या सम्बन्ध है? ये सब मार्ग उसे दिखा लो तो सिद्धांती है।

मातापत्य मे मान की प्रशान्ती ही निरासी है। मान बहुत धम्मा है, कीन-का कुछ है जो मान से मनुष्य का नहीं मिलता? किन्तु क्या मातावासी मान करते हैं? ये तीनों पर जाना, क्या मे स्नान करना, बड़ ही को दान-पुण्य समक देते हैं। मादनी। मान दिन कुंम होते हैं, हुस्कार का तथा ब्रह्मा का कुंम धारि। क्या कभी यह होना कि इस सदाय पर रेस मारों को मुझे किमना न किमारे मे दे दिया। धर्मज्ञान के बाईं तीन करोड़ कथा एक कुंम में देखने की किमारे का किमना जाता है। यह किम है? इससे क्या जान हुआ। क्या मे स्नान किमना बड़ ही को दान पुण्य समक देते। यह काल की बुद्धिमत्ता है किन्तु यह तो विपरीत-सन्निभ ने बेरा हुआ है।

समिक बेसी तो सही। धर्मिका मे एक महीनत्व होने, बाबा है। उस पर बड़ करोड़ धर्म मान का अनुमान किमना क्या है। इसमें उन्हें संधा मनुष्य मे स्नान नहीं कराया जायेगा। बसिक यह बातमा जायेगा कि वह सदाय मे विज्ञान मे किमनी उत्पत्ति की है? कहा ठक पैर पैसाये है। परन्तु मुझे यह सपना किम सिर्फ सच किम? मन्ना-स्नान मे मुन्ना-का मनुष्य धर्मि हुआ? दोष धर्मिका और मानान सके करोड़ मनु ५० हजार सपना की ऐसी किमनी मे सच करने वाले नहीं। उचित तो यह था कि धर्म करण की धारिणी होती। इसमें को बच से लाया जाता। इसमें ये एक बात भी हो जाये तो बड़ बेसा पार है। जिस प्रकार तीव्र वेग से बाधु चलने युक्त को उछाड़ देती है, इसी प्रकार सदाय का जो सक्ति मान से सम्बन्ध मे हो तो वह ऐसे ही विर जाता है, जैसे बाधु मे दूध। परन्तु यहां तो धारमा पुण्य माना ही एक यहाणु कार्य है, किन्तु ये जो कर्म हैं, मे सब कर्म और मरण के बने वाले हैं।

एक बार मैं मुम्पफरनगर मे बरेली जा रहा था, जिस दिग्मे मे मैं जाकर कर रहा था उस दिग्मे मे कोई और मनुष्य नहीं था। उसकी के लेखन पर बार सक्के उसने धा देते। मे कालिक के विचारों मान पकते थे। निकर, कोट धारि पहिने हुए थे। ऐसा प्रतीत होता था कि ये कनी मनुष्य के पुत्र हैं। उन्होंने मुझ से पूछा, 'बाबा की! यह हल गाँव तो आप कत तो न होते?' मैंने कहा, 'माई! जो तुम्हारी दृष्टि हो को करो। माने मे दोष कसा?' उनमें के एक तो माने भये। एक मनुष्य बन गया उसने धारों बन्ध कर ली और सदा पुकारा—'हाउ लैसा! हाय लैसा।' फट्टे के साथ जाकर टकराया। उसकी यह दया देखकर मैंने कहा—

देख मनुष्य का धर्म,
सकसा के कैसा धर्म?
धर्म मे है लैसा मिनी,
करसा है किमनी मनुष्य?

सब तो उसने धारों कैसी और धारने धारियों से कहने लगे 'यह बाबा तो पढ़ा-लिखा है।' मैंने पूछा, 'माई! यह किम लैसा-मनुष्य को तुम काल कर रहे हो, क्या कहते हो मे कहा के मे? उन्होंने कह बूढ़े की एक बार कहा था मैं काल कह? इस काल मे उनके बीजान को, दुनिया के सब काल-मन्ना-का तो दूध पकसा दिम है।'

उन्होंने उत्तर दिया, 'यह तो ज्ञान नहीं।'

यह है इस वेग की दया। वहाँ का मनुष्य? कहाँ की लैसा? परन्तु उनके स्नान इस वेग के मुन्नों को ज्ञान करने के लिए रहे था रहे हैं।

एक कनी पुत्र था। उसने धारने बीकर के कहा, 'मैरा कमरा लानी कर दे।' रात का समय था। बीकर ने बीपक बसामा और कमरे के एक कोने मे रख दिया। कमरे की सब सत्तुं तुलक धारि निकालकर बाहर रख दी और कमरा लानी कर दिया गया है। 'मासिक मे कहा, 'बसो देखें।' जब यह कमरे मे माना तो उसने देखा कि बीपक कमरे मे रखा है। उसने कहा, 'जिस बीपक से तुमने प्रकाश किमना था, उसे लो कमरे ही मे रख लो।' बस लो हमारी हालत है। जिस ज्योति से तुमने प्रकाश मिलसा है उसे ही हम नून जाते हैं। मादनी, उस प्रकाश की पक्ष्माणी। इसी मे तुम्हारा कल्याण होता।

जहाँ के लैसा मनुष्य हुए हैं वहाँ की एक मन्नाणी है। जो धारियों ने एक साथ धारने के लिए भयानक हो गया। मुन्ना-यमा व्यापलप मे गया। कई हजार कपडे लप गए। धर्म मे उन्होंने यह लिपक किमना कि इस प्रकार तो कुछ कैसा होता दिमारा है। प्रकाश। कनी पलकर मनुष्य मे पुनः। उसे किसी का पत्र नहीं होगा। उसकी तो केवल एक ही पुन है। लोने उसके पास यह। मनुष्य कनी मान मे देता था। उन्होंने जाकर उससे सदाय किमना कि 'यह सपना किमने मिलना चाहिए।' उन्होंने तो उसने उस तकर कुछ ध्यान न दिया। एक को बार कहने पर उसकी तरफ देखा और कहा, 'लैसा को!' उन्होंने कहा, 'कसो लैसा मे पुन है।' बस उससे जाकर पूछा तो उसने कहा, 'मनुष्य को!' लैसा मनुष्य मे यही प्रकाश लीको। जिस वरुण उनके दिम मे एक प्रकार के प्रेम था। तुम देखर मे एक प्रकार के प्रेम करते हो।' धारके धारम किमना ठेक जाता है। यह कनी?

पुन्य मान दिमको विम्वहानी।

देख है उसने लोने तुलसानी।

इसीलिए उपनिषदों ने कहा है कि हृदय की प्रथम बड़ टुट जाती है तो सब सदा मिल जाते हैं। मन्नाहार को ठीक करने के ये सब प्रम दूर हो जाते हैं। जैसे मनुष्य की रसियां बड़ तकर न कनी धारों उसने ये धर्म ठीक नहीं मिलकरा। इसी प्रकार धारने हृदय की रसियों को बीकी। धर्म दूर जायेगी और सब संलग्न दूर हो जायेंगे।

जिन बीनों मे पुन कार्य करना धारना कार्य मान किमना है और उन्हे किमना दूर कानी का मान कर दिया है किमनी उन कानी को सदाय कर दिया है। किमने देखर-मानि होती है, उनका काल-उत्पन्न

अभिषेक हो जाता है। मनुष्य-अभिषेक की ओर बलवत्तर है, एक उठने की ओर दूसरी बिरले की। उठने की बलवत्तर में यह पर-काल्पना में सब को बेसता है और बिरले की बलवत्तर में यह परलेखर को सब में बेसता है।

बस यही तो नियम दुनिया में काम करते हैं। यदि धारकी जटिल में यह सब था तब तो फिर आलास सब में बिखरना है और हम सब परलेखर में हैं तो फिर आसने कोई भी भुला काम न होगा। परन्तु यहाँ तो बात ही उलटी है। जो ईश्वर-प्राप्ति का समय होता है, उसमें हम सब प्रकार की भुलाहटों से बचे रहते हैं। फिर आस करते हैं हमला में बिबल नहीं सतात।

भारत में दान की प्रणाली ही निरासी है। दान बहुत धन्य है, कौन-सा सुख है जो दान से मनुष्य को नहीं मिलता? किन्तु क्या भारतवासी दान करते हैं? वे तोभी पर जाना, गंगा में स्नान करना, बस इसीको दान-मुण्ड्य समझ बैठे हैं। आधारी। बाये दिन कुम्भ होते हैं, हरिद्वार का तथा प्रयाग का कुम्भ आदि। क्या कभी यह सोचा कि इस प्रकार पर देव वालों की तुल्य में किन्तु सत्यता किन्तु में है देविता। धनुमान से डाई-सीन कटीर स्रव्या हट कर फलान में रेलवे को फिराये का विद्या जाता है। यह किसलिए? इससे क्या लाभ हुआ? गंगा में स्नान किया बस इसी को प्राणमुण्ड्य समझ बैठे। यह कहाँ की बुद्धिमत्ता है किन्तु दम्भी की विपरीत-व्यक्ति में ऐसा हुआ है।

जिस को सजता है तुम प्राणवी भी ?
विचर तो सजता है जिस को सजता है तुम क्या सजते हो ? उठका स्वभाव तो क्या सोचा है ? धन्यता नहीं तो बलाही। प्राण विनिमा करते हैं, यहाँ भी विबल सजता है या नहीं ? या जब कोई भुला काम करते हो तो किन्तुनी जल्दी धारका मन उठने में बल जाता है ? उस समय धारका मन कौन सजता है ? मन को सीधे पास पर न आना धारका काम है। पर यहाँ तो कुम्भक फैल रहा है। मना कभी कुम्भक करने वाले रोनी भी धन्य हो रहे ? धन्य महाप्राण से भी नहीं प्रसन्न हुआ था कि मन बाहु से धारिक चपल है। बाहु को रोकना हो सुगम है, किन्तु मन को रोकना कठिन है। उन्हीने उत्तर दिया, "यह दान नहीं। गुलाब के फूल को मजसना कठिन है, किन्तु मन को सीधे मार्ग पर लगाना सुगम है। केवल धन्यास को प्रतिपन्न बनाने की धारकपलवता है।" मानक पाठशाळा में पढ़ता है, भी ए० ए० पास करता है। वह मन को न सजता हो भी ए० ए० पास कैसे करता ? धन्य होर को ? परलखन सजाने में कुत्सी सजता है, उस समय वह मन सजता है कि नहीं ? वह मित्राणि मन सजाना उमका ही बेधा पार हो जाता है। मेरे बाई। धन्यास करने की धारकपलवता है। बिचारों के समान, प्रसन्नमान के समान मन सजता है। उलकास हो आसने। मेरे बाई। मन को सजाना बड़ा सुगम है। तुम को अपने मन से सजाह करे हो। उस समय मन की तुल्य में कहाँ है उलका सजता करो। यदि वह कह कि विनिमा हो, तो तुम न देखो। योग मार्ग में भी इसी प्रकार सिद्धि प्राय की है। उन्हीने कहा है कि यदि मन उठते सार पर वह किन्तु वहने निवृत्त मनो।

धारका को देख लो। क्या उन्हीने विनिमा नहीं देखे। उन्हीने भी देखे परन्तु उनके और जगते विद्या बहुत की और फिर धारका मार्ग पकड़ लिये। तुम मन को अपने मन में कर लो, फिर बाई विनिमा भी देख लो, परन्तु तुम उनके कुम्भ मान ही उठाओगे। एक कवि ने ठीक कहा है—

सुन्दर कवर मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

कहाँ नुहूँ मैं विपरित

कहाँ जा की ज्योती।

कहाँ मुहूँ मैं डीरे

रहेगी वह ज्योती॥

हो जब मोचनारों को

मनो मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

कहाँ नुहूँ मैं विपरित

कहाँ जा की ज्योती।

कहाँ मुहूँ मैं डीरे

रहेगी वह ज्योती॥

हो जब मोचनारों को

मनो मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

कहाँ नुहूँ मैं विपरित

कहाँ जा की ज्योती।

कहाँ मुहूँ मैं डीरे

रहेगी वह ज्योती॥

हो जब मोचनारों को

मनो मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

कहाँ नुहूँ मैं विपरित

कहाँ जा की ज्योती।

कहाँ मुहूँ मैं डीरे

रहेगी वह ज्योती॥

हो जब मोचनारों को

मनो मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

कहाँ नुहूँ मैं विपरित

कहाँ जा की ज्योती।

कहाँ मुहूँ मैं डीरे

रहेगी वह ज्योती॥

हो जब मोचनारों को

मनो मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

कहाँ नुहूँ मैं विपरित

कहाँ जा की ज्योती।

कहाँ मुहूँ मैं डीरे

रहेगी वह ज्योती॥

हो जब मोचनारों को

मनो मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

कहाँ नुहूँ मैं विपरित

कहाँ जा की ज्योती।

कहाँ मुहूँ मैं डीरे

रहेगी वह ज्योती॥

हो जब मोचनारों को

मनो मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

कहाँ नुहूँ मैं विपरित

कहाँ जा की ज्योती।

कहाँ मुहूँ मैं डीरे

रहेगी वह ज्योती॥

हो जब मोचनारों को

मनो मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

कहाँ नुहूँ मैं विपरित

कहाँ जा की ज्योती।

कहाँ मुहूँ मैं डीरे

रहेगी वह ज्योती॥

हो जब मोचनारों को

मनो मोचनारों की हस्ततः।

तो वह ठीक है उन्हीने की वस्ततः॥

तो बिचारकों का कपड़ा ही बन नहीं लेते देता। एक कारीगी बनाने में कहा है—

इकाई इस्लाम, बिचारक कर्मभूत।

कि मुद्रा रकी-बलम साहज दुरुज॥

धर्मविपुल यह रोग बीघर ही दूर करता पाँचविह विपुल देता दुःख दर्द सब निवृत्त करते। बिचारकों का दुःख सब भावने में, सब समझने में कि यह क्या भारी दुःख है। बहुत इसे मिटाने का कोई साहज नहीं करता। धर्मसमाज बनारस की बात है, वहाँ एक मनुष्य था। उसके साथ एक धार्मिक भी। उसने मन्त्री से मिलने को कहा। उसके पुता, "भाई क्या काम है।" उसके कहा कि मनुष्य था। उसके साथ मन्त्री मोहोदय को बुलाया गया। वह मन्त्री भी धारो, तो उसने कहा यदि तुम्हें इस सक्ती को सजाना हो तो सजाना करो, नहीं तो जहाँ इसका को बाँधे चली जाय, वहाँ सुलभमान हो जाये वा किस्मान। उस धार्मिक ने पूछा गया तो यह बड़े बोरे से रो रही। उसके कहा, "रोनी नहीं।" उसने कहा कि 'मुझे विचारक के भावे कि मुने मेरी सहायता करीये। जब माता-पिता ही सहायक नहीं हुए, तो तुम कैसे सहायक हो सकते हो।' उस कम्पा को बीरस दिया गया तो उन्हीने बताया कि "जब मैं डाठ जी बर्ब की भी सब मेरा विचारक था। इस समय मेरी मातु पण्डु होसह सब की है। यह जो मेरे साथ मुझे यहाँ सोचने भाया है, मेरा भाव है। मैंने मेरा सहायक बनाया। सब इसका विचारो तो रहा है। मैं कहाँ जाऊँ ? मेरा सर्वजन मुद्र मन। इस धार्मिक का कल्याण कैसे होगा ? यह ठीक है कि मैं दूरी हूँ, किन्तु पिछले मुझे भुला बनाया, इस पाप में नैसा, यह भी तो भुला है। पाप तो बोने ने ही किया है। एक का तो बिबाह हो रहा है और दूसरे को घर से बाहर निकाला जा रहा है। दोनों को ही निकाला जाना चाहिये वा।"

भायो। ऐसी सिकों पटनाई प्रति-विम होती है। बिचर देखो उपर यही दता है। इस प्रमाण केस का कस कुछ मनोवा ? यह कैसे उठ सकेगा ? जो बेसता है कि धारो पिल ऐसी पटनाई होती है, परन्तु नन बस में नहीं। धारमसमाज भी दुर्बल है। इसमें धनुष्य धर्मिक धारो ही तो उठ सजा होता नहीं तो दाना जाय में पहा हुआ है। पनी बताता है दानो को बेसता है, मोष में धा बताता है, उन्ही उपर बताता है, धारो पर धारो बताता है, किन्तु सब उठ नहीं सक्ता। धारो ने पकड़ लिया और पिछले में धारकक बस दिया। यह हुआ क्यों, उन्हीने मन में दानो का मोष धर्मिक था।

भायो। लोक कर करो। मन के दुःख करो। स्थायें कोष करो। यदि अपने कामको बुझा बगलें हो तो बिहारी के पास बैठो। बुद्धिमत्ती की संवत्ति करो। बुद्धि का बायेनी, मुद्रवि दूर हो बायेनी। बिचर काय का ज्ञान के साथ धन्यत्व नती

होता यह कर्माणि सिद्ध होता जाता। बिचर सब संसार दूर हो, उन्ही निष्ठा के बाये कोनों में सिद्ध हुआ है और उन्का देस पार हो जाता है।

हमना भर बुद्ध में कुतो है सारा सब। हनुमन् को मेरे कि बार कुल हनुमन् का॥

धर्मविपुल दे मुझे तु धारने उपर स्वय ही धारमक कर रहा है उस विह के समान बिचने धारने ऊपर ही धारमक किया वा। बुद्धिमान होकर मुझ में बनी। तुमो। एक बल में एक सिद्ध रहता वा। जब उठे भूख लागती हो तो पणु उन्हीने सामने धाता उसे मार देता। इस प्रकार यह प्राण हात धात पणु रोज मार दासता वा, परन्तु साता वा केवल एक ही। बस के बस बनकर चुकी हो वा। उन्हीने सोचा कि 'मैंने उन्हीने धारमक किया वा। इस प्रकार तो बोने ही किन्तों में हम सब धार दिने बायेनी। मैं सब एक होकर सिद्ध के पास पाय और कहा, 'बनरका। तुम धारमक करते हो तो सब बनरका को मार दासते हो किन्तु तुमके केवल एक को ही हो। मतएव तुम धारमक करने का कष्ट न किता करो हम प्रतिविम एक पणु होकर ही तुम्हारे मोषन के लिए मेरा विचार करीये। सिद्ध क्या प्रसन्न हुआ।

उन्हीने कहा, 'बहुत धन्य'। कुछ पिल तो पणु धारो रहे, धार में एक पिल सब धारमक ने एक होकर एक सजा की पुरी कहा 'भाई। सब प्रकार हो हम सब धारमक हो बायेनी।' सारणीय में कहा, 'धन्यता मन में बाजना।' दूसरे पिल को पणु को पया, 'रु बस मेरे परन्तु फिर की बोई पय न पणुवा। सिद्ध क्या पयराया उसे भूख मन रही थी। हानने में वे सलोपो राम पणु। उसे देखकर सिद्धराज ने कहा, 'धरै। एक तो तु सभ पर नहीं था। फिर मुझ के मेरा क्या बनेना ? मैं सब पणुको को धनी समायत किता देता हूँ। सारणीय में कहा, 'मैं यहा तुम्हारे मोषन के लिए तो नहीं था। मैं तो तुम्हें तुम्हारे बैरी की सजना केने धारया हूँ। इस धारम में तुम पणु लेर का मारा है। यह कहाता है कि यदि तुम दूरे सिद्ध के पास जाओ, तो मैं तुम सब को मार दासूँ। मैं तुम्हें इसका सजना-बार केने धारया हूँ। यह सुनकर सिद्ध को बेधा कोष धारया। उन्हीने कहा, 'धरै पय। बता यह सिद्ध कहा है ? पणुने मैं जसी को मार दासूँ।' उसने कहा, 'पणु।' सारणीय लेर को एक पणु के पास से धारया, जिसकी मुद्र से बहुत जैनी बनी हुई थी। उन्हीने कहने लगा, 'सिद्ध यह कुर्ब मैं वा। पया नहीं बस काई पणु।' सारणीय ने मुद्रो पर बड़कर देखा। सोचा, 'हदो बाध में है। रोने की मुद्रो पर बड़ मन। उन्हीने प्रतिविम करने में पया। उन्हीने धारका कि सजुपण दूरा देर बैरी में है। मेरे मन के धारो कि पया है।

(विचर पत्र ११ नव)

(1955)

राष्ट्र के सम्मुख चुनौतियाँ और आर्य वीर दल

नरेन्द्र प्रवस्था

समाजिक आर्य वीर दल, दिल्ली प्रवेश

देश आज जिस नाबुझ दौर के मुखर रहा है, उसका ऐसी विषम परिस्थितिवा पड़ने कभी नहीं उत्पन्न हुई। सीमावर्ती प्रांत समूह-कनमीर व पञ्जाब में विप्लव-कारी तत्वों के राष्ट्रद्रोहिता ने घोर प्रोत्त हिंसक आघात, मुकदमा में भारलाल की ओर ने मुस्लिम साम्यवादिवाद का पत्र छठाया जबरन, उत्तर प्रदेश, बिहार में उर्दू की बकालत के पीछे बेवकाल होती बर्फीली राष्ट्रद्रोहिता के लिए समीर चुनौतियाँ हैं। शिक्षा का नाम ध्वस्त आज व व्यावसायिक मापक मापक धार्मिक व वैश्व शिक्षा के धरातल के भारी पीढ़ी में जनता की मातृशिक्षा, किस्तान्ति विद्रोह, उत्तराधिकार हीनता अन्विष्ट के लिए राष्ट्रवाद के धामन का परिधायक है। पड़ने धारातल जीवन में कोशकायन व ध्वस्तधार का रही की। जब विदेशों से लम्बी दूरी धार हैरोडन हलीन, गलीली गीनिया धारि की भारी माना ने धारातल के हार-पीर तस्माई की जर्जरित व मुद्रु के इतर-पर का सडा करके का मुद्र-प्राप्त हो रहा है। जर्मनी व हाडिच व धर्मशोध रिप्ले, कता के नाम पर केंद्रे नाथ, जीवन के नाम पर भीडा प्रचंडन मुद्रा पीढ़ी को मुद्रा रहा है, अन्तः रहा है। पञ्जाब, पञ्जाब तोषक के विधान की जनकर मोहरा केने की धारप्रकटा है।

यह अन्त्याय कब तक चलेगा ?

इतिहास बताह है कि मोपने मुद्रक-भारती ने प्रथम शासन के दौरान न्याय की थी। उस न्यायन ने मोपने मुद्रक-भारती ने हिन्दुओं के साथ बचरदली की। जनकी मुद्रकभारत न्याय। जबरदली जनकी धरने धर्म उन्नील करने पर नज-रुद किया गया। बम्बो की मुद्रात न्याय गया। जनकी गीनकायन लक्षिको के नाथ बलकायन किया गया और पल्लिको का धरमाय किया गया। फिर भारत सरकार जन मोका मुद्रकभारती को पैदा के रही है। जिन मोपने ने बेहादुत पूर्ण कां किता और देश की धारता को डेव वुर्-पाई उन मोपों को सरकार पैदा के रही है। जबकि धारवर्धनी सहायको के निद्रम भारी का सा सलुक किया जा रहा है। हुसारी वीर करने नाम समान के लिए पेरों वीर और निद्रम बेहादुत बचरदली कि नमल राहते पर बस रही थी, की राय राहते बर बाये। और

वहेक-नामक, धर्मप्रस्था धारि कुटुम्बिके के भी निद्रम कृता नहीं। धारवर्धनाय सवीन पाषण्यपाक, राष्ट्रद्रोहिता, प्रस्थाधार धारि के टकराया है, उसने धामन, धामन मोपके के निद्रम की धामनीन्यायक सवर्न किया है।

आज मुद्र विधतनकारी तत्वों नको व कथन कुरादनों के टकराने के लिए धारवर्धनी की बागे धारा होया। हये महारुद्रक सलुक की धारि कथनी कलामों की धारवर्धनाय कनी विधनित की कीनया होया। हर धारवर्धनाय कन के कन दल धारवर्धनी तैयार की। जब तो हय प्रलि-कित करते हैं पन्तु जीवन की सवमय बनाने का बकलप केने की बकलप है। उस दल धारवर्धनी की प्रलेक धारवर्धनाय धारि धार तो धारवर्धनी के एक प्रम सज्जन तैयार हो सकता है। मुद्रा बर्न में इस धारवर्धना की रचनालक बन केना होया। धारवर्धनी की यह धारि राष्ट्र की कुटु-मिती वृद्धकतावादी तत्वों के कम्बुओं की बकलानुर कथने महर्षि दयानन्द के सवर्न में धारका का सवमय सलुक करने में प्रव-लसीत होनी। हर धारवर्धनाय महर्षि के धारवर्धनी की धामे लाने के लिए कम्बु-रहा ने बिचार कर इने किनानित करने की धारवर्धनाय है।

उनको कोई पैशन नहीं मिल रही हाकिमी ने लोक बह और बर्न के लिए बह है। पन्तु फिर भी उनको कोई पैशन नहीं बी का रही। यह सवमय नहीं तो और क्या है। और यह सवमय कब तक चसता रहेगा।

बचवरे मोपन पनकार जीय।

शोक संवेदना

बेह है कि वो सखारी काय दमा की भारी (धर्मप्रेम की बकलानु बर्मा) डेटर कैलाश का दुरधनित कर जाने के मुद्रकविचार २ मई को बेहादुत होया गया। मौना एक धर्मिण शोक निवध सन्मार्ग ५ मई को हावकाय ५ बजे सन्मार्ग धरा।

बमा परिवार ने इस बचवर पर ११०० रुपये विधिनि धारवर्धनायों को दया। धारवर्धनिक परिवार की ओर के हूने बर्मा परिवार के सलुमुद्रुि द्रष्ट करते हैं।

अब नहीं तो फिर कभी नहीं परोपकारिणी सभा का भविष्य

लेखक—म० म० भावायं विश्वप्रवा व्यास वेदाचार्य एम०ए०
बेकनपूर नरेशी

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा धरने जीवन की धामन केना के स्थापित महर्षि की उत्तराधिकारिणी सभा परो-पकारिणी सभा की हो बर्न बीर जाने पर भी धार्य बनता जानती ही न थी। यहा तक यह सच्य रही कि परोपका-रिणी सभा के जो उद्देश्य महर्षि ने निर्धारित किये थे उन को धार्मिक सभा ने धरने उद्देश्यों ने सन्मिथित कर लिया। स्वीकृति परोपकारिणी सभा कुछ करती थी भी नहीं।

महर्षि निधनार्थ पाठनीय जब पड़ती बार धरनेधर ने नाराई मई धिब ने वीर पाषण्य दिवस के धार्य नर भारी सन्मि-थित हुए धार धरनी सभा के मुद्रा बाजों सया डेकर एत तक परोपकारिणी सभा को सखार के धार्यों ने जाना। यह पहासा ही बचवर का।

परोपकारिणी सभा के पास महर्षि का पांच प्रकार का सामान

२—महर्षि का मुद्रिण पुस्तकें का विधान नकार। जिकमें उत समय के को सलस वैश्वक हाडिच के धर्य तथा सतसमानरी के धर्य विनका महर्षि ने बचनर किया परोपकारिणी सभा के पाछ है।

२—जो धर्य उत समय मुद्रित नहीं हुए वे उनके हाडिच के कई-कई हलकेक।

५—महर्षि के धरत तक धरुद्रिण हल-सिथित रहे धर्य।

५—महर्षि के उपयोग की वारुणें शास-मुद्रात बलक सडात पाय धारि।

परोपकारिणी सभा को बाहिर् सु-ची की सामान उनके हाडिच उतकी सु-ची धारकर धार्य बनत को दे कि हय पर यह सामान महर्षि है जिस के उतकी सुरक्षा रहे, सार्वदेशिक सभा की उपेक्षा कर रही है और सु-ची नहीं मासती है।

(अनुसन्धान कार्य प्रजमेर ही स भव है)

धारवर्धनाय द्वारा सन्मिथित अनुसन्धान विधाय परोपकारिणी सभा धरनेधर में हो समय है। स्वीकृति ऐसा सामान धर्यक कही नहीं है।

धरनेधर सतावी के जो यह प्रादु हुआ है वह बीर की कय हो रहा है स्वीकृति वो बर्न बीर रहे हैं कर्न कुछ सार्यक कही हुआ। मोहा जय बर्न हो स कूट नेना बाहिर्। ठका होया पर फिर कूटने के कोई नाम नहीं होया। कुछ पूर्ण है ही। उन पर कुछ मोप

पर्वत रहा है। ये पर्वतध धर्यबाजो को जन्म देते हैं। यह प्रसिद्धि किसी सभा के लिए धारवर्धनाय नहीं हो सकती है। जो पूर्ण है ही उन्हे धार्य न करने का धारवर्धन के मूल स्वीकार करना ही सचन है।

हमारा मत

महर्षि ने परोपकारिणी सभा के वैश्वक साहित्य का कोई सच्य कोटि का की शिक्षा नहीं रमा सवमय महर्षि के धिप्य बडिनीय विद्वान् पब्लि भीमेन सवर्मा जीधर ने उन्हे भी नहीं रमा। स्वीकृति परोपकारिणी सभा सवमय होला के बर्नो ने भीड बलक करने थे। इस ने महर्षि सारवमय रहते थे। महर्षि ने निद्रम कि वे २३ सज्जन पुसो की सभा बनता हू। राधे महाप्राते तथा उही उत्तर के धर्यकि रहे। कोई कथनी पर्वतध सडाक बलिध नहीं रमा।

राजधरानो का राभा सिथान वे किया गया और रायन की। पर उतस धर्यलिक कही नहीं बया गया है और न वे गरीबी हो है। महर्षि ने निद्रम राज-परिधारो को वैश्वक धर्य ने सीधित किया सीन पीढ़ी की बना। नीची पीढ़ी धारवर्धनाय को मुद्र मई इसने हमारा धरवर्धन है। जो हमने रायन बने जाने के ही कारण उत रायन परिधारी को मुद्रा दिया। इस को धर्यक कलक के वन से धरवम कर दिया बाये तो सभा हूय धार्य धरवम करने की योग्यता उसकी गट हो जाती है। परोपकारिणी सभा ने हो धर्यनित ऐसे हैं जो सलकत वे धर्यनित है पर धरने को पब्लित समक डेंते है। वे धर्य के प्रयो ने गडबड कर रहे हैं। इससे परोपकारिणी सभा की रता करनी बाहिर्। मैं उन बाजो को मोहनत नहीं बाहता। केय सलस मुद्रिमा है वे धर्यो।

आर्यसमाज मोडबन्द एक्स-टेशन नदरपुर वार्षिक उनाव

उपरोक्त सवभा का बाहिर् मुद्रात विनाक १३-५ ए० ए० को ५० मुद्रावर धरमा की की बकलाना ने निद्रमो निद्रम-सिथित हुया।

हालक—की बरतसिध वर्य विधि धर्मनिधर, प्रमाण—का—भा० ए० धार्य B Sc & BBS HCMS उरधरान—भा० कर्मनरकी, मनी—वी मेनपास धारमी, उरधरान—वी सिधन धर्य की कोषधर्य—वी मोडधर्यकाय बाज, उरधरानधर्य—वी सन्वी राय धार्य, प्रभात मनी एक कायनित सडिब—वी मुद्रेय प्रसाद धार्य।

मुद्रक प्रसाद धार्य
(प्रचार सचिव)

आर्य जगत् की शान
२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के
अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बैंक ड्रफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चल्नदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,
सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१५ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

राजमनीराम शालग्रामे	सूर्यदेव	महात्म्य धर्मपाल	मोहनलाल शर्मा
कैरवाक चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	कलसी
बुध प्रधान, हा० बा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महात्म्य कुलीशाल
प्रति० बन्ना	सना	सना	देवि० हु०

सौजन्य से महास्वियां दी हूँ प्र० लिमिटेड, १/४४ कौलिनगर,
सोनीमिक रोड, नई दिल्ली-११००१

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक
हर सप्ताह पढ़ते रहिए

- ☐ क्या आप 'रूढ़ि', मुनि तपस्वी, ऋषिओं की अमृत वाली पढ़ना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप वेद के पवित्र ज्ञान को सरल एवं मधुर स्वरूप में जानना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप उपनिषद्, गीता, रामायण, बाह्यरात्र्यन्त्र का आध्यात्मिक सन्देश स्वयं सुनना और अपने परिवार की सुनाना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप अपने सूरवीर एवं महापुरुषों की शीर्ष गाथाएं जानना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप महर्षि व्यासजी की वैचारिक क्रांति से आत्मचेतना जागृत करना चाहते हैं?

यदि हाँ तो आइये आर्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाएँ।

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए। साथ ही वर्ष में बार अनुपम मध्य विवेकाक जो प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये आजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान—

आर्यसन्देश साप्ताहिक

१५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

The advertisement for Gurukul Kangri Pharmacy is presented in a hexagonal grid layout. At the top, the words 'कुरुकुल' (Gurukul) and 'उग्रह' (Ugrah) are written in large, stylized Devanagari script. The central part of the grid contains several hexagonal boxes, each featuring an illustration of a medicine bottle or box and its name in Hindi. The medicines shown include 'गुरुकुल चय' (Gurukul Chay), 'भीमसेनी सुरम' (Bhimseeni Suram), 'पार्योक्तिक' (Paryoktik), and 'ओम' (Om). Each box also contains some descriptive text in smaller font. At the bottom of the grid, the text 'गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी' (Gurukul Kangri Pharmacy) is written in a large, bold font, with 'हरिद्वार' (Haridwar) written below it.

शाखा कार्यालय—६२ गली रत्ना कैथारमण,
कोम : २६६८३८
कांगड़ी बाजार, दिल्ली-६

साप्ताहिक ओइम् आर्य सन्देश

पुरुष एक प्रति १० पैसे वर्ष ६ अंक २६ रविवार, १६ मई, १९०३ आर्य सन्देश १९०६-०७-२३ पृष्ठ २-४२ स्वामिन्वासि—१९

देशद्रोहियों को सखती से कुचलना आवश्यक है

—रामगोपाल शालवाले

पंजाब तथा दिल्ली में हिंसा एव विद्रोह की जो प्रवृत्ति उभर रही है उस पर टिप्पणी करते हुए सार्वत्रिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा है—“उचित है कि सरकार इसे श्वता-पूर्वक कुचल दे। विदेशी लोगों पर काम करने वाले देशद्रोही लोगों ने हत्या तथा विस्फोट के अपने दुरादों की श्वतापूर्वक प्रशाम दिया है। प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या के पूर्व पंजाब में जो स्थिति थी उसे इन्होंने फिर से कायम कर दिया है। देश के सम्मुख एक गम्भीर समस्या खड़ी कर दी है।”

श्री शालवाले ने कहा—“देश की श्वतापूर्वक एकता की अंग करने

वाली राजनीति फिर से शुरू कर दी गयी है। श्री रघुनन्दन लाल भाटिया तथा बीबरी बलवीर सिंह की हत्याएँ सत्तासत्तादी क्रियाकलापों की गम्भीरता की घोर इंगित करती हैं। श्री शालवाले ने अपना क्रम बालू रखते हुए कहा—“जब से धर्जुनसिंह पंजाब के राज्यपाल हुए हैं, तब से सत्तासत्तादी कार्यों में वृद्धि हुई है। वस्तुतः श्री सिंह के परामर्श से ही भारत सरकार ने कुछ नम्र कदम उठाये घराबी विरोधी पक्ष में सरकार की श्वद नीति की आप लिया घोर स्थिति की श्वरिपर बनाने की मांगिश शुरू हो गई। सरकार को तुष्टीकरण नीति ही वर्तमान चरमपंथी कार्यों की नींव है।

लोगों से भ्रातृत्व की भावना को कायम रखने की श्वरी करते हुए श्री शालवाले ने श्री धर्जुनसिंह को पंजाब के राज्यपाल के पद से हटा देने तथा वहाँ कोई संयोग प्रशासक भेजने की मांग की। माथ ही यह भी कहा कि चरमपंथियों के घरो की तपाशी लेकर सभी विस्फोटक पदार्थों की सरकार अपने कब्जे में ले ले।

जनता का आह्वान करते हुए श्री शालवाले ने कहा कि सत्तासत्तादी कार्यों की श्वतापूर्वक बनाने में सभी लोग सरकार की उमीलन श्वद करें जैनी कि पिछली राष्ट्रीय विपत्ति में की थी। श्री शालवाले आर्यनमाज तिनकनगर के वाधिकोसव के श्वसर पर बोल रहे थे। उन्होंने आर्य-

नमाज तिनकनगर के द्वारा नंजा-लित स्कन तथा आर्यिक सामाजिक कार्यक्रमों की प्रशाम की। तथा आर्य समाज के श्वे देशान्तरों डीप श्वोयान्त तक फैले प्रभाव का भी श्वयानकन दिया।

यह आधिकोसव ५ मई से १२ मई तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। इस श्वसर पर एक श्वेद कथा हुई जिसमें ५० श्वुनीलाल के श्वधुर श्वरक भजन हुए और ५० श्वयापाल श्वधाश के श्वेद प्रबन्धन हुए कथा में श्वन्दिरा श्वय छोटा पड़ जाने से श्वदि के श्वामय में श्वोनाशों के श्वेडने का प्रबन्ध करन पड़ा। इस श्वरक के आर्यिक श्वोताओं ने कथा में श्वयचिक व. व. क भाग लिया।

देश के नभ पर समस्याओं के बादल मंडरा रहे हैं

आर्यसमाज गांधीनगर में सभा प्रधान का ओजस्वी भाषण

आर्यसमाज गांधीनगर दिल्ली का आधिक उल्लेख बड़ी श्वमभाष के साथ श्वरुपन हुआ। १ मई से लेकर १२ मई तक के इस समारोह में श्वोभाषाया, श्वयुद्ध परायण यज्ञ, श्वेदकथा, आर्य महिला सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का आयोगन किया गया। श्वोभाषाया में श्वयुनापार की समस्त आर्य श्वसम्भो के आर्यिक जनो, बालक-बालिकाओं के आर्यिक जनो ने बड़ी श्वारे श्वसम्भो के भाग लिया। इस श्वोभाषाया का आधीनगर और कुल्लनगर के नाभ-

रिकों ने श्वय श्ववागत किया।

रविवार को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में श्री श्वेदप्रकाश श्वोडिप, श्री श्विकनसिंह मेघावी, तथा दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री श्वयदेश ने श्वपने भाषण दिये। सभा प्रधान ने कहा आर्यसमाज में श्वपने श्वयशकाल से श्वेद श्वर्य और समाज में फीनी श्वयस्त श्वुरीसिंहा की श्वर करने के लिए श्वयर्ष करता रहा है। इस समय राष्ट्र में श्वेद श्वुर समस्याओं के बालय श्वयवले सहे हैं। श्विचन्दकाफी

सत्त्व देश के नीव में पसीता लगाने में श्वयसर है। सरकार इन उग्रवादियों के नामने श्वननीति श्वपना रही है। आर्यसमाज ने सदा राष्ट्र की एकता के लिए कार्य किया है राष्ट्रीय एकता की श्वयान में रगते हुए हैं दिल्ली की श्वयस्त आर्यसम्भारों को और सरकार से निशेदन कलाह इस श्वयय श्वयर सख्ती से इन श्वुनी श्वयार्थों की नहीं कुचला गया तो देश की एकता सख्ती में श्वद सख्ती है। श्वराप श्विच्छोप श्वानोचनमासक नहीं है जनहित और राष्ट्रहित के

िए यदि सरकार सक्षक कदम उागे है तो हम सहयोग को नंजार है। किन्तु साम्प्रदायिक ताकतों के श्वामने सरकार का श्वकने का आर्यनमाज श्विरोज करता है।

समारोह में श्वेदिक श्वर्य के श्वारो को श्वु जानी जनता में करान श्वयित से उनके श्वयन्य को श्वयर्षन दिया। इसका श्वोयोजन प्रधान श्री श्वयुनन्दन श्वयस्वी और मन्त्री श्वयामश्वयुर श्विरमानी ने किया।

नवा नाथ का प्रचार, पुत्रप्राप्त की भरमार,
क्या गरीब बरखार, साधु बना न पुकारी है
स्वर्ग-खिलावा के माने, कसे लड़किया मीसने,
शोर मचा धन्ये खान, बेवो नगीं मति मारी है
रचे बैयवा धनिक, बाके मरिहक रहे टेक,
मही मुडि न विवेक पूजा ईश की विचारी है
तो की बाला नहीं सन, बनी मुसमानो की कन,
रचे कनके नगीं खबर खबर पूजा लकी मारी है

★ वक्त्र-सन्देश ★

दण्ड और शासक

दण्ड विधान ही प्रजा पर शासन करता है दण्ड ही प्रजा का रक्षक है सोते हुओं को जगाने वाला दण्ड ही है। इसीलिए जानी लोग दण्ड की धमकी करते हैं। जब दण्ड विचार पूर्णक लागू किया जाए तो प्रजा को भ्रान्तित कर देता है और जो बिना विचारों दण्ड चलाया जाए तो सब और से राजा का विनाश कर देता है। —महर्षि मनु

किसी शासन की श्रेष्ठता जानने के लिए उसकी न्याय व्यवस्था की निपुणता से बढकर और कोई धृच्छी कसौटी नहीं। —बाइस

जिसके कंधों पर शासन का भार हो, उसे व्यक्तिगत पाप और दोष का विचार त्याग कर, जिस प्रकार भी हो सके सदा प्रजा का हित करना हो चाहिए, यही पुरातन राजधर्म है। —रामायण

ज्यों-ज्यों अपराध ऋक्ते जाये, न्याय को उभ होते जाना चाहिए। —बैन जानसन

पहले अपराध तो उनके हैं जो उन्हें करते हैं, दूसरे अपराध उनके हैं जो उन्हें होने देते हैं। —यामस फुलर

सम्पादकीय

जनता वजूहस्त को तलाश रही है

दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में एक साथ हुए बम के बमों ने सारा उत्तर भारत हिला दिया है। बुन और भास के लोभने मासूम लोगों की कटी लाशें, बीसते बिचाइते शय से बरबराते नागरिक स्तम्भ धाकोश में तनी मानवता की मुकुटिया धातकभाव की बुद्धिगत क्लेशनी कह रही है। ४२ जगहों पर विस्फोट हुए और ८० लोगों के बीचते उड़। लैकनों लोगों की भागल होला पड़ा है। धातकबावियों ने इन बम विस्फोटों की एक समय में ही धनेक प्रान्तों में विस्फोटित कर भारत सरकार के सामने चुकी चुनौती दी है लेकिन उनके इरादे कुछ और भी के, वे चाहते थे सारा उत्तर भारत हिन्दू सिल मुहसुद की धाग में कुलसने लगे। लाखों लोग इधर उधर जाते बाने तब जाये भासी ताराय में एकाएक धावावी का तबाबला शुरू हो जाये। इस बढभयक में निपट दिखेसी ताकत भी इस दिन का बेवसी से इतनाहार कर रही थी किन्तु उनके इराबों पर तो पानी फिर ही गया। उपवावी अपना हर हुपला पहले से और भी अधिक कुरता के साथ करते था रहे हैं। सरकार के सामने दो बातें बाकर खड़ी हो गयी हैं। पहली प्राथमिक बात यह है इस समय सिल हिन्दू दगों से बचा जाये, अन्यथा पुनःकलावावियों के मनसूने बढभय पूरे हो जायेंगे।

दूसरी—धातकबावियों के साथ क्रूर मुठभेद मोल लेनी ही पड़ेगी, क्योंकि इसके सिवा कोई चारा है नहीं। पञ्जाब उपवावी की खुनी होली में तबक रहा है परन्तु वहा हिन्दू सिल दगे नहीं हो रहे। न हो सकने की परिस्थितियाँ हैं। उसका स्पष्ट कारख हिन्दू सिलों के धावसी रिस्ते नाते, भारी दोस्ती, भासल का लेन देन है, जो उन्हें सामाजिक अनुभवता में बाधे हुए है। इन रिस्तों को परखते उभाने में लगे हैं उपवावी।

लोगोवाल और बाबल के इस्तीफा देने के बाद धकाली दल पर स्पष्टरूप से उपवावियों का कब्जा हो गया है। इस समय दो व्यक्ति उपवावियों की कब्जा के केन्द्र बने हुए हैं। एक मिडगवाने के पिता बाबा ओमिनरसिंह और दूसरे भरमुनर जेल में बंदे सिमरनजीत सिंह मान। उपवावी विषधर बाबने जिल से पुरलतया बाहर का चुका है। वे बताया बाह्यते हैं इन बमबावों के कि धब सिल मेतुल हमारे हाथ में है और हम सरकार से बमों के जरिये बात करना पसन्द करते। ये सचमुच सरकार और गुप्तधर विभाग की पोस बोलने में पूर्ण सफल रहे हैं। जबकि सरकार को उपवावियों के दिल्ली तथा हुदरे राज्यों में मुस धाने की निपटस्त बाबर मिल चुकी थी। धातकबाव के धातुकुतमल लौर तरीकी से निपटने के लिए हमारी पुलिस और गुप्तधर धर्मसिवा सफल नहीं, इससे स्पष्ट हो रही गया है। इन धातकबावियों के क्रूर प्रहार से भयभीती जनता उल बखहस्त की हुद रही है जिसका चिक छ सरी को प्रधान मन्त्री की राजीव गांधी ने राजनीला सदान में किया था। उस गम्भीर गबना की सुनना बाह्यती है

जो निर्वाचन के दिनों में हमारे युवा प्रधान मन्त्री ने गुजारा था।

देश को धराकता से बचाने के लिए सरकार को उनी भाषा में बात करनी पड़ेगी जिसमें उपवावी बोलते रहे हैं। वह भाषा धन्य की नाम से और बाबद के जवब से निकलती है। हमारी पुलिस, और सुरक्षावाहिनी की कानूक के जवब से लाठी हुई नहीं है हमारे जवानों में बीरता तो नहीं गयी है, कभी बीरता बाक नही हुई है। कभी धगर है तो हमारे नेताओं के पलत होसलों की है। चब मुठुटी भर विरिधियों की धावाज से डर जाने से काम नहीं चल पायेगा। सरकार में सभक ले रही लिया है। नरम रक सपनाकर भी क्या मिल पाया, पञ्जाब समस्या पहले से भी और अधिक कलतलाक हो गयी। बैसे भी लोहे के जब तक दोनों तिरि गम न हों उनको जोडा नहीं जा सकता। सरकार का लोह विरा ठका रहा और धकालियों का गम है ये छह चुड़ने की बजाय और भी धलग हो गये। पञ्जाब की समस्या में उग धाये कोड़े का धाररेसन म्बु स्टार के रूप में सकार के किया। लेकिन सरकार तब भी समक नही पायो इन कोड़े का विष कहा तक फैल गया है। पूरी बाह में और धनेक कोड़े फिर ने निकल धाये। सरकार केवल सरहम लगाती रह गयी। और धब जब ४२ बम दो दिन में फूट गये, देश के बीच भरे स्थानों में बावों का व्यापार हुआ। सुरक्षाकर्मी नेताओं की बौकसी में ले रहे धाम जनता बाहब निगलती रही। विरोधी नेता भी बाबयेयो ने सारा इतनाय सरकार पर लनाकर राजनीतिक लाभ उठाने की कोसिख करनी शारम्भ कर दी। इस समय तो उन्हें भी चाहिए कि देश व्यक्तिगत दलगत स्वावों से बही ऊचर है। हमें केवल प्रशासन की मजक उठाने का हक नहीं है, बल्कि धपनी योग्यता और गुप्तधर कुशलता से राष्ट्र में उठी धयकर समस्या के निदान में सहयोग देना भी कर्तव्य है। हरियाणा उत्तर प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली के इतने स्थानों पर बम फूटने का मतलब है कम से कम पांच तो धावमी इस बढभयक में शामिल हैं। जहिर है वे उत्तर भारत में फैले पड़े हैं, उनका कोई न कोई मुख्यालय जरूर रहा होगा जिसके धावये से उन्होंने १० और ११ मई के दिन चुने। इस धकली उपवावियों की सहर बाहर में फैली कोब ने भारत की नीच में जोपलीता लगाने में सफल है, जरूर कोई न कोई सुराम छोडे होंगे। जासूसी विभाग की धपनी दलता का परिचय देना चाहिए। काल का धब बीरता हुआ धब जन के प्रथम सपाहवी की तरफ था रहा है, उपवावियों को बह बयें गांठ धबसत तबकाहापी, उनके कोर क्र रही से पुर्ब सरकार को विष दनत तोड देने चाहिए। जो इश्के हुके निर क्रिरे रहेंगे उनके निपटना फिर और भी धाराग हो जायेगा। इसलिए प्रजा के हित में धब प्रधानमन्त्री को राबदण्ड हाथ में लेना ही होगा, अन्यथा हालत और भी गरीन होती बायेगी।

—बसवारा सुबासु

श्रीर राधास्वामी को प्रह्लादात्म्य नहीं
 करना था। जो फिर अन्तर्गत में निहित निहित
 हो के सब मुक्ति देता है। अतः
 उपाहारु पातित्य में हृदयारी के सब काम
 हो सकता है। ज्योति दामोदर की बना
 होती की बलिषा ज्योति दे के भवत कर के
 निरु ग्रहणांगी हूय होय पिता पत्नके
 लो अंगोन्मात्र करके देव के आचार प
 रतो आरत की पुत्र अवासी श्रीराधक
 का अन्तर्गत विद्या। तुलसीदास श्रीरूद्र
 के भक्त को लम्बन पितृवः। श्रीराधारी
 स्मृत्य शक्ति का एक उपाहारु देता हू।
 आने १० १९९ विद्या है कि मुखादारी
 के लम्बन आध्यात्म कर्मोनामाका वासिक
 वास मुक्ति की विद्या। — भुक्तका
 की रत्नपुत्री पद ऐति अन्तर्गत व्यक्तियुक्त हू।
 परमपुत्र मनु मुखा, ज्योत्स्ना कोशिका
 की बलस बल के राधारीविनि विरो-
 दित पाशकम् — पुत्र भावना के
 उत्पन्नक पद पुत्रीवा बलसक शस्त्रद्वी
 की अन्तर्गत की विद्याभावा मुक्ति के लोकी
 है। श्रीरूद्र के अन्तर्गत पितृवः में आर
 फिर निहित है। मुक्ति निमित्त के मुखा
 काव्यार अन्तर्गतका मुक्ति की विद्या का
 पुत्रात्मक कन्दापुत्र है। लम्बन मु
 के बलसक श्रीरूद्र का सब काम कोम विद्या
 हूय है। लम्बनशस्त्रो की प्रह्लादात्म्य बने
 श्रीरूद्रात्म्य की की अन्तर्गत की

धीरे बिनकी यहूय करना चाहिए वा यह प्रहृषण हो मी। फिर दुखदा न हो तो धीर क्या हो?

एक पुत्र कहने लगा स्त्री पुत्र की सहाय का विषय पास हा जाता चाहिए कि जब स्त्री पुत्र पुत्र लभ पड़े तो भासप मे एक धुरे को त्याग सकीं। मैं नहा सोचती तो रही। विधान मे कुछ महति होनी चाहिए। पुत्र मे तो धनपड़ ही पनेले। ससारा मे देखी तो एक स्त्री पुत्र का विवाह हो गया। यह विवाह जीवन भर का सम्बन्ध होता है। मेक सभान धीर कोई धर्मपत्नी है। पर-ए चलो विमले की पहाड़ी पर। वहा धात्र एक पर न जो स्त्री है कल नही दूखरे के घर है। उनके वहा कोई एसा कानून नही, परन्तु पुत्र बाहरे हो कानून बनवाया। पुत्र तो बाही कपडे है। कल कहिये कानून हुना बाहिए फिर पटना न हो। तो बाई! जब भी तो कोई स्वामी मे परदा नही। क्या कहने विना कोई कानून है? पुत्र मे से भी कई रिस्का परदा नही करती। ये खब बाते न सुने? कहा है।

मेक सबन स्वामी यमन।
मज्जुन सबन मज्जुन वनम न।

सबक के घर जब स्वामी का धाय बन होता है तो सब धमयन दयन होकर बनन हो जाते हैं। सुनो एक सत् अपने मुसीब के घर बना जाता है। मुसीब की बुली का कोई डिकाना होता है। धामेवार धरती के घर मासिक मेक के घर जाते तो धरती की धर मेक की बुली का डिकाना नही होता परमात्मा सब का स्वामी है धीर हय सब उस के सेवक। जब स्वामी परमात्मा सब जीवन्ता के घर जाता है उस समय सब धमयन दूर हो जाते हैं धीर मयम हो जाता है। इसलिए परमात्मा का चिन्तन करा। दुरे कामो को छोडो।

मेरे माई! यदि भाष अपने धायको संभालना चाहते हैं तो सब प्रहृषण करो। बन हा नही ये विमला है वहा बस है धीर कही ये नही भिन्न सकता। धायकल सब जगह विजयी की क्षणिक का सभावर हो रहते है, पर घर मे सत्का सम्पत्कार हो है। जिसका सम्बन्ध विजयी मे दूध गया, सब धायरा हो धमयेरा है। धायन को विजयी का सम्पत्कार परमात्मा से ही विमला है उसको जानन धीर मानने है की उसका कामन हो जाता है।

परमात्मा धर्ममा है क्या नही, यह कथन नही है। इस सुविट की उत्पत्ति धीर इहा। पायन विमले कीमती है मता बस के जन्मा हो सकता है? कीं कोई दूध नुस कर सकता है? विजयी माया मे पुत्र होनी, उत्तरी ही क्षति होरो। देखो! अमर इकनी कोटी निकल भाये हो घर के स्थान पर दो रीते मिले। इही इही प्रहृषण दुखनी, चमनी, उदनी, रूपे मे की कीमती-कीमती धायन होता। परमा

धीरा कोटा निकल भाये तो सँकडी वं की क्षति हो जाये। यथय नुस की माया मे मेव कुछ धायक नही होता। जैसे धाय मकी यतु को देखकर बडी नही हो जाती धीर कोटी वस्तु को देखकर छोटी नही होती इही प्रहृषण पुत्र को माया मे भी नैव नही पड़ता। परमात्मा को बहुत बडा है यदि यह नुस बाय ता उसका कार्य-सम्पहार मे बहुत बडी सहायक पड़ जाय परन्तु ऐसा नही हो सकता है।

ईश्वरभाय मे धर्मजी के एक बड विधान व। विधान हा बाई काई धीर सतना का हुल सबको बरा रह है। विधान भी सत न का हुल नही देख सकता। वहा रिवाज है कि कन्या का विवाह तब हो रहा है, जब उसके पिता व पास बाय धाय धारा सपा दहेज मे देने का हा। वहा धाय धारवाय है जिनका विवाह नही होता। कायम जब किमी के पास इतना रमया विवाह मे दन क लिए हा तब भी वह विव हो करे। परन्तु वहा कयोग इस रम को नही दहते, ये जानते है कि यह प्रथा बुरी है किन्तु फिर भी नही हटते। सब को उस विधान का एक कन्या मुलमाम हो गई। जब उसके मुल समान हाव का कारण मुला ना उरने उत्तर दिना कि मैंने अपने मुला पिता को सुझ दिया उनके पिता बाय हज्जार दो प्रम की मे धाय मेरा विवाह नही कर सकते व। मैं न पुत्रमाम मे विवाह कर लिया धीर उन्हें पुत्रे कुछ भी नही देना पडा। व हेम वह विव हो पड़े। धायन के घर के धायने ऐसे कल बक जैम निकम्मे रिवाजो को बाहर धकी कर सकते, यह क्षमकी नुस है। जब उनकी जाति से कोई बसा भी जाये तो वह उसे बायस जाने का प्रम की जाये। इहीलिए सत्कल एक एक विधान कहता है कि धायनो धीर नैव का वास धाङ्कन की कुछ क्षम नुस ही रहते हैं। परन्तु कौन? धर्मियावान् धायन व जो धायन पड़े विवेक का अनुकरण नही कर।

धय देखो! एक रोमी है उसे बर जोर से उबर चडा है। ह मे बापा अमरा कुल पुत्रमे विमला को क्षीवी धायि सब कुल काट के नीचे रहते। क्या व धीर-विवाह काट के नीचे या सतके पास रहत से उसका उबर उतरा जायेगा? कदापि नहीं। मेरे माई! उबर तब ही उतरगा जब उसे कोई धीरविध विचार्य जायेगा। जैसे कदापि नही उतरता। इहीलिए धायन को निम्न होकर पड़े। क्षी कल्याण हो सकेगा। जिस ससारा मे मातु प्रम धीर पितृ स्नेह न हो वही उस ससारा मे भी कल्याण हो सकता है? परमात्मा सब को ही बरा मे रहने बाते हैं। तनिक धायन तो देखो!

ज्ञान धीर प्रसाय है धीरक्रिया धीर।
ज्ञान धर्मकल विधान के लिए धायन का
ज्ञान धर्मकल विधान के लिए धायन का
कारके धरती को ज्ञान प्रम है। जैसे धायन

एक रोमी को पकड़ती है परन्तु एव नही मे सकती। वरन तो न्यायकीया (बन्ध) ही देया। मुक्ति का काम पकडना है न्यायकीया का सम्बन्ध देना। क्या कभी कोई मजिस्ट्रेट भी स्वय पकडकर पितो की लम्ब दे सकता है? कदापि नहीं। इसी प्रकार विधा का काम है बना देना किन्तु न्यायन का पकडकरा करना धायनिक बन्ध के क्षणीन है।

जैवम लोग धायकल वन मी धीर धीर धरती को जेते हैं। मैं धर्मन के वा कने उत्पत्ति हुकानी पर धर्मनमर नीकन नमे हात हैं। ज्ञानो! कीरल कभी धम्की नमे है। धायनक पकडना उब गई कि वहाई हो गई नम पितर बरा वा? योग धायनी धायनी हकाने उब करके उतरन लम मर। यह तो है धायकल के रीत लोभी की धयवसा। एक रीतमे के घर जोर दया उत्पत्ति मजिस्ट्रेट का नैमर बना दिया। देखा कि मेरी क्षी चीर कन्या को रमि है धीर एक धयनन धायनी पास बना है। परन्तु पकडना तो नैमर वा काय कने। पकडने के लिए उब बन दिया गया है। यदि उसमे बन धीर सतस हो तो कहे— है स्त्री। वी उठ धीर साहस कर। धीर धाय भी साहस करे तब ता वह उय धायरे मयम को बाहर निकाले देया। परन्तु यदि वह सब उसमे न धाये धीर वह धीर को देखकर फिर रमि होकर वा बाये तो धीर सतस बायपा कि यह कायरे है, बायकर भी हो गया है। मेरा कर ही क्या सता? सब निर्धनस से धयमारी तो मा धीर को कुछ भी उसे निमला मे बायेगा।

प्रकाय न तो उसे क्या दिया। परन्तु धीर पकडना उसका काम नही उसका काम ता उस का कल है। धायनिक बल परमात्मा की उब बाते से पिये खरता है। उम तो हम नुस मय। परमन्वर भी उपा सना हमने छोड दी। बात समक न महा धायी।

धय-बा! इतिहास का पडे तो जान होता है कि विदेशियो न इस से" पर धायकल कयी विधियो। महदुद रज्जववा को इस दवा मे सज्जता दन बाता को नहा था। वह माय भी नही जानता था। बुद्धि नही आना। फिर न न कथना है। हमार धायनिक न न कुल हो युका था। सोननाय के मन्दिर पर जब मधुसूदन न धायसल किया। पन स हज्जार मयकुल इसलिये तैयार वैठ मे पिये पुजारी अर कहे कि मूलि को बाधायो तो फिर नहा मूलि की रक्षा मे धायने जान भी कने न बना पडे मूलि को बय व बाधायो। किन्तु पुजारी कहते के कि तुम्हें कुछ करने को धायकलना परमात्मा सय उय पर धाय बरसावेना धायन बरसाया धीर वह सन् को बनाकर अस कर देवा। उमर मधुसूदन मे धायनी फोब के कहा, 'धीरो! नौबतना।' वुस सात धाड को नौबतना को। कन के नाम वर विमल

करी। रस के नाम पर विमल करो। विमल युवा के हुकरा कोई नही युवा धीर यमन न कहा है। कायम न वनो। तेरीकने मे उत्तर दिया मय बायमे किन्तु युवा के नाम से नही हटते। धय उस मन्दिर वा पता भी नही। केवल कुछ छोटी क्षी जगह न वह मन्दिर बना हुआ है। परन्तु उस समय उस मन्दिर क तान नौ सौ पुजारी के यदि वे साहम करते तो क्या मन्द कुनकर हो सकता था? कदापि नही।

यह सब कुछ व मा मा क नाम मने म मगा। पुन कहिये कि कायम वा को म भी मानत है। जैसे मानत हो पर मा बा की पुत्रा मे न रस सगमे न कुछ जाया न कुछ पडेगा। यह दन क पास बाधायो ता लोग उबर पायी व न के लिए ये बाधायो। महाधीर के धाय जागमे तो एक दो ॥१० तो मन्दा देख धायो यदि साय उठ न ये बाधो तो तीमगी वार पुजारी कह देगा कि मन्दा तो उठन रोड बा जाते। परन्तु कभी यह भी नही किया कि हनुमान को ॥१० कुछ प्रसाय ही न पाये। उठुन की क महा जाया तो भाग के लिए कुछ न मुद ल जाना हो पसवा। परन्तु परमात्मा के पास? वहा तो धायको अपने साथ कुछ भी नही ले जाना पडेगा। केवल बरवाबर वा बडी प्रमाण पडता है। बरवाबर का निमल पुत्रमे धयबारे मे पडा है। जो विमल कल बाता है उसे सबबारे के निमल स निमला जाता है। मलिन रज्जववा के साथ निमले के लिए बरवाबर का दवा रज्जववा मगा है। बिन भर के बायो मे बरवाबर का दर्जा नही हो सकता उठ रोटी काई धीर को यह सब प्रकाय तो पदमेकर का न मको। देखो उन्ना जब सोकर उता हा राता है। मता उन्ना जब मेम न नही है कथा पडे हो जाता है। माता की गोद मे उसे विमला सुख मिलता है? इस प्रकार परमात्मा की लोभ के जाकर सब सत्काय हो रही जाती है। न बरसा रहती है न धायन। उस धयवसा मे धन को धाय धन को एक धयवसा के धन को धाय धीर है परमात्मा सेरा नोता धयनक है। तेरी सक्ति का धयन नही। मनुष्य धयनो मुझ धीर ज्ञान के प्रहृषण तुने ब मन धीर मानने का बल करती है। दको! धमयेरा धीर को की क्षणिक क्षिमे मे है? बडी से बडी मज्जुममरा मे भी नही। (कमल)

आर्यसमाज रघुवरपुरा,
 श्री एमनसुख जी स्नातक की प्रका-
 शना में १९३८ ई. के अंत १० वें आर्य
 राज रघुवरपुरा, बली नं० ५ बांकी
 प, दिल्ली-२६ का वार्षिक निर्वाचन
 तिपूर्वक सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित
 अधिकारी चुने गये—
 राजा—धीरजी दोषरी देवी

‘ सत्यमेव जयते नामतम ।

आर्यसमाज रघुवरपुरा,
 श्री एमनसुख जी स्नातक की प्रका-
 शना में १९३८ ई. के अंत १० वें आर्य
 राज रघुवरपुरा, बली नं० ५ बांकी
 प, दिल्ली-२६ का वार्षिक निर्वाचन
 तिपूर्वक सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित
 अधिकारी चुने गये—
 राजा—धीरजी दोषरी देवी

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को श्रद्धांजलि

बान्नापुर (बाराबंकी) विश्व भारती
अनुसन्धान परिषद् में एक शोधकर्ता का
आवेषण किया गया जिसने ब्योड्ड
पत्रकार की बनारसी दास चतुर्वेदी के
निधन पर शोध प्रकाश करते हुए अनुसन्धान
महाविद्यालय बान्नापुर (हरिद्वार) के
मुख्याधिपति एच. सत्या के निवेदन का
कमिश्नर बिबेकी ने कहा कि श्री चतुर्वेदी
जी ने जो वैद्यकीय, डॉक्टरों की का
आवेषण बान्नापुर विश्व भारती एच. सत्या
रिखा का जो आदर्श प्रस्तुत किया वह
सदा अनुकरणीय रहेगा।

डा० बिबेकी ने कहा कि उनकी पवि
यता और आदर्शपरायण मन की सदा
देखना बेसी रहेगी।

डा० विष्णु मिश्र डा० चार्लेडु एवं
कमल कर्माचारियों ने उन्हें श्रद्धांजलि
दायित की। सत्य के दिवस महा
आस्था की भाँति ने लिए दो मिनट का
योग रखा गया।

प्रबन्धक प्रचार मन्त्री
विश्व भारती अनुसन्धान परिषद्
बान्नापुर (बाराबंकी)

अजिल्द सत्य के प्रचारार्थ
900/-
सेकंडा

अजिल्द 400/-
सेकंडा

मृत्यार्थ प्रकाश
घर घर पहुँचाये
भफेद कागज मुद्रित छपाई
शुद्ध संस्करण वितरण करने वालों के
23x36 - 16 मुद्रित 420 की दर
जम्मू अजिल्द 4/- अजिल्द 4/-
लिख प्रचारार्थ

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
455, 7वाँ बागलौ, दिल्ली-6 दूरभाष: 230360-233112

दार्ता की हर बीमारी का धरुव इलाज

एम डी एच
दंत मंजन
लोग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
अत्युत्तम औषधि

कले डाक्टर

दंत मंजन
लोग युक्त

अस नये पैकिंग
में उपलब्ध

महाशियां की हट्टी (मां०) लि०
इन्फार्मेशन एडिटर कीर्ति शर्मा आई दिल्ली 5 फोन 639009-5

महलों की सुख
गुरु की पुण्य
ठका माँ पानी
लज्जा
दात मंज

लोकनायक श्रीकृष्ण पर सचित्र ट्रेक

विस्मयी ४ वही (सचित्र) महान
राजनीतिज्ञ कमजोरी तथा मोटा का
उपस्थिति की कृष्ण के प्रकट प्रयोग पर
१९ युद्धीय सचित्र ट्रेक प्रकाशन का
निष्कर्ष वाला रामकर्म दानाजबाने
बर्माई ट्रस्ट बना शावर ने किया है।
ट्रस्ट के अध्यक्ष व धारा नेता श्री रामकर्म
बोस ने बताया, सचित्र तथा ऐतिहासिक
चटनाओं पर आधारित इस ट्रेक ने व
मु। पुष्प और लोकनायक होने। कम से
मुक्त पयल सक्रियता जीवन शक्तियों ने
उनकी कुशल व्यवस्था युवा नेता क्रांति
कारी बुद्धात्मा धारण किए एक पलीकन
कूटनीतिज्ञ तथा वैदिक संस्कृति का
नामसक रखा है।

समुद्र परानु प्रभावशाली चित्र मुद्रिका
के लेखक एवं रचनाकार श्री चन्द्रमोहन
धाय के अनुसार युवा वय के उपलब्ध ने
के। मर के मुक्त मुद्रितियों के लिए यह
प्रणाश्रव होनी। युवा पत्रकार तथा और

समुद्र (दैनिक साप्ताहिक) के प्रधान सम्पादक
आमिन मरे द सोनर ही इसे हथारों की
भाषा में प्रकाशित कर वाकी पीकी को
समर्पित कर।

चन्द्रमोहन धाय

वैद सचित्र के 10 व धाय मुक्त परियत

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय का कुलपति कौन हो ?

—प्र० सत्यवीर विद्यालकार

रोहता १६ मई (किरातपुर धाय)
समाचार पत्रों ने प्रतिदिन महर्षि दयानन्द
विश्वविद्यालय के नए कुलपति के सम्बन्ध
में कई मातों की खोजें की हैं।
हरियाणा सरकार की हथारा यह समाचार
है कि इस विश्वविद्यालय का कुलपति
किसी ऐसे शिक्षा वासी की नियुक्त
किया जाये जो महर्षि दयानन्द के
विद्यालयों का नाता हो जिसने कि विश्व
विद्यालय की रूप रचना का उद्देश्य पूरा
हो सके।

यु। नामक विश्वविद्यालय अनुसन्धान
का कुलपति अनुसन्धान के शिक्षकों का
नत तथा सत्य विश्वविद्यालय का
कुलपति 1 जून के सिद्ध हो का ज्ञात
भाषा जाना रचना में नतीजा विश्वास
में जो यह पत्रकार करना चाहित।

समय में मैं धारा प्रतिनिधि
समाचार पत्र का मसूदा के न ने
हरियाणा के 1 न 7 भाषा के
मसूदा के 1

चन्द्रमोहन धाय



उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons
Paris Beauty
पेरिस ब्यूटी
गोवर
सन्स

ब्रा पेंटी ब्रिनियान अन्डरवियर व बेबी पेंटी का

पेरिस ब्यूटी सैन्स कापेरिशन

265 17/2 बीकनपुर अजमेर राजस्थान
करोल बाग नई दिल्ली 110004 C.
दूरभाष 587224 574200 582836

आर्य जगत् की शान
२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन
नेत्र चिकित्सालय
 (अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)
के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि श्राय ऊर अधिनियम जी० ८० के
 अन्तर्गत कर मुक्त होगी।

सारा हान बैंक/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मश्री, माना चन्लनदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,
 सी०-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
 अंकित किए जाएंगे।

निचे एक

राजगोपाल आलवानी	सूर्यदेव	महाशय वर्कमान	योगप्रकाश आर्य
सरलक चिकित्सालय	प्रधान दिल्ली	प्रधान	मन्त्री
एक प्रधान डा० डा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महाशय कुन्तीलाल
प्रति० सभा	सभा	सभा	केरि० हु०

सौजन्य से महाशियाँ नी हट्टी प्रा० लिमिटेड ६/४४ भोतिनगर,
 औद्योगिक क्षेत्र नई दिल्ली-११००१

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक
हर सप्ताह पढ़ते रहिए

- ☐ क्या आप ऋषि, मुनि, तपस्वी, योगियों की धर्मत वासी पढ़ना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप वेद के पवित्र ज्ञान की सरल एवं मधुर शब्दों में जानकारी चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप उपनिषद्, गीता, रामायण, ब्राह्मणधर्म का आध्यात्मिक सन्देश स्वयं सुनना और अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप अपने शूरवीर एवं महापुरुषों की शौर्य गाथाएँ जानना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप महर्षि व्यासजी की वैचारिक क्रांति से आत्मचेतना जागृत करना चाहते हैं ?

यदि हाँ तो आइये आर्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाएँ।

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए। साथ ही वर्ष में चार अनुपम भव्य विशेषक भी प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये, आजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान—

आर्यसन्देश साप्ताहिक

१५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियाँ

सेवन करें

The advertisement for Gurukul Kangri Pharmacy is presented in a hexagonal grid layout. At the top, the words 'उपहार' (Gift) are written in a decorative font. The grid contains several product images and descriptions:

- गुरुकुल चाय** (Gurukul Tea): A box of tea with the text 'आर्य १५०' and 'उत्तम स्वास्थ्य के लिए'.
- भीमसेनी सुरमा** (Bhimseeni Surma): A small box of eye medicine with the text 'आर्य १५०' and 'उत्तम स्वास्थ्य के लिए'.
- पायोकिम** (Payokim): A bottle of medicine with the text 'आर्य १५०' and 'उत्तम स्वास्थ्य के लिए'.
- औषध** (Medicine): A small box of medicine with the text 'आर्य १५०' and 'उत्तम स्वास्थ्य के लिए'.

At the bottom of the grid, the text 'गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी' (Gurukul Kangri Pharmacy) is written in a large, bold font, followed by 'हरिद्वार' (Haridwar) in a smaller font.

शाखा कार्यालय—६३, माली राजा केदारनाथ,
 फोन : २६६८३८ चाबडो बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ के लिए डा० वर्कमान द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
 दैनिक वेद, मसी नं० १७, भौतलनगर, दिल्ली-११ मे मुद्रित रवि० नं० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक

ओरम

पुस्तकालय
६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००

कृष्णजी विश्वमार्ग

मूल्य एक अक्षि १० पैसे वर्ष १ अक्ष २० पैसेवार २६ मई, १९३६ आय सप्ताह १९३०=१९३०=५ अक्ष २०=५ सप्ताहमास—१९१

पंजाब के हिन्दू नेता प्रधानमंत्री श्री गांधी से मिले श्री शालवाले ने पंजाब की स्थिति पर जापन प्रस्तुत किया

पंजाब के हिन्दू नेताओं ने प्रधान सर्वदेशिक धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में प्रधानमंत्री श्री राजीव गान्धी से भेंट की और उन्हें पंजाब की परिस्थितियों के संबंध में एक जापन दिया। प्रधानमंत्री जी ने शिष्टमण्डल के साथ धर्मोत्तम लक्ष्मी वातपीठ में ध्यानासन दिया कि पंजाब में समस्या के समाधान में पंजाब के श्रमसंस्थकों के हितों और देश के बहलत की आवश्यकता का ध्यान धार और सम्मान किया जायेगा। उन्होंने यह भी प्रकट किया कि पंजाब में उपवासियों के साथ कोई से लोभ है सभी विपक्ष उनके साथ नहीं है।

शिष्टमण्डल ने निम्न जापन प्रधानमंत्री जी को प्रस्तुत किया—
१. पंजाब के प्रभावशाली नेताओं की शिष्टमण्डल खाद्य फंडेशन से प्राप्त होने वाली योगदानों की जाच के धार्मिक के उपरान्त उपवासियों के हितों के माफ़ी बह है। उन्होंने इसे अपनी विषय समन्वय है जिससे वातावरण लाभकारी गया है।

२. श्री धर्मसिंह की पंजाब में उनके उपरान्त उनकी की श्रमसंसार की कुछ हदों, वह केवल उपवासियों और धर्मसिंहों की कुछ करने का शक है। जिसका परिणाम श्रमसंस्थकों के लिए शान्तिपूर्ण सिद्ध हुआ।

३. दिल्ली में हाल ही में उपवासियों ने जो हिंसात्मक विरोध किए हैं, इसके पीछे किसी विशेषी धार्मिक हाथ हो सकता है। इसके लिए

सरकार को विशेष नीति निर्धारित करनी चाहिए।

४ पंजाब में पुलिस तथा प्रशासन के विषयों का बहुत है, इसलिए बहा के शिष्टमण्डल के साथ कोई न्याय नहीं हो सकता है। इसलिए पंजाब के श्रम समुदाय के लोगों को भी प्रशासन तथा पुलिस में भ्रष्टाचार प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।

५ लोभोग्रस्त रहित सभी प्रभावशाली नेता प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी की श्रद्धा की निम्न करने की भी तैयार नहीं हैं इसलिए लोभोग्रस्त ने सतबलसिंह और नेपथ्यसिंह के घर जाकर उन्हें भद्रावलि देते हुए सहीपों की सजा दी है।

६ भूलपूर्व विवेक सभी सरकार स्वस्थसिंह ने लखन से प्रकाशित एक कथन में शोक कहा है कि शिष्टमण्डल वातावरण धर्मोत्तम नहीं था। उसने

५ व्यक्ति मरणात् तो पुलिस ने ६५ मार दिये। उनका यह कहना है कि धानपुर प्रस्ताव प्रकटावानी नहीं है तथा प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति में गहरे मतभेद हैं जो राष्ट्र के लिए घातक हैं।

७ चण्डीगढ़ फाजिल्का और बबोहर के विषय में वहा की जनता की राय लेकर निर्णय किया जाये। धर्मसिंहों का निर्णय बहा की जनता पर न बोपा जाये।

८ उपवासियों के विरुद्ध सक्ती से निपटने के लिए सरकार कोई ठोस कानून बनाने तक देश के जन जीवन और सम्पत्ति की रक्षा हो सके।

९ यदि सरकार ने कमजोर नीति धर्मनिराक धर्मसिंहों को प्रखन करने की नीति का परित्याग न किया तो देश का बहुमत सरकार को

नर्मन न देगा बल्कि कुलकर विरोध करेगा।

१० वर्तमान नीति में परिवर्तन करके पंजाब के राज्यपाल श्री धर्मसिंह के स्थान पर किसी योग्य व्यक्ति को आसीन किया जाये।
११ पंजाब के आसने में श्री वातपीठ, उसमें पंजाब के सभी धार्मिक व राजनैतिक समुदायों व स्वभावों के प्रतिनिधियों की भी सम्मिलित किया जाये।

शिष्टमण्डल के सदस्यों के नाम—

१ श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान सर्वदेशिक धर्म प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

२ श्री गोपीचन्द्र भाटिया, प्रधान दुर्गना मंदिर, अमृतसर

३ श्री रामलुभावा प्रभाकर, मनी दुर्गना मंदिर, अमृतसर

४ श्री जगदीश तामरी, प्रधान हिन्दू विवेक पंजाब

५ श्री सत्यनन्द मुजान, उप-प्रधान सर्वदेशिक सभा, लुधियाना

६ श्री किशन कुमार, धर्म-समाज अटिन्दा

७ श्री प्रकाशचन्द्र मेहरा, प्रधान फास्की मन्दिर अमृतसर

८ श्री मोलानाज लिलाकरी, धर्मसमाज धर्मनिराक अमृतसर

९ श्री नन्दकिशोर, मनी धर्म केन्द्रीय सभा अमृतसर

१० श्री एस० के० सप्रवाल एन-वोकेट, जालन्धर

११ श्री तुलसीदास जैनानी, प्रधान व्यापार मण्डल, लुधियाना (विष पृष्ठ १२ पर)

पंजाब के आर्य नेता की दुःखद मृत्यु : शोक संवेदना

धर्मसंस्थान शाखा अष्टानन्द धर्मसंस्थान के पूर्व प्रधान सैकरीय धर्म नेता श्री धर्मप्रकाश ने की धर्मसंस्थान मृत्यु पर धर्मसंस्थान शीमान हाल में बहु श्रद्धा की सभा कुछ और शोक व्यक्त करती है।

श्री धर्मप्रकाश की पंजाब के उम कीर समुत्तों ने से से की बड़े विद्वान् और देश तथा समाज के लिए बहा से बहा बलिदान करने के लिए तैयार रहा करते थे।

यह सभा पंजाब सरकार ने उन

की संविधान मृत्यु को धर्मसंस्थान जांच करने की मान करती है। वह सभा धर्मसंस्थान करती है कि धर्मप्रकाश देश के विभवत हीने से जो स्थान लावी हो गया है उल्लाख करना निरात धर्मसंस्थान है।

वह सभा परम-पिता परमात्मा से उम्मीद भाला की शांति तथा दुःखी शान्तिपूर्ण जनों की धर्म प्रदान करने की श्रद्धा करती है।

— मनी
सूचक मृत्यु



सिखों के अपमान का कारण अकाली दल

सरदार सत्येन्द्रपाल सिंह



पंजाब के अकाली नेता श्रीर लन्दन में रह रहे बहबोले प्रसन्नारी शेर जगजीत सिंह चौहान तो सारी ये कहते चले आ रहे हैं कि भारत में सिख द्वितीय श्रेणी के नागरिक की हैसियत रखते हैं, किन्तु अब सुखसन्तुष्टि जैसे पत्रकार श्रीर महोपसिंह जैसे बुद्धिजीवी भी यह प्रश्न कर रहे हैं कि भारत में सिख आत्यसम्मान से कैसे रहें। पर क्या सचमुच सिखों के साथ भेदभाव करता जा रहा है।

अकाली दल ने मुस्लिम लीग की तरह हुंशियां भी धर्म का राजनीतिक चतरे के रूप में इस्तेमाल किया है और वह जो पंजाब के राजनीतिक परिदृश्य में। पंजाब के बाहर अकालियों ने न तो कभी आक्रा, न ही कहीं उन भी जड़ रही है। इसके बावजूद ऐसे प्रसन्नारी बहुत कम धायें, जब वे पंजाब में सत्ता में रह रहे हों। पंजाब में गाँवों का बेतहर जाट तबका ही अकाली दल से जुड़ा रहा है और दल की बागडोर भी सम्पन्न जाट प्रपतियों के हाथ में रही है। सहरी पड़ने-लबे, मेर जाट सिकों का सहनुपुति अकाली दल नहीं प्राप्त कर सका। पंजाब के बाहर विभिन्न प्रान्तों में बसे बाबे सिल आमतौर पर काश्त के समर्थक रहे हैं। धायर वहा बजह है कि हिमाया, हिमाबल के प्रभाव उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल तक की विधानसभाओं में काश्त टिकत पर चुने गये सिल विधायक दिखाई पड़ जाते हैं। धाय का कई प्रान्तों में सिल मजा है।

इससे साफ तौर पर जो बांड उभर कर सामने आता है, वह यह है कि अकाली दल कभी सिकों का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था नहीं रही। काश्त पर पंजाब के बाहर के सिकों ने तो इसे कभी गम्भीरता से नहीं लिया।

स्वर्ण मन्दिर में आप्रवेशन ग्नु स्टार के पहले तक अकाली नेता साफ तौर पर करते थे कि वे पंजाब के हका की सवाई लड़ रहे हैं। हाँ पर के पोखे सिल राज्य का नियक जकर तयार किया गया था। पर स्वर्ण मन्दिर में सेना के प्रवेश के बाद से अकालियों की यह कहने का सुनहरा प्रसन्नार मिल गया कि सिल कौम पर हमला किया गया है, सिल भारत में प्रसुस्थित हैं, प्राधि-प्राधि। एक आत्मरक्षक उद्देश्य का उठा और वह सिल भी अकालियों की बाता की सवाई की परखने लगा, जिसने प्रपनी सारी जिन्यदी में कभी स्वर्ण मन्दिर के दर्शन तक नहीं किये। पंजाब का माहौल काफी हद तक अकालियों के पक्ष में हो गया। पंजाब के बाहर भा सिकों में सुगुगा-हट की। श्रीमती गाँधी की नृच हत्या के पश्चात् स्थिति में श्रीर फर्क मया।

इस सम्पन्न में महोपसिंह से एक सवाल पुछा जा सकता है। कि मेरे बंसा सिल, जो उत्तर प्रदेश में पदा हुषा, पदा-लिखा, बदा हुषा और जो कहीं भी पंजाब के किसी भी शहर, कले, गाँव में गया तक नहीं, वह कैसे गान से कि पंजाब की जमीन पर उसके हित प्रकटन रहे है ? सवाल यह ही है कि सिल धर्म के नाम पर अकाली पंजाब को बन्तूक की नोक पर लम्क बनाए हुए है, वह पंजाब में किस दौरे से गुजर रहा है ? पंजाब के सखों में बाल कटाने, नशा कर, गुछारे न जाने, यहाँ तक कि पंजाब से लायन कर धन्य प्रशंसा व बिबधी में बसे की प्रवृत्तियों तेजी से बढ़ती जा रही है। पंजाब में ऐसे सखों की कमी नहीं जो न तो बाने इतिहास पर सखों को शिक्षाओं के बारे में जानते हैं, और न प्रपनी भाषा लिल-पड सकते हैं। पंजाब के बाहर रहने वाले सिल अकालियों को किस आधार पर सम-ल-प ? सिल पंजाब आने का आत्मन्यर देने के श्रीर क्या पर सकते हैं। —पंजाब से बाहर के सिकों का। फिर यदि कभी अत्यसन्न बात सिल उज के रूप में सम्पन्न हो भी गईता क्या माउपी कि पंजाब जाने वाले सखों का यही हृन् नहीं होगा, जो पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों का प्या है ?

इस बात की वास्तविकता जो बाज करना भी जरूर हो गया है कि

क्या भारत में सिकों के साथ भेदभाव करता जाता रहा है। इन देश में सिकों को एक महान् देशभक्त कौम का दर्जा दिया गया था और हर जगह उन्हें सम्मान की निगाह से देखा जाता था। पंजाब के बाहर सिल जहाँ भी जाकर बसे, वहाँ के स्थानीय समाज में उन्हें हृदयमग्न कर लिया। इसी बजह से उनके उद्योग और व्यापार भी चल निकले तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिली। लोग एक दूसरे के नुल-नुल, धन्यसरो-खोहारों में लगे रहते। यदि इन सब बातों की एक तरफ रल दिया जाये तो भी महोपसिंह, स्वामी विवेकानन्द, डा० राधाकृष्णन, हुगारप्रसाद द्विवेदी जैसे धनिक विद्वानों, दार्शनिकों की कही व लिखी बातों को कैसे फुलता सकते हैं, जिनमें सिकों की सखी प्रशंसा के भरने पूट पड़ते हैं। स्वयं महोपसिंह ही तो सों कि हिन्दी कयाकार के रूप में उन्हें इतनी प्रतिष्ठा क्या प्रभावता ही मिल गई।

मिथो की बैमिक्तक व सामाजिक प्रतिष्ठा व मान्यता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि नियमों व कानूनों का सखों से पालन कगने हेतु प्रवेश सरकारों सिल भाई ए एल व भाई पी एल अकालियों को प्रपने यहाँ बुलाते हेतु लातामिन रहते हैं। युने. याद था रहा है कि प्रयेठी में जब पहली बार राजीव गांधी सखीय उपकुमान लकने भाए तो उनके साथ पुलिस के प्रगरकाल के बजाय पाँच-छह छुट्ट-कट्टे सिल, जिनमें कुछ रिटायरमेंट की भी थे, साथ की तरह लगे हुए थे। मेरे प्रुक्ष पर उन्होंने बताया कि उन लोगों ने १९७७ में सत्ता से हटने के बाद श्रीमती गांधी की अग्रणी नि शुक्त स्वीकृष्ण सेवारें प्रमित की थीं, तथा १९८० तक उनके साथ रहे। अब जब राजीव गांधी राजनीति में भाए तो उन्होंने हमें ही साथ रलना पसन्न किया।

राजनीतिक तौर पर भी सिकों को सर्वे महत्त्व दिया जाता रहा है। सरदार बलदेव सिंह, मरार मजोठिया, हुकुमांसह, उज्जवलसिंह, स्वर्ण-सिंह, मुसद्दाल सिंह विल्लों से लेकर आनी जलसिंह तक धनिक नाम सिलन जा सकते हैं। विभिन्न प्रदेशों में भी राज्य स्तर पर धनिक सिल राजनीतिक रूप से सक्रिय व पदाहीन हैं। यदि इसे ही सिकों के साथ राजनीतिक स्तर पर धन्याय माना जा सकता है कि अकाली दल कभी उभर कर सामने न आ सका, तो निष्पक्ष हो हमें चुप रहना होगा।

यदि अमृतसर हरमन्दिर साहब में सेना की कार्यवाई की हो सम्पूर्ण सिल कौम का प्रपमान करने व चुनौती देने वाली घटना मान लिया जाए तो जो प्रपमान, जो धम, धाज देल के काने-काने में बंटा सिल महत्सुल रह रहा है, उसके लिए जिम्मेदार कौन है ? वह अकालियों और उनकी चलत नीतियों को क्यों न कसे ? वह सिकों की सामाजिक, राजनीतिक व बैम-लितक स्थिति के इस अवमुलन के लिए जिम्मेदार है।

इसी आधार पर धाज बहुतेरे सिल आत्मन्युर साहब प्रस्ताव को मूल रूप से प्रस्वीकार करने में तनिक भी हिचकिचाहट क्यों दिखारे, जिसकी शुक्रात ही इस फलने से होती है कि अकाली दल सिकों की सर्वोच्च प्रति-निधि संस्था है।

महोपसिंह जैसे बुद्धिजीवीयों से मेरा प्रनुरोध है कि पंजाब समस्या को पंजाब समस्या ही रहने दे, सिल समस्या में न बलें। पंजाब समस्या जो पंजाब समस्या नहीं, अकाली समस्या है। आन्धेलन अकालियों का, मधि अकाली राजनीति के प्रनुल्ल, कभी नर्म, कभी गमं उपलव्धि प्रनुल्ल-लव्धि अकालियों की, सधर्म सत्ता का। जाम सिल को चाहे वह पंजाब में हो या पंजाब से बाहर, इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं है।

अकाली दल आम सिकों के हितों के रखत। कभी की नहीं रहे, इतना अवश्य हुमा कि वे सिल कौम के प्रपमान के कारण बन गए। किन्तु धर्म के नाम पर जोसी गई उनकी राजनीति का डुकान अधिक दिन तक चलने वाली नहीं।

(नवम्बर टाइम्स से साभार)

एव महर्षि स्वयन्मताः के प्रेमी भाव्य
 शरोः के प्रकाश विहाय शरीर स्वामी
 विज्ञानम् क तवा मे पतुषे ।
 उन्तोरे बह्मा भाव ग्रन्थो एव व्याकरण
 का ध्येयम् निषा महा भारत का शासना
 का ध्येयम् को शत्रवे ने पति भुवि तन
 मन निषा । स्वयन्मन भुष से विद्या
 सख मह्य विद्यायन् ध्यात्मिक व
 हीराते के शाव पात्रीय समाज मे व्याप्य
 प्रयत्नशला के मुख कारणो धर्मवर्षादा,
 कारशा धर्मवर्षादा एव कदा धर्मि
 कुटिरियो का दूर करते का दृढ सत्यम्
 शरीर प्रभाव लेते मे उदर प । उन्तोरे
 ध्यात्मवत् मे विलेख स भवतः के सुधुयो का
 भाव कर विभर और सामयिक उपाय
 प्रत्यक्ष विवे । ध्याय स्वायत्त व व्याप्यमान

महावीर 'नीर' विद्यालकार

ऐसे। सप्रगर्भीय सवसातान्तरो के आशय
दिए। वेदाश्वर सख्ख धम्यन वर स
दिए। राधा कृष्ण के विचारार्थ
सिद्धार्थों एव साधारण जन्मा को ज्ञान
के लिए एवसाप्रकाश कृष्ण-
धाम्यप्रकाश सकारार्थीय मोक्षसा-
निधि साधारणियन साधुसिद्धि-
माया क्यवहारानुता मासि प्रव धारी
माया (हिन्दु) के विधि। जन्ता जन्ता
राजा रज्जवारी के सीसा सख्य स्यासि
राज्यसि। राजसिद्धि स साधिक सुभार के
सिग साधुकी भी कृष्ण वार के विधि केसा
सिद्धिनी भी विम साधार की की कुरी
सिद्धि। सुभारकी भी सव वर निमस होकर
तक की कडोर कुरार वारकी। सी-

इस प्रकार आशय के क्यवसायी को
साधे वास्ते के लिए बन्दी के क्यवसायी
रुनी सखा को भीव राकी। जन्ता मे
साधारण जन्म की क्यवसायी बन्दी।
क्यव वर क्यवसायी के क्यव के
प्राप्त हुने की ज्ञान। क्यव मे ही क्यव
क्यव के क्यवसायी के क्यव के क्यव
क्यव के क्यवसायी के क्यव के क्यव

अधि के निर्दयों ने उपवास बाधसमाप्त
एक का विषुवद रेखा हट गयी।
का कृष्ण सखीको ह दसमा सोपानो
ने खुद गुना प्रसिदा कायम को
बाधे बढ़ाया। जेह का धमधम का
शिखर एक सख्त का प्रहार होये लगा।
१२ की एकान्त का बाध बाधमा
मिनी-सोपानो देवनागरी निजि को हट गये
समा। अनेक पाठन साथी, कामेको मुक्त
जमे। ह काम मुकुटो की स्वाध्या सोपानो
समा। सोको सोपानो हट गये। का नरति
वरन सखी होये लगा। समाय ने नम हो
गो। सोसूत का व्यापक प्रहार हुआ।
सखीको सखीको ने प्रसिदा बाधसमाप्त
समाय बढ़ दिया। सोपानो को नमिदासमा
ने सखीसमाप्त को सोपानो बढ़ा। हट गये।
ने विमुक्त कर निराधार प्रहार को
जगना को सोपानो सखी। बाधसमाप्त
प्रति लोक कर विमुक्त होये लगा। बाध
वाधम का प्रहार हुआ। सखी काजि को
"बाधा बाध एक जगम समाय होये
लगा। सखी सखीसमाप्त को सुखीसमाप्त
का निराधार सखीसमाप्त। बाधसमाप्त की
समाय को ने सखी सखीसमाप्त। सखी का
समाय प्रहार सखी सोपानो सखी। बाधसमाप्त
मिनाय को सखी होकर सखी सोपानो
सखीसमाप्त को सखीसमाप्त। सखीसमाप्त
हुआ। सखीसमाप्त ने सखी सखीसमाप्त
सखीसमाप्त सखीसमाप्त ने पाकिव
सखीसमाप्त ने सखीसमाप्त सखीसमाप्त

[illegible][illegible][illegible][illegible]

मानस से घाव डेर इस बात पर
कच्ची-रस से बिचार करना होगा कि हम
जातीय विचारों के धरातल के केशव हैं
समाज को ही लेते हैं समाज इतके धन
मल—और समाज बीड़ समाज सिन्धी
समाज हिंस समाज कल समाज समाज
इसहीं समाज धारि बिचार सन को का
जी समाजसे करते हैं क्यों राष्ट्र के
से मिलने धरुत समाज फिर विपरीत पिछाड़ी
से जाते जा रहे हैं । इसीलिए धारासमाज
के इस को नियम को व्याख्याकर का
मुनसलमान समाज के मुनसलमान
से कहा त कही हीन को छेडा है बिचार
राजा है कि ससार का नकार करना
इस समाज का मुनस उदेष है धर्मगत
धार्मिक धार्मिक धोर समाजिक
उन्मत्त करना ।”

धरत उपर्युक्त विवेचन के आधार
 पर कहा जा सकता है कि भारतीय
 समाज के ही नहीं अपितु मानव समाज
 के जायज हैं कार्यवाहक का महान
 योगदान रहा है। समाज के नवतरो परि-
 वेश में तो उसकी शीर भी महीली बाब-
 द्यवही है। कार्यवाहक मान्य समाज की
 व शक्ति के कार्य में क्या ही उद्यत रहा
 है—“मनुष्य वसिष्ठ जायत प्रायः
 वरागिणोऽपि न भवति मनुष्य वनो लही
 रूप में मनुष्य बनो, पुत्र बनो—कनो,
 जानो शीर मेष्टा को प्रायः करो।” यह
 हमारे भारतीय समाज के सिर्फ विषय
 कहकर छोड़ें।

महाराष्ट्रा प्रताप का जन्म सन् १९४० ई में हुआ था। वे महाराष्ट्रा उद्योगिक के ७३९५ दुध मे। उनकी शिक्षा-बीजा येका राखवा परम्परा के अनुसूचक रही। वे। बरस कब सेना बचाना बुझा तथा रात्र नाच प्रबन्ध की कुशलता उन्होंने नाचमग म ही पूर्ण रूप से प्राप्त कर ली। राणा उद्योगिक अपने कण्ठ दुध जबनम की बहुत प्यार करते थे। कभी की घ या उत्तराधिकारी घोषित करने का उन्होंने विरोध कर दिया। प्रताप सिंह भक्त थे, उन्होंने पिता के नियम का पालन भी विरोध नहीं किया। प्रताप को बाल्यकाल में सदा बड़ी बात बटकती रहती थी कि भारत भूमि विदे गिरी की सावता की हथकड़ी और बेदी में बंधी हुई है। वे स्वदेश को छायावा

किशोरमन्त्र-

प्रणवीर बालक प्रताप

प्रस्तावना-बलजोत शास्त्री

कराने की योजना में चित्तमणी रहते थे। उनके माता फालोके के रात्र बसाय-रात्र बाबाक प्रताप की पीठ पर सदा हाथ रखते थे। उन्हें बाबाका की कि ऐसा न हो कि प्रताप घन्टा घुर मे बन्धुमन्त्रों के शिकार हो जायें। प्रताप बड़ साहसी बालक थे। स्वतन्त्रता और नीरता के नाच उनके रग रग में बरे हुए थे। कभी कभी बालक प्रताप घोड़े की पीठ पर से

उतरकर बड़ी बड़ा और बाघर मे महाराणा कुम्भा के विजय स्तम्भ की परिक्रमा कर तथा येबाब की पवित्र वृत्ति मत्तक पर बाबाकर कहा करते थे कि मैंने नीर बजायी का कुप पाग किया है। मेरे रक्त मे महाराणा राणा का भोज प्रवाहित है। चित्तक के विजय स्तम्भ। मैं मुझे स्वतन्त्रता और मातृ भूमि भिला का वाषक नेकर कहता हूँ विजयास दिनाश हूँ कि

गुप्त सदा उन्नत और विद्योदिया नीरक के विजय प्रतीक बने रहलें। सन् १९४० अपने रक्त से मेरे रक्तें प्रारम्भित होकर बड़ लगे। बाबाक प्रताप के विजय सदा राणा राणा का वाषक रहता था। वे प्राय धराजालि सज्जित करते समय कहा करते थे कि मैं महाराणा मागा के बहुरे कायों की मयस राणा कहता। उनके रक्त सकल के सामने ध्वजक जैसे सज्जित की भी मुकता पड़ा। प्रणवीर प्रताप ने सारा जीवन मुठ किया पर सन् के सामने मुझे नही देश के गणनमुक्ति का वत लिया था। जिसकी मुठ पर प्रककर जैसा सन् की रोया का। हम ऐसे बहुरी के बचन हैं। अपनी मातृभूमि के प्रति प्राप के समाग नाव रखते। हम सदा यह वत लेते हैं।

तत्त्वमस्य-

जवानो, जवानो यूं ही न गंवाना !

प० बुद्धदेव विद्यालाल कार

मूर्ख और बुद्धिमान में बड़ा अन्तर होता है। मूर्ख धक्की बात को भी गुरा बना लेता है और बुद्धिमान डूरी चीज को भी धक्का बना मता है। बाबाक का अन्तर कहीं प्रयोग किया जाये तो दाँवों में लगा हुआ गुप्तराश को बाँर बाँर बना देता है। मयर मयस इन्ध के प्रयोग किया हुआ बड़ी कायस इन्ध उपर बना जाये तो बकरी मूत्रक को गुरा बना देता है। एक विमान गुप्तर मे घायल पर पड़ी हुई देवकी को देता, उसने अनुभव किया कि वो पानी को पकड़ चुकाया था आप बमकर चित्तना जबरनस्त बन बने बिना है। बुद्धिमान ने इस दाँव को धमकाया और इतना रोंकार कर दिया। मूर्ख ने पानी और बाब को इकट्ठा किया और हुक्का बनाकर डुपट्टा करता रहा और अपना समय और स्वास्थ्य खर्च कर रहा। मनुष्य पर भी एक समय आता है जब उसके सामने अपनी सत्यता अन्तर्गत का अन्तर आता है। बगानी सतानी बमकर धारी है जब वह मयसा हो तो कबे भार कर मयसा हो। देखा तो कहेगा, बेकले गही बगानी बा रही है। सीमा पेदा हो रही है। बमकराव न इसे बमकाया और साँवों को भी पीले बना दिया। लेकिन मूर्ख बड़ बहुरा रहा।

इस विश्व के दुकने हथार हुए। जो बड़ भारी को बड़ मिला।

अपनी बगानी का नाच कर देता है, मयसानी में ही बमकने का समय होता है लेकिन प्रताप का मयसानी मीन

ती ऐसी बगानी है जिसका निम बग नहीं देता, मैंने एक कानकर नीजबन को चिक्की कराया की सत सच मैं भी कहा कि कबो अपना मास कर रहा हो। कहते बग, पवित्र हो। आपने बना पी गही—येक सवा नाच मय का मया, मुक्की बमकले ने कभी पी है। पा सते तो ऐसा म बहुते। मैंन कहा पागे से बना होता है, कभी सवा सय मयस हो जाते हैं। मैंने कहा और हाथ ? तो कहते सवा कि होय रहता हो गही। मैंने कहा कि इससे बढकर और सवा मेमकुपी होनी कि मनुष्य पेरे सवा कर पायने होय हो द, बरे मया तो सव है कि हास कायम हो और फिर मया बडा रह।

मास गुपानी मालका बड़ी रहे निम पाव। (सुनिम मासक के सुबारी भाष सब से अधिक सारा पीते है।)

धर्ममनु की बाव रही है, सब रोते हैं। मुक्ता का बुल ह ब है कण्ठ। बते हैं। कहते हैं कि मुक्ता सवा कर रही हो, मुक्ता वो पवती है। कहते हैं कि मैंने गुप्त मुझे बह कर रहे हो कि सवा कर रही हो ? देखा प्रमाण देता निम मया है। मैं बमोतर न होके तो सवा कक ? कण्ठ कहते हैं कि मुक्ता गुप्त नाच कर गु बनिम की गुपी हो और नच सनिम और की मया है। को बं पर और पति की प्राय हुया है। बाबाक का सबसे बड़ा कर्त्तव्य बं और मयस की रक्षा के निम कर निजना है।

देरा मुक्त हो बमर ने मया है और तु रो रही है। मुक्ता की हाथ का बाता है। ककक अहुरा मयक कडा है। बह है वो

सुबारी। गुप्त बापने मग पडा है और होग कायम रहे जाते हैं। गह हासत तब पासी है जब मनुष्य नाम का सुबारी मे र जाय। बहुराशी बन। बहुराशी का मतलब है वो बडा मे निवास बने अपने वत की सीय की सन्माल कर गे। जह सीय ब्रह्मनी रसायन है सते बढकर और कोई रसायन गही। बाब तो सीय धरती रसायन की बीकरादिर इन्धेकन सय जाने मगते हैं। मुक्ता और निम ब। कहते हैं। बाब गुप्तराश के निम सुपों और निरस्तिक सयाय जाते हैं। होके और गमो पर सुपों और नासी मयायी जाता है। इस रहस्य को गुना लिया है कि धमकी बुद्धबुद्ध की और नासी होटे और गमो पर कहे बानी है। बाबा बाप को इब बाब का रहस्य की बमया है। होत बहुत नीमस हिक्का होते हैं। मया गुप्त की नासी उपरती है। मरीर मे गुप्त हा और उरका सीग। सीक हो तो होटे पर नासी गुप्त ब गुप्त बा बासी है। मरीर म गुप्त हो गह लपट आन गही बिना जाता। मकवी रक का बाडा प्रयत्न किया जाता है। धक्का मया धारपी हा। गुप्त देर पानी मे रहे तो गुप्त का सीरा बक कर होत नीम रव जाते हैं। ये गुप्त के करिये हैं, बरे अपने वत को सीरों को कायम रख कर तो बेको चित्तना मयान जाता है ? बगाने मे तो बाहिक सवा और फिर पकताया सवा रहता है लेकिन इसे कायम रख कर बेको चित्तना मयाने पाये।

य प कहते पवित्र की बरों वरसा हो रही है। इसे कायम रखने के निम को पला तो बगानो। वरसा गुप्त को बाप की बहुराशी मयसा होया और हुमेसा प्रभु की बाव रहती होयी, कहा जाता है कि प्रभु मयस और प्रभु सनिम को मुक्ता के नीय है। बाब रको मयस धारपे धारी से बाबत न बनाई तो मुक्ता मे कुछ नया है।

साबन का महीना है। बापों का टोकरा सामने पडा है। मनुष्य धाम गुप्त कर मुक्तीधरो को एक बासी में बना सवा

कर रख रहा है। मैंने गुप्ता मे बरो सजाई बा रही है ? कहते सवा मयसानी की मेट हापी। परे सीडा रत तो सीडान के निम और मुनिमया भगवान के निम। जब मरीर बाब का न रहेना बाब मयसानी की याद कराते। बगानी के बापों की तो मुने में मयसानी हास न धारपा। एक गह की मयाव किया जाता है कि प्रभु मयस मया कर दित तो मयसा गही, मयसा रहते गुप्त पैदा करे। बाबन और मयस का एक ही कायम है। मयस न। निरस्तिक सयाय जाते हैं। होके और गमो पर सुपों और नासी मयायी जाता है। इस रहस्य को गुना लिया है कि धमकी बुद्धबुद्ध की और नासी होटे और गमो पर कहे बानी है। बाबा बाप को इब बाब का रहस्य की बमया है। होत बहुत नीमस हिक्का होते हैं। मया गुप्त की नासी उपरती है। मरीर मे गुप्त हा और उरका सीग। सीक हो तो होटे पर नासी गुप्त ब गुप्त बा बासी है। मरीर म गुप्त हो गह लपट आन गही बिना जाता। मकवी रक का बाडा प्रयत्न किया जाता है। धक्का मया धारपी हा। गुप्त देर पानी मे रहे तो गुप्त का सीरा बक कर होत नीम रव जाते हैं। ये गुप्त के करिये हैं, बरे अपने वत को सीरों को कायम रख कर तो बेको चित्तना मयान जाता है ? बगाने मे तो बाहिक सवा और फिर पकताया सवा रहता है लेकिन इसे कायम रख कर बेको चित्तना मयाने पाये।

पहला मयस बह होता है बा मुक्ती हो। बाप कहते सवा मया गुप्ती हो बाब ? हा। बाब कहते मयसे उपरते बेते हैं। मया पिता जाविक है पर मे सव कुछ है किसी चीज की कमी गही काने की बड़ मिलाता है उर पेला है। मुक्ती सको हो। इस पर भी मुक्ती हो जायो। अपने निम गही गुपरी के गुप्त को मयसा गुप्त सयस की। अवर उपरते पास को बड़ गुप्ता धारये तो पकड़ उरते निमायो। कोई गुप्ती है तो सयका गुप्त बर करे। परेकरा करे। सव कुछ रखते हुए सवा का वत धारपा करे। सब से बड़ी ईश्वर की मयस गही है। निमों के सवा बाकर तो बेको, चित्तना मयान जाता है। गुनिमा मे चित्तने गुप्त और मयस है उनके तीन कायम हैं मयस स एम मयस है। बाब चित्तने के रहस्य को सोचो मे गुप्ता दिया है। हथार मुक्तीमें मे इसे बड़ सयका ना। निमाचिमो को गुनिमा के इन तीन प्रकार के गुप्ती की हुर कर के निम देतर करते हैं। हथारी रेंदिक चित्तना सन्ने रेंदिक सयस निमस और सयस बहुराव पैदा करते के निम होतो की, को तीन प्रकार के गुप्त बर करने के निम देतर किने जाते मे।

पहला गुप्त मयस मे पैदा होता है।

(पृष्ठ ८८९ से ९१२)

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

विनोद कुमार

श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबन्ध

भारत बहुमुखा मय प्रगमना की है चीन् चीन् कीर प्रसवितो की । जन्म-मरण लम्पान को किसी सन्देह का सामना करना पड़ा धर्मात्मकार की प्रगाथ हीर गहन छाया में भटकना पड़ा, विदेशी प्रकाशको के धराधार की पीठा सहग्री पत्नी स्वभाव प्रागर्षिक द्वेय की धर्म में कुचकता पड़ा सही सही भारत मा ने गती लम्पान को जन्म दिया जिसका लक्ष्य—“हुदो का दमन, धर्म का उपाय और साधुओं का परिपालन रहा ।”

मुनिष्ठ यह विचार घटल नियम है कि रात बिजली धमकामन हो रही है, प्रभु त उठना ही प्रकाशमय । पराधीनता गम प्रभाव के औपचारिकता से भारतीयों के परिपक्वार्थ को ज्योति पुत्र व्यक्तित्व सबूत १८९१ (१२ जनवरी १८९२ ई०) को वेदोपदेश में भारत के मुबारक प्रभु ने श्रीरती जिने के टकाव प्राय में कलम लाल की निषेदी के घर में भेजा वह स्वामी दयानन्द था । दयानन्द के बचन का नाम ‘भूषणकर बा । भारतीय परम्परा ने सन्दर्भ का ‘सिंह का गर्भ होता है—‘कमालाकारी । जीवन के प्रारम्भ से ही इस महापुरुष का कार्य ‘बहुजन-हितम्’, ‘बहुजनसुखम्’ हो गया । धन उनका कर्म भी नाम को सार्थक कर गया । स्वर्ण-दयानन्द का जीवन भवभूति के दम-भजन को सारक करता है —

बन्धनविष कजोरालि
मुकुलि मुमुनारवि ।
सोकोरालासो भोगलि
को विमालमुहलि ॥

स्वामी दयानन्द का जीवन एक ऐसी क्राणमणि का कर्ती है, जहाँ वह वेदों का प्रकाश प्रवित है, जहाँ का उद्गारा है, जहाँ वह वेद की निर्मलता को देखकर तो पड़ना है । दयानन्द के हृदय में विज-बन्धन के लिए ठोस स्वभाविक प्रतीक की सन्देह भाव निवृत्ती है । जैसा कि स्वामी जी ने स्वयं कहा है—“सर्वस्व का प्रसार कर सकी एकमत में कराके, देव दुष्टार परस्पर में बड़ प्रीतिपुत्र करके, सब को सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा उल्लस ही बनिया है ।” अपने विचारों को साकार रूप देने के लिए स्वामी दयानन्द ने १८७५ में धर्मसमाज की स्थापना की । स्वामी जी का विचार था—“One God, One religion and One world” यहाँ पर एक ईश्वर के तत्त्वों “One distinction and

One God” है । एक धर्म से धर्मप्राय एक आधार सहित” से है । एक विषय का धर्म ‘एक परिवार’ से है ।

महाराष्ट्र के स्वर्ण-दण्ड के रूप में महर्षि दयानन्द ने एक सतासी पूर्ण ही एक ऐसे मय भारत का चित्र उपस्थित किया जो लोकतांत्रिक होने के साथ-साथ समाज में जैसी विविधता कुटीरितो से रहित था । उन्होंने युव की चारा की बचतने का प्रयत्न किया । स्वामी जी भारत की एक धार्मिक वेद के रूप में देखना चाहते हैं । उनके भारत में कुटीरितो का कोई स्थान नहीं था । सर्वत्र वेद, सद्गुण और अनुभव था । स्वामी जी के अनुसार—“प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुणों के अनुसार ही कार्य करना चाहिये । ऐसा होने से वेद उन्नति के पथ पर प्रसरण होगा और देश का सामन सफलता पूर्वक चलेगा ।” स्वामी जी चाहते थे कि भारत विश्व के समस्त गम नभाना हो, वे भारत को दम रूप का चाहते हैं । जैसा कि ‘विश्व-पुराण २/३ में कहा गया है—

मार्थलिषा चरिषी जीवकायि
मयान्तु नै कालमुनिमयि ।
स्वर्णधर्मार्थलिषधर्मार्थी
नयलिष चतुष्टय पुराणात् ॥
जगति नैतन्म नम चरिषीने
स्वर्णधर्म कर्मलिष देहभयनम् ॥
प्रत्यस्मिन् चरिषा भुज से मनुष्या
वे भारते नेत्रिया विमोहता ॥

स्वामी दयानन्द का विश्वास था कि यदि देश में बड़ रही नास्तिकता, धर्मविषय भ्रमनाशनाशना, अस्मिता म परस्पर ईर्ष्या-द्वेष की भावना द्वालिप दुर्ग-द्वारा भारतीय समाज से विचिनी हो जाये तो सब एक कुहाहा देख बन सकता है । अपने विचार की पूर्ति हेतु स्वामी जी ने अनेक धार्मिक पुस्तकें लिखी, जिन्में ‘सत्यार्थप्रकाश’ सब से महत्त्वपूर्ण है । स्वामी जी ने विचार पर बहुत जोर दिया । स्वामी जी कहा करते थे—“वेद, ज्ञान और मातृपुत्र की भावना जब तक हम भारतीयों में विकसित नहीं होती तब तक हम उन्नति के विचार पर नहीं पहुँच सकते हैं ।”

दयानन्द सरस्वती व्यक्ति व्यक्ति के बीच की बाँट को खेना नहीं चाहते थे । उन्होंने सही सही साधार्मिक धामनको के विचार ऐसे समय में साकार उठाई जहाँ उस समय धर्म का दिव्य सपु दाय भी निरुत भावनाओं का समर्थन

करता था । जाति बाँट व्यवस्था में भारत में ऐसी कुट का बीजारोपण किया जिससे भारतवासी एक दूसरे को विद्वेष की धर्म से देखने लगे । मानव मूल्यों की जड़ोटी जन्म जाति वल व्यवस्था की सहाय से हटकर विशुद्ध मानवीय स्तर पर व्यक्ति दयानन्द की सैधार्मिक कालि से उभरकर सामने धायी ।

भारतीय समाज में धर्मोत्पी के साथ किए जाने वाले कुर्म्यभार से ताकिल होकर प्रभुत और धर्म निर्मलमुक्त होने लगे । वह उस समय की बात है जब धर्म के नामने से बुद्धिजीवी की सर्व एक नीतिपन से प्रभव हटकर धार्मिक करने थे । सामाजिक व्यवस्था के इस र्कीरणी धारों से मनुष्य होकर महर्षि दयानन्द ने मानवता होकर एक स्वयं पर कहा था—

“यह व्यवहार तो धार्मों के लिए मरुल व्यवस्था बन गई है । वेदों इस शक्ति से इसका कर्म पीछा खूटा है ।”

स्वामी दयानन्द जाति-धर्म के नेत्र से प्रत्यक्ष लक्ष्य थे । जाति पालि के इस व्यापार को हटाने हेतु धर्मजगतिप विहाल का बीका देने वाला धार्मिक सहाय दया नन्द ने पराधीन भारत में प्रवित्त भारतीय समाज के सामन उपस्थित किया । धार्मिकताप ने इस दौर विमालक कदम उठाया जेकिम धर्मि धर्मोपाकृत परिपालन के लिए और धार्मिक कर्मशा से काय करन की प्रत्ययकता है ।

दयानन्द सरस्वती न सन्देश दिया कि शिक्षा मनुष्य की जीवनधायिनी है । जब तक सभी भारत के नर-नारी शिक्षित नहीं होते तब तक हम एक कुहाहा भारत का सना नहीं बल सकते हैं । वास्तव में शिक्षा ही वह मूल्य है जो किसी देश या राष्ट्र को उन्नत या प्रगति की ओर ले जाता है । स्वामी जी ने नारी शिक्षा पर बहुत जोर दिया । स्वामी जी से पूर्व स्त्री और मूत्रो को घिया नहीं थी । जहाँ स्त्री । इससे स्वामी की बहुत जोर ही हुए और उन्होंने स्त्रियों और बच्चों को शिक्षा देने जाने का धर्मिपाल बनाया । जहाँ सकारार्थ में कन्याओं को शिक्षित करने का विशेष किया, वही दूसरी ओर स्वामी दयानन्द ने स्त्री-शिक्षा का धर्मिपाल बनाया ।

किसी को समाज धर्मना राष्ट्र के लिए नारी को आधार किया के रूप में कहा जाए तो धर्मोत्पी में होती, क्योंकि नारी ही देश-जो-जोय विमल कर्म

मनुष्यवर्गी सार्थक प्रभाव करती है । “भारत ही मनुष्य की प्राथमिक पाठ-शाळा है ।” इस कथन को पूर्ण रूप से उचित मानते हुए कहा जा सकता है कि जिस देश की नारी सुशिक्षित होना/जाना तथा स्वतंत्र विचारों की होनी, उस देश के सार्थक की सुशिक्षित होना तथा स्वतंत्र विचारों वाले होने को शिक्षा बन्धों को माता से प्राप्त होती है तथा सकार स्वामी रहते हैं । वह शिक्षा १४ सकारों का स्वायत्त किसी धर्म व्यक्ति द्वारा नहीं दिया जा सकता धर्मय माता को सकार धरने पुत्र में कीरी के प्राथम्य से सार्थक करती है । वे सकार धर्म विधी प्राथम्य से सार्थक होने पर भी स्वायत्त को प्राप्त नहीं कर सकते । इसी तथ्य की मुद्रि “ममता” धामन में प्रभवार्थ के कथानक से सभी को हो जाती है ।

स्वामी दयानन्द का विचार था कि “नारी का स्वातन्त्र्य समाज में प्रत्यक्ष मरुत्वपूर्ण है । यदि उसकी प्रभवता उन्नत न हो तो सपुर्ण मानव जाति को सकार धरने के धर्म का भय है । नारी घर की साक्षरणी है तथा घर एक व्यक्ति है । उसकी उन्नति एक समाज तथा प्रत्येक समाज की उन्नति के सपुर्ण देश की उन्नति समाज है । देश का धामन कनी नारी माता बन-कर पुत्र का निर्माण करती है । उसने जर्तम्य की प्रीति धार्मिक उन्नत को बननी बनकर सपुर्ण साक्षरता प्रवृत्ति को सभ-साकार कर्म नेत्र में सार्थक करने के लिए तैयार किया बाहर नेत्रने में निहित है । मातृ-मूल्य विचिनी बावक प्राय धामन, निष्कर्मिणी और सभयन ही र्धित्वपूर्ण होते हैं । सभी के विना पुत्र की प्रविष्टा नभय है । नारी जैसा घर का निर्माण करेगी वैसा ही सपुर्ण मनाज का धामा बनत जायेगा ।”

जिस देश में नारी की शिक्षा का बहुत के धर्मधायिनी है रा ध्यान नहीं दिया जाता उस देश का भविष्य धर्मधारमय कहा जा सकता है । सम्भवतः इसीलिए मनुष्यविकास में कहा, “कुत्र नार्त्यन्तु पुत्रने स्मरने तम देशता ।” दूसरा पूर्वक वैदिक धर्मि इससे धर्मनि नहीं है । उन उन्होंने वैदिक साहित्य में नारी-शिक्षा के प्रति विशेष बल दिया ।

बल स्वामी दयानन्द ने इस तथ्य पर सूक्ष्म धर्म से विचार किया कि ‘किसी की देश की प्रगति का धामन उस देश की नार्त्यो का शिक्षित होना है ।’ तो स्वामी जी ने नारी शिक्षा का धर्मिपाल बनाया । जदकिने के लिए अनेक मूल्य कोने लगे । स्वामी जी ने अपने प्रविष्ट एक वैदिक ग्रन्थ ‘सत्यार्थप्रकाश’ में कहा है कि— १. जन्म से पार्थने बर्तक के धामन को माता तथा छ से ८ वर्ष के धामन से शिक्ष करने सपुर्णों का धर्मपाल करने वहाँ पूर्ण निहाल दया पूर्ण विधुपी शिक्षा और विमलान करने लगे, वहाँ सपुर्ण मय धर्मिनि को नेत्र में ११ शिक्षा का

मे बन्धो को ताकन करने क सम्बन्ध मे
स्वासी भी मे ताकन के पथ मे अपने विचार
प्रस्तुत किये और कहा—

साहस्यं पारिवर्त्मिकं
पुत्रो न विवेकितः ।
सातमाभिलोको योऽपि
सत्तामाभिलोको मुखा ॥

परार्थ— 'ओ माता-पिता और
पार्थिव! जलान और पित्रो को ताकन
करते हैं वे माता-पिता और पित्रो को
सिखो को अपने हाथ मे प्रभुपुत्राण कर
रहे हैं; किन्तु जो सत्तामा तथा पित्रो
का ताकन करते हैं वे अपने सत्तामा तथा
पित्रो को विधि विचारकर नष्ट-भय कर
देते हैं क्योंकि सातमा मे स ताक न विधि
युक्त तथा ताकन मे गुण युक्त होते
हैं ।

स्वामी ब्रह्मानन्द का विचारवाक्य का कि
'पित्रो को मज्जुन बनाते हेतु तथा सत्तामा
को सर्वगुण सम्पन्न बनाते हेतु सहु विद्या
ही होती चाहिए । वे माता मे कि सत्त-
माता मे पारिवर्त्मिक बतन होता है । उन्होंने
'मयावध्यासा' के ततीय सङ्ग्रहात्
मे कहा है— 'सह को का मज्जको की तथा
मज्जको को मज्जको की पाठशाळा मे
वेचें हैं । सह के तथा मज्जको की पाठ-
शाळाएँ एक दूसरे मे कम से कम दो कोश
की पूरी परी हो ।' मनु मे तो कहा त-
क कहा है कि—

• स्त्रीणां प्रेमात्मन्युत्तमस्तथा परमम् ॥ '

सत स्वामी की की धर्म मे विद्या-
काय मे मारी को त्याग और तत्पत्नी की
पुत्रि जनक ही विद्या ब्रह्म हावरी
विद्या तमो बहु एकाग्रचित्त मे ज्ञानार्जन
कर सकते हैं और तत्पत्नी प्रह्लादात्मक
मे प्रवेश करके समाज मे राज्य के लिए
सुयोग्य सत्ताम प्रदान कर सकती हैं ।
सर्व प मे स्वामी की विद्या के माध्यम मे
देश को एक चरित्र सम्पन्न अपने सर्वोच्च
एव दार्शनिक के प्रति आराध्य गरी देने
कोजना प्रस्तुत करते हैं । स्त्रीसूत्री
माध्यात्मिक उल्लिख को प्रामाण्यिक
लित करते हुए यन्त्रों तथा धर्मवेध मे
'नी गरी विद्या के पथ मे प्रवेश तक दिने
कहे हैं—

• 'येनां साध कस्यालो-
पाशशनि कोचम् ॥

बहोऽप्यन्यान् सुखाय पार्थिव
च त्याग चारत्याम ॥

ब्रह्मचर्येण कथा
मुखा विन्यसे परितः ॥

बन के क्षेत्र मे ही स्वामी की एक
महात्मा विचारो की रूप मे स्थापित
हूए । पारिवर्त्मिक मे परलोक का कोश
बहन करते हुए भारतीय जनता को का
सात्विक रूप सिद्ध कर देंगी भी । बर्न
के मात पर बहस धर्मविचारक प्रवेश
के और पाश्चात् के लो ज्ञानो मे बर्न
के पारिवर्त्मिक रूप को ज्ञान की प्रतीक
महात्मा का प्रतीक मानकर दे प्रति

धर्मोत्तम शरण कर एक नये धाम्या
का कीर्त्योत्थ किया । उससे पूर्व हिन्दुओं
को साधक और मात के ईसाई और
मुस्लिम बनावी जा रहा था । हिन्दु अपने
तप बाधने मे बर्न किसी भी अन्य धर्मा-
बन्धो को स्पर्शने मे सहायित करना पाप
समझते थे, परन्तु स्वामी की मे ईसाईयों
और मुसलमानों को हिन्दु बर्न मे प्रवेश
लेने के लिए प्रोत्साहित कर विवेकी
लक्षितों का प्रतीकार किया ।

स्वामी जी मे जनसाधारण को क्लेश
विद्या कि हनु सन भारतवासी मर्मा-मर्मा
हैं । इसे अपने बीच मे ईर्ष्या द्वेष की
निकास देना चाहिए । उन्होंने 'बहुपुत्र
कुटुम्बकम्' की उक्ति को साधारण रूप
लेने के लिए कहा । 'ई' के स्थान पर 'हनु'
की भावना पर बचो दिया । प्रत्येक व्यक्ति
मे परीकार और त्याग की भावना होती
पाहिए । स्वामी ब्रह्मानन्द के कथने मे—

'प्रत्येक को अपनी ही जन्मलित से
कन्तुप न चरना चाहिए, किन्तु उस की
जन्मलित मे अपनी जन्मलित समझनी चाहिए ।'
य होने कहे कहा— 'जब सद्गुरु को
साधारणिक सर्वविधकारी नियम राजने मे
पारत र द्धता पाहिए और प्रत्येक हिन्दा-
की भावना मे उस स्वरूप रहे ।'

उस से ही विद्या का प्रयोग रहा
है 'माया विदि बर्णित करने की
जाते । विद्या का मुख्य उद्देश्य है— 'जीवन
मे जन्ममय संसारो का धारोण ।'
विद्या का मुख्य प्रयोजन मानव की पञ्चुता
के स्वर मे उभर उठाकर तत्कारी जीव
का निर्माण करना है । सत्तामा हृदय
की बुद्धता के लिए ही होती चाहिए ।
केवल भीषी की सद्गुति या केवल उदर
पीच हेतु पशुकोत्पन्न होने से विद्या की
साधकता नहीं है । तत्पुत्र जब हृदय बुद्ध
और नियम हो, तभी जीवोन्मय की
पुति होती है । मे कहते हैं—

तप से ही दैवताओं मे मनुष्य पर
विजय रही । हमारी विद्या प्रजापती मे
जाने जाने कभी को सद्ध करनी थी । तप
है तथा ही तप से विद्य धार्मिक
मानसिक तथा धार्मिक विज्ञान के पथ पर
प्रवेश होता है । महर्षि ब्रह्मगर्भ क धनु
सार विद्या का उद्देश्य 'धार्मिक मान तक
तथा धार्मिक धर्मिकों का विकास किया
जाता है ।' वे विद्या को राज्य का कल्याण
मानते हैं । स्वामी जी के अनुसार विद्या
पदार्थ में केवल धार्मात्मिकता का सम्य
ही नहीं है बल्कि लौकिक विद्याओं मे विद्या
कथा तथा कोश मे निष्ठात्मक प्रकीर्ण
प्रत्य दिने जाने का निर्देश भी है । स्वामी
की मत है कि विद्या सर्वप्रथम स्वकीय
साधन में ही हो जानी चाहिए ।

स्वामी ब्रह्मानन्द मे विविधताओं मे
पूर्व से ही एक राज्य, एक भाषा,
एक समाज तथा एक ईश्वर का ऐसा
विचार बसाया, जिससे भारतीय समाज
मे

हो उठा । एक ईश्वर को मानने वाले
धर्मविचारों की इस एकल की धार्मिकता
विचारधारा मे भारतीय समाज को ऐसी
धुनी प्रदान की जिससे सबकाल धर्म
विचारों के डोले चरावासी होने लगे ।
धर्मविचार के अतिरिक्त बिना किसी
नेचमाय के मानवता के लिए कोन
एए । जीवन के धार्मात्मिक सत्य का
धारणत जीव कराने वाले महर्षि ब्रह्म-
गर्भ ने धामनमाय के द्वारा सही रूप मे
जीवन के प्रति चित्र चोटकों का विवेक
बन किया वह समग्र जीवन काल मे
सम्भवित था ।

स्वामी ब्रह्मानन्द मे यह भी बसाया कि
राजा मन्त्री, समाज कौन बनित होने
पाहिए । एक पर भी प्रभाव डाला है ।
स्वामी जी के अनुसार— 'राजा को नित्यतः,
न्यायकर्ता राजकार्य मे निपुण सत्यवादी,
बुद्धिमान, बर्न च और काम की विदि
करने वाला सौम्य नीतिवाक्य के
अनुसार मानव ब्रह्मान याता होता
पाहिए ।

मन्त्री मे निम्न गुण होने पाहिए—
'कोशाल साधकविद
सुरक्षितकर्मसम्पन्न कुलोत्पन्न ।
वर्षावसत्पन्न मन्त्री का
प्रकृतिपत परीक्षणित ॥

परार्थ स्वदेश मे उत्पन्न, देशो को
जानने वाला, धूर्तवीर, विद्वान सत्य
निष्ठा न ह । कुनीन धर्म प्रसार सु-
रीक्षित शास का धात, धार्मिक, चतुर
सत्त्विक वा मन्त्री हो ।

नोकर के गुण—
तेजामर्षि निपुणवीर धूर्त
वक्ता कुलोत्पन्नात् ।
धुनीन कर्मक्षेत्रो नीलमत्तविचारो ॥

गुण के गुण—
'तप चैव प्रकृति-
वर्णसाधकविचारम् ।
इतिराज/रक्षेत्रं बुद्धि
बल कुलोत्पन्नम् ॥

अनुपुत्र कुलिन
सुविज्ञान वैशालात्मिक ।
कुपुन बीजवीर्यात्मो
होता राज प्रत्यक्ष ॥
समाधिर्मे गुण—
'ते सार्द्धं विन्यसेनित्य
साधक वर्षावसत्पन्न ।
स्वाम सद्गुरु सुवि-
सम्पन्नसाधनानि ॥'

तत्पश्चात् स्वामी ब्रह्मानन्द मे यह भी
बसाया कि उनके स्वर्णिम काल मे पिता
ब्रह्मानन्द, हनु और सत्तामाओं को बना धर्मि-
काय लेने पाहिए । सत्तामा की सर्वदा राज-
कार्य मे समन रहना चाहिए और उने
राजकार्य को विचारने नहीं देना पाहिए ।
राजा को प्रजा के साथ सर्वदा समानपद
व्यवहार करना पाहिए ।

धर्मत्व के प्रतीकार—
'कथामे बर्न साधको

नृपती कोश राज्ञे च
हृते सविचारयन्त्री ॥

गुण के धर्मिकार—
'तप एव हि समस्त-
विन्यसेन स हर्षात् ।
निमलपुत्रो कर्म-
विन्यसेन देव वा न वा ॥

राज्य कर के सम्बन्ध मे स्वामी जी
मे विद्या है—

'यदात्ताप्यन्याया
धर्मोकोत्पन्नवद्वेषा ।
तथाप्यप्यप्यो प्रहोत्तमो
राष्ट्रात्तात्त्विक कर ॥'

दुर्गे काय-काय स्वामी जी मे यह
भी बसाया कि देश का शासन किस प्रकार
का होता पाहिए । इस सम्बन्ध मे स्वामी
ब्रह्मानन्द ने यह कहा है कि—

'शास्त्राभिहितं कुम्भी-
हृत्साधनमपि तथा ॥

विज्ञातोऽपि सत्यं च सद्गुणवर्धनम् च ॥

धर्मोत्पन्नानुमानम्
धर्मिक तत्त्वम् ।

वर्षाव साधकविद
देशतो विन्यसेनित्य ॥

विज्ञातोऽपि सत्यं च सद्गुणवर्धनम् च ॥

तेषा धार्मात्मिक कार्यो-
पुत्तकविचारि चैव हि ।

राष्ट्रिय सत्त्विक
विन्यसेनित्य चैव हि ।

नरक नरक-
धुर्षितः सत्त्विकत्वम् ।

उच्चैः स्वाम धीरव्य-
सम्पन्नानामि च ॥

प्रजा के रूप लेने का प्रकार—
'वन्द्यात्मन्यप्यप्यो
राज्ञा बहुविधव्यो ॥

धार्मात्मन्यप्यो नाम
कष्टो ह्यारब्ध एव च ॥

स्वामी ब्रह्मानन्द मे देश के कल्याण-
विधी की बुनियाद पदार्थ का ही तरीका
बसाया है । राजा बनने का गुण धारण
प्रजा का प्रिय होता है । राजा के रूप पर
सर्वत्र लक्षित रूप के धर्मिक को ही बर्णन
विद्या जाना पाहिए । ब्रह्मण वैद्य और
गुरु राज्य मे अपने गुरुओं के अनुकूल प्रत्य
कार्य कर सकते हैं । राजा के रूप का
प्रत्याप्ती होने के लिए धार्मात्मिक है कि वह
उस राजा का निवासी होना पाहिए ।
राजा का गुणाय या तो देश की सर्वपूर्ण
जनता द्वारा प्रत्य रूप से होता पाहिए ।
(अथवा) कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के
द्वारा राजा का चुनाव किया जाना
पाहिए । सर्वश्रेष्ठ त्याग पर पुने जाने पर
सम्बन्ध होने पर भी वह जनता का सम्य
लेवक है जनता की सेवा पर ही उसकी
विशेष निर्भर है । वह प्रजा की इच्छाओं
के लक्ष्य बनने वाला है । प्रजा की इच्छाओं
के विचारित उद्योग को ई-इच्छा नहीं, प्रजा

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा-माला—४

सच्ची पूजा

प्रवचनकर्ता—वीतराम स्वामी सर्वदानन्त महाराज

(पाठक से श्रान्ति)

सहस्रो मीनो तक धामकार छा जाता है। यह किसकी माया है? फिर कौन इस धामने को दूर कर देता है? रात को जब सब सोते हुए हैं, वेबुध पड़ गए हैं। सोते हुए सब का जहाँ बराबर है। क्या सभी क्या निर्धन? सब एक ही स्थान हैं। यह किसकी महिमा है जो जोसिब बण्डे ने एक बार सबको समान कर देती है? यह कसोतीकाय किसने सुनाया था? यह किस बतुए शब्दकार का काम है? जब कोई बाबाराय शब्दकार कसोतीकाय सुनाता है तो उसकी बुझारी का प्रभाव सीत विल त रहता है किन्तु इसका प्रभाव ऐसा नहीं। बाप बोकर उठते ही अपने धामको प्रभुलित करते हैं। यदि बोकर न उठें तो बनेने रोत सोने में बतर ही क्या है? परन्तु जब बाप धामिक तो यह है धर्मिय मे ऐसा हा होना बाप मोयने पर तु ठठ न सकेने।

मनुष्य वि सन्तुष्ट है। परन्तु ज्वर होना धामसक नहीं। बाप तनिक बने तो सही। महाराज गमपद र्ण हुए हैं। मनवास मे बीडा जा धोर सक्कर उनके साथ मे है। सैयध बर्न बने मे रहे। धारी रामायण पद जाइल कही एक स्थान पर भी यह नहीं मिलता कि प्रभुको स्थान पर भी राम इसलिये उठे कि उन्हे ज्वर का गया था। धमपाय राग मे था बसाया था। पापज्वर भी बाइब बर्न तक गनो मे घटकते रहे। जब काम बर्नक कथ उठाकर किया। उठाक महामात्र पद बाधो परन्तु यह कही नहीं मिलेगा कि प्रभुको स्थान पर सीयने को रोपिका हो गई थी इसलिये उन्हे उठा कर लेता था। कभी मन मे किसी बीक लेसिये, बज्जो बाप धामिक की भी बीमार होवे मुन ह? क्या मन मे कही बनेने पधुने मे फिर धरकारी हसपताल कुने है? कही नहीं। बज्जो बापमर उस समय बर्न सही होते जब तक उनका मन न समे। मे प्रभुलित के धमीन होकर रहते हैं। परन्तु मुन नो क्या, मुन्नारे बापमर नाय, जब पोड धामिक की बीमार हो जाते हैं। क्योंकि उनका मनुष्य के साथ सम्बन्ध जो बना है। बाप की धर्मियमिरी हो के धोर उन्ही की धर्मियमिरी बना दिया।

प्रभुलित मे मनुष्य की रोमी होने के लिए नहीं बनाया। प्रभुलित मे पहले धम बनाने। पशु, कुत्ता सब पहले बनाए

धीर सब से पीछे मनुष्य को बनाया। प्रभुलित का परीक्षण मनुष्य पर बाकर समाय हो गया। मनुष्य को प्रभुलित ने बजा सुकर बनाया यह बहा ही कनवान बना था। दूर दूर से बनकर इसके पास आते थे। तभीवन मे महामाया रहते थे, धामनक कते मे पाइ हो हिरण का बन्धा निर्मम होकर पानी पीया था। प्रभुलित ने मनुष्य को व्यास भुक्ताने के लिए सब धोर मुझ मिलने के लिए बापमर मेह धामिक बमलसित प्रभाव की। स्वाह लेने के लिए पवन मे की। ज्वर को तो प्रभुलित ने नहीं पवन मे। ज्वर को तो तुम स्वय बनाते हो। प्रभुलित ने न कुनैन बनाई न ज्वर।

धामकस विम्वो का स्वास्थ प्राय विरवा रहता है। पहली लिप्यों को ज्मोने बेसा है, मे जानते हैं कि पचास मास बर्न की धामु मे भी मे फिने काम करता थी। पान्नु धामकस की बजान जिवा तनिक सा काम किया नहीं जब नोमार हो गई। एक र्णो भी बाइबरे से पाइबसपुन का रही थी। बासी पर सवार थी। स्तेयन पर मुबरी के बजर्न मे देखा। उनका काम था कि बासी में मुबुकर धामिरी को लुट लेते थे। उस बासी में यह धरकी डेती हुई थी। एक सबका उसमे बजने लगा। उसने कहा रोहि हुट था। यह न हटा धोर धामे था गग। फिर उसने कहा, 'उतर था। यह न उतरा। उस र्णो न पदबनर उवे बासी में बीच लिया धोर तो बन्धक बगाने। धमने स्तेयन पर उवे पुनिष के हवाले कर दिया धोर बाप ही यह भी यह दिया कि मीने उवे गेयान सक् है दिया है। सब दस सोच मे।

बात तो यह है। माता बज्जो होमी तो साराज की बज्जो होमी। उसे कोई भी बीमारी न होती। यह क्यों हुआ? क्या सब कुछ मुन से हो गया है? नहीं। यह प्राय उन पहली बर्नो को फिर जाना बाइबरे हो तो पहले धामकिक स्वास्थ्य का मन की तनुपस्ती धामी बाइबरे। नमुन्नारे को बाइबरे कि दुरी बाजो का चिन्तन न करे। नमुन्नारे गिल दुरी-दुरी किया करते हैं। नमुन्नारे (नोबिक) के रोम बन जाते हैं। मे क्यों फिर रात पिन्ना से उठे रहते हैं? विमपुनरुन न करते हैं, न पीते हैं। ईस्वर को उपासना की बाइब के है। फिर रोमी न हों तो क्या हों?

पिन्ना धोर पिन्ना से बहुत सब बहर

है। परन्तु पिन्ना बडी ही कडोर है। पिन्ना तो सब मनुष्य पर जाता है सभी उसकी बज्जो है। परन्तु पिन्ना की धमि बोसे की ही बसा देती है। इसलिये धामिक बस उत्पन्न करने के लिए मान-सिक धामि प्राय करती की धामकसका है धोर पिन्ना परमात्मा की उपासना के किसी हुरे उपाय से यह श्रित प्राय नहीं हो सकती। धात कास उठकर स्वाह धावि से निबटकर प्रभु का ध्यान करो। 'जसो तुम्हारी माया धरपत्तार है। धामकार को दूर करने के लिए तुम के धारा बजान किया। बस तुमसे हन मुन्ने ही मानते हैं। यह मही कि उपासना के लिए बंटे धोर मापने सने बन, दोसद गुन धामि। इन मुन्ने पिन्नारी को धामने मन मे स्थान न हो। यह तो यह माया ही देना। उसकी उपासना करो और उससे उसी को मारी। उससे मापी कि हे प्रभो! मुने बस तो बिबसे मे जगदित के काम कर। मुन्नारे विम्वो से हन मुन पाते हैं। मुन्नारे धमोप से हन योशक को प्राय करते हैं। धमपन रेरी डना करी कि तुम से हमारा विम्वो कमी न हो।

मन्दिरों में धर्मिबाब बने हैं बतिया बसती हैं, क्या नाम? दुरोरी न इन धर्मिबाबों धोर बतियो से फिने काम लिये? स्तेयनो पर पने बाधो मादी बन बनेवी तन बरिबास बसेवा। धमने रे धम्बन गुडबन को बली पिन्नाई बाइरी कि बसो। गुमिया तो मेरे माई! इस प्रकार मुनि से काम करत है। परन्तु मुन मुनि को विम्वोपन है बंटी हो।

धामकस परमात्मा एक है। एक के धामने मुने के मनुष्य समान मे एका

महर्षि के सपनों का भारत

(मुद्रक का चेह)

के मुन के धर्मिकि राणा का कोई बन्ध तुम नहीं। स्वासी की का सब है कि राणा को कभी भी स्वस्थ नहीं रहते बने बाइबरे। 'धमपन प्रभुप' में कहा गया है कि—

'धमि राणा प्रजा से स्वस्थ होया तो यह प्रजा को नष्ट कर देना, क्योंकि धामिकि धमि राणा प्रजा का नाशक होता है। सब किसी एक को राणा में स्वस्थ नहीं रहना बाइबरे। केके बाज्जोपारी नुन किसी मुन नुन को, प्रजा करते हैं। उसी प्रकार स्वस्थ राणा की प्रजा को का बास

बासी है। बैसा किया बैसा पका था। हमने कौनों नहीं ठहारा, मनुष्य बासी बुद्धि से धमने बाप ही सताया जाता है। एक मनुष्य का उसके घर के धामने एक धामक था। धामने में उसकी दुखनी फिर गई। बाही धमनेरा था, मुन पिन्नाई नहीं दिया। बाइब सबक पर कासनेन बह रही थी यहाँ बाकर दूँ बने गया। किसी ने मुझ 'माई क्या दूँ बने हो?' उत्तर दिया 'मुनमी फिर गई है।' फिर मुझा, कहा मिरि भी?' यह बोधा, घर के धामने में। उसने कहा तो बाही बाकर दूँ बने।' इतने उत्तर दिया, 'बाही धमनेरा है' यहाँ माई मिल बसती। इन्ही में प्रकाश मे दूख रहा हूँ।' तुम की देवे ही मुने हुए ही। पहले धमन मन मे इस मुन को पिन्नारी धोर धमने विम्व मे दुरोरी के लिए बने बैसा करो फिर सब मुन हो जायेगा।

स्वामी धामनय जो एक बार कलकत्ता गए। यहाँ प्राय जहा उठे मे रात के १२ बजे उठकर गहने मेने एक बड़ा बारी मे मुझा 'स्वामी की बाप एका र्णो ६ रहे है?' हाजी मे कहा 'बर्न है।' बज्ज-नारी बोधा 'पानी मे नमक जाल देता हूँ, सी बीजिय बर बज्जो भी बापिया।' स्वासी की मे कहा 'यह बर्न बर प्रभार दूर होने बाधा नहीं। मेरे दो विम्व में बर्न हो रहा है।' धमपन मेरे बापारी। गुमिया की रहते। जानी का बाप तो यह है—

धामने धामने स्वस्थपन से समकला हूँ तुमसे दुरमी नमबरीक विम्व सासी है। इन्ना र्णो बाते।

जब तक मेरे न हैं। धामयि प्रभु को सही मुनवा को मुने हन है जब तक यह मोतनर फिर पमनेबरे के पास नहीं जाती तक तक इसकी मही मुनिप रहेगी। इसलिये सनेरे उठो धोर उसके धामने हाव बाइबरे प्रायना, उपासना करो। यदि मुन्नारे विम्व में बर्न बैसा हो बाये धोर एड परसेकर को भापकर बने धमने फिर मुनवा दो तो मुन्नारा उर न के कलकत्ता हो बाते। परमात्मा मुन्ने मुनिप प्रभाव करे।

उपनिषद विवरण मे स्पष्ट है कि स्वासी धामनक के सपनों के मापत मे धोकाधमिक कास प्रजासी नो स्वापना की गई है। उसमे एक बाधा एक बर्न पका एक पद है। धमने के स्वाय पर एकाय है। स्वासी की के बास मे बर्नियी मुनिपनी तथा धमियमिरी का कोई स्थान नहीं है। सर्वम मेस, सर्वमय एकाय को प्रभुप्राय का बाइबमर है। परस्पर केमने-बने नहीं है। स्वासी की के बापत मे बज्जो धमनिय में ही धमनी बज्जो है। स्वासी को बापत को प्रभुं धमपन बनाया बाइबरे है। उनका बापत बावत-बावत कर्न कर्न धमिपन है।

—पमनाथ सहवास (मन्त्री)
पार्श्व प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

साप्ताहिक ओ३म आर्य सन्देश

पूज्य एक अंति ३० रूँके

वर्ष ६ वषट २८

रविवार, २ जून १८८६

आर्य समाज ११६०८६३०६६

अंक ३०४२

दयानन्द—१११

स्वामी दयानन्द मेरे महान् गुरु

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। मैंने सदा से केवल उनकी को मुख माना है। वह वर्ष के पिता हैं और आर्य-समाज मेरी बर्ष की माता हैं। इन दोनों की ओर मैं मैंने परवरिश पाई और अपने दिल और दिमाग को डाला। मुझ को धर्ममान इस बात का है कि मेरा मुख बड़ा आनन्द मन का था। उसने हम को आजादी से विचार करना आजादी से कल्पना और आजादी से अपने कर्तव्य पालन करना सिखाया। मुझ को इस बात का भी गर्व है कि मेरी बर्ष की माता ने मुझ को एक अच्छा ने बड़ा ठीकर रहना सिखाया। एक ने आजादी के मान की तो दूसरे ने मुझ को ब्रिटिशमन का मान दिया। इनके बर्ष न तो



खुशाल है न किसी और का। आजादी और ब्रिटिशमन हर एक अपने आजादी की विभगी का आधार हैं। नवयुवक आजादी चाहते हैं परन्तु भिन्न-भिन्न हैं बराबर हैं जब तक यह दोनों भाव उनके अन्दर अच्छे अनुपात से शामिल न हो जाए उनकी विभगी भीटी और उपेक्षा नही हो सकती। स्वामी गुरु महाराज ने हम को देश प्रेम का मीठा फल खिलाया। आर्य सेवा और जाति, धर्म का नीच हमारे अन्दर बोधा। साथ ही हम को यह भी उपदेश दिया कि हम अपने अन्दर को विशाल और खुश रखें

तकि मनुष्य मात्र हम में समा जाए। हमारी देशप्रेमिता बर्ष के आधीन है। यूरोपीय कौनों की तरह वह वन और तपस्व न होनी चाहिए। जब एक बर्षन पिताजी यह कहकर पुकारता है कि उसे अपनी बर्ष भूमि खे पदार्थों से प्यारी है तो वह कई बार अपने दिल को उस करके उठार ने माना प्रसार के बर्षों की नीक रहता है और सिखा देता है कि मेरी नीम पाड़े गवली पर हो तो भी उसकी पूल मुझे दिख है। इसके बर्षों तक तो सम्पर्क है कि मुझे के रहते बर्ष की हरे-हरती नीम खिच होनी

बाह्य है। जो व्यक्ति चित्तमा प्रतिक फिन्च हो, कम बर्षक हो, बर्षी हो उसकी ही प्रतिक 'वेह' की बर्षा उसने होनी चाहिए परन्तु इसका यह बर्ष नहीं कि बर्षक हो, जून, जून, बर्षक बर्षक के 'वी' प्रेम है। जैसे आता पिता की बर्षने छोटे बर्षने से प्रतिक प्रेम होता है और बराबर से प्रेमके प्रेम का कोत बर्षक रहता है। बर्षी बर्षक बर्षक बर्षक बर्षक और अपने देश के तथा प्रेम बर्षक बर्षक नीम बर्षक की बर्षी बर्षक बराबरों के बर्ष को बर्षक की बर्ष की बर्षी बर्षक बर्षक

परन्तु इसका बर्ष यह नहीं है कि जाति की बर्षी और बर्षाप्रतिक बर्षी की भी हम चाहते लगे। स्वामी जी महाराज ने हम को जाति सेवा का उपदेश दिया। हम चाहते हैं कि हमारा देश और हमारी जाति बर्ष के रास्ते में मुक्ति करे। बर्ष से भाव नहीं उन कुछ सिद्धान्तों से नहीं जिनका नाम मत है। बर्ष शब्द उन गुरु और विद्याल प्रार्थों में लिया जाना है जो हमारे शास्त्र-कारों ने इनके लिए नियत किए हैं। सिद्धान्तों की मानना और चीज है और बर्षाप्रिया बनना और चीज है जो केवल बर्ष विद्याल के लोक के नीचे दब कर अपने सिद्धान्तों के धर्ममान पर बर्षाप्रिया बनने की चेष्टा

करता है। वह जरूर ही बर्षाप्रिया नहीं बन जाता। बर्ष का सम्बन्ध बहुत कुछ कर्म और धर्मपरण से है न केवल लक्ष्य जान से। बर्षाप्रिया बर्षने के लिए एक भाव तरह का बर्ष बनाना होता है जिसमें विशालता, बराबरता, न्याय और प्रतिक से निष्पत्ति हुई हो।



सत्संग वाटिका

अन्वयः बृहद सत्य उच्यते
 वाक्सा तप इह यज (एते सर्वे) पृथिवी
 धारयन्ति । न पृथिवी न भूतस्य अन्वयस्य
 पत्नी (अस्ति) । पृथिवी न लोक उच्यते
 कृणोत ।

अथ पृथिवी को इतनी ओषध पालती है। (बृहद मत्स्य) ब्रह्मा सब (उग्रम् ऋतम्) तीव्र ऋतु शैला तप ब्रह्म धीर यज्ञ। यह पृथिवी (न) हमारे (भूतस्य) भूत-काल (भव्यस्य) धीर अभिष्यत् काल की (पत्नी) पालन वाली है। यह पृथिवी हमारे (लोक) जीवन को (उष कृष्णोत्तु) लक्ष्मी बनावे।

व्यापार—इस मय में पृथिवी धरातल
 रेश की ऊँचत से के पास वातावरण मये है।
 पृथिवी पर हम मनुष्य का जन्म होता है।
 इसी पर बहुत है और इसी पर हमारी
 धार्यव्यक्ति हो जाती है। पर इसकी उत्पत्ति
 में हमारी धार्यव्यक्ति और हमारे मन में
 हमारा ह्रास है। उत्पत्ति में धार्मिक
 सामाजिक धार्मिक सभी उत्पत्तियों का
 सारवर्षिक है। पृथिवी या रेश के समुत्पत्ति
 के के बहुत म जीवन धारण है जिसको
 रेश की धार्यव्यक्ति धारण की। यहानुसार
 द्वारा प्रयुक्त किया करता है। धैर्य विना
 प्रयत्न की मूर्धन्य को ऊँचत के परमपुत्र
 बनाना उद्धरण को कल्पना हमारी धार्यव्यक्ति
 की धारण करता। यहां पानी की कमी हो
 दूसरे नदियों में बहुत किया करता है।
 पृथिवी धार्यव्यक्ति को ऊँचत के धार्यव्यक्ति
 प्रयुक्त बनाना धार्यव्यक्ति है।

परन्तु नमो है मुझ एवै धनीजिन
तथा मजलिक बुजो का खलुग किया यमको
है जा उज्ज्वल दिवसी मोहोतको स भी
होई कलिक धाँसाएँ हैं जिनके समको
होई नीतिक साधन पणको हवको है धोई
जिनके मयावे ने बहु नीतिक साधन
साधनो सिद्ध होई । ऊँचि धारि नीतिक
साधनो सिद्ध होई कल्याणे के सिद्ध ने कि
उज्ज्वल उज्ज्वल साधनो के सिद्ध । धोई
देव ने साध साधनो के सिद्ध । धोई साधनो
कावे निजको है उज्ज्वल साधनो का उपयो
महोई मया । कल्याणो सिद्ध होई
साधनो मया । ॥ ४ ॥ मया साधनो के
के सिद्ध मुकुट मया पहनने के लिए
परन्तु नमो है मया धारि । स्वाधी
धोई मया । ॥ ५ ॥ मया साधनो के
साधन मया साधनो के सिद्ध । धोई
का समुद्रि नी कल्याणमो नी जयपी
धारा मया के मया लखे । यम जोपी
उज्ज्वल उज्ज्वल साधनो के सिद्ध । धोई
उज्ज्वल उज्ज्वल साधनो के सिद्ध । धोई
मया ने बहु मया के राज्य को विजित
धोई समुद्रि साधनो के सिद्ध । ॥ ६ ॥
धोई मया के मया लखे । यम जोपी
उज्ज्वल उज्ज्वल साधनो के सिद्ध । धोई
उज्ज्वल उज्ज्वल साधनो के सिद्ध । धोई
मया ने बहु मया के राज्य को विजित

ये महान गुण

प० गंगाप्रसाद उपाध्याय

मत्स्य बृहद ऋतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरु लोक पृथिवी न कृणोत् ॥

(अथर्ववेद काण्ड १२ । सूक्त १ । मंत्र १)



की कमी थी परंतु सुसमृद्ध मुगल राज्य
नीचे ह छिन्न भिन्न हो गया ।

इन्हीं गुणों का वेदमन्त्र में वर्णन है।
एक एक करके देखिये पहला है— सत्य
ब्रह्म। अत्यन्त सत्यप्रियता अर्थात्
असत्य से घोर अप्रीति। श्रृंगार में प्रिया
है सत्यनोलभिता भूमि (श्रृंगार १०
= ५१) अर्थात् सत्य भूमि को ऊपर उठाये
कर है उसे बिरने नहीं मत् ।

यहा सत्य कोई बोहे का सम्पा
नही है । न भेषपात्र का फन है । न
कल्पित बैसा कोई देव है जो बुद्धि को
कल्पे पर उठाये रखता हो । यहा तो भूमि
पर रहने वाल मनुष्यो के मानसिक गुण
के प्रतिपाद है । सत्यनिष्ठ लोग दार्ष्ट
को की भी हल्पन बना देते हैं जो सब
सत्यनिष्ठ लोग स्वधन्य होस की सम्पा
की नष्ट कर देते हैं । सत्य का एक
विरोधक दुष्ट ही हो सब की सत्य को
धमसा समाने हैं पणु अथवा हो सत्य
को कम न -यहा की जाती है । हूर भा
पारी का विपदा है कि सत्य स व्यापार
को ही बना है । इस कारण सबका

कि कहाँ तक सत्यवादी है मीठी बच्ची कइती है
हूँ बड़ा प्रयास करता हूँ कि बड़ा करना
हो तो लाल को छोड़ो। लाल प्रयास करता हूँ
हो तो मीठी को छोड़कर बाल को ले लो बाबा
राजनीति में लाल का क्या स्वाद ?
लाल का डिब्बोरा पीटते रहो। हुजूम को
लेखने धरलत धरलत है लिए बरलत बरलत
करते रहो। भारतीय भाषाओं में लाल की
महिमा बहुतवाना में बाबा है। परन्तु
भारतीय लेखन बाबा कुम्हड़ से अलग-अलग
भाषाओं में आइकालो को लाल धरलत
को समुद्र का सागर समझते हैं। इन्होंने
राजस्थान की दुनियाँ तो नहीं देखी है।
कहता है कि दुनियाँ का बाण्य लाले बाणे
मुणो में मे मुणु मुणु नूहल लाले है नकली
मुणो में मुणु लाले लाले मे भेग है।
बाबा लाले की बात नहीं है। लाल की
महिमा को स्वाचित्य लाले के लिए फिरो
है इतिहास नाटक स भलेस लाले बाबा
मिनारी दी। बाबा इतिहास नाटक के
लेखने वाले की मीथ विचारों का
कि लाल का मिथल अलग बिना नाटक
करने नहीं होता। लाल की किस्मशा
उलट लाल बाबा प्रयास है कि लालो

करते हैं परन्तु इन नाटकों ने सखार के प्रसृत्य व्यवहार में कमी तो नहीं की। केवल बच्चों द्वारा कम प्रशिक्षण ही तो नाटक की सफलता नहीं है। इसी प्रकार वैज्ञानिक उद्योगों के साथ साथ यदि सत्य का प्रचार नहीं होता तो देश के सम्पन्न और कल्याण समृद्ध होने में सन्देह ही है।

[illegible]

तीसरा गुण है शीला । यजुर्वेद में
कहा है—

कृतेन वीक्षमाणापोति
वीक्षमाणापोति वक्षितान्
वक्षितान् वक्षितान्
वक्षितान् वक्षितान् ।

(बहुर्वेद उपप्राय ११ मन्त्र ३०)

तुमका परिवार ब्रिज है । वा मनुष्य
 तुम काको के लिए फिर कारेल करेगा
 तो उधको उधको कने का ब्रिज-
 कारा मनुष्य को बताते हैं । जब कभी किसी
 को दे इस प्रकार के उन्म मनुष्य उलान
 रहते होते तो निता मनुष्य के देस का को
 निरुह कने मनुष्य को उध उध मनुष्य
 को कने उन्मति बरिचि रहते हैं । तो
 देस के कपारो मनुष्य रहते हैं काते हैं
 को हैं ओर उन्मति हैं परतु बह का
 पाति उन्मति कायम रहते हैं । जैसे 'म
 के कपारो पसु की ओर उन्मति रहते हैं उन्म
 प्रकाश हो की रहते हैं । कोक नो होय
 कायम का हानि । कोक नो होय
 ब्रजवाकि देस रहे या मनुष्य को काय देस
 मनुष्य में ब्रिजवाकि कोसमा उन्मति हैं
 ब्रिजवाकि देस मनुष्य काय रहते हैं ।
 रानु उन्मति के मिसा को मनुष्य को ब्रिजमा
 नो । बर गिर उन्मति के निरे हुए मनुष्य
 का हनुहरे के रहे । या मनुष्य काय
 पाति । मनुष्य के काय मनुष्य के मनुष्य
 पसु पसी मनुष्य । उन्म प्रकाश हो के मनुष्य

[illegible]

★ वक्तव्य-सन्देश ★

उपासना

उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टाङ्ग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वनिर्गमि रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो जो काम करना होता है, वह सब करना चाहिए।

जो उपासना का आरम्भ करना चाहे उसके लिए यही आरम्भ है कि वह किसी में वैर न रखे, सर्वदा सबसे प्रीति करे, सत्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, चोरी न करे सत्य व्यवहार करे, जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो और निरभिमानी हो, प्रसिमान कभी न करे।

राग द्वेष छोट भीतर और जलादि से बाहर पबित रहे, धर्म से पुण्यार्थ करने से लाभ में न प्रसन्नता और हानि में न प्रसन्नता करे, प्रसन्न होकर आलस्य छोड़ सदा पुण्यार्थ

किया करे, सदा दुःख सुखो का सहन और धर्म ही का अनुष्ठान करे धर्मार्थ का नहीं। सर्वदा सत्य शास्त्रों को पढ़े पढ़ावे, सत्युक्तों का सङ्ग करे और श्री ३५ इस एक परमात्मा के नाम का अर्थ विचार कर नित्य प्रति जप किया करे। अपने आत्मा को परमेश्वर की आशानुक्रम समर्पित कर देवे।

जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कुतश्च और महामूर्ख भी होता है, क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रखे है उसका गुण भूल जाना, ईश्वर हो को न मानना कुतश्चता और मूर्खता है।

—महावि दयानन्द

सम्पादकीय

पहले धूँएँ और धमाकों का इलाज कीजिए

पञ्जाब की धरती के वे गीत जिनमें गाया जाता था कि सोने की धरती है चारो सा पानी, घर-घर में गुजरी है युद्धों की बाणी। अब वहाँ आम है, धूम्र है, चारो तरफ स्वच्छता है। गीत सो गए हैं, उनके गाने खानों के हीठ कड़वाहट से लिप्त हैं। हर कोई एक दूसरे को सम्बेह की नजर से देखता है। घटनाक्रम बड़ा तेजो स प्रसन्न है। कल के विषय में सब कोई आशात और आतंकित हैं। जिन्होंने धूँएँ और धमाकों का धूम्र और लाठी का व्यापार वित्त कई वर्षों से शुरू किया है, वे बुना दारुदे चाहते हैं चारो तरफ आतंक हो आतंक हो हिन्दू तबकबात छूटपाते पञ्जाब से बाहर और बाहर क सिल अपने को भ्रष्ट-रक्षित समझ पञ्जाब जाने के लिए एकाएक तयार हो जाय। यह आतंकवाद प्रयत्न जब पताल तक पहुँचा चुका है। एक हा समय एक ही दिन अनेक प्रांतों में बिस्कोट तथा सर्वदनाशाल, महत्त्वपूर्ण स्थानों पर भी बमों का पाया जाना उपवाधियों के द्वारा और उनके होसवा का तथा उनके सबक गिरोह का जोता जागत प्रमाण है।

उपवाधियाँ पर सैनिक कायबाहा को एक वर्ष होने जा रहा है, उपवाधों कोललाय हुए हैं उनका प्रशासक मानसिकता निर्दोष मायूम लागों के बूत को हल्ला बेलना चाहता है। पन्तु धारा करने को उनको तयारया पूरा है उनक सतराक सकत भासिल है। हिन्दुत्वान के एक सबादवाता क अनुसार सृष्ट एक, सृष्ट दो और सृष्ट तीन। वे है कुछ उपवाधियों के कुछ गुप्त सकत जिनका प्रमाण उपवाधों प्रयत्नो हिसात्मक कार्रवाइयो को सवालित करने में करये। इनका प्रयोग आसन्न वल्लुबारा सप्ताह के दौरान होगा। पुन हुए इसाकी और लक्ष्यों पर सकत मिलते हैं उपवाधों सक्रिय हो जायेंगे और सुन-खाना भवायने। सृष्ट एक का धर्म है एक समुदाय के (हिन्दुओं) लोगों की हत्या। सृष्ट दो का धर्म है देश परटियों पर बम रखना और सृष्ट तीन का धर्म है दुष्टों में जहर डालना-द्वन गुप्त सकेतों से उनके धर्मात्मक सतराक इरादों का सन्दाह लाना हा जा सकता है। वे इससे भी कहीं बड़-बड़कर सोच रहे हैं। आम नागरिक इस हासत को साक्षी भाव से देख रहा है लेकिन बीरो-बीरो साधारण नागरिकों के मन में जो लावा बहने लगा है। लोग अपने भाषकों भ्रष्टरक्षित समझने लगे हैं। उनकी मुकुटिता तनने लगी है और मुकुटिता कसने लगी है। अब समय आ गया है, सरकार इन हथारों को इन देश शोधियों को कठोर पदक देकर आम नागरिक के मन में सुरक्षा की भावना जगावे अन्यथा देश सुडबुड के कमार पर आ पकचने।

सैनिक कार्रवाई के दौरान जो फैली जोश में आकर अपनी छावणियों से निकल पड़ के उनमें से ५०० सैनिक पकड़े गये जा सके उन प्रथित सैनिकों का सतरा भी कम नहीं है। उनका पकड़ा न जाना भी प्रशासन के निकम्बेवन का सङ्गत है। शूद्धमनो ने रहस्योद्घाटन किया है कि बहुत बड़ी मस्या में ऐसे पाकिस्तानियों को गिर-पार किया गया है जो जिम्मा का नेव बारण्य कर भारत में घुस भाये थे। सरकार ने मिन छात्र सप्त और धमाकी देन के सिरफिरे सत्यो को धमकी बड़ी सत्या में पुन गिरपार कर लिया है और आतक विरोधी वातून भी पारित कर दिया है। भाषा है इससे उपवाद पर काबू पाने में सकलता मिलेगी। शूद्धमनो की भाषाओं के प्रति हमारी सहानुभूति भी है परन्तु राबदण्ड जैसा कठोर होना चाहिए वह दिखाई नहीं पड़ रहा है। भी चल्हाए कहते हैं हम बातचीत के द्वारा समस्या का समाधान चाहते हैं वास्तविकता तो यह है कि प्रकालियों की प्रमुख माय मानी जा चुकी है लेकिन फिर भी समस्या मुह बाये ज्यों की त्यों और ज्यादा बड़-बड़कर सामने लगी है। यह सुविचारित मत है कि पञ्जाब में अगर कोई समस्या है तो वह उपवाधियों के कारण है और आतकवाद से ही पदा हुई है। इनलिए समस्या है उपवाद और गुण्ड-गर्दी, इसका हल राजनितिक बातों से सम्भव नहीं है समाज विरोधी तत्त्वों से निपटने के लिए दण्ड की आवश्यकता है। आतकवादी पञ्जाब और निकटवर्ती राज्यों में व्यापक िसा भटका कर देश को एकता और प्रसन्नता को तण करण चाहते हैं। ऐसे तत्त्वों से बातचीत करने से कोई लाभ नहीं निकल सकता।

सैनिक कार्रवाई की वर्षगांठ पर उनकी योजना बड़ी खतरनाक है परन्तु प्रशासन यदि सतर्क रहे तो आतकवादी कुछ भी नहीं कर पायेंगे। अब तक दिल्ली में जो भी आतकवादी गिरफार हुए हैं वे आम नागरिकों की सतर्कता और सराहनीय प्रयत्नों से हा सबन हुआ है। पुलिस तो केवल महत्त्वपूर्ण सुराहा लगने हैं इसी को विचारित करती रही है। वे महत्त्वपूर्ण सुराग पुलिस को छोटकर अन्य सब की समझ के तूटे से बाहर हैं। अत सरकार को व्याग रखना चाहिए कुछ मुदती भर सिरफिरे पुरु समाज को आतंकित कर सकते हैं। साम्रदायिक विद्वेष की धाग भटका सकते हैं। इसलिए उपवाद का इलाज पहले करना होगा।

तिर सना सा कटाइये पर बम न मारिये ।
बंजिब हमार दूर हो, हिंमत्त न हारिये ॥

यह हूँ मैं बनाया करते हैं कि इनमें
 मिल चुके हैं परमात्मा यह प्रथम भाग सोचो
 की की पुकार पर जेब में जेबों । हमारे
 के कोई नाम नील की हृदी पर लताओं
 को भी नाम हैं कहूँगे कि परमात्मा ही
 उन सब नामों घणना नाम विरलासनी रखा
 हुआ था । इस लोचन में यह प्रथम राव-
 नील नाम । परमात्मा ही । गुप्तिष्ठ नाम
 हुम्नाम्ना परमात्मा की अपनी की को
 लोचन में बाध कर गुप्तिष्ठ हैं स्वामी की
 के पीछे सोच कर बाध दिया । बहुत हूँ
 नामों के कि मैं नाकी सोचता । मुसलमान
 माने हुए नामों को बहुत मोटे नाम ।
 ईश्वर का विधि विधान है कि हमारे
 नामों की को एक की बात में था ।
 स्वामी ने कौन एक को बना नाम ।
 'नाम की याद को बहुत दया है 'बुद्धि
 को 'मैं ही हूँ 'स्वामी देखने की मैं
 करता, 'मैं ही हूँ 'स्वामी के कारण
 देता हुआ नाम । मैं ही को सब नाम
 नामों की देखने में हूँ हूँ कर वाद-
 कर रहा हूँ ।' भाए । इन सब नीलो
 का स्वरूप कर जेब में हिलको का नाम
 को सोच में होना ही । (अन्त)

ती विभागात कामोत्तर वाढवण्यात
 का विशेष महत्त्व राखण्यासाठी केले जाणारे
 कामांमध्ये, कामगारिकांची हे हक्क
 वाढवणे हे कम्युनिस्ट, समाजवादी काँग्रेस
 पक्षाचे हे मार्कात्मक वाढवणे हक्क आहे
 साहित्य सुलभ मे रत राखणे बाबते, शिक्षण
 हे महत्त्वाचे हे कम्युनिस्ट पक्षाच्या हक्क
 कात ही हे रत राखणे वाढवण्यासाठी
 उपाय हे विविधित वाढवण्यात ही हक्क
 हे मातम साहित्यकारांनी ये । शिक्षण,
 शिक्षण पाठ्याची १९२४ का मातम
 स्वातंत्र्य वाढवणे, लोकस मंत्रिणी, विता
 का सुव्यवस्थापक दिसावा, मातम जन्यते,
 राखणे, मोया-मत्त दिसावा सवस
 हाक केवळ मराली मातम ही सुवि,
 राखण्या, मातम मातम प्रावि
 राष्ट्रीय स्वाति स्वाति स्वाति हे रतवा
 ही वाढवण्यात मातम मातम हे रत
 ही नती मातम विवधरत मे ।

भारत के ही नदी विश्व के सब मनुष्यो
 भ्रातृनिष्कारी प्रियेने अपने महान् ध्यासे
 स्वर्णाय एक स्वर्णमय के सजीवना प्रधान
 की भारत के पुनर्जागरण मे दोष निम्न-
 प्रधान करने के हरे सुख सुख की जीवन
 के हरे क्षण मे समर्पणी पाते हैं। (१) और
 साविकर भारत का पशुना क्षत्र या विश्वे
 देवमन्त्रि के धारो मे कासेज स निष्ठा
 निवेदित किया। (२) और साविकर
 प्रथम युवक का बिहने सर्वप्रथम विदेशो
 बनेको की होनी उसने का प्रत्यक्ष किया।
 (३) और साविकर विश्व का पशुना वैदि-
 त्वा के बिहने परीक्षा पाते होतो हुए की

विश्वरत्न

स्वातन्त्र्य-वीर सावरकर

नरेन्द्र अवस्थी—सचालक भार्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

प्रमाण-पत्र नहीं दिया गया, (४) वीर सावरकर पहला भारतीय युवक था जिसने सन्तान के अन्तर १८५७ के तथाकथित गदर को भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम का

पुस्तक १८५७ का 'स्वातन्त्र्य समर' को प्रकाशन से पूर्व ही खन्त कर लिया गया। जिसकी केवल एक प्रति उन दिनों दो सौ रुपये में बाजील के एक पाठक ने खरीदी

२८ मई १९४६ को कानिन्कारियों के प्रेरणाक्षोत स्वातन्त्र्यवीर सावरकर का जन्म दिवस था। वीर सावरकर युगप्रदाह मूर्धन्य दयानन्द जी के चिन्तन से धर्मार्थिक प्रभावित थे। मराठा भाषायी दक्षिण में उन्होंने गहन दयानन्द प्रभाव के रूप में लेलमाया को लिखा। महान्त कानिन्कारी दयानन्द स्वयं भी कृष्ण वर्मा के प्रथम विषय वीर सावरकर ने १९०६ में हिन्दुओं को राष्ट्र-भाषा बनाने की घोषणा को प्रोत्साहित की था। मुक्त माया सुलताना एक सकलित पक्षों की बात करती। उन्होंने सावरकर की जेल में ही बान्धवों को हिन्दी पढ़ाना प्रारम्भ किया। वे कभी साधवों को सत्याग्रहप्रकाश मुनित थे। उनका जेल से हिन्दी प्रचार बहुत सफल रहा। जहाँ प्रवेश जेल के कानायक का काम ६० प्रतिशत प्रचार से होता था उनके प्रचारों से नागर्यरि लक्षित में प्रान्त लगा। उन्होंने भारतीयों के बाद प्रथम माया बनाने की माया रखी। उनके उद्देश्य वीर राजनीति का हिन्दुकरण, हिन्दुओं का सैनिकीकरण' न देश का औद्योगिककरण यदि हिन्दु माया में लागू होते तो आज राष्ट्र की प्रसन्नता को चोट न मारी। भारत तीवरी शक्ति बनकर विश्व के मान्य चिन्तन में उभरता

नाम दिया तथा १० मई १९८७ को १=१७ का अग्र सताब्दि समारोह स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाया। (५)वीर सावरकर शिक्षक प्रथम-लेखक हैं जिनकी

बी धीर जिसे कानान्तर में क्रान्तिकार
चन्द्रशेखर, कबीर ए-भाजम भगतसिंह व
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने प्रकाशित कर
प्रकाश किया। (६) बीर सागरकर

[illegible]

महान् क्रान्तिकारी की प्रेरक जीवनी,
उन द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें प्राप्ति हेतु
व उनके चिन्तन की गोष्ठियों के माध्यम
से ग्रहण करने हेतु मिलें या पत्र व्यवहार
करें।

उस समय दिल्ली की गद्दी पर अकबर-
शह जलिकों की सहायता से बैठा था।
यह बहुत लंबी तथा भिन्न-प्रकार का था।
राजपूताने के पिताओं के विरुद्ध पर उस
समय राधा को मुगल विजयमान के
बन्धन में लेना कि उसका कि राधा की गद्दी-
रानी पंथिनी बहुत ही सुन्दर है। यह
पंथिनी को छिड़ी भी अकबर पाने के लिए
बड़ी भारी सेवा लेकर राजपूताने का
और देशवास के मोहों दूरी पर उनसे
बेहतर सेवा का पाना था। उस वृत्त में
राधा के पालन सहित थे—“मैं पंथिनी
का पालनियम रखे मैं देखकर सेवा
वाहना” गद्दीरानी भीम वृत्त में क्षति
काव के लिए अपने कलाप करना अन्ध-
बुद्धि हमना। उनके अन्धान पर राजपूताने
का प्रतिक्रिया उन्हें दिखा दिया गया।
नौदते हमना राधा पर राजपूताने का
पुनः पाने। कुछ से बहुत भ्रातृव
के पाने से अन्धन दीनक जिना रखे में।
उन्होंने राधा पर काकाक्रम करने उन्हें
पुनः राधा पाने बड़ी नकारक सेवा
विधिर में से स्ये।

रास्ता के बंदी हो जाने से चित्तौड़ के

किशोरमञ्च-

वीर बालक बादल

[illegible]

पायल में रानी बना हनी बेच में छिपा
 बरतन पलक से लुलुलियात करे। बाहू
 बाहू का मुँद-बार आनाक वापस वापस
 थावावा। हठारी पालनमें भी आ रा-
 मुत मोती की डेंट में थोरे पलक। उठाना
 बहने बहारी के डेंट में जो अजुत पावस।
 कल की राखुल की मुत करेने। वा
 देनै ना-कालीन में के शाव मुत का पार
 लहोने मेज दिवाणी। स्वयं पलाउदनी
 की सना पर बलकल करेट्टे पद। थोरा
 इत सना का भयानकल सने सना।
 बालन में हस मुँद में भरमुत वासना
 विलसुती। विलन मुठरी पर राजमुत
 कल के सना। सिलनला थानी सने स
 कक तक कलकी। गोरा लजमुत में सेत
 हल। सेतो हली में सतवार बलकल
 रघन वैलिके की गावर मुत की शक्ति
 काठवा मुत बासक बासक वापस में मुँद
 बाहू। धमराउदनी वासना वा किन देनै

[illegible]

—प्रस्तोता बलजीत शास्त्री

१ वेद विद्या एव विज्ञान का भण्डार है-

वन् म विविच ३ प्रकार का विज्ञान है ।
यह विज्ञान जो के माध्यम से हमारा ब्रह्म
ये प्रचलित था और उसका प्रयोग किसी
न किसी रूप में था और प्रचलित था ।
महर्षि व मा न्यायन के सत्यतो ने
सत्य घोषणा की कि वे सत्य ज्ञान
विज्ञान जो रूप से है और ब्रह्म
के लुब्धको गत स विज्ञान कर
विज्ञान के सहायन पर ब दिया ।
धाम के समय में यज्ञ की वैज्ञानिक
उपयोगिता का प्रत्यक्ष प्रमाण घोषित और
प्रमाण म होने लगा है और उसके लिए
विज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण प्रतीति होने लगे हैं ।

२ यज्ञ काय वैज्ञानिक है—

वेद ये यज्ञ को विरचयिष्यक कहा है।
 धर्मयुत यज्ञ प्राप्त समस्त विषय को लास्यथा
 प्रकृत्योक्त यज्ञा श्रम होता है और प्रसस्त
 योग तथा योगो क कारण स हो का
 प्रकृत्योक्त का विचारण ही होता है। प्रत
 श्रित श्रितियिष्यन न कोन सा प्रत
 श्रमकार क सत्ता विचार करने से ही
 यज्ञ विज्ञान का विवक्ष करने में सफलता
 प्राप्त होता यज्ञ के ३ प्रधान भाग हैं
 १ सकल्प २ मन ३ ध्यातिष्ठ
 सकल्प के विना यज्ञ नहीं हो सकता
 मन के विना भी यज्ञ नहीं हो सकता
 और ध्यान ये हृन्ध पदार्थों को ध्यातिष्ठ
 श्रिति विना यज्ञ नहीं हो सकता। इन
 तीन हीना का समन्वित कार्य यज्ञ है।
 सकल्प होता है यज्ञ सम समर्पण है। यही
 यज्ञ का आधार स्तम्भ है वह कहाता है—
 यधानो यज्ञा कृतयो यज्ञो विवक्षत। यजु
 र्वेद २११/१३, धर्मयुत कथाकारों यज्ञ
 करने के विचारण धर्म को प्राप्त हो।
 यज्ञ विचारो ये निमग्न हित उद्ये करने
 के श्रित उद्ये हो जाता है तो वह सकल्प
 हो जाता है।

३. यज्ञ कार्य में मन्त्र की प्रधानता—

लौकिक अथर्व म मत्र का षष्ठ
विद्या का है हो म उमा की परमात्मना
इन्द्रा का म ड के हो म उमा को प्रशान्त
से ब्रह्मण किया जात है। म म ५३ बासक
होते है। प्रत्यय का प्रमाण प्रथम अंतम अक्षर
पु। ध्वनि का प्रमाण ५ नाक से प्रत्यक्ष
हट है कि विद्वान् अर्जुन क उन्मात्प
एव प्रसाय म म नमिक विवक्षितया
उत्पन्न होत है। बीरस्य वा ध्वनितो म
मीरता का लकार प्रत्यय की ध्वनि को
प्रथम गान् मरु की ध्वनि को प्रथम
वोकात्पुव ध्वनितो है ॥०६ का वा
रह होता है। मीर बहु प्राप्ति को म
मन प्रथम प्रमाण कहते है। म म क प्रमा
वित होत प रवदनुक्त ध्वनि की लपट
होत है मीर उन्मात्प को ब्रह्मण हो कनो
की प्रवक्षित उत्पन्न होता है। म म व

यज्ञ - विज्ञान

लेखक श्री प० वीरसेन वेदश्रमी वद विज्ञानाचार्य

विचार पूरा न हो से शिक्ष कल्याणकार
कर्मों की विश्व में वृद्धि समृद्धि बाहु
ल्यता और व्यक्तता अवश्यम्भावी है।

४ मत्र छन्दोमय है-

[illegible]

५ छन्दःआत्मक मण्डलो का निर्माण-

५५ वर्यापि भवान् कृत्य ते ५१ परन्तु
 इत्येतां कृत्यो को ही प्रमुखाया ते तीन
 विभागो ये विभक्त्य विधा । ये तीन
 विभाग ही सु भूय स्व ५१ । कृत्य परि
 भाग ये ये गायत्र महल्ल क्रिष्टुय महल्ल
 ही ज्ञात महल्ल ५१ । इती मन्त्राद्यैः क
 प्रत्यो ही कटिं ये लिप्ता गायत्र कृत्या
 रोह नैटुय महल्लरोह ज्ञात कृत्यो
 र्ग कृत्या गायत्र त्वा ज्ञत्वा हाव्यामि
 जायते त्वा कृत्या त्वाद्यमि वषवा
 जायते त्वा कृत्या त्वाद्यमि नैटु
 भेत त्वा ज्ञत्वा मवायि, वागनेत त्वा
 कृत्या मवायि को प्रक्रिया का यजुष्य
 ये दान्य मवायि पर उवसे ५१ । इस
 प्रक्रिया क द्वारा पृथ्वी क्षमरिज हीर
 बुधोक्त मवायि मनोवाक्क्ष विचारो ही
 आत्य ही जाती ५१ ।

६ मण्डनो । देवतत्त्वो एव
प्राणो का क्रियाशाल एव शक्ति
सम्पन्न करना—

० न म डलो के धग्नि बायु एव मूय देवन्त्य हैं। इनको भी सतेज करने क लिए धग्नि का दूत बना कर धग्नि दूत पुरोदधे। यजुर्व २२ १७। यथाय धग्नि की स्थापना अपने सम्मुख जुभुव स्व मन्त्र से त्रिलोको को प्रभावित करने के

सिंह करनी पड़ती है। पुत्र उत्तम प्रयत्न
ब्रह्मनिष्ठ थे तीनों ब्रह्माणाहुतिर्वै स उनको
देवत तन्वो के साथ उत्तम सिंहास प्राण
ध्याना और ध्यान तन्वो विष्णु प्राणो के
लिए ब्राह्मणिया को जाती हैं। यथार्थ ब्रह्म
ज्ञाता समस्त ब्रह्माणाहुत य जिनोको के
प्राप्ति को किंवा यिनो 'गुण' एवं पुण्ड्र
किंवा जाता है। इसलिए वेद में यज्ञ को
विष्णुका अर्पित। यजुर्वेद १०। १६। कहा है
यथार्थ सप्त सङ्गात का प्राणो पोषणकहाँ है। यही यज्ञ का प्रधान लक्ष्य है। जिस
यज्ञ में ब्रह्माणाहुतिवो उनके वैश्वत तन्वो
और उत्तम सिंहास प्राणो के लिए ब्राह्मण
निष्ठ ब्रह्म यज्ञ पवित्र होती है।

७ यज्ञ का त्रिलाकी में गमन-

[illegible]

८ यज्ञ से सुख की प्राप्ति—

यज्ञ क्रिय जाने पर यक्षणि बहू तीनों
 लोको में व्याप्त हो जाता है परन्तु वह
 इन स्वभाव से पुनः वसिष्ठनाली होकर
 हमें सुख प्रदान करता है। एषा वेद मे
 द्वाप्यं प्रसादा है। जैसा कि—यज्ञो देवानाम्
 प्रत्येति मुन्यम्। यजुर्वेद प्रभाषा ८ मन्त्र
 ४। यज्ञात् पिबानो हारा यक्षीयति यज्ञ
 यज्ञो को वात है भार्यास्थित को भवता
 मुद्रकम्—यक्षणि वह सुषोष्णिक एवं
 सुप्रज्वाला मे स्थित होकर हम सबको सुख
 प्रदान करता है। इसी प्रकार—पूजां हवि
 प्रदातुं सुषुषां यजुरासति। यजुः १४।४
 यक्षानि यज्ञं पुनरुपैति यज्ञे मे यज्ञः

श्रीर शक्ति पूरा होकर प्राप्त हो जाती है। किंतु प्रकार से प्राप्त हो जाती है।
उसके लिए मात्र क इतीय बरल के
उवाहय यह प्रस्तुत किया है कि जैसे
बाजार में खरीदते हैं वैसे ही यज्ञ के द्वारा
भी सुको को खरीदत हैं। प्रसात् यज्ञ से
सुको की प्राप्ति अत्यन्त कष्ट में होती है
यज्ञ प्रत्येक कथ के प्राप्ति में यज्ञ क
अनुष्ठान धन्य करमा चाहिए।

६ यज्ञ का महान् फल विश्व
मे माधुर्यता का प्रसार—

[illegible]

१० यज्ञ से फल प्राप्ति का एक अद्भुत प्रकार—

यमुनैव प्रत्याय २। मय २५ मे
 भताया है कि जमनी छत्र के म मो ले
 यम करने पर यम धुवोकी मे पृथुता है।
 विष्णु पृथु के म-नो ले यम धमतरा
 मे पृथुता है। पीर बायती छत्र के म-नो
 ले यम धुवो मे यताता है। पुन व
 स्थानो ले यम धुवो सुयम ए विभक्त
 होकर सब को यम धमतरा करता है।
 जमनी छत्र के म-नो ले किया यम धुवो
 पर पृथुताका को प्राप्त होकर जमनी को
 पृथुता है। म धमि मे पृथुकर
 वहा मे जल विभाय को प्राप्त होता है।
 को बायती वर्षा यम को धुविक प्रवा
 ले होय। पुन पर पृथु यम धुविक प्रवा
 के सुस की रुति करता है। धमिय यम
 जव धुवो के पृथुता जाता है। को उत्तरी
 पर धमिय यम के सुयम को ले बायती

ईश्वर दर्शन

इसीलिए "ऋषि सत्पते स्वामी" कहते हैं। अतः मैं बनाएट के साथ सब स्थिति मानते हैं। परन्तु तुम्हारे के काम। तो श्री विष्णु विद्वान् । उसकी जो सत्पते मैं से बढ़ो। ऐसा कहा है कि "परमात्मा ऋषि के नाम में है।" "मम ऋषि बन जाओ।" यह स्वयं तुम्हारे मन में था जाते। एक मनुष्य अपने से बड़ा हुआ भी त्याग करने ऋषि बन सकता है। अतः कहा, परमात्मा स्वयंसेवा करने। श्री जगह है, श्री लंकिनी जाहू भी उससे जाहू नहीं। उसे प्राप्त करने का स्वयं तुम्हारा क्षात्र करने। यह स्वयं भी तो तुम्हने की स्वच्छ ही श्री विष्णु। अब तब क्षात्र करने स्वच्छ न हो तब परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। मैं भी की पवित्र मानते। मैं भी की पवित्रता ही हो वह है। परलोक की पाप्मा पुनर्जन्म । (समाप्त)

समीक्षा-

सफल जीवन

लेखक पं० सुरेशचन्द्र बेवालकर, समीक्षक डा० विजय द्विवेदी, प्रकाशक आर्य बुधवार समाज (राजि०), किन्नेरले दिल्ली-६ प्रकाशन तिथि मेराराम बसिबसम विजय १९८५ सु० सं० ७० मूल्य रु० २०० मात्र।

प्रमुख पुस्तक में पं० सुरेशचन्द्र बेवालकर लिखित सफल जीवन कहलाता है। इन लेखों में बताया गया है कि बच के समयों द्वारा किस तरह हमें और जीवन के वास्तविक स्वरूप की जानकारी हो सकती है तथा मानव जीवन को सफल बनाना का सफल है। विद्वान् लेखक ने बड़ी सरल भाषा में बताया है कि मानव जीवन केवल कौटुम्बिकता का समारोह नहीं है। यह परमात्मा की देन है। जीवन की सफलता का यह मतलब कदापि नहीं है कि मनुष्य लोग बने हान ओलों के पीछे भागते हुए अपनी प्राणों के बहुमूल्य मज नष्ट कर दे। इसके विपरीत जीवन को सफलता, जीवन को प्रगति के चरखों में धारण कर देने में मिलित है। इसका अर्थ है कि मानव बच के जितना निकट रहता है उतनी ही उसकी प्रतिभा बढ़ती है, उसभा ही उसने नया उन्माद बढ़ाकर उल्लास छाड़ा है। जीवन की सफलता का दूसरा मुख्य बन्धन मन में भी है। व्यक्ति के बलवान् बनने के ही रास्ते बलवान् बनता है। इस कथन का समर्थन इसकी सभी वेब में लेखक की सारी सामाजिक कृतियों और महात्म्यो में किया है। अनेक यथोचित उदाहरणों के द्वारा प्रमाणित की है इस बात की सभी सम्पूर्ण तथ्य से समझाया है। इसी तरह 'मनुष्य एक मुक्ति' कहता है कि बताया गया है कि प्रमाणित यह मानव मनुष्य को कठोर और निर्भय मानता है। जबकि वास्तविकता यह है कि मनुष्य मनुष्य के लिए एक बरतान है अधिकांश नहीं। नैतिक संकल्प में मनुष्य की जीविलता नहीं है। मनुष्य तो वातो

जीवन नून में सगा हुआ सुन्दर पक्ष है। (२०१३)।

'मनुष्य (मनुष्य बनने) लेख में पं० जी ने बताया है कि देवता बनने की धारणा मनुष्य बनना अधिक कठिन है। मनुष्य बनने के लिए परमानुसार धारण करना पड़ता है। धन ही मनुष्य और मानवतर प्राणियों के बीच विभाजक रेखा कीचन है। धन से हीन मनुष्य और पशु में कोई फरक नहीं होता (पर्वण हीन पशुवि समान)। धन धन से हीन होना मानवता का बर्णन करता है। इसी तरह मानवता करना प्रभु का स्वरूप न करना, जीवन को यथार्थ न बनाना मानवता से परित्यक्त होना आदि ऐसे कर्म हैं जिनसे मानवता को क्षतिग्रस्त होती है, जीवन का प्रत्यक्ष पक्ष की क्षीय हो जाता है।

प्रमुख पुस्तक में भी सुरेशचन्द्र बेवालकर ने अपने कथन की देश-विदेश में बहुत प्रशंसा की तथा वेतों से उदाहरण देकर पुष्ट किया है। बहुत बढावाएँ देती होने के बावजूद भी सामाजिक जी है। इनका बन्धन प्रमाणित करने की पर, यद्यपि कोई खम्हे नहीं है। वैसे यह पुस्तक शिक्षकों के लिए लिखी गयी है, परन्तु इसमें सभी तरह के लोग सामाजिक जी तक है। बलवान् और उपलब्धों के लिए इसकी उपयोगिता अवश्य है। ऐसी उपयोगिता के अभाव में लेखक के लिए आर्य बुधवार समाज, किन्नेरले दिल्ली-६ के परा-विचारों कि सबेह बरफाई के राग हैं।

उपसमीक्षा—भी बचबारीप्रभाव आर्य की बाधकरल की बाहेती

बचबोब
बनबारीलास विह्वल मयी

निर्वाचन

बाबूबाला काटका का पठन विधि
पुनरा विनास (१९८५-८६) को सम्मन
हवा विह्वल निम्न पचाधिकारीय पुने
हवा—

प्रमाण—भी कोमेवर की मुखिया
बनी—बनबारीलास विह्वल
कोषाध्यक्ष—भी कल्याणमल विमल
मुक्तप्रभाव—भी बुधवारन
किरी मुक्तप्रभाव—भी प्रमुखसमीक्षा आर्य
कविप्रभाव आर्य

श्रीर हवा—भी राधवल आर्य
किरा परीक्षक—भी विमलराधवल बाहेती
अपप्रभाव—भी कीकृष्ण की बाबक,
भी विपरीतकी बाहेती
भीवीती सम्पत्तीवेदी की आर्य

श्री आर्यसमाज माइल यउन
दिल्ली का वार्षिकोत्सव

११ मई १९८५ रात्रिकार की शो-
हट्टे बने से ५५। बने तक बने हृत्प्रीति
के शान बहिला लोभने के रूप में सम्मन
हुवा। जिसमें अनेक विद्वती महिलाओं
द्वारा कीर्ति एवं श्रेष्ठताप्रकाश उपलब्ध।
इस कार्यक्रम की विवेचना यह रही
कि नई पीढ़ी को कार्यप्रभाव के कार्य-
क्रम में सक्रिय करने के लिए मनुष्यों को
सम्मानित कर आवश्यक विद्या नया।

अनुसूचता कीर्ति, मन्त्रिणी

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की वर्तमान स्थिति के
संबंध में निरीक्षण आस्था का संक्षिप्त विवरण

सार्वभौमिक आर्य प्रतिनिधि सभा की
धोर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
(परीक्षक) की वर्तमान स्थिति एवं उसके
कार्यों की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने
करने की दृष्टि से मैंने जन ८ ब ६ माघ
१९८५ को इसका निरीक्षण किया। सभा
के अन्तर्गत प्रमुख विभाग कार्यालय बर
प्रचार, आर्य विद्या परिषद, राष्ट्रिय प्रका
शन एवं विद्वत परिषद है। निरंतर
आस्था का संक्षिप्त विवरणना सभा
द्वारा किए जा रहे विषय उत्पन्न होने
कार्यों का विवरण यथा दिया जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की
स्थापना १५ विमल १८७५ को का
मई की धोर वर्तमान समय में इस
सम्बद्ध १५० आर्यमात्र ब ८ विद्वत
संस्थाएँ हैं। विद्वत संस्थाओं की प्रथम
समितिओं का निर्माण प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रतिष्ठित आर्य विद्या परिषद करी है।
विद्वत संस्थाओं में नैतिक विद्या तथा बच
की गई है धोर नैतिक विद्या की परी
क्षाएँ की जा रही हैं। नैतिक
विद्या की पुस्तकें मात्र १ के मात्र १० तक
सभा द्वारा प्रकाशित की गई हैं। वेद
प्रचार विभाग में ५० उपलब्ध (विमल
से २ नैतिक) हैं। धोर ३ अन्तर्गत
नैतिक रूप में कार्यरत हैं। आर्यसमाजों
के राष्ट्राध्यक्ष संस्थाओं में नियमित रूप
से उपलब्ध के अनेक के प्रतिनिधि ५ देतियों
में प्रचार कार्य व्यापक रूप से किया जाता
है। इस विभाग के अधिकांशता की स्वक्या-
त्मक की अपना पूर्ण समय देकर सुचारु
रूप से इसका कार्य संचालन करते हैं।
सभा के पास एक वेदाङ्गो बस भी है,
जिसका उपयोग प्रचार के अनेक में किया
जाता है। इस सभा में पिछले ३ वर्षों
में अनेकसंख्यी कार्य किए।

१ आर्य महासम्मेलन (दिल्ली के
३ विभागों को में)

२ प्रचार बाहुत का क्रम
३ महर्षि दयानन्द निर्माण सतानी
(सामकटोरा स्टेडियम दिल्ली में)

आर्य आर्थिक आधार पर हो

सरकारी सेवाओं तथा सार्वजनिक
प्रतिष्ठानों में कार्यवाही आधार पर आर-
ध की व्यवस्था से बातिवार, बचवार
की कुशल जोसाहल विद्य रहा है। साथ
ही बचवार में बचव व्यवस्थाओं के कारण
प्रकाशन तत्र पशु बनता जा रहा है
आर्यसमाज-व्यवस्था के कारण सुयोग्य
उन्मीषाकारों का चमन नहीं हो पाता है।
धोर बचवार उन्मीषाकार सरकारी पदों
पर पाखीन हो जाते हैं। आर्यमज के
अन्तर्गत निम्नलिखित योजनाएँ अर्थिक के मन
में एक हीन मानना व्याप्त रहती है,
जिसका अनुमान उसकी कार्यप्रभावता पर
की बचवसारणी रूप से पड़ता है। आर-

४ राष्ट्रिय प्रकाशन विभाग का
आर्यमज।

५ राष्ट्रिय प्रकाशन विभागों की
स्थापना।

६ पुरानी विमल विभागों का व्याप
महर्षि सुमनोरी राह।

७ दूरसूचना तथा प्रमाणन पो पर
वेद प्रचार एवं महर्षि दयानन्द पर एक
परिचर्या।

८ प्रमुख मानवाचार प्रगति से सैदा-
निक विषयों पर लेखों का प्रकाशन।

सभा की धोर न एक सार्वजनिक
पत्र प्रकाशने २०० को मन्थन में निर-
मिन का से प्रक शित होता है। पत्र के
सारक की व्यवस्था सुचारु में चोप्यता
पूर्वक इसके कलेवर को संचालन है। इस
पत्रिका का स्वर उन्नत होता जा रहा है।
सभा की धोर से सेवा प्रत्यक्ष के रूप में
वीरानुवाद हस्तगत का संचालन की
किया जा रहा है। इसके मात्र ही अनेक
आर्यसमाजों में धारने विकसित करने
कोने हुए हैं। पिछले वर्ष सभा ने सार्व-
जन्य पर १५४२५, वेद प्रचार पर,
७६०५०, आर्यसंस्थाएँ, पत्रिका पर
६५,७५६ आर्य विद्या प्रचार पर
४१४१ धोर वीरानुवाद विकसितकर
पर ६६,६०० प्रत्यक्ष व्यय किए।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की
बहुसंख्यी प्रगति संचालन सार्वजनिक है।
समस्त धोर प्रचार के सभी पक्षों पर
व्यापक विद्या का रहा है। को प्रचुरकीय
है। कार्यप्रति की व्यवस्था व्यवस्थित है।
कार्यप्रति की व्यवस्था सामान्य है।
धोर कार्य के प्रति उत्साह है। सभा के
वर्तमान प्रचार की पूर्णदेन, सभी डा०
बनप्राय प्राप्त तथा कोषाध्यक्ष की धोर
प्रकाश सुनेवा है। सभी सभा के कार्यों में
पर्याप्त समय देते हैं। इनके अनुसन्ध
वे सभा का कार्य प्रगति पर है।

डा० दयानन्दप्रभाव
निरीक्षण एम्स उपसमीक्षा
सार्वभौमिक सभा, दिल्ली

सभा का आधार बालीय होने के कारण
वैतनिक विवेक मनोभाविय बढता है।
धोर सर्व सच का रूप प्रहलु कर लेता
है, जैसा कि इस समय मुजरा में हो रहा
है। इस व्यवस्था के कारण के मुक्त
की सुयोग्य तथा मेधावी हैं, तथा का बचवर
नहीं पाते धोर देश तथा समाज को भी
उनकी प्रतिभा से बचव प्रहलु पड़ता है।
बचि बारलस की व्यवस्था जातिप्रत्य
के स्थान पर धर्मप्रत्य आधार पर की जाय
तो समाज का अधिक हित रहने मिलित है।

राधेयन 'आर्य' एडिटेड
मुद्रापरिचालना, सुतागन (२ प्र)

श्रीश्री श्रीगुरुदेवकी आज्ञासे

कल्याणमार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द

प्रसिद्ध साहित्यकार काका कालेलकर

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रायः
जाति का मनोन्मत्त स्वभाव पूरुषतया
प्रतिबिम्बित था । मैं अपने जमाने के
कर्षाङ्गीण प्रतिनिधि थे । सामान्यतः
अस्थिति में रहते हुए भी प्रायः
पुरुष अपने पुरुषावस्था में होते उच्च
और असाधारण कोटि तक पहुँच
सकते हैं इसका उदाहरण स्वामी
जी के अफ़सानी जीवन में हम पाते हैं ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जो वैदित्य वेद ने प्रकट किया उसका बहुगुण ग्रन्थिक से किसी ने किया था तो वे स्वामी अद्भुतमान्य होंगे। चर्म प्रचार किया प्रचार धीरे लोकसेवा की ओर श्रोतों में सम्पन्न जीवन प्रतीत करके उन्होंने बतिलाया वे जस में जीवन यज्ञ का अद्ययुत स्नान किया। गुप्त धीरे निर्णय बोनी पुष्पांशु ने धरने निर्णय जीवन से मृत्यु को प्रकट किया।

अनाथ हृत्पारे का बदला न
लेकर उनके असह्य अनुयायियों ने
अपना धामत्व ही सिद्ध किया है।
निर्गुण पुरुष का रक्त सांस्कृतिक
क्षेत्र का उत्तम स्वाद है। स्वामी अद्या
मन्त्राली ने जीवन भर अपने पसीने से
सेवा की धीर अन्त में अपने खून से।
इसलिए वे अमरपद प्राप्त कर लें।

सत्त्वा बोलना और चलाना
भाजकल सामान्य सी चीज हो गई
है क्योंकि जनता देख चुकी है कि
लोक जीवने में मुख्यव्यवस्था सत्त्वाओं
का बहुल कितना है। लेकिन जब
शुद्ध दयात्मक सरस्वती ने आई
सत्त्वपूर्ण के भावना का आशुत करने
के लिए सत्त्वाप्रकाश ने नई शिक्षा
प्रणाली का आरंभ क्या किया तब
गौरवपूर्ण सत्त्वों संस्थाएं बहुत



कम थी। ऐसे समय पर सचकल त्याग कर धारण पुनो की साधने लेकर गया कि दैत पर जाल में जाकर ससत केवल अद्याधन पुरुष का ही काम था। मानो बहु दुःख का विषयवस्तु यज्ञ ही। मुँ पीराम की चाहते तो थे किसी भी क्षण में अपनी कार्य शक्ति का परिचय दे सकते थे। फीज में दाखिल होते तो नामासिक सेनानी हो जाते। किसी रियासत की सेवा में प्रवेश करते तो प्रजापतिपुत्र प्रधान बन जाते। राजनैतिक क्षण में प्रवेश करते तो महाशय की भुजा का बहल करते। केवल धर्मपिण्डक बन बैठते तो हठानुरी हठधन्य शासित बन रहे।

साहित्य सेव का येना पसन्द करत
तो साहित्य सभ्र दो से कर भार
बहुल करने को योग्यता प्राप्त करत
परन्तु उन्होंने सब खोद कर शिखा
का ही काय ग्रथना जीवन काय
बनाया इसीलिए मेरा खिर उनके
सामने कम्ता है शिखा का क्षत्र
जगन मे धरती उतना प्रतिष्ठित नही
है की ब्रिजान उमका ग्रथिका है।
तो भी अनुप्य ज्ञानि को उसम सेवा
शिखा द्वारा ही होने को है।

शारीरिक शक्ति, द्रव्यशक्ति
 राजशक्ति सद्यशक्ति इत्यादि सब
 शक्तियाँ छिन्ना शक्ति के मुकाबले में
 गीरा हैं। ब्राम्हिकता सेवा ज्ञानो

पासना और बलिदान यथा जीवन का सब है। और इन जीवन तत्त्व का पोषण केवल शिक्षाप्रसार से ही हो सकता है। दीघदर्शी समाज पुत्र ही इस बात को समझ कर शिक्षा के क्षेत्र में अपना ध्यान कर सकता है। वे सच्चे ब्राह्मण वे और ब्राह्मण होने के कारण ही वे हरिजन सेवा की विशेष जिम्मेदारी अपने सिर पर ही ऐसा समझते हैं। स्वामी श्रद्धा नन्द जी को इसीलिए भी जातिगुह कहता है।

कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी
अग्रनान्न जो भी सेवा श्रमणी रहित हो
प्रधान है। राष्ट्रीय शिष्यण चर्च
जाति समाज सेवा प्राथमिक
अनुभव के उद्देश्य भावतत्व को एक
नया ही रास्ता दिनाया है। अन्दा के
बल से ही ये श्रेष्ठ तत्त्व कर मेने। जिस
दिन उ हर्षि तत्त्वने प्रिय पुत्रो को
लेकर प्रहसल को स्वागता के सहक
दे गया के तट पर निवास किया
दिन भागवत के वनमान इतिहास
से महत्त्वपूर्ण का था उस दिन
उन्होंने हिन्दू जाति के उदार की
नीज डाला ऐसा कहा जा सकता है।
जिस दिन उ होने पर प्रयत्र मानको
को अग्रनान्न उसी दिन हिन्दू जाति
को उन्होंने समर्पित किया। और
जिस समय उन्होंने पुत्रता गोली धरी
सञ्जय की तत्त्व पुत्रता की नजर
से देहा उसी दिन भारतवर्ष के
उद्देश्य निम्न किया अग्रनी अग्रनी
नीज अन्दा मे उ होने अग्रना सीमा
नाम सम्पन्न किया। समय अन्दा
नन्द राष्ट्रपति मे। ऐसा समय अजर
भाषिया था उस उनके धवी शरीर
(विष पृष्ठ ६५)

सत्सम वाटिका

श्रुति कुटुम्बको धारण्ये ।
देवता इ । श्रद्धा निष्पुष्टिमुप ।

अथर्व — बुढ़ान सन्तु विष्णु समने
बहुना द्वाए पवित्र जगार । देवस्य महित्वा
काव्य पद्य ह्य समान स ह्य समार ।

अथर्व — (बुढ़ान सन्तु) एक ऐसे
नवयुग को (विष्णु) विविध कामना
करने वाले को (सन्तु) युग ने (बहुनाम्)
बहुतो को (इहायुग) मार मारान वाला
है (उसे) (पवित्र) एक युव (जगार)
निगम जाता है । (देवस्य) प्रभु के
(महित्वा) बड़ महान्त वाले (काव्य)
काव्य को (पद्य) वसा (क) (ह्य) ह्य
प्राप्त को हल की रहा वा (ह) वह
(ह्य) ह्य (ममार) मर पडा है ।

अथर्व — इस मन ने बड़ काव्यमय
इस स सारा की कलुसगुप्ता बिलकर
परोक्षरूप में यह प्ररक्षा की क्या है कि
इस स सारा के कुछ कुछ, मय-मोक्षवि
हन्त की चक्की में घिसने से तू उठी की
धाम्य ने बाहर भाग पा सकता है ।

ससार में बड़ बड़ बिहान् हुए बिहाने
कलुषम वैदिक दौर बौद्धिक माधम्य ज्ञान
मा । जिन्हें अपनी बहुतायत पर बड़ा
इतिमान था । वे सहाय्य और विषय
इस स सारा स क्ये बने राम के वैदिक
का यतन करता हुए बालीक भक्ति ने
मिका —

सप्तविंशत्यस्तसो मयाप्यु साङ्गैरेवित् ।
इत्यर्थः यं पितुं श्रेष्ठो बभूव भरतप्रसादः ॥
भा० राम धर्मो १।२०

राम सप्त विंशत्यो को पठकर सप्ता

बुढ़ा जवान को निगल गया

लेखक—प० शिवकुमार शास्त्री

विश्व द्वाए समने बहूना युवान सन्त पलितो जगार ।
देवस्य पद्य काव्य महित्वाऽऽ ममार स ह्य समान ॥
श्रद्धा—१०।२५।५



पुल बह्मपथ प्रत्युत्पन्न कर विविध
स्वातन्त्र्य हुए । पदङ्क संहित वेद की भी
पडा । भाए धीर शस्त्र सत्त सत्तामान ने
धर्मात्त प्रभुवद ने धरने पिता से भी बड़
कर हो गये ।

ममकासापत्यस्थ सन्तुतिमायु
प्रतिपातमायु ।
लौकिके सत्यपारो ह्यकल्पो विहारः ॥

राम ने धम धम धीर काम के रहस्यो
की समझ लिया । उनकी धमभुत स्वरूप-
मन्त्रि की । धारणी बड़ उरवो की धीर
हुरो के बिचारी को वे बहुत धीर समझ
लेते थे । बौद्धिक बय ठका सत्योचित
आधार-अव्यहार की वे अभी प्रकारमानते
वे धीर मयाधुनार करने बाहरसु में
भाते थे । राम की धीरता कोकोतरजवा
रा न्यवि के लम्बाय धीर अव्यहार
की परतने की बावर्धनका सतता धीर
कल्पनाओं की बैधकर उस धमय यह
प्रतिष्ठ का कि—

विश्वरूपमिति
विश्वरूपमिति वास्तव्यु ।
विश्वरूपमिति वास्तव्यु ।
रामो विश्वरूपमिति ॥

राम सन्तु का सहार करने के लिए
दो बाएँ गहरी चढते धर्मात्त एक बाएँ से
हो धरने सन्तु की बसाय कर देते हैं ।
राम धरने सत्ता ने धरने की योग्यता की
देखकर एक बार ही उचित स्थान पर
उठकी विदुषि कर देने हैं । धर्मात्त
व्यक्तियों को परतने की नये धमभुत
समता है । राम बाएँ को एक बार ने
निहास कर देते हैं । यह फिर निजमना
नही रहता धीर राम को एक बार कह
देते हैं उससे परिवर्तन गही होता ।

राम इतने प्रतापी थे कि उन्हें सोचो
ने ममान तक बना दिया । किन्तु वेध
कहता है उस निम्नता के नियम की देखो
यहा सब निबध धीर नयसम्पन्न है । धारा
ममार स ह्य समान तक उस की सीमा
बाह्य वा निबधी योग्यता धीर परिचय
का सिक्का उक्त धमय का सवार मानता
या धाम यह मरा पडा है । बुढ़ता सके
मालो बाला कामरूपी परतलता मजानो
की निम्ने का रहा है ।

अथर्व देता स्वामिनामी बाह्यत
धीररक्ष को किसी प्रतिष्ठ-ही को कुछ सम
झता ही न था । कहा गया—धीरा
त्यवर के बन्धु की देखकर धीर हुकर
कस्यसु ने राम को कहा—यह भी की

करो को उपस्थिति ।
कर्म ह्य बाह्यमिति मयोनि,
कुन्ते रेह विविधयु समान्यु ।
ततो ह्य मात उविवाय मन्मातु,
ततो कातपुत्रिवापुत्रितिक ॥
श्रद्धा—१०।३१।११

अथर्व—
सह ह्य बाटो—आकाश ने पैदा हुए
मनोनि श्रुती—ईश्वरीय निबधी
के प्ररित फिरे हुए (मिह धीर नयन
बाधुपी) ने
समान्य—एक साथ निबधकर,
अथवा समान न्यरे
कुन्ते रेह विविधयु—पुलकच्छपी
कुन्त ने बाटमार बस की सीमा धर्मात्त
धूमि पर बहुत बय बरफता ।
तत्त मन्मातु माय—उस परते हुए
बय में से कुछ बर्तलता
उविवाय—आय बनकर आकाश ने
पया गया

पराक्रम की कसौटी है—
वेध की रक्षण कि सत्तुवा
बाटोमिह नयनयो—
मैत्रीमिहिय धूमरूप सत्तुने
धीरा—मिहिय विमान्य ।
सत्तामिहिय सत्तु सत्तु य सत्तु
कस्यसु बय कीकुम्भ
मिहियु माय ॥

हे राम ! मैं धर्मिक माय का देखक
हूँ । धर्मिक बड़ा के लो बड़ा बड़ा क्यूँ ?
मैं मेध धार्मिक पर्वतों की भी कुछ गही
धमपडा, फिर इस पुरान धीर-धीर
चपुष की बात हो क्या है । मैं इसे उठ
सकता हूँ, झुका झकडा हूँ मैकदं पृथ
किर सकता हूँ धीर इसक हुकड टुडर
कर सकता हूँ ।

राम ने बाकि के वरने पर किमिम्मा
का राज्य पाएर सीता की कोम ने युवोय
का प्रभाव देखा तो धमसु को युवाय की
मत्तना करने को मना । धमसु ठा एके
धमसु के लिए नमार बड़ा रहता था ।
बाहे ही एक कुम्भी ने युवाय की प्रक-
ति कर दिया—

मत्त सत्तुपित म-या वेध मायि
पुरा मय युवोय । जित माय से कुछ को
धमय पदम हयने बाकि का मेवा है, यह
माय बय बय गही हो गया है । ऐसे
गीतो की भी गही बूडा कामरूपित कर
मयो ।

कुन्त जैसे प्रतापी प्रत्युत्पन्न सत्तु
महापुत्र—विश्वने निम्नत विदुष बाह्यर
के निम्न की बाट-बाह्यरनयनिकिमा ।
धत में बयन से सेटे हुए एक कहीय की
धीर से धामय होकर धमयो कीमतीका
समाय की ।

सार यह निम्नता कि स सार के सभको
बाना है । धमय का एक एक धम बहुत
मृत्युमाय है उसका सत्तुयोन करो धीर
प्रत्याय के धामय पर प्रत्यनता से उसे
कियापित करो ।

वेद में विज्ञान

धमवीर विद्यालय

१ ओषजन धीर उदजन
से त्रल की उत्पत्ति—
उत्पत्ति सत्तुवदयो बालिक,
उत्पत्ति श्रद्धा ममतो उत्पत्ति ।
प्रत्य सत्तु बह्मना उत्पत्ति
विश्व देता पुष्कर त्वा बहल ॥
श्रद्धा—१०।३१।११

अथर्व—
मसिष्ठ उन मैनावरय सति—हे
मसिष्ठ ! तू मिह धीरवसका सत्तुका है ।
बह्मन् उत्पत्ता ममत्त श्रद्धावत्त—
हे श्रद्धा ! तू उषगी की मनाकामना से
उत्पन्न हुवा है ।

देवयन बह्मना विष्णु निगम के
समुत्सार ।
उत्त सत्तु त्वा—बूद के रूप ने मिरे
हए तुम्हको
विश्व देता पुष्कर धमरूप—उत्त
देको ने पुष्कर (शामर) ने पटुता दिया ।
आचार्य—

मसुत्तु की उत्पत्ति में मिह
धीर वसुध धीरवयन धीर उत्पन्न
के मिलाए से प्राकृतिक निबधी के धनु
सार बूद-बूद रूप में बय बना । उस बय
को देको ने पुष्कर में एकत्रित किया ।

२ आयुमण्डल में जस-

तत्त वसिष्ठमधि मातुत्त श्रद्धा—
उत्पत्ति वसिष्ठमधि (समय प्राप्ति) के
धीन का आधार) बने ऐसा कहा जाता
है ।

आचार्य—
आकाश ने विद्यमान धीरवयन धीर
उत्पन्न बाधुपी के निम्ने पर प्राकृतिक
निबधी के धमरूप बय बना । यह बय
प्रतिपी में धर्मयिक माया ने एकटडा
हुवा । उत्पत्ति ने कुछ आकाश ने पया
मया । धमत्त आयुमण्डल ने उत्पन्न
विद्यमान रहते सने । कभी यह बय
मस्यसि धीरमिह परती धीर प्राकृतिक
के धीन का आधार है ।

३ विभिन्न माधम्यो से
गुजली प्रकाश को किररो टेडी
ही जाती है—

(शेष १२ पृष्ठ)

प्रस्तावना —

जब ईश्वर ने नम ससार का निर्माण किया था उसी समय से हुए पृथ्वी पर मल्लाई बुवाई मजदूर धोर इतने के बीच कण्ठा प्रारम्भ हो गया था और ससार ने उसी समय से ऐसे महापुरुष पैदा होते रहे हैं, जिन्होंने मजदूर की प्रत्येक मुश्किल को मर्म न करके से हर समय प्रेरित किए हैं। जो व्यक्ति को सच ज की बुद्धि से से हर समय सबते रहे हैं जो ही व्यक्ति शरीरवाच्य न हनाना और उसी के कार्यय भाव ने ससार टिका हुआ है जो निरन्तर प्रगति की ओर प्रसरत हैं, यदि ऐसे शरीरवाच्य महापुरुष हुए पृथ्वी पर प्रवर्तमान न हुए होते तो यह वर्तमान ससार अन्तर्धान में ही कभी का समाप्त हो जाना।

चग्नि क्या है—

चरित्र शब्द बोलने और समझने में
केवल ब्रह्म और ही शब्द हैं, परन्तु
चरित्र शब्द व्यापक शब्द है। इसके अन्तर्गत
धर्म लगाये जते हैं। विद्वान् भी वेदान्त
मिलने से इच्छा शक्ति के प्रधान को ही
चरित्र कहते हैं। जो काष्ठ श्रेष्ठ को ही पुष्प
को ब्राह्मणान्त श्रेष्ठो मानते हैं। इन्होंने
इच्छा शक्ति का विकास ही चरित्र के
रूप में व्याख्या है। अर्थात् इन विद्वानों के
कथनानुसार उच्चता शायरी में है। अथवा
शास्त्रा द्वारा निर्मित श्रेष्ठो है, इतिवत्
उच्चता चरित्र ही श्रेष्ठ बात पर इतिवत्
कहते हैं। कि उनको इच्छा शक्ति क्या
है ? यदि व्यक्ति ही इच्छा शक्ति दूसरो के
के प्रति अर्थात् ही तो ही व्यक्ति या
प्राणी चरित्र-वान् है।

भी मैकडुमल महोदय स्वामीय भाषा
 के साठन को बरिफ करते हैं। भारतीय
 साधन अभिनयन की हारा ५५ के अनु-
 हारा "अभिनयन के अलतल अरुति तल
 अरुति अरुति अरुति हैं। अरुति तल अरुति
 अभिनयन अरुति के हारा किसी अरुति
 के बारे में सोचो सवनी जाने व
 हारा है। अरुति अरुति अभिनयन हारा
 हारा अरुति है अरुति किसी अरुति अरुति
 के अरुति में अरुति लोगो की अरुति
 हारा है। अरुति अरुति अरुति अभिनयन
 किसी अरुति के बरिफ के बारे में सवनी
 की सवनी अरुति अरुति

प्रायः चरित्त मे दो बातों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है ।

१ मनुष्यों का दूसरों के प्रति
आचरण—

अर्थात् किसी भी व्यक्ति का समाज के अन्य व्यक्तियों के प्रति किस प्रकार का व्यवहार है, यदि उसका व्यवहार समाज सम्मत है तो वह व्यक्ति परिश्रम-वान् है।

वर्तमान चारित्रिक संकट, समस्या और समाधान

मोहम्मद असलम

२ मनः के सिद्धान्त—

प्रश्न किसी व्यक्ति के अपने जीवन के क्या-क्या सिद्धान्त हैं। कुछ व्यक्ति अपने जीवन के सिद्धान्त समाज सम्मत नहीं बनाते तो उनको परित्राण नहीं कहा जा सकता। जैसे और बकौत प्रादि। इनके जीवन के सिद्धान्त समाज सम्मत नहीं हैं इसलिए वे परित्राण नहीं हैं। ऐसे ही जोरी इन्होंने के बाद गरीबों की सेवा ही नये न करते हो।

उपयुक्त दो बातों से हमारा ये निष्कर्ष निकलता है कि वो ही व्यक्ति चरित्रवान् है जो समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ प्रश्ला व्यवहार करने हो और उनके सिद्धान्त समाज सम्मत हो।

वर्तमान चारित्रिक संकट-समस्या
का कारण—

प्राय वेला जाता है कि इस सारा
वे कुछ ऐसे व्यक्ति भी जन्म लेते हैं जो
स्वाधी होते हैं और वे स्वाधी व्यक्ति
कैसे र्थाय बस स्वाधी की कोई भी गर-
बाह नहीं करते। ऐसे स्वाधी व्यक्ति
परिनिष्ठा कहलते हैं, और वे परिनि-
ष्ठा व्यक्ति इस सारा वे जो कभी शार-
रणीय नहीं हो पाते, परन्तु समाज के
व्यक्ति बन इन परिनिष्ठा व्यक्तिओं के
वे के सम्मुख परास्त हो जाते हैं तो य
समाज का नवीकरण करते हैं। नवीकरण
समाज वे पारिनिष्ठा सफ़ट उपलब्ध होने के
कारण निम्न प्रकार है—

सामाजिक कारण—

प्रतिपात समाज के धाव ब री और
 पात्रिपुत मुँसलाता बा रहे है । धाव का
 समाज प्रगतिशील समाज नही का दावा
 करता है परन्तु इस समाज में प्रगति का
 धाव ने समाजिक मुँसले धावों सङ्कष्ट
 एव सङ्घाता की तर्निक भी परगाह नही
 की जाती है । धाव सङ्घ नूट असोठ
 अष्टदावरा दायि हुरगार, बमाकार
 उन्नीठी काल द्यो री रहे है । इन सब को
 करने बाव का सामान्य काम के लिए
 हमारे समाज ने धाव नही है, सिक धव-
 रावरी का समय देते है । उमे साथ से मुक्त
 करा देते है और किसी धराय व्यक्तिक को
 मूटा फकारा समा देते है । का बहाना
 मूटा देते है हमारे समाज का ? विहा
 अरुतु मरुतुय का कपण है *It's Man a*

a social animal सपदि मनुष्य को
 शिष्य पालने के लिए समाज के श्रेष्ठ अंग
 भीतर रहने पर निर्भर रहता पड़ता है, जोर
 कबो महीबन बिसबो है कि पशुमात्र
 उल्लेख होता है तो यह समाज होता है
 जोर समाज की बनाव मनुष्यता के कारण
 बनबत जावो है। ऐसा बरो है? इका
 किरवो है, जिस समाज का हम सहारा पड़ो
 है, जब उस समाज को जो बारीक
 पल्लो होयमा है, जब उही मे जोर बढी,
 बनावतो, सहेत हमका करने बामो,
 शिष्य पालने जोर बिकसामो है, तो उनका
 घरर होत बर बर बिना नही होयरो। उस
 समाज के साथ हम को उही प्रभाव बामो
 किरवो जोर बरबिजामो होयरो।
 हमको बिकसने मे बिना है
 मनुष्य को समाज बामो जोर मे उनका
 गरिब बामो दामो। सत्य ही है, A man
 is Knowing the Company he
 Keeps

इसी प्रकार अब्दुल रहीम खानखाना ने लिखा है।

जैसी सगति बैठिये, तैसोई फल दीन ।
कबली सीप, भुजग मूल

स्वाति एक, गुण तीन ॥
रहिमन नीचन सग बसि,
सबत कलक न काहि ।
दूख ककारिन हाथ जसि,
मय समझि सब ताहि ॥

इस पर भी कुछ गंभीर तर्क होते हैं कि हम पर बुरी सवति का असर पड़ने वाला नहीं है इस पर एक विद्वान् ने लिखा है कि—

ध्यान के पास मन बैठो जाकर ।
 एक दिन उठोये दामन बन्नाकर ।
 ये माना कि तुम दामन बन्नाते रहोये ।
 पर ध्यान की सेक तो जाते रहोये ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चरित्रिक पतन में समाज का बहुत बड़ा हाथ है क्योंकि जो समाज सामाजिक आदर्शों से गिर जाएगा उस समाज में जाने वाली सन्तानें भी चरित्रहीन होती हैं।

समाधान—

हमें अपने समाज की कुराहियों को दूर करने के लिए सामाजिक आंदोलन करने होंगे। भ्रष्टाचार, बोरी डकैती, क्षात्रि के विरुद्ध एक होकर आवाज उठावी होगी। उन्हें सबसे सामाजिक धावकों।

मुन्को को बिना करना होमा पसनीको
 बहकौँ बोरे मुन्को को बमचना होमा
 बीर सीरी से मुन्को बाघरुवा होमा
 होमा । हावा से प्रत्येक व्यक्ति को बहा-
 वाट, बालागनवा, मुन्दु बाघरु, बमवा,
 साहुर, चिपिचिवा और बुद्धावागनवा होमा
 का उल्लेख होमा होमा । हावा से विजेने
 नीयत बाराभी, दुवाराभी, बमवाभी
 स्याभी बपटी, हिल्ले बीर भी व्यथनी व्यथा
 है उनका हावा बीरानी होमा । उल्लेख होमा
 बमवा व्यक्ति का हावा तेज व उल्लेख
 सत्यने से खुला होमा व्यक्ती उल्लेख
 व्यक्त से सत्यने में खुले से हो मुन्को
 बरिचवागन बमवा । व्यक्ती मुन्को से
 होने के भासायन को गिटी नी मुन्को
 हो जाती है । दुरा व्यक्ती बरिचवागन
 से भी विप्रुण्व है तो छोखे योग है
 व्यक्ती बमिमुल्ले बरं भी वे भयावक
 होमा । हिल्ले बमिमुल्ले बमिमुल्ले
 को बीजक बमिमुल्ले से विष प्राप्ता को
 बाघरु । हिल्ले स्वाम्य हावा से प्रभावासी
 को बमवा हावा । सत्यने व
 नारी बाघरु । नारी हल व मुन्को, बम-
 वाट, कुलवाट, नमवा, साहुर, चिपिचिवा
 उल्लेख होमा हिल्ले बीर हल मुन्को
 बम करणे से मुन्को मुन्को बमवा
 हिल्ले बीर व्यक्ती बमिमुल्ले वर
 उल्लेख रस लेने होमा नी तो उल्लेख
 नी उल्लेख से उल्लेख मुन्को । सत्य-
 ने से बमवा बमिमुल्ले बमवा दुरावागन
 सत्यने से सत्यनेगन हुआ । हिल्ले
 बाघी को बमने बाघी को हावा हिल्ले
 शमिमेवनी से बिना रमना बाघरु ।
 होमा व्यक्ती को उल्लेख बाघरु होमा
 बाणी, प्राण को बहापी, को ज्ञान बमिमुल्ले
 मुन्को हिल्ले है उनका व्यक्ती का । होमा
 से हावा मुन्को व्यक्ती का निमार्ग बमिमुल्ले
 है बीर बरिच व बम का बम से बम हावि-
 वाट है । तो व्यक्ती उल्लेख व्यक्ती से होमा
 हिल्ले बर सत्यने से उनका हिल्ले मुन्को
 निमार्ग बमिमुल्ले । बमिमेवनी सत्य नी
 बमवा व वि

“जो रहीम उत्तम प्रकृति
का करि सकस कुसम ।
बन्दन बिष व्यापत नही,
सपटे रहत भयम ।”

आर्थिक कारण-

वर्तमान पारिवारिक संकट के कारणों में धार्मिक प्रभाव भी एक है। आज हमारे सामने बेरोमांचनी की संख्या एक उग्र संख्या है। ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिए कि हम पैसे का सही मूल्यांकन नहीं करते, उसका बचव्याप भी प्रकाश नहीं है। एक लड़का भी एक मजदूर को कुछ पैसा देकर बर्बाद होते ही मेहनत करने लग जाता है और सून बनता के बरत होने पर अपने को लाँटवा है उसे हम मजदूरी में ४-६ हजारवाँ है जो दूसरी ओर कुछ देता है।

वर्तमान चारित्रिक संकट, समस्या और समाधान

भी हो जो ५ हजार सखा गांधिज से
हो जो लाख कार्य मिल चुकी पर लेना
हो, गांधीजी की भाँति अयोग्यापन
नग्न रहा है। रोषवार के जिह्व पीरित
तथा रोटी के जिह्व उलझने अयोग्य को
जात मानकर खनी तथा घनीकृतिय अ-
तिथियो को नौकरिया का प्रयत्न करती
है। ऐसी परिदृष्टिमुक्तियों में व्यक्ति का हिस्सा
गौरव, श्रेष्ठ मतिवृत्ति अथवा नीच प्रजा-
पति भवना तथा अयोग्य है क्योंकि वह
एक व्यक्ति २०, २०,०००-५० डेकर
जिह्व पीर को शान्त करती तो उसका सत्य
न हो, पुरुष पर पुरुष शत्रुत्व से रिश्ता के
वैराग्य को नष्ट करने में सुख तथा होना
धीर भव नग्न व्यक्ति नर-२ से अयोग्य
रिश्ता के हो करेगा। समाज में अयोग्य
वैराग्य के जिह्व श्रेष्ठ व्यक्ति की कुछ
प्रजापति अयोग्य होनी है। वैराग्य रोटी कष्टता,
नाशक पीर से लक्ष भवभारदार प्रतीति
की प्रतीति होती है। परन्तु यह विचारित
है यह व्यक्ति रोषवार है। क्योंकि
रोषवार पीर से जिह्व श्रेष्ठ योग्यता भी
है, परन्तु अयोग्य के डेकरावों से उसको
प्रत्यक्षता करके भाँति प्रजीवापाद वा
प्राप्ति का विद्वान् प्रजापति एव रोष-
वार नहीं विचार, उस व्यक्ति में हृदय
पद तथा पीर होती है वह श्रेष्ठ प्रजापति
न होगी को श्रेष्ठ शत्रु, पीर वर्णी भावप-
काया की प्रीति के जिह्व प्रतीति मात्र
ही गौरव प्रजापति होनी पीर नहीं है उसका
प्रतीक नग्न पद प्रारम्भ हो जायेगा। इस
प्रकार विचारित है।

समाधान—

बार्षिक पत्र को रोकने के लिए
 हमें इसे का उचित दबाव करना होगा,
 नार्थ अंगीकार में स्थित के विधान,
 को सुलभ का स्थिति जिस पर के मो
 होता, उसे उठी पर प्रसूति हमने के
 व्यवहार में करने होंगे। हमें मजदूरों
 की प्रवृत्ति बढ़ानी होगी। समाज में
 प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष को विट ना होगा। जो
 सब एक देशीकरण स्थिति को उत्पन्न
 दोषपूर्ण विम जाएगा सभी वह धारणा
 में स्थापित की मोर व्यवहार हो सकेगा,
 क्योंकि नुसुं कहेंगे है ' कि प्रथम पेश
 नृणा की गड़ी होती है। यह प्रकार
 समाज का बार्षिक पत्र रोकने के लिए
 अत्यंत शक्ति की प्राधिक स्थिति को
 स्थापना होगी।

राजनैतिक कारण-

पारित्तिक लकट के कारणों में राज-
नैतिक कारणों को भी नहीं भुलाया जा
सकता, प्रायः साधारण व्यक्तियों से लेकर
मन्त्रियों तक पर भी अनिश्चितता का आरोप

[illegible]

श्रीर अधिकारीगण ने : ये सब बतमान समाज का चारित्रिक पतन ही तो है, इस लिए इस समाज पर चारित्रिक सकट आना स्वाभाविक है ।

समाधान—

छात्र के समय में प्रवेश देनावासी
 को जायकस नेना भाषिए उने बानरवासी
 नेनायो को की बुगुम ये बुजिए नेना
 भाषिए । उने काहि चर्न भाषिए ।
 भाषिए भुलकर बोले भाषिए ।
 स्याम का कीटने छात्रर एव उज्ज्वल
 बरिए के भाषियो परु को ही निग्न
 भाषिए ।
 अथातो रामचन्द्र कदा कदा
 कि बानरयो ने उरव भाषे अथिवा
 नाही को स्याम की च-उरी को योर
 मही को स्याम कवुवु ही गेणे अथि
 स्याम की भाषिए कि भाषाउते के जिमे
 वा सुते ही । इतिवचने ये बाने नेना
 का बुनाव करणे मे बडी संतका रसनी
 भाषिए । हीने प्रपत्तारी योर -
 नेनायो को अथातो स्याम को ही
 नेना भाषिए उने एककरन उनी हरातो
 को उनके भुड बाबायो को उनके मूह
 पर कवुव वादो भाषिए ।

नैतिक कारण-

सर्वमान्य मान्य है चारित्रिक सकट
 शीघ्र सन्धान उपनिवेश करने में निमित्त
 शरीर कम हो चुका है। भाव हूँ अपने
 नैतिक मूल्यों को भुला चुके हैं, हमारा
 मन बचन है। दुर्बल है। हम अपना मान
 सम्मान धारि भुलकर स्पर्धावादी होकर,
 हमारी को शक्ति की रक्षा नहीं करते
 हैं। बालस्व एवं स्वार्थपरता को ऐसे अव-
 मुल्य हैं किन्ने को यही पद कर अस्थिर करने
 अस्थिर को स्थिर बना देता है। यह दु-
 कापूर्ण है बुनियाद में बस जाता है जो
 मुमयों की ओर झुकता होता है जो
 उसका चरित्र नष्ट करे के योग्य बन जाता
 है। एक निष्ठा में कहा है कि—

When wealth is lost,
Nothing is lost
When health is lost,
something is lost
But when Character is lost,
every thing is lost

इस प्रकार हमें कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे हमारा चरित्र कलमिष्ट हो परन्तु हम अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अन्य व्यक्तियों का द्रष्टिमान करने से बचने का जो बड़ा तरीका है, गुप्त नाम का प्रयोग है—कि “हम लोगों को नीचा दिखाए बिना प्रश्नक दूसरों का द्रष्टि किए बिना प्रश्नकी उन्मत्ति करनी चाहिए।” परन्तु हमें ध्यान रखनी चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से हमें बताना पड़ेगा कि हमने उनका नाम क्यों उल्लेख किया है। प्रश्नक दूसरों को धोखा देना हमारे लिए बुरा नहीं है, परन्तु हमें यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि हमें दूसरों को धोखा देना नहीं चाहिए। हमें यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि हमें दूसरों को धोखा देना नहीं चाहिए। हमें यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि हमें दूसरों को धोखा देना नहीं चाहिए।

एसा ह्यम केवस अपनी कूडी गान शीकत,
दूसरो को नीचा दिसाने, अपनी स्वायं-
परता अकर्मण्यता छुपाने ससार मे
कूडी ब्यापति पाने के लिए करते हैं और
इन के करन से हमारो चरित्रहि पतन
होना भावश्यक है ।

समाधान—

हये नैपिका की ओर ध्यान देना चाहिए कोई भी ऐसा कार्य नहीं करे जिससे अन्य व्यक्ति हूँ चरित्रहीन हममें हूँ स्वावलम्बी बना हो। मिथ्या होना शौकत से व्यापित से छुटकारा पाना होगा। ध्यान चरित्र की रक्षा के लिए प्रत्येक प्रयत्न करने पड़ेगा चरित्र की रक्षा करने में जान ही क्यों न बसी जाए। हमारी पंडित मुक्त महाशार में एक स्थान पर वर्णन प्रयास है कि—

यद् ग्रन्थाभि सदा चरित्रस्य रक्षा
कार्या नन तु ग्रन्थाति याति च । चरित्र
यदि नष्ट स्यात् तर्हि सर्वं विनष्ट
भवति ॥

वृत्त यत्नेन सरज्जेत् वित्तमेति च याति च ।
 अक्षीणो वित्तत क्षीणो
 वृत्ततस्तु हृतो हृत ॥

उपसहार—

[illegible]

ओहम्मद असलम C/o यश हंवर ट्रेडर
१६६, रामनगर, निकट हापुड बस स्टैंड
मेडन २४०००३

व्यामपीठ—

उपनिषत् कथा माला—५

ईश्वर दर्शन

प्रवचनकर्ता—वीनराग स्वामी सर्वदान र महाराज

(महाक स ध्याने)

परमेश्वर का पाना सुगम है, परन्तु पहले काम पूरा कर ला ब्रह्मात् इसक लिए यह आवश्यक है कि पहले परिश्रम कर फिर मजदूरी मिलेगी। ब्रह्मण परमात्मा का पान के लिए ब्रह्मात् श्रम बनन का लिए पहले मन का पवित्र बनाओ। मनुष्य पहल पत्र बदला है, परन्तु ऊपर ब्रह्मन म जितना समय लगाता है, उतन म उसना नही लगता। कछोना जान म ब्रह्मना समय लगना बहा से जान म नहा। उतरना सुगम है, उतरन म बकाबूट हूर है। जाता है। भवण्य पहला काम ब्रह्मात् मन को पानन बनाना कठिन है, परमात्मा को पाना सुगम है। इनक लिए भजन करना की आवश्यकता नही। सुख म रहकर भी आप परमात्मा को पा सकते हैं। ये ठा जात को सिखाता है, रक्त रोग को रू करता है। ये एक ब्रह्मन मन कन होत है, इसीलिए सत्पात्री कहते हैं। ये एक कण परमात्मा को नही दिखा देते। इसके लिए तो मनुष्य को अपना मन स्वच्छ बनाना चाहिए। महात्मा वह है कि वो सकल मन मे करता है, वही जिज्ञा मे करता है, और वही पूरा कर सिखाता है। जब बाकर कही महात्मा होता है। जिसके मन मे कुछ है, जिज्ञा पर कुछ और, जिज्ञा मे कुछ और, वह महात्मा नही। इसीलिए कहा है कि परमात्मा सबके भजन करत मे है मन बना गो कठोरी मे मज्जा।

ध्यान होत माराधन के, न गोपी मन बचारे है।
ज्योति से ज्योति मिलती है
जय मे मन को मारे से ॥

देखा। मन को मारे से कैसे परमेश्वर प्राप्त होता है? इसके तीन नियम हैं—

पहला कृति तो तारात्र पर पूरा लोल-कर लेना। मर मुक्त विनना बेवत है, बखोले भी ओर दुरे भी। यदि मन में करे को पकड़ना है तो मेक मुक्त को बेवकल पीछे हट जाता है, परन्तु तारात्र धामे बदना है। जो बदना है, वह प्राकृति रूप मे प ला ही है। तारात्र में वह भारतवासियों को सत्यन नही सिखाता, तुलना की माया बड़ है। भवण्य सत्यन होना भावश्यक।

पूरे जहा तुम उपवास पढ़ते रहते

साधन को तुलक पड़ो। धनने बिद्याधी-जीवन को पवित्र बनाओ। यदि मन नहीं मानता तो सत्यन के साथ साथ दर्शन की ब तें भी पड़ो। यदि ब्रह्मण्य का जीवन-परिण पड़ सो सत्याप्रकाश पड़ सो हितोपदेश पड़ सो, जिससे तारात्र क दोनो सत्य समाप्त रहे।

तोहरे अपना धन करत पवित्र करो। दिन रात म जोभीना पण्डे होत है। सवा हेरत पण्डे करत कामकाज मे लगाओ पीन पण। नौकर सम काम भवहार स ब्रह्मन होकर, उसस १४वा प्रकार का कोई सम्बन्ध न रहकर, परत पिता परमात्मा के जरखी मे मन बनाओ। जीवन का सम्बन्ध क पण्डे है, कल का सम्बन्ध क महीने या बर मर, पिछो बस्तु का सम्बन्ध कलकात तक नही, केवल परमात्मा का सम्बन्ध कलकात तक है। जब कीर्तनात्मिका निकलता है तब भी परमात्मा उसके साथ रहता है। भवण्य इस समय को अपना धन करत, मन लगाकर परमात्मा का भ्यान करो। उस समय दूसरो से बात न करो। ऐसा न हो कि इकर प्राप्त सम्पत्ता कर लेते हैं, बचन बन्ने से बाँवें भी झा पड़ो है। इन पीठासीत विगत में तो न सवार उपहारे लिए हो, न तुम सवार के लिए। यह ठीक है, कि मन को बचन ब्रह्मण्य है, परन्तु तुमने देखा है कि मनुष्य कठिन से कठिन काम की कर लेता है। एक समय जाता है कि मनुष्य साधन-ह्वा तक भी कर लेता है। कितना कठिन काम है परन्तु इसके लिए भी मन तैयार हो जाता है। इसी लिए कहा है कि—

मन के जोते भीत है
मन के हारे हार।

बदानी कहते हैं कि वह एक रूप जाता है और अनेक रूप जाता हो जाता है। पीर धर्मसंग्राम का वह सिद्धांत है कि परमात्मा अनेक रूप का नहीं होता। जो एक है वह एक ही रूप का रहता है। जैसे मोहो से तुम्हारे अनेक पदार्थ बना लेता है परन्तु मोहो तुम्हारे नहीं बना सकता। इसी प्रकार मिट्टी और कुम्हार की बात समक भी, जब परमात्मा मे प्रकृति को लेकर सवार बना दिया तो प्रकृति परमात्मा केन बन सकती है? मिट्टी से पचा बनाता है, इसके लिए किसी मिट्टी चाहिए, यह किसी मिट्टी किसी बनीस के तबके की भी और कही कि

नहीं। फिर कहा 'आई'—पहे-जिसे ही, इस मिट्टी से बना सो? परन्तु वह नहीं बना संकेता। पचा मिट्टी से तो विचयमान है, परन्तु उसके मस्तिक्य मे नहीं। जब कुम्हार के पास रेत मे बांधी और उससे कही कि 'बना बना दे।' वह कहेगा कि 'पचा रेत से नहीं बनाता बर्यात् पचा रेत मे नहीं, मिट्टी मे है। इसी प्रकार सवार प्रकृति मे और परमात्मा क ज्ञान मे विचयमान है। जिसके ज्ञान ब्रह्मण्य मस्तिक्य मे कोई बस्तु हा नहीं उस बना भी सकता है। कोट का पक्का भावने सिखा है मैं उसे काज हू, तो आप बनें। मैं कहू लखते क्यो हो? दरकी वा तो इसे काज हो जाता। जान कहेते, मुज पावता हा कही किन्तु किसी रीति से किसी नियम मे।' उसत ह्राय मे नीची ओर मुई है और उसक मस्तिक्य मे कोट है। बस यही तो नियम है। एक वह बस्तु को बनाती है, दूसरे वह पदार्थ जिसमें वह बनाती है, तीसरे वह मस्तिक्य जिससे वह बनाती है जब तक म सब कीजें न हो कोई पदार्थ नहीं बन सकता। इसीलिए तो परमात्मा को प्रभावित कहा है।

भावकन कई की गांठे बांधने की कम प्राय एक बात बने मे छाती है। प्राय मन कई की गांठ मन सवा मन नीची बांध दी जाती है। क्या उसका बचन कम कर दिया? नहीं। बचन को कम नहीं हुआ, केवल सवा और सिफोड की गई। परन्तु परमात्मा का चिकना तो देखो। बस का मन कितना बड़ा है और उसका बीच कितना छोटा है? जब उन्ही बीच से बर जपका जाता है, तो वह कितना बड़ा हो जाता है।

एक बार मैं गुरी बवा, मन्विरों की ली मैं मानता हू। नहीं। परन्तु मैं कम दिया कि क्यो रीतक की केहें। मन्विर मे गया तो क्या देखा? एक बासी तुम्हारा है कि 'मूल कहो है? मुझे तो कटिबोचन नहीं होता।' जयते मुझ, 'म' और मी तुम पिछाई देता है? उलने कहा, 'हू और तो बस कुछ पिछाई देता है। फिर उलने कहा कि 'वह ब्रह्मा कैसे हो गया?' उससे मुझ, 'बुरे तुम कोई पाप तो नहीं किया?' वह मोजा, 'म' मैं मन्विर की ओर गया था, तो वह मन्विर तो ब्रह्मण्य भावा था कि वह मुझ का है? तो कने कट बह दिया, 'म' वह इसी का मस्तिक्य है।' मैं भी यह ही

बाहों को मानता ही नहीं फिर मुझे क्यों नबर छाती है? मैं तो मुक्ति को मानता देव रहा हू।' ब्रह्मण्य मे मुनारिचों मे ऐसे मनुष्य रके हुए हैं, जो पूरे ही मूढ़-मूढ़ कह केहें हैं। यदि वे ऐसा न करें, तो मनुष्य मे मने मे उस मुक्ति के लिए मन्ना कैसे हो? रामेश्वर बांधी, मोने-नाथे मनुष्य बरकसे फिरे हैं। यह तो नहीं परन्तु पहले जब कोई विनायक जाना भावता था, तो वही बांध कहा करते थे कि 'विनायक न बांधो, बनें ब्रह्म हो जायेंगे।' वेच विवेक जाने को इस प्रकार रोक दिया। मन को जो एकाग्रता का प्रत समक रखा का, कि आपन मुझ मे जाना ओर दूट गया। बनें तो प्रत्येक क्षण मे रक्षा करने से बच सकता है। यदि ब्रह्म करना बाहो तो वही ब्रह्म हो सकता है। बिपर मे उलगाई होती देखी, उकर से ही रोक दिया और कहा, बांधो, रामेश्वर बांधो। बस इसी लीपो मे मानर को मानर किया है।

बीर तुम उपरमाना को बेवके है। मुझे आपको वह दिखाई नहीं देता, मरधि वह अपर ही विचयमान है। बीर तुम पहलमान की नहीं कहेते को पक्ष-नाना होता है। नवर कहा हुआ, ज्ञाती मेही गर्वन मोटी मुझ ब्रह्मण्य, भाव मे लोनी, तुमि मोटी, खरीर होत। जब कोई ब्रह्मण्य भाया हो उसको की कहे कर तुम्हारा कही 'आई' तुम ली बनें बन्ने बाधनी हो। 'तुम्हें बाधनी तो बिपारे को माने लगे। मे बहुतमान के लखत है। यह ली गहा।' मन्विर की महाराज करते हैं— बरे। लकी भावे बाहे रहे, बाध की मरना हो बाहे मुगुनमर तक बीर रहे, बीर मान कर बाहे अपरान, बीर तुल्य पीत बीर बनें के भावे से एक वन की बिचपित नही होत। ये मन्विर को के बर गा। प्राय प्राय इसी का वा, परन्तु अपने छोटे आई विचयानिक को बेकर मन को बने बर। मन्विर की मे राय से मुझ मोह लिया और कहा, प्रमो है मुझे राय की हम्मा नही।

मन्नालोरे दिनपरिचक्षा

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ईश्वर दर्शन

बीज जन्तु भी उन्हें कुछ हासिल नहीं पहुँचाते। फिर वे कहते हैं, 'हे प्रभो! हिरण्य चाकर मुझे पर्वत का एक कण्ड समझ कर मुझे टकरावें।' 'ये हैं उन महा-त्वापों के मन की चमत्तों। सदा के लोग जब अपनी स्तुति सुनते हैं तो झलक कर जो जाते हैं धीरे-धीरे जब भी उनकी निन्दा कराता है तब उनका मुख उड़ा हो जाता है जैसे बीज से वे युवा निवास वेते पर कोर रह गये हैं। ससारी मनुष्यों को जब कोई काम नहीं रहता तो वे किसी की प्रशंसा करने लगते हैं धीरे-किसी की निन्दा यह बड़ी दुष्टी बात है। योमी धीरे धीरे पुनः तो निन्दा स्तुति से सर्वत्र निर्भर रहते हैं।

प्रायः तीस लाख हुए, मैं काशीपुर गया था। एक दिन प्रायः चार-वह बजे मैं एक कोने पर बैठे लोगों से बातचीत की। साधारण बातचीत कर रहा था कि 'हाँ! मुक्ति प्राप्त करने से परमात्मा प्रसन्न नहीं होता।' इतने में एक युवारी ने कहा, 'महाश्वर! जीवन का सत्य है। कुछ तो बन कर रहे?' मैं समझा यह कैसे बोले तो प्रसन्न हुआ है, इसलिए जीवन करना चाहता है। बातचीत बहाना होने पर मैं उसके साथ-साथ चल दिया। वह मुझे एक मन्दिर में ले गया जो उच्छ्रय बड़ा किन्ता बिल्कुल लोगों की चर्चा-बहस विना जाता है। वह कहते सगा 'महाश्वर! यहाँ की सभी बड़ी प्रशिक्ष है।' मैंने कहा, 'ये बाबो!' वह विस्मय में सन्न होकर बोले, 'महाश्वर! मुक्ति की निन्दा क्यों करते हो?' साथ ही मजबूती से मे माँने। 'रीत-चार नब्बे बहने में निन्दा कर रहा था परन्तु अब मेरा मन बदल गया। मैंने कहा, 'हा मुझ की कहते हो हम तो सच्चायी हैं, हम नहीं मानते तो म माँने। यदि कोई गुरुस्वी मान ले तो हम सब धुरा न कहेंगे। परन्तु यह हमारी प्रज्ञा की, धीरे-धुप्य तो वह है जो किसी भी मन में न पड़े।

एक कजुल बैठा था, एक रात्री धाया, उसने तब सुनाया। गाथा सुनते के बाद उस कहते हैं कहा, 'युग कल जाता, मुझे सब समझें हैं। रात्री बड़ा प्रसन्न हुआ। अर्धरात्रि फिर धाया हुआ, कैद धारे?' उन्होंने कहा कि 'कल धारें कहा था कल धाया था समझें हैं।' कजुल ने सहकर

कहा, 'रात्री ही हो ना। बुद्धि तो है ही नहीं। तुमने मुझे क्या दिया था? केवल चाकर ही प्रसन्न किया था ना? मैंने भी चाकर बनाकर तुम्हें प्रसन्न कर दिया।' सुनते मेरे भाई! बाबो का बात धारें पर विन धारण न हो धीरे-विन चमक जाते तो कुछ न हा, उसी की धीरे-धुरक कहते हैं।

उपरिपदो मे कहा है कि धीरे-धुप्य ही धानी धार्या परमात्मा का देखाता है।' मेरे भाई! बात यह है कि किसी समय एक स्थान में राज-प्रवचनकापी का विषय यह था कि किसी-दिन मनुष्य को एक-दूसरे का सब कर्म के लिए राजा बना देते हैं धीरे-उपम यह कहते हैं कि प्रायः वचन तुम राज कर तो, कहे वने तुम्हें एक जास के छोर दिया जायेगा। वह मोक्षता था कि प्रायः वचन का बहुत होते हैं इतने कि तो राज कुछ मोक्ष है। परिणाम यह होगा कि वह राज-मुक्त मे संस्कार सब कुछ भूल जाता था। जब समय जाता धीरे-तब, 'बसो!' तुम्हें बने की छोर धारें, 'कहो वह बहुत रोता विस्मयता, परन्तु वे उसकी एक न सुनते। ऐसे ही कई मनुष्य धारें धीरे-बने गये। परन्तु किसी को यह बुद्धि न आई कि राज्य पर अधिकार बनाता चाहिए। एक बार कुछ मनुष्य राजा बना। उसे भी नहीं कहा गया। वह बुद्धिमान था। उसने प्रजा का भुज प्रसन्न किया। मगरो की मतिगत सम्पन्न कराई। तो बने इन्हीं प्रजा प्रसन्न करने लगे। लोग बड़ प्रसन्न हुए रीसारा बने सक्ते ही धारा की कि यह जगत् सदा कर दो। बड़ी उच्छ्रय बना ही। जगत् मे मजबूती गया। किमोरा पिन्दा दिया कि को कोई उस जगत् मे बाहर पड़ोता उसे सुनत माना मिलेना। बहुत से लोग यह बाकर धारण ही गये। जब समय धाया तो उसने प्रसन्नकर्ताओं ने कहा, 'बसो भाई! मुझे प्रसन्न मे क्षोत्र धाया।' उन्होंने कहा, 'महाश्वर! प्रसन्न की नहीं रहा जहा बाबो कल्ला बज कर दो।'।

इसलिए भाई! बुद्धि से काम लो तो कल्ला ही कल्याण है। एक परमात्मा की कल्पित धारें धारण करण की बुद्धिकरी बुद्धि स्वमेव धा धारण धीरे ईश्वर के दर्शन हो जायेंगे। *

(चुट ३ का लेख) भूटाचार और

मेना तो अन्धत्व को बाह्य मे लेकिना। लेकिना था। लेकिना यह कि हमने धार्या ईशान के विना तब स्वप्न है कि रात्रि ही सब के कहा प्रस्थापना है। मात का बोटा, ए नीर, ए नीर के पीना के सत्त नहीं किसे हो सब कर है।

जब के कहा भूटाचारी सब से बड़ा बीजान्त है। वे रात्री की भूटाका सब कुछ भूटनी न केबना कि ठेठी ही बाबो देते ह्राय में हैं।

"संस्कृत में निर्णय का औचित्य"

विषय १८ वर्ष ८५ के ब्रह्मचार-पत्रों के माध्यम से जब इसाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति को बनारसी वाला बाबू द्वारा रिट का प्रयास किया गया तो निर्णय का समाचार प्राप्त हुआ तो अनेक संस्कृत प्रेमी मजबूती तथा सत्यापों ने इसका स्वागत किया। यद्यपि कुछ लोगों ने संस्कृत भाषा की महान की संस्कार किया तथापि निर्णय की अग्रगण्यता के कारण औचित्य के माध्यम से समा-लोचना की थी।

इस सम्बन्ध में मेरा अपना विचार है कि संस्कृत भाषा के धर्म की भारतीय सभ्यता की अन्तर्गत मिलती है। जैसा कि कहा भी गया है—'यत्तु प्रथम'। है, संस्कृत सभ्यता है। लक्ष्मीनारायण की विज्ञान से प्राप्त भारतीय की भाषात्मिक वास्तव का परिचय सर्वविधित हो गया है धीरे विज्ञान प्रकाश की व्याख्यापरिष्कार की शक्ति ने रक्ते हुए हमारी सरकार नवी राष्ट्रीय विज्ञान नीति बनाने में खुशी हुई है।

पाश्चात्य न कृति व मन्त्रालय के धन्यगुरुका का सत्य प्रमाण आर्थिक पतन के रूप में इतिहास हो रहा है। मेरे विचार से मुमुक्षु विज्ञान प्रज्ञानी व संस्कृत भाषा के माध्यम से पढ़ने वाला पाठक ही ऐसा कोई छात्र होना चाहिये धीरे, बलाकार, राक्षसी, धनहरण धारि ह्राय किने हो, अनेक समाचार-पत्रों मे वर्तमान विचारधारा/विचारधारा-धारा के छात्रों के नाथ पढ़ने को विवशते हैं। इन सब मे की पराक मुक्त नहीं हो सरता कि भाव्य जीवन निर्माण के जगत् से मुमुक्षु पण्य तक के सोहस स्वस्व करी साधन संस्कृत भाषा न ही चाहिए है। यद्यपि-मुनिषो द्वारा प्रशस्ति धार्मात्मिक ज्ञान की उपोति ध्यान लायित के साधन का मार्ग इती भाषा मे धर्मोत्थे वचन व मे समर्पित है जिसका उपयोग कर बाब विवेकी विद्वान् वैज्ञानिक वगैरे मे धार्मिकार कर रहे हैं।

संस्कृत भाषा की गुप्तभाषा कहना स्वयं अपनी हीनता दर्शावित करना है। जिस भाषा को समस्त भाषाओं की जगती के रूप में माना जाता हो, जिस भाषा के महर्षि पार्थिव जैने वैश्यावर के धारे मे 'न भूतो न भविष्यति' कह दिया गया

अज्ञान को जिक्रितसा धार्मिक शिक्षा धार्मिक प्रस्थापन रीकने वाले न हो किसी नेक पर नये मिलते हैं न धासयान के कहते हैं, पर बाबो ही विन सक्ते हैं बाबो मनुष्य काय बाते है धर्मो विज्ञान-धाराओं मे धीरे वहा भी तब विन सक्ते हैं जब बाबू सब का सब विन सक्ते हैं। विवेकी किसी सुसुप्त धराधार सविधि की धारे से एक बोली बुझाई गई। मोठी मे जो विचारधारा की जगत् से दो मुमुक्षु धिक्कारित इस प्रकार हैं।

१ विज्ञान विज्ञान मे नैतिक तथा धार्माध सम्बन्धी शिक्षा की आवश्यकता

२ धर्मो धीरे धिक्कार मे धार्मिक

हो, जिस भाषा को समस्त भाषाओं दुनिया मे पढ़ा जाता हो, जिस भाषा मे ससार का प्राचीनतम धर्म वेद मानव मात्र के लिए प्रकाश विज्ञान के अनुसन्धान के रूप में उपलब्ध हो तथा जिस भाषा मे धर्म (हिन्दू) जगत् के समस्त सर्वज्ञान सम्पन्न होने हो वह मुक्त कैसे?

हा! जब यह राज्याय भी तो मध्यक न के विज्ञानो न प्रतिप्रार्ग मे इसे दुर्गम प्रसन्न बना दिया जिसका भय धार जगत् प्रायः रण मे स्थान है। एक समय ऐसा भी रहा जब यह नाम ब्रह्मण जगत् विज्ञान की भाषा तक सीमित रह गये सभी मे यत्तु श्राव्य रिक्त न हुए हा गई। परन्तु कुछ वर्षों में जगत् जगत् के जगती के लिए उदात्त २०। जहा बाबू के समर्थन ० वर्ष युग इसाहाबाद विज्ञान विज्ञान मे तब भाषा मे धार्मिक-धार्मिक की सम्या नारायणी वही धाब छात्रों के विचारधारा व विषय के प्रति धार्मिक है धीरे-विज्ञान किने मेव भाषा के की सम्य मे प्रसन्न व कर रही है।

प्रायः इस भाषा के संस्कृत विधि से प्रसन्न व व्यावहारिक ज्ञान की शक्ति से प्रमेक सत्याप काशीयता है। साधन द्वारा भी इस भाषा के माध्यम से उपरिभाषा करने बाबो की भाषावता ही जा रही है। परन्तु जब हमने सविज्ञान के प्रमुख विज्ञान शास्त्रों के ३० वर्षों के पर्याप्त भी राष्ट्रीय विज्ञान की गुप्तपण्य नहीं बनाते हैं तो संस्कृत भाषा दूर रह गयी है। धन धार्मिक धार्मिक के लिए हम अपनी स्वस्थिति व सत्यापों के प्रति धृष्ट विज्ञान व्यक्त करते हुए संस्कृत का धार्य-धन का धार्य-धार्मिक के परिवर्तन करें। न्यायमूर्ति की वद धीरे मे हिन्दी धर्मो की धरुणावत का एगिहासिक विषय की धर्मोवता धरुणावत संस्कृत भाषा के धर्मोवत देर किता है। धाया है भारतीय जनमानस धारें युवकों की 'सत धामी' को सत्यक रोहित से धुराहित रक्ते हुए इसकी कीर्ति मे योगदान देते हैं। इससे जहा एक धीरे व धामी विवाद का घल होता बाबू इतरी धीरे राष्ट्रीय एकता हो सक्ती होगी।

सुरेश चन्द्र "१९८०"
प्रचार मन्त्री

कल्याण मार्ग के पथिक विरोधी की स्वीकार करने कि यह भारतवर्ष का धार्मिक सत्प्राप्ति विन की नजर से ही सभी की तरफ देखाता था। कायरी के जगत् मे दस पुनर्वि-धित की निर्भयाता बहुत लोग न समझें हैं धीरे धारण की नजर से उनकी तरफ देखा होगा तो वह स्वाभी जो का बोले जायें। वैदिक धार्मिक का एकत्र हम अज्ञानन भी जैसे पते रहते हैं।

विष्णो धाय प्रतिनिधि सभा के प्रचार
मन्त्री श्री राधेश्वर हुजा की जहिन सौ०
सदाशाला का प्रभु विहाङ्गु भारतवर्षक
कोषाध्याय नगर धार्यधाम्य पाहुरर
विष्णो के सङ्घ १६ मई को प्रथम
से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा
प्रधान श्री सूर्यदेव, सहामन्त्री श्री डा०
बर्मोपाल, वैद्य प्रचार प्रधिष्ठाला स्वामी
स्वच्छन्दानन्द श्री ध्यादि अनेक गण्यगण्य
स्वच्छन्दानन्द के।

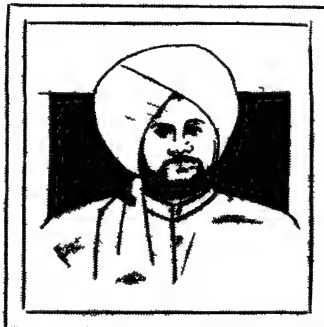
साप्ताहिक ओ३म् कृष्णवर्ण विश्वमार्गम्

आर्य सन्देश

पुष्प एक पृष्ठ २० पैसे वर्ष ६ मूल २० प्रतिवार, १६ पृष्ठ १८०६ आर्य सप्ताह १८९०=२३०=०६ अंक २०४२ दशमवर्ष—१६१

अमर बलिदानी पं० लेखराम

बर्म वर बलिदान होने वाले बीर को३म् पं० लेखराम का स्वरूप आते ही एक विषय आकृति मानचरित्र वर उभरती है। एक ऐसे माफी की बात वाली है जो उफानी गरी के प्रथम वेग को विपरीत भारा में अपनी नाव सेता बसता है बीर कभी कभीता गरी निराप की नहीं होता। कबरा ऐसे लोगों को उन्मत्त कहा करता है। बर्म की कुल के बनी पं० लेखराम का जोधन गुरुहि दशमवर्ष और कृष्ण बर्म के अति पूर्ण वर्णविषय था। वे अपनी बर्म-अपार भाषा से कभी बर्मे नहीं, रके नहीं। विपरीत बर्णवर्ण के बाल से भारतीय संस्कृति विमल कलात्मिकों से कभी नहीं आ रही है। इस देश के बीले नामे नाम रिनी का सब बल से बर्म-परिचरित किया जाता रहा है। १८वीं घड़ी के हिन्दू बर्म सब कर्मे आटे के दीपक की तरह हो गया था जिते वर में र्ण की पुष्टि था आर्य भीर साहूर उबलते हैं तो कीए उठा वे जाए। फिरी के छुने बाज से ही बर्म से बाज भाति से बालन कर दिया जाता था। ऐसे कर्मे बागे जैसे बर्म को लोभने के लिए धनेक मतावनकी ईश्वरी बीर सुखमगम हिन्दुओं को बाधे-बाध के बकलते बने जा रहे हैं। उक्त काल से महर्षि दशमवर्ष द्वारा विना सुद्धि सुदर्शन कर्म पं० लेखराम ने अपने हाथ में उठा लिया। बीर उलका ऐसा कुशलता के साथ आवाज निवा कि धनेक निरुद्ध भारी ईश्वर हीकर बाधने पुरात वर से बर्मे बाधे। उनमें जोधन की इस कदम के बीर बीर रोमाञ्चित हो जाता है। सब कर्मे जाता बला बलक लक्ष्य में कुल सेता सुखमगम होने जा रहे हैं। वे उस समय वर सेते बोधन करने ही जा रहे हैं कि पक्ष द्वारा



उन्हीं बुधभा मिनी, उकी कल्लका के उठकर वे देवताओं द्वारा सब आर्ष के लिए वर पद। उस नाम से कर्मे देलने स्वेकष बर्ही था उन्हीं कल्लो गरी के कर्माणि लया थी। देल से मिने से उन्हीं बीर की लगी क्रा से रके बर्मे से ही वे उठ स्वत पर पक्षे बर्ही कुल हिन्दू नरकाल में आकर अपना बर्म परिष्कष करने जा रहे हैं। जैसे ही उन्हीं पं० लेखराम की बीर बर्मे-काला को देला वे भाव विचरी हो गये। उन्हीं यह कदम बर्म परिचरित से कर्मा निचय कर्म विवा कि बित बर्मे में सेते हवाई र्णक भारी हैं जो आपनी आन वर लेलकर इसको बर्मा बाधे हैं, इस कदम वर की कर्माणि नहीं लयन सके।

पं० लेखराम ने अपने बीरचरित्र में कर्मे कुल की धनेक को कुलक ३१ हैं। वे उकी कुलक विचारों के अर्को के लक्ष्य में लिखी गयी। महर्षि दशमवर्ष के आधुनिक बीरचरित्र की विचारों का, जैसे की धर्मवीर देव-

मुकदमे बारिक कर दिए गए। बर्मे की को३ से को३ लेने से मुकलनाम नमान क उ हो गए। ऐसे ही एक बीर हवाई की वे बर्मे बर्मे गये। उन्हीं आर्यसमाज के बर्मे मगम की बर्मा में नीब का कर्मे किया है। ऐसा उपदेशक, ऐसा लेखक देला कदम लेक देला कतिपय ही आकर आर्यसमाज गमित है। उन्हीं बलिदान के पक्षे उन्की कर्मे का कर्मा की कुल है। उन्की की३ में २००० कर्मे-मिने के उन्की कुल कर्मा की३ बाल कर मिने कर्मे वृत्ति के लिए। उन्की कर्मे के पं० मुदनेष विचारकार केता को३ स्त्री विद्वान् आर्यसमाज को थिक्त है। बर्मे ही बीर देलकर कुल है उन्की कर्मे की३ की३ लगी बेनी। बर्मे हैं महर्षि दशमवर्ष कर्मे ऐसे बलिदानी विष्णु मिने।

आर्यसमाज का धनी बलिदा-निवो से की३ कर्मे बर्मे बर्मे उन वर बलिदानी बीर की की३ कर्मा की३ कुलते जा रहे हैं। न्यायी अध्यात्म बीर महात्मा हजरा की तो फिर भी स्वरूप किया जाता रहता है। बर्ही वरमगम कुल उपेक्षित हो रहे हैं। बर्मे बीरमगम को न पुका न सराहा तो बीरता की जननी न हो पायेगी। बर्मे—

प्ररणा पाहोदे से यदि हम न लेंगे बाजावी लगी हुई लोभ हो जायेगी। यदि बीर की पुजा हम नहीं करने तो सब मानो बीरता बर्मे हो जायेगी।

—कथाल सुवाय



विषयी धार्य प्रतिनिधि वरत १६, हनुमान रोड, नवी दिल्ली-२ कोट : ३३-१५८ के विप. मा. बंगलाब हाय कमीशन द्या प्रकाशित करा
देविक देव वशी सं. ३०. टीकालाकर, दिल्ली-४३ में मजिद : तमिः सं. ३०. (सी.) ७५३३

★ वक्ता-सन्देश ★

सत्यार्थप्रकाश एक महान् सन्देश

सत्याथप्रकाश ने न जाने कितने अग्रसूच्य व्यक्तियों को काया पट्ट की होगी ।
—स्वामी श्रद्धानन्द
'युग निर्माण तथा चतुर्मुखी प्रगति की भावना से
एरण यह दिव्य ग्रन्थ (सत्यार्थप्रकाश) एक महान् प्रकाश-
रत्नम है जिसका निर्माण महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम
सम्पूर्ण मानव समाज की उन्नति के लिए किया ।
—डा० श्यामप्रसाद मुखर्जी

यदि सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार
रुपया होता तो भी उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता ।

—गुरुदत्त विद्याधी एम० ७०

मैंने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा । इससे तबका पलट गया ।
सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन में मेरे जीवन के इतिहास में एक
नवीन पृष्ठ जोड़ दिया ।
—रामप्रसाद बिस्मिल

सम्पादकीय

साइचिन पर पाकिस्तान की गिद्ध दृष्टि ।

लद्दाख में भाग्य पाक भीमा देखा पर साइचिन ग्लेशियर घाटी
पर इन दिनों लघु युद्ध छिड़ा हुआ है । मई १९६४ में प्रथम बार पाकि-
स्तानी फौजों ने अचानक साइचिन ग्लेशियर पर स्थित भारतीय
बौली पर जबरदस्त हमला कर दिया था जो भारतीय सैनिकों ने बड़ी
कुशलता के साथ विफल कर दिया था । तब से लेकर अब तक कितने
ही पाक तथा भारतीय सैनिकों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है ।
यह स्थान १८ हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित है । यह स्थान विश्व
का सब से ठंडा क्षेत्र है । यहाँ की जलवायु आर्कटिक की तरह माइनस
४० डिग्री रहती है । घोर गर्मियों में भी जमा देने वाली बर्फों को हवाई
जगती है । यहाँ पर सदा ही हिमडों को तोड़ डाले वाली ठंडक रहती
है । हवा अत्यधिक हल्की और आसानी से हलकी कम होती है कि कुछ
भी काम नहीं किया जा सकता । ग्लेशियर १८ हजार फुट ऊँचा है और
बारो तरफ बर्फों से ढके पहाड़ २२ हजार फुट तक ऊँचे हैं । साइचिन
ग्लेशियर युद्ध क्षेत्र के लिए बलवन्त बना है । ग्लेशियर पर नवीन
उपनी रलते ही वह जड़ जगती है और बमझा उखड़ जाती है । इनकी
ऊँचाई पर नवीन और मनुष्य २५ प्रतिशत क्षमता तक ही कार्य कर
सकते हैं । यही कारण है १९४६ के युद्ध विमान समन्वित में १९५३ के
विमान समन्वितों ने इस क्षेत्र का रेखांकन नहीं किया गया था । अब
पाकिस्तान इसी का लाभ उठाना चाहता है । बमरोकी व चीनी नक्शों
ने साइचिन को पाकिस्तान का हिस्सा बताया जा रहा है । चीन चीन
सी० ने भी कहा है यह क्षेत्र चीन की सीमांकन नहीं रहा । इस साजिश
के प्रति भारत ने कड़ा प्रतिरोध किया है । एक समाचार के अनुसार
भारतीय जासूसी उपग्रहों से बहुत समय से साइचिन ग्लेशियर बेल्ट
पर निरन्तर जासूसी नजर रखी जा रही थी । इससे प्राप्त आँकड़ों के
आधार पर ही गत वर्ष २३ जून १९६४ की अचानक पाकिस्तान ने
आक्रमण किया था । ३ भारतीय सैनिकों ने अपनी धीर धाते हुए
मृत्यु जप्यो की देखा । यद्यपि वे समय के कि पश्चिमोद्गही हैं पर फिर देखा
कि वे सभी सफल हैं व पाक लाइट इन्फैंट्री का स्पेशल सर्विस ग्रुप के
सौम्य सगते हैं । उन्होंने चीन से भारतीय दस्ते की सबर करने की
कोशिश की परन्तु चीन डंडा था तब वे अपने सामियों की सूचना देने
के लिए स्वीडिश के लिए बड़ कि पाक सेना ने मोलों वर्षा शुरू कर दी ।
एक सैनिक मर गया दूसरा घायल हुआ । तीसरे दिनों तरह पड़व
कर भारतीय बौली पर सूचना दी । भारतीय अबें तत्काल धावे व
लक्ष्मी लगे हैं बाद पाक सेना पीछे हट गया । इन वर्ष २६ मई को
पाकिस्तानी वायुसेना के ६ जेट लड़ाकू विमान कुल्लुमखल्ला भारतीय
सीमाओं पर घुस घासे बिजुल्ले बंदेह दिया गया । कि जो दार आक्र
मण किया पर भारतीय सेना ने उसे फिर विफल कर दिया ।
भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार से इस सब पर बड़ा प्रतिरोध
किया है । गजकतिल परवेशकों का कहना है आज जब सम्बन्धों के
सामान्यीकरण के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं पाकिस्तान का चतुर्ता-
पूर्ण कार्यवाहियों में लिप्त रहना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है । भारत सर-
कार ने प्रत्युत आक्रमण के पूर्ण विवरण अभी सर्वजनिक नहीं किये

हैं पर साइचिन घाटी के छीनने के लिए किए गये पाक आक्रमणों के
बारे में भारत की उत्तरी कमान के जनरल एम० एल० खिन्नर के घनु
सार एक साल के आक्रमणों में १००० से अधिक पाक सैनिक मारे गये
और हजारों घायल हुए । इन कारणांशों में केवल तीन व तीव्र
सैनिक मारे गये जब कि २५ दिनगणों के लिसकने से दबकर मर
गये । सभी पक हमलावर बर्कों की लाला में लगे थे प्रशिक्षण प्रान्त
छापामार व कनाडो सैनिक व जो शायुनिक रथिथारों से लस व और
उन्होंने दोनों धोर से एक साथ हमला बोना था ।

४० मील लम्बे इस ग्लेशियर पर जो कि काश्मीर काराकोरम
के विस्तृत पास तथा रूस अफगानिस्तान और चीन की सीमाओं के
काफ़ी करीब है । सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । इसलिए
पाकिस्तान चीन के हाथ चले पर इस क्षेत्र पर अपना कब्जा जमाने
की हुरसम्भव कोशिश कर रहा है । निश्चित दिनों इस ग्लेशियर पर
कब्जा जमाने के लिए पाकिस्तान ने जो ४७ बमवक्क व १६ हवाई
जहाजों का भी इस्तेमाल भी किया । निजहाल यह ग्लेशियर भारत के
कब्जे में है । १८ हजार फीट ऊँचाई पर स्थित भारतीय सैनिक चौकों
का कार्य अत्यन्त दुष्कर है । इनकी ऊँचाई पर चौका का होना एक
विश्व रिकार्ड है भूमि से किसी भी संचार का ० से ४० दिन लगते हैं ।
भारत व पाकिस्तान दोनों अपनी संचार हवाई जहाजों में करते हैं ।
पाकिस्तान को इन व से बेहतर स्थिति है । क्योंकि फास के पूना
३१५ की हैनोकाटर उसके पास है । भारत को समय वीर मुकाबले के
हैनोकाटर प्राप्त करने में की शिथिल रहा है । भाग्य यहाँ पाक
मनुष्य नुकाम करने में पूरा खसकल है ।

पाकिस्तान के पास काश्मीर का भारतीय ७९००० किलोमीटर
क्षेत्र है जो अपने कब्जा रहा है जबकि चीन ने लद्दाख में अचानक
का ३८००० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र जीत रखा है । साथ ही पाक ने चीन
की भाग्य की नाशीर अधिकृत भूमि में से ४४०० किलोमीटर क्षेत्र
धोर दे दिया है । इस सब में चीन-पाक सङ्घर्ष रूप से बनी व १८
जून १९६६ से नवी ४०० मील लम्बी काराकोरम स कने हो माद
चिन ने पाकिस्तानी हमलों की सुविधा प्रदान की है । महत्त्वपूर्ण इन्सा
माबाद को चीन के नियन्त्रण प्राप्त से जोड़ती है ।

पाकिस्तान ने भारत की सीमा के साथ साथ १८ डिग्रीज सेना
रखी हुई है और उस क्षान में कोई तन्देह नहीं रहा कि प किन्न व
पजाब में गन्धन करने के लिए आक्रमणवादियों को किन्धन कार
वाहनों के लिए प्रशिक्षण दे रहा है । सायब जनरल जिवा निम्न सीमा
प्रान्त गोर वल्लुविस्तान में बिगनो हुई स्थिति पर से जन्मा का ध्यान
हटाने के लिए सैनिक कारवाहों का सेल सेलना चाहते हैं । लेकिन उन्हें
यह निश्चित समझ लेना चाहिए भारत किसी से निम्नी रूप में कम
जोर नहीं है । हर रूप में शूद्र नोज जवान देने में हमारे सैनिक सक्षम
हैं ।

—धराल सुधाशु

नवजागरण के परोधा विषयक आपत्तियों का उत्तर

लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने बेटी पुस्तक व्यवहारालय के पुस्तक-घर कुछ प्राप्तिवाचा प्रस्तुत करते हुए एक सेवक 'भारती की बही' को स्वामी जीयों के भावार्थोंके मे हो किरातों ने खयावा था। भव उत्ते ही एक भिन्न जलकी वेष्टर प्राप्तिवार्थके १६ वर्ष के प्रथम ने प्रकाशित किया है। इस सम्बन्ध में मेरा वक्तव्य निम्न प्रकार है—

स्वामी जी कहते हैं कि भारतीयों ने धारणी पुस्तक की उची प्रवर्तना की है। धारणी वास्तव में प्रवर्तना— स्वामा नहीं थाई कि उनका यह पुस्तक धर्म जीवन चरित्रों के धारणा पर ही लिखी गई है। निरवर्तना है धारणी कृति की प्रवर्तना किरातों का पाप नहीं है।

निज कवित कहि साग न मीका ।
सरस हेऊ बाजे प्रति फाका ॥

आलेखकर्ता को यह सोचना चाहिए कि जीवन चरित्र को ग्रन्थ पूर्व लिखित जीवन चरित्र को छायावर ले लिखना जायदा और पुन लेखको से सहृदयता देने से अनुचित भी बसा है । जैसे तो ग्रन्थ के समर्थन से ही १० लेखकार १० देशेष्टयाय मुकुण्डाष्टयाय दादि वन स भी औषधीकादो को सादर स्मरण किया है जिनमें स्वामी सयानन्द के जीवन लेखन में भरपूर परिचय म किया ।

[illegible]

नामसु लिख्यते किञ्चित् ।

૬. ઘર મરે મિત્ર ટકારા નિવાસી થો

बयाल जो भाई धार्य ने टकारा के समीप-
नहीं नांव रामपुर धारि के सम्बन्ध में कुछ
नवीन बातकारी दी है। उनके लुप्त विष-
यक लेखों को भीष्ट्र ह्रीं प्रकाशित किया
जायेगा। इस सामग्री से स्वाधी जी के
टकारा से निष्क्रमण तथा धार्य के धार्ग
धारि के सम्बन्ध में कुछ नवीन तथ्य सामने
आये। पाठक इन लेखों की प्रतीक्षा
करें।

स्वामी रामचन्द्रानन्द जी लिखते हैं कि मैंने सर्वप्रथम कामा भाग्यिका मारावरी जी जन्म तिथि के विवरित रूप ग्रन्थ तिथि क्यों लिखी? भासेपट्टी को क्या मग्न हो रहता होगा कि हॉलिंगमार्क का नाम तो किसी विषय के सम्बन्ध में सभी पत्रों मग्न हो का प्रत्युत प्रकाश होता है। मैंने ऐसा ही किया है। जन्म तिथि के सम्बन्ध में लोग के स्व-व्याख्यापारकी के मत को तो रक्खा ही है जिसे सावधनिष्ठ समाजी मायाशास्त्र कहें। मार्कजी 'मृत्ति' के दोस्त निरपेक्ष समर्थक स्व-मायावादिता के दास विषय का मत भी प्रत्युत लिखते हैं। स्वर्ण को भी धारण नहीं करता मृत्ति है। स्व-मायावादिता में भाद्रपद मासी तिथि अपनी कल्पना के लोभी तिथि किन्तु मायावादा समाजीय-सम्पन्नक के प्रत्युत प्रकाश में रक्खी ही है। हस्तलिखित जीवनी (स्व-केदारवासिष्ठ आल गणपदा भाग्यिका लिखित) में उद्धृत तिथि को ही लिखा है। जीवन तिथि के सम्बन्ध में सभी मासी को केवल राम काय। १। हस्तिया मासी में पदरूप तिथिरे पत्रे कहा ही जाता है।

मेरे प्रथम के आलोचक ने इसे रिस
 इण्टे से पढ़ा है, यह कुछ बातें वे जात हो
 जाई है कि वह लेखक के अधिपात्र को
 सत्ताही ने भी समझने में सफल रह
 है। जब मैंने लिखा था कि 'स्वामी
 दयानन्द के विता ने धर्म पुनर्मुखकर
 को बचुरों के चे प्रथ धारण को जनके
 मानावरुण के आकाशवाणी पाठुओं परब्रजान
 प्रकर का वर्णन करते हैं तो स्वामी
 रैलेश्वरानन्द पुनः से पुधुने हैं कि बचुरों
 में आकाशवाणी प्रकर का वर्णन कर
 प्रणी महाशय यह जन तो प्रथमकर
 के सर्व पिता को न निरु मे। लेखक
 के अधिप्रति को न समझ कर ही ऐसी
 आलोचना की जाती है।

अब आन्विकर्ता, पुनीषा शलाका
पुरुष तथा प्रवण प्रादि शब्दों के प्रयोग
की शालोचना करता है। क्या किसी
बुद्धिमान् पुरुष को भी यह समझाना
पड़ेगा कि शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं।
पूरीषा यदि पुराहित का वाचक है तो

या विचारों की ओर हो या? क्या चरित्र के
 विकास में वे परभावों को भी धुंध-
 धुंधली स्था हो जाते? बहुतों का मु-
 दित हाँ मिलता है और वे कहते हैं कि
 ही ऐसा वास्तविक होकर बसाता है। इसीलिए
 स्वामी रामकृष्णमण को 'प्रयत्न' का बर्ण
 'हीराण' तो लेकर बाबा किन्तु उन्होंने
 बामना विचारों का एक उत्कृष्ट विचार
 को देखते हैं की यह भी किन्तु प्रयत्न, प्रयत्न
 प्रयत्न के धर्म-तत्त्व विचार, प्रयत्न
 परचम बाबा विचार है। इन बाबा के विचारों पर
 बाबा प्रयत्न का बर्ण होता है यही है। प्रभु
 रत्न, प्रयत्न, प्रयत्न, प्रयत्न के विचारों का
 बर्ण स्वामी की को 'बाम प्रयत्न' कहता
 प्रयत्न है। 'बामना' का बर्ण रामकृष्ण-
 मण की दुपट्टी का बर्ण का बर्ण है। प्रयत्न
 है। यह बाबा विचार के को बर्ण है तो ही
 विचार। किन्तु बाबा विचार के बर्ण दुपट्टी
 प्रयत्न कहना बाबा विचार के विचार है।
 प्रयत्न विचार के विचार है।

अज्ञानान्धस्य लोकस्य
ज्ञानाञ्जनसत्ताकया ।
बभूवृक्षीक्षित येन
तस्मै बाजिनये नमः ॥

विश्व साहित्यिक शक्ति ने अज्ञान के प्रचकार से आध्यात्मन लोगों के नेत्रों को ज्ञान रूपी अन्धकार की सलाका से खोल दिया है हमारे प्रबन्ध हैं। अफसोस है कि साहित्यिक प्रयोगों के सौम्यता को न समझ कर ही इस प्रकार के उपर्युक्त प्रयोग किये जाते हैं।

आलोचनार्थी की अवली आपत्तियाँ
१-

१ स्वामी स्वामन्द के महानि
निष्क्रमण के प्रसंग में सिद्धांत के गृहस्थांग,
तुमसीदास के गृहस्थांग तथा समर्थ
रामदास के वैराग्य ब्रह्म आदि के
ब्रह्मन्त कर्षों दिये गये ।

२ स्वामी दयानन्द के जीवन प्रसंग
मे राम मोहन राम रामकृष्ण परमहंस
तथा विवेकानन्द की चर्चा क्यों की गई ?
विवेकानन्द ध्यात्रि की प्रशंसा के वाक्य
क्यों लिखे गये ?

३ इस शब्द में प्रत्येक शब्दावली में
संकेतों पाद टिप्पणियाँ क्यों दी गई हैं ?
आदि ।

वस्तुतः इन आलोचनों में कोई भी सार नहीं है। जैसे कि मैं पहले भी लिखा चुका हूँ, लेखक को इतनी स्वतन्त्रता प्राप्त होती है कि वह अपने ग्रन्थ में क्या लिखे

किन्नाया लिके धोर कैडा लिके ? यह तो
सम्भव है कि स्वामी राधेश्वरानन्द का
प्रबन्धन प्रकरण प्रायोगिक ज्ञान न बड़े
हो, किन्तु धर्म गणको की भाँति वे स्वयम्
नहीं धारणें। स्वयं डेठा जाने वाले वे कौन
हैं ? राम मोहन दाय के कथों 'को
प्रबोध स्वामी दत्तानन्द ने पूना
प्रबन्धनों के की। कश्मीर प्रवास के
समय वे स्वयं 'रामकृष्ण परमहंस' के लिये
के सत्संगे बस हाट गये थे कि स्वामी
दत्तानन्द के आधिपत्य कास की परिधि-
धियों की चर्चों के प्रथम म नवजागरण
के आगमनो तथा उनके नेसाओं का
उल्लेख तो प्रबन्धनप्रकरण में है।

स्वामी रामानन्दजी की वाचनिक
 शक्ति ही शतशत विविध तथा भावपूर्ण
 थी। उन्हें अत्यन्त ही शक्ति प्राप्त
 थी। वे कहते— अपने मनवाचक तथा पुत्र
 का वाचन करने वाली मातृश्री हैं। विष्णु
 की भाँति शोध प्रक्रिया के भास्कारों का
 कल्याण है कि वाच टिप्पणियों के निमित्त
 शोध प्रथम का अन्तः शब्द श्रुति ही है।
 जो श्रुति की शक्ति वाच श्रुति है जो वाच
 प्रक्रिया को न तो वाचन ही शोध न
 महसूस ही ही अनुभव करते हैं। वाचन
 प्रथम स्वामी की शक्ति के निमित्त ही
 कि यह शब्द स्वामी की का जीवन
 शक्ति है जो इसका मूल शब्द ही शक्ति
 नहीं रहता था। यह शब्द ही शक्ति
 वाच ही स्वामी की का जीवन शक्ति
 शक्ति में दिया जाता है। वाचन
 ही शक्ति ही शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति
 शक्ति का मूल है कि शक्ति शक्ति
 शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति
 शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति
 शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति

प्राणरक्षण है कि परीकारिणी सखा को
 घस घुसत को बाह्यविक्रम के सुख मिश्रण
 बनाया था। यह कि स्वामी हयाना
 स्वयं परीकारिणी सखा को यह बाधा
 दे जाते कि उन्हें स्वयं विद्या प्रसू ही
 नहीं जानें तो साधक सखा भी नहीं करती
 घस परीकारिणी सखा को कोसने से ही
 कोई साध नहीं। जो व्यक्ति ध्यात्र के
 समय में घुसत को के सुखों से परित्यज
 हैं, उसे ही भी महाशक्त का यह जीवक
 पटित को। बोध के मोक्ष से ही सत्ता
 लेवे। यह कि घुसत को घुसत में बाधने
 बाधों से हयाना कोई मयस नहीं।
 निष्कलत यहा कहना सयान है कि निष्ठी
 सखी की प्राप्ति बना की पावती भी सखी
 नहीं होती।



विन्दो के मुख्य बावसाहू धीरवन्देब के महा उसके सिकारी जयल से पकड़कर कर एक बड़ा भा। धीर लाय ने। धीर कोहे क विन्दे ने नन्द बा धीर बाबर बाबर सहाय रहा था। बावसाहू कहता था— इतने बड़ा धीर मरान कर धीर दूसरा नहीं मिल सकता।

बावसाहू के दरबारियों ने उसकी हा ने हा बिनासी लकन महाराज यमसह सिंह की ने कह—उससे भी धर्मिक वसिष्ठ (शारी) धार नेरे पत है। बावसाहू को बहुत कष थाया। उसने कहा—तुम अपने नेने को इससे लड़ने के लिए छोडा। यह वसुधारा ने ११ बार गया तो वसुधारा काट लिया जायगा। यमसहसिंह ने म साहाहू की नेह बाव स्वीकार कर ली।

दूसरे दिन दिल्ली के किले क सामने के मैदान मे गोहे के मोटे लखो का बाह

क्रिशीरमज्ज-

वीर बालक पृथ्वीसिंह

मारी पिबारा की घेरो का लडाई के लिए रखा गया। धेरो का मुह देखने वहाँ बड़ी मारी मोड इकट्ठी हो गयी। धीरवन्देब बावसाहू की ठीक समय पर भाकर अपने सिंहासन पर बैठ गया। राजा यमसह सिंह अपने दश बच् के पुत्र पृथ्वीसिंह के साथ प्राये। उन्हें देखकर बावसाहू ने गुस्सा—घाय का घेर गया है?

यमसहसिंह बोले— मैं अपना धेर अपने साथ लाया हूँ। घाय लडाई आरम्भ होने की धासा दीजिये।

बावसाहू की धासा से बह बगसी धेर अपने पिबारे ल लडाई के पिबारे ने छोड दिया गया। यमसहसिंह ने अपने पुत्र को उस पिबारे ने पुत्र जाने को कहा। बावसाहू धीर बहा के खब लोग हुक्मे बन्के रह गये। किन्तु दश बच् का बासक पृथ्वीसिंह पिता का प्रणाम करते इनमे हसते धेर के पिबारे ने बस गया।

धेर ने पृथ्वीसिंह की धीर देखा। उस तेजस्वी बासक ने नेत्रो को देखते ही एक बार बह पुच्छ पकड़कर पीछ हट गया लेकिन सिंघासीने ने बाहर ने जाने

की नौक ने ठल पर के उसे उरसाया। यह धेर हाँके ने भाकर के पृथ्वीसिंह के ऊपर कूट पडा। बासक पुत्री सिंह का के ते एक धीर हट गया धीर उसन अपनी तलवार लिय ली।

पुत्र की तलवार निकालते देखकर यमसहसिंह ने पुकारा बटा। मैं तुह बडा करता है? धेर के पास तो तलवार है नहीं फिर तु उस पर पग गया तलवार भला-येगा? यह तो बम मुह नहीं है।

पिता की बात सुनकर पृथ्वीसिंह ने तलवार छुकी धीर बह पर पर टूट पडा। उस छोटे बासक ने सर का जन्मा पकड़कर फाड दिया धीर फिर धेर के भूरे शरीर के दो टुकड़े करने केक दिया।

बहा का सारी पीछ पृथ्वीसिंह की जय बयकार करने लगी। पर के जून ने छाना पृथ्वीसिंह जब पिबारे ने निकसा तो यमसहसिंह ने उसे छाती से लगा लिया।

ही धर्म बमसास्त्रो के प्रम पा प्रम कोटि मे बाते है विद्वान् मही ॥ १ ॥ यही सती प्रथा के लिये भी—

मत् भगवद् गीता सारी
मयारोहेदुष्टागमन ।
त रु बतो समाचार।
नयनोके महीवते ॥

जैसे सहाय के स्वर्णि पत्र प्रमाण है तो क्या हम प्रम को ही इस युग ने लो कार की ब्रिजवाय।

धर्म के युग ने ऐसी विजयगाढ़ें सहन नहीं की का सती घत हुये इससे ऊपर उठकर ही निष्प र करना होगा।

गुरुकुल विश्वविद्यालय हनुमान में प्रवेश

१ जुलाई १९८३ प्रारम्भ नि चक्र की ए स्तर हस गिला सारा भोजन नियमित विश्वासा उत्तम देखना के लिए प्रारम्भिक भोजन सुक १०/ मास मे ७ से १२ वय तक के बालको का प्रवेश गुरुकुल विश्वविद्यालय हुनायन मे दिवारा। शास्त्र लक्षण बालको की श्रुति स्मरण उनीग पीछा छात्र पाठ्यपत्र महाविद्यालय मे प्रवेश ले सकते है।

(स्वामी जर्मनन्द)
मुख्य विा तथा
गुरुकुल विश्वविद्यालय उनायन

जगत प्रभु कल्या के पास धर्मिक धर्मियन धर्मय ध्याम घट घट बासी पुरख एक रवित्र निज भवन की ठेक भिन्न भाव मरपुर कट्टा निविभागर तरे गुलु नायें ज्ञान मानु बा। होये प्रकाश, केवल लगे दुष्टी से धारा।
स्वामी केवलासाह

“वाह री पाण्डित्य परम्परा”

प्रज्ञा देवी

समय बाला की मात विषबादो के कथन कल्पने से बरनी कटी बा रहो की एब बालाभाज बड रहे ने सब समाज सुधारको ने बिबना बिबाह का न्यायोचित पल लेकर इसे प्रभावित कर हिन्दू समाज का कल्याण किना बा वा विरोध करने बाल तत्कालित सामाजिक परिस्थितो ने ?

२ यह कि १९२६ मे भारत एक्ट के पास होने पर काशी के पण्डितो ने इसे अत्यन्तनी योचित कर इसका प्रचल विरोध किया था। काशी की पण्डित मण्डली द्वारा हिन्दू समाज के कल्याण के लिए किए गये उत्साह कावों के रहते उनको कीन भारतीय समाज ने उदारीन बनाने का साहस कर सकता है।

गुरु १९४१-१९४२ काशी के पण्डितो की सामाजिकता की यह सुसरी शक्ति में समझती ह प्रत्येक मन को बलवत्त कर्णो जायेगी। यथा बाल विवाहादि का समय हो। नहीं उये अपनी स माजिकता का हेतु बलाना था देश को सच्चाजीवी बचारे युग मे ही बचने देना नहीं है। किच प्रकार अथ्य युग मे भी ऐसे बचे समग्रत कलोलनिय बचनों को प्रमाण मान पण्डित जब भी समाज के एक बच् के रदन का परवाह न करे हुए छात्र की दियानुसी बातो का समन करता है यह इस बात का उदाहरण है। इसी युस्तक मे पू० १०२ १७३ ने लेखक ने बहाना बाकी एब भी बीकास की ने माग उद्भव करते हुए उनके हृदयनिवाह (हृदयनो) के अनिर

प्रेमय प्रविचार धार्मिक सम्म की कावों की बर्षा के प्रलय मे रही पुरुता से पू० देवनायकाचार्य जी की शारिषा एब उनके जन साधनीय बातो की (निम्ने हृदयनो के अनिर प्रेम का धमिकार नहीं है का समयन होता है।) प्रज्ञा की है जो धाम के युग के लिए धारवर्धक है।

इस युस्तक के १९२६ में पू० मयस्वी सरकार द्वारा पण्डितो का सारार शीघ्र देकर प्रकाश पर ले गिला शासन की स्तुति भी की गई है। युस्तक मे बनेकों स्वको मे धर्मियोचित पुनरुचित बयवा भौषिक का धारवर्धन किया गया है जो बिस्तार से पुनक नकर ने ही भाषित हो सकता है। इसना धारवर्ध है कि इस समूची युस्तक को १६ जाने १८ किशो की पठक के वय मे यह भाष अथय धर्मित हो जायेंगे कि इस युस्तक का लेखन किन्हीं सम्प्रदायगत विचारो के आधार से धारवर्ध होकर हो किना गया है तथा युस्तक मत पण्डित नाभायनी की इसी आधार पर चुनो गई है।

हिन्दू समाज को गिबारा एब बा ध विभावो बिचने बियेय रूप से सारी जाति पिय रही को म गह्रा विमाने क लिए देन के मय्यमाय नेमोहा एब मुशो प्रम बह सवा धारवर्धन जैसे अथ्य साहित्य कारो द्वारा जो प्रस प्रमाण किने जा रहे ने उन्ही का समयवय एब तेजस्वी बासक के लिए किना उरथ है यह विचार नोयक बात है। वेब से प्रभावित होने पर

२५ अग्रेन १९८३ के माधवी ने 'लोते ने लो की मोर ने लो केरे लय लये लीयन को लेखकर सवा स समा बार को पठकर कि रत्नाम्नय ने एक बार पुन सा बा एम्ट का बलिबना उडाई गई' गुने बडा धारवर्धक हुन हुन धीर कोर कुन बाते न्याय ने धायी कि ५० हजर र पुनपुत्र बनों के बिबाह कर सारा हम को भविष्य धाय उन्ही धानीय धमका में बचने बाले धर्मिष्ठ निखार मोहो द्वारा उडाई गई है। किन्तु सारा एक माजिकी सरकारी कानून धार्मिक पला भी नहीं है किन्तु इस युग न ऐसे कोश के बिना क्या बावसाहू को पुन सुदृष्टि भी है धीर बावसाहू एक का विरोध करना सामाजिक कल्याण के लिए उचित भी मानते हैं।

सन् १९८३ मे निवर्धनवादीय प्रभावत धाराएवो द्वारा प्रकाशित काशी की धर्मिक परम्परा नामक एक ऐसी ही धर्मय युस्तक है जिसके लेखक द्वारा काशी के पण्डितो की महत्ता एब उनकी सामाजिकता निम्न उदाहरणों द्वारा छायायि गई है—

१ यह कि बाल का बहासमाय महाराष्ट्र का प्रभावसायक, राजा सवा उत्तमवय का धारवर्धन निज सहाय बिबना बिबाह का हिन्दू समाज के कल्याण हेतु समन कर रहा था उस समय उस युग के महान् बमसाधियों ने बिबना बिबाह के नि से अपना सम्पति एब अत्यन्त बहुर धामाज को धार्मिक सफट से उडारा। काशीय पण्डितो का यह अत्यन्त प्रमाण निताय प्रसन्ननीय था।

गुरु १९८३ १९८३ लखन महानुभाव लेखक काशी के पण्डितो की सामाजिकता विषयक इस उचित पर लय विचार कर ने कि विम

वेदभाष्य की पृष्ठभूमि पर सिंहावलोकन

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

पार्श्वों के जीवन में बेदो की का स्वागत
अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रतीकानुसार वे
हैं वे ईश्वरीय ज्ञान के स्वयं प्रकाश हैं। इसी
की भावना से स्वीकार किया जाता रहे है।
परन्तु जब यह चिन्तन गहरा रहस्यमय है।
इसी की एक विविध छवियाँ प्रकट हैं जो
सामान्य मन की धारणा में संकोच रहती हैं।
वे प्रत्यक्ष की 'स्वी' सम्पीरिता तत्त्वों
विभिन्न छवियों के कारण सामान्य
दोष या मनुष्य भावना में पारस्परिक विरोधों
के मध्यस्थ की इनके रहस्यों की नवी
समझ पाने हैं। इसी कारण प्रतीकानुसार
से ही बेदो के भाव्य करने की रहस्य
प्राप्ति जाती है। परन्तु इसके के अत्युत्तर
रावण हृदयारे सामने बेदो के सचप्रथम
आध्यात्मिक के के भावों में परन्तु इनका
है वे भाव्य प्रकृति के प्राप्ति नवी प्रकृति

[illegible]

एक कल्पना क्षणित अवसथमें रही। इसका मुख्य कारण ये बेव की भावा छन्द रखना व धर्म काव्य की नवीन लवक पाये।
 छन्दोने धरने वाष्पों ने बढो में बहियु
 सफुको का ब्राह्मणो उपनियु, दुराभो में
 प्राप्त वायामो व ऐतिहासिक तत्त्वो से
 सन्तन्त्र बढाकर वैदिक वाया शास्त्र
 वैदिक सभ्यता का नवीन मत बढा कर
 दिया। इस निष्कर्ष पर पहुचने के तीन
 कारण ये—

(१) उन्हें वैदिक परम्परा व साहित्य का ठीक ठीक ज्ञान नहीं था तथा उन्होंने प्राचीन ऋषियों की नैतिक प्रणाली को खोब दिया था।

(२) सायण का भाष्य इन का मार्ग दर्शक था।

(३) पश्चिमी विद्वानों की वेद से कोई सहानुभूति नहीं थी।

[illegible]

महर्षि दयानन्द के धार्मिक विचारों के सम्बन्ध में इन सभी विचारों का प्रभाव है। समाजिक विकास हो चुका था। स्वाधीनता दयानन्द ने देखा कि वेद के सम्बन्ध में धर्म का (आध्यात्मिक) प्रभाव धर्मों का प्रभाव किताबों का प्रभाव है। तो प्रतिक्रिया धर्म के स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के महान् सुधारक सामाजिक क्रांति के अग्रदूत एक वैदिक भाष्य के मन्त्र एवम् योग साधन की भूमि में ले जाने के लिए दयानन्द ने वैदिक धर्म के सार को प्रस्तुत किया।

मीन एष प्राणिमात्र के उपकार की
भाषना से बहुमुख लम्बक मानव की रिये।
वेधे के विषय मे एक तीसरी विचारधारा
का सुत्रन किया। वे धर्म ने लो केवत्र
कर्मका की पुस्तक मानते थे, न धार्मिक
के तीव्र। वेधे के विषय मे प्रमुख रूप से
दो भाषनाएँ थी—(१) वेधे के ज्ञान का
प्रकाश ईश्वर ने सृष्टि के धारक मे ध्वनि
बाधु धार्मिक धर्मात्मा नामक जार
महियों के घन करल्लो मे मानव जाति
के ज्ञान व कल्याण के लिए दिया।

सनातन सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान होने से वेद में सारा ज्ञान विज्ञान बीज-रूप में वर्तमान है इसी में वेद स्वतः प्रमाण हैं। उनकी ये भाष्यकारों वैदिक साहित्य के सम्भीर धर्म्ययन पर आधारीत हैं।

[illegible]

महर्षि दयानन्द का वेद के सम्बन्ध में दूसरा दावा कि वेदों में समस्त ज्ञान विज्ञान है। इन्हीं सच्यों में स्वामीजी का कहना है कि सर्वप्रथम वेद ईश्वरीय वा ईश्वर का ज्ञान होने से अपने आप में पूर्ण हैं। और ईश्वर ने यह ज्ञान मनुष्यों के ज्ञान व कल्याण के लिए दिया। अतः ज्ञान मनुष्याध्ययोंगी मनुष्य ज्ञान विज्ञान होता चाहिए। स्वामीजी ने वेद में निहित ज्ञान राशि को प्रमुख रूप से चर बिच्यों में विभक्त किया है — (१) विज्ञान (अर्थात्—सब पदार्थों को यथार्थ जानना। (२) भाषाशास्त्र। (३) कर्म (४) आत्म।

महर्षि दयानन्द का विज्ञान से सा.पर्य

ज्ञान की उस प्रभावी हो है, जिससे ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीनों के समुचित उपयोग से केवल तुल्य-मरण क्षमस्त प्रभाव का साक्षात् रूप होता है। और मानव जाति के अन्त्युद्यम निवेस के प्राप्ति से यथावत् उनका उपयोग होता हो।

स्वाधीन से विज्ञान को जो दो रूप में वांछता वी है — (१) ईश्वर का यथावत् ज्ञान व उसकी साक्षात् का पान। (२) प्रमाण विद्या का ज्ञान यथावत् प्रदायी के यन्त्रों के उपयोग को जानना।

संगसना—प्रार्थना परमेश्वर की प्राप्ति के उपाय करना ।

कर्म = काम में कर्मकाण्ड की मते
हैं जिससे जीवन में परमाय ब शोक
व्यवहार की सिद्धि होती है। स्वामी जी
का कर्मकाण्ड से तात् य केवल यज्ञ याग
से नहीं बरन् उसमें जीवन की समस्त
क्रियाओं को सम्मिलित कर लेते हैं।

ज्ञान—ज्ञान का अर्थ पृथ्वी से नभ तक
 नभ से प्रकृति पर्यंत पदार्थों के गुणों के
 ज्ञान से ठीक ठीक काय सिद्ध करना।
 इसे हम आधुनिक विज्ञान के रूप में
 प्रयुक्त कर सकते हैं। वेद भी भाषा में
 विज्ञान—विशेष ज्ञान ईश्वर आत्मा
 आदि के ज्ञान को जबकि ज्ञान प्राकृतिक
 विज्ञानों के अर्थ में प्रयुक्त होता है।
 (आध्यात्मिकाध्यात्मिका)

श्रेय मे पवार्थ बिचारै खा मही नही
 बहु मन्त्री छोर धनुस्मान का बिषय मे
 पायी तक वेदी मे से वैज्ञानिक सुनौं की
 छात्र का निवय तूँक मन्त्री प्रयास
 नही हुया। धत ह्वारे खानमे कोई ठोसतक
 प्रमाण नही है। बतम न मे कुछ प्रयास
 किया बा रहा है। तथापि महर्षि वयानम्
 बरार मे से दानी ज्येष्ठ निम्बसुमिका
 मे वैदिक मनो से ज्येष्ठ, तार बिचा,
 पिवान बिचा, मनो न बिचा, भूयो न बिचा
 धादि का प्रतिपादन बिचा। ज्योतीषी
 शास्त्री के मध्य मे यूरोप मे ही इनमें से
 कतके बिचारो का विकास मही हुआ

ऐसी व्यवस्था में ज्ञानी हराम-खारखोरा का धारण नहीं करेगा। अतः धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 १. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 २. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 ३. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 ४. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 ५. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 ६. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 ७. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 ८. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 ९. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—
 १०. धर्मशास्त्रों में प्रथम नियम निम्नानुसार है—

वेद वास्तव मे अपने आप मे पद
विद्या ही नहीं अपितु नीति धर्म राजधर्म
(शेष पृष्ठ १२ पर)

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा माला—६

गायत्री मन्त्र की महिमा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

‘ओ नमो भूय स्व । तस्यमिदं प्रवचनं यतो
देवस्य वीर्यम् । विद्यो यो न प्रवीर्यवान् ।’

‘ओ’ परमात्मा का निम्न नाम है, जो प्राणों का भी प्राण है उसे ‘ओ’ कहते हैं और पुनः सब कुछ को के करने वाले को कहते हैं ‘स्व’ स्वर मुख स्वप्न है और करने वालों को सब सुखों की प्राप्ति कराने वाला है । एसा परमात्मा । ‘प्रवचन’ अर्थात् समस्त वचन को उद्घरण करने वाला पूर्व आदि प्रकाशक पदार्थों को प्रकाशित करने वाला और सब ऐश्वर्य का दाना है । देवस्य उस चाहने योग्य और करने वाले देवता परमात्मा को जो ‘वैर्यम्’ सबसे बड़ा और ध्यान करने योग्य है । यहाँ सब सुखों को दूर करने वाला पवित्र और तेज स्वप्न है । तब उन्हीं परमात्मा के स्वप्न को योग्य है हम करने मन में चाहते हैं । योम वही सुखों को दूर करने को दान प्रदान, कर्म और स्वप्नान में प्रवीर्यवान् प्रेरणा करे ।

इस प्राणा को करने मन में रखकर हमें इस मन में सबसे असीमारी की स्तुति प्राप्ति और उपपन्ना करनी चाहिए । मनुष्य का योग्य अनेक प्रकार के विचार होता है । मनुष्य चाहता है कि इष्ट के साथ सयोग हो और धनिय के साथ विरोग्य पद्वि सवार में से दोनों पात्र ही होना चाहते हैं । किसी के पास योग्य धनका योग्य बन है, मान भी है । परन्तु परिष्कार प्राप्त वह होता कि एक समय से सब हो पदायं उसे पुष्प प्राप्त होने और उसे कुछ और प्राप्त करने की इच्छा होती है ।

मनुष्य से कोई भी नहीं बच सकता । बुद्ध धर्मका का मन्त्र मनुष्य के सामने बिचमानी हो पन्ना है । न सभी साव साव रहते हैं माने बुद्ध का नाम और सा सुख का योग्य हो इनके धर्मो है । सब को इन्हीं से उपपन्ना करता है । मनुष्य को चाहे साधारण सुख प्राप्त हो चाहे परमेश्वर की प्राप्ति का सुख, ये दोनों ही उपपन्न के पक्ष हैं । उपपन्न किन्ति । मानस बन्धन उसके साथ वही सुख करेगा, एक एक सुख सुख के साथ प्रिया करता है । कभी यह मानस किन्ति कायि में अनेक कर जाता है, कभी वैश्व में बुर जाता है । इसकी माया विजयी की

बद जाने उसका ही दुःख है हृष्टाग आरक्ष-
वच भी इस समय इन्हीं बंधनानों में है ।

उद्योगिन उपनिषद्गुरुनिष्ठ लक्ष्मी
देवस्य देवनिष्ठ कायुषका चरन्ति ।
देव निष्ठस्य सुख योग्यमायसात्म्या
यत्ने कृते यत्नि न निष्ठस्य कोट्यन्तं बोध ॥
इति उपनिषत्

धर्मात् उद्योग से ही वह स्वप्न सुख लक्ष्मी को प्राप्त होता है । सवार के समस्त ऐश्वर्य तथा गौरव उद्योग से ही प्राप्त होते हैं । यह सवार सप्त पञ्चम का ही है । मन्त्र को ता हम यह कहते हैं कि-तु करे इसके विचारों में । जितना मन चाहते हैं वरिष्ठा उसकी जाती है । जिन्ना चाहते हैं परन्तु प्राप्त नहीं होती । हमें वाद रचना चाहिए कि सवार का विजया ऐश्वर्य है उद्योगों की ही प्राप्त होता है । उद्योगों सुख अपना प्रवचन विचार करता है । उनमें इसमें है चारों-चोर सब प्रकारों को करने वाले परे हृष्टाग योग्य बन्धना बना है । साधु की प्रवृत्ति विचारों साधारण लक्षण और विचारप्रतिष्ठान करती है वही मन और विचार को प्राप्त होता है । विचारप्रतिष्ठा और सत्यता सब दोनों ही मिल जाती हैं, तो लक्ष्मी उनके पास प्राप्त होती है । एसा नहीं कि दीक्षा की पर लक्ष्मी का स्तोत्र पद दिया प्रथम कर दिया और लक्ष्मी का नाम वा था । यदि लक्ष्मी पर विचार पाने की यह रीति होती तो प्राप्त सब ही करोपनिष्ठ बन जले । इसका मन्त्रा मार्ग क्या था । मेरे भाई । सुनो ।

विद्वद्भिर्वा प्राप्त गीते मार्ग के अष्ट राह हैं । उसका साधारणता बहुत दुःख हो चुका है । कहते हैं कि यह स्वाध्याय साधु हृष्टाग वरिष्ठ से विग्रीही हुई है । धर्मो को तो केवल तो हृष्टाग वच ही मुक्त है । यदि उस समय की सवार जाती तो क्या बिचमानी था । जिस समय मनुष्य जाति जागरण समान जाते उसी समय उसका उच्छ्वास बंधा पार हो जाय । तुम यदि बंध भी उसकी पीर उपपन्नो बन जाओ तो प्राप्त हो बंधा पार हो जाये । देखो । एक मनुष्य है उसने एक मन्त्रान बनाया हृष्टाग बन्धन कर दिया, और वही बना गया । बन्धन बन्धन वह वरिष्ठ का प्रकाश पदा लक्ष्मी और लक्ष्मीका का राज्य रहा । साधु बन्धन वरिष्ठ वह बना पार और उसने

वहा पर दीपक बनाया धर्मकार दूर हो गया । वहा साधारण में यह कहा कि मैं तो साधु बन्धन स यहा हूँ इसने कोट्यन्त नहीं बना । इसी प्रकार तुम भी करने धर्म करके स बन्धनों को दूर कर दो । जिस जातिसे मैं बिना और प्रकाश का प्रकाश किया उन्हीं ही पारना दूर कर दिया ।

मनुष्य भी तो सब पहले कुछ बहुत बन्धी न था । उसके धर्मने धर्मपुत्रों को हटा दिया तो वह बन्धी और उपनिषद्बान्धन बना गया । जागने से सत्तर पक्षों वच में ही कितनी उन्मत्त कर ली । उसने बिचमानी बिन बातों के करने से अथ दुःख तथा सच्छ बन्धना है उन्मत्त छोड़ दो । तुमने छोड़ दिया । मान तो सोचा यह है । परन्तु साधु दुःख है साधक साधन बन नहीं । पहले बन्धन पक्षों की रीति यह थी । धर्मपक्ष तो कई प्रकार के पक्ष होते हैं परन्तु पहले छोटे छोटे सुख माने पान बरती में साधने के और उनमें माने माने होते हैं । इन पानों के साथ साथ भी बरती पर कुछ बन्धन बन्धने होते हैं । बन्धन प्राया, उसने बरती पर से माना उच्छ्वास साथ ही बन्धना कि पात्र में बहुत स माने पड़े हैं, पात्र में वह बन्धना और मानों की मुठली भर ली । धर्म उद्योग पात्र का सुख लक्ष्मी है, मुठली साधु किन्ति विज्ञे ? बहुत विचारना चाहते हैं हाथ निकलता नहीं । सब पक्षमें माना साधक पक्षमें होता है । यदि उद्योग मान ही की मुठली तो मैंने ही मान ली है इसे मान हूँ उच्छ्वास जाऊना तो छूट जाय, पन्त उसे यह मान ही तो न । इसी प्रकार जितने भी बुरे रिवाज हैं । तुमने हा तो चनाय है परन्तु तुमने छुटने में । सब तब य बुरी रस्ते न छुटें तुमने बन्धन नहीं था सकता । प्रभु की योग्य है नैनी उसकी पक्षा हो भी वैसा ही वह करेगा यह तो कायर उपपन्न का कर्तव्य है । इसलिये मेरे भाई । साधक बल के लिए प्रवर्धन करो बुद्धा धर्मका माने से यह हूँ हूँ कर्मा का बिचमानी जा जाता है । धर्म तो सा । हमारे प्रवृत्ति में ही साधक बल पदवत् निष्ठ है । यदि उसका प्रति मर जाय तो धर्म का बाह्य के इच्छा के उपर के सब वही कहेंगे कि तेरा मनीषा रूप था यद्यपि मेरे पक्षा ही बिचमानी था । वही बुद्धिमान धर्म है । धर्म हमने मान्य मनुष्य ही दुःख है । हमारी मान्य प्रवृत्ति में मान्य प्रवृत्ति में

कर्म बन्धन से रहितो । सभी उसकी बिचमानी होते हैं । परन्तु यदि कही प्रवृत्ति की स्त्री मर जाने तो उसे बन्धन मन्त्र माने जाते बिचमानी के लिए पहले ही तैयारी हो जाती है । धर्म माने समान है । यह वैश्व वचो है जो जाति धर्मने लक्ष्मी और लक्ष्मी के इतना वैश्व समानो हो उसके लिए उन्मत्त का मार्ग कहा ? वह जाति तो मुष्टिधर्म का बिचमानी कर रही है, उसे तो साधारण छोड़ना ही पन्ना ।

उद्योग लक्ष्मी की होती निरासी । सभी जानते किन्ति इसमें है लक्ष्मी ॥ कानुन मुक्तत में बन्धन जोर पाया । नहीं हृष्टाग हमना है उसका हृष्टाग ॥

जिसे तुम हिन्दु जाति कहते हो उन्हीं में से प्राप्त एक ही तोस मन्त्र के सा लक्ष्मी प्राप्तिन निष्ठमन्त्र इन्हीं जातिमें में मिल रहे हैं । परन्तु यह धर्म ग जाति सोई उन्हीं ।

है मन्त्र मर लक्ष्मी कायानु में प्रकाश देता । मुक्तत के धर्मानु रीति में धर्मने मान देता । लक्ष्मी को जानते हैं जितने लक्ष्मी बुद्धमान को समीक्ष । मुक्तत के निष्ठ माने हैं । वह प्रवृत्ति देता ।

जिसे मानों को मान और मान का कोई मान नहीं वह मर मान वही बन्धन कहते हैं ।

रस्ते में एक स्त्री माना कर रही है । उसने धर्मना लोका का कहा उपरान्त बन्धने के हाथ में दे दिया । बन्धने में उसे बिचमानी से बाहर निकाल दिया । उसे क्या था कि यह लो किन्ति मान का योग्य है ? वह वह बिचमानी है रीति है । बन्धने को तो मान मान मान न था परन्तु क्या उसकी मायी न न मानों की ।

बन्धना धर्मों की और धर्मों की तुम क्यों सारा रहे हो ? उनमें बुरा मन्त्र बन्धन रहे हो ? उनमें सारी बन्धन माने होते हैं और किन्ति लो प्रभो । तेरी कृपा हो मरीयो की मन उपर धर्मों की साराता हा उपर प्रभु प्रभु सामने सन्धने बनत हो । सभी मुष्टाग मन्त्रा किन्ति हो ? वही जानत —

मन्त्रो बुद्धि मन्त्रो बन्धन नहीं लक्ष्मी को मान तुल्यमान मन्त्रो को पत्त साधने मन्त्रान ॥

साधु को य द मानों की मान म जाना हो पक्षा बन्धना गेष्ट देना चाहिए उसे मनीषा ही जाग प्रकाश है । टेड पन्त मानों की योग्य ही नहीं मन्त्रा । इसलिये तुम भी मनुष्य मनुष्य छोड़कर उद्योग करो । माने बिना कभी बंधा पार न होता । हमारा धर्मन कहते तो बुद्ध होता मान रीति धर्म पन्त से प्रवृत्ति उपनिषत् मन्त्र है परन्तु उसका कुछ प्रमान नहीं बना ।

(३) समाज विज्ञान में, नागरिक, वर्ग, पारिवारिक व विद्यार्थी वर्ग संबंधी अनुस्मृति के अथ विवे जायें। राजनीति सम्बन्धी अथ भी। अन्तिम

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्यसमाज तिमारपुर का वार्षिक चुनाव संपन्न

आर्यसमाज तिमारपुर दिल्ली-७ के १२ वर्य ८५ को हुए वार्षिक चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए —

प्रधान श्री जी.मंडल
उप-प्रधान श्री जयवीरदास गुप्ता
— श्री हाराकम शर्मा

मंत्री—श्री कृष्ण देव
उप-मंत्री—श्री विमल कामत शर्मा
— श्री जयवीर सिंह
कोषाध्यक्ष—श्री देव शर्मा
उत्सवाध्यक्ष—श्री बलराम शर्मा

(विमल कामत शर्मा)
उप-मंत्री

दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

दंत मंजन
लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

दंतों का डाक्टर



अब नये पैकेज में उपलब्ध

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

94A, इण्डियन एजेंट, सीटी रोड, आई दिल्ली 15 जंघ 639609 57 987 53 3



मसूरी की मसूम



उर की दुर्गा



छात्रा मार्ग पानी लखना



सात का बर्त

सात बर
(पृष्ठ २ का रोष)

लोपान है। बहुरिदु बहुरिदु एव बहुरिदु।
बहुरिदुता होना ही निवेदक साधक है।
इसी का नाम मोक्ष है। इसी का 'पर-
वर्ति'। धर्मपुत्र निवेदक के विवे ही
होता है। धर्मपुत्र यथा है। और
निवेदक यथा है। साधक हीन हो
साधन के र है। शौचिक जीवन को
साधन का पका मास है एक पका
जाता है दूसरा जाता है। यह क्रम बराबर
बारी रहता है जब तक कि धर्मन स्थान
न जाया, बहुरिदुता हमारा ध्येय
बा। इहानि 'बहुरिदुता' सब से उच्छिन्न
ध्येय है।

बोही बात यह है यह बहुरिदुता बर्त
है बिद्वान् बहुरिदुता को बहुरिदुता से पहले
तुम मरे सिव इस सात बर की प्राप्ति के
एकत्र बुद्धि धर्मका तुम को बहुरिदुता
की प्राप्ति न होनी। सब स बहुरिदुता
है जो योग वाता चाहता है। धर्मपुत्र यह
है जो दूसरों को मार्ग दिशाना चाहता है।
महा धर्म बहुरिदुता बहुरिदुता। मेरा
माग मुने दक्ष बहुरिदुता सो को जाये।

कहते हैं कि स्वामी ब्रह्मन् को किसी ने
कहा था कि स्वर्ग में प्रचार के पक्ष में
परे ही, योग करो और मोक्ष हो जायगी।
स्वामी ब्रह्मन् ने उत्तर दिया कि जब
सत्ता प्रविष्टा की दासता में पड़ा सब
पक्ष है तो मुझे मोक्ष की दासता मिल सकता
है। बहुरिदुता वाणी के विवे यह कति न
वा कि मैं बहुरिदुता साधन की दासता से
स्वयं मुक्त हो जाते। इहानि बहुरिदुता का नाग-
रिक्त बन जाने से यह ध्येय पूरा हो सकता
बा। परन्तु इससे भारतीय लोगो का
दासता का प्रसंग ही हो सकता बा। प्रस
महात्मा गांधी ने स्वयं का कि जब तक
वैसावासी गुलाम हैं मरी स्वतन्त्रता का
कोई धर्म नहीं। जगता गुलाम कर कहती
हैं कि मेरा धर्म गुलाम गुलाम ही गुलाम बहुरिदुता
को को का सब से हो गुलाम बा। प्रस
विस्मय रेल का साबा नहीं गुलामा वह तो
रेल से उत्तर कर पर नहीं बा बहुरिदुता।
आप के सात बरों में एक बहुरिदुता है कि
जगता द्वारा इन सात बरों की प्राप्ति क
को साधन आप गुलाम सत्ता है। उनम आप
कभी न करें। कर भला, ईश्वर तेरा
भला करेगा। □

श्री हरवंस सिंह खेर प्रधान,
श्री रामरत्न दास आर्य
महामंत्री सर्वसम्मति से
निर्वाचित

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल का
वार्षिक चुनाव २६-८-८५ को आर्यसमाज
वासवीय नगर में हुआ। जिसमें निम्न-
लिखित अधिकारी चुन गए।

प्रधान श्री हरवंस सिंह खेर
उप-प्रधान श्री हरवंस साह कोहली
" श्री कृष्ण साह सूरी
" श्री श्री सरला पावल
महासूची श्री रमरत्न दास शर्मा
मंत्री श्री श्रीम प्रकाश भावल
मंत्री श्री चन्द्र प्रकाश
कोषाध्यक्ष श्री सावित्र राम शोचक
वेत्ता निरीक्षक श्री वेत्ता राम शोचक
रामरत्न दास शर्मा
महामंत्री

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Paris Beauty

पेरिस ब्यूटी

गोल्ड
सन्स

ब्रा. पैन्टी. बनियान अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि

पेरिस ब्यूटीसेल्स कारपोरेशन

26/5 ए/2 बीकानेर रोड, अजमेर जंघा रोड
कोलकाता नगर आई दिल्ली ११००४४
दूरभाष - 567224 574200-582036

लेखक—प० गंगाधरसाह उपाध्याय

(अथर्व वेद काण्ड १२ । सूक्त ७१ । मन्त्र १)

उत्कल
इन्द्रक शर्मा विश्वविद्यालय
कटक

जन्म से प्राप्त संस्कार
आदि विचार

ओड़म

कृतज्ञता विस्मयार्थ

साप्ताहिक आर्य सन्देश

मुख्य एक प्रति १० पैसे वर्ष ६ अंक ३१ रविवार २३ जून १९३१ भाव सप्ताह ११६०८६३००५ भाषा १०५२ दयानन्दार्थ—१६१

अलौकिक प्रतिभा के धनी गुरु विरजानन्द दण्डी

ज्ञान के प्रसार कर्तृ परम तपस्वी, त्याग के उच्च धारण महानयोगी प्रभावशाली गुरुर्षी स्वामी विरजानन्द की शिक्षा का ही चमत्कार था कि मुगलुख महर्षि दयानन्द भारत की मिर पाया। स्वामी विरजानन्द का जन्म १७७६ ईस्वी में पंजाब करतारपुर उपनगर के समीप गंगापुर ग्राम में हुआ था। चैक रोग के कारण पांच वर्ष से भी अल्प आयु में वे निवृत्ति हो गए। वे बादशाह गोहा धारदशाही, सारस्वत ब्राह्मण थे। भूत बाल्यकाल में ही ब्रह्मोपवीत बाढ़ संस्कार के साथ वेदाध्ययन के लिए व्याकरण धारि की उनको शिक्षा दोषा प्रारम्भ कर दी गई थी। नेत्रों की शरीर का दूसरा प्राण कहा जाता है उनके नेत्र बसे गये कुछ कम नहीं था कि स्नेह के सागर में तिता भी बच गया। वे ही प्रसार ससार से उठ गये। इस बड़ भाई भावों में विरजानन्द को साहस्यार न देख सताता हुक्मराना शुरू कर दिया। इस प्रकार की दुःख स्थिति में अल्प बालपन की लोकर में केवल १० वर्ष की आयु में घर से निकल पड़े। तीन वर्ष तक मटकते हुए अन्धोकेस पड़ते। यहाँ पर उन्होंने जगल में गंगा के तीर पर एक कुटिया बना ली। गायत्री उपासना में रत रहते हुए कष्ट उक्त गंगा के जल में स्नान होकर स्नाना करने लगे। उनकी स्मरण शक्ति धर्मतीक्ष्ण हो गई। १८ वर्ष की आयु में उन्होंने कनकल हरिद्वार में दम्भी स्वामी पूर्णानन्द से (जिनसे स्वामी दयानन्द ने भी सम्पाद लिया था) उपास्य ग्रहण किया। इनसे ही शिक्षा व्याक-

रण धारि की भी शिक्षा प्राप्त की। इनके पश्चात् वे काशी पहुँचे काशा में उन्होंने पडा भी धीर पडाया की। काशी से गया गये। वहाँ से कनकला इस प्रकार पुन लौटकर एटा जिला के गंगातीर स्थित सोरो नगर आ गये। यहाँ पर अल्पकाल में ही उनकी यश कोति चहुँ ओर फैलने लगी।

एक दिन जब वे गंगा में स्नान पठ कर रहे थे। अलवर नरेश महा राज विनयसिंह ने इस प्रभावशाली विद्वान की मुक्त मधुर लोनी में पाठ करते देखा वे मुगल हुए बिना न रह सके। उनका योग साधना शीर त्याग से वे ऐसे प्रभावित हुए कि उनकी कुटिया में पहुँच कर उनसे अपने राज्य अलवर चलने की प्रार्थना करने लगे। स्वामी जी ने कहा इस बरागी तुम रागवश की दुनिया के भनमस्त राभी। हमारा मुहारा सग कंसे सभ है ? राजा ने जब बहुत अनुनय विनय की तो वे एक क्षण पर साध जाने के लिए तैयार हुए। यदि तुम प्रतिदिन हम से कुछ ही काल तक सही पठना स्वीकार कर लो तो हम धन्य साथ चल सकने। राजा ने उनकी शर्त स्वीकार कर ली लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया यदि एक दिन भी पढ़ने में व्यथना हुआ तो हम साथ लौटकर आ जायेंगे। अलवर पहुँचकर उन्होंने राजा को पठना शुरू कर दिया। महाराज विनयसिंह के हृदय में दम्भी जी के लिए दिन-प्रतिदिन भक्तिभाव बढ़ता गया। किन्तु एक दिन राजा नाच-नर्त में व्यस्त हो गए और पढ़ने नहीं पढ़न पया, राजा के प्रतिभा मय

करने पर स्वामी जी राजनगरी का परित्याग कर चल पड़े। कहा तो उस समय के ज्ञानी ध्यानी सत जी मोक्षानन्द जी प्राप्ति से भी अधिक राजदरबार में प्रवेश के लिए उत्सुक रहते थे और कहीं वे नेत्रविहीन साधु जी राजमय राजगुरु के सम्मान पद पर ठोकर मारकर चल पय।

इसके पश्चात् वे पुन सोरो धाये यहा पर भरतपुर के राजा महाराज बन्तसिंह ने उन्हें भरतपुर पधारने की प्रार्थना की किन्तु उन्होंने जाने से साफ इन्कार कर दिया। वे मधुरा चले गये और यही पर उन्होंने अपनी पाठशाला प्रारम्भ कर दी। इसका ध्यय भार अलवर नरेश भरतपुर के महाराजा तथा जयपुर के धर्मपति रहन करते थे। स्वामी जी इन राजाओं को नवा धाने छात्रों को १११ समय दैश की मुलागी की सहन न करने के लिए उषा हेतुसिंह से तन मन धन धन्य करने की सदा प्रेरणा देते रहे। १८६० मधुरा में ही उन्हें स्वामी दयानन्द जैसा सुयोग्य शिष्य मिला। शिष्य को पढाये वे उन्होंने चमरदार जैसा काम किया। स्वामी विरजानन्द पढाये में कोर रहे। उन्होंने दयानन्द को धनार्थन त्याग करने का प्रथम भादेश दिया।

महर्षिष्ठक प्रभों की पढने की पद्धि थी। जिसके कारण स्वामी दयानन्द का जीवन ही बदल गया। वेसे तो स्वामी विरजानन्द की पाठशाला से इन्होंने विद्यार्थी आनाजिन कर निकले, किन्तु स्वामी दयानन्द जैसा श्रद्धालु शिष्य एकमात्र ही था। धनार्थन की पढने वाले उस समय के विरजानन्द के शिष्य गोपाल

ब्रह्मचारी मुगलकिशोर सोहनबाब, नन्दन जी चौधे पाण्डव त्यामसाह, गुरुध्वज दीनच बुध मालवी चौधे और उदयप्राकाश धारि भी प्रसिद्ध रहे।

स्वामी विरजानन्द ने उद्भट विद्वानों से अनेक शास्त्राध्यय किये। वे धनार्थन का प्रतिपादन और धनार्थनको का खण्डन बनी कठोरता से किया करते थे यही धार्मिक गुरु स्वामी दयानन्द ने भी अवर्जित हुआ। समाजतन (विद्यानमार्ति) के समय जब दयानन्द अपने गम से बिदा लेने लगे एक बाली लोग भरकर सन्ध्या शिष्य ने गुरु वरणा में धर्पित करनी कही किन्तु विरजानन्द बोले—दयानन्द। हम मनबहाही प्रकाश चाहिए। इतिहास में इसी प्रकार महर्षि वरतन ने अपने शिष्य कीस से चौदह करोड़ स्वरूपमुद्रा मांगी थी। किन्तु दयानन्द ने इससे भी बढकर दक्षिणा भ्राना जीवन ही का खण्डन करो। जीवन भर दयानन्द ने इस भादेश का पालन किया, एक बार जब स्वामी दयानन्द मेरठ में थे। एक का सन्देश मिला—दयानन्द धनो तक तुम्हारी धन्य कीति हमारे कामो तक नहीं पड़नी। वे चाहते थे वेरे शिष्य की कीति दिव्य दिगन्त में व्याप जाये। सोमवार १८६८ सितम्बर में दक्ष महर्षिगुनि का निधन हुआ। उनके मृत्यु समाचार की सुनकर स्वामी दयानन्द ने कहा था—आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।

—यशपाल गुप्ता

समर्पण दाखिल

गान्धार—(हृदय) परमात्मनः प्रथमा
राज्यम् । (यम्) त्रिमयस्य की (प्रथ-
म) महात्माजी (वयम्) बरणीय (मित्र)
मुद्रम् (अथवा) स्वायत्तरी (रक्षण)
रक्षा करते हैं । (न) वह (यत्) मनुष्य
(न किं) नहीं (इत्यम्) मारा जाता ।

व्याख्या—इस मन्त्र में एक व्यक्ति
की मरणावस्था का रहस्य बताते हुए कहा है
कि वह मनुष्य जिसके वरुण मित्र और
अर्थमा रखता है, कभी मारा नहीं जा
सकता अर्थात् धार्मिक और बाह्य कष्ट
उसे प्रसन्न नहीं कर सकते, दशा नहीं
नकते। दूसरे मन्त्रों में बाह्य कष्ट दुष्टा
मनुष्य को प्रथमा स्वायत्तरी देना बताया
बाह्यिण कि ममार के बरणीय अथवा पुत्र
जन्म के उवाच बाह्यिण से प्रभावित होकर
उसकी रक्षा करे । यैमी और मित्र भी
धन्य न के बलवें की प्रेरणा करने रक्षा
ही करने वाले हों। व्यायथिय व्यावायीक्ष
की मरणावस्था-पालन करने वाले ऐसे व्यक्ति
के रक्षा करने ।

अब एक एक बात पर ध्यान बिलाल
के विचार कीजिये। सत्तार के अर्थ पुत्रों
के मरने स्वाभाविक मनुष्य होनी है कि
वेरा, भार, कष्ट या वि की सामान्य
सीमाओं को छोड़कर अर्थ व्यक्ति का
हित कायदे और सत्तार के समय जमी
का मनुष्य कर रहे हैं। अथवा अर्थव्यवस्था करने
वाले उनके निकट के सम्बन्धी ही नवी न
हो उनका न बने कदापि नहीं दें।

राजायल में, राम और सुवीर राम
तथा विनीषण, महाभारत में विदुर
की न डोया-काय और हृषीकाश्रम धर्म के
उदाहरण विद्वान्भारत तथा प्रसन्न हैं।
जहाँ वे लोग वादीरिक्त धर्म ग सुवीर
के पथ में थे नहीं हृदय में पाठ्य-पन की
ही हित कामना करते थे।

सुवीर को दिये वचनायाम न ब्रह्म
राम ने बाण न रक्षर वाली को धायन कर
दिया तो बानी न रोग प्रकट करन हुए
राम से कहा—

इति मे दुःखित्यपना
बन्धुभाराने तव ।
न त्वा विनिनतात्मना
वर्षेण प्रमथामिभम् ॥
जाने पाथमभावरत्न
सर्वा कृपयिष्याम्यसम् ।
सता वैधवर पाप
प्रक्षल नमिष्य पावकम् ॥

हे राम तुम मेरी दृष्टि में एक धारम-
वादी कर्म हैं की कोरी शीत हाकन
बाधे पाथवारी और तिनको से डके हुए
दूर के समान सोचने हो । सत्सुखी का
मेघ छोटे पावकव डकी हुई धाय के समान

जिसे बचावें वरुण, मित्र और
अर्थमा उसे मारे कौन ?

लेखक—प० शिवकुमार साहू

य रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्थमा ।

न कि स दम्यते जन ॥ साम० १८५



साहू को ।

हस्ता बासेल काकुल्य
साहिगुणपरामिषम् ।
कि वरुणति तस्य मन्त्रे
कर्म कृता सुमुखिषम् ॥
सा० रामा० ४ १७, २०, १४

हे राम बिना वरुण के ही बासेल के
महार से तुम मारने जैसे निम्नोय कर्म
को करके तुम सत्पुरुषों के बीच में क्या
उत्तर दोगे ?

सुवीरोपि जन कुर्व
कर्म कार्येव सारम् ।
किमह न क्षमः कर्मना-
पराम विना हतः ॥

हे राम ! तुम्हारी सहायता का को
काम सुवीर कर सकता है क्या वह मैं
नहीं कर सकता है ? फिर तुमने निष्का-
रल मुझे क्यों मारा ?

राजसत्त्व कुरापमान
कष्टे वरुणा वरुणान्ते
निहन्त राखल रणे ॥ ४८ ॥

तुम्हारी पत्नी का अपहरण करने
वाले डकैत डकैत राखल से तुम ने मार-
कर और उसकी मुर्दे बाणकर तुम्हारे
सामने उपस्थित न कर सता, इस का मुझे
बड़ा रोव रहेगा ।

बासी का वह कपन कितना मुक्ति
मुक्त और शीतलपुष्पवृक्ष है। राम ने
बासी के प्रलो का निम्न उत्तर दिया—

तस्मत् कारल पक्ष
अथ न्व यथा हत ।
अनुवर्तति मायया
प्राप्त्यर्थं सत्यमयम् ॥

—देखा मैंने तुम्हें जित कारल के
मार है वह यह है कि तुमने मर्यादा का
उत्पन्न करके धारने छोड़े मार की पत्नी
को धयन अधिकार से किया हुआ है ।

अथ न्व परमात्मनः
सुवीरस्य महात्मनः ।
वयसा वरुणे कामात्-
तुषावाय सारकम् ॥ ४९ ॥ १८६

इस महात्मा सुवीर की पत्नी को बला
वर्क धारने अधिकार में करके कामात्

होकर न इस प्रकार पापकर्म कर रहा है
को धारणी सुवीर के साथ कुरापमान के
समान है । इस उत्तर से स्पष्ट है कि
बासी के पक्षधर होने के कारण राम
उसके धनु कर्म। सुवीर के ऊपर राम के
प्रतिपक्ष में का कारल सुवीर के शीतल
पीठित होने के साथ-साथ उसकी वसा-
यता भी है। राम का सुवीर पर कितना
धनुराय का संकेत किए लक्ष्मी के मुख के
समक का एक उदाहरण देखिये—

येतु से बानर लेना के समुद्र पार
उत्तरे पर तुमको लक्ष्मी को देखने की
इच्छा से सुनेम गयेत पर बड यथा । बहा
सुनेम के एक निवार से क्या मे सुनेम
हुए राखल को देखा । राखल को देखते
हुए सुवीर धायकृता ही गया और धारने
धापको समान न सता । वह क्षमाय वा
कर राखल के पास पहुँच गया और उसके
साथ कुछ देर तक बस करके और धारणी
रीखा की कर्म जमाकर वायड का
सता ।

राम बलिष्ठ होकर इस सारे कर्म
को देखते हैं और सुवीर के वायड धारने
पर भारावने में कष्ट लेते—

अथमन्त्रेव सवा सार्धं
तस्मिन् साधुं कृतम् ।
एव साहसकर्मणि

न कुर्वन्ति कर्मवरा ॥ ५० ॥ १८७
मेरे साथ बिना परामर्श किए ही वह
जो तुमने साहसिक कार्य किया, इस
प्रकार का साहस राम लोगों को नहीं
करना चाहिये ।

इदानीं सा कृता भीर
एव किमर्थमिदम् ।
त्वयि किञ्चित् सहायणे
कि कार्यं लीतया यत् ॥ ५१ ॥

हे भीर इस प्रकार बिना विचार किए
धाय से तु साहस मत करना । यदि तुम्हें
कुछ ही जाता हो फिर लीत से तुम्हें क्या
मतसब का ।

अन्ते महाबाहो
सखलसेन धवीवरा ।
सन्मनेन च सान्मन्य
स्वकीरेरेल का पुन ॥ ५२ ॥

हे महाबाहु सुवीर ! फिर धारने से,
फिर सखल से और छोटे भार धनुष्य के
भीर धारने खरीर से भी क्या प्रयोग यह

चाता ।

त्वयि वामागते युर्वसिति
मे निमित्ताय प्रति ।
जागतव्यसिति मे वीर्यं
महीश्वरपदोपपन्नम् ॥ ५३ ॥

मैंने यह निश्चय कर लिया था कि
तुम सखल वायड न धा संके लो—अर्थात्
महीश्वर और वरुण के समान मैं तुम्हारे
परामर्श से परिचित हूँ, फिर भी—

हृत्वाह
तुम्हें सुमुखवसाहृतम् ।
सन्निविष्य च सन्मन्या
विनीषयस्यस्यस्य ॥ ५४ ॥

मरते राखलवायल
त्वयि हेतु महात्मन ॥ ५५, ५६ ॥
मैंने निश्चय किया था कि मेना और
तुमो सहित राखल को मुझ में मारकर
धीर लता मे विनीषय का राखलसक
करके तथा अर्थमा का राखल वरुण की
देखने में धारने और का परिराम कर
हुवा ।

ये राम के उपचार तिलने स्पष्ट से
सराबोर हैं । जिस व्यक्ति के धारवर्ण से
प्रभावित होकर उसे ऐसे सखलीय निम्न
कार्यें वह तुम्हारे से मार कैंन क्या सकता
है ?

राम विनीषय के पक्षधर भी उसके
वायडय सुवीर के कारल ही को । राखल
मे अथमर्णित होकर जब विनीषय राम
के वल में राम से निम्नने धारवा लो राम
को छोड़कर एक सव की मर्यादा बहा की
कि वह धारु का मार है, अर्थात् क्षमा-
यता यह है—कि वह हमारे लिए जानने
धारा होता । किन्तु राम हम विचारों के
सहमत नहीं हैं । वह कहते हैं कि बिना
निम्नने वह कैंन जाना का सखल है कि
उसके मन में क्या बात है ? जब धारिणों
ने सत्तार की प्रथम बिना कि निष्कारण
भी मन के धारवर्ण की बात कैंन जानी जा
सकती है उत्तर-उत्तर मे विचारों कुपती
बातें करना रहेगा, और मन मे बाह्य
जानये रहेगा, जब राम ने को उत्तर कि—
वह कम महापुरुष की योग्यता को बताता
है कि मे मनुष्य के बिनावा पाथवी के । राखल
ने कहा—

साकारवशात्प्रमोदयिष्ये
यत् । विनिवृत्तिम् ।
वसाहि विन्दुल्लेखे
सायवागतेन नृपतम् ॥

मनुष्य धारने धाकार को धियारने की
कोषित करने पर भी नहीं बिना सखल
व्योक्ति धारवर्ण के बिना वसुधैव कुटुम्बक
धारित पर प्रकट होते रहते हैं । यह
महीवैवाहित बात उन्हें के धारवर्ण
मे भी नहीं है—

विचर मेनि विधायता साय
धयता वही धन मेनिषम् ।
वर्वा कर्मवर्ते मे सु त मे
सो कीर्तवर्ते निम्न की ॥
(विष पृष्ठ ११ पृष्ठ)

★ वचन-सन्देश ★

सफलता का चमत्कार

गाजी मुहम्मद कमालपाशा जिस समय तुर्की से भागे थे उस समय केवल इक्कीस युवक उनके साथ थे। कोई माजी-सामान न था भीत का बारण्ड पीछे-पीछे ब्रूम रहा था। पर समय ने ऐसा पलटा छाया कि उसी कमाल ने अपने कमाल से ससार को आश्चर्यान्वित कर दिया। वही कालिल कमालपाशा टर्की का भाग्य निर्माता बन गया। महात्मा लेनिन को एक दिन शराब के पीपी में छिपकर भागना पड़ा था, नहीं तो मृत्यु में कुछ देर न थी। वही महात्मा लेनिन रूस के भाग्य विधाता बने। श्री शिवाजी झाकू और लुटेरे समझे जाते थे, पर समय प्राया जब कि हिन्दू जाति ने उन्हें अपना सिरमौर बनाया, गौ ब्राह्मण-रक्षक छत्रपति शिवाजी बना दिया। भारत सरकार को भी अपने स्वार्थ के लिए छत्रपति के स्मारक निर्माण कराने

पड़। क्लाइव एक उद्दण्ड विचार्यी था, जो अपने जीवन से निराश हो चुका था। समय के फेर ने उसी उद्दण्ड विचार्यी को अग्रज जाति का राज्य स्थापन कर्ता लार्ड क्लाइव बना दिया। श्री मुनयान सेन चीन के अराजकवादी पलायक (भागे हुए) थे। समय ने ही उसी पलायक को चीनी प्रजातन्त्र का सभापति बना दिया। सफलता ही मनुष्य के भाग्य का निर्माण करती है। असफल होने पर उसी को बबर, डाकू, अराजक राजद्रोही तथा हत्यारे के नामों में विभूषित किया जाता है। मफलता उन्हीं सब नामों को बदलकर दयालु प्रजापालक, न्यायकारी, प्रजा-तन्त्रवादी तथा महात्मा बना देती है।

—अमर लहीद रामप्रसाद बिस्मिल

सम्पादकीय

अकाल के पंजे में तड़पता इथियोपिया

प्राज का मानव विज्ञान और तकनीक से चाद सितारों की ऊर्ध्व तक पहुँच चुका है। बरती का भार सागर की गहराई ऊँची से ऊँची पर्वत की चोटा तक, हवा के वेग से लेकर सूख के २ करोड़ गुने ताप तक भी मनुष्य ने जान लिया है। समस्त विश्व की कुछ पत्तों में समान्य कर सकने की क्षमशी मनुष्य ने ईर्ष्या कर ली है। लेकिन इसके साथ मनुष्य से लेकर क्षुद्रजीवाणुओं तक के अवायव्य रोगों तक की बिकल्पा का भी आविष्कार निरन्तर चल रहा है। फलतः जनकन की उपज का श्रावणजनक बुद्ध कर सकने का विद्या मनुष्य जान चुका है। किन्तु मानव विज्ञान के चरम को छूने के बाद भी मनुष्य में मानवता का ह्रास होता जा रहा है। मनुष्य में विज्ञान के साथ राक्षस प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रहा है। प्रातिपात्र तथा उत्सव मात्र में लाखों मन अनाज दो डॉलर के रू में हूब में फट कर दिया जाता है। दूसरी ओर इस समय मनुष्यता के नाम कलक बनकर अकाल की ठोस मनुष्यों का जन्म रहा है। इथियोपिया तथा २५ अफ्रीका देश इस समय अकाल ग्रस्त हैं। इथियोपिया का अनाज ४ करोड़ २० लाख के लगभग है। तीन साल से यह देश अकाल के जबड़ में फसा है। मनुष्य ही तोस लाख लोग भूख और भयानाश्रयों से मर चुके हैं। पूरे अफ्रीका में सिक १९८४ में १६ करोड़ ५० लाख लोग मरे हैं। साथ ही १५ करोड़ लोग प्रभावित हुए हैं। इस तरह के अकालों का कोई अन्त नहीं है।

वर्तमान कहे हैं इसका कारण अभाव्युच जंगलों का काटा जाना, कई जगहों पर १०० वर्षों से वर्षा पान होना पानी का दुर्लभयोग नगरों का विकास करत जाना, बेटी कृषि का उपेक्षा आदि कारणों से सहारा क्रै रेगिस्तान का फलाव वजह गया है। इसी कारण १० लाख बग किमोटेटर बड़ा मायक जंगल सहारा में समा गयी और अमर सुरत कदम नहा उठाये गये तो लगभग ५० वर्षों में अफ्रीका का ४५% हरेहा रेगिस्तान में समा जाने का खतरा है। पिछले २० वर्षों में पशुधन का चरागाह का तान चौधार्ह सहारा का हरेहा बन गया।

अफ्रीका में जनसंख्या बुद्ध दर बुनिया में सबसे ज्यादा है। २० वर्ष पहले अफ्रीका अनाज में आत्मनिर्भर था और अनाज उत्पादन की दर जनसंख्या बुद्ध की दर के बराबर थी। और अब वह २.३% से कटकर १-३ प्रतिशत रह गई है। विदेशी मल्टी नेशनल और अफ्रीकी कम्पनियों ने तो जंगल काटने की होड़ शुरू कर दी है। जिससे

जलवायु में बहुत परिवर्तन हो गया है। सहारा का फलाव तेज हो गया है। लेकिन सब से बड़ा कारण सामाजिक आर्थिक राजनितिक है। कई देशों में बिदेसी गुलामी से विंगसन में मिला औपनिवेशिक ढांचा अब भी बरकरार है। यह प्राज भी एक वस्तु के उत्पादन पर धारारित है। वे कोकी वाफ़ी केले आदि वैचकन अनाज खरीदते हैं। मल्टीनेशनल संस्थाओं ने बड़ पैमाने पर पूँजी लगा रखी है। १५० अनाज वालर का कर्ज अब तक उन पर लद चुका है।

रूस दुनिया का सबसे बड़ा शिकार इथियोपिया है। इस देश की लगभग ७० लाख जनता इसमें प्रभावित है। पिछड़ापन भी यहाँ इतना है कि गावों से जंगलों से मरक तक पहुँचने में दो या तीन दिन तक लग जाते हैं। सारे देश में लगभग ५ हजार टुक हैं जो राहण कार्यों में जुटे हैं। इस समय पश्चिमी देशों की जनता में आर्थिक मदद देने की जुटे हैं। इसका अर्थ बी०बी०वी० की जाना है। क्योंकि इस अफ्रीका पर उसने अपनी १० मिनट की एक फिल्म प्रसारित की और अफ्रीका के छाया चित्र से जब लोगों का धामना सामना कराया तो सबसुख लोगों की आँख खुल गयी। देखते ही देखते लाखों पीछे जमा हो गए। फिल्म में दिखाया गया था। मृत बच्चों के डर मस्बियों और कीशों से भरे शव इन स्थलों में लोगों के दिलों को दहना दिया।

मार्च में अफ्रीका में वर्षा हुई थी जो बहुत थोड़ी था। लेकिन वह भी अफ्रीकास मध्य दक्षिणी अफ्रीका में। जुलाई अगस्त वर्षों की कोई धारा नहीं। अफ्रीका खनों के लोगों को नये सत्रों में बसाया जा रहा है। १ लाख लोग बसाये जा चुके हैं ५ लाख लोग और बसाये जायेंगे। अफ्रीकी इथियोपिया में लाखों न्न अनाज और ओजन की आवश्यकता है। अफ्रीका के एक नेता गेनीहाल में अकाल ग्रस्त क्षेत्र से लौट कर कहा था कि बड़ सन की बात है कि एक नरक अकाल और भूख से लोग मर रहे हैं जबकि हमारे अशरशुद्धों में अनाज के पहाड़ जमा हैं।

अब मनुष्यता के नाते प्रत्येक मनुष्य का कतव्य है प्रत्येक देश भूख बढ़वाही का फज है अकालपीडितों को सहयोग के लिए तन मन बल, वस्त्र, धन, दवाई आदि से सहयोग कर।

—यापाल सुबसु

सामयिक प्रश्न

आरक्षण नीति पर पुनर्विचार जरूरी है

—प्रो० जलराज मध

मुम्बर न घोर मध्यरात्रि मे विधान मध कुन रो के समय प्राज्ञापन की पर व म अनुचित जातियो घोर त्रन जागियो क धर्मिरिख दि हु सदास की घ व नहुन को उराजागियो का सान का नीति क विरोध मे मु हुवा म येनन मुम्बर मान मे बिकरान मय धारण कर चुका है। इहा इहे दिनक घोर साम्प्रदायिक कर भी दे दिया गया है घोर उसके कारण सेकरो लोग हुताहुन हुए है तथा कराओ का सम्पत्ति मन्ग हो चुकी है पर इक कागल स देता का ध्यान इस समस्या का घोर विचार गया है घोर धारण नीति पर न वरजित विवाद मुम्बर हा गया है। घा म य रा नीति पर मत ५ वनो के धनुषयका सव घोर महसूस का जाने सगी है।

भारत के सविधान मे हि हु समाज के कुछ प्रति निष्ठ वन के लोगो के लिए किहे गयी की मे हरिजन मान दिया बा सव वन के लिए विधान सभाओ समग्र घोर नोकरी इत्यादि मे धारण की सम्पत्ती की गयी है। इसका उद्देश्य व न वन वनो को धार्मिक घोर सामाजिक इष्टि मे उन्नत करने के लिए विधान सुधारण देना बा। स्मरण करार के पहले विचार मेनी घोर सविधान सभा की प्र का (डाफिन) कमेटी के धारण मे सते डा० भीमराव अम्बेडकर का भी इस नीति के बनाने मे हाय बा। डा० अम्बेडकर स्वयं हरिजन घोर मुम्बर गोत्री मे। उनके हृदय मे हरि जनो के लिए विशेष तथ्य घोर संवेदन बा। वे धार्मीक हरिजन बन्धुओ के सामाजिक धार्मिक घोर नीतिगत उत्थान मे कार्यरत रहे। 'नसिए इस सन्धय मे व का निम्नन विशेष महत्त्व रखता है।

मुने डा० अम्बेडकर को बहुत निष्ठ के बाते का बोधगम्य निभा बा। हमारो धारण मे अनिष्ट नैतिक विमर्श बा। उहोंने मुम्बर ६ व्ट कहा बा कि जस मे वे हरिजन बन्धु सव वन धारण की डेनामी पर निम्नन रहेते तब तक वे अपने पाव पर नर नही हो सकन इस लिए वे धारण को हरिजन उत्थान का धारण उदात्त मही मानत मे। इसीलिए - होंने अपने डाटा स्वाचित रिपब्लिकन पार्टी काफ इशिया के घोषणा पत्र म धारणन मय करन की बात ६ व्ट का मे निती की।

सन वर्षों क धनुषय मे डा० अम्बेड कर के मत को सत दिष्ट किया है। धार धार के व लागू हरिजन वन के कुछ परि

चारो को धनय सान हुवा है। व धार्मिक घोर सामाजिक इष्टि मे ऊव उठ गए है। धन धारण का मान मुम्बर उन्ही को सनानो को मिल रहा है वगोकि 'सिखा टीमा के मान मे घ व हरिजनो के से धारो निकल चुके है। स्वाभाविक रूप म उनका धारण नीति के बने रहते मे निश्चिन् स्वान उत्प न हो गया है।

कुछ राजनैतिक वगो विशेष रूप मे सनातन कायेत म का भी धारणन नीति मे निश्चिन् स्वाध पैदा हो चुका है। 'सके नाता प्राप्त गए हैं कि धारणन के वन पर के हरिजन मतदाताओ को अपना उद्युगित वोट बैंक बना प ए है घोर रखना उनके मनाने मे बने रहते के लिए धारणन है। इस प्रकार हरिजनो मे वे धारणन न नि म साधारणित हुए मुम्बर नोवो मीर सन क कायत वन के निष्ठि स्वाधो का मत हो गया है। इसके कारण धारणन की सर्वप्र १९६१ १९७१ घोर १९८१ मे दस दस वन के लिए बढाई जाता रही।

धारणन नीति दास वोट बैंक बनने के धनुषय मे कुछ राजनैतिक नेताओ के मन मे इस प्रकार के वोट बैंक के बनने का विचार पैदा हुआ। उन्हीने हिन्दुत्ववाज की कुछ धन्य उपजातियो की नी पिछे वन के मान पर धारणन की परिधि मे बाते को मान लाओ चुक की। देखी गयो की राजनैतिक समर्थन निम्नने के कारण विविध प्रयोग मे घनेक उपवा दिवो को किसी जातिना जोसित करके उसमे लिए धारणन की व्यवस्था की जाने लगी। कई प्रयोग मे वो उनकी जनसभा का धर्मिडा मान निष्ठिपेन के नाम पर धारणन की परिधि मे आ गया है। वलवररूप योग्यता के आधार पर नोकरी घोर नियम सत्यापो मे प्रवेश के धनवर सनातन कर्मिण हो रहे है। इसके कारण तथा कर्मिण उम्मेदवो के लोग धन्य बा को कर्मिण भरी उपेयित महसूस करते सगे है।

धारन की परिधि के सनातन विमर्श का सत व अधिक प्रभाव तथा कर्मिण उन्ही जातियो के मुम्बो पर पड रहा है। वे इसे अपने प्रति वेदवज घोर अपनी योग्यता पर धारण मानने सगे है। धनुषय सहीलिए मुम्बराता का वर मान धारणन विरोधी धार्मीक विचार विमो गरी उनके धर्मिधर्मो के कुछ किया बा।

मुम्बरात के बाहर भी इस धार्मीक

की प्रति भारणय हो चुका विचार - 'गक राटनी मय व धार्मिक कोट क घाने नि

नीति है। एक गोत्री मोक्ष मयन इस गक राटनी मय व धार्मिक कोट क घाने नि

धारणन के वो मुख्य पहलू है। जहा तक हरिजनो धन्य प्रमुपित जातियो के लिए धारणन का प्रश्न है उसके धनुषय ममान करने क प्र न नही उठता। उन पर न व धारणन की वनमान १० वनो की धन्य ममान कोही रणगेता मयन मयन कि १० वनो के लिए धारणन केवल नीति रियो के वनेत मे हो घोर परो नति के मान्यो मे केवल धारणन घोर योग्यता का ही ध्यान रखा जाना चाहिए घोर 'रोस्टर प्रभावी सत्य होनी चाहिए दशापी नही जा सकनी। इसका विरोध करनी की कर्मिण है दस मान पर धनुषय विचार होना चाहिए।

धनुषय मे यह नीति स्पष्ट हो चुका है कि हरिजनो में धी धारणन का मय केवल कुछ उपजातियो घोर उनमे की कुछ परिवारो को दिया है। धर्मिधर्म विमर्श घोर पिछे हरिजन वन्धु की इसके सान व धर्मिधर्म रहे हैं एगोकि इसका सान मुम्बर उन वने हुए परिवारो की सनानो की ही मिल रहा है। इसपर हरिजनो में धी बहुजन के दिन मे हरिजनो वनवो धारणन नीति पर पुनर्विचार करने की धारणनकता महसूस हो रहा है। पिछे हरिजनो के दिन में धारणन क दस पर जाते वड मुम्बर परिवारो की सनो परिधि मे निवासन की कुछ व्यवस्था करनी होनी। जन्म के साथ धारणन के लिए धार्मिक धारणन की योजना इसका एक उपाय है।

जहा तक हरिजनो के धर्मिरिख तथाकथित धन्य पिछेकी जातियो को धारणन की परिधि मे प्रवेश का प्रश्न है उसके विषय मे धनी तब कोई धन्य सत नति नही है। धन्य के आधार पर चुकी पूरी जाति या उपजाति को पिछेका नीतिगत करनी न करे सवव है घोर न सवैधानिक। इस मान का आधार केवल वोट की राजनीति है। इसने सनातन विमर्श होना शुरू पिछेकी जाति की कानय रखने मे निष्ठि दशाई पैदा होने। इस लिए इस मान्य मे धनुषय पुनर्विचार

होना चाहिए। भारत सरकार ने भी यह स्वीकार किया है कि इस विषय पर धनो सव कोई धन्य सहमति नही है घोर उनमे प्रवेश सरकारो को सनातन भावी है कि वे मनमाने उग ने पिछेकी जातियो को परिधि की न बढाये।

धारणन नीति एक क बाधा नीति है। सविधान ने इसे केवल दस वन क निम्न स्वीकार किया बा। वने सनातन धारि बढाते जाने का को धर्मिधर्म नही है।

समय का घना है कि धारणन नीति के सना पहलुओ की न धनुषय सनानी की जाय। सनातन क पिछे लोगो को उठ ने का धर्मिधर्म सनातन का भी है घोर सनकर का भी। इस निम्ना मे सोच नमक कर वय उठाये जाने चाहिए। पर व कोई पूरी जाति सारी की सारी पिछेकी नही मानी सकनी। वास्तविकता तो यह है कि हर परिवार मे जो कुछ धर्मि धारि घाने वत घोर कुछ पिछे जाते हैं। को किसी की कारण से पिछे नए को उन्ही उठाना सव परिवार का नीतिक कर्तव्य माना जाता है। नही बात जाति बा उपजाति कनी वडे परिवारो पर उनी भाव होनी है। उनमें को धनुषय घोर बडे हुए हैं उन्ही किसी प्रकार के धारणन की वेलाओ का धारणनकता नही। जो पिछे हुए हैं वे सना के लिए पिछे न रहे इसका उपाय करने की धारणनकता है। नही कारण है कि नव विचार घोर पकड रहा है कि यदि धारणन नीति जारी रखनी है तो उसका धारणन गरीबी घोर धार्मिक पिछे वन होना चाहिए केवल धन्य घोर जाति नही।

घर इस प्रश्न को टावा नही बा सकता। बेहतर तो यह होनी कि धारणन स्वयं महसूस करके सनकरिया घा होनी सतु का एक उपाय गरीब धार्मिक सत पैदाव वगो के धनुषय क धारणन पर धारणन नीति के सनी पहलुओ पर विचार करने क लिए महिष्ठ कर घोर सनी रणो के धर्मिधर्म करे कि वे धन्य-धन्य वन 'स धार्मिक के साने रखें घोर उसकी रण्ट घाने कड करके धार्मिक मय कर दें। यह एक धन्यधार्मिक मुम्बरा है। जिस पर डडे दिव मे विचार होना चाहिए।

(मध देवा)



व्यासपीठ -

उपनिषत् कथा माला-६

गायत्री मन्त्र की महिमा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

एक बार मैं नागपुर गया, उबन मेमस
 शहूआदां को एकत्र का प्रायनन था । गवनमे पी
 धारमिया को एकत्र-यककनर लना पी
 कक क प्रेमी रोको थे पीर कहते थे कि
 उषरन जाओ । मेरे नाय नय्याहिङ्ग सज-
 कमी नीया । हुने उषरन प्राते बैलकर
 काप्रेनी कहते नगे, ' उषरन गये थे ?
 कककक प्राति हुए हुन नागुडी ही' ने
 तो हुमारी जाति का बैठा नक कर रल
 है ।' पीर भी कहून् कुछ कहते रहे ।
 नय्याहिङ्ग ने बहुरेता कहा कि ' हुम तो
 प्रात-प्रयन करके प्रा रहे है' । प्रानु ने
 कहा-अयेनगे ? कुछ सयम्मे ही न थे ।

[illegible]

ब्राह्मो ! बँडो ! पीयो पानी ।
 तीनों बातें भोल न सानी ॥
 वचन मे खराबी लडो कर लेनी यह
 बहुत बुरी बान है । यही दोष है जो हमारे
 तन्त्रुषो को ढीसा कर रहा है, इसलिए
 मेरे भाई ! जो बातें खराबी की हैं उन्हें
 छोड़ दो ।

मनुष्य का धर्म है कि परमात्मा के नाम का निमरण करना रहे। यदि नहीं करता तो उम्र दिन का क्षपराव उसके सिर चढ़ जाता है। यदि एक दिन रोटी

न लाभो तो दुर्बलता आ जाती है। ऐसे ही प्रभु का नाम न लेने से मनुष्य का धार्मिक बल क्षीण पड़ जाता है। धार्मिक लक्षित दुर्बल हो जाती है। अतएव मनुष्य मात्र का बच है कि उपासना करे। यदि उपासना कर ले तो एक परम कृतव्य कर लिया, नहीं की तो अपने सिर पाप बढ़ा लिया।

बहनें हैं एक तुलसीदास लख का था ।
 पद्म पद्म का शिखावाँ है, एक हीका
 में वहा रहा था । मैं भी वहा पहुँच गया
 उल्लेख करने कोरूँ पद्म फिर बोले गोविन्द
 उल्लेख पाँच बोले गये । मैं जाया तो फिर
 कि बहू पाँच बोले खड़ा है, नज्मा पड़ेगा ।
 नज्मा मैं पुछा, "तुम्हारे उल्लेख पाँच
 तुम्हें हों, फिर शाय पाँच बोले हों ?"
 उल्लेख कहा, "लखी का बहू तुम हो बहू
 है । नज्मा तो लखी को सलक के लिए है,
 "बहू मत नज्मा के लिए ।" मैं सिक्र हूँ,
 "बहू तुम नज्मा पसंदे हो, तो तुम्हारा
 मन हो ईश्वर-उत्तर नहीं क्या काहें ?" उल्लेख
 कहा "तुम्हारे लिए, मैं क्या काहें ?"
 हूँ नज्मा न पड़ें तो धाव के तुम्हारा
 हो जायेगी । फिर ईश्वर मुझसे जेबने के
 लिए नज्मा पसंदे हैं ।" इसी बात को
 भासो । तुम्हारा तो फर्क है कि ईश्वर
 का ज्ञान लख के । परन्तु तुम हो कि किसी
 प्रकार मानने में नहीं पाते ।

सृष्टि के धात्रि से लेकर धात्र तक धायों ने, धात्रों के जानने वाले लोगों ने वेदों के जानने वाले लोगों ने, ईश्वर की उपासना किस रूप में की ? मन्त्रों में नहीं बल्कि इसी प्रकार गायत्री मन्त्र के उच्चारण से —

दोशम् धू, दोशम् भुव, दोशम् ह
 ओ तत् सविषोऽप्यम्भो ओ हेवत्य
 ई महि । त्विमेव ओ प्रचोदयामि ।
 दोशम् । गायत्री मन्त्र का शर्षा मैं पहले
 कह चुका हूँ । इसका गायत्री मन्त्र है कि
 वह गुरुशरणं त्रिसंका निम्न नाम 'दोशम्'
 है, ओ शर्षाओं को भी प्राण है, यह तुम धन्य
 से छुड़ाने वाला है, स्वयं सुखस्वरूप होने
 के कारण अपने उत्पत्तियों को भी स्वयं
 मुझों की प्राप्ति कराता है, उस सब भाव
 की उत्पत्ति करने वाले तथा तुम शक्ति
 प्रकाशक पदार्थों के ही प्रकाशक, सब
 प्रकार के देशयों के बाधा, बाधने योग्य
 विषय कारण वाले, सब से उत्तम, ध्यानानु
 शरण योग्य सब दूतों को दूर करने वाले

परम पवित्र तेजस्वरूप परमात्मा का ही हम लोग अपने मन में ध्यान करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को उत्तम गुण और स्वभाव की ओर प्रेरणा करे और हमें बुरे कार्यों से बचाए।

[illegible]

कर्मों का जब विचार होता है। वह बराबर के साथ होती है। जिसका भजन जारी है। सब के प्रभु या वाते हैं इसी प्रकार ईश्वर के भे में जान हो जाती है। सत्ता प्रार्थना में वह भाव कहते हैं 'हम तेरे बिना ही जो जीवन-विकास के कर्मों में पड़े हैं। इसका पुनर्जात होना ही स्वरूप चाहते हैं।' यह सत्यकर्म के यह सत्य प्रोत्साहित करने के लिए साधक नई सत्ता परमात्मा है उसी की प्रार्थना किया करो।

यह मन्त्र छोटा सा है, यह समझकर इसे तुम्हें न समझो। इसका महत्त्व बहुत बड़ा है। क्योंकि इसमें परमात्मा से जुड़ने की प्रार्थना की गई है। हीरा छोटा सा ही होता है। परन्तु मूल्य में बहुत होता है। इसलिए इस छोटे से मन्त्र का ठीक-ठाक प्रतिदिन उच्चारण करो। यह तुम्हारे जीवन को परिवर्तन की धोर से आयेगा।

देखो "ओ३म्" शब्द तीन अक्षरों में मिलकर बनता है। "अ+उ+म्" एक प्रकार, दूसरा उकार और तीसरा मकार अक्षर से बिराट्, अग्नि और विश्व, परमात्मा के तीन नामों की धाराबना होती है। जिसमें सब जब प्रवेश कर रहा है।

भीर जो सब में प्रविष्ट है, उकार से हिरण्यगर्भ जिसके गर्भ में प्रकाश करने वाले सूर्य भावि, सब लोक हैं। जो सूर्य भादि प्रकाश करने वाले सब लोकों का उत्पन्न करने वाला है। जो अनन्त बल वाला है भीर सब जगत् का कर्ता है।

राय-कृष्ण धारिण नाम परमात्मा के विना काम भी वेदों में नहीं पाये। वेदों में हिरण्यगर्भ, धर्मिण धारिण स्वर्ग कीर्ति नाम धारिण है। धारिण नाम सर्व का गी है। परमात्मा का नाम महेश्वरी हुवा। कारण, उसी ने ही समस्त सत्त्वार्थ में प्रकाश कीर्तना है। इसीलिए परमात्मा का नाम सर्व गी है। क्योंकि परमात्मा समग्र जगत् में उजाला फैलाता है। इस प्रकार एक छोटी सी नाम का उच्चारण करने से परमात्मा के ह नाम जगत् में छा जाते हैं। एक बार गायत्री का उच्चारण करने से उसमें ३ बार पीछे का आवाज है, अतो ३३ बार परमात्मा का नाम दिया जाय। यदि इस प्रकार ३३ दिन तक देव प्रेम से गायत्री पढ़ना का पत्र करने, तो भी बार उजाला इससे अधिक बार इस नाम का उच्चारण कर सकते हैं। ३३ दिन के ध्यान-तुल्य रूप संसार के पीछे सब काम रह सकते हैं।

मेकम् 'योधश्' 'योधश्' 'योधश्' बगना
 हि तो बाधश् परन्तु बाधना सोचो का
 कनक है कि पावोले के साथ ही 'योधश्'
 का उच्चारण करना चाहते हैं। वही सचले
 बगल पकवा है। 'योधश् मु' कनक से
 इकरो पयों को बाते हैं कि बह
 प्राणी का भी प्राण है। 'योधश् मु' के
 पयों के कि पय 'योधश्' सब दुनों के
 छुल्लने वाला है। 'योधश् मु' के पयों हैं
 बह 'योधश्' स्वय तुमका बह है जो
 सबको तुम की शक्ति करने वाला है।
 'यु' शक्ति बह 'योधश्' 'सोयु' के
 पयों में न भगना की शक्ति करने वाला
 और यही प्रमाणों को का भी प्रमाणक
 है। वही सच का ऐन्द्रादना है। बहम्
 बगल वही सचले बहना तथा बगल
 करने योग्य है। 'योध' वही सब दुनों
 के सूर करने भगना बाधना पयों है।
 'केवह' वही कानना करने योग्य है।
 'योध' की परम स्या का इन ध्यान
 करते हैं। 'यो न' वही हमारे 'चिदो'
 बुद्धिओं के सूर यम, कल, मय तथा स्वयम्
 की यो 'प्रबोधयति' प्रेरणा देते।

सारांश यह है यह भाषणी मन्त्र है
यह सत्वादा है। कि सब से उसम और
सबसे पवित्र प्रार्थना क्या है ? और कि
मन्त्रक से हिए पूर्ण प्रमाणा की प्रार्थना
तथा स्तुति कानी चाहिए। वही पर-
मात्मा प्रज्जन्मस्वरूप का मन्त्रकारी है ।
मेरा और आप सब का जीवन धर्मगत से
चिरा हुआ है । हमें उस मन्त्रमय पर-
मात्मा के ध्यान से ही मन्त्र प्राप्त हो
सकता है । इसीलिए हमें सबसे सदैव सुद्ध
तथा मन्त्रकारी ब्रह्म के हिए भाषणी

२४ प० जमुनपति जी की पुस्तक का नाम योगेश्वर कुम्भ था। मुकुन्द काँकडी से ही खरी जी और सेव है कि मुकुन्द के इतिहासकारों ने ही ऐसी धनूत (शिव पृष्ठ ६ पर)

साप्ताहिक ओझ कृष्णजी विस्मय आर्य सन्देश

मूल्य एक प्रणि ५० पैसे वर्ष ६ मक ३२ रविवार, २० जून, १९८६ भाग्य सप्तम्वर १६६०=३३०=३ भाग्य २०५२ ध्यानात्मक - १६१

विरोधी भी मोहित मतिमान

तार्किक शिरोमणि श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

—प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

धर्मसमाज के इतिहास में पूज्य पं० रामचन्द्र जी देहलवी का नाम भी कार्य सवा स्वर्ण प्रसारी में लिखा जायेगा। पं० जी एक संस्कारी जोष थे। उनकी धर्मोक्तिक प्रतिभा, विद्या, धार्मिक उनको एक जन्म की सामना का फन नहीं था। वह एक ऐसी पुण्य धारणा थे जो जन्म जन्मान्तरो के पुण्य संस्कार लकर जन्मे थे। अधुनि ध्यानात्मक की जीवनदायिनी विचारधारा को पाकर व धर्मसमाज के संस्कार से उनके पुन जन्मो के पुण्य संस्कार जाग उठे।

बहु बाल्यकाल से ही बड़ मेधावी थे। बहु स्वयं अपने बाल्यकाल की एक घटना सुनाया करते थे। उनके पिता जी देहल-नहले धर्मसमाज के संस्कारों में भी बाधा करते थे और घर पर गणेश बाबा को पूजा किया करते थे। उन दिनों बाजार से एक भाना के बा एक पैसा के दो गणेश मिला करते थे। एक दिन जब पं० जी के पिता जी गणेश पूजा करते बैठे तो पं० जी को भलभारी से गणेश जी की प्रत्मा लाने की कहा। पं० जी से बहु प्रतिभा गिर गयी। मिट्टी की बहु प्रतिभा टूट गई। पिता जी ने पुन घर पर एक कट किया तो सुभ-भूषण धारा बालक कट से बोला, कि क्या हुआ वो पैसे का गणेश बाजार से शोर है धागे में। साथ ही कहा, 'पिता जी आप धर्मसमाज में भी जाते हैं और घर पर गणेश पूजा

करते हैं।' विचिन विचार के विना जी ने कहा, यदि तो भूति पूजा से कुछ मिलता है तो मुझ भी मिल जायेगा धन्यथा धर्मसमाज में तो मैं ज ता ही हो।

इस घटना से पता चलता है कि पं० जी धारम से प्रत्युत्पन्न मति वाले और ज्हा पोह करने वाले मनीषी थे।

पं० जी बहुत सुलेख लिखा करते थे। धारने सुन्दर हैंडराइटिंग के कारण वह किसी भी सरकारी कार्यलय में ऊंचे से ऊंचे पद को पा सकते थे परन्तु ईश्वर की बाणी वेद के प्रचार के धर्ममानी ने उन्हें जैन सेने दिया और बहु सुख सुविधा पर लात मारकर कष्टकारी धर्म के पथिक बन गये। उन्होंने १९५३ ई० में इन पत्रियों के लेखक की यह लिखकर दिया कि पं० लेखराम की धार्य मानकर बहु जाति-रक्षा व धर्म-प्रचार में उत्तरे।

धर्मसमाज के इतिहास में वह एक ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने लगभग १६ वर्ष तक Street Preaching गली कूबो में प्रचार वा कल्याण पर व्याख्यान व धार्यार्य करके वैदिक सिद्धान्तों की सच्चाई की भूम मचा दी।

कैसे-कैसे कष्ट सहें, हसका एक उदाहरण पं० जी में स्वयं एक बार

हमें सुनाया। कही धार्यार्य के लिए उन्हें बुनाया गया। बहु रेल पर गये। रेल उस छोटे से गांव तक न जाती थी। बहु स्थान बा रेलवे लाईन पर। धार्यार्य का समय नियम था। पं० जी उस स्थान के पास वाले स्टेशन पर उलरे। बही पता चला कि वहा धार्यार्य सुनने के लिए भारी भीड़ जमा है। मौलवियों के दल पहुंच चुके हैं। इधर से धकेले देहलवी जी को बोला था। पं० जी ने जूता उतारा। रेलवे लाईन के साथ-साथ दीड़ लगाते उस स्थान पर पहुंच गये और धर्मसमाज का बका बजा दिया।

पठानकोट में एक धार्यार्य में मौलवी सन्ना उल्ला साहब ने कहा, 'पं० जी सब जानते हैं कि हार धार्यके गले में पड़ चुकी है।' इकदम पं० जी बोले, 'सब देख रहे हैं कि मेरे सामने खड़े होते ही हार धार्यके गले में पड़ गई।' तथ्य यही था कि जब मौलाना मन्थ पर खड़े हुए तो उनके मुसलमान भाइयों ने उनके गले में हार डाक दिये थे। जो मौलाना ने गले में रहने दिये। पं० जी के इस वाक्य पर करतल ज्वनि से पकड़ा गू उठा।

उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी फारसी, धरती का उच्चारण धति उत्तम था। मुसलमान भी उनकी तलावते कुरान पर मुग्ध थे।

उनकी हाजर जमाती पर मौलाना सनाउल्ला साहब जैसे मौलवी

बा बड़े बड़ पादरी भी मुग्ध थे। एक घटना देकर इस लेख को हम विराम देते हैं। हैदराबाद में एक मौलाना ने पूछा यदि वेद ईश्वर की बाणी है तो बताएं कि यह किस रात की नाजिल हुआ? पं० जी ने कहा, जानते हो रात की कौन प्राता है? सभा में से एक व्यक्ति बोला 'बोर'। लोग ठहाका मारकर हंस पड़े। परन्तु पं० जी ने कहा, मही रात की धर्मसमाज का उपदेशक भी आ सकता है। पं० जी ने धागे कहा रात की चांद निकलता है। वेद तो ज्ञान का सूर्य है धन रात की नाजिल होने का प्रथन ही नहीं उठता।

उस महान् मनीषी उस धर्तियी वक्ता देवमवत की इमूनि सदा ताजा रहेगी।

इस अक में

सत्यम वादिका	२
सन्नादकीय	३
धर्मसमाज का इतिहास और	
वक्ते उपदान	५
परपराय, किशोरमन्थ	५
सत्य की महिमा	६
परीची व बेकारी कैसे दूर हो	८

सवा धर्म रोचक सामग्री।

हल क ने से हल
होते हैं बेबीका मसायल ।
बनना तो कोई काम
भी आसान नहीं होता ॥

वेब के इस म न मे भारत के मान
सिक नभोमण्डल मे छापी इन निराशा
की काली बलियों को छाटने के ही
सहस्त्रपूज उपाय है । इनमे पड़ुका उपाय
(शेक पृष्ठ ६ पर)

★ वचन-सन्देश ★ आत्मविश्वास

मनुष्य को प्राप्ति में एक प्रयत्न प्रतीक शक्ति नहीं है जिसका वह विवेचन नहीं कर सकता, किन्तु समय-समय पर वह उसका अनुभव प्रदर्शित करता है। उस शक्ति में प्रयत्न बल है। वह शक्ति मनुष्य को प्राप्ति बढने का प्रोत्साहन देती है। वह शक्ति मनुष्य को बड़ों से बड़ी कठिनाइयों में सफलता प्राप्त करती है। वह शक्ति है आत्मविश्वास। हमारे प्रत्येक कार्य की नींव आत्मविश्वास पर ही जमी हुई है। आत्मविश्वास के बिना किसी भी कार्य में सफलता पाना आकाश के ज्योतिष्मान् नक्षत्र को ताड़ने के समान है।

आत्मविश्वास का दूसरा नाम है इच्छाशक्ति। आपका प्रविष्य कब चमकेगा? आपका भाग कब जायेगा? इन प्रश्नों के समाधान को खोज में कभी आप देवताओं की शरण

सम्पादकीय

पाकिस्तान के जुल्मों से अहमदियों में बढ़ता हुआ आक्रोश

—वार्ता—

पञ्जाब के जिला मुख्यासपुर का छोटा सा कस्बा काविया इन दिनों आक्रोश से छतपटा रहा है। काविया दुनियाभर के दो करोड़ अधिक आदिमियों का साम्यात्मिक केन्द्र है और इस आक्रोश की गह्वर है पाकिस्तान में रहने वाले अहमदियों पर जुल्म का डायना जाना।

काविया में अहमदिया फिरके के धर्मोपनिषद् अहमद का कहना है कि यह उत्पीड़न राजनैतिक है न कि धार्मिक। अहमद साहिब जनाब मिर्जा गुलाम अहमद के पोते हैं जिन्होंने १८८६ में अहमदिया आन्दोलन की शुरुवात यह कहकर की थी कि जिस मसीहा ने इसान की उरजो गम से निजात दिलाने की बात कही है, वह मसीहा मैं ही हूँ।

मिर्जा बाशिम साहिब का कहना है कि हमने इस जुल्म के बारे में मानवाधिकार आयोग की भी लिखा लेकिन तेल के घनी धरब देघों के प्रभावहीन होने के कारण वह हमारा मददगार नहीं बन सका। हम ने प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की भी इस बाबत लिखा है लेकिन सरकार का कहना है कि यह पाकिस्तान का धरुनी सामला है लेकिन वे अपनी तरफ से उनको मदद करने में उन्हीने पाकिस्तान सरकार को भी कई पत्र लिखे लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है।

मिर्जा बाशिम का कहना है कि पाकिस्तान में पिछले तीन महीनों में पाच अहमदियों की हत्या कर दी गई। इनमें से एक जनाब बाशिम के चचेरे भाई ६० साल के आशरी के डाक्टर अबुल बिन अबुल कादिर थे। इस मामले में अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हो पाई है। मिर्जा बाशिम का कहना है कि पाकिस्तान में जब भी किसी सरकार को अपना तस्मा डगमगाता नजर आता है तो वह अहमदियों के खिलाफ नफरत फलाने का प्रयत्न करता है। १९५३ में यही हुआ था १९५३ तथा १९५५ में भी यही कहानी दोहरायी गई। १९५५ में हनु लोगो का बंर मुस्लिम बलसत्त्वक बोधित कर दिया गया। इसलिए उत्पीड़न की वजह राजनैतिक है न कि धार्मिक। उन्होंने बताया कि उत्पीड़न का नया दौर १९६३ में शुरू हुआ जबकि लोकतन्त्र बहाली के लिए सिविल नाफरमानों आन्दोलन शुरू किया गया।

उस समय पाकिस्तान में एक प्रफाह्य यह उठी कि जिया साहिब खुद कादियानी हैं। बस फिर क्या था जरनल जिया तिलमिला उठे। उन्होंने ऐलान कर दिया कि उनकी नजर में अहमदिया काफ़िरी हैं भी नहीं मुबरे हैं। अतः १९६५ में उन्होंने एक अध्यादेश जारी किया जिसमें अहमदियों पर अमान देने अपने धर्मस्वकी को सर्वस्व करने का हुक्मनामों की तरफ से व्यवहार करने पर प्रतिबन्ध लगा

मे जाते हैं, हस्तरेखा विशेषज्ञों का पत्र बैठते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि इन प्रश्नों का निराकरण आपने ही पास किया हुआ है। यह सब आपके आत्मविश्वास या दृढ़ इच्छा-शक्ति पर निर्भर करता है। यह एक ऐसा वैज्ञानिक तथ्य है जो आपके मुर्दा जीवन में अमन की वर्षा कर सकता है, जो आपकी निराशा को आशा में परिवर्तित कर सकता है, जो आपकी विपत्तियों के बावलों को तिरिहतर कर सकता है, जो आपके हृदयरूपी मरुस्थल में आशा और उसाह को लहलहाती सेती उत्पन्न कर सकता है। इसके लिए बस आप अपने हृदय में दृढ़ विश्वास पैदा कीजिए। जब आप अपनी आत्मशक्ति पर विश्वास करेंगे तभी आपकी उन्नति का मार्ग स्पष्ट होता जाएगा।

प्राप्तवान रखा गया। मिर्जा बाशिम ने बताया कि अहमदिया धर्म गुरु मिर्जा ताहिर अहमद को इस अध्यादेश के जारी होने के एक दिन बाद ही लखन आगया पठा। क्योंकि तैमिक सरकार ने उन्हें भी गिरफ्तार करने की ठान ली थी।

पाकिस्तान के कटार मल्ला चाहते हैं कि अहमदियों की जमीन जयदाद जन्त कर ली जाये तथा उन्हें सरकारी नौकरियों से हटा दिया जाए। कावियों में अहमदियों के आत्मिकारिक पत्र बदर के अनुसार पाकिस्तान में मुस्लाभी ने अहमदियों को सनाने का एक नया तरीका खोजा है। कोई एक मुस्ला एकाएक गायब हो जाता है और अहमदियों पर उसके गायब होने का इन्जाम मदकर जमना को धीर-मादी बना दिया जाता है। ऐसे ही एक मोनावा धयनम कुंशी इन दिनों गायब है और धन मुस्ला लोग यह माग कर रहे हैं कि इस मामले की तहकीकात करने के लिए मिर्जा ताहिर की लदन से यहा लाया जाए।

‘बदर’ के सम्पादक लुशी अहमद अनवर का कहना है कि उत्पीड़न के इन नये दौर में हमारी नहीं तो सैकड़ों अहमदिया लोग हर पाकिस्तान में भाग गए हैं। लेकिन इसका एक फायदा यह भी हुआ कि पाकिस्तान में अहमदिया धर्म प्रसार में बहुत नुति हुई है।

पाकिस्तान में इस समय ५० लाख अहमदिया हैं। पश्चिम आश्रीका में ३५ लाख मान से एक लाख। इनमें से १५०० काविया में रहते हैं। अहमदिया अपने धार्मिक साहित्य के प्रलास सिक् मयदाय के लिए भी धार्मिक साहित्य छापते हैं। अहमदिया गुरुमुखी विद्वान अपने नाम के धारो जानी किताब लगाते हैं। काविया में अहमदिया फिरके के लिए सब से पवित्र स्थान मिर्जा गुलाम अहमद की कब्र है। १० एकड़ में फैना यह कब्रिस्तान बहिद्वी माधोवावा कहलाता है। लेकिन यहा उन्ही मुर्दों का मिट्टी दी जाती है जो कि अपनी वसीयत के एक तिहाई हिस्से से एक दमने हिस्से को जमानत के नाम करते हैं।

बहिद्वी मा कोशारा तकरीबन पूरा भर चुका है। बदर के सम्पादक का कहना है कि जब पाकिस्तान में हाजात ठीक हो जायगे तो वहा हान में मारे गये अहमदियों की माशों को यहा नाकर दफनाया जाएगा। सम्पादक द्वारा यही हल्के अन्दाज में कही गई यह बात चौकाने वाली है। लेकिन ठीककर यह है कि इन् अहमदिया आशिरी मिट्टी यही पाना चाहता है। काविया में अहमदिया नेता खलिस्तान आन्दोलन को मदद देने के आरोपों से साफ इ-कारा कते हैं। उनका कहना है हम पूरी तरह से मजहबी लोग हैं मियानत से हमारा कोई सरोकार नहीं है।

१९४७ ई० के समय में सुमुखिष्ठ इति-
 यास्य भा०। सत्यंयुक्त विद्याभारत में
 धर्मार्थका०। धर्मार्थक लेखन में प्रकाशन
 के एक महत्त्वपूर्ण योजना काहीं। इस
 योजना के समर्थन ७ धर्मो के धर्म-
 समाज के समर्थ सहितान को प्रवृत्ति
 किया जाया है। धर्म का एक महत्त्वपूर्ण
 अध्ययनात्मक। धर्म का एक महत्त्वपूर्ण
 पुणे है। प्रथम भाग के धर्मार्थक भारती
 धर्मार्थक का विस्तृत उद्देश्य करने के
 पश्चात् नवम्बर १९४७ के धर्मार्थक की
 प्रवृत्ति तथा उनके धर्मार्थक की परि-
 स्थितियों का विचार मूल्याः म किया जाया
 है। सत्यार्थक की धर्मार्थक के धर्मार्थक
 धर्म की कर्मिष्ठ विस्तार से प्रवृत्ति
 करने के पश्चात् धर्मार्थक के धर्मार्थक
 की धर्मार्थकात्मिक धर्मिष्ठिधर्म की
 धर्मार्थक धर्मार्थक किया गया है। इस
 धर्मार्थक का लक्ष्य मात्र १९४७ ई०
 में प्रकाशित हुआ, जिसमें धर्मार्थक के
 धर्मार्थक धर्मार्थक का विस्तृत विवे-
 चन किया गया है। धर्मार्थक में धर्मार्थक

(लेख पृष्ठ १९४७)

दृष्ट कष्ट नहीं फन मही,
नदी न लड़े नीर ।
परमात्म के कारे
साधुन बरा बरीर ॥

पिबित नक्ष तन्मयेव नाम्म
स्वयं न भाजित कमजि दुष्ठा ।

मादन्ति तस्य बाधु बाधिराहा
परमेश्वराय तना विभूतयः ॥

यह सत्य है, तुम कभी पल नहीं
जाते, यहाँ फल उम्हरी मे बने हैं, नगिवा
जल गही पीही मेघ की महला की धन्य
की हूरमाओ के देतु है, पर वह धन्य
नहीं जाता । लोक इसी प्रकार सत्य
पुत्रों का जीवन परमात्मा वा परमेश्वर
के लिए होता है । पुत्री के मांग परमेश्वर
के 'भाव' में यहा सोचना तथा
करना जाता है । परमात्मियों ने कभी
भी यह नहीं सोचा है कि परमेश्वर के
परायत्न उम्हरी किस फल का प्राप्ति होगी ।
के तो निष्काम भाव स को हीन के लवे
रहते हैं । धन्यवश पुत्रों ने महाभारत-
कार महाकवि व्यास के बोही हो गए
मरण हैं-परमात्म के पुत्र होता है
धीर परमात्म स पाप ।

परमात्र, पुत्राय परमाय परमात्मन्
ब्रह्मपुत्र, उनका मे बचन बह ही प्रत्य-
मान् जो विमलसु है । परमात्मर धन्य
दुहरी के दुःख के प्रति होकर उनकी
छायाएँ, कला । यही तो परमात्म है ।
स्वयं भूत भाव भावकर देखें तो प्राकृति
के लक्ष्मी पर परमात्म की प्रतिमल
प्राकृतिक कलाविद्या यकित पाये ।

परमात्मर बहुत बने हैं, जो सर्वो का
बनं बहलाता है । धन्य बने प्रथम ही
सकते हैं पिच्छकी पंच मे अने-पुत्र का
ज्ञान होता सम्मन नहीं, किन्तु परमात्मर
बनं बहलत है, जो बीच मात को पुत्र
मलोग तथा धानन खासि से शीत-शीत
कर देता है । परमात्मकी व्यक्ति स्वयं
स्वार्थ हीन होता है । किन्तु उसका परमा-
त्मर ही उसकी धरम निधि बन जाती है ।
ऐसे मेहरी भाटने बाने के हाथों में मेहरी

एक बार दिल्ली का मुगल बाघाह
धनकर बहुत बनी तेना केकर पिता
कीले धाया । पिताके के राणा उदय
सिंह बहु बेककर डर के मारे पिताके
धनकर दूसरी बहय भाव बने धीर उनका
तेनापति बचनन गहुर की रक्षा करने
लगा । पर एक रात की दूर से धनकर
बाघ ने उसे गोली-के मार मारा । पिताके
निवासी धन उदयन बहारा डटे, पर
उदय ने ही एक पिताके का गहुरा
सकता स्वयं की रक्षा के लिए मेलन मे
दा मया ।

धन कीर बालक का नाम बा पुत ।
उसकी उम्र केवल दोसह बर की थी ।
पुत का ही बालक पर बडे-बडे गहुरा
सकतिवों के प्रमाण यह सदा काहली थी

परोपकार

अमिंत प्रनाप नारायण सिंह

स्वयं लय जाती है । विवेका तथा बुद्धि-
मान् को जो व्यवसाय विषय में नहीं विवेका
बहु परमात्मर की मिलता है क्योंकि
विवेका को मत की धरि के देखा व व्यवसाय
विद्या जाता है । बुद्धिमान् व्यक्ति इसी
समय की वाचना पर खा जाता है । किन्तु
केवल परमात्मर ही उसे (हमारे
स्नेह को) जीत पाता है । हरि धन्य,
हरि कथा धनता' की भाति परमात्मर की
कथा भी धन्य होसी है । बहु दोषों का
धीर है जिसका कोई नहीं ।

यह कि व्यवसाय का जीवन परमा-
त्मर जीवन रहा । उनको एक धन्य
मुनिसे—

एक बार की बात है कि स्वामी की
सुपराय गगन के उठे हुए थे । वे बीच
बा लेंगे । एक बैनगाड़ी एक माने से
कूटे हुई थी । गांधीमान बैनो को गेट
रहा था । स्वामी जी वे बैनकर गहुर पर
पहुंचे और गांधीमान से बैनो को वाही से
कोसकर धन्य करने को कहा और स्वयं
माओ की कने धन्यकर गहुर निकाल
दिवा । स्वामी की के परमात्मर के साव
साव उनकी वासता की परिचय मिलता है ।
वेगारे देहा मे बनेके परमात्मर ही
हैं—ऐसे विधि पाठा । उम्हरी एक पक्षी
की रमानें अपना मास ही गही बरीर
तक बाव दिया । क्योंकि के विषय मे
प्रतिपादन कर विधि । इन महात्मा परमा-
त्मरों की गाथा कविता की भाषी में
सदा धन्य रहते हैं, केवल परमात्मर के
कारण—

रहितन पर उपाकर के,
कल न गारे कीच ।
मांस विषो तिथि भूत मे,
दीन्यो हास लकीच ॥

निरामा की का जीवन पर रा का एक
अनुत्त उदाहरण है—

एक समय की बात है कि निरामा
की पुण्य नया शाक प्रोड कर देगा
बाव में भूत रहू थे । उस समय सभी का
जीवन था । एक निरामा की धरि के ठिठुर
रहा था । निरामा जी न उसके दुःख से
असि होकर उस अपना नया शाक उतार
कर उसे बोझा दिया । यही तो परमात्मर है ।
ऐसी पन्ना निरामा की के जीवन
में कई बार पड़ी है । महात्मा गांधी की
का अनुभूत जीवन परमात्मर का ही उदा-
हरण है । उम्हरी हरिण्य पक्षियों मे
भूत भूत कर दमिस्त हरिजनो के स्नेह
तथा परमात्मर विद्या । कुछ क रोगियों
की सेवा कर उम्हरी डाख दिया । परमा-
त्मर की महता का क्या कहना । यह
बहु मादु की उका है जिसके लयमान स
कलह, गाय स्वाय विद्या नय नातय
पुत्राई हीन्या धाति सभी सुनियो का ब्रत
ही जाता है । परमात्मर से पुत्र बावाग्य
से छात्राण्य वाचना भी गौरवपूर्ण हो
जाती है । तुम्हरीबाव की न कहा है—

परहित हरिण्य कर्मा नहीं मारै

पर पीडा सय नहीं धन्यमार्ग ॥

मे पक्षिमा है कोसामी तुम्हरीबाव
की के रामचरित मानव की । बासय
मे परमात्मर स बाकर इस सवार
के कोई बने नहीं है । सवार मे सत-सकल,
मने-भुने दोनों रहते हैं । एक व्यक्ति
दुहरे की मलाई के लिए अपना हाथ कुछ
न्योछावर कर देता है । धीर पुत्रा । धन
हर की ताक मे रहता है कि कर मोहा
मिने कि दुहरे के धामने की पक्षी हुई
बाओ पर हाथ साफ कर ले । ऐसे मोय

दुहरे की मलाई करने को कौन कहे,
दुहरी की मलाई सुनने तक को भी नसार
नहीं होते ।

महावीर की मानव बरीर की मायं
कला परमात्मर में ही बतमान है—
परमात्मरय कर्मणि दुष्ठा ।
परमात्मरय बहति नक्ष ।
परमात्मरय बहति नक्ष
परमात्मरयय बहति नक्ष
परमात्मरयय बहति नक्ष ॥

बा तय वे मानवता का धनिरय
ही परमात्मर की छात्राण्यमा पर टिका
हता है । धन्य कर इस ससार मे जो भी
धन्यर दुष्ठा है परमात्मर के ही कारण
हता है । परमात्मर व्यक्ति जन-जन के
दुःख को बिना किसी प्रयास से जीत जाता
है । मोर तय के इस पुत्र वे जाता जसा-
दीन को प्रसन्न होकर बच मे करके सल
जनता जन दन बन सकता है । यह कभी
कभी कल के पण्ड मे नहीं था सकता ।
बा भी शीति से बहु धन्य भाव हो जाता
है । परमात्मर व्यक्ति किसी देहा धीर
भीमा के धन्यत बाता नहीं था सवसा
है । "ह दुःख का सुखी बनाकर स्वयं की
सुखी होता है पापकार के "भी महत्त्व
के स्वीकार न से हुए रादु र वि निधि-
धन्य गुण मे टीक की कहा है—बही
मनुष्य है कि का मनुष्य के लिए मरे ।

धन्य प्रयत्न मानव का कर्मण्य है कि
अह परमात्मर के लि सवय न्योछावर
कर दे । हो सकता है इसके लिए काटो
की राह पर चलना प । किन्तु बराने की
धन्यकला नहीं है । धन्य बाने यथा-प्रति-
धन्य नयन धीर कुछ साति धन्य
करावा चाहते हैं हो पा के का के माव पर
पलना छाता परम बने मनेम । कहा
है—

परमात्मरय गदा जार्जित दुःख सताय ।
मनसि विपसतेषा सम्यदनु पदे पदे ॥
धन्य— (जिन सज्जनों के दुःख मे
परमात्मर निवास करता है । उनकी
विचरिता मने होसी है तथा पय पर
समर्पित पाती है ।

मा ॥ डाटा, पो ॥ नदीसी बैवरिया

किशोरमन्त्र—

वीर बालक पुत

बलमान् था । उसकी माता धीर बहिन
धीर स्त्री मे कुछ मे बाने के लिए उसे
कुछी से छात्रा वे सी । गही गही मे जी
उस समय पर वे न बैठकर हमिमार
लेकर अपने देव की रक्षा करने के लिए
बने उसाह के साव कुछ भूमि में बा
पड़ती ।

बकबर की तेना हो बानी में नैदी
की । एक भाव पुत के धामने बकता

बा धीर दुहरा भाव दुहरी धीर पुत को
रुने के लिए पा रहा था । वह दुहरे
भाब की तेना पुत की मा, पली धीर
बहिन का पराक्रम देखाकर बहिन ही
बनी । धीरदर देव की बलते-नबते पुत उम्हरे
गाव पहुँचा, देखा का है कि बहिन
सलाई में मर चुकी है, माता धीर स्त्री
बहुत की गोली डाकर बनीन पर ल-
पका रही है । पुत को गाव बैकबर माता

मे कहा— बेडा हम स्वयं का गही है पू
सलाई करने जा । लडरज न भूमि की
रक्षा का पा मकर स्वयं मे जाय हम से
मिलना । इतना कहकर पुत की माता ने
कोस दिया । पुत को पली न भी
स्वामी की धीर धीरभाव से बैकल हुए प्राण
स्वाय किया । पुत पर विषय उसाह धीर
वीरता स फिर शानु तेना का मुनयवा
करने लगा । माता की बरत समय की
छात्रा वासन करने मे उतने तमिक भी
रैर पीछे नहीं किया धीर ज न भूमि
के लिए सबते-सबते प्राण त्याग दिया । इस
प्रकार इस एक ही बर के बाद पर
माता स्वयं पकारे धीर उसकी कीति सदा
के लिए इस ससार मे कायम रह गयी ॥

व्यासपीठ -

उपनिषत् कथा माला-७

सत्य की महिमा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

बढ़ो प्रयत्नवा उपनिषदों के समय में
जन्ती के पठन पाठन का विधान था।
आचार्य शिष्यों को यही पढ़ाते थे। सर्व
भाषाकरण इन्हीं का उपदेश सुनत थे।
इसमें सत्य की बड़ी महिमा गायन की गई
है।

सत्यमेव विजयते मानुषम् ।

घबड़ाई सवाही रसिक विजयों होती है
 भीम अरु सदा रगजित होकर । मय-
 काय मग्न मन वसन हो जाय ऐसा हा
 सवना है, गलतु प्रलप म सत्य ही को
 विजय होता है । जिस देव में सय का
 मुण्ड-मोना होता है । उसी के मध्या घबराई
 होती । अत ही है । इन चोपन । सत्य सय
 है । एक मनुष्य को बोलने में तो दोर बनाते
 बाहिए सत्य की बात सदा होलकर बोलनी
 चाहिए । धाय कहते, 'मनुष्य को । मोहन
 हमारे घर बा नाना । बहिए मेरी उधवा हो
 तो 'हैं । कहते हैं । बाहिए । सत्य उधवा
 नहीं ला । सय का बाहिए सय नहीं
 है । सय सय बोलना भी चाहिए उधवा
 पालन ही किया जाये । बहो कोई कम
 काम नहीं । भूधराजी । सत्य को विनये
 का मनुष्य मान करे । जिन्हें सय मर्यादा
 सुबोधन कहते हैं, भीर रामायण में जिनका
 सुल-माना करते हैं । जिन्हें धाय ईश्वर का
 धनदार मानते हैं । उधवा ही सय नहीं
 लाया भीर वासो का सिद्धान्त ही ऐसा
 नहीं । सय मर्यादा को ऐसा ही कहता ।
 उन्ही सय में बहो प्रत्येक सय है, बहो एक
 कडा भारी बुद्ध बहो ही वा कि सय सय-
 धाय है । ईश्वर सत्य क विद्या सुल नहीं
 बोलते हैं ।

स्थिर होता जाता है। मनुष्य का गौरव बढ़ता है। परन्तु कब ? जब वह सन्ध्योन्मत्त है और सत्य का पालन भी करता है। य सब बतें साथ ले और फिर देखें कि उर्ध्व दो क सिद्धान्त का तात्पर्य क्या है।

सत्य वा एक लक्षण और भी है, जो तीनों ज्ञातों में एक जैसा रह वही सत्य है। सत्य वह है जिसका प्राप्ति है न भ्रान्त। जो पदार्थ विभिन्न समय पर बदल जाय उसको 'अन्न' कहते हैं। परमात्मा सदैव एक जैसा रहने वाला है। देखिय एक मनुष्य मृत्यु जानत है और धर्म का पालन भी करता है। परन्तु वह मूर्ति-पूजा

भी करता है। अज्ञान और ध्विधा न उसे पतित कर दिया है। बोधो मे विष्वा है ।
'सत्य को पूर्ति क्रिया प्रीत जान के विना
होती हो सकती । परन्तु दाक्षक सत्य
क्या है ? वस यही कि मूठ बोतो परन्तु
उमे मूठ सिद्ध न होना । व्यापारस्य मे
कसा होता है ? गवाह बनादिता सत्य है परन्तु
उसके किन्ता सत्य होता है प्रीत किता
मूठ ? जज जिस बात को दाक्षिक सत्य
मिमत करे उभी । ध्वनना निरुप स्वा
विषय कर जाता है । इसीविषय कहा है कि
'सत्य-भाग्यो मे हो मनुष्य को गंभीर है ।'

परमात्मा तीनों बाल मध्य है परन्तु प्रकृति नहीं। प्रकृति, 48 कारण-मूल” कहते हैं, उसका नाश तो नहीं होता परन्तु वह बदलती रहती है। कभी ससार के रूप में छा जाती है और कभी फिर प्रकृति बन जाती है। यह सत्य ही परमात्मा का विशेष लक्षण है।

प्रकृति ही सत्य है परन्तु उसका परि
साय हमारे ही। पहले तुम जन्म ही जाने
होगे दूसरे तुम मरण ही जाने को ही परि
साय कहते हैं। जब प्रकृति ने ही परि-
साय है तो उसकी वीची हुई हर एक वस्तु
ही परिसाय बनस्य होता। इसी को
कोशदा का ज्ञान है उसने दास नहीं, क्योंकि
वह नून नहीं जोगना। परन्तु जब वह मुखा-
बध्वाय ने दास गया तो उसका वासनाय का
परिसाय हुआ, फिर बुद्धि ने पाया तो
मुखा बध्वाय का परिसाय हुआ। इसलिए
तुम प्रकृति ने काम ने सबके ही परन्तु
किन्नर भीने के कारण वे ही वह तीन
कानो ने सत्य भी नहीं।

[illegible]

कोई धीर ही है ।

का-का क्या है ? हमारे ऊपर कोई
के सब गुणों का वो प्रतीक ही लग रहा है ।
सब गुणों में ही मैं प्रिय हुआ करता हूँ,
हँसकर के घटित-विघटित फिर भी मैं सत्य
को जोखता हूँ तो मैं उम्बकीर के सत्य
से फिर जाता हूँ । क्या जोखनाया सत्य है
निष्ठा वह सत्य है, किन्तु उसमें धम्याप
का जाता है । वह गरीब से विकसित
होकर गरीब के दुख की घणना दुख
समय में होता है । यदि मैं रसी को ही
समय में तो सब सत्य को देखी छुटि
प्रा जायेगी ? नहीं परन्तु फिर भी सबकुछ
रसी को सब समझ कर समझती हूँ
है । धम्याप से नहीं होती है, इस
लिए वह सत्य नहीं है । प्रकृति से परिभाषा
है और जीवनाया से धम्याप, इसलिए दोनों
ही सत्य नहीं ।

एक कवि कहला है—

बुरा को जिसने बिछाया,
मिल गया उसको बुरा

परमेश्वर के सिवा किसी और के
 धारे वर जुगना खुदी है । इसलिए
 ईश्वर का ही पूजन करो । ईश्वर जगत्
 ते दूर होते ही इसके साथ साथ सत्य-
 भाषण का धम्मल भी जाता रहता है ।
 बाटे कोई बनी हो या निमित्त स्त्री हो वा
 पुरुष, सब का एक ही परमात्मा है । बही
 एकरस रहने वाली बस्तु है । परन्तु मांस-
 बर्ष ने उसे भुजा दिया । जो मूल धारे उसे
 भटका ही रहता है । इसीलिए भाइयो !
 एक सत्य को मानो । सारे भयद धाम ही
 मिट जाते हैं ।

उपनिषद् ब्रह्मे ही ऋषिः सत्य के
द्रष्टा होते हैं। ऋषि नाम विस्मर है ?
आत्मक नीरव, एम-ओ, एम-एल
विश्व की विविधा विस्मर है। प्रत्येक
विद्वान् की ऋषि, बुद्धि की विविधा
विस्मर है। ऋषि ब्रह्म वा विस्मर वा ब्रह्म
के साथ सत्त्वा का सम्बन्ध जो करता वा
की सत्त्वा की सम्बन्ध वा ओर उर ऐसे
वेस सत्त्वा वा वेस ही तुम्हें ब्रह्म उद्गाह।
पहलुवा का एक सत्त्वा होता है।
उत्सर्ग बाईं ओर रोके गिये बाईं। सत्त्वा
दक्षिण के सत्त्वा में ही जगद् गिये सत्त्वा
ही। पुरुष ब्रह्म की पहलुवा सत्त्वा बाईं
ओर उर कोश में रोयेगा। आत्मक ऋषि
ब्रह्म नाम सत्त्वा ही है। पुरुषात्मा सत्त्वा

है, उसके साथ उसी का मेल होना जो सत्यवादी, सत्यमानी तथा सत्यकारी हो। सत्यमानी अर्थात् सत्य के मानने वाले तो प्रायः भी होंगे परन्तु सत्यकारी होना कठिन है। जब ये तीनों बातें मिस जायें तभी ज्ञान की पूर्ति होती है।

उपनिषदों में यह भी लिखा है कि

“कृषि बह है जो वेव धीर ख हनेो बा
 जानी हो, ओ दूसरो को लीवे मार्ग पर
 चलने बाणा हो, ओ स्वयं जानी हो धीर
 धन का मुकुटन, ओ लख हो ज्ञान पर
 पाषण्ड रखता हो।” मैं सुधा न विद्वान्
 कीन है ? बाप लख देंगे ओ पढा-लिखा
 हो धीर जन सपार्जन बर सके। परन्तु ऐसे
 धनवान् की वृत्त मिल सकते हैं ओ धन
 बर न बताते हैं ओ को बिद्वान् नहीं कहला
 सकते। इसलिप ब हो है कि—

विद्या ददाति विनयम् ।'

विषय, से विनय प्रत्य होता है ।
 जिससे मनुष्य प्रसन्न है । वाचन विनया है ।
 बहिर्मुख विनय किन्ना है । 'विनय' उसको
 कहते हैं कि यदि मनुष्य किसी को तुजो
 वैसे तो उपमन्य तब से धाय भी तुजो की
 धायो । वह तुजो होता तो उसका तुज
 दूर करके काले भी धयव करण ।
 एक विनयी ही शीमे का मोना भी । उसके
 पास मनुष्य का गुण रख भी । वह उस
 गुण का प्रशिक्षण से वेदा, धर्मका गुण
 मिट्ठी का देना भी वह प्रतिविम्ब से समझा
 है । कदापि नहीं । इसविषय विनयविषय
 पुण्य विनयि गोले से समझा है । यदि कस्य
 सब मनुष्य विनय से दैवे से समझा ।
 विनयविषय ही सम्पत्ति विद्वान् भी है, वार्त्त
 धर्मको बाधा विद्वान् नहीं ।

महाराज बुढ़ बन मे थे । एक शिकारी
ने पत्नी को बाध मारा । बहू गिर गया,
महाराज बुढ़ ने उसे दौड़कर उठा लिया
और उसका बाण निकाल दिया । शिकारी
ने कहा, 'रही मरा है ।' बहू मेरे सीर से
गिरा है ।' महाराज बुढ़ ने कहा, 'बहू
मिरा है, मैं इसे बचाया है ।' अन्तिम
निशान यह हुआ कि शिकारे को ने बचाने
बाद का पहचानार प्रश्न है ।

यदि श्रावका घन्ता करण्ड पवित्र हो
तो क्या वे पवित्र प्रसन्न हो कर ज्ञानों के सैन्य
समुद्रगुलन में देखा । बहुत कुछ कहते हैं
यदि वह श्रावणा नामकी बध्ना है । वे
प्रसू हो के दुल से बुकी हैं । उनकी धारणा
है कि उनके लिए भविष्य की लोभ हो । मयि
होस की विवे मे है । परन्तु जो ही प्रसन्न
मयिर्वी से मिलने के । वरन् मज्जा-जल शिखर
कर उन्हें सुदृष्ट किया था । धरे भावों ।
यह तो लोभो । को लोभान मयिर्वी को
सुदृष्ट कर सकता है क्या यह इत क प्रती को
सुदृष्ट नहीं कर सकता ? उसे ही प्रसन्न प्रसन्न
पर दिख को । सारा भवका ही निन्द
जायेगा । किन्तु भवका क्या है ? पर
को ही समझे तब भा ।

आर्य समाज में दुर्बलता है। इसमें

भारत सरकार ने स्वतन्त्रता के पश्चात् अपनेको जन हिंद की घोषणा की है किन्तु ये सबके सुन्दर धारा यह है कि सरकार देश में गरीबी और बेकारी को दूर करने की तात्काली सभी समानतापूर्ण धरने जायन को नवीन कर सके। इसी के लिए सरकार ने पाकिस्तान की नज़र में कर भारत को हिन्दु राष्ट्र में बदलकर इसे मिश्रित देश घोषित किया ताकि भारत के सभी निवासी इसे अपना देश मानें और समान के साथ पूजा पाठ करें तथा नमाज़ पढ़ाएँ। सरकार ने धार्मिक घोषणा के अनुसार गरीबी बेकारी को दूर करने का सन्धा प्रयत्न किया। सभी लोगों को गरीबी मिटो तथा सारी को नौकर्य मिले। परन्तु दुर्भाग्यवश समस्या को ही लो बनो है।

सरकार को अपने प्रयास में एक लता मिली परन्तु देश में गरीबी और बेकारी स्थान में बर्धित है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत की जनता सर कार की घोषणाओं की शिथिलता के कारण लता बड़ रही है। मुख्य रूप से गरीब और बेकारी की समस्या बर्धित बड़ा है। जनसम्पदा की वृद्धि क साथ शिक्षा (सम्पत्तियों की सहायता से बहुपट्टी की समस्या भी बड़ गई है। इसके अतिरिक्त लाभ में न्यूनता भी इसका एक न नष्टकर साधन में रहता बाहुन है। जो मान में भी रहता बाहुन है। जो समता का बोधा सा हिस्सा था उन्हें समाज है। उनमें उनका निर्वहण भी नहीं था सम्पदा है। बस सहता में बाकर सोच नौकर्य बाहुन है। नौकर्य न मिल तो वे लोग समाज बिनाही काय करत है। सबैसा में ब पड जन महा पड। लवेक साथ

गरीबी व बेकारी कैसे दूर होगी?

—प्रोफ़ेसर प्रकाश त्यागी

हाँ क्या करते हैं।

गरीबी और बेकारी को दूर करने वाली जन वृद्धि की सरकार ने धार्मिकी प्वातन के कार्यक्रम में रोकना चाहा। परन्तु वेच इस बात का है कि सरकार मुसलमानों के दर में और देश का जगता के लिए एक धर्मिकी प्वातन बना। मुसलमानों ने नन यह त कर के बड़ दिया कि यह उनके बन के बँधक है। सरकार के किसी व्यक्ति ने यह मानने का प्रयत्न नहीं किया कि मुसलमान बन की किश बाबा का यह विरोध करती है। बँधक बन इस बात को ठीक नहीं समझता कि मनुष्य के अन्य को रोकना जान परन्तु देश को समस्या का प्वातन कर उन्होंने भी इसे स्वीकार किया है।

जब पाकिस्तान, नबसा देश तथा ह जोरेशिया अपने महा धर्मिकी प्वातन सभी बनो को सरकता क लोगों पर समाज करने लायु नहीं है। परन्तु इसारी सरकार ने ऐसा नहीं किया। इसका कुण-रिमाण यह हुआ कि धर्मिकी प्वातन केवल हिन्दुओं पर लागू हुआ और हिन्दुओं के सभी पड लिये लोगों ने इसे स्वीकार कर लिया। गरीब लोग बन के लोग में सा पड।

सोमानयक स्व-सम्पत्तियों ने इस समय का स्वीकार किया और सरकार

के लोगों को बारीक दिए कि इस की धर्मिकी प्वातन हो। उनके विरोध स्वस्थ चुनाव में इन्वित बाकी की बाटी परामन हुई क्योंकि मुसलमानों का मत सरकार के विरोध में बारा।

धर्मिकी प्वातन के द्वारा हिन्दुओं के विनाश की सीमा को देश लोगों ने प्रकटा विरोध किया। धारमताय लैकी स्वत्तियों में इसका विरोध किया बन धार्मिक नेताओं ने कारक जाना तो उन्होंने कहा कि धर्मिकी प्वातन धर्मको बसु है परन्तु देश के सभी लोगों पर लागू होनी चाहिए। सर्वमान समय में बिश प्रकार यह मान हिन्दुओं पर प्रकटी है। इससे भारत का हिन्दु अनुमान बसो ही समाज हो जाएगा। यह सरकार को चाहिए कि सबके लिए एक सा कामन बनाए। धार्मिकताय इसका प्रबल प्रयत्न करे।

सरकार धर्मिकी प्वातन की प्रकटा इसी को अपने ठीक-ठीक धार्मिक के कार्य रूप में प्रकाश कर रही है। सरकार का एक विमान इसी कार्य में बना हुआ है। यह सब हिन्दुओं को तसते हैं। अन्य को नहीं। यही कारण है धर्मिकी प्वातन केम हो गया है और परिणाम कल्पना से दूर है। बाध्य यह है कि जनसम्पदा की वृद्धि का यह सम्पदा नहीं कर सकता है। परिणाम यह है कि देश में गरीबी और बेकारी बड़ी है। कम नहीं हुई।

गरीबी और बेकारी के बड़ जाने पर देश में एक नहीं बनेगे समस्याएँ पैदा होगी और जनता की शक्ति में सरकार प्रत्यक्ष बिड़ होगी। सरकार को बिहित होना चाहिए कि गरीबी और बेकारी को दूर करने के लिए भीम सरकार ने एक बन्धने से दूरने की अनुमति नहीं दी। उनका यह नियम भीम की समस्त जनता पर लागू हो रहा है। परिणाम यह हुआ कि भीम की जनता की वृद्धि पर सरकार का नियंत्रण हो गया है। गरीबी तथा बेकारी को दूर करने के लिए सरकार को एक कामन धर्मिकी प्वातन का जनाता ही होगा। उसे यह मानना पड़ेगा कि जनता ही होगा। स्वमान रूप में यह हिन्दुओं को क्षमाय कर लेगी अन्य नहीं। यदि यह केम बनता रहा तो वो इसार सत्तमी में केम कुछ और ही होगा। सरकार की बहुपरिधि का प्वातन करने हुए केम रूप में सत्ताय मानुष पदवी है कि—भारत क मुस्लिम सबसे सत्य इस की समस्या में कहते हैं कि यह सीधे ही भारत में मुस्लिम सरकार बनना है। यदि ऐसा हुआ तो फिर सरकार को पक्षाना पड़ना और उस समय बाहुन हुए भी कुछ नहीं हो सकेगा। इसलिए सरकार को टुटन ही अपनी सून गुभार कर धर्मिकी प्वातन का एक कामन बनाना चाहिए और को इसका विरोध करे उसे बेधारीय पोषित करने उसके साथ किसी प्रकार का समन्धता नहीं होगा चाहिए।

सरकार में समय पर यदि इस विषय में कामन नहीं बनता तो कुछ समय में पक्षाय से पक्षाना पड़ेगा।

लाला रामगोपाल शालवाले अभिनन्दन समिति

श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर

११ लाख रुपये की सम्मान राशि

सकलित करने के सम्बन्ध में निवेदन

सार्वभौमिक भाव प्रतिनिधि सभा के सदस्यी प्रमाण श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर उन्हें ११ लाख रुपये की सम्मान राशि जेंट कर का निर्णय किया गया है। सम्मान राशि लोग के लिए बन सहा करने का कार्य धारक हो चुका है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित बात सामन्य है।

- (१) अभिनन्दन समारोह के साथ सम्मान राशि जेंट करने के पोछे यह बाबना है कि अभिनन्दन समारोह की स्मृति में एक सम्पत्ती कोष की स्थापना की जाये, जिसके निषेध से सहायता काय (विशेषकर धारमताय के ब्रह्मचारी, ब्रह्म उपाध-धारी) विद्यार्थी एवं निराश्रित महिलाओं तथा सुयोग्य विद्यार्थियों की सहा-यता) मोरला प्रकल्प एवं मानवीय सामा बा के प्रिय कार्य को प्रोत्साहन दिया जा सके। इस स्थायी कोष का निर्माण सम्बन्धित सभा के सदस्यों द्वारा और एलम्वर इस सभा में अभिनन्दन सम्मान का बाता बोध दिया गया है।
- (२) सम्मान राशि के लिए बन सहाएँ सार्वभौमिक सभा की रसीद चुको पर किया जायता शक्ति दाताओं की बाबतकर से गुट का साथ बाध हो सके। जो बन सार्वभौमिक सभा में सीधा प्राप्त होना, उसके लिए महा से सीधे रसीद की देव भी जाएगी। सार्वभौमिक सभा में बैंक बन्धना बैंक डाफ्ट द्वारा ही बन सार्वभौमिक धार्मिक प्रतिनिधि सभा के नाम पर इसके मुन्नायन—बहुवि स्थानन्य बन ५/३ धारमताय रसीद, नई दिल्ली ११०००२ के पते पर भेजा जाये। बैंक बन्धना डाफ्ट—कारक होने चाहिए।
- (३) धारमतायों तथा मन सत्तार्थों (विशेषकर प्रिण्डल सत्तार्थों) को चाहिए कि वे जनराधि एम्पलित कर उसे बैंक या बैंक डाफ्ट द्वारा सार्वभौमिक सभा को भेजें।
- (४) धारम प्रतिनिधि सत्तार्थ अपनी रसीद चुको पर बन सहा कर जम्मी है। यदि

निक बायेगा। धारमताय सित दाताओं को धारमताय होनी, उन्हें धारमकर के मुन्नाय का प्रयास पत्र बाय में सार्वभौमिक सभा की ओर से भेज दिया जायेगा।

- (५) बन सहाएँ अभिनयान में उन सत्तार्थों के सत्तार्थकों एवं महापुत्राओं का सहयोग प्राप्त करना चाहिए किन्तु सामान्यी सत्तार्थ का के प्रति डा है और जो उनके प्रिय कार्य के लयक एवं सहयोगी रहे।
- (६) सहाय्य है कि धार्मिक प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश में १९ मई ५५ को मेरठ में सम्पन्न अपनी अन्तरज बैठक में यह निर्णय किया है कि सम्मान राशि के रूप में कम से कम एक लाख रुपये का सहयोग प्राप्त करेंगे। धारम सभा प्रतिनिधि सत्तार्थों के भी सार्वभौमिक है कि वे अपनी सहाय्य बैठक में इस सहाय्य का निम्नक बति सीध करे। सम्मान राशि का लयक पुर्ण करने के लिए हूयें उसाहय पुर्णक बन सहाएँ करवाए।
- (७) स्वाम-स्वाम पर इस कार्य के लिए स्थायीय और सीधाय समितिय भी बजि की का बजरी है, परन्तु ऐसी बिजरी भी बजित को बन सहा से पुन हूय के बजना उस प्राप्त की प्रतिनिधि सभा से अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य है।
- (८) बन सहाएँ के लिए अभिनन्दन समिति में भी बजरी रसीदें बजार्त हैं। इन रसीदों पर प्राप्त बन के लिए सार्वभौमिक सभा की लयकी रसीदें बाय में बन प्राप्त हो जाने के उपरान्त भेजी जायगी। यह लयकी रसीद सत्तार्थों को धारम बन सहाएँ करने दाती सत्तार्थों को भेजी जायेगी। इन्धुक प्वातन बजना सत्तार्थ अभिनन्दन समिति को पत्र निम्नकर बजरी रसीदें भजना सहाएँ हैं।
- (९) बन सहाएँ के लिए धारम का भी प्रयास किया जा सकता है।
- (१०) धारम-दाताओं के साथ सार्वभौमिक एवं सार्वभौमिक की धारम प्रमुक परिषदों में प्रकाशित किए जाते रहें।
- (११) इस निम्न में अन्य लयकीरल बजना बन नामापरिदा सजिज्जन समिति से प्राप्त की का बजरी है।

जोनायन नरयण सनक धारमयक डा० धारमयक सजिज्जन सजिज्जन धर्मप्राप्त लयकी

न
उपमन्त्री—श्री सलीम बी माटिया
उपमन्त्री—श्री विजय बी पाटूजा
प्रचार मन्त्री—श्री देवराज बी रावभास
कोषाध्यक्ष—श्री विरबीर सात जी ठूठा
गुप्तकाभ्यक्ष—श्री चन्द्रकाश कपूर
लेखा निरीक्षक—श्री प्रबन्धकुमार कपूर
व्यक्तिगता धर्म
बीरबल—सलीम बी माटिया
सहायक—श्री विजयकुमार पाटूजा
स्वाभ्यास बी सचदेव
मंजी

आर्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयु र प्राधिनियम जी० ८० के
अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा शान • बैंक/मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,
सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
अंकित किए जाएंगे।

निवेष्टक

रामधोपाल शालग्राम	सूर्यदेव	महाशय बर्मपाल	श्रीमदप्रकाश आर्य
संरक्षक चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	मन्त्री
पूर्व प्रधान, डा० आ०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महाशय कुलीपाल
प्रति० बना	लगा	बना	केरि० डू०
सौजन्य से महाप्रियां दी हट्टी प्रा० सिमिटेड, ६/४४ कौतिलधर,			
बीद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१			

“आर्य सन्देश”

वैदिक सभ्यता के अनुभवम करके को,
पहुंचा रहा है अपनी रसदार लेख कर।
वैदिक-विद्वान् प्रतिपादित पुनीत विम,
विद्वानों की देखनी, सुधीनसुदर लेख पर॥
सर्क का कुठार बिने नृपि का चुकाता म्छर,
देता है सचपुर्ण की हृष्य में देव कर।
विल्ली आर्य प्रतिनिधि बना का है मुख पत्र,
बीस्र बाहुक बनिने तिक कीछ ८० नेव कर॥

लेखक

—स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती
(आपठाला वेदप्रचार)

वेद प्रवचन

आर्यसमाज सुप्रसिद्ध वेद के सत्या-
धान में सामवेद पारायण यज्ञ(परिवा-
रिका) २८ मई ८५ के प्रारम्भ हुआ जिसकी
प्रवचन ३० जून को समाप्त होगी।
प्रस्ताव विद्वान् विद्वान्म जी सरस्वती
जी पधारि। आर्य सभ्य के बीर की सत्ता-
मान्य विद्वान् नेता पधारि।

कार्यक्रम प्रातः ८०० स ११-३०
यके तक रहेगा यज्ञ पुरोहित विद्वान् जी
भारत मित्र ज गारुडी है। सभी वर्ग-वैदी
सम्मानों से सम्मान है कि समय से पधार
कर कार्यक्रम की घोषणा बढाएँ एवं बर्न-
साध करें।

अध्यक्ष

निवेष्टक
सुरेश कुमार डीगरा, मन्त्री

प्रवेश आरम्भ

विल्ली आर्य प्रतिनिधि बना के संघट्ट
मात्र सदिक कम्पा गुरुकुल की ५५/१२५,
एई बल्ली, रामपुरा पारायण में विद्यु के
आचार्य तक में प्रवेश प्रारम्भ है। वैदिक
बीस्र छात्राओं की प्राथमिकता। उपपक्षी-
पौरुष पधारि तथा सुविधों की
पुष्टियों को नि गुरुकुल में बरीयता।

समय की दृष्ट

डा० बर्मपाल आर्य
मन्त्री

सूर्यदेव
प्रधान

डा० पुष्पावती
मुल्याधिष्ठात्री

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,
हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

देक

अण्ड

गुरुकुल धातु
कली, धातु
सुगन्धित, लवणित
सर्व प्रकार के रोगों के
लिए उपयुक्त है।

भीमसेनी सुर्यम
सर्व रोगों के
लिए उपयुक्त है।

फायरकिल
• काली धातु के लिए
• सुगन्धित के लिए
• सुगन्धित के लिए
• सुगन्धित के लिए
• सुगन्धित के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी
हरिद्वार

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केशरनाथ,
फोन। २६६८३८ आचारी बाबा, दिल्ली-६

विल्ली आर्य प्रतिनिधि बना १५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ क्षेत्र. ११-१३ के लिए डा० बर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक लेख, नवी नं० १०, केशवप्रसाद, दिल्ली-११ में प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

२८५
२४
१.७.८१

अपराध
कानून विभाग
हरिद्वार

११/११/११
११/११/११

साप्ताहिक

ओइम

कृष्णवर्णो विश्वमार्म

आर्य सन्देश

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ६ अक्ष ३३ हरिद्वार, ७ जुलाई, १९८१ आर्य सन्देश १९८०=५३=०५ प्राण्ड २०५२ दयानन्द—१९६

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

ले०-सोमदेव आर्य, रिसर्च स्कालर

जो जानि या समाज अपने पूर्वजों एवं महापुरुषों को भुला देती है वह धर्म पथ से च्युत हो जाती है। कारण यह है कि मनुष्य अनुकरणीय प्राणी है। दूसरों के सुख कर्म देख या किसी की प्रशंसा सुनकर उसे भी सुकर्म करने के मान एवं गौरव प्राप्त करने की क्षमिता प्राप्त होती है। जिन लोगों के हृदय पटल पर अपने महापुरुषों के सुकृत्यों की स्मृति प्राकृत रहती है वे उत्तरोत्तर उन्नति पथ पर अग्रसर रहते हैं। पर जिन लोगों के सामने बड़ों का उत्तम आदर्श नहीं होता उनकी समाज एवं जाति का इतिहास नष्ट हो जाता है।

धार्यसमाज ने जाति और देश को अग्रुत करके जगत में प्राचीन धार्य सङ्कति को पुनर्जीवित करने का शुभ कार्य किया है। ऋषि दयानन्द जी ने धार्य जाति को तप, त्याग, धर्म, सत्य, स्वाय और परोपकार की दीक्षा का मार्ग दिखलाया।

रात्रि का काला कल्पित पौर धार्यकार प्रतिदिन प्रकाश के हाथी पराजित होकर भी सुबन भाकर को डक लेने का कुप्रयास करने का घुड़सा से बच नहीं जाता। ऋषि दयानन्द धर्म की अनेक बार रुढ़िवाद के बालों में दकना बाधा।

जब स्वामी दम्मी एवं दुष्ट जन ऋषि का सामना न कर सके तो प्राण लेने पर उताह हो गये। पितृनी बार दीप बुझाना बाधा। पर बचने बाधा बचाता रहा।

पण्डित गुरुदत्त जी का जन्म २९ अग्रेल १८६४ तदनुसार ६ वैशाख १९२१ को युवतान में हुआ था। आपके पिता का नाम रामकृष्ण था। लाला रामकृष्ण फारसी के मौर्य

विद्वान् तथा पञ्जाब शिला विभाग में अध्यापक थे। गुरुदत्त जी से पूर्व रामकृष्ण जी की गृहस्थ-यात्रिका में कई पुष्प खिले परन्तु वे सभी बोझ-बोझे समय के पश्चात् मर भा गये।

प्रारम्भिक शिक्षा घर पर होने के पश्चात् जब आप ८ वर्ष के थे तब लाला रामकृष्ण जी ने आपको हिस्ट्रिट स्कूल प्रभु में प्रवेश करा दिया।

जब आप दसम कक्षा में थे आप के साथ लाला बेतनानन्द न अकत रैमल जी भी पढ़ते थे। ये दोनों युवक धार्यसमाज के सदस्य थे। इन्हीं की प्रेरणा से आपकी रचि धार्य साहित्य व धार्यसमाज में लगी। परिराम स्वर्ष २० जून १८८० के शुभ दिन गुरुदत्त जी ने धार्यसमाज की सदस्यता का फार्म भर दिया और बिचिन् धार्यसमाज के सदस्य बन गये।

उन दिनों हिन्दुधर्म में बाल-विवाह की प्रथा थी। गुरुदत्त जी अपनी स्कूल में पढ़ ही रहे थे कि उनका विवाह सेवीबाई के साथ कर दिया।

१८८० में गुरुदत्त जी का स्कूल जीवन समाप्त हुआ और पञ्जाब विश्वविद्यालय लाहौर में एम० ए० प्रथम वर्ष में प्रविष्ट हुए। पढ़ने में आप तेज थे। अध्यापक व इन्स्पेक्टर इस होनहार युवक को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते थे।

गुरुदत्त जी, कि विद्यार्थी जीवन के साथ और कई अग्रो में उनके लिपि में से कुछ नाम पञ्जाब के सार्वजनिक जीवन में स्थाति पा चुके हैं। लाला हसराम दीवान नरेन्द्रनाथ, लाला अमरतराम लाला लाजपतराय थे लोग पण्डित जी के केवल कालिज मित्र ही न थे, वे उनके

धार्मिक कटावों के भी कई अग्रो में साथी थे।

गुरुदत्त जी ने १८८२ में एक स्वतन्त्र वाद विवाद सभा की स्थापना की। सर्वसम्मति से गुरुदत्त जी को मन्त्री बना दिया गया। लाजपतराम मरीचे तथा उनके सभी प्रमुख मित्र सदस्य बन गये। सब की आयु लगभग २० वर्ष की थी।

१८८३ में ऋषि दयानन्द जी को दूध में काच व विष मिलाकर पिलाया गया। फलस्वरूप उनकी स्थिति चिन्ताजनक हो गयी। चिकित्सा की गई पर मब व्यर्थ। शीघ्र ही यह समाचार सर्वत्र फैल गया। सब स्थानों से श्रद्धालु ऋषिराज की सेवा के लिए गजस्थान की ओर चल पड़े। लाहौर धार्यसमाज की शतरंग सभा में जीवनदास व गुरुदत्त की सेवा के लिए भेजने का निश्चय किया। सन १८८८ में देव दयानन्द मुलतान धाये पर बालक गुरुदत्त उस समय भ्रम में बैठे था तब गया घर धार्य पर व्यास न बुझा पाया। अब व्यासा स्वयं गंगा के पास जा रहा है। २६ अक्टूबर माय को दोनों भ्रज डेर पहुच गये।

आमरा गेट के बाहर विनार हाउस में महाराज विराजमान थे सारे शरार पर पकड़ने थे। हिचकिचाया नहीं थी। डा० लक्ष्मणदास की घोषविद्या बन रही थी। गुरुदत्त जी ऋषिभर को भुकर मोरारी के कारण उनसे कोई बातलाप भी न कर पाये। केवल दर्शन हुए। पर जो चीज दाविन और म्येनर, ग्टन और बेकल से न मिल सकी वह मिल गई। दर्शनमात्र से जीवन में शांति प्राप्त हो गई। जन्म मंगलवार को

को हुआ था और पुनर्जन्म भी मंगलवार को ही गया।

घर धारकर दो कठों पर धार्यसमाज के पाँच पाँच नियम लिखवा लिये। प्रात कान जलपान किया। फिर एक कपड़ा धागे लटका लिया, दूसरा पीठ से बाँध लिया और चलने लगे ऋषि सन्देश सुनाने के लिए। देवी ने देखा तो विस्मित हो गई। हाथ पकड़कर बोली—'पनिदेव, यह क्या हाल बनाया है? क्या कहेंगे लोग? 'उत्तर मिला' भोली तू नहीं जानती। यह जीवन मेरा नहीं रहा। मैं इन्हे ऋषि के चरणों में धपल कर थाथा हूँ। अब रोम-रोम उनकी चरीहर है देवी। कोई क्या कहना कोई क्या कहना—इसकी चिन्ता कैनी?

पण्डित गुरुदत्त जी ने ऋषिभर को समझ लिया। वे जानते थे कि लोग क्यों उस दिव्य देवता को समझ नहीं पाये। समझ लेने तो इनका भी यही हाल हो जायेगा। इसलिए धार्यसमाज अमृतसर के उत्सव पर भाग्य देते हुए उन्होंने कहा था। ऋषि के महत्त्व का लोगों को समझ लेने पर पता लगेगा, और वह भी जब विद्वान् पण त्याग कर उनके अग्रो पर विचार करेंगे। स्वामी जी के अग्रो को पढ़ने से उनकी विशेष सचि थी। इसलिए वे उनका करत र कि मैंने १८ बार मत्स्याध्वप्रायण पाया। पर मैंने जब-जब पा पा सब नई नई नई शिक्षा और जानकारी प्राप्त हुई।

१ जून १८८६ का दिन ८० ए० बी० स्कूल की स्थापना के लिए निश्चित किया गया। प्रात ३१ मई

(सिप ए० ११ पर)

सत्पंग राटिका

श्रुति वमिष्ठ । इवता वमण छद
त्रिष्ठप ।

अथवा — य आग ब्रह्म क्षित मू
यानि ब्रह्म वयम अनागा स्याम अक्षिणे
क्षताभि ब्रह्म त सूयम स्वस्तिभि सदा न
पात ॥

श्रुत्वाय - (य) जो श्रुतु (श्राव)
 प्ररत्वाय (श्रुत्वाय) जन्म वान के प्रति
 (विन) भी (म=वाति) श्रवण दबाश्री
 हा रहता = (इहए) उय पुनन योय
 श्रुतु क सम ५ (बयम) हय (मनया)
 निप्याय (स्याम) रहै। (श्रदिन) म
 मन्त्र देव के (श्रतानि) मयाणा का
 (श्रुत) श्रावकर श्रावण करत हुए
 विद्वज्जन (सूयम) श्राव सब (स्वस्तिर्वा)
 श्रवण क वाश्रुत्र उपदेया श्रौर परामणा
 से (श्राव) सब सययो म (न) हमारा
 (पात) रक्षा काजिय।

आध्यात्म मन्त्र में मुखवर्ण से वा
 बात कहता गया है। पहला यह कि मनु
 का दया भावी भाव है। का हृत्पात्र ता प्रण
 हो जीव पर रहता है कि नु मानव जावन
 का सफलता इसमें है कि वह मयादा का
 रहलन करुणा द्वारा विचार पर पाँचव
 पाहलन प्रती ध्याना म उपलब्ध है।
 दूसरी यह कि विद्वानों का यह कतम्भ है
 कि वे स पक्षधरता से कि के भाष
 नियमों को पचना पाहलन बुद्धि से जानकर
 सामान्यजन का हितकारण उपवस से
 परिभाषकर का सवा धामन सत रह
 हल मन्त्र म प्ररुत्र भग पर जगन
 विचार का जन।

[illegible]

**प्रभु अपराधी पर भी
कृपाभाव रखते हैं**

लखक-प० शिवकुमार शास्त्री

यो मृडयानि चक्रुष चिदागो वय स्याम उरग्रे अनागा ।
अनुव्रतानि अदितर्हन्ता युय पात स्वस्तिभि सदा न ।

সদৃশ ৩।৮৩।৩।



है। इसी भ्रम में वे इस पार में लगे रहते हैं।

[illegible][illegible]

चपन लगाती हुई मन में उसके सुधार की भावना ही रखती है और दण्ड देते हुए भी उसका हृदय द्रवित रहता है। ऐसे एक उदाहरण से समझिये।

[illegible]

वो खूब कसा है जिसने इन

हमीनो को बनाया है।

इस जय वेणुते हैं हम तो

रसकी याद आती है।

इस प्रकार के मद्रिच रह गये उदात्त
 धावाय के बिग प्रवला नुंगे धोर हमारी
 इन्ध्या वास्तव से इन्ध (धाम) के कित
 सम्पादन म महावक होगी। इस के बिपरीत
 रजोभुग धोर तनुभुग वा बन्धा बन्धने
 पर दुनिया बदल जायवा रर उसके
 धनुसार बिचार भौ व्यस्ति धोर बन्धा
 का गिराने वाल होगी। इस व्यस्ति का
 किसी र्ण के पावर से धन्धा बिच लीखा
 है—

दिल के बरफ़न में

उमके शोक में रहती है प्रांस ।
जान का मासिक जो है
उससे मज्जर भिस्तती नहीं ॥

जब व्यक्ति एक बार पणधष्ट हो जाता है तो फिर उसे माग पर सामा कुशाध्य होता है और परिणामस्वरूप हमे

प्रभु की न्याय व्यवस्था के अनुसार दण्ड भोगना पड़ता है।

[illegible]

प्रबन्धक दुष्प्रयोग के दावाएँ पत्र की विचार कीजिय। सरकार से सहज हो लाहौर से ही सारा प्रबन्ध चोरे चान की रखा है किन्तु गन्त के घात ही विचार बरत गये श्री उस सहज ने द्वारा दूसरा क चन का प्रयत्न करने लगे। मैं न म बुद्धिमत् की भी चला लागो म हने लगे श्री प्रोए एक से साहस करके सरकार में रिपोर् भी कर दी। सरकार ने नू नवीन कानून पर बिका यत गैक पावती तो घाता देकर उसका नासनाश कर दिया पावती गान्ध ५ न कर गस्त्रागार में जमा कर दिया।

टीक श्री प्रह्लाद प्रभु प्रभु की नव
वक्त्रों के ना देखते हैं। बसिप ऐसा प्रसन्न
होता है। कि मानियेयों को कि मयंग
को मान्य रखन के लिये प्रभु क अस्थमा
के अनुसार ही पतन कानन नाथ और
सर्वसुराधार प्राप्तरूप किया। प्रथम इसी
उदाहरण को ही मैं डॉनभो ले ा
इय। जैसे वरु बचन उदाहरण में प्रभु
का उन्मल दृष्टा है। प्रल क दाग शक्ति
की गति का दुरोगरीय प्रभु और उन्म
द्वष्टा के वास्तव्यम मकारों की भव
काया। सदविचार कभी कभी सानि और
पक्षपात का भयन को उभारते हैं।
कि वर वास्तना की धारों में उड जाते
हैं। इस लिये मनोपा का चित्रण कवि
विहारी ने ब्रह्मास्वाधिक म्य से किया
है—

लाज लगाम न मानहीं
नेना मो बस नाहि ।
(श्लेष पृष्ठ ६ पर)

★ वचन-सन्देश ★

राजनीति और धर्म

मेरी सत्यनिष्ठा मुझे राजनीति के मैदान में लीज लाई है; और मैं जरा भी सकीन किये बिना और फिर भी पूरी नज़रता के साथ कह सकता हूँ कि जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति में धर्म का कोई वास्ता नहीं, वे नहीं जानते कि धर्म का धर्म क्या है ?

आत्मकथा (अग्रजो) १९४८, पृष्ठ ६१५

मेरे लिए धर्म रहित राजनीति विल्कुल गन्दी चीज है, जिससे हमेशा दूर रहना चाहिए। राजनीति का राष्ट्रो के हित से सम्बन्ध है। और जिस चीज का सम्बन्ध राष्ट्रो

के हित से है, उसके साथ उस मनुष्य का सम्बन्ध होना ही चाहिए, जिसकी धार्मिक वृत्ति हो या दूसरे शब्दों में जो ईश्वर और सत्य का शोधक हो। मेरे लिए ईश्वर और सत्य समानार्थक शब्द हैं। और अगर कोई मुझ से कहे कि ईश्वर असत्य या धर्त्याचार का ईश्वर है, तो मैं उसकी पूजा करने से इन्कार कर दूँगा। इसलिए राजनीति में भी हमें स्वर्ग का राज्य स्थापित करना होगा।

—महात्मा गांधी यगहड़िया, १८-६-२५

सम्पादकीय

मौसम पर वनों का प्रकोप

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष अपनी शान विद्या की समृद्धि, धन वैभव की समृद्धि के कारण विख्यात रहा है। यहाँ की बर्फ से ढकी पर्वत की चोटियाँ, उनकी कील से फूटते भरने, धटकेलियाँ करती हैं। गाय गान, सहर-सहर, गली-गली, फलदार पेड़ों के कारण सब कुछ हरितिया से भरा-भरा हरितोत्तम होता था किन्तु जैसे-जैसे वनों की पेड़ों की घनदायक कटाई होने लगी बरती नग्न होती रहने लगी चली गयी। बाबल रहने लगे और रेगिस्तान के बबड़े फैलने लगे। रेगिस्तान के बबड़े काले साये से बचने के लिए सरकार पेड़ों को लगाने में व्यस्त है। किन्तु जितनी तेजी से जंगलों की कटाई हो रही है उससे भारतीय मौसम पर भी काफी असर पड़ा है। १८६४ से लेकर अब तक हुए अनु-सन्धान से पता चलता है जगलों के कम होने से किसी भी शान की वर्षा निश्चित रूप से कम हो जाती है। और जंगलों के बढ़ने से छ प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है। १९०६ में मौसम वैज्ञानिक डा० ब्लाड ने यह बताया था कि वर्षा जंगलों के कारण १० प्रतिशत अधिक होती है। भारत में प्राचीन काल से यह माना जाता है कि वनों पर ही वर्षा निर्भर है। इम्पेक्मेट आफ इन्डियन एग्रीकल्चर नामक रिपोर्ट में डा० बिलकर ने नीलगिरि की पहाड़ियों में ऊँटकमड़ तथा उसके घासघास के क्षेत्रों में बाकड़े एककर कर लगभग सिद्ध कर दिया है कि जंगलों से वर्षा का सीधा सम्बन्ध है। नीलगिरि की पहाड़ियाँ १८७० के पहले बूझलहीन थी। जून जलाई तथा अगस्त के वर्षा के महानों की छोड़कर यह धाँसा गया कि १८७० से ७४ तक वर्षा के दिनों की संख्या ३७४ थी। इसके बाद यहाँ बूझ लगाने गये और जंगल बढ़ने लगे। १८८६ से ९० तक जब काफी जंगल बढ़ गये वे उस समय वर्षा के दिनों की संख्या ४१६ आकी गयी। कहने का अर्थिभाव यह है ज्यों-ज्यों जंगल फैलते गये वर्षा के दिन भी बढ़ते चले गये। छोटा नागपुर का उदाहरण देकर मौसम वैज्ञानिक डा० रमनाथन ने इस बात की पुष्टि की है जगनों का होना वर्षा के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा प्रायः से २० या ६० वर्ष पूर्व छोटा नगपुर में जब काफी जंगल थे उस समय यहाँ गर्म मौसम में भी दोपहर के बाद बौझारा या जाभा करती थी। इस कारण यहाँ का मौसम रहता ठंडा रहता था कि यहाँ चाय की खेती आसानी से हो जाया करती थी। जैसे-जैसे जंगल कटने लगे

वर्षा की बौझारों का आना बन्द हो गया मौसम और तातावरण पर प्रतिकूल असर पड़ने से चाय की खेती भी बन्द हो गयी।

जगलों से वर्षा के सम्बन्ध का अध्ययन इन्स्टीट्यूट आफ साइंस बेंगलूर की डा० सुनीता गाडगिल ने किया तो उन्होंने कहा—जगलों के कारण बायु का तापमान घट जाता है तथा पत्तियों से वाष्पोत्सर्जन के कारण वायु घनत्व बढ़ जाता है जिससे वर्षा होती है। वृक्षों का भूमि पर घनत्व तथा पत्तियों की धारण करने की क्षमता भी वर्षा के वितरण तथा मात्रा को नियमित करती है। उन्होंने यह भी देखा कि पतझड़ वाले वर्षों की प्रजातियाँ सदाबहार बाल प्रजातियों की तुलना में कम धात्रा बनाए रखती हैं। अतः यदि सदाबहार वनों की जगह पतझड़ वाली प्रजातियाँ लगाई जायें तो वर्षा कम हो जाती है। लखनऊ के पीलवो बोटेनिकस रिसर्च इन्स्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने राजस्थान की खारे पानी की भौलों के नीचे दबे जीवा-स्तो का अध्ययन कर यह पाया है कि पहले इस क्षेत्र में सघन जंगल थे। धीरे-धीरे जंगल कटते गये वर्षा कम होती गयी और रेगिस्तान फैलने लगा। अण्डमान निकोबार द्वीपसमूह, बिहार के राँची क्षेत्र, आसाम के डिब्रूगढ़ तथा बम्बई के साताराकून क्षेत्र में भी वर्षा की कमी का कारण जंगलों और पेड़ों का घटना ही बताया गया है। इथोपिया में तथा अफ्रीका के २५ देशों में अकाल के प्रकोप के कारणों में एक बात यह भी कही जाती है कि वर्षा के न होने में जंगलों की कटाई का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

अतः इस विषय पर मनुष्यमान को विचारना चाहिए तथा नगरी सहरों में फैलते सीमेंट के जंगलों में पेड़ों की हरियाली भी बसायी जानी चाहिए।

—यशपाल सुबान्त



आप धारमन्त्रात्मक के प्रधान हैं—
आत सीध सीध बर्ष पुरानी होगी। बाबर
(महाराष्ट्र) ने कहा है वो मुझे ने कोई
विचार बड़ बड़ा। इस मुझे की रिपोर्ट
आत्म के पास गई। दोनों पक्ष अपने
आप की निर्वाण बहाले के और दुखरे वस
की दोनों उधारे थे। सरकार ने इस
विचार भी कुछ आत्म के लिए एक उच्च
अधिकारी को बाहर भेजा।

बहु अधिकारी बहा पड़ना। बाबर
के अधिकार लोग उसे जानते थे कि वह
एक उच्च अधिकारी है परन्तु वह किस
उद्देश्य के बहा गया है। उसे कड़ा
न था। उस समय ने अपनी आस पूरी
कर की विचार की आस बढ़ावा करने
के पता चल गया कि इस प्रकार के विचार
किस का विचार हो है। दोनों दोनों
पक्ष थे।

आप का कार्य पूरा करने यह अधिकारी
करी बहा के धारमन्त्रात्मक के प्रधान वं
धारमन्त्रात्मक को के पता गया। उन्हें कड़ा
धारमन्त्रात्मक है कि मैं बहा वस बाबा
हूँ। उन्होंने कहा कि आप कहिए कीन
आप हूँ। तब उस उच्च धारमन्त्रात्मक
विचार ने कहा, मैं आप के नगर के दो
पक्षों के बीच के पक्ष रहे तब विचार की
गुप्त आस के लिए बहा भेजा गया हूँ।
मैंने धारमन्त्रात्मक के प्रधान हैं।

आप धारमन्त्रात्मक के प्रधान हैं। आप
की एक पक्ष के साथ बहा हुए हैं। मैं
भी धारमन्त्रात्मक का एक पक्ष हूँ। आप
धारमन्त्रात्मक के पुराने अधिकारी हैं। आप

नक्षत्रमन्त्र—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-मुप्त पृष्ठों का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा—३

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिन्नाम'

के प्रबन्धोंपेक्ष मुनकर मैं क्या प्रत्या
लेता हूँ। अब आप कहिए कि एक
धर्म के रूप में मुझे इस विचार के बारे में
कोई रिपोर्ट सरकार को देनी चाहिए ?
मैं क्या बल मुज्जा आत्म को हूँ प्रबन्ध
नहीं रिपोर्ट भेज हूँ ?

धारमन्त्रात्मक के प्रधान भी वं धार्य
आतु की यह मुनकर कुछ पक्ष पर परन्तु
प्रधान भी हुए। धार्यसमाज की गौरव
गतिता, धार्यसमाज के प्रधान वं की
प्रतिष्ठा का अपनी समाज सेवा का उन्हें
आत्म धारमन्त्रात्मक। आपने उस धारमन्त्रात्मक-रिपोर्ट
से कहा कि एक धर्म को साथ होनी
चाहिए और उस वही है कि हमारे पक्ष
का भी कुछ रीति है। आप मेरे कारण वस-
पात न करिए।

प्रधान की यह धार्यसिंह आत
मुनकर आपसे उन्हें कहा, अच्छा वही है
कि जिसपर वह विचार अपनी निष्ठा तें
आपने नहीं रिपोर्ट भेज सकते। बाबर
का यह विचार निष्ठ गया। कलह निष्ठ

गई। प्रेम ने दोनों पक्ष रहते लगे। आप
जानना चाहते थे कि यह उच्च अधिकारी
कीन था। यह धार्य पक्ष के धारमन्त्रात्मक
के जाने जाने जिसकी प्रदत्त व्याख्या
निष्कर्ष कीन जाने धीमात्र बाहु साहब
बाबमारे जो। आप पक्ष इस संसार में
नहीं रहे। अनु मास न आप पक्ष बंधे।
आप मुनक प्रबन्ध की बाबमारे के छोटे
पक्षों में।

अब वं मुद्रदेव की लूट पिटे

वही पुरानी बात है कि उत्तर प्रवेश
के विचार मधुर का नौगर्भ वैदिक बर्ष
प्रहलू एकत्रे बाला था। राजपूतों के इस
नाम ने भी वं मुद्रदेव की विचारकार
मुद्राएँ गये। धारमन्त्रात्मक के मीलबिचों ने
पुनः पुनः कहा विचार कि ये राजपूत धार्य
न बनें। राजपूतों के कुछ लोगों को धार्यों
के विषय उच्छ्वास गया। वे मुद्रदेव नाम
रखते को तैयार हो गए। निष्कर्ष हुआ
कि अब कोई धार्य वैदिक धार्य तो उनकी
परिच्छेद विचारों की जाने। अधिकार राज-
पूत मुद्र होने को तैयार बनें थे।

जिसे हिन्दू धर्म का संरक्षक कहा
जाता था वही बालक धारमन्त्रात्मक धार्य
है। कतिनाथो में उच्छ्वास कीन निमित्त
विचार था। विचार की का धारमन्त्रात्मक बहुत
पक्षी कतिनाथो में भीता। धारमन्त्रात्मक के
जिने से १६३० ई० में उनका जन्म
हुआ था। उनके पिता साहू की बीजापुर
दरबार में नौकर थे। बीजापुर के मन्त्रा
की बोले थे, जब कि साहू की धारमन्त्रात्मक
की लड़ाई में पक्ष थे, धारमन्त्रात्मक नाम ने
दिग्गज का शास्त्राध्यक्ष की प्रशंसा करने के
लिए धारमन्त्रात्मक पिता की उपासना की जाता
था। धारमन्त्रात्मक को सिद्ध करने के लिए ने गयी
करने का प्रयत्न किया, लेकिन उनका यह
मुद्र प्रयत्न उच्छ्वास नहीं हो सका। विचार की
के प्रबन्ध के तीन बर्ष अपने जन्म स्थान
विचारने के किने हो में बोले। इसके बाद
बीजापुर की का धारमन्त्रात्मक के पक्ष के अपने
नामक के साथ एक किने ने दूसरे किने ने
अपने रहता बहा। किन्तु इस पक्ष धारमन्त्रात्मक
विचार ने भी उस धारमन्त्रात्मक ने अपने पुत्र
की वैदिक विचार में पढ़ि नहीं जाने दी।

माता बीमा बर्ष विचार की को
राजाधिर महाभारत का उदाहो की
कोर माधुर्य मुद्राएँ करती थी। गारो,
वीरगाथा, मुद्राएँ तथा माता की नामक
विचार की के विचार के धारमन्त्रात्मक न।
प्रबन्ध की दरम की कोर देव। इस
विचार का परिणाम यह हुआ कि बाबर

किशोरमन्त्र—

वीर बालक शिवा जी

विचार की बहुत छोटी धारमन्त्रात्मक ने भी निर्वाण
एक प्रबन्ध को गये। जन्म जात धारमन्त्रात्मक की
नामकी की दोरी बनाकर वे उनका नेतृत्व
करते थे और पुत्र के बेल बैसा करते थे।
उन्होंने अपने ही विचारमन्त्रों से हिन्दू
धर्म बेल मन्दिर तथा मोक्ष की रक्षा
करने का इस लक्ष्य कर लिया।

साहू की भावने के कि उनका पुत्र भी
बीजापुर दरबार का ऊर्जावान् वन।
विचार की जब पाठ बर्ष के थे तभी उनके
पिता उनको बाही दरबार में ले गए।
पिता ने उनको कि दरबार की राज-
सम्मान, रोक-बाध हाथी-घोडा धार्य देव
कर बालक रोब ने का जानेमा और दर-
बार की और धारमन्त्रात्मक होमा किन्तु विचार
को तो विचार किसी और देवे विचार
किन्तु और धारमन्त्रात्मक के शायने पिता
के साथ ऐसे चतते बने बने किसी
साधारण धार्य पर आ रहे हो। मन्त्रात्मक
कावने बाबरमन्त्रात्मक ने विचार की की पीठ
पर हाथ के पीठ कहा—'वेदा' बाबासाहू
को हासिल करते।

साधारण के मुनकर पिता की की और

देखा और बोला—बाबासाहू मेरे राजा
नहीं है। मैं इनके धारमन्त्रात्मक नहीं मुका
बसता।

दरबार में सनसनी फैल गयी। नवाब
विचार की और दूर कर देले गये।
किन्तु विचार की ने नेत्र नहीं मुद्राएँ।
साहू की ने लक्ष्य देत धारमन्त्रात्मक को—
'धारमन्त्रात्मक' अपना कर। यह धार्य बहुत
नामान है। पुत्र को उसने घर जाने की
प्राज्ञा दे दी। बाबर ने पीठ फेरी और
निर्भीकतापूर्वक दरबार के चला गया।
घर लौटकर साहू की ने पुत्र को
पुत्रता के लिए बहुत सौदा देत पुत्र ने
उत्तर दिया—पिता की। आप मुझे बहा
क्यों ल गये थे। आप तो आरने हो कि
मेरा मसल मुज्जा मन्त्रात्मक की आप को
छोड़कर और किसी के शायने मुक नहीं
सकता। साहू की मुद्र हो गये।

इस घटना के बाद वं 'पिछे की
एक घटना है। उस समय विचार की की पीठ
बलमन्त्रात्मक बर्ष की थी। एक दिन
विचार की बीजापुर के कुछ धारमन्त्रात्मक पर पुत्र
रहे थे। उन्होंने देखा की एक कलाई एक

थी वं मुद्रदेव उस को आ रहे
थे। नाम के पास एक मुद्रक हुआ था ने
उत्तर पर धारमन्त्रात्मक। बाव लोग और पीठ
पीठकर मुद्रा 'बहा मुझे क्या पड़ा?'
आप का दीवाना मुद्रदेव बोला, 'बाहे
जान के भार है परन्तु एक बार मुझे मेरे
उन राजपूत भाइयों के पास पना है।'

यह उत्तर मुनकर हुआ का की रानी
ने महाराजा। उत्तरा का बया हुआ रख
गई हो गया। उसे यह विचार धारमन्त्रात्मक
इस हम न इनता प्रम है। यह वं की
के पास गया। और उन्हें पास न गया। यह
पुत्र हुआ। उसे यह विचार नाम दिया
गया।

वही धारमन्त्रात्मक मन्दिर बना। मन्दिर
राजपूत आस बन गया। धारमन्त्रात्मक मन्दिर
की नीम उसी इतिहास ने रखी। मुद्रक वं
बहापूर की जिनापुर इस बलमन्त्रात्मक पर बहा
पक्षों। इतिहास मुद्र मुद्र कर रोया कि
इन हाथों ने उत्तर वं मुद्रदेव की की
मुद्राई विचार की थी। वं बहापूर की
जिनापुर और भी वं 'हिरण्य की (धर्म
प्रतिष्ठित बना हैवनी में है। इसे कहा
कि वेरा धारमन्त्रात्मक हो गया। इनकी भावनी
ने धारमन्त्रात्मक के मन्दिर की नीम
रखा है। इतिहास के कुछ का एक
अन्तिम धारमन्त्रात्मक के पुत्र का नाम
कर धार्य बर्ष का लक्ष्मीराम रहा।

धारमन्त्रात्मक राजपूतों के धारमन्त्रात्मकों
ने बहा प्रतिष्ठित परिवार माना जाता
है। यह घटना हैवनी की वं 'हिरण्य की ने
मुद्राई। □

आप की रक्षी से बाधे विचार था रहा है।
आप धारमन्त्रात्मक नहीं। बाहरी, कर्नाली
है और इतर-उत्तर कावने नेवो से बेवसी है।
कलाई उसे अपने से बाव बाव पीठ
रहा है। इतर उच्छ्वास राजपूतों को किन्तु
है। वे मसल मुद्राएँ यह बेल रहते हैं।
उसने इनका साहस किने कि मुद्रक रहते हैं।
मुद्रकमन्त्रात्मक धारमन्त्रात्मक ने रक्षक के कुछ लोगों
तो पता नहीं क्या हो। लेकिन लोगों की
किन्तु धारमन्त्रात्मक ने खुनी की खुनी रहते हैं।
नामक विचार की की लक्ष्मीराम नाम ने
निष्कर्ष कर धारमन्त्रात्मक व मुद्रक कलाई के
पास मुद्रों की और धारमन्त्रात्मक की रक्षी उन्होंने
काट दी। धारमन्त्रात्मक की एक और।
कलाई मुद्रक बोले—इसने पहले उसका विचार
बर्ष के कर्नालीराम मुद्र पर मुद्रक कर गया।

साधारणदरबार में पना। नामात्मक ने
कोय के साथ होकर कहा—उम्मात्रा
पुत्र बहा उत्तरपीठ आन पछा है साहू की।
पुत्र उसे बीजापुर के बाहर बही नेत्र हो।

साहू की ने प्राज्ञा लीक कर गया।
विचार की अपनी प्राज्ञा के पास भेज दिने
बने, लेकिन धारमन्त्रात्मक एक दिन वह भी
धारमन्त्रात्मक की बीजापुर-मन्त्रात्मक ने स्वयम्
हिन्दू धारमन्त्रात्मक ने ने विचार की की धारमन्त्रात्मक
राम्य ने धर्ममन्त्रात्मक विचार और जब
विचार की हाथों पर बाबर होकर बीजापुर
के मार्गों से होते हुए दरबार में पहुँचे,
तब तबाने पक्ष धारमन्त्रात्मक उनका स्वागत
किया और उनके सामने मसल मुद्राया।

व्यामपीठ -

उपनिषत् कथा माला - ८

महत्त्व की प्राप्ति

प्रवचनकर्ता—बीतराग स्वामी सर्वदानन्त महाराज

—पनिषदों का मन-मो परम तत्वा का मनुष्य न अनुभव किया गया है और यह सब बताया है कि सब लोग उसी की उपलब्धि कर सकें परन्तु फिर भी प्राण्य क्या नहीं होता?

महन् का ध्यान है बड़ाई सब से बड़ा शक्ति। सब से एक जैव है जैसे यहाँ एक पत्ता साठ मनुष्य हैं—। उनमें एक एकलव्य ही है। इस कहते हैं कि यह सब से अधिक बलवान् है। परन्तु यदि पञ्च म आर्यो मिलकर उसमें सब तो यह उन पञ्चाशों के सामने निबल हो जाएगा। परम तत्वा को सब से बड़ा इस लिए बन गया है कि वह मनुष्य को सब सम्पत्ति मिलकर ही उसका सामना करे ता म यह सब से बड़ा ही रहेगा। यह सारे ब्रह्माण्ड की बड़ाई है। सारी सृष्टि की मिल जाय सब भी यह कहते बड़ाई है। उस में कोई बड़ा नहीं हो सकता।

मनुष्य में यह महान् बल क्या है? जब ४८ उम्र महान् की पुत्रा है। मनुष्य यदि छोटे से बड़ा बनना चाहता है तो उसकी सरल गता है जो—सबसे बड़ा ही। यही सत्ता में सत्योत्तर होता है। दुर्लभ सबकी प्रदने के लिए किसी म स्तर की धारण नहीं प नी। छूटे पहलवान को ब— पहलवान के पास जाना होता। शिक्षा म साथ म प्रमदा माग होतो कोई भी नहीं। पति मुन ज म और मरुण के ब धन में—पना चाहते हो तो मर्ने उस परनेस्वर की उप मना करनी होनी जो म्बर ज्ञान और मरुण के म्बरन से परे है।

सत्ता के पर्यायों को देखो कोई छोटा है कोई बड़ा। जब प्राण छोटे-छोटे होतो को देखते हैं तो उनकी परेक्षा परे बनतु बड़ दिखाई देते हैं। जानवरी के कुछ बड़ हैं कुनो से पलत परतो में हिमा सब, हिमासब के मुनि। कुनो को देखा तो हुनै उस से बड़ा दिखाई दिया। सूरज को देखा तो सूर्य प्रकाश पर बई हुनै से प्रकाश बड़ा है। प्रकाश में प्रहलित देखा है जो सब से ध्याय है। प्रहलित से बड़ा—परनेस्वर। इसीलिए योगी गुरु बिन होकर प्रकाश में उसी महान् से महान् परम र की पुत्रा करते हैं।

धृति साधकत्व में धरणी रत्नी मैत्री से कहा कि मैं—सत्ता पर स सब म को देखे मया ह तुम्हारे लिए सब परम विद्यमान है जो बाहे ल लो। सब

मैत्री को पूछते सगी— प्राण सत्ता को छोड़ते है क्या प्राण यह ता सकते हैं कि इस सत्ता को छोड़कर कहीं जायेंगे? बता वे प्राण इस बात को, इस धर को, इस परिवार को सब छोड़ते हैं। उन्होंने उत्तर दिया समुद्र प्राणि के लिए मैत्री की कोनी प्राण मनुष्य प्राणि के लिए इन बन्धनों को छोड़ जाते हैं फिर मुझे इन बन्धनों में बंधो कसते हैं? प्राण यदि मुझे सब कुछ दे जाये तो क्या मैं उस पर को प्राण हो जाऊँगी? उन्होंने कहा जैना की पुत्रो को जीवन का सुख होता है उसी प्रकार तुम भी हो सकती है पर ध धन से उस धन पर की प्राप्ति नहीं होनी। मैत्री की कोनी तो मुझे इस धन की आवश्यकता म नहीं।

मादवी की त्याग से ही समुद्र बर प्राण होता है उड़ता बने न नहीं बिलता। जो सत्ता त्यागी होता है उसी सब कुछ छोड़ कर समाधि में बैठता है। एकचित होकर उस परमात्मा का ध्यान करता है। फिर जब वह उठता है तो उसकी सत्ता का किसी रूप में म अनुभव किया है—

समाधि से उठकर यह उसी पुकार, परमात्मा में देखा है सत्ता सारा। परमात्मा में सत्ता सारा समया है पूना उबर ही बिबर की पुन्याः॥

—ये महत्त्व सब प्राण्य मर्ने के क्षिप्र से समाप्त दिखाई देते हैं।

सत्ता में छोटी को सुख देख र ही बड़ समने है। एक धारणी गुरु है। धर के पर लोभ उभका मान करने हैं बर्षीक यह बाजार में उनके लिए सोचें साता है। पहले बन्धो को बिभाता है फिर प्राण प्राण है। यदि कोई बड़ा बड़ा ब हर प्राण ही का धार्ये बन्धो के लिए न लाये या बन्धो को न से प्राी उनके सामने बैठकर प्राण ही का न ले तो सेवा उभका मान होता।

प्रनु ने तो हुनै इतना कुछ सुन और धान र दिया परन्तु हम हैं जो उसका ध्यान भी नहीं करते। सोचो तो सही किस मेरी प्राणो में मोक्ष सा क्य का जाये तो मैं बाजार से एक लेकर लयाता है। यदि वह दुष्ट जाये तो दुष्टरी से है। परन्तु सब मनुष्यों के एक जैसे नेत्र है इन्हें किस ले बनाया? यह तो सब प्रनु की ही कृपा का फल है। बिबर भी प्राण बेलें उस प्रनु की ही क्या दिखाई देती है। सपस

सत्ता में उसी का प्रबन्ध है।

समिक जिज्ञा की देखो। एक तो यह रस को अनुभव करती है। दूसरा काम इसका इतने की मारी है। जब प्राण कुछ जीवन करते हैं तो उसमें जो पर्याय दलने और कुछलने कीय होता है उसे वह जिज्ञा सम्य करती है और सारो में पहुँचाती है। सन्ध भी मही है। यद्यपि प्राण धर पर से निकलता है परन्तु जिज्ञा ही प्राण की नियम पुनक विकासकर सन्ध का रूप देती है। हारनीनियम को ही लो। उसके परों की हवा देख र बराबो, उसमें स वा का सन्ध निबनया। इस सन्ध को तुम्हारी उसमें ले ही बनाया है। जिज्ञा में समिक सा विकास का जाये तो सारा ही काम रक जाये।

ये प्राण भी परमात्मा में विद्ये हैं। इन प्राणों से किसने काम होते हैं। सक्की नीरने से लिए प्राण से कुम्हारों लेते हैं। गहरी से सत्ते गगने के लिए प्राण और सक्की प्राण करने के लिए रखा उसमें खेर करने के लिए करता। कुम्हार के प्राण मिलकर मही हवा कुम्हारा बन जाते हैं और प्राणे के प्राण मिलकर धारा, रदे से मिलकर रदे का काम देते हैं और बरने से मिलकर बरने का। प्रनु ने हुनै एक जीवार दिया है कुम्हारे बनाये हुनै जीवार तो कर्न जाते हैं परन्तु वह नहीं बरना जाता। प्रनु की महीना तो वातावात में दिखाई देती है। इसीलिए उपनिषदों में कहा है कि उस प्रनु की पूजा करने म ही महता प्राण होती है।

सत्ता कीये मार्ग रन मनो स्वयमेव नियम हो बाकोने। परन्तु प्राणने तो परमात्मा से कुछ मोकर वुनो नदियो पुनिमा प्राणि को पूना शारम्भ कर दिया है। इनकी पुत्रा से तुम्हारा सुख रित्त बढता हो गया है और बढता ही जाया है।

बहो बलवान होये सहा निबल की प्रबन्ध होये। सत्ता में सब एक ही जैसे बलवान धनया मयान् की हो सकते हैं परन्तु यह कर्षा रहीं होना चाहिए कि जिस को क्षीय का स्या। दुःख सम्य उने ही मरने लये। जब बर्षो के बिबर छोटे हो जाते हैं तो वह छोटी को मरने लो बहो सत्ता बलवानों में धनया वुनो परमात्मा प्राणे के सामने भी सन प्रनुने समने हैं। यह सत्ता बर्षो हैं? मेरे माई। यह सब परनेस्वर की पुन्या का फल है। इसी से

यह दुर्लभा हुनै है।

देको। पुत्र का धार्ये पिता के लिए स्या कर्तव्य है। धरने पिता का सम्यन करना। पिता की प्राणा से उसका पालन करता। जीवन बने तो पहले पिता को खिलाए, पीछे से प्राण काए। प्राणकल तो बनी पुत्रो के मोकर ही सब कुछ है। न पुत्र ही की प्राण सत्ता है और न माता पिता ही को, कि किन्तु मोक्ष किवा है और किन्तु नहीं? मैने एक सुक को देखा। यह भी ९० प्राण था दुका करता था एक बार उसका पिता उसके प्राण काया, उसने जम मगा। सक्का कुछ निबल रहा था तुम्ह उठा सब काम छोडकर मर ले प्राणी सत्ता और पिता की को खिलाये। रात को मर जाकर पिता के बरुण बोये, उनमें जीवन प्राणा। मैने कहा नीकर ही है उनसे काम बर्षो मही। बरानते १ यह मोक्ष, नीकर प्राणी तो धरव्य का होने परन्तु पिता की के बन्धो को मोकर ही बालम्ब मुने होता है उसे मैं ही जानता हूँ। ह प्राणम्ब मुने नीकरो से काम कर के कीये प्राण होता है पिता की की प्राणा पालन करना मेरा कर्तव्य है। उनकी प्राणा पालन करने में ही मेरा कर्तव्य है।

एक दूसरा सुक था। उसने माता से रक्खी थी। पिता पिता का नाम रखा रहता था। जब पिता ने मनी मना तो कह दिया कि 'बड़े मे का हुवा है पी लो।' यह कहिये पिता की प्राणा का पालन नहीं करता था। पिता का नाम तो पञ्जरा का पञ्जरा पिता की सत्ता कोई भी नहीं मानता था। मादवी। पिता की प्रस मत्ता उसी पर होती है जो उसकी प्राणा का पालन करता है। इसी प्रकार परमात्मा भी उसी पर प्रबन्ध होता है जो उसकी प्राणा का पालन करता है। परन्तु एना सब के सक्को को सब की प्राण, मादो को जानता है, परन्तु किसी को कुछ करता नहीं। यदि कताता भी है तो उस सम्य बड़ा वह कोई हवा का काम समता है मैने मैं तुम्हारे से से मिलना पाहता हूँ। तुमने समिक दुष्टो को देखा और मैने प्राण बडाया। परमात्मा ने तुम्हें तो सत्ते नहीं किया। उसने मेरे मन में कहा, कि ऐसा मत कर यह काम दरा है। यह मेरे माई। मैने कर दक्षिणे मे माल। यह सब से उत्तम निबन है। धरता स्वयन ऐसा बात को कि तुम परमात्मा की धाराय सुनकर उसका अनुकरण कर सको। ऐसा मही। सत्ता में जो किसी के दुर्गुण बिभाता है, यह बरना है और जो किसी के दुर्गुण प्रकट करता है यह दुष्ट है। धरगुण रहित तो सत्ता में कोई भी नहीं। यदि तुम किसी का सुनार करना चाहते हो तो उ—एकाल से मयकाही। उसके मयगुणो का विडोरा न पीतो।

पुत्री की लिए दूध महारा है, परन्तु सत्य को किसका बहारा है। उन परमात्म का, जिसने उसे बनाया है। इसी से

दिखते दिने बाय की ध्यानी मे एक तुफान उठा जा जो बीमाघ से कुछ बँट गया है। यह तुफान वा कलकत्ता हाईकोर्ट ने कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की याचिका के सम्बन्ध मे। बम्बईर पाटी जहाँ मुसलमान अधिक है और बनला बेग जो अब इस्लामी देश बन चुका है, में इस तुफान मे हिंसक रूप की बाण फिरो करई लोग मारे भी गए।

इस्लाम और प्रतिबन्ध का गहरा सम्बन्ध है। सदार के लगभग सभी इस्लामी देशो मे मुक्ति युवा पर, मन्दिर बनान पर, पुरान मन्दिर को मरमत्त पर और खुले रूप मे कबा-कोठम करण पर प्रतिबन्ध है। बहुत से इस्लामी देशो मे बाह सत्कार पर भी प्रतिबन्ध है। इनमे अफ्रिक एस देश है। जिनम माता, उपनिषद् धार्मिक पुस्तक ज्ञान पर भी प्रतिबन्ध है। तुर्की और इरान मे माता और उपनिषद् पर भी प्रतिबन्ध लगाया था। दास को विचारन कायेकी जिसमे हुबलत मुहम्मद और हुबलत मसीहा का गरम म रोला हुमा फिर्काया गया है, पर वा सभी इस्लामी देशो मे प्रतिबन्ध है।

काश्मिर और अजिगर का ह्रास म प्रकाशित पुस्तक 'फोबम एड इन्फान्ट' जिसम विमलह के सुभर का मास जाने का उल्लेख है, पर पाकिस्तान मे प्रतिबन्ध है। जैसी की बात यह है कि हिन्दुस्तान जैसे बर्धनिरपक्ष राज्य मे भी मुसलमानो के इबाके के कारण जो ९० औष की प्रमरीका म प्रकाशित पुस्तक 'कुरान एम ड कापीर', धा विधानसभा गायक की विलो से प्रकाशित पुस्तक काय बाबा का म कुरान पडा होला। और डा रमेल प्राय की पुस्तिका 'मैने इस्लाम क्यों छाडा' पर प्रतिबन्ध लगा हुमा है। जिस मजहब क अनुयायी प्रतिबन्ध के इतन संशयी है, वह कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी याचिका स तत्तन उठिन हो गय, वह प्राधन्य की बात है।

याचिका की कहानी भी बड़ी राबक है। जो सी० एम० पोषडा नामक एक सज्जन को कई कर्मों क कानूनी सहायक हूँ, मे अग्रेल १९८५ म कलकत्ता हाईकोर्ट मे एक याचिका पेश की जिसमे माग की गई थी कि धरती मे लिखे कुरान और उसके अनुवाद १२ प्रासबन लगाया जाय मसीहक उसमे - हुस भी एसी बातें लिखी हुई हैं कि भारतीय सविधान की धारा १५३ ए का सभ्य उल्लंघन करती है और मौर मुसलमानो के प्रति विभेद और हिंसा का प्रतिपादन करती है। याचिका मे कुरान के ऐसे सभी उल्लेख भी लिखे गये हैं। न्यायमूर्ति श्रीमती पद्मा लाल-गीर ने इसे विचारार्थ स्वीकार कर लिखा और पवित्रकी न्यास की सरकार को प्रोहित किया कि वे इस सभ्य के समुप

'कुरान' कानून और प्रतिबन्ध

डा० रामप्रसाद मिश्र

एम० ए०, पी० एम० डी०, पी० डिग्री

अनेक पुस्तको से लेलक डा० रामप्रसाद मिश्र सप्रति डा० ए० पी० कोलेज मे हिन्दी के विभागाध्यक्ष है। दिल्ली विश्वविद्यालय मे स्नातकोत्तर कक्षाओं की पढाते हैं। देश के प्राय सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं मे प्राय के लेख छपते हैं। समस्याओं के गहन अध्ययन और विश्लेषण के लिए रचित डा० मिश्र ने इस लेख मे कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी याचिका पर देश भर मे चली गइस के सम्बन्ध मे एक विचारपरक चिन्तन प्रस्तुत किया है। —संपादक।

पत्र छोड़ें और याचिका पर विचार करने के लिए २७ मई की तिथि तय कर दी।

इस चीज मुसलमानी की ओर सबको के विरोध के कारण यह याचिका किता धन्य जन को देने की बात कही गई। मुख्य-याचारी ने इस न्यायमूर्ति बासक का हैरिया न्यायमूर्ति बासक ने मुसलमानों की तिथि २७ मई के इबात पर २९ मई कर दी। भी पोषडा को इस बयन का गुपना १२ सारास रात की बी राती को ने १५ मई को बयासल मे पेश हुए और उन्होंने याचिका के पत्र मे बका तक चलत और तथ्यपूर्ण सम्बन्ध दिया। न्यायमूर्ति बासक ने उनके लिखी सभी का बहन दिया बिना केबल यह कहकर याचिका रद्द कर दी कि कुरान एक पवित्र पुस्तक है इसलिए वह कानून और न्याय-पालिका का पाराम म नहीं बाता। समा-चार पत्रा म छोटी रिपोर्ट क अनुसार कदाय लिखि मना की ९० के नेन और बटापी जनरल भी उस दिन कलकत्ता म म भार सम्बन्ध कृष्ण के कइने पर पहले लिखि बबती गई और याचिका को उसके मुन-सीधे पर विचार किने बिना रद्द कर दिया गया।

इस प्रकार सचार्थी की परल किये विना उसे बहा दिया गया। भारत मे सब को इस प्रकार दबाया जाना जिसका लेख सम्बन्ध सत्यमे बबते है, हर हरि-के नियमन है।

परन्तु इस याचिका के पेश होने से एक भास बनल हुमा है। बहुत से लोगों को कइनी बार पता लगा कि कुरान मे कुछ ऐसी बातें लिखी हैं जो कानून और गणतन्त्र का समत नहीं है। इस्लाम के प्रबन्धों की कबाय मे पत्र गये हैं। वे याचिका के उठाई गई बातों का म बहन कर गये हैं। परन्तु म गायक कर सकते हैं। भारत के धारकमिन्न प्रगतिशील और बर्धनिरपक्ष लेखकों और बुद्धिजीवियों की भी इच्छा बाकी ऐसी हुई है। उनमे से बहुतो ने कुरान को पडा नहीं है, इसलिए वे कइनों के आधार पर तो इस याचिका का विरोध कर नहीं सकते हैं। परन्तु उन्होंने इस

याचिका के विरोध मे लिखकर जिस मनोमुक्ति का परिचय दिया है, वह न प्रगतिवाद की परिचायक है और न सेकुलरिज्म की।

सकार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस्लाम और कुरान के नाम पर गत १४०० वर्षों मे बहुत मारकाट हुई

निर्वाचन

धर्मसन्देश पवित्र विचार नहीं चिली ५१ का बर्ष १९८२-८३ के लिए निर्वाचन इस प्रकार हुमा है—

प्रधान श्री पी० एम० पोषडा
उपप्रधान श्री राजबरेल मिश्र
उपप्रधान श्रीमती पद्मा लाल-गीर
मन्त्री बम्बईर लालजी
उपमन्त्री श्री राजबरेल मिश्र
प्रचारमन्त्री श्री रामचन्द्र लालजी
सम्बन्धमन्त्री श्री मनोहरलाल बदाय
कोषाध्यक्ष श्री हरिचन्द्र बरवर
धर्म्य, पुस्तकालय
व मण्डार श्री बोधभूषकास देविया
महोदय बम्बईर लालजी, मन्त्री

धर्मसन्देश कोलकत्ता का याचिक मुद्रण दिनांक १९ मई ८३ को समाप्त हुमा। और सर्वसम्पत्ति मे निम्नलिखित परिचायकरी चुने गये।

प्रधान—श्री शिवप्रसाद बल
उपप्रधान—श्री सुशील कुमारी याचिका की हेमशक्ति की

(पृष्ठ ७ का पत्र)

कुकरा है वह जो जाना है, प्रतिबन्ध है। वास्तविक पदार्थ नहीं। वास्तविक पदार्थ ही ऊपर बूझ पर है उल्लेख है।

इसी प्रकार सेवकम गुरुपूत्र नून मे फलकर परमात्मा प्राणिक के उल्लेख बाकतो का प्रयोग करता है और उसको नहीं पाता, परन्तु ज्ञानी एक ही बल मे अपना काम बना लेता है।

मुस को सब बात मुस फिर कही हुयी रही। मुस के मुस के कइने की बात को हुयी रही।

बल वा मुस के मुस

है। हिन्दुस्तान को भी यह हुआ बर्षों से हलका कटु अनुभव है। वास्तविकता है कि हिन्दुस्तान के लेखक और विचारक इस मारकाट को भेरा देने वाले मुस कात्थी को सम्बन्ध के लिए खुले विचार के कुरान का सम्बन्ध करे और स्वाह को स्वाह कहने को हिम्मत करे। हिन्दु-स्तान और हिन्दुओं की परम्परा विचार-सतन्त्रता की परम्परा है। बाहू हारकाट की मुका, विचार और मरमिन्ता की पूरी छूट रही है और है। हिन्दु विचारों का विश्वास रहा है कि सब बिना सहका। इसलिए उन्होंने हर विषय पर खुल विचार के विचार और खुसी बहुत का प्रतिपादन किया है। इस सभ्य के कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की माग हिन्दू परम्परा के प्रतिकूल है। परन्तु कुरान मे क्या लिखा गया है और इन्से कोन की बातें कानून और गणतन्त्र विरुद्ध हैं, उनको जानना और उसके सम्बन्ध मे बहती जिनको को पेश करना एक स्वयं लोकसाक्षिक परम्परा है।

ने १८५, सकार रोर
मई लिखी-१९०५

मन्त्री—श्री मेनकावरणी मुस
उपमन्त्री—श्री माताप्रसाद की धार्म
श्री नारायणलाल को मिलल
कोषाध्यक्ष—श्री नृपति राय
पुस्तकालय—श्री कीर्तिलाल शिवप्रसाद मुस प्रधान

शोक-प्रस्ताव

दिल्ली धार्म प्रतिष्ठित समा के समस्त परिचारों एवं मन्त्रियों धार्म-समाज भासक बहनों के मन्त्री तथा समा के अन्तर्गत सदस्य भी बमबारी लाल धार्मों की धर्मसत्ता देहावसान पर गहरा दुःख एवं शोक व्यक्त करते हैं तथा न-निता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह विगत प्राणों को धार्मिक प्रदान करे तथा उनके विधियों मे सतन हुकी परि-वार को इस महान् दुःख की सहेरी को सामर्थ्य प्रदान करे।

डा० बर्धनलाल धार्म महामन्त्री

बह सचाराक लिख गया। जिसको धार्मिक से सम्बन्ध था वह मुस को मिल गया।

बरे नाला। वह तो बारिक से बारिक ही पर तु गही बारिक की। जो है बेसारा मुस को सवा मु देसता उसको नहीं।

वह परमात्मा पवित्र मन मे ही था सचाराक है धर्मपवित्र मन मे नहीं। पर-मात्मा-धार्मिक की परमात्मा पास करते से सकार विनवता नहीं, बनता है। इसलिए ईश्वर उपासना से बेसा पर होना इही का सकार की।

अपराधी पर कृपा

(पृष्ठ २ का चेष)

ये मुहम्मद सुरमस
देखिए कैसे जाहि ॥

घासों के मरसम से तन छाया करि कहता है कि मैं इन घासों को सार की नवाहियाँ को समझाकर बहुरेरा रोक्ता हूँ किन्तु मेरा बस नहीं चलता । होता है कि जैसे मुहम्मद पोशा बितना कपाय को सीधे उलने हूँ से अपनी गति को तीव्र क ला बसा जाहा है और सवार को धमक बना वेता है । ठीक यही घटा घासों ने मेरी भी कर दी है ।

इस स्थिति से उबरने का एक ही उपाय है कि मुहम्मद के साथन उस घास को भी सीम दिया जाय । घास न रहने से उस दुःखसम को क्रियात्मक रूप देने का धन्यवर मैं न रहेगा और मन्त्रे समय तक उनकी भाग्यलि न होने के कारण उस दुःखकारी का ही परिणाम ही जायगा । इसका घासों के भगवान ने जो कष्ट उलने प उनसे दण्ड भी मुझा था और परमात्मा प और प्राथमिक के शास्त्रिक कर्मकारों का उपाय भी हुना । मेलाभोक्षा पूरा होने पर प्रत्यक्ष कर्म ने बाँधे किन्तु मैं यही और मैं मुझा जीवन शरण्य हूँ । यन्त्रिय सवुपयोग करेता हो शक्तिमान के धान्य का परिचारी रहूँगा ।

यही है प्रभु की दया कि उसका दण्ड भी मुझसे के कमजोर का कारण बनता है । प्रथम नाम ने तुम्हारी बात कही यही कि यह मुझ यो मुझवाति बहुरेरा विधान पराक्रम करने वाले का भी कल्याण ही करता है ।

इससे घाने मान ने उससे भी महत्व पूर्ण बात कही गयी कि बस बससे बलाया स्वाय मान जीवन के तार के समुद्रको तो स्थिति यही है कि हम परमयोग के दरबार ने गिन्याय और पवित्र रहूँ । यह नाम जीवन होने बिचारपूर्वक अपनी वासनी प्रसन्नियों को निर्गुल करने के लिए ही मिला है । मृगान्तिक पशुता को मनुष्य के साथ लगी ही रहती है पर शिकार द्वारा उसे परिचायित करना ही पर शिकार का सत्य है । किसी उल के मान ने बहुत उत्तम कहा है—

गवाहीर सव ही दण्डा

शिक बातिन की बुला माने ।

कि ही हलान हमने मिलने

और हुमान मिलने हैं ॥

चादी बेदों ने निम्न म न घाता है उसने भी बहुत कायमन डग से इस मनुष्य पूर्ण सद्व्यय की ओर ध्यान बीजा गया है ।

लगाव्याप्तन परिचयस्थि

लगाव्याप्तन हुता ।

देवा सखन लाना ।

आमलन दुष्य पशुन ॥

अम् १०१०११३

धर्यात एक ऐसा मवन बसका एक ऐसी यमगाथा है जिसकी सात परिधिवा पारकीवारी (Boundary walls) हैं और उनमें सीत स्वामी पर सात सात समिपाए रहती हैं । प्रभु ने इस यम का विस्तार करने के लिए जीवकपी पशु को इससे बना है । कल्प चलकार के माध्यम से यह मानव शरीर और उससे भी बसाता है घासों के उल्लव का बलान है । समस्त कल्याण ने सात परकाटेवासी यमगाथा का बलान कही गयी है । चार बाह्य और इतने भी धार्मिक स्वामीवासी यमगाथा का विधान तो है किन्तु सात परिधिवासी का नहीं । यह सात परिधि की यमगाथा मानव शरीर ही है । धातु र्देव के कर्मकाण्डबहुवचन ने मानवदेव की स्वामी की सात परकी विचार हैं— सत्य लको मरति ने ही सात पारकीवारिया हैं । सीत बाजोय पर सात सात समिपाओ का विधान किसी यम नही है । य सीत स्वागो पर सात सात समिपाए सात बाणुर रस रक्त स्वादा सात हैं । ये २१ समिपाए प्रदीप्त होकर इस यम को बसाती हैं । बर्षान् इन समिपाओ से ही यह यम विधानोत्पन्न रहता है । इस यम का सत्य यह है कि इस मानव शरीर म्दी सहायता ने बँधा हुआ जीवकपी पशु पशुन की भाग्यलि दे दे । धर्यात विवेकपूर्वक म न करने काय कोबाधि पर विचार प्राप्त करें । विवेक रहित मानव और मन्त्रे को पशु मान से बेद ने धर्म हित दिया गया है । ब्रह्मचर्यव्रतमुत्र प्रभु ने विधानन के यह पशुता दृष्टी है और इसी का एक नाम पशुमान भी है । इस मानव जीवन की सफलता आज पूर्ण बर्षावरण में है । धर्यात विचारों के बचन बहुत बहिन हैं किन्तु विचार में रहनी बड़ी साधित है कि कुछ मार्ग पर भी उसके सहारे चलना प्राप्त की जा सकती है । बिचार मृगगाथावारी ने इस सत्यन्य से बह पते की बात कही है ।

हमको ही हर धरा ने

जातु विम सवके मगर ।

होय मुझ सामन बकाकर

ही मुझर माने मे है ॥

धर्यात सत्कार के विचारों में मानने की बहुत बड़ी साधित है । विषय सख सत्कर्म व्याकरण की विषय बन्धने बाणु से बना है । निष्कल सत्य से पूर्व विवेकाय बाधक विषय और उल्ला हुआ है । इस प्रकार विषय साव का सय हुना विविधे उल्लव को बहुत कमता हो । किन्तु विवेक और विचार ने भी यह समझा है कि उससे समन वह विषय की सीधे म्द सात से कल्पे घाने के समान पुन्य है । विवेकी महापुरुषों ने काम कोय सीम सीधे मर शरीर मात्सर्ग को तुम तुल्य सा ही अनारक माय न सीध मरी इकर संक दिया और हदना से गन्धय पय पर बदनवासे पते पते ।

यस मनुष्यता की सार्थकता निष्पाप

बीजन बीजे ने है ।

मान के उत्तराध ने गिन्याय जीवन ने बसाने और इस रहने के लिए उपाय बताया गया है कि धारमोत्थान के इसी पर बसाने वाले तपस्वी विद्वानों के जीवन व्यवहार को श्रेष्ठकर उनम प्रस्था तो कि इस दुनिया के निष्कलमान मान पर ने धर्याते वेदों को कौसे टिका पाय ? एक विज्ञानवादी के लिए इस प्रकार के पय प्रदत्त का गिनता बहुत हासहारा है । विज्ञा की समाधि पर धाधय सपने स्वातन्त्र्य को धर्मिय बात गठ बाधकर ने जाने के लिए यही कहता है—

यस यदि ते म विधिक्रिस्ता वा बुलविधिक्रिस्ता वा स्वाय ते तन काह्मण्यं बर्षानिमे मुनता समुत्पन्ना बर्षमाणा म्दु म्प्रा ते तन वातरु तथा तन वर्येता । (सर्विष समावतन)

यदि सत्कार ने तुम विधी कलम और प्रकलन्य के विषय में सत्य उल्लव हो तो तो विचार तन धनुमान सहृदय और सन्धर्षन विद्वान् हो । उनसे विचार विषयय करने कम को धर्मिय का निष्पय करी और उस प्रकार की परि स्थिति और कानो ने मे बँधा पावरन करते हो मैंता हा करते बने कानो । बड़ी बर्षाचर्य है यह धर्यात मान ने निश्चय रहती । बर्षाचर्य होने के साथ यदि इस प्रकार का सगन्धारी व्यस्त विज्ञानवादी हो तो कहना हो क्या है ? यही तो साधार बान् बर्षाचर्य के परावस को भी नीति काने ने महत्वपूर्ण माना है ।

प्रबुद्धबल पुनो विषय

पाक प्रभावसे ।

कीर्तुल्लव चरममर्तो

आमोय उपजावसे ॥

परिचर्य घात के मनुष्य की उदि भी धनेक प्रकार के और सत्य धनुप्रको के कारण वक पावती है—विषय प्रकार पुरान कलन्य के बह से सुम उल्लव हो जाती है । इससे साव ही मान ने एक महत्व पूर्ण परामर्श उस बुद्धों को भी दिया कि म्द सात स्वर्गीय सता न । बुद्धों का भी यह पवित्र सत्य है कि ने पुनी साधित से पवित्र मान पर बसाने के लिए बुद्धों की प्रतिक करते रहें । समान की इससे उत्तम कोई सुझाव देता गेही है और प्रशारणर से धार्मिक मन्त्र उल्लव के लिए इससे धार्मिक शाराचना भी सुझी गयी है । इस विषय ने किसी उल सावर ने किनना उत्तम कहा है—

काम वा करने बुद्धा के

कि मुद्रा के मजबूती ।

दम्भे म्दवैर न हूँ है

न इबावत होपी ॥

साव सीम ईश्वरपरमि का सय केवक अपना कल्याण और गति सय भते हैं । किन्तु तन्त्रदर्शी साध्याधिक अर्यान के साव साव विद्वसे साधित मिले

उसी माय को श्रेष्ठ मानने हैं । धृष्टि दया मन्त्र से एक महत्त्व ने जय यह कहा कि दयाव द तुम क्या समाज सुधार के पय— ने पक गये यदि तुम धर्मिय मान ने धारमोत्थान ने मानते ता म्दा मन्त्र में सुशरीर मुक्ति हो वी । इस प्रजन का धृष्टि म्प्राप्त्य ने जो उत्तर दिया यह कहता गेही ने मिलने योग्य है । धृष्टि ने महा म्द्वान् । पयन के तम म भिरे वेसाव मियो ३१ उपजा । करने में धर्याते धनेके की मुक्ति नहीं चाहता । इन दीन-दिसि को बर्षा निवारण करते करते नेगी मुक्ति भी स्वत हो जाएगी ।

मान समाज के वृद्ध मनुष्या ने यह भावना जग बाय तो देस की कायापल्लव हो जाए । हमारे पर स्वय बने जाय ।

काने निवृत्त पशु और बुद्धा मर ने म्दवैर रहेय । समयमत्को ने वैठकर राजनीतिक लीकरी की धारोपना करते रहेंगे । मनोबन्धन के लिए मान सत्कर और नीचवैर सेतने बहुत और साथ साथ चार मन्त्रों का पात करने हमसे उल्लव शास्त्रिपाठ का म न कोस दम और सपने बलन की इतिहास समक म्द । यदि वे काय मन्त्रो सहने ब्राह्मण समाज ने लीता हुई बुद्धाओं को बुर करने के लिए मन्त्रो और बुद्धों को बारांलाय ने सवविचार में तो देग का उदाहरण न्वे । धाव एक दूरे के विद्वे हुए पशु को बसकर एक दूरे की गते हैं । कि त ने गेही सीधे कि बर्षे सता और वेस की सपन्नित है । इनके सम्पन्न होने से वेत बुद्धम होकर पतनीमुक्त होता है । इसके परिचर्य विषय बुद्ध धनेके रिचारावातो के लिए उल्लव हासिद गेही हैं विद्वेने कि सुतरी के लिए पत सार वन निकता कि मनुष्य एक साध्याधिक प्राणी है । समाज ने होने वाले सवमन दुःख के परिचाम भी सुल और बुद्ध के रूप ने उसे धर्यात सहने पड़ेगे ।

बसत पशु मैं सिल

रहता है म्द सत ।

उसे दुनिया का

यन माना वर्येता ॥

सन्धिप शास्त्रिपाठ का मन्त्र इस तन को समझता है कि मन्त्र । विषय शास्त्र को तुम मान रहा है यह तन मिलेगी सब बुद्धों के प्रत्यक्ष तक बान् सप और कण कण ने बह सता बावनेगी ।



समाचार-सन्देश

ला० रामगोपाल शाल्वाले द्वारा आर्यवीर दल प्रशिक्षण व्यायामशाला का शिलान्यास

गुरुकुल अम्बर मे १३.६.८५ के बस रहे धार्यवीरदल के बीडावल नमा रोह मे भ ग नने के लिए सार्वेदेविक धार्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शाल्वाले व उनके मन्त्री जी भोमप्रकाश जी (व्यागी ने धार्यवीरों के व्यायाम लाठी बलाना, सलम-सलम बलाने के प्रशिक्षण की बड़ ही संप्रपुत्रक इन से बेसा तथा उसे बेलकर ने अत्यन्त प्रसन्न हुए और कहोने यह कौशल किया कि धार्यवीर दल का मुख्य केन्द्र गुरुकुल अम्बर मे ही होना चाहिए । इसी कार्य की दृष्टि हेतु सार्वेदेविक धार्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान जी ला० रामगोपाल जी शाल्वाले तथा इसके मन्त्री व

धार्यवीर दल के सहायक जी भोमप्रकाश जी स्वामी एक धार्यविचार इत हस्ताधि नेभायो ने यह फैसला किया कि धार्य बीरों के नियमपूर्वक प्रशिक्षणार्थ व्यायामशाला का होना अनिवार्य है । प्रत्यन्त विचार विमर्श के पश्चात् इन विद्वानों ने फैसला किया कि धार्यवीर दल प्रधिसए व्यायामशाला की स्थापना यहा गुरुकुल अम्बर मे ही की जाए तथा इसके पीछे निर्माण की कामना करते हुए ला० रामगोपाल जी एक ही योगप्रकाश की ने इस व्यायामशाला का शिलान्यास किया ।

केदारसिंह धार्य
धर्मसन्देश
धार्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डर्वन (दक्षिण अफ्रीका) संवेधी सूचनाएँ

वेद निमेलन डर्वन के प्रधान प० गरीब, विद्यालकार ने दक्षिण अफ्रीका में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय धार्य महासम्मेलन के सम्बन्ध मे निम्न सूचनाएँ हमें प्रकाशनाएँ मेनी हैं । सप्रकाश वहा पहुँचने वाले सखीको है लगभग ३० दिव की बसाय २० दिव ठहरने की अनुमति आरक्ष करका की देने की विद्या मे सार्वेदेविक धार्य प्रतिनिधि मना कायबाहो करगे । वीस विश्व ज्ञान बाको की पाठोपनी मे सामान्य दक्षिण अफ्रीका ज्ञान की अनुमति मही हा जातो । फिर की सरकाय ने पर अम्बरहा रूखा हैं ।

२— बीडा क प्राना पत्र का कार्य ठीक सत्र म अरन पर, उनने क जना मुसार िगय कठिन ई की मजबाना मही है । (धार्यक पत्र के इन्कुक बीडा पत्र की कार्य इस सत्र मे प्राप्त कर सकते हैं ।) प्रतिनिधि सभाएँ इस सत्र मे अपने सुदल म मा य सूचनाएँ प्रकाशित कर ह ।

३— (१) बीडा कार्य के साथ पासपोट के पहर सत्र पठो की फोटो स्टैट करपी जिसमे पासपोट नम्बर अक्षति की पहचान सार्वेदेविक मभा मे प्रवेश करने का अनुमति प्राप्त हा, वह जेम्ना जखरी है । पासपोट नम्बर की धार्यवचना सही है । हर एक व्यक्ति के दो पाठोशय होने चाहिए जिसके पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट

धराती मे (धरेंजी मे पुरा माय तथा जम्ब गारोवक लिखी हो ।)

(२) ट्रेवल् एजेंट के जॉब करने को पोजर तथा कौशरी के टैटल सर्टिफिकेट बीडा के कार्य के साथ जखरी भेजे जायँ ।

(५) पास पोर्ट मे प्रवेश के वेधो मे लागव धरौका प्रवेश पर नियेध लिखा रहता है । इसको रद्द करवाना धार्यक के लिए ख-री है । प्रवासी के लिए धार्य वन पहुँचने पर पासपोर्ट पोख खरौ की होगी ता उनको धोर से धार्य प्रतिनिधि सभा साठव धरौका इस पीछ की अर सेपी ।

ज्ञात हुआ है कि बम्बई धोर मुकरात से दर्बोरा का एक धम्बा समूह इस धमसर पर बहा पहुँचेगा ।

भारत सरकार ने दक्षिण अफ्रीका मे प्रवेश की अनुमति दिवने मे सहायित निम्नवत को बेसकर की मजबूर की का मुद्राफ है कि साखपोटे के पहले चार पठो की फोटो धार्य एक बीडा पास पत्र भेज देना चाहिए । दक्षिण अफ्रीकी सरकार बीडा कार्य पर यह मानकर स्वीकृति दे देती है कि बहो उपस्थित रहने के साथ साथ भारत सरकार की अनुमति पत्र पोर्ट पर लिख जावेगी ।

(भोमप्रकाश स्वामी)

मन्त्री

प्रधान—मी राबनरत निगोना
मन्त्री—मी सतीश धार्य
कीर्त्तिका—मी ज्ञानचन्द

सतीश धार्य
मन्त्री

धार्यसमाज परिवर्तनपुरी नई दिल्ली का नया निर्वाचन १९८५-८६ को हुआ जिसमे निम्न प्रतिनिधि मुख्य रूप से चुने गए हैं—

आर्यसमाज राजौरी गार्डेन का निर्वाचन

प्रधान—मी हरिबाबू गुप्त
उपप्रधान—सर्वजी गनसल राव बर्मा,
बकाबाबर मध, नागपत्र म
देवराज सेठी

मन्त्री—मी नन्दकिशोर पाटिया
उपमन्त्री—सर्वजी तिलकराज पुरी, कृष्ण
नाथ धार्य व विनीत कुमार
सिवल

कीर्त्तिका—मी केवलकृष्ण कोहली
पुस्तकाध्यक्ष—मी इन्द्रकुमार कपूर
सेवानिरीक्षक—मी मोहननाथ बरवर
सुरेन्द्र हिन्दी

धार्यसमाज (रावलकुल गार्ड) धार्य-
पुरा मन्त्री मन्त्री, दिल्ली का २२ वीं
वाकिकोलस एव साधारण सभा का
वाकिक अधिकार २३ जून १९८५ रवि-
वार को प्रातः १०-० बजे सम्पन्न हुआ ।

विद्यते नवीन सत्र के लिए निम्न पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ ।

सर्वजी सखीवीर	प्रधान
॥ राबिनप्रसाद	उपप्रधान
॥ भोमप्रकाश बर्मा	॥ ॥
॥ मुखोलमरास	॥ ॥
॥ रणवीरसिंह	मन्त्री
॥ स्वामिबहादुर सेठी	उपमन्त्री
कीर्त्तिका व राजकुमार	उपमन्त्री
मी गुप्तराज	कीर्त्तिका
॥ कीर्त्तिका	पुस्तकाध्यक्ष
॥ भोमप्रकाश वर्मा	सेवानिरीक्षक
प्रधान	

धार्यसमाज धार्यपुरा
मन्त्री सखी, दिल्ली-७७

धार्यसमाज बाजार सीढाराम
दिल्ली के वाकिक साधारण अधिकारों मे

निम्नलिखित पदाधिकारी व धन्यतर
हदस सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए—

प्रधान—मी राबाराजी की साखी
उपप्रधान—मी सुरेन्द्रसिंह जी एव श्री

नैच बरननाथ की साखी
मन्त्री—मी बकराज धार्य

उपमन्त्री—मी कलानाथ जी तारबाते,
मी रामजी खलैवाल की

कीर्त्तिका—मी नरेन्द्रनाथ गुप्ता
पुस्तकाध्यक्ष—मी कृष्ण मावसीय की

सेवानिरीक्षक—मी राबाराजीसिंह की
कम्परा सलस—भासा अचारजल

मुष्ट, मी दोषाजलस पसटा मी सुरक्ष
नान बलस, मी सत्यप्रकाश महेस्वरी, मी

बलबलस मुष्टा, मी रामकुमार, मी
किर्त्तिकासलस बलबलस, मी रामचन्द्र दिल्ली,

मी रामचन्द्र बाट, मीमती बीडा माहेस्वरी,
मीमती कर्मावी, मी कन्धप्रकाश, मी

मीमती मीमती, मी बुद्धिप्रकाश ।
विधेय धार्यनिष्ठ—मीमती दासा

बलस, मी बलान्ध गुप्तराज, मी कर्माक्ष
कन्ध मुष्टा, मी सुधील कुमारी ।

बाबूराज धार्य, मन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र—

हार्दिक वार्धाई

मैं व्यक्तिगत रूप से धार्यको 'धार्य सन्देश' साप्ताहिक पत्र के सम्पादक होने की बहुत बहुत मुबारक देता हूँ । धार्यके सम्पादक होने से मुझे ऐसा भावना होती है कि धार्यके मे धर्म बहू पत्र स्वामी दयानन्द के धाराओं की मुल्ल बव से प्रशस्ति कर रहा है । धर्म इस पत्र को पढ़ कर ऐसा भवता है कि इस पत्र का सन्धान किसी योग्य तथा पूर्ण विद्वान् के हाथों मे है । मैं मुन धार्यको बधाई देता हूँ ।

हरराज मवान
धार्यसमाज अयोध विहार पृथीक

भारतीय जागरण में आर्यसमाज का योगदान

महोदय,
मी महावीर विद्यालकार लिखित उपर्युक्त शीर्षक लेख २६ मई के बक मे प्रकाशित हुआ है । क्या लेखक महोदय अपने इस कथन की पुष्टि इतिहास के आधार पर करके कि स्वामी दयानन्द ने साधुओं की टोनी बनाई धोर हाथों मे नमन का जून धोर टोनी का टुकड़ा लेकर कसीर से कम्पाकुमारी तक प्रलय किया धोर स्वर्णमहा युग का सन्देश पहुँचाया । धार्यक ही कभी किसी साधु टोनी ने दयानन्द का साथ दिया । वे धो धरने जीवन के प्रारम्भिक भाग मे एनकीही नीबल करते रहे । यद्यपि ने मी महावीर का के अनुसार नामा साहब धोर प्रमोदमुखा का की सौराष्ट्र जाने की समाधि दी थी । परन्तु इतिहास इस सम्बन्ध मे कुछ नहीं कहता ।

हा० भवानीलाल भारतीय
पञ्जाब विश्वविद्यालय लखौ बड

प्रवेश प्रारम्भ

धनुषमयी विश्वावीरो के नेतृत्व एव विपुल नवीन प्रशासनिक व्यवस्था मे सुवर्णमय धार्यके प्रिय धाय महाधिका बल किरतल (मेरठ) मे एक जोशाल से छात्रों का नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है । महा सूर्योत्थानव सक्कल विश्वविद्यालय धाराधीनी की प्रथमा से धार्यवर्ष पर्यन्त छात्रों के धार्यगत की पूर्व ७ बवता है । शिक्षा एव धारात की व्यवस्था नि मुष्ट है । धाराणी एव धार्यवर्ष के छात्रों की जीवन व्यवस्था भी नि मुष्ट है । धार्य अपने कम्पनी के बहुमुणी विद्यार्थ के लिए विद्यालय मे प्रवेश कराये । प्रवेश हेतु गुरुक सम्पर्क करें ।

धार्य-निर्वाह—देवीसी से सहायनपुर जाने वाले बस धार्य के दरवाजा स्टैंड से दाया बाएँ वाले बस धार्य मे किटल है ।

धाराध
समराना धाराध

गुरुदत्त विद्यार्थी

(पृष्ठ १ का वेष)

को धार्यसमाज मन्दिर साहोदर मे गुरुदत्त ने एक सभा बुलाई, जिसमे स्कूल की धारक्यकता और उद्देश्यो पर प्रकाश डाला गया। तथा जनता मे इस पवित्र काय के लिए उत्साह भरा। धाविर प्रतीक्षा को चरिया सभात हुइ और १ जुन को धाय समाज मन्दिर गली बच्छो बालो मे एक सार्वजनिक सभा करके डी० ए० की० स्कूल की स्थापना कर दी।

पडित जी ने १८८८ मे इतना

काय किया जितना साधारण व्यक्ति एक वर्ष मे भी नही कर सकता। वे कुलनती विस्वमायम की पुन के दीवाने हो गये। जो व्यक्ति मयपन मे धा धाना उसे नो धाय बनाने के लिए जुट जाते। न जाने किनने व्यक्तियो को इस प्रकार नव जीवन बिरा।

जुलाई १८८८ मे वरिद मग जीन के नाम मे धायन भाषा मे एक मासिक पत्रिका का सपादन शारम्भ किया। पडित जी इस पत्रिका मे बैदिक सिद्धांतो पर खोजपुख लेख लिखा करते थे। लेख इतने विद्वत्ता

पूर्ण होते थे कि देश विदेश मे सब पत्रिका का मान हुआ। पत्रिका चलती फिरती धार्यसमाज थी।

ईश्वरीय नियम खपना करना निवना नही छोडते। जो वरपात मयस से पन्ने धा जाना है वह शीघ्र ही मयान्न हो जाती है। पडित गुरुदत्त जा मे प्रतिभा मयन मे एव नो बगम पन्ने थी। जिन उग्र मन्त्र मे वन्दे गिम्नो इना सेनते है उसमे गुरुदत्त जो मे प्राणायाम करना शारम्भ कर दिया था। १८ वष की अवस्था का विद्यार्थी पञ्जाब को धाय समाज का प्रतिनिधि बनाकर अमेरि भजा गया। २४ वा वष पूरा होता कि नौबतान एम० ए० को पढाने के लिए गवर्नमेन्ट कालेज से साइस का बन्ग ध्यापक नियुक्त कर दिया ग।

फिर पडित जा ने नियमो को तोन्ने मे कमर न जोन्ग। जिन काम मे लगे उनके मिषा मय कुछ मुसा दिया। जिन लोग का उस पानी धात्मा के मन्वास का धवनर मिया है वे क्का क ते थे कि जब वे बन्कि मगजीन को निखन वन्ते थे नव कई दिनो नक घर म बाहू नहा निकलत थे। जब पन्ने नगत नव ८ वण्टे नक एक मिन्त भर हो निव निना पड चल जात थे। जब सोने की पुन सवार नोती थी तब २४ वण्टे की कन्टनी समाधि लगती थी।

म प्रकार के धातकमणो से नोहे का शगर भा धरन व्यन्म हो सकता है। जवानो मे पडित जा का शगर सौन वमजवत था। पर तु ईश्वरीय नियमो के उल्लंघन न उमे सिफल कर निग। प्रतीन नोता है कि मर के बिना प्राणायाम क परि श्रम मे भा मराग पर कुछ वरा प्रभाव उ पन्न क निग। इन कारणो से धायसमाज की धाधाधो के इ उस होनहार नवयुवक को धय रोग ने

धा धरा। फलस्वरूप १६ मच को प्रभात के ७ बजे स्वामी दधान २ के सन्ने शिष्य ने २६ वर्ष की धरणापु मे ही इन लोक से प्रयाण कर दिव। पडित गुरुदत्त विद्यार्थी जो उस कनी की भासि थे जो सिलने से पूर्व हो मुरम्मा गयो। नू नू नीक है कि प० जी के पश्चात धायसमाज को गोदी मे धनेकर न जिले जिन्ताने धार्य समाज का गीग वडाया। पर कोई गुरुदत्त निग न मिल सका। उनका धमाव तो धरगना रहेगा। उनके बिना वह सोभा नो नो हो भी कमे।

जिले रीनक तरे कदमो ने देकर छीन नो रीनक वह नाए धावाद नो उस धर की जिना नही धाह। प्रनु करे हुन पडित जी के चरख चित्तो पर चलकर विद्व मे बन्कि मा यनाजा का प्रचार कर सक। यहा उनके प्रति प० भी अध्यात्म होमी

गोक प्रस्ताव

गुरुदत्त कायों विचविधावय की यह का सभा एसादिक सभु के एयर इरिग्या जवाजट धायान इण्टना मे २९६ भाषियो के धारे जाने पर गहरा गोक प्रकट करती है। विचविधावय यह धयुम करता है कि यह भीषण एह एहय विचारक इण्टना एक राट्टीव वलि क रूप मे हुन सब के समुम्न है। इण्टना मे धारे गए इन भाषियो मे पर राट्ट की एक मयम र सति नू है। लोक के म सत्य भासावरण मे विचविधावय की यह सभा धरम म प्रायणा करती है कि मय व्यक्तियो के परिमरो का इस महत दल को सहन करने क ममता प्रदान करे। यह सभा मरकार म धाय करती है कि इस भीषण इण्टना क काररु को सममता से जाच की ज ग तथा यह सति विचत किया जाय कि कही इण्टना मे विचन्मकारी गतिमरो १। हा हा नही है।

— विचविधावय क ससल धरक र गध मयकारी

दान की हर बीमारी का धरलू इलाज


एम डी एच

दंत मंजन

लोग युक्त

23 जडी बूटियो ल निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

दान का धाक्टर



अब नये पैके में उपलब्ध

महाशिया की हट्टी (प्रा०) लि०

9 इण्डियन स्ट्रीट, सीता नगर, नई दिल्ली-500030

उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Paris Beauty

पैरिस ब्यूटी

गोवर सन्स

ब्रा. पैन्टी. बनियान अन्डरवियर वे बैबी पैन्टी

पैरिस ब्यूटी सैन्स कार्पोरेशन

65 ग ब्रीज नगर, लखनऊ-200008
दूरभाष 569229 574200 588236

ग्राम प्रचार श्रवला

जि को धय प्रतिनिधि सभा द्वारा वद प्रचार व्यन्म का धायमर बडे न माह युवक चल ग्ग हो। सभा के वद प्रचार धरिगाना म्व की वरक न के द्वारा एक मयाह तप नू कृषिकीपुर कालोनी मे नो ला० दामाग प्रसा जो धाय के निवास म्यान पर २२ जन की बहयमन व सम रोह युवक मन् न हुआ। इस धयसर मय क बहा म्व की वरगपा नउ ने पच मगो के मह व धम राट्ट धर समाज के रीन हमारे क्या कतय है विषयो पर प्रकाश ला सभा के मजने पवसक की धा गाय प्रदी और श्री दय मवीर के मयिन र मे धोतप्रेत पनो न संको मर न रिषो की भाषाविमो कर दिया।

सवादायता धायसन्देश

आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि प्रायः ११ अचिनियम जी० ८० के
अतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/सनीप्रार्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माना चलनदेवी प्रार्थ्य धर्मायं नेत्र चिकित्सालय,
मन्त्री-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१५ के पते पर भेजा जाए।दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
अंकित किए जाएंगे।

निचे एक

रामगोपाल शालभाते	सुर्यदेव	महाशय धर्मपाल	धोमप्रकाश धार्य
सरलाक चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	मन्त्री
एवं प्रधान, शा०-१०	धार्म्य प्रतिनिधि	धार्म्य केन्द्रीय	महाशय कुन्नीपाल
प्रति० सना	सना	सना	बेरि० ५०
सौजन्य से	महाशियाँ ी हट्टी प्रा०	लिमिटेड ६/४४	कीतिनगर,
धोमगोपाल क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१			

खिचड़ीपुर चेत्र में ग्राम-प्रचार

सा० बाबोवर प्रसाद धार्य द्वारा
खिचड़ीपुर क्षेत्र में ग्राम प्रचार रखा गया।
विष्णुने दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सना के
वैद्य प्रचार प्रविष्टिदाता स्वामी स्वकृपानन्द
सरस्वती प्रचार वाहल लकर साब सगीत
कलाकार पण्डित बाबाशरण प्रेमी व वयाम
रायच की द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार
हुआ। १७-६-८५ को सा० बाबोवरप्रसाद
धार्य के निवास स्थान पर रात्रि ६ बजे
से ११ बजे तक प्रचार कार्य रहा। ग्राम
निवासियों ने भारी सरवा में पवार कर
धर्म साब किया। १८-६-८५ की रात्री
को खिचड़ीपुर न० ३ में प्रोग्राम रखा गया,
जिसमें वैदिकों नरनारी एकत्र रहे। १२
बजे तक कार्यक्रम चलता रहा। इससे दिन
के लिए इसी स्थान पर कार्यक्रम रखने
का निश्चय किया गया। १६-६-८५ को
भी इस स्थान पर हल व उत्साह के साथ
प्रोग्राम सम्पन्न हुआ। २०-६-८५ को धार्य-
समाज मन्दिर खिचड़ीपुर के सामने बाध
क्रम रखा गया। यहाँ धार्मिक लक्ष्य में
ग्राम निवासियों ने भाग लिया। रात्रि १२
बजे तक प्रोग्राम चलाया गया। सगीत
नर्तकारों ने अपने प्रयत्नोंपरीय से जनता
को उत्साह दिया। स्वामी स्वकृपानन्द
जी के महति स्थान-व की विशेषता और
धार्यसमाज की गतिविधियों पर प्रचार-

वासी उपदेश और हस्त कथितों द्वारा
समी की सत्यापित किया—कोलाहलों ने
एक हर्म की सहर रही—और सभी ने
भाग की कि यहा पर १ सत्याह तक
प्रचार कार्य रखा रखा जाये। महा
समीय जनता ने जोध धर्म का प्रचार
बनिक है। हम चाहते हैं कि यहाँ वैदिक
भाषनाओं की पवित्र गंगा बहती रहे ताकि
हम सभी काशीनी के निवासियों की वेदा-
मूल गंगा प्रसाद मिलता रहे। जनता
की भाग पर यह प्रचार कार्य १७ से २२
जून तक का बड़ा दिना गया।

ग्राम प्रचार के लिए बहुत परि-
श्रम करना पड़ता है जहाँ १० बजे तक
कार्यक्रम चलता। बाह्य ग्राम में रात्रि
१० बजे शुरू होता है और १२ ब १ बजे
तक प्रोग्राम चलाया जाता है। हम सभी
की वैदिक धर्म प्रचार प्रसार में पूर्ण
सहयोग देने का स्थान रखता है ताकि
हम सभी सठित होकर वैदिक धर्म
प्रचार में सफल होते रहे। तब एक स्वर
ने बहरे कि कृपया विचारायम्। जो
कोये से क्षम-व वैदिक धर्म की जय।



उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

साम कोर्निय-३२, गली राजा केदारनाथ,
पिन २४६२२८ चाण्डी गाजार, दिल्ली-८

रखी ग्राम प्रतिनिधि सना १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली १ पते ३१०१२० के लिए डा० बरनाल द्वारा सत्यापित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेम गली न० १७, ईसाचनवर, हरिनी-३१ में मुद्रित। १८० न० डी० (सी०) ७५६

गुरुकुल चाय
सभी प्रकार के चाय के लिए उपयुक्त है।

भीमसेनी सुरमा
सभी प्रकार के सुरमा के लिए उपयुक्त है।

पायोकिन
सभी प्रकार के पायोकिन के लिए उपयुक्त है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी
हरिद्वार

संस्कृत
विश्वविद्यालय
१९६०

ओ३म्

कृष्णवर्णे विश्वमर्याम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वष ६ मस ३४ रविवार, १४ जुलाई, १९६१ आर्य सन्देश १९६०=५३=०५९ आगस्ट २०५२ दशमपात्र—१९१

महान् साहित्यकार, शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

—डा० भवानीलाल भारतीय

आर्यसंवाक्य के भारतीय विद्वान् लेखक आचार्य महारथी श्री वल्लभा स्वामी दर्शनानन्द बा० उन्म मास कृष्ण वसारी १९१८ वि० को मुद्रितया जिनके के अग्रजान् नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम प० रामप्रताप शर्मा बा० जो श्रीरामचन्द्र गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण थे। माता का नाम हीरा देवी बा०। पुरानी प्रथा के अनुसार इनका नाम नैतराम रखा गया किन्तु बौद्ध हो इसे बदल कर इन्हें कृपा राम के नाम से पुकारा जाने लगा। कृपाराम की शारंगिक दिग्गजा पिता के निकट ही हुई तथा उन्होंने फारसी ग्रन्थ मुलिस्ता तथा बोस्ता पढ़े। साथ ही संस्कृत व्याकरण के ज्ञान के लिए विद्वान् श्रीमद्री पटना भारद्वाज के अग्रजान् नामक का विवाह वैवाह्य कृष्ण पक्षी १९२६ वि० को मात्र ११ वर्ष की आयु में सार्वती देवी नामक कन्या से कर दिया गया।

कृपाराम के पिता अपने ग्राम के एक श्रेष्ठ व्यवसायी और बंगालीय व्यक्ति थे। उनकी हस्तिक इच्छा थी कि कृपाराम भी एक निपुण व्यापारी बन कर वनोपाजन करे परन्तु कृपाराम की व्यापार व्यवस्था से बहुत विरक्ति थी। स्वतन्त्र प्रकृति के होने के कारण एक दिन अचानक वे घरछाया कर लयाली बन गये। लयाली बन कर वे पञ्जाब के विभिन्न नगरों में घूमने लगे। इन्हीं घराबों में उन्हें स्वामी स्यामचन्द्र के ३० व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। श्रवण तक उन पर नवीन वैचारिक विचारधारा का प्रबल प्रभाव था।

इस समय उन्होंने अपने प्राचीनी नामक २० गुणों की एक पुस्तक लिखी जो उन्हें पत्र में बी० १ बर होना मगर (पञ्जाब) में वे एक पादरी के कहूँ कर रहे थे, उनके बाबा जयदाम ने उन्हें आ पञ्जाब और बर बनने के लिए विवश किया। कृपाराम पर बनने के लिए तैयार हो हुए, परन्तु तीन गतों के साथ—(१) मेरे बन्धन नहीं उलारेंगे। (२) घर में मैं रह कर बैठक-लाने में रहूँगे। (३) स्वामी इत्यादि के समस्त ग्रन्थ अध्ययन करेंगे। तब स्वामीर होने पर वे घर पर लौट आये।

प० कृपाराम के पिता प० दीनतराम अपने जीवन के अन्तिम भय में काफी उलून रहे थे। वहा उन्होंने एक लेख बनाया जिसके नाममें वे संस्कृत पदने के प्रमुख छात्रों के जीवन प्राप्ति की व्यवस्था होती थी। पितामह के दिवसत होने पर प० कृपाराम को काफी रह कर उनकी सम्पत्ति प्राप्ति की व्यवस्था करने के लिए कहा गया। वहा उन्होंने निरंतर नामक प्रेम की स्थापना १० दिवस पर १८८६ को की तथा इस प्रेम के माध्यम से वे संस्कृत शास्त्र प्रयोग का प्रकाशन कर उन्हें सत्ते मुख्य पर छात्रों को देने लगे। वहा रह कर ही उन्होंने स्वामी स्यामचन्द्र नामक विद्वान् विद्वान् का विषयक पदक किया तथा उनसे दर्शन शास्त्र का निवृत्त अध्ययन किया। श्रवण से इस आर्यमहारी विचारों के बन चुके थे। काली में २८ कर विद्याभ्यास करने वाले आर्यसंवाक्यों ज्ञानों को अनेक कठिनायों का सामना करना पड़ता था। प० कृपाराम ने इसे अनुभव

किया और उन्होंने एक पाठशाळा स्थापित की जिसने आर्यसंवाक्यों विचारधारा के छात्रों के पढ़ने की सुवाय व्यवस्था की। प० काशीनाथ शास्त्री इस पाठशाळा के अध्यापक थे तथा प० बहावल शास्त्री एवं प० भीमसेन शर्मा (आगरा) प्राप्ति उन दिनों विद्यार्थी थे।

श्री श्री प० कृपाराम का अर्थ धार्मिक व्यापक होता गया। श्रवण से वैदिक धर्म के प्रचारक बनकर पञ्जाब तथा संयुक्त प्रांत में प्रसिद्ध करने लगे। १८९३ से १८९६ तक का काल उल्लेखनीय शान्ति में व्यतीत किया। १८९७ से १९०० तक मेरठ मुरादाबाद, दिल्ली आगरा आदि नगरों में रहे। निरन्तर रूप से आचार्य करत। व्याख्यान देना एक ट्रस्ट रोज निवृत्ति सका समाधान करना प्राप्ति कार्य—उनकी निवृत्ति के धर्म थे। स० १८९७ में प० कृपाराम ने सत्याज की दीक्षा स्वामी अनुभवानन्द ने की और दर्शनानन्द नाम स्वीकार किया। श्रवण से सत्यतन्त्र परिवर्तन होकर निवृत्त प्राप्ति के विचारम करने लगे। स्वामी सत्यानन्द की प्रकृतिमा निम्न प्रकार से संशुद्ध की जा सकती है—

१ प्रसिद्धी परमविशेषों के प्राप्त्या—उन्होंने पौर्णिक जैन, साँझ तथा इस्लाम धर्मों के प्राचीनों से सँकटों शास्त्रार्थ किये।

२ मुकुन्दों की स्थापना—विष्णु-मुराबाद (उत्तर प्रदेश) बदायूँ तथा अलाहाबाद में मुकुन्दों की स्थापना का श्रेय

उन्हें ही है।

३ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं का संपादन एवं प्रकाशन—अपने जीवन काल में उन्होंने कोई एक दर्शन पत्र प्रकाशित किये।

४ लेखन कार्य—स्वामी जी ने १८९६ से एक ट्रस्ट पत्रिका निवृत्ति का नियम बना लिया था। इस प्रकार उनकी लेखनी से सँकटों ट्रस्ट निवृत्ति। उन्होंने अनेक दर्शनों का भाष्य किया, उपनिषदों पर टीका लिखी। कथा कहानियों के माध्यम से धार्मिक विद्वानों का विवेचन करना उनके साहित्य लेखन की एक धर्म विचार लिखा था। १७ वर्ष १९१३ की हावाम में उनका निवृत्ति हुआ।

स्वामी दर्शनानन्द का साहित्य प्रसृत उद्ग्रे से लिखा गया है। शास्त्रान्तर से उग्रता हिन्दु अनुवाद की हुआ। वहा उनके द्वारा लिखित एवं प्रकाशित सभी कृतियों का अग्रपलम्ब विवरण दिया जा रहा है—

अपने काशी निवृत्तकाल में प० कृपाराम ने जिन शास्त्र ग्रन्थों को स्वयम्भुव में प्रकाशित किया उनका विवरण इस प्रकार है—

१ सामवेद मद्रिषा—विष्णोरिया पञ्चास काशी में मुद्रित।

२ अष्टाध्यायी काविका वृत्ति

३ धा १५२, यो महाभाष्य। उनके समस्त ग्रन्थों की संपादन सँकटों तक पहुँच चुकी है। □

सतसंग वादिका

ब्रम्ह की इस सृष्टि का कौन सा देवा कोना है जो धारण से परिपूर्ण वा बद्ध-मुक्त होना है। इस सृष्टि में स्वयमान कौन सी ऐसी शक्ति है जो ज्ञान से युक्त होना है।

आत्मन में आत्मा को ज्ञान से परिचित कराने का माध्यम ही यह ब्रह्म अथवा है। सत्ता से समस्त पदार्थ गन्तव्य की ज्ञान चेतना को जागृत करने के उद्देश्य से ही रचे गये हैं। ज्ञान का व्यापकपूर्ण स्वरूप ही सृष्टि है।

सत्त्व द्वारा सजित यह सत्ता आत्मन के एक विचित्रावस्था है। जहां जन्म लेकर हमारी आत्मा चेतनमय होती है। चित्त लगाने जागृत से ही चेतन शब्द बनता है। स्वप्न से आत्मा चेतन होते हुए ही ज्ञान प्राप्त होती है। इससे चेतना का स्वरूप भी उस चरित्रमय सत्ता द्वारा ही होता है जो इस समस्त सृष्टि का नियामक वा सत्ता है।

कार्य से ही कर्ता के अस्तित्व का बोध होता है। सृष्टि से ज्ञान का बोध होता है। जीवात्मा की चेतना केवल ज्ञान बहुल करने के साधन्य तब ही सीमित है। यह साधन्य ही उसको ब्रह्म जन्म से वा सत्य से मिलान करता है। जब प्रकृति के आत्मा की चिन्तना वा उच्छ्वास अपना प्रथम अस्तित्व ज्ञान बहुल की मूल चेतना से युक्त होता ही है।

ज्ञान को प्रस्तुत करने और ज्ञान को प्रकट करने के लिए ब्रह्म जन्म की धर्म-कार्य धारण करता है। ज्ञान का चिन्तन-मन के लिए ही यह चरित्रमय सत्ता ब्रह्म जन्म से बाधक है चिन्तनमय है। ज्ञान को प्रकट करने व प्रकट करने की प्रक्रिया के धारण के लिए ही आत्मा की ब्रह्म जन्म के निष्पत्ति से बाधक किया जाता है।

इस प्रकार हमारे जीवन की जन्म-मरण की प्रक्रिया वा जन्म मरण की प्रक्रिया का मूल कारण ज्ञान ही है। ज्ञान प्राप्ति के लिए ही हमें ब्रह्म शरीर से बाधक किया जाता है। क्योंकि हमारी चेतना ब्रह्म जन्म के बिना जागृत नहीं हो सकती। ज्ञान ही ज्ञान की प्रकृति भी बिना ब्रह्म जन्म के जागृत पाने नहीं हो सकती।

इस प्रकार आत्मा की जीवन यात्रा ज्ञान यात्रा ही है। ज्ञान ही जीवात्मा का सत्य है। जो चिन्तना धर्मिक ज्ञानमय करता है उसका जीवन उत्तम ही धर्मिक प्रकृत होता है।

इस परिवर्धन में हमें इस सत्य को धर्मिकार करना होगा कि कार्य में पहले उसमें उपजावन कराल का होना धर्म-कार्य है। जिस प्रकार एक कुम्हार के गदा बनाने के लिए वह का उपजावन कराल मिट्टी पहले होना पकरी है। क्योंकि जब का निर्माण ही मिट्टी से होता है। सृष्टि

महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक प्रिय वेद मन्त्र—एक मनन

आचार्य वेदभूषण

अधिष्ठाता, अन्तराष्ट्रीय वेद प्रशिक्षण, हैदराबाद

विश्वामि देव सवितरं दुरितानि परामुख ।

यद्भद्र तन्न प्राप्नुव ॥

यजुः ३० । ३ ।



जो समस्त रचना ज्ञान पूर्वक है वह सृष्टि रचना से पूर्व ज्ञान का होना आवश्यक है। ज्ञान एक समता वा सामर्थ्य है उसका धारणा कोई निम्न अस्तित्व नहीं है। चित्त ज्ञानी के ज्ञान यह नहीं सकता। क्योंकि ज्ञान ज्ञानी का गुण वा सामर्थ्य ही है।

इस सिद्धान्त को समझ लेने वा जान लेने पर हमें यह स्वीकार करना होगा कि ज्ञान सृष्टि के सर्वत्र से पूर्व ही जन्मता है। सृष्टि के सर्वत्र और अस्तित्व बोध के ज्ञानमय से निर्मित होता है। यह कल्पना कि सृष्टि के बाद ज्ञान बना यह वाद हास्यास्पद होता है।

इस सत्य सिद्ध होता है कि कार्य से पूर्व कार्य का ज्ञान कर्ता के पास होता है। सृष्टि के सर्वत्र और अस्तित्व बोध के लिए जो ज्ञान आवश्यक है उसी का नाम वेद ही है। वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान का प्रभु ही है। इसीलिए ज्ञान को ईश्वरीय माना जाता है। यही कि ब्रह्म सत्य विषय का कर्ता है।

जिस प्रकार बन्धु के निर्वाण के लिए उसके सम्बन्धित सभी धर्मिणोंवांता होती है वैसे ही सत्य के प्रयोग वा उप-बोध के लिए भी ज्ञान एक अविच्छिन्न 'आत्ममयकता' है।

जैसे किसी ने किसी रोग की एक औषधि का निर्माण किया। औषधि का निर्माण करने से पूर्व उसे औषधि निर्माण का ज्ञान आवश्यक है। ज्ञान से पहले औषधि बननी है। सब जो व्यक्ति उस औषधि का सेवन करता उसने उसके लिए वैद्यक विधि के ज्ञान की आवश्यकता होती है तभी वैद्यककर्ता उसके साथ से आत्मनिक हो सकेगा। इसीलिए वैद्यक विधि भी औषधि के साथ पोषित की जाती है।

अतः ज्ञान ज्ञान ही किन्तु आत्मा के लिए विद्यमान ज्ञान को सत्ता से धारण-स्वकता होती है तत्ता ज्ञान ज्ञान बहुल को देता है इसी ज्ञान को हम वेद वा ज्ञान कहते हैं। वेदों से ज्ञान है। जन्म शब्द का अर्थ है फलपूर्व वा ज्ञान का बोध।

जिस प्रकार ब्रह्म जन्म का सामर्थ्य को दे बोध से धर्मनिरपेक्ष होता है वैसे ही वेद के मनो की रचित है। ज्ञान उसे इसलिये कहा जाता है कि उस पर हमें मनन करना होता है। मनन के करने से जन्म बद्धरूप पुण्ड्रिक व जलित होता

है।

यह सिद्धान्त अपने आप में किन्तु सत्य और सत्य है पर हमने अपने अविच्छिन्न विचारों के मुख से सुना है कि—वेद ईश्वरीय ज्ञान है वह धर्मियों की वाणी से प्रकट हुए धर्मिणों पर वे विश्वास नहीं कर पाते। इसका एकमात्र कारण विषमन से सुलता का न होना ही है।

महर्षि स्वामी दयानन्द ने धार्मिक गुण में इस सत्य को समझना और सत्य का प्रकाश किया।

जान जब वह एक निम्न को देखते हैं और वेदों के मनो पर मनन करते हैं तो हमें स्पष्टिक मनो के समान वेद के सिद्धान्त आत्मन सत्य और सत्य प्रतीत होता है। जिस प्रकार सत्ता के किसी भी पदार्थ को हम अच्छा वा बुरा नहीं कह सकते क्योंकि अच्छा वा बुरा नहीं होता है। जैसे किसी पदार्थ को छोड़ा वा भगा किसी अन्य की परेखा से वा मुकाबले में कहा जाता है अच्छा होता बुरा वा अच्छे बुरे का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

यही ज्ञान वेद मनो की जी है। वेद को कोई जन्म बहुलपूर्व वा महारहित नहीं होता। हमारी अपनी परेखा से ही हम किसी को आराध्यक कह सकते हैं वा कहें वैसे ही।

महर्षि स्वामी दयानन्द उरस्वती ने अपने वैद्यकमय से अनेक अर्थों के धारण से विश्वास वेद सत्ता—इस मन का प्रयोग किया है। इस हेतु से हम कह सकते हैं कि महर्षि को सत्य मन धर्मनिरपेक्ष विषय था।

आत्मन से इस कोटि से सत्य ने जो सार मिलित है वह सत्यमय महारूपमय है। सारे विश्व में हमें इस मन का विश्वास अविच्छिन्न रहना है। आत्मन इस मन पर सत्य से विश्वास करेंगे।

विश्वास वेद सवितरं दुरितानि परामुख । ब्रह्मन् तन्न प्राप्नुव ॥

यजुः ३०-३

इस अच्छा का प्रथम अर्थ है—वेद सत्यमय सत्यमय प्राप्नुव—इसका अर्थ है—सत्यमय प्राप्नुव वेदों से सत्यमय

मन ही और तीव्र मन है विश्वासमय वेद—। इन तीनों मनो के अर्थ आत्मनमय वेदों से सत्यमय प्राप्नुव ।

“सविता सत्यं का मुख सर्व है ‘उत्पादितो सविता’”

उत्पादक सत्य ही सत्यमय होता है।

सत्यमय की प्रक्रिया ही सत्य प्रक्रिया कहानी है। इस प्रकार बन्धुओं के तीव्र अर्थमय से वे तीनों मन सृष्टि की प्रेरणा देते हैं। 'वेदों' वेद न प्रकट' में सुद्ध करने की आवश्यकता है। मानसो मन में भी सर्व भीमविषय सत्यमय सत्यमयों के सुद्ध वेद के उत्तम गुण कर्म स्वभाव को धारण कर हम ही सर्व सुद्ध स्वप्न ही जाएं। यही आत्मा सत्य तीव्र मन है कि—दुरितानि परामुख 'ब्रह्मन् तन्न प्राप्नुव' धर्मनिरपेक्ष को दूर करने को उत्तमता की धारण करता है।

यह हम मनोमय से विश्वास करें तो यह सत्य सत्य ही जाती है कि समस्त सत्ता से सब और वेद न वे एक प्रक्रिया निम्नतर जारी है और यह सब हमें महर्षि मन्त्रमय है वह प्रक्रिया है बोधन की। पवित्रता की।

जब और चेतन दोनों में समान रूप से निम्नतर यह सत्यमय की प्रक्रिया चलती रहती है। हम चिन्तना चिन्तितों के दूर-दूर तक सत्य ही सीमित की और सुनी रहे।

पवित्रता सीमित जीवन और सुप्रजाति की महर्षि और महर्षिपूर्व सत्य है। सुद्ध के अर्थमय के निम्न मन की स्वभाव सत्यमय है। इसी जीवन सिद्धान्त को प्रस्तुत मन उच्चारण करता है।

मानव सत्ता से कर्म के चिन्तित निम्न अच्छा सिद्धान्त है जन्म मन आचार की सीमाओं है तथा सब की स्वभाव है। जो मन सृष्टि के सत्य के निम्नो की उपेक्षा कर सब स्वभाव की ब्रह्म करता है वह कर्म नहीं किन्तु सत्यमय कहानी है।

सत्यमय मानव जाति में सत्ता उत्पन्न नहीं कर सकता। जैसे मानव पात्र में हम किन्तु ही उत्तम जीवन सत्यमय वह उत्तम जीवन की अविच्छिन्न और हासिमय हो जाता है वैसे ही दुरितों के त्याग बिना हमें सत्यमय सत्यमय ही सत्यमय से सत्यमय ही हमारे लिए सुखकारी नहीं हो पाते।

आत्मन बहुत से उपाधकर्म धर्म-कार्य और धर्ममय पाने देते हैं वे विचारों के प्रथममय में पाने होते हैं कि—आत्मन मन का सत्य भीमविषय को सर्व आत्मा को सीमित सब अर्थमय सत्य को धारण कर सीमित धारणा कल्याण हो जायेगा यह सिद्धान्त मान्य है। इससे कर्मो भी सब की प्राप्ति नहीं होती।

दुरितों को दूर करने का उपाय है धर्मन, मोक्ष, धारणा। धर्मनमय एक मन दुरितों को सब सत्यमय व सत्यमय प्रकाशना वा धर्मनमय से नहीं निकालते सब एक यह नहीं होता।

(विश्व पुष्ट २ पर)

★ वचन-सन्देश ★

जिह्वाया अग्ने मधु मे
जिह्वाभूते मरुतकम् ।
मेमदह कृतावसो,
मम वस्तमुपासि ॥१८/३४/२॥
मधुमन् मे निष्कमस
मधुमन् मे परावस्य ।
वाचा वदामि मधुमद्
भूयामि मधु मया ॥३॥
म गोरामि मधुनरो
मधुघाममधुमत्तर ॥४॥ (प्रथमवेद)

मधु-पूरित हो मेरी वाणी ।
मधु-पूरित हो धर्म भाग मेरी जिह्वा का
घोर मूल भी इसका हो मधुरिम कल्याणी
मधु पूरित हो मेरी वाणी ॥
मधु पूरित हो यात्रा मेरी
निकट-पूर्व का गमन-भाग्यमन ।
सब को प्रमन्नता पट्टाकार
वृत्तियों से भर दू सब का मन ।

मैं सबका प्रियवर बन जाऊँ
मधुरिम प्रवृत्तियों का उद्गम ।
मैं मधु से भी अधिक मधुर हो
बन मधुस्वर घोर मधुस्तर ।
जग के हर पदार्थ सेमीठी हो मेरी वाणी कल्याणी ।
मधु-पूरित हो मेरी वाणी ॥
कवि बशीर प्रहमद मयूस

सम्पादकोय—

सिख आतंकवाद का भयंकर जाल

विद्वान् भर इस समय आतंकवाद की चपेट में है और यह आतंकवाद बढ़ता जा रहा है। भारत में यह और भी अधिक विकराल रूप से अपने जखड़ खोलते हुए है। आतंकवाद का यह खतरा केवल खालिस्तानियों से ही नहीं है बल्कि काश्मीर मुक्ति मोर्चा, मिजो संगठन, त्रिपुरा बायटियस तथा नागा मुक्ति मोर्चे जैसी अनेक उग्रपंथी संगठनों से है। इस आतंकवाद का सामना करना आसान काम नहीं। विदेशों में उग्रपंथियों की संख्या कम नहीं घीर न हो। माघनों की कमा। साथ ही इनका पाठ पथपथमा बालों ताकत भी कम नहीं है। इस समय खालिस्तानी उग्रवादियों के क्रूर कारनामों से सारा विश्व दहक उठा है। भारत से बाहर सिल भारों सख्या में है। यूरोप और पश्चिमी देशों में यह सब जगह पहुँचे हुए है। मध्य से अधिक यह अमेरिका और कनाडा से आता है। ब्रिटेन में भी इनको सख्या काफी है किन्तु इनके उग्रवादी सिल बहुत कम हैं। अधिकतर सिल तटस्थ अपने व्यापार पेशे में लगते हैं। यह भी स्पष्ट है अनेक व्यापारी सिलों का इन उग्रवादियों को बंद चक्कर सहयोग मिल रहा है। अमेरिका में कई ऐसे स्कूल चल रहे हैं जहाँ दुनिया भर की सरकारों के विदाहियों को आतंकवाद का प्रशिक्षण दिया जाता है। 'न्यूयार्क पोस्ट' में अलबामा के एक स्कूल का व्योरा देते हुए बताया कि एयर इंडिया के जिस बायग विमान को दुपटना हुई है उसके लिए जिन दो व्यक्तियों अलबामा सिल घोर लाइनहप पर समेटे हुए किया जा रहा है वे दोनों सैन्य प्रशिक्षित एक गृह थे। इसका के डायरेक्टर एक कर्पण के अनुशासन उन्हें किसी प्रान्तीय सिल सक्रिय संगठन न दस लाख डालर दिये थे। इसमें छ सिल आतंकवादियों को प्रशिक्षित किया गया था। इस प्रशिक्षण में विस्फोटक बनाने पातों में जहर मिलाते तथा उच्च सुरक्षा के रहते हुए किंवा उच्च व्यक्तिगत पड़व पाना आदि का प्रशिक्षण भी शामिल था। विदेशों में भारतीय सम्पत्ति को हानि पहुँचाकर आतंक मचाते की योजना भी इसके अन्तर्गत थी। इस योजना की बनाने वाले स्कूल के निदेशक घोर अमरीकी गुप्तचर संस्था एफ.बी.आई. के निदेशक आलसुस हैं। कहते हैं इस तरह के अमेरिकी में दो दर्जन स्कूल हैं। सेना या गुप्तचर सेवा स अथवा प्रायः अमेरिकियों को भाड़ के सल्लाह देना करने से लेकर आतंकवादियों का प्रशिक्षण देने तक की दुकान पश्चिम के अन्य लोकनग्रीय देशों में भी है परन्तु अमरीका घोर प्रथम देश का ध्यान इस तरफ नहीं जाना। कह दिया जाना है कि लोकतांत्रिक को कुछ संजोड़िया हैं। प्रत्येक पश्चिमा सरकार सिलों को गतिविधियों को नजर भन्नाज करता रहती है। यही हाल कनाडा का भी है।

कनाडा में बसे आईसाल भारतीयों में ४० प्रतिशत सिल हैं। खालिस्तानी सम्पर्क तो इससे भी कम है परन्तु इन लोगों को कनाडा सरकार का निरन्तर सम्पर्क मिलता रहा है। इससे बड़ा हिन्दू सिलों में सदा दारार चौड़ी होनी जा रही है। कहा जाता है कनाडा सरकार गुप्त रूप से उग्रवादियों को आर्थिक सहायता भी देती रही है। ब्रिटेन में भी उग्रवादी बंद चक्कर अथवा काम करते रहे हैं। वहाँ की सरकार ने उन्हें रोकने के बजाय प्रोत्साहन दिया। साउथल में जगजीत सिंह चौहान अपना आवास बनाने में सफल हो गया। उसने खुले आम बी० की० सी० से यह प्रोत्साहनी कि जो कोई भी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी या उनके परिवार के किसी सदस्य की हत्या करेगा

उसे लाखों पौण्ड का इनाम मिलेगा। जगजीत सिंह चौहान को कई ना यमा से आर्थिक सहायता को मिलती रही है। जिन्होंने गने आम भारतीयों के प्रति हिंसक व्यवहार किया उनके विरुद्ध भी कोई कारवाई नहीं की गयी।

अमेरिका, ब्रिटेन कनाडा के बाद नाथों को मिल आतंकवादियों का केन्द्र बन गया। इससे बड़ा संरक्षित भारतीय परेशान हो उठे हैं। इस तरह की गतिविधियों के मरना बड़ी हरिन्दर निह में। यह जो व्यक्ति है जिसने पंजाब में मैनिक कारंबाई के विरुद्ध विरोध प्रकट करते हुए प्रोसलियों के भारतीय दूतावास के प्रथम मन्त्रि के पद से त्यागपत्र दिया था और इसी देश में उन्होंने राजनैतिक शरण प्राप्त करने का प्रयास किया था। शरण मिल जाने के बाद वे वहाँ के उग्रवादियों के नेता बन गये। अनेक प्रवासी भारतीयों के शिष्टमण्डलों ने नाथ सरकार से अपील की कि इस व्यक्ति को राजनैतिक शरण वापस ले लें जाये परन्तु नाथ सरकार ने एक ही सुनी और उसे रेमीड परमिट देकर अपने देश में रहने दिया।

पिछले दिनों भारत सरकार ने पाकिस्तान से लगी भारत की सीमा को सीन कर्म दिया तो सिल उग्रवादी पाकिस्तान में आकर शरण लेने में तनिक खतरा महसूस करने लग गए। उन्होंने अपना एक नेपाण की तरफ कर दिया। वे नेपाण को प्रान्त केन्द्र बनाने के प्रयास में लग गए। नेपाण और भारत की सीमा १५०० कि०मीटर तक लम्बी है। भारत ने इन लम्बी सीमा पर अपनी २०० बैक पोस्ट स्थापित की हैं। लोग बंध तरीकों से भी नेपाण धा जा सकते हैं मगर यह सारी सीमा खुली है। कई एक ऐसे स्थान हैं जहाँ वे लोग नेपाण आते जाते हैं। नेपाण में सरदार प्रीतम सिंह उग्रवादियों का सरक्षक बना हुआ है। कहते हैं पहले लगभग ३० वर्ष जब यह मावाण मकैल बनकर नेपाण धाया था और अब वह समुद्र हो चुका है कि नेपाण में परिवर्तन सेवा की ३० प्रतिशत माधिया उसकी है। नेपाण के अधिकारी पेड़ोले पण्य भी उन्नी के हैं। उसने अपने निवाण चोरा को नदरा बन गया दिया है। उसमें अनेक प्राणुनिष्ठ गन्ध स्थापित किए जिन से पनभर में अमेरिका कनाडा और ब्रिटेन से स्पेशल जा सकते हैं। गत वर्ष जगज नमिह चौहान को उन्ने पाम कुछ दिन गमा कर गया था। कुछ समय पूर्व एक आतंकवाण पंजाब पुलिस का अनुपूर्व डॉ० आई० जो० एस० एस० मान आन कड साधियों के साथ ओम बालों के रास्ते नेपाण जाता हुआ गिफाटार कर्म लिया गया था। समझा जाता है यह इसी प्रीतम सिंह के पाम शरण लेने जा रहा था। भारत सरकार के दबाव डालने पर वह प्रीतम सिंह आतंक कर्म जा चुका है। कहा जाना है उसने इस मध्य में घ ज भी हजारी उग्रवादी को कनाडा और अमेरिका से धाए हुए है शरण लिए हुए है। इस प्रीतम सिंह के राज परिवार के साथ चनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण पुलिस भी हाथ डालने में सकोच करती है।

विदेशों में सिलों को गुमराह करने के लिए प्रचार भी कम नहीं किया जा रहा है इसीलिए आवश्यकता है इस समय नेपाण गुप्तचर एजेंसियों को मजबूत करने की। साथ ही इन उग्रवादी तत्वों से निपटने के लिए हर हथियार को धार देने की आवश्यकता है। इस आतंकवादी विकराल जंगल को साफ करने की हर सम्भव कोशिश करनी होगी।

—सम्पादक अशोक

[illegible]

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा माला-६

धर्म क्या है ?

लेखक—महेन्द्रदेव शास्त्री विद्याभूषण

मधुकर, स्रग्धराय, मधु, पद्म, मार्ग
हल सज्जो को लोभो मैं बर्न सज्ज लो
है किन्तु ये बर्न नहीं है। इन सब को
बनाने वाले और बनाने वाले मनुष्य हैं।
और ये सभी किसी विधिपुत्र व्यक्ति को
मायस्व को त्याग हुए जनममर्षु द्वारा
ब्रह्मप्राप्त हुए हैं, जो प्रायः उन सभी के
पहले उन-उन स्रग्धराय के संधाकारों के
साथ से हुए हैं। जैसे कबीर पत्नी, बाहू
पत्नी, नानक पत्नी, रघुनाथ स्रग्धराय,
रामानुज स्रग्धराय, अल्मर स्रग्धराय
औरपुत्र, बोध भद्र, राधा भास्वती, मुकुन्दवी
मधुकर, ईश्वर मधुकर, धानन मायस्व
मधु, भगु हो वह है जिसकी भावस्व-
कता सधाम रूप से समस्त भावस्व वांति
को है। इसीलिए वहसे प्रकटा और
वास्तविक रूप का बलवान् ।

“यतोऽभ्युदयनिश्चयसंसिद्धिः स धर्मः ।”

ऐसा कहा है। यहाँतुं जिन्हें ऐसी
 बात सनके का मही घणितुं समने भाग
 बाँट का चन्द्रमण हो, उमति हो का
 जिन्हें इतरा सारी मणुष्य के तुमों
 का भावना (विमल) हो बाँट, यारी मुनी
 (मोक्ष) हो जाये वही यम है। इन गेनो
 यारी की पाव दुखी के समस भाव
 सनको हो यारी दुखी है यहि सन
 के लक्षण को सारी सनमें होर सन
 तो सवार के सारे भवने ही हूर हो
 यारी यम ही भवने कराता है, यह सनना
 मणुष्य के हृदय के सनना है। सनने
 है यम तो भावों को भवने बाँट है।
 यम सन का घन भी 'पाप'दाय यम
 'पाप'दाय सन सवार जिहो का यम
 सनना रहता है यम यम है। उमहाय
 के होर सन सन यम का भवने।
 जिहो सन के सनना का कोई काय
 सुभाय सन के यारी यम सनना। सारे
 दास सन के यारी हो सनने है, सनने
 हो सन का सनारो सन यम हो।
 सन यम ही जिहो का सन सन सनना।
 है सनना यम के सन सन सन यम हो।
 सनना या सनना।

दूध में मिला पानी सत्य रूप का प्राथम्य लेकर के ही दूध की जगह बिँक जाता है। झूठा मनुष्य भी सत्य की कसम खाकर ही असत्य को सत्य बनाने की कोशिश करता है। जहाँ व्यक्तियों में से, जातियों में से, देश से और राष्ट्र से सत्य उठ जाता है, वे व्यक्ति, जाति, देश और

नष्ट ही हो जाते हैं । इस ही लिए
कहा—

“नहि सत्यात्परो धर्मः
नाज्ञतात्पातकं परम् ।

सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं और झूठ से बढ़कर सत्ता में कोई पाप नहीं है। झूठ का आश्रय लेकर यद्यपि लोग फलते फूलते नजर आते हैं, और सत्ता में बड़े ठाट-बाट के साथ रहते दिखाई भी देते हैं, किन्तु वह बहार बोड़े समय ही रहती है। मनु कहते हैं—

अथर्मेणैव ते तावततो
अद्राणि पश्यति ।
ततः सपत्नान् जयति
समूहस्तु विनश्यति ॥

प्रथम करने वाला आदमी पहले खूब बढ़ता है फिर उस सभ्यता से अनेक प्रकार के लोगों को भोवता है। उसके बाद धन की शक्ति से अनेक शासकों पर भी विजय प्राप्त कर लेता है, किन्तु फिर समूल नष्ट हो जाता है।

सत्तार मे हस प्रकार के बहुत उदाहरण हैं जिन्होंने झूठ बोलकर, बेईमानी से, बड़ा धन कमाया, लोगों को मार करके भी धनी बन गये किन्तु फिर वे सत्तार से ऐसे मिटे कि उन्हें कोई पानी देने वाला भी न रहा, वस के बस समाप्त हो गये।

‘अभ्यस्योपाजितं वित्तं
दशवर्षाणि तिष्ठति ।’

पाप और अन्धाय से कमाया हुआ धन दस वर्ष ही टिकता है। कुछ इससे अधिक भी टिक जाता हो तो धारक नहीं किन्तु इसका धन मे परिणाम कभी अच्छा नहीं निकलता। धन मे तो—

‘सत्यमेव जयते नाङ्गुतम् ।’

सत्य की ही जय होती है। इस समय भारतीय प्रजा में असत्य का बड़ा प्रभावशाली है, हुआही व्यक्तियों ने ही आपस को कोई कोई ही स्वतन्त्रता नजर आयेगा और वे बाबू वेदानी नामक का बाबा है। बेईमानी करने के लिए ही आपसी और का धायन के है। राजा ने आपस को बीजों के प्राव मिलावट मिलनी। स्वायत्त के लिए धायन हाकिम बनगुरों की साध प्रत्यक्ष में विशा ही जाती है। दूध, जी, तेल प्रावि पुत्र मिलने

बने कलिन होये हरे हैं, उसका ही परिणाम
यह हुआ है कि लोगों में अनेक अन्धका की
भीषणियाँ जूट निकली हैं जो स्पष्ट चीजों
रखी हैं। जीवन की लोगों के कण्ठमें
होकर धीपचों के साराई ही बन रहे हैं।
सारा प्राण प्रकाश सत्य का ही है।
महान्ता बानी ने इसका का शोर अन्धका का
ही सहारा लेकर बेध धाबाब कराया।
मनवान् महान्तर तथा मनवान् बुद्ध ने
भी यहिका जो ही धनपानकर लोगों को
द्रष्टिक नृतिमें ने बलन के का उपेक्ष
दिया और 'यहिका परतो बर्न' के द्वारा
लोगों को परनर्न बलाना जो
अष्टाङ्ग योग के प्रथम अङ्ग यम का प्रथम
अङ्ग ही है।

‘ग्रहिणा सत्वास्तेष-
न्नक्षत्रव्यपिरिग्रहा यमा ।

मास्तव ये जिससे धपना तथा
रों का कल्याण हो वही धर्म है और
न पर चलना ही कल्याण का मार्ग है।

ब्रह्मचर्य

इसके महारथ को लोगों ने विजयुक्त
ही भूना बिना है। ईश्वर के अतिरिक्त
क्या राज्य का सर्व वैश्व ही हीर वैश्वानर
यह के लिए प्रत्येक ही राज्य का
“क्या वैश्वानरव्यवस्था” प्रत्येक राज्य
उसका पूर्ण रूप के पास करना ही राज्य-
सर्व है। वास्तव में राज्यसर्व के प्रत्येक
महाशक्ति राज्य ही है। इरीर, मन,
तुल्य तथा वासी सभी निम्न तथा
अत्यन्त शक्ति अत्यन्त ही वाते है।

“अथर्ववेदं तपसा
देवा मृत्युमपाप्नत।”

ब्रह्मचर्य के प्रसार के ही बेतों में नृत्य
पर विचार श्रव्य की। समस्त यशस्व ब्रह्मचर्य
के मोर विजयी हैं। इस ब्रह्मचारी की अस्त्र
के दूर ही खुला पकवा है। सहविषा—
धन्य! स्त्रियों में, कामों में सबके सन्त-
कियों का एक हाथ बलवान प्रत्यक्ष
हस्तिकार है। ब्रह्मके सन्तकियों के पार-
स्परिक संपर्क में ब्रह्मचर्य श्रव का पावन
कसी नहीं हो सकता। पापराज्य विना
प्रसाधो की अपमानक हमारार से उलकी
ही नमक कर रहा है। इससे सबके
कियो के मोचन नष्ट हो रहे हैं। जीवन-
सर्वा में मानवीय की सन्धान्यमा समस्त
कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में कि
कसी को साध तत्काल दूर बाँधें कि या

[illegible]

तप

[illegible]

[illegible]

कोई चिराग जलाओ बहुत
अन्धेरा है

उत्तमचन्द्र शरर

एक धीरान्त ही, यशोधरा, स्कूल के प्रातः के मूक भाव से जवना की उडासी लाता का परिचय दे रही था। मुझे लगता ही 1क वहाँ कोई परिचित व्यक्ति मिले, वह साधु की तो नहीं था। अचानक काश परकाट कुदरत महोदया (मन्मोहनप्रसाद) क दर्शन हुए, मन शांत हुआ कि कोई परिचित तो मिला। इतने में एक मन्त्र सन्त स्वामी सत्यानन्द की ओर मुझे शब्द की ध्वनि सुनाई दी वह चिर छोटी ही श्रवणे साधियों में ही था।

पचा पचा ग्राम में ठाकुरों का झालक फेंका हुआ है। हरिजनो को यश करने, यशायीय लेने का अधिकार तो क्या, इज्जत भी दण्डीयों ने, ठाकुर साहब के सम्मुख हरिजन बन्धु साखाई पर नहीं बैठ सकता, और यह अर्थक्य समुदाय का का बिरोध कर रहा है। हरिजन बाण्डू यदि यश में सम्मिश्रित हुए तो न केवल वे पीड़ दिए जाएंगे, अपितु यश करने वाले भी न बच सकते, और इस बलि के लिए हम तो जा ही गये थे।

राजों का प्रचार कार्य प्रारम्भ हुआ, स्वा० सत्यानन्द जी क भाषण में एक उद्बुद्ध व्यक्ति शराब के गंध में डुबत तथा मनोपशान्त बकन में उसे समझाने को उठा तो कुछ साधियो ने रोका, इधर स्वामी जी ने हवा का दम बैसकर 'राम-धुन प्रारम्भ कर दी। (उन्हे यह धन्याव भी जाता था।) सभा शांत हो गई, भाषण

ताल की यहूतिया पर हो गया और इस प्रकार ताली की विशेषता का प्रचलन कर लायी । प्रजनन २० महीना के के, ये हो जाते हैं । इस अभिनयित प्रजातियों का प्रयोग करते हुए, ठाडुर बनभुजी के स्वाभिमान को लक्ष्यकरते रहे । जातीय बनभुजी के कारण, उन्हे किसी ने नहीं छोड़ा । यह मेरी नारी की मैं किन्तुपुत्री की पुत्रपत्न्या से कुछ भी तो था ही, वालि के पते के कारणों पर प्रकाश डालते हैं । भाषण के मतलब, निरीक्षणी के प्रदर्शनमें पर मोक्ष बिचले जगता मेरे क्षीय पर धार है । सभा तथापुत्र और होन कोन को चले, हरिजन बनाया हुआ ही है कोन कोन है ही यह एक उदाहरण को प्रमुख बना । काह ! हरिजन को रणार तथा बीरो के ठेकेदार की हस्ता बनभुज कर पाते ।

दूधरे पिन प्रातः यम हुआ, सब नर-
नापिणों को धातिन दे के लो संस्कार दे
दिया हमने। कुछ बसोबीस को पिन वने,
होरा हमने को कल मैवात बरन सिबा,
परन्तु नह हमारी कोरु कल्पना की।
होपहर को ज्ञात हुआ कि हरिजनो को
सिने यमोपवीत ओझुरो ने सोझ सिय ह
कुछ को पिटाई हो गई है, और कल के
सो को राक्षसपुत्र विषम करत रहेगा।
यसो का बवार काय धातिन दे चल नवा
बसो कि हम को कल की पयिदा यमना
हो। सो बीस को स्थानत और उस की
सिबावरना का पुट भी वे जात, परन्तु

इस अन्वयाज से कि जोड़ा सवार से बिदक
न जाए ।

प्यारे वियन के लोक में क्या यशस्वतः
 हो रही बाहुल्य का सम्प्रसारण करता था।
 मीने बहुत भी कि ऐसा क्यों ? परन्तु स्वामी
 ही के शक्ति-कल्याण के लक्ष्य में मुझे कुछ
 कर दिया, इस हृदयानी की कल्पना
 निराला ने निर्दिष्ट बताया। राजी
 प्रबलन भी हुए। साथ शक्तिमान प्रती की
 साथ धाराशक्ति की विचारप्रवाह का
 मुकुटन पर धृष्ट हुआ लोभमान ने ज्ञान के
 प्रकाश के चरितार्थन साथ विचारों के निरुद्ध
 उन के सामान्य के उद्घाटी बह्युक्त बह्युक्त
 परलुण्ठित किन्तु प्रबलमान में (ओ शक्ति)
 भावार्थ किन्तु कि किन्तु प्रबलमान
 के बाहुल्य में विचारमान का। इन्हें जैसे उल्लसनी
 में उच्च साथ सम्पूर्ण के परलुण्ठित
 के स्वाभाव पर परलुण्ठित शास्त्र की किन्तु
 कर कर्तव्य भावार्थकीयों के बाहुल्य विचारार्थ
 में। इस कल्पना में शास्त्र-मुकुटन
 के उल्लसनी कार्यकारण पूरा साथ के परलु
 की सम्पूर्णप्रती की यशस्वतः के स्वाभाव
 में परलुण्ठित धृष्ट और हर शास्त्र
 लोभ। महोपा में यशः यशः कि हमारे
 शास्त्र के परलुण्ठित हर शास्त्र प्रकाश के इन्हें
 के शास्त्र के भाव यशः ही। यशस्वतः लोभ
 होने विचारमान का। यशः लोभमान लोभ
 में सर्वकार धृष्ट और की बाहुल्य की विचारार्थ
 की परलु

पाठक अनुमान लगायें कि आधारी की फिटाना अत्यन्तकार को बुरा इस परिस्थिति से वे हिन्दू बाकि के जीने के किसमें दिव्य योग है? यमनाथ ही कहिये यमनाथ का जिसके स्वर्गवास के आर्यासमाज कदी भीषण इस अत्यन्तकार को बुरा करने का प्रयास कर रहा है परन्तु यमनाथ यह सोचता था भीषण इतने बड़ अत्यन्तकार को भीषण सेना। यह प्रश्न है तो हर अधिपति को विज्ञान कर देता है।

लाला रामगोपाल शालवाले अभिनन्दन समारोह समिति

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सांवेदिक धर्म प्रतिनिधि सभा के
यसनी सभा केन्द्र में श्री रामायणी
शास्त्रालय का प्राथमिक धर्मनिरपेक्ष करने
था। उस समय पर १९११ ई. में
की सम्मान राशि में करने सम्बन्धी
कार्यक्रम की वेबरी निरूपण प्रवृत्ति पर
है। इस विषय में धर्म प्रतिनिधि सभा
के धर्मकार्य विभाग के नाम में एक पत्र
आया है। विशेष कर २५ ई. १९११
१९११ ई. में जो विषय पर विचार में है
धर्मनिरपेक्ष सभित के विचारों एवं सम्मान
राशि हेतु बन सभ है। सभित विशेष
जागरण के धर्मकार्य पर विचार किया
है। यह बात धर्मनिरपेक्ष का प्राथमिकता नहीं
है। सम्मान राशि के सभों को पूरा करने
में धर्म प्रतिनिधि सभा के विशेष सहयोग

सत्वाश्रोत्रोक्त सत्वालोका एव महानुभावो का
भी सद्योग्य शत्रुवत् कर्तव्यं चाहिए बिमर्को
मानवीय भाषा भी वे प्रति जा है और
को हनते विषय बाधों के समर्थक एव सव-
योगी रह है। उपरोक्त हूले प्रत्यक्ष का
प्रकाशन सांख्येयिक ग्रंथ के ६ बूल के प्रक-
ते मुख पृष्ठ पर ही हुमा है। वन बाह्ये
प्राप्तना है कि श्रोत्रातिशय प्रपनी प्रति-
निधि सत्वा में निरपेक्ष कर सत्मान राशि
के लिए एव सवह करने का कार्य शास्त्र-
करणे की अपा करे।

इस अभिनन्दन समारोह की तैयारी के लिए प्रमुख धार्य जनों का एक विश्वसनीय कार्यकारी बल पिछले ६ मास के कार्य कर रहा है। इस कार्यकारी बल के सदस्य नव्य श्रव तक भोज्य बार दिवसीय

सबह उपरसमिति का भी गठन किया गया है जिसके संयोजक माननीय श्री डोमणगल मरणाहल हैं। साथ ही एक परामर्शदात्री एक कार्यक्रम उपरसमिति का भी निर्माण हो रहा है जिसके संयोजक माननीय श्री निष्कारन्द्रराय बनने मत्तारु हैं। समाचारों के लिए मुख्य समिति धर्मार्थ प्रतिनिधयन समिति का गठन किया जा रहा है, जिसमें छात्रसमिति के छात्रों के अधिकांशों ने मतदान प्राप्त प्रतिनिधयन छात्राधीन के प्रभाव, सब विश्व के प्रमुख कार्य का एक एक अर्थव्यवस्था थी के कारणों से उपरसमिति अपने कार्य बना व्यक्त होने। इसी परिणामव उपरसमिति का सफलता स्वीकार करने के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार किया जा रहा है।

है।
 धार के साक्ष्य प्रार्थना है कि प्रवि-
 नन्दन समिति की सदस्यता के लिए धार
 अपने प्रान्त के कुछ महापुरुषों से स्वी-

नाम के साथ ही उनका पूरा पता और जिस प्रमुख संस्था से उनका मुख्य कर्म से सम्बन्ध रहा है उस संस्था का नाम भी विज्ञान की कृपा करें। इस अभियानम्ब सभिति का गठन राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा है। अत वेस के सभी प्राणों एव अध्ये सामाजी के त्रिष सामाजिक कर्षों का प्रतिनिधित्व सभिति से हो सके, इसका ध्यान रखना उचित होगा।

आवर सहित ।

अथर्ववेदः

डा० आनन्दप्रकाश
सचिवक एवं मंत्री
अभिनन्दन समिति



समाचार-सन्देश

पं० युधिष्ठिर मीमांसक का अभिनन्दन एक सराहनीय प्रयत्न

वैदिक वाङमय के लघु प्रसिद्ध विद्वान् मानवता क पुजारी धार्यविद्या के उपरवी प्रचारक पं० युधिष्ठिर मीमांसक का धार्यसमाज सान् कृज बम्बई म प्रथम प्रथम दश दिवस गया। उनो ज्यो क 'र' स ह त्वा मय स त्रयाय गया। विविष्ट नयनमान् ध्यसितया ध यशैरनन के सैनीको ह सादर धन्यवादन क साथ धार्यय योमानक जा को मय पर न जाया गया। मय पर मुन्य पक्ति म श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक की बलराम जयज्य ए श्री श्रो० लय न्याय थे। मय पर उपस्थित थे धार्य प्रतिनिधि सभा उपराज महाराष्ट्र कीर बम्बई के प्रथम क्रमश की मयसैलन कोषया की दोलनराम बह्मद कीर की प्रोफा नाथ धार्य धार्यय कोषय की धार्यनी धार्य धार्यधुभाय थे। धार्यसमाज सान्ता कुज के प्रथम श्री देवेन्द्र कट्टर ने श्री बलराम जाखर की धार्ययता ने धर्मनिरपन्न समारोह के प्रारम्भ होने की घोषणा की। इस समार के यवला महामन्त्री कैटन बलराम ने जनसमुदाय का धार्य सन्देश के द्वारा किने जा रह कायो का सभा प्रतिनिधियो का परिचय दिया। उन्होंने जा बलराम जाखर की नरुनि म कहां ह्यार लोक सभा धार्य नारक का एकुति कर्त सभा की अननो हल धार्या सकुल के महान पुजारी है एम धर दल्ले अस्थित द्वारा इस समारोह की अध्यक्षता करना गौरव का विषय है। धार्यय साम देव ने श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक की उपरवी प्रकाश पाणिपत्य का धाराप्रवाह भाषण थे कथक प्रवृत्ति सभागाय रोमांचित होकर कलत्र ध्वनि कर उठा। श्री बलराम जाखर ने पण्य पण्डित श्री की

धर्मनिरपन्न पण नैट किया। इस धरधर पर एक न्यवधि न्नारी भी पण्डित की की मं न की गयी। इस पर लिखा या— जीवन पण्य वैदिक धनुस्त्रयान धोर धार्य पण्य की सेवाव समर्पित जीवन के प्रनि कुनता के प्रनीक न्यवरूप पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक को उनके धर्मनिरपन्न समारोह पर ५,५०० रुपये की वैली सहित सादर भेंट—१९५८।

७२००० रुपये की वैली भट करने के पचाउ पुण्य पण्डित की की धर्मनिरपन्न कीमती यशोश को भी धार्य एउ पुण्यसाधो के सम्मानित किया गया।

श्री बलराम जाखर ने धार्य धार्य-धीय भाषण थे कहां— श्री कैटन धार्य न मेरा परिचय देते हुए मुझे एकुल का पुजारी कहा। एकुल को देकर नारती की गा है। मा का पुजारी होना ह्यारी एकुल की हो यपनी मा की सेवा नही करता यह कुनल है। मैं एकुल की सेवा नही कर रहा धार्यनी मा की सेवा करता हू। उन्होंने धार्य कहा मैंने प्रथमयश्री की राखीय वापी को लिखा है—कि इस वस की बलरामता को बनाये रखने के लिए मकलुल नाया के पदम को समस्त नारनीय विद्यापियो के लिए सविधाय पोषित कर दिया जाय। यदि धार्ययाय म किया जा सके तो एकुल पदने वाल विद्यापियो को उन विद्या म धार्ययन के लिए प्रयेन पडु १० अक प्रतिफल चिये जाय। श्री जाखर ने धार्यसमाज सान्ता कुज के धार्यकारियो का इस प्रकार का नमरोह धार्योषित करने पर तथा सकुल के प्रचारक परिचियो के सम्मान करने की मुकुल-कट ने प्रसंग की।

सम्पादक धार्यधनेश

धार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का निर्वाचन

१८ अगस्त १९८३ को

धार्य के १० नम्रा दिल्ली राज्य की धनतरण सभा की एक बैठक धार्यवार ६ जुलाई को सभा सभालय अनुमान रोड में हुई। इस बैठक में निराण लिया गया कि धार्यानी मय १९८५-८६ के लिए सङ्कुल सदस्यो का निर्वाचन २८ जुलाई १९८५ को तथा वार्षिक धर्मिवेशन एवं निर्वाचन १८ अगस्त १९८५ को किया जाये। दिल्ली की सभी सम्बन्धित धार्य-

सभाओ क धार्यकारियो ने निवेदन है कि वे सम्बन्धा शुल्क ३० रुपये तथा वो प्रतिनिधियो का सङ्ख्याय शुल्क तथा कार्यालय में प्रतिनिधियो के नाम सहित धीप्र निजवाय।

अधिवी
सुविध
महामंत्री

भजनोपदेशक संगीत प्रशिक्षण शिविर

१४ से २८ जुलाई, १९८५ तक

धार्यजयल के सुविख्यात संगीताचार्य पं० यन्नालाल जी वीरभूष' तथा पं० धर्मि-बिनय जी भार्गवी' द्वारा एक 'सम्बन्ध-भेसक संगीत प्रशिक्षण शिविर' का धार्यो-जन हो रहा है। इसय धार्यनीय संगीत के साथ स्वंस्य पं० बल्लरीराम जी, श्री० तेजविहारी जी कुशर सुखवाल जी धार्य युवाशिर एवं कविरदन पं० प्रकाशचन्द्र जी वीरभूषो व धार्यपुलिक सरल संगीतो का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। निवास व भोजन नि शुल्क ररगा।

ऐसा धार्योजन प्रथम बार दिल्ली में हो रहा है। धार्यसमाज के भजनोपदेशक

धार्यसमाज सान्ता कुज द्वारा चिकित्सा कैम्प का आयोजन

सन्तार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। कर्हिण धार्यनन के इस धार्यश का पानन करने के लिए धार्य समाज सान्ता कुज न रजिबारा दिनाक २८ अगस्त १९८५ धार्य मेडिकल रिलीफ मिशन के सन्तानधान में नि शुल्क नेत्र चिकित्सा एवं धार्योपन कैम्प का धार्यो-जन किया।

शिविर का उद्घाटन महाराष्ट्र के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्रो० धर्मिल नयनन ने किया। धार्य समाज के योग केन्द्र को वातायुकुलित धार्ययन विष्टेटर में परिचालित किया जिनका उद्घाटन धार्य म श्री महोदय ने किया।

कार्यवैशेषिक धार्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सवानन्य जी धार्य मुख्य धार्यि के रूप में उपस्थित थे।

इस धरधर पर श्री सन्तप्रकाश जी धार्य ने धार्यने धन्यसायिक प्रतिपादन इक-नायिक डान्सचट्टे धार्यना-धेयान की धोर से धार्य मेडिकल रिलीफ मिशन की कय नय पीने वो लाख की एक नवीन सङ्ख्या-द्विका हाल स्वस्थ भेंट की।

राष्ट्र्य भार्य जी श्रो० धर्मिल वरहारे ने सन्पाहिका का पीरा काटकर जुते उतारे धोर रिलीफ मिशन के सन्तानधन स्यामी रामानन्य की वाखरी के कयल कुकर धसकी वाखी नुई धारी।

इस कैम्प में लगभग ४०० रोगियो के नेत्रो का ररीक्षण किया गया एवं लगभग ५० रोगियो की दाखो का धार्योपन किया गया। एउ नवीन अस्थितयो की दाखो का धार्योपन हुषा को ह्यारा का ध्यव तो हूर वो सयन धार्या टाट की नही भर सकते थे।

धार्योपन के सन्पाउ रोगी एक सन्पाह धार्यसन्तान अवन में ही रहे, जहां उनकी सेवाका की गई। उनके भोजन व धार्यी की व्यवस्था एवं स्वस्थ होने पर उन्हें बलया धार्य का निवादन नि शुल्क किया गया हुमा। बरहारे ने कहा मैं धार्यसमाज के इस कार्य के बहुत प्रगाथि हू। धार्य समाज यदि इस काटार के ररीक्षण का

तथा धर्यधरार में रचि रखने वाले सङ्घर्ष करें। सङ्घर्ष व पण्यव्यवहार का री धार्यसमाज नैव विद्यालय १२९ मीतमनगर नई दिल्ली-४९

धानी सङ्गतो व सभाओ से निवेदन है, कि धार्यिक सहयोग सभा साध सधमी (धारा) पायल, धान, दूध, भी धार्य धरान कर पुण्य के भागी बने।

निवेदक

स्वामी सोनारनन सरलस्यो

धार्यय धरिदेव

स्वान धीमन्धननन नैव विद्यालय

मीतमनगर-नई दिल्ली।

धार्य जन साधारण के लिए करता है वो मैं सन्तार की धोर से पूर्ण ह्याराधन करने को तैयार हूँ। श्री सन्तप्रकाश जी के धार्यह पर उन्होंने कहा मैं धर्यसमाज भोजन के लिए बम्बई उपनगर न सन्तार की धोर से भोजन की देवे को तैयार हूँ।

मुख्य प्रतिनिधि श्री यवानन्य जी धार्य ने कहा इस शिविर को सेवाकर मुने धार्य समाज के प्रारम्भिक इतिहास की याद आ रही है। जब हमने जन साधारण की नि स्वाथ्य धार्यना से सेवा कर धार्य नमार्भ को बिबधित किया था। धार्यनमार्भ साताकुल ने हमे धार्य नवीन विद्या का कोष बताया है।

श्री सन्तप्रकाश जी धार्य ने कहा यदि सन्तार हमे नवीन देवी हो तो हम को रारीओ की लागत से धर्यसमाज के निराण्डे गेनु विजुल तैयार है।

धार्य मेडिकल रिलीफ मिशन के सन्पाह पक स्यामी रामानन्य जी ने धार्यके बलधनन ने कहा कैटन बेवर न धार्य के धार्यक प्रथम से इस मिशन की स्वापना हुई धोर धोर हमने निरक्षण एक बरै में पूरे महाराष्ट्र में लगभग ५०० धार्यरेशन धोर ३००० रोगियो का नि शुल्क ररीक्षण किया।

समारोह का सरोजन महामंत्री कैटन बेवरलन धार्य ने किया। प्रथम श्री देवेन्द्र जी कट्टर ने नारकी एवं नर्वा जिनकी नि शुल्क सेवा धार्य हुई एवं कार्यकर्ताओ का, प्रतिनिधियो का सन्पाह किया।

अधिवी

बेवरलन धार्य महामंत्री

धार्यसमाज हनुमान रोड

द्वारा वेदप्रवचन

धार्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली द्वारा १ मीलाई से ६ मीलाई तक श्री पं० यवाननननर स्याक की सेवाका सङ्गन हुई। इस धरधर ४२ की पं० गुणाधिष्ठ रायन के मधुर भजन भी हुए। यह धार्यो-जन बाया बरकविह रोड पर कुने स्थान पर धार्यसाधारण की वैदिक सङ्घसे देवे के लिए किया गया था, जो सङ्ग रहा।

नमनी, कैरीलीलाय कवितक

ग्राम प्रचार

स्वामी स्वस्वाम्य सरस्वती ग्राम-छात्रा नेत्र प्रचार द्वारा १६ जून रविवार को शाम ५ बजे से १० बजे तक ग्राम मधीय (रामगढ़) में श्री कर्णेश्वराम धर्म के निवास स्थान पर एक रक्षा मया मंत्र के पश्चात् ५० छात्राचार प्रेमी और स्वामीजी रात्रि द्वारा प्रबोधनोपदेश दत्त। जिसमें ग्राम के घर-बारियों में जारी सख्या में जाग किया। और निवेदन किया कि हमारे यहाँ कम से कम एक सप्ताह का कार्यक्रम रचना का कर दें। हमारे यहाँ पर ईश्वरों का अधिक प्रचार रहा है जो कि लोगों के प्रबोधन देकर ईश्वरसंत

का प्रचार करते रहते हैं। और बर्न रचित करने कर रहे हैं। इस बाते हैं कि हमारे घर-बार में यज्ञादि वेष्ट करने द्वारा वैदिक बर्न का प्रचार-प्रसार जारी रहे। इस कार्यक्रम के बनाने के लिए श्री रामप्रसाद जी का प्रयत्न रहा। श्री रामप्रसाद जी अपने साथ हनुमन् मुकुट, तागिरी, दरी, श्री हस्तादि साथ एक कर ले जाते हैं और हनुमन् बतिसों में कार्यक्रम निश्चित करके गया का पूर्ण सङ्ग्रहण करते हैं। श्री रामप्रसाद जी का यह सहाजीय कार्य है। ईश्वर हमका प्रत्येक क्षण से कल्याण करें ताकि सत्सत्ता प्राप्त करते हैं।

स्वस्वाम्य

सजिल्द सत्य के प्रचारार्थ

अजिल्द ५००/-

सैंकड़

मृत्यार्थ प्रकांक्ष

घर घर पहुँचाये

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध मस्करण वितरण करने वालों के

23x36-16 पृष्ठ 820 की दर लिख प्रचारार्थ

अम्मा ७/- अजिल्द ५/-

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट

५८५ ११वीं जवाबली, दिल्ली-६ दूरभाष: 238360-233112

दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

दंतों का इलाज



आज नये वैदिक
नये उपकरण

विदेशीय

महाशिया वी हट्टी (प्रा०) लि०

9/44 इण्डियन एरिया, सील नगर, महाराष्ट्र-15

फोन 539608, 537987, 537341

मसूनों की सुख



मुँह की दुर्गंध



ठोका मार्ग चाली
लज्जा



दात का दर्द



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रवेश सूचना

निम्न विभागों में जुलाई १९८३ के

प्रवेश प्रारम्भ है—

(१) विद्याविहीन (इन्टरमीडिएट)

प्रवेशार्थ योग्यता—

१ विद्याविहीन (गुरुकुल कांगड़ी)

२ हाईस्कूल उत्कृष्ट सहित ३ पूर्ण मध्यमा

धरो की सहित (भारतगोपी) ४ विद्यालय

(रक्षा मन्त्रिपरिषद्) धरो की में वैदिक

सहित ५ विद्यालय (गुरुकुल महाविद्या-

लय ब्यासपुर)।

(२) भ्रमकार (बी०ए०)

प्रवेशार्थ योग्यता—

१ विद्याविहीन (गुरुकुल कांगड़ी)

२ इन्टरमीडिएट उत्कृष्ट सहित ३ उत्तर

मध्यमा धरो की सहित (भारतगोपी) ४

विद्यालय (रक्षा मन्त्रिपरिषद्) धरो की में

इन्टरमीडिएट सहित।

(३) बी०ए०-सी० (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष)

गुप १ कैम्ब्रिज, मोटनी, जूनीवी।

गुप २ कैम्ब्रिज, फिनिश, गणित।

प्रवेशार्थ योग्यता—

इन्टरमीडिएट या समकक्ष विज्ञान

सहित।

(४) ए० ए०

१ वैदिक साहित्य २ मन्त्रगु साहित्य

३ दर्शन शास्त्र ४ प्राचीन भारतीय इति-

हास संस्कृति तथा पुरातन ५ द्वितीय

साहित्य ६ मनोविज्ञान ७ धरो की ८

गणित।

प्रवेशार्थ योग्यता—

१ धर्मकार (गुरुकुल कांगड़ी) २.

बी०ए०-सी० ३ बी०ए० ४ बी० काम०

५ विद्याभारत ६ शास्त्री ७ भार्वात

८ साहित्यसत्त।

नोट—गणित तथा मनोविज्ञान विषय

में बी०ए०-सी० परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों

को ए०ए०-सी० की उपाधि प्रदान की

जाती है।

(५) ए० ए०-सी० (भारतगोपीगोपी)

प्रवेशार्थ योग्यता—

बी०ए०-सी० वाचनीय की गुप (बी०

ए०-सी० में न्यूनतम १० प्रतिशत अंक में

उत्तीर्ण)।

(६) बी० ए०-सी०

वेद, संस्कृत, द्वितीय, प्राचीन भार-

तीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातन,

भारतीय दर्शन, मनोविज्ञान एवं धरो की

विषयों में पी०ए०-सी० की मध्यस्था है।

रजिस्ट्रेशन फीस १० रुपये है। प्रवेश कार्य

तथा नियमावली गुरुकुल डाक ब्यस सहित

६ रुपये है।

अथ चितोत्तरार्थ—

१ सुदीर्घ निराक तथा सुसज्जित

प्रयोगशाळाएं पुस्तकालय, एवं सी०सी०,

ए०ए०ए०ए०, जे०डा बादि का उत्तम

प्रबंध।

(२) निर्वर्ण एवं योग्य छात्रों को गुरुकुल

मुक्ति तथा छात्रवृत्ति भी दी जाती है।

विद्यार्थी—

विश्वविद्यालय अनुदान धायों की

धारा ३ के अन्तर्गत गुरुकुल कांगड़ी विश्व-

विद्यालय भारत सरकार के माध्यमता प्राप्त

है तथा उपाधिका सरकार के प्राय सभी

विश्वविद्यालयों द्वारा मान्य है।

प्रवेश पत्र तथा माटर्निफ कार्यालय

से प्राप्त करें। प्रवेश की अन्तिम तिथि

३०-८-१९८३ है।

(रामप्रसाद वैद्यलकार)

(सुरेशचन्द्र स्वामी)

अतमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Paris Beauty

पेरिस न्यूटी

ग्रावर
सेन्स



ब्रा. पैन्टी. बनियान अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि

पेरिस न्यूटी सेन्स कापेरेशन

2665-B/2 बीकानेर पुरा, अजमेर राजस्थान
कठिन बाग नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष-589214-574200-582036

पुस्तकालय
पुस्तक कानूनी विधिविचारालय
हरिद्वार
29/7/85

ओडम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

कृष्णवर्तो विश्वमार्गम्

मूल्य एक प्रति १० पैसे वर्ष ६ एक रुपैयाँ त्रिवार्षिक १६ रुपैयाँ मुद्रित सम्बन्ध १९७२-८५८०-८६ वार्षिक १०-४२ वार्षिकमूल्य—१९६

त्यागमूर्ति आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

—सच्चिदानन्द शास्त्री

सीमे लादे, मोटे कुर्नी बोली में, देरी में चपल, नमो गिर से जीवन-भाषन करने वाले व्यक्तित्व की देख कर कोई यह नहीं जान सकता था कि यह कोई विद्वान् व्यक्तित्व है। परन्तु ऊपर की आचरण के नीचे विद्याल पात्रित्व बरा हुआ था। स्वर्ण, नर्महृदय, महाभारत अस्तिष्क पर धारि हुए थे।

महाराष्ट्रियन ब्राह्मण बचपन में माता पिता की छत्रछाया में दूर पञ्जाब के लाहौर में सस्कृत का गहन अध्ययन कर शास्त्री परीक्षा पास की, अग्रेजी में भी वे निष्णात थे।

धार्मिकप्रभाव और-भाभी दयानन्द का व्यापक प्रभाव उनके मन में अस्तिष्क पर छा हुआ था। अतः लाहौर से शिक्षा पाकर उत्तर भारत हरिद्वार आ गये। धार्मिकप्रभाव की विद्वत्पक्षी हरिद्वार क्षेत्र में जन्म चुकी थी। आप भी उसी में सम्मिलित हो गए। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कान्ही की स्थापना गंगा के पार कान्ही में की यह सब विद्वान् की वही पक्षी।

परन्तु कुछ सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक मतभेदों के कारण स्वामी दर्शनानन्द जी के साथ धार्मिक जी भी धार्मिक और ज्ञानानन्द ने गुरुकुल की स्थापना की गई। ५० नरदेव शास्त्री भी म० वि० आ गये और जीवन वर्ष न गुरुकुल ज्ञानानन्द महाविद्यालय की निष्कृत सेवा की। परिणामस्वरूप गुरुकुल के धार्मिक जी पर्याप्त १० न के थे। १० ज्ञानानन्द नेहम धार्मिक व्यक्तित्व से प्रभावित थे कि आप मुनिक

ही स्वर्ण जयन्ती पर महाविद्यालय धरारे।

त्यागमूर्ति-भाषने पास कुछ की है वह सब दूसरों का है। एक बार एक किसान बाढ़ में ठिठरता था। धारण रजार्थ, गदा सभी कुछ दे दिया। भाषने आप धार्मिक तापकर रात काटते थे। कोई व्यक्तित्व कुटिया पर से लाली हाथ नो जा ही नहीं सकता था।

सामाजिक जीवन में धार्मिकसाज से बच हुए थे। लेख लिखने के घनी थे। सकेने लेख धार्मिक व विभिन्न पत्रिकाओं में सुरक्षित हैं।

गीता-विमर्श आत्मानोचन, श्रद्धावोध-नीच पत्रि धर्मेक पुस्तकें भी लिखी। लेकिन 'वास गरकुल ही रहता था। संकट 'वर्षाधी' सदा ही उनसे प्रेरणा प्राप्त रहा उनसे एक में लेखक भी हूँ। जीवन में न जाने कितनी घटनाएं उत्ती हैं पर कुछ स्मरणीय होगी है। हैदराबाद का धार्मिक मत्वाय रहता था। धर्मिक धर्मिक काश्मीर का नृप से त्याग-पत्र देकर सत्याग्रह में भाग ले रहे थे। काश्मिर से निकाले जागने इसकी उल्टी चिन्ता न थी। १९४१ जी भी सत्याग्रह में जाना तो ४ न के थे पर काश्मिर की प्रेरणा पर। अतः आपने म० गांधी की स्वीकृति के लिए पत्र भेजा। यह सूचना जब समाचार पत्रों में छपी तो बड़ी ते से यकी। परन्तु आपने इसकी परवाह नहीं की। बाद में आप हैदराबाद की जेलों का निरोधक करने गये।

राजनीति के परिप्रेक्ष्य में धार्मिक जी का राजनैतिक

जीवन हैदराबाद क्षेत्र ही रहा। वहीं से सदा कारा के बन्दी बनते रहे। हैदराबाद में बनस्पति पवन के अद्वैत स्व० ५० अमरनाथ बैच का सामाजिक दोनों में अन्तर्संभव संक प्रभाव रहा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सिध्दिक जी ने धार्मिक जी की उ० प्र० विद्यालयका के सिद्ध प्रस्थापी बनाना और के विद्यालयक ही गये। पर विद्यालयक निवास में न रहकर धार्मिक प्रतिनिधि सभा उ० प्र० अवन के एक कक्ष में पाँच वर्ष बिता दिये। साथ ही जीवन धार्मिक का प्रबन्ध उनके सिध्द ५० गेणालदर जी शास्त्री सम्पादक धार्मिक में ही रहता था। जो पेंसा मिला उसे जिसने उनके लिए व्यय किया था उसे वापस कर दिया। लोग हैरान थे।

एक बार गो रस पर एक मांग छापकर सभा में विनिरित कर दिया बनी कानाफूसी हुई। परन्तु राजपिठन तथा प पत्त की सूचक ने सब को शांत करके कोई खवाब तबल नहीं किया। यह उनके व्यक्तित्व की निशानी थी। अन्तर्कर्म के लिए या किसी काम के लिए कभी भी किसी अधिकारी के पास कभी नहीं गये।

अग्रेने जुनक के समय पुन आप से ५० महावीर त्यागी धार्मिक से सहे होते हेतु प्रार्थना की। आपने न-पट्ट कट दिया। क्या मुझे कलकत्ता से कानून गो बनाते हैं। अन्त में ऊंचे पर बैठकर सब को डाँटता हूँ। तब सब मुझे डाँटते हैं। बस अब बाज धार्मिक और वह प्रस्थापी नहीं बने।

साधारण सा व्यक्ति पत्र लिखे,

उसका उत्तर अक्षय मिलेगा। एक बार बीमार हो गये। अक्षय में खप गया कि यह कुछ हड़ताल पर हैं। बड़ा सचकारी स्तर पर हड़ताल मचा। दिल्ली में मनीषण और महा विद्यालय पहुँचे। जब वस्तुस्थिति का ज्ञान हुआ कि कुछ हड़ताल नहीं दस्त पेंसि से बीमार हैं तब वातावरण खान्त हुआ।

इस प्रकार दिल्ली के ब्राह्मण ने उत्तर भारत को कार्य क्षेत्र बनाकर जीवन का पटलाप किया।

बुद्धावस्था धार्मिक शरीर की चिता हुई। एक दिन वह अपने धार्मिक प० नन्दकिशोर शास्त्री से बोले-देखो स्वामी धानन्द प्रकाश की प्रमाण वेला पर एक वंश बाजा था। मेरी विदाई वेला पर दो वंश कर्तन। आखिर वह नमय भी धाय। सारे जीवन का निर्माही त्यागी नयस्वी सन्त भी बलने को तयार। जैसे ही पूरे पंचपुरी में तबल हुई स्कूल कालिब नन्द कर प्रिय धार्मिक को चले अग्निम विदा देने चिता की लपटों में पाथिब सारांर को धर्मित कर प्रमाण किया। □ □

योगेश्वर की कृष्ण विरोधक

धार्मिक पत्र पर ८ सितम्बर को धार्मिक-वेला का योगेश्वर नवीन सामग्री से भरपूर एक धार्मिक विचारक प्रकाशित किया जा रहा है। जिसमें की कृष्ण के जीवन दशन मतभेद पर विविध सम्प्रदाय लेखक महापुरुषों से धर्मेष्टित हैं। विद्वान लेखक कुशाभा धर्मेने लेख निम्न पत्र पर कीर्तन प्रकाशित।

सम्पादक

१९ हनुमान् पत्र

सत्संग साप्ताहिक

उपरिनिष्ठित वेदमन्त्र ने परमपिता परमेश्वर के विष्णु गुण कार्य तथा प्रभु-मन्त्रो को परमपद-शान्ति के विषय में बर्णन है।

स तो बन्धु — जब बैसन सवार का एकमात्र अधिपति हम सबों का सर्वप्रथम बन्धु है। 'स सङ्कन माया का एकमन्त्र-स्वप्न पुलिङ्ग सर्वनाम-पद है, जिससे स्वप्न है कि ईश्वर एक ही है। 'न पर बहुबचनान्त है, जो जीवार्थमाधो के लिए धृष्टा मुमुक्षु है धर्मात् उस एक सर्वाधार पिता की हृदय धनके धमक सत्ताओं है। 'हम सब एक पिता के पुत्र' यह मन्त्र बहुलप्रधानता प्रथम पदमयी में फिलिये कोषाक्ष के धर्मस्वरूप की गई है। 'पर-स्वरूप राग-द्वेषानि मे जलता हुआ यह मानव-सुखदायक पिता हो क्या गुरुकलह, बर राष्ट्र-कोटिद्वय एवं विस्म-सम्पन्न की धर्मशास्त्रीणि विभीषिका हमें सनसत कर पाती? सनसत क्यापि नहीं?

महाभारतीय कौरव पाण्डवों की भीषण सनर-रात्रि में जब एक दिन एकान्त में ध्यानमाधियों की कुलज मुष्ठी। 'शान्त्या गुमनरा सुखदाया धाम्यकमलिन बन्ध-पुण्ड्र धाम्यावधिपु निष्पिण्ड बहुकृत संयापित परमपितापरमेश्वर विष्णुवास्तुतः, धाम्यकमल जगदाधर के प्रति ऐसा कीर्तोर उच्चारणक मातुल होता ही प्रभु-ध्यायित मत्तो का प्रथम लक्षण है।

'जगति' वह ध्यारा प्रभु वकार-बन्धु धर्मशास्त्रकथा-मैत्र के जेण्ड होकर इस सुष्ठि का 'जगिता ह धर्मात् उत्पादक या रचयिता के रूप में प्रकट होता है। स्वप्न है कि किसी भी रचनात्मक कार्य तथा व्यवहार के लिए श्रीनिपुरस्तरा प्रबलत भवति है। यदि बन्धुता हुए बिना भी कोई 'जगिता' होने का निष्कर्ष प्रत्यापन करता तो व्यवहार में ही निपुण हो सकेगा, सुन्दर निर्माण में नहीं। उससे उसका किसी प्रकार का सहयोग न होगा। हमारे महर्षि द्वायनस स्वस्वदी की ने शालयि सवाम में लौकिक व्यवहारों का ज्ञान करते हुए लिखा—'सब से प्रौढियुवक वर्तमानपुर धर्माधोय व्यवहार करता चाहिए।'

कोई भी निर्माता बहुदयतापूर्ण एवं विश्वकल्याण कार्यामाधो से प्रेरित हुए बिना जीवन धर्म में सफल न हो सकेगा। सदा से 'जगिता' रूप में धर्मोक्त उच्चारण मर्यादायें मातुलानि का है जो निष्काम भाव से धर्मोक्ति कारुण्य रूप में कारक करती हुई धार्मिक संरक्षि का निर्माह ही अपना लक्ष्य समझती है।

परम पद की प्राप्ति

वेदाचार्या सावित्री देवी मर्मा

स न बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विस्वा ।
यत्र देवा भ्रमृमानशानस्तुतीये सामन्तधर्म्यन्त ॥



स्वप्न है निष्कल बन्धुना की धेतुकी कृपा।

प्रभु के उपासकों में भी जनिन के पतस्वरूप विश्वप्रभ के रूप में (परी गुण) प्रकट होता है। सत्तो का मातुलद्वय जेन मानव-सीमाओं का धर्मजगल कर भाव-विज्ञान हो पुनार उठता है—'विजवाह बलदा सर्वाधि भूतानि समोले।' 'रघु-वध के चरमक क्षण में कवि-कुल-कमल-विचारक विश्वकवि कालिदास ने महाराज रघु के भावमयल हृदय में विश्वबन्धुल का कैला प्रभुपम वर्णन किया है। प्रह्ला-दारी कौरव महर्षि वरजग के धायम में भुवनि रघु की राजबालों साकेत में प्यारे। सुमुनि लकार के भनतर रघुराज ने धायमभाषियों की कुलज मुष्ठी। 'शान्त्या गुमनरा सुखदाया धाम्यकमलिन बन्ध-पुण्ड्र धाम्यावधिपु निष्पिण्ड बहुकृत संयापित परमपितापरमेश्वर विष्णुवास्तुतः, धाम्यकमल जगदाधर के प्रति ऐसा कीर्तोर उच्चारणक मातुल होता ही प्रभु-ध्यायित मत्तो का प्रथम लक्षण है।

'जगति' वह ध्यारा प्रभु वकार-बन्धु धर्मशास्त्रकथा-मैत्र के जेण्ड होकर इस सुष्ठि का 'जगिता ह धर्मात् उत्पादक या रचयिता के रूप में प्रकट होता है। स्वप्न है कि किसी भी रचनात्मक कार्य तथा व्यवहार के लिए श्रीनिपुरस्तरा प्रबलत भवति है। यदि बन्धुता हुए बिना भी कोई 'जगिता' होने का निष्कर्ष प्रत्यापन करता तो व्यवहार में ही निपुण हो सकेगा, सुन्दर निर्माण में नहीं। उससे उसका किसी प्रकार का सहयोग न होगा। हमारे महर्षि द्वायनस स्वस्वदी की ने शालयि सवाम में लौकिक व्यवहारों का ज्ञान करते हुए लिखा—'सब से प्रौढियुवक वर्तमानपुर धर्माधोय व्यवहार करता चाहिए।'

कोई भी निर्माता बहुदयतापूर्ण एवं विश्वकल्याण कार्यामाधो से प्रेरित हुए बिना जीवन धर्म में सफल न हो सकेगा।

सदा से 'जगिता' रूप में धर्मोक्त उच्चारण मर्यादायें मातुलानि का है जो निष्काम भाव से धर्मोक्ति कारुण्य रूप में कारक करती हुई धार्मिक संरक्षि का निर्माह ही अपना लक्ष्य समझती है।

विश्वकल्य मुन एव धाम्यावक ही विश्व एव शान्तीपिनि की भाति राम-कृष्ण जैसे भुवनायक विभेतिद्वय धार्मिक महामात्रों के 'जनिता या निर्माता बन सकते हैं। एक व्यावृत्त धार्मिक-प्रवर्तन रोमी की सफल शिक्षिका कल्याणमान लोक-बन्धु वैद्य ही कर सकता है—जब पर प्रथम शक्ति रत्नने वाले कोभी सकलक हृदय विश्वसिद्ध नहीं।

वहाँ ऐसी निष्काम विश्वप्रति न होगी, वहाँ उरज सतति, सदाचार, तैकस्वी ध्यान, धर्मकल्याण नार्मिकों का निर्माण न हो सकेगा। ऐसा सत्य धर्मि सफलति से हीन होकर बिनाय को प्राय होमा बैठा कि धाय धर्मयोगी राज-व्यवस्था में व्यवहार परिवर्तानों से स्वप्न है। धर्म वैदिक मर्यादा नहीं है कि प्रभु के सत्य धारसं पथ पर चलते हुए हम 'बहु-वैद्य कुटुम्बक' का उदात्तभाव प्रथमतः धारक करें, परन्तु धर्माधिन 'जगिता' बनकर इस लोक का निर्माण करें।

'विधाता' सर्वशक्तिकारी प्रभु बगद-बन्धु होकर अपनी जनिनी शक्ति प्रकट करता है, फिर स्वर्धरिष पयारों का ध्या-योग विधान करने के हमारा 'विधाता' कहलाता है। बहुमुनि विधान ही ज्येष्ठक बल्लु की मर्यादित करता है। धाम्यका लक्ष्यकला एवं धर्मोक्ति पयारों का बिनाय कर देता है। किन्तु वैधानिक मरुन है। जो जगिता है वही योग विधाता ही सकता है। सब जगिता (निर्माता) को विधान हेतु पूर्ण स्वतन्त्रता होगी चाहिए परन्तु धर्मि बासकों के जगिता माता-पिता ही तथा नियम विधाता शक्तिधारी (परीणी) हो तो परि-स्विति सवामें नहीं समझेगी। ध्यानों के 'जगिता' या ज्ञान-कल्याणता धार्यां हो जोर उनके धाम्यन, विश्वधर्म, धारार ध्यायि की सज्जिता बनाने वाले 'विधाता' कोई दूरक सिद्धा विधानीय धर्मिकारी हो तो फिर वर्तमान दुर्गुणित लक्ष्यकला धाय से किसी नहीं है। विधेय विचारों की धाय-सकलता गेहरी है। सभी विधानों में जगिता विधाता की जेहवमें नीति के दुर्गुणितकल्य संश्लोनी है इसमें 'जगिता स विधाता' किन्तु छोटी छोटी सब प्रतीति होगी कि विष्णु हृदके प्रसिद्धक धाम्यन में हमारी शिक्षि निर्धारों को धायुल परिवर्तन कर दोर

ध्यान्ति उत्पन्न कर दो है।

"धामानि वेद भुवनानि विस्वा"—बहु कृपापु पदस्य सकल पयारों-विधानों का बिनाया या विधाता है धर्म (विष्णव) समस्त (धामानि) तेजोमय (भुवनानि) भुवनी की (वेद), सभी प्रकार काजाला है। इस भगवाय से तीनों धर्म विभेति रूप के जगित होते हैं—१ बहु ईश्वर सर्वज्ञ है, २ उसकी सृष्टि ज्ञान-विज्ञान में परि-पूर्ण है, तेजस्वी विधाता के तेजोमय धर्मक भुवन हैं, ३ धर्मियल लोक-लोका-नरी का सर्वज्ञता होने से वही हमारा ऐहिक-नारलौकिक पयो का सच्चा नियंत्रक हो सकता है, मत उसी की उपलब्धा करी चाहिए।

'यत्र देवा भ्रमृमानशानस्तुतीये सामन्तधर्म्यन्त ।'

(यत्र) वहाँ (देवा) विष्णु-गुण-सम्पन्न जिलेजिय योगीजन (भ्रमृमान-शानस्तुतीये) लौकिक धामानामय में मुक्त हो भ्रमृलक को योगते हुए (सुतेये धाम्य धर्म्यरजगल) मोक्ष पथ में रमण करते हैं।

स्वप्न है कि जलून मानव-जीवन को प्राय कर जो मनुष्य विष्णु गुणों का लक्ष्य करते हैं, मरणा बाधा कल्याण स्व-सत-पाशन एवं सहाचर्यति के सेवन से परमेस्वरोपाशना की योग्यता को धारण करते हैं ने ही जन्म-मरण के दुःख पयारों से मुक्त हो धर्म-पथ के धर्मिकारी होते हैं। इतीधिय धम्यन विधा की काजि-धर्मा महर्षिय ज्योतिष में 'दुर्गम पयसल्ल कर्मो वरति' दुर्गम पथ कहा है। प्रभु-पद-शान्ति का पथ धुरे की दीधन धारा के समान बताया है यह धम्य, मानव तथा वैद्य-कोटिरी में से यह पद वैद्यों के ही प्राय है।

ऐसे वैद्यमय जीवनमयल होकर करीर स्वयं के धनतर उस विष्णु लोक में रजग करते हैं, जिसे वैद्य की भाव में मुक्ति पथ कहा गया है।

यद्यपि विधि मत-मतावरों में भुल्य के परम्परा प्राय्य धर्मों का धनक प्रकार के बर्णन किया गया है किन्तु उनके बगित लोक धर्मिक मोहों के ही परिपूर्ण हैं, सब उनमें कोई विशेषता प्रतीय नहीं होगी। धर्मार्थ-काय को वाक्यकोषेन सुधा-सिद्ध करने के बाय मोक्ष पथ की प्रायि वैद्यों द्वारा प्रतिपादित है। यही हृदयभास वैधानिक पदति है।



सम्पादकीय—

पाकिस्तान का परमाणु बम—भारत चिंतित

जुलिकार बली खुट्टो ने १९६५ में कहा था 'भगर भारत म्यूकलीय बम बनाता है तो हम पास बाकर भूबे रहकर भी अपना बम बनायेंगे।' भारत ने तो परमाणु बम बनाया नहीं और न ही इस प्रकार का घटिकोण हो रहा किन्तु पाकिस्तान अभी से परमाणु ऊर्जा के विषयक उपयोग में निरन्तर धागे बहा है। इन बात को सारी दुनिया जान चुका है। विशेषकर इस समयना ये इन्कार नहीं करते कि पाकिस्तान परमाणु बम बनाने की तकनीक जान चुका है और सायद बम भी बना चुका है। गत वर्ष अमेरिकी प्राधिकारियों ने पाक व्यापारी को टेक्सास से इसलिये रवाना किया था कि वह अश्वेत रूप से ५० हल्वेट्रोनिक लटकों [या थोड] पाकिस्तान भिजवाने के प्रयत्न में सलग्न था। सम्प्रति ये लटके किसी भी प्रकार से पाकिस्तान को प्राप्त हो गये हैं जो परमाणु बम के विस्फोट में प्रयोग किये जाते हैं। सारा विश्व हैरान है कि यह लटके अमेरिका से पाकिस्तान कैसे पहुँच गये? जब कि अमेरिका पाकिस्तान के मसूदों से बाकिह है और यह सापत्ताही कितना बड़ा कहुर आ सकता है। ये सलजु भी अनुमान-मय है। इन हल्वेट्रोनिक लटकों के सफल परीक्षण कर लेने से यह भी स्पष्ट है कि पाकिस्तान बिना विस्फोट के बम बना रहा है। हर बीज का प्रजनन-प्रजन परीक्षण कम बम बनाना इस साजिश को भी उजागर करता है कि पाक बिना अमेरिका के दुनिया को पता न चल सके और काम हो जाये।

अमेरिकी राजनीतिज्ञ जो खोलने में कहा था—'मैं किसी को फूटा तो नहीं कट्टा पर पाकिस्तान जो कह रहा है उससे कही ज्यादा उसके काम बोल रहे हैं। अमेरिकी प्रतिष्ठा म्यूकलीय प्राधिकरण को प्रस्तुत की गई विवेचनाओं को रिपोर्ट के अनुसार समुदाय है कि पाकिस्तान इस दशक के उत्तरार्ध में प्रतिष्ठित म्यूकलीय बम बनाने की क्षमता प्राप्त कर चुका है और १९६० तक तीस यूरेनियम बम बना चुकेगा। भूबे रहकर और पास बाकर बम बनाने की योजना और खुट्टो ने १९७२ के युद्ध हार जाने के बाद प्रारम्भ कर दी थी। राष्ट्रपति के तुरन्त बाद इन्होंने अपने वैज्ञानिक कुलाकर प्रोजेक्ट ७०६ का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत १९७३ तक पाकिस्तान ने प्राकृतिक यूरेनियम के हथनवाला अथवासाधित हथनवाला म्यूकलीय रिफेक्टर स्थापित कर लिया था इसमें कनाडा का भी सहायता ली गई थी खुट्टो ने फ्रांस से भी सौदा किया एक ऐसे प्लूटोनियम पुन सत्ता बन सयत का जिसमें प्रतिष्ठित ३०० पीड प्लूटोनियम सञ्चित हो सकता था। इतने प्लूटोनियम से ३० परमाणु बम तयार हो सकते हैं। १९७६ के समझौते के बाद फ्रांस ने इस सयत का काम बन्द कर दिया था परन्तु कुछ फ्रांसीसी कर्मचारी गुप्तपु इस कार्यक्रम को सहयोग देती रही। पाकालान ने इस सयत के ६५ प्रतिशत का नक्सा बहुत ही गोपनीयता से प्राप्त कर लिया। इसी काल में पाकिस्तानी बम के निर्माण करने में जो जान से जुटे डा० भन्जुल कबीर सा हालैण्ड की फिजिकल डायरेक्टिव रिपब्लिकेनरीटरी से म्यूकलीय रिफेक्टरी के उपयुक्त यूरेनियम को तयार करने का जानकारी लेकर पाकिस्तान लौट चुके थे। पाकिस्तान ने डा० भन्जुल को इस चारी की महानता की उपाधि दी गयी और इन सम्मान का और अधिक चिरस्थायी बनाने के लिए काट्टा परीक्षण सयत का नाम बंद कर डा० भन्जुल कबीर सा रिपब्लिकेनरीटरी ल दिया गया। डा० भन्जुल कबीर ने ऐसी १०० यूरोपीय, कर्मागिय और अमेरिकी फर्मों को सूची भी प्राप्त कर ली थी। ये फर्म पाकिस्तान को प्राथमिक उपकरण उपलब्ध करा सकती थी। नकली यन्त्रों की माह में पाकिस्तान ने उपकरण प्राप्त भी किये।

१९७८ में लीबिया की सहायता से पाकिस्तान ने नाइजर से ५०० टन यूरेनियम बकसाइड लिया। फरवरी १९८४ में डा० कबीर सा ने कोयला कर दी कि पाकिस्तान ने यूरेनियम सर्वश्रेष्ठ प्रक्रिया की तकनीक प्राप्त कर ली है। परन्तु पाकिस्तानी राजतन्त्र हमेशा इस बात का साधन करते रहे। खुट्टो ने अपने सम्तरणों में लिखा था—'हम

जानते हैं कि इसाइन और दसिए अपनी के पास पूरी म्यूकलीय क्षमता है। ईगाई यहूदों और हिन्दू सन्तानाओं के पास भी यह क्षमता है। साम्बावादी ताकतों के पास भी है परन्तु इसाई ताकत ही इनसे बचित है। परन्तु खोष ही यह स्थिति बदनने वाली है। राष्ट्रपति जियाउल हक ने भी इसी बात को दोहराया चीन भारत रूस और इसाइन के पास परमाणु हथियार हैं भगर पाकिस्तान के पास भी ऐसा हथियार हो सकता है तो इससे इस्लाम की ताकत बढ़ सकती है।

अमेरिकी सीनेट एलन कस्टन ने पिछले साल जून में सीनेट में प्रस्तुत एक रिपोर्ट में पाकिस्तान द्वारा परमाणु बनाने की दिशा में की गयी प्रगति के बतौर से आगाह करते हुए कहा था कि इस बात के बहुत से सुत्र हैं कि पाकिस्तान ने परमाणु बम बनाने की पूर्ण क्षमता विकसित कर ली है। एलन कस्टन ने पांच मुद्द अग्रणी रिपोर्ट में उठाये थे।

१ पाकिस्तान के पास काफी म्यूकलीय वैज्ञानिक हैं और म्यूकलीय बम बनाने में पाकिस्तान ने सभी उपकरण जुटा लिये हैं। दुले बाजार में उपकरण खरीदने के अलावा हालैण्ड से वह मोसल सामग्री चुराने में सफल हो गया है। पवित्र जर्मनी और फ्रांस की कम्पनियों का मात तुर्की के जरिए चोरी किये पाकिस्तान पहुँचाया गया रहा है।

२ पाकिस्तान अरबों डॉलर म्यूकलीय क्षमता पर लक्ष्य कर चुका है। लीबिया और सऊदी अरब ने भी पाकिस्तान को प्राथमिक मदद दी है। १९८१ से अब तक अमेरिका भी ३२ अरब डॉलर की पाकिस्तान को मदद दे चुका है।

३ हालैण्ड से चुराये गये नक्शों के आधार पर काट्टा में स्थापित परमाणु सयत जिसकी तैयारी सन् २००० से ३००० ऐनैट्रिक वर्क मुनिट है। इसका मतलब तीन म्यूकलीय बम बनाने की क्षमता।

४ पाकिस्तान को चीन की मदद मिलने से वल्विलान के पहाड़ी क्षेत्र में म्यूकलीय परीक्षण स्थल विकसित कर दिया है।

५ पाकिस्तान को अमेरिका में ए० १६ नडाइल बनवक मिल चुके हैं।

साथ ही यह भी कहा गया कि हम तीसरी दुनिया को म्यूकलीय शस्त्रों को ऊँची होड़ के कपार पर लड़ें हैं। जो दुनिया के बिना से सहायक हैं निर्माणे में नहीं।

बनारस जिया ने लन्दन से प्रकाशित एक घरवी पत्रिका के माध्यम साक्षात्कार में कहा— पाकिस्तान को परमाणु बम बनाने का प्राधिकार है और हम बारे में कोई बल उस पर दबाव नहीं डाल सकता। उन्होंने कहा पाकिस्तान अमेरिका के इस दबाव के मादने घटने नहीं देकेगा कि वह परमाणु बम न बनाए। हम इस बारे में अमेरिकी आग्रह मानने के लिए इयलिये भी बाध्य नहीं हैं क्योंकि अमेरिका ने परमाणु प्रसार परिमोषन सत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए भारत इसाइन और दसिए घबोरा पर दब न ली।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने अपनी चिन्ता प्रकट करते हुए कहा है, 'पाकिस्तान द्वारा परमाणु बम के बनाने प्रयत्नों से भारत बहुत चिंतित इसलिये है क्योंकि पाकिस्तान भारत पर कई बार हमले कर चुका है। बात इससे स्पष्ट है कि पाकिस्तान का बम किसके खिलाफ इस्तेमाल होगा। भारत की पाकिस्तान पर शोषातिशोष प्राथमिक संप्रदाय अन्तर्भूत शक्ति बल बनाना राष्ट्र और पाकिस्तान को हतोत्साहित करने की हरसम्भव कोशिश करने चाहिए। समस्त प्रयत्नों के निष्फल होने पर यदि विश्व धागा दे तो मैं कहूँगा, इसाइन ने जैसे इराक को रोकने के लिए जबरदस्त कार्य किया था वह प्रयोग भी आभयाना गलत नहीं होगा क्योंकि परमाणु श्रातक को अपनी दोड़ को पहले ही रोक देना अनुभूता पर उपकार होता।

—यशपाल सुभाष

(लेख पृष्ठ - पर)

पहले प्रचार करवाओ—

भोमान् बाबुराम जी बाबुनारे धन हमारे मध्य नहीं रहे । १९६४ ई० में वह किसी छरकाठी काम के लिए सोलापुर पधारे । मुझे मिलने के लिए नगर के बाहुर ही००० बी० कालेज पधारे । सोलापुर का समय था । मैंने भोजन करने के लिए प्राथमा की । बाबुराम जी ने कहा, पहले मेरा व्याख्यान करवाये फिर भोजन करूँगा । मैंने बहुत कहा कि भोजन का समय है आप पहले भोजन तो करें परन्तु वह न माने । मेरी पत्नी ने भी बहुत कहा पर आपने एक न सुनी ।

सब हारकर मैंने कालेज के धर्म भुक्त खाना के एक ठो युवको को लिया और कालेज में एक थो प्राध्यापको के सहयोग से एक सभा की । मराठवाका के खान उन्हें आगत थे । उन्होंने धर्म-विद्यापीठ पर एक बड़ा मुक्तिपुत्र का रोचक व्याख्यान दिया । वह एक प्रभाषणाधी बन्या थे । बोलने की शैली बहुत ही थी । प्रचार करते फिर आपने भोजन किया । वह एक बार धर्मोत्तर पधारे । यहाँ भी यही कुछ किया । हरकारी काम करते फिर वैदिक एवं प्रचार का धर्मसमाज की सेवा करते जाने व पीने की लोचने वाले देश बर्नवीरो पर वह खाना बिलना भी नई करे बोधा है ।

भूलो मत ! भूलो मत !

धर्मसमाज बाजार कीदाराज ने १९५२ ई० में बाबुराम पधारे पर बार व्याख्यान देते हुए भी १० रामचन्द्र जी हेतुकी ने एक घटना सुनाई थी । धर्म भोक्तु सभा देहली में धर्मि बोध पये मनवा । भारत के स-कासीन मुख्य व्या-भाषी ' पाठकजि साहनी की को

तस्मामन्त्र—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा—४

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

धर्मसिन्धु किया गया उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा धर्मि दयानन्द की सब बातें ठीक व हितकर हैं परन्तु एक बात उनकी ठीक नहीं । जिस दयानन्द ने मुक्तिपुत्र का कायम किया है । जब मुक्ति में भी भगवान् है तो मुक्ति पूजा में क्या दोष है । इस विषय में स्वामी विवेकानन्द का मत ठीक है ।

वह बात सब ने सुनी । धर्मसमाज के सिद्धान्त में भी सज्जनों की यह भावनात्मिक बात चुपी । की १० रामचन्द्र जी हेतुकी मन्त्र पर विराजमान थे । आप उठे और अपनी सुन्दर शैली में बोले— ईस्वर सब व्यापक है । यह ठीक है । वह मुक्ति में भी है, यह सब है परन्तु परमात्मा का धारणा में मुक्ति में निमाण प्रसम्भ है । कारण परमात्मा तो बड़ा है, माना मेरा या धारणा तो मुक्ति में कुछ नहीं सकता, धर्म मुक्ति पूजा निरर्थक है । कहा धारणा व पर-मात्मा दोनों ही बड़ी दोनों का मिलाप होना, और यह स्थान है हृदय सन्धि । १० की इस निर्भीका के सिद्धान्त रखा का सब पर धारणा प्रभाव पड़ा । धर्मसमाज का यह सैलाने के लिए हमें ऐसे विद्वानों का अनुकूल करना होगा । राजबंशधारी की बाटुधारिता से तो हम नुनये, उन्नये नहीं ।

कर्तव्य की पुकार विवाह पर नार

धार्मानर् महारथी की १० धार्मिक-प्रकाश का विवाह था । श्री १० बुद्धदेव की विद्यालङ्कार विद्याह संस्कार के लिए गए । धर्म प्रतिनिधि सभा पत्राका की विवाह के बारे कायम का पता था ।

विवाह संस्कारों की धृता था कि श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द की का तार पठुंभ गया । श्री १० बुद्धदेव जी ने तार खोलकर पत्रा व सुनाया । तार में लिखा था कि साहोदर मे धार्मानर् है धीर प्रभुर्भ । १० धार्मिकप्रकाश की पत्नी की घर पहुँचा कर बड़ा सनिक न रहे । एक बर साहोदर की प्रस्थान किया । धार्मानर् बड़ी धार्मानर् करके वैदिक धर्म की विषय का डका बचाया ।

पाठकजन्म । क्या इस घटना पर किसी टिप्पणी की धारणयका है । धाज के ओषवादी युग में Honey moon (विवाहसप्ताह) के दौरान में इस दृष्ट घटना का मूल्यांकन करना । धर्मसमाज का यथो-मान ऐसे तथोसिद्ध सुनो के कारण हुआ और धाने भी होता ।

‘मैं विकास माल नहीं’—

महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व व

धार्मात्मिक प्रभाव से राजस्थान के एक तपस्वी महात्मा काजूराम जी योगी धर्म-समाजी बने । धान ने धर्मसमाज की बो सेवार्थ की है वह सदा धर्मव्यमण्ण रहेगी । भोक्तुपुर के महाराजा सर प्रताप सिंह व- प्रदेज भक्त थे । धर्म के उन पर ऐसी कृपा रधि- की कि योगी ने बिलने Tillas (बिलान) इ-ते दिये, उतने किसी भी और राजा, महाराजा, नबाब व निजाम को न दिये । इसका रहस्य ता प्रतापसिंह का गुणगान करने वाल जानने ही होगे । यही महाराजा सर प्रतापसिंह अपने की धर्मसमाजी भी कह-ने थे ।

इन महाराजा साहब के प्रेमी भक्त थे स्वामी प्रकाशानन्द जी । उन्होंने महाराजा साहब की ओर से महान्ता काजू-राम जी की एक पत्र लिखा कि धार ओष-पुर महाराजा साहब के साथ उठे और, धार्माकी बहुत धार्मिक सहायता दी जावेगी । प्रभावित ५० ६० रुपये निमा करेये । महारामा काजूराम जी ने धर्मसम्व उत्तर दिया कि मैं विकास माल नहीं । मुझे धर्म और ऐश्वर्य नहीं चाहिए । मुझ तो वेद का, भुक्त का और धर्म का न-पला है । मुझ कुछ सहकर धार्माधन धर्मसमाज की सेवा करने वाले, प्रलोभनों की दुष्-राने वाले मुक्त-साज पर लात मारने वाले पूज्य महान्ता काजूराम जी का वह उदा-हरण धर्मसमाज के प्रत्येक सेवक को कर्तव्य धर्म पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा । ईस्वर करे कि हम मुक्त स्वामी के लिए वेद मार्ग में धुल न हो । धर्म के रास न बने का- से न बचवार्थ । वेद पत्र पर कुछ कष्ट सहन करना भी पड़ तो बिकसित न हो । यह घटना तत्कालीन पत्रों में छपी थी । महारा-जी का यह पत्र हमारे रिक्तों में है ।

किशोरमन्त्र—

धीर बालक दुर्गादास राठौर

भोक्तुपुर नरेश महाराज सनवत सिंह जी के पास उनकी साक्षिधियों (ऊर्ध्विनी) के रखकों में यह सुचना पहुँचाई कि एक सोभारण किसान के लड़के ने एक धारिणी को मार डाला है । महाराज ने उस किसान की पकड़कर आने को कहा । किसान का नाम था धारसिन्धु, वह राठौर राजपुत्र था । महाराज के आगने वाले पर उसने अपने बालक की धारि करके कहा— 'भोमान् का प्रपरापी यही है ।

महाराज ने कोच के डॉक्टर दुष्का— 'उपने धारिणी मारी ?' बालक ने निर्ज-मया दुष्का स्वीकार कर दिया । दुष्का पर पर उठने कहा— 'मैं अपने वेद की रक्षा

कर रहा था । साक्षिधियों को आते देस-कर मैंने धारि कीचकर बरवाहे को मना किया, परन्तु उसने मेरी बात पर ध्यान ही नहीं दिया । हमारी फलन नष्ट हो जायेगी तो हम धारिधे क्या ? अब इस साक्षिणी ने मेरे वेद में कुछ डाला, तब मैंने उसे मार दिया । सुखी साक्षिधियाँ और बर-बाहु भी मान गये ।'

एक छोटा सा बालक एक नवभूत ऊँट की मार डकटा है, वह नास नस में बगती नहीं थी । महाराज ने दुष्का—'दुपने साक्षिणी मारी कहे ?'

बालक ने इन्वर-उत्तर देना । एक पक्षाधिन ऊँट आगने से का रहा था । वह उस ऊँट के पास था और कपट से उस-

बार कीचकर उसने ऐसा ह्राप मारा कि ऊँट की गर्दन छन्न गई । उसका खिर खिर पड़ा । महाराज उस बालक की बाराता पर बहुत प्रगल्भ हुए । उसे उन्होंने अपने पास रख दिया । यही बालक इतिहास प्रसिद्ध धीर दुष्कास हुए । धीरपतेज जैसे

कूर बावसाह से इन्होंने सनवतसिंह की रातो सवा राजकुमार धर्मोसिंह की रक्षा की । मारबास राज्य काय धवनों के पजे से इन्होंने ही उबार किया ।

—प्रलोथा बलवीर धारही

अमृत कलश

उपकार

मैं रहिये तुम होत हैं उपकारी के भङ्ग ।

बाटव बारे के सर्व ज्यो मेहदी का रङ्ग ॥

धीर मो बलवन्त ने उपकार बन्धुधो ।

को सद्गुद से लिहा हम है यही बरसा गया ॥

तुलसी या संसार में, पाच उलत हैं हार ।

सखज्जति धीर हरि नचन, दया, धर्म उपकार ॥

मिमा कथ्य उत्तम तुम्हें, कर से कुछ उपकार ।

सवय न बहु किमि सके, जीता धाय न हार ॥

धार्मिकप्रपत्र धर्म नोपकार करोति य ।

धकारी भोपमानेस ककारडिलता प्रवृत्त ॥

मो धार्मिकर पर को प्राप्त करके भी उपकार नहीं करता उसके जीवन की विपकार है ।

व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा माला-१०

परमात्मा विचार

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

इस पदचतुष्टय पारार सवार को देख कर यमना ना की महान महिमा का ज्ञान मन में स्वयं उत्पन्न होता है। वह स्वयं इस महान का ध्याहार है। उसके ही प्रसाद से हुए एवं वस्तु से प्यार है और उसको भूषक मनुज हुए प्रकार से तु को भी है। जोवन क प्रसाद साधरी को अस्वारी को। उसके अपनी सुता से एक को उसका बान पिपा खीर साह हो यह भी दावा विगत कि कौन को भूषक प्रसाद जैव जीवन को न मिलाता। किन्तु वह भूषक कर्म है कि पावार का कोही है साधारणिक बन्धारी को बर ममता। साधारणिक बन्धारी को देखते से जो कर्म प्रसाद होता है उसका सम्बन्ध सवार से साधरी ही है। वह यमना ना की मही रहता, वह नासावन है और जो पयसावनी को बाध से पौर निष्कमना है वह स्वयं स्थिर है और स्वयं बाबरक का कोही नहीं है, पयसु मयुज यमनी भूषक जाता है। परन्तु स्वर को ना मयुज को प्रमन कर ही है और साधारणिक कर्म करने से विप्र भागे बहारी और तुम से पिपा छुवाती है। उतरत मयुज दोहे बाध का सवार है नास मही रहता, वह हस्ते स्वयं जाता है और प्रत्येक से पयसावना करता है। परन्तु मयुज को कुछ बन नहीं पाया। किन्तु मयुज किसी का उपहार करता है और कोही किसी क साध सहायुज करता है कोही किसी को विप्रेत से समय प्रसाद प्रेषता है और कोही जितने हुए को हार का सहारा देकर उठाता है। किसी ने कहा है स्वयं से सहायता दी और किसी ने दूसरे को मेक नहीं पाया। इससे देखते से जाता है और मयरा का कार्यमन ही से सम्पन्न बनता है। कोही एक मयुज न सब से सहायता से ही धकता है और न कोही बन को सहायता से ही धकता है। यह मयरा ही है और जो न मय निस्वरक से सहायता न सक्ते है और न से ही सक्ते है। परस्पर सहायता से सवार बन रहा है।

पर तु एक पन्मात्मा सबका द्वन्द्व
रात्मा प्रणीमात्रका सबारा मज से
चापक और मज से न्याय है। कोई भी
बीज उसी नै है जो कि ना इसकी सहा
यता व द्वन्द्व द्वन्द्व (व्यक्तित्व) को
हिरर रत्न मज फिर ऐसे दत्ता के दान
को भुल जाना एते दम् को ह्य न से न

मना स्वयं ही अपने को प्रमाद में फलाना है। यह बुद्धिमानों का काम नहीं, यह विद्वानों का मन्त्रेय नहीं। यह काम तो सहज या पर गलती से अपने विचार को धर से हटा बिना, जिससे गुप्त काम में सुखी हो, उसे काम में चुप्पटी होना प्रकटी था। समय हाथ में जाता रहा और इस प्रकार जिनो को घटाकर बैरियों को हुनात रहा।

सत्य है। सत्य से जो कार्य किया जाता है उसका फल सच सामने आता है। यह मनुष्य की सही जागत। यह भी सत्य है कि साधारणिक लोग सब को सब सवाकरा न देख पाते हैं। अपनी कुरबता से सब को सत्य सब से हटाकर मुझ पर ले जाता है। यह साधारणिक लोग हूँ हम मनुष्य को अपनी ओर भावसक्त होकर रखते हैं। मनुष्य जातवा हुआ भी इनके नेत्र में पडा रहता है। यह मोह हर क्षण मनुष्य को छोडा देते हैं यह मनुष्य के लिए भित्त के सेब जे सतु है। जब पहने पहन मनुष्य नकल करने से पता है तो भावित्वा को छोडकर भावित्वा को ओर बढता है। सब पुण्य जे सेब भी कर सकता। पण्य देखने में समुद्र, पण्य बसल जे पण्य से भी बुरी है।

पितामह पुरुष सदा योगो मे । उन्मो
 सव मे सदा योगो मे । प्रभु को सदा मे स मे
 हे हस्तस्य मे यस्याना मे योगो हस्तस्य मे ।
 उन्मो सव मे सदा योगो मे । किं नमः साक्षात्
 योगो की भावना बाती दहो ही । ओ
 नमस्तु मे योगीश्वर ज्ञान की दृष्टि हो । बाती
 हे । किं उन्मो ह । बहुत बाती बातसि
 स्व मे सदा योगो मे सदा योगो मे । भगवान्
 की दृष्टि बाती योगो की यस्याना मे स
 निवासी ही । मनुष्य का साक्षात् स
 यही वा । यहुन हर ही मनुष्य का सां
 सनाम हो साता हे । पणुह हस्त सां
 मे सदा योगो मे सदा योगो मे । योगी
 सदा योगी पथिभन कना मारिह
 हस्तस्य योगी प्रेमी मही । योगी नमो
 मनुष्य को यस्याना मारिह । योगी नमो
 योगी नमो । इत सयमना को हस्त करतो
 मे सदा योगो मे सदा योगो मे । योगी
 इत्ये की नमः योगीश्वर निमन्त्र मे । यहु
 मनुष्य की वन्मनी यहु । हरी योगीना
 मही यः को योगीश्वर मे सदा योगो मे
 योगीश्वर मे । योगीश्वर योगीश्वर
 मे सदा योगो मे सदा योगो मे । योगी
 मे सदा योगो मे सदा योगो मे । योगी
 मे सदा योगो मे सदा योगो मे । योगी

कर कही जाता है। वह तो सर्वव्यापक है, ह्रस्व स्थान पर ह्रस्व वसत्य उपस्थित है। मनुष्य ? तु सको पाने के लिए कही ईद रहा है ? बास्तव में वह तो तेरे भीतर है ही, परन्तु तु उसने घसाबाधा है, वह तो तेरे घर में है परन्तु तु उसे ईदने के लिए बाहर भूम रहा है, वह तो ह्रस्व वसत्य स्थान है परन्तु तु उसने धन्य है, तु सकार के विषा है परन्तु वह विषा में प्रकट है। वह परमस्थिति परमात्मा ह्रस्व वसत्य एक रस में ही रहता है। परन्तु तु धन्य है भूते विषाओं के कारण उसको नहीं पा सकता।

यह सब सुनकर उसी ने उत्तरना
 और बोले बूढ़ासाहो! बाता है परन्तु
 यह इन लोगों बचपानी से बिरह है।
 यह एक है बचोकि सतरा मोही जेसा
 नही है। यह नरु है हर और बचोकि से
 समीर है। यह सब ने बडा और सोते से
 सोती है। यही कारण है कि वो तुम
 पछि वाता है ये सबको ये सब ने पछु
 को तुम पछि वाता है इतने यह नरु
 मागता है। वो इतना शकुन है। यह
 साहज वाता है, क्योंकि बाता परनामा
 को मागना है। बिचा, सतनी को
 नम्रता को बडाते है। ईर्ष्या, ईश
 भावि बाहुर को पडाते है। इसविष मनुष्य
 को बुझको में मन बाता और को
 मन में हदता मागता। मनुष्य को ऐक्य
 मन मुझ सम्यक्ति मोनते हुए परनामा
 को बचपना वाता बाहिर को दुष्टि
 बचपना में ही सोचो को कनी हाते
 नही सोचना बाहिर। इस प्रकार रहते है
 और वॉय यह और मन साफ रहते है।
 यहधारी को मनुष्य पुष्य यह सुनने ही
 बडाते है। मोक्ष एक प्रभु को बचन है।
 बिना सब बाता बचा मनुष्य की बचनी
 होकर उठते बाय पर चम पडाते है।
 यह सुनने को तुमना बहुत नम है।
 यह नरु वराता है मनुष्य ने बेकरार नरु
 होकर बचता है। जैन मित्राणी का पात्र
 कनी नही पडाता। ऐसे ही मनुष्य को
 कनी चोपय नही होता है। बचपना में
 परनामा का निवास कहा? सुखा, मोक्ष
 एक प्रभु का निवास है, बिस्मै एक प्रभु का
 निषेध पर। पर जसे छुडाता बचपना में
 सतनी पुष्य को रुसना नर है। प्रभु
 सोचने को किए यह हर स्वाय पर है। यह
 एकेश्वरी भी परगुर हर हेर मनुष्य
 में हर सचम एक रहते है। परनामा सतनी
 नर है। हर जेसा है मनी इतने से नर

संयतन के साथ है समको और अपना उद्धार करे। यह एक रस रहने वाला है, कभी नहीं बदलता। अगर-उमर बिचर बाढ़ी दूजे, परन्तु जब तक अमरताया की बुद्धि नहीं होती तब तक उसके मित्रा नही हो सकता। जो विद्यासु उसकी प्रतिन तन तथा सच्चे मन से बाहता है, विद्याका हृदय बुद्ध तथा मन अमरताया इन सासारिक प्रयोजनों से दूर हैं जो मनुष्य उससे पैर से हूर संयत मन है, यह उद्धार की अपने अमरताया के भीतर ही देख लेता है।

ऐसा भावितवासी अर्थहीन हो इत
प्रकार से सम्पूर्ण है, जिसमें कोई नृति
नहीं—उस का सदा चेहरा से पल्लवे हिलते
ने फैला । बेवो ने हूँ बसाया जि यही सट
है, यही पुन्य है यही जो ही उगसाणा
करना सदा सदा ही है, इसी को पाते
का यत्न करते । यह एक है, यह सदा ही
सदा पाते जाते हैं बन्धनों से स्वस्थ
है । ईश्वर की सामर्थ्य में यह बात यासुसी
है कि उनमें से सदा की रथा पर
स्वयं रहने में आना उसका एक सव-
योगेति नियम है । सुविध्य के साथ
कोई नुद का जान कराना और साथ
में कमजोरता और किसी का कम है, यथा
पूर्वक दम्ब या कम होता, उस का
होता है । यह पश्येन मनुष्य को काय
सदा को है । परन्तु मनुष्य को मृग
सदाही है और पशुमन्त्र को होती है ।
परमेश्वर के सदाही स्वयं को न जानने
के कारण प्रकृति द्वारा सब पदार्थों की
पूजा धारण हुई है जो मनुष्य वसीती
तत्त्व न जानते हैं । मृगों को ही अपना
उपलब्ध वे ब्रह्म बनाया करता सव-
योगेति है बार-बार ही सदाही से बचकर
नगाते रहते हैं । सत्य है जो मनुष्य
को भी ओषधक की नुतिमें को अपनाता है,
उसको कभी की सुविध्य न पता नहीं
होता, जो मनुष्य सत्य की प्रसव के शेष
को धारण सत्य को अपनाता है ।
कभी मनुष्य की हीने राता सवियं उसको
होता है कि सदा ही प्रकृति के नियम
अनुसार है और मनुष्य मनुष्य के नियम
के विपरीत है । इस लिए ज्ञान प्रकाश
मनुष्य को ऊपर उठाता और धामन कर
अपनाकर मनुष्य को नीचे गिराता है ।

पुङ्गवा, साहस तथा स्फूर्ति ज्ञान का परिणाम हैं। बुद्धि, कायरता, धीर भाव अज्ञान से उत्पन्न होते हैं। इसी कारण ज्ञान से प्रेम धीर अज्ञान से घृणा पैदा होती है।

भारतवर्ष केवो का ज्ञान रखता हुआ भी सत्य मार्ग को ऐसा भ्रूसा कि प्रज्ञान में लौ कुछ भी लुभा उठी को दूर करना ही कर्तव्य समझ बैठ। इसमें चरे जोरे भेष बढने लगा। किसी न एक प्रकार की मूर्ख बनाई तो दूसरे ने उसको दूसरे ही ढंग में बना लिया। इस प्रपञ्च परम्परा ने बहु-कर देश को बतल गतिन पकवाई। देश

[illegible]

अपनी ज़लों की स्वस्थ, प्राकृतिक पालन व चलाकूट
बजाइये और उन्हें चमकती की भीनी-भीनी
सुगंध से महकाइये।



एम् डी एच शिकागो पाऊजर बालो की सीकरी बूट करन² तथा उह प्राकृतिक काला सुयन्त्रित व स्वल्प बगलता है।

लिकाकाई रोटा घासला हुरळ बहेवा पन्वेल व जल
संग्रहित जडी बडियों से बनाया गया एक ही एक
लिकाकाई बाऊंडर एक जलप्लत सामगरी जलप्लत से
है। इससे कोई रासायनिक पदार्थ नहीं है।

एक ही एक सिक्कापार्श्व पाइपवर का आकृति से ही नियमित प्रयोग कीजिये।

निर्वाता
महाशिया वी ह्यूरी (प्रा०) लि०
३५५ बण्डविस्तार एरिव, कीर्ति नगर
जय दिल्ली ११००१६
फोन ५३९६०९ ५३७९८७, ५३७३४१

एम डी एच
चक्र
शिकाकाई
पाउडर

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का उद्घाटन

मन्त्रिय बधानय पलिक रुक्म का उद्घाटन धायममात्र मन्दिर राजेश्वरी गाम्म मे २७ जनवरी को श्री गंगा गोपीया वासनाक्षर के कर कमलों मे सम्पन्न हुवा । इस अवसर पर महात्मा बपनाय श्री गृध्रदेव श्री गंगा बपनाय श्री गङ्गा बपनाय श्री वषका श्री बादि महागुम्मा उगचत मे । वक्थो के ह्मिदु बधुद दे मधुमाता वाम गुरु मन्त्रिण राज्यमन्त्रि मे वीली मे जसतमूद भम उगच । श्री दालावका मे वैदिक उन्वयोथे थोर कृषि दायवन्त को विना प्रजाती को बपनाने की वी प्रेरणा हो । उन्वयोथे कहा हवे घरेको भाया की गुमाकी से वषना बाहिरि थोर हिन्दी भाषा के उत्थान मे सहयोगी बानि वाहिए । उन्वयोथे उगा-होथे देते हुवे कहा—अब हिन्दी बसमी पिरता मन्वयोथे बानि के निज मन्त्री उन्वोथे स्थाविन को धारने परिच बपच दिवाये जो धमको मे मे स्थाविन के कहा था जो हिन्दी मे लिखिणीया वा कस की भाषा मे । उन्वोथे फिर बानि के हिन्दी मे धारने परिच दिवाये ।

—संवाददाता

श्री जागेराम की हत्या का हार्दिक शोक

दक्षिण किलोी वेवप्रचार मण्डल के महामन्त्री श्री रामदत्त दास झा ने श्री माधोदास धाय की हत्या पर बहुत बड़ा प्रस्तर किया है। मण्डर जावन के मुक्तल दोसर नवन के कजाने मे मण्डर इपने हाथ डिये के। झोर धार्यसकल मजदुरी मगर धोर कोसिले के मजम निमन्त्रण धाय के लिए हल्लोय लयत कावान किया बा। ने वेवप्रचार के कार्यो ने हवा सहयोग करले पड़ेले मे। वेवप्रचार मण्डल ने विवमत आवाज के प्रति एक शोक प्रस्ताव झार अध्या-
ज्यसि धार्यिक की हत्या

—सवायदातर

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,
फोन २६६८३८ चावडी बाजार, दिल्ली ८



दिल्ली प्रार्थ प्रतिनिधि सभा १३, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१३० के लिए डा० कर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली न० १७, कैलाशनगर, सदस्य ३१ म मद्रिद। राब० न० डी० (सी०) ७५६

धर्म-प्रचार के नाम पर राजनीतिक षड्यन्त्र

लेखक—रामगोपाल शालवाले

येष प्रतिपादित धर्म्य धर्म एक धर्म सन्तानें करीब जलतीस लाख उपजाऊ इलाक़ विभाजित कर चुका है। कुशल के अनुसार इसका मत की धारु समग्र ठेकरे ठेकरे तो गन्धे गये हैं। ईसाई मत ईसा के जन्म १८८५ वर्ष का है।

आज हमें विचार करना है कि धर्म्य धर्म को सधार ने सब के पुराना है, जिसका जन्मही साम्राज्य पुरातन काल से समूचे सधार पर शासन करता था, जिसके विद्वान् विवेको ने बाकर प्राणिपति को धर्म की सीखा दिया करते थे, जिसका वैभव भगवान् सन् ने निम्नलिखित शब्दों से वर्णन किया है—

एतद्देवप्रभुसत्त्व सकाशात् धर्मजननम् ।

एव एव वरिष्ठ विवेकस्त्वैवमिहा सर्वमाश्रया ॥

कभी ऐसा स्थापित समझ जा, जब धर्मी-धर्मनी की के अनुसार विवेको लोग इस परिवर्तित भारतभूमि पर हर प्रकार की विधा करने के लिए धारा करते थे।

समय बदल गया। राज्यसत्ता क्षिप्त जाने त सारा दाबा उलट गया। धर्मो की राज्य के प्रभाव से भारतीय विचारधारा को बनी-बनी इधिया देने के लिए इतने क दारबादा खलना पड़ता है।

पुरातन काल से हमारे मुसल विवेको ने जाकर धर्म की नाति का प्रचार किया करते थे। महााराज वराह न पुनश्चिधर के निमित्त मुच वसिष्ठ से पूछा। कि इस महाउर यज्ञ का ब्रह्मा किस बनाया जाय? उत्तर मिला—बाल ब्रह्मचारी ऋषियज्ञ न हा इस महाउरयुग न। का सम्पादन कर सकत है। महा-राज ने वातावर दश [ममरीका] के महाविद्वान् को पुनश्चिधर यज्ञ सम्पन्न करने के लिए निमित्त किया।

इस प्रकार वैदिक विचारधारा का प्रभाव भारत ही नहीं, समूच सधार पर फैला हुआ था। हमारे विद्वान् प्रचारक विदेश न वैदिक सङ्कलित के प्रसार के समर्थ थे। बारे सधार न मान-न हो मान्यता न। मान्यता कल कल रही थी।

समय ने पलटा जाया। महाभारत क युद्ध न भाई ने भाई का गला काटा, पूरु कलह का प्रारम्भ हुआ। परमाणु का स्तन स्वार्थ ने लिया। विवेको न प्रचार एव राज्य करन का बात सा दूर रही, प्रभाव बस ही विविधो के पाशक हो गया। सातवा दादाका न धर्म क १८ वर्षीय युवा मुहम्मद आन काश्मिर ने इस्लाम साम्राज्य क लोग स किन पर काबजगु किया और लगभग ५-८ हजार धरती मुसलमानों ने भारत-भूमि पर रचे रचे। हमारे देश पर धर्मों का बहु पड़ना धार्मिकता या, तत्परता दरों खबर के सीमात्त्व के रास्त इस प्रकार क इस्लाम धार्मिकता होती है। ये और सारे भारत पर इस्लामी साम्राज्य छा गया। राज्य सत्ता के सब पर इस्लाम का प्रचार किया गया। उज्जवारी को छाया ने कसने पड़ाए गए और धर्म धर्म की पुरानी सभ्यताओं को मन्द प्र- किया गया। महाविनाश और पराजय क महा-नकार-मय वातावरण के क्षमपति विभाजो, महापराजय प्रकाश बना कर वैरागी और किशन हो हिन्दू बीरों ने धर्म बहकर धनेक प्रकार की वातनाएँ और बुल सव-कर रादुगुन सभ्यता और धर्म की रक्षा की। भीरुजैक की वर्धनगता से देश का हिन्दू प्रजा विमु-य हा उठा था। क्षमपति थावा जा की कोरता और नीति से इस्लामी साम्राज्य पर चुभने बरत, किन्तु धर्मनी की वा-स्तविक पूर और स्वायत्तपक्षता से ईदत हिंसा कम्पनी के रूप से व्यापारी बन कर धनेज ने भारत न पर जमाए और बेहते-बेहते सारे देश पर दुर्गमन बैंक पड़ाने लगा। धर्मो की राज्य के साथ ईसाई मिशनरी की गरीबी की सेवा और धर्म का बहाना बनाकर भारत ने कार्य करने लगे। इससे पूर्व सन् १९२१ ईस्वी ने पोप फिफोस (बनुप) ने कोहन कार्मिनी नामक ईसाई मिशनरी की चीन देश ने सेवा था। चीन जाते हुए वह भारत ने ठहरा और सहा १३ मास तक रहा। भारतभूमि पर धर्म करने वाला यही पहला ईसाई मिशनरी था। धर्मने विनाश-कारण ने इसने अलग अलग स्वाधों पर सदाय १०० व्यक्तियों को ईसाई बनाया।

इसके पश्चात् प्र-भ मिशनरी धारा। वह सन् १९२३ ने बम्बई के लट पर उतरा, परलु बोम्बेही सती के समान होने से पूर्व ही यूरोप के धनेक ईसाई मिशनरियों ने बम्बई और दुर्गमकोर के मध्य के पश्चिमी भाग पर कई ईसाई

उपनिवेश स्थापित कर लिये थे। पुर्तगाल का दूर लुटेरा वास्कोदिगामा जब १५०२ ई० ने हुस्तीर भारत ने धारा तो उसे भारत के पश्चिमी तट पर ईसाई की वास्तव्य देखकर भावभय हुआ। इस ईसाई भय न धारने राजा और धर्मने प्रवेश से विस्थापता करके ईसाई लुटेरे की धर्मोना स्वीकार कर ली।

भारत ने पुर्तगाल साम्राज्य के सत्प्रचारक धर्मो-सी सन्तन ने १ १० से लेकर १५१५ तक बोरा और लका के मध्यवर्ती समस्त मधु-ी तट पर शासन किया, उसने नवभार और धर्म के जल पर ईसाईयत की जड़ जमाई, उसने पश्चिमी लट के उपलभ्यो को धर्मने प्रतिस्थाप का लक्ष्य बनाया।

पुर्तगाल के राजा को मोक्ष से भेजे नर धर्मने एक पत्र ने नर बोरा के धार्मिकता का वर्णन इस प्रकार करता है—

'क मैंने नर का जमादिमा और जा नमन सवा उसा को मौत के पाट उतार दिया। धार्मे कीभी न लयाकर कई दिन तक लून बहाने का काय बावु रखा। जो भी सामने धावा और जहा कही पड़ गया, वही पर मार हाता गया। मुसलमान हा पायव की कोई बना हा। उन की सतिरयो म धाम सपाकर उन्हे मृत् प्रन् किया गय। हमारी गणना क अनुसार ९०० व्यक्त मार शय नर बहुत से मुस्लिम युव विनर्ी न। जड़ जमाई, उसने

नेर धर्मो 'यह काय मधु नर जा सपकी लक्ष ह म नना और पूरा किया गया। मैं मुनसम को मरिती लगरन या कन न पडा मही रहने देना। जो भीति बनी बनाए सवे मैंने उन्हे धर्म ने नूनन का धावा दे दी है।'

(बीजुल मलिवाल सी० पारिल कन भारत ने ईसाईयो द्वारा धम परिचलन मृत् २६ २०, १९४० का सन्दर्भ)

(कमल)

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक महामशायक सार्वद्विगिक को श्रद्धाञ्जलि

आयसम-न बीरमहात्म विन्नी ने श्री रघुनाथ प्रसाद उ म को श्री धर्म सभा धाराजित की ली। उस प्रसार पर श्री गमन पाय नामपाय श्री धामप्रकाश ल्यायी, श्री सोमनाथ मरवाही श्री मुरदेव श्री मुनकर गुन धारी महाप्रभाव उपस्थित य। सार्वद्विगिक ध ० य ० सभा के प्रय न की र यो ल वातवाचन ने कहा के धर्मोके विद्वान् लेवनी के धर्म और धामसमक के दावान थे। धामसमाज के टिहास का उन्हे धर्मोला न प और स्मृति ली। इत हो जाने पर श्री धर्मन सम्य तर कभीनल रहे न।

श्री धोमप्रकाश ल्यायी ने कहा श्री पाठक की के साथ एक युग की जनेक स्मृतिवां जुडी हुई है। ने मुयोप पत्रकाग तो वे ही कुशन कार्यकना ली य। उनके सामिप और सहयोग ने मया के प्रमुल पत्र का काय प्रगति पर रहा। श्री सोमनाथ मरवाही और श्री मुरदेव, श्री मुनकर गुन ने भी धर्मो भवा न्जलि दलित की।

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक की स्मृति को विरथायी करने के लिए सार्वद्विगिक सभा ने पाठक श्री क नाम पर पाठक स्मृति निधि स्थापित की थी। इस निधि ने धनेक लोगों ने श्री रामोपाय शासवाल श्री सुनराधाय धर्मा, श्री केधनकर पाठक, श्री राधाकृष्ण सभा श्री ब्रह्मदत्त लालक श्री कमलेश कुमार, श्री धामुषे वसिष्ठ श्री कुमभद्र जो धादि ने एक हजार ने लेकर एक ही एक तक की दान राति प्रदान की।

डा० सत्यकुल विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति

नई दिल्ली १८ जोभाई। गुरुकुल कांगड़ी विरथाधाय हरिद्वार के कुलाधिपति पर पर की डा० सत्यकुल विद्यालंकार नियुक्त हुए। श्री डा० सत्य-कुल विद्यालंकार के प्रविष्ट विद्वान्, धनेक धर्मो के लेखक गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति, बर्नी से डा० लिट की उपाधि प्राप्त थे। डा० कुलाधिपति नियुक्त किने जाने पर धार्मिकपू ने हर्ष की लक्ष्य ली य।

—सादाददा

कृष्णको विश्वमार्मस्' के स्वर को निभादित करने वाले महर्षि दयानन्द एक युग-उद्घाटन थे। उन्होंने युग-बोध की स्वीकृति अपने जीवन द्वारा प्रदान की है। उनका जीवन उद्योति बंध रहा है तथा वह न जने किसी जीवन-उद्योति को दायन उद्योतित करता रहा है। उनके जीवन का दाय स्थापित नहीं, अपितु समर्पित है। उन्होंने स्व को नहीं धर्मियु पत्राय को ही साधन एवं साध्य बनाया। अह्नि न जीवन को एक सजय प्रहरी के रूप में देखा। वे निद्रा एवं सजने से २४ घंटे भागते रहे हैं। दयानन्द सजने पर नह। अपितु सजने कर्म पर विचार करन वाला एक सजय योद्धा था। कष्ट का एक धारक होता है मरना नहीं। कष्ट ह्वन यह ही कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द क धारकों का भारत।

विषय को धारा बनाने का सक्तर अह्नि दयानन्द रा था। धार्य से सजने हों किसी एक पत्र से नहीं अपितु अनेक मानव के निर्माण से था। मानवोत्तर संस्कृति की सजना ही धारक थे। मानवोत्तर संस्कृति का निर्माण मानव को अनेक बनाने से ही सम्भव था। मानव जीवन से मानवीय मूल्यों की स्थापना युग की महती प्राप्तिवस्तुता थी। म नवीय मूल्यों का ह्वन होता था रहा था, जो भारत की गरिमा को नष्ट कर रहा था। अह्नि का जीवन, चिन्तन दर्शन एवं व्यवहार मानव को युगगाय धारता के लिए सजी तो विद्रष्टा था। विभिन्न प्रकार के साध विचार एवं सज मनोत्तर से उनका भारत का भविष्य उद्घर रमन था। उस धारका से उद्योति रूप प्रमाण्यता का उद्घर धारा की किरण के रूप में प्रसृष्टित हुआ।

मनमा, हावा कर्माय ऐश्वर्य की दिवसि ही युग को गृहगुण्य बना देती है। अह्नि दयानन्द को महान् ऐश्वर्य से एक पत्र थे। कही भी उनके जीवन में अस्वास्थ्य विचारण नहीं रहा। मन से एक रड संकल्पनाओं रचनेवा, बाणी से मोक्षदीप से श्रेष्ठता तथा कर्म से धर्मन प्रभुत्व की अह्नि दयानन्द थे। "तमसो मा उद्योतिष्व" के गृहग साधक "धर्मतो मा हर्षयु मर्षे प्रीतिमिति वन गये।" "त मे दन शिवसम्पन्नमस्तु" की कष्टशीली भावना न युक्त "सर्व भवतु सुखिन" का साधारण प्रतिक्रियित करने वाले अह्नि दयानन्द ही थे। अह्नि दयानन्द ने उद्योतिव न का कार्य किया। उद्योति एक नय धारक का सम्पूर्ण प्रसरत दिया। वस्तुन दयानन्द साधनामन रा। वही उमका धामन्य तथा वही उमका मृग था। वह जो बाह्यता था वही कर्ता। उमा उमकी ही उमकी अनेका ी थी।

१९५३ के प्रिन सत्रयता के माय का ५५५ स अह्नि दयानन्द से ही

श्री लालमन धार्य निबन्ध प्रतियोगिता मे द्वितीय पुस्तकार प्राप्त—

“महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत”

—डा० सूर्यप्रकाश विद्यालंकार
के० एच० १५७ कविग्राम, गाजियाबाद

होता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से सर्वप्रथम उद्योतिष्व किया कि भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति साधक है। उनका यह कथन बीच मध्य विद्रष्टा हुआ कि विश्वी राज्य अन्धत्वे से घबरात तथा स्वदेशी राज्य तुरं से दुरा सजने न हो? पर तु स्वदेशी राज्य ही अन्ध है। वेद प्रेम का उच्चतम भाव दयानन्द के द्वारा प्रकाशित किया गया। स्वतन्त्र भारत का मरना ही दयानन्द का महर्षय मूल मता था।

जननी न जन्म भूमि के प्रति गौरव-भाव पैदा करने वाले दयानन्द ने विश्वी भाषा का पूर्ण रूप से बहिष्कार किया है। वे राष्ट्र म रा हिन्दी के प्रेमी थे। उन्होंने अपने प्रभुओं का प्रथम सत्कृत धर्मका हिन्दी में ही किया है। वे इस सचम न 'संसारप्रकाश' की भूमिका में लिखते हैं, जिग समय मैंने यह सत्याप्रकाश बनाया था उस समय पहले युव संस्कृत पत्रक करने पठन पठन में संस्कृत ही बोलेने घोर जम्भभूमि की भाषा मुजराती है। इस कारण मुझे इस भाषा का 'वैषय प्ररिज्ञान न था। धर्म भाषा लिखने घोर बोलेने का धमता हो गया है।

अह्नि दयानन्द की अनेका भात को उच्चतम एवं प्रान न रूप में देवने की थी। वह भारतीयों के 'उच्चतम अरिच क द्वारा ही समन थी। अरिच निर्माण ही अह्नि का उद्देश्य था। अरिच का पठन निजमन में न तत्क उस समय प्रवृत्त गया था। समय प्रमाण की रचना द्वारा अह्नि ने पन धारक भारतीय अरिच की स्थापना। उद्योति भारतीयों के बारिचिन्ता न न भिन्न सत्य एवं ज्ञान को पत्र म मरना।

१. 'प्रतिष्ठा का प्रयत्न स्वाधीनता के प्रथम न्यायप्रकाश' से स्वत हा जाना है। स्वतमेव अनेक न मूल्य-सत्य-मया विस्तरी देवधान" प्रकाशित सर्वसा सत्य की स्विष्ट तथा प्रत्यय की पत्राय होती है तथा सत्य से विज्ञानो की भाषा प्रगत होता है। इस दृष्टिकल्प का मानव को प्रवृत्त कर के सत्यमार्ग प्रसवत श्रेष्ठ विषय प्रकाश था, परन्तु पत्रमन उद्घाटन सर्वप्रयुक्तोत्तर रहा है—

निरवध विपश्चिन्त सत्यविज्ञानोत्तर भारतीय धारण वक्ष्य स्वतमेव अनेक

अह्नि दयानन्द से प्रेरित तथा उनके धारकों का ही मुक्तिपत्र है।

ज्ञान एवं निष्ठा से जीवन एक धारक को प्राप्त करता है। उसी धा दक की स्थापना के द्विष अह्नि ने जीवन को प्रारम से ही सजने का साधन किया। ज्ञान के अर्थ में दयानन्द के इस विचार ने ज्ञानिकारी परिवर्तन किया कि "वेद सत्य सत्य विचारों का पुनरुत्तर है।" वेद जो गहरिनों के भीत बसाये गये वे ज्ञान की ही नहीं, अपितु सद्भाव का भी धारिकोत वन गये। वे ज्ञान-विज्ञान के प्रत्यय भाषात्र वन गये। वेदों की बजल रोति की वारा को युन प्रकाशित किया गया। वेदों की धर्ममार्ग को कल-कल निराली वनकर विज्ञानयुक्तो के जीवन के सतीतमय बनाने सगी। वेदों की युन स्थापना ही अह्नि दयानन्द का धारक था।

महर्षि दयानन्द वेदों के परिप्रेषय में धारक मानव एवं अरिचिन्तन भारतीय की कृष्टि कला बाने थे। भारत मे मान एवं शिक्षा के अर्थ में पत्रायन ध्यानु-रक्षण था इस ध्यानुकरण की भावना का अह्नि दयानन्द ने प्रगत विरोध किया। उम्मेन भारतीयों को दनने ही बंध मे देवने का सुभाष दिया। दूसरों के रदीन चरमो से जहा मान धन्यत्व हो जाना था बहा वसरन मय प्रवृत्ति होना था। सत्य का पोषण ही सत्य ह्वन है। इससे का बार्ड सत्य सत्य नहीं है। सत्य का साधनमय अनुवीकरण ही दयानन्द की जीवन सा धर्म था। इसी धारक पर भारत का पुनर्निर्माण करने का प्रयास अह्नि दयानन्द ने किया। सर्वेव ही उनके विचारक मरता सक्तर स्वकी मुष्टि कर रहे हैं। भारत के पुनर्निर्माण के लिए उद्योति वेदनुसार वहापिषय व्यवस्था की स्वीकार किया।

वैदिक वर्णायन व्यवस्था की स्वीकृति वैदिक ए एक साधक जीवन को अनेकपूर्ण बनाना था। सर्व जहा अह्नि का सामाजिक वृत्तिप्रधान है बहा धामन उसके समाज का वैदिककरण है। वर्ण विभाजित वर्णानुसार ही, यह अह्नि का सजना था। वही वैदिक व्यवस्था है। ज्ञान का प्रतिकृता ब्राह्मण, पौष्य प्रधान अरिच, कर्मवैदिक एवं सेवा-भाव को

स्वीकार करने वाला युव था। मध्ययुग में बहा वर्गीकरण धर्म से अह्वन विचार बनने लगा। ब्राह्मण का वेद ब्राह्मण का पत्र, चर्चे यह कर्म से दुर हो। ऐसी विचार पत्रिचितियों में अह्नि दयानन्द ने सर्वही समाज की स्वीकृति दी। उन्होंने प्राचिनत मनुष्यता का मास करके सभी को धार्यभाषि से ही सहायता किया। उनकी अह्नि में उच्च नीच का कोई अन्ध नहीं था। उन्होंने स्पष्टतः वैदिक उद्योति सत्य के स्वर को ही साधक रूप दिया। "भारतन प्रतिकृतामि परेवा न समाचरेत्" उपा "धार्यवत् सर्वनुतेन के द्वारा समस्त प्राचि मास के प्रति वषा का भाव दयानन्द ने प्रदान किया।

जीवन को बार सोपनी, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं मर्यादा धामन से विभाजित किया गया। ब्रह्मचर्य धामन ज्ञान एवं निर्माण का साधन है। गृहस्थ धामन कर्म का साधन है। वानप्रस्थ सामाजिक कल्याण का धामन है तो सत्य स उच्चतम एवं धामन का साधन है। जन्म लेते ही विद्यु ब्रह्मचर्य धामन मे प्रविष्ट हो जाता। माता उद्रा एक धारक उपरके कर्मय युग है जो उद्योति ज्ञानार्जन मे सहाता करते हैं—"ध्यानु-मय विद्युभाषा धार्यवत् युक्तो वेद।" धार्यवत् का स्वान भाषा-पिठा के धामन है। धार्यवत् का साधन वेद साधक प्रमा है परन्तु सीता का नहीं। विद्या सीता के पिठा जीवन का व्यावहारिक पत्र नहीं वन सकती। पिठा ने बहा वृद्ध करने की प्राप्ति है बहा सीता से रदाय एवं धर्मय की भावना है। साधन सीता प्रारव विन बिना ही सीतान्न मरवाही ब्यावहारिक हो जाते हैं। किसी बही विद्युभाषा है यह सीता की भावना को पूर्ण रूप से अह्वन करने ही पूर्ण पिठा है।

अह्नि दयानन्द प्रकृतापि पिठा पदवित के सर्वप्रकार है। प्रकृतम से धार्यव के पूर्ण सजने से शिष्य का निर्माण होता है। वेद में युव कठोर प्रमाणों से प्रवृत्त जीवन का निर्माण सीता होता है। शिष्य बहा युव को धर्मो से ए व प्रवित से जीता है। धर्म मय पिठा का पामन पोष्य धमनी सतान की तरह करता है। वेद में युव शिष्य के सम्पन्न को प्रवृत्त करने हुए कहा गया है कि जिस प्रकार मर्यादा-युक्त को नई से धारण कर पामन पोष्य करता है, उसी प्रकार नय पिष्य का पामन पोष्य करे। पालन पोष्य न ध्यानुपामन के (वेद पृष्ठ ८ पर)

कीकृत्य भी ने नीला में कह दिव
है कि काम, जोष नीर जोम इम ध्यवक
की, त्याग देने के अनुभव सुखी हो सकत
है, परन्तु धन हू एक कामा
कह गया है। पैसा होना तो मोटर ने लू
बिनामा केस प्राडमा, जानन् के दूध
नीम कडवा प्राधि-प्राधि। प्राय पैस
हसनी करण कह गया है। इसी के लिये कु
कहे हुए हैं नी परदेखिय की ससारी नी
जाल रहा है, इसलिये जान ही का ख
पहुना बर्मा है। पैसा दुनिया
खण्डी नीम है। पैसा लेग-लेग के ध्यवह
के लिए बना है। प्राय पैस बाह के से

ॐ ह्रीं क्लीं ॥ ह्रीं क्लीं ॥ ह्रीं क्लीं ॥

- (पृष्ठ ६ से घाने)
- सुप्रसिद्ध के नाम पत्र
- मिए ही होनी चाहिए। बासकी-बास-
कासी मे निम्न स्कोको का भाव उनके
परिचय का भव बन बाव—
- (१) छत्रपती धननिष्ठा एते व
अतरो बावपु सीधगाय।
- (२) धन निव पते वेति
मनसा मनुवेतसा।
उत्तराशरितायानु
मनुष्येन कुटुम्बकम् ॥
- (३) ईसा वास्तविक सर्व
परिचय अगत्या अवयु।
तेन स्वस्थेन मूलीया मा
गृह कस्य निबन्धनम् ॥
- (४) निम्नपुत्री नीतिनिष्ठा
यदि वा सुकुम्बु,
सकरी सनाथिवायु
मण्डु वा मण्डपम् ॥
धर्मिक वा मन्त्रवन्दु
मुगान्धरे वा
धर्ममात्रक प्रतिकल्पित
वच न कीरा ॥
- विद्या का हृदया भाव जिवे द्वेनिम
की सजा ही जा सकरी है या नोनिमा
धर्मन से सम्बन्ध रखते। पाव वष की
धानु से कन्दर्ब वर्ष की धानु तक सामान्य
शिक्षा (मूल शिक्षा) ही जाये जिसके
धर्मन से परिचय निर्माण पर बन देते हुए
पाषाणों का ज्ञान मणित, दृष्टिहास, धूर्तता,

वर्ष के मूल शिक्षा, आरम्भिक विज्ञान
इत्यादि की शिक्षा का प्रत्यक्ष हो तथा
परीक्षा का तरीका व्यावहारिक हो न कि
मुलक ज्ञान। इसके पश्चात् इसकी वह वर्ष
की धानु एक एक विशेष व्यवस्था की
शिक्षा दी जाये और स्वभाव से कि
उत्पन्न की जाये। इसकी वह वर्ष की धानु के
पश्चात् किसी निम्न से विशेष योग्यता
प्राप्त करने का प्रत्यक्ष हो। बासकी की
धामन एवं धामायाव तथा हृदय की
शिक्षा धर्मन से हो। निम्न निम्न धर्म-
धर्मियों के लिए ऐसा पाठ्यक्रम निर्धारित
किया जाये जिससे कर्मों की शोच न
मास्य हो। शिक्षण उत्साह वहीरे के दूर

होनी चाहिए एवं उनके विद्यार्थियों के
रहने का प्रत्यक्ष हो। धर्मनको के चयन
से उनके चरित्र पर स्थिर बन देना
चाहिए तथा धानु की कोई सीमा नहीं
होनी चाहिए।

नई शिक्षा नीति की सफल करने
का दायित्व धर्मनको का होता। इस
सम्बन्धित एवं योग्य धर्मनको तैयार करने
के लिए भी एक योजना की आवश्यकता
है। मही हो शिक्षा नीति बनाने का कोई
भाव नहीं होता।

हर्षदेव सिन्हा

मनो, धाराबन्धन

टी-२२८८, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

(पृष्ठ १ से घाने)

कांतिदूत स्वामी अर्पेदानन्द

दंतों की हर बीमारी का धरलू इलाज

एम डी एच

दंत संजन
लोगा युक्त

23 जड़ी बुटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

उत्तम का डायर

अस नये पैकेज
में उपलब्ध

विन्हीमूलक
महाशिया की हड्डी (मा०) लि०
9/44, कानपुरिया पुरिया भीम अम्बर, नई दिल्ली 15
फोन 539609, 537987, 537341



उपरी तन्त्र पर स्थित रीटिबल "मार्केटिक
पार्टी के दलपर से गया। पार्टी के कासा
पानी से लोटे बटवारा दासारा-दूत काज
के धर्मियुक्त भी लोकनाथ बन के स्वागत
का धारोजन था। द्वितीय महापुरुष - २१
दशम्य में कासा पानी की सजा भाग वर
धर्मिक धर्मियुक्तों को मुक्त कर दिया गया
था। धाने समाचार पत्र की धार - २ की
बन से साक्षात्कार के निमित्त मैं धा
गया था। जब मैं रीटिबल पार्टी के दलपर
में पहुँचा तो वहाँ मुझे पुराने काविकारी
सर्व श्री मन्मोहि सेन, रजनी मुखर्जी,
अधिक नेत्री तथा नेता मणिकेन कारा
ग्य लुई - २ की काविक, धर्मियुक्त 'वि०
एम० शास्त्री' से मिले थे। श्री बावन्धन
नाथ की उपस्थिति से भी धामन किसी से
बाने कर रहे थे। श्री नलिनी सेन धारि
के मध्य में ही एक मोरा एव महीरे नदन
का स्थिति देता था। मैंने भी सेन से कहा,
'धामी की मनेत्र सेने साक्षात्कार
बाई।' लोग स्थिति कोन उठा— धामी
नम। फिर भी बचने में मुक्त से परिचय
पूछा। मेरे जन्म स्थान के बारे में जानना
चाहा। मैंने धामने की बिहाराधामी
बतलाया। तत्काल की उस ने स्वामी
धर्मन, नदी के विषय में पूछा। मैंने,
स्वामी की के कलकत्ता निवास के विषय में
बतलाया। तत्काल से स्वामी की के
पास सावध बनने के लिए धामन कहा।
वह वहीर हो गया। रास्ते में सेने भी बन
से पूछा— 'धाम ने जब स्वामी की का
परिचय पहचाना हुआ होगा, उस समय
तो वह "राम समुद्र पाण्डेय" थे। जन्म,
धामने स्वा० अर्पेदानन्द की जो इक से
जाना? उत्तर मिठा— 'धामादेर निरन्तर
सम्पर्क छिलो।' मैं धमाक रह गया।
मैं स्वस्थ लक बनने लगा, 'धामे' की
धामन से धर्मन से निरन्तर सम्पर्क कैंने
सम्बद्ध हुआ? वह रहस्य धाम की बना हुआ
है। जब भी बन पोहारा भवन पहुँचे हो
राम भरत निवास का स्थान उपस्थित
हो गया। धामी की धामों से धामन के
बाई थे।

श्री मानकेन्द्र नाथ राय १९४८ के
परबरी से पटना धामे थे। मैं पटनाको के
भीषण की राय की 'राष्ट्रीय धामिक योजना'
(National Planning) तथा 'राष्ट्रीय
संविधान निर्माण' (Formulation of
National Constitution) के मुल
सम्पर्क था। इस भी राय में मरा
पनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हुआ गया था। भी
राय पटना के बुद्धिवादी वन से मिश्रा
बाहरी थे। उसी दिन उनका हृदय
सिनेट हृदय से धामिक-योजना एवं धर्मि-
धान-निर्माण पर भावमय होने लगा था।
उसके पूर्व वह पटना के बुद्धिवादी सदुपाय
क्षेत्र से बाव थे। निमग्न मिश्रा और
मैं स्वामी की तथा श्री रामानन्द गारुड़ी के
साथ भी राय की महीरे में शामिल होने
गया। स्वामी की की देखने की भी राय ने
उन्हे धामन पत्र मिठा दिया। धीरे धाम
की मुक्ति रात हुए स्वामी की से पूछा—
'धाम रामसमुद्र पाण्डेय तो नहीं हैं?'
स्वामी की न कहा— हाँ मैं सावधान
रहा, जा दली धामियुक्त लक के पिता
नलिन का की दहिना हाथ था, उससे
स्वामी की का पुराना परिचय कैंने?
स्वामी की से प्रश्न पर पता चला कि
धामनरिष हकीमी बाइ के बाद किशोर
वचक नरेन्द्र भट्टाचार्य (श्री मानकेन्द्र
नाथ का पदनाम) जब पटना में एक
मेन कम्पोजीटर के रूप में मुद्रण जीवन बिता
रहे थे, ता स्वामी की का काज उम दिनों
हासिलकारियों के मुल पत्रों को निर्माण
के दास में पुराना या पुराना बना था।
मुद्रादेव प्रेस (मुद्रादेव) नाम की स्वामी
की वर नहीं है, की पटना शाखा क
प्रकारी दिवस की पत्नीबाइ की राय के
साथ उस वन में मुद्रा देव का क
करते थे। पत्नीबाइ के माध्यम से स्वामी
की का भी नरेन्द्र भट्टाचार्य से परिचय
हुआ था।

अजीव दरबार—

स्वामी की के दरबार में विभिन्न
राजनैतिक, सामाजिक, एवं धार्मिक
(पृष्ठ १२ पर)

सजिलद 900
सैंकेडा

सत्य के प्रचारार्थ

अजिलद 500
सैंकेडा

मृत्यार्थ प्रकाश

घर पर पहुँचाये

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध शरकरण वितरण करने वालों के

अमर

आव संहित्य प्रचार दस्ते

4/3 धारो अम, सी. टि.सी. 6 दूरभाष: 238360-233112



दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा १६, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५ के लिए डा० सर्वपाथ द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस नवी नं० १७ कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। एडि० नं० डी० (डी०) ७३६

साप्ताहिक औड़म कृष्णतो विश्वमार्गम्

आर्य सन्देश

बप ६ घण्टे ३० रविवार, ४ अक्टूबर १९८६ मुद्रित संख्या १८०२८४ ०८६ बाबल २०४२ दयालदास—१६६
प्रातः ५०० प्रति ५०० प्रति बाबिक २०० प्रति बायोचन २०० प्रति विदेश में ५०० बाबर ३० प्रति

प्रभात की प्रतीक्षा में पंजाब की धरती



८ जौलाई को मथुरा देवा में पंजाब के समर्थित क समाचार से हृष को लन्दन फोन गयी। चार म म

के बाद पंजाब में भी फूटी है। हिन्दू धर्म (मिथो) के बीच उगती कंगोनी भाडिया सुलती दिवाली दी। पंजाब समस्या के समाधान के लिए ऊंची राजनीयकता धीरे बड़ साहसिक कदम की जरूरत थी बुवा प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गांधी ने निजी प्रशासनिक धीरे राजनैतिक बाधाओं को एक छलम में पार कर सफलता प्राप्त की है। विपटन धीरे धलनाव के कगार पर पहुंचे देश को सामने में एक कारगर कदम उठाया है। प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गांधी बगई के पात्र है।

समर्थित के साथ मुझे इन प्रकार

है—

- मणस्व सेनाओं को विशेष अधिकार देने वाला कानून रद्द।
- वधनीय पंजाब को २६ जनवरी १८८६ को दिया जायेगा।
- आनन्दपुर माहब प्रलाव के केन्द्र राज्य सम्बन्धों के बारे में सर-कारिया आयोग विचार करेगा।
- वधनीय के बदले हिन्दी इलाके हरियाणा को ३१ दिसम्बर १९८५ तक।
- मदी जल विवाद सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की अध्यक्षता में गठित एक न्यायाधिकरण को सोपा जायेगा।

- दिल्ली में हुए मन्त्रिमंडल के दशे की आज करने वाले रमनाथ प्रायोप कोकरो धीरे कानपुर दमो की भी जाव करेगा।
- प्रखिल भारतीय मुहत्ता। कानून बनाना चायेगा।
- कीज में प्रती घोषता के आधार पर।
- फौजी मुकदमों में कोई हस्त-क्षेप नहीं बलवित लोगों को बसाया जायेगा।
- विशेष सामग्री प्रतिक्रिया तथा वस्तुनिष्ठ पत्र एक दृष्टि सम्पाद-कोय लेख दसिये।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालंकार



हिन्दी लेखकों में डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का अपना विशिष्ट स्थान है। १९ सितम्बर १९०३ को मिला सहारनपुर में जन्मे धीरे १९१०

में गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश धीरे १९२४ में स्नातक हुए।

उच्च शिक्षा के लिए ध्याप योध्य गये धीरे बेरिंग यूनिवर्सिटी में इति-हास विषय में बी० एल की सर्वोच्च उपाधि प्राप्ति की।

१३ वर्ष तक मरुकुल में इतिहास के प्रोफसर भी है। जीवन का अधिकांश समय माटिय लेखन में व्यतीत किया धीरे भारत क विभिन्न विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देने हेतु बुलाये जाते रहे।

अनेक राजनैतिक बाबिक साठू-तिक साहित्यिक सस्थाओं के साथ सम्बन्ध रहा। १९६२-७० में विधान

परिषद के व्हेलखण्ड मन्तव्य क्षय में सदस्य बन। नागरी प्रचारिणी सभा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सं-कुन वि० वि० की सीनियर के सदस्य भी हैं।

विदेश भ्रमण में चीन इन्वी-विटजरलेंस फ्रांस इन् विटन आदि देशों की यात्रा भी कर चुके हैं। डा० सत्यकेतु जी का कार्यक्षेत्र साहित्य मृचन है।

महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में १ प्राचीन भारतीय इतिहास पर धनको ग्रन्थ लिखे हैं।

२ आधुनिक इतिहास पर भी आपने धनको ग्रन्थ लिखे हैं।

३ राजनीतिज्ञ सत्त्व पर धन-रक्षीय स्तर पर ग्रन्थ रहे हैं।

४ उपन्यास यह धप ती एक पृथक विधा है इसमें आपने धनको पुस्तकें विचो हैं।

सावदेशिक धापप्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री लो-राम-गोपाल जी शालग्राम की प्रार्थना पर धापने धापसमान का धादि से धव तक का इतिहास निवा है। ग्रिमके चार भाग हजार हजार पुष्प के लगभग द्रुपक जनता के हाथों में पहुंच चुके हैं धीरे धापने कार्य लेखन प्रगति पर है।

(विष पृष्ठ २ पर)

सत्संग वाटिका

हे (सम स) एक विचार से युक्त
घोर (सहाय) एक प्रकार के ज्ञान से
युक्त लोगो । (उदुन्ध्याधम्) उठा । बागो
घोर जालो । (सतीत) एक घर में जालो
वाले (बहव) सब लोग जिसकर (अग्नि)
हैबर को ज्ञानी को धन्यता ज्ञान को
(इध्रधम्) उत्सव रीति से प्रवीण करो ।
(रक्षित) धन्यता शक्ति के साथ शक्ति
(अविना) धन्यता हैतव्य घोर (उत्स
वेदी) बाँक्यो को सुखक विनय शक्ति इन
को (इष्टवत्त) प्रभुत्व पहिने वाले (ब)
भाग सबको (बहव) रहता के लिए
(निपुण्य) धन्यता करता है ।

बड़ा ही प्रख्यात एक मन्त्र है। आज यह है कि उठो जागो हे भाइयो। मनो बल से अनुमानित हो जाओ। एक राष्ट्र के वासी हम मनुष्य अपने घर उल्लाह ही धर्म को प्रदीप्त करो। तुम्हारी रक्षा में उस धर्म का प्राधान्य करता हूँ जिसे धारण करते ही मनुष्य क्रियाशील हो उठता है। तुम्हारी रक्षा में प्रकाश से कमनवासी हूँ उस उषा का प्राधान्य करना हूँ जिससे जीवन योग्य मय हो उठे हैं। अपने जीवनों को धर्ममय बनाओ अपने जीवनों को योग्य बनाना।

[illegible]

उठो ! जागो और ! जानो !

सुरेशचन्द्र वेदाकार एम ए एल टी

उदबुध्यन्व समनस सराय समग्निमिन्ध्व बहव सनीडा ।
दधिक्राभमग्निमूषस च देवी मिन्द्रावतोऽवसे निह्वये व ॥

क्र० १०-१०१-१



हो जाती है। अब यह कहना है 'एक बच्चे के रहने वाले घर यास लायन' और को पानी को यास ज्ञान को उत्तम और तेज प्रदीपन करो और ध्यान धारित को उत्तम प्रकाश से देखो। ऐ नानाभिन्ने बच्चे से जलित विधिपत्र लेने हुए मानव । तुम्हो हों धन्य एतत् अल से धर्मिष्ठता का से सम्पत्ति ज्ञान करता है एक बार उदक-र मन्त्री गेह लेखी है कि सब धन्या ही धन्या है यहाँ कोई परता नहीं अभी उठी प्रती को नानाओं है जिसको उपायना को इन सबके साथ सम्पत्ति हुए है। यहाँ धन्या को? यहाँ निजाने को भी किसी का प्रत्यक्षता से हो सकता है? फिर तु हों धन्य एतत् धन्या साक्षात् से बच्चे नहीं निजाने परकर धन्या है।

वेद यत्र कहुवा है जागो धीर धर्मि
को प्रशस्त कर। धर्मि कौन है ? धर्मि
नाम परमेश्वर का है। वेद में स्वयं कहा है
तदेवाग्रिमस्तथा दिव्य (उप० ३२.१) धर्मि
का ध्य करतें हुए याम्नाकाय मिलतें हैं।
धर्मि कस्मात्? अग्रणी भवति निष्कल
७३४) परमात्मा धर्मि है क्योंकि वह
अग्रणी है। सबसे धागे रहने से धीर सब
के धागे बनने से परमात्मा का नाम
धर्मि है। परमात्मा परम धर्मि है। वह
प्रणियो है अग्रणी है।

नि ते सब होना है। मायब के
 शरीर के प्राण सब जा रहा है।
 गोली खाकर चरुं हो जाय सब चरुं
 है प्राण सब चरुं रहे है। स्वास प्राण
 सब ते सारे हैं। शरीर सब चरुं जा होना
 पछु - नै ता कहिन रहे है। चाँद द्वारा
 पुकरा गये सब यमबाग बनकर यमनो
 पद पद पद हति सब नि होउ रहे है।
 यम प्रसि को प्रसील करना हू यम सब का
 उच्य है। इहलिये यम प्राँत को का
 तने त करनो की प्रायना करना हवा
 कहना है हरे हरद्वय के तिनिके ते प्रसी
 होनो की प्राय। प्रवीण हो ते प्रसी
 मेरे दिख। जानागयो धरणी उज्जवल
 जावा। के मुनू से मेरे दिख मेरे सब
 वा खेत पट्टा मेरे मेरे दिख पुकार
 से मेरे दिख को सब को दाग का
 तिका मना है। ये मुने तिनिके तेरे धनी
 निहाना मेरे के प्रसी मेरी का बचनी मेरी

चिनगारिया बन जायें ।

बाधो बध की घाम बाधो मेरा
 प्रातिपक्ष स्वीकार करो । मैं गळ जीय मे नही
 हवाबो जीबसे तुम्हारा अभिगमन करता
 हूँ । केसल एक मुक की जीय से नही घन
 प्रय की नल नल की नाडी नाडी की
 जीय से तुम्हारा घनिगमन करता हूँ ।
 बाज जीवन मे बाधे बने के लिए प्रमुख
 की प्रव के लिए तुम्हारा स्वागत करता
 हूँ । मेर स्वागत स्वीकार करो । स्वीकार
 करो इस स्वीकृति से तुम्हारा कमी धीर
 शोभा बढी ।

यह पावन धाम मेरे को आना है
 कि मैं वहीं धर्मिणे के लुलारा है
 वहाँ लौकीकी लोचन विषय विषय क्या का
 भी आनाइया करता है । दिन के उज्ज्वल
 होने ही एक का धामधन होना है । उर
 समय एक धामधन अनोख कम्हाई है । उर
 कोर का नाही है । कोर के हरे हरे नयन
 भास लास लास के फिर नयन है । पानी
 के ठल पर एक बस हीनी आस बाहर ही
 विष्णु जाना है । धामधन मे नाराही हो
 फिर धाम भी बसिनाई है एक हाका डा
 गुना । पावन होत लती है । कोर उर
 हीनी की कले वही कोर देता है
 हम्न लुकीकले है लताही है लीनी उर
 भी नीनी मँ । का महागुन प्रह । क ब
 मार का दार कल नयन कोर घाँती को
 नयाने व ना गुन जय नैता । उरका
 धरम यह धर्मिणये मे प्रभावहीन हो
 प्रम को । बगत उरका कम लती को
 पाना देता है । इस गुण्य प्रगत मे उर
 बहत हीन प्र । का प्रगत के राजा क
 यह सत्य है । को आनाधामधन
 सोजनावरम् । को धामधन है हम्न
 प्र नुका स वादा । यह गुन यह प्र नु
 का देता है —

ऐ प्रसन्नचित्त भो के आर से व्याकुल मनुष्य उठ । जाग श्रीर अपने लक्ष्यसर्वशक्त मवर्धितक सर्वधारक के कर्म पर रहे परमश्रद्धा से ध्ययित कर निश्चय कपो नगी हा जाता । इसलिए वेदम कहा है—

हे कर्पवीर ! उठो ! जागो ! तुम्हारे
 लिए ससार का कायदेना जलना पड़ा है ।

तुम जिस भी काम को हाथ में लोते
तुम्हारे स्पर्श से बड़ी महत्त्वपूर्ण बन
जाएगा। तुम मानव सेवा के लिए आए
हो। तुम में अद्भुत शक्ति निहित है। तुम
अपनी शक्ति को पहचानो। उठो। धाव
विश्व को तुम्हारी प्र वचयकता है। समस्त
ससार तुमसे ज्योति प्राप्त करने की
प्रतीक्षा में है। तुम ससार का कल्याण
करो।

इस प्रकार यह वेद मंत्र कहता है
उठो ! जागो ! शरीर ध्वनि को अपने हृदय
में जाबूत कर समाज को जागृत करो।
राष्ट्र का उधार करो। निराशा को दूर
कर आशा का प्रसार करो।

इस ऋषि में एक सत्य है—

मनुष्य धात्र न ह तत्र है तर्को
बहु वन में करवे तो प्रसन्न हीरो का
जबा ताज है सखे धात्र के इस प्रभात
में बने धात्र की सृष्ट योजना फिर कल
या तुमको ओजों तुम्हें पढ़ा कूल न
सोलना स्वर ऊपा के सुनो सुनाओ । धात्र
धात्र तुम खुशी बनाओ ।

हमारे कार्य हो मानवमात्र के लिए

धात्री कर कुछ ऐसे कम
 जिससे हो सबत्र हम रा नाम ।
 हम हो सभी प्रतिष्ठा के पात्र
 न हो किसी की दृष्टि के शत्रु ।
 हो सभी दुग्धों से मस्त
 शब्द शब्द हमारे लिए प्रयुक्त ।
 हम नौ राष्ट्र के निर्माण में सहायक,
 हमारे काय ही मानव के लिए आनामक

साहित्य वह है जिसस

हो सबका कल्याण

जिससे हो नतिकत का प्रार
सच वेष्टन का ह सना
उपन हो सदज्ञान सद्विषय
छिन भिन हो कुसकार
मिट जाये ऊच नीच की भावना
छा जाय र पकि सबभावना।
जो करे सतयुग का नियम
गृहि य वह है जिससे हो सबका कल्याण

— गकुलचन्द गृह्य तिथि स्पष्टि
साक्षगज जि० राय ११ (५०)

(पृष्ठ १ से अगे)

आयसमाज का यह विस्। त
इतिहास यथार्थ मे नारा के पुन-
जागरण और उसमे महर्षि दयानन्द
सरस्वती तथा आयसमाज के जन-
जन का योगदान सजीव बना है।

पंजाब दिल्ली और हरियाणा
को साथ प्रतिनिधि सभाओं के तीनों
अध्यक्षों के आगामी वर्षों के लिए
उन्हें कुलाधिपति चुना है। डॉ०
सत्यकेतु विद्यालोक र सक्षम विद्वान्
अभिन हैं जो इस पवीत गुरुतर भार
को बहनकर गुरुकुल का नवनिर्माण
करेंगे।

सम्पादकीय—

धरम जुद्ध मोर्चा वापिस, नये सवेरे की तलाश

पञ्चम में चार साल से खून की होली निरन्तर बेली जाती रही। हर रोज सवेरा नये खून की लाशियां बेगुनाही की चीख लेकर उगता। दहशत और आतंक से दिवाये सन्न होती रही। डोल डवाकी और भयभीत के स्वर सो गये, सद्भावना एवं प्यार प्रीति के भीतो के बोस नफरत के जबडों में सोते गये। दिन प्रतिदिन स्थिति बिगड़ती रही। बहुत और भाग के दरिया को पारकर २४ जिलाई की प्रधान-मन्त्री समझोते के किनारे पर पहुँचने में सफल हुए। सारे देश ने एक स्वर से समझोते पर प्रसन्नता व्यक्त की। किन्तु सद्भावना एवं सदास्पता से हुए समझोते से कुछ काले दिलों के कोने में अगारें सुलग रहे हैं। इस को हवा से बिगारगिया फूटने लगी है। यद्यपि थो लोभो-बाल ने तीन वर्ष गुना घरम जुब (बर्मजुड) बास ले लिया है परन्तु जल्दबाज़ टोहरा और सरदार बाबल ने समझोते पर तीथ अस्तोष ज़ाहिर किया है और यह भाग निरन्तर बघक रही है। जल्दबाज़ टोहरा ने आनन्दपुर साहब से हुई सभा में समझोते को पञ्जाब के सिलों के हिताँ के विरुद्ध बताया। उन्होंने कहा मैं समझोते से कनई सहमत नहीं हूँ पर धर्मिक जुद्ध नहीं कहाँ कही ऐसा न हो कि समझोते से हमें जो कुछ मिलने का आशा है वह भी न मिले। हमने तो माग की थी ब्लू स्टार आग्रेशन में गिरफ्तार लोगों को क्षमा माफी दी जाये और उन्हें रिहा किया जाये (जो की हुमा हो नहीं) सरदार बादल ने कहा कि मगई सेमिको और छात्रों का हथ रिहा नहीं करा सके हालाँकि इन लोगों ने हमारे लिए कुर्बानियां दो है। इस सन्मेलन में प्राये २०० प्रतिनिधियों ने सत लोभोबाल के साथ तथा समझोते पर विश्वास प्रकट करते हुए हाथ उठाकर सहमत प्रकट की, केवल टोहरा और बादल ही सिर झुकाये बंटे रहे।

सत लोभोबाल साहसी नेता एवं सुमनूक वाले नेता के रूप में उभरे हैं। प्रकानी दल में जो नेता सत हरचर सिंह के समर्थक हैं उन्होंने इस ऐतिहासिक समझोते पर फूल चढाये हैं। ऐसे नेताओं में पूर्व मन्त्री सुलदेव सिंह जो ढवा दन के कानूनी सलाहकार डा० गुरलाम सिंह तीरो जो पूर्व विधायक बानो बन्तु न सिंह और एस एम खुनी ने कहा है इस समझोते से पञ्जाब में व्याप्त सभी सत सत दूर होयें और विकास का एक नया अध्याय शुरू होगा।

समझोते को देश व्यापी समर्थन मिलने से उपवादी शीखों के अर गये हैं। इधर बाबा जोगेन्द्र सिंह इस ताल में है कि कब बादल और टोहरा उभर से बौलना कर उनको और मुल मोहे। अमृतसर स्वर्ण मन्दिर से इन दिनों दोनों युवाँ ने गाने बाजी और तीलों मछपं होने से सन्न बन चुका है और बाहर पुलिस सुरक्षा बल चौकसी के लिए तैनात है।

हरियाणा और राजस्थान, चण्डीगढ़ तथा पानी के बटवारे को लेकर प्रकानी से सत हुआ है। राजस्थान विधान सभा में चरना दिये बटे भी सतु शेलावत का कहना है हमें ऐसा प्रतीत है प्रकालियों को समुद्ध करने के चक्कर में राजस्थान के हिताँ की बलि हो रही है। राजस्थान का विपक्ष प्रधानमन्त्री से हो आस्थापन चाहता है। इधर हरियाणा ने पञ्चम दाल के प्रायस्वत होने पर भी विपक्ष के मन में रावी व्यास के राजनीति और चण्डीगढ़ के बदले में मिनने जाने इनाकों को लेकर शका बंटी हुई है। इसलिए विचार के २६ विधायकों ने अपने हस्तोप अपने अध्यायों को सौंप दिये हैं। ३१ जुनाई को हरियाणा दल का भी फैलाव किया जा चुका है। इधर भाजपा ने समझोते के स्वरूप पर आपत्ति प्रकट की है। प्रमुख आपत्तियां इस प्रकार हैं लाहाड़ आयोग ने चण्डीगढ़ हरियाणा का दिया था लेकिन हरिद्वार गांधी ने इसे पञ्जाब को दिया था हरियाणा का। इस के बदले में प्रभोहर

और फाजिल्का मिला था। लेकिन नए समझोते में चण्डीगढ़ पञ्जाब को दे दिया गया। पर प्रभोहर और फाजिल्का हरियाणा को नहीं दिया गया। (२) ब्रह्मिन भारतीय गुज्जारा कानून बनाने से भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिता बढेगी। (३) सरकार ने प्रकालियों से हिंसा प्रकट या गुज्जारा के दुस्वयोग के सिलसिले में कोई लिखित आस्थापन नहीं लिया।

(४) नये समझोते के तहत दिल्ली दाने की जाँच को दायरा बनाकर कानपुर और बोकारो करा दिया गया है लेकिन इसका दायरा पञ्जाब में हुई हिंसा तक नहीं बढाया गया।

(५) विपक्षीय वार्ता २ जनवरी १९८३ में पानी विवाद पर लम्बी बातचीत हुई थी इसमें प्रकालियों ने कहा था कि निर्णय समस्या हरियाणा के साथ ही नहीं राजस्थान के साथ भी है। उस समय मर-कार और मभी विपक्षी पार्टियों का कहना था कि १९४५ के समझोते के तहत व्याप्त और सतलज से राजस्थान को पानी मिलता है फिर से लागू नहीं किया जाए, लेकिन नए समझोते ने इस मुद्दे को फिर उभार दिया है।

इस प्रकार इस समझोते की ध्वजिया उधेड़ देने की हर तरफ से कोशिश हो रही है जबकि आम जनता शान्ति हो जाने की सच्चावना से हो प्रसन्न है। प्रकालीन विवाद और गुह बरखासिह टोहरा ने धामानी राखनीति निर्धारित करने के लिए आपस में बातचीत कर बकीलो और बुद्धिजीवियों की एक बैठक बुलाई है। बाबा जोगेन्द्रसिंह जो समुन्नत प्रकानी दल की तदर्थ समिति के संयोजक हैं ने कहा है— जब तक मेरी पार्टी से सरकार बातचीत नहीं करेगी तब तक पञ्जाब में शान्ति नहीं होगी। वे कहते हैं मल लोभोबाल धन दल के प्रयत्न नहीं हैं जैन से छुटने के बाद उन्होंने दल से इस्तीफा दे दिया था। इसलिए धन ने मोर्चे के डिक्टेटर नहीं हैं और न ही दल की तदर्थ समिति के सदस्य। उन्होंने कहा, अभी हमारा लक्ष्य दूर नहीं हुआ हम उस की प्राप्ति के लिए जो ठीक समझते करेंगे। आल इण्डिया सिल स्टूडेंट फेडरेशन के छात्र भी इस समझोते की नींव में पलीना लगाने के लिए कमर कसे हुए हैं।

इन समस्त परिस्थितियों को मद्दे नजर रखते हुए समस्या की प्रयकरता और गहरी जवो का एकासा होता है लेकिन ठंडे विभाग से विचार करों तो समझीना कभी भी बिना लिये दिये नहीं हुमा करता। समझोते से कभी भी कोई पूर्णतः समुद्ध नहीं हुमा करता इस तथ्य के अनुसार इस समझोते से समस्या के अग्रारो पर पानी चलने की प्रच्छी कोशिश हुई है। हालाँकि स्थिति यह है प्रकानी घडा नहना है हमें नया कुछ नहीं मिला और विपक्षी राजनीतिक दल का कहना है सरकार ने काफी हद तक मुक कर अधिक उदारना के साथ सम-झोता किया है। इधर पञ्जाब ने शोभा हो चुनाव को घोषणा किये जाने की सच्चावना है, जबकि शीघ्र चुनाव करायें जाने से पञ्जाब का माहौल विगड जाने की भी सच्चावना है। समस्त स्थितियों को ध्यान में रखकर पञ्जाब के तपसे लोहे को शान्त करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। साथ ही पञ्जाब को शान्त करते करते दूसरे प्रेशा कूड न हो जाये यह भी सरकार को ध्यान रखना चाहिए। सद्भावना और सदास्पता से जो नममोती एकमुन्न में हो कर बने का साहसिक कदम श्री राजीव गांधी ने उठाया है, देशहित में सभी को उस पर फूल गिराने चाहिए न कि झूल।

—यासराज सुषण्डु

धर्म-प्रचार के नाम पर राजनीतिक षड्यन्त्र

लेखक-रामगोपाल शालवाले

[गताक से घाये]

सेवा और प्रेम का एक नमूना

शोका का पार्थिक न्यायालय रहा बदनम न्यायालय था। बहु न्याया-
लय उन स्थितियों को भी जेल भेजने के लिए बदनम था जो ईसाई बनने से
इनकार करती थी। जेल में उनके साथ बलात्कार किया जाता था और
प्राथमिक वृत्तियों की सन्तुष्टि के वास्ते वे गर्म बिरोधिनी कढ़ी खाकर जीवित
जला दी जाती थी।
(श्रीयुग पारिक की पुस्तक पृष्ठ २१-२२)

[illegible]

रोम का ईसाई (ब्राह्मण)

मानवीय प्रतिभा का नाटक रचने के लिये ईसाई मत किन्ती छूट होता है, इस बात को राइट डी० मोविली ने निन्द कर सिखाया था, जो १७ वीं शती के प्रारम्भ में भारत में आया था। इसका जन्म इटली के उब्व घराने में हुआ था। यह कहा बुद्धिमान और अपने धर्म का बड़ा भारी प्रेमी था।

उन्मने देखा कि र.असस्ता के बल पर ब्राह्मिवासियों और छोटी जातियों के लोगों के सामुहिक धर्म परिवर्तन की नीति थात है, जिसका प्राथम्य काशी की और अन्य संकेतिक शीघ्रिने नेने रहे थे। इससे स्पष्ट अनुभव हुआ कि जब तक उच्च दर्ब के हिन्दू ईसाई न बनेगे तब तक भारत की भूमि में ईसाइयत की जड़ें गहरी न बन सकेंगी।

इत धरुने बाउंसी नीती का परिणाम कबूरे बायनी नीति बायनी। यह रूठे नीती कौनसि काय तुलनाले ये बहुरा पुराना, जिसे बाबू ये बल्ल बाबू नीति। मायाय कबूरे बायना, कबूरे ये बायनी बायना, बाबूने बाबू का बल्ला हुना बा। यह बहुरा के बागुनी ये मुकुने ये मकन ये बल्ले हुना बा। उठने बल्ला—मि रूठे ये बाउंसी हल्ला। बायानीले इहे बाउंसी कुन ये बल्ल हल्ला—मि रूठे ये बाउंसी हल्ला, बाबाकुरी बाय बाय बाउंसी हल्ला इहे बल्ले हुने बा। उठने बाउंसी हल्ला ये ये बाउंसी हल्ला। इति हेतु ईदर ईदर कल्याणबाय नामक एक भावना बल्ल बायनी। इतनी ही बल्ले उठने ये बल्ले भाकक बल्ल बायना हल्ला। [१८०] तब यह बल्ले बल्ल बायना बाउंसी हल्ला। बाबूने ईसा का जेना उतनी उठनी हल्ला बा बल्ले बा। यह अठेठेठेठे पायरीले ये इहे बल्ले का बाउंसीले ईसा ही इहे बायनी कायना बल्ले।

१६०३ से १६११ तक ४ वर्षों में ८७ बाढ़ों को ईसाई बनाया। यह नोर्विशी की बहुत बड़ी सफलता थी, जिससे उसकी प्रसिद्धि बढ़ी। उस बाढ़ का सःधु ने ४ वर्ष तक कार्य किया जो अपना नाम रोमन बताया करता था। अपने छल-प्रायश्चर्य ध्वनिन्व ने १ लाख लोगों को ईसाई बनाया। सन् १६३६ ई० में ८६ वर्ष की आयु में उसका देहांत हो गया।

इस प्रकार तलवार और छल से विदेशी मिशनरी भारत में अपने धर्म का प्रसार करने में सफल हुए।

अंग्रेजी राज्य में इन लोगों ने सेवा, प्रेम आदि अनेक प्रकार के हृदयपूर्ण से अपनी सहायता बढ़ाने का प्रयत्न किया।

यद्यपि सरकार नयी प्रकार जानती थी कि धनने राज्य की कमी महसूस करने के लिए ईरानियों की सन्ध्या बजाने का आदेश। वह सरकार को सत कोशिश करने के लिए कहा था। उन्होंने मुकुट, काबिब, विद्यावार, हुसनावा, धन्यावावा, तजिब होम श्रादि सन्ध्या के लोग के कोने-कोने में जोखी गई। इन सब का एक ही उद्देश्य था—देश के नाम पर धन में परिवर्तन। पादरीको का धर्म के पक्षकों के भी किशियत सम्झा हुआ जाता था, कहीं-कहीं तो प्रान्त प्रान्त के मजिस्तरा (मैजिस्ट्रेट) कोने के बाहर होकर थे। इस प्रकार का १५५५ की राज्य-

श्रमिकों के पदचातु सेवा, शिक्षा और सरकारी नौकरियों के माध्यम से भारत की हिन्दू जनता को ईसा की शुरुआत में सम्मिलित किया जाता था ।

भारत में ईसाइयों की संख्या

सन् १९६१ में केवल १०० हिन्दू ईसाई बने और सन् १९५१ तक ८१ लाख ५७ हजार १५ सौ ६५ लोग ईसाई बनाये जा चुके थे ।

पञ्चैक मास होकर बसे स्ये । उनके साथ-साथ विवेकी मिलनरी भी विस्तर गोक करने दूषण की धोर जाने की तैयारी करने लगे । कई मित्रधारक देव सिये स्ये । उस समय उनकी संख्या २०६७ थी । किन्तु हमारी राष्ट्रीय सरकार की धर्मविरोधक व्यवस्था होते ही पाकिस्तान ने भारत होकर जाने का निश्चय बदल दिया और हठसा ने वीर चक्र के धारक को भी पाकिस्तान की गली प्रहार करने के किन्तु का बर्ष परिवर्तन होने के पश्चात पुनः तथा राष्ट्रीयता प्रकाश जाती है ।

[illegible]

पाकिस्तान बनने का प्रश्न कारण किन्तु का बड़े प्रभाव डाले। कश्मीर, ख़ामन, बल खाना ही हैं। विदेशी मिलानरी तथा भारत (ब्रिटीश) विदेशी राजनीति-विद्वत् इत तब को यहाँ प्रचार जानने हैं और भारत सरकार की धारणा प्रवृत्ति का ध्यान उठाकर यहाँ पाकिस्तान बनने दिना राष्ट्रीयतावादी आन्दोलन में आगे की योजनाओं में पुनर्बल बुनी नूत मन्त्रालय प्रवृत्ति का ध्यान लीक 'आगे हैं यहाँ समाचार मिलने पर हमारे शासन की एम प्रेस को जारी कर के देते हैं, इसका पाकिस्तान सरकार को जोताने काज्जी प्रोटैस्ट जेकरा करने राष्ट्रीय कर्मण का वास्तव करने निश्चित हो जाते हैं।

इस निर्बल नीति को विदेशी मिसनरीज वकील प्रकाश जानते हैं और वहाँ मई १९५७ में धर्मो की राज्याधिकारियों के साथ साव्य वारत छोड़कर जाने की तैयारी कर रहे थे, वहाँ प्रायः धर्मो वैर वजोकर कई भारतीय लों को इसाई स्थान बनाने की तैयारी कर रहे हैं ।

ऊपर की पंक्तियों में बताया जा चुका है कि वेणु का बटवारा होने के समय वर्ष १९४७ में विदेशी पारखियों की सहा २०६० बी. डिग्लु नेहरू राज्य के सन १९४७ में बर्मे के नाम पर राज्यसभा विधानसे बाहे किशोरी बराकोर् की मक्या सरकार की धोकीली के अनुसार १९४६ में ५७७ बी. सी. छोटे बरे ईसाई सन्तानों ने प्रजासत्ताक का काम करने वाले पारखियों की सहाय्य यदि जोड़ें तो जाबो तो ८ हजार से अधिक मोरी बसधी जाने मिलनरी भारत के कोने-कोने में फैल गयी है।

इन गौरे प्रथ रकों की ईसाई संस्थाओं को परिषद के २० विदेशों से भारी वनराशि भारत की गरीब जनता को ईसाई बनाने के लिए भेजी जाती है।

रिजर्व बैंक प्राक इण्डिया के द्वारा जनवरी सन् १९५० से जून सन् १९५४ तक २९ करोड़ २७ लाख ३९ हजार रुपये विदेशी विभाजितियों को

बाहुर से आया ।

किस देश से कितना रुपया आया

प्रभारिका	२०,५५,५००.०००
कगारा	१,६५,५५,५००.०००
बेलाजियम	१,५५,५००.०००
देवमार्ग	२०,६६,०००.०००
हास	५,५१,०००.०००
जर्मनी	१,६६,०००.०००
नारखे	२०,६५,०००.०००
स्वीडन	१,५५,५००.०००
मिन्टबटलिंग	१,५५,५००.०००
इ.स.सं.	५,००,०००.०००
फ्रान्क डेलो से	१,५५,५००.०००
विश्व	२०,६६,०००.०००
भूमि वीथ	२०,६६,०००.०००

कुछ लोगों को तथ्य का तथ्य खिगने में ही अपनी योग्यता की सार्थकता दी जाती है। तथ्यों को तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत करने से उन्हें ध्यान-दशा है। धावचक्र की सुधारणा सिंह, डा० महीप सिंह आदि कई विद्वत् सज्जनों यही कार्य कर रहे हैं। वारा धनुर्गर्वह (वीरभक्त सिंह जी के दादा) ने लिखा है कि सिक्खों को हिन्दुधर्म से प्रेरित करने का बखव-न उन्नीसवीं शताब्दी के धर्म ने बना। यह सब कुछ धर्मज की राजनीति से हुआ। सिक्खों ने मुसलमानों के लिए वे लोग धावसमाज की ओर देखे हैं।

इतिहास का तथ्य यह है कि महर्षि दया नाथ के विचारों का व्यक्तित्व से प्रभावित होकर दयानाथ धाम पर सिंह धावसमाज ने पाए हुए तीन मान बन से धावसमाज की सत्ता करने जीवन को सफल बनाकर गौरवमयिष्ठ हुए। गहरार बहालसिंह जी ने दो साहोदर के उदात्त विचारों से एक धावसमाज की सत्ता रक्खी थी।

बहुत कम लोगों को ध्यात इस बात का पता है कि धावसमाज के धारमिक युग के कविगो नाथकी भिन्नतरिदा ब सेवकी में एक गहरार काहलसिंह जी थे। धाव धमसंर के रहने वाले थे। किसी काव्यमय ने धाव करते थे। विन रात उन्हें धावसमाज के प्रचार की बुन खूनी थी। उनके अमन तन धावसमाज में ऐसे ही कोकिल के जैसे अमन अमोघ्य की थे। यह ममन की के युग में ही हुए। धम-विमलनाथ पर गहरार जी से धपनी धमि साधो ब मरनयो में कदा प्रहार किया। 'बुध' ब 'वेध' उदनाम से विभक्ते थे। दोनों उदनाम का मरनो में प्रयो। किया करते थे। धमोपन की थे।

अप ईश्वर की अप ईश्वर की
'बुध' होकर प्रभु वेधक
की विधो सुने

यह उनका बड़ा कोप्रिय ममन था। धावसमाज कथोकोसी साहोदर ने

किशोरमन्त्र-

नचिकेता

प्रत्योता बलनी धावकी

धावसमाज नाम क एक ऋषि थे। एक बार उन्होंने स्वर्गमें यज्ञ किया। इस युग को व्यस्त करता है। यह सब कुछ धाम कर देता है। यह मुमु पर भी विजय प्राप्त कर सकता है।

मह के धावकी दिन धावसमाज ने धाम बना बुक किया। उनके पास गर्व धावकी भी। धाम सेते सेते के धोचने खने कि धाव इस प्रकार सारी धमकी नीप से हुआ तो मेरे पास कुछ भी नहीं बचेगा।

तस्मामञ्च-

वार्थसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा-६

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

विज्ञान के धनुर्धर मन्मथ का एक सख्त 'धार्म' सगीत मन्मथ गुणालनी नाम से छाया था। उसने उपरोक्त मन्मथ के प्रति रिक्त और भी रचनाएं धावकी सन्मि लिख की थीं।

धार्थसमाज की धावकी वीकी की सार-सार काहलसिंह जी मरिजे धावकी के उल्लाह का मन्म से प्रचार लेनी चाहिए। धाव धावसमाज के सब कार्यों को धरने हाथ स करते हुए धाव विमोह हो जाते थे। साह, लगाना पड़ था दरी विज्ञानी पड़ यह सब कार्यों में धावो रहते थे। बन्म प्रमल थे। कोरी साधक लोगो की समाज से मारते थे।

पुलिस का भय नहीं, लाभचंद का भय अधिक था।

धावसमाज के धारमिक युग में धावसमाज की भी एक नामी धमोपनयेधक हुए हैं। उन्होंने पूछात की जब उदात्तनाथ का बड़ा गौरवमय काव किया। यह स्वर्गकोट के निवासी थे। गुरानाथरी की भी धारमिकी वकील के मुन्नी भी रहे कभी उदात्त सेवक के भी उल्लाह नाम जाते थे। धार्म बने तो जीवनी ही सतत गया।

मेमो पर प्रचार करने में वह धन थे। उनकी सान ब निर्मोक्त का अलाओ पर बड़ा प्रभाव पड़ता था। उन चितो मेमो पर ठग लोग तास के पत्रो क खेल से धोने गाने लोगों को बूझ जुटा करते

ये कुंजी धावो का धाम करने लगे। यह धाम उनके सबको को धमकी नहीं धनी। सबके का नाम नचिकेता थे। यह धाव की किशोर धमक्या में ही था। यह लोचने लया— कही पिताजी मेरे लिए तो ऐसा नहीं कर रहे हैं। यह दोबारा धाव पिता के पास गया और बोला—पिता जी! ये सब नीपें तो धावने बाह्यो को थे दानी और मुझे किये होते।

यह गुनकर पिता को बड़ा मुत्सा आवा और ने नचिकेता की दहने लगे।

ये। जब तासकन किसी मेने पर पर्वक बातों से उज्जा सेलने वाले उनका बड़ा सम्मान करते थे। ये धमकते थे कि यह व्यस्त उनसे निकलकर एक ऊँचा मानव उन गया है। यह धम ब जाति सदा का धम पट रहा है।

प० विष्णुदेव जी पंजाब क एक बन्म प्रसिद्ध धाव मता एक मेने पर धावसमाज के प्रचारार्थ गये। प० विष्णुदेव जी वकील से निष्ठा भय कि वहा नीप बहा कि उदात्त सेवो विमान बा— उदना— नचिक से नहीं बरते थे पत्निया साधक थे। कारण यह कि पुलिस धावा का ता से लोग पैदा कर गुप करा देत थे धरन्म साधकन को भय धमका प्रयोग न भय कराना धमकन था।

निम्न वष के लोगो के जीवन मुबार के लिए लाभचन्द नी उई धाव धोने को ऐतिहासिक काव दिया है उसका मूल्यांकन करना विस्त कठिन है।

एक धार्म सैनिक

विमल धावार्थ नरदेध की सत्तीय के पिता जी भी निवास राव को एक प्रसिद्ध धावसमाजी थे। उनके धार्म सभाकी वनने की कन्मनी बकी रोचक है। धावार्थ नरदेध जी न धपनी धावकीलो ने यह कहानी पूरी धाव पड़नात करके नहीं दी मुझे कीमन् की निवास राव जी के एक लेख से इस कहानी का प्रायासिक

उन्नीस वषें हुए कहां मैं तुझे यमराज को दया। यह सुनकर नचिकेता ने यमराज के पास जाने की तैयारी कर दी। उसके पिता की जो यह गान मान्य हुई। उन्हें बड़ा दुःख हुआ क्योंकि उन्होंने धावसे यमराज कहा दिया था। नचिकेता को विस्तृत बरननी लगा और यह यमराज क पास जाने के लिए तैयार हो गया। पिता ने उसे रोचने की कोशिश की। नचिकेता ने एक सुनी और कहा मुझे यमराज के पास जाना है। उनसे साहचकार करना है दया नहीं है। हम धपने पापी के कारण उससे उरते हैं। इतना कहकर नचिकेता ने पिता के चरण छुए। यह वही थे यमराज। यहव हूर यमने पर यह यमराज के डार पर पड़ा। यमराज कही बाहमर गये हुए थे। नचिकेता

विमल लिखा है।

धटना इस प्रकार से है कि श्रीनिवास रावकी ऋषि देवान्म के बन्म विरोधी थे। धाव पर गुना के भी विष्णु धावकी विप-लुपकर का गूढ़ रण बड़ा हुआ था। धम धाव को विप-लुपकर बहा जातिप्रिय व धम रजक मानते थे। एक धम मोविमल राव ने श्रीनिवास राव को की ऋषिद्वय धम विपे धरन्म मुंडनीय सेते कि उन्हें पड़ रहा है। एक बार धाव गुना गये।

बहा धपने मुन विप-लुपकर के पास बैठ दे कि एक सैनिक धावा। उसने धने ही नमस्ते कही। नमस्त सन्ध सुनन ही विष्णुदेव जी ने ऋषि देवान्म का मानव ब मनमो पर धपना सनातननात नाथन काहना धारमन दिया। वह धाव सैनिक गाँव में सब हूँ गुनाता रहा। जब विप-लुपकर रावकर लुप हो उने की सब धावनिमो का उत्तर दकर धाव विज्ञाता का धावमा से मगनन किया हुआ से धावनिवास राव जी बन्म प्रम विप-लुप

धा क मन पर कि धावकर को का जो प्रभाव था सब हूर हो गया। धर लोचक ऋषि के धम पड़ा एक पक धाव का बन्म पड़ना व की धोर धम यह धाव पमाज के वीराने सैनिक धम गये। उन्होंने उद धाव सैनिक का नाम नहीं दिया। लयज्ञा है कि यह हूरियाणा पमाज धाव उद धम का धम यमनात हुआ। गुना ने सैनिक धावनी तो है ही। य निवास राव की धम सत के लिए धावसमाज के हो गये। कीरकर प० लेखमराज की सत्तीय ने लोग पर सुझाये का काव किया।

ग कृप धाव की हूये यह सन्म-मना धाविए कि सैनिक धम का प्रचार करना केवल हमार उदरकी मा य धुरो-धितो ब साधुकी का ही धाव नहीं। प्ररेक मा का कल-य है कि वह सेव के धमर पर है।

बाहर ही उदर गया। जब यमराज लोचक धाव सब उद धाव धावने पर मुन मुनकर को देवा।

यमराज ने गुना— तुम कौन हो? नचिकेता ने मन्मता गुनन कहां मैं बाज धवा धुनि का पड़ हूँ। मेरा नाम नचिकेता है। मेरे पिता जी ने सवने यज्ञ किया था। उन्होंने उस धम की धविगा से मुझे धावके सुत्र दिया है।

यमराज को बहा धावार्थ हुआ। उन्होंने नचिकेता से गुना— तुम्हें मेरे पास धमने से धर नहीं लगा। नचिकता ने उत्तर दिया— मगनन! साहचरक मुन्म हूये धरत देते। हूये धरता नहीं धाविए। धाव तो सब की धावार्थ करते हैं। धरि

(विप मुंड ६ पर)

पवित्रता

दुख ही भासिये साक्षि होर तीरी-
है सामाजिक धारण्य धन्यमान की-
है कहां कि पावन भासिये पावन की-
सहार के शशितान्त का उपकार करना
है। ऐ पावों ! इस बात को जान लो कि
सहार का उपकार करना तुम्हारा दुर्दैव
है। शितान्त का पावों के कर्मा पर रख
है। इससे जैना को दुख, दसान
नही बना सकता। कोई घरने मुक्त की
प्राप्ति होकर, कोई नमस्ते भासि का। पर
सहार का उपकार करना पावों का मुख्य
उद्देश्य बनया। इस उद्देश्य में हम बना-
या है जोरि जस पहले हमें पावों का शस्त्र-
निक हमने कर ले। फिर बाह्यिक
उन्मत्त करो। पीछे से सामाजिक उन्मत्त
करा। और जोरि समान सहाय का
उपकार करो ने समर्थ होकर। जोरि दुख
होर सहाय का बानगी गम्यानी तकल
को पैदा होकर। जिसकी बिसयानी साक्षि
होली, उन्मत्त होकर सहाय का बहारी
होली। तीरीहै धारियक बल होर बिसयानी
साक्षि बिसलकर उन्मत्त को समाज बनया,
बकी समाज में भास करली। जो भल
है की सहाय है दे बया साक्षि का उपकार
नहीं, इसएव ही उन्मत्त वती को हमें सप-
क्षि कर्मा पाविये।

नृचकेता को यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने साधारण सुखी के रघुन में आराम की उन्नति की ही प्रशंसा समझा। यद्यपि उसे उसे आराम का स्वरूप का ज्ञान कराया वह उसे पाकर बड़ा सुखी हो गया। हम भी ऐसे जिज्ञासु नरों की संसार में प्रप्रेम को प्रसर आराम।

आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका
द्वारा विश्व आर्य सम्मेलन

प्राप्त की यह जानकारी प्रसन्नता होगी कि उपरोक्त सभा तारीख १४, १५, १६, १८-१९ को घरेलू एक महोत्सव और विविध कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। जिसके लिए सांख्यिकीय कार्यक्रम प्रतिनिधि सभा नहीं किसी भी अनुमति मिल चुकी है। हम धन्यवाद करते हैं कि भारत से जोर-शोर से लोगों से अधिक जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इस सदन बनाये। इसके लिए निम्नलिखित संस्थाओं द्वारा अनुमति प्राप्त की जाये।

- [illegible]

श्री एस० रामभरोसे,
प्रधान—आयं प्रतिमिषि सभा सादर्य अफीका
३५ कास स्ट्रीट हरबन (मानव अफीका)

सभापति, बेह निकेतन

वन हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक

प्रायःसन्देश के ७ जुलाई, १९८५ के प्रक मे "मौसम पर वर्णों का प्रकीर्ण" शोधक से मिलित सम्पादकीय के अन्तर्गत विचार महत्वपूर्ण तथः पूर्ण एव प्रेरणादायक रहे ।

मित्र-सहचर्य बना एव प्राणियों की शक्ति के बनी की क्षयप्रति उपयोगिता है। यह कारणों की कड़ हवासे वे जनों का महत्त्व प्रति जागृतकरने से रहा है। जन्म हुआ शक्ति के महत्त्वपूर्ण से रहा है। बुद्धि शक्त्या वे जनों के जागरूकता प्राप्त करने तथा समानता के समझ करने की ओर मोड़कराने एव समानतापूर्ण एव सम्यक्ता रही। हमारे ऋषिगण एव मुनिगणों के प्राण्य ही बनी। एवों के पुत्र्य हैं। सर्वत्र काम का समानता एव सुव्यव कार्य समानता जाता रहा है। इसी से हमारे देश के स्वर्ण की शक्ति पर ही होती रही, वे सदा सम्यक् के परिचय पर रहा, जनों के सत्य में प्रिय प्राप्त कामगु मद्राष्ट तथा वे शक्ति के महत्त्व से उचित समझ पर रहने के द्वारा ही काम समानता की सुप्रमात्रने से सहानुभव रहा। मध्य एव स्वयं प्राण्य से पुत्र हमारे देशको की ठोकर सहानुभव प्रान्य पर एव जन-परिभाषा शोधप्रयोगों के निमित्तने से महत्त्वपूर्ण बुद्धिगर्भ प्रदान करती रही।

रही। उसी वक़्त उसने सब हथौड़े
 के लिए बुनियाद, आग लगा बाकी
 प्राण के दुष्कृत हलाल रहा। कोन
 मानने के लिए ज़िन्दगी की धमलाहरी में
 सेनो का प्रकाश दूही बनो मे हुमा
 मग़ना-रुन का पतले पौष्ट हनु
 नो मे विताये मे । पंखों मे पतंग
 त्याग के १२ बजे इन्ही को मे विताये
 मे नवान फ़ण्ण की मरुत बन मे एक बुल
 के अनेक जगह सेल सभ्य एक जहल
 हो सिये ते हुक़्म की । राजमग़ान
 की शिफ़ा मे एक बुल के इन्ही आग प्राण
 कर धमग़ान बुल बने मे । हमारे सेल मे
 एल्लुधमग़ान सभ्य कर प्राणमग़ान
 कर नो मे इन्ही जीवन विताये की दर
 रोगर की । बहो आग प्राण बहा बुल
 रोगर, आग सभ्यता तथा बहा की
 रिलारा बुल का सभ्यता सभा बहा की
 इन्ही से इन्ही मे हुक़्म प्राण राज-
 पुग़ सभ्य बहा हलाल र आये इन्ही
 पण की बुल का सभ्य कर न-कमग़ान
 की इन्ही ते उसमे विषय सभ्य सेल मे
 इन्ही सभ्य इन्ही सभ्य के सभ्य सेल मे
 इन्ही सभ्य के उर मे इन्ही सभ्य को
 सभ्यन के पूर्व कर हमारे सेल मे नो
 एक कन्यवीन का विषय महल रहा
 सभ्यविषय बुल के सभ्य की रिलारा
 रही । विषय सभ्य के इन्ही सभ्य
 इन्ही को विषय, सैमग़ान, राज-
 इन्ही के विषय सभ्य सभ्य सेल मे
 इन्ही के विषय सभ्य सभ्य सेल मे
 इन्ही के विषय सभ्य सभ्य सेल मे

उपरोक्त स्थिति के विपरीत मनो की उपेक्षा वि. ब. की अन्य प्राचीन सभ्यताओं के लिए एक लक्षण सिद्ध हुई। जिस प्रकार कि जहाँ मनो के बचाने के सरक्षण की ओर अनुचित ध्यान नहीं दिया गया मनुष्यों के बीच तथा दृष्टान्तों की अन्य सभ्यताएँ विनष्ट होकर इतिहास की सामग्री बन गई।

दुःख का दायित्व ही है कि दखनेकी मायावश्यां एव प्रत्येक काले दुःखको देखे की वनी के बिनाही की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी । इसका कारण यह है कि द्वारा बनाने में ही ऐसे मायावी लक्षके का विनाशने तथा ब्रह्मत्व वन नय नय लक्षके धारित है विनाश । निमाया वनी के बिनाही के धारित ही सङ्कल्प । नि सङ्कल्प उपलब्धता क्या जल्द-हि की बह्म एव ध्यावश्यक व पश्यन्तु द्वारा करन समय यदि ब्रह्मत्व प्राप्त की है दुःखा-रोपण के प्रत्यक्ष ही की ब्रह्मता विद्या होता हो तो ही एक वनी के बिनाही की ब्रह्मता विनाश करन न होती । इस का विषय है कि लक्षणीय वन ही ब्रह्म इवरी राट्प्या सरकारने है नी इस ओर समुचित ब्रह्म न हो सङ्कल्प विद्या । जिसके प्रत्यक्षव्य वनी की लक्षणी विद्या का शेषफल प्राप्त हो ।

प्रसन्नता का नियम है कि वैधानिकी की वन सबकी रिपोर्टों तथा सुचरानाये बहुमुखी एवं महानुभावों द्वारा बनाये गये चिपको घाटोन्नीयों के फलस्वरूप सरकार का ध्यान हो और विशेष रूप से शास्त्र-विद्वान् तथा नरुस नियाये गये विशेष जर्नल नरुस प्रसिद्धि कर नियाये जाते वन-वर्धोत्साय, वृक्षों के नरुस पर प्रसिद्ध तथा नुसारोपन पर विशेष नरुस हो सके प्रमाय है। शास्त्रवक्ता है कि उन सव्वन के निम्न मुकापो की ओर ध्यान निया जाय-

(१) प्रसिद्धि प्रसन्नता

(१७) प्रथम प्रश्नकर्ता ने पूछा कि धर्मशास्त्र के द्वारा के बचाने की प्रवृत्ति को कहाँ दिया जाये। यह सवाल केवल सरकारी स्तर पर न बल्कि धर्मशास्त्र के बचाने को इसमें साथ लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाये। (१) एवं दूसरा बचाने वाले के लिए उन्नी बीस के बचन बूझ बचाने का काम न करना उन्का पास कानून होता है बचन बताया जाये। शोध को बचाने वाले ही बूझी के मालिक पञ्जीकृत किन्ते जायें। उन्की रक्षा का उन्का बचाने की उन्की एवम्। (२) सरकार द्वारा सबको बचाने देखने लादने के किनारे धर्मशास्त्र के बचन लगवाने बायें तय। उन्की रक्षा के बचाने उन्का किन्ते जाये। (३) दूसरे विषय समझी के प्रयोग को सीमित करने के लिए सरकारी प्राधिकारी द्वारा उन्का के विकास की ओर बचाने बचाने जाये। (४) दूसरन तथा धर्मशास्त्रवादी द्वारा बुझायेगन तथा बचाने के बचन के उन्ने के बचाने बायेंकन एवं बायेंकन प्राधिकारी की बायेंकन।

सरकार को चाहिए कि वह उपरोक्त सुझावों की ओर ध्यान दें।

[illegible]

(पृष्ठ ४ से आगे)

इस प्रकार बनसरी स्तूप १९३० से कुछ सन् १९५५ तक २६ करोड़, २७ लाख रुपया भारत में विदेशों में आया। इस क्षराधि से सर्वपरिवर्तन वेग के प्रत्येक भागों में बड़े वेग से होने लगा। आर्यवर्णन कलकत्ता की लेखकर पत्र विदेशी इलाहाबाद बहा ५० वर्षों में १६ करोड़ २० लाख की बड़ा क्षराधि पर १० से परकारी लॉन्ग में वेगो से बड़ी के धराधार सन् २५। वर्षों में ३५ करोड़ हो गई। १९७५-७७ में ६५ करोड़ ५० लाख ३३ हजार १५ व १० विदेशों के मिशनरियों को प्राप्त हुए।

घरेबी राज्य के १९० वर्षों में हजारी तीव्र बत से ईसावध नहीं बड़ी की जितनी नेहरू राज्य की वर्षमिलेसता की नीति के कारण स्वतन्त्रता के सन् १७ वर्षों में बड़ी है।

पुराने कांग्रेसी नेता पञ्जाब के यू० यू० राज्यवास माननीय बी बाबुलिन महोदय ने ६ कारकी १९५६ को अगवरी में प्रेस कांफेरिन्स वर्ष की स्वर्ण जयन्ती के धराधार पर विदेशी पावरियों को प्रथम शान देते हुए कहा था कि ईसाई मिशनरियों ने जितना काम स्वतन्त्रता के सन् १० वर्षों में किया है उसका काम पराधीन भारत के ५० वर्षों में भी नहीं किया था।

प्रविष्ट कठमान तथा औद्योगिक

प्रविष्ट कठमान के द्वारा वसिष्ठ ने बाह्य विरोधी योजना की बाह्य ने खुलकर हिन्दुत्व का सर्वनाम कर रहे हैं। मयवान राम के चित्र जताये जा रहे हैं। प्रत्येक प्रतिस्ति उत्तर भारत के हरिजनको को सलाह दी जा रही है कि वे सिन्धु बंध कोटक बौद्ध बन जायें। धर्मी धर्मी कल्पन में राज्य की ऐतिहासिक पार्टी की लामा में भाग्य बने हुए प्रविष्ट नेता की ५० की १० दासत्वानी नायक ने कहा कि आपन को बाह्य देवनाथो में पुष्करा प्राप्त करना होगा जन्मदा धारा इस जन्म पर से ऊपर उठकर देवी पर प्राप्त न कर सके। इस पिछड़ी जातियों को हिन्दु मजदूर कोटक बौद्ध बन घबराया लेना चाहिए।

स्वतन्त्रता मिलने के परमात्मा सरकारी लजाने में करोड़ रुपये खर्च करके बौद्ध बंध का प्रचार किया जा रहा है। सन् १० वर्षों में सरकारी तथा रीट परकारी सत्ताओं के बिना साहित्य प्रकाशन किया गया, उनमें बाह्य हिन्दू मान्यताओं पर भारी गोट की गई है। 'मयवान युद्ध' नामक पुस्तक में जो साहित्य प्रकाशनी द्वारा प्रकाशित की गई है, जगत की प्रविष्ट नामों की बहकल माताहार का प्रचार करने के निमित्त लिखा गया है। मयवान युद्ध, महानुरी लामा लाने से तथा प्राचीनकाल के बाह्य योगदान यही है। इस प्रकार का साहित्य बहुत बड़ी क्षमताय खय करके प्रकाशित किया जा रहा है। 'युद्ध' के ० एम० मुन्ना द्वारा प्रविष्ट वैदिक युद्ध तथा प्रथम पुस्तकें इसी मनोवृत्ति का एक मनुष्य है।

कम्युनिस्ट पार्टी

हिन्दू जाति की सभ्यता की भारी लक्षि पहुंचने वाली उपर्युक्त सभ्यताओं का बोधा बोधा उल्लेख हम ने ऊपर की पंक्तियों में करने का प्रयत्न किया है। किन्तु पार्टी और धर्म के नाम पर एक और बहुत बड़ी जोक पुराने भारतीय धार्मिक हिन्दू विचारों से लगी हुई है और बड़ी तीव्र बत से नयुक्तों में परिवर्तन करके आई मासिक तथा लेनिन और स्टालिन के बड़ी विचारों का प्रचार कर भारतीय परम्परा को कोलना कर रही है। उसका नाम है—कम्युनिस्ट पार्टी। वेस के कारनामों ने हजानों करवाना, मिल साहित्य और मजदूरों में कानटे वैन करवाना 'विश्वीय के मजदूरों एण्ड जो आदों' का नाम लम्बाकर काली युनिवर्स, ठेका युनिवर्स, बनसीवी खन लार्ड युनिवर्स, बीबी युनिवर्स धार्मिक प्रचार की युनिवर्स बनाकर और बतले काय तथा लगी नौकरियों को हटाकर हर भासने में हजाना करवाकर स्वयं कोषरी बना जना इस पार्टी के नेताओं का प्रथम काम है। जो सोवियत पार्टी के कवचर का जेब 'मयम बड़ी युद्धमय कर्म' संस्कृति, सम्पत्ता धार्मिक सत्त काटने हो जाता है। कम्युनिस्ट पार्टी के बहस्य भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा रीति रिवाजों से बंधनों से विरक्त नहीं रखते। होमी, दीपावली बराहुरा रामनवमी कुलम अमावसीय धार्मिक त्यौहार भगना ठीक नहीं समझते। हा, यदि कोई त्यौहार भगना हो तो मैं विश्व धर्मना जैनियन, स्टालिन धार्मिक रीति नेगाओं का जेब 'मयम बड़ी युद्धमय स भगना बाता है। बहुत निकान जाल है, जमने किने जाय है। इस पार्टी का प्रवेश है—अन्य जना भारत का और भीत मागे रुक है। ईसाई मिशनरियों की परवृत्त यह पार्टी बड़ी हिन्दू विचारों तथा परम्परा को नष्ट अष्ट नष्ट करे बड़ी साम्यवाद के प्रचार में पूरी क्षमता लगी रही है। कोई नहीं जानता इस पार्टी के नेता राजनीतिक क्षमति हथियाने पर क्या कर सकते हैं।

हिन्दू जाति के लिए यह पार्टी भी एक भारी खतरा है।

ऊपर की पंक्तियों में आने वाली अवसर विपरियों की प्रोर सूचक के कुछ संकेत किए गए हैं।

धार्मिक धर्म तथा भारतीयता-रिगेडी धमरीक इस्वीय धार्मिक यूरोपीय वेपों से बंधाविल ईसाई मिशरी प्राकृत्यात्मक योजना, प्राकृत्यात्मक से सहायता प्राप्ति सुविधम तबनीय तथा बनी हजारी पर नाचने वाली कम्युनिस्ट पार्टी का धार्मिक अमलोगतया इन सब का हल क्या है? धार्मिक जाति और भारतीयता किसे सुरक्षित हो सकती है?

भयानक सर्वनाश की समस्या का समाधान

आज से ८० वर्ष पूर्व महर्षि दय नन्द सरस्वती ने जब अपना प्रचार कार्य प्रारम्भ किया और धार्मिकता की स्थापना कर दी तो जब कुछ लोगों ने महर्षि दयानन्द से प्रश्न किया कि क्या आप भी एक नये मत की स्थापना कर रहे हैं? महर्षि ने जब धारणा में उत्तर दिया कि—बहुता से लेकर जैमिनी मुनि पर्वत जित्त पुनीत वैदिक धर्म का हम २२ वर्ष बाद पानने वाले गये हैं उसी के सहाय्य स्वकथ के विरुध्दम और रक्षण के लिए धार्मिकता की स्थापना की जा रही है। कोई नया मत प्रचलित करने का मेरा उन्मुख नहीं है वैदिक सभ्यत्वानी धर्मि मुनियों की परम्परा सुरक्षित रहे यही धार्मिक उन्मुख है।

महर्षि की उपर्युक्त धारणा को पूर्ण करने के निमित्त घरेबी राज्य की सभ्यता से बन्ने वाले रिगेडी 'मयम' में बड़ी कीर्ति के साथ धार्मिकता में टक्कर दी। ईसाई मिशन का मन्त्र मुकाबल करने के लिए करोड़ों रुपय खर्च करके समूचे देश में हजारों कुलम काविर गण्डन धन बाजार बनिता धार्मिक घोषणात्मक कोल दिया। खुले मंडान में 'मयम' करके धार्मिक विद्वानों ने पुरानियों के सुकले टुट्टा मिन। धार्मिकता को विरुध्दम कि घरेबी के घने जाल के बाव ईसाई पावरियों की मनिविधिया स्वयं भाग हो जायेगी। किन्तु नागत सरकार की नैपथ्य पर नीति और धर्मोत्प्रेरक इन्फ्रम धार्मिक को मुदनीतिगत ख मानने पाई जब 'मयम' गोरे पाणी करीब स्वयं को सहायता से देता हो पिछड़ी जातियों को प्रतापित ने ईसाई बनाने लगे। नागत प्रवेश ने पावरियों की मनिविधि से 'मयम' परकार परतिजने ने अहा मरका म प्रति पवननकारी प्रबोद्ध किया जा रहा है। इसके साथ ही हिन्दुओं की मरका परकार रिस प्रकाश विदेशी तत्त्वों को प्रोत्साहन मिल रहा है। यह हम उर बता चुके हैं। एसी स्थिति में हिन्दू नाश का परभावक है कि ८० वर्षों का जेब पर धार्मिकता को नोयबाल है। प्रत्येक शासक और कर्ते ने धार्मिकताम स्थापित हो। राजकीय पुष्टि बौद्धी की स्थापना के पश्चात कोई विदेशी मिशनरी भारतीय परम्परा की कोरी नहीं कर सकता। इनमिध धार्मिकता को स्थापना सर्वत्र होनी चाहिए।

प्र० क हिन्दू अपनी धाय का बम से कप ठाया स्व पवित्र कार्य के निग धार्मिकता को नम दे जिसने विदेशीय नर मुकाबला किया जा सके।

हाब नाव म सक्कल और हिन्दू की रागमात्राओं की स्थापना की बाय जिनमें प्रारम्भिक कलाओं में जालकों की धार्मिक विज्ञा का प्रभाव हो।

देय म ३० लाख नामधारी लागू है यदि नमने से कुछ हजार की इस पवित्र काम में खपने का प्रयत्न करे तो गल्ल धर्म का धानेवाली अवसर धाराति म नकामा का सक्ता है।

वेस क विभिन्न प्राप्ति १ एन पर्व मिले विद्यालयों को दुर्निग केकर प्रथम धरने में बावों पर विमुक्त करने की योजना पर प्रविष्टम राधारण होना धार्मिकताम है।

वेस की समस्त धार्मिकतामिक सनातनधर्म जैन एव हिन्दू सभ्यताओं की ओर से सामुहिक सन्तोलन प्रारम्भ कर देना चाहिए, जिसके द्वारा सरकार से बसपूर्वक भाग की जाय कि जिन्को पावरियों की मरका प्रवृत्तियों को रोकने के लिए उद्योग म धर्मियन निग सवर देश प्रोर धर्म क प्रति दोन वाले भयानक पदरुध्दों से गोरीय प्रवा की रखा करे।

पिछड़ी जातियों के निवास स्थानों पर जाकर उनमें गुठना धार्मिक प्रवृत्तियों को ज्ञात कर पवरियों की मनिविधियों से उन्हे मतक करना और जमने धार्मिक विचारों का प्रचार करना धर्मियन धार्मिकताम है।

हम जानते हैं कि इस मरका कार्य के सहायक में भारत सरकार अपनी बन्धु नीति के कारण साधर कुछ न कर सके किन्तु महर्षि दयानन्द का धार्मिकताम धार्मिकों के सन्तुलन को केकर इत महा कार्य ने उठ जाने के लिए समर्थ है। इस कार्य की सफलता के लिए देश के वेस, शाहूकार, व्यवसायी और साधारण जनता सभी को विश्वर धार्मिकताम की सहायता करनी चाहिए। धार्मिक विज्ञा जल्दा का इस ओर ध्यान नही।

समाचार-सन्देश

दिल्ली आर्यसमाजों के साप्ताहिक संसर्ग कार्यक्रम ४ अगस्त १९५४ रविवार

प्रतापनगर—१० बाधाराय प्रेमी।
बसोईकनगर—१० देवराज वैदिक मिशन-
नरी। धार्यपुरा—१० नलकीर शास्त्री।
धानन्द विहार—१० अमरप्रकाश प्रजन
मण्डी। विवेक विहार—स्वामी जग-
दीश्वरानन्द सरस्वती परिवाराजक। किरण
नगर—१० प्रमोदप्रकाश शास्त्री। कासका
बा—१० नमराय धार्य। किरणजे कंप-
इष्टाशारी मनुजेश शास्त्री। बाधोवनर—
१० बाधाराय नलकीर। मोठा कासीनो-
धार्यबीर रमजीराय दाया। गोविन्दपुरी—१०
मुकुन्दराय धार्य। गोविन्द प्रजन—१०
अनरामा काल धार्यविशेषक। अलकपुरी
की-२—महात्मा बुनी शकर। अनकपुरी
की-३—मो. सुखदास दुडानी। टीनोर
वाडन—१० बुनीनाथ धार्य। तिमार-
पुर—१० सोमदेव शास्त्री। तिलकनगर—
महात्मा रामकिशोर वैद्य। देवनगर—
१० रमेशचन्द्र देवाचार्य। न्यू मोडोनगर—
१० अमरप्रकाश शास्त्री। नारायण विहार—

३० रायचौरी। भीमपुरा—१० सत्यदेव
लालक रविचन्द्र कलाकार। पचावी बाग—
१० उदयप्रकाश धार्य। पचावी बाग
एम्प्लेन्स—डा० रघुनन्दन। नहर बारा-
पुर—मा० मोहुराबाग धार्य। बहुरीनी-
लुकी बलानन्द सरस्वती। महावीरनगर—
१० धर्मोत्तम मल्लाह। मोहमल्लाह—
महात्मा वैष्णवविभू। मोतीबाग—महा-
चारा नरेश शास्त्री। राखारवाय नगर—
१० नमनलाल धार्य। रघुनरपुरा—१०
देवदास धार्य। रमेशनगर—मोहनप्रका-
शास्त्री। कावचपुर—१० नमनलाल शास्त्री
विद्यावाचस्पति। लखनपुरी—भीमराज
प्रकाशजी शास्त्री। विनयनगर—धार्य
स्वामिनाथ जी। बीनगर—१० मनोहर
लाल शर्मा। हीनकास—१० हरिचन्द्र
धार्य।

व्यवस्थापक
स्वामी रमकपालन्द सरस्वती
अधिष्ठाता देवप्रसाद

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

प्रांतीय आर्य महिला समा दिल्ली का शिष्टमण्डल
प्रधानमन्त्री से मिला

महिलाओं का परिवार व राष्ट्र में
शान्ति तथा एकता रखने में बड़ा योगदान
रहा है। जो राष्ट्र का हित और क्षेत्र में
उनको सुविधा मिलनी है। व सत्य प्रमाण
मन्त्री की राज्यों व मन्त्री व प्रांतीय धार्य
महिला समा क विवा. मण्डल से कहें।
उन्होंने प्रांतीय मन्त्रि के प्राधान्यम
व धाराय श्रुत मन्त्रों का सुझाव की विम-

प्रचार वाहन द्वारा प्रचार

दि० १ जुलाई सोमवार १० जे से २
बजे तक केन्द्र कार्यालय मन्त्री हाउस
में प्रचार रखा गया। उहा क इकाज श्री
प० रमेशचन्द्र मन्त्री की निमन्त्रण पर यह
प्रचार काय रखा गया बा। जिसमें १०
बाधाराय प्रेमी, स्वामि रायच १० बुनी-
काश, १० बाधोप्रसाद द्वारा समीत का
कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ। यह कार्यक्रम विव
अभिर के प्राणय में सत्य बुनी की छाया
में सम्पन्न गया। स्वामी रमकपालन्द सर-
स्वती देव प्रचार अधिष्ठाता २ धार्य-
समाज और मर्याद व्यापक सरस्वती के
जीवन पर प्रकाश डाला और हाउस अधि-
स्थाओं द्वारा मनोरमन किया। कायानन्द के
सभी कमचारियों ने विशेष भाग प्रकट की
कि धार्यने बुद्धिवादी की भी धार्यय धार्य।
की रमेशचन्द्र की सार्वा ने ५११ दान
दिया और भीमराज मुनाबदेबा ने १० दान
दिया और उल्लास के साथ सभी ने भाव
भीनी विचारों केर स्वागत किया।

सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाएँ

सत्यार्थ प्रकाश, सत्यार्थप्रकाश व सत्यार्थ-
प्रकाश की परीक्षा निर्मातों के कार्य में
अत्यन्त उपयोगी, महत्व दायक मूल
पथिक प्रत्य सत्यार्थप्रकाश की बार प्रकाश
की परीक्षाएँ, १२ वीं वीं वीं के जुरे बायल
देस में धार्य मुक्त परिवार विस्ती, (रजि०)
द्वारा कराई जाती हैं। जिससे लालो परि-
वारों को लाभ पहुँचा है।

हल बन्द में परीक्षाएँ २२ सितम्बर
को होगी। यह सब धार्यप्रांतीय युवावर्ग
है। इस उच्च व्यापक के स्वामी को
साधार करने हेतु इस बार अधिक से
अधिक युवा बाल बुद्ध, ली-मुक्त इन
परं धार्य में बैठ कर धार्यने कर्तव्य का
पालन करें।

पुरी जानकारी के लिए परीक्षा मन्त्री
अमरप्रकाश एम्-०/एच-६५, अधीक
विहार केज, दिल्ली-५२ से सम्पर्क करें।

नमनलाल (परीक्षा-मन्त्री)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा का प्रचार कार्य

विस्ती समा के धार्य अमरप्रकाश
१० बाधाराय प्रेमी तथा रायच द्वारा
धार्यसमाज सारा रोहता की भावचर्याओं के
निमन्त्रण पर २० जुलाई को बाधोवनर में
प्रचार रखा गया जिसके फलस्वरूप ५१
समा को दान प्राप्त हुआ।

२० जुलाई रविवार को श्री गोवि-
न्दारविध की द्वारा हर जोदुराम सरत
हम्टीदुष्ट एवम् टेकनोलीकी कलाकला,
विस्ती ११००१ में देवप्रचार रखा गया।
जिसमें १० बाधाराय प्रेमी की नवन
मण्डी का सामकाल ३ बजे से ३ बजे
तक नमनलाल रहा। उहावी शोतामणो
में प्रचार के बर्त साय उठाया और १०१
समा के लिए दान प्राप्त हुआ।

स्वामी रमकपालन्द सरस्वती देव
प्रचार अधिष्ठाता द्वारा २० जुलाई प्रात
पन्ध धार्य विद्यालय सूर्य पर्व में यह
के सपत्ता साप्ताहिक के मध्य में विद्यालय

अमदान और सेवा का आदर्श रूप

२० बीनार, विस्ती धार्य प्रतिनिधि
समा विस्ती के महामन्त्री श्री डा० नम-
नलाल के बाह्य पर समा के अधिकारी एवं
कार्यकर्ताओं ने समा कार्यालय की सुव्य-
वस्था एवं व्यवस्था के लिए अमदान एवं
सेवा का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर महामन्त्री डा० नम-
नलाल, श्री देवप्रकाश, श्री रमेशचन्द्र,
श्री सुरेशचन्द्र, श्री विरमेश दास रम-
नलाल, श्री नमनलाल, श्री रामकिशोर, श्री
धर्मवीर शास्त्री प्रादि अधिकारी एवं कार्य-
कर्ताओं ने भाग लिया।

इस अवसर में विशेष बाव यह थी
हम अधिकारी काह, बच-प्रादि लेकर
सर्पार और रिकार्ड भी व्यवस्था के लिए
मूल में गन कार्य कर रह थे। बिना किसी
नेवमाय के मितमुक्त सेवा कार्य करत
का यह उदाहरण स्वागतीय है।

—अमरप्रकाश

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक की स्मृति में स्थिर-निधि

धार्यसमाज बीनानगर की मण्डी मन्त्री ने १ पाठक जी को गोक अर्चना
की गई। धार्य ने भी पाठक की की स्मृति में एक स्थायी निधि कोमन का प्रस्ताव पत्र
किया गया जिसके द्वारा उनको विस्ती हुई मुक्तों एवं नवी धार्य का प्रकाशन स्थिर
ने धार्य का जाता रहा। प्रमाण पत्रित होने पर निर्माणागत महामुक्तों ने अपनी
श्रुति से बल देने का धार्यसमाज दिया है। धार्य जलता से निवेदन है नम्र निधि को स्वा-
स्थिर करने हेतु धार्य अधिक से अधिक दान सार्वभौमिक समा कार्यालय विस्ती को नमने
की कृपा करें।

- १ दयानन्द सेवायन सच की धार्य से ५०००)
- २ श्री रायचोपाल की धार्यसमाज प्रमाण सार्वा १०००)
- ३ श्री बुद्ध नारायण सार्वा १०००)
- ४ श्री देवप्रकाश पाठक १०००)
- ५ धार्यसमाज बीनानगर प्राणक (अमरप्रकाश) २००१)
- ६ धार्यसमाज एम्-०/एच-६५, अधीक २०१)
- ७ श्री रायचोपाल सार्वा C/O डा० डा० बीनानगर २०१)
- ८ श्री नमनलाल कुमार C/O डा० डा० बीनानगर १०१)

उपवेश हुआ। २० समा को दान प्राप्त
हुआ।

२० जुलाई की नवी धार्यवी में
स्वामी की द्वारा यह व उपवेश हुआ
जिसमें कई व्यक्तियों को व्यक्तियों धार्य
कराया और मन्त्री-धार्य का सेवन बन्द
कराया। सभी ने बहुत बल दिया कि
धर्मोत्तम पचाय का मन्त्री नहीं करे। साथ
साथ ही एक विष्णु का नामकरण सकार
भी कराया गया।

सतिन मोहन नाम रखा गया। इस
अवसर पर धार्य के प्रतिष्ठित अन्वित
और अधिष्ठाता श्री सत्यार्थ ने उपस्थित
रहे। महाप्रम अमनलाल जी ने कार्यक्रम
के सपत्ता सत्य निवेद का उपवेश दिया
और समा को ६१० दान दिया। सभी
महामुक्तों ने भावभीनी विचारों के हेतु
अमनलाल मण्डी द्वारा कार्यक्रम रखने की
माग करी।

श्रीमती नेमवती धर्मार्थ ट्रस्ट ६१ ई कमलानगर दिल्ली-७ द्वारा प्रचलित त्रि-सूत्री संस्थान योजना

१ देव और धार्य उल्लास हेतु
अमरप्रकाश धार्य की वल्लभ की निशुल्क
सेवा प्रमाण कराया।

२ वैदिक विचारों निमन्त्रण केन्द्र
मण्डी में, युक्त एवं श्री बीनानगर की
व्यक्तियों को निमन्त्रण अधिकृत करारकर
सत्यार्थ उपमुक्त सार्वा-१० और सत्यार्थ
स्थिर की व्यवस्था करायी।

३ बुद्ध साहित्य एवं तथा धार्य
साहित्य मण्डी प्रादि धार्यक मूल्यवान
पत्रिकाओं को उप व्यक्तियों का प्रस्ताव पत्र
किया गया जिसमें वे भी निधि में मन्त्री हो,
उन्होंने निमन्त्रण प्रमाण धार्य मूल्य पर प्राण
करायी।

सम्पर्क करें—रामानन्दर धार्य
६१ ई कमलानगर, देहली ७

साप्ताहिक ओडम् कृष्णवर्तो विश्वमार्गम् आर्य सन्देश

इसतकक
हफ्ता कमकी विवरणिका
मुद्रित

वर्ष १ भाग ३६
मुख्य एक प्रति १० पैसे

रविवार, १८ अगस्त, १९८६
वार्षिक २० रुपये

मुद्रित सन्त १९७२६४२०८६
प्राजीवन २०० रुपये

वाचक १०४२

द्वामान्वा १६१
विदेश में १० डाक, १० पैसे

स्वाधीनता की यज्ञवेदी पर सर्वस्व अर्पण करने वाले 'होता'

लेखक—यशपाल सुधांशु

कई सताब्दियों की गुलामी की जर्जरी को तोड़कर अनेक अण्ड चुकाने का मुह मोड़कर भारत देश में स्वाधीनता प्राप्त की। इस स्वाधीनता के लिए कितने क्षत्रि-काटी वीरों, शहीदों ने प्राणी जान कुर्बान करी, कितनी बड़ती बचानियों ने अपने जिवर के खून से सींच तर भारत के मन्त्र बन को सज किया। ये स्वाधीनता दिवस अमर शहीदों की स्मृति का, बलिदानियों की २ रागिन भावनाओं का सत्कार करने का दिन है। सर्वप्रथम स्वराज्य और स्वाधीनता की चिन्तारी को देने वाले महर्षि दयानन्द स्तुत्य हैं जिनके सर्कल एच प्रेरणा पर १८५७ के वीरों ने आजादी की प्राप्ति के लिए अग-डाई ली, देश के कुण्ठित मानस को झकझोरा। अपने श्रिय शिष्य स्वामी जी कृष्ण वर्मा की विदेश भेजा जो क्रान्तिकारियों का प्रबल उन्मादक बना। और औरंगना आसी की



रानी लक्ष्मीबाई, भूखीर तात्या टोपे मगत पाण्डे, चन्द्रशेखर बाबाद, वीर भगतसिंह, राजगुरु सुपदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, अफगाण उल्हा, मदनलाल बीगडा,

उषमसिंह, कर्तारसिंह सरावा आदि अनेक महान् क्रांतिकारी जिन्होंने अपने सरकार को प्रकटित किया। भूत नाता के ये दुलारे स्तुत्य हैं। अज्ञानत है मस्तक उस बगाली बोस

मुभाषन-द पर जिसने अपने की नजरबन्दी तोड़कर, छिपते छिपते अफगानिस्तान से बर्मेनी और फिर जापान पहुँचकर दुनिया को हैरत में डाला और सिगापुर पहुँच आजाद हिन्द फौज बनायी। एक पूरी फौज लेकर अपने फौजों से मुकाबला करने निकल पड़ा और बहादुर। उस केहरी वीर की वहाद से भारत का बच्चा जाग पड़ा, अनेकों साम्राज्य की नींव हिल गयी। सम्मान का अर्घ्य है उन नर केहरीयों को जिन्होंने अपने तप बलिदान यातना, त्याग और खून के छोटी से भारत माँ के गौरवपूर्ण मस्तक पर कुकुम लगाया। वे तप-पूत जननायक स्वामी अज्ञानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, सरदार पटेल, कबीर-रवीन्द्रनाथ ठोकर, लाला लाजपतनाथ लखीन्द्रनाथ, जवाहरलाल नेहरू तथा देश के तमाम प्रभुद जन जो स्वाधीनता आन्दोलन के लिए जेलों में गये। अन्य (शेष पृष्ठ ११ पर)

अपने उपदेशक विद्वानों का सम्मान अवश्य करें

—सूर्यदेव

४ अगस्त १९८५ को दिल्ली पार्षद प्रतिनिधि सभा के अगस्त वेदभार कार्य में सहयोग देने वाले आर्य विद्वानों की एक बैठक कार्यक्रममात्र अमर शीख ह्राफ दिल्ली में होना ४ बने सपना हुई। सर्वप्रथम उषी अमरिज महागुनीयों का

स्वागत करते हुए महागुनी डा० धर्म-पास ने इस बैठक के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की बैठक में निम्नलिखित चार विषयों पर मान्य उपस्थित बन्धुओं के मुद्दाब वास्तवित किये जायेंगे तथा विचार विमर्श के कक्षात्

भावी कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की जायेगी—

१ वेदप्रचार कार्यक्रम—आर्यसमाज मन्दिरों में, शार्वकिक स्थानों पर, विद्यालयों में तथा साहित्य प्रकाशन, विक्रय कक्षा वा नि सुक्त वितरण द्वारा।

२ तथा का वेदप्रचार विभाग-भाष-व्यवहार तथा समाचार।

३ आर्य विद्वानों तथा उपदेशकों के प्रस्ताव।

४ विद्याभवन प्रक्रिया। (शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक—मन्तराज सुधांशु एम० ए०

व्यवस्थापक—डा० गणेशीनाथ

प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

समादकीय—

सांस्कृतिक अस्मिता और स्वाधीनता

सारा ससार चमत्कृत है भारत की संस्कृति और सभ्यता पर। हिमालय से भी ऊँची झाकास की झुलती, सागर की गहराई से अधिक गहरी हमारी संस्कृति सब से पुरातन और सब से नूतन है। इसीलिए मानव की सभ्यताओं के इतिहास में भारतीय सभ्यता की एक विशेष पहचान और भास्मिता है। ससार में सभ्यता और संस्कृति के कई प्राचीन केंद्र रहे हैं किन्तु उनमें स प्रायःकास को प्राज हम भगवान्‌वेषों के भाष्यम में ही जानते हैं। भारतीय सभ्यता में एक धाँवछुल्ल निरन्तरता है। भारत पर बाह्य से आक्रमण हुए, मन्दिर से कुत्तन राष्ट्रवातियों ने बाट का, जात-पात, ऊच-नाच छूट्टाछूट के विषय सब बसत रहे फिर भी हमारे मन्दिर ऐसा खलित रहो है कि हम पहले को आध्यात्मिक संगठित, जाग्रत और विजया बनकर खड़े हुए। हमारा सामर्थ्य है कि अनेक भवराशों को बावबुद हमारा हलती कथा मिठा नही और न मिटेगी। इसका मूल कारण है हमारी मनोभा। सनातन की खोज मनावा से चुकी है। हमने धर्म को भी पराक्षर का कटीट के कर्मर नही माना। भारतीय संस्कृति का बनावे रत्नमे न उसके प्रदान, सका, प्रसहृयति, विराज, गुवार और विराह का परमात्मा का बडा हाव रहा है। इसीलिए हम आज बा विद्यमान हैं। पराधीनता के युग में हम सजमे थे, आज भी हैं।

हमें स्वाधीनता मिला। इसमें हमने सबस्व न्यासावर किया। हमारे, शाखा क्रांतिकारों को भी धीरे धीरे नष्ट हो गया। आम्बोलन चलाने वाल भी। कायस न वाजनाबद्ध रूप से कार्य किया और आज भी हमारा सरकार राष्ट्र निर्माण के काम में लगा है। हमारी सरकार स्वतन्त्र देश भवार्थ बगलाबद्ध को चुनने में भी माग ल चुका है। गोमा भार शास्त्रेरा तथा सिक्किम का राष्ट्र का भग्न भा चुका है। भारत का ख सोपिासता का राष्ट्र में विलय कर चुका है जा आवाज काम नहा था। इस सरकार बलनभाष पटेल जेली मेधा का व्यक्ति हो कर सकता था। उसक हाव में पूरा सगठन का बागडोर भी। प० नेहरू गांधी का बाद राष्ट्र निर्माता रूप में याद किये जाते हैं। उनके भी धरने का पथका स विराज थे। पर उस समय के राष्ट्रनेताओं में सहनशीलता था। न सब एक दूसरे का बाज का राष्ट्रहित में सहन करते थे। हमारे बध में नाथ, हमारे हाव में गांधी पारिस्तान में नवाब और सेनापति। पारखाम धायके सामने हैं।

परिभन्त धायव्यक है। साप भी कडुल खाडता है, यद्यपि यह कल्पप्रद आक्रमा है। भारत की राजनीति में भी बदलाव आये हैं। कायस में था। गांधी के युग में भी और इन्दिरा गांधी के युग में भी। पर इस बदलाव से नवजाय का ही साधारण हुआ है।

गांधी के पहले भी स्वाधीनता के लिए सखत प्रयास हुए हैं। पर बहु युग जिशा युग था—आधुनिक, प्रतिवेदन का युग। गांधी युग आया, पर अचानक नही, धीरे धीरे। जब महात्मा गांधी भारतीय राजनतिक भगन में सूर्य बनकर चमके और धीरे धीरे धारने कार्यक्रम की पछुडिया खोलकर सामने रखने लगे तब उनके बहुत से कार्य ऐसे थे, जो पहले भी बग-भग या स्वदेशी आन्दोलन के रूप में सामने आ चुके थे। सरकारी शिक्षा स्वाधीनता का बायकाट और राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना हो चुकी थी। कागडो, बनारस, अलीगढ़, दिल्ली की

स्वाधर्, इसी कडी में धाती है। विपिन चद्रपाल, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, एनी बेसेन्ट, अरविन्द लाजपतराय, तिलक, सावरकर साचीन्द्रनाथ साम्या इसी दिशा में पहल कर चुके थे। कबीर गीत का 'एकता चलो रे' उस समय का क्रांति गीत था। जो स्वाधीनता सग्राम के लिए लक्ष्यरत था। अज्ञानन्द का सोना सगीनो के सामने खुला था। तिलक का स्वराज्य मेरा जन्म िद आया है युवकों में प्राण फूकता था। गांधी भारतीय राजनीति के अग्रिय हुए। वे राजनीति की उच्च और मध्यम के स्तर से उताक साया रख जनता की धरती पर ले आये। उनकी कार्यशाला से कई बार नेहरू जी भी खुब हुए। नौरो चोरा आन्दोलन के गवा पर उन्होंने स्वय लिखा है, 'मैं समझता हूँ सभी प्रमुख नेता भुब हुए, हा गांधी जी के धावा। मिला जी, जो उस समय खेल काट रहे थे वे बहुत परेधान हुए। रहे तथए लोग व बहुत उत्त जित हुए। हमारी आशाओं का उठा हमारा खोच एकाएक धराधासी हो गया।' महात्मा जी के विचार 'यद्यपि जीवन के सम्बन्ध में हमारे इष्टिकोए के कासले निश्चित रूप से बढ़ते चले गये पर आज हम एक दूसरे के जितने करीब हैं, कभी उतने करीब न थे।' महत्त्वपूर्ण हैं। वे उद्गार मिलित युगप्रष्टा के हैं।

प० नेहरू का अनेक बार विरोध हुआ पर देश की बेहतरी के लिए, न भी नम्रापूर्वक इस विरोध के सामने झुकते गए। इसीलिए आज हमारा दुनिया में स्थान है। हमारी महान उपलब्धिया हैं—बगलाबद्ध की स्थापना, साध में पूर्ण रूप से निर्भरता, हिन्दु सोचिपत सधि, दूरदर्शन का प्रारम्भ, गुटनिरपेक्षता की धम्यक्षता, देशी राज्यों का भारत में विलय, गोमा की मुक्त सिक्किम का विलय वंकी का राष्ट्रीयकरण, स्वतन्त्रता सेनानियों का सम्मान।

आज हम धर्म निरपेक्षता की बात कह सकते हैं, पर इसमें हम कहा तक सफल हुए हैं। हिन्दू कोडबिल में हिन्दू धर्मियों की अधिकार दिए। मुस्लिम औरतो की कान अधिकार दिलायेगा? गांधी धर्म-निरपेक्षता के लिए सह्य हो गए। रोम्या रोला ने कहा था—'गांधी क्रूस के बिना ईसा है। इन्दिरा की गहावत में राष्ट्रीयता की सावना को ऊचा उठाने की देश को सक्ति दी है।

आज देश की बदली हुई आवादी धोर मरीजी आजािवा, खेल-बाद, आतकबाव का विष चारो धोर फल रहा है। हमें इससे निपटना है। हम आशा करते हैं कि एक नई संस्कृति एक नई शक्ति के प्रतीक के रूप में युवा प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता दिवस के अवसर पर प्रण करने की आवश्यकता है कि हम देश को सभी दुराहमों को दूर करके ही रहेंगे। भारत को सबल एवं संपन्न राष्ट्र बनायेंगे। १९८७ का जेहाद धर्म को के धिमापक था, पर यह आज का जेहाद हम दुराहमों के विरुद्ध होगा। हम आक्रोश आतक धोर हिंसा पर नियन्त्रण कर लगे। हमारी प्रगतिवाधा नये सिजिज की धोर बढ रही है। हम सभी क्षेत्रों में उच्चतम टेक्नोलोजी अपना कर जपान की तरह धर्म संस्कृति का विकास करके धर्म देशों के समतुल्य न होकर जाते बढ निकलेंगे। इस आशाधरी परिकल्पना को साकार करने के लिए ससार में और विशेष रूप से भारतीय उपमहादीप में शांति रहे।

—डा० धर्मपाल

फांसी का फंदा
चूमनेवाली हंसी

१३ बसल यानी बारल की घासारी का दिन पवन ३० से ३५ हास पहुँचायी की जेनीकें काटल पवन से घासारी की हास की १। मलक मलतलवा का मलक ४० दिन बने से ऊँचा उठ गया था। हरिने वरुण पर ऊँचा उठ गया। तेसिन हल खुशी के मलकर उठ गये से उन हासों का लोनों को की हवने हास सिखा था, जिन्होंने घासारी की घासों नवने हुए घवने प्रासो की बनि बहा दी की सीर घवने नुन से घासारी के बीज को बीर था। माने ऐसे किन्ने किचोर की घवने के निजुलने बुज बुजियावने से बरी बिजली के नुनलने की रानी राह को नुन, प्रबोके के निजल बुजलाने बाने मलतलवार बरी हवने उठने लगी के नुन को नुन सिखा। मलतलवार बानेसेल प्रायस रावमलक सिजिष, मलक उलक, दासलक, उमवने बलरल हरि, कलिय हरि, बुज कालगी, उमलविजल बोरन माने किन्ने ऐसे मान ३० को घवने बलन की घासारी के निजल पर उठ गया। १४ बसल का दिन उठने के उठनी जेन के कलकली हरि उठने के बनिवानी का प्रविजल ३०

ऐसे युवकों में एक था खुदीराम बोस जिसे ११ अगस्त १९०८ को अंग्रेजों ने फाँसी पर चढ़ा दिया था। उस समय

सुबीराम की उम्र बी कुछ १८ साल।
तर्किन सुबीराम जब १३ साल का हो
या तभी वह धायाजी की इस बगानी में
कूद चुका था। एक घन्टेरी रात को पके
जवाम के बीच या काली की विकराल
मृति के सामने उठने कांति की दीक्षा थी।
प्रतिष्ठा की बी कि बेल की धायाजी
के बिना प्राणो की बाजी लगाने के बी वह
नहीं हिचकेगा।

उसकी प्रतिष्ठा पूरी हुई पाप साग
बाद बढमा मुष्कफरपुर की है। बहा का
विष्ठा भविष्य के का किम्ब कोई नाम का
एक निर्दयी प्रसेज देशभक्तों और कवि-
कारियों को बहू कठोर से कठोर सजाए
दिया करता था। याताएए देते हैं उसे
मुष्क मिलाता था। देशभक्ति उसकी नभर
मे सबसे बडा अपराध था। शासिककार
काविकारियों ने इस बाध की विपरकरी
के बाद करने का निर्गुण किया। उसे बीछ
के डूट उतार देने की जिम्मेदारी सीरी
वही खडीराने नेस को।

सुदीराम बोस अपने एक साथी के साथ मुजफ्फरपुर पहुँचा। जिनसे तीर पर किंग्स फोर्स की दिनचर्या का पता लगाया। नातूम् हुआ कि किंग्स फोर्स रोज काम को बोस वाली से बैठकर मनोरंजन और धामोद-प्रमोद के लिए बीरे सैनिकों के

न्याय में जाता है। दोनों कातिकारियों ने
एक किताब कि न्याय के बीसठे समन को
न्याय के कर्ता किताब में। ३० धर्म १२०
को उन्नी सवत्तर तिथि बना कर उन्नी
पौनमासीको न्याय न्याय कर कर कर बुद्ध-बुद्ध
न्याय बना। न्याय न्याय हो गई। बीस
बाड़ी किताब को दो बाज की उन्नी ठग
की बाज न्याय न्याय बीसठे समन को नी
की। उन्नीन्याय के बुद्धीप्राय के केनेरी की
बाड़ी को ही किताब को दो बाड़ी समन
किता। न्याय बाड़ी किताब को दो न्याय
न्याय के केनेरी की बाड़ी की मटनान्याय
न्याय को न्याय

बच डँकेले ही खुदीराम नाम निकला
 बा। बचब-बचब फाड़ फाड़ा बरा २३
 मील का रास्ता बीकते हुए उसने बच
 किया घर राखत पकड़ा बचा। बचालत बच
 ही उसने लिखर होकर बचवा दिया।
 बहू बचालाचारी किछ कोठों की हुला कलन
 बाहुला बा। बेकुरर भीमटी कैनेटी को
 मारने का छत्ता हराया नहीं बा।
 भीमटी कैनेटी की नीत पर उसे बचलोस
 है।

क्रांतिकारियों के सम्बन्ध में सूचनाएं और वह कि कब्सों तथा नेताओं के नाम जानने के लिए बेल में खुदीराम को कठोर यातनाएं दी गईं। लेकिन भारत के उस क्षणे वस्तुतः ने हस्तों हस्तों सारे अत्याचार सह बिये । व तो उसके मुख से उफ

निकली, न क्रांति उस के बारे में कोई जानकारी। जेल के अधिकारियों ने उसे फुसलाने की कोशिश भी की, फिर भी उन्हें सफलता न मिली।

धाक्षिरकार खुदीराम बोस की फासी की सजा सुना दी गयी। उस समय भी खुदीराम के होंठों पर मुस्कान धिरक रही थी। अपने फीसले के लख ने कहा कि अगर वह चाहे तो एक सप्ताह के भीतर हाई कोर्ट में अपील कर सकता है।

‘यही इसकी कोई जरूरत नहीं है।
सुदीराम ने कहा। अग्रेज ने देस के मुलम
हैं। तुमन की प्रदासत कभी इनाफ नही
कर सकी। फाती ने देवे सिफ सजा नही
है, बलिक सबत डक उगहार है और देवे
नं सुखी से स्वीकार करता हू। हा। प्रप-
प्राय इनाफ नें तो मैं अनासत है अग-
स्वित इनाफ देखासियो को बस बनाने
की ठपकी बताना बाहुन, ताकि जास्त
बा का कोई लाख उस काम को पूरा कर
खे को मैं नही कर पाया।

भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में
प्रसिद्ध १५ अगस्त का दिन प्रायः ही सूरज
की तरह चमकता है। सर्वोच्च स्थान पर
बलिदान का जीवन प्रतीक प्रायः ही इन
अनारों के पीछे काँची का फटा चुम्बत समय
सुधीराम बोस के होंठों पर छावी मुस्कान
जिह्वामयिनी है। १५ अगस्त अक्षय्य दिवस
नहीं, एक प्रेरणा दिवस है।

मनुर्भव

इन्सान हो चली धरे इम्मान बन के देख।
धरती की सान बेजुबान की जान बन के देख।

ईमान तेरा ब्रेजुवान को सता रहा
नादान चार दीख का मेहमान बन के देख ॥

धुन ऐसी सभी धन की रतन को गया रहा ।
कृष्ण सुन सके तो सुन ले एक कान धन के बेख ।

भगवान धीरे कौन है भगवान के पुतले ।
भगवान है तू ही धीरे भगवान बन के देख ॥

सञ्ज्ञान या प्रज्ञान व विज्ञान ज्ञान कर्म ।
त घर्म का है मर्म धर्म पान बन के देख ॥

अन्यायियों के मान भरे कुस जहान में ।
धीरज्जबेन की तरह सैतान बग के देख ॥

जीवन की ग्रहणियत को विस्वसी नहीं समझ ।
दिल में किसी के दर्द का तफान बन के देख ॥

क्या सोया और चाया रबिस्टर को तो टटोल ।
मत मोल करे मोल की दुकान बन के देख ॥

‘व्याकुल’ कवि के गीत सुने अनसुने न कर ।
कवियों के कलम तीर की कमान बन के देख ।

ओ जय उवालो ! हूँ आस मठ बिस्वाओ ।
हम स्वयं तिमिर को बलने के धम्यासी हूँ ।

तिकड़नी हुआओं के बस पर उठकर तुमने,
 छू लिया ज्योत को, इसमें कोई बात नहीं ।
 अतः समझो तुम पर ही निर्भर है विश्व क्योकि
 इस ज़रती पर हर पक्ष खड़ी है रात नहीं ॥

बहुकाधो मत अपनी जन्मदुर छुतिमा से ।
हम अपनी पहचानी के छह बिश्वासी हैं ॥

हमने देखे हैं अगणित युग के परिवर्तन
गर्भान्त वैभव देखे हैं उठते-गिरते ।
हम महाहठी हैं, महाकाल के धामप्रभ,
जो टान दिया करते हैं बों बलते फिरते ॥

जब जब अबाद की बीहड़ता का दो हमको ।
 जब यहाँ ऐसे हैं, उनके आदि निवासी हैं ।।

जो कभी समय का सूर्य स्वयं को कहते थे,
 लघोत बने क्षय में ही डरकर भाग बचे ।
 घससाये जोषन, बहिर कलं नगराजों के,
 मेरी ही टूकारों को सुनकर भाग बचे ॥

तुम जिन्हें सफलता, सुख-सुविधा कहते हो, वे ।
मेरे जीवट के राजमहल की दासी हैं ॥

रचयिता प्रकाशकीर अक्षर

हम वीर हैं डरना क्या जानें ?

वेस की इस ध्वज को हम से बनी
मीन यह है कि वेस की वीर विभवाहिम् ।
यह मान्य कोन दुरी करेगा ? धार्यसमाज
को ही यह कार्य करना है । राधुदोही
नूर हवासे बँध चुट लें, युक्त सुकर भोनों
की स्टेनबनी से हवा कर दें, बस कँठ-
रियाँ बना लें, यो इन में से किसी को
फाँसी नहीं दी जाती । धर्याभना बा
एकटा के नाम पर ऐसे लोगों को खोडा
जाता है । इस प्रकार वेस क्या बनेबा ?
धाराय्यकथा है वेस को यद्वात्म्य, भावपल,
गुणम, सागरक, स्वतन्त्रता, नरेन्द्र
(सोमानन्द) जैसे प्रपत्तीरों की । बहूनों
के सामने छाती ठामकर हुकाये जाने
की बातों को लमकाये जाने एवं
तेलवनी दुपटों का स्वरूप करने धार्य
जाति कायरी को 'महिषा' से मुक्ति
पाए ।

हैदराबाद सत्ताग्रह के दिनों की बात
है, प्रथम श्री महात्मा नारायण स्वामी की
महाराष्ट्र रेल में यात्रा करने में श्री महा-
त्मा के पेलंबर गाड़ी से युवा बा रहे
थे । भाप बंद बलाह के दिने में बिलारा
बिष्ठाकर बैठ गये । धामी गाड़ी सोलापुर
से गयी बनी थी । धायजन को बिना करने
धारे, गही जाने से कि एक व्यक्तिय महा-
राज के पास धायरा धीर कहा कि बिज
डिन्ना में यह है, उत्तम धीर कोई नहीं
हसिए धाय बागें बसकर गये । महात्मा
की उत्तर में ही । एक धायों को जेबा,
भायो हसका डिन्ना बेलकर भायो, क्या
इससे प्रम्था है धीर बागें धीर कोई की
है । उसने मोटरक सत्ताभा की खोडा
वा डिन्ना है । यह बाग, पाँच हैदराबादी
मुसलमान हैं । उन्हीं के सिचारे पर यह
पानी महात्मा की को उस डिन्ना में
बिचाने के लिए धायरा बा । ऐसी घटनाएँ
सब घटती रहती थीं परन्तु हमारे नेता ब
धार्यजन धीरा हुयेभी पर बर कर धार्य
बड़े । बाग, श्री हाप बालसे हुए घोषडा
बई-डिन्ना बिलान्य की से बेकर ऊण्य-
बाद डेकर बा उनको रली माता गावा-
बरी बेनी तक बा जाने बिचारे धायों ने
धीर गति पाई । फिर भी वेस जाति के

तत्त्वमस्य—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा—७

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

सबु धार्यसमाज से नयनीत है । धार्य-
समाज धातकित न हुआ ।

महात्मा नारायण स्वामी जी के
धाम्य हैं—

‘धोलापुर निवासियों में से धनेक
हमारे प्रभिनिक बमारे धाय घाटे धीर
कहते थे कि मैं कभी कहीं बनेना न जाबा
कर क्योंकि यह बाग जटरे से जाती
नहीं ।’

फिर धामे बिचा है कि मैं धीर
स्वामी स्वतन्त्रताय की निष्ठा प्राप्त 'X' बने
ऊठकर बनेक बने काते थे । डाई तीन
मील दूर जाकर धीक स्वाय धायिसे
निजुत होकर प्राय सात बने के नयनय
कहा करते थे ।

घट्यों नगर के बाहर धार्यनगर में से
महात्मा कायें करते थे । जब नारायण
स्वामी की बनेसे बाहर प्रनय को जाते ।
धोलापुर निवासियों ने मुझे स्वयं बताया
कि हमने कई बार श्री नारायण को रोका
परन्तु धीक स्वतन्त्रताय का एक ही
उत्तर था कि ‘‘बचना किस बात से ? उस
बीच के लिए तो फिर मैं बनेना ही पर्याप्त
हूँ ।’’ बने बिस्तार से ये बातें लीधुसुन
पत्र में लिखी हैं ।

महात्मा नारायण स्वामी बर वेस
बने तो वह धायरा मुसु पत्र DEATH
WILL लिख कर गये । इससे स्पष्ट है
कि महात्मा इस बने मुसु में जीवन बाहुल
कले की दुरी लँदाई करके गये थे । धाय
धार्यसमाज को ऐसे महान् उत्पत्ती, निर्भीक

मुकुञ्जय महाबलि नेता बाहिए । राज-
नेवाओं बा धासन की परिकमा करने
वाले समाज का मुसु न संवार सकेने ।
उसी को धार्यसमाज के बने बने कार्यक्रमों
में रीनक के लिए धासक चुनाने पडते हैं ।
धोमी मुसुओं की भीक कितनी हो जाती है ।
ऐसा क्यों ? बाग प- लेबराज, धार्यमुनि,
स्वाय बाई बालो धायक निडा बाले
व्यक्तियों के हाप में हमारी बागबोर
नहीं ।

धायो धार्यवीर दस, धार्यमुसक
सयानें, धार्यकुमार सयानें धीर व्याप्या-
धालाएँ स्वाय स्वाय पर कोलें तौ ही हम
धायन बन बनेने ।

एक वे दिन ये—

भीक मुसु सत्तार पडैक को धमकी
अरे वष बिचाने गये । मुसिम लीमी मुसु
उन्हे जान से धारत बाहते थे । मुसकुन
काँकरी के मुसु बाधवारियों ने उन्हें
पत्र लिखकर उनकी रखा के लिए धमकी
हेबाएँ मँट की । बसतर पडैक ने ध्यिपि
के लम्बों को उरुपुत धायू एव धार्यवीरों
का कन्यबाव किया । उन्हेनि बहवारियों
को बिचारा, ‘‘प्रभु की इच्छा ही पूलें होगी,
मुसु से मैं बचना नहीं ।’’

धाप दिन धार्य जाति के निर्दोष बास
भारे बा रहे हैं । मुकुञ्जय के बहवारों,
ही०ए०वी० कासेजों के धाय बनेक
हैं । वे निज फिर लोट सकेने हैं । धोला
तर तेक फिर बाला होगा ।

‘धायों को निकाल दो—

धाया बासबत राक के निष्कासन के

दिनों की बात है । स्वामी यद्वात्म्य की ने
(सब महात्मा मु सोराय मे) एक ऐति-
हासिक भाषण दिया था । उसकी बर्बा
उनके कई जीवन बरिनों में है परन्तु धरा
भाषण सम्भवतः किसी ने नहीं दिया ।
सोभाग्य से मुझे यह ऐतिहासिक भाषण
मिल गया है । भाषण क्या है यह की
बहुरा बा हुंकार है ।

उसी ऐतिहासिक भाषण में स्वामी
जी ने एक घटना सरकार के दमन बाक
की दी है । हरियाणा के एक ग्राम में
डिप्टी कमिश्नर साजब गये । धायवास के
नम्बरदारों, जैनधारों को मुसुवाया गया ।
धायन साहज के मुनासे पर सब बा गये ।
साहज में विशेष बात यह कही कि देखो
धामे धामे धामों में धार्यसमाज को बसने
न देना । यदि कही कोलें धार्यसमाजी हैं
तो सब प्र म से निकालो । साहज को
यह पता न था कि बिन धीरवीरों से यह
बात कर रहा बा उनमें धायिकों धार्य-
समाजी थे ।

मुसकुन बाले एक धीरवीर ने कही
नीतिमता कहा कि यहि हम किसी को
ग्राम से निकालेंगे तो धायकी सरकार
हमें ही बसवायेगा । इसलिये साहज बहादुर
बाग ही इन धायों को हुकाये, ‘‘नहीं हम
से निकालेंगे । इस पर साहज बनेने, ‘‘गही हम
तो इन्हें गही निकाल सकते । धाय निकालें
हम धायको मुसु न बनेने ।’’

इस पर यह धार्य धीरवीर बोला—
‘‘साहज बिना धार्यसमाजियों से यह
बाकते धुर धाय की सरकार बरती है, हम
उन्हीं कीसे निकाल देंगे ।’’ यह बा धार्य-
समाज का तेक । वेस है कि स्वामी यद्वा-
त्म्य की ने उन धीरवीरों का नाम बागुं
नहीं दिया । स्वामी स्वतन्त्रताय की उनके
नाम बालया करते थे, हमें उनमें से केवल
धीरवीर चुनना का नाम ही याद है । वेस
नाम स्वामी स्वतन्त्रताय की के नेलों में
कोबने पडेंगे । धायों । धायो प्रभु की
बागुलें धाय की बिमल रचनाओं को सुनें
बसुधों धीर उर प्रतीत को फिर सत-
मान कर दें ।

किशोरमञ्च—

अंगिरा ऋषि का उपदेश

प्रस्तोता—बलभीष बासी

भीनक नामक विद्वान् अंगिरा ऋषि
के साथ गया धीर बोला मुसु की मुझे बसतर
के बिचलित हैं, मैं बर-बार धीक कर
लगाती बनान बाहुरा हैं । मुसु की कोलें—
‘‘बह गृहस्थी में रहते हुए भी नयनान का
नयन धायता सज्जता है ।

मुसु की का उत्तरेक मुनकर भीनक
बहुरय जीवन व्यतीत करने लगा । यह

सबा धामे धायरा की उन्नति के बारे में
घोषता था । उसके बास बहुत बन था,
किन्तु यह उस बागें सुल को मूडा सुल
बनमकाया बा ।

एक दिन उसके बर धयिरा ऋषि
धामे । भीनक ने प्रश्नम होकर उनका स्वा-
गत किया । धायरा की उन्नति के बिषय
में मुखा । धायरा की यह बाने की इच्छा

की । धयिरा ऋषि ने कहा—‘‘पहले एक
बर्ष तक बहुराचें सब धायन करो । तत्पश्चात्
करो । बास में मुन्हे धाय बिसेया ।

धयिरा ऋषि बने गये । बाद में
भीनक ने उत्तरया की । एक वर्ष बाद यह
धयिरा ऋषि के धायय में गये । ऋषि ने
उन्हीं बहुर की ज्ञान की बातें बिचानी ।
उन्हेनि कहा—‘‘बिचारा को प्रकार की होती
है । एक बिचारा से हम बसतर के सुख भाप्य
करते हैं, परन्तु सज्जता यह गही बिचला ।
इसरी बिचारा हूँ सम्भवतः के उन्नति की
धीर से जाती है । उसी के द्वारा हमें
सज्जता सुख मिल सज्जता है ।’

भीनक की धायक में ये बातें गही

धायी । उसने इनके बारे में फिर मुखा ।
ऋषि ने कहा—‘‘बासी बेतों के पडैक बा
यज करने से मनुष्य धायरा की उन्नति
नहीं कर सज्जता ।’’ इन सब को धामे जीवन
में उतारे धीर उसी प्रकार धायरा जीवन
बनाये । कषनी धीर करनी में धायन न
हो ।

भीनक ने फिर धायरा की उन्नति
का उपाय मुखा । धयिरा ऋषि ने कहा—
‘‘ईश्वर का कोई रू नही है, फिर भी वह
सब बागुल, सब चीजों में मौजूद है । उसी
ने सारा बगल बनाया है । वह सब को
बिखार्ने नही पडता । यह सब बहुरो को
सज्जता हुमा है । उसे तो गही बिचारा है को

(सिप पृष्ठ ६ र)

व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा माला-१४

वेदामृत

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

धोऽम् अन्ति सन्त न पश्यति,
 अन्ति सन्त न जहाति ।
 देवस्य पश्य काव्य,
 न ममार न जीय्यति ॥

यह सब मन्त्र है। कोई भी ऐसा नहीं है जो साक्षात् भगवान् परम्परा सम्बन्ध से ईश्वर का अनुभव ही न करता हो। जब चाहे लोक व्यवहार के बताने वाले हो, चाहे विज्ञान के, परन्तु सब की साक्षात् या परम्परा सम्बन्ध से श्वेय परमेश्वर की प्राप्ति में ही वैदग्ध्य बतलाने। साक्षात् सम्बन्ध होता है। जैसे प्राप से किसी ने मुक्तता पायी। प्रापने उसको मुक्त पकड़ ली, यह तो हुआ साक्षात् सम्बन्ध। मुक्त मने किसी को वी भीर उसने उसको दी, यह परम्परा सम्बन्ध है। चाहे दूसर को, चाहे किसी रूप से ईश्वर की ही विषया वेष्ट करता है।

अन्ति सन्त न पश्यति ।

प्रतिष्ठा प्राप्त जो मनुष्य है वह परमात्मा के वरूपि अस्तित्व निकट है फिर भी नहीं देख सकता। एक तो यह बात, दूसरी बात यह है कि 'अस्ति सन्त न जहाति' इसका इतना पटुतम सम्बन्ध है कि उससे भलग हो ही नहीं सकता। इसको बाद में कहा।

देवस्य पश्य, काव्य
न ममार न जीय्यन्ति ।

सब परमात्मा को। आत्मे के विषय
 उस सब को जो आत्म है, उसको देखो।
 उसका प्रकाश है। मैं तुम मुझ का
 सम्बन्ध है न बीबीजों का। कारण यह
 कि ब्रह्म मुझ परमात्मा, मैं सब सत्त्व के
 मार्ग में हूँ। सत्त्व के मार्ग में पुण्य होने
 पर यह तुम की बीज मैं रहती। फिर
 सत्त्व के साथ उनका सम्बन्ध नष्ट हो जाता।
 सत्त्व के मार्ग में कही मैं तुम मुझों
 के पुण्य को बता दो यह उस पूर्ण सत्त्व
 को प्रकाश मानो। इसका कारण यह
 कि सत्त्व के मार्ग में पुण्य प्रतीत हो
 जाती हैं। इसका प्रत्यक्ष ही प्रमाण न कुछ
 प्रमाण है। परमात्मा ही प्रमाण है।
 बिना का कुछ प्रमाण न हो। सत्त्व के
 सत्त्व विभिन्न बीजों मैं हूँ हैं के सब
 परलोकियों को। किसी शरीरों कर्म के
 कदा भी है—

जमाना एक बबालूदे अमर
नमेषाफ फरबन्द बाफर

धन्य जगन्नाथ एक रस रूपा बना
 होता तो थाय वो बनाया है बस एक
 महीनी होती। कम्पन करने पर
 होता बन्ना बाकी की बन्ना से होता है
 छोटा बाग रत्नाम होता है। समय एक
 रस रूपा बना मही, यह परिवर्तनशील
 सदा एक रस कर मही नहीं रह सकता,
 एक मही होती पर सदा भी जाता है।
 इस परिवर्तन मन्वत्वा को १ मय २०
 करोड़ वर्ष के करोड़ मही होते हैं। विज्ञान
 के अनुसार ये सदा मन्वा बनाया
 होता था। दिन रात तो होता परिवर्तन
 है। दिन और रात मिलाकर २४ घण्टे
 होते हैं। १ घण्टे के ५० मिनट होते हैं।
 १ मिनट ५० सैकण्ड होते हैं। सैकण्ड से
 भी छोटा समय कालचित्त्व मही के साथ
 जाता है। इस साथ का कोई भी विचार
 नहीं किया जा सकता। एक साथ होता,
 मही साथ का होता सीधरा साथ की
 भीत गया। इसी तरह साथ साथ करते
 इस स्थिति को १ मय २० करोड़ वर्ष
 कीत है। हाइड्रक का साथ मही मही
 मन्वत्त्व रत्नाम है। हमसल सदा को सम-
 मयुक्त कहा गया है। एक साथ से ही
 इत्थना परिवर्तन होता जाता है। इसके
 साथ से ही इत्थना दर्शन भी मायुक्त
 जाता है। बड़े प्रयोग का मन्वा। इस
 साथ के कथित के साथ ही मही समस्त
 ब्रह्मविद्या मय विद्युत् होती है। सारी
 की सारा मायु ही साथ से ही मही
 जाती है। मयुक्त का एक एक साथ परि-
 वर्तन होता है। को मही मही हुँ होती है।
 इन वर्ष में परिवर्तन होता है। को मही
 मही ही मही उसके धन्य तो परिवर्तन
 को साक्ष्य मही ही नहीं समझी। जैसे
 क्यापस विसे मन्वा है

नित्येष्वभावात् अनित्येषु
भावात् कारस्य कालाख्य ।

इसकी लाकत बाहिर कहा है ? मिल
ने दो बाकर यह काय पास की भुम हो
पाता है । अतिलय ने यह बाहिर होवा
की पेवा ही नही हुई है उस पर मान
की गति का धरत नही होता । एक नीज
पेवा हुई, उसको दब नहीं नीत पेवा, ऐसा
कह सकते हैं । इसके धरत भुमकास की
है, बर्तमान कास की बीर अतिलयसुका
नी है । की नीज पेवा ही नहीं होती यह
कदीमी सिद्ध ही है । मिल पावों में कास
का बमान ऐसा है और अतिलय में कास

का माय ।

[illegible]

‘समय एव करोति बलावसम् ।’

समय की मनुष्य को बनाना और निर्बल कर देता है। जिसने सैन्य-मुद्रण की ही समय बिना दिया, समय का नहीं समय का वो वह दुर्बल हो जाता है। समय समय को बनाकर देता वो वह बन-समय हो जाएगा। समय को सेतो का भीतर है, किसी का नहीं उहरता, इसलिए जो क्षमताएं छावनी हैं वहीं समय को उपयोग ठीक ढंग से करते हैं। क्योंकि- क्या वक्त हीन हो जाता है, क्या ऐसा ब्यापार पाता नहीं, क्या वक्त हानि में नहीं जाता इसलिए आज को प्राप्ति करने में समय को बिनावा प्राप्त, क्योंकि प्राप्ति मिल ससु है। मिल ससु पर का का प्राप्ति नहीं होता। इसलिए कहा है कि—

‘देवस्य काव्यं पश्य’

वह परमेश्वर, जो देव है, उसी काव्य को देख। उस देव का काव्य वे ही हो सकता है और वह वेद नार ब्रह्मा के हैं—

ऋक्, यजुः, साम और अथर्वः ।

यह हम तो वेदों को मानते हैं, परन्तु दूसरे नहीं मानते, सुसम्मान नहीं मानते, ईसाई नहीं मानते। यह कहेंगे कि हम वेद को नहीं मानते तो यह ठीक है। वे

पाव लाग का है। कोई भी इच्छान यह
 नहीं कर सकता कि मैं जान को नहीं
 माया। अगर कोई ऐसा कर दे तो
 उसकी मुक्ति होनी। तो वह जान बार
 प्रकाश का है—भूत, वस्तु, जान को
 प्रकाश। वही वस्तु है अगर वेह है—बोध,
 वाणी, मुद्रा और भाव, इनके समूह देख-
 बहार प्रत्यक्ष सब का बाहेर है। इसी तरह
 जान के भी बार वेह हैं। जो धारणी की
 हिम्मत की तरफ बायेगा वह जेना की
 हिम्मतपूर्ण परिणामका है। मैं तो
 कहूँगा कि हिम्मतपूर्ण वेहोंको तो नहीं,
 वेह तो धीरे धीरे सब वेहों को भासनामा
 बनाने लाता है। मुमकिन है अगर धार
 देखे तो धारकी भासना होना। जिस
 धार है वेसा धीरे धीरे हल्ला देख नहीं है।
 परन्तु धारकावे के इतिहास में निमलक
 निमलक दिखता होता है, क्योंकि हमारे
 में असाव थावदा है। जो धार निरत समझ
 करना चाहिये, उस समय नहीं करते,
 जेमासल के लडाईं-दोस्तरों है करते हैं। सब
 धारामियों को धार की ओर एक दिशा
 धारमी धारके दास्ते पर नें जाना बाहेर ठा
 बाहेर धारकी असमय जान धारवृद्ध होना
 चाहिये, इसी के का कथवदा है।

प्रथम दृष्ट "मच्छू" को बोले। एक मास
 स्तुति करने की। वेस हो सामान्य ब्रह्म
 है। उसके साथ वे मच्छू, यशु, साम को
 यमन में वे मर विधेयन बने हुए हैं। मच्छू
 जो है वह स्तुति करने हैं। जब कोई धरमा-
 न्तव्य धारणी होता वह यक्ष्मे परचेवर कह
 जाते हैं हुई भी को ही धारिका कहता।
 सुमूर्ति को धरने का नाम विवा जोर कह
 दिया कि यह परचेवर है। लेकिन जब
 परचेवर की धारिका को मरने को कहूँ कि
 परचेवर बर्धवायन है, बर्धवायन कि
 है, वेमन है, बर्धन ब्यायन है। इन विधे-
 यणों से हम हम सामान्य को स्तुति
 करते हो यत्ता को कि स्तुति हो ईशवर
 है या मच्छू हो हो सामान्य। यह जो नाम
 है मच्छू है। जब इस परचेवर प्रदाय, ई
 यो हो बने धारते हैं। एक धारणी से गुणाच
 के प्रभु को ब्रह्म उसके मच्छू धुमग
 है, रंम जो बहुत धारता है। इसे वेमन
 वह धारणी कहाता है कि यह प्रभु का
 धारता है। पहले तो उसने सुमूर्ति की
 धारणी की। इसके बाद वे उसने विचार
 कि यह सुमूर्ति को तर करने बाता है,
 यमोहर है, विचार है। जिस धारणी पर ये
 पतिता निर जाता हैं उस धारणी की
 मिद्री सुमूर्ति हो जाती है। यह धारणी
 "मच्छू" का स्थान होता। दूसरा है "यशु",
 उसके यह विचार धारता है कि यह सुमूर्ति
 हो हो धारकी, परन्तु यह सब सुमूर्ति से बनकर
 रहते हो धारकी की धारकर रह करती है
 यशु। यशु का काम यह है कि वह
 जिन बस्तुओं को उसी से कोई उपयोगी
 पदार्थ बना करे। को ही को केक "यशु",
 हो के ज्ञान से बन से उरह उरह के इस
 विषय बरीह उरार किम जाता है।
 इन सभी की प्रिय पर बनते हैं। इस की

ब्रह्म प्रत्यक्ष बारम्बार रूप के सम्मुख
में प्राप हमारे समाज में (हिन्दु समाज में)
हमी ब्रह्म की स्तुति हुई है कि

राम नाम का गिद्धा,
बाहे गुह्य बाहे विख्यात ॥

कर्मात् राम के नाम का जाप करते
होकर क्या फायदा पाने उल्टा इसके कोई
कहे नहीं सकता परन्तुला धन्य धन्य
हो करी है । इस समय में कुछ लोग
जिन्ही रूप का यह कथित का पक्ष
प्रमाण रूप में प्रस्तुत करते हैं ।

क्या नाम क्या जप करना ।
मासिकी भवे ब्रह्म धामना ॥

कर्मात् यह सर्वविध है कि राम के
नाम का उल्टा जाप कर्मात् राम नाम राम
देवता न कहकर मरना मरना राम
रखने के शास्त्रीय ऋषि जो हुए हैं, वे ब्रह्म
के हामना हो गए हैं । इस प्रकार के शीर
भी अपने प्रमाण पुराणों के प्रमाण गुह्य
'मासपरित' नामा आदि के प्रस्तुत किये
जाते हैं । साथ ही धन्य पुराणों की
कथाएँ भी जो सर्वथा सर्वविध हैं और
विज्ञान सम्मत् नहीं हैं प्रस्तुत की जाती हैं
जिनके यह शास्त्र करने की मोक्षिका की
जाती है कि भ्रम के की वरिधि किसी ने
'आर्यभट्ट' का 'राम' आदि धन्य भ्रम के
शेष विधा तो मनुज समय में यह उपरि
की रूप्य कर उठा है ।

कवि उपरिष्ठ बारम्बार रूप्य कर
बापनों की शास्त्रिकता पर विचार करने
तो पता चलेगा कि वे मासपरि अर्धविक
रूप्य करी हीन हैं ।

सर्वप्रथम तो बप की र्थित के राम
नाम की उपरिष्ठ नहीं है उल्टे किए
'ओ३म्' धन्य है और श्रमों के ऐसे धन्य
प्रमाण विष्णु का उल्टे हैं जो ओ३म् नाम
की शक्ति है परे गये हैं तथा ओ३म् नाम
के रूप का ही विधान करते हैं ।

ओ३म् प्रथित ॥ वेद

उपसमाह. प्रथित ॥ मर

ओ३म् हनेकाशर पर ब्रह्म ॥ मीठा

इत्यादि सर्व श्रमों के बापनों का इस
नाम का विरोध है । और फिर उल्टी
बात यह है कि बिना विचार ही नाम
स्मरण (बप) करना कहीं भी सम्भवकारी
है । इसके अतिरिक्त उल्टा नाम बपना
ओ३म् उपरिष्ठ हो सकता है । यह बात
हो सम्भवकारी की विरुद्ध है । बप की ओ३म्
जिन्ही का नाम उल्टा लेकर उपरिष्ठ हो
क्या यह भ्रम बाधा उल्ट पर नहीं करता
है ? नहीं । बल्कि यह उल्टा नाम जेने
बाधा उल्टा का नाम ही बनता है ।

इस प्रकार के बप बासी बप
उपा अर्थात्-बारम्बार का विचारण करने
हैं न केवल एक रूप्य भी योग साधन का

जप का शास्त्रीय स्वरूप

धर्मवीर शास्त्री, विद्यावाचस्पति

है स्वाध्यायकीय पाठकों के हामने रक्ष
रक्षा हू पाठक विचार करे । सूत्र इस
प्रकार है—

उत्पत्तयसर्वभावनम् ॥ योग १-५८॥

इस सूत्र में पञ्चविध ऋषि की बप
की परिभाषा समझा रहे हैं । वे कहते हैं—
'उत्पत्तय' उल्ट परमात्मा के नाम का बप
क्या है ? तर्पणभावनम् उत्त नाम के
धर्म की भावना । यह है बप । इसे हूय
एक उपाधरूप के सम्पत्ति । बप बप 'जप'
धन्य का प्रयोग करते हैं तो 'जप' कहते
ही हमारे मन मस्तिष्क में बस के गुह्यो
का जैसे शीरला, तरलाता, उसके ध्यान
के मुक्त का, हत्यादि का विचार ही
गुह्य का जाता है । 'ध्यान' धन्य को
कहते ही ओ३म् ही हमारे मन में उसके
भ्रम प्रकाशकीकता, उपरिष्ठा आदि गुह्यो
का गुह्य ध्यान हो जाता है । किसी
भक्ति को हूय गुह्यो तो उसके गुह्यो का
हमारे मन मस्तिष्क में गुह्य धामना हीन
बनता है । ऐसे ही परमात्मा का नाम,
गुह्य नाम तथा जप की शक्ति के जो
विशेष उपरिष्ठ नाम 'ओ३म्' है उसका
बप करने के उल्टे धर्म का भी पित्त
होते रहता बाह्य ।

परमात्मा का बप की र्थित के तो
'ओ३म्' नाम है शीर कि ओ३म्बनकार
कहते हैं—तत्त बाधक प्रथम ॥ योग
१२१५ उल्ट परमात्मा का बाधक ओ३म्
नाम है तो जो बाधक है यह ही बप के
पित्तनीय की है । जैसे प्राय बप के लिए
लोक धन्य धन्य नाम जाता है । कोई
नाम धन्य धन्य की बात कहता है । कोई
नाम विचार, कोई नाम बपने बपने
कोई नाम बपने, आदि धन्य नाम बप
के लिए उल्टे जाता करते भी हैं परन्तु
ओ३म् नाम ही बप की र्थित के उपरिष्ठ
है शीर कि ओ३म्बनकार के उत्तर 'धन्य
भावन' प्रथम ' में सर्वत्र किया और यह
बप की र्थित है । 'उत्पत्तयसर्वभावनम्'
उल्ट ओ३म् नाम का बप उसके धर्म की
भावन पूर्ण करना बाह्य । उत्तर धिये
बपे बपनेछो तो हूय यह धन्य बपे हैं
कि किसी बपने के नाम का प्रयोग करने
के उल्ट बपने के गुह्य-धर्म नाम में बा जाते
हैं । जैसे हीन धन्य के नाम ओ३म् का
भी पित्त बप हो तब धर्म पूर्ण हो ।
'ओ३म्' का धर्म गुह्य बप के रक्षा करने
बाधा होता है तो रक्ष ओ३म् नाम का
बप करते हुए रक्ष का धर्म 'धन्यो रक्षा
करने बाधा' की बप का विषय होता
बाह्य । 'ओ३म्' का विचार मन में
उल्टे ही हूय शीर है यह परमात्मा बप

का रक्षक है, मेरा तो रक्षक है । मेरे
धन्य धन्य में प्रविष्ट होकर मेरी रक्षा बप
कर रहा है । बप में ओमार हू तो मेरी
ओमारी हू हो रही है । मेरी हूय बीच
की रक्षा का भार उसी का है । केवल
शरीर ही नहीं बल्कि मेरे मन मेरी धामना
की रक्षा का कार्य भी यह कर रहा है । धन्य
मेरे मन में स्वस्वता है । धामना में स्वस्वता
है । शरीर में स्वस्वता है मेरी रक्षा हो रही
है । बप भुजे कोई नहीं मर सकता, कोई
नहीं सता सकता, धर्म में उसकी गोच में
हू । उस सर्व रक्षक की बिसका नाम ओ३म्
है मेरी धन्य र्थित के रक्षा हो रही है ।
मैं उसके बहारे पर हू, उसके धामन में
हू । उसकी धामना (बहारे में) हू और जो
उसकी धामना में (धामन में) बा जाता है
उसे बिसका है धन्य धन्य । 'धन्य धामना
धन्य' धन्य बिसकी धामना ही धन्य
है बिसका बहारा न मेरा धन्य जैसे बप
का कारण है जो मैं तो धामना में हू । उसी
को मैं मुकार रहा हू । यह मेरे शरीर में
मेरे धामने जैसे धर्म बाह्य उत्तर नीचे बप
और ओ३म् मेरी रक्षा कर रहा है । ऐसी
भावन के धन्य बप किया जाता बाह्य ।
और बाल्य में ऐसा बप ही र्थित के
नाम का बपना बप कहता करता है ।

अंगिरा ऋषि का उपदेश

(पृष्ठ ५ का वेप)

प्रकृति के प्रत्येक रूप को उल्टा बप बाध-
कर उल्टे देखाते हैं । धन्य धन्य बपको
धन्यता है । शरीर प्रकृति की बाधक धन्य
बाध उल्टा की रूप्य है, जो जन धामन
को विचार नहीं देती है । शरीर गुह्य उल्टे
नाम में तो देखाते हैं । इसी रक्षा
बाधा की उल्टा का तरीका बताती है ।
उल्टे के द्वारा हमें रूप्य गुह्य पित्त करता
है ।

यह के विषय में लोगक ने गुह्य—
अंगिरा ऋषि बोले—केवल शरीर को
करने के भी हूय उल्ट उल्टा को नहीं कर
उल्टे बिच्छे रूप्य गुह्य बिसका है ।
केवल धन्य करने के भी उल्ट गुह्य की प्राप्ति
होती बिच्छे धामन कहते हैं । ये
शरीर बाधों नहीं जीवन में धामने हैं । बप
बाधों मूढ न बोले, बिसा न करे, बोरी
न करे, बोधा न है, बस न करे, धन्य
बाधा के धन्य बप को धामनो को धामने
को बाधे । यह बप करने का बाध है, बाध
देने का उल्टे धन्य । धामनी यज विचार,
बासी बप विचार । धन्य में इन बाधों
को नहीं उल्टा, तो गुह्य नहीं बिसका ।

सवेप में कहे तो जो कहना परमा
कि योग सर्वनाम ऋषि पञ्चविध भ्रम
नाम के शास्त्र रूप के उपाधक न सम-
र्थक हैं ।

हमें एक बात और ध्यान में रखनी
होती कि ऋषि पञ्चविध धन्य (परमात्मा
की) भावने में हमारे प्रमाण है ।
भक्ति में उपरिष्ठा के विरोध (स्व-
विष्ट के) जैसे कोई बाध का स्वेष्टविष्ट
बाधक होता है तो यह बाध के बारे में
विशेष ज्ञान रहता है । धर्म रोग विरोध
धन्य के विषय में, हूय की का विरोध हूय
के विषय में, वेत का विरोध वेत के विषय
में धामने के भावने में धन्य धन्य-
विष्ट के विरोध जानकारी रहता है तथा
धन्य विषय में धामनिक नाम जाता है ।
जैसे ही उप के बारे में योग सर्वनाम
पञ्चविध का बपना धामने लिए प्रमाण
की बीज हो जाता है । और वे कहते हैं—

'उत्पत्तयसर्वभावनम्' उल्ट पर-
मात्मा के नाम का जप उसके धर्म की
भावन सहित होता है तो जैसे धन्य की
बाध को बप विरोधक सम्मत्, ओ३म्
नाम का धर्मक भावन के बप करना
बाह्य । शरीर में नहीं मन में मान्य पूर्ण
बप करे । शरीर बप का शास्त्रीय स्वरूप
है । नाम का 'उल्टा' नाम या धन्य
वे विद्या गण 'गुह्य नाम' बप की (स्वरूप
की) कोटि में नहीं जाता । धन्य यह उल्टे
'नाम बप' की बारम्बार धन्य करे
जैसे 'ओ३म्' नाम का धर्मक, धामन के बप
करना बाह्य ।

इसके विषय यह फिर ऋषि के बात
क्या, इस बार धन्य ने बताया—'उत्पत्तय
उल्ट के मन की बात जानते हैं । हमें बता
सल बोधना बाह्य । मन को बप वे
रक्षना बाह्य । धन्य की बाध नहीं करते
बाह्य । धामनिक धन्य के धन्य ने
धामना की उल्टा पर ध्यान देना
बाह्य ।

यह गुह्यकर धन्य को गुह्य बिसा
और नाम बिसा, धन्य ने यह गुह्य बपे ।
उल्टे धामन, धन्य की प्रमाण किया ।
धर्म शीर धामना, उनके बाधे हुए उल्टे
के धन्यकर विन बिसाते स्या । उसका
जीवन एक हृदय धन्य उल्टी ही स्या ।
इस रास्ते पर को भी बिसाए लो की गुह्य
की प्राप्ति होती । इस ओ३म्-रक्ष के लिए
बिसने नामा गुह्य बहते हैं । बाध में गुह्य
होते हैं । धन्य न देखा गुह्य को कभी
समाप्त न हो और यह धन्य है धामना पर
परमात्मा को धामना । धामने हूय बप
इसी रास्ते को हूँ जिस पर धन्य को
धामन धन्य में धन्य धन्य को बधा बा ।



समाचार-सन्देश

दिल्ली आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संग कार्यक्रम

१८ अगस्त १९८५ रविवार

[illegible][illegible]

अध्यक्ष
स्वामी स्वच्छानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेङ्कटार विभाव

संकल्प

[illegible]

विकास का क्या होगा ?

साहए। हम भारत के लोग, स्वाधीनता दिवस के पुण्य पर्व पर सकल्प से एक महान् राष्ट्र के निर्माण का और भारत में फैल रही दानवी प्रवृत्तियों को समाप्त करने का। यही स्वाधीनता के लिए मर मिटने वालों के प्रति सच्ची श्रद्धा-भक्ति होगी।

भववीय,

भवदीय,

चतुर्वेद पारायण यज्ञ

२१ अगस्त १९८५ प्रातःकाल १
स्मर तक यज्ञ भवन प्रयाग निकेतन
हरनगर दिल्ली में श्री स्वामी जीबना-
एव ५० लक्षपति शास्त्री की
महा ३० शुद्ध पारायण यज्ञ का
अंश किया गया है। अद्यावत्तु जारी
में पधार कर जर्म साध उठावें।

निवेदक
मार्जुनदेव

वेद कथा—

धर्मसमाज लाजपत नगर नबी
दिल्ली में २६ अगस्त से ३१ अगस्त तक
रात्रि १ से १० बजे तक क्या ५० शिव-
कुमार जी शास्त्री वृत्तपूर्व सांसद द्वारा
होगी। जब रात्रि ८ से १ बजे तक श्री
गुलाबसिंह जी रायच के होंगे ।

प्रेषक
पण्यम

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य (पंजाब)
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

सूचना

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, की साधारण सभा की बैठक रविवार १८ अगस्त १९८६ को साय ३-३० बजे आर्य समाज मन्दिर हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ में होगी।

विचारणीय विषय—

१ लोक प्रस्ताव
२ गत बैठक की कार्यवाही की
सम्पष्टि।

३ वार्षिक विवरण (रिपोर्ट)

४ गत वर्ष के आय-व्यय का व्यौरा
५ नये वर्ष के लिए अधिकारियों
एव अन्तरिम सभा का निर्वाचन ।

६ अन्य विषय।
भाष इस सभा के माननीय सदस्य
हैं। कृपया अवश्य दर्शन करें।

वेद प्रचार सप्ताह

भारत की समस्त धार्यसमाजों वेद प्रचार करणाहूँ अथस्त सितम्बर में अपनी-अपनी धार्यसमाजों में वेद कथा कर मनाती हैं। आपसे प्रार्थना है कि इस वर्ष भी यह कार्यक्रम अवश्य रहे। इस उपसय में आपको किसी विद्वान् की धार्यस्यकथा हो तो आप हूँ सुखित करीर की कृपा करें। आपसे एक प्रार्थना करीर करती है। जैसा कि दिल्ली की प्रतिनिधि सभा

की आर्यसमाजों एक सप्ताह रक्षा-अभियान से लेकर अन्धधृष्टी तक वेद कथा सप्ताह मनाती हैं। अन्धधृष्टी तो यह रहेगा कि इस सप्ताह से एक सप्ताह पहले व दो सप्ताह

आर्य समाज की प्रधान
सड़क दर्दना में घायल

भार्येबाब, उदयपुर की प्रजाप
थीमटी नामटी धनपाल कल ३-०-८३
रात्रि बरक छात्रावास के पास कार पेड
के ठहरा जाने के कारण घायल हो गई।
तत्काल उन्हें सामान्य चिकित्सात्मक के
आपातकालीन कक्ष पहुँचाया गया जहाँ
उनकी छाती में गोले चले जाने के कारण
रात्रि को ही प्राथमिक चिकित्सा तथा
दुर्घटना की कारण शोक करने पर प्राथम
कृत्य कि सामने से वा रात्री बस से बचाव
कृत्ये समय यह दुर्घटना हुई।

धार्मिकता के सभी मानक
मुझे एक विज्ञापन के बराबर हैं कि
धार्मिक धार्मिकता के बिना मैं होने वाली
भारत की मासिक बैठक स्थिति कर दी
नहीं तथा साप्ताहिक बैठक के उपरान्त
समस्त सदस्यों से उनके धार्मिक स्वातंत्र्य
का कोई भी धर्म के धार्मिकता की।

श्रीमती अन्नवाल सामान्य चिकित्सा-
लय के महिमा नेत्र कला के पलक न० १
(एफ) में बर्ती हैं उनकी तबीयत पहले से
सुचारु पर है।

(सामप्रकाश दुपा)
पेन्नी. सामप्रकाश प्रकाश

नोट १ सहयुक्त सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि वे अपना सदस्यता शुल्क रु/- रुपये कार्यालय में जमा करा दें अथवा १८ अगस्त १९८५ को साथ भेज दें।

२ विन सभाजी ने सभी एक ८५-म १
का सम्बन्ध शुल्क ३०/- रुपये और २
प्रतिनिधियों के नाम, घर के पते सहित,
सदस्यता शुल्क १०/- रुपये सभी एक नहीं
लेना है, वे भी कार्यालय में जमा करा दें
अथवा साधारण आधिक शिष्टोत्तम में
साथ लेते प्राये ।

३ सभा कार्यालय सभी कार्यदिक्ताओं पर अपराह्न ३ से ६ बजे तक खुला रहेगा।

सर्वदीय
(सूर्यदेव) महामन्त्री
अवश्य मनाइये !

बात भी बहु प्रोत्साहन बना ६ कहे हैं। इस उपस्थिति में हृदय आपको धन्ये विद्वान् उपलब्ध करा सकते हैं। दिल्ली की धार्य समाजों और स्त्री धार्यसमाजों में हर रविवार की सत्संग होती हैं। अगर रविवार या किसी समय मिल के लिए उपस्थित नमनोपदेशकों की आवश्यकता हो तो क्या कार्यालय को सूचित करने की कृपा करें।

महामन्त्री
डा० बर्मपाख
बिल्सी धार्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई बिल्सी-१

योग्य रिश्तों के लिए मिलें

की लोभ पापा, उत्तम कुलों का निष
 पापा, निषा श्रेष्ठ के निषा इन्द्रजित
 पापा, निषा श्रेष्ठ का प्रत्यक्ष कठिन का
 सुधीर गुणधारी इन्द्रजित की दूध पापा
 प्रभावपूर्ण कर्म है। जयदेवा की भाव
 के रक्तों हुए दिल्ली का प्रसिद्ध धमा
 के प्रत्यक्ष लक्ष्मी की देवता निषा
 के लिए धारण धारण निषा केन्द्र की
 प्रभावपूर्ण की है। प्रत्यक्ष धारण प्रत्यक्ष
 सुधीर गुणधारी के निषा श्रेष्ठ इन्द्रजित
 का प्रभावपूर्ण के प्रतीक्ष कर्म है। प्रत्यक्ष
 प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष के निषा श्रेष्ठ देवा का कुल
 है धाम, क, निषा, कर्म, प्रत्यक्ष-
 प्रत्यक्ष कर्म।

२ अपनी इच्छा—क्या आप गाँहुर
जेहन के पक्ष में हैं? परिवार के सदस्यों
का परिचय शाकाहारी भ्रमबा “क्या
कोई रोग हो नहीं है? क्या अन्तरजातीय
विवाह करना चाहते हैं।

संयोजक आदर्श आर्य विवाह केन्द्र
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१३ हनुमान रोड, नई दिल्ली

साप्ताहिक ओ३म् कृष्णता विश्वमायम्

आर्य सन्देश

बष १८ शक ४० रविबार १५ अगत १९८१ मुष्टि सवन् १९७९६४८०८६ बावण १० ४२ बषामनाम्ब—१९१
मूष १८ शक ४० रवि बारिक १० ४२ बावण १० ४२ विषे १० ४२

निराशा वादी शल्य मत बनो, आशा और कर्मठता के प्रतीक कृष्ण बनो —रामगोपाल शालवाले

नई दिल्ली १८ अगस्त १९८१।
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के निर्वाचन से युव सामयिक प्रधान का प्राशन बहुए करते हुए सांवेधिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान शाला रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की स्थापना उस समय हुई थी जब देश भर में कड़ी भी ऐसी सभा नहीं थी। कामपुर में काफी समय बाद केन्द्रीय सभा की स्थापना हुई। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इसी सभा के तत्वावधान

में चीन के हमले के समय नरकानीन मुहम्मदी भी बहूएण की रामगोपाल नवान में आयोजित विद्याल सभा रोह में ५१ हजार रुपये और एक तलवार भट की गयी थी। समूचे देश में इन सभा की छाए थी। मुके दु ल होता है जब मेरे कुछ निरास साथी सब कुछ करते हुए भी कहते हैं। क हम अण्डी तरह नहीं कर पाये। सब तरह सम्पन्न होते हुए भी कहते हैं कि हम भूखे हैं नगे हैं। मैं मानता हू कि हमें और अधिक कार्य करना चाहिए। सगठन के अन्तर्गत कार्य

करना चाहिए। करते हुए लोगों के मार्ग में अवरोध नहीं पैदा करने चाहिए। हो सके तो उनको सहारा देना चाहिए। मुके यह प्रसन्न याद बाता है जब महाभारत के युद्ध में कर्ण के सारथी धृष्य के और थे उस बार योद्धा कर्ण को बार-बार सुतपुत्र धर्मोय हतुताहाहित कर रहे थे। जब सारथी ही हतोत्साहित करे तो कार्यकर्ता कैसे कार्यो को सुचारु रूप से सम्पन्न कर सकता है। दूसरी ओर कृष्ण हर प्रकार धर्जन को प्रेरित कर रहे थे उसका उत्साह-

वर्षन कर रहे थे उसका मोह भग कर रहे थे। डोपदी चौधुरण और धर्मिमयु की मृग्यु का बदना लेने के लिए उसका रहे थे। परिणामत विजयवी भी पाण्डवो की ही मिली जिसमे कृष्ण का बहुत बड़ा हाथ था। इसलिये मेरे प्यारे भाइयो, उत्साह से काम करा। साथियो का उत्साह बघन करो, उन्हे सहयोग दो। जीत तुम्हारी होगी। उन्होंने पञ्जाब की समस्या मोनाखीपुत्रम में किये जा रहे कार्यो पर मतोय न्यस्त (विष १७६ ६२)

आर्य केन्द्रीय सभा के निर्वाचित प्रधान श्री महाशय धर्मपाल



श्री महाशय धर्मपाल
दानवीर, धर्मप्रेम, अर्थनिष्ठ,
निष्कल सत्तन प्रकृति के स्वामी,
एम्० बी० एम्० आ० लि० के स्वर-
त्वाधिकारी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति
महाशय धर्मपाल आर्य केन्द्रीय सभा

दिल्ली राज्य के प्रधान सर्वसम्मति से हृष्य और उल्लास के वातावरण से निर्वाचित हुए।

श्री महाशय धर्मपाल अपने पुण्य पिता श्री स्व० महाशय कुन्नीलाल के तत्पनिष्ठ ईमानदार, परिपक्वारी, दानी स्वभाव की भाव्य मानकर समाज सेवा में लगन हैं। उन्होंने अपनी पुण्या माता चन्ननदेवी की मधुर स्मृति को जीवन्त रूप देने के लिए माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय मुद्राण नगर में बनवाया जो हजारी रोगियो को भेज ज्योति प्रदान कर रहा है। जनक पुरी में भी दो बड़े बस्पाणल दुःखियो के दुःखहरण का कार्य महाशय की शुच सकल्प के कारण कर रहे हैं। श्री महाशय कुन्नीलाल चैंटिबल ट्रस्ट के अन्तर्गत एक बसता किता (विष १११ १२)

महामन्त्री श्री अशोक कुमार सहगल



श्री अशोक कुमार सहगल

कर्मठ कार्यकर्ता धुन के बनी, हृषमुख, मरु स्वभाव जनसेवा के लिए कुनसकल्प शरीरकन एकप्रसन्न के उच्च अधिकारी, महवि दयानन्द और धर्मप्रेम का बघाव

अदालतु श्री अशोक सहगल के आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री चुने जाने पर हार्दिक बधाई।

श्री अशोक सहगल धर्मसमाज राजेन्द्र नगर के १२ वर्षों से लगातार रहे हैं। उनके कारण उस क्षेत्र के जन जन तक धर्ममनाज का सन्देश पहुंचा है। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के वे १९७४ से लेकर १९७८ तक महामन्त्री रहे। उनके द्वारा उस काल में किये गये नार्थों को आर्य जगत अब तक स्मरण करता रहा है। १९७५ की अन्तराष्ट्रीय धर्मसमाज स्थापना शताब्दी के वे संयोजक थे। दूर दराज तथा देश-देशान्तर से पधारने लालो आर्यो के स्वागत सम्मान और धारास व्यबस्था के लिए श्री अशोक कुमार की सेवा की काफी प्रशंसा की गई थी।

सतसंग पाठिका

(५० वत) जिस जिस स्थान में तू (मर्त्यदेह) हमसे करता है उस उस स्थान में (तू) हमारे लिए (अमरपद) धर्मय धाम (कुल) कर (न प्रकाश) हमारी प्रकाश के लिए (अमर धाम) स्वर्ग्य कारक धर्मय (कुल) करो और (न पशुम्य) हमारे पशुयो की की (अमरपद) धर्मय धाम कर।

१० मय मे ईश्वर मे प्राधान्य करते हुए कहा गया है कि हे ईश्वर! जिस जिस स्थान मे तुम्हारा कम चलता है उस उस स्थान मे हमारे लिए हमारी प्रजापदो और पशुयो के लिए कल्याण मय धर्मय धाम करीये।

कल्याण कारक परमेश्वर धर्मय कीसे कर सकता है? मरत्य मे मय एक क्षमा है। मय कोई मरत्य नहीं है। मैंने एक पन्ना कही खो की कि एक बार एक झाड़ू जिस पर कह हैत्यायो के धर्मयोग मे और वह धर्मयोग कारवाय की सजा भुगत रहा था एक दिन जेब के पकड़ेदार के कमरे मे पहुँचा जहाँ बाँधिया रखी हुई थी पकड़ेदार और उसके मध्य साँधियो की घोर निरसील लाल कर बोला हाथ उतार दो।

उस झाड़ू की प्रयत्नता का अनुमान करके उनको धाँसा के धनुसार उछोने हाथ धरा दिए और उसके पकड़े पर बाँधियो का हाथ भी ले बना दिया। उसने पकड़ेदारो के क्षय र को छोड़कर दूसरा का बालनो रियो मे 'द' कर दिया। फिर सरदार मे कहा 'बनो फ' क बोया मर दू र रकार मोटर पर रहकर के गहूर बसो सरदार उसे नजर बाहर निकला जहाँ जेलर नेको के न' दहम रग था जेलर न एक कौडी को सरदार क साय धाराय म मोटर मे बैठन देमा न 'म कोई सवेज नहीं हुआ। उस समय झाड़ू पिन्नी को कण्ट मे 'त' पडिया हुआ 'ग' पर गह तनी सर द' की ही नोज की

कुछ कुछ जाकर उसने सरदार को मोटर न' गीन था पिन्नी और स्वय मोटर बन ने न' 'न' न मरदा के नोज मरत पर वह पिन्नील सरद' के सामने म' प टक की उसे मरत्ये की और मोटर स्ट कर था।

मोटर के पक पकने पर जन सरदार को होश धामा और उसने वह पिन्नील पडो खोली उस समक धारा कि वह लक्ष्मी को पिन्नील है और मे म्य ही पर रहा था। इसी प्रकार जीवन मे मय भी सज्जो की पिन्नील है। हमारी प्रथिकाय क्षीय प्र मोर निरसाएँ सज्जो क पिन्नील की क्षमा मे प्रथिक नहीं। हम क्षमापयो

निर्भय बनो, निर्भय करो

सरेशचन्द्र वेदाङ्ककार

यनो यत समीहसे ततो नो भ्रमय क्रुह।

श न क्रुह प्रजाभ्योभ्रमय न पशुम्य ॥

यजु० अ० ३६। म० २२



जो न पहुँचान कर उन्हें बधाय की धरि के वेते हैं। तब वे हुने क्रुह के कारगार मे दान देते हैं और सजी सुयोगो से बर्णित कर देते हैं।

हमें जीवन मे धानेवाली प्राणियों के प्रथमोक्ष नहीं होता चाहिए। प्रत्येक प्राणित प्राणियाय ही मही होती। जीवन मे धाने वाली प्राणिक प्राणियाय धनिक बार धानीय सिद्ध होती हैं। वे हेने पिशाच भी वेते हैं और हमारे प्रत्यो मे हुने साहसा भी बनाती हैं। हमलिए इस मय मे कहा गया गया है कि हे ईश्वर! प्राण हमारी और हमारी प्रजापदो की रखा कीजिये और धर्मय कीजिये जिससे निरव शीकर हम मय अपने कर्मो कर सक। परमेश्वर के निरव शीकर मय नाम दो म्य बाय का धम ही यही है। परमेश्वर शीकर हम मय रखा करता है इसलिये उसे कीम्य कहते हैं। वह परमेश्वर लिय लिय प्राण प्राण कार्या मे सवा हमारी रखा करता है। परमेश्वर सल साहस और निष्काम काम मे कीस मनुष्य की रखा करता है? एक गतिहासिक घटना द्वारा यह मय देखा जा सकत है।

मुनाम न एक मुनाम ल नदान म द्विय नाम क ननाकार था। कीम्य उसका इच्छेय था। वहाँ एक कानुन था और मुनामो के लिए सल्लय सला सा शय मरत्य कर दिया गया जिन को वह कानुन लागू किया गया उन दिनों किमो कुछ छुट्ट पर मुनियो के निमण्य मे सगा हुआ था। मयमर के टुकडो मे उसन अपने हृदय की मनुमति बिछाकर उनम बायल दान ली थी। उसे कहा जा सनोतय प्रुरका 'व' के सभाट परी मजीय से पारे की धारा थी। पर इस काल मे उसकी धाराया पर गुपारागत कर दिया।

किमो की एक वहन था। उसने यह समाचार जानकर सल्लय हृदय से प्रम्य से प्रजापदो के ईश्वर मेरे बाई की रखा करो। तुम्हारे परको मे हमारा सल्लय मल्लि है। तुम्हारी क्षमा ही धम हमारी रखा कर सकती है। तुम हुने सधय दो कि काल के बिकाल में हम निरव होकर सधयो कर सकें।

वह अपने बाई की मेकर वहनान में गई और उसे धमना काम लागू रखने की सहाही दी। उसने कहा इसने मैं भी तुम्हारी सहायता करूंगी। भगवान् हमारा साथ देवे।

उन्ही निरव म्येय मे कला के मनुमो की प्रसन्नी का धायोजन हुआ। पेरिस्लीय उसका सभापतित्व कर रहे थे। एक स्थान पर सुन्दर मुनिया थी। ऐसा मान्य होता था कि जैसे बलित कलापो के प्राणिकाया देवना मयोमो मे स्वय उनका निमण्य किया है।

ये मुनिया कितने नरार्थ हैं? यसको मे मुना। धर्मिय रसक धर्म म्यल कपडो वाली धुल परे बालो वाली धम यता की मुति सी एक सज्जो की पकड बाए। पर फिर भी सज्जो नहीं होती। पेरिस्लीय मे उने कीरवाने के बाये का धारिय दिया। इस धारिय की सुनेही ही शिब की चारता हुआ एक युवक पेरि मजीय के पास पहुँच और बोला क्या करो। उस सज्जो को बया था। धर राधा में हू ये मुनिया मेरे मुनाम हाथो मे तैयार की है।

मुनाम और कम? जमला पिल्लाई इस मय मे क्या करो।

परीस्लीय ने स' होकर कहा जब तक मैं 'त' मय हू ऐसा नहीं हो सकता। धाज की कला के इतिहास मे किमो का गान मय है यह है परमेश्वर द्वारा प्रदा प्रमय का उदाहरण। इसलिये मय कहता है कि हे ईश्वर! तू जहाँ जहाँ विचराम है वहाँ वहाँ हमारी प्रजापदो को निमय कर और उनकी रखा कर।

मय धारम विचारा का लागू है। मय के कारल मुनिय मे बहुत से लोग धरनी योग्या का समुचित पुरस्कार पाते से बर्णित रहते हैं और अपने सज्जो से स्वय को अपने परिवार और सधियो को उपा धरने देव को साथ नहीं पहुँचा सकते क्योंकि वे एक सज्जो से कीस के मीने रहे रहते हैं।

पुको की रखा के साथ साथ पशुयो की रखा की भी बाध करती हैं। पशुयो

की धमय कीरे प्राण हो सकता है? उनको धमय मनुष्य ही वे सकते हैं। इसीलिए भारतीय संस्कृति मे कहा गया है नाय मेरे के साथ प्रम करो उनत पूरा काम की मयर उनका स्थान की रखो। उनको धमय पर धानी पिन्नीयो सधय पर पास दो। उन्हें बाधक मत मारो। धार मय मुनामो।

महाराष्ट्र मे एक पिठो मे धमाधम का पय मनाया जात है। इस धमाधम की रीमो को विधान दिया जाता है। लमका गृ गार किया जाता है रिनामो की लिमयो के पीरो के धाम्युण्य रीम के पीरो मे पहुँचाये जाते हैं और मये मे माना बासी बासी है। रीमो का जन्म निकाला जाता है। उनके लिए क महाराष्ट्रीय पकाना पुरणपोली का मयक मनाया जाता है। पो की बाज छोको ज' हो है। रीमो का सकार दिया जाता है। यो? इसके पीछे रीमो और पशुयो के धमयधम की धामना रहती है। जिस रीम की मयन पर हमने पुत्रा रखा जिसकी मयन पर मये पय एक को धुप कीस मे काम करते हैं किमोने मल कनाया करत पसाई धारिया कीकी कोम मे साकर हुने किमो बाधक मारे धार भुमार्थ जिनके परिधम मे रहे मये होकर हमारे सेल लह सलाने मये दोमो धाना के लय मय। जिनके परिधम मे मोमियो की तरल और सोने की तरल गह पकते हैं जिनके परि धम से धान पो मकका धरतल बना होता है उस कण्ट मुति रीम की धमय की धामना स परमणित कर उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने को वह निम मनाया जाता है।

माय को तो माता के समान पवित्र और पुण्य माना गया है। धमय धारि धर रखा की बात मेने मे सवज पाई जाती है।

इस प्रकार मेव का मय कहता है कि प्रम्य कृपा पर धारित रहकर मनुष्य को निमय बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि धारम जीवन मे सल्लयता चाहते हैं और धरनी रकी हुई मल्लि को परमणित करना चाहते हैं तो कठिनाईयों और विपरित्यो को धमयकर सल्लयता छोड़ देंगे। उनसे किमोय प्रभावित न होएँगे। कठिनाईयो के मयमो न होकर उन्हें इस धरित से देवना चाहिए कि उन्हें कीस हुन किया जा सकता है। किम्य पूर्ण निमैरता के साथ उन्हें रह करके मे सय जाएँ। रमो जीवन सफल मनेया। एक कवि मे कहा है

य का धामय छोडे,
मय से पय मत पाय।
मह है मिच्छा कल्याण
बाम सके तो जाय॥



ॐ वचन-सन्देश ॐ

शरीर और आत्मा दोनों बलवान्

जो केवल आत्मा का बल धर्मात् विद्या ज्ञान बढ़ाये जाये और शरीर का बल न बढ़ाये तो एक ही बलवान् बँकड़ों, भ्रान्ती और विद्वानों की भाँसू, सुकता है। और जो केवल शरीर ही का बल बढ़ाता जाये आत्मा का नहीं तो भी राज्य पान की उच्च व्यवस्था बिना विद्या के कभी नहीं हो सकती। बिना व्यवस्था के सब प्राण में ही टूट-फूट विरोध लड़ाई-झगडा करने के लक्ष्य-भ्रष्ट हो जायें। इसलिए सर्वदा शरीर

और आत्मा के बल को बढ़ाते रहना चाहिए।

जैसा बल और बुद्धि का नाशक व्यक्ति प्राचीन और धर्म विधिया-सहित है वेंसा और कोई नहीं है। विशेषतः क्षत्रियों को शडाङ्ग और बलवृत्त होना चाहिए। क्योंकि जब वे ही, विध्यासक्त होंगे तो राज्य-धर्म ही नष्ट हो जायेंगा।

—महाविद्यालय

सम्पादकीय—

व्योम को छूता व्यक्तित्व

कई सदियों की गुलामी के बाद जैसे ही भारतवर्ष स्वाधीन हुआ नहीं उभर्यो, नये उल्लाह, नवीन क्रांति की लहरों को लेकर उन्नत होता चला गया। जिस देश में स्वदेशी हुई नहीं बनती और और उसा देश में स्वदेशी उपग्रह, स्वदेशी परमाणु ऊर्जा केन्द्र, बड़े-बड़े उद्योग कल कारखाने प्रभाव उत्पादन में आत्मनिर्भरता, बातायात और परिवहन में सलम, समुद्र मार्गिया भारतीय हों, टैंक, तोप, रेलगाडी, वायुयान, जलयान स्वनिर्मित हों, कई बार जो भारत सीमा पर मबरते शत्रु-प्राक्रमणों का मुँह तोड अबाध देकर समस्त विश्व को चौंका चुका हो, उस युवा भारतवर्ष की जवान और खल होते देख दुसरी देशगुप्त शक्तियां क्या चुप बैठ सकेंगी ? जो नहीं। वे क्षमा में न चर शक्तियां भारतवर्ष के स्वनिर्मित महल को बरसायी करन में जुटी भी और जुटी हैं। ३१ अक्तूबर १९८४ को देशद्रोहियों की गोलीबारी भारत माँ का लाकली विश्व की नैत्रो प्रियदर्शिनी छलनी कच बी गयी। इसाक्षी में बल के साथ आतक मल गया। लगा भारत के स्वनिर्मित महल को नीब लडखडा गयो। हर दिल चीखला-कराहुना दिखाई पडा। ऐसा जान पडा जैसे भारत से उसकी गंगोत्री छीन ली गई और सारी दुनिया में कोई दुसरी गंगोत्री भी नहीं। जो कही से लाकर स्थापित हो जा सके। हताश-निराश सतप्त लोगों को धाँसों से कौन का विन्यासिया फूटने लगा। हिसा का अजला-मूठी फूट पडा। दिल्ली के साथ दुसरे शहरों-प्रांतों में भा हिसक प्रतिक्रियाएँ हुई जो बडो हा दुर्भाग्यपूर्ण थो। लाज प्रोड बीबलाहट भरे वातावरण में श्री राजाव गांधा भारत के प्रधानमन्त्री बने। दिल्ली में धूँडा उड रहा था। घर म गाँ का ध्याँ था, बाहर प्राक्राश से भरो भीड थो। ऐसे में उन जवान कम्पों ने एक से धर्षो उठाई दुसरे से देश की िम्मेवारी। उसका होसला, उसकी हिम्मत कमजोर नहीं पडी। देश की धाँसों में धपने धासू पोखे। धीरे-धीरे देश की उलढतो साँसें अस्थिर हो गयी। एकाएक निर्वाचन की बाणशा हुई। देश की एकता और धसपडता की क्षपील करते युवा प्रधानमन्त्री को भारत की जनता ने इतने बहुमत से चुना जो एक एतिहासिक धारवर्ष बन गया।

भारतीय राजनीति में धनेक वर्षों के बाद बदलाव के स्पष्ट लक्षण दिखाई देने लगे। निर्वाचन के बाद सत्ता में प्राते ही उन्होंने घोषणा कर दी कि वे पञ्जाब समस्या की हल करने के लिए हर सब प्रयत्न करेंगे। दिल्ली तथा दूसरे स्थानों पर डाक्टरेटर बम काण्ड के बाद दहशत भरे वातावरण में प्रधानमन्त्री का पूर्व निर्धारित विशेष धाना का कार्यक्रम जोरिम भरा होने से धाम राय भी कि उन्हें विशेष धाना पर नहीं जाना चाहिए किन्तु सत्तारों से खेलने वाला यह युवा विश्वों में भारतीय सङ्कल्प, बचनी मायत्वा एव विचारों के ऋषे फरकार धाना जो धसपड गरिमाधाय था।

सदर के मानसूत सत्र के शुरू होने वाले दिन पञ्जाब पर सम-क्षीता धनानक संत लींगोवाल के साथ कर लिया गया जिस पर उन्हें देशव्यापी धनर्षन मिला। १५ अगस्त को लासकिले के प्राचीन से धायए देने से चार घंटे पूर्व धसम समस्या का समक्षीता को कर लिया गया। उस रात प्रधानमन्त्री सोने नहीं। सुबह गैने तीन बजे ब्रह्मपुत्र

की घाटी के लोगों के लिए उन्होंने मये प्रभाव की तथा स्वाधीनता दिवस की अनुपम भेंट दी। १७ अगस्त को जब पञ्जाब में हुलैनपुर में रेलवे कीच फँटरी का प्रधानमन्त्री में शिलाप्यास किया तो पञ्जाब में जुनाव कराने की घोषणा कर दी गयी। इसके साथ जुनाव का मार्ग प्रशस्त करने में भी उन्होंने कई एक कदम उठाये। हिराराध और विभिन्न धपरधों में पकड़े गये लोगों की रिहाई भी धनोपास कर दी गई और धब तक लगभग २००० लोग रिहा किये जा चुके हैं।

जिन किसानों ने बिजली के बिन धवा नहीं किये थे उनके कर्नस्थान न काटे जाने का फैसला किया गया। महाराजा रणजीत सिंह की बरसों की सरकारी स्तर पर मनाई गई। सैनिक प्रगोडो की बहाली के धावेध किये गये। लगभग ६०० ऐसे प्रगोडों को काम पर लगा दिया गया।

कहने का मतलब यह है कि काफ़ी हद तक उदार होकर भी उन्होंने समस्याओं को सुलझाया। प्रधानमन्त्री इसके लिए धर्षाई के पात्र हैं। उन्होंने लालकिले के प्राचीन से राष्ट्र को सम्मोहित करते हुए कहा था कि सिर्फ स माह पूर्व विश्वों में पूछा जा रहा था कि क्या भारत की एकता और धसिखल कायम रहेगा ? उन्होंने कहा था— भारत को धाने ऊपर विश्वास है और हम किसी भी दमवा के सामने घुटने नहीं टेकने वालें हैं। धीं राजीव गांधी की धाशी में नये भारत की धाशाएँ, धाकाधाएँ और धासमविधास मुवरित हो रहा है। पञ्जाब और धसम की समस्याओं के हव और गुजरान में धाराला विरोधी धादोलन को धान बुकाये जाने के बाद धाशा और विश्वास की नई किराई दिखाने से रही है।

लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि धब देश के सामने कोई समस्या नहीं रह गई है जो लोग साम्प्रदायिकता, जानिबाब, क्षेत्रवाय जैसे जहरीली भावनाधों को उधार कर देश में गडबड फेनाते रहे हैं उन्हें हल जाडू के ऋषे से धाकाध में विलीन नहीं किया जा सकता। वे धाब भी मीठू हैं। कल वो फिर सिर उठा सकते हैं। पञ्जाब और धसम विधानसभाओं के जुनाव का धायोचन और सधर्ष से जन धाहृत इन दोनों राज्यो में बरि लोकाधिय सरकारों की स्थापना हो गई तो यह भारतीय लोकतन्त्र की बडी भारी जीत मानी जाएगी। देश की एकता और धसपडता को चुनौती देने वाली ताकतों के गाल पर यह एक करारा जोरदार धूसा होगा और इसकी इन समय आवश्यक्ता भी है। शीलका में तमिलों की समस्या भी भारत के प्रधानमन्त्री के लिए चुनौती है। हमें धाशा भी है इसी सद्माव के साथ वे इस समस्या को भी बरवस सुनझा सकेंगे। धब तक के तथ्यों से यह प्रमाणित है हमारे युवा प्रधानमन्त्री में दूसरे को समझने की और उन्हें प्रांती बात सम-झाने की धदधुत क्षमता है। धनावश्यक धानापमान की भावना में विश्वास रखने की बजाय धाशित और सीधार्ई के धातावरण में सम-स्थाओं का समाधान निकालने में विश्वास रखते हैं। इसके लिए उनकी जितनी भी प्रसदा की धाये पोटी है।

—धशाल सुधांशु

आज अधिकांश की बार बिना ही सर्वस्वी हुना है हमारे जीवन को इसका बिनाश और विफल कर दिया है कि प्रथम तो सम्भवतः कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं सोच सकता, जो इससे प्रभावित न हुआ हो। दूसरे इससे प्रभावित व्यक्ति कुछ ऐसे नास्तिक और स्वार्थी हो गए हैं कि मानो जैसे उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति खो दी है, राष्ट्र और समाज के बहुमुखी हितों की हानी हो कर दी हो। ऐसे ही दुराचारी, दुष्टवृत्तिपूर्ण पापाचारी लोग कामन के कुछ टुकड़ों के बदले देश और राष्ट्र के बहुमुखी हितों को विदेशियों के हाथों बेचने में तैयार मान भी नहीं बनाते। बह बने सरकारी और वैर सरकारी अधिकारी लोग परीको के लिए शिर फिलाने के लिए प्रकाश निर्माण कार्य में लगे बिना सुविधाएँ प्रदान करके दुर्निवार नाके बनावे और उनके निर्माण में निम्न श्रेणी की निर्माण सामग्री का प्रयोग करते लोगों के जान सेवा प्रदान बनाते हैं। बड़ा भी उस नीची श्रेणी वाले क्षत्रियवादी व्यवसाय में नहीं करते।

भाषणमो में वैशाखियों में, बसों में कारों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर जान सेवा वरसकर बसों के न पर सहस्रो केतुनाह साक्षात् बूझ बण्णे अजान स्त्री पुरुषों की बाज तेने में जरा भी नहीं सोचकर करते। दलित, अस्तित्वक लोगों की आर्थिक तथा सामाजिक सेवा सुधारने के नाम पर उनसे निराश्रय के समय मत प्राप्त करने हेतु भाषण की नीति का सहारा लेकर प्रयोग लोगों को पसी पर स्थापित करने में केवल योग्य व्यक्तियों का माला होता जा रहा है। बलिक सरकारी सेवाओं में प्रयोग प्रदान का प्रयोग व्यक्तियों को नियुक्त करने के लिए और राष्ट्र का बहुत प्रहित कर रहे हैं और एम जाति प्राणि पर आधारीत आरक्षण के नाम पर प्रयोगों की पदोन्नति करता और भी प्रभावपूर्ण व्यवहार है। इसी दृष्टिगत नीति के फलस्वरूप जो गर-सहस्रो का बड़ा महानिष्ठावान और राष्ट्र विना मरणात्मा माफी की अमर्याद मुबारक में हो रहा है, वह किसी न छुपा नहीं है। इसी दृष्टिगत वातावरण के प्रभावित सभी वर्गों के लोगों में आचार के मूल्यों को अपने जीवन में से इसे तुच्छ और साहजिक बनाने सम्भवकर ऐसे बाहर फेंक दिया है। मानो जैसे कोई बूझ में से तस्वी निकाल कर फेंक दे। देखने में प्रार्थना है कि जीवन का कोई भी लोग ऐसा नहीं रहा, चाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक, आर्थिक हो या अन्य कोई और या ...। नृपति वृत्ति से प्रभावित न हुआ हो। वह एक महान विचार का विषय है राष्ट्र और समाज के लिए। सब ऐसी स्थिति में सुधार लाने के लिए और लोगों के विचारों में परिवर्तन लाने के हेतु महा किन्हीं पुरुषों शाल्मी और स्मृतियों के आधार सम्पत्ति कुछ बहुमुख्य अमृत बनाने दिने

देश की वर्तमान पतनोन्मुखी स्थिति में आचार पालन अत्यन्त आवश्यक

—चमनलाल

जा रहे हैं जिनको जीवन में आरक्षण करने से लोग न केवल अपना सुधार कर पावेंगे, अपितु वह राष्ट्र, देश और समाज के नैतिक जीवन में सुधार लाने के योग्य बनेंगे। ऐसे ही सुधार की आज आवश्यकता।

आचारालम्भते आनुदा-
आचारालम्भते विभन्,
आचारालम्भते कीर्ति
पुन्य प्रत्ये वेद न।
सर्वलक्षणहीनोऽपि य
सवाचारान् यमैत,
अनुदानानुसूच्य सत
वर्षाणि जीवति ॥

अर्थात् सवाचार पालन करने वाले को आनु तथा कीर्ति की प्राप्ति होती है। सवाचारी इहलोक एव परलोक में कीर्ति की प्राप्ति करता है। यदि कोई विदेशी युव न हो तो परन्तु अस्वाचारहित अथवा विचार पर पूर्ण अज्ञाता है, सवाचारी हो तो ऐसा व्यक्ति सत वष जीवी होता है।

न स्वे तुले नै दुःखत प्रहर्ष,
नामस्य तु के मवति प्रहृष्ट।
दत्त्वा न पश्चान् मुन्येत्युवाच,
न कल्पते समुत्पत्त्यधीन ॥

अर्थात् जो अपने सुख में प्रसन्न नहीं होता, दूसरे के दुःख के समय हर्ष नहीं करता तथा जो दान देकर पश्चात्ताप नहीं, वह समुत्पत्त्यधीन अर्थात् सवाचारी कहा जाता है।

पाप्मान् ह्येव हन्ति नो मर्षते।

अर्थात् यत्र करने वाला पाप का नाश करता है।

सर्वस्वमात् पाप्मानो निमुञ्चते।
य एवं विद्यामनिहोय नृहोति ॥

अर्थात् प्रतिगोन यत्र करने वाला व्यर्थता पापों से मुक्त हो जाता है।

आचारान् सवा पुनो
नदीआचारान् पुनो।
आचारान् सवा वन्य
अस्य सत्य न नास्ति ॥

अर्थात् आचारान् अनुपम सवा

पवित्र रहता है, पुनो रहता है। और वन्य भी प्राप्त कर लेता है और अनुपम वह वन वन्य हो जाता है।

न वै वैशेषीयस्य सत्यमस्ति।
इह वैशेषीयहीनोऽपि विमर्श ॥

अर्थात् यदि इस अनुपम जीवन में परब्रह्म को जान लिया तब तो कुल्लभ है, किन्तु यदि इस जीवन के रहते रहते आत्मसत्य प्रमाण के कारण उसे नहीं जाना तो महान विमर्श है।

अनेक्यो नै पुष्पो वनस्पत वदति।

अर्थात् नूत जीवने वाला व्यक्ति अपवित्र कहा जाता है।

नित्य सत्य रतिर्यस्य
पुण्यात्मा पुष्टता भवेत्।
अतो प्राप्ते अनेकानी
स्वीयां शोचयिष्यति ॥
स्वकुलस्य सवाचार
अस्मात् नो विमुञ्चति।
एतस्ते हि समाख्यात
गुरुसत्य द्वितीयम्।
ब्रह्मार्थं ब्रह्म प्रोक्त
शुद्धिर्नो मुक्तिव किम्।

(सुमना अपने पति से कहती है) —
ब्राह्मण भोक्त। सवा सत्य कर्मों में विश्वास मनुष्य है, जो पुण्यात्मा होकर साधु-जीवता का धाम्य करता है, अतुल्यत्व में अपनी ही स्त्री के साथ समत होता है, वह स्वस्व शोचो में रह रहा है और अपने

धर्म की महिमा

जो मुनीवत में नहीं पब्रह्मते के सपत्ताता के विचार पर बह जाते पुष्टी का सिद्ध कर दम लेते राम कृष्ण माफी कहलाते काति के बीच कोते बदानम् ब्रह्म माफीर बम जाते देव को महान् बनाते किन्नास्तित्व इतिरा सत अमर हो जाते नैव नै महान् कार्य होते उचित रहित व्यक्ति बकार होते

जुस के सवाचार का कभी त्याग नहीं करता, समुपम नहीं सत्त्वा सवाचारी है। यही गुरुत्व का महामय है। और यही महामय गुरुत्वों को सवा मुक्ति प्रदान करने वाला है।

दुराचारको कोके
महर्षीय पुमान् भवेत्।
आचारिद्विषाणि नृपते
सवात्मा ननु समाच ॥

अर्थात् सवाचार के पालन न करने से मानव विषयानी, रोमी दुकी और सत्त्वा हो जाता है।

सवाचारेन सिद्धयेन्न
ऐहिकामुक्तिम् कलम्।

अर्थात् सवाचार के इस लोक तथा परलोक के समस्त सुख छिड़ हो जाते हैं।

सवाचारेन वैश्वमूर्खत्वं
न तथा भवेत्।

अर्थात् सवाचार के अनुपम वैश्वल और ब्रह्मण की प्राप्ति करके महान् वन जाता है।

श्रीभ माफी लोभनोही
अस्त्योप विविधासा,
अष्टासुते मानोको
रुद्रहा न।
ईश्यां नृपुण्ड्रा च।
मनुष्य दोषा,
वर्षा सवा
आरसीते मराणाम् ॥
एकैक पुरुषास्ते ह
मनुष्यान् मनुजर्षम्।
निम्नमानोऽनर तथा
मृगामात्रिभ जुष्मक ॥

अर्थात् काम, क्रोध, लोभ मोह अस्त्योप विविधता अष्टा परिभाष्य शोक, दुःख, ईर्ष्या और निम्न। मनुष्यों के पापे जाने वाले में ब्राह्मण सदा ही स्वात्मने योग्य है। नरभेद जैसे अथवा मृगों को मारने का अवसर देखता हुआ एकही राष्ट्र में सदा रहता है उसी प्रकार इन में से एक एक लोक मनुष्य का छिड़ देखकर उस पर आक्रमण कर देता है।

वे उठा रहे हैं कदम आत्मघाती

जो रात दिन केवल सेवा करता है जैसे के बस पर अपनी अक्षय विचारते हैं जैसे को अपना देवता ठहराते हैं उससे लिए पाप करने में न रुकता है ऐसे जनपतियों को न सत्त्वा सुख मिलता है उल्टे चिन्ता में उनका आदर पुनरा है सर्व न कभी उल्टी नीच जाती है जोवन पत्ताने में मुनीवत कभी हो जाती है जो ऐसे जीवन के हैं परिभाषा की वे उठा रहे हैं कदम आत्मघाती

—शकुन्तलानन्द गुप्त विचारद



स्वामी दयानन्द— एक संन्यासी योद्धा

लेखक—श्री मदनमोपाल

१८३० के मध्य में जब प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की छायायें मनाये जाती थी तोचना बन रही थी, उस समय एक वैदिक विद्वान् ने १८५७ के मध्य में उत्कर्म लिखा जो अत्यन्त महत्व के यह लिखने लगा कि यह महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२५-८३) ने इस १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में बड़ा ही सक्रिय योगदान दिया था। इन विद्वान् का नाम है—स्वामी दयानन्द सरस्वती, जिन्होंने १८५४ में स्वामी विद्यानन्द की जीवनी लिखी। इसमें उन्होंने कहा है, कि १८५३ में स्वामी पुनर्जात ने महर्षि दयानन्द को ब्राह्मण काव्यों की प्रशंसा करने के साथ साथ यह परामर्श दिया था कि वह मनुष्य के प्रजापति स्वामी विद्यानन्द की जीवनी लिखें। स्वामी दयानन्द ने मनुष्य के बहादुर मध्य भारत में प्रथम कला प्रारम्भ कर दिया। यह वही स्वामी थे जहाँ पर बाद में इतिहास राखने के विद्वान् विरोध हुआ। स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि यह विचारधारा समस्त लोगों को समीप लाने, पर इसको एकदम समस्त की नहीं कहा जा सकता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था क्योंकि नहीं, यह धार्यसमाज के अंग थे विचार का विषय है। इस विषय पर कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। कुछ लोग इस विचारधारा का विरोध करते हैं कि स्वामी दयानन्द ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था, जब कि कुछ दूसरे इस विचारधारा का पूर्णतया अस्वीकार करते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि स्वामी दयानन्द ने इस संग्राम में भाग नहीं लिया था उनका भी खोज है कि १८७० तक दयानन्द केवल ब्राह्मण काव्यों में सम्मिलित रहे और उन्होंने स्वयं को राजनीति से दूर रखा। इस विचारधारा को इस आधार पर खरी नहीं माना जा सकता कि उस समय स्वामी दयानन्द की आयु ३२ वर्ष थी। और यह एक ऐसी बात है जब व्यक्ति की आयुमात्र और विचारधारा निर्धारक होती है। और ऐसे मामलों में सक्रिय भाग लेने की व्यक्ति की उम्र होती है। यह बात एक और तथ्य से सिद्ध हो जाती है, कि बाद के वर्षों में महर्षि दयानन्द ने स्वामी राज्य और स्वराज्य की बात को प्रचारित किया है। उन्होंने

मनक कर का भी विरोध किया था। उन्होंने राष्ट्रीय भाषा की बात कही थी, उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल दिया तथा धर्मपुण्या का विरोध किया। इनमें यह स्पष्ट है कि वही ही वह धार्मिक नेता थे पर वह राजनीति में बाधते नहीं थे। मनुष्य वह बुराईत माने व्यक्ति थे, समस्त विचारधारा ने बाद में चलकर महात्मा गांधी के लिए भी दिशानिर्देश का कार्य किया। उस समय विदेशी राज्य का विरोध हो रहा था और दयानन्द जैसे व्यक्ति इस विचारधारा में धर्मप्राप्ति नहीं रख सकते।

महर्षि दयानन्द के प्रारम्भिक जीवन सम्बन्धी हमारा ज्ञान उनके उस भाष्य पर आधारित है, जो उन्होंने १८७५ में मुद्रा में दिया था और बाद में अन्य १४ भाषाओं सहित मराठी में बना था।

महर्षि दयानन्द ने अपनी जीवनी के सम्बन्ध में लेख लिखी है लिखनाथ ने। इन लेखों के लिए १८७६ में पियोसोफिस्ट सोसायटी के अध्यक्ष जॉन एच. एच. बलकाठ ने प्रार्थना की थी। यह लेख धर्मोपेक्षा में समुचित किम्वदंती और सोसायटी पर 'पियोसोफिस्ट' के बलुवर १८७६ विमर्श ८७२ और नवम्बर १८८० में प्रकाशित हुए थे। सम्भवतः महर्षि दयानन्द अपनी जीवनी को धारावाहिक स्वरूप में लिखते, पर इसे बन कर दिया गया क्योंकि उनके पियोसोफिस्ट सोसायटी ने बाद में चलकर सम्भवतः खरी होना चाहिए।

यह कहा जाता है कि महर्षि दयानन्द प्रमर्श १८३६ में कलकत्ता और इलाहाबाद के निकट शो में बसे थे। यह जनवरी, फरवरी १८३७ में इलाहाबाद में थे और मार्च १८३७ में गडगुल्लेवर तक मार्च २६, १८३७ में नवम्बर १८६० तक यह कहा जाता है कि वह सर्वथा किनारे किनारे इसमें लीन थे। १८६० के मध्य में स्वामी विद्यानन्द के पास पहुँचे थे। मार्च १८३७ में नवम्बर १८६० तक के समय के लिए स्वामी दयानन्द की पुण्यी में विज्ञानों के धर्म्य यह उल्लेखता वास्तव की ओर उन्हे यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि १८३७ के स्वतन्त्रता संग्राम से सम्बन्धित थे।

उनकी सर्व परम्परा स्वामी देवानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक का बुरा

संशोधित एवं परिचित स्वरूप प्रकाशित कराया। इसमें उन्होंने श्री श्री-गुरुवाक के फारसी में लिखे हुए संवत्सरा पञ्चायत के चित्रों को परिचित के रूप में दिया। इनमें उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि स्वामी की स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय रूप में भाग ले रहे थे। सर्वसाधारण पञ्चायत का मुख्य कार्यालय शीरस मुजुमपरनगर में था। इस पञ्चायत में मनुष्य से प्रभावित स्वामी विद्यानन्द की भी उम्माया गया था। उन्होंने इनके हुए लोगों की इस बैठक में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की प्राप्त करें, इस विषय पर परामर्श दिया था। सामान्य इसी समय सम्मिलित ब्राह्मणों की 'मास्त्री स्वतन्त्रता' के संग्राम में धार्यसमाज का योगदान' प्रकाशित हुई थी। इसमें भी उन्होंने दयानन्द के योगदान की बात लिखी है। श्री पियोसो वाच ज्ञानी ने भी '१८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में स्वतन्त्रता सर्वत्र महर्षि दयानन्द का क्रियात्मक योगदान' प्रकाशित कराया।

१८७० में पण्डित शीनकण्डु का 'योमी का धार्यचरित्र'—८ वर्षों का धर्मत जीवन प्रकाशित गया। इसमें यह दावा किया गया है कि महर्षि दयानन्द ने १८३७ के युद्ध में भाग लिया था, यह महर्षि दयानन्द के उन धार्यचरित्रात्मक टिप्पणियों पर आधारित है जो उन्होंने अपने दर्शनो प्रसक्तों को अपना प्रवास के समय लिखा था। उन्होंने यह भी कहा था कि यह सब उनके जीवनकाल में प्रकाशित नहीं होना चाहिए। यह टिप्पणियाँ बगामी भाषा में लिखी हुई थी और श्री शीनकण्डु ने यह दावा किया है कि उन्होंने इन सब टिप्पणियों को खोज निकाला है।

इस विवरण के अनुसार १८३५ में दयानन्द ने माउण्ट बाज़ से हरिद्वार के लिए अपनी यात्रा प्रारम्भ की। वे बम्बैन, बलपुर, दिल्ली, मेरठ होते हुए गए। यह कहा भी कही खूबे बम्बैन में, बम्बैलाना में, लाल बाट पर बम्बैलाना में उन्होंने सब बम्बैलाना पाया कि सोय यह कह रहे थे कि बम्बैलाना माउण्ट को राहू और केतु की तरह घट रहे हैं। दिल्ली में एक युवा ने साधुओं पर कटास करने हुए कहा कि यह लोग भारत की रक्षा को देखते हुए भी कैवल्य धर्म्य, भोजन और धर्म्य-सहज-सहज में ही रह रहे हैं। दयानन्द

को बंद पड़ा गया कि वह युवा धर्म्य का हाथरस के जमिंदार दयानन्द का पीक था, जो अपने को विद्वत् सभा में माना गया था और जो ज्ञानिकारी राजा महिंद्र सिंह का पुत्र था। दिल्ली में लालकिला के सामने एक महाराष्ट्रिय साधु ने दयानन्द को सलाह दी कि वह हरिद्वार में बाहर अपने धर्म्य को धर्म्य करे तथा देश की रक्षा के लिए कार्य करे। उस साधु ने बताया कि वह भी उन सैकड़ों साधुओं में से एक है जो इसी उद्देश्य को लेकर सारे देश में पसे रहे हैं। बाद में २५० साधु दिल्ली में मेरठ, बैरकपुर और बैरक की ओर गये। इन सब गतिविधियों के लिए केन्द्रीय व्यक्ति दिल्ली के जोगमाया मदिरा का एक पुत्राई विद्वत् बना था। यह साधु अपने हाथ में कमल का प्रतीक लेकर चल रहे थे और साधारण लोगों के बीच वे रोडिया लेकर चलते थे। इस विरोध के लिए मई ३१ दिवसिक की गयी थी पर दुर्भाग्यवश मरणप्राय के समय से पूर्व २१ मार्च को अपनी कार्यवाहियाँ प्रारम्भ कर दी थी।

पुण्ड्रकट टिप्पणियों से यह भी पता चलता है कि दयानन्द लोग ने इस कार्य में साधुओं के सहयोग का विरोध किया था। उनका कहना था कि मन्दिर देवानाओं के स्मारक हैं। जहाँ पर केवल देवानाओं की पुजा होनी चाहिए। किसी देव समाज धर्मका राज्य की नहीं।

पुन हरिद्वार में दयानन्द ऐसे लोगों के सम्पर्क में गये जिन्होंने १८५७ के समय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाद में इनके 'प'पात्र कुछ नेपाओं में नेपाल में गए लेने का प्रयास किया था, जहाँ उनको राख नहीं मिल सकी थी। दयानन्द धनुष काटि, कमाहुमारी और रामस्वामी भी गये। यह वह साधुओं के एक ऐसे वर्ग में निज, जिनका कहना था कि वह दिव्य है जोमाया मन्दिर से भागे हैं। दयानन्द ने उनमें से एक को पहचाना भी लिया था। यह वाता सद्भव थे। दयानन्द के कहने पर उनसे सत्यता सिद्ध और स्वामी विद्यानन्द बनकर दयानन्द के राज्य मौर १ में गये जहाँ पर वह मनुष्यपुत्र एक बनी व्यक्ति के साथ बसे बसकर रहे। उनका स्मृति में एक बहुत बड़ा स्मारक बनाया गया जिसके लिए विद्वत् के मन्दिर से धन प्राप्त हुआ था।

शीनकण्डु का कहना है कि बगामी भाषा में प्र ज्ञान पिप्पितो को पृष्ठ प्रकाशित नहीं किया जा सकता था और उन्हें १८८३ में दयानन्द की मृत्यु में परभाव नहीं इनको प्रकाशित नहीं किया जा सका क्योंकि सभी लेखक बहुभाषी थे और वह सभी दयानन्द से डैप रखते थे। यह बात उल्लेखनीय है कि दयानन्द को बहुत

(विष पृष्ठ ६ पर)

**भारत की शिक्षा-प्रणाली
दोषपूर्ण है ।**

भाग-१

श्रीमप्रकाश त्यागी



हैस का विधानमंडल धार्मिक धारापर
 पर हुआ। कुछधर्माचारों ने अपने धर्म का
 धर्मार्थ में प्रथम सब माना और उन्होंने
 प्रथम हीट्ट में स्वयं स्वान की मान्य की।
 कावेरि पार्वी ने मुसलमानों को धर्म का
 मही माना, परन्तु बाब ने भारत में ही
 सब हीनकार किये हुए उड़ी धारपर प
 कहे का निमित्त बना।। मुसलमान धर्म ने
 जहा युवपुत्र के १० प्रतिशत बा स्वयं
 स्वयं की धर्म में प्रथम धर्म की मान्य की
 उने निमित्त धर्मधारा ने हीनकार किया।।
 भारत-विधानमंडल ने पश्चात् मुसलम
 न धर्म के प्रतीति १० किमान ने मुस
 माल्हाजी की ओ कहे। की रोषो के धर्म
 धर्म मुसलमानों को धाराम ने धर्म
 धर्म जाने की बात मान की जाय। प
 माल्हाजी की ने स्वकी बात गत
 मानी। की किमान जो बात चाहते थे
 धर्म पन्तु नही माल्हाजी के बाव
 धर्मो धर्मिन दोनों धर्म धर्म थे। मही
 का धर्ममान हुआ धर्म धर्मो की धर्म
 धर्म की मही।

भारत विभाजन के पदार्थ मुसलमानों ने अपने देश (पाकिस्तान) को हस्तान्तरित करना दिया और हिंदुओं के अधिकारों को समाप्त कर दिया। भारत की अपने देश को हिन्दू राष्ट्र बनाने का प्रयत्न, पदार्थ मुसलमानों द्वारा ऐसा नहीं किया। इसके विपरीत वे अपने देश को 'सेक्यूलर' घोषित किया और यहाँ के सभी निवासियों को सभी जातों में समानता और पूजा की छूट दी।

भारत का वैयक्तिक होना लोगों को
बख्शा गया। हमने देखा कि सभी लोगों के
प्रतिकार पर कर्तव्य एक ही है। इसका
किसी ने भी विरोध नहीं किया। सभी
के लिए एक समान कानून बनाये जायेंगे।
परन्तु जनता को उस दिवस प्रजीव सा लगा
कि जब सरकार ने केवल धार्मिक देश में
मुस्लिम लोगों पर प्रतिबन्ध न लगाकर
सबके साथ मिलकर बड़ा सरकार बनाई।
यह समस्त लोगों के अस्तित्व के नहीं
था।

भारत ने संसुलर वाद के विरुद्ध वेस
मे हिंमुद्रो के लिए अनेको कानून "हिंनु
कोड विल बनाये" सब जनता सतर्क हो
वई और उसको कह सबा कि संसुलर
नाम दिखाने के स्थि है। परन्तु कारोस

सरकार की नीति पुरानी ही है। जमता ने बगल बगल भीषण की, और सरकार का ध्यान आकषिप्त किया कि उसे देश के लिए एक कानून बनाना चाहिए दो वही। परन्तु भी अबाहुराजान भी ने अपने मन की बात की और कानून बनाने चले गये। अब कानून मुसलमान और काश्मीर को देकर बनते है।

देश को सब से बड़ा प्राथम्य उस विषय पर देना कि देश में शिला प्रणाली जागृत हो। बाहिर तो यह था कि साठे मील की पट्टी समाप्त कर भारत की शिला पट्टी जागृत की जाय परन्तु धोक कि साठे मील की ओर स्वीकार किया और कानून बनते गये।

कांग्रान का सबसे बड़ा शोध सब दिन हुआ जब कि भारत में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक वर्गों में गांव का जो कांग्रान बनाने में। अल्पसंख्यक वर्ग में मुसलमान और ईसाई थे और बेश की ८० प्रतिशत धार्य (हिंदू) जनता बहुसंख्यक वर्ग में गयी। सरकार ने अल्पसंख्यक वर्गों को अपने मुकों की बला में शायसल नियुक्त करने या ना किनाने, दिखाया थे नासिक शिवा नेने की जुट की और बहुसंख्यक वर्गों को यह अधिकार नहीं दिया गया।

कानून का दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुसंख्यक वर्ग हिन्दू शिक्षा का दृष्टि से भले भागे हो परन्तु उससे विधार्थी सदाचार भारतीय संस्कृति तथा देशभक्ति से दूर हो गए। जब कि अल्पसंख्यक वर्ग के स्कूलों में घोर साम्प्रदायिक बन्ने बनन लगे हैं।

भारत में धर्मसमाज विद्या के क्षेत्र में बहुत धन्य हैं। परन्तु बहुतसक बर्षों में यह ही धारा बगे है। सरकार की नीति का प्रभाव कर धर्मसमाज के धर्मो को लोगों में प्राने को बलवत्त्वक बर्षों बनाने का प्रयत्न किया, परन्तु सार्वभौमिक हवा में जनकी इस नीति को मजबूत। परिणाम यह कि धर्मसमाज की भावने धर्मों का स्थान धर्म स्मृतियों में नहीं रहा, उनके प्रभावता बड़ा और लोग धा बने। कठिन का तात्पर्य यह हुआ कि धर्मसमाज का प्रभाव बेकार सिद्ध हुआ।

सैन्यूसर स्टेट होने के नाते सरकार को एक ही कानून बनाना चाहिए था। शिक्षा के लिए अक्षरसम्यक वर्ष और बहु-सम्यक वर्ष क्या सैन्यूसर की देन है। समस्त मुख्य तथा अग्ररीका में एक ही

कानून है परन्तु आपने वैश्व को संकलित
नोपित करने वाले स्वयं प्राचरण में
साम्प्रदायिक हैं। जब सरकार ही
प्राचरण में साम्प्रदायिक है तो फिर वैश्व
के विचार्यों उसकी बात क्यों माने। नव-
युग को ये ही साम्प्रदायिकता हिसा, प्रम-
नायकता के बारे में हैं। फिर सरकार इनके
सँदे पीछा छोड़ियो। जो हमने कार्य
किया है उसका परिणाम हमें मुक्तता ही
प्राप्ता है।

अब ६० प्रतिशत जनता के बच्चे

दुःख और सुख

(पृष्ठ ६ का शेष)

भलाई के लिए कार्य करता है उसके लिए तो कोई दूसरा काम ही नहीं। बड़ आदमियों का ऐसा ही स्वभाव होता है।

महात्मा गांधी धार रहे थे। किसी ने
कह दिया घरे। इस बोरे को उठा कर
दरवाज़ा खोलना। इस जगह यदि कोई दूसरा
धारावा होता तो कहना कि क्या मैं तेरे
बाप का नौकर हूँ जो उठा कर रख
गांधी भी यही जवाब देते परन्तु महात्मा
ने उसे उठा कर डीक जगह पर रख
दिया। जब ये उठा कर जग नव नौगो
की यात्रा शुरू कि ये तो महात्मा गांधी
हैं। तब तो उन्होंने कल्पनावा हूय।
महात्मा ने ये कहा, इस में पन्नाला

कामच को धाप यथा हो । अस

अपने मनमानी ढंग से पड़ रहे हैं और अल्प-संख्यक वर्ग के बच्चे और साम्प्रदायिक बन रहे हैं तब सरकार स्वयं सापे कि वह देश में एकता और सुरक्षा कैसे लायेगी उसकी भीमती का कोई अर्थ नहीं है। सरकार को यह बात समझ लेनी चाहिए कि उसकी भूल के कारण भारत के प्रत्येक प्रान्त में अशांति है।

भारत की शिक्षा दोषपूर्ण है। इसे सैक्यूलर के अनुकूल होना चाहिए। ऐसे होने पर ही वैश्व एकता सुरक्षा तथा सरकार की नीति का वास्तव करेगा अन्यथा कुछ नहीं होगा। सरकार की उक्त दोषपूर्ण नीति का कुपरिणाम यह हुआ कि—
१ वैश्व की ८० प्रतिशत जनता के बच्चे ऊपर पढ़ाई बन रहे हैं।

२ मुसलमान ईसाई के बच्चे धोर
साम्प्रदायिक बन रहे हैं ।

३ प्रधानमंत्री की घोषणा देश की एकता व सुरक्षा कैसे चलेगी ।

४ समूचा देश घनगाव के चक्कर में है और नवयुवक ही हिंसक बन रहे हैं।

जावना घीर फिर उसके घ्राप झरर भी पड़ लीजिए। घ्राप उनको पड़ सकन है। लेकिन इस कागज की पुडिया में घ्राप बाध सनन है? नहीं जरूर हवा की सहर आई कि वह उड़ आएगा। उरह यदि रस्मी को चला दो तो वह जावेगी, जल जाने पर भी उसके बट बैसे ही नजर आने। पर उसके किसी चीज को नहीं बाध सकने।

इसलिए मुझ और बुद्ध से भ्रमण हो
गये। शरीर पर कुछ उसका भ्रमर नजर
आता है। यह भी होगा कोई परबद्ध
नहीं। यह भी प्रारंभ की वस्तु है। पर
अंत में—

गच्छन्त्यमूढा पदमभ्यस्य तत् ।

अमूढा = मोह रहित। जो मोह से रहित हो गये और जिन्होंने निज स्वरूप को जाना व 'मच्छन्ति अमूढा पदम् अव्ययम्' उस पद का जो 'अव्यय' है प्राप्त हो जाते हैं।

दोनों ही मार्ग अच्छे हैं कोई किसी मार्ग में जाता है, कोई किसी मार्ग से जाता है। उसके विषय में—

कर्मज बुद्धियुक्ता हि
फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
अन्मग्नविनिर्मुक्ता
पदं गच्छन्त्यनामयम् ।

निर्माणमोहा बित्तसबदोषा,
अध्यात्मनिष्ठ्या विनिवृत्तकामा ।
द्वन्द्वविमुक्ता सुखदुःखसङ्ग-
रञ्जन्त्यमृता पदमव्यय तत ॥

संस्थापक के नाम पर

“मुस्लिम पर्यन्त लॉ : विरोध क्यों”

भारतभर के सर्वोच्च न्यायालय ने जब से इसका दी गई मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के सम्बन्ध में नया विधायन है। तब से इस देश के कट्टर मुस्लिमों द्वारा बम के नाम पर उसका प्रतिपादन कर जानून के परिवर्तन की मांग की जा रही है। उन्होंने पिछले ईद पर भी सरोयत बचाओ दिवस के रूप में विरोध स्वरूप मनाया। कई-बारों पर इसके विरुद्ध मुस्लिम जनमत का एकत्रित कर महिलाओं का समानता के अधिकारों को क्षीन करने का प्रयास किया जा रहा है। तब उनका यह प्रयास किशोरा धर्मविश्वास एवं धर्मनिरपेक्षता को छेद है।

इस्लाम ने इस्लाम ने नारी को दासता का श्राविक बताया है, जिसका स्पष्ट उल्लेख नवाब छुआरी के वीर शां धानन्द बुधन (पूर्व शां रतन धनका) ने वैदिक जमाने की सीखित होने के पश्चात् 'इने इस्लाम को छोडा तथा इस्लाम के नारी में इस प्रकार किया है—

“इस्लाम (शास्त्रिक बर्तन है) को कहो कि शास्त्रिक है तुम्हारे रक्तों। अब्दुल्लह ने उसके पास मत जाओ, जब तक कि वह न हो न हो। तुम्हारी बीमिया तुम्हारे लिए बेमिया है। जब जाओ जिस तरह जाओ न न न न तुम्हें को भलाइ लगन (अब) साथ में गयी पकडना। शिपारा २ सूत्र २ आयन २२९, २२० व २२१।

इन प्रकार बचपि रजस्वला काम में रक्तों स्पृश बनिव है तथापि धौर को मेरी समकक्ष इन्कानुसार प्रयोग करना स्पष्ट मात्र काम दासता प्रति की प्रवृत्ति का चेतक है।

पुनः सुत्रमान ने धौर को भी नहीं दिया गया है वह मात्र १० सूत्र २ शिपारा २ में इस प्रकार है— जराओके (जराब क) की गल तुम्हारे लिए इजान की नहीं। मन्तव्य करना अपनी पत्नी को से।

इतना ही नहीं धौर के साथ मित्र प्रकार के व्यवहार का भी प्रादेश इस्लाम ने दिया है।

“तुम रहो सिर्फ घर में, बाहर न निकमो घर से”

कुरआन— २० ३६ ३८

उपभूत बाहर रहो ही स्त्री जाति के स्थान का पापन विवरण प्रस्तुत करता है। स्त्री— माता, बहन, पत्नी, सुती, सब कुछ है। प्रणीन काम में हमारे देश के गर्मी, मैदानी जलोपमा, सीधा साविकी दमनगी धारि नाशिया हुई है। वह

हमारे लिए धारण है। इसीलिए मनुस्मृति ने कहा गया कि 'यज्ज वार्यस्तु पुत्र्यते रजस्वते तत वेष्टता। परन्तु इस्लाम ने नारी का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है उसके कारण धात्र मुस्लिम महिलाओं में बाहुल्य माई है तथा सर्वोच्च न्यायालय के नियम न उसमें हिन्दुति प्रसाह का सकार किया है।

हमारे मुस्लिम बहुधो को इस सम्बन्ध में इन्कार नहीं करना चाहिए और भवमान धार्मिक युग से सामाजिक, व धार्मिक स्थिति क परिवर्तन में अपने धर्मिकों तथा व्यवहार में परिवर्तन करना चाहिए। यदि सर्वोच्च न्यायालय का नया धार्मिक हस्तक्षेप के रूप में माना जाता है तो मुस्लिम जानून की इस संहिता को भी सारे मुस्लिम बहुधो को स्वीकार करना चाहिए।

भारत सरकार को भी इस दृष्टि के विचार कर ऐसे जानून का प्रावधान करना चाहिए कि भारतवर्ष में रहने वाला प्रत्येक नागरिक भारतीय है और उसके ऊपर एक समान जानून लागू होना चाहिए। इसी 'देश' पर विरले-ए राज्य है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि सभी बम के स्थिति स्वतंत्र रूप से अपने धर्मिकान्तक जानून का निर्माण एवं पालन करें। प्रत्येक बम का उद्देश्य सामाजिक कल्याण है। साथ ही मानवता की रक्षा, विश्व-बन्धुत्व, शांति एवं मैत्री के लिए कोई नियम बन ता वह बखूबी होता है न कि उन्मत्त-लडा-अपराध धारि का जेव-प्राप्त कराने वान धार्मिक पाकड व अन्य-विचलन का माना जाय।

जिसके एम० एम० बेंग ने सर्वोच्च न्यायालय के साहू बाने के केस में स्पष्ट मत व्यक्त किया है कि प्रणीन कोर्ट के फैसले के विरुद्ध मानवजन प्रवृत्ति-बन्धुत्व व पुनरुद्धार करने वाला है। वह निष्पक्ष रूप से हमारे सिद्धान्तों की सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक व्यापक काम करने की अवैधानिक योजना में फिट नहीं बैठता। सच्चा धार्मिक ऐसी धारों पर नहीं बलिक पाकड, धात्रावश व मुक्तोत्तरी के विरोध में केन्द्रित होना चाहिए।

धारा है न्यायाधिका की हरिया व नारी-मनमान की भावना को धर्म के रजस्वत हमारे देश के नागरिक विचार करने तथा मात्र सकार और सारे देश में समस्त भारतीय नागरिकों हेतु एक-समान संहिता का निर्माण करनी।

महवीर
(दुपेखन 'सार्जनिक')
२५०, मुन्दीबाव, हवाहावा

भारत में मुसलमानों की संख्या कैसे बढ़ी

बीमान भी,

भारत में मुसलमानों की संख्या और उल्स के बबरदस्ती करने से बढ़ी बढ़ता जब कालिब ने सन्त पर हमला किया। उस समय उसके साथ ४००० मुसलमान थे। लेकिन धात्र कम व्यापार करके मुसलमानों की संख्या १२ करोड़ के लगभग है। धात्र कोई तुम्हें कि मुसलमानों की संख्या कैसे बढ़ी।

१ यह कि कालिब, मोरी, कुतुबुद्दीन एलक, धन्यमल, धात्राहलीम बिलबी, बोबी, धात्रि ने जब भी मौका मिला हिन्दुओं को बबरदस्ती मुसलमान बनाया।

२ यह कि उन्होंने हथियार लेकर मोमी को बरा बमकाकर बबरदस्ती मुसलमान बनाया जो कि तबकार के बोर से मुसलमान बने।

३ कई बावसाहो ने एक सड़कजान निकाला, या ठो नौकरी में बने हिन्दु मुसलमान बन जाए। बढ़ता उन्हें कल कर दिया बावसा।

४ बहुत से बावसाहो जाना तब बाते ने जब किसी विशेष संस्था में हिन्दुओं को मुसलमान बना लेते थे। इस प्रकार से बाबर, हुमायूँ, बबरकर, जहांगीर और शाहजहाँ धात्रि ने भारत में बम लगाया।

मिनिस्टर का आदेश नहीं चाहिए, कुछ सेवा पानी करो

बाहरनीय की निर्धा की है, बाहर न मलते।

धात्रो स्वरूप होता कि इस धात्रो को २६ ७-८५ की स्वं की बलिब धात्रो को के साथ मिले। धात्रो महासच पुन्नीमाल वैदितव्य दृष्ट के लिए दूरपात्र के सम्बन्ध में धात्रे प्राप्ती की थी। धात्रे धात्रे के बनुदुरा की ० की धात्रे धात्रे, उपनिवेश के अपने व संस्था ११/१/८५ की ०२५००० २६/१०/८५ के बनुदुरा धात्रे की जारी कर दिये थे।

मैं की निमन को का धात्रे प्राप्ति होते पर ७-८-८५ की कम्प्लिश धात्रि-सर (प्रमथ) से निमना का। उन्होंने हथारा पत्र लेकर बेमुर में धात्रो बुरा बला कहे हुए उस पर धात्रे जारी किए थे। किसी कारकचन से मिली के बाहर बला वला।

बहा के मोते पर क १६-८-८५ को बम में उनसे पुन निमना ठो उन्होंने कहा कि मिनिस्टर धात्रे के कलमबाने से या समस्त बावसा जारी करवाने से ठोनी-फोन बोरी की निम बाते ही जब उस सेवा पानी न की जाए। मैंने धात्रो धात्रे धात्रि-सर कलमबाने से धात्रे की ए० के दुप्रा की नेच दी है। की दुप्रा की के

बन की। परन्तु धात्रे के समय गज हवा न बजिया दोबारा बना दिये गए।

५ हिन्दु बन्धो, धात्रो व लोगो को पकडकर अपने देश में ले गये बहा पर उनका मुख्य ठका बनाया गया। इस प्रकार से हिन्दुओं की धात्रावी कम से कम होती गई और व्यापार धात्रावी मुसलमानों की होती गई।

६ यह कोई निमाल नहीं कि, कोई हिन्दु एक विवेक करके मुसलमान बना हो। इसलिए एक पाकिस्तान बनने के बाव हिन्दुओं को बर है कि मुसलमानों के लिए दुप्रा पाकिस्तान न बन जाए। बहा कि धात्रे देशों न धात्रा पुन रेंवा बा रहा है। जिसके साथ में धात्रे हिन्दु मुसलमान बन रहे हैं। इसके धात्रा हिन्दुओं पर परिवार निमोन धात्रे करके सरकार न जीक ही नहीं किया। बलिक परिवार निमोन का मलका हिन्दुओं की मुसलमानों पर एकसा भोग होना चाहिए।

धत प्राप्ती है कि धात्रे मानने की बाव उबलाव की जाए। धात्रे हिन्दुओं के साथ व्याप किया बाव।

जयदेव पोषल
पकडर ओम

पात्र जब मैं गया ठो उन्होंने पुने बकेसे में कहा कि धात्रा कय पुत्र प्राप्ति ३१ मार्च १९८२ तक का है। या ठो धात्रे धात्रे का प्रमाणपत्र में धात्रे या धात्रे धात्रे की धात्रि।

मैंने की गुला से कहा कि यह ठो विवेक लेणी में हुने ठोनीफोन निम रहा है, बलि धात्रे लेणी में की बलि धात्रि-सर धात्रे ठोनीफोन निमबाना बाते ठो वे बकते हैं। इसके धात्रे की मैंने उनसे निमेल निमना कि मैं धात्रो की निम लेणी को तैयार है कि हमने धात्रे के लिए कय गुप्तिब के लिए प्राप्ती पत्र दिया बाव है, धात्रे पर धात्रो के दिया बावया। परन्तु यह निम लेणी के कार्य करने को तैयार नहीं हुए।

उत्तरे बाव में उपमहासच की धात्रे सचने की से निमने बाव ठो उनके निमो सचने की मैंने ने कहा कि साहब श्रतिव ५-६ अप्रिल को निमने है। धात्रा कम्बर २-६-८५ की धात्रे बाव उस धात्रे धात्रे निम ले, बर्षा कि पुने पत्रा बला है कि कम्प्लिश धात्रि-सर तथा धात्रि-सर नेमच के धात्रे ने धात्रे उन्हें धात्रे क दिया बा कि इन्हें निमने न दिया जाये।

(लेख पन्थ ६ बर)

स्वामी दयानन्द—एक सत्याशी योद्धा

(पृष्ठ ३ के आगे)

समाजियो ने बगल में मुलाबा दी। वह सितम्बर १८७३ में मृत्यु कलकत्ता में। तब वह बेवेनगन टोरोर और कैमब्रिज सेन में मिले। कैमब्रिज सेन दयानन्द ने बहुत पसन्द किया। कुछ और इच्छा प्रकट की कि यदि दयानन्द अपने जी जाते तो वह उन्हें विदेन में ले जाते। दयानन्द ने कहा कि कैमब्रिज सेन सेन संस्कृत जानते और वह पवित्र १५ ध्यानुकरम करतें। दयानन्द ने सेन की सहाय मानकर अपना सारा कार्य संस्कृत की बगल हिन्दी में करना शुरू कर दिया था।

बाद में वर्षों में दयानन्द और ब्रह्म-समाज में नेह दिनेश धर्मिक बहु पावे के कि ब्रह्मसमाजियों ने दयानन्द की सार्वभौमिकता पर उनके भाषणों का ब्यापक किताब और दयानन्द के रहने की सम्पत्ति की एक मुद्रिका सर्वशेष के पर करणी पड़ी। यह सब इनके उपाय बड़े कि जाहिर में ब्रह्मसमाज के सत्याशी की दयालुता यकीनियता ने सिखा है कि दयानन्द के सत्यता की उनके दृष्ट तथा अन्य सत्याशी ने निकास बाहर किया जाते।

किरी की दयानन्द के बहुत से बगली प्रसक्त से और यह उल्लेखनीय है कि दयानन्द की जीवनी लिखने वालों में बेवेनगन मुन्सिफ़ायावे ने, जिन्होंने सदा, मृत्यु परितः (१८६९) धारणें सुधारक दयानन्द और सिरजानन्द परितः लिखे। मुन्सिफ़ायावे ने विभिन्न स्वामी की यात्रा करने ऐसी सामग्री इकट्ठी की थी जो कहा कि जीवनी लेखक की पालीराय के लिए बहुत उपयोगी छिड़ हुई। श्री पालीराय ने दयानन्द की जीवनी बेवेनगन मुन्सिफ़ायावे और पं० सेलराय की उद्देशित पर आधारित की है। दीनबन्धु के इस पावे की कि दयानन्द के बगली प्रसक्तों ने कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ लिखी थीं, इसकी धारणा नहीं माना जा सकता। उन्होंने बगली में की इन्टर-चर टिप्पणियाँ उल्लेख कीं, जो उन्हीं के आधार पर दयानन्द की जीवनी लिख दी। १८५८ से १८६० तक के सबसे में दीनबन्धु का

कहना है कि स्वामी की बगली, फरवरी १८५७ में बगल और मुन्सिफ़ायावे में वे और बड़मुन्सिफ़र में मार्च १८५७ में थे। वह कानपुर जून ३ की पहुँचे। मसकरका बाद जून २२ को और कानपुर और दीवानाद के बीच पहुँचे जाँ। नई, जून जोधार् १८५० में वह बिरवापुर में थे। जुलाई में बिदुर में और सितम्बर में किम्प्याबन में। नवम्बर में वह कम्पनबड़ और बनारस में थे। उनका कहना है कि इसके बाद भी अठारह मिन में नर्मदा के ओत तक पहुँचे थे। रीवा में उस समय बनें सरदार का राज्य था। रीवा की ज़ीलों ने नवम्बर, सितम्बर १८५७ में बिदोह किया।

दयानन्द ने सत्याश्रमकाल में मुद्रिका के संबंध में लिखा है कि १८५७ में वह बगल बिदुर के आसपास रहते थे, उन्होंने धर्मियों का निवेदन किया और धर्मियों ने उनके बिदुरों पर बन बरखावे। "उन्मारी प्रतियाँ वर्षों को बगलाने के लिए उस समय बना कर रही थीं। वह मन्त्री तक भी नहीं सार सकी।" दीनबन्धु का कहना है कि दयानन्द द्वारा वह बिदुर ऐसा बनवा है जैसे उनकी स्वयं की सारी थे। उन्होंने यह ही कहा है कि दयानन्द लगभग उन्हीं स्थानों पर चले गये। पर उस समय वा कुछ बाद में भीषण दुष्प्राय था। यह विचार था कि बगल रहा है कि महर्षि दयानन्द ने स्वतन्त्रता प्राप्त के प्रथम और के भाग लिखा था। प्रथमा नई ही भारतीय इस पहली सभा में हार गये हों पर उनके धन्य एक ऐसा विचार जागत हो गया था कि वह गधेजों की धमक उठाकर संकेते। दयानन्द ने सर्वन स्वराज्य की ही धमका बगल और बाद में हुने स्वराज्य लिखा थी। महात्मा गांधी को मार्ग दिखाने वाले बलुक दयानन्द ही थे।

स्टेट्समैन से साधार

मिनितरा का आदेश

(पृष्ठ ३ के आगे)

धर धार ही बगल कि इस प्रत्या-चार की कैमब्रिज हो सकता है। क्या दयानन्द के कार्यकर्ताओं को भी ऐसे प्रष्ट तरीके अपनाने चाहिए। यदि इसके विचार में ही धारके धारकी इस प्रकार से प्रत्येक की जाती है, और धर्मिक उदाहरें जाती हैं, तो धार को क्या होगा होना, इसका धारणें धारणां धारणां।

धर नेरा धारके धारणें है कि धार इस नामके की जॉन धारणें और ऐसे

प्रष्ट लोगों के विचारक कड़ी कार्यवाही करें, जिससे नीचे वाले धर्मिकार्यों को भी सबक हासिल हो सके।

ई धारा करता है कि प्रष्टाधार मित्रावे में धारणका के उदाहरें कार्य-कर्ताओं, धर्मिक विचार रिक्त के काम करने की कर्म उठा ली है, का उदाहरें बड़ाने के लिए उन्मारी धर्मिकार्यों के विचार की कार्यवाही धर्मिकार्यों के

जबरीय

धर्मप्रकाश धार, मंत्री

निराशावादी शल्य

(प्रथम पृष्ठ का लेख)

किवा और बहाराद, गोष्ठा वारा-एली के धर्मोत्तरण की समस्या की और ध्यान धारकित किया। उन्होंने बताया कि केन्द्रीय सभा पर्व का धूमधाम से आयोजन करनी है। इस इस वर्ष दिल्ली में धार्यसमज दीवाना हाल की स्थापना शास्त्री मन्त्री जायेगी। हमारा विश्वास है कि धार्य वीरों के शिखिरी तथा प्रसिद्ध के माध्यम से ही धार्यसमज के धान्दोलन को गति प्रदान की जा सकती है। सार्वदेशिक धार्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरम मन्त्री की बैठक में भी महत्वपूर्ण नियंत्रण धारवीर दल को ऊर्जा प्रदान करने का ही हुमा है। दीवानहाल की ओर से एक हजारा धार्य वीरों का शिखि इस वर्ष दिल्ली में लगाया जायेगा।

जब हम इनके महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। हमें निर्वाचनों के समय शास्त्रि, सद्गुह्य और एकता से काम लेना चाहिए।

धार्यसमाज मन्त्रि हुनुमान् रोड नई दिल्ली में धार्य केन्द्रीय सभा का धारिक धर्मिकेशन सभा प्रधान महा-शय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में हुआ। गांधीजी मन्त्र के परवात् महा-मन्त्री श्री सूर्यदेव ने सप्त सदस्य ललित माकन, श्रीमती गीताजली माकन, श्री बालकृष्ण खन्ना, श्री पाठक, श्री प्रतापसिंह (करनाल), आदि के नियुक्त पर धोक प्रस्ताव रखा। सभी ने सबसे होकर दो मिनट मीन रहकर उन्हीं श्रद्धाजलि दी। तत्पश्चात् श्री सूर्यदेव ने मन्त्र के धारिक धर्मिकेशन को कार्यवाही को प्रस्तुत किया। प्रिंसिपल श्री भीमप्रकाश ने कहा कि श्री मेरे साथी कुछ समय से मटलुस कर रहे हैं कि कार्य में स्थिरता धार्य है। इस बात का उपस्थित सदस्यों ने विरोध किया और कहा कि कार्य बड़ा है और धार्य भी बड़ना चाहिए। श्री रामनाथ सहाय, श्री मामचद रिवाजिया, श्री राज सिंह भल्ला, श्री विजय गुप्ता ने कहा कि धार्य केन्द्रीय सभा का गत वर्ष का कार्य प्रशंसनीय है। सभी ने तालियो से इस बात का धनुमोहन किया। सभा को धारिक रिपोर्ट सर्वसम्मति से सपुष्ट हुई। इसके बाद धार्य-मन्त्रि विरराय और बजट प्रस्तुत करते हुए महामन्त्री ने बताया कि जब हमने सभा सभाली उस समय इनके पास ६,००० रुपये का फिक्स डिपोजिट और लगभग ८०० रुपये का कर्ज था। बाज इतके पास ११,००० रुपये का फिक्स डिपोजिट तथा सात हजार रुपये कोष में है। धार्य मन्त्रि विरराय तथा बजट सर्वसम्मति से पारित हुआ।

डा० धर्मपाल मन्त्री ने प्रस्ताव रखा कि धार्य भी दिल्ली की सभाओं की सभा को देखते हुए हमें अन्तरम मन्त्र के सदस्यों को—सम्मान ३१ से बढ़ाकर ४० कर देनी चाहिए। इस प्रस्ताव पर श्री रामनाथ सहाय ने कहा कि धारिक धर्मिकेशन के सविधान सभाधन का कार्य नैतिक सभा में किया जाना चाहिए, यदि कोई धर्मिक धार्यपति न हो तो सभाधन इसी साधारण सभा की बैठक में पारित कर लिया जाये। उन्हीं बताया गया कि धारिक साधारण सभा सर्वोच्च है और बाज धार्य-धर्मिकेशन की पूरा है। तीन वर्ष पहले सविधान में सभाधन किया गया था। प्रत्येक वर्ष सभाधन प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया जाये। श्री राज-सिंह भल्ला श्री मामचद रिवाजिया श्री रामनाथ सहाय, श्री राजपत राय आदि मान्य सदस्यों ने इस प्रस्ताव का मर्मन किया। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

इसके पश्चात् सभा प्रधान महा-शय धर्मपाल ने सर्वनाम धारिकारिणी के कार्यकाल की समाप्ति की घोषणा की। सामयिक प्रधान के लिए श्री भीमप्रकाश श्री रामनाथ ने लाला रामगोपाल धार्यनामे का नाम प्रस्तावित किया। श्री राजपत राय तथा धार्य धर्मिकेशन सदस्यों ने उनके नाम का धनुमोहन किया।

लाला रामगोपाल धार्यनामे ने सामयिक धार्यनाम का पद ग्रहण किया। सारा सभाधार सभियो की सहगह-हट से गुज हुई। उन्होंने मान्य सदस्यों की सभानि रहने की प्रेरणा दी और प्रधान पद के लिए नाम आमन्त्रित किए। श्री हरबसिंह खेर ने महाशय धर्मपाल जी का नाम प्रस्तावित किया। श्री रामशरणदास धार्य और श्री राजपत राय ने इस प्रस्ताव का धनुमोहन किया। लाला जी ने दूसरा नाम आमन्त्रित किया। कोई नाम न धार्य पर उन्होंने सर्व-सम्मति से महाशय धर्मपाल को सभा का प्रधान निर्वाचित घोषित किया। सभी सदस्यों ने ताली बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। श्री राजपत राय, श्री राजसिंह भल्ला आदि ने प्रस्ताव रखा कि धार्यकारिणी के गठन का कार्य महाशय धर्मपाल की ही हो सों दिया जाय। लाला जी ने कहा कि महाशय का धनुमोहन की धार्य धर्मिकेशन की श्री ईश्वरचद धार्य, श्री रामशरण दास धार्य ने धर्मिकेशन कुमार सहाय का नाम प्रस्तावित किया। धनुमोहित किया। सभी ने कतल ध्वनि से इस प्रस्ताव (लेख पृष्ठ ११ पर)

समाचार सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम

आर्यमनाज दीवान हाल दिल्ली के साप्ताहिक सत्यमे २६ अगस्त १९८३ को श्री महेश विद्यालकार द्वारा विशेष प्रवचन होगा।

मन्त्री

१ आर्यसभाज भिनवर मे ३० अगस्त से १ सितम्बर तक पण्डित आचार्य श्री भक्तगोपबन्धु अमन मण्डवी द्वारा रात्रि को ८ बजे से १० बजे तक मधुर संगीत एवं वेद प्रवचन होगा।

२ आर्यसभाज रघुनन्दपुरा न० २ मे ४ सितम्बर से ८ सितम्बर तक आचार्य हरिवेण सिद्धान्त नृपराज तक केचरी द्वारा वेद प्रवचन होगा। कथा से पूरा ५० मुन्ना साथ साथ नवनायकक के मधुर मञ्च। पण्डित होने।

३ आर्यसभाज बटार कंथाज न० १ से २ से ८ सितम्बर तक ५० अण्णाक विद्यालकार द्वारा नव प्रवचन का आवाज किया जायेगा। जिसमे ५० अन्त्यास भक्तगोपबन्धु एवं ८५ भाग आर्य सभाज राधाचन्द्र रायच के मधुर मञ्च रहे गये हैं।

४ आर्यसभाज सफरकाज इल्लव मे पण्डित कल्याण गुप्ता ५ एम०० सप्ताह तक साथ सत्केला का द्वारा बदकथा का कार्यक्रम रहेगा। कथा से पूरा ५० वेदव्यास आर्य प्रचारक द्वारा मधुर संगीत सुनने को मिलेगा यह कार्यक्रम ४ सितम्बर से ८ सितम्बर तक मुम्नावास से सम्पन्न होगा।

५ स मसनाज सहराबाजार महाका कीरज के वसन्तार ३० अगस्त से ८ सितम्बर तक मुम्नावास के साथ मनाया जा रहा है जिसमे ५० सत्यवेद सनातन रेडियो कलाकार के भक्तगोपबन्धु होने ५० व्यास प्रसाद डोलक सादक साथ रहेगे।

६ आर्यसभाज देवनगर मे ६ सितम्बर से १५ सितम्बर तक ५० आचार्य श्री श्री न्यामचौर रायच द्वारा अमनी पण्डित होने। समय रात्रि ८ बजे से १० बजे तक रहेगा।

७ आर्यसभाज राधाप्रसाद भाग मे ६ से १५ सितम्बर तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमे ५० वेदव्यास भक्तगोपबन्धु एवं ५० अन्त्यास डोलका सादक का कार्यक्रम रहेगा, साथ ही ८ सितम्बर ८३ को योगेश्वर बाण्डे एक विद्यास जोषामाया निकाली जायेगी।

८ आर्यसभाज राजौरी रायच मे ६ से १४ सितम्बर ८३ तक वेद सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमे ५० सत्यवेद सनातन रेडियो कलाकार एवं व्योतिप्रसाद डोलक कलाकार द्वारा मञ्चनोपवेश होने।

९ आर्यसभाज साहीमार भाग मे भीष्मकुष बन्नाथ्यो पत्र मुम्नावास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विद्यास सन्नास उपदेशको के भीष्मकुष जीभ पर व्याख्यास होने। साथ ही १० सत्यवेद सनातन रेडियो कलाकार के मधुर मञ्च रहेगे।

१० आर्यसभाज अक्कोनवर का बाणिकोत्सव मुम्नावास के साथ मनाया जा रहा है। ५० के भक्तगोपबन्धु पण्डित मुन्नासाज का साथ क जोषास मञ्चनोपवेश होने।

११ आर्यसभाज मयाबाव मे वेद प्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमे महात्मा रामाचाराज वध महाप्रवचक की का वेद प्रवचन रहेगा।

१२ आर्यसभाज सफरपुर गिराज मे ४ से ८ सितम्बर तक प्रातः ६ बजे से ८ बजे तक विशेष यज्ञ प्रवचन रखा गया है क बड़ा ५० पमचौर आर्यनी विद्यालकारस्थित जा होगा। ८ सितम्बर रात्रिभार को आर्यकुष जन्मोत्सव मनाया जायेगा। इसमे महात्मा विद्यास भक्तगोपबन्धु पधार रहू है।

१३ आर्यसभाज न्यू भाटीनगर मे १ से ७ सितम्बर ८३ तक वसन्तार सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमे ५० विद्यालकार उपप्राध्याय का प्रवचन और ३० अम मञ्चवास मञ्चन मण्डला के मधुर मञ्चन होने।

१४ आर्यसभाज १५ हुन्माजू रोड मे वेदप्रचार सप्ताह १ सितम्बर से ८ सितम्बर तक मनाया जायेगा जिसमे ५० मन्मथगोपबन्धु विद्यालकार (देवराबाज) को का वेदप्रवचन रखा गया है कथा से पूरा मधुर संगीत का कार्यक्रम रहेगा।

आर्यसभाज भूनामकी महाप्रवचन नई दिल्ली ४ सितम्बर से ८ सितम्बर तक वेद प्रवचन की ५० रामप्रसाद वेदाचार्य द्वारा किया जायेगा। समय—रात्रि ८ बजे से १० बजे तक।

अध्यक्षता स्वामी स्वच्छानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेदप्रचार विद्यास

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का ६१८ वार्षिक खुला

अधिवेशन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् विश्वी प्रवेश का सत्रा बाणिक अधिवेशन नौबानाज समवेत हुए पत्रकार ५० यशपाल गुप्ताधु (अन्त्यास आर्य सत्यमे) की अध्यक्षता मे २६ अगस्त, रात्रिभार योगेश्वर २ बजे आर्यसभाज मनाकरकी मण्डिर भाग मे सप्ताहोह युवक होगा। परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल कुमार भाग मे बताया दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों मे ५०० नौबानाज भाग लेंगे।

इस अवसर पर श्री अमर स्वामी श्री महाराज श्री ५० सिटीज वेदाचार्य, ३० विलम्बास अमन, भासा हरप्र गारायक, श्री रामनाथ सहजन्म, महाप्रवचन मण्डिर,

श्री रामनाथ विकस डा० कलेश्वराज (कल्याण) व अनेक युवक साथ विद्यास वेदाचार्य भाग लेंगे। अध्यक्ष व आचार्यकारियों की निम्नलिखित व अध्यक्ष, सीटी, प्रस्तावक एवं कार्यक्रम मे दी जायेगी।

आर्यसभाज व भाग युवक गुण वैष्णुभा में ठीक १३० बजे पहुंचें व अपनी बर्त, टुक, मंडावोर यात्रियों मे अधिक से अधिक सत्का मे पधारकर समज का परिचय दें।

पत्रपोहन भाग

सेस सत्यमे

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, विश्वी

आर्यसमाजों के निर्वाचन

भाई ब्रामा रायच नगर नई दिल्ली का बाणिक मुन्ना २७ ८३ को श्री विद्यालकार वासुदेवा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—श्री आरकाभाज सहजन्म मुख्य उप प्रधान—श्री विद्यालकार वासुदेवा उप प्रधान—श्री कुम्भाकाज भाटिया उप प्रधान—श्री रायचकाज श्री युव उप प्रधान—श्री वेदप्रवचन आर्य उप प्रधान—श्री दीवान पुष्पलोकसाज श्री उप प्रधान—श्री बजरज कोहली अमी—श्री बासील्ला की प्रचार मन्त्री—श्री अण्णाक कुमार सहजन्म उपमन्त्री—श्री आरगण कर्माक उप मन्त्री—श्री शिशुनारा श्री उप मन्त्री—श्री देवराज भासा उप मन्त्री—श्री मोहनसाज बल्ली कोषाध्यक्ष श्री योगप्रकाश उपकोषाध्यक्ष श्री युन्नीसाज उप कोषाध्यक्ष श्री बर्यवन्धु की पुस्तकाध्यक्ष श्री योगप्रकाश बसुभा सेका निरीक्षक श्री प्रेमनोहन गुप्ता

(आरकाभाज सहजन्म)

प्रधान

आर्यसभाज रायच नगर नई दिल्ली-६०

आर्यसभाज नवा भाई विश्वी का ६५ वीं बाणिक अधिवेशन रात्रिभार सितार्क १४ ७-८३ को ५० सत्यवेद विद्यालकार की अध्यक्षता मे विन्म प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—भा० योगप्रकाश कपडे भाते उप प्रधान—श्री युगल्लभ बारीका उप प्रधान—, योगप्रकाश श्रीय भाते मन्त्री—, विष्णु कुमार भाई उप मन्त्री—, बर्यवन्धु आर्य उप मन्त्री—, रायच कुमार भाते भाते उप मन्त्री—, ब्रह्माण्ड वर्मा कोषाध्यक्ष—, रायचकाज भाते भाते

पुस्तकाध्यक्ष—श्री मन्मथकोर भाज

इसके अविरलित सब सम्पति से अमरज सत्का के लिए १५ सत्यमे श्री युने गये।

चिक्कुमार आर्य (मन्त्री)

आर्यसभाज मनावाज विश्वी

विद्या आर्यसभाज, समवेतपुर का बाणिक निर्वाचन सितार्क २१ ७ ८३ बार रात्रिभार को श्री रायचकाज भाग के अध्यक्षता में सौभाग्यपूर्ण भागारपुत्र मे सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी एवं अमरज सत्यमे चुने गये।

श्री रायचकाज आर्य—प्रधान

॥ नवी देवास कबरा—उप प्रधान

॥ विद्यालकार का प्रवचन—उप प्रधान

॥ मन्मथ कोर आर्य—मन्त्री

॥ रायसाज भाग—उप मन्त्री

॥ बजरजसाज भूत भूत भासा—उपमन्त्री

॥ हरि नारायण वैष्णु—कोषाध्यक्ष

॥ सुरेशचन्द्र भाग—पुस्तकाध्यक्ष

॥ विद्यालकार श्री—सेका निरीक्षक

निवेष्टक

मन्त्री, मन्मथ कोर आर्य

विद्या आर्यसभाज समवेतपुर (विहार)

स्वतंत्र सचना

आर्यवेदिक आर्य वर वर विश्वी प्रवेश समिति की एक अत्यन्तमयक बैठक रात्रिभार सितार्क २५ अगस्त १९८३ को साय ४ बजे आर्यसभाज मण्डिर, १५ हुन्माजू रोड नई दिल्ली मे श्री गोविन्दपुरा हुई है।

आप इस समिति के माननीय सदस्य हैं। कृपया बैठक मे समय पर पधारकर अपने सहयोग तथा विचारों से भागीदारी करें।

अध्यक्षी

(सत्यमुन्मद विद्यालकी)

मन्त्री

पुस्तकालय
प्रगल्भ कान्ही विर-विवालय
दुरिदास

२८/१/८१

साप्ताहिक

ओडम

कृष्णवर्तो दिपमार्गम्

आर्यसन्देश

वर्ष १ प्रकाश ४१

दिवार, १ सितम्बर, १९८६

सृष्टि संवत् १९७९६४८०६

मासिक २०४२

वर्षासमाप्त १६१

मुद्रक एक प्रति २० पैसे

वार्षिक २० रुपये

आजीवन २०० रुपये

विषय में ४० हजार, १० लीट

प्रधानमन्त्री द्वारा माता चन्नन देवी धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय के कार्यों की सराहना

गर्भ विस्ती, २६ अगस्त १९८६

आज भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जी ने माता चन्नन देवी का गर्भार्थ नेत्र चिकित्सालय, जनकपुरी, गर्भ विस्ती द्वारा कीमती दवाओं की की १०००० रुपये के उपकरणों में भारत १९ अगस्त १९८६ तक प्राप्त किए गए 'नेत्र विस्ती दवाओं' परियोजना का शुभारम्भ करते हुए चिकित्सालय की टीम को धन्यवाद दिया तथा पर ३० नवंबर अपना आजीवन प्रदान किया।

हृदय टीम ने चिकित्सालय के ६ डॉक्टर, ७ नर्सों के प्रतिष्ठित सांख्यिकीय कार्य प्रतिनिधि तथा के मातृ प्रदान माता रामगोपाल साहबसे, मुद्रपुर केन्द्रीय स्वास्थ्य उपमन्त्री सुधी कुमुद देवी कोटी, मुद्रपुर संवत् सत्यत् की हृदयगत की केपलर, विस्ती कार्य प्रतिनिधि तथा के प्रधान की सुद्वेष, महापत्नी डा० बर्बला, धर्म केन्द्रीय तथा के प्रधान महापत्नी बर्बला तथा अन्य कई गण्यगण व्यक्ति सम्मिलित थे।

चिकित्सालय के सचिव श्री प्रोम

प्रकाश धर्म ने श्री राजीव गांधी जी को पिछले पांच वर्षों में कीमती दवाओं के अन्य दिनों के प्रकाश पर किए गए कार्यों की रिपोर्ट तथा एक एक चिकित्सालय द्वारा किए गए कार्य का सविस्तर विवरण दिया। धर्म ने यह भी बताया कि इस वर्ष कीमती दवाओं की के सम्मिलित पर दिल्ली के १९ प्रान्तों में जा डॉक्टर नेत्र परीक्षण किये जायेगे। १९ हजार लुकी बन्धों के लुकी ने जा डॉक्टर नेत्र परीक्षण किये जायेगे १९ हजार नेत्र सुरक्षा सम्मन्धी निवस प्रधानमन्त्री जी के पिता एम कनैव सहित

प्रकाशित काराकर विस्तार किये जायेगे तथा इस अवसर पर लगभग ५०० नि-मुक्त नेत्र उपकरण किये जायेगे।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जी ने चिकित्सालय के कार्यों की सुविधा-सुविधा प्रकाश करते हुए चिकित्सालय के अधिकारियों तथा डॉक्टरों का कल्याण किया।

प्रोमप्रकाश धर्म
चिकित्सालय सचिव

आर्यसमाज दीवान हाल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न १९८५-८६ के लिए पूर्वाधिकारी पुनर्निर्वाचित

आर्यसमाज दीवान हाल का १००वां वार्षिक अधिवेशन २५ अगस्त को श्री पूर्णेश प्रदान की अध्यक्षता में सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। गते वर्ष के प्राय-व्यय की लक्ष्मि के परमाणु धार्मिक विस्मय के बनगो जाने वाली शताब्दी के कार्यक्रम को धर्मिता कर दिया गया तथा गत वर्ष के अधिकारियों एवं प्रभारक सदस्यों की आभारार्थी वर्ष १९८५-८६ के लिए निर्वाचित कौचित किया गया।

आर्यसमाज दीवान हाल शताब्दी समारोह की तैयारियां प्रारम्भ

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली के मन्त्री श्री मुलचन्द गुप्त की बोसला के अनुसर आर्यसमाज दीवान हाल शताब्दी समारोह के कार्यक्रम १६ सितम्बर के ३१ सितम्बर तक प्रगताप में सम्पन्न होंगे। जिनमें मुद्रपुरी परीक्षण वस साधन, लेखन प्रतिनिधित्व, श्री के विद्वानों की बोसला तथा चिकित्सालयों का आजीवन होगा। समारोहसमय पर धर्मक

प्रदर्शनीया श्री धर्मोचित नौ जायेगी। जिनमें आर्यसमाज दीवान हाल के कार्य एवं धर्मोचितों को स्वरूप कराती धर्मिता होगी। इस अवसर पर अर्द्ध अन्न त्यागिका, धर्मोचित सुलकी, द्रुती धर्म कोसर्व के का प्रकाशन किया जायेगा। महा पुरातन धर्म-साहित्य प्रदर्शनी का भी धर्मोचित होगा।

पाठक वृन्द ध्यान दें

धर्मसन्देश साप्ताहिक का ८ सितम्बर का प्रकाश विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा। अतः इस बार का प्रकाश समाचारों के लिए श्री-नरपेक्ष का प्रकाशित किया जा रहा है। १६ सितम्बर का प्रकाश हम केवल समाचार प्रकाश पर पेज का ही प्रकाशित करेगे। २२ सितम्बर के धर्मसन्देश हृदयसाह नवीन लेखों और कीबहुत धर्मोचित के साथ समुद्र साव्यरक्षण के साथ प्रकाशित होता रहेगा। सम्पादक, धर्मसन्देश

समाचार सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि द्वारा साप्ताहिक सत्संगों की व्यवस्था

१ सितम्बर १९८५ रविवार

आर्यसमाज दीवान हाल में ५० तिथीय वेदालंकार द्वारा प्रवचन

धन्यामुष्य प्रतापनगर—५० देवराज वैदिक मन्दिर। धनोत्तमनगर—५० गुराहीवाल वैष्णव। धर्मपुरा—५० रमेश बन्धू वैष्णव। धान्यविहार—५० धर्मनाथ कागल धर्मोपदेशक। किजके केन्द—आर्यवीर रघुवीरविहारी राणा। किसानवर्ग भिन एरिया—स्वामी ब्रह्मानन्द हरद्वारी। बनीमाला—५० बुन्नीवाल धर्म। गीता कालोनी—४० जीव। योगिन्दरपुरी—५० रवीन्द्रनाथ पाठक। योगिन्ध्र भवन—५० वेदप्रकाश शास्त्री। जगज्जुही की २—४० सुखदेवाल बूढाली। जगज्जुही सी० ३—५० राधिकावल सम्राट् एम० ३। शेरौर गार्डन—५० सोमदेव शास्त्री। तिमार-पुरा—५० मनुदेव शास्त्री। तिलक नगर—५० जयप्रकाश जी। देवनागर—४० रघु नन्दन सिंह। नगर बाह्यदरा—५० श्री-बन्धू मतवाला। मू गीतोन्नगर—५० उदय जी ८५ धर्मनाथ। नारायणविहार—४० प्रह्लाद हरद्वारी। पञ्जाबी बाग—५० वेदप्रकाश धर्म। पञ्जाबी बाग एक्स्टेंशन—

धार्माध्य हरिदेव विद्याल भूषण जी। महरौली—५० मोहनलाल शास्त्री। महरौरी नगर—५० बलवीर सिंह शास्त्री। मोहन शास्त्री—भीमवी प्रकाशवती शास्त्री मोतीबाग—५० सुधीरकुमार शास्त्री। राधाप्रताप बाग—महात्मा युजी शर्करा बानप्रस्थ। राओरी गार्डन—४० वैद प्रकाश महेस्वरी। रमेश नगर—धार्माध्य रामवीर शास्त्री। रघुवररुद्रा—भी युजी वैद भवनोपदेशक। सायनन नगर—४० लखिऊल शास्त्री। मूहू टो—५० नेत्र पाव धर्म। हीरबाग—५० हनुमान धर्म। जिन नगर—५० जयनलाल जी। विवेक विहार—५० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री। धर्मोक्त विहार—५० लखदेव स्वातक रेडियो कलाकार इत्यादि।

अवस्थापक
स्वामी स्वकृपाणन्द
अभिष्ठाता वैद प्रचार विभाग
दिल्ली क्या

तार्जसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली में

३० अगस्त में ३ नितम्बर तक

वेद प्रचार सप्ताह

प्रतिदिन प्रातः ७.३० बजे से ९.०० बजे तक

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

२० अगस्त को प्रातः ७.३० बजे से

आवनी उपाकरण

साप्ताहिक यज्ञोपवीत संस्कार
एकम्

हैवराबाद सत्याग्रह बलिदान-विजय

३१ अगस्त से १ सितम्बर १९८५

रात्रि ७। बजे से ९ बजे तक

आर्यसमाज के विद्यार्थी महोपदेशक वैद्य रामकिशोर जी द्वारा

वेद-प्रवचन

प्रवचन से पूर्व श्री मुलायम सिंह जी 'राधक' के भजन होंगे।

७ सितम्बर सोमवार से प्रातः ७.३० बजे से गीतोपनिषद् श्री कृष्ण

अमोलेख मनाया जायेगा।

कृपया उपरोक्त कार्यक्रमों में पधार कर हमें लाभ उठावें।

मूलस्थान
भवन

आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल
दिल्ली

वेदप्रचार सप्ताह

वेद सप्ताह ६ सितम्बर से ११ सितम्बर १९८३ तक धार्मिकसाधक धर्मोक्त विहार केन्द्र-१ में मनाया जाएगा।

प्रातः ७ बजे से ७.३० तक यज्ञ
श्राद्ध और वैद्यकाय की धर्मोक्त
रात्रि ८.३० से ९ बजे तक भजन
९.०० से १० बजे तक वेदप्रकाश
(श्री वैद्यकाय की धर्मोक्त)

१३ सितम्बर १९८५ रविवार पूर्वाह्णित
प्रातः ७.३० से ११.३० तक

भजन श्री विश्वम भूषणाथ एव धर्म
रत्नी समाज धर्मोक्त विहार-१
उपदेश ४० उपा रानी शास्त्री एव
श्री वैद्यकाय धर्मोक्त।

जसलाल साह मदान
कायस्थ भवन

आर्यसमाज धर्मोक्त विहार, केन्द्र-१

यज्ञ कर्त्तों की नाति धार्मिकसाधक सत्या
पुरा बापराखी में दिनांक ३० अगस्त से
७ सितम्बर १९८३ (आर्यवीर के कीर्णस्थ
जन्मदिन) तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया
जाएगा जिसमें की धर्मोक्त शास्त्री,
आचार्य बुद्धकल उतापुरा गांधीबाग व
श्री राधिकावल सतीताधर्म, धार्मिक
पधार रहे हैं।

कार्यक्रम

विशेष प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से ९
बजे तक विभिन्न विचारों में विशेष यज्ञ
एव रात्रि ७ बजे से १० बजे तक यज्ञ,
भजन व प्रवचन धार्मिकसाधक मन्दिर,
सत्यापुरा धार्मिकसाधक में होंगे।

मुद्रदेव धर्म
अवस्थापक

धार्मिकसाधक सत्यापुरा,
बापराखी

आवश्यक सूचना

दिल्ली की सभी धार्मिकसाधकों को
सूचित किया जाता है कि दिल्ली धार्मिक
प्रतिष्ठान सभा में उपदेशक भवनोप-
देशकों की पूर्ण व्यवस्था है। धार्मिक
साप्ताहिक सत्संगों के लिए उपदेशक,
सतीत कलाकारों की सेवा प्राप्त करें।
एक सप्ताह पूर्व पत्र व्यवहार कर अपने
व्यवस्था के लिए उपदेशक सत्यापुरा को
कार्यक्रम दें। हमें पत्र नं० ३१०१५०
पर लगाने दें।

अवस्थापक
स्वामी स्वकृपाणन्द हरद्वारी
अभिष्ठाता वैद प्रचार
वि० ४० ४० सभा

आर्यसमाज आशा पार्क में स्वतंत्रता दिवस समारोह

दिनांक १५-८-८३ को आशा पार्क
निवासी कल्याण सभा (एच०) की ओर
से काकोली में ३६वीं स्वतंत्रता दिवस
समारोह बड़े हुनोत्साह के साथ मनाया
गया। इस अवसर पर अन्धाराहोश की
आतिथ्यप्रकाश की मारन प्रथम, धर्म
समाज आशा पार्क के द्वारा किया गया।
स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जिन यज्ञ
वीरों ने अपने प्राणों की बलि दी थी उन
की श्रद्धांजलि धर्मोक्त की गई। धार्मिक
प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के साहसिक
कार्य और सूर्यभक्त की प्रशंसा की गई।
राष्ट्रीय भावनाओं में से ओत ओत राष्ट्रीय
गीत तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत
किये गये। सभा के प्रधान की संस्कार
सिद्ध के द्वारा बच्चों में मिठाई बाँटि बट
कर समारोह का विधिपूर्व समापन किया
गया।

निरजन देव सचदेवा

सभी धार्मिकसाधक आशा पार्क गई दिल्ली

हम सुभरेंगे जग सुभरेगा

आर्यसमाज मुहम्मदा योगिन्ध्र,
बाबनगर पहाड़ में दिनांक ११ अगस्त से
१६ अगस्त तक, सभी धार्मिकसाधकों की ओर
से वैदिक सत्संग यज्ञ, भजन एवं वैद प्रव-
चनों का सुन्दर आयोजन किया गया।
वैदिक सति मन्त्र के शक्तिवत् सत्संगों में
अग्रणीय मुनि बानप्रस्थ एवं धार्मिक ४०
बच्चों मन्दिर की द्वारा यह सत् कार्यक्रम
सफलता के सन्धन हुए। युद्ध वैद पाठ
सिद्धि की सेवा। यह सत्संगों की व्याख्या
करते हुए बहारी बच्चों ने माता-पिता को
अपना जीवन वैदिक यज्ञ, सम्पदा व स्वा-
ध्याय से पवित्र बना कर अपनी सत्यता
की वैदिक संस्कार अर्चना के प्रेरणा देने
का उपदेश दिया।

बहारी जी व मुनि जी धार्मिक
पञ्चांग में एकता व शांति के लिए वैदिक
यज्ञों व वैद प्रवचनों का आयोजन करते
हुए शांति यात्रा कर रहे हैं।

कृष्णा कोष्ठ
मन्त्रिणी

चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्वाह्णित

यज्ञ भवन बहुरा नगर दिल्ली में
२१ अगस्त से धर्मोक्त चतुर्वेद पारायण
यज्ञ की पूर्वाह्णित १ सितम्बर रविवार को
होगी। इस यज्ञ के बहारा एवं अष्टविन्
स्वामी कीर्णनाम्न सभा ५० अक्षरपु
जन भारी सत्संग में यज्ञ में भाग लेते रहें
हैं। यज्ञ की पूर्वाह्णित ११ बजे होगी।
वैदिक सुयोग्य विद्वानों के प्रवचनों का भी
इस अवसर पर आयोजन किया गया है।
निवेदन
धर्मोक्त वैद

दंतों की हर बीमारी का धरोहर इलाज

एम डी एच

दंत मंजन

लोग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

कले का कण्टर

मरुही की सूजन

मुँह की दुर्गन्ध

ठंडा गर्म पानी
लजभा

आम नये दैर्घ्य
में उपलब्ध

बात का बर्ब

विश्वीय
महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

B/64 इण्डियन स्ट्रीट, कोल्लि जंक्शन, नई दिल्ली-110

फोन 538609, 537587, 537541



शोधपूर्ण भव्य विशेषांक

सुदर्शन चक्रधारी, महान् भारत के प्रणेता, कुण्ड प्रवर्तक, रिपुधमन, गोपालनन्दन, तप धीर सत्य के धारक, महान् राजनेता, महान् योगी, दीनबन्धु विश्वामित्र कर्मयोगी, आध्यात्मिक दार्शनिक, शास्त्र पुरुष, योगेश्वर श्री कृष्ण जी महाराज की जन्माष्टमी पर भार्यसन्देश साप्ताहिक का एक भव्य शोधपूर्ण लेख, वचनो गोत्रो से सुसज्जित विशेषांक सितम्बर को प्रकाशित किया जा रहा है। भार्यसन्देश के प्राहको को विशेषांक मुफ्त दिया जायेगा।

इसलिए जल्दी कीजिए, भार्यसन्देश साप्ताहिक का वार्षिक शुल्क २० रुपये या माजीवन २०० रुपये भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

पता—

सम्पादक भार्यसन्देश साप्ताहिक
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,
हरिद्वार को औषधियां
सेवन करें

उपद्रव

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

भीमसेनी कुरमा

प्रायस्कित

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

लावा कार्यालय—६३, गली राजा बैरारनाथ,
फोन २६६८३८ बावड़ी बाजार, दिल्ली-६

ओडम

आय सन्देश

अथ ६ अक्षर ४
सुख्य एक प्रति

रविवार १५ सितम्बर १९८१
वार्डिक २

सृष्टि सप्त १९७२९४९०=९
आजीवन

भाद्रपद २०४२

दशमिन्दाब्द— १६१
मे ५० डालर ३० पौड

आर्यसन्देश विशेषांक का विमोचन एवं
खण्ड खण्ड भारत को अखण्डित करने वाले
महामानव का मधुर स्मरण

७ षष्ठिम्बर विलीन, धार्यदयल्य
 धीवान्मनस्य दिल्मी के तत्प्राप्तयाम
 मे कीकृत्य कथाभ्यामी बुधमय मे
 मनादी गयी । हल बलवत् पर की
 रामगोपनीय बालनरमे की प्रपञ्चता
 मे प्रनेक प्रकाशो मे मे योगेवर की
 कृष्ण के पवित्र युव उदात्त जीवन
 वरिष्ठ वर प्रकाश कला ।
 सत्यमे सन्मी की ए० ०० ०० ए०
 सत्य मे धार्यदयल्य साध्याकृष्ण
 के शीमेवर की कृष्ण विशेकषा
 की शीमेवन । की भयत मे श्री
 कृष्ण की मृगान्तापरी का वीर्य
 करते हुए मृग, मृगे की आदि
 मृगान्तापरी मे प्रगाढ बरफ । हल
 सत्तर सत्तर मे तो कुछ दिन धार्य
 कृष्ण विन परोक्ष एव विन सत्तर की
 धारा मे परन्तु यह स्वप्न एव
 पवित्र-नेत्र विस्मृति सत्तर । हल
 हल धार्या की नही काट सत्तर । हल
 न ही जला सत्तर, हरीर वर ही
 मृगान्त ही सत्तर । हरीर ही
 प्रता पिता । धार्या नही । हल
 विष्ट यह धार्याता मनुष्य की बलि
 की कोष्ट सत्तर । उन्मी मे धार्य
 सत्तर की वरही धार्यात्त मे धार्य
 सत्तर । हल धार्य मे धार्य
 का रहे काये की धार्य-प्रसन्न
 की, की भयत मे धार्या मे । हल
 सत्तर धार्य-सत्तर । हल, मे धार्य
 धार्य । धार्य की सत्तर मे धार्य

मैंने वहाँ के रजिस्ट्रार में लिखा यह कालिज शब्द इस्लामिया कालिज बन गया है यह पहले डी० ए० बी० कालिज था जिसकी स्थापना महारामा हसराम ने की थी। मैं इसी कालिज में पढ़ा हूँ। यदि यह डी० ए० बी० कालिज न होता तो न जाने कितनी

मुझ जैसे साधारण परिवार के लोग पढ़ ही न पाते। उन्होंने सामयिक चर्चा करते हुए कहा—जिस भारत की सुखता के लिए महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी तथा अनेक बलिदानियों ने प्रपना सर्वस्व धर्पण किया है वह भारत सदा भ्रष्ट रहेंगा उसे

कोई तोड़ नहीं सकेगा ।

श्री रामगोपाल बालबाले ने अपनी वस्तुस्थिति से कहा, आज से पांच हजार वर्ष पूर्व चक्रवर्ती श्री कृष्ण जी महाराज ने लखड़ियाँ हुए भारत की शस्यस्थ भारत किया था। मान-तायी राजाश्री की कृता से पिसली प्रजा की अपनी कुलसन्तियो से खुदाया था। आज आवश्यकता है श्री कृष्ण की नीतियो और महान-श्रीश्री की प्रपनने की

इस अवसर पर श्री पं० जय-
प्रकाश आर्य प्रतिनिधि (मृतपूर्व)
इमाम बेतिया एवं यशपाल सुधाशु
तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के
प्रधान ने भी अपने विचार प्रस्तुत
किये।

ग्रामसमाज दीवानहाल में एक सप्ताह तक श्री महात्मा रामकिशोर द्वारा मनोहर एवं प्रशंसाप्रद वेदकथा सुनी तथा श्री गुलाबसिंह रायच द्वारा मधुर भजन हुए। देव सप्ताह के अवसर पर युगपदीय यज्ञ का भी आयोजन किया गया था जिसके ब्रह्मा व्याघ्र व शशपाल सुधाशु तथा श्रुतिक श्री सुरेन्द्र शास्त्री एवं श्री धर्मवीर शास्त्री ने।

आर्यसमाज का शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिला

धार्यसमाज का किष्टयष्टन
 सार्वभौमिक धार्य अतिनिष्ठ सभा के
 प्रधान श्री रामनोबाग बालबालके
 नेतृत्व में प्रधानमन्त्री श्री राणी
 राणी से विन्यास करी आपन दिया।
 दृष्टि आपन में कड़ा था कि हिं
 संनिको के सेवा कार्य में रहते समय
 तुष्ट तत्त्व उनकी सम्पत्ति आदि पर
 कब्जा कर लेगी। इसलिए संनिको
 को दृष्टि धामसे में वैधानिक सुक-
 दिया जाये गया रहते संनिको
 को का निष्पत्ता कीष्ट किया
 जाये। आपन से यह भी अनुरोध
 किया गया कि पत्राकी को निष्प
 सेवानगी की जाये। इससे आपन
 में हिन्दी का विकास होगा। श्री

रायगोपाय शालवासे ने कार्यसमाज
दीन हारन की शताब्दी का उद्घा
तन करने का कथुरोच किया। भाषा
मन्त्री ने सिद्धान्त इस निमन्त्रण
की स्वीकार करने हुए इस ध्वज
पर एक डाक टिकट जारी करने की
सम्पादन दिया श्री शालवासे ने
कायसीर की सम्पत्ति और उसके
समाधान के लिये महत्त्वपूर्ण सुझाव
दिये। उन्होंने दिल्ली में जनता
के समय पुरानी इमारतों के सामने
सम्प्रदाय विशेष के लोगों को पूजा
करने की अनुमति समाप्त करने का
यु प्रारंभ किया।

आर्यसमाज सफदरजंग के वार्षिकोत्सव पर विशाल सम्मेलन

आर्यसमाज सफदर जंग इन्-वेन्स नई दिल्ली में वेद सप्ताह के प्रथम र पर वाचिकोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रातः काल बृहद यज्ञ श्री डा० वाचस्पति के प्रशासक ने सम्पन्न हुआ। रात्रि में १० यज्ञपान सुभाषु (सम्पादक आर्य स्वच्छा) डा० प्रत्यन्त रोचक एवं प्राध्यात्मिक ज्ञान से भरपूर वेदव्याख्या हुई, तथा श्री वेदव्यास के सघन प्रजन हुए। रविवार २ सितम्बर को विशाल सम्मेलन का समायोजन हुआ। इन अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति श्री डा० सयकेतु तथा कुलपति श्री डा० सत्यकाम वर्मा का

भव्य स्वागत हुआ। इस समारोह की आयोजना श्री डा० मत्यकेतु ने की। सम्मेलन में डा० सत्यकाम वर्मा १० जैमिनी शास्त्री, श्री डा० वाचस्पति श्री उपाध्याय श्री प्रमचन्द्र श्रीधर श्री सूर्यदेव जी आदि वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

डा० मत्यकाम वर्मा ने कहा— गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रति जो धार्य जगन ने एक आस्था बनी हुई थी। स्वामी अद्वानन्द ने जो इस गुरुकुल के माध्यम से स्वयं देखा था मैं उसी स्वप्न को पूर्ण करने का, गुरुकुल विश्वविद्यालय गौरव को पुन स्थापित करने का हरमम्भव प्रयत्न करता हूँ।

१० जैमिनी शास्त्री ने जो कृष्ण के मोह गहिर मयद हिन्द स्वस्व का मनोरम व्याख्या से चरण किया। डा० वाचस्पति ने श्री कृष्ण के दार्शनिक, नीतिमान योद्धा आदि गुणों का भरपूर व्याख्यान किया। श्री प्रमचन्द्र श्रीधर ने श्री प्रपना प्रोजेक्ती भाषण देते हुए कहा आर्यसमाज के प्रगर्हाई लेने का समय आ गया है।

दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा— श्रीकृष्ण का वास्तविक स्वस्व हिन्दू समाज से खो गया है। केवल वास्तविक को सीलाधो को पीरागिक जगत् याद करता है। उनका हृदिभागे से सजा भातताधियो को तलकारता अस्व

कीन बाद करेगा? उनका धर्माध्वत भारत को एक बारस करने का महान् कौशल कीन याद करेगा? सारथो बनकर धर्मुन को धन्याय से जमने की महान् प्रेरणा देने वाले दार्शनिक को कीन याद करेगा? यह मही स्वस्व स्मरण करने वाला तो धार्य-समाज है और महर्षि दयानन्द के अनुयायी ही हैं।

आर्यसमाज मन्दिर के प्रधान श्री हनुमन्त बाल बेर ने मन्दिर द्वारा चलायी जा रही गतिविधियों का उत्साहवर्द्धक परिचय दिया।

राजधानी में वेदप्रचार सप्ताह की धूमधाम

आर्यसमाज खालीमार बाग ने दिल्ली में वेद सप्ताह के प्रथम र पर अनेक विद्वानों को आमन्त्रित किया। डा० प्रकाशचन्द्र वास्ती के द्वारा एक सप्ताह वेदप्रकाश हुई। श्री ब्रह्मप्रकाश वास्ती यज्ञ के सप्ताह में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर श्री १० सचिदानन्द शास्त्री डा० महेश विद्यालकार डा० चर्मपान महामन्त्री दिल्ली प्रा० प्र० मन्त्र तथा डा० रघवीर वेदान्कार आदि वक्ताओं के प्रवचन हुए।

भयं जुलूम

आर्यसमाज गंगा प्रताप बाग दिल्ली की धो से श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर एक भव्य जुलूस का आयोजन किया गया जिसमें अनेक आर्यसमाजों ने भाग लिया। दिल्ली प्रा० प्रतिनिधि सभा द्वारा भी नेतृत्व एवं सहयोग दिया गया।

नवीन आर्यसमाज दयानन्द विहार का वेदमन्त्राह

आर्यसमाज दयानन्द विहार दिल्ली में २० अगस्त से १ सितम्बर तक वेदकथा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर १० यज्ञपान सुभाषु के डा० वेदप्रवचन हुए। क्षेत्र की धार्मिक जनता ने प्रगाथ श्रद्धा से अन्तःचक्रण भाग लिया।

आर्यसमाज कृष्णनगर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आर्यसमाज कृष्णनगर में जन्माष्टमी के प्रथम र पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। मन्त्रा प्रधान श्री सूर्यदेव ने श्री कृष्ण के उज्ज्वल चरित्र का अद्भुत जगत को स्मरण कराया। दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किये जा रहे उत्साह वर्द्धक कार्यक्रमों का भी परिचय दिया।

आर्यसमाज सीताराम बाजार दिल्ली

इस धार्यसमाज में डा० वाचस्पति उपाध्याय की मनोरम वेदकथा हुई वेद सप्ताह के हो धर्मगत प्रातः काल यज्ञ का श्री आयोजन किया गया।

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली

महात्मा रामकिशोर वैद्य की गीता एवं वेद की पुनीत सिद्धांशों पर आधारित मधुं सैली ने प्ररक कथा हुई। देवराज्य देवराज्य के बलिदान होने वाले वीरो का भी स्मृति दिवस मनाया गया।

आर्यसंदेश की व्यवस्था तथा लेखों के स्तर में सुधार के लिए तथा वितरण सख्या में वृद्धि करने हेतु एक बैठक जुलाई २१ अगस्त १९८५ को दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड में सम्पन्न हुई। इस बैठक में डा० वर्षपाल डा० गणेशीनाल श्री निम्नलक्ष्मण शर्मा श्री राखेन्द्र दुर्गा श्री विजय भल्ला श्री अद्वानन्द १० यज्ञपान श्री सुभाषु श्री रामचरण दास आर्य, श्री धार्याय रामकिशोर वैद्य श्री वेदव्यास श्री धारासाम आदि कार्यक्रमी धीन विद्वानों ने भाग लिया।

आर्यसंदेश ही वस्तुतः दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार के लिए किये जा रहे कार्यों तथा अन्य मन्त्रा कल्याण के लिए किये जा रहे कार्यों का यथातथ्य चित्र प्रस्तुत कर सकता है। यह इस सत्या का बिजुल है। यह इस सत्या का सक्ष है जो नोनों का ध्यान धर्माकृति करता है कार्यकर्ताओं का निबन्धन प्रस्तुत करता तथा अधिकांशियों एवं कार्यकर्ताओं को प्रवृत्त पथ पर प्रवर्तन होने की प्रेरणा देता है। धार्य संदेश में सुधार की बात प्रारम्भ करने से पूर्व महामन्त्री डा० वर्षपाल ने सम्पादक श्री यज्ञपाल जी सुभाषु का निष्ठापूर्वक कार्य करने और धार्यसंदेश के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए सत्यपात करने के लिए बन्ध्याद दिया और बताया कि यह बैठक अग्रे इस बात पर विचार

करने के लिए है कि धार्य संदेश किस प्रकार मुख्य के शारीरिक धार्मिक और सामाजिक कल्याण के लिए कार्य करे। इस बात पर भी विचार करने के लिए है कि किस प्रकार इसकी धार्य निर्भर बनाया जाये। बड़े-बड़े लक्ष्य रखने की आवश्यकता तो है पर धार्य धर्म की दुकता की भी ध्यान में रखना आवश्यक है। हम सभी हृदय मन्त्र है जब हमारे पंर मजबूत जमीन पर टिके हैं।

हम बातों पर विचार विमर्श के पश्चात् निम्नलिखित निर्णय सर्व-सम्मति से लिये गये।

१ इसकी पृष्ठ सख्या १२ ही होनी चाहिए।

२ समय समय पर विशेषांक निकाले जाने चाहिए। विशेषांक ऐसे आकार में हो कि लोग उसे सजाल कर रख सकें। साथ ही उनकी सामग्री भी सघन हो।

३ धार्य संदेश में विभिन्न स्तर प्रारम्भ किए गये हैं। यह प्रणाली प्रयास है। स्वस्थ मनवर्षी परिचर्या की प्रारम्भ की जाये। इसके लिए डा० विवेकपाल, वैद्य भोकार वल, वैद्य प्रहलाद दात, वैद्य निरानन्द आदि की सेवाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

४ इसकी धार्मिक स्थिति में सुधार आवश्यक है। धार्यसंदेश के व्यवस्थापक, सभा के सभी अधिकारी श्री राखेन्द्र दुर्गा, श्री जयच भल्ला, (बैच पृष्ठ ६ पर)

समाचार सन्देश

जैन ममाज भी आर्य प्रचारक से प्रभावित हुए बिना न रह सका

निजामा (चनबर) स्थानीय आर्यसमाज के वेदप्रचार मन्दाह का सुभारम्भ वैदिक प्रवक्ता डाक्टर आनन्द मुनन (पूर्व नवाब खतारी) ने किया। डा० मुनन ने वेद के सन्देश से स्थानीय जनता का मन मोह लिया, वेदकथा के सुन्दर प्रवचनों से डा० मुनन ने स्थानीय स्तर पर आर्य-प्रचार की योगति को प्रखरित किया। आर्यवर्त तो यह कि आर्यसमाज के विरोधी विचारधारा के जैन सन्तुदाय ने भी डा० मुनन को अपने

प्रसिद्ध तीर्थस्थल देहरा मन्दिर पर आमन्त्रित किया व उनके विचार सुने, डा० मुनन ने अपने उद्बोधन में कहा कि वेद दो धरत वष से सनातन संस्कृति का सन्देश मनुष्य नाम को प्रदक्षित कर रहा है। वेद न नर-बलि को मानता है न पशु बलि को यह एक दुष्प्रचार है। हमें सारे सम्प्रदायों के मोह से निकलकर वेद की विचारधारा को रक्षना है।

दिल्ली १५ प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड,

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह

बिनाक ७ सितम्बर ८२ को साय ७.०० बजे से ११.०० बजे शनिवार को आर्यसमाज आर्यपुरा सक्की मंडी दिल्ली-८ के प्राङ्गण में बड़ी हूमनाय के साथ मनाया गया। जिसमें वैदिक विद्वानों के प्राचार पर योगीराज कृष्ण जी का आशीर्वादित धर्म प्रेमी सज्जनों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। साह्य के श्रीकृष्ण जी के जीवन पर भक्तिभाषी भाष्योचित को गई। योगीराज के चरित से सम्बन्धित प्रश्नजनों का धनोपाय कार्यक्रम हुआ।

जनेक भजन मन्त्रालियों ने कई उच्च-कोटि के विद्वानों ने बिनाका सत्य जनता के मध्य योगीराज का सच्चा भावार्थ चरित मनुष्याना है पचार कर उत्तम भावण किया। इस कार्यक्रम से पूर्व एक बुद्धयुक्त का प्रायोजन किया गया। जिसका सरसकल गुरुहिंस चरित शास्त्री विद्यानरस्यति जी ने किया।

राजकीर धाय मंत्री आर्यसमाज आर्यपुरा सक्की मंडी, दिल्ली-७

प्रांतीय आर्य महिला सभा द्वारा हरितृतीया पर्व हर्ष उल्लास से सम्पन्न

हरितृतीया पर्व हर्षोल्लास और बड़ी हूमनाय से बड़ा गाँव के बिद्यानलन प्राणय में माध्य बहिन सत्यवती जी वि चकता की धाम्य लता ने सम्पन्न हुआ।

प्राय के पर्व के मुख्य आकर्षण है बचपों और नवयुवतियों द्वारा धार्मिक के धार्मिक दौड़ में माय लेना और पुरस्कार प्राप्त करना।

बहिनो ने बहुसंख्या में यथा समय पहुँचकर अपने सगठन का परिचय दिया। किसकारियाँ भरती बचपों की टोलिया फुली नही समाती थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेला लगा हो। परस्पर प्रीतिमोक्ष की धपनी हो बिचा थी।

सभा धार्मिकारियों ने बड़ उल्लाह से भाग लेकर पुरस्कार प्रदान किये। जिसमें सभा प्रभाना सरला जी भवता मान्य बहिन सुशीला जी आनन्द, तारा वैद्य, बाद रानी प्रदीप ह्यादि।

१०० से भी अधिक प्रतियोगिता में बहिनो ने भाग लिया। प्रत्येक कार्यक्रम यथासमय सम्पन्न हो गया इन्द्रदेव ने मधुरी कुमा की। यज्ञ के समय नही-नही बू दो से प्राचीर्वाद देकर फिर विद्यान कर रहे।

सभा समिती प्रकाश आर्या

आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली में बृहद् यज्ञ

शकरपुर शहर के धार्मिक जनो द्वारा आर्यसमाज के प्राणय में विराट यज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें १० वर्षीय शाल्मी बह्ता एक प्रवचन-कर्ता थे। ८ सितम्बर को जन्माष्टमी का पर्व भी मनाया गया जिसमें स्वामी स्वर्णानन्द ने श्रीजन्मो कति-ताभी द्वारा कृष्ण चरित का बखान किया।

(पृष्ठ २ का अन्त)

आर्यसन्देश का सकल्प

श्री सुरेन्द्र हिन्दी श्री सुशोभ महा-जन श्री विमल कान्त शर्मा श्री श्रीमप्रकाश सुनेका धार्मिक आजीवन सदस्य बनाकर तथा विज्ञापन मह-योग देकर दिनवारक आर्यसंदेश के कोष कीवृद्धि में विशेष सहयोग द। सभा के सभी उपदेशक प्रतिनिधि तथा आर्यसमाजों के सभी स्वयं आ-जीवन सदस्य बन और दिसम्बर ८५ तक कम से कम दस सदस्य अवश्य बनायें।

५ आजीवन सदस्यों से प्राप्त धन भक्षण साते में रखा जाये जिसे वर्ष के बाद आर्यसंदेश निमित्त स्वामी कोष में परिवर्तित कर दिया जाये। कक्षा आयाज केवल लक्ष किया जाये।

६ समाचार पत्र के लिए कागज के कोटा हेतु धावेदन पत्र दे दिया जाये। इस कार्य को श्री राजेन्द्र दुर्गा (सयोजक) श्री विमल कान्त शर्मा और श्री सुरेन्द्र हिन्दी के सहयोग से करेंगे।

७ जी. ए. जी. पी. के विज्ञापन प्राप्त करने की सारी धीपचारिक-तायें पूरी की जा चुकी हैं। श्री विमल कान्त शर्मा (सयोजक) इस कार्य को शीघ्र पूरा करेंगे।

८ बिना पुत्र सुगतान के श्राय सदस्य को पोस्ट करने को धनमति

मिल चुका है इसके लिए सभी ने प्रसन्नता यकन की

६ आर्यसंदेश का सदस्यता शुल्क ममान हाते पर शाहको को बा पत्र भेजा जाये उसका भाषा सिष्ट होनी चाहिए

१० धाय प्रतिनिधि सभा की सभी बैठकों में आर्यसंदेश का विषय अवश्य रखा जाये

११ आर्यसंदेश के श्री कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक के लिए श्री सुरेन्द्र हिन्दी (सयोजक) श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री सुशील महाजन, श्री श्रद्धानन्द, श्री रामशरण दास आर्य डा० गगोशीलाल तथा सभी सभी और उपदेशक, विज्ञापन प्राप्त करने में सहयोग करेंगे।

१२ आर्यसंदेश में वंशाहिक विज्ञापन भी विदे जाय। इसके लिए पूरा पाठ्य श्री राजेन्द्र दुर्गा उपलब्ध करायेंगे। सभी आर्यसमाजों को एक परिपत्र भेजा जाये कि उनके यहाँ जो भी शायी हो उन्हें आर्यसंदेश का धार्मिक धार्मिक प्रवक्ता बनाया जाये।

१३ आर्यसंदेश दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का गज है। अब इसमें आर्यसमाज के धार्मिक नेताओं द्वारा सभी की सूचना विशेष सज्जा के साथ प्रकाशित की जानी चाहिये।

बाल्ति पाठ और सभा प्रधान एवं अन्य उपस्थित सज्जनों के धन्यवाद के पत्रदान बैंक ममान है। □

निर्वाचन

आर्य उपप्रतिनिधि ६ भा कानपुर महानगर की कानवर ममा बा धार्मिक निर्वाचन निर्वाक ११ प्रयाग १८-१५ को आर्यसमाज कीसमाज में आ चुकीसास यादव की धर्मशता म सम्पन्न हुआ, जिसने निम्नलिखित धार्मिकारियों निर्वा-चित हुए।

प्रयाग १० विभवान सात्ता उपप्रधान श्रीमती सरला बोधरी
" श्री धामोदर शर्मा
" श्री गोबिन्दाय गुला
मन्त्री डा० हनुमान सिंह पा०एच०की
उपमन्त्री श्रीमती डा० भाषा रानी दाव पा०एच०की
" श्री हरिचन्द्र साहू
" श्री राजेन्द्र शर्मा रज्जवा

कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र शर्मादास
सह डा० धामराज सिंह
पा०एच०की

देखानिरीलक श्री पुतीलाल दाव

हरनाथ सिंह
सक्की
आर्य उपप्रतिनिधि सभा
कानपुर महानगर

स्वतन्त्रता दिवस समारोह

बिडला आर्य गर्ल सीनियर मैकेण्डरी विद्यालय का स्वतन्त्रता दिवस समारोह माननीय वेदप्रकाश मुल्लर की धाम्यलता ने दिनक १४-८-८५ बुधवार को आर्यसमाज बिना लाइ स के प्राणय में बड़ी हूमनाय से मनाया गया। ध्वजारो-हण कार्यकारिणी पावद श्री मुल्लर द्वारा सम्पन्न हुआ। विद्यालय की छात्राओं ने देशभक्ति पूर्ण मार्स-लिक कायकन प्रस्तुत किया। एक छात्रा ने स्वामी दयानन्द की श्रुट देशभक्ति एवं राष्ट्र प्रेम पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि एवं आगन्तुको द्वारा कार्यक्रम को श्रुति-भरि प्रशंसा की गई।

प्रतिपल

बिडला आर्य गर्ल सीनियर सेंके स्कूल बिडला लाइन्स दिल्ली ७




दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

दंत मंजन
लोग यूवत

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि


कौनों का उपयोग



अब नये पैकेज में उपलब्ध

किरीचटूर
महाशिया की हट्टी (प्रा०) लि०
9/44 इण्डियन स्ट्रीट, कोल्लार, तमिल नाडु 639008
फोन 539008 537987 537941

मसूहों की सूखक
गुह की दुर्गन्ध
उष्ण गर्म पानी
सात का रस



एम डी एच
चकण
शिकाकई
पाउडर

एच की एच शिकाकई पाउडर दांतों की बीमारी दूर करता है तथा उन्हें आरामिक बनाता सुनिश्चित व स्वस्थ करता है।

शिकाकई पैदा बनाना दूर कोण काल व काल सर्वथा बड़ी बुद्धि से बनाया गया एच की एच शिकाकई पाउडर एक काल्य मानवारी आरामिक है। इसके कोई रासायनिक पदार्थ नहीं है।

एच की एच शिकाकई पाउडर का नाम है कि निश्चित प्रयोग कीजिये।

निर्माता
महाशिया की हट्टी (प्रा०) लि०
9/44 इण्डियन स्ट्रीट, कोल्लार, तमिल नाडु
फोन 539008, 537987, 537941

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,
हरिद्वार की औषधियां
सेवन करें



गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी
हरिद्वार

शाखा कार्यालय-६३ बसो राजा केदारनाथ,
बाबरी बाजार, दिल्ली-६ फोन : २६६८३८

गुरुकुल
कांगड़ी विश्वविद्यालय

२४/११

ओ३म

साप्ताहिक

कृष्णवर्तो विश्वमार्म

आर्य सन्देश

बुध ६ शक ४४
शुक्र १८ प्रति ४ गे

रविवार २२ सितम्बर १८८६
आषाढ २० शयने

सृष्टि मन्त्र १६७२६४८००००
आशीर्वाद २०० शयने

भाद्रपद २०४२

दशमिनाम्न—१६१
विदेश मे १० गमर ३० बीड

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के कुलाधिपति डा. सत्यकेतु एवं कुलपति श्री सत्यकाम वर्मा दिल्ली सभा द्वारा स्वागत समारोह



डा. सत्यकाम वर्मा

रविवार १५ सितम्बर दिल्ली
आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान
आर्य सभा हनुमान् राड नई
दिल्ली में डा० सत्यकेतु एवं डा०
सत्यकाम वर्मा के स्वागत ममा हे
त आयाजन किया गया। हम पव-
र पर बोलने हुए था राममोपाल
जानवाल ने कहा—यह प्रमन्ना क
शयन है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय

के कुलाधिपति एवं कुलपति अपने जो
गुरुकुल के स्नातक तथा लब्ध प्रति-
ष्ठित विद्वान है। गुरुकुल विश्वविद्या-
लय ने समस्त विश्व को सुयोग्य
विद्वान लेखक एवं वक्ता प्रदान किये
हैं। एक समय तक धार्मिक सामा-
जिक एवं राजनैतिक क्षम में गुरुकुल
के स्नातकों का वर्चस्व रहा। इस
समय फिर हमारे सामने चुनौती है।
वही खोई प्रतिष्ठा। फिर जाने को मुने
प्राणा है। ओ सत्यकेतु जी और श्री
सत्यकाम जो अपने कार्यों और
प्रयत्नों से इस मन्त्रा को उसी उच्च
स्थान तक पत्रवाले में मजबूत हो
मक है। श्री शालवाल ने हमने हुए
कहा—आप दानो के मन में पड़ी हुई
मालाए जिनकी है और जिनकी हकी की
पतिशा है उनमें होत यो का बोध
आप लोगों के रूपों पर है।

सावर्धनिक सभा के काबाध्वंश
श्री सोमनाथ भरवाह ने दानो विद्वानों
की विद्वत्ता और स्वाभाव एवं कार्य

कुशलता की प्रशंसा की तथा गुरुकुल
के भविष्य की कुशल कामना की।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के
प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—यह माना
कि माग दुग्ध है और काटो १ बरो
में भरा हुआ है। कुशलता और
योग्यता इसी में है कि बैधक निबड़
और उत्साहित होकर विपरीत परि-
स्थितियों में भी काय पूरा कर लिया
जाये। इस समय प्रयत्न शयन
नारों का अर्थ गम्कुन के नानान
और भव्य का और गीत है।
गुरुकुल में केवल १० विद्यार्थियों का
होना निग्रति की सम्भीरता की प्रक-
र रहा है। भगवत् और मुकुन्द गजा
तथा धन्य प्रकार का समझाए वहा
श्रवक है। हमारे मान्य कुलाधिपति
और कुलपति हम मन की आशाओं
की विश्वास में वदन पायमें हैं ऐसी
शुभ कामना करता है।

श्री रामनाथ भट्टिक ने सभा
का ध्यान धाय विद्वानों और पुरो

हितो के सम्मान की ओर दिलाया।
दिल्ली आर्य के-डोय सभा के
प्रधान श्री महाशय धमपाल ने स्वा-
गत करते हुए हासिक बार्दाई की और
कहा—मनमें पुनः श्री और सबसे अच्छी
हमारी मन्त्रल जिज्ञा पढति है।
इसका जिनना प्रचार प्रसार होगा
उतना ही हम नृपति के नृपति की बुका
पायम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के
महामन्त्र डा० रामनाथ ने गुरुकुल
का गौरव गरिमा का उद्घाटन करते
हए भविष्य के उद्घाटन हो सकने की
मनन क मन्त्रा को

डा० मन्त्रकनु एवं डा० मयकास
ने अपने मान्य शब्दों में वक्ताओं
की आशाओं अनुपम काय करने
का विश्वास जताया। इस अवसर
पर अनेक शयमान्त्र उद्घाटन
के।

स्य. श्री देवव्रत धर्मेन्दु—एक युग की कहानी का अन्त

श्री देवव्रत धर्मेन्दु का १६ सितम्बर
की निधन हो गया। शुरू-शुरू
जिता की लपटों में युग की कहानी
बारीक से साथ एक युग की कहानी
समोचन हो गयी। जमुना के तीर पर
वैदिक सन्तों की पवित्र आनिया और
श्रद्धा सत्कार ने सम्मिलित नगर
आपस-जो के बीच आनिक बहु सरल
शयन है का प्रतीक कैहरा सेरे

मानस पन्थ पर उभरा। एक-एककर
उनके कार्यों से युगी अनेक स्मृतिया
स्फुरत कर बाँधे जाते लगी।

महात्मा गांधी के असहयोग
आन्दोलन से लेकर स्वामी ब्रह्मानन्द
श्री महात्मा हनुमान् के निर्देशों पर
शुद्धि तथा वैदिक वय के प्रचार
प्रसार के कार्यों तक उनके जीवन की
एक प्रकर मधुर स्मृति है। सत्वाधो
के सिद्धान्तवादी और सत्तावाद से

अलग हुएकर व धर्म प्रचार वेद
प्रचार धाय भाषा के उत्थान
राम्पु निर्माण और युवकों में चरित्र
निर्माण के महान् कार्यों में जगे रहे।
वे दल एवं वय से ऊपर रहे, सबको
ब्रतना प्यार वाढते रहे। सिमाना के
पहाड़ी गाँवों में घूम-घूम कर उन्होंने
वैदिक धर्म का प्रचार किया। साथ
ही पहाड़ी लोगों की अनेक समस्याओं
के निदान का मा. उनका काय स्तुत्य

है।

दिल्ली में गन्तव्य प्रचार प्रचार
क उनके काय में धाय युवक परि-
षद के राय में धायमनाज के मन
के लिए समर्थ और चरित्रवान युवक
तयार करने का उनका सकल्प काफी
दूर तक सन्तन हुआ। एक कुशल वक्ता
होने के साथ और अनेक सम्मेलनों
में अपना निह्मण का व क नाम न के
(शेखर ११ पर)

सुतसंग-वाटिका

जीवन सार्थक और श्रेष्ठ कैसे हो ? आत्मचिन्तन के क्षण

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार

केन उपरि पद मे एक कथा प्रती है। पुष्पी धार ने वसु आकाश प्रादि इन तन्त्रों मे धर्ममय धाम का कि हूय शी सर्वशक्तिमय है। वह अपने स्वामी और निर्माता को भूल गये। उन को जाच करने और उनका धर्मिमान नोचने के लिए ब्रह्म शक्ति ने उनको परीक्षा ले। ब्रह्म ने अपनी शी इई शक्ति को इन पंच तत्वों से गीन किया। प्रब पंचो तन्त्र जन्म एवम् निश्चेष्ट हो गये। उन्हे धर्मो भूल जब जान इई तब उन्होंने क्षमा मागते हुए ब्रह्म शक्ति से प्राचना की। "सके परवान पुष्पी धार तेज वायु आकाश पुन साधन हो गये। ठीक यही स्थिति धारा के मानव की है। स्वामिन ने फस जब ब्रह्म अपने को शक्ति का भण्डार सम्भने नगना है नभी दुख कष्ट प्राप्त करता है।

प्रभु शक्ति का विनम्रता मे स्मरण करते रहना चाहिए फन वह प्रभुन गलित पुन आशुन हा गयी है।

भोष्म की साधना

महाभागी जनिपव के धनु-सार स्वच्छा से प्रभु का जब वरण बृद्ध विनामर्ध भोष्म रण शय्या पर प्रभु के लिए रहसि नय साधना रत पिनामर्ध प्राणी जीवत पर ध्यानादि प्रकाशप्रद उपदेश ध्वनय करने जन समूह एकत्र होना था। इस दीर्घायु शान्तिपर्व से इही सब धनुषम उपदेशों का मयह है। ध्या यातिनक मुक्ति के बग उपाय है। इसके उत्तर मे पिनामर्ध कहते हैं—

आचार्य नदी मयमपुष्पनीर्था, सत्योदका सोलनटा योमि । नवाभिषेक कुंघ पाण्डुपुत्र न वारुणा श्रुति बालनरत्ना ॥

यह ध्यामचिन्तन रूप नदी, जिसके दोनों किनारे मयमपुष्प सत्य-रूपी जल, सोल रूपी घाट है। हे पाण्डुपुत्रो ! वही म्यान करो जिससे धनरात्म्या मुद्र हा बायगा, केवल जल द्वारा पातमशुद्धि नहीं हो सकती।

जीवन मे छिद्र

वैदिक धर्म मे पवित्र जीवन धीर

उमके सर्वेश्वर धीर पवित्रता का साधन हृदय को श्रेष्ठ गुण का भण्डार बनाने पर विशेष बल दिया गया है—

श्रीरम यमने, छिद्र वक्षो हृदयस्य मनसो दातिनृष्ण वृहस्पति-यनहृत्सु । शान्तो भवतु भुवनस्य यमपि ॥

यजुः ३६३

इसका अर्थ करने हुए महर्षि दयानन्द 'धार्मोचिन्तन' मे कहते हैं—हे परमेश्वर ! मेरे हृदय (प्राणात्मा) मन बुद्धि, विज्ञान विद्या धीर सब इन्द्रियद्रव्य इनके छिद्र के विचार इनको निरुक्त करके मलय, धर्मोदित मे स्थापन ध्या हो करे। ध्याप सब भुवनो के पति है। इमो-निध ध्यापसे वार वार प्रार्थना है कि सब दिन हम लागो पर कृपा दृष्टि से कल्याणकारक हो। हे परमात्मन ! ध्यापके विना हमारा कल्याणकारक कोई नहीं है। हमको ध्याप हो का सब प्रकार का भोगोसा है, जो ध्याप हो पाकरे।

पंचमे नौका मे छोग छेद भी डूबी देने मे मय्य हो नकना है वैसे ही मन व आत्मा मे भी कोई स्वल्प पाप भी धीरे धीरे बटना हुआ जीवन नौका को डूबे देने मे समर्थ हो सकता है। महाभाग मे नारद श्री कृष्ण महाद मे नारदमुनि पाप छिद्र के निष्कासन के दो प्रकार के उपाय बताते हैं—

दो उपाय नारदमुनि द्वारा

१ परिमार्जन और धनुमार्जन । पहले प्रकार के उपाय के अन्तर्गत क्षमा सरलना और कोमलता के द्वारा पाप निवारण होता है धीर दूररे साधन धनुमार्जन के अन्तर्गत सेवा मकार, विनम्रता धीर समर्पण द्वारा हृदय मे मद्गुणों के प्रति प्रीति, श्रद्धा विश्वास के मन्त्र उदित धीर परिवर्तित होते हैं।

अर्थ शीघ्र सर्वप्रथम

जीवन की प्रथम पवित्र बनाने के लिए सभी ऋषियों ने जितने साधन बताये हैं उनमे मुख्य धर्म 'शीघ्र' है।

सर्वेश्वर शीघ्राना धर्मोचैव परम स्मृतम् । यो धर्मेन युचिह्म भुवि न मुद्वारि भुवि ॥

सब प्रकार की शुद्धता मे धर्म युचि बर्णन धन मयस्ति इत्यादि की शुद्धता सर्वोपरि है। जो धर्मिन इस शुद्धता का पालन करता है वही वास्तविक शुद्ध है।

मनु कहते हैं कि जल से शरीर शुद्ध होता है म को पवित्रता सत्य व्यवहार, आत्मा की पवित्रता धर्मात्मविद्या धीर नपौमय जीवन तथा विचार धीर मानसिकचिन्तन के साथ स्वाभाव तथा शास्त्र अध्ययन से होनी है। मुषिष्ठिर के एक प्रश्न के उत्तर मे भीष्म करते हैं कि तीर्थों मे श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय ही है। पवित्र वस्तुओं मे शक्ति पवित्र विशुद्ध हृदय ही है। श्रेष्ठ जिसे आचरण मे लाये वह आचरण सर्वश्रेष्ठ है। इसी-लिए गीता मे भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि श्रेष्ठ गुण जिस प्रकार आचरण करते हैं अन्य व्यक्ति उसी का

धनुकरण करते हैं।

महाभारत मन्वन्धी निगम वाचन जीवन पद्धति कतिपय मन कवीर क शब्दों मे शीघ्र पवित्रता के माय पर चलने के लिए महा साधवान धीर आगरूक रहना होगा। कवीर कहते हैं—

तेरी गठनी मे लागे चोर बटो-हिया का सोवे। जागु मवेश बाट धनेरा फिर नहो लाग जोर। प्रब सागर डक नदी बहत है, बिनु उनरे जाये जोर।

कहुत कवीर मुनो भाइ साधो ! जागत ऋज भोः ।

वेव के शब्दों मे—

जो जागना है उसे ही ऋचाएँ चाहनी है जो जागता है उसे ही सामवेद प्राप्त होना है, जो जागता है उसे ही प्रभु करते हैं कि मैं तुम्हारा हो गिरूँ । महर्षि दयानन्द ने विष्णु-पान करके भी इसे जगता वर ध्याप हम उस ऋषि की धनुमवागी सुन पन्कर भी नहीं जाग रहे हैं। जाग कर ही हम ऋषिभूषण से मुक्त हो सकते हैं।

उठ जाग जाग रे स्वाभिमान

उत्तम चन्द्र शरर "मं ७०

मेरे मानस की धमर ज्योति, मेरे जीवन के अमर प्राण

उठ जाग

मेरे वन बँव का न पार, तेरी शक्ति का क्या बलान ? तेरे जागे की झुकुटि से रिपुखल धर धर कम्पायमान

उठ जाग जाग रे

तू श्री कृष्ण का चक्र, शिवा की धर्म राम का धनुष बाण राणा प्रताप का कवच तू ही, गोविन्द सिंह का चण्डीमान

उठ जाग

तू जागे तो जीवन जागे, तू सोये तो नर मृत समान तू प्राणी का प्रेरणा स्रोत, तुझ बिना प्राणी केवल मसान

उठ जाग

तेरी झुकुटि से जगता है, मानव का सुल बँव महान् तुझ बिना अमृत भी गरल तुल्य, तू देती विश्व भी सुधा पान

उठ जाग जाग रे स्वाभिमान

आर्यवीर दल की आवश्यकता

लेखक—श्रीमप्रकाश त्यागी

आज ससार ग्यानिन का घर बना हुआ है। पशुता हम में मुलकर ताड़बल नृत्य कर रहा है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को निलने का प्रयत्न कर रहा है। एक सभ्रदाय दूसरे सभ्रदाय का विनाश करने पर तुला है। हम पागलपन में भगवान् की मूर्ति का सर्वश्रेष्ठ देव 'मनुष्य' का मूल्य दो कीड़ी कर दिया है। ईश्वर पुत्र मनुष्य के जीवन से धाज, लोग बनाए हुए पत्थर के भवनो, मन्दिरों और मस्जिदों का मूल्य अधिक समझते हैं। मान्-शक्ति जिस को गोद में बैठकर धमृत पिया है, आज लोग उसी की टाप पकड़ कर नाजारों में घसाटे फिरते हैं और उसे नाना प्रकार अपमानित करते हैं। बच्चे और बूढ़ तक इन मुशानि के ईश्वर बन रहे हैं। इतना ही नहीं, इस पागलन का प्रचार करने वाले धर्मवा इन पागलों के सरदारों की लोग देवता समझते हैं और उन्हें बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ (Politician) कह कर पुकारते हैं। आज जो व्यक्ति जितना ही बड़ा मक्कार, भूठा, धोखेबाज तथा निर्दया होता है, वह उसना हा बडा नेता समझा जाता है। ये पूर्व नेता अपना पशुता पर राष्ट्रीयता तथा धर्म का मुलम्मा (पानी) बढाकर साधारण जनता का धर्मवा बना रहा है।

आलोच यह सच क्यों हा रहा है? इसका विराज क्यों नहीं किया जाता? आज क्या बड़-बड़ सभ्रदायक धर्म पथों में इस पशुता का प्रोत्साहन दे रहे हैं? इन सभ्रदाय प्रश्नों के उत्तर का साज से मिले मनुष्य ध्यानावस्थित होकर विचार करे ता वह एक हा परिष्कार पर पहुचगा कि आज ससार में ऐसे श्रेष्ठ वार पुरुष का प्रभाव है जा सत्य को रक्षा के गुणो का दमन कर सक। दूसरे शब्दा में आज ससार म धार्मिक तथा धार्मिकों दब का अभ्यास है। इसा नाम 'विशेष स इव हानि' के कारण बहुत स मानियों का शायद सत्य यह बात बलगेगा परन्तु वात सत्य है। आज नहीं हा कल उन्हे यह सत्य स्वीकार करना हा पडगा। नाम में भले ही कोई परिवर्तन करने को चेष्टा करे परन्तु इस सत्य स बहुत कदापि विमुख नहीं हो सकता।

ससार म मुख्यतः धार्मिक लोग प्रभाव के व्यक्ति माने जाते हैं। पहले गुप्त, दूसरे शरीफ हिज्जदे तथा तामर वार पुरुष गुणो को परिभाषा प्रभाव को दमन स्वरूप का बगुन में बाधित में हा कर चुका है। ये स्वाभाविक हैं और प्रभाव तथा गुण सत्य स अर्थ सत्य तथा अनुचित उपयो से करते रहते हैं। राष्ट्र-उपनिष, धर्म रक्षा तथा विश्व शांति इनके मुख्य नारे हैं, और इन्हीं अर्थ नारो का धाज म ये अपने समस्त कुसम करते हैं। इन गुणो के एकपेशवा ही नही मरिनु सांभोगिक सङ्गठन बने हुए हैं। इन के पास प्रयत्न स स्यात् माधन तथा सनाद हैं सभी के स्वरूप धर्म में टकराते रहते हैं। इनके परिष्कारमस्वरूप समय-मस पर युद्धादिन भ्रष्टवो रहती हैं।

शरीफ हिज्जद ब है, जिनके हृदय म भलाई से प्रेम तथा बुराई से घृणा है परन्तु उनको यह घृणा उनक हृदय को सीमा का कमी उल्लङ्घन नहीं कर पाता, और ना ही उस में उल्लङ्घन करने का साहस है। वे गुणो को बुरा ही नहीं समझते अपितु हृदय से उनका विरा चाहते हैं, परन्तु उन में गुणो का सामना करने का साहस नहीं है। वे शुरु से भय खाते हैं, न उनका कोई सङ्गठन है, ना ही इनके पास स्पेष्ट धन तथा साधन हैं।

तामर वार पुरुष है, जो शुरु का कुछ नहीं समझते। जिन में विरो-धात्मक शक्ति कूटकृत कर भरी है। परन्तु इनके हृदयों में गुणो के विनाश को उमङ्ग नहीं है। इनमें विषा का प्रभाव है, जिसके परिष्कारमस्वरूप वे गुणो का बालाकियों को न समझकर उन्हे उनके सत्य बन जाते हैं। इन का शोषण उनका शक्ति का दुस्प्रयोग कर रहा है। धन तथा साधन इनके पास हैं ही नहीं, जिनके कारण प्रत्या समर्पित होना कठिन है। दूसरे जब इनके हृदय ही भाव शून्य हैं तो फिर इनके सगठन का प्रश्न ही कैसे उठ सकता है।

अनुपात के विचार से ससार में गुण्डे पिचहतर, शरीफ हिज्जदे बीस तथा वार पुरुष पांच प्रतिशत हैं। इस प्रकार आज दुनिया में गुण्डा का एक-छत्र राज्य है। इन्हीं के दमन का प्रश्न आज ससार के भले सम्पूर्णों के मस्तिष्क पराट रहा है। यह बात रहता के साथ कही जा सकती है कि इस समस्या का हल शरीफ हिज्जदे या शुरु वार पुरुष कदापि नहीं कर सकते। ससार को आज ऐसे पुरुषों की आवश्यकता है, जिनके हृदय मनुष्यता से भरे हो। जो धीरा धीरे जैने दाँ जिन का नारा हो। भ्रम्या तथा प्रत्याचार का विरोध ही नहीं अपितु इन का विनाश करने का जिनमें साहस हो। अपने इस सत्य का प्रति में जिन्हे अपने सर्वत्र को बाजो लागने की उमङ्ग हा, बर्षान ससार को ऐसे श्रेष्ठ वार पुरुषों की आवश्यकता है, जिनके हृदय और मस्तिष्क दोनों ठीक हों, बुद्धि तथा शक्ति का जिनमें समन्वय हो।

आवश्यकता है। आज एक ही देश के नही अपितु मवार भर के श्रेष्ठ पुरुषों के एक हठ सगठन की आवश्यकता है, जिस के द्वारा मवार को गुण्डो से रहित करके विश्व शांति की स्थापना की जा सके।

ऐसे ही श्रेष्ठ वार पुरुषों के सगठन के लिए 'धार्मिक' दल की ग्यन्ता हुई है। इस का यह नाम भी इसी सत्य की दृष्टि में ग्यन्तक रखा गया है। मेरा ख विश्वास है कि इस प्रकार के सगठन का नाम इस से अधिक प्रख्या और ही नहीं करेगा। यह नाम अपने तथ्य की पूर्णतया व्यक्त ग्यन्ता है। धार्मिक वल के अग्रपोष भी इसी सत्य को प्रति करते हैं। जैसे—

(१) वैदिक धर्म की जय हो।

(२) धार्मिको जागो।

(३) मसार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो जाओ।

इन प्रकार ससार की गुण्डो के दमनार्थ एक मुष्ट धार्मिक दल की आवश्यकता है, जिन में प्रत्येक भले वार पुरुष को भाग लेना चाहिए। यदि भले पुरुषों ने अपने को संगठित न किया तो इनके बडे कुपनिगम होगे। याद रहे आज गुण्डापन अपनी सीमा को नाथकर पशुता पर था गया है। एटम बम जैसे भयकर शस्त्र का महाराज लेकन पशुपता क्या नही कर सकती। सचमुच आज मनुष्यता सङ्कट में है, यदि इनको रक्षा न की गई तो फिर बचे बचे भले व्यक्तिगो को भी विश्वन ही इसी मन्दरी की बड का सहारा लेना पडेगा। इसीए धार्मिको धार्मिको दम सर्वत्र धार्मिकों में ऐसे सगठन की ग्यन्ता करके विश्व को सच्ची शांति का समन्वय मुताए।

धार्मिक वल के कर्तव्य

आर्य वल के दो महान् कर्तव्य हैं—

(१) धार्मिक धर्म, धार्मिक जाति धार्मिक धर्म सङ्गति को रक्षा करना।

(२) समाज में सेवा एवं प्राम्दस्यता का धार्मिक उपनिगम करना।

प्रत्येक धार्मिक रक्षा को जिनेगो धर्म है। परन्तु उनमें कर्तव्य का पालन एक व्यक्ति कैसे करे यह विचारणीय है। इन गुण्डे जव बरिद वर्ण व्यवस्था पर हलियान करते हैं तो हमरो यह कठिनाई रह हा जानी है।

धार्मिक जाति एक योडा जाति रही है। जिन में कार्य धीरे मुनिगो की दृष्टि से चार वर्णों को स्थापना हुई को। इन वर्णों व्यवस्था में विद्या प्राप्ति और उसका उपयोग (प्राम्दकारादि) ब्राह्मण के हाथ में सोपा गया। रक्षा और सामन क्षत्रिय के अधिकार में दिया गया। समाज का भरण-पोषण भी आर्थिक व्यवस्था (Supply Department) वैश्य जाति को मिली तथा समस्त समाज को सेवा शुरु वर्णों के व्यक्ति करे, ऐसी व्यवस्था की गई। प्रत्येक वर्णों के कर्तव्य निर्धारित करने का धर्म यही था कि प्रत्येक वर्ण में चारो वर्णों के गुणों के समन्वय के साथ साथ प्रपता एक गुण विशेष रूप से होना चाहिए धर्मोपेन एक ब्राह्मण मान, तप त्याग के बल्युष के साथ रक्षा, पोषण और सेवा के भाव भी अपने में धारण धारण करे। क्षत्रिय में रक्षा और सामन की प्रमुख भावना के साथ-साथ ज्ञान, पोषण और सेवा भाव होना आवश्यक है। वैश्य के धन्दर उसके पोषण गुण की प्रमुखता के साथ-साथ ब्राह्मण धर्म का ज्ञान, क्षात्र धर्म की शक्ति और शूद्र धर्म की सेवा भावना भी हानो चाहिए। इसी प्रकार शूद्रों के सम्बन्ध में ममर्मे।

जब हमें बरिद वर्णों व्यवस्था द्वारा यह स्पष्ट हा जाता है कि क्षत्रिय के धन्दर रक्षा और शक्ति के गुणों को प्रमुखता के साथ सेवा विद्या, पोषण और सेवा के गुण भी होने अनिवार्य हैं तो सेवा और रक्षा का समन्वय सेवा पालन किस प्रकार आर्य वल के कर्तव्य है, यह स्पष्ट हो जाता है। धार्मिक वल धार्मिक जाति की क्षात्र शक्ति है। यदि यह शक्ति केवल रक्षा ही में व्यय हो तो रक्षा कार्य के प्रभाव में इस शक्ति का दुरायोग प्राप्तिकता में भी हो सकता है और निर्बली के शोषण में भी लग सकतो है। क्षात्र शक्ति का दुस्प्रयोग न हो। इसी भावना में क्षात्र धर्म का क्षात्रि का समन्वय सेवा एवं प्राम्दस्यता के साथ किया गया है। सेवा में विनम्रता की आवश्यकता होती है, धन एक क्षत्रिय में जहा विरागो के सम्मुख रहना पड़े जाये वहा दोनों एक दुस्रो के सम्मुख सेवा को विनम्रता भी दिखाई दे, यही धार्मिक क्षात्र धर्म है।

अतः धार्मिक वल दल में इन भावना को बल मिलना हो चाहिए कि धार्मिक वल को प्रमुख कार्य धार्मिक धर्म, धार्मिक जाति और धार्मिक सङ्गति को रक्षा करना तो है ही परन्तु धार्मिक जाति की रक्षा में विरोधों के सम्मुख रहता का परिचय देते हुए धार्मिक जाति के साथ विनम्रता का बर्तव्य भी होना चाहिए। इस विनम्रता के प्रभाव में ही बर्षापन का अहङ्कार पंदा हो जाता है। प्राय सेवा का प्रमुख कार्य तो शूद्र वर्णों के व्यक्ति ही करेगे परन्तु यदि आवश्यकता पडी तो सेवा काय तथा रक्षा के कार्य का उत्तरदायित्व भी धार्मिक वल पर है। इन कर्तव्य को प्रत्येक धार्मिक वल पर पहिचाने। यदि कीर्ति धार्मिक वलसे को पायी मिलन है, यश को मिलन देता है। धार्मिक, पानी, प्रभाव धर्म धार्मिक में फसे हुए व्यक्तिगो की प्राण रक्षा सेवा कार्य करता

100

तरुण मंच

उद्बोधन आर्य वीरों के लिए

रामाज्ञा वंरामो

सचसच—आर्य वीर दल विहार



युवा पागो राष्ट्र को नवसे शक्ति
शाली शक्ति जगता है। इस शक्ति का
क्षय राष्ट्रीय शक्ति है। शक्ति आपका
है। आप शक्ति के प्रतीक हैं। हमारी
एक मजबूत मस्तिष्क है। पर वह क्या
है? आप इसका बलन नही कर
पाते। इसलिए कि आप अपने मस्तिष्क
से परिचित नही हैं। आप स्वाभाविक
हैं। बिना इसके ज्ञान कि स्वतंत्रता
क्या है? आप जानिक लवचा-भा।
के साथ है। बिना बहु ज्ञान कि घन
क्या है? आप जीवित, है जिना यह
जाने कि जीवन क्या है। आपको इस
का सही बोध होना चाहिए।

आप हम सभी मिनकर अपने
महान् कृत्यों के पद पर कदम से
कदम मिलाकर चलना पड़ेगा।
आप यह तो जानन ही है कि 'ऊठे छोटे
सोते मिलकर' बड़ी नदी बन प्य लेते
हैं। सभी दिशाओं से धारा मन्द-मन्द
समीर मिलकर नौकाओं पवन का
रूप लेता है। परो ऊँछ वायु कर
उड़ते हैं और उससे वे निर्भरता का

अनुभव करत हैं। आप देख रहे हैं
विश्व की परिस्थितियाँ बदल रही हैं
न स्थितियों में सुधार का निना त
आवश्यकता है। ऐसे सुधार और
परिवर्तन की जहाँ मानव मानव का
शोषण न कर सके। हमें सामाजिक
शासन के विरुद्ध आमन्त्रित क्रान्ति के
लिए शारीरिक मानसिक तथा
सामाजिक शक्ति की आवश्यकता है।
इसके लिए हम अनेक मायना का
दोष-जताना होगा।

समय का स्वर है कि न - प्रलो-
भनो से दुः हमें नास्तिक त्व के
दूषितत्वकागे से वचक शक्ति के
मूल भरे पन पर ज्ञानित पन पर अग्र-
सत्ता है।

चलिए हम एक साथ मिलकर
पवित्रबद्ध होकर पूरी सावधानी के
साथ अपने निश्चित लक्ष्य की धार
बढ़।

आप मुनिए, दूर सुदूर दिशाओं
स अभियान की ओर की बनि अनु-
सूचन हो रहा है।

चलिए, जिसकुल शोध चलिए।
एक निश्चित उद्देश्य निश्चित लक्ष्य
आपकी समिकन प्रताप्ता कर रहा
है। यह सम्भव है कि धाक की परि-
स्थिति आपका जीवन माय सकता है।

मनिए निम्न और निम्न मन्त्री
अपने को -संग करने की भावना
के लिए आगे बलिए। यह भी सम्भव

है कि आपके मायना की वनिबेदी
पर अपना साथ - जग पड़ लकिन
गुठ सामाजिक अनुपास्य आपके
भीतर वर्तमान और मयप्रेण की
भावना चाहता है। आप अपने को
सादर मनीषित कर। राष्ट्र के लिए
सनाज के त्रिग धीरे मानवता के
लिए। बिना के अनुभव ज्ञान वर्त-
मान की अनुभूति आपके लिए अग्रय
कोष होगा।

आइए जिन आगे बढ़िए।
हमारा धन भी ग और स्पष्ट है।
कितने साधन आर्य वीरों हैं जो हमारे
साथ धर्म पद - जतने को न्याय
है। राष्ट्र के लिये के लिए मान-
वता के बहुमुखी विकास के लिए,
विशाल और क्रान्तिकारी कार्यक्रम
आपके मंगल है। इसकी सम्पूर्णता के
लिए यह विस्तृत अनुश्री और आदेश
पत्र है।

आइए हम एक मूक के भीतर
बधकर घोषित कर। मया क शब्द
परमो एक हो जाभा ऊँच ना विज-
नायम। जहाँ भा हो अपने को न-
ग्निक करो और कायारा कर। हम
मभी मुन्सारे साथ।

आप वन्धुओं नानय। नवार
धोरे धोरे कनि समस्याओं से घिरता
जा रहा है। कष्ट घिर गया है।
विश्व की मारी समस्याओं के मना-
वाल और निदान का सम्पूर्ण उत्तर-

दायित्व क्षतिवशों म प दयानन्द
जी ने आर्यसमाज का मुमुद किया
था। महर्षि ने उसके लिए व्यापक
रूपरेखा प्रस्तुत की थी। ससाज का
जटिल समस्याओं के नमून विरास
के लिए जिन कुशल भावी की आर-
वश्यकता है, वे हमारे लिए आर्यवीरों
के पास हैं। नये विश्व के निर्माण के
यज्ञ में आर्यवीरों का प्रमुख स्थान है।

आर्य वीर दल राष्ट्र के विकास
के लिए हृदयकपी तरणों का एक
संगठन है। जो मात्र लाठी चलाते
वालों का व्यायाम करने वालों का
संगठन नहीं है। यह मानवता के हिन
में उन अकुलते प्राण के आर्य वीरों
का हृद संगठन है जो मानवता की
सेवा के लिए अपने जीवन की साजी
लगाता रहा है। यह आर्य वीर दल
मात्र संगठन या सस्था नहीं यह एक
आदर्श है। दानवता के विरुद्ध कानि
की ज्वाला है। अनायास तथा कुरा-
नियों कुचिवाओं के विरुद्ध धनकनी
आप है। अन्तर्गत का मयक कर्मजो-
का म्हात्मा है।

आर्य वीर दल विराम नहीं
अभियान का मयक है। उसके मय
प्राणिनीय आर्य जनि है। मभी
जाति की विनाश की धीरे नहीं
निर्याण की धीरे अनुभव हो है।
इस प्रकार आर्य वीर दल एक प्रक्रिया
है और साधन भी आर्य दल वर
यज्ञ है और धार्मिक है।

किशोर मंच

इन्द्र-विरोचन

बल-वीर शास्त्री



देवताओं में सबसे बड़ा इन्द्र था।
देवों (राक्षसों) में सबसे बड़ा
विरोचन था। एक बार विरोचन
और इन्द्र आत्मा और परमात्मा के
विषय में बात करने लगे। दोनों की
मन्य में कुछ भी नहीं था। वे खूब
मोक्ष लगे। अन्त में दोनों ब्रह्मा जी
के पास गये। ब्रह्मा जी ने पास
बठाया। इन्द्र जिसकुल सारे कपों में
धा और विरोचन ने राजाओं के
काष्ठ पहन रखे थे। उन्होंने ब्रह्मा जी
से कहा— हम आत्मा और परमात्मा
के विषय में कुछ बताइए। भा मा

क्या है धीरे परमात्मा के साथ उस
का क्या सम्बन्ध है? प्रजापति ब्रह्मा
ने कहा कि पहले दोनों एक वर्ष तक
ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने के भरे पास
रहो। फिर तुम्हें उसके विषय में
बताऊंगा। दोनों ने ब्रह्मा जी की
बात मान ली। एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य
का व्रत धारण करके फिर दोनों
प्रजापति के पास गये ब्रह्मा (प्रजा-
पति) ने उन्हें एक कठोरा विचार और
कहा—जाओ देखो इसमें तुम्हें क्या
दिखायी देता है।

दोनों ने कठोरे में देखा। उसमें

इन्हें शरीर की छाया दिखाई ना।
उन्होंने कहा—कठोरे में हमें शरीर
की छाया दिखाई देती है। हमारे
दाढ़ी, मूँछ, केश, कुण्डल मुकुट आदि
दिखाई पड़ते हैं।

इसके बाद प्रजापति ने उनके
वस्त्र उतारवा दिये। उन्होंने फिर
कठोरे में देखने के लिए कहा। दोनों
ने फिर देखा। उन्हें फिर से शरीर
की छाया दिखाई दी उन्होंने फिर
प्रजापति से जाकर कहा कि शरीर
की छाया दिखाई देती है। प्रजापति
ने कहा— यह शरीर ही ब्रह्मा है।

यह बात सुनकर दोनों अपनी
राजधानी लौट गये। ब्रह्मा (प्रजा-
पति) को बात याद करके विरोचन
तो अपने शरीर की सच कुछ सम-
झने लगा। वह मूक अन्धता वाता
अन्धता पहना और शरीर की मजा
करने लगा। उसके साथी भी ऐसा ही
करने लगे और आपस में मगड कर
नष्ट हो गये।

इन्हें ने ऐसा नहीं किया। उसने
आत्मा के बारे में सोचा, उसको समझ
में नहीं आया कि शरीर ही 'कस'
(पृष्ठ १९ पर)

महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द
दोनों को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई

डा० कमल किशोर गोयनका

भारत के प्रथमिक काल के इतिहास के सन्नीसी शताब्दी धनक कारणों के महत्वपूर्ण है। एक प्रमुख कारण यह है कि इस गद्यनी के धनक युग पुराने वाणिज्यिक सुधारकों विद्वानों जनताओं प्रादि ने न सिवा घोर देश की छोटी घोर दासता के जकड़ी जनता को जाग्रत किया। ऐसे महत्वपूर्ण के महत्ता वाणी घोर स्वाधी अद्यान का नाम इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णशरीर के प्रकृत है महा माणी घोर स्वाधी अद्यान दो ऐसे युवप्रपण ए ज हिने धनपे धनपे का जे के कतिन न न कर दी है

स्वामि ब्रह्मानंद का जन्म २९ फरवरी १८५५ तथा महात्मा गांधी का जन्म अक्टूबर १८६९ को हुआ। रसिकार स्वामी ब्रह्मानंद स्वामी स लघुमय १२ वर्ष की उम्र में स्वामी ब्रह्मानंद जन्म १८५५ में बरेली में था। वे स्वामी इंदर प्रसाद या य श्रवणी जिजाभाई को जानते रहे। तब गांधी प्रारम्भिक पाठशाला में गया प्रवेश करने थे। स्वामी ब्रह्मानंद धर्म मुद्रा राम मन १८८६ में धारमसभा के विधिवत सदस्य बने तब गांधी नवा कक्षा के छात्र थे।

गाथा मई १ ६९ में एक बैरिस्टर
के ससियन से भारतीयों का मुकदमा
लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका गया तो
उस समय तक मुशाराम धायनमाज की
सम्पूर्ण गतिविधियों पर छा गया और धाय
प्रतिनिधि सभा के प्रधान बन ।

गांधी दक्षिण अफ्रीका में कई भारतीय धर्मसमाज के प्रचारकों के सपके धर्म और उनके धर्म त्याग एवं देशभक्ति को दखकर व इतने प्रभावित हुए कि जुलाई १९०५ में जब धर्मसमाज के प्रचारक लिए आई परमानंद दक्षिण पन्चे गो गांधी ने उन्हें जोहानिसबर्ग में मन्त्र सम्मेलन किया।

इधर भारत में स्वामी श्रद्धानन्दन
१६ नवम्बर १९८८ में प्रायः प्रतिनिधि
सभा के माध्यम में गुरुकुल स्थापना का
प्रस्ताव स्वीकार करा दिया था और धन
एक प्रयत्न में मन १ २ में गुरुकुल
वागडो की स्थापना करवायी।

महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में
भारतीय कृषियों के सम्मान एवं अधिकारों
के लिए मन १० में सत्याग्रह आरम्भ

किया यह जन प्रादोलन चरना देना बिना परव ना केरी लगना और व्यापार करना माने पर पजीकृत प्रमाणपत्र न दिलाता धगठो की छाप देने से इकार करना और नटाल की सीमा पार करके टासवाल मे प्रवेश निषध का उत्सखन करना धादि अनेक रूपी मे चम रहा बा ।

स्वाभो अद्यान को वस ध्यादोलन
की जानकारी भिखी दीर - यह ही
तन हूरा कि गांधी के तत्व मे सह
जाने वाले स लय प्रह ध्यादोलन
वन की प्राप्यकता । स्व भी अद्यान
मे नृत्त त मुक्तल क छात्रो क हूरी के रूप
मे काय करन यम सप्रत करने की प्रथा
की इत प्रकार सप्रतीत वन मेरे प्रिय
मद सन्कोषन मे वन के साथ गांधी की
भजा

स्वामी गङ्गानन्द श्रौर वृक्षी के प्रथम परिचय का यह कहानी स्वयं महाभागाशान यग षष्ठिया के ६ जनवरी १९२७ के प्रक मे स्वामी जी के स्मरण शोधक से प्रकाशित की ।

याची जा ने अपने सम्मरण में लिखा
स्वामी जी ने मुझ-जापत्र भजा था वह
हिंदी में था । उन्होंने मुझ मेरे प्रिय भाई
कहकर सम्बोधित किया था "तब बात न
मुझ वी श्रीराम का प्रसी बनाना दिया ।
इस प्रकार इस छोटे से नम्रक ने जो
सम्बन्ध बना वह स्वप्न यद्वातद के
गह्वर होने तक धनिक एवं आत्मीय
सम्बन्धों के रूप में चलता रहा ।

महात्मा गांधी के श्रमिक धरणी का स
पहल मंच पर स्वामी भ्रमरानंद ने उनको
माहौल में मुक्त करवाया १५ अक्टूबर
१९५० को हुआ। गांधी १५ जनवरी १९५१
को दरिद्र प्रकाश के बरफ में बरफावा
एवम् शीत शान्तिनिकेतन में महात्मा
गांधी का एक ठाकुर से मिली। १५ अक्टूबर
को हरिद्वार में प्रवेश किया। गांधी को
स्वामी भ्रमरानंद ने अपने श्रमिक मिलाने
का प्रयत्न एक एम्प्लूय को है। बिहारी
गांधी को यह सलाह दी थी कि
जाने पर करके के लिए महान्त
सुख प्रयत्न करने चाहिए इन तीन महात्मा
सुखों में एक साथ भ्रमरानंद भी थे।

गांधी ने भारत जाने से कई मास पूर्व
२७ मार्च १९१४ को नेटाल (दक्षिण
अफ्रीका) से स्वामी श्रद्धानंद को पत्र में
एंड्रयूज के सुभाव और उनके दखन की

भावनी उल्लासता का नखल फिरोता महाभूमि
 पावने में प्रिय महू या की लसोहरों की
 गायो पने वो लिल्ला की एगुमर नम
 धारुके नम की को काम के नम के जनाता
 चुके । इतलए एते महा भवता
 सुके भजनदी को लिल्ला रह । धागा
 हे इत लसोहरों के प्रिय धार प उमर नम
 करके कथीय में कीर की एगुमर नम
 की धार धोर धारुके काम के बारे न
 बचा को उमर नम की लसोहरों करत
 रहे । की एगुमर नम मरु मह नीय
 साया धा कि मुदुले रन रन धागा ठाकर
 कीर की सुदीन कनार न रन धागा
 किलना धारिक प्रयाय पहा हे । उनसे मय
 पने हे कि धारुके धारियो में सया
 प्रहिये ने लिल्ला कनार काम किना धा
 उठरी मुदुलन की बीय के इतने मुदुलन
 र न लिल्ला कीय हे कि यह प लिल्लते
 सयन लल्ला हे कीय में मुदुलन में
 पन धागा । ए एगुमर नम नेरे नम
 उल्ल कीर की धागा की देखे कीर इत
 नम्या की प्रयाय भारत न चीन नमाम
 नम्या की प्रति नमामा प्रष्ट करती की
 उठती प्रियधामा नम की

महर्षा गांधी के मुक्तक कवि
पन्थन से पहन मगनलाल गांधी फोनिकस
पाठशाला के २५ छात्रों के साथ बहा पड़ु
चुके थे गांधी न = फरवरी १९४३ का
पत्र विलकर स्वामी 'अनन्त' का बच्चा
की प्रथम दन तथा उनके साथ परिश्रम
करने के लिए बय र शिष्या धार लला
विना प्रयत्न ही प्रपके विक्त पड़ु
करा प्रपके बरला म सिर कुकाना मेरा
नरुन है।

माघी अप्रैल १९१५ को गुरुकुल कागशी पंच जहाँ स्वामी श्रद्धानन्द की उपस्थिति में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने उनका स्वागत करते हुए मानपत्र भेंट किया।

पायी न घपने उत्तर मे घब बातो
क साथ स्वामी प्रधानद द्वारा उठरे भाइ
कहने की बात का विशेष रूप से उल्लेख
करने हुए कहा महात्मा जी मे मुझ
घपने एक वचन भाई कहा है उसका
मुँह बने है । कृपया धारा लोग यही
प्रमाण कर कि मैं उनका भाई बनने के
योग्य हो सक । मैं २० वष बाद घपने दे
मे धार्या हूँ मैं उनको सलाह देही दे सकता
मैं तो भावदखन प्राप्त करने धार्या हूँ
धीर की भी बाधुप्रति की देवा मे वक्त

हैं ऐसे प्रत्येक प्राणी के सम्मुख मुझने के लिए तैयार हूँ। मैं अपने देश की सेवा में प्राण देने के लिए तैयार हूँ। अब मैं विदेश नहीं जाऊंगा। मेरे एक भाई (लक्ष्मीदास नाथ) चल बसे हैं। मुझ प्राणा है कि महामा जी उनका स्थान ले लें और और एक भाई मारेंगे।

स्वामी अज्ञानन्द ने माई के नाते
माता धारीबीब देते हुए कहा: मनु यत्र
सुखक प्रसन्नता दृष्टिं किं प्राप्य यत्र यत्न
नै र्हसिं प्राप्य लोको गीं जति माहुर
यद्धरु प्रसार की सेवा करने के लिए
विदेश नहीं जायेंगे। मनु प्राणा है कि
माता भारत के लिए ज्योतिस्तम्भ बन
जायेंगे। स्वामी अज्ञानन्द की यह शक्ति-
व्यवस्था कितनी सख्त हुई, यह हम भारत
वासी ही नहीं सारा स सारा जानता है।

महात्मा गाँधी स्वामी अद्वैतानन्द के जीवनकाल में दो बार द. अग्रेल १९१५ तथा २० मार्च १९३६ को गुरुकुल कागड़ी गये तथा उनके शहीद होने के लगभग बार मास उपरांत १६ मार्च १९२७ को दीक्षात भाग्य देने गए थे।

[illegible]

महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में पण्डरीत यात्रा के अनुभव के खूब वर्णन लिखा जब मैं पहाड़ से नीचेने वापस महात्मा जी के दशन करने बीर उरु शक्ति युक्तुल देखने के लो तो मुझे बीर उरु शक्ति मिली। हरिद्वार के कोलाहल और युक्तुल की गाति के बीच का अन्तर स्पष्ट दिखता होता था। महात्मा ने मुक्त अपने प्रम के नहमा लिया ज्ञातचरी मेने पास से हुंदा ही ने ये।

यात्रा के नव महात्मा गांधी और स्वामी अष्टानन्द ने सहयोगीरतन बढता गया और स्वाधीनता आग्राम में कई बार मिलकर काय किया जब अग्रजों ने रोजत अधिनियम लागू किया तो स्वामी अष्टानन्द ने ३० मार्च १९१६ को दिल्ली में ४० हजार व्यक्तियों (बैथ ५०० ११ वर)



आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन'

हिन्दी के प्रगत्य साधक आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन इन दिनों दिवंगत हिन्दी सेवियों की स्मृति को विर-स्थापी बनाये के मशहूरपूर्ण यज्ञ में संलग्न हैं। दस वर्षों में प्रकाश्य इस विद्यालय ग्रन्थ के दो खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इस ग्रन्थ में देश-विदेश के हज़ारों हिन्दी सेवी लेखकों, कवियों, पत्रकारों, हिन्दी प्रचारकों के प्राथमिक पत्रिचय प्रकाशित किये जा चुके हैं।

श्री सुमन को मृत आर्यसमाजी तथा कामेयी हैं। आर्यसमाज में जी उन्होंने हिन्दी सेवा के मस्कार भिजे। मुकुल महाविद्यालय उवालापुर में प्रसिद्ध विद्वान् ए० नन्देव शास्त्री केदन्ती के श्री शरणों में अध्ययन के दौरान उन्होंने वैदिक धर्म व भारतीय सस्कृति की मेधा का मकलप लिया। जिससे वे ७० वर्ष की आयु में प्रथो तक नये हुए हैं।

सुमन जी को हिन्दी साहित्य व सस्कृति की मेधा के लिए राष्ट्रपति ने मन्त्री जी 'ग्योशी' में सम्मानित किया। उन्हें पत्रकार शिरोमणि, साहित्यमहर्षि, साहित्य वाक्पति धाति की उपाधियों में विभूषित

१६ मिनम्बर को ७०वें जन्मदिवस पर आर्य विद्वान्-हिन्दी सेवी आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

विनकुमार गोयल

किया जा चुका है। स्वाधीनता सेनानी के रूप में उन्होंने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने नामप्रपत्र भेंट किया था।

सुमन जी आर्यसमाज में सक्रिय योगदान करते रहे हैं। मारीशस में १९७३ में आयोजित १२वें आर्य महा-सम्मेलन में हुए कवि सम्मेलन के वे अध्यक्ष थे। ३५ वर्षों तक उन्होंने गुरु-कुल महाविद्यालय उवालापुर की अग्रतम समिति में विभिन्न पदों पर रह कर शिक्षा क्षेत्र में योगदान किया।

स्वाधीनता सेनानी

सुमन जी ने स्वाधीनता आधीन-न में भी सक्रिय भाग लिया था। सन् १९४५ में भारत छोड़ो आन्दोलन में वे वह लाहौर में गिरफ्तार किए गए। वह देश की स्वाधीनता के लिए फीजपुर जेल में पूरे दो वर्ष तक बालागल सज़न करते रहे। पञ्जाब सरकार द्वारा पञ्जाब से निष्कासित कर दिए जाने पर वह अपने धाम वायण्ड (मेरठ) आ गए। सुमन जी की सक्रिय नेता ममभक्त उत्तर प्रदेश सरकार में डाक्टराट मास तक वे अपने

गांव में नजरबन्द रहे।

सुमन जी ने फीजपुर जेल में 'कारा' नामक एक रोचक खण्ड काव्य की रचना की थी। इस खण्ड खण्ड काव्य में सन् १९६२ के राष्ट्रीय आन्दोलन का सरन बर्णन सुमन जी ने श्रान्ति डग से किया है। 'कारा' में सुमन जी के देश के युवकों का यो धातान किया है।

हम बड़े हमारे जीवन में,
बरबन तुलना प्रयोग उठे।
मदियों से मोते भारत के
तरकर का नीला तोर उठे।
युग-युग से परबसा पिजरे,
का बन्ती बानस कीर उठे।
है जग भग्न जिसमें पावन,
वह बीरो का शमशीर उठे।
हम बनती आधो से रिपु के,
प्रायो नै जकता छोट चले।
'जय हिन्द' हमारा नारा है,
हम जान किने की ओर चले।

सुमन जी ने बड़ा धपनी धोज-
श्री लेखनी के नाथय से स्वाधीनता
मश्रम में योग दिया वहा उन्की
धोजकी धारी की भी देश की नह
'आई को बाटन क'ने स्वाधीनता
के अमर यन में 'मेने को स'र्व मम-

वित करने का आह्वान भी किया।
न.प.बन्द रहते समय उन्होंने 'कारा'
के अतिरिक्त 'बन्दी के गाने' नाम
के काव्य सफल की रचना भी की
थी। श्रमस्त कान्ति के रोचक इति-
हास के रूप में उनके 'हमारा सचर',
'नेताजी मभाष', 'आजादी की
कहानी' आदि राष्ट्रीय भावनाओं से
प्रोत प्रोत ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

सुमन जी एक यशस्वी साहित्य-
कार के साथ साथ निर्भीक व सफल
पत्रकार भी रहे हैं। उन्होंने बड़ी
'मन्थवी' 'सिद्धा मुधा' एवं लाहौर
के 'दिन' हिन्दी मिलाप' के मन्था-
कीय विभाग में काफी समय तक कार्य
किया वही उनके मन्थाकीय लेख
श्रीजस्वी व राष्ट्रीय भावनाओं से
प्रोत प्रोत होते थे।

सुमन जी ने नवभवन चार दर्जन
पुलक निरकर व सम्पादित करके
हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में प्रपूर्व
योग दिया है। 'प्राधुनिक हिन्दी
कविप्रियों के प्रम गाने', 'हिन्दी के
सर्वश्रेष्ठ प्रमगीन', 'हिन्दी के लोक-
निय कवि', 'मल्लिका', 'हिन्दी
साहित्य नये प्रयोग', 'साहित्य
सोपान' 'सुमन सौरभ', 'प्राधुनिक
हिन्दी साहित्य', 'हिन्दी साहित्य
श्रीर प्रगति' आदि लोकप्रिय ग्रन्थों
की रचना करके उन्होंने हिन्दी साहि-
त्य की भागी सेवा की।

७०वें वर्ष की आयु में साहित्य
की सेवा में निरन्तर रत हैं। इसी
प्रकार बालागु होकर वे हिन्दी सेवा
में लगे रहें, उही कामना है।

'धर्मवत'

पिनमुधा (उ० प्र०)

२० से २० सितम्बर तक कैथल
में हरियाणा प्रांतीय आर्यवीर
सम्मेलन पूरे समारोह से मनाया जा
रहा है। सम्मेलन की अध्यक्षता
आर्यजाति के निर्भीक प्रहरी श्री ला०
रामगोपाल जी बानप्रस्थ कर रहे।
हरियाणा में इस प्रकार प्रत्येक वर्ष
प्रांतीय स्तर पर सम्मेलन होते रहते
हैं जिससे पालन भर के आर्यवीर,
तथा समाजे सम्मिलित होकर समारो-
ह को सफल बनाती हैं। दिल्ली
आर्यसमाज का मुख्य केन्द्र है। देश
के विभाजन के पश्चात् तभी
के स्थान पर दिल्ली आर्यों का गढ़ बना
है। प्रमगना की बात है कि दिल्ली
में आर्यवीर दल भी अपना स्थान
बना पाया है। आर्यवीर दल आर्य-
समाज का लक्ष्यधर बाज है। युवा
वर्ष का आर्यसमाज में प्रवेश द्वार
आर्यवीर दल ही है। धन दल आर्य
समाज का भविष्य है। हरियाणा के
द्वत प्रांतीय सम्मेलन में दिल्ली के

दिल्ली के आर्य वीरो आओ कैथल चलें

(उत्तमचन्द्र शरर)

मन्त्राल आर्यवीर दल हरियाणा

आर्यवीरों तथा समाजों को धामन्जित
करने में प्रसन्नता अनुभव कर रहा
है। हरियाणा दिल्ली का मधोपवर्ती
पान्त है। दिल्ली के आर्यबन्धु यदि
बोधा मा कष्ट करते तो हरियाणा के
आर्यवीरों का उत्साह वे धपनी उप-
स्थिति से बढा सकते हैं। इस के साथ
ही सेवादल का सुन्दर रूप भी प्रस्तुत
कर सकते हैं। आर्यसमाज का युवा
वर्ष धपने इस संगठित कार्यक्रम से
देश के सम्मूल धपना उज्ज्वल रूप
प्रस्तुत कर सकता है। अतः दिल्ली

के आर्यबन्धुओं में सावध निवेदन है
कि वे २०, २१, २२ मिनम्बर को
कैथल के लिए एीं निर्ज्व रने।

सम्मेलन में देश भर के आर्य
नेता पधार रहे हैं। पञ्जाब के युवाओं
के कारख पञ्जाब का वह सहयोगी तो
हमे न मिल सकेगा जो हम चाहते हैं।
फिर भी पञ्जाब तथा हिमाचल के
आर्यवीरों भी इस में थापण सति-
मित होंगे। भाज देश तथा समाज के
सम्मुख कई चुनौतियाँ हैं, धनकवाद
का राक्षस मुह बाये लडा है, साम्य-

दायिना, देश के विभाजन के
पश्चात् भी हजारा पीछा नहीं छोड
रही, समाज में छुनछान तथा वहेज
जैनी भ्रमच्छुर बोमारिया समाज को
सत्य होन बना रही है। उचर धार्मिक
क्षेत्र में धर्मविश्वास धीर पालण्ड
प्राज के विज्ञान के युग में भी आर्य-
समाज तथा बुद्धिजीवियों को कैथल
कर रहे हैं। इन नामा गणों के विरुद्ध
आर्यसमाज के युवा वर्ष की संगठित
आवाज आज समय की मांग है। अतः
दिल्ली तथा आसपास के आर्यबन्धु
इस आवाज को प्रशानी बनाते में
दन के कार्यक्रमांशों को सहयोग
अवश्य दें।

मेरी उड़ी कामना है कि समय
की दम ताग को पुरा करके के लिए
एक वृद्ध नयेमन आर्यवीर दल
दिल्ली की श्रोत्र से युगया जाए।
दिल्ली देश की तमाम गतिविधियों
का केन्द्र है, यदि आर्यवीरों का सग-

(शेष पृष्ठ ९ पर)



अध्यक्ष यशपाल सुधाशु अध्यक्ष-वीथ भाषण करते हुए।

केन्द्रीय धार्मिक युवक परिषद् दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण करते हुए सुधाशु ने कहा कि देश धर्म को रक्षा में तत्पर है। उन्होंने युवकों की अन्तर्गत विभिन्न विधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सभी देशों में युवकों की भाषा वार्षिक विकास, धार्मिक विकास से अलग हटकर विचार एवं नये पाप संगीत तथा कर्तव्य विमुक्तता की ओर बढ़े हैं। धार्मिक नैतिक मूल्यों का ह्रास भी विश्वभर के युवकों में हुआ है। हिप्पी-

केन्द्रीय धार्मिक युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

दश धर्म और संस्कृति की रक्षा हेतु चरित्रवान् युवक आगे आये

—यशपाल सुधाशु

इसम की धारों, कंधे पीर जोन की संस्कृति हमारे अपने देश में भी धर करती जा रही है। तप, समय और सदाचार से अभिभूत हमारी सांस्कृतिक प्रतिमता न जाने कहाँ धूमिल हो गया है। अनेक राष्ट्रीय समस्याएँ भी आज हमारे सामने मुह बाये बंदी हैं। जिनका सामना करने के लिए आज तेज से युक्त बलवान् युवकों की आज नितांत आवश्यकता है।

नैतिक और चार्मिक गुणों से युक्त देशभक्त युवकों और उनके समूहों की आज स्थान स्थान पर आवश्यकता है। यह समय की पुकार है।

श्री सुधाशु जा धार्मिक समाज प्रचारक (मन्दिर माग) में आयोजित युवक रैली के समापन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर



धार्मिक युवक स्वजागरूकता के समय ध्वज गीत गाते हुए।

अधिकारिया, मण्डल, यको, माता नान्नी रो रो पुरस्कार निसल जोरो, वंज आदि से सम्मानित किया।

इस अवसर पर अध्यक्षित कर रहे श्री यशपाल सुधाशु को केन्द्रीय धार्मिक युवक परिषद् दिल्ली की ओर

से एक ट्रफी भी प्रदान की गयी जिसे धर्म जगत् के महादक श्री शितीश बेवालकार ने भेंट किया।

इस रैली में विभिन्न स्थानों से धार्मिक युवकों ने भाग लिया चन्द्र मोहन धार्मिक प्रेस सचिव



केन्द्रीय धार्मिक युवक परिषद् के समापन समारोह में धार्मिक शितीश बेवालकार, श्री यशपाल सुधाशु, श्रीमती सरला मेहता, श्री विश्वपाल जयल, श्री चमकीर एवं श्री धर्मिक धार्मिक।

परायण महायज्ञ की पूर्णाहुति

धार्मिक समाज मन्दिर न्यू मोतीनगर में आयोजी पूर्ण के उपलक्ष्य में किया जा रहे यजुर्वेद परायण महायज्ञ की पूर्णाहुति १६ सितम्बर को हुई। इस अवसर पर यजुर्वेद जनता द्वारा पूर्ण सहयोग किया गया। धार्मिक समाज मन्दिर में यजुर्वेद परायण महायज्ञ के अलावा वेदकथा तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी का भी आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री ५० विवाहकाल उपाध्याय, ५० भारद्वाज पाण्डेय, ५० भारत मित्र धार्मिक आदि विद्वानों के सुन्दर उपदेश हुए। इस

पुण्य अवसर पर श्री जय भगवान धार्मिक भजन मण्डल द्वारा मनोरम भजन भी सुनाये गये, जिसमें जनता ने भरपूर लाभ उठाया। अन्त में समाज के प्रधान श्री तीर्थराम जी धार्मिक ने सब का धन्यवाद किया तथा समाज की ओर से यज्ञोपवेश के रूप में सिलाई की मशीन और यजमानों को स्वामी दयानन्द की बमर कृति सत्यार्थप्रकाश भेंट किया।

तीर्थराम धार्मिक प्रचारक

सितम्बर के प्रवचनकर्ता

धार्मिक समाज विवेक बिहार में रविवार के साप्ताहिक सत्यम में निम्नलिखित महायज्ञों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

रविवार

१५-८-८५

२२-८-८५

२९-८-८५

उपदेशक महोदय

श्री ५० रविदत्त जी गौतम एम ए साहित्याचार्य

श्रीमुत्त यशपाल सुधाशु

श्रीमुत्त जैमिनी सास्त्री

दर्शनभिलाषी

भारती कथुरिया

मन्त्री धार्मिक समाज, विवेक बिहार

समाचार सन्देश

साप्ताहिक मस्तगो का निरण

रविवार २२ सितम्बर १९८५

य रामगल प्रताप (अमर कानिनी) प० उन्मयधर धर्मा ५५ किंगज्व कम्प प० देवराज बरिद मिसनरी गता कानोनी— श्री मंग लाल बेचन गुधमणी— ब्र० भीमदेव । गोवि = बवन— स्वामी प्रभान्त सरस्वती । चनाम प० अशोककुमार शास्त्री । टगोर गाइन स्वामी यजान द जी । निरक प०—प० मुनीदेव भजनो परेशक देवनगर प० ग्नेशचन्द्र बगचाय । नारायण बिहार प० बरप्रकाश भाय । प्रीतमपुरा—डा० रघुनन्दन सिंह पंजाबी बाग—डा० बरप्रकाश माहेश्वरी । पंजाबी बाग—प० अशोक कुमार विद्यानकार भोगान—श्रीमती प्रकाशवती । महा कीर्तन प० राधेश्याम शर्मा ।

मोहन बन्नी—प्रायवीर रसजीत सिंह राणा मोनी बाग—डा० सुख दयाल भूगानी राजोरी गाइन— महारमा देवश भिन्न रमेशनगर— श्री बलवीरसिंह शास्त्री । लक्ष्मीबाई नगर—मा० मोहनलाल गाधी । विश्वनगर—प्रायवीर नैत्रपाल भाय । सोहन गज—ब्र० मनुदह शास्त्री । सवर बाजार—मा० छवि कृष्ण शास्त्री । सारैत—प० सुधील शास्त्री हीरावास—प० तुलमाराम भाय । जिनगर प० अमर १५ कान्त जी । अशोक बिहार—प० हरिश्चन्द्र भाय इ यानि

यन्त्रापक
स्वामी स्व पा = सरस्वती
अभिष्टाना वन्प्रभा विभाग सभा

प्रचार वाहन द्वारा प्रचार कार्य विवरण

१—प्रायसमाज प्राध्यापक २५ २० २८ सितम्बर २८ बजे से १० बज तक प० स दवदी जी स्वातक रेडियो कलाकार एवं गेलक वादक जोती प्रसाद द्वारा संगीत का काय क्रम रखा गया है जिसमे महा मा रामकिशोर वध महोपदेशक का वेद प्रवचन रखा गया है । प० तु नी लाल भजनोपदेशक जा के मधुर भजन भी होगे

२—प्रायसमाज बुराडी ग्राम के तीन दिवस के लिए प्रचारवाहन द्वारा वे प्रचार का प्रायोजन किया गया है । २० सितम्बर से २२ अक्टूबर रात्री को ८ बजे से १ बजे तक प० वेदव्यास जी रेडियो कलाकार प० चुन्नीलाल भाय भजनोपदेशक का प्रोग्राम रहेगा । साथ ही स्वामि स्व क्पा द मरस्वती वेदप्रचार अधिष्ठान का प्रवचन होगा । स्वामी न योना जी प्रधा प्रायसमाज बुराडी द्वारा प्रचार की व्यवस्था करागै

— १यसमाज रघुवरपुरा न० २ मे १ अक्टूबर से १० अक्टूबर तक मर्यादा प्रयोजन की गम २ जी रायक क सवोत्तम प्रगगा दायक जीवन कथा का प्रायोजन किया है । यह रामायण का कथा प० सत्यदेव जा स्वातक संगीत कलाकार द्वारा प्रस्तुत की जायेगी । दोलक वादक प० ज्योतिप्रसाद जी रवने ।

४—प्रायसमाज किंगज्वे कम्प मे ४ अक्टूबर से २३ तक महारमा रामकिशोर महोपदेशक का वेद प्रवचन होगा कायकम १मी ८ बजे से १० बज तक रहेगा कथा से पूव प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक के मधुर भजन हुमा करने

५—प्रायसमाज सहा० नगर मे २८ सितम्बर स २ अक्टूबर तक बाबाय हरिदेव सिद्धांत भूषण तक केसरी का वेद प्रवचन होगा जिसमे कथा से पूव मधुर भजन का भी कायकम होगा ।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वकृपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाना वेदप्रचार विभाग
दिल्ली सभा

नि शुल्क वैवाहिक सम्बन्ध सेवा

प्रायसमाज मन्दिर रमेशनगर

नई दिल्ली ११००१५

हजारें यहाँ विवाह योग्य लड़के एवं लड़कियों का रजिस्ट्रेशन प्रति दिन साथ बजे तक होता है । मिलने का समय रविवार ११ से १२ बजे होगा

मन्दीप

(मन्दीप) परतन महापात्र

आर्य वीर दल के बढ़ते कदम

युवका मे राष्ट्रीय चारित्रिक नतिक गुणों एवं वचारिक क्रांति लाने के लिए बाय वार दल दिल्ली प्रदेश मे गिन्ली के विभिन्न स्थानों पर शिविर एवं सम्मेलन आयोजित करने के लिए अनेक योजनाएं बनाई है । प्राय वीर दल प्राय के बन्धु युवकों मे जाग्रति के लिए शारीरिक एवं मानसिक प्रा यात्निक उ नति के लिए आह्वान करता है । समस्त प्रायसमाजों के अधिकांशियों से निवेदन है कि अपने मंदिर मे प्राय वीर दल की शाखाएं आयोजित कर तथा युवकों की प्रायसमाज का जोर धाकूट करने के लिए रचनात्मक कर्म उठाये ।

प्रीतनदास रसवन्त



नई दिल्ली प्राय वीर दल के शिर् पर मे पञ्चमती युवायो की २ गतिष्ठ दुहुती के द्वारा काच पीछे युवक वराको को परिचय देते हुए श्री माये गम भाय ।

आवश्यक निदर्श

सभा के पूव पर्यटन मे दिल्ली के सचस्त सम्बन्धित प्रायसमाजों के अधिकांशियों से बार बार प्रायना की गयी है कि प्राय सभा के प्रायसमाज के युवाव सपर करा से वीर दल ८८५ ८५ मे प्राय समाज द्वारा नि गण काय का तुलात विवरण पोषित सभासदों की युवी प्राय उय व रा मय की देव रासिया वचाय वययवार सभा प्रायव दल का शुक्र तथा प्रायकी तीन वयो के लिए सभा के लिए प्रतिनिधियों के नाम उनके पूरे पते सहित सभा कार्यालय को विवचार दें । बार बार लिखन पर भी स ी तक प्रायका प्राय समाज द्वारा 'प्राय' कीपचारिकताएं पूरी नही की गयी

बार २२ गण काय क लिए लिखते से सभा का धन वय मे स्टेजवीर प्रिंटिष तय डाक बाटि पर लख हो जाता है । हमारा सगी का कतव्य है कि सभा के प्रायवक वय को बचाय तथा सभा द्वारा मागी गयी जानकारी को सचय पर सभा कार्यालय को निवचार्य ताकि सभा का सचयन मुक्त बना रहे ।

सभा का वधिक प्रायवेशान निवट अधिव्य मे होने का त्ता है और सभा का वधिक विवरण भी प्रकाशित होगा है । हमारी हार्दिक इच्छा है कि प्रायका प्राय समाज की प्रतिनिधियों की उलमे सतिम मिल की जाये ।

युक्त पूव सभा है कि प्राय पय विवचे ही उपर्युक्त मागी जानकारी को दे प्रेषित प्रेषी को प्रेषी विवचा

वये ।

वसा प्राय सभा के सहयोग वीर दल प्राय की प्रपेक्षा करती है । मन्दीप
डा० वयपाल भाय
महागमी

आर्यवीर दल क लिए यत्नवश्यक निवेदन

वसा कि प्रायको पूव पत्र दिनांक ८ १८८५ मे प्रायकी की गयी थी कि प्राय धपती प्रायसमाज के सार्वभौम प्रायवीर दल के लिए एक अधिष्ठान का बचन करके उसका म म/निवास का पठा प्राय तथा इरभाव सम्बर प्राधि तथा कार्यालय का बचन कर दिया । प्रती तक प्रायकी प्रायसमाज का वीर स गृह नाथ वीर विवरण प्राप्त हुयी हुआ है प्रायका प्राय धपती प्रायसमाज के निर्वाचन के समय एक अधिष्ठान का बचन कर लिया होगा यदि प्रायन सभा नही चुनो हो तो धपती सभा की स तरफ सभा की बैठक चुलाकर इस काय को मन्दीप प्रर पूरा कर । कृपया युने गय सम्मेलन कवे गय अधिष्ठान का नाम निम्न काय पर प्रर कर सभा कार्यालय को धपती प्र निवडा का कल कर ताकि युवकों में नई जेतना गृहस्थ मे वीर प्रायसमाज का सचयन हो सके सम्मेलन कवे गय अधिष्ठान को प्राय १८ स ५५ वय तक हो तथा बह प पकी प्रायसमाज की वीर से प्रायवीर दल को अभिगत का सचयन होना चाहिये ।

कृपय अधिसचय कायका वीर धपती वर

डा० वयपाल भाय

अवधवती

(पृष्ठ ६ का শেষ)

गोपी श्री अध्यात्म की बीरपति

के जुलूस का नेतृत्व करते हुए सबका विरोध किया। स्वामी अध्यात्म द्वारा गोपी को भेजे गए सार के अनुसार इस दिन दूध मालीकाद ने ४ हिंदू, ५ मुसलमान मारे गए तथा १३ धायस एव २० साधवाएँ हत्या।

गोपी ने ३ अक्टूबर, १९११ को इस अविवशता में बंधे के लिए स्वामी अध्यात्म को तार दिया और लिखा 'शेजत कामून का विरोध करने में आपने तथा दिल्ली के लोगों ने जिस अनुकरणीय बंधे में काम लिया है। इसके लिए मैं धायका तथा दिल्ली के लोगों को साधुबुद्धि देता हूँ। इस उल्लेख के निम्नलिखित वचन की भाषणा का विरोध कर रहे हूँ। यह कोई सामान्य काम नहीं है।

लखन बीरपतिगोपी धर्मपुत्र से हुए कुलधारी काको के बाद जब गोपीजी ने सत्याग्रह स्वीकृत कर दिया तो स्वामी अध्यात्म ने दिल्ली समिति केब करके धारालन में अपना हाथ लोके किया। स्वामी अध्यात्मगोपी की ओर से लिखा जो गय और उन्होंने गोपी के बुद्धिबोध का जोरदार विरोध किया। यद्यपि गोपी की बहुलता की कि प्रेमभाव कि भी बना रहा। गोपी ने 'स्वामीजी के स्वस्वरूप' में लिखा कि कि जितना जोरदार उनका विरोध होता था 'जब-जब' जोरदार उनका प्रेम भी होता था।

स्वामी अध्यात्म की हत्या का गोपी की बड़ा धायालु था। गोपी कावेस केनेटी की बैठक में भाग लेने के लिए गोहाटी जा रहे थे। उन्हें सोरोमो नामक एक डोटे से लेने लेलाएन पर लाता लाज-परायण का सार मिला। गोपी इस हत्या के स्त-भ के किन्तु उनके विचार में यह हत्या नहीं 'बीरपति' की। गोपी ने गोहाटी की २२ सितम्बर १९२६ की बैठक में इसे 'धर्मव्रत' एवं 'धर्म युद्ध' कहा और काफना की कि एसी युद्ध हम सब को मिले।

२६ सितम्बर १९२६ के धर्मवेसन में गोपी ने हब लोक प्रस्ताव रखा और उसमें स्वामी अध्यात्म के वेसायन, निष्ठा निर्माणाएँ एवं अन्य युगो की प्रशंसा की।

'यस इतिहास (३०-१२-१९२६) में' सहोदर अध्यात्म की' शीर्षक से लिखी अपनी अध्यात्म के गोपी ने उन्हें 'बीरता का धारालन' 'कर्मवीर' एवं 'धर्मव्रत' कहा तथा लिखा, 'धर्म और सत्य' के लिए धर्मव्रत होने के कारण युद्ध की वजह हो गयी।' गोपी ने ६ जनवरी १९२७ को बनारस में उन्हें अध्यात्म केने के लिए भगा स्नान किया और उस 'महान धारालन' के कार्यों को पूरा करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

महात्मा गोपी ने स्वामी अध्यात्म के हत्याएँ प्रमाण रखीयें जो गोपी न मानकर जब धर्मव्रतों एवं मोर्षों की उत्तरदायी

उत्तरदायी जो स्वामी अध्यात्म, साक्षात् लाजपतदास और भवनाहल बालवीर को इस्लाम का सधु बोधित कर रहे थे। गोपी ने अनेक बार २०० पन्नों में कहा कि स्वामी अध्यात्म 'इस्लाम का नरु' नहीं है। गोपी ने कहा कि हिन्दू-मुसलमानों का इस हत्या से विना नवी चाहिए और उनक हत्या से अपने अपने हृदय का पाप को बेना चाहिए। गोपी ने प्रति घोष और बदले को भी वम विरोधी कहा और निर्दल दिया कि हिंदुओं को धारालन-सम रक्षना चाहिए।

महात्मा गोपी स्वामी अध्यात्म की, कुछ मामलों में असहमति का बावजूद अपना भाई धारपानीय बहुलकी मानते हुए उनके गुणों की प्रशंसा बने रहे। धर्मपुत्रता निवारण के लिए उन्होंने जो कार्य किये उनकी गोपी ने सर्वत्र मुख कट से प्रशंसा की। यद्यपि दोनों वैसायसो के सेनो एवं कार्यवासी में अंतर था, लेकिन सभ्य यह सचो हो कि दोनों को एक बीसी बीरपति प्राप्त हुई।

कार्यान्वित से सवार ए/६८ धायक विहार ५८-१ दिल्ली ५२

(पृष्ठ १९ का शेष)

देवव्रत धर्मन्द

बाद भी उन्होंने केवल भाषण देने तक ही अपने आप को सीमित नहीं रखा। बल्कि उन्होंने उनको चिर-स्वाधी बनायें के लिए उन्होंने रचनात्मक कार्य प्रारम्भ किये। बालक बालिकाओं, युवक युवतियों में धार्मिक मार्गदर्शक, नैतिक शिक्षक के प्रतीक अनेक विषयों पर प्रतियोगिताएँ आयोजित करना तथा सत्याग्रहप्रकाश एवं सम्हाल सम्मन्धी परीक्षाएँ आयोजित करना तथा युवकों की पगेपकारी एवं सेवाकार्यों के लिए उत्साहित करते रहना उन्होंने अपने जीवन का प्रग बना लिया था। अपने

(पृष्ठ ५ में आगे)

इन्द्र-विरोचन

प्रकार बहुत हो सकता है। वह फिर ब्रह्मा (प्रजापति) के पास आया और अपनी धाका को मुद्राय।

ब्रह्मा जो (प्रजापति) ने कहा—'बेटा! तुम्हारी बुद्धि देखकर मुझे प्रमत्तता ही रही है। इस बार तुम्हारे साथ विरोचन क्यों नहीं आया? इन्द्र ने कहा—'वे शरीर को ही सब कुछ समझते हैं। हर समय सुख से जीवन बिताते हैं। शारीरिक सुख को ही वे सच्चा सुख समझते हैं। इस बात से अलग हट कर सोचना नहीं चाहते।

इतना सुनकर ब्रह्मा जी ने इन्द्र को फिर से ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के लिए कहा। इन्द्र फिर वापस आ गया। उसने एक वर्ष तक ब्रह्मचारी का पवित्र जीवन बिताया। एक वर्ष के बाद ब्रह्मा जी के पास गया। ब्रह्मा जी ने कहा—'ससार में ब्रह्मचर्य से बड़कर कोई तन नहीं है। इसी के

जीवन में जो धन संग्रह उन्होंने प्राप्त किया अपने पास नहीं रखा और न स्वयं उसके उपयोग का ध्यान लिया बरन एक तपस्वी साधक बनकर धर्म धनपालय सार्वदेविक धर्म प्रतिनिधि मन्त्रा और अन्य धर्म सामाजिक सम्प्रदायों, गरीब छात्रों के लिए धर्मित कर दिया।

धीरे, गम्भीर एवं सौम्य प्रसन्न चित्त धर्म को लेने के बने कुशल वक्ता, कुशल वृत्त कुशल पुरोहित, कुशल प्रशासक कुशल युवा नेता थे देवव्रत धर्मन्द को धर्म-मन्त्रेध परिवार की ओर से विनम्र अडा-जलि।

—यशपाल माधु

स्व० श्री पं० देवव्रत धर्मन्दु श्रद्धांजलि सभा

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

२२ सितम्बर रविवार को

आर्यसमाज दीवान हाल म प्रान १० बजे पं० देवव्रत धर्मन्दु की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है, इस अवसर पर पहुँचकर कर्तव्य का पालन करें।

मन्त्री—आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली

'केथल में कवि सम्मेलन'

पत्रवल। भावोदर दम हरि-राया का प्रान्तीय महा सम्मेलन २२ सितम्बर रविवार से कंथल में हो रहा है। २२ सितम्बर रात्रि ६ बजे कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें निम्नलिखित धर्म कविगण पकार रहे हैं—ओ० उस्तासमचरर (सयासक), डा० उस्तासमचरर (सयासक) और

सियाराम निर्मय (धारा), श्री सत्यपाल बेदार (दिल्ली) श्री लाला राम दीवान, श्री मुल्लर माहिन, श्री व्याकुल जी एवं अन्य कई कविगण।

(सचोत कुमार धार्या) मन्त्री भावोदर दम हरि-राया संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए शुभ सूचना 'राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान' से

द्वारा हम ब्रह्मविद्या प्राण कर सकते हैं।

इन्द्र ने ब्रह्म के स्वरूप को जानने के इच्छा की। ब्रह्मा जी ने कहा 'आत्मा या ब्रह्म का कोई स्वरूप नहीं होता। इस शरीर के नरु हो जाने पर भी आत्मा अमर रहती है। आत्मा की भरती नहीं। इसे किसी प्रकार का रोग या कष्ट नहीं होता।'

ब्रह्मा जी ने यह उपदेश इन्द्र को दिया, जो देवताओं का राजा था, जिनकी साम्प्रतिक दुस्तिथा थी। विरोचन प्रसुरो का नेता था। जो साना, पोना, रहना यही जीवन तत्त्व है ऐसा समझते हैं। वही प्रसुर है, नाम-किर्ति वाले हैं। इन्द्र ने उनकी आत्मा मानी थी। पवित्र जीवन बिताया। धानन्द धीरे सुख से जीवन भर गया। इन्द्र की सच्चा शान मिली। विरोचन को नहीं मिखा। इसलिए वह दुःखी रहता था। सुख और दुःख की यही पहचान है।

आर्यसमाज करौलबाग में

वेद प्रचार सप्ताह एवं

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

३० अगस्त से ७ सितम्बर तक आर्यसमाज करौलबाग नई दिल्ली में वेदकाए एवं ब्रह्म व्रत का धार्यो-जित किया गया। इस अवसर पर श्री प्र० रामकिशोर जी की वेदकथा एवं श्री लालाबिहारी रायच द्वारा मधुर भजनों का रमात्सावन कराया गया।

७ सितम्बर को आर्यसमाज के प्रागय से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का धार्यो-जित किया गया। इस अवसर पर श्री प्र० रामकिशोर, प्र० रमेश चन्द्र श्री धार्या हरिदत्त बाला श्री मोदप्रकाश शर्मा श्री श्री अजय भवना प्रादि वक्ताओं ने श्रीकृष्ण के उदात्त चरित्र पर प्रकाश डाला। सभा का सञ्चालन श्री धर्मप्रकाश मुनेजा ने किया।

निवेदक
कार्यालय मन्त्री
दयालचन्द गुप्त

सुलतानपुर महारौनी दिल्ली-३० से मुल गया है जिसमें विचारियों की नि शुक्र शिक्षा एवं धारालन को सुविधा है और जनवरी से ७५ इ० मासिक छात्रवृत्ति भी छात्रों को दी जाणी।

मनुदेव शास्त्री, प्रिंसीपल सीनागम विद्या मन्दिर दुगापुरी सुलतानपुर

दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

दंत मंजन

लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

दलेख डाक्टर

मुठ की दुर्गन्ध

ठंडा गर्म पानी
लगाना

उब नये ब्रैडिंग
में उपलब्ध

महाशिया की हट्टी (प्रा०) लि०

9 44 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति नगर नई दिल्ली 15

फोन 538609 537987 537341

अपने बालों को स्वस्थ, प्राकृतिक काले व चमकदार बनाइये और उन्हें चमकते कीर्ति भीनी-भीनी सुगंध में ढंकाइये।

एम डी एच

चमकदार शिकाकाई पाउडर

एच डी एच शिकाकाई पाउडर बालों की हरिरी हूट करता है तथा उन्हें प्राकृतिक काला सुगंधित व स्वस्थ बनाता है।

शिकाकाई रोजा जालसा हूट ब्रैडिंग काले व चमकदार बालों को बरियों से बनाता तथा एच डी एच शिकाकाई पाउडर एक काले लालकारी प्राकृतिक है। इसके कोई रासायनिक पदार्थ नहीं है।

एच डी एच शिकाकाई पाउडर का बालों के लिए निम्नलिखित प्रयोग कीजिये।

निर्माता
महाशिया की हट्टी (प्रा०) लि०
9 44 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति नगर नई दिल्ली 15

फोन 538609 537987 537341

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

खान करें

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

गुरुकुल चॉय

भीमसैनी कुरमा

पापेकिन

ओडम

ओडम

शाखा कार्यालय—६३ गली राजा केदारनाथ
बाबड़ी बाजार दिल्ली-६ फोन २०६८३८

वित्तीय शाख प्रतिनिधि द्वारा ११ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१३० के लिए डा० कल्याण द्वारा सम्पादित एक प्रकाशित तथा
वैयक्तिक प्रेषण यहाँ न० १० केबाबनगर, दिल्ली-११ से युक्ति। रजि० न० डी० (मो०) ७५६

साप्ताहिक

ओडम्

पुस्तकालय
इसका स्थापना १९५४ विद्यालय,
विहार

१८/११/८२

कृष्णान्तो विश्वमार्गम्

आर्य सन्देश

वर्ष १ संक ५० रविवार १३ अक्टूबर, १९८२ मुद्रित संख्या १६७२६४६०५६ आदिनंबर २०४२ दयानन्दवार १९१
सूचना एक प्रति ३० पैसे आधिक २० रुपये आजीवन २०० रुपये विदेश में ५० डाक्टर ३० पैसे

गड़बड़ी फैलाने के लिए पाक से धन

नई दिल्ली, २१ सितम्बर। गुप्त-चर एजेंसियों में केन्द सरकार को धमक किया है कि पाकिस्तान ने अजब के प्रस्ताव उत्तर भारत के कुछ राज्य क्षेत्रों में प्रशासित पेश करने के उद्देश्य से कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं और मजदूरों को व्यापक स्तर पर आर्थिक सहायता देने को पेशकश की है।

गुप्तचर एजेंसियों की सूचना के अनुसार पाकिस्तान सरकार ने 'बीसा देने का उदार नीति के नाम पर बड़ा सन्ध्या भारत के मुस्लिम नेताओं व्यापारियों और साधक व्यक्तियों को पाकिस्तान आने की सुविधा दे दी है। पाकिस्तान इन लोगों के माध्यम से भारत में 'मुस्लिम पर्सनल ला' और 'इस्लाम' की रक्षा के नाम पर मुस्लिम समुदाय को भारतीय समाज से अलग अलग करने का कुप्रचार तथा देने करवाने का इरादा रखता है।

विदेशों में भारत विरोधी ध्वन्य पर नजर रखने वाले गुप्तचर संगठन ने अपनी रिपोर्ट में जाना मसिब के नाम मीलाना अरुदुल्ला बुखारी द्वारा इसी महोत्सव के प्रारम्भ में की गई पाकिस्तान यात्रा का उल्लेख किया है। रिपोर्ट के अनुसार राही इमाम ने पाकिस्तान के नेताओं और पत्रकारों के बीच जाकर कहा, भारत में हिन्दू, मुसलमानों और सिखों पर बुरी तरह शरणाधार कर रहे हैं। हालांकि मुसलमानों का पास इस जुलूम के विरुद्ध सबक के आवश्यक साधन नहीं हैं। इस काम के लिए पाकिस्तान सरकार और जनता को लड़ाई

लड़ने के लिए आर्थिक और अन्य सहायता करने चाहिए।

इमाम बुखारी ने मुत्सद्धान यह भी कहा कि इस पाकिस्तान की ताकतवर देखना चाहते हैं। उन्होंने प्रथम में ५० हजार और मुरादाबाद में पांच हजार युवानों के मारे जाने तथा अगले में मुसलमानों के पर्सनल ला के कुछ प्रावधानों के विरुद्ध दालाली कंपनी का उल्लेख करने हुए इस्लामी परम्पराओं की

रक्षा की वृद्धि भी दी है। इमाम की टिप्पणियों को पाकिस्तानी प्रसारकों ने सुनियो में छापा है। पाकिस्तानी नेताओं ने इमाम के साथ हुई गुप्त वार्ताओं में हर सम्भव सहायता के वायदे किए हैं।

गुप्तचर एजेंसिया पाकिस्तान के इरान में कितल करने के लिए भारत में मुस्लिम धर्म आर्थिक नेताओं की गतिविधियों पर भी कड़ी नजर रहे हुए हैं और इनके विरुद्ध

आवश्यक कार्रवाई करने की स इ भी दे रही हैं।

बनाया जाता है कि आर्यमण के इमाम मीनाना ओबेदुल्ला खान के एक कट्टर साम्प्रदायिक और उत्तेजक भाषण के टेप को मुस्लिम क्षेत्रों में सुनाने और मुश्क बटवाने की रिपोर्ट भी मजकार की दी गई है। राजस्थान के पाली में भी मिलत में दिखे गए इस भाषण में मीनाना ओबेदुल्ला खान ने तलाक़ गुरा मुस्लिम बीबी की परवरिश का लक्षां देने सम्बन्धी उच्चतम न्यायालय के फैसले का कड़ा विरोध करने और पर्सनल ला के लिए लूट की नविया बहा देने की पुरजोर अप

इस भाषण में मीनाना ओबेदुल्ला खान ने कहा है कि मुस्लिम किसी कोर्ट के पाबन्द नहीं है। ये किसी कोर्ट से सफाई देने नहीं जायेंगे लेकिन कुतान या पर्सनल ला के बिना कोर्ट में जाने वालों का सफाया कर दिया जाएगा। यदि पर्सनल ला बदले को कोशिश हुई तो बाला साहेब देवरस अटनसिंहारी बाबुरेयी और राजीव गांधी को भी कन मा पडने के लिए मजबूर हान पड सकता है।

बताया जाता है कि इटली-से ब्यूरो की रिपोर्ट पर मोराल ने इस भाषण के टेप की प्रतिया जल कर ली गई है लेकिन दिल्ली उ० प्र० और विहार के मुस्लिम बहल क्षत्री ने बला भी यह टेप धरल्ले से बट और बज रहे हैं। इन राज्यों के प्रशासन ने यह तब कोई भी कार्रवाई नहीं की है।

(नवभारत टाइम्स से आभार)

युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द का सन्देश सुनायें

—सूर्यदेव

आर्यसमाज साहाय्य मुहम्मद-पुर दिल्ली ने आयोजित एक मास के धार्मिक विचार के सम्पादन के प्रसारण पर जोरते हुए समा प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—

धर्म की आवश्यकता है कि धर्म धाम साहज साहज ने युवकों के शारीरिक बौद्धिक और आर्थिक विकास के लिए इस प्रकार के धार्मिक दल के विचार लगने चाहिए। उन्होंने प्रथम, धर्माधार और धर्माधार मिटाने के लिए तथा देश की एकता और अखण्डता के लिए युवकों को जाने धाने के लिए धार्मिक किया तथा प्रेरणा दी कि सभी धार्मिक नर-नारियों को अपने लड़के और लड़कियों को धार्मिक मतों में लाना चाहिए और उन्हें धाने धर्म और साधुता का परिचय करना चाहिए। आर्यसमाज का उद्देश्य तो व्यक्ति और समाज के सर्वोत्तम विकास

शारीरिक आर्थिक सामाजिक नौकिक एवं पारलौकिक हर प्रकार के उत्थान से जुड़ा हुआ है। बलिक मन्त्र य सर्वोत्कृष्ट एवं वैज्ञानिक है इनक प्रचार प्रसार के लिए हमें हर सम्भव प्रयत्न करने चाहिए।

संभवतः पर ५० युवकों ने तलवार माले तथा व्यायाम धादि का सुन्दर प्रदर्शन किया जिसकी जनता ने मन्त्रप्राप्त होकर देखा। यह शिरि श्री धर्मवीर उषिष्ठ प्रशिक्षण के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ, सार्वभौम धार्मिक दल दिल्ली प्रदेश के अधिवृत्ता श्री प्रियतमदास रसवन नया मन्त्री श्री ध्यामसुन्दर विरमाना तथा श्री रामसिंह, श्री जगदीर सिंह श्री राजेश जी श्री शांलानायक आदि का भी योगदान इस अवसर पर स्तुत है।

मन्त्री

आर्य समाज साहाय्य मुहम्मदपुर



आइये वेदमाता की शरण में चलें

लेखिका—श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालक्ष्मिता सिकन्दराबाद

श्री स्तुना मयः वरदा वेदमाता, प्रबोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् ।
प्रायु प्रागं प्रजा पशून् कीर्ति द्रविरा ब्रह्मवर्षसं महा दत्त्वा
व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥



यह धर्मवेद न वा मय है । इतने प्रभु कहते हैं । ऐ मानवो ! मैंने वेद-माता वेदरूपी माता स्तुता—प्रस्तुत कर दी है । यह कैसी है ? वरदा = वर देने वाली । तुम्हारी भोनी दुशियो से वरदानों से भर देने वाला है । सबकी पदमे ली प्रेरणा दो । यह वेदमाता द्विजानाम् = द्विजों की पाव-मानी पवित्र करने वाली है । द्विज कौन ? जिसके दो जन्म हुए हो । एक जन्म माता के गर्भ से तथा दूसरा जन्म धार्याय गर्भ से । धार्याय उप-नयमान ब्रह्मचारिण कह्यते गर्भ-मन्त्र । त रात्रस्तिस्र उदरे विभक्ति त जान द्रष्टमभिप्रमयिनि देवा । मैं जन्म देती है शरीर का । धार्याय उसे दूसरा जन्म देकर धार्यायन् बनाता है । वेदमाता ऐसे द्विजों को पवित्र कर देती है । उनके जीवन कुन्दन बन जाते हैं ।

फिर क्या देती है वेदमाता ? सुनिये—प्रायु, प्रागं प्रजा पशु, कीर्ति द्रविरा धोर ब्रह्मवर्षसं ।

मनुष्य को तीन प्रकार की इच्छाय हानी है—पुत्रपणा, वित्तपणा, लोका-पणा ।

पुत्रपणा—संतान की इच्छा मन्त्रों को शानी है । सबकी गोद भरी रहे = गोना कुतक जाना है । पर पणान् नरकना धामन नि पुत्र पुत्र पणामकन व न गण कनन है नोए है पुत्रपणा वेद-माता जा देवे । न इच्छा को भा पूणा बनाता है ।

वित्तपणा धन की इच्छा । भोनी मन्त्रों भरी रहे । कोई गरीब न हो । धनवान् प्रजन रहे । सबके घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहे । वेद-मन्त्रा पशु पशु शब्द से ही सुख समृद्धि नापी जाती थी । किसके पास पशुधन—गाय, बेल, घोड़े, हाथी मिलते हैं, इसी से समृद्धि का पता

चलता था तो वेदमाता पशु भी देती है ।

वित्तपणा—पूरी करती है ।

लोकापणा—कीर्ति यथा, मान नाम गयी चाहते हैं । बुरे काम करने वाला भी चाहता है कि कोई उसे बुरा न कहे । धन जाये पण नाम न जाये । वेदमाता कीर्ति भी देती है । इसके साथ-साथ वेदमाता प्रायु धोर प्राण शक्ति भी देती है । जोधेम शरद, शतम । प्रायु प्राण । तात्पर्य यह कि जो वेद का स्वाध्याय करता है । वेद पट कर उसके अनुसार अपने जीवन का संचालन करता है उसे जीवन में सगवान् के प्राप्तिसे से सब कुछ प्राप्त हो जाता है ।

चार चीजों के समूह का नाम मनुष्य है । शरीर मन बुद्धि धोर आत्मा । हमारे पुत्रार्थ भी चार ही कहे गये हैं—धर्म, धर्म काम धोर मोक्ष । शरीर के लिए आवश्यकता है धर्म की । धर्म यानि शरीर की जोधिन रखने के साधन । रोटी, कपड़ा, मकान, शिशा । जब जीवन है शरीर को खाना चाहिए । कोई बहिया लाये वा बहिया पर चाहिए सबको ही खाना । जीवन चल नहीं सकता यदि शरीर को धर्म यानि शरीर रक्षा के लिये आवश्यक, धर्मि-धर्म्य मानव उपलब्ध न हो ।

शरीरमात्र ननु धर्मसाधनम् ।

वा । मयनीनिष्ठम ये श्री कहा है—
सुखस्य धर्म धर्म ।
धर्मस्य धर्म धर्म ।

सुख का मूल धर्म है परन्तु धर्म का मूल धर्म है । धर्म धर्मसे धार्याय निष्कला क्रिया धन पदा करो ।

मन के लिए धार्यायकता है काम की । बिना कामना के मन ही क्या ? हा कामनायें शिव हो सुख हो ।

बुद्धि के लिए धर्म की धार्यायकता है,

धर्म के कारण ही बुद्धि में सत् प्रसूत का वियेक पैदा होता है ।

आत्मा की मोक्ष की धार्यायकता है । हमें शरीर धोर मन के बन्धन से मुक्त होना है । कैसे ? शरीर धोर मन के द्वारा ही । यह एक ऐसी पहेली है जिसे सुनकाना है । इसका उपाय है—

तपःज्ञो । एक पलब मे धर्म धोर काम को रखो । दूसरे पलब मे रखो धर्म को तपःज्ञ की बड़ी बुद्धि के हाथ मे दे दो न धर्म धोर काम को छोड़ो, न धर्म को छोड़ो । धर्म पूर्वक धर्म धोर काम का उपभोग करोगे तो धार्याय की मोक्षमिल जायेगा ।

महामातरत्तकार ग्यास जो कहते हैं । ऊर्ध्वबाहुर्गिर्येय न च कश्चित् मुरोति वा । धर्मधर्मस्य कामश्च स धर्म कि न लेव्यते ? धर्म धोर काम बुरे मन । शरीर के लिए धर्म धर्मि-धर्म्य है धोर मन के लिए काम धर्मि-धर्म्य है । वह मन ही क्या ? जिसमे कोई कामना न हो ?

धर्म श्राव बनकर उसने न लगे । मन मे बुरी कामनाय न धार्ये । मन शिवसकल्पी हो इसके लिए धर्मपूर्वक धर्म धोर काम का उपभोग करो । धर्म धर्म धोर काम का पलदा भारी हो गया है । धर्म का पलदा ल्हा हो गया है । इसीलिये इतनी दयावति इतना धर्मशेष है ।

टका धर्म टका धर्म, टका हि परमपदम् । टका यस्य दुहे नास्ति हा टका टककमुने । टका ही धर्म । टका ही धर्म बन गया है । मनुष्य का निर्माण नही रो रहा । पहिले धार्याय व्यवस्था थी । ब्रह्मधर्म्य है धर्म का धार्यायम सप्रह ग्यान मिलता वा धर्मस्य-धर्म-सम्पादन का धार्याय धार धर्म पूर्वक । धार्यायस्य, सत्यस्य मोक्ष की साधना धार्याय साक्षात्कार के धार्याय मे । सीधी लवते लवते धार्याय मनुष्य बनकर लक्ष तक पहुच जाता था । लक्ष्य सभी का होता था—

शिविषुड धार्यायनिष्ठिबुति

धार्यायनूपुष्पाय ।

धार्यायसिक, धार्यायसिक, धार्याय-

भौतिक दुःखों से पूर्ण निष्ठिबुति पाना ही जीवन यात्रा का धर्म —धर्म वा । हम वेदों की भूल पडे । वेद की शरण मे धार्यो सब कुछ मिलेगा । कब ? जब महा दत्त्वा प्रभु के धर्मप करके 'तेन व्यवर्तेन' की भावना से सशरार के विषयो का मोक्ष करोगे । सब धार्याय व्रजत ब्रह्मलोकम् प्रभु का ब्रह्मलोक—मोक्ष प्राप्त हो सकेगा ।

यत् करोषि यद्वर्तसि वज्जु-होसि यदासि यत् वृत्तापस्यसि कोन्येय कुस्य यद्वर्षणम् यह सगवर्षण की भावना के बिना प्रभु का प्रसाद पाना कठिन है । उर्ध्वनिषयो मे धार्यायक की कथा प्रसिद्ध है । राधा जनक मे धार्यायक से कहा पाप विनयो मे प्रभु के दर्शन करा दो । धार्यायक से कहा करारा हू परन्तु तब, जब धार्याय धर्म मन मुझे दे दें । मन एकाव ही प्रभु दर्शन होखे हैं । चमल सहुरी मे धार्याय मुख नही दिखाय पड़ता । स्थिर पानी मे ही हमारा मुख प्रतिबिम्बित होता है । जीना भी एक कला है । इस वेदमाता की गोद मे बैठकर सीखा जा सकता है । धार्याय श्रावया मास है । वेद का पढ़ना, पढाना, सुनना, सुनाता, सब धार्याय का धर्म धर्म है । वेदमाता की गोद मे बैठकर धर्म-दय, धोर नि श्रेयम का धर्म प्राप्त करो ।

परामर्श बहुमूल्य है

परमात्मा ने तुमको दिया इसका सदुपयोग करो बदले मे कुछ न लिया इससे परीपकार करो ऐसे कार्य करो जिससे दुबारा मनुजवन प्राप्त हो ऐसा धर्म धरणाधो जिससे सच्चा सुख प्राप्त हो निरस्येष्ट परमात्मा प्रसन्न यह जीवन धर्मस्य है इसकी समावसर रचना परामर्श बहुमूल्य है

—धातुनयन मुन विचाररत्न
नालमक, रायचेली (छ.प्र.)

सारी उलझनों का हल है आर्यसमाज !

कुँवर नुसलाल आर्य मुसाफिर के हृदयोद्गातर



आर्यसमाज एक नये उद्देश्य को लेकर स्थापित हुआ था। प्रजान के धर्मकार को समाज से दूर भगाने के महान् प्रयत्न की आर्यसमाज ने निरन्तर जारी रखा। आर्यसमाज राह भूले जहाजों के लिए लाईट हाउस का काम देता है।

मैं एक जगह किसी लक्षपति सेठ महोदय से बन्दा मानने गया। आर्यसमाज का नाम सुनते ही मैं बरज उठे और कहा—क्या आर्यसमाज धर्मो मराने नहीं है? मैंने कहा—आर्यसमाज नहीं मर सकता, मेरे जैसा व्यक्ति मर जाये तो कोई बात नहीं, लेकिन आर्यसमाज की तो जिन्दा रहना है। अगर कोई यह समझे कि आर्यसमाज मर जायेगा, तो वह निराश भूँसे है।

कुछ यानी एक नाम से सफर कर रहे थे। रास्ते में तूफान के कारण नाम डबाइशाल होने लगा। यानी यानी न एक से कहा—आई नाम डूबने वाला है। कुछ उपाय करो। ता वह उठता है—डूबने वाली है ता डूबने दो। मल्लाह का हात ठुकसान है। उसने हम से किराया ज्यादा माँ लिया है। वह अपने पाप का फल भोगेगा।

लेकिन वह यानी यह बूल गया कि नाम के साथ वह स्वयं भी डूब कर मर जायगा। ऐसी ही बान हमारे कुछ आई किया करते हैं। आर्य समाज वह नाम है जिसमें सारी सम्पदा, सारा संस्कृति, गीता, रामायण, वेद और धार्मात्मिक मान्यताएँ संशोधित सुरक्षित रखी गई हैं। प्रजानाली। अगर वह किसी डूबी तो हम सब डूब जायेंगे। याद रखो इस बात का, आर्यसमाज के गोरख में हमारा गोरख है। आर्यसमाज के जीवन में हमारा जीवन है। आर्यसमाज का मर्म में हमारा मर्म है, आर्यसमाज के प्रतिमान में हमारा प्रतिमान लिखा हुआ है।

एक आर्यसमाज के खानपान उलुख में मैंने अपने आई-बहनों को सैनिक रूप में देखा, हरियाने के बारो को धपनी मस्ती में देखा। राजस्थान की केसरिया रंग की साड़ी पहने बहनों का जब मैं देख रहा था तो उस समय मेरे दिल की कलिया खिल रही थी और मेरी भाषा का सुनन किस्किता हो उठा। दिल में एक ध्वनि हुई—आर्यसमाज जिन्दाबाद। महर्षि का स्वरण किया। मेरे भावों यह तुम्हें क्या मानुम कि इस सत्त्वा के बनाने में कितनी जिवनियाँ लगी हैं। इसकी दुनियाद के बन्दर कितने मैताक्षो के जीवन गले हैं? उन बलिदानियों का बलिदान निम्नल न करो। आर्य बीरो, मैं कोई विद्वान् नहीं है। वेद मन्त्री की गम्भीरता हो तो ये पंडित प्राणका बतायेंगे। मैं तो एक बात कहता हूँ। आर्यसमाज के साप्ताहिक उत्सवों में कुछ बैद के मन्त्र पढ़ जाते हैं। उन मन्त्रों में क्या लिखा है—“सगच्छन्न सवच्छन्न” समको इन मन्त्रों को महर्षि की।

राजनीति में जाकर लोग सड़ तो कुछ अच्छा भी लगता है, लेकिन यहा आर्यसमाज में जाकर वो लोग मर्नी, प्रजान या कुछ भी न बनने से लिए लड़ना चाहते हैं। बपरानियों पर हड़ताल चलाने के लिए, तो मैं कहूँगा कि तुम अपनी शांति नष्ट कर रहे हो। अपने ही सारी तपस्या पर पानी करते हो। अगर तुम्हें कबड्डी खेलनी हो तो जाओ पोलिटिकल मैदान में खेलो। अगर दूध पां के लिए टिकट मिल गया तो सुन्दरें मीन बर्ष के लिए पी बारह है।

अपनी सत्त्वा के आर्यसो को कायम रखो। समजित रही तो बुनियाद तुम्हारे सामने खुलगा। करना वही तुम्हें मुकायिगी। अपने को बुनाम करते हो, उसने सर्वसम्पत्त बुनाम करो—ऐसा प्रयत्न करो। उसमें बुनाम न करना पड़, बीट न मानने पड़े, क्रांति न हो, इस बात की कोशिश करो। जो कुछ कर्मों आर्यसो जिन्के बरिज पर जायको सिखाए हो उनको प्राने वो काय करते के लिए। यह प्रवृत्ति न आये तो कि हम अपने स्वार्थ का ऊपर रखकर आर्यसमाज की ह्री खानि पहुँचाने पर तुलु भाव। मैं सारे भारत बर्ष में घूँसता हूँ। मैंने यह

प्रनुभव किया है कि आर्यसमाज सारे भारत की धास्ती है। अगर भास्ती मर गई तो भारत की भारतीयता नष्ट हो जायगी। वैदिक संस्कृति नष्ट हो जायगी। आर्यसमाज को छाड़कर और कोई सत्त्वा है फिरका परस्ती से लड़ने वाली? मुह से तो सभी लड़ते हैं, पड़ते उससे हाथ मिलाये ऐन मौके पर अपने स्वार्थ के लिए। फिरकापरस्त तो ये ज्यादा हैं जो फिरकापरस्ती के साथ फिरकापरस्त सत्त्वाओं के साथ हाथ मिलाते हैं और उनकी पीठ ठोकते हैं। यह वास्तव में धर्म की बात है। आज ईसाई पादरियों में यह दम नहीं है कि वे आर्य विद्वानों के मुकाबले में जाव। इन विद्वानों की रहने दो मेरा ह्री मुकाबला करने का जाय, तो देखो। आज ईसाई पादरो नाइन्सस की मोटी गोलिया सिलाकर राम व कृष्ण के मक्को की चोटिया काट रहे हैं। आज बड़े-बड़े धर्मोआर्य आर्यसमाज के खिलाफ नैक्कन देते फिरते हैं, लेकिन मुसलमानों की फिरकापरस्ती का मुकाबला करने के लिए कोई आगे नहीं जाता। ईसाइयों का जवान देने के लिए कोई तैयार नहीं है।

आज बहुत लोग बीड धम का प्रचार करते हैं। हमारी सरकार भी उनकी पीठ ठोका करती थी। बीडो ने राम और कृष्ण के मन्दिरों से उनकी मुर्तियों को निकाल फक कर उनकी जगह बुद्ध की मूर्ति रखी गई है। जिनको अपने सिर पर बढाया, वे हो आज हमारी शास्तीन के साथ बन रहे हैं।

वे प्रचार करते रहते हैं कि सवार घोड़े की टट्टी है। तुम कुछ मत करो। कोई किसी का बाप नहीं, कोई किसी का बेटा नहीं। मैंने कहा 'अगर इस जगत् में कोई किसी का नहीं है तो यह सारा जगत् यतीम-खाना हुआ। यह जगह पूर्ण है, क्योंकि यह पूर्ण से तो निम्नता है। अगर यह दुनिया की अक्षिति क्यूँ है प्रीथ सपना है तो तुम्हारे सामने मुक्ति ही मुक्ति है।

एक पण्डित ने लिखा—हिन्दुस्तान में प्लेग बम्बई में पंदा हुआ और आर्यसमाज का काम भी दयामन्द ने बम्बई में ही शुरू किया था। प्लेग और आर्यसमाज एक बराबर है। प्लेग क्यूँ से शुरू होता है। उन पण्डित जो के लिए मेरा जवान यही है कि आर्यसमाज पाव-डिबो के लिए प्लेग ही है। मोलियों के लिए, पादरियों के लिए, प्रजान फलाने वाला के लिए रुडिबादियों के लिए आर्यसमाज प्लेग है और प्लेग हो रहेगा। आर्यसमाज का प्लेग बम्बई से चला और ऊँचे स्वर में कहाँ है कि ईसाई भाइयों, सफाई करो, नहीं तो मैं का रहा हूँ।' मफाई हो रही है। किताने बदल गयी। कितानो के तर्ज बदल गयी। भारतवर्ष के अन्दर जितने अच्छे कानून बन रहे हैं, वे कोई इन लोगों ने बांटे ही ईजाद किए हैं? वे सब हमारे पीस हुए। को फिर पीसा गया है। आज देश के अन्दर रहने का नुदान बन कर दिया गया है तो पहले इसकी धावाज कितने उठायी थी? बच्चों के ब्याह न हो, बुरों के ब्याह न हो यह मन्त्र आर्योलन पहले आर्यसमाज में चलाये थे और वे ही बात आज हमारी सरकार प्रमल में ला रही है। अगर यो-हत्या को बन्द करने को धावाज आज उठ रही है तो दयानन्द का यह अपने जीवन में देखा हुआ पहला स्वप्न था। अगर आज हमारे देश में मो-हत्या बन्द नहीं हुई तो यह हमारे लोडरो की कमजोरी की निशानी हो। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो यह सपना दयानन्द ने देखा था। आज वह स्वीकार हो हो गयी है। राष्ट्रभाषा की पुट्टानी की जगह यह था बडी।

अगर आर्यसमाज की कोई कमजोरी करना चाहे अपने मे से हो, तो मैं यह कहूँगा कि जलो, दोनो चलकर ताला लग देते हैं। लेकिन याद रतों, आर्यसमाज अभी नहीं मर रहा। अगर हमारे हाथ से दयानन्द के स्वप्न की पूर्ति न होगी, तो कोई बात नहीं, दूसरों के हाथों से होगी। भाकी सन्तान ही सही, इस स्वप्न को साकार कर दिखायीगी। क्योंकि निश्चय का, मानके के कल्याण का काभी कोई रास्ता ही नहीं है, दुनिया को दयानन्द के रास्ते पर जाना होगा।

गुरुवर विद्वानन्द व्याकरण के सूत्र हैं। उनके पार्थिव सरीर के त्याग करने पर देव दयानन्द ने कहा था, 'आज्ञा व्याकरण का सूत्र प्रस्तुत हो गया है।' ऐसे महान् युग के जरुरी में बेंचकर देव दयानन्द ने पाणिनि की षष्ठाध्यायी और पातञ्जल का महाभाष्य पढ़ा था और आर्य-धर्माध्यक्षों के अन्तर को समझा था। आर्य-धर्माध्यक्षों के अन्तर को समझना ही देव दयानन्द को महान्तम उपलब्धि थी। इसी उपलब्धि ने ही भावी भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया।

देव दयानन्द ने स्पष्ट किया कि वाङ्मय के दो रूप हैं। धर्मोपदेश और पौरवेय। पुन पौरवेय के भी दो रूप हैं आर्य और अर्याय। आर्य वाङ्मय ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त और उसके उपरान्त का सारा वाङ्मय आर्याय साहित्य धर्माध्यक्षों के अंगों में होता है। जिनकी भावना धर्मोपदेश्येय है। उनमें आस्तिक और शैव शक्त को उन्मूलित नास्तिक कोटि का स्वीकार किया। क्योंकि—

नास्तिको वेदनिन्दकः । —मनु०

जो वेद के अपौरुषेयत्व को स्वीकार करता है वही आस्तिक है। वेद दयानन्द ने इसलिए स्पष्ट रूप से चौकलाना की—

‘वेद सब सत्य विचारों की पुस्तक है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना सुनना सुनाना, सब भाषों का परम धर्म है।’

—आर्यसमाज का तीसरा नियम

आवण्णी उपक्रम पर वेद कथाओं का प्रारम्भ होता है। इसका मुख्य उद्देश्य ही वेद का प्रचार-प्रसार रहता है। इस सुन बखबर पर वेद के सम्बन्ध में कुछ चिन्तन, मन उद्विग्न रहता है। इसी दृष्टि से हम निम्न तीन भूल भूत प्रश्नों पर विचार करेंगे।

१ वेद की उत्पत्ति किस प्रकार हुई?

२ वेद का कर्ता कौन है?

३ वेदों का प्रयोजन क्या है?

हर सत्य का आधार प्रमाण होता है। प्रमाण भी दो प्रकार का है। स्वतः प्रमाण और परतः प्रमाण। जब अपौरुषेयत्व की बात करते हैं तो इसका अर्थ है कि वेद स्वतः प्रमाण है। ईश्वर का दिया हुआ मानव भाष के लिए अल्लेख्य प्रमाण है। वेद का ज्ञान बिना किसी मेधावान के सब मनुष्यों के लिए है। वे भले ही न किसी भी जाति वर्ग अथवा देश के

वेदोऽखिलो धर्म मूलम

प्रेमचन्द श्रीधर एम० ए०

भी धर्म्य धर्मग्रन्थ हैं सब परतः प्रमाण हैं, क्योंकि वे मनुष्य कृत हैं। मनुष्य सर्वत्र सर्वोत्तमो, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् कभी नहीं हो सकता। वह अल्पम है और उसको शक्ति सोमित है। इस सीमितता और अल्पता के कारण ही उसमें अपूर्णता है। अपूर्णता कभी पूर्णता को जन्म नहीं दे सकती। इसलिए मनुष्यकृत सभी ग्रन्थ अपूर्ण हैं और उनमें शास्त्र तथा सांख्यिक सत्यों की भी अभाव है। प्रायः ऐसे ग्रन्थों की भावनातः साम्प्रदायिक तथा एकपक्षीय हैं।

ज्ञान भी दो प्रकार का है। स्वाभाविक तथा नैमित्तिक। पशु पक्षी अपने स्वाभाविक ज्ञान के कारण ही तरंगा और उड़ना जानते हैं। एक मत्स्यज के पुत्र को भी अपने पिता से नदी में तरंगा सीखना पड़ेगा। तरंगा तो धन्य बात है, मनुष्य के बच्चे को चलना और बोलना भी सीखना पड़ता है। ऐसे बहुत से प्रयोग किए गए जिनमें मनुष्य के बच्चों की मानव समाज के वातावरण से अलग बलव रखा गया और बच्चे कुछ भी नहीं सीख पाए। केवल वन में जिन पशुओं के बीच उन्हें रखा गया वैसे उनका भी स्वभाव बना। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता है। वेद ईश्वर के द्वारा दिया गया नैमित्तिक ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ में मिला।

मॅन्समूलर तो अपने धार्मिक विचारों में ईश्वर ईश्वर है। वे लिखते हैं—
“If there is a God who has created heaven and earth it will be unjust on his part if he deprives millions of his sons born before Moses, of his divine knowledge. Reasons and comparative study of religions declares that God gives his divine knowledge from his first appearance on Earth”

आर्य यहि धरतो और आकाश का रचयिता कोई ईश्वर है तो उसके लिए यह अभाष्य पूर्ण होगा कि वह सदा से पूर्ण उत्पन्न अपने लाखों पुत्रों को अपने ज्ञान से अभिषिक्त रखे। तर्क और धर्म का मतानुसार आकाश

सृष्टि के आदि में ही अपना ज्ञान मनुष्यों को देता है।

शिक्षा के बिना ज्ञान की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

नोपदेशमन्तरा ज्ञानोत्पत्ति ।

हम अपने माता पिता और आचार्यों से ज्ञान प्राप्त करते हैं परन्तु आदि सृष्टि में इन सबके ज्ञान प्राप्त का साधन क्या था?

सगंदि वेदोपदेश पूर्वधर्माधिगुणः । स एव पूर्वधर्माधिगुणः कालेनानवच्छेदात् ।

इस प्रकार परमात्मा ‘गुणों’ गुरु’ उद्घरा।

स्वामी विद्यानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थ ‘वेदमीमांसा’ में बड़ा सुन्दर तर्क दिया है। वे लिखते हैं कि जितनी भी मानव क्रियाएँ हैं उनके कर्ता का स्मरण किसी न किसी रूप में होता है परन्तु वेद के कर्ता का नहीं अतः वेद निश्चित रूप से ईश्वरीय है।

तन्म वातिक की व्याख्या में आचार्य कुमारिल भट्ट ने कहा है—

कर्तुः स्मरणशामावापदोपस्था वेदा ।

इस प्रकार प्रत्येक कल्प के आदि में जब सृष्टि का आरम्भ होता है तब—

सूर्याचन्द्रमसौ घाता यथा पूर्वमकल्पमभ्यत् । ऋ० १०१६०३

और इस प्रकार अपने अनन्त ज्ञान बल से परमात्मा ने अतः और सत्य को जन्म दिया—

ऋतञ्च सत्यञ्चाभीदातपरोऽन्यथायत् ।

अनादिनिघना निघ्ना

वागुत्पन्ना स्वयमुवा ।

आदी वेदमयी दिव्या

यत सर्वा प्रवृत्तयः ॥

सृष्टि के आदि में स्वयम् परमात्मा ने ऐसी दिव्य आणी (वेद) का आनुवंशिक दृष्टा जो निष्क है और जिससे ससार की प्रवृत्तियाँ चलीं। साधारणधर्म के निम्न स्तरों के अनुसार भी वेद ईश्वर द्वारा निश्चित

यस्य निश्चित वेदा, सो वैदोऽखिलः जगत् ।
जिसे सत्य मन्त्र

और ऋग्वेद के मन्त्र १०१६०३ के अनुसार वेद की उत्पत्ति—

तस्मात् यज्ञात् सर्वहृत्,

ऋच सामानि जग्निरे ।

अन्वाति जग्निरे ।

तस्मात् यजुस्तस्मादजायत ॥

सत् जिसका नाश कभी नहीं होता, जित् जो सदा ज्ञान स्वस्वरूप है, धानन्द जो सदा सुख स्वस्वरूप है। उसी परम ब्रह्म परमात्मा से (ऋच) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद और (अन्वाति) इस शब्द से अथर्ववेद भी, वे चारों वेद उत्पन्न हुए। इस मन्त्र में ‘जग्निरे’ और ‘अजायत’ इन दोनों क्रियाओं से अर्थक होतो है वेद अनेक विधाओं से युक्त हैं, ऐसा जाना जाता है। इसी प्रकार ‘तस्मात्’ इन से यह निश्चय होता है कि वेद ईश्वर से ही उत्पन्न हुए किसी मनुष्य से नहीं। ‘अन्वाति’ शब्द से अथर्ववेद को ग्रहण करना चाहिए। महर्षि विद्यानन्द ने ऋग्वेद-दिशा यज्ञमिका में ऐसा धर्म किया है।

‘वेद की किसी व्याख्या की समझता या विकलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें वैदिक धर्म का केन्द्रीय विचार क्या माना गया है और स्वयं वेद की अपनी धारणा, साक्षी उस विचार की कक्षा तक मुद्रित करती है।’ इस विषय में अज्ञेय दयानन्द का दृष्टिकोण ब्रह्मसंस्पष्ट है और उसका आधार विश्वधर्मोपदेश्येय है।

—श्री धरविजय

‘महर्षि दयानन्द और वेद’

वेद के एक जन्म मन्त्र से भी स्पष्ट होता है कि वेदों की उत्पत्ति का प्रकाश ईश्वर करता है। कहा है—

‘अथर्ववेद मेरे मुख के सममुख, सामवेद लोगों के सान, यजुर्वेद हृदय के समान और ऋग्वेद प्राण के नाह है। इस मन्त्र में सारी सृष्टि की बारण करने वाले परमात्मा को वेद की वाणी में ‘स्वम्भ’ कहते हैं। स्वम्भ त ब्रह्म कर्म निश्चय है।

—अथर्ववेद १०१७१०

और देखिए अतप आह्वान के अनुसार—

एव वा धरे महतो वृत्तस्य निश्चितवेदं यद् ऋग्वेदं यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यवर्जितः ।

—सा० आ० १०१७११०

यहाँ भी वेदों को ईश्वर से निश्चित कहा है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वेदों का कर्ता परमेश्वर की वाक्पद अथवा अक्षर ही है।

देश के विभिन्न भागों में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की मांग समय-समय पर उठती रही है। भारत विभाजन के तत्काल बाद उत्तर प्रदेश में यह स्वर उठा। राजकिशोर प्रसाद दास टंकन उस समय राज्य विधान सभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने स्पष्ट कह दिया—'राज्य की एकमात्र भाषा हिन्दी है, प्रान्त के समस्या का हिन्दी में ही होना।'।

टंकन जी तेजस्वी राष्ट्र भक्त थे। उन्होंने सदन में घोषणा की थी—'उत्तर प्रदेश विधान सभा में लगभग सवा बार ही सदस्य हैं, उनमें से एक जी सदस्य भेदे विपक्ष होगा, तो मैं उठी हिन प्रत्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दूंगा।' फिर किसी ने उर्दू की मांग नहीं उठाई।

भारत विभाजन के बाद ताजा थे। उर्दू की मांग उन पर नमक के समान थी। घट किन्ती की उससे सहानुभूति नहीं थी। साथ ही मांग उठाने वाले भी धारण त्यागि के चिकार थे, क्योंकि वे जानते थे कि उर्दू के नाम पर पाकिस्तान बनाया लेने के बाद देश भारत में उर्दू के लिए कोई स्थान नहीं है। न ही कोई स्वायत्तता सत्कार इसे कभी स्वीकार कर सकती है।

फिर भी गुप्त प्रयास जारी रहे, क्योंकि तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू मुसलमानों का धारण-सकता में अधिक प्रभावशाली करने के लिए विव्यात थे। वे उर्दू के विद्वान नहीं थे, फिर भी बोल बाल में (बाल नुक्कर) उर्दू शब्दों का बहुलता से प्रयोग करते थे। यन्ने ही वे जोड़े बगैँ न प्रतोते ही। मुस्लिम संस्कृति और उर्दू भाषा उन्हें अत्यंत प्रिय थी। उन्होंने स्पष्ट कहा था—'मैं जिसा की दुष्टि से प्रभाव हूँ, संस्कृतिक दुष्टि से मुसलमान हैं और धार्मिक दुर्गटनावश हिन्दू हैं।'।

महते हैं कि काबिल कार्य समिति में किसी प्रस्ताव पर ओगार बहुल चल रही थी। नेहरू जी पर कुछ कहती तो बन नहीं पड़ता था, बस बार-बार यही दोहरा रहे थे कि इसे राष्ट्रीय मुसलमान संस्य नहीं करे। इस पर सरकार बलन भाई पटेल ने हँसते हुए कहा था—'मुने ही मुसलमानों में कोई राष्ट्रीय दिखाई देता नहीं। हाँ, एक ही राष्ट्रीय मुसलमान है, जिसका नाम जवाहर लाल नेहरू है।'।

सम हूँ की की थी, हँसी से टन हुई। देश का तत्कालीन नेतावरर देश का कि साइबर की नेहरू

उर्दू की मांग का विरोध और आर्थसमाज

—स्तोषी 'कण्व'

बी उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की मांग का समर्थन नहीं कर सके। एक सार्वजनिक सभा में उन्हें कहना पड़ा था—'हम उर्दू की तरफकी चाहते हैं, किन्तु वह उत्तर प्रदेश की दूसरी भाषा नहीं बनाई जा सकती। ऐसा करने से राज्य का कर्वां दुगना हो जाएगा और बहुत तरह की प्रभावने प्रारोपी।

नेहरू जी उर्दू को दूसरी भाषा बनाने का विरोध मात्र धार्मिक स्थिति के कारण कर रहे थे। दूसरे थे यह भी जानते थे कि उर्दू की परा-स्यभावत लिपि कार्यालयों के काम-काज में जटिलताएँ हो उत्पन्न करेगी।

धारसमाज की दुष्टि में यह कारण गौण हैं। प्रस्त राष्ट्र के हित का। कर्वां दुगना हो या बीयुना, राष्ट्रीय एकता और प्रसन्नता के लिए किया जाएगा। हमारा विरोध कुछ कदम सत्य पर आधारित है, जिनकी कर्वां धारो करेगे।

उर्दू वाले इस स्थिति का लाभ उठाते हुए समय-समय पर अपनी मांग मुखर करते गए। १५ प्रगस्त १९४० को अनेक प्रजनन समस्थाएँ हल हो सकती थी और सम्पूर्ण राष्ट्र उनका एक स्वर से समर्थन करने को तत्पर था, परन्तु नेहरू जी की हठधर्मि के कारण ऐसा नहीं हो सका। धारो चलकर देश के विभिन्न भागों में भाषा समन्वया उठ सजी हुई।

विजयनाम बेलिए कि भागन विभाजन के समय सरकार में हो 'राज्य पुनर्गठन आयोग (१९४६)' के भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की अनुमति कर दी। धारसमाज कभी भी इसका प्रयोजन नहीं रहा। धार बी नहीं है। हम भाषा, भाषी और भाषना में ऐक्य के प्रयोजन हैं। राष्ट्रीय एकता और प्रसन्नता भाषाधी एकाता पर निर्भर करती है।

उपयुक्त आयोग ने राजभाषा के सम्बन्ध में निम्न अनुसंज्ञा की थी—

'जिस राज्य में ७० प्रतिशत से अधिक एक भाषाधी समूह हो उस राज्य को एक भाषी तथा उसके

प्रतिरिक्त ३० प्रतिशत से अधिक बोचने वाला कोई अन्य भाषा-समूह हो, उस राज्य को द्विभाषी घोषित किया जा सकता है।'

'जिन जिलों में राज्य की घोषित राजभाषा के प्रतिरिक्त ७० प्रतिशत से अधिक बोचने वाला कोई अन्य भाषा समूह हो तो उस भाषा को उस जिला विशेष में सरकारी काम काज के लिए प्रतिरिक्त राजभाषा घोषित किया जा सकता है।'

सन् १९७५ में श्री इन्दु कुमार गुजराल की अध्यक्षता में Committee for promotion of Urdu गठित की गई। उस ने भी धारोय की उपयुक्त अनुसंज्ञा को दोहरा दिया।

बिहार और उत्तर प्रदेश को जनगणना से मुसलमानों की संख्या ३० प्रतिशत से बहुत कम है। दूसरे सभी सुसमान उर्दू भाषी नहीं हैं। इस आधार पर कुछ लोग उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने का विरोध कर रहे हैं। इनमें सत्ताकृदल कांग्रेस के विचारक, मन्त्री और सामर्थ भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी, लोकदल, विचारार्थ परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक मंच, विश्व हिन्दू परिषद जैसे संगठन भी इसी पक्ष में हैं। उर्दू की सर्वप्रथमिका का मामला सर्वोच्च न्यायालय के विचारार्थीन है।

परन्तु धारसमाज का पक्ष इससे निम्न है। जो लोग उर्दू की मांग को प्रत्यक्षानुप्रति बतार रहे हैं, वे प्रतोस रूप से मुसलमानों को उत्तर प्रदेश व बिहार के अपनी भाषाधी बीप्रतिधोष ३० प्रतिशत से अधिक करने को प्रेरित कर रहे हैं, जिनसे हस्तामीकरण की प्राप्ति तेज हो गई है। यदि वे अपने लक्ष्य में सफल हो जाते हैं, तो उर्दू की मांग को प्रत्यक्षानुप्रति बताने वालों पर क्या तर्क बर्षा ? क्या उस समय उर्दू को द्वितीय राजभाषा बना दिया जाएगा ?

उर्दू की मांग के साथ उसकी प्रागतिशक्ता जुड़ी है। जिला और जून के साक्षिणी से बतार जा कि उर्दू

(मुसलमानों की) भाषा उर्दू है। वे हिन्दी वालों के साथ नहीं रह सकते। उन्हें प्रलग बगहू चाहिए। इन्हीं जिन के कारण भारत टूटा। पाकिस्तान बना। जिनकी उर्दू राजभाषा बनानी थी, वे स्वेच्छा से पाकिस्तान गए। हमने किसी को रोका नहीं। प्रव इम प्रसिद्ध भागन में, प्रवभा उसके किसी राज्य विशेष में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की जिन करना क्या अनुचित एवं राष्ट्र-द्रोह नहीं है ? यदि ऐसा ही करना था, तो विभाजन हा नहीं किया जाता। दोनोँ बाने एक साथ नहीं चल सकती।

भारत-विभाजन के समय उर्दू में काम करने के प्रवभावी लागी की संख्या आज की प्रपेला कहीं अधिक थी। उन्हें हिन्दा में काम करना मुश्किल था। जब उस समय उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने को प्रवश्यकता नहीं प्यो तो धार कौन सा पट्टा हट प्ये ?

उर्दू के प्रसधरो का कहना है कि उर्दू भी भारत की भाषा है। भारत में ही पंजा हूँ, कनो-कनो और विकसित हुई। हिन्दी राष्ट्र-भाषा है। उर्दू उसका अधिकार नहीं खीनती। हिन्दी पटरानी है, तो उर्दू को छोटी रानी बनाकर रख ली।

हमारा मत इससे निम्न है। उर्दू भारत की भाषा नहीं है। होती तो पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा नहीं बनती। किसी भा तीव भाषा को पाकिस्तान अपनी राष्ट्र भाषा कवापि नहीं बना सकता।

वही पर स्वतन्त्रता है। अपनी उर्दू को रानी बनाओ या पटरानी, हमारे यहाँ सीतों का चलन नहीं है।

उर्दू पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा है। वही की सरकारी भाषा है। उसको यह दर्जा देने के लिए ही हमने अपनी मानु भूमि का विभाजन स्वीकार किया था। कलेजे पर पत्थर रखा था। मातापिता से साथ छोड़े बहनों का सुहाग लुटा था। किसी का भाई बिछड़ा था, तो किसी की बहन लुटी थी। बाप की राखी टूटी थी, किसी का सहारा छूटा था। नृशयता के उन ताण्डव नृत्य में बरती कापी थी, प्राकाश नौया था, मानवता लुपटी थी, किमके लिए ? उर्दू के लिए। उर्दू वालों को जिन के लिए। जिनका के प्रागवपन के लिए। प्रव किम बात का हिंसा भाग जा रहा है ? हम बचे हुए भारत में उर्दू के लिए कहीं प्रगह है ? क्या वह कुबानी कम की ? क्या वह खुन प्रातो के लिए कहीं प्रगह है ? क्या वह



व्यासपीठ

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

उपनिषत् कथा-माला-१७

उपासना

मनुष्य बिना ग्रहकार के रहे। सत्कर्म के करने से मनुष्य को जो अभिमान या होता है उसका नाम ग्रहकार है—संस्कृत भाषा में इसे श्रुता (ग्रहभाव) शब्दवा समझा जाता है। कोई भी सत्कर्म ग्रहकार के साथ मिलकर अपने अपने ही रूप में नहीं रहता परन्तु वह किन्वा हुमा कर्म न किए के तुल्य हो जाता है। विद्वानों ने इस दोष को दूर करने के लिए बड़े सुन्दर उपदेश दिये हैं—उनका वचन है कि यदि बाएँ हाथ से कोई शुभ काम किया जाये तो उसका ज्ञान बाएँ हाथ को भी न हो। यदि मलिनत्व किसी के साथ भना करे तो मन इससे बेखबर रहे—ये वचन मनुष्य को इस बुरी भावना (ग्रहकार) को छुटाने के लिए काफी हैं। मनुष्य से यदि कोई काम भ्रष्टा हो जाता है तो वह अपने प्रशान्त सुनने के लिए हार और लगाने करता है यदि कोई उसकी बहाली न करे तो फिर बिना होकर लोगों के सामने अपनी प्रशान्त स्वयं हो करने लग जाता है। यह एक ऐसा कड़ा बन्धन है, ऐसी कड़ी जो भीरे के लिए मनुष्य का इससे स्वतन्त्र होना बना कठिन है। अपनी प्रशान्त बाहना अपने आप में एक बड़ा भारी पाप है। इसके प्रभाव से रसायन को निष्फल हो जाता है।

बीज अपने को छुपाता है तो मूल पेड़ा है और जो बीज बाहर पड़ा रहता है वह बीज या तो पद-दलित हो जाता है या उसे पशु-पक्षी खा जाते हैं। इसकी संस्कृत भाषा में निष्काम कहला गया है। प्रभु-अर्जुन के मन में इसे नाश होने वाला निम्बा है। जेने बात के ऊपर के छिनके को अवगमन देने में फिर वह खाने के काम तो भ्रान्त है परन्तु अपने उत्पत्ति करने के योग्य नहीं रहता। सत्य कर्म के साथ प्रशान्त का लगा हुमा छिनका मनुष्य को ससार में बाँध लागे का कारण बनता ही रहता है, इसकी दूर कर देने से नाशवान नाश हो जाता है और शेष ससार में रह जाते हैं।

प्रभु भक्त इस बात को जानकर नहीं करते हैं। और सत्य पथ का अन्त नोने हैं। और फिर साक्षात्कार

में जाकर धाराम पाते हैं। इसलिए अपनी प्रशान्त धार करना भारी मूल है। निम्बा है—

तारीक अपनी धार मत करना कभी तू मूल कर।
ऐव धपना देख ऐसे गैर पर मत कर नजर ॥

जो मनुष्य इस बुरी भावना वाला है वह धरने में है। उच्च से उच्च मनुष्य भी अपनी प्रशान्त करने से छोटा और पवित्र होने पर भी छोटा हो जाता है। यह एक प्रकार का पाप है जो मनुष्य में पर दोष निकालने का स्वभाव बढाता है। और ससार में उसको नकारा जाता है। स्वामी पुण्य धर्मके मनुष्यों के संग से चकराता है और कोई विचार-ध्यान मनुष्य उसको समीप नहीं धारते। स्वामी मत्प पथ से हटाकर कुमार पर चलाता है और फिर दुःख को समीप लाते हैं। बुद्धिमान मनुष्य वह है जो अपने दुर्गुणों पर ध्यान रहे और दूसरे के दुर्गुणों पर चलाता न करे।

स्वामी से काम सारे दुनिया में हैं बिम्ब जाते।
गुप्त कहाँ वह देखे जिसे समा में हैं गुणित ॥

स्वामी से सब काम बिम्ब जाते हैं हमसे कोट कारक फिर वे बनने में नहीं धारते। जैसे किसी नेह को जन साधारण की समा में गुनाकर यह बताता कि यह गुण नेह है किसी में मन कहना इस वचन से लोगों को हसना और अपने को मूर्ख हो जाता है। जो मनुष्य स्वामी हो जाता है वह स्वयं अपने आप को बोला देता है और वन गुण धारण को बेचकर दुराचरण का मोक्ष लेता है। इससे गुण-दुष्ण में समभाव बना रहता है और वचन पर कट्टर धारते हैं। यह स्वामी एक बता है जो शरावत को जगती है जो कभी दूर नहीं होती। स्वामी एक आत्मिक ध्यानि है जिसके साथ प्रशान्त बीजना भी धारित है। स्वामी को दूर करने के लिए भूत और बोधा देना भी उसका स्वभाव हो जाता है—

हुवा मिल जो भावना
हिरदा हुआ है,

नहीं चमकता फिर
वह तूरेबुधा से।

प्रभु से मिलाया तो मनुष्य को प्राप्त ही है और वह सदा उसके समीप है। प्राप्य वस्तु ध्यापक से मिलना नहीं हो सकती। केन्द्र और बेदे का सम्बन्ध सदा से है। अनुचित सासारिक विचार मनुष्य के चित्त को दूर समय परेशान करके उसकी पवित्रता को तुच्छा से बिगाड़ देते हैं। इसलिए तूरे काम की जिम्मे-दारी से बचने के लिए जीवन के कार्य क्रम को सत्य तथा उचित प्रकार से बनाना ध्यापक है। मन की शुद्धता से जो पुण्य प्रभु के दर्शन को चेष्टा करता है वह मूल पर है। जैसे 'र' के धार्ये 'न' में लिखा जाये सब तक ल नहीं हो सकता वल, जब तक मन शुद्ध न हो प्रभु प्राप्त नहीं होती। फिर भक्त करण प्रकाशित होकर प्रभु-दर्शन से स्वयमेव भावित हो जाता है। मन की शुद्धता के बिना प्रभु प्राप्त के लिए मनुष्य जिस प्रकार की चेष्टा करता है वह सब व्यर्थ जाती है।

अत उपासना की विधि चित्त की चंचलता को दूर करके परमेश्वर प्राप्ति के योग्य बना देती है। यदि मनुष्य इस अवस्था को ठीक बना ले, तो ज्ञान पथ की और उसका पथ बढ सकता है इसके बिना नहीं है—इसलिए, प्रभु भक्तों का वचन है—

विलबर तेरा देरे धार्ये खडा है।
मगर मुक्त तेरी नजर में पडा है ॥

जिस की लोक में लोग हैरान न परेशान हैं वह तो हमसे नखा है। परन्तु इसको इन बाहरी धाँकों से देखना चाहते हैं। उनकी भाँसी से जो वस्तुएँ दीखती हैं, वे सब महसूस की जाती हैं, परन्तु परमात्मा धनो से परे है। इसलिए वह किसी भी धन से मायुक्त नहीं हो सकता। ठीक मलिनत्व का दूसरा नाम 'ज्ञान' है। प्रभु-भक्त धार्ये अपने प्रभुभक्त से उसकी देख सकते हैं। परन्तु उसकी धन से मूठे प्रेम में दूरा बना दिया है, जब तक यह दुराई दूर न की जाय तब तक उसका दर्शन कठिन है। जैसे किंक से सुनने का और कान से देखने का कार्य कठिन है।

इसलिए प्रभुभक्त मन की शुद्धि के लिए ठीक धन करता है। उन ही पुस्तकों का पठन पालन करता है जिनमें यह विषय ही। उन मनुष्यों की संगति में जाना पसन्द करता है, जो उसमें वक्ष हैं। ससार का कोई भी ऐसा कार्य जो इस मार्ग में रुका-वट डाले, वह नहीं करता है। यह वह उपाय है जिससे लोक और पर-लोक दोनों सुखर जाते हैं।

जब सब सहज इच्छाओं से सब हृदय कमुणित होते।
फिर कहा प्रभु की ज्योति से अन्तर धालोकित होते ॥

इच्छाओं का बढते जाया हृदय में एकाग्रता उत्पन्न नहीं होने देता। भविष्या या हृदय कपी सागर से एक सहर की उठती है, फिर उससे तीरी तीसरी जहर स्वयमेव बनती जाती है—इस अवस्था में हृदय में मन बढता जाता है। यह बार बार जीवन और मनुष्य की भावना को साथ लाती है, इससे पीछा छुटाना ही मनुष्य जीवन का सत्य है। परन्तु हर एक विचार को यहा पहुँच नहीं, अनुचित इच्छा से हृदय की शुद्धता नहीं, दोष-मुक्त स्वभाव को दूर करने वाली पुण्य कमाई नहीं। परन्तु जो ध्यान-क के प्रेमी हैं जो इस गुप्त विषय को हल करने के योग्य हैं, वे सदा कम होते हैं, हर कोई इस पथ का पवित्र होते हैं। जिसके पूर्व जन्म सहायक हैं, वर्तमान का पुण्यार्थ ठीक प्रकार से हो और प्रभु की कृपा सहायता हो, वह इस मार्ग पर चल सकता है और वह निश्चय मायमाण है, जिस को योग्य पथ प्रदर्शक मिले। परन्तु धावकल योगियों को, मुक्तों की और गुप्त-मार्ग की बड़ी ही चरखा ही रही है, इसके पीछे ससार की एक भारी सच्चा अपनी सुख-दुख ही रही है। बड़ी विचित्र है कि जि जो जीवन दूर परवस्था में कम होनी चाहिए, जिसकी कभी ही सुन्दरता की भोतक है, जिसकी धाविकता से प्रकृति भी बदलती है, मनुष्य अपनी भारी चेष्टा से यदि इसी और प्रत्यक्ष हो तो सिवा बुरे परिणाम के और क्या हो सकता है? प्रत्येक सम्भवताओं में अपने दिव्य बर्ण को बहाना और उन्हें अपने सिद्धांत का जाल—

उपासना

विश्वासी बनाता हो अपना विशेष कर्तव्य जान लिया है। भारत वर्ष इस बात का दीवाना है, इसीलिए तो हमको न कोई सचे होने का स्थान है, और न कोई अहंता का ठिकाना। कितनी भूल है, कितना शय-विश्वास है कि मुझ को परमेश्वर से ऊँचा स्थान दिया जाए। इससे प्रकट है कि यह देश सत्य मार्ग पर धाकड़ नहीं। ऐसी धनुचित चेष्टा तो हृदय को सुझता प्रकट नहीं करती, परन्तु भ्रम की जतानी है। विद्वानों का तो कथन है—

विन्दनी को रास्ती से पू गुजार।
कर्म फल से फिर देखा सुकसार ॥

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन को सत्य-मार्ग पर ही चल कर व्यतीत करे और बनी हुई बात को अपने हाथ से न बिगाड़े। यह नियम कर्म के फल से सुनने होने का है। मनुष्य बुरे कार्य के बोझ से लुल्ला हो जाता है। भ्रम करण की प्रवृत्ति विषम-भ्रम से भुक्त जाती है, फिर सचकाने से खेल व बुद्धिमानों से बेर हो जाता है। सुख से उठी प्रभु का बन्ध-बाध और दुःख से शान्ति भद्रपुत्र करने का स्वाभाव हो जाता है। फिर जीवन में न तो धार्मिक धान्यम और न मृत्यु से अधिक बरबाद होती है।
हुर एक को सुखी देखकर सुख होना और दुःख में हाथ बटाना उसका स्वाभाव हो जाता है। इन नियमों के पालन करने से मनुष्य में मनुष्यता जा जाती है, यदि ऐसा न हो तो क्रोध-नालच धार्मिक प्रभाव से हृदय बरबाद है। मनुष्य को सांसारिक कारोबार में सच्चा रहना चाहिए और कभी भी मुल से भूट या कटु बचन न कहना चाहिए। व्यवहार और व्यापार में नैकी से काम करना और बोला-देही से बचना चाहिए, इससे मान-मर्त्या और भुम कमाई प्राप्त होती है।

निश्चय से और विचारशील को संपत्ति से धारणा बनर हो जाता है। यह विचार बहुत धम्मा है। जिसके अनुसार निश्चय करने से परमात्मा का प्रभाव होता है। कामवासना की प्रतिक्रिया से बचना, हृदय के नियमों को कभी प्रकार से पासना, क्रोध और ईर्ष्याओं से पराजित न होकर इस पर विजय पाना, यह कर्तव्य का पूरा कर्तव्य है। इस कर्तव्य की पूरा करते रहना मनुष्य की बुद्धिमान बलता और उसकी क्षमता की चेष्टा में नहीं से जाता है। इस प्रकार से जीवन विद्यमान ठीक

है। जो इस पर धारण करता है, वह ही पूरा मनुष्य है। जो इन नियमों का पालन नहीं करता वह चाहे किसी का पुत्र हो या शिष्य, वह नकार है। जाब करने से यह प्रमाणित हो चुका है कि जब तक मन धनुचिन् ईर्ष्याओं से बरी न हो तब तक बलाई की लता कंठे हरी हो? वह मनुष्य इस पथ में कंठे मति करेगा, जिसके नेत्रों में मनुष्यपुत्रा, की भूल पड़ी हो। मनुष्य को परमेश्वर से अधिक मानना भलाई की बेचकर बुराई की मोल लेना है जो ऐसा करते हैं वह सच्चाई से बबरते हैं, और भूट के समीप होते जाते हैं। पुत्र तो अपनी चतुरता से भाल उधाने लगे और शिष्य जन बोले में आने लगे। किसी बात है जिसका न भोग है और न पता है केवल यह-परस्त्री है, जिससे मनुष्य समाज पर बड़ा ही धापात है। हा, यह सत्य है, इस काम को बड़ी कर सकता है जो ससार को पड़ने और दुनिया से कमाने की शकल रखता हो। हर एक इस विद्या का प्रयोग नहीं इस मनुष्य पूजा से तो यह प्रकट है—

भुसकर हृदय सुखा को
कस धमा किया।
अपने घर के बीच में
घाघ ही को गुम किया ॥

मेरे पिता। मनुष्य-पूजा प्रभु-पूजा के उच्च नियमों को मनुष्य के दिलों से दूर दृढ़ाकर उनको कपाल बना देती है। यह ऐसी भूल है जेंसे कि जिह्वा और कान रखने वाला सुद को गुंजा और बहरा बना दे या अपने ही घर में घर स्वामी गुम हो जाए। ऐसी बातों का नाना केवल अपनी भूल पर लोगो को हँसाना है। जो जिसके योग्य हो उसको बंसा समझना जिसकी मनोवृत्ति ससार के उपकार से हो उसका मान करना उसके उपकार को न भुनाना भला ही है, मगर उसको भूल जाना चाहिए। यह जो कुछ कहा गया है उपासना को सीखी के निपरीन होने से कहा है। यह तो मनुष्य के स्वभाव को गुम बनाने परमात्मा की ओर, जो सब भलाइयों का केन्द्र है, से जाती है। इसके बिना प्राप्त किए साक्षात्कार की सीखी किसी को नहीं मिलती है। उपासना की रीति बुरे रास्ते पर चलने वाले पुत्र दैल की की इसका धनु और बुराई चाहने वाला है, यथाती है। इसके सहारे ही भ्रमर मनुष्य में बनावट का स्वाभाव न हो, दिल पर काट हो जाता है। इस सहारे पर दुनिया के सब विद्वान सङ्गठन हैं, नही एक वाह है

कि जिस पर चलने से मनुष्य ससार के बचन से मुक्त होकर मुक्ति को प्राप्त करके सदा के लिए प्रसन्नचित हो जाता है। इस काम के करने को इस नियम पर कटिबद्ध होना चाहिए जिससे भागे भागे धारणा की शक्ति बढती जाये, और सांसारिक मोह के बजाब से कमजोरी सामने न आये। यह यह है—

भाल कान गृह बन्द
कर नाम निरचन से।
बन्दर के पट तब खुलें
बाहर के पट दे ॥

देखने के योग्य वस्तु को देखना और न देखने के योग्य को न देखना धर्म को बन्द करना है। सुनने के योग्य शब्दों को सुनना और न सुनने के योग्य शब्दों को न सुनना कान को बन्द करना है। फिजूल बातों से से जिह्वा को रोकना और गुम और हिल की बातों का करना जिह्वा को बन्द करना है। इस समय के दूब हो जाने से प्रभु की धर्म है कि भ्रमर धारण साक्षात्कार और प्रभु-दर्शन न हो तो मुझे भूटा सारको भेरा उपहास करो। यह समय बार बार परमात्मा के गुणों के प्रकट होने से उसके प्यार में बसा ही सहायक है। मगर धर्म कस इस पर भ्रमर गलत तरीके से हो रहा है। चप्पा दो चप्पा के लिए भाल कान मुल को बन्द करना ही गुम काम मान लिया गया है। यह किसी सीमा तक साधन के रूप में ठीक तो हो सकता है भ्रमर इससे ठीक रास्ता

सुल जाय, मगर बड़ नहीं होता है। भ्रमरी नियम जिसमें भूल नहीं है, वह ऊपर चला गया है कि जाब कान और जिह्वा का ठीक रास्ता में जाना सिद्ध का कारण तो ही सकता है इसके बिना दूसरा कोई उपाय नहीं। भगो के द्वारा बाहरी हृदय जो दुनियावी भ्रमर लेकर अत-करण में जाम होता है वह उसके जीवन को बर्बाद करने में बम पकड़ लेता है। इन इन्द्रियों और सत्कारों के दोष से हृदित होकर मनुष्य जानता हुआ न जानने और सुनता हुआ न सुनने वालो के बराबर होता है। दुनिया में देखा जाता है, सही है गलत नहीं हो के सचता है। दिवाबाली भ्रमर करने वाले को भीतर शक्ति को नहीं सञ्चालते हैं उनका स्वाभाव ज्यादातर कठोर देला गया है और बाहरी धाकड़न्य में फँसकर कुछ भ्रममान और कुछ अपने बड़भन को स्तुति सवा करते ही रहते हैं, इस लिए सारी बनावट मलबल निकालने के लिए प्रमाणित होती है और जो भले लोग ठीक रास्ते पर चल रहे हैं वह किछर से धाते हैं और कहा की जाते हैं। कुछ पता नहीं चलता है। वह ससार को कहा बढाते हैं, करक है दुनिया के चाहने वालो का, इस रास्ते में कदम नहीं बढता है और भ्रमर दिवाब के लिए चने तो कदम कदम पर गिर पड़ता है, इसलिए उपासना मनुष्य को भ्रमर की सफाई को ठीक करके भ्रमरी जगह तक पहुँचाती है और परमात्मा से मिलती है।

आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली के शताब्दी-समारोह के उपलक्ष्य में

निबन्ध-प्रतियोगिता

विषय 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'।

पुरस्कार—	प्रथम	१०० रुपये
	द्वितीय	७५० रुपये
	तृतीय	५०० रुपये

- प्रतियोगी की योग्यता न्यू-तम शास्त्री या समकक्ष होनी चाहिए।
- निबन्ध पुलकेश शास्त्र के २० पृष्ठों से सुलिखित या टंकित प्रसार होना चाहिए।
- निबन्ध की भाषा हिन्दी होगी।
- तीन प्रतिस्पर्धी विद्वानों द्वारा निर्णय किया जायेगा, जो सर्वमान्य होगा।
- निबन्ध प्राप्त की प्रतिम तिथि १५ नवम्बर १९८६ है।
- पुरस्कृत विद्वानों को शताब्दी समारोह के भवधर पर सम्मानित किया जायेगा।

सचोक्त—

मूलचन्द गुप्त
मन्त्री

हुरबाब-२३७४४०

आर्यसमाज, दीवान हाल, दिल्ली-६

खून की नदियों की चेतावनी का उत्तर

शकाली समस्या से अभी हम सुनभ ही नहीं गये थे कि एक और वस्त्रक दरवाजे तक था पहुँची। इस्लामियत का अंतान बोलना उठा। श्री जगन्नाथ शास्त्री द्वारा एक खबर १५ सितम्बर दिल्ली से प्रेषित होकर १६ सितम्बर को "दैनिक" शास्त्र में छपी। शौर्यक था, खून की नदियों की चेतावनी। इस खबर से देश के बहु-संख्यक समुदाय पर चोट ली है ही, साथ ही देश में अशांति फैला कर एक नये विभाजन की ही प्रक्रिया है। इसका हर देशभक्त को उद्वेगक विरोध करना चाहिए, मौलाना अबेदुल्ला खान जोश ने आगरा होश को भूल रहे हैं। उत्तर में निवेदन है कि भाषक ही बार की धीरे-धीरे मुस्लिम पर्सनल लॉ से तंग आकर न्यायालय का दरवाजा खटखटाती है। न्याया-

के भण्डे भण्डे पडे लिखे लोग, श्री भव वैदिक बर्म में दीक्षित होकर गायत्री मंत्र पढ़ते लगे हैं। भाषको मदीना मुनिबसिटी के बाइस चांसलर भादुराणी भाई धर्मरेश जी और छात्राी नवान के पीन डा० भाई भागद सुयम जी से मिलना चाहिए। मौलाना अबेदुल्ला खान का कथन है कि मुसलमान ही भारत के सच्चे सपुत हैं। हम मानते हैं कि भारत में धनक मुसलमान देशभक्त हुए हैं। मान्यवर रसखान, भादुर के मौर्य मोहम्मद भली साहज, धर्मर शाही धमका उल्ला, पूर्व राष्ट्रपति माननीय डा० जाकिर हुसैन एफ फलस्टीन भली बहुधन साहज और पूर्वपूर्व केन्द्रीय मंत्री भादुराणी छात्राजी जैसी पण हमें गर्व है। मौलाना खान जैसे पाकिस्तानी एजेंट भीराना जैसे

इससे भाषकी यह कल्पना की गिरा-बार हो जाती है। मौलाना खान का कहना है कि जो कोई कुरान और हमारे पर्सनल लॉ को छेदेगा उसकी सफाई देने हम कोट में नहीं जावेंगे। बल्कि उनकी ही सफाई कर देंगे। इससे यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि मौलाना खान की भारतीय सचिवाय और न्यायालय में विश्वास नहीं है। भाषको तो अपनी पाकिस्तानी इस्लामिक तनवार में विश्वास है। पर मिर्मां याद है भाषको, जिस पर्सनल लॉ की हिमायत करके प्रायः मोल्ला कर भर्गल भाषण कर रहे हैं उस लॉ के हिमायती पाकिस्तानी सरकार ने बगलादेश में पर्सनल लॉ की मानने वालों पर ही बार बार अत्याचार किये। उनकी रखा हिन्दू बीच बाहिनी ने ही को की उस समय प्राय

दोनों बच्चे बिना दोवार में चुनक दिये थे। जिते हम अभी भूले नहीं हैं। बन्ना बंरानी एक बार हकीकत राय की निर्मम हत्या हमें याद है जिसे हम भूले नहीं हैं। ऐसी दर्शनक घटनाओं से इतिहास भरे पडे हैं। जो मौलाना खान जैसे मताम्ह लोभों के बिनीने कुक्ष्य का परिणाम था। हम बहु-संख्यक मुसलमान के मानने वाले लोग हैं। जियो और जीव दो में विश्वास करते हैं। इसलिए मौलाना खान से अतुरोध है कि पिछले इतिहास को न दोहराये। अभी अत्रपति शिवाजी एम अहाराणा प्रताप का रक्त भोजव है, चरे दरबार में तुम जैसे पात्रियों का सिर काटने वाले बीच धर्मर-सिंह राठौर का रक्त भोजव है। भारतीय हिन्दुत्व के रक्त को यमनि की कोशिश न करो करना परिणाम

खून की नदियों की चेतावनी

(जगन्नाथ शास्त्री द्वारा)

दिल्ली को नवी मुस्लिम बस्तियों में निजुक वितरित हो रहे एक भाषण के टेप में चेतावनी दी गई है कि यदि कुरान या मुस्लिम पर्सनल ला बदलने के बारे में कोई कार्रवाई की गई तो खून की नदियां बह जायेंगी।

यह टेप प्रायजगद मजिद के ह्दाम मौलाना अबेदुल्ला खान के राजस्थान के पाली रुम्बे में मिलत में दिये गये भाषण का है।

इसमें थावा किया गया है कि केवल मुसलमान ही भारत के सच्चे सपुत हैं। गीताभा माघी या इन्दिरा गांधी की हत्या किसी मुसलमान ने नहीं की। यदि इतिहास माघी जी के अग्र-रक्षक मुसलमान होते तो यह हिन्द नहीं देखना पड़ता। भारत की गोप-

नीय सूचनाएं विदेशों के बेचने वाला कुत्तर नारायण को मुसलमान नहीं हैं।

भाषण में कहा गया है कि यदि कुरान नहीं रहेगी तो फिर गीता और गुरु ग्रन्थ साहज भी नहीं रहेंगे। मुसलमान किसी कोट में सफाई देने नहीं जायेंगे, लेकिन कुरान या पर्सनल ला के विनाश करने में जाने वाले को सफाई कर दी जायेगी।

मौलाना का कहना है कि कुरान पर पाबंदी लगाने या पर्सनल लॉ बदलने को कोशिश की गई तो ही सकता है कि इतिहास खुद को दोहराये एव बाला साहज देशभक्त, अलग विहारी जायेंगे और राजीव गांधी को कत्तमा पड़ना पड़ जाये।

भाषण में कहा गया है कि मुसलमान ही सच्चे बगलावार हैं। इसीलिए

भारत की बरती मा मुसलमानों को मरने के बाव भी अपने लीने में जगह देती है। मुसलमान काश्गिस्तान तक से बचवा हिन्दुस्तानी है, जब कि भण्डे भण्डे भारत रत्न जीते जी हिन्दुस्तानी रहे पर मरने के बाव पाकिस्तानी बन गये क्योंकि उनकी राख हवा में बिखेर दी जाती है, जो जाकर पाकिस्तान में बसती है।

मौलाना का कहना है कि पाकिस्तान बनाने में जितना जल्मा का हाथ है, उनना ही मरदार पडेल का। जितना मुसलमानों का बोझ है, उनना ही भारत के गैर मुसलमानों का। जिन्होंने पाकिस्तान मागा, बले गये। हम किसी को दया पर जिनदा नहीं हैं। भारत किसी के बाप की जागीर नहीं है।

भाषण में बार बार चेतावनी दी गई है कि वह जवान काट ली

जायेगी, वह खान लॉ के बिनाही, जो कुरान या पर्सनल ला के जिलाफ होगी।

यह आरोप भी लगाया गया है कि बगलादेशी मुसलमानों की भाव में जिहाद में हजारों भारतीय मुसलमानों के नाम चोटर निष्पट से काट दिये गये।

भाषण के टेप में कहा गया है कि प्रायः मुसलमानों का बल्लेधाम हो रहा है, अस्ते लूटी जा रहे हैं और बच्चों को बल किया जा रहा है।

अजमेरा वात यह है कि संकड़ों ऐसे तु मुस्लिम बस्तियों में फो बांटे एक तुने जा रहे हैं लेकिन केन्द्रीय गृह मन्त्रालय को कोई जानकारी नहीं है। एक बरिष्ठ अधिकाारी ने बड़े सहज भाव से कहा "हाँ, उन्नी उन्नी खबर सुनी है कि ऐसा कोई डेप है।"

(रैमिक शास्त्री)

सब का काम है, न्याय वेना इसमें किसी सब विशेष का दोष नहीं जो भाषा इतना बोलता रहे हैं। माननीय बालासाहज देशभक्त की अलग विहारी जायेंगे एव देश के प्रिय नेता माननीय श्री राजीव जी को कत्तमा पड़ाने की बात और हमारी पवित्र गीता एव गुरु ग्रन्थ साहज को मिटाने की बात, भास्त्रव ने हिन्दू समुदाय पर एक गभीर चोट है। पर मैं समझता हूँ कि माघी जी गुरु ग्रन्थ साहज को मिटाने वाला हीरन उच्च नेवालों को कत्तमा पड़ाने वाला भाषण अभी पंदा नहीं हुआ। याद रहे भाषके उच्च फाटि के मौलवी और इस्लाम

देशदोही लोग भारत माता के सच्चे सपुत नहीं हो सकते। जिन्होंने देश का बदचारा करके भारत माता के तीन टुकड़े करा दिये वहाँ भाष भारत दिक्क में सर्वशक्तिमान राष्ट्र होता। मौलाना खान का तर्क है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी का अग्र रक्षक कोई मुसलमान होता तो उनकी हत्या नहीं होती। भाषके इस कथन पर भी प्रत्यक्ष लज जाता है, क्योंकि भारत में अग्रजों का पर जमाने बाला और जाफर क्या मुसलमान नहीं था, मांसी वाली महाराणी लक्मीबाई का तोपची जो अग्रजों से मिल गया था, सुदा बल्ल क्या मुसलमान नहीं था।

कहा है जब एक लाख पाकिस्तानी तलवार ने वृद्धे देश दिये थे। यह है भाषकी पाकिस्तानी ताकत जिसके स्वर में भाव बोझ रहे हैं। मौलाना खान एक बात और फरमाते हैं जो अक्षयत मकीर और विचारहीन है। भाषका कहना है कि हम पिछले इतिहास को दोहरावेंगे, किन्तु यह भाषको मताम्ह का भ्रम है। पिछला इतिहास हमें याद है लगभग ७०० वर्ष पूर्व एक विदेशी घुड़से मुहम्मद गजनवी को अजमेरा घुड़से मुहम्मद गजनवी १७ बार माग किया था। पर मौलाना खान के कहना है एक बार की नहीं बल्कि १७ बार को भीमविह्वल के

बयक होगी। मौलाना खान की तरह ही बहुत से अग्रजगवादी एव देशदोही लोग अग्रजगवादी बल्ले केलाक हमारे देश की एकता एव अक्षयता के लिए सतार देना कर रहे हैं। यामा मस्त्रिक के ह्दाम अक्षयता कुत्तारी जो अग्रजक पाकिस्तान गये हुए हैं। वह की बर्ता आर के जिलाफ निच बयन कर रहे हैं। भारत सरकार को चाहिए कि वह मौलाना जैसे लोभों की बल्लिक गिरफ्तार कर बलिष्ठ कर की दर देव हिंदू को देखते हुए कत्तमी को बारा ३०० कोलाति-बीरक संख्या की जाने और उनकी के

(विम दुष्क ११ पन्ने)

समाचार सन्देश

दिल्ली आर्य वीर दल के २० युवकों द्वारा प्रांतीय आर्यवीर दल महासम्मेलन, कैथल में सोल्तास भाग विशाल शोभा यात्रा निकाली गई

हरियाणा आर्यवीर दल के निमन्त्रण पर आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के २० आर्यवीरों ने नौ दिने प्रांतीय आर्यवीर महासम्मेलन, कैथल में सोल्तास भाग लिया। आर्यवीर दल दिल्ली के यह युवक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की (मैट्राडोर) प्रचार-बाहुन में बैठकर वैदिक नारों को गुंजाते हुए २२ सितम्बर, ८३, शनिवार रात ११ बजे सभास्थल हस्तिना गांधी कन्या महाविद्यालय, कैथल पहुँचे। भोजन खाते के उपरान्त साईं लीन बजे प्रारम्भ हुई शोभायात्रा में विभिन्न प्रदेशों से आये हुए आर्यवीरों के साथ, दिल्ली

आर्यवीर दल के यह युवक लाठी, भाले, तलवारों से सुसज्जित पूर्ण गणवेश में सम्मिलित हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र, आर्यसन्देश एवं बीमोराख की कृष्ण पर लिखा हुआ ट्रैक्ट लघु पुस्तिका प्रचार एवं प्रसार के लिए सभास्थल पर निःशुल्क वितरित किया गया। प्रायोगिकों ने आर्यवीरों के ठहरते एव जाने गीते की सुन्दर व्यवस्था की थी इसके लिए सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

रहामसुन्दर विरमानी मंत्री

आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

आर्यसमाज तिमारपुर में यज्ञ व वेदकथा सम्पन्न

आर्यसमाज तिमारपुर, दिल्ली-७ में १६ सितम्बर से २२ सितम्बर तक सत्रयुद्ध पारायण यज्ञ एवं वेदकथा समारोहपूर्वक सम्पन्न हुई। वेदों के प्रकाश विद्वान् पुण्य पं० सत्यप्रिय की आचार्य यज्ञ के ब्रह्मा वेत्ता श्री कर्मवीर जी व पुणेहित श्री नानक चन्द की आर्य वेद पाठों ने। सर्वश्री श्री ० श्रीमसिंह, विनोद शर्मा, भानन्द प्रकाश गुप्ता, कृष्णलाल पोपला, महेश्वरी जी, श्रीमती शांति देवी, सुभाष बूढ़ा एवं विमल कान्त शर्मा बारी-बारी से यजमान बने। यज्ञ के पश्चात् प्रतिनिध आचार्य श्री सत्यप्रिय जी ने वेद मन्त्रों की सरल, सहज रोचक व मनोहारी व्याख्या की। रात्रि की सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प्रेमचन्द जी श्रीर एम०ए० की वेदकथा हुई। साथ ही रात्रि की आचार्य श्री सत्यप्रिय जी का भी प्रवचन होता रहा। कथा से पूर्व अजनीपदेशक श्री

सत्यदेव जी स्नातक रेडियो कलाकार एवं तबना वादक की ज्योति प्रशंसा की ने अपने मन्दुर मन्त्रों द्वारा सभी को मनभूषण कर दिया। यज्ञ व कथा में समाज के नयी पीढ़ी-कारियों ने सदस्यों एवं नगर के निवासियों ने काफी सख्या में उपस्थित होकर उत्साहपूर्वक भाग लिया। यज्ञ शेष वितरण के पश्चात् नगर का भी आयोजन किया गया। माता चन्नन देवी आर्य मेख शर्मा चिकित्सालय के चलबाहुन ने भी १५ सितम्बर की काफ़ी सख्या में स्वामीजी रोगियों की आँखों की भी जाँच की।

सबदीप
विमलकान्त शर्मा
उपमन्त्री

आर्यसमाज तिमारपुर
दिल्ली-७

आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली द्वारा वेद प्रचार

१९८३ से १४९८५ की रात्रि तथा १५-१८८५ की उपनिषदों के महान् विद्वान् प्रो० रत्नसिंह की एम०ए० के प्रवचन होते रहे। श्रोता-गण काफी सख्या में पधारते रहे तथा उन पर आर्यसमाज का प्रभाव बहुत अच्छा रहा। प्रवचनों से पूर्व श्री सत्य

देव जी रेडियो कलाकार के सजन भी होते रहे।

८८८५ की आर्यसमाज की शोध से श्री कृष्ण जन्म दिवस मनाया गया।

नन्दकिशोर बाटिया
मंत्री

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक १५ हनुमान रोड में ११ दिसम्बर से १३ अक्तूबर तक मनाया गया। इस अवसर पर एक सप्ताह पूर्व श्री पं० मदनमोहन विश्वासगार का वेद प्रवचन हुआ। जिसमें धार्मिक जनता ने सहर्ष भाग लिया। प्रवचन से पूर्व श्री सोहनलाल पणिक के मन्दुर प्रवचन हुए। उत्सव के अवसर पर अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों और विद्वानों के प्रवचन हुए।

निवेदक
मन्त्री

आर्यसमाज हनुमान रोड,
नई दिल्ली

ग्राम प्रचार

आर्यसमाज आशा पार्क के तत्प्राप्तचान में वेद प्रचार का आयोजन किया गया। यह प्रचार कार्य २६ से २८ सितम्बर १९८३ तक आशा पार्क मार्केट के मध्य में होता रहा। जिस में महात्मा राम किशोर वेंक महोपदेशक की का वेद प्रवचन हुआ साथ ही पं० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के मन्दुर अजनीपदेश से जनता ने बर्षों का भाग प्राप्त किया। दिल्ली सभा के वेद प्रचार अधिकृतता स्वामी स्वर्णानन्द सरस्वती जी ने स्वास्थ्य सम्पन्नी कविताओं और हास्य कविताओं द्वारा श्रोतागणों को लाभान्वित किया। आशा पार्क मार्केट में आरी सख्या में श्रोतागण आते रहे। आर्यसमाज तिलक नगर चक पुरी और श्रोक नगर से सभी आर्य मन्त्र आते रहे साथ ही सभी ने इस वेद प्रचार कार्यक्रम की प्रशंसा प्रशंसा की और अपनी कालोनियों में कार्यक्रम रखने के लिए आग्रह किया और इस कार्यक्रम के लिए सभा अधिकारियों का बन्धनवा किया गया।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वर्णानन्द सरस्वती
अधिकृतता, वेदप्रचार

आर्य कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) का कीर्तिमान

आर्य जनता की यह जानकारी हुई होगी कि आर्य की प्रिय सखा कन्या गुरुकुल नरेला की कन्याओं ने इस वर्ष महर्षि वेदानन्द विस्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षाभिन्नी की योग्यता सुची (मेरिट लिस्ट) में भाठ में से पात्र स्थान (प्रथम, द्वितीय, तृतीय, पञ्चम तथा षष्ठ) तथा एक वर्षीय पदक प्राप्त कर विश्वविद्यालय में अपना कीर्तिमान स्थापित किया है। इसका श्रेय कन्या गुरुकुल के कुलपति पुण्य स्वामी श्रीमानन्द जी सरस्वती के पुण्य तथा, तेज एवं ब्रह्माण्ड आश्रमभार्य आन्यवर्षी आचार्यों बहुरा मुनिभा जी की सुव्यवस्था तथा कर्तव्यपरायण आचार्य बहनों की सजन की है। स्नातक के छात्र रात्र्यों से भाई कन्याओं की महर्षि वेदानन्द सरस्वती द्वारा निश्चित आर्य पद्धति के अनुसार शिक्षा-दीक्षा देने वाली एकमात्र इस शिक्षालय सख्या के लिए तन मन धन से पूर्ण सहयोग देना आर्य जनता का पुनीत कर्त्तव्य है।

—सहायकता द्वारा

दिल्ली आर्यसमाजों के अधिकारी च्यान दें

समस्त आर्यसमाज के धार्मिकारी महान् भावों से अनुरोध है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों एवं अजनीपदेशकों के कार्यक्रम निश्चित करने के लिए केन्द्रप्रचार व्यवस्थापक स्वामी स्वर्णानन्द से मिलें। जो केवल उपदेशक से मिलकर, व्यवस्थापक से सम्पर्क किये बिना कार्यक्रम बनाने में उनको सहयोग कर पने में हान प्रसमर्भ है। व्यवस्थापक से तिथि रजिस्टर में अक्षित कर ले लें तथा उनसे लिखित पत्र व्यवस्था से लें।

महामन्त्री
सर्वपान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

आर्यसमाज शौंका दिल्ली-३३ में श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव

आर्यसमाज के प्रगल्भ में ७ सितम्बर से ८ सितम्बर तक श्रीकृष्ण जन्ममाध्यमी पर एक समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें वैदिक विद्वानों ने श्री कृष्ण के सहान्तर पत्र एवं अनेक कथाएँ किये। श्री श्री श्री कृष्ण जन्म से उत्पन्न का

निमग्न। इस अवसर पर श्री पं०निवेश चन्द आर्यवीर और आचार्य सत्यप्रिय के प्रवचन हुए।

निवेदक
सत्यप्रिय/कृष्ण
श्री श्री, आर्यसमाज नरेला

साप्ताहिक ओड़म आर्य सन्देश

सं. ६, भा. ४८
द्वि. १५८

राजि. २०, धर्मपुर, १९८६
आदि. २०, उपरि

मुद्रि. सं. १९७९४८०८६
आदि. २०, उपरि

आदि. २०, उपरि

द्वि. १५८, १०, १०

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन राष्ट्र रक्षा के लिए आरक्षण समाप्त करना आवश्यक है

—डा० धर्मपाल

आज भारत की परिस्थिति बड़ी विषम है। इसे अन्दर और बाहर दोनों ओर से खतरा है। पञ्जाब, आसाम, नागालैण्ड, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना सभी प्रदेश बचक रहे हैं। जब हम किसी प्रांत विशेष को किसी आघात पर आरक्षण की सुविधा देते हैं जैसे काश्मीर में मिल रही है। धर्म प्रथमा जाति के आधार पर विशेष सुविधाएं देते हैं तो अन्य लोग भी उसी प्रकार की सुविधाएं पाने का प्रयास करते हैं, और प्राप्ति के लिए तत्पर होते हैं। वे स्वतंत्र राष्ट्र स्थापित करने का प्रयास करने में

लगे हैं। राष्ट्र रक्षा के लिए धनगाव-बातियों को नष्ट करने के साथ साथ उसकी भावना को समाप्त करना आवश्यक है। आज मनुष्य का चरित्र भी पतन की ओर जा रहा है। सरकार को इस दिशा में योगदान करना है। सरकार के व्यवसाय को केवल उत्पादन मुक्त प्राप्ति करने के लिए बन्द करने में धनमर्च है। मछ ममी ब्राह्मणों की जड़ है। वे बिचार डा० धर्मपाल ने धर्मसमाज हटाने लाईन, गुरु तेग बहादुर नगर दिल्ली-६ के बाकिरीतव पर व्यक्त किए। उस अवसर पर डा० प्रसाद

कुमार वैशालकर ने धर्मने भाषण में सम्पूर्ण भारत की दुर्दशा का विवरण दिया और धर्मसमाज से धर्मका की कि एक देशव्यापी आंदोलन चलाना जाना चाहिए। मनुष्य अच्छा बनना तो समाज भी अच्छा बनेगा। धर्म मनुष्य का निर्माण आवश्यक है। यह कार्य केवल धर्मसमाज ही कर सकता है। इस अवसर पर धर्मसमाज के यशस्वी सम्पादक श्री प० यशपाल सुभाष ने धर्मजनता का आह्वान किया कि वे सभी मिलकर कार्य करें, आचारवान बन, विवेकी हों और डक सक्ती बनें तभी राष्ट्र का

कल्याण सम्भव है। राष्ट्र सम्मेलन का आयोजन भी नज्दिक दुर्गों में किया।

धर्मसमाज किन्वे कंप में निखले एक सप्ताह से सुप्रसिद्ध विद्वान्, भोजस्वी बस्ता प० यशपाल सुभाष की कथा हुई और प० बुन्नीलाल के जन्म हुए। १२ अक्टूबर को धर्म महिला सम्मेलन और धर्मयुवक सम्मेलन सम्पन्न हुए।

निवेदक
गोपाल धर्म मनी

पाकिस्तान द्वारा राजस्थान सीमा पर बड़े पैमाने पर युद्धाभ्यास

पाकिस्तान ने राजस्थान से लगने वाली सीमा चौकियों के आस-पास युद्धाभ्यासों में बढोतरी कर दी है। भारी मात्रा में हथियार सामरिक महत्व के ठिकानों पर इकट्ठे किये जा रहे हैं। प्राप्त समाचारों के अनुसार यह आकाश व्यस्त हो जा रही है, भारीभूत कुल्लु महानों में पाकिस्तान इस सीमा क्षेत्र में अहकाने वाली कार्रवाई कर सकता है। पाकिस्तान ने अपने सीमा चौकियों पर सुरक्षा सैनिकों की संख्या में बढोतरी कर दी है। पश्चिमी राजस्थान से लगने वाली सीमागत चौकियों पर पाकि-

स्तान ने पाबनी और दूसरी कोर लगा रखी है। न० भा० के अनुसार पाकिस्तान ने पश्चिमी सीमागत पर सैनिक महत्व के ठिकानों पर अमेरिकी राडार लगा रखे हैं। हाल में इनकी संख्या में भी वृद्धि की गयी है। यह भी आकाश व्यस्त हो गई है कि जसलमेर बाडेर से लगी सीमा में पाकिस्तान ने अपने ठिकानों पर इलेक्ट्रॉनिक हथियारों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया है। सीमा पर चल रही अवाधनीय और खतरनाक गतिविधियां चला का विषय हैं। बुली सीमाओं के

कारण बलम में विदेशी नागरिकों की घुस पेट की समस्या का सामना करना पडा और पञ्जाब में सिव आनकवाधियों की हथियार प्रशिक्षण की सुविधा मिली। प्रब राजस्थान के साथ लगने वाला ४३० किमीमीटर जल भी चर्चा का विषय बना है। यहाँ विदेशियों और आतंकवादियों की घुस पेट के अलावा तस्करों भी एक बड़ी समस्या है।

यह उत्प्रेक्षनीय है कि सितम्बर में पाकिस्तान की वायुसेना ने वायुसेना दिवस मनाया था। इस अवसर पर एयर चीफ मार्शल जमाल अह-

मद खान ने एक भाषण जारी कर वायुसेना के अधिकारियों और जवानों से कहा कि वे किसी भी चुनौती का मुकाबला करने के लिए तैयार रहें। उन्होंने कहा कि यदि हम पर युद्ध घोषण गया तो हम उसका कडा जवाब देने में सक्षम हैं।

इसी दिन पाकिस्तान की वायुसेना का सभी ठिकानों, कजल, लाहौर, सरगोधा, चकलाला और पैठावर के वायुसेना अड्डों पर जवानों की जांच दिलाई गयी कि वे किसी भी परिस्थिति में दिलेगी से मुकाबले के लिए तैयार रहें।



सन्ध्या-योग

लेखक—जगत् कुमार शास्त्री

१—धर्मो र्माई सज्जन पुच्छो । हृम सन्ध्या करे, धोखूरोपासना कर गायत्री मन्त्र का अनुष्ठान और भोकार का जप करे । प्रातः काल सूर्य के उदय होने से पहले और सायंकाल सूर्य के अस्त होने के पीछे सन्ध्या का समय है । पञ्च महायज्ञों में सन्ध्या प्रथम और मुख्य है । इसे ब्रह्म यज्ञ भी कहते हैं । इसका एक प्राचीन नाम 'अहुत' भी है । ('अवरोक्षुनो, हुतो होम' मन्त्रमूर्ति तृतीय अध्याय) गायत्री मन्त्र व सावित्री मन्त्र की अनुष्ठान विधि भी यही है । धोखूरा जप विधि अथवा धोखूरोपासना भी यही है । इसके गे विभिन्न नाम कुछ तो शास्त्रकारों के विचार प्रकार के आधार पर हैं, कुछ साधकों उपासकों के श्रेणी विभाग के आधार पर । यदि कोई अपना सारा जीवन वा अधिकांश समय सन्ध्या अर्थात् स्तुति प्रार्थना और उपासनापूर्वक भगवान् के मध्यक ध्यान में व्यतीत कर सके तो भी बहुत कम है । परन्तु यदि कोई धार्मिक समय प्रभु भक्ति में न लगा सके तब भी दोनों समय सत्य वा अवश्य करे । सन्ध्या में गायत्री मन्त्र का अनुक्रमानुसार विशेष पाठ और विचार तथा अनुक्रमानुसार ही प्रणव जप भी अवश्य ही करे । जा ऐसा नहीं करता शास्त्रों में उसे दोषी माना गया है । उसके अङ्गीकार का आदेश भी दिया गया है -

२—प्राचीन इतिहास ग्रन्थों की देखने से ज्ञान होता है । एक हमारे पूर्वज राम कुण्ड सोना कुम्भी आदि एवं सब ऋषि मुनि महात्मा, साधु सन आदि नियम पूजन सन्ध्यासना किया करते थे । यात्रा युद्ध गीत तथा योग विपत्ति के समय में भी वे अपने सन्ध्या उत का पालन करते न गये थे । तभी तो वे बड़े बड़े काम करते दोष धाम्नु को प्राप्त करने में भी सफल हुए थे । आज भी उनकी यशोनामाएं मसार में गई जा रही हैं । ईश्वर को उन पर विशेष कृपा वा । क्योंकि वे मंत्र ईश्वर के मन्त्रे अन्त में ।

३—आज मन्त्र में डग का स्थान योग में ने रखा है । दिवावा प्रतिष्ठा सन्ध्या को बना जा रहा है । मानो सन्ध्या सन्ध्या हो गया है और भक्त के गण गण के हैं । नास्तिकता और उसके परिणाम में चरित्र-हीनता गण गणों में और भी नाश प्रतीत हो रहा है । उग्रप्राण एवं दुःख का इवने वा । विचार तन्त्र प्रतीति है । मन्त्रे धार्मिकजन हा-कर्म निरुक्त मानना कर सकते हैं । और बन्नी हुई दुःख तथा अन्धकार परम्य ओ को राक्षसकर्म । ईश्वर भक्ति से हो पाप मात्र का क्षय गीत पुण्य न उदय गीत । और सच्च धार्मिक नर-नारी हा क्षय गीत मन्त्र में उदय गीत का कर्म ।

४—सन्ध्या के मन्त्रों ना पाठ गरी ज़रि स्थिर एवं शान्तचित्त हाफन करण चाहिए उपासना शुद्ध एवं सफेद हो । साथ ही साथ सन्ध्या में जो अर्थों का मन्त्र योग यज्ञि सा हो होना रहे । अर्थ को जानना न गये या योग मन्त्र शो सुवदन्ती मन्त्रेणा । अर्थ को जाने न गये न गये मन्त्र गरी न गरी सन्ध्या कम में प्रीति बढी । नोना मन्त्र प्रीति नही है । उच्चस्वर्ग को प्रवेशना हो मन में पाठ और जप आदि मन्त्र के लाभ अधिक है । कभी कभी मन्त्रमालिन सन्ध्या मन्त्रों में जा उच्चस्वर्ग में पा किया जाता है वन्त तो इन्द्रिय होता है कि जिनको सन्ध्या के मन्त्र शूद्र-शूद्र मान गरी है । उनको भी व मन्त्र ना मयाद हो गरी । वह सन्ध्या का मन्त्राण नही होता । प्रशि-क्षण न गरी है ही ।

५—वैदिक मन्त्रा विषयक छोटी बड़ी और गद्य-पद्यमयी अर्थ-ज्ञात पुस्तक बहुत में विद्वानों में बनाई हैं । सभी उत्तम हैं । साधकों को अपनी अपनी योग्यता और सुविधा के अनुसार किसी भी एक

पुस्तक की सहायता से, अथवा किसी भिन्न वा अन्य विद्वान् की गहा-यता से सन्ध्या के सब मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण और अर्थ सीख लेना चाहिए । विभिन्न विद्वानों के अर्थ-प्रतिपादन में जो धार्मिक भेद-प्रभेद पाये जाते हैं, वे सब ऊपरों हैं । वे तो गीरा ही हैं । वास्तविक और तात्त्विक भेद उनमें नहीं हैं । अतः उपासकों को भेद में भी भवेद मान कर ही चलना चाहिए । अर्थ भेद के बिना भेद में नहीं पडना चाहिए । स्वाध्याय से इन प्रकार के सभी सवाय धाराना से ही मिट जाते हैं । (परस्पर विमर्द बर्न न होने चाहिए ।)

६—सन्ध्या की महिमा हमारे धर्मशास्त्रों में बहुत विस्तार के साथ माई गई है । उपनिषद्कारों एवं स्मृतिकार महर्षिों में वैदिक मन्त्रोपासना पर सर्वाधिक बल दिया है । उपासना के क्षमा में तो मानव-जीवन कृष्ण, फीका कडवा कुसकुसा और अस्मान् बन जाता है । ऐसी अवस्था में उत्तम ज्ञान भी मानसिक विलास अथवा बाजाल होकर रह जाता है । निदान्त उसे कहते हैं, जिसके अन्त में सिद्धि अवश्य ही मिलनी है । सिद्धान्त आचरण के लिए बने हैं, वाद विवाद से सिद्धान्तों की परल होती है ।

७—प्रातः काल की सन्ध्या के पश्चात् रात के कार्यों का, और सायंकाल की सन्ध्या के पश्चात् दिन के कार्यों का अन्ती प्रकार विचार भी करना चाहिए । यदि किसी से कभी कोई झूठक हुई हो, तो उस के सुधार का उपाय करना उचित है । ऐसा प्रयत्न करने से मनस्य का चरित्र धर्मन्त निर्मल जीवन शान्त और स्वभाव प्रति सौम्य, शुद्ध एवं स्थिर हो जाता है । फिर प्रभु-भक्ति में मन भी स्वयं सत्य सगता है और धर्म में मनुष्य ब्रह्मानन्द में लीन होने की सिद्धि भी प्राप्त कर लेता है ।

८—जो लोग उपासना कर्म द्वारा अपने-अपने जीवन को सुखी, सफल, अजन्मी और शान्त बनाना चाहते हैं उनको सभी प्रकार के मादक द्रव्यों तमोगुणी एवं रजोगुणी भाषनों अधिव पदार्थों, चरित्र-हीन मित्रों और काम क्रोध मद मोह लोभ तथा अहंकाररूपी मनो-विकारों का परि-त्याग अवश्य ही करना चाहिए । इसे ही धरिपु-दमन कहते हैं ।

९—जप के नाम पर शरीर को कष्ट देना या मुखा उलना अनु-विन है । किसी जप-न-गृह में जाना शुद्ध वायु के सेवन एकान्तवास विशेष अग्रान्ध और प्रहृति-निरीक्षण के लिए तो ठीक है अन्यथा नहीं । पर-शुद्धि का परि-त्याग करने तथा कथित वेदों या रमते-राम बन जाना तो एक प्रकार की कायरता ही है । कर्त्तव्य-कर्मों से यह विमुखता और शास्त्र विहित जीवन-सर्वथ से यह पनामवाद किसी के लिए किसी रूप में भी अव्यक्त नहीं है । न्यास तो अपरि-ग्रह और त्यागवाद ही है ।

१०—अन्धों-अपनी सन्ध्या उपासना, जप, अनुष्ठान, साधना आदि-आदि भक्ति-वर्ष के छोटे-बड़े सभी कार्यक्रम उपासक अपने आप ही कर । नौकरी या सुनोमी से करवाने का काम यह नहीं है । किसी कौशल कर्मों में प्रेरित या उत्साही करना तो बात ही दूसरी है ।

११—सन्ध्या-साता की शरण बहुरण करो । तन के कोने को भक्तिवाद के रग में रगो । मन-वन्दर को नम में करो । सच्चे उपासक बनो । उपासना के लाभ बहुत हैं ।



क्या बरनाला उप्रवादियों का इलाज कर सकेंगे ?

तीन वर्षों से पंजाब में भाग्य और बुद्धि उठता रहा है हर दिन कोई बोलता कुछ घटता और लोगों के दिलों में दहशत व्याप्त जाती। बुद्धि प्रधानमन्त्री ने समस्या का समाधान करने का हर सम्भव प्रयास किया। स्व० श्री लोनावाल के नाथ हुए समझोते से सारे देश को धाखा बंधी थी, कि पंजाब समस्या का समाधान हो गया किन्तु सन्त लोनावाल की हत्या से फिर धाखाधारी पर पानी फिर गया। लेकिन प्रधानमन्त्री ने चुनाव कराकर फिर समस्या को सुलझाने का साहस दिखाया। पंजाब में चुनाव का जगल बजा। सिख और हिन्दुओं में एक-जुट होकर भातकबाद के भुकावले में बांट डाले। दूसरी तरफ नाबा जामेन्दारसिंह का पाटी न चुनाव का बायकाट करने का फैसला किया। उप्रवादियों ने चुनाव में पकबाट डालते थे कोई कसर नहीं छोड़ा। चुनाव शुरू होने से एक दिन पहले बारावाल, बटाला, दानानगर, धर्मपुर, फरीदाद और तलवा सरबा में उप्रवादियों ने बम क बमक किये। बटाला में एक बम बमक के तान बच मर गये धार राज्य सभ। क सभस्य माहिन्दप्रसाद धर्मपुर के प्रमुख पय-सक का दा लाल का रात रहस्य-नहस हा गये। धर्मपुर में चुनाव शुरू होने से दो दिन पूर्व भातकबादियों ने दा इका कायकनाभा का जहरला मसाद जामेन्दार मान का नाद सुना दिया। कई स्थानों पर दाहम बम का जगल। बदला रलय स्थलन क बाहर एक ट्रांजिस्टर बम काफ़े सान व्याप्त था का मात का बाल बड़ा दिया गया। इसक बावजूद चुनाव हुए, प्रकाशना को सरकार बन गई। केन्द्र सरकार सा रहा चहिला थी। उप्रवाद का सफाया अकाला सरकार क हाथा स हू।

१४ दिसम्बर १९८० का जब भकारी दल बना था किसी प्रकार की साम्प्रदायिक भावना का बाज था उसम कहीं नहीं जाता था किन्तु उसे जसे अकाला दल ने ताकत पकड़ा उसमें कई ऐसे तत्व शामिल हो गये जिनका कारण अनादील क बर टुकड़ टुकड़ हा गया। उप्रवादी तत्त्वा ने अकालिया का कूट का अण्डा लाभ उठाया। भकारी दल में यह नारा उठता रहा, बम भार राजनात साथ साथ बनेगो। राजनात की कुंसा का पन के लिए कुछ नताभा न उप्रवादा तत्त्वा पर हाथ धरे रखा जिससे उप्रवादा धर्मतथाला हाव गये। इन्हां के कारण अब तक पंजाब में भातकबादा जगलानुभा स लाबा नकलता रहा है। अकालादल का सरकारता बन गया पर प्रश्न यह है क्या अकाली दल उप्रवादो घड को नगा करक भातकबादाया का सफाया करने में सफल होगा ? क्या बहु सन्त लोनावाल क भावशा क अनुसार हिन्दू सिख एकता क लक्ष्य भाग करणा और स्वयं न उगत घड बन्दो के फोड का इलाज कर पायेगा ?

श्री सुरजोतसिंह बरनाला सवसम्मति से पंजाब के मुख्यमन्त्री बने हैं। उन्होंने कहा श्री हे-नी सरकार का पहला काम सारे पंजाब की बाबलों के भासू पोखने की होगा। हम ऐसा सरकार बनायेंगे जिसे राज्य का हर भावमो अपना समक मके। हम श्री बरनाला की सफलता के लिए शुभाशंसा देते हैं। अब से सफल हो पर इस स्थिति से इन्कार नहीं किया जा सकता कि बरनाला लोनावाल नहीं हैं वे सामूहिक भकारी नेतृत्व का एक हिस्सा हैं। बरानर वालों में बरिष्ठ सारे दल को अपने साथ साथ लेकर चलना उनसे लिए एक चुनौती है। मुख्यमन्त्री को साथ ग्रहण करने के बाद श्री बरनाला मुख्तार से धरसाद के लिए पहले ससले उनकी धार्मिकता का ता पता चलता है। फि तु राज्य के ४८ प्रतिशत हिन्दुओं की अथवा और भावना का प्रतीक किसी हिन्दू मन्दिर में बना ओ उचित नहीं समझा। इससे हिन्दुओं के मन में क्या विश्वास उभरे। शायद वही जो किसी सिख प्रसन्न ने कहे थे। धरार पंजाब में बास स की सरकार बनती है तो सिख जनता इसे हिन्दुओं

की सरकार नहेगी। तो क्या धन भकारी सरकार पर हिन्दू विस्वास न कर ? जब कि यह जो प्रश्नोचर रवेगा है जेलो से काफी सिल रिहा जिये गये और किये जा रहे हैं परन्तु जेलो में नन्द प्रविकास हिन्दू अशो भी रिहा नहीं किये गए। दूसरी ओर पंजाबियों ने अपने मन में २६ दिसम्बर की बरनाला क मुख्यमन्त्री चुने जाने पर खुशिया मनाया और खुशहाली की भाशाएं जगायी। लेकिन बाने वाला समय भकारी दल के लिए चुनौतियों में भरा हुआ है। सिखले तीन वर्षों से पंजाब केन्द्र की सहायता पर चलना भा रहा है प्रत्येक तरफ लोगों के ऊपर टेक्सो का बोझ डालना तथा दूसरी तरफ उप्रवाद को साफ करना काफी जोखिम भरा काम है। सन्त लोनावाल और राजीव गांधी के बीच हुए समझोते ने माने वाले पंजाब का रास्ता तय कर दिया था। पंजाब की नयी सरकार के लिए उस रास्ते पर चलना कठि चुनौती है। यह सच है कि सिलो के विशाल बहुमत ने इस चुनाव में भातकबादी रीति नाति के विनाक वोट दिया है। बेधर्मसिंह को विजवा विमल खानसा का सिफ ८०० वोटों से हार जाना इन बात का संकेत है कि उप्रवादियों से सहानुभूति रखने वाले प्रभो हैं। पंजाब की नयी सरकार को उप्रवादियों के इन हिमायतियों का मन भी बदलना होगा। उसे अपने कार्यों से निवृत्त करना होगा कि भिन्नवाले और उसके सहयोगियों का रास्ता चलत था। पंजाब और सिख दोनों के लिए अहितकर था। उप्रवादियों के हीसले प्रभो को बुलन्द है भारत से बाहर जो बह्मस्य प्रभो चल रहे हैं बास्तर में काफ़ी विमना-जनक हैं। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की ब्रिटिश यात्रा से तीन दिन पूर्व ब्रिटिश पुलिस ने लगभग एक दर्जन भातकबादियों को गिरफ्तार किया है। ऐसा कहा जा रहा है कि इन लोगों ने श्री राजीव गांधी की हत्या का बह्मस्य रचा था।

यह भी बहुत स्पष्ट है कि पंजाब के भातकबादियों को अमेरिका ब्रिटेन और कनाडा के बसे सभी मित्रो से महायत्ना मिलनी रहती है। भातकबादी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और सन्त लोनावाल जैसे विश्वप्रसन्न लोकप्रिय नेताओं की हत्या कर चुके हैं और अब भी वे बह्मस्य करने में लगे हुए हैं। लेकिन यह कुछ भ्रमात्मक था प्रतीत होता है जब कभी प्रधानमन्त्री वाशिंगटन या लन्दन पहुंचने वाले होते हैं तभी बह्मा की सरकार को भातकबादियों की गतिविधियों की जानकारी मिलती है। क्या यह सच नहा है कि रमेश प्रसासन और शंकर सरकार की पूरी तरह मालूम है कि उनके देशों में भारत विरोधी गतिविधिया चल रही हैं। दोनों सरकारों को खालिस्तान की माग करने वाले मुट्ठीभर सिखों की सारी काररनामियों की जानकारी है। कुछ राजनैतिक प्रसन्नो का यह भी विश्वास है कि अमेरिका, ब्रिटेन तथा कनाडा के शासकों ने जानबूझकर भारत को खलिज करने का बह्मस्य रचने वालों को आश्रय दे रखा है। इन उप्रवादियों का जो भारत से बाहर है सम्बन्ध पंजाब के किसी सूत्र से जो जुड़ा हुआ लगता है। जो योचनाए बाट्टर बनती हैं उनका प्रयोग बनने में होता है। इसलिए बरनाला सरकार को देश को प्रसन्नकता का चुनौती देने वाली नाकतो से लड़ने के लिए कमर कसनी हो होगी। चुनौती के वे लोग जो बन्दूक और बम की भाषा में बात करते हैं। कल तक वे बन्दूक उन पर तनी हुई थी जिन्हें उप्रवादो धरपरतान लुन्गुनर के लिए उत्तरदायी समझते थे। अब यह बन्दूक उन पर भी तन सगती है जिन्हें सिख पन्थ के स्वयम्भू सरसक सिखों का गद्गार कह रहे हैं। मतलब साफ है नयी भकारी सरकार को इन भडकों का नयी राह हो नहीं दिखानी उम्हें उसे राह पर चलाने का दायित्व भी भिमाना है। अगर प्यार भी भाषा उम्हें समक न भयेतो उनकी भाषा से ही उम्हें सही रास्ते लगाना होगा।

—यशपाल सुनाम्



व्यासपीठ

उपनिषत् कथा-माला-१८

कर्मकाण्ड

लक्षक—स्वामी सदानन्द सन्स्वती

हुम है स अ का
न हो पाक निज ।
हो नेक मव से
मृज्जल से मिल ।

नेक काम मनुष्य को नेक बनाता है और बुरे कामों से मनुष्य बुरा बन जाता है। बुरे काम से हुबहु गड़ होना और बुरे कर्म से अज्ञान बढ़ता है। नेक धर्मो प्रथम का इच्छुक और इच्छाप्रो का जो मनुष्य को बुरे कामों की ओर लींचने है नमन क ता है। पापों का रास्ता खल जाने से समार मेकधर और मुभावत दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है। कमण्यना मनुष्य को पापों से हटा कर कल्याणमार्ग पर अग्रसर करती है। बुरे काम न करो—हुल पाशोमे कमजोर हो जाओगे। यह बात है कि कोई भी पुण्य करे से हा अपने आप बुरा । नता नही है जिस मृज्जल पर वह खड़ा है। उसके एक ओर बुराई और दूसरी ओर अज्ञाई है। यदि बेमनका मे वह अपने कर्म का बुराई का और बढ़ाता । नताग प्रसिद्ध है इस दुर्गम जग है। पर यदि वह सोच समझा पुण्यमार्ग को अग्रण करता है तो पुण्य हा प्रसिद्ध वह पुण्य पाता है। यो पक्क अपने चरना हुमा और को तो प्रथ से ग मिताता है। एकर त्वरे को समार मे घनाता रहता है। परन्तु धाजक निम्नान श्री वदल गया है—जिन काम के करने से मनुष्य का हृदय पवित्र और अचरम शुद्ध हो उसे तो कोई विरला हा निभाता है जिसमे सब का प्रा म हो द व च सुख मे परस्पर सहयोग हो अथ से किना को कष्ट न हो। उन कम का। काई काई न करना है प त धाजक हर काई बहारा प्र चरको का मोकान है और इनके विरुद्ध कहा है। वानो पर काम तक नहा ध ता ।

जमे कोई मम ईश्वर की पूजा बिल्कुल खुश्राप करना प्रष्टा मानते हैं और कोई धर्म धर्माणि वहा कर पूजा पा करना ीक मानता है। ई माग मे ईश्वर को अपना है तो दूसरा धर्म को अपना है। एक का अर्थ पवित्र को है। तो दूसरे का पूज का। किनी न मोम को कसे माना है। तो दूसरे ने उसे उत जाना है।

इस विषय म कहां तक कहें। हर एक मन ने अपने को दूसरे से पुण्य करने का कोई न कोई ढंग निकाला हुमा है। वह किसी हद तक गीक हो सकते हैं पर पु वास्तविकता को टीक करने मे सहायक नो पर ऐसा नो न हुमा। मनुष्य मे बाह्य धामनर को ही सब कुछ मानकर प्रसवित को ली दिया जिससे यह ससार भगनो का कैद बन गया। धम की तो यह धासा की कि मनुष्य नेक और शुद्ध धाच गग करना हो। उसके हृदय मे धमड और प्रभिमन न हो। एक दूसरे के साथ प्रेम का बर्ताव कर शतना के बीज बोने से और कमाद करने से सग पर—यह तो हुमा। डोग की वास्तविकता का ध्यान देने से सकडो प्रका के बनेड भगे यह तो टीक है कि मनुष्यो मे कुछ न कुछ भेद होना है। पर त इस भेद की अधिकना को जमाना शतना कहा है। असुल तो भगनो को मिताता है। इसकी प्रभावना से मनुष्य भगनो को उता है। प्रभयितनो तो यह है—

नेकी ही ताकत नही

नो वदी स परहेज कर ।

अपने ऊपर जम करने से

सग ईश्वर से डर ।

मनुष्य का यह मुख्य कर्तव्य है कि बागम काम करने वाला ही बने। यदि हममे यह शक्ति न हो तो बुरे कामों से दूर रहना तो मिलाप मे सहायक है। यम नरीका नो समार के हित और क पाग का है। जब मनुष्य अपने स्वभाव को बुराई से हटा कर उसके धाम को जित से मिंग देता है। तब उसका कय नेकी करने का स्वभाव हो जाता है। जित की प्रवृत्ति जिनो न किनी और नो नो आवश्यक है। बुराई का मोच वृहते ही भलाई का माग आप हो जाता है। जो मनुष्य किसी कसाय बुराई करना है वह धाज नही तो अन् मुनीवत मे फमना है। अथय से किसी को दु व पहचाना अपने धास को स्वयमेव मुसीबनो मे फसाना है। परमा मा द व नाशक है। धन जो मनुष्य किसी को मुसीबत से बचाता है वह भी अपनी योग्यता के अनुसार प्रयु के इस पुण्य का भागी बन जाता है। दूसरी ओर कष्ट नही पाता ।

प्रयु स्वल्पन है। धत जो कोई किसी को बचन से मुक्त करता है वह मुक्ति पद को पाता और प्रयु के समीप हो जाता है। प्रयु दयालु है। धत जो किसी पर दया करता है वह प्रमत्त ध्यान कर कभी नही मरता। हर हाल मे खल रहना। बुरी बात मुल से कभी न कहना। मुल सुख के धाघात को गानिपुवक सहना परमे श्वर की धासा है।

इनके बदले मे स्वास्थ्य प्रमनता और सम्मान पाता है। इसलिये मनुष्य बुरे कामों से बचे और भलाई के लिए जाने व। ससार के किसी मनुष्य को दु व देना किसी बसवान का कर्तव्य नही है। भेरे मित्र। धाप तनिक इन अहलो पर ध्यान व कि मे मनुष्यो को दुनिया के रास्ते से निकाल कर प्रय से मिलाप की ओर किस प्रकार ले जाते हैं। जो मनुष्य को धन्याय से कष्ट पहुंचाता है वह प्रयु से दूर हो जाता है। भलाई करना। बुराई से परे रहना और परहेजगारी का जीवन चितान पर भेदर को प्राप्त करने का एक विशेष माग है। और जिनो को ईमानदार को जो मन्ने धर्मो मे धमब न है। दूसरो को कष्ट देने का ध्यान तक नही हो मकना। धय एक सच्चा माग है जो प्रयु तक ज पहचता है। स पर चन्ने जला कभी पट कता मही। वह उपाय को प्रय से मिलाप मे सहायक नो। उम पर धावरण करने से कौन कष्ट पाता है ? मनुष्य की मिरावट का मुख्य कारण दूसरो को दु व पहुंचाना ही है—

बुराई या भलाई जो है करते। सदा उनका है वसा फल मे भरते ।

मनुष्य बुरे वा धने काम के प्रभाव से कभी बच नही सकता। यह नियम व। मज्जत और बारीक है। स। ससार ही नियम के अनुयाय चल रहा है। किसी के पक्ष मफलता चम ही है तो कोई अपने (अशक्ति) को ली मिता रहा है। जिगारनो मे इसकी खोज की है। यह नियम उसे को तसा है। रती भर की नही बवता। मनुष्य पहचान को कुराधो मे जाकर अपने को विरुद्ध चाहे अपने को सार को तस नही

विनाए और चाहे धाकाम पर उड जाए। पर इस ससार भर के राज्य मे कोई ऐसी जगह नही जहाँ कर्म अपने परिणाम से पीछा छुड़ा सके। इसलिये विद्वान ने कहा है कि जो मनुष्य धीरो के माय बुराई अथवा भलाई करता है। उनका परिणाम लौट कर उसी को प्रभावित करता है। जिसमे मासार्गिक दु व या सुख पैदा होता है। और यदि प्रला काम फल को इच्छा मे उन्नित हो जिस मे विस्वासा न बनावट का नगाव न हो तो वह (भलाई) कला को अंध को धीर ले जाना है। इसलिये धर्म की यह धासा है कि बुरे कामो का त्याग करना ही चाहिए और नेक काय यदि फल की इच्छा रख कर किया जाय तो वह मासार्गिक सुख देता है। पर यदि भलाई फल की अनिच्छा से की जाए तो उसका फल मोक्ष है। जब मनुष्य को अधिकार है कि जिसर को चाहे अपनी गति बढाए—

सख का फरमान है

मे की से मारे काम कर ।

मत बदी कर भन से

मग किसी को बदमान कर ।।

जब धास शुभ कामो पर जो सुख का कारण है। उन पर धाजक—शुद्ध मन सच्चा ज्ञान महनशीलता होतिथारी मत्तना पवित्रता इदिय धमन मनोनिग्रह सुख दु व की प्रसिद्धता मे जिनपना बुरे कामों से अथ सत्कर्मो मे निवृत्ता दया, धाराम सतीथ अशित दान शुभ कामना नसे से परहेज धादि धर्मो मात प्रयु की ओर ले जाती हैं। जिन बुधियो से सब को लाभ और ससार मे शान्ति स्थापित हो। बही ईश्वर का धासा है। उनका पालव करना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। और जिन मनुष्यो मे ये गुण हो मे देवता कहाते हैं। देवता का कोई विशेष प्रसाद का शरीर मही होता। देवता तो गुणवान को कते हैं।

जिन बुरे कामों से मनुष्य स्वय कष्ट उठाना है और धीरो को कष्ट पहुंचाता है वे सब दुष्टो के प्रिय दुष्टय हैं जो निम्नलिखित हैं—

प्रधान बुराई काम, बुधिवार,

(शिव पृष्ठ ११ पर)

श्रेष्ठ मानव जीवन निर्माण : साधन शील और उसके अंग

नीतिकारों के शब्दों में

शाचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकर



महाभारत आन्तिमपर्व, राजसूय प्रकरण के अध्याय १२२ में दुर्योधन और वृतराष्ट्र-पुत्र-पिता का संवाद है जिसमें मोक्षसिद्धिमह, युधिष्ठिर तथा अन्य कई विद्वान् भी उपस्थित थे। इसका आरम्भ वृतराष्ट्र द्वारा पुत्र दुर्योधन की सतपथ ईश्वर कर इस प्रश्न से होता है कि तुम्हारे इस प्रकार सतपथ होने का क्या कारण है जब कि तुम्हारे पास लौकिक सुख समृद्धि क सब साधन उपस्थित है। दुर्योधन स्वभावतः पाण्डवा से बड़ी ईर्ष्या करता था। उसने कहा—युधिष्ठिर के घर में हुआ तो स्नातक स्वर्णपात्रों से भोजन करते हैं जब कि मेरे यहाँ तो के कुछ संकटा स्नातक भोजन करने पाते हैं। इसी प्रकार दुर्योधन ने वस्त्र, भवन इत्यादि अन्य कई बड़ बेतन सत्पुत्रों और पशु पक्षियों का भी जिक्र किया। वृतराष्ट्र ने पुनः का ईर्ष्या, द्वेष के त्याग का उपदेश दते हुए कहा—

ह पुनः। यदि तू युधिष्ठिर सदुख साधना बनन इत्यादि करना चाहता है तब खाल बन। तब दुर्योधन का यह पुछना स्वाभाविक ही था कि यह खाल क्या है? तब वृतराष्ट्र ने प्राचीनकाल का इतिहास सुनाते हुए अपनी एक कथन के प्रमाण से खाल के अर्थों का निम्न बखान किया— अर्थात् (१) धर्म (२) सत्य (३) सदाचार और (४) सत्कर्म। हे बुद्धिमान्! ये चारो खाल के भूल हैं। इसका आधिक व्याख्या करते हुए वृतराष्ट्र कहता है—

किसी के भी प्रति मन, वाणी, कर्म से द्राह्म न करना, दया, यशस्वति वान, यह खोल कहा जाता है। प्राचीनकाल के नीतिकारों-मर्तुहरि मित्र, चाणक्य इत्यादि ने 'खाल' का कुछ अधिक विस्तार से विवेचन किया है। इनके बचनों की हम यहाँ उपस्थित करते हैं।

शीलवान् व्यक्ति के गुण—
मर्तुहरि

मन, वचन और शरीर से उत्कर्म रूपी भद्रान् से पूर्ण होकर तीनों लोकों की अपने उपकारी से गुप्त करने वाले तथा दूसरों के परमायु सदस्य छोटे से गुणों की भी पर्यंत के सदुपमानकर अपने हृदय में सदा प्रसन्न होने वाले उत्तम शीलवान् पुरुष कितने हैं? विस्तार हो है।

दृष्ट्या का त्याग, समाचारण, मद का त्याग, पाप में प्रीति का त्याग सत्य बोलना, सत्यनों के मानों का अनुसरण, विद्वानों की सेवा, पूजनीय व्यक्तियों का आदर, धर्मों के प्रति भी नम्र व्यवहार। अपने गुणों की छिपाना, अपने यश की रक्षा, बुद्धियों के प्रति दया यह सत्पुरुषों के लक्षण हैं।

शील सर्वश्रेष्ठ सुख है—

यन सम्पत्ति की शोभा सज्जनता, धुरवीरता की शोभा, वाक् सयन, (बढ़ बढ़ योग में मारना) ज्ञान की शोभा, शान्ति, विद्या की शोभा नम्रता, मन की शोभा सुपात्र की दान, तप की शोभा, क्रोध न करना, प्रयुक्त की शोभा, समा और यश का सुख निश्चल व्यवहार है। पर इन सब का मूल शील सदाचार सर्वश्रेष्ठ है।

हिचुरनीति

जो शान्त हुए नर को नहीं भ्रम-काता, न बमरु करता है, अपने की हीन नहीं जाता है 'दुर्धति से पडा है' ऐसा कहकर भ्रमार्थ नहीं करता भाव उत परम आर्यशील कहते हैं।

अपने सुख में बहुत हर्ष नहीं करता न ही दूसरे के सुख में प्रसन्न होता है। जो देकर परमात्मा नहीं करता, वह सत्पुरुष आर्य शील कहलाता है।

इस संसार में पुरुष का शील ही

सुख है, जिसका यह नष्ट हो जाता है, उसका न तो जीने का प्रयोजन और न बन से उसे कोई लाभ होता है।

विद्यामद वनमद, तीसरा देख भयवा कुल का मद होता है। भ्रष्ट-कारियों के लिए यह मद उन्मादक होते हैं किन्तु सज्जनों के लिए यही दमन का साधन होते हैं।

चरितैहीन का कुल (उत्तमकुल से जन्म) प्रमत्त नहीं, ऐसा भेरा विचार है। नीच कुल में उत्पन्न का वृत्त (सदाचार ही उसकी विशिष्टता होती है)।

यज्ञोपवीत-महिमा

(एक गीत)

यज्ञोपवीत लेकर बुद्ध की निहारना है।

जीवन सुधारने का सकल्य धारना है॥

हर भूत की तरफ से मूढ़ अपना फेरना है।

सच्चे श्रुती का पालन करने की श्रेयता है॥

तप त्याग साधना की हर दम उभारना है।

जीवन सुधारने का

गायत्री जाप सन्ध्या स्वाध्याय यज्ञ करना।

दुष्टों की सगति से हरगिज न पात्र घटना ॥

मयबान् की कभी न दिल से बिसारना है।

जीवन सुधारने का

समझो ये तीन ऋण हैं ऋण ये तीन धाने।

जब तक हैं श्राप धन से व्यभिचर कभी न भाने ॥

निष्कपट स्वच्छ सुन्दर जीवन सुधारना है।

जीवन सुधारने का

पितरों की टहल सेवा देखो की उचित पूजा।

ऋणियों सग जेसा कर्तव्य है न पूजा ॥

माता पिता गुरु के ऋण को उतारना है।

जीवन सुधारने का

नेकी के काम करके तत्काल भूल जाना।

निष्काम भाव होकर श्रोतों के काम धराना ॥

विद्या का सूत्र है यह मन से विचारना है।

जीवन सुधारने का

सुख चित्त धार्यों का यज्ञोपवीत है यह।

सर्वश्रेष्ठ योग पठने ऋणियों की रीत है यह ॥

दुनियाँ में 'पार्थिव' इस के यश की निहारना है।

जीवन सुधारने का

वाचस्पय नीति

(१) विद्या धन्यास में, परिवार शील से, गुण स धाय और क्रोध नेत्र से पहचाने जाते हैं।

(२) रूप की शोभा गुण से, कल की शोभा शील से, विद्या की शोभा सकलता से और धन की शोभा उसके प्रयोग से होती है।

(३) गुणहीन व्यक्ति का रूप, शील से हीन का कल प्रयोग में न आने से विद्या, और व्यवहार में न से धन का नाश होता है।

(४) जिसके पास विद्या नहीं, तप नहीं, दान नहीं, शील नहीं, गुण और धर्म नहीं ऐसे मनुष्य इस पृथ्वी पर भार रूप में युग के समान लचरते हैं।

इस प्रकार शील के सम्बन्ध में प्राचीन नीतिग्रन्थों में जो विविध-रूप बताये गये हैं, उनका वर्णन करने के बाद वृतराष्ट्र अपने पुत्र दुर्योधन को धन्य थे कहते हैं—

हे पुत्र! यदि तू युधिष्ठिर से भी विशिष्ट होना चाहता है, तो इस प्रकार जीवन का तत्त्व जानकर शीलवान् बन।

के सी ३७/भी आशोक विहार,
दिल्ली-५२

लेखक-पं० सत्यपाल 'पथिक'

यथार्थवाद के परिप्रेक्ष्य में ऋषि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन

ने०—जगदीश भार्य, सिद्धांतरत्न, 'विद्यारद' सासाराम

दयानन्द दय धानु से बना है।
य का धर्म है देवता। देवता तो
मो कोर है—कोट पनगवि सभी
सते हैं। पणत यहा देवना एन
वेधेय धर्म है धाया है। दार्शनिक
चिन्तन में विवेचनात्मक दृष्टि से
श्रीवान जयान को देवना ही दर्शन है।

दर्शन में दो मुख्य तत्त्व हैं—ब्रह्मा
श्रीर दय्य श्रीर दोनों के महशोग से
बना है दर्शन। यह सारा ब्रह्माण्ड
दय्य है। ब्रह्मा ध्याना है। दर्शन धारण
के किसी विशेष विचारधारा से अपने
को सम्बन्धित रखने वाला व्यक्ति
दार्शनिक कहा जाता है।

मनुष्य श्रीर दार्शनिकता का
धृष्ट दयन-सम्बन्ध है। बिना दर्शन
(Philosophy) के मनुष्य रह ही नहीं
सकता।

दार्शनिकों को मैं तीन कोटिया
में विभाजित करता हूँ। प्रथम तो
वे हैं जो टेवल पर बैठकर दर्शन को बात
करते हैं उनके विचार जीवन से
कोई मेल नहीं रखते हैं। दूसरे वे हैं
जो केवल दर्शन के हो विवेचन-
धारण का अध्ययन करते हैं। वे अपने
बन के दार्शनिक विचारों से इन-
लिग पम्प करते हैं ताकि दूसरे लोग
उन्हें दार्शनिक समझें। तीसरी कोटि
में वे धाते हैं जो स्वभावतः दार्शनिक
होते हैं। उनका चिन्तन यथार्थवाद
के समन्वित रहता है उनके दार्शनिक
विचारों से मानवता लाभान्वित
होना है। ऋषि दयानन्द इसी कोटि
के दार्शनिक थे।

स्वामी दयानन्द जन्मजात दार्शनिक (Born Philosopher) थे। वे
भाव या काल्पनिक फिलास्फर नहीं
थे। उन्होंने दयनशास्त्र का किसी
गुरुकुल या विद्यालय में अध्ययन नहीं
किया था—उनके जीवन की दो पट
प्राप्ति ऐसी हैं जो यह प्रमाणित करती
हैं कि उन्हें मात के दूध की घड़ी के
साथ ही दर्शन मिला था। पहली
घटना तो चौदह वर्ष की आयु में
घटी शिवरात्रि के दिन। पिता जो
कष्टकर व्यवसाय में श्रीर अपने पुत्र को
जोबोपायक बनाना चाहते थे। उसे
शिवरात्रि का व्रत रखने के लिए
प्रेरित किया। शिव की प्रतीक
स्वचक्रात्मक कथाओं को सुना कर
बालक मूलकर (दयानन्द का बच-

पन का नाम) को उत्साहित किया।
मूल जो के मस्तक में यह वस्तुता से
जमा देते हैं कि शिवरात्रि की निष्ठा-
पूर्वक व्रत रखने वाले भक्तों को शिव
साक्षात् दर्शन देते हैं। बालक मूल
भी शिव मन्दिर में रात्रि के समय
व्रतानुष्ठान में लीन है। तभी एक
छोटी सी सामान्य घटना घटती है।
कुछ बूँद शिव से निकलते हैं और
शिव प्रतिमा पर छल-झूब बचाते
हैं। मूलकर इसे देख कर धारण
वर्तित हो उठता है। उनके बाल
मस्तक में भक्तों की बिजलियाँ कीच
उठनी हैं। क्या यह वही शिव है जिस
की प्रतीक कथाओं को मैंने सुना
है, जो अपने विशुद्ध से धनिक भय-
कर रासलों को नष्ट करते हैं अपने
तीसरे नेत्र से बामदेव को मल
किया है वह अपनी रक्षा इन खूब
बूँदों से क्यों नहीं कर पा रहा है?
क्या यह वही शिव है? बालक अपने
शकाओं को पितर के समक्ष रखता है।
पिता जो उत्तर देते हैं उस उत्तर से
वह सन्तुष्ट नहीं होता है और तब
भी निम्नता से पिता से कहता है
कि मैं व्रत नहीं रख्पा। वह घर
पहुँचता है और व्रत को तोड़ कर
भोजन कर लेता है। सच्चे शिव को
प्राप्त करने का मन में मन्वत्वे लेता
है उसे मूल प्रजा से विरक्ति हो
जाती है।

शिवरात्रि की घटना से तीन
बातों का पता लगता है—१ बालक
मूल की जिज्ञासु शक्ति २ सच्चे शिव
की प्राप्ति का संकल्प, श्रीर ३ निर्भयता
से अपने विचारों को प्रकट
करना।

एक दार्शनिक के लिए जिज्ञासु
होना परत्यावर्णीक है। वेदात का पहला
सूत्र है—

अथातो ब्रह्मविज्ञाता।

दूसरी बात यह बताती है कि
उस प्रत्यायु में भी अपने कठोर पिता
के समक्ष निर्भयता से अपनी सत्ता
को रखना है। दार्शनिक के लिए
निर्भयता का गुण आवश्यक है ताकि
वह अपनी विचारधारा को ससार
के सामने रख सके। तीसरी बात,
शिव की प्राप्त करने का कठोर व्रत
का ने-१।

दूसरी घटना—पाच वर्षों के बाद

घटती है। बालक मूल अपनी बहन
और चाचा के मृत्यु-दयों का साक्षात्
देखना है। उसके बाल-मस्तक में
इस समय से एक विलक्षण प्रतिक्रिया
होती है। प्रश्न उठता है मृत्यु क्या
है? क्या सभी को एक न एक दिन
मरना है? क्या मृत्यु से बचा नहीं
जा सकता?

दूसरी घटना से दो प्रश्न उत्पन्न
हूँ—१ मृत्यु क्या है? २ इस से
कैसे बचा जा सकता है।

ऋषि दयानन्द का सारा जीवन
निम्न चार प्रश्नों को सुलझाने में लग
जाता है—

- १ शिव क्या है?
- २ उसे कैसे प्राप्त किया जाए?
- ३ मृत्यु क्या है? श्रीर
- ४ और उससे कैसे बचा जाए?

दर्शनशास्त्र का भी यही मुख्य
विषय है। उसे प्राप्ता क्या है? किस
विधि से उसे प्राप्त किया जा सकता
है? तथा मोक्ष क्या है? श्रीर उसकी
प्राप्ति के क्या साधन हैं?

व्रत स्वामी दयानन्द एक जन्म-
जात दार्शनिक (Born Philosopher)
के हसमें किर्तित भी मन्वेद नहीं।

ऋषि दयानन्द ने दर्शनशास्त्र पर
कलस से किसी अन्य को रचना नहीं
की। उनके स्वरचित ग्रन्थों में दार्शनिक
सूत्र यन्त्र-तन्त्र बिबरे हैं। सत्यार्थ
प्रकाश गृतीय सनम धर्म, नयम
धार्मिक समुल्लास में प्रसंगवश दार्शनिक
मन्तव्यों के अध्ययन से पता
चलता है कि वे उनकोटि के दार्शनिक
थे। परन्तु कुछ विद्वानों का मत
है कि उनके स्वकृत किया जा सके
प्रसंगवश भारतीय दर्शनों के कुछ
मन्तव्यों के उद्धरण मिलते हैं, वे
मन्तव्य ऋषि दयानन्द के न हीकर
उन दर्शनों की मन्तव्य कहना
शुक्ति मगत है। किन्तु मेरा विचार
इस विषय से निम्न है। मेरी धारा
है कि स्वामी जी ने भारतीय दर्शनों
का बाधा न केवल जिन मन्तव्यों का
समन्वय किया है, उन्हीं 'दयानन्द-
दर्शनों' कहना ही युक्ति मगत है।
धाय की भाषा में यह कहा जा सकता
है कि प्राचीन दार्शनिक सिद्धांतों को
दयानन्द ने एक नवीन शैली, नवीन
भाषा में सुवोषित रख द्ये उसे
प्रतिपादित किया। 'नवीन कथर वे

पुरानी मुस्तक'।

स्वामी दयानन्द महाराज ने विविध
प्रकारों से दार्शनिक तत्त्वों का प्रतिपादन
किया है। किसी सम्प्रदाय विशेष का
अनुगमन नहीं किया है। उनके मन्तव्य
सम्प्रदाय निरपेक्ष तथा समुदाय जीवन
से सम्बन्ध रखते हैं।

श्री दयानन्द महाराज ने गद्य
सुभासिक शैली में अपने लघु ग्रन्थों
में दर्शन तत्त्वों का निरूपण किया
है। जैसे 'धार्मिक दयन माला' एवं
स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश। इन लघु-
ग्रन्थ पुस्तकों में दर्शन के मौलिक तत्त्वों
का विवेचन प्रस्तुत है। व्रत हम
नि सकीच कह सकते हैं कि दयानन्द
एक मौलिक दार्शनिक हैं।

यह बने ही शिव की बात है कि
धार्मिकसाधन में सत्यागत रूप में उनके
निरूपित दार्शनिक मन्तव्यों का कोई
धार्मिक भाष्य तैयार नहीं किया
है। बाष्ठा उसको, विशेष समारोहों
पर लालो रं का बजट बनता है।
जो दो-तीन दिनों के तमाशे का नाटक
क समाप्त हो जाता है। इन उत्सवों
एव समारोहों से किचित् ही लाभ
होता है। जितना लाभ होता है उस
से कहीं अधिक ही हानि होती है।
काश। इन बजटों का स्वाध्याय भी उन
के दार्शनिक मन्तव्यों के भाष्य में
लगतता तो आज विश्व में दयानन्द,
दूसरे शकाध्याय के रूप में समाप्त
होते। हूँ। हमारी (हमारे विद्वानों)
की धर्ममय्यता से हमारा कर्तव्य
कलास का दार्शनिक ध्यायम गिरे यह
गया है। प्रस्तुत।

ऋषि दयानन्द के दर्शन पर
धार्मिकारिक ग्रन्थ बहुत ही मल्य हैं।
यह प्रयास तो व्यर्थमगत ही है।
सबेकी वे दो पुस्तकें बही ही धक्की
हैं। स्व. पं. गंगाप्रसाद जी उपा-
ध्याय की Philosophy of Dayanand
तथा उनके सुप्रसृत स्व. सत्य-
प्रकाश जी की A critical study
of Philosophy of Dayanand
हिन्दी में उपाध्याय जी की ही एक
लघु पुस्तक 'शकर रामानुज एवं
दयानन्द' भी धक्की मुस्तक है। धक्की
हाल ही में डा० श्रीनिवास शारसी
जी, श्री दयानन्द पीठ कुश्नेश
विश्वकोष दयानन्द दर्शन—एक अध्य-
यन' पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक
कई दृष्टियों से धक्की है। की देव-
प्रकाश जी गुप्त ने भी 'दयानन्द-
दर्शन' नामक एक पुस्तक लिखी है।
वे सभी प्रयास व्यर्थमगत हैं—सच्चाई
यह नहीं। हा, डा० सत्यप्रकाश जी
को पुस्तक, धार्मिक प्रतिविम्ब सध
राज्यवर्तन में प्रकाशित की है।

स्वामी जी के दर्शन के ध्याय
पर पं. उदयवीर जी शारसी ने भी

स्वाभी जो मे षड्वन्तो मे ध्रुवि रोध कहे माना है सो उन्ही के शब्दो मे दे रहा हूँ।

जैसे एक विद्या मे अनेक विद्याधो के व्यवरो को एक दुसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न भिन्न छ व्यवरो को छ शास्त्रो मे प्रतिपादन करने से इनमे कुछ भी विरोध नही है।¹⁴ इस विषय पर सप्र० के नृत्तीय एव षष्टम सम० मे विस्तृत रूप से विवेचन किया गया है। ऋषि दयानन्द का यह प्रतिपादन बहुत ही चमकारिक है।

इस सम्बन्ध मे वर्तमान समय के प्रसिद्ध दार्शनिक स्व० डा० राधाकृष्णन के मत का भी प्रयत्नान पाठक कर। मैं इसे उद्धृत करने का लोभ सवरण नही कर सकता। वे लिखते हैं—

The six systems agree on a certain essentials. The acceptance of the Veda implies that all the systems have drawn from a common reservoir of thought. All the systems protest against the scepticism of the Buddhists and erect a standard of objective reality and truth as opposed to an eternal unstable flux. All the systems accept the view of the great world rhythm vast periods of creation maintenance and dissolution follows each other in endless succession.¹⁵

ईश्वर, जोष एव ऋक्षि—

ईश्वर—सभी आस्तिक दार्शनिको मे ईश्वर की सत्ता मे विश्वास प्रकट किया है। भगर मतभेद है तो उसके भुग-कर्म एव स्वभाव के प्रतिपादन मे। ईश्वर के स्वभाव का प्रतिपादन जोषन से सीधा सम्भव रहता है। कहे सुनिये—

नास्तिकता—जो लोग ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हुए भी, किसी एक विशिष्ट स्थान मे निवास मानते हैं।¹⁶ जैसे वेणुष्ठ लोक, शीरसागर, कैलाश पर्वत, सातवां भासमान आदि तथा ईश्वर अपने भक्तो का प्रयास समा करता है यश की स्थापना के लिए मनुष्य रूप मे जन्म लेता है इत्यादि, ये सिद्धान्त मनुष्य को पाप करने से नहा रोक सकते। क्योंकि वह यह समझता है कि परमात्मा तो ऐसे स्थान स्थान पर निवास करता है, मेरे उपराधो को नही देख रहा है। भगर मैं करता हूँ भी तो भी उसकी स्तुति, प्रार्थना करने प० वह

मुझे क्षमा कर देगा। यह भावना प्रपराधो को बढावा देती है। जब जब धर्म बढ़ता है, ईश्वर प्रचार बढ़ने लगा और धर्म की स्थापना करता। धर्म की स्थापना और धर्म का उच्छेदन मानव बस की बात नही है। यह भावना धर्ममथता फैलाती है। इसे ही नास्तिकवाद कहते हैं।

आस्तिकता—आस्तिकवाद का जीवन की यथार्थता से गहरा सम्बन्ध है। एक भौतिकवादी (भनोत्तरवादी) की जीवन पद्धति और एक अध्यात्मवादी (ईश्वरवादी) की जीवन पद्धति मे बहुत बड़ा भिन्नता है। भौतिकवादी का सत्य धानन्द प्राप्त करना है। चाहे वह किसी भी ढंग से मिले यन्ही उसके जीवन का मोटो है।

“अथ कृत्वा मृत पिबेत्—अमनासिगनाज्य सुखमेव पुनर्भवा”। जो यह मानते हैं कि मैं केवल शरीर हूँ। मेरा यह प्रथम शरीर क्षणिक शरीर है। वह शरीर के क्षतिरहित कुछ और सोच भी नही सकता। समाजशास्त्रियो ने इस भावना की मज्ज करने के लिए विविध उपाय सुझाये हैं। परन्तु कबुर बालक मनुष्य इन उपायो से बचने का भी रास्ता निकास ही लेता है।

यह भावने अध्यात्मवादियो के जीवन पद्धति का निरोधन कर। ईश्वरवादी का सिद्धान्त है—

“नित्यवद् ब्रह्मा सवर्गिण भूतानि समीक्ष—मैं सब प्राणियो को विश्व का इष्टि से देखू।” सर्ववैद्या मत्स्यमामन्ति त्वाणि सवर्गिण च यद्वन्ति यद्विच्छन्तो ब्रह्मार्थं चरन्ति तत् पद सप्रहेण ब्रवीमि—ब्रह्मन् जिस पद का सभी वेद बर्णन करते हैं, जिसके लिए सब तप आदि वह ब्रह्म जाते हैं, जिसकी इच्छा है ही ब्रह्माचार, ब्रह्मार्थ का पालन करता है, यही ईश्वर है। सभी भूत-प्राणियो को मैं विश्व की इष्टि से देखने वाला आस्तिक किसी से घृणा द्वेष नही करेगा—ईश्वर प्राप्ति के लिए वह ब्रह्मचर्य का पालन करेगा। जिसका भावना ईश्वर प्राप्ति नही है, वह ब्रह्मचर्य का भारण क्यों करेगा। उसके लिए तो लज्जाधो का भाविन ही परम पुनर्वास है।

क्रमस

पाव विपरिणाम—

- १ सुखन्दे ४०।१
- २ स्वतन्त्रतायातव्य प्रकाश (वि० स्वामी दयानन्द)
- ३ सत्यार्थप्रकाश सत्यम सु०
- ४ स्वतन्त्रतायातव्य प्रकाश सत्यम स० ११, १२, १३

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों के कार्यक्रम महात्मा रामकिशोर वैद्य के कार्यक्रम

१४ से १६ फरवरी ८३
२० से २२ फरवरी ८३

रामायण की कथा
यज्ञ-प्रवचन प्रातः

धानन्द निकेतन दिल्ली
वी० खानवन्त की

२८ से ३१ फरवरी ८३
१ से ३ नवम्बर ८३
११ से १७ नवम्बर ८३
२१ से २७ नवम्बर ८३

निवास श्री ४/३ कृष्ण नगर दिल्ली
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज भ्रमर कालोनी दिल्ली
आयसमाज शालीमार बाग दिल्ली

यज्ञ-प्रवचन
श्री राधस्वामि गुप्ता के निवास
स्थान एक २६९ १ रघुबरपुरा न० २ दिल्ली

आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तर्क केसरी के कार्यक्रम

२४, २६, २७ फरवरी ८३
२८ से २९ फरवरी ८३
१, २, ३ नवम्बर ८३
४ से १० नवम्बर ८३

प्रवचन, रात्रि
धर्मसमाज कथाहर नगर पलवल
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

सोनीत (हरियाणा)
पवित्र विहार दिल्ली
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

दोलकवादी श्री ज्योति प्रसाद आर्य के कार्यक्रम

१४ से १६ फरवरी ८३
१६, १७, १८ फरवरी ८३
२८ से ३ नवम्बर ८३
४ से १० नवम्बर ८३

धाम प्रचार
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

वेद सत्त्वान राजौरी गार्डन
प्रधान विहार दिल्ली
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

पं० सत्यदेव स्नातक रेडियो इन्द्रधन कलाकार के कार्यक्रम

१४ से १६ फरवरी ८३
१६, १७, १८ फरवरी ८३
२८ से ३ नवम्बर ८३
४ से १० नवम्बर ८३

धाम प्रचार
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

वेद सत्त्वान राजौरी गार्डन
प्रधान विहार दिल्ली
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

पं० सत्यदेव स्नातक रेडियो इन्द्रधन कलाकार के कार्यक्रम

१४ से १६ फरवरी ८३
१६, १७, १८ फरवरी ८३
२८ से ३ नवम्बर ८३
४ से १० नवम्बर ८३

धाम प्रचार
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

वेद सत्त्वान राजौरी गार्डन
प्रधान विहार दिल्ली
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

पं० वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१४ से १६ फरवरी ८३
१६, १७, १८ फरवरी ८३
२८ से ३ नवम्बर ८३
४ से १० नवम्बर ८३

धाम प्रचार
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

वेद सत्त्वान राजौरी गार्डन
प्रधान विहार दिल्ली
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

पं० चुन्नीलाल भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१४ से १६ फरवरी ८३
१६, १७, १८ फरवरी ८३
२८ से ३ नवम्बर ८३
४ से १० नवम्बर ८३

धाम प्रचार
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

वेद सत्त्वान राजौरी गार्डन
प्रधान विहार दिल्ली
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

५. धर्मार्थप्रकाशमाला व्याख्यात रत्न स० २५।३०

६. साध्यवर्णन—“अथ विविध दुःशास्त्रानि विवृतिरूपतुष्टुप्रकाशः”
स० १६।१०
(भाष्यकार स्वा० ब्रह्ममुनि परिभाषक, प्रकाश—आर्य स० य० १०।४५१)

११. अ० स० १६।१० २४ स० १२
१२. साध्यवर्णन—“अथ विविध दुःशास्त्रानि विवृतिरूपतुष्टुप्रकाशः”
स० १६।१० २४ स० १२

१३. अ० स० १६।१० २४ स० १२
१४. साध्यवर्णन—“अथ विविध दुःशास्त्रानि विवृतिरूपतुष्टुप्रकाशः”
स० १६।१० २४ स० १२

७. स० य० स० १६।१० २४ स० १२
(य० रामनाथ कपूर टुष्टु)
८. ध्यानीय—न च युक्ता बर्णने ८।१५।१

१५. अ० स० १६।१० २४ स० १२
१६. साध्यवर्णन—“अथ विविध दुःशास्त्रानि विवृतिरूपतुष्टुप्रकाशः”
स० १६।१० २४ स० १२

१७. अ० स० १६।१० २४ स० १२
१८. साध्यवर्णन—“अथ विविध दुःशास्त्रानि विवृतिरूपतुष्टुप्रकाशः”
स० १६।१० २४ स० १२

९. वेदान्तवर्णन, सारोपरि कृत
“आत्मवृत्ति सत्त्वानुवृत्ति सत्त्वानुवृत्ति”
(प्रभा२२)

१९. अ० स० १६।१० २४ स० १२
२०. साध्यवर्णन—“अथ विविध दुःशास्त्रानि विवृतिरूपतुष्टुप्रकाशः”
स० १६।१० २४ स० १२

२१. अ० स० १६।१० २४ स० १२
२२. साध्यवर्णन—“अथ विविध दुःशास्त्रानि विवृतिरूपतुष्टुप्रकाशः”
स० १६।१० २४ स० १२

१०. गीता “अथ यथा न निष्कृतिरुत्तमान्तरं नमः” १३।१६

(विज्ञापन परिधि)

स्व० श्री केशवचन्द्र बुगा के प्रति एक श्रद्धांजलि

जन्म—१८ सितम्बर १९११

मृत्यु १९ सितम्बर १९८४



(स्व० श्री केशवचन्द्र बुगा)

घाघ का जन्म पञ्जाब प्रांत के जालंधर जिला में हुआ। इनके पू० पिता पू० दीनाराम जी पू० पी० शिक्षा विभाग में शिक्षक थे अतः उनका निवास स्थान मेरठ शहरवा रहा। इनकी लगभग सारी शिक्षा मेरठ में हुई। इतिहास में एम ए करने के पश्चात् इन्होंने L L B को परीक्षा पास की। बकालत का अध्यापन करने के लिए प्रस्थान किया। परंतु इस व्यवसाय की सविनयता को इनका व्यापारिक हृदय सहन न कर सका। इस महीने के पश्चात् ही इनका मन उड़ता हो गया।

इन्होंने अपने पिता से अनुरोध किया कि वे उन्हें अपने व्यवसाय में ही लगाने। इनके पिता जी ने इन्हें शिक्षा प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए टिमरली (C P) में भेज दिया। ईश्वर ने इनके बड़ा पहलवे ही

बहा का विद्यालय बंद हो गया परंतु किसी प्रकार ने यह संघर्ष के एक स्थानीय स्कूल में शिक्षक पद को पा गए और वहीं रहने लगे। यह एक भावही शिक्षक थे जिसने काय से प्रभावित प्रम था। इतिहास राजनीति के अनिर्दिष्ट प्रश्नों की ओर गति (उच्च गति) पर पूर्ण अधिकार था। छात्र इनसे प्रत्येक प्रश्न के बारे में सहायक इनके ज्ञान से लाभ उठाते थे। समय पालन तथा कर्म-व्यवसायिता इनके विशेष गुण थे।

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री हरि शंकर परसाई इनके शिष्य रहे उन्होंने हिन्दी की पत्रिका में अपने अनुभव लिखते हुए इनकी बनी प्रशंसा की है। वे लिखते हैं—

हमें एक शिक्षक पढ़ाते थे कृष्ण चन्द्र बुगा। उनके कला में छात्रों ही प्रसन्नता से नाच उठते थे और सोचा करते थे कि हम भी ऐसे ही शिक्षक बनने। उनके पढ़ाने का तरीका हमें प्रत्येक शिक्षक लगता था।

इसके अनिर्दिष्ट फिल्म अभिनेता

अशोक कुमार और रीशो कुमार भी इनके शिष्य रहे हैं।

विवाह के पश्चात् यह देवली में जा गए। यहाँ कुछ दिन एक Bank में कार्य किया परंतु मन नहीं रमा अतः इन्होंने दिल्ली के सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण विभाग में शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त किया और देवली में मुद्रित स्वयं से श्री महावीर जन हायर स्कूल स्कूल में शिक्षक बन गए। बड़ा पर भी इन्होंने अपनी कन्या प्रमत्ता तथा निरखन स्थापन पत्रिका प्रकाशित किया छात्रों के प्रति का व्यवहार को प्रभावित प्रमत्ता या यही कारण है कि से—'निर्दिष्ट के पश्चात् भी वे दत्तक दण्डा की प्रार्थना करते थे। न केवल छात्र बन शिक्षक भी इनके ज्ञान में लाभ उठाते थे तथा अपनी समयाधिकांश हल करते थे। इनका प्रश्नोक्ति का ज्ञान अत्यंत होने के कारण नया गतिन पर अधिकार होने के कारण इन शिक्षकों के लेखक भी इनकी सहायता लेते थे।

इनके चरित्र में सत्यता और सिद्धांत दोनों कृष्ण कर प्रमत्ता हुआ

था।

प्रायः कहा करते थे मैं मेरठ शारदासमाज में नियम-युक्त जाया करता था। वही पर मुझे शारदासमाज के प्रति विश्वास उपन हुआ। शारदासमाज के सिद्धांतों के प्रति इनकी धारणा की बात कोई धर्म-विश्वास या रुचिप्रियता इनके स मन नहीं उठान सकती थी। 'गति गति नया जन्म-पूजा के धार विरोधी थे चाहे कोई भी श्रवण हो व किसी परमपरायत श्रद्धाविश्वास को तोड़ देते थे हा ईश्वर भक्ति के भक्तों से काफी प्रम था।

यह सच्चे साहित्य प्रमी थे। प्रश्नोक्ति तथा उद् स हिंसा के ऊपर तो इतना अधिकार था कि आप उनके पास बैठो बैठे रहिए वे आपकी प्रश्नोक्ति को तथा '—' की कविताएँ रहते। इनकी ईश्वर में विश्वास प्रभावित प्रभाव न्यामरग सविन था की। देश-विदेश के राजनीतिक इतिहास के अनिर्दिष्ट यह शारदासमाज के इतिहास तथा इनकी गतिविधियों की पूरी जानकारी रखते थे।

इनके चरित्र में कुछ ऐसे गुण थे। ज्ञान के राजनीतिक इतिहास के इतिहास सब से बना था। यह शारदासमाज प्रमत्ता को केवल शारदासमाज ही नहीं पर में भी चलाता रहते थे।

गान्धारी है कि मेरा निवृत्ति के पश्चात् भी इनके स शिक्षक और छात्र इनके पास आते रहते थे और श्रद्धा से बोधा करते थे।

प्रकाशनी शास्त्री जन्मस्थान नई दिल्ली

जातपत-मानवता का शत्रु

डा० धनानन्द गुप्त

मानव जाति का प्रत्येक सदस्य अपने कर्म के आधार पर ही वास्तव बनना चाहिए। जन्म के आधार पर क्या व्यवस्था की स्वीकार करके समाज में अपने भाग को अधिक प्रकाश के सफेद में भर लिया है। भाग मानव समाज विनम्र मिलन सम्पन्न हो बन कर मानव मान का ही प्रतिनिध बन रहा है। अपने हाथों धरने ही पर वे कुहाड़े मारने वाली बात को साधक कला ही उसका ध्येय बन गया लगता है। प्रत्येक जातिवाद में सम्पूर्ण मानव समाज व विवेक के प्रति एक निष्ठा सम्पन्ना उपलब्ध कर दी है। अथवा विविध पक्षों के अनुयायी भी अपने को जाति के रूप में मानते रहे हैं। नहीं किसी प्रायः (कार्य) कार्य में जाति का कोष्ठक घना है, बहा सुरक्षित हिन्दू, मुस्लिम ईसाई अथवा अन्य विभिन्न धर्म-व्यवस्था शब्दों का प्रयोग करते हैं। वास्तव में यह कोष्ठक होना ही नहीं चाहिए। वेदों में सृष्टि-व्यवस्था का स्वयं कर्म के

आधार पर ही जन्म के आधार पर नहीं। इस से ही बाधे बहकर वेद व्याख्याकार— ब्राह्मणोपनिषद् महासूरी ब्राह्मण कृत। ऊर्ध्व नदस् यदर्थः पदस्याप्युदो-जायत। धर्मानस ब्राह्मण है जो ज्ञान पूर्ण है। युवाय क्षत्रिय है जो ज्ञान करीत है। उदर वैश्य है जो जीवन साधनी वितरण करता है। पर शूद्र है जो जीवन को गति प्रदान करते हैं सेवा करते हैं। यदि इस मन के आधार पर हम देख तो एक ही शक्ति चारों वर्गों में जाता है प्रत्येक व्यक्ति का चिन्तन मनन मस्तिष्क के, रक्षा-कार्य हाथों के, शरीर को रक्त-वितरण शक्ति उदर के, सेवा कार्य रैत के होता है। प्रत्येक

दो हजार वर्ष की युगानी में हमें चिन्तन शृंखला बना दिया। हम शक्ति व सत्य धर्म का कार्य-व्यापक व्यवस्थावादी और सम्प्रदायवादी विचार भाग के रग में रग गये। तथाकथित शासकों ने हम पर मन चाहे धर्मव्यापक किये तथा हमें व हमारी विश्वासगम शक्ति को उजाड़ने के लिए हमारी शिक्षा पद्धति का स्वरूप विपरीत दिशा में मोड़ दिया। इसका भी बना प्रभाव 'मारी जीवन पद्धति पर पड़ा। दूसरा हमारी स्व-नृणा के पश्चात्त ही नेता हमें श्रान्त व भी धार्मिक शक्ति से परिचित न थे उन्होंने जिस स्वयं के ब्राह्मण का पल्ला भारी देला बहा ब्राह्मणवाद जहां वैश्य का कर्म

देखा बहा वैश्यवाद जहां ग्राहो का बहा ब्राह्मण को बना दिया।

भारत में हम ब्राह्मण क्षत्रिय धार्मिक का शत्रु पर वट, धर्म धीरे-धीरे '—' धर्मो सम्मानधर्म दिने उपनामों को भी जाति माना जाने लगा जैसे दीपिन बनवदी विपरीत विचारों रायमाधव रायमाधव, ठाकुर पाल मान धार्मिक धार्मिक। इस प्रकार गीत उपनाम भी जाति बनते गये यहाँ तक कि कवीश्वर-मी नामक के चेले मोहम्मद के चेले धर्म के चेले (गिरा) सभी धर्मों को जाति बना कर उभरे हैं। सठ धर्मों जैसे वातावरण बन गया मानवता व धर्म दोनों ही विकृत हो गये विपाक हो गये। जातिगत '—' मानवता धार्मिक है। इस काय को प्रत्येक बुद्धिजीवी मिनकर करे। सर्वप्रथम हम मानव है तत्त्वज्ञान को के आधार पर हमें जो भी बर्ण प्राप्त होता है वह हमारा वर्ण है। अतः

(विशेष १०० वर्ष के)

समाचार सन्देश

साप्ताहिक सस्तगों का विवरण

रविवार २० अक्टूबर १९८५

ग्रन्था मुगल प्रताप नगर—५०
मुलसीराम धार्यायदेशक प्रक्षोभ
नगर—स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती,
भरमर कालोनी—डा० रघुनन्दनसिंह,
ग्रहानन्द विहार एल ग्याक—महात्मा
देवेशशिव, हनुपुरी श्रीमती प्रकाश-
वती शास्त्री किम्वये कथ—५०
बंयोंर शास्त्री विद्यावाचस्पति,
मुगलखाला टाउन पाठ—२—श्रीध-
रत शास्त्री, घटर कलाश न—१—
डा० मु दयाल भूदानी गुडमण्डी—
स्वामी प्रहानन्द मरस्वती गोविन्द-
पुर—५० मुनिदेव भजनोपदेशक,
बुनामण्डी गहाडगज—५० कामेश्वर
शास्त्री, जनपुरी बो—२—५० देव-
राज बधिक मिश्रनरी, जगपुरी
विस्तार—डा० कृष्णवत्त शर्मा,
टीगौर गार्डन—५० प्रक्षोभ कुमारा
शास्त्री, तिसारपुर—धार्मिकीर ग्या-
जीतमिहारा, तिलक नगर—५०
ब्रह्मप्रकाश वागीश, देवनगर—डा०
सुभाषचन्द्र शास्त्री, दरिया गज—
५० प्रक्षिपे व्याकरणाचार्य, श्री
निवासपुरी—५० राधस्वाम शर्मा,
नारायण विहार— ५० रामवीर

शास्त्री, प्रीतमपुरा—५० सोमदेव
शास्त्री, प्रसात विहार— ५० मनुदेव
शास्त्री, एजाकी बाग—५ रमेशचन्द्र
वेदाचार्य, बसई दारा पुष—श्री धर्मा-
चन्द्र मतकाना, भोगल—डा० वेद-
प्रकाश महेष्वरी, मोडलवस्ती—
५०, मुरारीलाल बेचन महावीर
नगर— ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, राणा
प्रताप बाग— श्री भरमराज कान्त,
रघुवरपुरा—५० जयभगवान मण्डली,
राजौरी गार्डन—५० हरिश्चन्द्र
धार्यायदेशक, रमेश नगर— श्री नेत्र-
पाल धार्य सखीनारी नगर— ६-
१२०००० वेदप्रकाश शास्त्री,
सोहनगज—महात्मा मुनिचक्र वान-
रस्वी, शादी सामपुरा—५० बलवीर
सिंह शास्त्री शालीमार बाग—
स्वामी जगदीश्वरानन्द मरस्वती,
प्रतिखण्ड—धार्मिकीर ग्या—मा० मोहन
लाल गांधी, मोतीबाग— ब्रह्मचारी
वेदप्रकाश धार्य ।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वचरानन्द सरस्वती
अभिछाता वेदप्रचार विभाग
दिल्ली सभा

आयसमाज पंसा राड "सी ब्लक" जनक पुरा,
नई दिल्ली-५० में वेद प्रचार सप्ताह

धार्मिक समाज मन्दिर के प्रागय
में उपस्थित जनमगूह के सम्मुख
धार्मिक विद्वानों ने अपने श्रोतस्वी
विचारप्रकट करते हुए कहा—

आज देश की स्थिति गम्भीर है-
अलगाववाद के नारे हैं। मनुष्य-
मनुष्य का प्राणधानक वन रहा है
ऐसे समय में हमें भी सतक रहकर
अपने कर्तव्य कर्म का पालन करते हुए
राष्ट्रहित में आगे बढ़ना होगा। आज
गोवाल, जहा पर कभी गुरु गोविन्द
सिंह जी तथा स्वामी दयानन्द अद्या-
नन्द, महात्मा सुभाष चन्द्र बो-
सराय में प्रथम श्री सोहार्द का वाता-
वरण बनाया था और जगह जगह
धार्मिक स्कूलों, डी० ए०वी० स्कूलों-
कावेजों की नींव रखी थी— उसका
स्वप्न विकृत हो रहा है। ऐसे समय
में एक एक जुट होकर महानन्दविषयों
की प्रेरणा को लेकर आगे बढ़ना
है। बिछटनकारी तत्त्वों को
समाप्त करने के लिए योगीराज श्री

कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम राज के
जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर जो हमारे
धार्मिक महान् पुरुष हैं। उन्होंने डी०
ए० वी० शिक्षण उपस्थायों को प्रगति
का मूल्यांकन भी उपस्थित जनमगूह
को कराया ।

इस सप्ताह के अन्य प्रमुख
वक्ता थे—स्वामी मुनाचरानन्द जी,
श्री दरबारी लाल जी, डा० राधा-
कृष्ण ठाकुर, महाल, धार्मिक एवं
सामाजिक प्रवचन जनकपुरी, श्री
शिवकुमार शास्त्री (विकास पुरी),
श्री विराट सुभुज श्री शिवकुमार
श्री यह कार्य बड़े उत्साह एवं हर्ष
भरे वातावरण में ७ सितम्बर को
सम्पन्न हुआ ।

(वेद महेन्द्रपाल सिंह धार्य)

मनी

१९८५ ई० के वर्ष में दयानन्द अनुसंधान पीठ
पंजाब विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० उपाधि
प्राप्त विद्वान्

डा० वेदपाल वर्णी

आपने छतपथ बाह्यर तथा
महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का
तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर
१९८५ में पी० एच० डी० की उपाधि
प्राप्त की है। विद्वान् शोधकर्ता ने
संस्कृत में प्रस्तुत किये गये अपने बीच
प्रबन्ध में छतपथ की वेदाधी प्रक्रिया
का विस्तार पूर्वक उद्घाटन कर
महर्षि भाष्य से उसका समालोचन
किया है। इसी प्रयत्न में वैदिक यज्ञों
का स्वप्न, यजुर्वेद का प्रतिपाद
धार्मिक माना विषयों की गम्भीर विवे-
चना शोधकर्ता ने की है। डा० वर्णी
ने अपने भावी शोधकार्य के रूप में
छतपथ बाह्यर की विस्तृत ऐतिहा-
सिक समीक्षा की है जुना है ।

डा० राजपाल सिंह

भारतीय बहर्ष्यन का धार्मिक-
समाज की देव पर डा० राजपाल
सिंह की इसी वर्ष उपाधि प्रदान की
गई है। डा० सिंह ने धार्मिकसमाज के
दार्शनिक विद्वानों के कृतित्व का
ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत किया
है ।

डा० धर्मदेव शर्मा

आपका शोध का विषय स्वामी
दयानन्द रचित संस्कारविधि का

गुह्यसूत्रों से तुलनात्मक अध्ययन
था। इस विषय के सदय में शोध-
कर्ता ने विभिन्न गुह्यसूत्रों का
अध्ययन कर संस्कारविधि प्रोक्त
संस्कारों के विधि विधान से उनकी
तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की है।

पंजाब विश्वविद्यालय में डा०
श्रीमपाल शास्त्री की प्रेमचन्द
के परवर्ती शिष्टी उपन्यासकारों पर
धार्मिकसमाज की विचारधारा का
प्रभाव शोधक शोध काय पर १९८५
ई० में पी० एच० डी० उपाधि प्रदान
की है ।

दयानन्द अनुसंधान पीठ
के प्रध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय
के निदेशन में सम्पन्न उक्त शोध
कार्यों के अति क्त सम्प्रति स्वामी
दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में वेदा
तत्त्व, स्वामी दयानन्द की मनुक्त
व्याकरण शास्त्र की देन, पुनर्वा-
गरण भाष्योलोको की दार्शनिक
गुह्यसूत्र धार्मिक विषयों पर भी शोध
कार्य किये जा रहे हैं।

वेदपाल

कालिका सचिव

दयानन्द अनुसंधान पीठ, बड़ीगड

कन्याओं को वेदाचार्य बनाने के लिए

कन्या वेदगुरुकुलम् बरेली में कन्याओं को प्रविष्ट कराइए

कन्याओं को धारम्य से वेद

पढ़ाया जायेगा बनारस संस्कृत यूनि-
वर्सिटी की प्रथमा, मध्यमा शास्त्री,
वेदाचार्य परीक्षाएं विराई जायगी ।
इन परीक्षाओं के द्वारा कन्याएं हाई-
स्कूल इन्टर बी ए एम ए परीक्षाएं
भी कर सकती हैं ।

आधुनिक के कन्यागुरुकुलों ने
सदकियों को साहित्याचार्य व्याकरण
धार्य कराया जाता है। एक ही कन्या
गुरुकुल ऐसा नहीं जहा कन्याओं
की वेदाचार्य कराया जाता हो।
धारम्य तथा जीवन व्यवस्था गुरुकुल
में रहेगी। स्वतन्त्र शैक्षणिक कार्य
और पढ़ना था सकती हैं। कन्या की
आधुनिक के कम दस बारह वर्ष
और पाचवीं कक्षाओं उत्तीर्ण हो।
प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, वेदाचार्य
कक्षाओं में भी प्रवेश हो सकता है
यदि किसी ने पूर्व परीक्षाएं पास की
हई हो।

निवेदक

वेदाचार्य, धार्मिक विषयभाष्य व्यास
एन ए (सहायक)

तीन सौ व्यक्तियों ने

यज्ञोपवीत अग्रह किये ।

धार्मिकसमाज दासदेव गज
(पलासु) बिहार में स्वामी अंगनल
वैदिक यज्ञ की धार्मिकता में वेद
प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ ।
यजुर्वेदीय यज्ञ में हजारों लोगों ने
अग्रहीत प्रदान की। इस प्रसन्न पर
तीन सौ लोगों ने यज्ञोपवीत अग्रह
किये ।

निवेदक

वेद महेन्द्र

वेदाचार्य

सावित्री देवी शर्मा एम ए

वेदाचार्य

श्रीमती देवी शास्त्री एम ए.

(गुरुधार्मिकीर)

(धार्मिकीर)

वेदमन्त्रि १०३ बाजार मोतीलाल
बरेली (२० प्र०)

साप्ताहिक आर्य सन्देश

ओ३म्

पुस्तकालय
का ३३
११/११/११
कृष्णवर्मा विश्वमार्गम्

वर्ग - ६ अंक १०
मुद्रण एक प्रति १० पैसे

रविवार, ३ नवम्बर, १९०६
वार्षिक २० रुपये

सृष्टि सत्र १९०६-०६
आश्विन २०४२
आश्विन २०० अक्षय

दयानन्दान्वय-१६१
विशेष में २० अक्षर ३० पौंड

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर

आर्यसन्देश का उत्कृष्ट विशेषांक

अपने पाठकी की पुरजोर माग को ध्यान में रखकर साप्ताहिक आर्यसन्देश अपनी गौरवमयी परम्परा के अनुसार महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (वैशाखी) पर एक उत्कृष्ट लेखों से भरपूर आकषक विशेषांक प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषांक नवीन नथ्यों शिक्षाप्रद एवं प्रेरणाप्रद लेखों से सुपजित सगृहीय होगा। आर्यसन्देश के पाठक इसे नि शुल्क प्राप्त कर

सकेंगे।

यदि आप अपने घर बैठे अध्ययन आर्यसन्देश अपनी विद्वानों की बाणी एवं सत्यान्देश पढ़ना चाहते हैं तो आज ही साप्ताहिक आर्यसन्देश के मदस्य बन जाइये और विशिष्ट विशेषांक की नि शुल्क प्राप्त कीजिए।

पत्रा सम्पादक—
साप्ताहिक आर्यसन्देश,
१५ हनुमान रोड नई दिल्ली
१९००१



इन्दिरा-स्मृति

कविवर प्रणव" शास्त्री
एम०ए० महोपदेशक
शास्त्री सन रामनगर (कटरा)
आमरा-६ (उ०प्र०)

विशेषांक की भलकिया—

- देश की आजादी का दीवाना राजस्थान की भोल जानि का गुम अल्लूड सन्-गोविन्द गुड महर्षि दयानन्द का अनांक्षा शिष्य जिसने स्वतन्त्रता के लिए सेना सजायी थी। इतिहास का मार्मिक प्रसंग
- अग्रज चित्तौड़ के किले को अपने कब्जे में लने का घड्यव रच रहे थे। महर्षि दयानन्द ने इसकी रक्षा के लिए अद्भुत साहायिक कार्य किया। इतिहास की गुफा में छिपा महर्षि दयानन्द का एक महान् कार्य।
- स्वामी दयानन्द ने आध्यात्मिक जगत् में अनेकसी कान्ति की, उस कान्ति से मसार चमत्कृत हो सकना है। इसी कारण वे जगत् भर और विश्व वन्द्य हैं।
- महर्षि दयानन्द ने बहुत भारत का स्वप्न देखा था। उस स्वप्न का पूर्ण करने के लिए उन्होंने क्या मन्त्र दिया ? अनेकों खोजपूर्ण, अध्यात्म, शिक्षाप्रद, मनोरञ्जक, ऐतिहासिक लेखों का अग्रभूष सकलन होगा इस विशेषांक में।

आज ही अपनी प्रति पुरक्षित कराइये।

वता दे कोई मनुष्यता की महापुजारिणी कहाँ गई है।
अदम्य दुर्गादेवी की जो की सिद्धवाहिनि कहाँ गई है ॥१॥
सबाया जिसने स्वतन्त्रता के स्वप्न सुगार धारली की।
जगाया जिसने प्रमत्तता के प्रमत्त मानो स्वभारती की।
विकास कीगा बजाने वालों सरस्वती की कहाँ गई है ॥२॥
धरा के दुर्ग में दुर्गी रनी जो दुष्टों की कहतो रही कहाँ।
धरा न होवे अघोर मन में न वैश्य खोब विपन्न प्राणी।
धरा के पुत्रों जरा जो बोली धरा की पुत्री कहाँ गई है ॥३॥
नही गमन में कही विर ये प्रपञ्चवादी घटाए काली।
न ताच पाये महासमर की विनाशकारी प्रकाल काली।
पुकार ऐसी उठाने वाली सशस्त्र बाणों कहाँ गई है ॥४॥
न दुष्ट दूषण की चाटना का यहाँ न होने दिया बरेरा।
उसे घटा दी अमीन जिसने यहाँ जो बाह्य कर धंधरा।
प्रकाश पीरुष दिखाने वाली विषय भवानी कहाँ गई है ॥५॥
कही भी उल्लू ने सुकसेना न डाल पाय चमन में डरा।
नई चमक से नई दमक से किया है जियने यहाँ सबेरा।
नया ही सुरज उगा गई जो उषा विरल वो कहाँ गई है ॥६॥
ममर्षी जिसने सुचास्ता से समानता की सुरुज देखा।
गिरे दूधो को लया रहे हो गले से डंके कि स्वप्न देखा।
स्वराष्ट्र का चिन्म निहार देवी को रग रचना कहाँ गई है ॥७॥
फि जाते जाते भी रक्त जल से प्रफुल्लता से जिसे है सीमा।
दिया है आशीष प्रमत्तता से अमर अक्षयिनी रहे अमीना।
दवीचि महर्षि की मिसाल बनकर सदा सुशामिनि कहाँ गई है ॥८॥

समाचार सन्देश

अभिल भारतीय आर्य युवा महामेलन

नई दिल्ली १० अक्टूबर (बृह-स्पतिवा)। आययमाज अन्तराकली (मन्दिर मार्ग) के ६१व वार्षिकोत्सव के अवसर पर आगामी २४ नवम्बर रविवार को धार्य युवा नेता ब्रह्मचारी धार्य नरेश को अध्यक्षता में 'अभिल भारतीय धार्य युवा मण्डल-सम्मेलन' का आयोजन किया गया है। जिसमें १००० प्रतिनिधि भाग लेने आ रहे हैं।

युवा महासम्मेलन संयोजक व केन्द्रीय धार्य युवक पण्डित दिल्ली प्रदेश के महासचिव श्री अमिन कुमार धार्य ने एक संस विज्ञप्ति में बताया कि २३ नवम्बर, रविवार को देश के विभिन्न राज्यों के धार्य युवक संगठनों के प्रमुख नेताओं व विद्वानों की बैठक होगी जिसमें युवा वर्ष पर नीजबानों के लिए एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बनाने तथा राष्ट्रीय स्तर

पर प्रभावी प्रेरणा निभाने के उद्देश्य से भावी कार्यक्रम बनाया जायेगा धार्य नेता व डी०ए०वी० प्रबन्धकर्मी सभा के कायदाहक अध्यक्ष श्री दरबारी लाल ने सम्पन्न भारत के डी०ए०वी० स्कूल कालेजों के प्रति विद्यो को भी युवक महासम्मेलन को सफल बनाने के आदेश दिए हैं। महासम्मेलन को सारी व्यवस्था धार्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली कर रहे हैं।

राष्ट्रीय स्तर के इस युवा महासम्मेलन के लिए दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर जन सम्पर्क अभियान तथा श्रवणी युवक सम्मेलनों का आयोजन भी किया जा रहे हैं।

चन्द्रमोहन धार्य
(प्रेस सचिव)

केन्द्रीय धार्य युवक परिषद
दिल्ली प्रदेश

सिराज खां, सूरज कुमार बने

सुबनेश्वर। कुछ दिन हुए वाला-भीर के जो सिराज खां द्वारा कुमारी किरण अग्रवाल के अग्रहरण के विषय को लेकर उड़ीसा में प्रबल हलचल मची हुई थी। गत ता० ६-१०-६८ को सुबनेश्वर धार्यसमाज मन्दिर में जो सिराज खां को बुद्धि सत्कार के पश्चात उनका विवाह सुबो किरण के साथ सम्पन्न होकर एक मधुपर्क का शुभान्त समाप्त हो गया।

श्री सिराज सुबो किरण तथा उनके अग्रवृत्ता और शास्त्रीय स्वजन कटक उच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति श्री राधाचरण पटनायक के समक्ष अपनी सम्पत्ति प्रकट करके सुबनेश्वर धार्यसमाज की महापत्नी व विवाह के निमित्त प्रस्ताव दिया था। माननीय न्यायमूर्ति ने इसे स्वीकार करते हुए अपने दोष निर्णय में कहा है—'अग्रवृत्ता ने यह निवेदन किया कि मायमा मित्रना पूर्वक युक्तमा लिया गया है और इस प्रकार

एक विस्फोटक स्थिति का मुसालन समाप्त हो गया है। यह भी तय हुआ है कि आ निगज और सुबो किरण धार्यसमाज की पद्धति के अनुगमन विवाह बन्धन में एक हो जायेंगे।

सुबनेश्वर धार्यसमाज के नयनिमित्त महर्षि दयानन्द निर्वाण शतशब्दो स्मारक यज्ञ मण्डप में कटक सुबनेश्वर तथा उड़ीसा के बहु प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों का उड़ीसा के बुद्धि सत्कार हुआ। श्री सिराज ने जो उपस्थिति में श्री सिराज ने कहा—'प्रस्ताव के साथ श्री सूरजकुमार' नाम सहग किया। शब्द के अन्तराल श्री सूरज कुमार और कुमारी सुबो किरण अग्रवाल का विवाह मन्दिर अगुष्ठित हुआ।

उड़ीसा के मंत्री ममाचार पत्रों में इस समाचार को प्रमुख स्थल पर प्रस्तुत किया।

प्रियतमयान

शुद्धि समाचार

कलकत्ता २ अक्टूबर। धार्य समाज बड़ा बाजार द्वारा आज माय एक भय समारोह में शेष अग्नी-होत्र पुत्र शेष लतीकुट्टी लाल-दीवी धार (पूर्व) पी० व थाना चन्द्रनगर, जिला हुबली (ब० बंगाल) के आनेदन पर उनकी शुद्धि की प०

ईश्वरदत्त वंश के पीरोडिय व के गो गयी जिसमें समाज के मंत्री लुगटान चन्द धार्य तथा महाज के विशिष्ट सहयोगियों सहित आम जनता के साथ भी उपस्थित हुए। शुद्धि के उपरान्त उनका तथा माय अग्रम-नीत स्वीकृत हुआ।

पासण्ड सण्डन का आह्वान श्री रामनाथ सहगल का वक्तव्य

(निज सन्देशवाता द्वारा)

पिछले दिनों दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित दो ममानारों के बारे में धार्य जनता का ध्यान आकृषित करना चाहता हूँ। पहला ममाना नन्दन का है जहाँ श्री प० श्रीराम शर्मा की उपस्थिति में गायत्री परिवार की ओर से आयोजित यज्ञ कार्यक्रम के अवसर पर स्वामी प्रसा नन्द ने तथाकथित भगवानों से सावधान रहने का उपदेश देते हुए कहा कि—'अब समय आ गया है कि हम लोगों को अपने मकानों पर सूचना पटो पर 'बोबेयर आफ डाग' के स्थान पर 'बोबेयर आफ साइ' अर्थात् कुत्तों से सावधान के स्थान पर 'भगवानों' से सावधान लिखा कर नगना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि वे तथाकथित भगवान कुत्तों से भी अधिक काटने वाले और गिरे हुए हैं।

दूसरा समाचार न्यूयार्क से आया है। लगभग ३ वर्ष पूर्व तथाकथित भगवान् आचार्य रजनीश भारत छोड़कर अमेरिका में आयेगाने से जा बसे। करोड़ों रुपये की विस्तृत प्रुति खरीद कर वहाँ रजनीशपुरम् की स्थापना की। समार की सब से सूर्यवान कार रान्स-रायस का रजनीश प्रयोग करते हैं। उनकी बड़ी की व ओर से मूल्यवान हौरे पड़ हुए हैं। उनके धार्मिक ने उन्मुक्त सेकन को पूरी छत्र है। विवासी जीवन व्यतीत करने वाले भगवान रजनीश का कहना है कि उनके अनुयायियों ने उनके साथ बोना किया, उनकी हत्या का प्रयाग किया तथा उन्हें करोड़ों डालर कर्ज में डुबो दिया।

वेदप्रचार विभाग का

द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महाशय जूनीलाल धर्मार्थ दुष्ट द्वारा संचालित वेद प्रचार विभाग का वार्षिक उत्सव दिनांक २७-१०-६८ रविवार साय ३ बजे ६/४४ कीति नगर इण्डियन हिल एरिया (M D H) में माकदेश्वर धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मान्यवर श्री गनगोपाय बानस्पृध की अध्यक्षता में मनाया गया।

इस अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों ने शास्त्रिक जनता का मार्गदर्शन किया।

मुष्ठीराम शर्मा

वेद प्रचार अग्रिष्ठाला

अब रजनीशपुरम् से समाचार से प्राप्त हुआ है कि भगवान रजनीश के लगभग दो हजार अनुयायियों ने रजनीश की भूपूर्व निजी सचिव मा प्रानन्दश्रीना द्वारा रजनीश-वाद" पर प्रकाशित पुस्तक की ५०००० तियों व सचिव के कपड़ों की वर्षों बनाकर नाच-गा कर उनकी प्रत्येष्ट कर दी।

इन दोनों समाचारों से इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि तथाकथित भगवान् भगवान् भगवानों के पासण्ड से पाश्चात्य भौतिकवादी जगत् का एक वर्ष ऊँच चुका है। पासण्ड व डोग से धार्मिकता होता है। इसलिए शुभ है इनकी ओर ककना न्यायाविक है। परन्तु पासण्ड की पील मुलने पर उस से पूर्णा भी जल्दी ही हो जाती है।

हमारे देश में जो ईश्वर के नाम पर अनेक पासण्ड फैले हुए हैं। कठने की आवश्यकता नहीं कि इन पासण्डों के कारण समय समय पर देश की राष्ट्रीय क्षति उठाने वाली है धार्यसमाज अपने जन्म-काल से ही इन प्रकार के पासण्डों का विरोध रहा है। अपने प्रारम्भिक क्षणों में पासण्ड लखन के लिए धार्यसमाज ने विधायियों से अनेक साधनार्थ किए। धार्य इस दिशा में विधिलता धार्य हुई है। मैं अपने धार्य विद्वान उपदेशक व प्रचारक महानुभावों से निवेदन करूँगा कि पासण्ड सण्डन के कार्यक्रम से पूरी शक्ति के साथ जुट जायें।

मधदीय

(गजेन्द्रप्रसाद मालवीय)
कार्यालयपायल

वेद प्रचार सप्ताह

धार्यसमाज यमुना विहार (रजि.) दिल्ली के तत्सत्वाचार्य ने वेद प्रचार सप्ताह २ से ६ अक्टूबर तक सर्वे श्री आचार्य रामचन्द्र जी की अध्यक्षता में पाच दिवसीय यज्ञ के परम्परा पूर्ण आहुति सहित बड़ सप्ताह पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन यज्ञ, उपदेश तथा भजन की मधुर ध्वनि के साथ श्री स्वामी कृष्णानन्द जी, श्री प० धर्मलाल जी श्री प० नानक चन्द जी श्री भूषेव जी आदि विद्वानों ने श्राव लेक वेद धार्य पर चलने की प्रेरणा दी।

कमल किशोर धार्य
उपमन्त्री

धार्यसमाज यमुना विहार (रजि.)
दिल्ली-५३

आर्यसमाज सान्ताक्रुज में आर्य ध्यान योग केन्द्र का उद्घाटन

आर्यसमाज ने अपने स्थापना दिवस पर नमोनिर्मित वागानुबलित ध्वनि श्रृंखला भारत वर्ष की आर्य समाजों में सर्व प्रथम ध्यान योग केन्द्र का उद्घाटन पुण्य स्वामी सत्यपति जी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए स्वामी जी महाराज ने कहा कि आर्यसमाज ने यह कार्य करके अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है, इसकी वृद्ध बड़ी भाव्यता की भी जो धाज पूरी हो रहा है। मुझे आशा है कि इस ध्यान योग केन्द्र से बम्बई की जनता अधिक से अधिक लाभान्वित होगी। इसे देख कर मुझे हार्दिक प्रशंसा हुई है। यहाँ याकर वास्तविक शांति मिलती है, यहाँ आकर ध्यान लगाना

आर्यसमाज मन्दिर, वार्ड ब्लाक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन

बुधवार दिनांक २ अक्टूबर, १९८५ को बड़े समारोह पूर्वक प्रातः ८ बजे से साढ़े १० बजे तक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रमी प्रातः ८ बजे विशेष यज्ञ से आरम्भ हुई। उसके पश्चात् प्रातः १० से ११ बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों ने बहुत धार्मिक वैदिक विचारधारा से गीत गीत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर लाला गम्भीरपाल जी शालवाले प्रधान, सार्वभौमिक मन्त्री, श्री धर्मदत्त जी, प्रधान, नई दिल्ली नगर पालिका (मुख्य अतिथि के रूप में), श्री रतनचन्द जी सुद, श्री रामलाल मलिक, श्री हरबल मिह जी केर, प्रधान दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल डा० धर्मपाल जी, महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक सभा श्री राजेन्द्र दुर्गा, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा तथा दिल्ली की बहुत सी आर्यसमाजों के अधिकारी

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज शालीमार बाग, दिल्ली का वार्षिकोत्सव ११ से १७ नवम्बर ८५ को बृहन्मय से मनाया जा रहा है, जिसमें महात्मा राम किशोर वर महापुरुष का वेदप्रवचन और प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के सजोनापेक्ष द्वारा करेगे। श्री ज्योतिप्रसाद दोलक कलाकार साथ रहेंगे।

जा सकता है। ऐसे ध्यान योग केन्द्र का निर्माण प्रत्येक नगर में होना चाहिये। परमात्मा यहाँ के कार्यकर्ताओं को शक्ति प्रदान करे, जिससे श्रद्धा के झर्रे कायों को पूरा करते रहें।

अन्त में महामन्त्री कौन्टिन देवरन आर्य ने बताया कि इस ध्यान योग केन्द्र के लिए श्री राजेन्द्र बाहरी जी ने २००००/- रुपये की वास्तु-कुलित मशीन तथा श्री केवलकृष्ण जी मेहरा ने ऊनी कालीन गेट किया है। इनके सहयोग से हम इसे पूरा कर पाये हैं।

(कौन्टिन देवरन आर्य)
महामन्त्री

एव सदस्य श्री रतनचन्द जी सुद के परिवार के सभी लोग उपस्थित थे। सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन श्री जे० धार० सुद (सुपुत्र श्री रतनचन्द जी सुद) जी ने किया। इस भवन के १८ कमरों का निर्माण लगभग ५ लाख रुपये की लागत से श्री रतनचन्द जी सुद ने अपनी स्वयंसेवक श्रमोत्तमी सत्यवती जी सुद की स्मृति में कराया है।

श्री धर्मदत्त जी, प्रधान, नई दिल्ली नगर पालिका ने घोषणा की कि रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल को शोध माध्यमा दी जायेगी। श्री रोशनलाल गुप्त, प्रचार मन्त्री आर्य समाज सरोजिनी नगर, प्रबन्धक, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल ने सभी का हार्दिक कृत्यवाद किया।

रोशनलाल गुप्त

प्रचारमन्त्री आर्यसमाज एवं प्रबन्धक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल

वेद कथा एवं वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमर कालोनी में १ से १० नवम्बर तक वेद कथा और वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है, जिसमें महात्मा रामकिशोर जी वेद वज्र के ब्रह्मा रहेंगे। रात्रि को वेद रहेगा। प० वेद व्यास भजनोपदेशक का सगीत का कार्यक्रम रखा गया है।

अध्यक्षता
स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना

यह आवश्यक है कि हिन्दू अपनी सन्तानों की यादिया गुण, कर्म, स्वभाव के बाधार पर न करें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तथावधान में एक अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना की गई है। यहाँ इस बात का ध्यान रखा जाता है कि अन्तर्जातीय विवाह में दहेज वाचक न हो। अब तक लगभग ८० अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हो चुके हैं और सब

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के नव निर्वाचन अधिकारी

प्रधान श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी
उपप्रधान श्री डा० गोविन्दराव जी गो० बोधन
उपप्रधान श्री पुरुषोत्तम रेड्डी जी पादम्नापेट
उपप्रधान श्री के० कल्याणकर जी सूर्यनगर
मन्त्री श्री माणिकराव जी शास्त्री बेगम बाजार
उपमन्त्री श्री नाममल्लिकार्जुन जी गोमामहल
उपमन्त्री श्री लक्ष्मण मिह जी धुबेठ
उपमन्त्री श्री के० श्री रेड्डी जी जयचलार
कोषाध्यक्ष श्री राजा बी० किशन लाल जी पुस्तकाध्यक्ष श्री प० कुमार श्री शास्त्री

निवेदक
आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रान्त प्रदेश
हैदराबाद

चम्पारण जिला निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक २२-८-८५ को स्थानीय नर कटिया गज आर्यसमाज में श्री राम कुशलाल की अध्यक्षता में चम्पारण जिला सभा का निर्वाचन हुआ। जिसमें आगामी वर्ष के लिए सर्व श्री रामाज्ञा वैरागी प्रधान तथा श्री के० शास्त्री मन्त्री चुने गये।

मन्त्री प्रधान के अतिरिक्त २१ अन्य सदस्य तथा पदाधिकारी चुने गए हैं। सभी कार्य शान्ति पूर्ण बतावरण में सर्व सम्पत्ति से सम्पन्न हुआ।

रामचन्द्र
भूतपूर्व मन्त्री
चम्पारण जिला सभा, बिहार

वस्तुतो सुखी हैं। बाण्डस का समय ११ से ५ बजे तक है और साय ५ बजे से ७ बजे तक व्यक्तिगत बातचीत के लिए सुरक्षित है। विवाह इच्छुक युवक युवति अवधान के सरक्षक निम्न पते पर संपर्क करें।

डा० मदनपाल वर्मा

प्रधिष्ठाता-अन्तर्जातीय विवाह विभाग
आर्यसमाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली-११०००१

नोट—सेवा नि शुल्क है।

आर्यसमाज सफ़दरजंग एम्प्लेव, नई दिल्ली-२१ का निर्वाचन

वार्षिक चुनाव दिनांक २२-८-८५ को श्री लाला रामचरणदास जी की अध्यक्षता में सर्व सम्पत्ति से सम्पन्न हुए। निम्न प्रकार हैं।
प्रधान श्री बी० सी० अम्बाला
उपप्रधान श्री जे० एल० भाजरा
मन्त्री श्री रामचन्द्र गुप्त
उपमन्त्री श्री के० कुमार
कोषाध्यक्ष श्री बी० सी० जयन्ता मन्त्री
रामचन्द्र गुप्त
आर्यसमाज बम्बई की वार्षिक साधारण सभा दिनांक २८-८-८५ को सम्पन्न हुई जिसमें आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी सर्व सम्पत्ति से निर्वाचित हुए हैं। कृपया अपने प्रतिष्ठित पत्र में प्रकाशित करने की कृपा करें।

निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—
परामर्शदाता श्री प० दयाशकर जो शर्मा

प्रधान श्री गणपत राय आर्य
उपप्रधान श्री जयनप्रसाद गीतम
उपप्रधान श्री भास्करनाथ वर्मा
मन्त्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय
उपमन्त्री श्री चमनलाल बहाना
कोषाध्यक्ष करसन दाम राणा
पुस्तकाध्यक्ष श्री भद्रसेन मिश्र
राजेन्द्रनाथ पाण्डेय
मन्त्री

आर्यसमाज लाजपत नगर में राष्ट्रज्ञा सम्मेलन

आर्यसमाज लाजपत नगर, नई दिल्ली के उत्सव के अवसर पर अद्वेय श्री रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में राष्ट्रज्ञा सम्मेलन दिनांक ३-११-८५, रविवार रात १० से ११ बजे तक मनाया जा रहा है।
प्रेषक
मेघधाम वेदाङ्ककार

[illegible]

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी,
हरिद्वार की औषधियां
सेवन करें





गुरुकुल चाय

कृष्णी कृष्ण
गुरुकुल चाय
आम्रसैनी कुर्याम

गुरुकुल



गुरुकुल चाय

कृष्णी कृष्ण
गुरुकुल चाय
आम्रसैनी कुर्याम



आम्रसैनी कुर्याम

कृष्णी कृष्ण
गुरुकुल चाय
आम्रसैनी कुर्याम

पारमैनी

कृष्णी कृष्ण
गुरुकुल चाय
आम्रसैनी कुर्याम





गुरुकुल चाय

कृष्णी कृष्ण
गुरुकुल चाय
आम्रसैनी कुर्याम



गुरुकुल कांगड़ी फ़ार्मसी

हरिद्वार

साक्षा कार्यलय—६३, मसी राजा केशरनाथ,
बाबडो बाजार, दिल्ली-६ फोन. २६६८३८

लिखी धार्य प्रतिनिधि तथा १६, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ कोष. ३१-१५० के लि. डा० बरेंबाब द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक वेद, पृथी सं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-११ में मुद्रित तदि० सं० डी० (सी०) ७२६

साप्ताहिक

ओ३म्

आर्य सन्देश

पुस्तकालय
हिन्दू काँग्रेस विश्वविद्यालय
हरिद्वार

गुरुपुत्रो विश्वमार्गम्

वर्ष ६ भाग २४ अंक
प्रति ६० पैसे

हरिद्वार, ८ दिसम्बर, १९२५
आगत २० रुपये

मुद्रित सन्देश १९२५ ई० २० नं०
आवृत्ति २०० रुपये

मासगीर २०००

वित्तसम्पन्न—१९१
विशेष २००० रुपये २०००

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्टमण्डल की केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० वी० चव्हाण से भेंट हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में जापन

दिल्ली १० नवम्बर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शास्त्रिकों के नेतृत्व में आज प्रातः कार्यसभा के शिष्टमण्डल ने केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० वी० चव्हाण से भेंट कर उन्हें हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में एक जापन पत्र दिया।

शिष्टमण्डल ने गृहमन्त्री का ध्यान आकृष्ट करते हुए बताया कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सामने पकान प्राप्त करने में कुछ विशेष कठिनाया है। १९३०-३२ में पश्चिमी पचास (बो बब पाकिस्तान में है) के लोगों ने भी सत्याग्रह में भाग लिया था। तत्कालीन निजाम स्टेट्स बब तीन प्रांतों में बिभाजित हो चुका है। उस समय भी लोग जेलों में गये थे, उन्हें निजाम सरकार ने कोई प्रमाण पत्र नहीं दिया था। यह आन्दोलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में

चला था और सभा ने सत्याग्रहियों को प्रमाण पत्र भी दिये थे।

शिष्टमण्डल ने यह भी बताया कि अधिकाल सत्याग्रही जब तक विगत हो चुके हैं। जो बौद्ध बहुत लोग इस समय गुवायस्ता में जी रहे हैं, उनके पास अब ५० वर्ष के उपरान्त कोई प्रमाण पत्र भेज नहीं है। शिष्टमण्डल ने सरकार से माँग की कि जिस प्रकार राष्ट्रीय धारों लन के सेनानियों को कायस के प्रमाण पत्र के आधार पर स्वतन्त्रता सेनानी माना गया था उसी प्रकार केन्द्र सरकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उक्त सत्याग्रह के रिकार्ड के आधार पर प्रमाणित लोगों को स्वतन्त्रता सेनानी स्वीकार कर और गृहमन्त्रालय द्वारा स्वीकृत पकान योजना का लाभ प्रदान कर।

गृहमन्त्री को चव्हाण ने, उपरान्त सभा से सूची भेजने के लिए कहा और आश्वासन दिया कि वे जल्द सर

कार्यों से बाधित करके इसका निष्पत्ति कर दें। उन्होंने यह भी बताया कि निजाम हैदराबाद आर्य आग्रह, कर्नाटक और महाराष्ट्र में बिभाजित हो चुका है।

शिष्टमण्डल ने श्री वेरिंह, श्री

योगप्रकाश त्यागी प० विष्णुकुमार सारस्वती, श्री सोमनाथ एबोकेट और लक्ष्मीचन्द आर्य सम्मिलित थे।

सचिवलाल शास्त्री उपस्थित

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की बैठक सम्पन्न

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की बैठक दिसम्बर ११/१२/२५ को कार्यसभा गम्बर दीवानहाल में सम्पन्न हुई। इसमें विनाक ३०/१०/२५ की कार्यवाही संपुष्ट की गयी तथा सचिवालय की प्रतिनिरूप देकर प्रकाशन की स्वीकृति दी गई। शेष पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी के सदस्यों का निर्वाचन किया गया। कुल पदाधिकारी और कार्यकारिणी इस प्रकार है। प्रधान-श्री वेरिंह उपप्रधान-श्री सुवेदित और श्री वेरिंह मन्त्री-श्री ३० बमपाल सहायक-श्री ३० प्रकाशवीर शास्त्री और श्री आचार्य आर्य कोषाध्यक्ष-श्री हरिप्रकाश सत्यस लाला रामगोपाल श्री शास्त्रिकों स्वामी भोमानन्द, श्री हरप्रकाश लाला, महाशय बरपाल श्री तथा श्री पतेन सत्यस। इस पत्र लाला रामगोपाल

शास्त्रिकों ने कहा कि मैं गुरुकुल कांगड़ी के किसी भी भगवें में नहीं पकना चाहता और न ही मैं वहाँ किसी सभा का सदस्य हो बनना चाहता हूँ। मेरे पास बहुत काम हैं। मगर सार्वदेशिक सभा का काम भी हज होता है। वहाँ धारस में लोग भाग्य करते हैं। मेरे पास बहुत शिकायत आती है। सभी उपस्थित सदस्यों ने माननीय लाला रामगोपाल जी शास्त्रिकों से एक स्वर में अनुराध किया है कि आप हमारे मान्य नेता हैं, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। आप पकान सभा के बिभाजन के श्री सर्वमान्य अधिकारी हैं। इस सभा का सदस्य बनने की हमारी आशा की आप धारस स्वीकार करें। अनेक अनुदीर्घ एक प्राचीनता पर किसी प्रकार आर्य (वि० पृष्ठ १० पृष्ठ)

श्री शीरोलाल खन्ना का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शास्त्रिकों के छोटे भाई श्री शीरोलाल जी खन्ना का अत्यंत दुःख है सभी बीमारी के पश्चात् १०/११/२५ को बेहोश हो गये हैं। श्री शीरोलाल जी बहुत बन्धन में आयापन करते थे। कुछ वर्ष पूर्व बहु अमृतपत्र में भगवें गये हैं। यह अपने पीछे एक पुत्र छोड़ गए हैं।

परमत्मा से आनना है कि विगत काय को सद्गति प्रदान करे और पश्चात् को इस मृत्यु विषय को सर्व सुख उद्भूत करने की शक्ति दे।

श्री ३० सर्वमान्य



जीवन-संगीत

—चमनलाल (पूर्व प्रधान आर्यसमाज भवशोक बिहार)

यह मन बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इस लिए भी कि यह कृत्रिम से एक बार और सामवेद से हो बार पाया है। इस मन में सजह शब्द हैं—पहले पद में आठ और दूसरे में नौ शब्द हैं। इस मन में मन को अपने बचपन जवानी तथा बुढ़ापे को याद दिलाकर अतः मे विविध के विधान से बची आने वाली मृत्यु के स्वागत का संकेत है। मृत्यु जमी और भयबाहरी वस्तु को अज्ञान नियन्त्रा प्रभु को धोर से जेजी हुई उसकी उपहार के रूप में स्वीकार करने का आवेष्ट है। न कि उससे बचकर परमात्मा को कोसने लगे प्राणी। यही नहीं इस मन में मानव को उसके अपने जीवन की महत्तरता धरातरता का चिन्तन करा कर प्रभु के प्रति सच्ची निष्ठा एवं श्रद्धा प्रत्यक्ष करने के विहित कार्यों को प्रारम्भ इन संसार की प्रवसागर से पार होने का बड़ा सुन्दर विधान है। जसा कि ऊपर कह था है कि मन में मानव जीवन के तीन ध्रुव स्थापित—आध्यात्म जवानी तथा बुढ़ापा की धोर विनाकर अतः मे चौथी मयुक्तो श्रमक उपहार रूप में लेने को कहा गया है। आध्यात्म के क्रमिक परिणत न ५८ रूप से ध्रुवस्थाएँ।

तीसरी धार्मिक शीकृष्ण जी ने मा गोला प्रध्याय को हलोक तेरह में इन ध्रुवस्थाओं का इस प्रकार बड़ा सुन्दर वर्णन किया है

देहिनी धर्मिन यथा
वेष्टे कोमार जीवन जरा।
तथा देहात्तरप्राप्ति
वीर्य न न मरुति ॥'

यदि विचार प्रवृत्त देखा जाये तो जीवन में ये क्रमिक परिवर्तन मानो एक संगीत के समान हैं। संगीत प्रायः बड़ी अच्छा और रचिकर होता है जिसमें उतार चढ़ाव हो। गायक कभी भी ठूलके स्वर में और कभी ऊँचे स्वर में गाता है। इस के ध्यान में प्रायः लोग मानो की मीरस (Miles) समझते हैं। पर तब यह जीवन संगीत ऐसा सुदोला मीठा और रसीला है कि किसी भी ध्रुवस्था में गमनाई इससे उबलता नहीं। शिशुपथ एवम और युवावस्था की तो बात

विशु द्वापरा समने बहना युवान सन्त पतिता जगत्तर ।
देवस्य पश्य काव्य महित्वाञ्छा ममार स ह्य समान ॥”

श्रुत—१०१५५१५

साम—३२५७ २७८२



ही क्या दुसरायी बुढ़ापा जरावस्था से धारणी मुक्त होना नहीं चाहता चाहे वह कितनी ही मयकर और दुसरायी क्यों न हो।

भक्त गति पतिता मृगम
वधानबिहीन जात तुष्यम ।
बुद्धो याति महीत्या इष्टम
तदपि न मृगजति धाया पिण्डम ॥

ऐसी धारणी ध्रुवस्था में भी कोई मरना नहीं चाहता वरन ऐसा प्राय देखने ध्रुवस्था सुनने में भी जाता है कि बहुधा लोग मम के द्वारा भेजे हुए उसके दूतों को भी सतावन का विफल प्रसार करते हैं।

मानाविष कलाओं खाना पकाने की कला खाने खाने की कला मन मुक्त त्यागने की कला त्याग करने की कला और संगीत कला आदि कलाओं से परिपूर्ण यह जीवन चार अवस्थाओं से युक्त संगीतमय नहीं यह स्वयं संगीत का प्रतीक होता है।

अतः धारणी जरा उपर्युक्त मन के धारणी के माध्यम से जीवन संगीत का कुछ रसास्वादन करें। विशु द्वापरा समने

बहुताम नव जात विशु चन्द्रमा की मानिन्द बड़ा सुन्दर लगता है बच्चा चाहे किसी पशु पक्षी का भी क्यों न हो और यदि किसी के बच्चा न हो तो वह सुन्दर मनमोहक शिशु उसकी वेदना का कारण भी बन जाता है। जैसे चन्द्रमा लक्ष्मी को प्यारा लगता है परन्तु वही शीतलता का देने वाला चन्द्रकण जोर यशोदा को भीषण वाला हो जाता है। जैसे कृष्ण उसको पाने की इच्छा करता है और बेचारी यशोदा कृष्ण को नानाविध फुसला कर समुत्पन्न करने में विफल हो जाती है। शिशु जब कुछ बड़ा हो जाता है बलने फिरने का प्रयास करता है और नानाविध चेष्टा में करने लगता है, तो सभी छमे सबकी माता पिता आई बहिन, चाचा बाणी

बुढ़ा मौसी सभी की उत्सुकता का कारण बन जाता है। उस शिशु की उलटी सीधी बार बार गिरने उठने की चेष्टाओं को देखकर सभी आनन्द विभोरी हो उठते हैं। अन्तः सुरदास के बचन में माता यशोदा कृष्ण के बचने को देखने के लिए कितनी उत्सुक हैं। यही कारण है कि बच्चे की चर का चित्रण कहा जाता है क्योंकि इसके बिना घर धन्य बन जाता है। कैसा है बच्चे का लाभण्य? युवान सन्त समने बहुताम। इसके प्रस्थात जब बच्चा पिण्ड और कोमार ध्रुवस्था को पार कर युवा ध्रुवस्था को प्राप्त होता है तो धारणी गिराई चढती जवानी ये भी शिशु की न्याई धनको को भीषण वाला हो जाता है जब वह उपरती जवानी में युवा ध्रुवस्था युक्त न बाने कितनी का ध्यान धारणी और धारकण कर लेता है। कतिपय लोग किसी सुन्दर धारकण युवा को देखकर उस को अपने जामाता के रूप में माने का प्रयत्न करता है और कई बार किसी सुन्दर युवती को धारणी ध्रुवस्था के रूप में धारने घर की लक्ष्मी बनाता पाइता है परन्तु उन लक्ष्मी वालों को ये धारण्य होते हैं कारण कुछ बचने से लगते हैं परन्तु वह जवानी कम तक रहती है। कुछ ही समय तक अपना चमत्कार दिखाकर धन की मान द आर्षी से धोकर लो जो जाती है और कभी बापस नहीं आता। इसी लिए किसी ने बड़ा सुन्दर कहा है—
'जो आकर न जाती वह जवानी देखी'
और देखते ही देखते उसे बुढ़ापा धा बघोचता है जो उसको लेकष जाता है इसीलिए कहा भी है जो आकर नहीं जाता वह बुढ़ापा देखी।
'पतिता जगत्तर' इस ध्रुवस्था में जवानी का वह माध्यम होतारै आई आई को जाता है और मन भङ्ग प्रत्यक्ष विविध पर जाते हैं और इस

ध्रुवस्था में वह सुन्दर युवा ध्रुव पोले मुहू (बिना दन्त के) वाला बन्धन को न्याई व्यवहार करने लगता है और धन तक प्यार करने वाले चाहते बाले सभी छोटे बड़े उसे पणा की दृष्टि से देखने लगने हैं और चाहते हैं कि जल्दी ही वह इस सत्वार से विदाई ले। इस चौथी ध्रुवस्था में भगवान का हो एकमात्र सहाय रह जाना है। ऐसे सब धन्य मानव नो उस बेचारी की निनात उपेक्षा ही करते दिखाई देते हैं।

देवस्य पश्य काव्य महित्वाञ्छा
ममार स ह्य समान ।

तेसी दयनीय चौथी ध्रुवस्था में प्रभु धारणी महान उदात्तरता और कषा से समुत्पन्न उपहार उसकी महामय तार्य भेजते हैं और वह इन उपहार को पाकर उस लक्ष्मीमयी धरणीय ध्रुवस्था से मुक्ति पा जाता है। और लोगों को देखते यही कहते सुनने हैं कि प्रभु का विधान भी कैसा विचित्र है कि कल ही जो धमक व्यक्तित्व जीवन का धाक इस संसार से चब बसा है। प्रभु ने नानाविध सत्वार को धरतत रचना की है और मयु एक बड़ी विचित्र किन्ती के लिए सर्वार्थी और दयनीय के लिए सुन्दर और आनन्ददायिनी सिद्ध होती है। सारा सहाय इस मयु धाव्य तक से मयधीन हो जाता है परन्तु सत्त कीर जसे उसी के स्वागत के लिए सर्वथा तैयार रहते हैं। उन्होंने क्या ही सुन्दर कहा है—

जिस मरने से जग डरे
मेरे मन आनन्द ।
इस मरने से ही पाइये
पूरण परमानन्द ॥

मृत्यु एक पहलू है जिस का समाधान धाव्य तक भी बच नहीं कर सके। यह धाव्यत है अमीर गरीब, भववान निर्धन, राजा रज्जु विमान धर्मिदान सभी के लिए समान है। सत्वार में यही एक ऐसी वस्तु है जिस में सब को एकसमान एक स्थान पर धा सदा कर दिया है। इस का सभी जानाह साम्राज्य है, कोई इसके पास से

(श्री पृष्ठ १९२)



पूर्वी उ० प्र० आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सुलतानपुर गत दिवस पूर्वी उ० प्र० आर्यवीर दल का सप्त दिवसीय शिविर का समापन दयानन्द जू० हा० स्कूल आर्यवीरगंज सुलतानपुर में प्रवेलीय आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री बेचनसिंह मिश्रजी द्वारा स्वयंशोला एव वदिक राष्ट्रपान के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर में ४०० आर्यवीरों ने भाग लिया।

श्री बेचनसिंह ने धर्म शिविर की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस से क्षत्र सुलतानपति होंगे। धर्मवीर दल के प्रवेष्टियों संचालक श्री धनवत् तिवारी लना बाणगंज) ने वतमान युवक पीढ़ी को कुतिल मनोवृत्ति का चित्र बनीते हुए छात्रों से धर्मवीर बनने का शिविर के माध्यम से प्रोत्साहन किया, शिविर के सरलक श्री रामकिशोर जिपाठी ने वैदिक जीवन धारणों पर प्रकाश डाला। वक्ताओं में सर्व श्री रावकुण्ड जायसवाल प्रोमप्रकाश एडवोकेट, भीमकुमार सिंह मरल प० राम धर्मनाथ जिपाठी एवं चुरेन्द्रसिंह धर्मिणीयों को अपना धर्मवीर बने हुए शिविर को साधना स्थलीय के रूप में धनपाने का प्रार्थन किया।

इसी अवसर पर दयानन्द जू० हा० स्कूल के निमित्त १ कक्षा श्री बामहृदय जायसवाल कक्ष श्री लतीत-बामर चौपडा कक्ष, श्री स्व० जगबहा-दुरसिंह कक्ष का उद्घाटन कैलाश के सुप्रसिद्ध धर्म नेता श्री माताप्रसाद जिपाठी के द्वारा सम्पन्न हुआ। सभी प्रतिष्ठियों का स्वागत शिविर सचो-कक्ष एवं प्रधानाचार्य श्री प्रयासदीन जायसवाल एवं धर्मिकप्रसाद चौर-सिया द्वारा किया गया।

प्रतिष्ठित वि० समापन के अवसर पर प्राप्त यज्ञ के पश्चात् दिल्ली के सार्वभौमिक धर्मवीर दल के प्रधान सचालक श्री बासविवाकर हंस तथा सुप्रसिद्ध धर्म विद्वान् धर्मार्थ प्रसा-सिंह कैलाश के विवेक उपस्थिति से शिविर में भाग लेने वाले ४०० शिविरार्थियों का स्वीकृतिपत्र सत्कार तथा प्रतिभाषण कार्यक्रम बाल्य-प्रेरणापूर्वी वैदिकप्रवर्धन रहा।

धर्मनाथ राजपूत एवमप्रसिद्ध आर्यवीर की सम्पन्नता में धर्मवीरों का

सारोरिक प्रदर्शन हुआ। छात्रों के सामूहिक नैतिकता, नैतिकता तथा दण्ड चालन का कार्यक्रम धर्मोद्या था। श्री सत्य कुमार धर्मोद्या गौडा का शिर एव बाध पर रक्षक टयुबलाइट फोडना श्री शमशुरा द्वारा बाध पर ई० रक्षक फोडना श्री धर्म्यत प्रधसनीय रहा। दोशस्तमापण के अवसर्त श्री बासविवाकर हंस जी ने सभी प्रशि-क्षास्थि से स्वामी दयानन्द की कठोर तपस्या से प्रेरणा लेते हुए वैदिक वन परमार्थों विचारों से बने जाने के बाद भी कभी निरास न होने का प्रार्थन किया।

राजपूत रणजयसिंह ने धर्मप्र-क्रिया कि प्रशिक्षणार्थी को मातृदेव पितृदेव, एक धर्मार्थदेव को मातृना से जीवन यात्रा करनी चाहिए। अन्य वक्ताओं में श्री दीनानाथ मुखीगज, रमाधारी श्री किराकत, प्रमोद जिपाठी बाराणसी, डा० राजेन्द्रप्रसाद कृतपुर, श्री प्रोमप्रकाश एडवोकेट प्रधान भीमकुमार सिंह मरल अधि-ष्ठाता, श्री बेचनसिंह संचालक श्री उदयविहारी लाना, श्री मुनीलाल श्री किराकत स लक्ष श्री गमकिशोर जिपाठी कार्यक्रम संचालक श्री राम कृष्ण जायसवाल, उपसंचालक श्री प्रयासदीन जायसवाल ने प्रशि-क्षास्थि को अपना धर्मोद्या प्रदान किया। इस अवसर पर दयानन्द जू० हा० स्कूल के सभी अध्यापक श्री उपपराज प्रजापति कार्यालय इन्चार्ज श्री रामलाल शीर राजन इन्चार्ज, श्री समाधकर द्विवेदी श्री सुरेनाथ पाण्डेय धनपराज, श्री जटाधकर तिवारी श्री बगदीस मिश्रा ने मैस का काश्मिर देवा, श्री होशिवासदा तिवारी, श्री रायकेवल जायसवाल यज्ञ को व्यवस्था को अच्छे ढंग से सम्पन्न कराया। श्री चन्द्रिकाप्रसाद सिध एव श्री बेंबनाचरसिंह ने धर्मि-नियों का स्वागत किया। इस शिविर को सम्पन्न करने में मुख्य रूप से श्री प० रामकिशोर जिपाठी एवं श्री प्रयासदीन जायसवाल का विशेष प्रयत्न रहा।

प्रयासदीन जायसवाल
शिविर सचोचक

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका कीनिया-नेरोबी की निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका प्रथम स्थापना काल से ही पूर्वी अफ्रीका में आपत भारत से दूर सभी पाठ्यशास्त्रों को वैदिक सम्प्रदाय धर्म अर्थात् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा सस्थापित आर्यममाज के सिद्धांतों के प्रचार प्रसार में लीन रहा है। आज भी यह सभा पूर्व मर्यादाओं को सुर-क्षित रखता हुआ आर्य ही आर्य बढता आ रहा है। इस वर्ष सभा का निर्वाचन २४ नवम्बर १९८४ ई० को सबसम्पत्ति से दो वर्ष के लिए अर्थात् १९८६ ई० तक धनीय प्र-मन्ता एवं मदमातनार्थ से परिपूर्ण वातावरण में हुआ। निर्वाचन के पश्चात समाप्रधान श्री हृदयराय जी साहो ने अपने साधियों को साथ लेकर युगान्ध तनजाविया और कोनिय-धार्मि सभी प्रदेशों को आयममाजों का दौरा किया और धर्म बन्धुओं को मिलकर उत्साह प्रदान किया। इस दौर का बड़ा ही सफल प्रभाव रहा।

इन वर्षों की गतिविधियों ने उत्तेजनीय कार्य कोनिया राष्ट्र में ईसाई और इस्लाम धर्म के साथ साथ हिन्दू धर्म की शिक्षा को भी धर्म-धर्म रूप से लागू कराने का भरसक यत्न है। इस राष्ट्र की सरकार ने धर्मशिक्षा माँग प्रियमम सम्पन्न की है इसी सत्र (Season) से पाठ्यक्रम में निर्देशन कर धर्मनाथ कर दो को। किन्तु इसमें केवल इस्लाम और ईसाई धर्म को दोहा लिया गया था। हिन्दू धर्म का कहीं भी नाम नहीं

था। नभा के प्रवर्धन में श्री डा० खोदगम जी शर्मा के धनबल प। भी से इन सरकार ने हिन्दूधर्म को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराना स्वी-कार कर लिया। किन्तु हिन्दूधर्म का मार्ग धर्म धर्मों के समाज सत्त्व बढी था। फिर भी डा० शर्मा जी ने हिन्दू-धर्म का पाठ्यक्रम तैयार किया और सरकार के विश्वास मन्त्रालय को मैरे माध्यम से भेजा। किन्तु हमारे ही कई धर्म विचारों वाले सज्जनों ने धर्म धर्म को हिन्दूधर्म के धर्मों से मुख्य पाठ्यक्रम को स्वीकार करने में कुछ बाधाएं उपस्थित की। इन सभी बाधाओं को भी डा० बदाधम जी ने बड़ी ही सुम-भूषण से राज्य सरकार को पूरी तरह मनुष्य कक्ष और धर्म भाइयों को भी समझकर शान्त किया और परममाजों की हृदय से हिन्दूधर्म को ही हस्त राष्ट्र के बन्धे पढ़ने का धर्मसर प्राप्त कर लेंगे। डा० साहब सरकार की शिक्षा नीति के तेल पर एक बरिष्ठ सदस्य के रूप में मनोनित हैं। और इनके धर्म समाज का मान और धर्म को धर्म-परि प्रशिक्षण प्राप्त हुई है। डा० साहब धर्मकर्म धर्मशिक्षा के धर्म-पकों को तैयार कर रहे हैं और स्वयं सभी सुप्रसिद्ध, जन सिद्ध, ईसाई विचारधारा से जाकर हिन्दूधर्म पर धर्मने धर्मन देते हैं। इस प्रकार सभा वैदिक धर्म के प्रचार में दल-चित्त है।

लखनार साहो
(हृदयराय साहो)
सभा प्रधान

निर्वाचन सूची १९८४-८६ के दो वर्षों के लिए

श्री हृदयराय जी साहो समाप्रधान श्री महेन्द्र जी मल्ला वरिष्ठ उप-प्रधान श्री शीलकान्त जी वर्मा उपप्रधान मन्त्रालय (समुद्र लटीय क्षेत्रार्थ) श्री रावेन्द्रपाल जी बहदा उपप्रधान किमुपु (पश्चिम क्षेत्रार्थ) श्री बलबीर जी डाडा महामन्त्री श्री मधुनार जी मल्ला उपमन्त्री एलबोरेट श्री कीरेन्द्र कुमार जी वर्मा उपमन्त्री श्री गिरधारीलाल जी सेठी कोषा-ध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र जी कपिला सह-कोषाध्यक्ष श्री धर्मनाथ जी फन्के बेर-प्राराधिष्ठाता श्रीमती किर्तिनाथविष्ट-पुस्तक-१. १ नवी के साथ भीहू सरस्वत सरस्वत सभा के लिए निर्वाचित हुए।

२. ध्यानन्द सरस्वती स्कूल के लिए श्री नवलकुमार मल्ला निवेशक और श्रीमती पुष्पा मल्ला, सेनेजर निर्वाचित हुए। प्रमाणित प्रति सभा प्रधान

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर समारोह पूर्वी दिल्ली में विशाल सभा

१७ नवम्बर दिल्ली। धर्मसमाज गीता कालीने में पूर्वी दिल्ली की समस्त धर्मसमाजों को धर्म से एक विशाल सभा धर्मोपस्थित की गई। जिसमें वैद्य रामकिशोर, श्री बेच-प्रकाश शोभा, श्री डा० धर्मेश, श्री सुदीप सभा प्रधान धर्मि-वक्ताओं ने महर्षि दयानन्द के जीवन एवं धर्मोपस्थित पर प्रकाश 'धर्मोपस्थित' अवसर पर पूर्वी दिल्ली के धर्मोपस्थित अग्रज नर नारी उपस्थित थे।

शाक में मांस परोसा

प्राज्ञ दिनांक ३१.१२.८५ के धार्य समाज के साप्ताहिक उत्सव में यह शाकचर नवा धार्यवेध भीर दुध हुमा कि अश्वीगम मुस्लिम विस्वविद्यालय में २६.१२.८५ अष्टम्वर १९८५ को अन्तर्राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसके सन्दर्भ में सुलेमान हुमा ने धार्योजित रात्रि भोज में धाराहारी प्रतिधियो को धलम भोजन व्यवस्था में पुन नियोजित रूप से शाक में मांस का मिखावट की मयी। जिससे महामान में रोष व्याप्त हो गया और उस वृणित काण्ड की

अश्वीगम मुस्लिम विस्वविद्यालय के एक रीडर ने पुलिस से एक जाई भार बज कराई। इस घटना से धार्य वगत की धार्मिक भावना को ठस पड़नी है। उत्सव में बनेक वक्ताओं ने धीर निन्दा की।

हुमा जिला प्रशासन से धारेवा करते है कि वे इस घटना को गम्भीरता से ले धीर दोषी व्यक्तियों को उचित दण्ड दिया जाय ताकि भविष्य में इस प्रकार की पुनरावृत्ति न हो।

सत्यपाल पंचनदा
प्रधान

धार्यसमाज गोविन्दपुरी का वार्षिकोत्सव

वतमान सन्दर्भ में चार सूत्र

—यसपाल सुभाषु

धार्यसमाज गोविन्दपुरी का मुख्य अधिवेशन २४ नवम्बर को बड सभा रोह भूतक सम्पन्न हुआ। इस धन-सर्व पर श्री रामचरण बास धार्य, श्री यशपाल धार्य, श्री बलवीरत धार्य श्री कृष्णल सुभाषु आदि बक्ताओं ने उद्बोधन दिया। धार्यसन्धेय के सम्पादक श्री सुभाषु ने कहा, वर्तमान सन्दर्भ में धार्यसमाज की शीघ्र विद्या को धीर श्री अधिक प्रगतिधर धीर उद्बुद्ध करने के लिए चार सूत्रों को धार्य की निम्नलिखित धार्यका है। धीर वे सूत्र हैं—१. सेवा २ स्वाध्याय ३ उत्सव सङ्कोच ४ उत्सव सङ्कोच।

धार्यसमाज का इतिहास सेवा का ज्वलन्त उदाहरण है। महर्षि दयानन्द ने धनुषाधियो है सेवा करते करते धर्मे बलिदान दिये हैं। उन्हें धार्यमानक हुन मह स्मरण रक्के कि धर्मने मन्त्रिरे में हुन सेवा की पवित्र भावना से प्रवेष्ट करें न कि धर्म धीर मान पान की इच्छा से। उन्होंने कहा इस समय हुमाया स्वा-

श्री हरिकृष्णसिंह मलिक को श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री हरिकृष्ण मलिक की देहान्त हुमा से समस्त धार्य जनम् में शोक व्याप्त हो गया। जनकी स्मृति में १० नवम्बर को धार्यसमाज दीवान हुमा से एक धार्यसन्धेय समा प्रो० वेदरहित की बध्मलता में हुई। इस धनसर्व पर धनेक गम्भार्य महापुरुषों ने विव-धन धार्या के प्रति अपनी श्रद्धा-लिपि धारित की। श्री मलिक विदा-रुद्ध लेखन बल दिल्ली, धार्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता धार्य एव परोप-कारी थे। उन्होंने सेवायुक्त होने के बाद धर्मना हारा समय समाज सेवा में व्यतीत किया। वे सत्यनिक मन्त्र स्वभाव, कर्मन्त, धर्मना शान्त धनप्रदा एव दुःखा के कर्तृ हैं

धार्य कम होता जा रहा है। धार्य-समाज के पुस्तकालय में धन लगने लगे हैं। पुराने धार्यों ने स्वाध्याय का सुण बडा विरोध था। धार्य हुने उत्सव में नियमित पढ़ने का इत बेना होगा। धीर मयी, मीहल्लो, पाकों में कृष्णों के धार्यजन किये जाने चाहिए। मन्त्रिरे से बाहर निकलकर वेदो का सन्देश जन जन कड पहुँचना समय को पुकार है। धीर नौना सूत्र है उत्सव सङ्कोच। धार्यसमाज मन्त्रिरे में धार्ये नाने महर्षि के सवी धनुषाधियो समस्त धार्य सङ्कोच में एक धनुष के साथ धनुष्य का धर्मन बताया है। धन, एक हुने के दुःख में धनुषाधियो हुना चाहिए। इस प्रकार परस्पर सङ्कोच धर्मेधन है।

इस वार्षिकोत्सव के पुर्व एक मनोहर वेदकथा भी हुई। जिसमें प्रवचनकर्ता श्री वेदप्रकाश श्रीधर थे। मनोहारी गायक श्री राधक के वचन हुए।

सम्पादकदा धार्यसन्धेय

प्रसिद्ध थे। प्रसिद्ध सन्धेयों की धार्यनन्द की उनको समाज सेवा एव धन के शुभ की धुति धुति प्रशंसा की। इस धनसर्व पर श्री डा धर्मपाल, श्री सोमनाथ मर्यादा, श्री साधनधर विद्याधी, श्री धुलकल धार्य वक्ताओं से उनके प्रति श्रद्धा-वचन कहे।

धनेक समाजवेधी सत्पाधो ने शोक प्रदाय धार्य किये जिससे धार्यवेधिक धार्य प्रतिनिधि समा, दिल्ली धार्य प्रतिनिधि समा, धार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, धार्यसमाज दीवान हुमा धार्य सत्पाध धार्यनिधि हैं।

किरी संसकसदा

एक भाषा व एक लिपि से राष्ट्रीय एकता सम्भव

सालनब (रायचरेली) वेसवारा डिब्री कालेज (महाविद्यालय) में प्रख्यात महिला उद्धारक, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित धार्यसमाजी नेता श्री देवीदास धार्य ने राष्ट्रीय एकता व धनधनता विषय पर भाषण देते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता धार्य व भाषा से नहीं होगी इसके लिए सानु-हित कदम उठाने पड़ेंगे। वेदा की एक ही भाषा हिन्दी व सभी राज्यों की भाषाओं की लिपि भी एक ही देवनागरी होनी चाहिए। वेद में सब के लिए एक ही कानून भी होना धार्यव्यक्त है। सत्पाध विरोध के विवे धनन से कानून बनाना धनुषुचित होगा।

श्री धार्य ने कहा कि एकता के लिए विचारधारा में वैधानिक, स्वाय-

व तपस्या की धानना छोटेपन से ही उत्पन्न करना धार्यव्यक्त है। विद्या धार्याधोय हो बहो वरीक धमोरे एक साथ रहे तब विद्या प्राप्त करें।

कालेज के प्राध्यापों की प्रम-धारी सिंह है श्री देवीदास धार्य का धन स्वागत किया जाय धार्या प्रवट किया। रात्रि में वेदप्रचारक के सत्पाधधान में प्रयाग धार्य बोराहा पर धार्योजित विद्याल समा में श्री देवीदास धार्य का धननन्दन किया गया। श्री धार्य ने कृपाकृत व जाति बाद की छोडेन पर बस दिया। धन की धनधनता की रामकुमार रस्तोकी ने की।

रामकुमार रस्तोकी
धार्यसमाज

धार्यसमाज सराय रोहल्ला

वार्षिक चुनाव

३ नवम्बर, १९८५ को धार्य-समाज सराय रोहल्ला का १९८५-८६ के लिए वार्षिक चुनाव हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए।

- धीमती धार धर्म की, प्रधान
- श्री ज्ञानाप्रसाध को उपप्रधान
- श्री रोधपाल उपप्रधान
- उत्तमचन्द नन्दी
- देवदेव बरडा उपमयी
- सामवेहः उपमयी
- धानधन कोषाध्यक्ष
- सुधीलकुमार प्रचारनधी
- उत्तमचन्द नन्दी

धार्यसमाज निर्माणा विहार

दिल्ली-१२ का प्रथम

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

२८ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक सेन्ट्रल पार्क निर्माण विहार में बड समारोह धुर्वक भगमा गया। २८ अक्टूबर से २ नवम्बर तक प्रा-७.३० से ८.३० बजे सामवेध महा-पन्न व धार्य को ८.३० से ९.३० बजे श्री वैमिनि धार्य की की वेद कथा हुई। ३ नवम्बर को प्रात ८.३० बजे की धुर्माहृति हुई धीर १० बजे से दोपहर १ बजे तक धरिध निर्माण सम्मेलन डा० रामनोपाल श्री साधनधर प्रधान सार्यवेधिक सभा की बध्मलता में हुआ। श्री विद्याप्रकाश वेदो मुख्य धार्यनिधि थे। धनेक विचारों ने पयाज कर धर्मे विचार रहे हैं।

प्रेम प्रकाश

नन्दी

धार्यसमाज निर्माण विहार

धार्यसमाज विकासपुरी में

विराट जन सभा

१० नवम्बर नई दिल्ली। धार्य-समाज विकासपुरी में धन के समस्त धार्यसमाजों की धीर से विराट जन-सभा का धार्योजन किया गया। इस धनसर्व पर श्री डा० महेय विद्याल-कार, श्री० बलरहित, श्री डा० सदाशिव, श्री श्रीरोधपाल धार्यो ने धर्मे कोजनी धार्यो में महर्षि दयानन्द के महान् कार्यों धीर धार्यसमाज की नारी योषणाओं पर वधधन दिये। धन की धार्मिक जनता ने बड बड धान किया।

सम्पादकदा

निर्वाचन

सभा का वार्षिक चुनाव १९.१२.८५ को धार्यसमाज मन्त्रि, धर्मेक मन्त्र में श्री धर्मेनका धनमानी की धनधनता में सम्पन्न हुआ। जिसने निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व-सम्मति से चुने गए—

प्रधान श्री राधाराम धार्य उपप्रधान, महाधाय सुदेव धार्य, श्री धीमतेन धार्य मयी, धीरुध कुमार धार्य सङ्कोच श्री चन्द्रमान सतिधा, श्री धीमतेन देहना कोषाध्यक्ष, श्री चन्द्रमान धार्या केकापरीशक श्री यशपाल धानन-धनधनपाल श्री नन्दपाल माटिका धीरुध कुमार धार्य मयी

धार्यसमाज मन्त्रि, धर्मेक मन्त्र



संसार का प्रत्येक प्राणी स्वतन्त्र रहना चाहता है। जैसे बच्चा पशु टूटने पर भाग जाता है, पिंजरे में बन्द पक्षी यदि निकलने का अवसर प्राप्त कर ले तो उड़ जाता है, पंके में हुए सपने, बिज्जू आदि भी भाग जाते हैं। यहाँ तक कि कर्षी से पिंजियाघरों से नाना प्रकार के वन्य प्राणी भागते हुए पाए जाते हैं। धर्मो कोड़े हो विनों पूर्व एक पिंजियाघर के होते ने ऐसे लोहे के जंजाल को काट दिया। जिसको बन्दर से भी नहीं तोड़ सकता था। उस लोहे को दुबारा पकड़ कर दोहरे पिंजरे में रखा गया है। तो मनुष्य जाति का तो कहना ही क्या ?

संसार के श्रेष्ठतम व्याकरण-आर्य मर्हण पाणिनि ने कर्षी की परिभाषा की है जो पूर्ण स्वतन्त्र हो गया स्वतन्त्र कर्षी। संसार के सभी राष्ट्र स्वतन्त्र रहना चाहते हैं। इसके लिए नाना प्रकार के युद्ध होते धाये हैं तथा होते रहते, यह स्वाभाविक है। परिहार का प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र रहना चाहता है जिसके फलस्वरूप परस्पर में सहार्थ भावे भी देखे जाते हैं।

स्वतन्त्रता की अनेक मर्यादाएँ हैं। जैसे व्यक्ति को स्वतन्त्रता की पूरी पूरी छूट दे दी जाए तो अपना विनाश भी अवश्यभावी है। धर्म-समाज का रहस्य नियम सब मनुष्यों का सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन रहना चाहिए तथा प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। इसके आधार पर परतन्त्रता की स्वतन्त्रता है। स्वतन्त्रता वेदवन्त कानून है जिसके आधार पर चलना हो स्वतन्त्रता है।

कुछ लोग तो स्वतन्त्रता का मन-माना पक्ष करते हुए व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय, प्रान्तीय या वर्ग विशेष के आधार पर एक दूसरे पर हावी होने के लिए नर सहार पर तुल्यक भ्रमना तथा पराधीन अहित करने में ही लगे रहते हैं। बलिक देखा गया है कि भारतवर्ष को छोड़कर अन्य देशस्व बहिष्कृत अधिकारी लोग पूर्ण अन्ध्याय पूर्वक दूसरों को दानाया चाहते हैं।

हमारे देश का सदा से ही स्वा-भाषिक नियम रहा है कि किसी की भी अन्ध्याय पूर्वक न बचाया जाये। पशुनु हमारे देश पर जिन जिन लोगों ने शासन किया, उन्होंने बड़े-बड़े क्रूर पराधीन किए। इसके लिए इतिहास साक्षी है। पुरुषोत्तम मानव, स्वामी स्वातन्त्र्य स्वतन्त्र तथा अन्य आत्मिकारियों की सेवा-वर्षी अपने के बहु बाव बिज्जुन सत्य

सच्चे भारत माता के सपूतो जागो !!!

प० ब्रह्मप्रकाश वागीश, पुरोहित
धर्मसमाज शांतीनगर बाग, दिल्ली-५२

हो जाती है।

किसी भी दुष्ट तथा विशाल भयन का मुस नीब के पे पत्तर होते हैं जो बिजलाई नहीं देते। इसी प्रकार से किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र के वंशान्ति-कारी ही राष्ट्रपुत्री भयन के पत्तर होते हैं जिस पर देश उलट रूप से ढका है। धोक की बात है कि उन लोगों के विषय में, प्रामाणिक तथ्यों तथा उनके बलिदानों को जन साधारण की जानकारी से परे रखा जा रहा है।

किसी भी देश की स्वतन्त्रता दिलाने वाले मनुष्य को निमग्न देकर मुक्त होते हैं। जिस मोल की बात सुनकर बड़े बड़े योग्य व्यक्ति भी प्रायः भयभीत हो जाते हैं इसलिए कि हमारे देश में अग्रानवीय अत्याचार बड़े होकर प्राणीमान की जाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो। स्वतन्त्रता के लिए लगभग ४० वर्ष बाव क्या हुआ। तथा क्या रहा है ? क्या इसी के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त की गई हो ?

स्वतन्त्रता का लक्ष्य क्या था ? सोचिए पशु-पक्षियों का बच रोका जाए। अपनी भाषा का सभी स्तरों पर प्रयोग हो तथा भारत विशाल तथा समुन्नत हो। स्वतन्त्रता के पश्चात् गोवर्ष का नाथ, राष्ट्र-प्राणी की पूर्ण अवहेलना, विदेशी शक्ति-निर्वाह, जातीय व्यवहार, धार्मिक भाव आदि का सेवन, भारतीयता का जोरदार प्रचार करने के युवा-सहित को कमजोर करना और लेष भारत की युग क्षण क्षण करने की मिश्रीभगत चल रही है।

कुत्ता कीत है ? कुत्ता की करके बना करके लाता है। इसी प्रकार हम सब जेजों का वसन ला रहे हैं। कुत्ते की नकल कर रहे हैं। अब जेजों की पूर्ण बरपेक्षा हम विहा रहे हैं। हम विरोध ही नहीं करते। हम सहनशीलता का दावा करते हैं। हमें ऐसा चाहिए, देश, धर्म, परिकार भाव में जाये। जहाँ इस विचारधारा के लोग होंगे, वहाँ सर्वनाश ही होगा।

ऐ भारतवासियों, यदि आप में

उन आत्मिकारियों का खौलता हुमा रहत है तो क्यों नहीं भारत माता की रक्षा के सर्वस्व धर्षण कर देते। भारत माता के टुकड़े करने वाले तथा पुष्कला की मांग करने वाले कुत्त हैं, सपूत नहीं। उन्हें जाट बांधो। उन्हें खतम कर दो।

याद रखो किसी वृक्ष के मूल में पानी डालने से वृक्ष बढ़गा, फलेगा, फुलेगा भी। इसी प्रकार यदि देश बचेगा तो घर, सड़क, बाग बगीचे, माना प्रकार के विज्ञान, कारखाने सेहत व्यापार तथा जन समुदाय बचेंगे धम्पना नहीं। देश को बचाओ।

याद रखो प्रत्येक राष्ट्र अपने देश की पूर्ण निभारिता मान्यताओं के आधार पर चलता है। धर्मशास्त्र और परम्पराएँ उसका मार्ग दर्शन करती हैं। स्वतन्त्र राष्ट्र का संविधान होता है। पर हमारे देश के प्राकान-साणी, दूरदर्शन, समाचार पत्र और राजकीय अधिकारी मने डग से मने रास्ते पर चल रहे हैं।

किसी भी देश की स्वतन्त्रता 'करो या न करो' पर आधारित होती है। देवाधुर सपाम सर्वविधित है। महाभारत सर्वविधित है। हमारे अपने घर में कोई धाम लगाने धाये, तो हम तुल्य बाग बुझाने का उप-कष करते हैं। हमारे देश में धाम लगती है। इसे लोग बुझायेगा ? जिस देश की युवाशक्ति तुरी तरह कामाग्नि दुर्व्यसन, मद्य-पान, मोहाहार करने में लगी हो, उस देश का महाभारत सामने हो। इस सभी सभल जाधो। अगवाही हो। भारतमाता का धग काटना तो दूर, छुने वालों की सपरिहार, समुन्नत नष्ट कर दो। उन का ऐसा लक्ष्य देखो से मित जाए, ऐसा प्रयास करो।

जोआबाई, लक्ष्मीबाई, सोता, सावित्री, सुलभा, दुर्गा, काली आदि की सगिनीं नारिणों अपनी अपनी रूपान रूपान ह्राय में लेकर नररूपों को एकजित करके दिखा दो कि हम आरुमाता को दुष्टी नष्ट से देखने वालों की वही रक्षा करती हैं।

युव विरजानंद, स्वामी वधानन्द,

बन्धोखार धावाड, जिनमिल, अगत-सिंह भाई परमानन्द, सुभाषचन्द्र, बोस, और सावरकर इत्यादि हजारों बलिदानियों का स्मृ, पुन था पानी नहीं। यदि आप से रस्त की पत्रिता का तनिक भी धामास है तो क्यों स्वतन्त्र देश को परतन्त्रता की ओर ले जा रहे हो। धामव्यकता। इस बात की है कि हम एक जट होकर सष्य करें, सभी सकल होंगे। विरोध करो तन मन धन से उन नीकों का जो हमारे देश में रहकर जो रहे हैं और गुण गाते हैं विदेशों का। अधिकार माने नहीं मिलता, मुचषणों से छीना जाता है, सच्चाई मानो नहीं, मन-कार्य जाती है। इस काम को कुकर्मों और धामासे से बलहीन लोग नहीं कर सकते। चोर का चोर विरोध नहीं करता। हम प्रकार से हम भी चोर है यदि हम धाराष्ट्रीय सत्तर्षों का विरोध नहीं करते।

यदि आप अपने को स्वतन्त्र सम-झते हैं तो नाम काम मनी बदलने होंगे। मुसलमान धाये, उन्होंने प्रयाग का नाम बदलकर ललाहबाद कर दिया। धाये जो ने मो अपने देश की भाषा और सस्कृति के आधार पर भी नामकरण किया। हमें तो अपने नाम धाये डग से रखने चाहिए, पर हम सेक्टर रखते हैं चषोषी को, कोचारी में और धार के पुरम में क्यों ?

तुम सब को महापाप लगेगा यदि भारतीयता को लिलाजित देकर धाये घरों में डेंडो, मम्मो, पाप इत्यादि महापातक धामों का प्रयोग करोगे। इन धामों का धर्ष भूत धार पापी का बोधक है। टीट्ट, नीरट्ट, रीट्ट, पट्ट, पट्ट, मुचष धाये भी चरी में बूँस गए हैं। हम लोग कोटी और जेज छोडकर अही बेषधारा धपना-कर होजें बन रहे हैं। नारी विदेशी नर बचने की इच्छा कर रही है।

आइयो ! कहाँ तक लिखें। यदि ठीक ठग से लिखें तो रोना पड़ता है। तथा विशाल धन्य बन जाये। आज हर घर का प्रत्येक सदस्य भारतवर्ष का परम शत्रु बन रहा है। विवाह, भोज, चूनास समा, खेलकूद आदि सभी में विदेशीपन है। ऐसा लगता है कि अपने देश में कुछ धारा रहा ही नहीं। जो संसार लगनमन दो घरव वर्ष तक भारतवर्ष के चक्रवर्ती राज्य को व्यवस्था के अग्रनंद चलाता रहा, वह आज घटने टेक चुका है। हमों में कोट है।

कुछ लोग हैं, जो पूर्ण भारतीय हैं पर वे धर्मव्यसने। उन्हें राजसत्ता, जनसत्ता, वर्गसत्ता तथा जन आदि

(शेष पृष्ठ ११ पर)

एक घटना और एक दुर्घटना

लेखक-म०० प्राचार्य विद्वत्प्रवा ध्यान वेदाचार्य एम० ए०
वेदमन्त्रि बरेली

(घटना)

दीवान बहादुर बाबू हरबिलास जी शारदा उन व्यक्तियों में थे जिनमें महर्षि के दर्शन किये थे। वे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की प्रतिक भाते मुनाया करते थे। दीवान बहादुर साहब जीवन भर परोपकारिणी सभा के सदस्य रहे।

डॉ० रघुवीर ससार प्रसिद्ध मधुनू रिचर्च स्कालर थे। दीवान बहादुर साहब ने डॉ० रघुवीर को परोपकारिणी सभा में महर्षि के प्रश्नों के सम्पादनार्थ रखा। डॉ० रघुवीर कुछ काम धक्के पर काम करते रहे पर डॉ० रघुवीर यह चाहते थे कि महर्षि के प्रश्नों पर उनका नाम सम्पादन के रूप में छापा जावे पर दीवान बहादुर साहब ने इसे स्वीकार नहीं किया और स्पष्ट कह दिया कि प्रायः रहमान रहे पर महर्षि के प्रश्नों पर केवल महर्षि का ही नाम रहेगा अन्य किसी का नहीं। डॉ० रघुवीर ओझर चले गये। दीवान बहादुर साहब ने कोई पर्व नहीं की। अब प्रायःजनत यद देख ले कि परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाशादि प्रश्नों पर महर्षि का ही नाम है। अन्यत्र प्रकाशित प्रत्येक ग्रंथ पर लम्बी लम्बी भूमिकाएँ इसका मूलतः उसका मूलतः केवल हमारा ही है। ऐसी नू नू मैं मैं ग्रन्थ से पूर्व सही रहती है।

(एक दुर्घटना)

महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ नोएडा गाँवियाबाद में अनाई प्रश्नों की परोपकारिणी ओझर प्रायः पाठविधि से प्रथमः 'सधमः', 'सात्तो', 'साचार्य' परोपकारिणी का कोस बनाया गया है। सत्त्वद्वितीयविटी वाराणसी ने उन्ने स्वीकार करके मान्यता भी दे दी। पर अभी उस कुछ सुचारु की आवश्यकता है अतः महर्षि योगी जी को सत्यार्थप्रकाश सत्कारविधि में लिखित प्रायः पाठविधि दलनी थी। मैं तब महात्मा अमर स्वामी जी के प्राथमः, गाँवियाबाद गया कि सत्यार्थप्रकाश, सत्कारविधि बहा मिल जायते।

महात्मा अमर स्वामी जी उस सत्यार्थप्रकाश को लिये बैठे थे जो मैं पत्र पर अंकित कराया गया

है उसकी अथक श्रुद्धियों पर निशान लगा रहे थे। वे सब श्रुद्धियों को सप्रह करके परोपकारिणी सभा को भेजने कि ऐसा अथुद्ध सत्यार्थप्रकाश तात्प्रपत्र पर अंकित कराया गया है। मेरे पास वह अथुद्ध नहीं था मैंने पहलीबार उसे देखा। कुछ स्वस्व मैंने भी देखे जैसे सत्यार्थप्रकाश के सप्तम मुखलास में निरुक्त के नाम से प्रमाण दिया है—

‘अथर्वो मन्त्रदृष्टयो
मन्त्रान् सप्रापु ।’

पर ऐसा पाठ निरुक्त में कहीं नहीं है। वे तीन स्थानों के टुकड़े हैं ऐसा छापना चाहिए—अथर्व मन्त्रदृष्टयः मन्त्रान् सप्रापु

(एक अथक चक्का)

दीवान बहादुर साहब ने सत्यार्थ

जीवन संगति

(पुष्ट का लेख)

बचा नहीं है। कृष्ण भगवान् ने भीता में बड़े सुन्दर शब्दों में कहा है—
जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ।
मृत जन्म मृतस्य च ।
यही बात किसी सन्त ने इस प्रकार कही है—
धर्मसन्तः परिवर्तनशील ससारो
मृत को वा न जायते ।
इसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए स्वर्गीय स्वामी कंबलानन्द जी ने भजन की एक कली में कैसा सुन्दर कहा है—

यहा बह-बह विद्वान् हुए,
बलवान् हुए बनवान् हुए ।
पर मोत के पजो से केवल,
कोई रचना में आकर बना न ।
इस मृत्यु के शासन को वेद में भी बड़े मौलिक शब्दों में इस प्रकार वर्णन किया गया है—
मृत्युरीते द्विपदा
मृत्युरीते चतुर्पदा म ।
तस्मात्प्रा मृत्योर्गोपते-
हृद्वारमि सभाविके ॥

अथर्ववेद ८.१.२३
अथर्वत मृत्यु दो पावो न चारपावो
पर एक सप्तशासन करती है। पर-
मात्मा कहता है कि आ, मेरे पास आ, मत भयभीत हो क्योंकि उस सुपति मृत्यु से तो केवल मैं ही तुम्हें ऊपर उठा सकूँगा हूँ। प्रसिद्ध

प्रकाश के टाइटल पेज पर भी डॉ० रघुवीर का नाम देना स्वीकार नहीं किया पर इस तात्प्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश पर सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक पृष्ठ पर सेठों के नाम, दुकानदारों के नाम फर्म के नाम, कम्पनी के नाम पूर्ण पते सहित तात्प्रपत्र पर अंकित किए गए हैं। सत्यार्थप्रकाश को तात्प्रपत्र पर अंकित करके अमर नहीं बनाया गया है। प्रत्युत सत्यार्थप्रकाश की छाती पर व्यापारियों की पूर्ण पते सहित तात्प्रपत्र पर अंकित किया गया है। इसीलिए उन्होंने धन दिया होगा। उस वृत्त को देखकर एक गहरा चक्का मुझे लगा। यदि आज दीवान बहादुर साहब जीवित होते तो ऐसा जवन्म कृत्य कभी न होता। पता नहीं परोपकारिणीसभा के लोग कुछ देखते हैं या नहीं। वह सत्यार्थ प्रकाश समता नहीं। कोसियों सत्यार्थ प्रकाश का ऐसा नहीं जो मुद्रित सत्यार्थप्रकाश पर बैठा जाता है। सार्वभौमिक सभा को इस वृत्त का ज्ञान नहीं है। धार्यगत को चाहिए कि इस तात्प्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश को गलत देखे यह आर्यसमाज के इतिहास में एक कलक है। ●

पाश्चात्य चिन्तक (Andrew Jackson) ने भी इस मृत्यु के शासन की इस प्रकार पुष्टि की है—

When death comes, he respects neither age nor merit. He sweeps from this earthly existence the sick and the strong the rich and the poor and should teach us to live to be prepared for death

अन सिद्ध हुआ कि मृत्यु कभी भी और किसी को भी या दबोच लेती है यह एक प्रतिधि की तरह है जिसका सत्कार करना हमारा कर्तव्य है। यह टाटा जाने वाला कोई साधारण निमन्त्रण नहीं समझना चाहिए।

अब कहें। हृदये चाहिए कि इस क्षण मृत्यु ससार से इस नखर जीवन की असांगता को समझ कर इसके पालन पोषण में हो। शासन होकर अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ नष्ट न करे। युक्तिमत्ता तो इसमें है कि मोत रूपी वज्र गिरने से अचेत होते से पूर्व ही—

‘अथर्वि धर्मिधामावर्त्तस्य
सिन्धोसि शांतिम् सह ॥’

अथर्व-८.१.०.१.१
वेद विहित कर्तव्य-व्यवहारों को करते हुए इस अथर्वसत्त्वस्थ स्थिर-
रूप को अपना रख बना ले—
‘अग्निं पुरा उपनिशोर पिशाचि-

दिरव्यकृपमव से कृष्णम् ।

अथर्व ४.१.१

यही बात उपनिषद् में भी कही है—

‘यदुद्भय वज्रतेजस्यत य
एतन्विदुर्मुनास्ते अभवित ।’

इसी क्रमिक जीवन परिवर्तन की विद्वानों ने ‘जीवन संगति’ के नाम से पुकारा है वहाँ वे हते ‘वराते जिनकी भीरु भङ्गल भाषा में इनको कहा गया है। इस जीवन संगति की एक उद्देश्य सागर ने दरिया के रूप में सम्बोधित करके उससे ऐसे कहलवाया है। यह रचना डा. बर्ष पुरानी है।

सागर दरिया से—

सुना प्यारे दरिया
कुछ अपनी कहानी,
कहा से तेरा बहना
भाता है पानी।
किबर जा रहा है
टहलता - टहलता,
कदम तोम-तोम घरे
बन-बन है चलता ॥

दरिया का उत्तर—

पहाड़ी है अपनी
जन्म भूमि प्यारी,
ऊँची पें को बसा
की हूँसी हमारी।
या ऊँचे पें सूत के
रूँ बघना भूना,
चमन चारू
जिसके बा एक फूल
निकल प्राया इकदिन
मैं दीवाना बनकर,
मचाता चला शोर
बा-बा के चक्कर।
कहीं फूल पे मुझे
पें भूक झुकके घाते,
लजा करते होठों
मे कुछ मुसकते ॥
पहाड़ी के मोचे मैं
बहुत उल्लास मूला,
किनारों के बन्दर
चला मे मटकता।
सगर धन गया वह
सखी का जमाना,
वह जाता रहा भोजी
का सब तराना ॥
धरत तो भाता है कानों
मे जोरे समन्दर,
गया कोई दम मे
पियरी के धन्दर ॥

अतः धनत ये यही कहूँगा कि हमारे पाठकों। यदि जीवन की सफल करना चाहते हो, बीच मृत्यु के अथ से बचना चाहते हो तो—
‘नारायण की नीवीं का ध्यान रख, यदि चाहते हैं कल्याण।
याद करने की नीत,
अबने को शो भवना ॥ C

प्राचीन योग शास्त्रियों ने प्राण किंचा का विकास किया, जिससे अत्यंत गुरुत्वं स धन विहीन होने पर भी धनने जीवन में स्वास्थ्य-लाभ कर सकता है उन्हीने प्राणायाम नामक एक ऐसा क्रिया का प्रविकाश एव प्रयोग किया जिससे मानव शरीर में होने वाले प्राण का नियमन एव सर्वश्रेष्ठ मनुष्य के हाथ में हो गया। मनुष्य ने इनमें न केवल शारीरिक स्वास्थ्य लाभ ही किया, अपितु मन का बशोकरण भी कर लिया।

मुख्य प्राण दस हैं—प्राण, अपान, समान, उदान, ध्यान, नाग, कूर्म, क्रकल, देवदत्त और वनजन्म।

प्राण—आत्म, कान में मुख-नासिका द्वारा निकलता हुआ ठहरता है। शरीर के वृत्तित परमाणु बाहर निकलता है। सूक्ष्म ध्वन को पुरीष, जब को स्वेद एव सूक्ष्म और रसाविक को बौध बनाना प्राण का ही काम है। इसके स्वरूप रहने से पुष्प का बीज बढता है एव हिमवत् जगता है। तथा रबी के रजोविकार नष्ट हो जाते हैं।

शरीर के ऊपरी भाग में यह कार्य करता है। इस प्राण के साथ सूर्य का मुख सम्बन्ध है। क्योंकि दोनों ही जल हैं। इसी कारण परमेश्वर ने शरीर के ऊपर के भाग में नेत्रों को बनाया है। इसी सम्बन्ध में सूर्यावधि होने पर नेत्रों की शक्ति बढ़ती है।

अपान—वृत्तित वायु को गुदा द्वार से निकालता है। गुदा से मल, उपस्थ से मूत्र और प्रस्रवों से बीज निकलता तथा गर्भ को नीचे ले जाता है। रबी मग्रीधान के समय बीज को इस प्रदान वायु से ही ग्रहण करती है। अतएव अपान वायु के प्रयुक्त-विगमने पर गर्भ स्थिति नहीं होती।

शरीर के नीचे का भाग इसके धारणी रहता है। पाँचवें धारण के सम्बन्ध से प्रदान को बाल नीचे को है।

जठराग्नि भी पाँचवें ही है। इस के ठीक रहने से प्रदान वायु की समता और प्रत्यक्षा होने से विषमता हो जाती है। इसी कारण प्रदान वायु के क्षुण्णित होने से रोग हो जाते हैं। स्वप्न में बीज-पात होना भी प्रयुक्त वायु के (विगमने पर) निमित्त कारण से होता है।

प्राण व अपान का परस्पर सम्बन्ध यह है कि बिना नाडी से प्रदान वायु नीचे को जाता है उसी नाडी से ऊपर

जीवनोपयोगी प्राण-शक्ति

—सोमदेव



को बाणी निकलती है। इसी कारण बोलते समय प्रदान वायु नहीं निकलता प्रदान जब प्रदान वायु निकलता है तब बोल नहीं पाते। अतः इस प्रक्रिया का भी ध्यान रखना धर्मि-वर्ग है।

समान—शरीर में सर्वत्र रस पहुंचाता है। अर्थात् सूक्ष्म ध्वन-जल को पचाकर शरीर के सब अंगों (अस्थि, मेला, चर्म, बनाये गये नाडियों) को तदनुकूल यथायोग्य विभाग देता है।

व्यान—कमल के तुल्य धाकार बाले हृदय में ही यह रस स्वी शरीर का स्वामी बीजवात रहता है। इसी हृदय में एक ही एक नाडी है। इस एक ही एक नाडियों में से एक एक की सी-सी शाखा नाडी फूटती है। अर्थात् मूल एक ही एक नाडियों में एक-एक में नौ-सी शाखा निकलती है। उन शाखा नाडियों में से एक-एक के बहुतरु-बहुतर हुजार प्रतिशाखा नाडियां होती हैं। इन रस धार नाडियों का रूप १६ नाडियों में व्याप्त प्राण विवरता है। शरीर में सर्वत्र गति करता है। जिससे शरीर में वेदता धारिक कर्म, जीवात्मा मन के संयोग से करता है। सूक्ष्म एव स्थूल नाडियों में रक्त संचार करता भी इसी का कार्य है।

उदान—कण्ठमूल में रहता हुआ शिरयस्क गति करता है। शरीर को उठाये रखना और बल-परामर्श वृद्धि करता इसका कार्य है। यह ध्वन-पान को शरीर की शक्ति परमान वायु को सौंप देता है। सुषुम्णा नाडी के साथ नाभि से ऊपर की ओर उठता हुआ पुण्य-कर्म से जीवात्मा की सुख योग की उत्तम सामग्री से युक्त तथा पाप-कर्म के विना होने पर दुःख को सामग्री और तिर्यगादि विषय प्राप्त करता है। तथा पुण्य-पान सम होने पर मनुष्य योगी बन सकता है।

उदान प्राण के द्वारा ही शरीर के प्राण का बहुधागम के प्राण से सम्बन्ध है। योनी बन इसी के द्वारा स्थूल शरीर से निकलकर सूक्ष्म-लोकोत्तर में वृत्त करते हैं।

नाभ—इसके द्वारा जीकाना, बकाना, धर्मिष्ठता का वलन करना एव

दस्तावि होते हैं।

कूर्म—इसके द्वारा शरीर में सकोचनीय कार्य, यथा पलक मारनादि होते हैं।

क्रकल—इसके द्वारा श्रुतिपासा-भूत व्यासादि की उत्पत्ति होती है।

देवदत्त—इसके द्वारा निद्रा, तन्द्रा, जगृह्य धारिक प्राण होती हैं।

वनजन्म—इसके द्वारा मूर्छा, बेहोशी तथा खरटा अरना धारिक होते हैं।

विनेचन—प्राण धारण करने की रीति जब ज्ञात हो जाती है, तब चक्षु के शक्तिहीन होने पर भी पुन उत्तम बुद्धि प्राप्त की जा सकती है। प्राण जाने की सम्भावना होने पर भी पुन प्राण की विवरता ही जा सकती है। योग योगों की प्रशस्तता होने पर भी योग भोगने की शक्तता ही सकती है। मनुष्य पास धार के कारण सूर्यदर्शन प्रशस्त होने पर भी दीर्घ धायुष्य की प्राप्ति होने के पश्चात् पुन सूर्य को उपलब्ध हो सकती है। प्राण-रीति के धनुकूल गति रखने से यह सब कुछ हो सकता है।

प्राण, अपान विषय प्राणों की प्रतिष्ठा यदि उत्तम रीति से की जाए तो मनुष्य ज्ञान ज्योति को प्राप्त करता है। इस ज्योति से मनुष्य मनसा, वाचा और कर्मणा शुद्ध विषय हो जाता है। क्योंकि प्राण हमारा इन्द्रियों का राजा है।

“राजा मे प्राण” (यजु २०:१४) इतना ही नहीं अपितु इन्द्रियों के भोगों का स्वाहाकार जब प्राण-सर्वधन के लिए होता है तब मनुष्य अत्यन्त तेजस्वी हो जाता है। प्राण के सर्वधन एव उत्पन्न से मनुष्य मृत्यु से भी भयभीत नहीं होता। इस भाव को दूर करने में वह सफल हो जाता है। तब परमेश्वर से प्रायश्चित्त करने के लिए, मेरा नाक मे प्राण स्थिरता से रहे। मेरा कान, मेरा श्रोत्र प्राण क्षिन्न-क्षिन्न न होता हुआ मेरे शरीर में कार्य करे। यह प्राण मेरा मित्र बना रहे।

शरीर में प्राण की गति ठीक रहने से चक्षु की दृष्टि होती है और ध्यान की गति से मन-मुक्तोत्तम

उत्तम प्रकार से होते हैं। इन दोनों के बशोभूत होने से शरीर क्षुण्ण पेण नोनेग रहता है। अर्थात् प्राण में शक्ति का सर्वधन तथा प्रदान से विश्व को दूर करके स्वास्थ्य का संचरण होता है।

अतएव इन्द्रिय होने से मनुष्य भोगों की ओर तीव्र गति से जाता है। और पतित हो जाता है। इस प्रकार भोगों में फसे हुए मनुष्य प्राण शक्ति को बैठते हैं। क्योंकि प्राण से स्वस्थ प्राण के होने पर ही बीज स्वस्थ रहेगा।

जीव गर्भ के अन्दर रहना हुआ भी प्राण-अपान के व्यापार करता है। इसी कारण वृद्धा उसका जीवन चलता है। यह प्राण ही जब प्रेरणा करता है तब जीव गर्भ से बाहर प्रता है।

हमारे शरीर में जो जो इन्द्रियादिक शक्तिया हैं वे सब प्राण के माध्यम से ही कार्य करती हैं। सुषुप्ति दशा में सब इन्द्रियां तमोगुण रूप प्रकाशर समुद्र में डूब जाती हैं। इसी कारण शरीर का स्वामी जीवात्मा न देखता, न सुनता और न बोलता है। क्योंकि उस समय मन भी तमोगुण रूप धारक है तीन हो जाता है। तब भी एक प्राण ही मनुष्य को जलता है कि वह जीवित है। प्राण के शरीर से निकलते ही सब इन्द्रियों की शक्ति भी निष्फल जाती है।

प्राण—शक्ति यज्ञ से बलवान् बनती है। धर्मेक प्रयोग में से यज्ञ का एक अर्थ सकर्मक करना भी है। स्वार्थ परता से प्राण शक्ति का सकोच होता है। तथा पण्डित, जनता के बलवान् करके से प्राण-शक्ति विकसित होती है। इसलिए (यजु ४:१२) में कहा गया “प्राण यज्ञ के लिए समर्पित हो”। धर्मवेद के प्राण को श्रोत्रिय कहा गया है। क्योंकि जब प्राण को शक्ति शरीर से पुण्य हो जाती है तब किसी भी श्रोत्रिय का उपयोग नहीं होता। प्राण-शक्ति के बिना सुख में पाने भी अन्दर नहीं जाता।

शरीर में धातु चक्र हैं। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, सूर्य, धना-धन, विष्णु, धाता और सहस्रार-इनमें प्राण कार्य करता है। अमश-मुखा से लेकर चिर तत्र धातु स्थानों में से धातु चक्र हैं। पीठ के मध्यस्थ में धनकी स्थिति है। गतिकक में सहस्रार चक्र का स्थान है। प्राण का एक केन्द्र हृदय में है। प्राण-अपान धाता प्राण-चक्र को धारण पीछे गति (चैत्र पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज और बाबू शिव-
व्रत लाल

एक नया प्रहार—सितम्बर मास के दूसरे सप्ताह के दैनिक पत्राज केमरी के एक प्रक में श्री सुश्रवन्त सिंह का एक लेख प्रकाशित हुआ। यह लेख हिन्दू समाचार उर्ध्व में भी छाया होगा। मैं यदा कदा श्री सुश्रवन्त सिंह के लेखों को विह्वल दृष्टि से देखा करता हूँ। यह महोदय हिन्दुधर्म पर विशेष रूप से आर्यसमाज पर चोट करने से बूकते नहीं। बलिहारी पत्राज केमरी के सम्पादक को जो हिन्दू जाति पर ऐसे कण्टकपूर्ण प्रहार करने में अपनी उदारता मानते हैं। इस समय मेरे सामने पत्राज केमरी में छपा उपरोक्त लेख नहीं।

इस लेख में श्री शिवव्रत लाल एम ए की बर्खास्त करते हुए लिखा है कि वह नई योग्य और आध्यात्मिक व्यक्ति थे। वह एम ए में एल एल बी थे। इस विधुति को पं० हसराम (महात्मा हसराम) बहु सा० लाकपत राय आर्यसमाज, नैला, धार्य गजट का सम्पादक बनाया। किन्तु आर्यसमाज के नेताओं द्वारा दूसरे मती की भावना से बुद्धी होकर आर्यसमाज को छोड़ गये। होशियारपुर के श्री फकीर बख्त इन्के उत्तराधिकारी बने। शिवव्रत लाल जी राधा स्वामियों की दयालु भाग शास्त्र के पुत्र बने और दाता दयाल नाम से सम्मानित किये जाते थे।

वेद है कि आर्यसमाज ऐसे भूट की पोल खोलने से प्रभाव करता है। आर्यसमाज पर बनी बतुलाई से प्रभाव किये जाते हैं और हरे पता ही नहीं चलता।

सुश्रवन्तसिंह जी को पता ही नहीं कि दाता दयाल शिवव्रत लाल आर्यसमाज में लाए नहीं गये, वह आप ही आप थे। इन्हें यह भी पता नहीं कि एक युवक को प्रोत्साहन देने के लिए उन्हें धार्य गजट का सम्पादक बनाया गया था अन्यथा आर्यसमाज में तब प्रख्यात दार्शनिक डा० दीनानाथ उन्ने युवक धार्य गजट को सेवा करने के लिए थे। भाई परमलाल जैसे प्रतिभाशाली स्वस्वी विद्वान् की लेखनी को तब प्रथम मणी हुई थी। श्री शिवव्रत ने धार्य गजट नहीं छोड़ा, उन्हें धार्य गजट छोड़ना पड़ा था ऐसे कहिए कि मैंने धार्य गजट से हटाया गया, अधिपतिता के कारण। वह अधिपतिता क्या थी? इस पर धर्म

कुछ तड़प कुछ झड़प

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अग्रोहर

मैं कुछ नहीं लिखता। यह महात्मा हसराम जी की सज्जनता थी कि उन्होंने इस पर कोई कड़ा दण्ड न दिया।

श्री शिवव्रत लाल जी तो बेदाती भी बने। वह स्वामी राम तीर्थ की भी मीत गाते रहे। फिर वेदान्त क्यों छोड़ा? श्रीमान् जी वह तो यहाँ से वह, वहाँ से यहाँ, वहाँ से कहीं और चले होते रहे।

रही लखन के कारण आर्यसमाज की छोटने की बात तो भी खूब कहो। शिवव्रत लाल जी ऋषि के भीन भी गाते रहे तब क्या उन्हें पता नहीं था कि आर्यसमाज अद्वैतिक मतो का लक्षण करता है?

राधा स्वामी मत ने क्या दूसरी का लक्षण नहीं किया? राधा स्वामियों को पुस्तकों में आपके लिख मत का भी खूब कर लखन किया गया है, पत्रों हो तो दाता दयाल जी के उत्तराधिकारियों में से राधा स्वामी गुप्त साहिब जी महाराज का साहित्य पत्र लीजिए। राधा स्वामियों का स्पष्ट लेख है कि पूर्व के ऋषि, मुनि महात्मा, व्यास, वसिष्ठ चामरुण्य और इत्यादि के नवी भी सब भटके हुए थे। दाता दयाल के जिन फकीरचन्द जी (परम दयाल) की आप स्तुति कर रहे हैं उनके कहने हैं—“तो सब के सब वास्तविकता से अपरिचित थे।” राधा स्वामी गुप्त जी का वचन है—

“मही धार्य परमात्म मानूँ”

किन्तु लिखा है “अस्माहं क्षुदा स्तूयन् न मानो”

“ऋषि मुनि सब
कोखा खाया।
नया व्यास
बलिष्ठ भूलाया।”

ईसाई मत के सत्यापक ईसा वा जैन तीर्थङ्करों पर भी चोट की गई है। प्रमाण चाहिए ता हम दे दें। वैसे धर्मार्थ प्रमाणिक सर्वोक्षा तो बलिष्ठ होते हैं। यदि सम्प्रसारण में विचारक शास्त्र बर्चा करते हुए मुक्ति या प्रमाणी से एक दूसरे का लखन करे तो इससे खबराना नहीं चाहिए। सन्त फकीर ने क्या खतना (कुल्ल) की, मुनि पुत्रा धार्य की तीक्ष्ण आलोचना नहीं की? सिख

पुरुषों ने क्या दूसरों का लखन नहीं किया?

जिन परम दयाल फकीरचन्द की की सुश्रवन्त सिंह बर्खास्त करते हैं, वह परम दयाल धार्य प्रवचनों में अपनी बर्खास्त आप ही कर लिया करते थे और उनके द्वारा दूसरों का लखन पड़ना हो तो ‘जनता जनार्दन’ साप्ताहिक होशियारपुर का ८/१५ अर्बस १९५१ ई० का एक ही अंक याद से धन्य तक पढ़ने से, सब पढ़ा चल जावेगा। अत आर्यसमाज पर लखन का कटास करना अपनी भ्रमन्ता की वर्याना है। यह सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए एक कायरता पूर्ण प्रहार है।

यह छापवेषी समाज सेवक—

अग्रोहर में १८-११-१९५२ ई० को एक शिव मन्दिर का शिला-निष्पाद किया गया। इसकी पत्र भेजे अपने को लोगों को निमन्त्रण पत्र भेजे गये। शिवलिङ्ग पूजा के लिए बनाए गये इस मन्दिर के मंचालक कीर्तन, यह पत्रकर पाठक को पढ़ेंगे। उस निमन्त्रण पत्र के नीचे सवालक के रूप में दो नाम हैं एक है बा० हसराम धार्य जी धर्म विधान सभा का चुनाव सब रहे हैं और दूसरे महा-पुरुष हैं बा० राजकुमार चौहान। यह धीमान् धर्म इस बड़ी हरियाणा के नर्मोला कस्बा के डी० ए० बी० कालेज के धार्या हैं। यह महोदय एक ही समय में दो दो आर्यसमाजों के सदस्य रहे हैं और श्री हसराम धार्य महा के धार्यसमाज के प्रधान रहे हैं। श्री चौहान बड़ी महानुभाव हैं जिनको वेसों ने अपनी देहली की बलिदान सलाखी के नगर कीर्तन का नाव लीपा था। ऐसा मैंने तब पढ़ा था। धार्यसमाज को सम्मोक्षा से लोचना है कि मोट मोट के बक मे फले कोनों से समाज को लेंगे बचाया जावे। सस्ती लोखरी के लिए धार्य छापवेषी में कई प्रकार के लोप समाज का धनिक कर रहे हैं। पुराने धार्य समाजी वैदिक संप्रदाय वा वैदिक संस्कारों का प्रचार करते के लिए रड़ प्रतिष्ठ हैं। उन्होंने कितने कष्ट रहे। और विरोध का सामना किया परन्तु जनमयाए नहीं। बाएँ ऐसे महापुरुषों के समाज को बर्चाएँ।

कुछ भूषो का सुभार—

धार्य प्रादेशिक उपस्था हति-याणा में महर्षि बलिदान सलाखी पर एक स्मारक का निकाशी मुझे यह स्मारक धर्मो धर्मो प्राप्त हुई है। इसमें मेरे लेख में छापे की असुविधों के कारण कुछ भ्रमपूर्ण भूलें हुई हैं। धार्य सन्देश द्वारा मैं कुछ का सुभार करना चाहता हूँ। कारण यह है कि यह भ्रमपूर्ण महत्त्वपूर्ण बातें हैं—

राध युधिष्ठिर सिंह देवाजी बाबो की पत्नी प्रथम भारतीय महिला थी जिसे भारतीय नव-वर्णन के उस काल में किसी स्त्रिया ने कोई पद दिया। यह देवाजी के आर्यसमाज की प्रधान पुत्री गईं। स्मारिका में राध युधिष्ठिर की की पुत्री छपा है। यह झूल छापे की है। वर्तमान केन्द्रीय मन्त्री राध बीरेन्द्र सिंह उन माताजी के प्रपौत्र हैं।

मेरे लेख में कुछ पतितयों कर्तव्या लाल जी धर्मलक्षारी के बारे में छुट गई जिससे वेदराज के महापुत्र मुहम्मद उमर का नाम अशुद्ध छपा है उनका नाम ऋषि ने श्री अलखारी लिखा था। गुजरापुर के श्री लाला हरजस राव (मीलाना प्रभुल प्रजोज) Extra Asstt Commissioner का नाम भी अशुद्ध छपा है। खोज करने वाले विद्वान् नोट कर ल। □

प्राण शक्ति

(शुद्ध ७ का धर्म)

होती है। प्राण का एक भाग शरीर की शक्तियों के साथ सम्मन्ध रहता है। दूसरा भाग धार्या की शक्ति के साथ सदैव सम्बन्ध बनाये रहता है। जीवात्मा ही प्राणी का आधार है। इसी के धार्य से शरीर के बीच प्राणी की र्थित रहती है।

निरुक्त—जो मनुष्य तत्त्व से प्राण को जानता है वह जीता हुआ ससारी सुख भोगकर प्राणायामादि रूप योगाभ्यास करके धार्यज्ञान मुक्त हुमा मरने के पश्चात् मुक्त हो जाता है।

पता --

डी० ए० बी० ५० स्कूल
सालीमारा बाग, दिल्ली





रूढ़िवादिता के खिलाफ जंग की शुरुआत

मुस्लिम समाज इन समय बहुत बुरा हाल में है। १५०० साल बाद इस्लाम ने यह भूकम्प धरिया है जिसने इस्लाम की बाँधों पर पड़ती दोवारों को हिलाकर रखा दिया है। रूढ़िवादिता के ज़ाहों को बचाने वाले मुस्लिमों के दिमाग पर शाहबानों केस ने करारा झटका मिया है। ये इस समय मुख्य हैं कि कहीं अधिकतम बहुत मुस्लिम समाज धर्म पर धमिकारों को पहचानने न लग जाये और उनका बहुत समान न हो जाये। बुधमोर्कोट के इन फंसले का जो कुरान के दायरे के अंदर निजा पसक जा है हज़लप किमे हुआ है उसे गलत समित करने वालों के साथ हिन्दुत्ववादी अथवा तक सीमित नहीं है बल्कि इसको सीमा सवार के सारे मुसलमान देशों का परिधि तक फेला हुआ है। वास्तव में शाहबानों केस का यह फसला इन सारा देशों को खुली ज़ुनत है जो हम को आस लेकर भीतरों पर चोर धर्याचार करते हैं और उनका धमिकार हमन करते रहे हैं। यह क्रान्तिकारी कदम उन लोगों के विरोध में है जो भावतक भीतर को उसक सही धमिकारों से बचित करते रहे हैं। शाहबानों केस से यह स्पष्ट है कि वह बड़ाई केवल मान मुस्लिम शाहबानों का साराई नहीं है बल्कि इस बड़ाई में हर वह भीतर शामिल है जो किसी भाँषन, समाज देश का ही और धर्याचारों को किसी भी रूप में सहन कर रही हो। समन्वय इसी बड़ाई और विलुप्तता के कारण इसका विरोध इतना व्यापक हो रहा है कि किमानमात्र है।

शाहबानों की धारों १९३२ से इन्दौर के एक बकोनो जो मुहम्मद अहमद के साथ हुई थी। १९७५ तक पाँच पल्ला का जीवन बड़ा सुखमय बीता। मसलम जीवन के कामतों ४४ वर्ष का बेगम शाहबानों ने अपने पति के साथ बिताये हैं और उल्लास रहे। १९७५ से कि मुहम्मद अहमद ने यकायक बेगम शाहबानों का घर से बाहर निकाल दिया। बेगम शाहबानों १९ बच का बुनिया हो चुकीं बा। इस उम्र में कितना आनंद दु उठी। कौन हर उम्र में उसे पल्ला लोकार कटता। धारिज उसे धरातल ही एक सड़ा दिखानो दो। और उतने इन्दौर के म्यालक मन्किपुत्र की बदालत में चौबकारी कानून के बहुत १२५ की धारत ब धरने पर ५०० रुपये प्रतिमास घर पर पाण्य का कामतों। न्यायालय ने बेगम शाहबानों के पक्ष में निर्णय दिया और मुहम्मद अहमद का २५ वर्षे अर्द्धाधन देने का आदेश दिया। यह निर्णय अगस्त १९७१ में दिया था किन्तु का यह राशि अपने साथ के लिए बहुत कम था। उन्होंने अर्द्धाधन उच्च न्यायालय में न्यायिक मन्किपुत्र के फसल पर पुनराचार के लिए धारिका दायर की। जुलाई १९५३ में उच्च न्यायालय ने मुहम्मद अहमद को ७७६-५० ६० प्रति माह देने का आदेश दिया। इस मुहम्मद अहमद ने सर्वोच्च न्यायालय सुनो में देने का आदेश दिया कर उच्च न्यायालय ने निर्णय को गलत बताया। सर्वोच्च न्यायालय के पाँच न्यायाचारों का समन्वयक पाठ न इस पाँच का। मुहम्मद अहमद को। इसमें प्रमुख मुख्य न्यायाचार था धारिका १०० चन्द्रबू ने। पाठ ने मुहम्मद अहमद को धारिका को धारिका दिया। देश के इस सर्वोच्च न्यायालय को पाठ न निर्णय दिया कि "एक उलाक़ुदा मुस्लिम भीतर तब तक अपने पति पति को पल्ला कड़वाएगा जब तक वह बहुत सारी धारों कर लेती। धार धारा १२५ के अन्तर्गत एक महिला का यह धमिकार प्राप्त है कि उसका पति उसे जीवन यापन का धारिका है। पर्सनल ला के प्रावधानों के मुताबिक से कोई लेना देना नहीं है।" मुस्लिम पर्सनल ला से यह मान्यता है कि इतने को समयावधि में पति धरनता पल्ला का जीवन यापन का धारिका देगा। इतल तीन मास तक की वह अवधि है जिसमें पल्ला पाक जीवन लेती हुए किसी दूसरे मर्द के साथ बली सारा समन्वय नहीं रख सकती। इसके बाद ही वह दूसरी धारों कर सकती है। सुप्रीमकोर्ट ने अपने निर्णय में यह स्पष्ट किया कि धारा १२५ के अन्तर्गत एक मुस्लिम पति को अपने पल्लाक़ुदा पल्ला को इतल को धारिका के बाद जो जीवन यापन का धारिका देना होगा। धर्याचारिक पाठ ने और स्पष्ट किया कि "सही स्थिति यह है कि पति धर्याचारिक पल्ला जीवन यापन करने में सक्षम है जो इतल के बाद पति को किन्हेवारी समान हो जातो है, उसे साथ देने को बरकत नहीं। किन्तु न्यायाधीशों ने कहा कि वह कड़वा उचित नहीं है कि एक मुस्लिम महिला धारा १२५ के अन्तर्गत जीवन यापन धारिका नहीं कर सकती।

मुस्लिम पर्सनल ला में 'मिहर' वह राशि नहीं जिसे तलाक के वक्त दिया जाये।" न्यायाधीशों ने यह भी कहा कि धारा १२५ अपने चरित्र में पूरी तरह से धर्म विरोध है। यह मजाम में शुद्धता के लिए प्रतिबद्ध है। सर्वोच्च न्यायिक पाठ ने पूरे देश में सभी वर्गों के लिए समान सिविल कोर्ट बनाने का सुझाव दिया। उससे राष्ट्रीय अखण्डता मजबूत होगी। विद्वान न्यायाधीशों ने यह भी कहा—“भारतीय सिविलान का ४४वा अनुच्छेद 'मृतपत्र' बनकर रह गया है जिसमें कहा गया है कि सरकार को पूरे देश में समान सिविल कोड लागू करके को मान्यता दिलाने के प्रयत्न करने चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय को लेकर पूरे देश में एक बार तहलका मचा। सरकार के अन्दर और बाहर इसके पक्ष और विपक्ष में मत प्रकट होने लगे। केन्द्रीय सरकार के दो मन्त्रियों ने इस विषय पर बड़ी बहादुरी के साथ परस्पर विरोधी विचार व्यक्त किये। प्रमुख नेता अकर मुस्लिम समाज को समय के साथ चलने की सलाह दे रहे हैं। जनतापार्टी के महासचिव संयद शाहजुदीन ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को मुसलमानों के धार्मिक मामलों में दखल माना।

मुस्लिम पर्सनल ला में सुधार करने वाला भारत अफैला देश नहीं है। सबसे बड़े मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान में इसमें विशेषता हो चुका है १९९१ में वहाँ यह कानून बना दिया गया था कि कई शर्तियाँ करने से पूर्व सरकार को मजूरी लेनी होगी। उसके अलावा उर्दू, सिख, इदोनेशिया, भलजीरिया टयुनिशिया, मोरक्को, सीरिया, जोर्डन व सुदान आदि देशों में इसमें संशोधन हो चुका है। इन सबसे अकर इस्लामी गणराज्य ईरान की सर्वोच्च न्यायिक कीर्तिल ने पल्लियों के हकी की रखा के लिए कुछ निर्देशक सिद्धांत जारी किये हैं। जिसके दो भाग हैं। शायी के वस्तु मंत्रिज अकर धारी के इतिफिकट पर इन निर्देशक सिद्धांतों की प्रतिया पल्लों को देता है। एक भाग के अंतर्गत पल्लों को तलाक देता है तो पल्लों के क्या धमिकार हैं, इसका सुझाव और दूसरे में पति के धर्याचारों से तब धमिकार पल्लों द्वारा तलाक देने वाले के धमिकारों की बात बतानकारी है। वह १२ धमिकार ईरान में पल्लों को देने गये हैं।

और इकर भारत के मुसलमान कह रहे हैं सिविलान के अनुच्छेद ४४ को वा तो समाप्त कर दिया जाए अथवा मुसलमानों को इसका धमिकार होना से बाहर रखा जाये। सात ठीक पर मात्र इष्टिया मुस्लिम लोग के अग्र्यता सुलेमान सेठ और मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड यह शोर मचा रहे हैं। शाहबानों बेगम ने ७ साल छोटी धरातल से लेकर बड़ी बदालत तक बड़ी दिनेरी के साथ वह मुकदमा लड़ा है। धारिक उसकी मोली में उसका नुह माँगा कम झुकाव के साथ था ही गया। परन्तु कटुपक्षी मुस्लिमों का दबाव को उस धरला पर लतावर पड़ता रहा और वही हुआ जिसका डर था वह मुकदमा। उसमें सर्वोच्च न्यायालय के फंसले को धारिक लेने को मांग कर दी। कुछ सुधारवादी मुस्लिम समठनों ने यह धारिका लगाया कि रूढ़िवादी मुस्लिम समठनों के दबाव के धारिक ही उसने अपना तलाक बतय्य दिया है। ५००५० मुख्य न्यायाधीशों की वार्डों १०० चन्द्रबू ने कहा है कि इस फंसले से एक सामाजिक उल्ल-मुल्ल पैदा हो गई है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि फंसले पर पुनर्निर्माण हो। उन्होंने कहा इस फंसले से सर्वोच्च न्यायालय के धारिक का कोई दम नहीं है। बदालत को कुरान के अन्तर्गत में शरीयत की विवेचना का धमिकार है। श्री चन्द्रबू ने कहा इस फंसले को भी बिलाव बड़ा हुआ है उसने लिए मुसलमान कटुपक्षियों की योग्यता और किसी परिवर्तन को ब लोकार कर अपने के रवने को ही दोषी ठहराया जा सकता है। उन्होंने कहा इस फंसले के विरोध में यह सिद्ध हो गया है कि इस तरह के समाज में अकरदस्त मान्यकता को।

हमारा कहना इतना ही है सरकार ४४वे अनुच्छेद के अनुसार समस्त देश में एक कानून लागू करना चाहिए तथा समय को धावाज के साथ चलना चाहिए।

—बसगत सुभाष

आर्य यवको !

इस समय विश्व का प्रत्येक राष्ट्र यह वष ऋतु - टु य यु प न रूप से म - रहा है। हमारे देश में भी ११ जनवरी १९८६ को स्वामी विवेकानन्द के जन्मदिन ५१ हजारे बुवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने युवावर्ष का उद्घाटन किया था और ११ जनवरी को युवा दिवस भी घोषित किया। उस समय यह धारा बची थी कि हमारी सरकार युवावर्ष को एक रचनात्मक दिशा देगी और युवा शक्ति का देश के विकास के लिए उपयोग करेगी। पर मुझे यह कहते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि युवा वर्ष समाप्त होने को है, पर अभी तक देश में न युवकों को कोई रचनात्मक दिशा दी जा सकी है न देश के विकास के लिए उनका कोई सहयोग किया गया है और न उनके लिए किसी कार्य को कोई ऐसी योजना बनी है, जिससे वे सामान्य जिन हो।

युवावर्ष के नाम पर इस देश के कुछ युवक आर्यों के धारणित युवा समारोह में भाग लेने के लिए गये थे, पर वहाँ पर इन युवकों ने अपनी जिस बिलासी शक्ति का परिचय किया उससे मेरे देश की प्रतिष्ठा पर भाव भारी। नवम्बर मास में दिल्ली विश्व विद्यालय की ओर से निर्गुट देशों के युवकों का एक सम्मेलन लगाया गया। पर यह सम्मेलन भी युवकों के लिए किसी रचनात्मक योजना पर विचार नहीं कर सका।

मैंने बचपन में एक कविता पढ़ी थी, जिसकी पहली पंक्ति थी— 'बताए तुम्हें जवान जवानों किसको कहते हैं, बंजरा को जीवनदान जवानों उसको कहते हैं।' इस पंक्ति में जीवन को किसी आनु विशेष के साथ नहीं बताया गया, बरन उसे एक गंभीर और ऊँची भावना के साथ सम्बद्ध किया गया है। युवक वह है जो स्वार्थों को तिलालि देकर निःस्वार्थ और परप्रेमिकारी की भावना से राष्ट्र, नदी नदों विश्व के कल्याण के लिए आत्मसमर्पण की भावना रखता हो जिम समय महर्षि दयानन्द ने आर्य-समाज की स्थापना करके आर्यसमाज का सत्य सन्देश का यह वाक्य कि कृष्णजी विश्वमायम् स्थापित किया था, उस समय में भी आर्यजन में यही भावना भरना चाहते थे कि वे अपने स्वार्थों को छोड़ दें और प्रतिबद्ध ब्रह्म करते हुए विश्व के कल्याण के लिए अपना धार्मिक, आत्मबलिदान समर्पण में भर पड़ें।

याद रखो, हमें विश्व को आर्य

युवा वर्ष पर आर्य युवकों के नाम सन्देश

डा० प्रसाद वेदालकार

और ससार में जितना प्रसिद्ध है, जो प्रकल्पमाणकारी है, वृष्ट स्वभाव व वृष्ट कर्म हैं उन सबको नष्ट करना है। श्रवण से ससार को श्रद्ध बनाने की जहा प्रेरणा दी वहा ससार की वृष्ट प्रवृत्ति को नष्ट करने का आदेश भी दिया।

याद रखो ससार को श्रेष्ठ बनाना है तो पहले हमें स्वयं श्रेष्ठ बनना होगा। साधु और मानवीय दृष्टि से ऊँचा व्यक्ति हो दूसरे को स्वर्ग पर प्रेरित कर सकता है। जो स्वयं वृष्ट है वह दूसरो को वृष्टता को दूर करने की बात सोच भी कैसे सकता है ?

जब मैं तुम्हें कहता हू कि तुम श्रेष्ठ बनो तो मेरा अर्थ होता है कि तुम्हारा शरीर व्यक्तित्व पूर्ण हो। तुम शरीर से वृष्ट बनो। यदि तुम शारीरिक दृष्टि से श्रेष्ठ स्वयं और दुबल हो तो तुम भीमे योग्य भी नहीं हो। तुमने पखा और सुना होगा— वीरभोग्या वसुधा यवभुज्यो कीरते के भाव के लिए ही है। तुम्हें अपने वे शरीर की भावना भरनी होगी। बरना क विर धरणी मांसपेशियों को वृष्ट करना होगा। उनके लिए प्रतिदिन कठिन परिश्रम और व्यायाम करना का अपना स्वभाव बनाना होगा। कालिदास ने वहा था— शरीरमाष खलु धर्मसाधनम्। शरीर धर्म का अपने कर्तव्य की पूर्ति का प्रथम साधन है। यदि हमने ससार को श्रेष्ठ बनाने का अपना कर्तव्य पूर्ण करना है तो पहले अपने शरीर को वृष्ट बनाओ। मुझे तुम्हें यह भी बनाना है कि शरीर या वृष्ट शरीर न तुम्हें निर्बल व अनाथों की वृष्ट स्वभाव से रक्षा करेगी है। वर व वृष्ट होने का अर्थ किसी को अपना वक्ष्य रूप से देवाना या प्रताड़ित करना नहीं है।

जब मैं तुम्हें श्रेष्ठ बनने के लिए कहता हूँ तब तुम्हें श्रेष्ठ और तीक्ष्ण भक्तिकर्मात्मा बनने की भी प्रेरणा देता हूँ ताकि तुम अपनी प्रभर बुद्धि से अपने प्राण शरीर का ठीक उपयोग कर सको। तुम्हारा भक्तिकर्मात्मा ऐसा हो जिससे नीर और विवेक की समता हो। सत्य को पहचानने और प्रत्यय को त्यागने की समर्थता हो।

समय पर ठीक निर्णय ले और इतना विकसित हो कि बला भी नये ज्ञान को ग्रहण कर ले सके इसमें श्रम हो। तभी तुम समर्थ बनोगे कि विश्व में क्या है और क्या है। जब तुम्हें ससार के वृष्टों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया है तो बिना विवेक व ज्ञान के तुम यह काम नहीं कर पाओगे। ससार में कौन वृष्ट है और कौन साधु ? यह बात तुम बिना श्रेष्ठ भक्तिकर्मात्मा की नहीं जान सकते। अपना अच्छा भक्तिकर्मात्मा करने के लिए तुम्हें सदा अपने माता पिता, किसी श्रेष्ठ गुरु व पर-प्रदत्त के सम्पर्क में रहना होगा ? उनके प्रति तुम्हें आस्था रखनी होगी। मीठा मे कहा है— 'अद्यावत् समते ज्ञानम्' अद्यावत् विश्वास से ही भक्तिकर्मात्मा नित नित आना जाता है और विवेक शक्ति बढ़ती है। जो विचारधारा धनात्मक का प्रचार करती है वह है। धात्र ससार में एसी भीतर पर धारणा करने विचारधारा के द्वारा ही जो व्यक्ति को धनात्मक का पाठ पढ़कर उनके भक्तिकर्मात्मा को विकृत कर देती है। तुम्हें उन सबसे बचना है। मैं तुम्हें कहना चाहता हूँ कि तुम महर्षि दयानन्द के सिध्य हो ऊँची के प्रत्यो का मनन करो और तुम्हें से अपनी विद्या निर्धारित करो।

पर याद रखो वृष्ट शरीर और स्वयं भक्तिकर्मात्मा वाले व्यक्ति भी श्रेष्ठ धारणा के बोधा देखे गये हैं। मैं तुम्हें श्रेष्ठ भक्तिकर्मात्मा की उपदेश देना चाहता हूँ। कोई भी ऐसा काम मत करो जिससे अपने पशुवृष्ट गर्व न हो। श्रेष्ठ भक्तिकर्मात्मा के निर्माण में यही है कि व्यक्ति अपने किन्हीं हुए काम का हर जगह वर्चन कर सकता हो। यदि तुमने कोई ऐसा काम किया है जिससे तुम किसी को बला भी नहीं सकते तो वह निश्चित कर्म है, उससे बचो। तभी भक्तिकर्मात्मा होता है।

यह सब है कि धात्र के युग में सत्यार्थ प्रचार करने व ईशानवारी से रहने में अपने कर्तव्यपूर्ण धार्मिक। पर तुम जिस ऊँची कीर्ति महान् सत्त्वा से सम्बद्ध होओगे कि वे वृष्ट श्रेष्ठ भक्तिकर्मात्मा की तुम सत्ता को जल्द ही वृष्ट कर दो कठिन हो।

स्मरण रखो तुमने वही काम करने हैं जो दूसरों के कल्याण के लिए हो। यदि हमने किसी काम से किसी को हानि होगी उसे कभी मत करो। महाभारत में धर्म की परिभाषा धर्मात्मक प्रतिक्रिया निरपेक्ष न्यायचरित के रूप में की गई है। दूसरे के प्रति वहा व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम दूसरे से चाहते हो। तुम्हारे किसी नाम से किसी का हानि न हो। बरन तुम्हारे कामों से दूसरो का कल्याण होना चाहिए। महात्मा तुलसीदास ने 'परहित सत्य धर्म नहि कोई कह-कर मनुष्य को वही प्रेरणा दी थी। महर्षि दयानन्द ने भी अपने प्रथम व बारम्बार यही कहा है कि सपारा का उपचार करना हम सबका परम धर्म है।

मैं यह सब तुम्हें इसलिए कह रहा हूँ कि देश का युवा व भाग भक्तिकर्मात्मा विभूत है वह कुछ करना चाहता है पर उसे कुछ समझता नहीं है। उनके सामने धात्र कोई धारण नहीं है। मुझ विश्वास है कि धर्मानन्द के सिध्य उनके लिए आदर्श सिद्ध होंगे।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की प्रेरणा से देश को स्वतन्त्र करने के लिए इस देश के हजारों युवकों ने आपो की प्राणति दी थी। आर्यसमाज के लो वनों का इतिहास इस बात का सक्षी है कि आर्यसमाज ने देश की स्वतन्त्रता में महान योगदान किया। श्री धर्याम जी कुण्ड बर्मा ने विश्व में इहिकव्य होयमकल लोग की स्थापना करके वैदिक संस्कृति का प्रसार विश्वो में भी किया, जिस से देश का स्वयंमान जागा। लाला लाजपतदा स्वामी अद्यात्मन् भार्गव परमानन्द, सरदार प्रजोतिश, श्री मदनमोहन मालवीय, श्री रामदास बिस्मिल, श्री मैदानल, डा० रोशन सिंह श्री सरदार भगतसिंह, श्री सुखरामसिंह श्री हरविशाल सारदा तथा अन्य अन्य स्वतन्त्रता प्रियों ने महर्षि से प्रेरणा प्राप्त कर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने को बलिदान किया। मातासरार के मीपला विरोध, राजस्वान व न्याय के प्रकाश विचार के प्रकल्प, देश-विभाजन और स्वतन्त्रता प्राप्त के बाद सन् १९४७ में पञ्जाब में हिन्दी, रसा-शास्त्रोत्पन्न भाषा द्वारा आर्यसमाज ने सदा प्रत्यय के विरुद्ध प्रसार का स्वयं

देश को स्वतन्त्रता दिलाने में, देश की कुटिलीय व अत्याचारों को विरुद्ध करने में, देश की शिक्षा-प्रणाली में आर्यसमाज का स्वयं

साधना-शिविर का समापन

मुई दिल्ली १० नवम्बर : वेद सम्प्रदाय के आधोजित सप्त दिवसीय साधना शिविर का समापन १० नवम्बर को प्रातः काल स्वस्तिवाग को पूर्णार्ति के साथ हो गया। इस शिविर में ३५ शिविरार्थियों ने अनुबोध के शिवसकल्य मनो का महारस से चिन्तन किया। व्यक्ति और सपूर्ण मानव-समुदाय का विराट मन शिवसकल्य वाली धारणी स्थिति तक प्रत्येक विश्वरे हुए टूटे मन को उठा सकता है, उठाना चाहता है। इस विराट मन की आकाशा की पूरा करने से बरती की विनाशकारी क्षतिता पराजित होंगी और विनाश के सागरी पर प्रभावशाली डगो से रोक लगाई जा सकेगी। मानवता

के विनाश को रोकने के लिए धार की यह सूत्र से बड़ी और प्रथम धार-रथकता है।

यस उपयोगी शिविर में महात्मा दवानन्द, स्वामी दयानन्द, सत्वाला-धल डा० धर्मदेव समाई डा० बड़ी प्रसाद मचौली माता नरेन्द्रायां धादि के प्रवचनों के धातिरिक्त सध्या आसन, प्राणायाम और ध्यानविधि का अभ्यास कराया गया। वेदमन्त्रों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी कराया गया। धारता शिविर मई १९८६ में आयोजित किया जाएगा।

अनन्यदेव समाई

धार्मिक

वेद संस्थान, नई दिल्ली

भारत माता के सपुत्रों

(पृष्ठ ३ का शेष)

की सत्ता है कुचलकर रख दिया है। पुनरपि वे धर्मन की तरह बार-बार संचरवर्त है। धर्मन में उन्नी का सचनें रण लायेगा। नकनी, गद्दार, पदवी-लुप, रामता की जकडी गई मेरियो बाले लोग इसी प्रकार कासा मुह करके मुर्दों की जिवन्ती जियेंगे।

धो। श्रुति महर्षि, रामकृष्ण धादि की सन्तानों धाव धावश्यकता है राषण तथा कस को मारने की, जिससे भारतमाता माता बनी रह-कर धापको धावीर्वादे देवे। तभी धापको और धापकी भावों सम्पन्न की सचनें धार्यो में धाशीर्वादे प्राप्न होगा।

धाव धावश्यकता है कर्ष और भासाहाहू की। उन लोगो की धाव-श्यकता है जिनके हृदय पटल में देश-भक्ति की हर नमय धाय जलती रहती है। जो भारत विश्व को धाशि से सकता है मानवता का तसेध से

सकता है बहु धा-धानुकरण कर रहा है। बहु धपनी धाशित नही पहुंचानता यह उर रासा के समान है जो बर राज्य का स्वामी होते हुए भी धपनी धाशित को न पहुंचान कर धपने को केवल ओररा माय का स्वामी मानता है।

धाव हमारी पहली धावश्यकता है कि देशभक्तता का वृद्ध समान करें। धाशितकारी और लून लोसा देने वाले भाषणों का धापोजन करें। तेषो पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाधो धाकाशाधनी, दूरदर्शन धादि के माधयत्र से देशभक्ति का प्रचार करें। धम्पुर्ष सातवरण की देशभक्ति की बाणो से बुजायमान कर दें। तभी हमारी नली में भरी दासता ननु-सकता का त्रिध निकनेता धोर इनमे देशभक्ति का अमृत उसक उठेगा। बर धर प्रत्येक व्यक्ति का जीवन बोल उठेगा—भारतमाता की जय।

५५

शोक-समाचार

धार्मसमाज सान्नाकात्र के महामो कंसिन्त देवरत्न धाय के अनुज आता व स्वर्गीय धायार्थ महत्तेन जी के छुटे पुन क्रिस्त्व धाय का नासिक में २० वर्ष की कल्पयु में धाकसिक निधन हो क्लेशः प्रियरत्न फिल्मी हुनिया से सर्गीत निर्देशक के रूप में जुड़े हुए थे। राजस्थानी फिल्म प्रिया मिलन की धाय सहित धन्य कई फिल्मों में उन्होंने संगीत दिया था।

गत वर्ष महर्षि दयाचन्द निर्वाण शताब्दी पर धापने धापने प्रप्य पिता श्री की स्मृति में 'श्रद्धा' कंसिन्त तयार किया था। जिसका विमोचन धय मेर में निर्वाण शताब्दी के धनसर पर किया गया था, जिसकी काकी सराक्षणी भी की गई थी।

धाव शुकुवार दिनांक १५/११/८३ को साय ३ नजे उर्नकी आत्मा की धाशित के लिए धार्मसमाज मधिर सान्नाकात्र में धाशित यज्ञ का धायो जन किया गया जिसमे बम्बई महा नगरी को समस्त धार्मसमाजो धायर् प्रतिनिधि तथा बम्बई द्वारा स्वर्गीय प्रियरत्न धाय के कार्यो को स्मरण करते हुए उनके हम छोटी सी धायु में जले जाने पर धादिक शोक प्रकट किया और धपनी अद्वाजलि धाशित की।

प० प्रकाशचन्द्र शाल्की

शुभ विवाह सम्पन्न

धार्मसमाज के कार्यकर्ता विश्वदेव शास्त्री की सुपुत्री जतिन का शुभ विवाह दिलीपकुमार सुपुत्र स्वर्गीय श्री सतीशचन्द्र की (इजीनियर जल निर्माण) उ०प्र० के साथ दिनांक २० नवम्बर, १९८३ बुधवार को धार्मसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ में सभारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी स्वकृपापानन्द जी व श्री यशवन्त सुधाशु ने धापने आशीर्वाद दिये।

दिल्लो धायर् प्रतिनिधि सभा से सम्पन्न

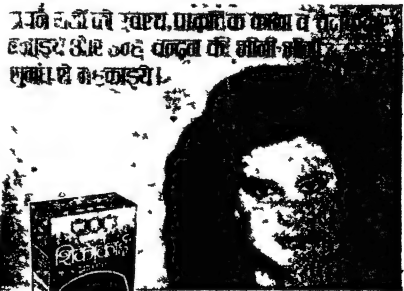
मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल

बी० ४५११२९ नई बरती
रामपुरा, बाराणसी

बीलकाभीन प्रवेश धारम्भ है। बालिकाधो को सर्वविध उन्नति का प्रलम्भ धयसर।

सिन्धु से निकर देवादाय ध्या-करणार्थाय एव दसनावाय (एम ए) तक की सुशिक्षा। पी एच डी व विदेश भ्रमण का भी सुविधाएँ। उच्चवत मधिव्य। सम्पर्क करें।

डा० पुष्पावती
पी एच डी दसनावाय
विचारार्थि धयम्भसा



एक नो एक सिन्धु...
धरन है ता उ...
धरन है ता उ...
धरन है ता उ...

निर्वाण
महाशिव्या ही हरी (आन) ति०
८५५ सचनियन्त एरिया की...
धर्ष सिन्धु ११००१५
फोन ९३९६०९ ५३७९७१ ५३७३४१

सत्य के प्रचारार्थ
अजिल्द १००
मैकेंडा
अजिल्द ५००
मैकेंडा
मृत्यार्थ प्रकाश
घर घर पहुंचाए
सफेद कागज मुन्दर छपाई
सुदृढ संस्करण वितरण करनेवालों के
२३-३६-१६ पृष्ठ ४२० की दर
लिप्त प्रचारार्थ
अजिल्द ४५ अजिल्द ५५
आधुनिक साहित्य प्रचार ट्रेडर
२३-३६-१६ पृष्ठ ४२० की दर
फोन २३०३६०-२३३३१२

महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०
944 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति नगर नई दिल्ली 1
फोन 539608, 537987 537341

द्वारा का दर्जा

युवा वर्ष में यदि तुमने योग्यता के वास्तविक मापदण्डों को अपने जीवन

प्रचार-विभाग
संस्थापक

शास्त्रा कार्यालय—६३, नली राजा किरारबाग,
प्रायश्चो बाजार, दिल्ली-६ फोन : २६१८१८



सिन्धी भाषा में लिखित तथा १५, हुजुमत रोड, नई दिल्ली-१ कोष : ११-१५ के वि. सं० परमाणु द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक वि. सं० १५, केंद्राध्यक्ष सिन्धी ११ में प्रकाशित। प्रिंटिंग : ११-१५ के वि. सं०

पुस्तकालय
कृष्ण कौशिकी विस्वविद्यालय
हरिद्वार

ओडम्

कृष्णवर्ती विश्वमार्गम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

बुध ६ घण्टा ५६
शुक्र १८ प्रति ५० वंशे

रविवार, १५ दिसम्बर, १९२१
वार्षिक २० रुपय

मुष्टि सवत् १९७२६५६०८६
आजोवन २०० रुपय

मामघीय १०५२

वर्षामन्वाह—१६१
विदेश में ५० डाक ३० पौरी

कश्मीर से धारा ३७० को शीघ्र समाप्त कर देना चाहिए

—सूर्यदेव

धार्यसमाज पवित्र पुरी नई दिल्ली में बापिकोस्तव पर भवजा-रोहण करते समय डा० धर्मपाल ने कहा—'धार्यसमाज का एक नियम है प्रविष्टा का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।' इस भवज के नीचे बह होकर हम प्रतिज्ञा करें कि प्रविष्टा का नाश करने में हम कभी पीछे नहीं हटेंगे। कुछ समाजों के प्रविष्टा ऐसे उपदेशों की भाव करते हैं जो केवल मोटी भाषा बोलते हैं सकारात्मक बोलते हैं। खण्डन की बात नहीं करते हैं। मैं कहता हूँ कि जब तक खण्डन नहीं करते, जब तक बर्तन को भाग नहीं देंगे, तब तक शुद्धता कहा से आएगी। यही बात

की मिटा कर ही दूसरी बात बन सकती है। टेप पर पिछला मिटाकर ही नया लिखा जा सकता है। दयानन्द की स्वामी विज्ञानन्द ने कहा था जो जब तक पढ़ा है उसे भूल जाओ। इन पौधियों की यमुना नदी में फूट कर बाधो। अतः हमारा कर्तव्य होगा चाहिए कि हम प्रविष्टा का पाषण्ड का, धर्मविश्वास का नाश करने में सदा तत्पर रहें, किसी से कोई समझौता न करें।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य महापुरुष उपस्थित थे। वीरक बापिक जनों ने उत्साहपूर्वक काय-कर्म में भाग लिया।

सवादत्ता धार्यसन्देश

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

विशाल शोभा यात्रा

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बुधवार, दिनांक २५ दिसम्बर १९२१ को धूमधाम से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर प्रातः १० बजे से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन (नया बाजार) से शामा यात्रा का आयोजन किया गया है जो निधारित मार्ग से होती हुई सात किताबेंदान पर पहुँच कर एक जन सभा में परिवर्तित हो जाएगी। इस सभा में धार्यसमाज के पूर्वज्य नेता तथा देश के प्रसिद्ध नेताओं के भाषण होते हैं।

महाशय धर्मपाल
प्रधान

अधोक्त कुमार सहयोग
महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा (पंजीकृत) दिल्ली राज्य
१५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१

पाखंड खंडनी की आवश्यकता है

—डा० धर्मपाल

धार्यसमाज में राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन का आयोजन क्यों किया जाता है? राष्ट्र की सामाजिक की रक्षा करना सरकार का दायित्व है, सेवाओं का कर्तव्य है। फिर हम क्यों इन सम्मेलनों का आयोजन करते हैं? इसलिए करते हैं कि राष्ट्र केवल भूभाग ही नहीं होता, राष्ट्र बड़ा क नर-नारी होते हैं। राष्ट्र बड़ा की आत्मा होती है। हम उनकी आत्मा की रक्षा करना चाहते हैं। यह रक्षा धार्यसमाज के मान्य है ही उनकी है। उसके चरित्र का निमाण यही पर हो सकता है। हमारे राष्ट्र रक्षा सम्मेलनों के आयोजन का प्रयोजन यही है। यह उद्गाण दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रान्त श्री सुयव ने धार्यसमाज चूना मण्डरी के बापि-

कोस्तव पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में अपने धर्मवीर भाषण में कहे। इस अवसर पर डा० धर्मपाल, श्री प० मदनमोहन विशाखागर, प० सितीश वेदालकार ने भी सभा की सम्मोचित किया।

धार्यसमाज सेंटर कैलाश पार्क-२ के बापिकोस्तव पर बोलेते हुए सभा प्रधान श्री सुयव ने कहा कि राष्ट्र रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि प्रदेश विधेय को कोई विशेष अधिकार न दिये जाय। काश्मीर को धारा ३७० की अनुमति समाप्त कर दिया जाय। इसी वारा के लालच में अन्य प्रदेश के लोग अपनी अपनी स्वायत्तता की मांग करने हैं और देश का बिचटन का कारण पदा हो जाना है। □

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद नहीं रहे

बहोमद १० दिसम्बर पंजाब के भूत-पूर्व मन्त्री बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का खरख में निधन हो गया। खरख यहाँ में लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर है। पंजाब सरकार ने दिवगत नेता के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए श्राव अपने कार्यालय बन्द कर दिए।

राष्ट्रपति जानो जलमिह ने स्वतन्त्रता सेनानी व पंजाब के भूत-पूर्व मन्त्री पृथ्वी सिंह आजाद की मृत्यु पर दुःख व्यक्त किया है।

श्रीमता इरुणा आजाद के नाम एक सवदना सन्देश में राष्ट्रपति ने बाबा आजाद को एक प्रमुख साहित्य-दिए। (शेष पृष्ठ १०२)

मुनि-चोरी के दण्ड का महत्त्व : युधिष्ठिर का विषाद : द्रौपदी-व्यास-कृष्ण द्वारा उद्बोधन : युधिष्ठिर का राजतिलक : अवबोधक प्रसंग

—आचार्य दोनानाथ सिद्धान्तालाभ

गौतम धर्म और दाई तपस्वी ऋषि गगनाद पर दानों के मुख्य वृक्षों धीरे-धीरे फल फलो म लदे प्राथम्य थे एक बार लिखित के प्राथम्य में सव प्रमुख गो किरि प्रकार प्राथम्य से निकल रास्ता भूल भटक गईं देर तक नही धावो । लिखित ऋषि का चिन्तित हो धीरे उसकी लोख में प्राथम्य में बाहर जाना स्वाभ विक हो था काफी देर तक भटकन के बाद अपने बग आई शब्द के प्राथम्य के पास गो मिल गई देर तक भाग दौड़ करने के फलस्वरूप लिखित की भूल में व्याकुल किया । उसने तत्काल बड़ आई गल के प्राथम्य म लने पक मस्बाहु फलो म भूल की तुलना की इसी समय शब्द गो वहा मवानक धा गये । उ होने आई की फल से नभ उससे पूछा कि यह फल तुमने कहा से लिये ? लिखित ने समीप झाख बड़ आई की प्रणाम कर कहा यह फल के उछान क ही तो फल है । इस क क्षाय अपने प्राथम्य म गो क गुण हो जान धीरे उसकी न न ग में ध्रुपदी देर तक की लोख धीरे भूल लगने की साग कहानो मुना दो । शब्द ने इस पर अपना प्रसन्नो प्रकट करत हुए कुछ कछा स्वर म कहा तुमने म न म पुख बिना स्वर हो मेरे उछान म म चोरी की है । स्मोनिन नम श्रव । जा के पास जा अपने सस कुकम का थोरा मुता । अपना धप न न स्वीकार कर राजा से समुनिन दण्ड की प्राप्ता करो । लिखित मुनि बड़ आई क प्राप्ता स राज प्रवृत्त के पास गय धीरे अपने धराधार का सारी कहान मुन न न राजा म न न दिय जान का श्रुतगण किय

अप र न कृति । जा म
पण्ड क नान

"जा ब" श्रममम म पण्ड गय उसने म क लि ममण्डल म । उदक वनाइ म ममममन न राजा क शाय सहानि प्रकट करत हुए सहज हो किमिनिन न क पहचने में ससम यना प्रकट की म मममण्डल में एक शब्द और प्राप्ता न म मी थो । वह न स समय उचिन न ये । पण्ड

दवाया गया धीरे उनसे पथप्रदशन मागा गया उन्होंने समूचा मामला सुन कर कहा—अपराध का दण्ड (कानन का पालन) ना धन्यव होना चाहिए । वह छोटा है या बड़ा यह मतभेद का विषय है । परन्तु राष्ट्र चरित्र को रक्षा धीरे गाय व्यवस्था को मर प्रकाश क पसपात से छुछता रचने से लिए उसके पास न किसी प्रकार का गो न न नच नही होना चाहिए । बड़ विद्वान मन्त्री ने मनु प्र० १ दशो १७ १६ के प्रमाण से कहा—

पण्ड का हा शासक मन्त्र
जागता है

(१) जो दण्ड है वही पुरुष राजा वही गाय का प्रचारकर्ता धीरे सब का शासनकर्ता वही चोरी वण धीरे चोरी प्राथम्यो के वम का प्रतिभू प्रथनि जागिन है ।

(२) वही प्रजा का शासनकर्ता का शासनकर्ता वही चोरी वण धीरे चोरी वम जागता है । इसाति एण्ड मान सव को हा वम कहते हैं ।

(३) जो पण्ड श्रच्छ विचार के धारण किता त्रय तो वह मर प्रजा का शासनि करना है धीरे जो बिना विचार चलाया गये तो सब धीरे स राजा का बिनास करना है ।

लिखित मुनि का दण्ड

१ जान जब उस बड़ म प्राप्ते पूछा कि अब इस लिखित ऋषि का चोरी क अपराध म क्या दण्ड दिया जाये ? नच बड़ म नो न कुछ समय क गहन चि नत क बाद कहा— धायविने का मत है कि बिना अम व्यनिन अपराध करना है वह वा न्ना वा ए पर यह बहुत कठोर धीरे धराधारी का भावा मुबार के माग को ससथा श्रवदक कर देना है जो उचित प्रतात नही होता । इमोनिन मेरा सम्मति म इम पुवक का ऐसा दण्ड दिया ज ये जिसे हाथ स दीध काल तक क न परियम किया जाये ।

बड़ मन्त्री का यह मत राजा

धीरे म ममण्डल में पसन्द किया । लिखित ऋषि कुमार को यह दण्ड सुना दिया गया धीरे इसकी सुचना उसके बड़ आई शब्द ऋषि की ओ दे दा गई ।

युधिष्ठिर की पत्नी द्रौपदी का अपने पति को समझाना

व्यास मुनि ने यह कथा उस समय सुनाई जब युधिष्ठिर राज्य धीरे गहम्व धायम छोड़ वरागमवान हो वानप्रस्थ धीरे सत्यालो का जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर चके थे महाभारत शान्ति पत्र के धनत गत राजवध प्रमुशासन पत्र के नचम धधाय से लेकर धगले धधायो तक श्रीकृष्ण दीपदी धीरे पाचो पाण्डवो सहिन मगोछी से बचने एक स्वर से अपने बड़ आई युधिष्ठिर के उचयन निश्चय का प्रबस विरोध करते हुए उसे अपने कत य राजवध धीरे गहम्व वम के पालन का उपदेश कई प्रकार की प्राचन श्रवाचनि कथाधो धीरे उपास्थानो द्वारा पुष्ट किया । प्रमवध हय यहा उस निराधार सवथा धय य कपील कनिष्ठ धीरे तारी के लिए कक रूप लोक प्रचलित मिथ्यावाद का जोरदार शण्डन करना चाहत है जिसके अनुसार दीपदी के पाच पति युधिष्ठिर महित कहे जाते हैं । महाभारत के अनेक प्रमाणो से यह सिद्ध किया जा चुका है कि दीपदी का एकमात्र पति युधिष्ठिर ही था । इस प्रकरण क उतुदस धधाय म इस सभा में चरिधत व्यास मुनि श्रीकृष्ण पचपाण्डव तथा प्रमुख नाम रिको का उपस्थित म प्रवक्ता वसामायय पत्र ५ दशो की म दीपदी का प्राचन दत हुए कहते हैं—

धारे भाइयो के मुने से वेदो के मिदा तो क अनुसार सुनकर जो अब धमराज युधिष्ठिर कुछ नही बोले नच महान कुल मे उ पन युवतियो मे श्रद्ध विशाव मेरा राजा युधिष्ठिर के सति अभिमान रखन बायो राजा की प्रता हो लाइयो मममा म्हातारो दीपदी अपने पति देव नृप श्रद्ध युधिष्ठिर को धीरे सम्बोधित कर शास्त्रानुपूर्व परम मवर बायो

मे बोली—

इतवन म ११ वष क वनवास धीरे एक वष क प्रज्ञातवास म आपके इन सब भाइयो ने मदी गर्मी धाघी पानी आदि प्रतिकम स्थितिमे मे सब सहते हुए धायका साथ दिया उस वम आपने कहा था की बीर बन्धुधो । दयोधन धीरे उसके साधियो की हराकर म पत्नी की शत्रयो की लासो स पाट दये । उस समय उदारतापूण नाना प्रकार के वधो द्वारा मगवान की क्षाराधना करते हुए बिजय प्राप्त कर वनवास अनित दुःख सख मे परिणत हो गय । धीरे महाराज ! दत वन मे अपने भाइयो को स्वय हा ऐसे बीरतापूण वनन कनन के बाद फिर धाय हस लोगो को क्यो छोट रहे है ?

द्रौपदी ने अपने निराश पति युधिष्ठिर को निम्न प्रक शब्धो मे कहा—

१ न वसीधो वसुधा म डते

न वसीधो वन मनुते ।

न वसीधव्य मह पुत्रा

मत्स्या पक इवासे ।

म मां शासिपत्र १४।१३

अर्थात् जो कायर धीरे नपुसक है वह पत्नी का उपभोग नही कर सकता न ही वन उपाजन कर सकता धीरे न ही उसे भोग सकता है । जैसे केवल कीचड मे मछलिया नही होतीं वैसे ही प्रकाश नपसक क घर मे पुत्र नही होता है ।

२ जो दण्ड दन की शक्ति नही रखता उस क्षत्रिय को क्षीय नही होता । दण्ड न द सकने वाला राजा देव पश्या का उपभोग नही कर सकता । हे भारत ! दण्डहीन राजा की प्रजाधो का कभी सुख नही मिलता । धीरे धीरे धायवध की वनी इस बार भारतमे नारी द्रौपदी के दण्ड शब्द धाय हमारे देश की वतमान राजनीति के स्थिति पर श्रक्षर घटते हैं ।

राजा के लिए दण्ड उचित

कर्म

—ध्यास

इस सगोछी मे उपस्थित व्यास (शेष पृष्ठ ११ पर)

आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद :

एक मधुर स्मृति



स्वतन्त्रता सेनानियों के सम्बन्ध में लिखते हुए महात्मा गांधी ने बाबा पृथ्वीसिंह आजाद को स्वाधीनता के मंदिर की यात्रा करने वाला महापुरुष कहा था। महात्मा जी ने कहा था, कोई भी क्रांतिकारी उनके महान् साहसिक कार्यों की बराबरी कर सकता है, मगर उनसे धागे नहीं जा सकता।

पृथ्वीसिंह आजाद का जीवन अस्तव्यस्त रहा तथा वे कठिनाइयों से जूझते रहे। उनका जन्म १५ सितम्बर, १८६२ को पंजाब की पटियाला रिवाजत के लालक गांव में एक निधन परिवार में हुआ था। कुछ समय तक वे अपने पिता के साथ रहे, जा बर्मा में पयुबी की देखरेख करने अपना जीवन निर्वाह कर रहे थे। बर्मा से वे सिंगापुर गए और फिर मनीला। बहास संमरीका गये।

अपने वे राष्ट्रीयता की भावना के उत्पन्न होने का श्रेय उन्होंने आर्यसमाज एवं ऋषि दयानन्द, महात्मा गांधी और बंगाल के क्रांतिकारियों को दिया। उनके अनुसार सब स पहल आर्यसमाज ने १९०७ में उन्हें प्रभावित किया। इसके बाद वे बंगाल के सत्यन बिदाह और भासाभाजपतराय के निर्वाचन से प्रभावित हुए। विदेशी दमन से उन्हें सर्वाधिक घृणा थी। उन्हें अपने बाल्यकाल में कनाडा की भारा सयानी (भारता लकड़ी के कारखाने) में काम करना बाध है। बहा रहने के दौरान वे आन्दोलन की ओर जुगुप्स हुए जिसका परिणति बत १९१४ में गदरपार्टी को स्थापना में हुआ।

गदरपार्टी के सदस्यों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत के निरादर एवं बर्बराना को समाप्त करने के लिए स्वदेश लांठने और देश की स्वाधीनता के लिए अगणत का नेतृत्व करने का संकल्प लिया था। गदरपार्टी के अध्यक्ष बाबा सोहन भाखना के नेतृत्व में पार्टी के कुछ साहसी सदस्य १९१४ में एक जहाज में भारत पहुंचे। यह पार्टी इससे पूर्व कैलिफोर्निया में बनाई गई थी। बाबा उस समय जहाज में ही थे, जब भारत पहुंचते ही गदरपार्टी के सदस्यों को निरपेक्ष कर लिया गया।

उसी समय पहला लोहार पदमन का का मुकदमा शुरू हुआ। बा। चौबीस क्रांतिकारियों का मृत्युदण्ड धार शेष को अण्डमान में फाँसवान का दावास दिया गया। बाबा पृथ्वीसिंह उनमें से एक थे। कैमल सात व्यक्तियों का फाँसी हुई। बाबा ने अण्डमान जेल से सेलुलर जेल में राजनीतिक बर्हिरी प्रति किए जा रहे दुर्बलहाथ के बिरुदों के लिए १५४ दिन की भूख हड़ताल की थी। बाबा जेल में छह वर्ष तक रहे।

जून १९२१ में स्वदेशी नीति संघ उन्हें पुलिस के साथ मद्रास से राबमहेंद्री भेजा गया। वर्तमान आन्ध्र प्रदेश में प्रान्ते के निकट वे बलती रेलगाड़ी की बिक्री से बाहर कूट गए। रात भर वे प्रामोण को ब में बीसते रहे। प्रान्ती शाम में फिर पकड़ गये और जेल में डाल दिये गए। बुधवार सन्मबर, १९२२ में राजमहेंद्री से रेल द्वारा नामपुर में जाते जाते समय वे अमरावती के निकट बढनेवा से बलती हुई रेलगाड़ी के सीधासय से कूट गए और भूमिगत हो गये। अगले १६ वर्षों तक उनका कोई पता नहीं चला। देश बदलकर वे कुछ समय तक आबनगर में गुना लोगो की सांठिफक व्यापार सिकाते रहे और उनमें राष्ट्रप्रेम की भावना जगाते रहे। उन्होंने १९३१ में करचो से हुए कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया, जहा उनकी अंत हान अमृतस बपनार सा से हुई।

करचो से छपदेश में वे सीधियन सच पहुंचे। कई बार उन्हें

अकमानिस्तान में पकड़ा गया परन्तु हर बार वे किसी तरह बच निकले। सीधियन सच में भी वे दो महीने जेल में रहे। यह पता चलने पर कि वे गदरपार्टी के सदस्य है उन्हें छोड़ दिया गया। फिर ब मास्को में ठहरे और तीन वर्ष तक उन्होंने मार्क्सवाद का अध्ययन किया। छपदेश में ही व १९३४ में काबुल पहुंचे जहा व पकड़ गये और १३ महीने जेल में बन्द रहा। जनता के दबाव में सरकार उन्हें छोड़ दिया गया। फिर ब आली पासपोर्ट पर पाकिवेरी होते हुए मद्रास पहुंचे। बाबा ने १९३५ से १९३८ के बीच बम्बई और कलकत्ता में कम्युनिस्ट पार्टी को मजबूत बनाने के लिए कार्य किया।

महात्मा गांधी से उनकी अंत १९ मई १९३८ को जुड़ गई। गांधी जी की मलाह पर उन्होंने पवित्र के आगे आत्मसमर्पण कर दिया, जिसने उन्हें फिर कुछ समय के लिए जेल में बन्द रखा। जेल में रिहा होने पर उन्होंने गांधी जी के साथ उनके आश्रम में काम किया।

बाबा उन कुछ पुराने स्वतन्त्रता सेनानियों में से थे, जिन्होंने इस बष २३ फरवरी को पीट ब्लेयर ने राष्ट्रपति आनी जैलसह द्वारा सम्पन्न समर्पण समारोह में भाग लिया था।

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का खेल जगत् से भी काफी निकट का रिश्ता रहा। इस उम्र में भी व इतने साक्षर थे कि बुजुर्ग एक्सेलिटिक में उन्होंने देश और विदेश में बूज नाम कमाया।

घरी हान ही वे हुई विश्व बुजुर्ग एक्सेलिटस बैपियनसिप में बाबा पृथ्वीसिंह आजाद ने सी मोटर का दोह बीतकर अद्भुत मिसस कायम की।

(नवभारत टाइम्स से साभार)



स्वामी श्रद्धामन्द उपदेशमाला

आर्यसन्देश साप्ताहिक अपने सत्कल्पानुसार एक और विशेषांक अपने श्रिय पाठकों के लिए शीघ्र प्रकाशित कर रहा है। स्वामी श्रद्धामन्द प्रथम विचारक, जीवन प्रसा की आत्मव्यपान कर सकने में समर्थ महान् उपदेशक, जेलक मनीषा राष्ट्रमायक हैं। उनके मधुर अण्मात्य उपदेशों का एक नकन हम स्वामी श्रद्धामन्द बलिदान विवस की स्मृति में प्रकाशन कर रहे हैं। यह विशेषांक प्रायकी जीवन भर स्मरण रह सकेगा ऐसा हमारा विश्वास है। साप्ताहिक आर्यसन्देश के सदस्यों के लिए यह नि मुक्त होगा। प्रत पापी की प्राज ही २० रुपये बाधिक, २०० रुपये मेअकर प्राजीवन सदस्य बन जाइये और अनेक विशेषांक तथा प्रति सप्ताह चर भेजें आर्यसन्देश पत्रिका द्वारा उच्चकोटि के लक्षो का आनन्द लीजिए।

सम्पादक आर्यस देस
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

श्रवित्व।

घ्राप ता श्रान्दस्वित्वा हाकर मय का श्रान्द मोग ग्ते है। अ पक वय देव जिकसे लिख घ्राप दिन रात बेचन रहते थे जिम दश न मुधार क निए घ्रापक श्रानको वाग विषयान करना पडा उसक दशा क भी श्रारका कुछ श्रनुगान है।

घ्राप जीवन पयन्त परमपिता परमात्मा को आज्ञा का पालन करते रहे। जीवन पयन्त आपने एक भी बुरा कर्म नहीं किया। कर्मों के फलदाता धारसे बहुत हो प्रसन्न थे जिस कारण आपको मोक्ष प्राप्त हुआ और ब्रह्म मरण के चक्रक से छुट गये। हमसे तो अच्छा था आप एक दो तो बुरे कर्म धारसे ज्ञानन म कर जाते जिससे धारको फिर भारत मे जन्म लेना पडता और पुन जन्म का घ्राप्रा काम पूरा कर लेते।

घ्राप धार्यसमाजो की स्थापना की थी। धारके प्रभाव का कारण उस समय भी हमारा जन धार्यसमाजो बन चुके थे। धारपने कठिने कुरी-तियो, श्रान्यभदा श्रान्य विषयान को दूर करने का काम धार्यो को सौंपा। आप हमे ममलार मे हो छोकर मोक्ष को प्राप्त कर गये। यदि आप बंध धार रह जाते तो देश का बहुत सुखर हो जाता। हमे यह दुःखिन देखने पडते।

धारक व्यक्तित्व कृतित्व और सद्गुण मे जादू का श्रगर था। परिस्थितियाँ धार बाचावरण विपरीत होने के बावजूद भी जितना काम धार अकले कर गये परिस्थितिया धनुकूल होने पर भी हम दो करोड धार्यसमाजो जितना काम नहीं कर सके।

वैदेशी सङ्कट, स्वभाषा तथा स्वतन्त्रता का नाद सर्वप्रथम धारपने हो बजाया था। धारपने कहा था— 'धाराण राज्य चाहे कसा भी हो विदेशी राज्य से फिर भी अच्छा है भारत मे भारतीयो का राज्य ही होना चाहिए।

सन् १९२० म धारपने भारत को स्वतन्त्र कराने का काम स्वधार के रूप मे किया। ध्राप भारत को तुलन स्वतन्त्र कराना चाहते थे। ध्रापके बाद धार्यो ने भी यह सोचा कि भारत को पहले अग्रणी से मुक्त करव्या जाए। फिर धार्यसमाज का प्रचार और प्रसार करना स्वतन्त्र भारत मे सुमम हा जाएगा। अत परिस्थितिया धनुकूल हो जायंगी। तो श्रवित्व का स्वप्न भी सकार हा जाएगा अत धार्यसमाजो जी-नार ह धारपने के स्वतन्त्रता सप्राप मे रुद

महर्षि दयानन्द का मोक्ष राष्ट्र का दुर्भाग्य

—जगत्प्राम धार्य

पद। धार्योपदेशक भवनोपदेशक, हमारे गुरुकुलो, स्कूलो, कालेजो क ध्राप्यक और डाज मभी ध्राजादी के दोबाने बनकर स्वतन्त्रता सप्राप मे रुद पड। याननाए महर्षी और बसिदास गुरु, अत मे भारत स्वतन्त्र हो। जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द धार के अनेक श्रनुगारो धार्यो को मिलना चाहिये वा परन्तु ऐसा हुआ नहीं। ध्राजादी के बाद राष्ट्र के जो प्रशासक और भाग्य विज्ञाता बनते रहे। उनको धार्यसमाज के सम्बन्ध मे पता भी नहीं था कि भारत को स्वतन्त्र कराने मे अधिकतम योगदान धार्यसमाजियो का रहा है इसलिये भारत को स्वतन्त्र कराने का श्रेय धार्यसमाज को है। धार न ही धार्य नेताधो ने उनके कामो तक ध्रावाच पतुचायो। परिणाम यह हुआ कि स्वतन्त्रता के बाद धार्यसमाज को पुछा भी नहीं गया।

भारण को स्वतन्त्रता के जन्म-दाता महर्षि दयानन्द सरस्वती के मुकाबले मे राजा राममोहनराय ने भारत के लिए कोई विशेष काम नहीं किया। श्रवित्व दयानन्द का राजा राममोहन से कोई काबिला ही नहीं। फिर भी पिछा मन्त्रालय भारत सरकार मे राजा राममोहनराय के नाम पर जोश लाख रुपये का श्रनुदान कसिक देकर उनका स्मारक कायम कर रखा है धार भारत को स्वतन्त्र कराने वाले महर्षि दयानन्द का कोई स्मारक नहीं बना था धार धार न ही उनका नाम पर कोई श्रनुदान दिया गया है।

दश दयानन्द धार्यो आर्यसमाजो की हालत तो आकर देखें मुझे तो ऐसी हालत देखकर छुप छुप कर रोना पडता है।

श्रवित्व। धारका धार्यसमाजो क सस्य भाली म पचास वष जैसे पहले होते थे वैसे नहीं गे। अब तो धार्यसमाजो स्वाध्यायवादी नही है। ध्राज के धार्यसमाजो धार्यसमाज और दयानन्द को समझ भी नहीं। श्रवित्व दयानन्द के अत और धार्यसमाज के दोबाने सप्राण हो रहे हैं। श्रब नमको, फसली, धार्यसमाजो लोग धार्यसमाजो मे रुपये के जोर से धरना सिक्का चलाना चाहते हैं। मर जैसे पुराने धार्यसमाजो जिन्होने

धार से पचास साठ वर्ष पहले का धार्यसमाज का स्पर्ण गुप्त दसा है व दुको है और बेबस है।

श्रवित्व। हम पर दया करो। ध्रापका नाम हो दयानन्द है, धारपने श्राजीवन परमात्मा की आज्ञा का पालन किया है। वे सच्चिदानन्द ध्राप से प्रसन्न हैं ध्रापका कहना मानते हैं उनको हमारी धोर से कहे कि ध्रापके धर्मसुधु धार्यजन धारकी ध्रमर देन वेदो के प्रचार और प्रसार करने वाले दु को हैं धोर वेदोधारक श्रवित्व दयानन्द का प्राह्वान करते है। प्रमो! हमारी पुष्पा मुनो हमारे श्रवित्व को एक बाण पुन भारत मे जन्म द जिससे भारत मे सुधार हो।

प्रमो! हमारे पास सच्चा धोर सुच्चा सोचा है परन्तु पारकी नहीं है। ध्रापके वेदो का ज्ञान रूपो प्रसाद लेने हमारे पास नहीं धारते जहा गला सडा दुर्गुण बाला सला सोचा है वहा बाहुको की चीख गरा रहा है। उस मौदा का उपयोग करके हाति हो उठते है पर सप्तकते नहीं। प्रमो! उनको सत्कुद द।

धार्यसमाजो मे कुञ्जक लोग ऐसे भी हो गए हैं जिन्होने सुन रखा है कि सप्तम म विषय यजुत होना चाहिए। सप्तम मे तो यह धाराय होता है कि नेता लोग कोई ऐसा काम न करें जिससे देश धोर बर्ष का हानि हो, वह हो कार्यवा धार्यसमाजो ने लाना चाहते हैं। हालांकि अत्येक सप्ताहिक सस्य मे श्रवित्व के अतिम लुक्त का पाठ होता है धोर धर्म भी बोला जाता है कि "चित्त मन सब एक हो"। सप्तम का कार्यवा धार्यसमाजो म नहीं बाला चाहिए। धार्यसमाज वेदो पर धारास्ति एक विशुद्ध धार्मिक सस्था है। ऐसे लोग धार्यसमाजो मे गो गुरुधर्मो बना कर विषय को मजबूत बनाने का कुकर्म करते हैं। ऐसे धार्य लोग धार्यसमाज का कोई भी काम नहीं करते धोर न ही दूसरो को करते देते हैं। धार्यसमाज का विपत्तन करके दूर बैठ कर तुमभा देवता चाहते हैं। वे धार्यसमाज के अग्रणी हैं। एक व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता, लयन धोर उसहा के साथ धार्यसमाज का अच्छा काम करते हैं। धार्यसमाज को

अपनी मा समझकर धार्यसमाज को स्या करता है। ऐसे व्यक्ति को सद्गुण देना चाहिए, यही श्रवित्व है। परन्तु होता क्या है कि ईर्ष्या धोर देश के चीख म कसकर धार्यसमाज के अत्येक वैसे वन रहे काम मे बाधा एक विपत्तन रातकर धार्यसमाज के काम का नही चलने देने कितने वेद की बात है।

धार्यसमाजो मे कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जिन्होने धारिकारो पद पर रहते हुए भी धार्यसमाज का सन मन से निकुलन काम नहीं किया न ही उनमें धार्यत्व है परन्तु फिर भी धारिकार पद को हल्ला बनी रहते हैं। धारिकार पद लेने के निरुपुद्बन्धो बनाते है सडाई सगडा करते हैं धोर धार्यसमाज के सारवा-वर्ण सगड करते है।

जो लोग धारिकार पद को हल्ला न रखते निरान धार्यसमाज का हो चिन्तन करते रहते है धोर धार्यसमाज का काम दिन रात करते रहते है उनसे शिखा जना प्रेरणा लेनी चाहिए। धार्यसमाज का सून जिस के सिर पर स्यां हो वह धारिकार पद लिए बिना भी धार्यसमाज का काम किए बिना नहीं रुक सकते।

धार्यसमाजो मे प्राय ऐसे लोगो ने बातावरण दूषित कर रखा है। धार्यसमाजो को उन्नति नहीं होने देते। धार्य जनो को सर्वदा ऐसे व्यक्तिधो मे सावधान रहना चाहिए।

जगत्प्राम धार्य
भाजीनगर, दिल्ली-३१

धार्यसमाज पटेल नगर नई दिल्ली द्वारा वेद प्रचार तथा धारिकोत्सव

धार्यसमाज पटेल नगर द्वारा पटेल पार्क में १५ दसपाल सुधासु की मनोहर वेदका हुई। इस अवसर पर हजारो नर-नारियो ने दो घण्टा तक धार्य धर्मो पर धार्यस्ति कथन मंत्र ज्ञान का ध्यानल किया। वेद कथा के धर्मन सस्था वेला में ३०० पुष्प महिषाधो ने धारपे दोस लक्ष रुपये का तथा सद्गुण स्रवण करने का व्रत लिया। धार्यजन का मन्त्रालन भी जेसारा मनेजा मे किया। प्रात काय एक सप्ताह सद्गुर्वंदीय यज्ञ हुआ जिसके ब्रह्मा धोर नर-नारियो मे। धर्मक श्रध्दानु श्रन नारियो ने अथा पूर्वक धार्यस्ति प्रवक्तो की। धार्मिक विषय भी लोमलाम ममहादे के सभापतित्व मे धार्यसमाज सम्मेलन हुआ।

मन्त्री
धार्यसमाज

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में आर्या व दश वंश मुख्य रूप से राजनीति के क्षेत्र में दश की ओर दुर्बला की यह सर्वाभावित था एक और दश की ओर आशावाज्य व दश गुलामी की जजोरी म जकड़ा हुआ, दूसरी ओर सामाजिक क्षत्र में मनुष्य मनुष्य के मध्य भेदभाव की दारार, अज्ञाना-वकार, नारी जाति का दयनीय स्थिति, धार्मिक जघमत् म एकेश्वरवाद क स्थान पर बहुदेवतावाद निराकार परमात्मा के स्थान पर श्रुति पुजा एवं अवतारवाचन म स्थान ग्रहण कर रक्खा था, इतना हा नही बल्कि कर्मनुसार वन व्यवस्था की जगह जमायिकाकार व शाधारित ब्राह्मण मण्डली ने जगमा प्राप्त प्रवृत्त कर रक्खा था ।

ऐसे ने परम पिता परमात्मा के नियमांसार वम एक सत्य की पुन स्थापित करन हेतु ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ । घटनाएं ता घाटत होता हो रहा है मगर उन घटनाओं की ओर किता ध्वनि था महापुरुष का ही ध्यान जाता है जिसके उत्तर परमात्मा का कृपा दृष्टि होता है । ऐसी ही घटनाएं, महर्षि दयानन्द के जीवन में घटित हुई, हम इस क्षत्र में दक्षिण विस्तार म न जाकर पाठकों की शिष्ट श्रुति पुजा स संबंधित घटनाएं देते हैं । महर्षि ने अपने पिता की के कहने पर दत्त उपवास रक्खे, और उस उपवास रत्न का कोई फल प्राप्त न होकर जीवन में एक मात्र मोक्ष उपलब्ध हुआ और उसी मोक्षोत्पत्ति होने से हा आज इस क्षत्र में दश तो क्या विश्व की एक नई कान्ति या मानवता के क्षत्र में नई दिशा मिली । जिस कान्ति का प्राज मारत ने ही नही बल्कि समस्त विश्व है उसका अनुसरण किया, चाहे वह राजनीति हो या धार्मिक जगत् की या फिर वा सामाजिक क्षत्र हो, महर्षि दयानन्द ही एक ऐसे महापुरुष के जिन्होंने अपनी सूर्य मुद्रा से प्रत्यक्ष क्षत्र में विचार मयन कर समस्त राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करते हुए अपने प्रमर प्रभु सत्यार्थ-प्राप्त में अक्षरों के साम्राज्य के बिचोले में निष्ठा कि विदितियों का राज्य बाहे किन्तु ही प्रच्छा हो मगर पूर्ण सुखायक राज्य ता स्व-देसियों के राज्य होने में ही है । दुर्दिन जब घाटे में दत्त ऐसे ही मानवता की कठोर उत्पत्ति परते है, जब तक एक मत, एक शक्ति-साथ एक ही भाषा न होगी तब तक पूर्ण सुख की कल्पना करना निरर्थक है । इतना ही नही ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्राप्त के मारत मनुष्य की श्रमशक्ति से शिष्ट कि महाप्राप्त युद्ध के

महर्षि दयानन्द समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थे

लेखक-रत्नलाल आर्य निजारा प्रलवर (राज-मार्ग)

पश्चात्त इस धार्यावित दश की बड़ी शक्ति हुई है । दिनोदिन यह दश रक्षा तल का ओर आ रहा है । प्राये महर्षि लिखते हैं कि गुप्त हुए ज्ञान का पुन-निर्माण बड़ा ही दुष्कर कार्य है । जैनी, पुरानी, फिरोनी और कुरानी यह सब माली के दूत हैं । इसके पश्चात् ही इस धार्यावित दश ने शास्त्र, ज्ञानात्तर व मत-मतान्तर प्रचलित हुए हैं । इनका कोई धर्मवाच नही कर सकता । आज विज्ञान की संप्रदायवाद इन बहुदेवतावाद के मानने पर मिल रहा है और । इतना-विन राष्ट्रीयता नाम की चीज नही के बराबर है, मगर हम महर्षि दयानन्द के बताए हुए मय पर चल जसा कि उन्होंने वन व्यवस्था के बारे म उद्घोष करते हुए लिखा और वेद का मन्त्र उद्घुष्ट करते हुए कहा—

ब्राह्मणोऽयं गुणवासोऽ
बाह्वर्षीत्यं कृत ।
उत्त तदस्य यद्वैश्यः,
पश्यन्तु भूधुरीज्यवत् ॥

अर्थात्—जिस्त प्रकार शरीर में सुख अर्थात्, इसी प्रकार समाजकी शरीर में जिसके कर्म ब्राह्मण के तुल्य हो, जैसा कि स्वामी की ने निष्ठा है यज्ञ करना, करना, दान दाना और दान लेना, वैशिकी वम का प्रचा व वेद का पठना और पठना इत्यादि इसो प्रकार से । अतः प्रचार शरीर में बाह्यवत् धार्मिक है वहां राज्यवाचिता हो रही है स्वतन्त्र । तैसा ही इसी प्रकार समाजकी शरीर में वेद का स्थान है जो कि सभी क्षत्रों की आज्ञा का समान विचार कर दता है इसी प्रकार समाजकी शरीर में वेद है उस का भी यह कार्य होना चाहिए कि वह समाज के सभी वर्गों में वम का समान रूप से बट-बटा करे और प्रभाव न बा नारा करे । बोधा वर्ग जिस प्रकार शरीर में पैरों की स्थिति है कि शरीर के शरीर का शोक बोले हैं, इसी प्रकार समाज की शरीर में जिसकी पवन पठान से कुछ नही जाने अर्थात् निर्बद्ध हो लेंगे दुर्द कष्ट, मगर महर्षि ने जिस्त कि बूझ भी अपने तम कर्म से दिव समा की प्राप्त होता है और दिव क्षत्र नीच क्षत्र करे तो वह भी दत्त जो जाना है । धर्मवि

न मयाज म अस्पृश्य समक मान वाले के प्रति बहुत महान् काय किया है । महर्षि दयानन्द के पश्चात्त ही स्वामी अज्ञानन्द और महात्मा गांधी न इस कार्य की धार्य बढ़ाया । यह सारा कार्य ही ऋषि दयानन्द की धार्यावत् ही । आज अग्र रत्नके दश चिह्नो पर प्रमर धार्यावित दश का मान्य बले तो इसमें कोई शक नही कि हम अपने पिछले गौरव का पुन प्राप्त कर सकते हैं । इस वर्ष व्यवस्था पर आधारित सामाजिक व्यवस्था मगर पुन गुरुकुल प्रणाली के मा-वम से सरकार द्वारा व्यवस्थित हो तो किसी प्रकार का भेदभाव असमानता साम्प्रदायिकता छुड़ाओ, राष्ट्र की एकता और प्रवृत्तियों की जगह पर एक ही भाषा, एक ही मत कायम रहकर प्राय साम्राज्य की एव साम्राज्य को कल्पना परिलक्षित हो सकते हैं ।

धार्मिक जघम में भी हम एकेश्वरवाद पर ऋषि दयानन्द के बताए हुए मय पर चल तो सारा ससार ही मोक्ष का प्रायन्द ले सकता है और तभी ससार व पुण्य प्राप्त सम्भव है । कई क्षत्रों में तो ईश्वर तक को मान्यता नही है और जिस वेद में है यहा पर भी एक ईश्वर के स्थान पर स्वयं शिष्ट परमात्मा मौजूद है और प्रत्यक्ष जगत् मतो के प्रादुर्भाव होने से मनुष्य की बुद्धि प्रगति हो ही गई है, इसलिए महर्षि दयानन्द ने धार्मिक क्षत्र में एकेश्वरवाद पर चल देते हुए लिखा और वेद का मन्त्र उद्घुष्ट करते हुए कहा कि 'न नस्य प्रतिगतिरित मय्य नाम महर्षयः ।'

अर्थात् उस निराकार परमात्मा की कोई प्रतिमा नही है जिसका कि नाम बड़ी महानता के साथ लिया जाता है, इसी के साथ उन्नीसे शतौ पवित्र के मन्त्र का हवाला देते हुए कहा कि—

अन्वन्तम प्रविशति ये
अस्मत्प्रतिपुत्रास्त ।
ततो भूप इव ते ततो
वैशम्पूत्या ततो ।

अर्थात् ने मनुष्य अन्धकार में प्रविष्ट होते हैं तो अस्मत्प्रति अर्थात् (वह प्रकृति की उपायना करने हैं)

होने है वा प्रकृति द्वारा निर्मित मृष्टि कुछ स्थूल जडपदार्थों की जसे मि मृ यदि की उपायना करने है इसी-लिए तो महर्षि दयानन्द ने 'सिपुजा और प्रवृत्तावाद का प्रबल तक और युक्ति से खण्डन किया और एक ईश्वर का प्रचार किया । और कहा कि परमात्मा सर्वव्यापक है उसकी श्रुति या प्रतिमा नही है और जो मनुष्य परमात्मा की एक स्थान पर जनता और मानता है वह पापादि वम और कुचेष्टा किये बिना नही रह सकता बल्कि जो मनुष्य परमात्मा को सर्वव्यापक मानता और जानता है वह किसी भी जगह यहा तक कि अपने मन में भी दुर्भावना नही प्राप्ति देता मगर आजकल की ब्राह्मण मण्डली ईश्वर की श्रुति पुजा के दायरे में सीमित कर रामलोलाओं और रासलोलाओं द्वारा श्रुति पुजा और प्रवृत्तावाद को बढ़ावा दे रही है और मनुष्य मात्र को परमात्मा के सही स्वरूप का दिग्दर्शन न कराकर धर्मकाय की गहरी छाई म डकेल रही है । इस निरुद्ध प्रमर ऋषि दयानन्द न होने तो प्रायका यह धार्यावत् दश न जाने कबूत ससतलत का बा निरता । फिर भी उनका उत्त शक्तिप्रिणी धार्यसमाज देश में फैले भूतियुवा प्रवृत्तावाद बूझातल का इतना ही नही भी भुक्तिम जाग्रातलों द्वारा हमारे समाज में अस्पृश्य समको जले बाले नौगी का विदेशी वम के नाम पर प्रमत्तिरूप बर रहे हैं एव ग्रन्थ सामाजिक प्रविशाय एव राष्ट्र के विरोध स्वरूप जितने भी कार्य हैं ध्यान देकर इस देश को एक क्षत्र में पिरोने का कार्य जैसा धार्यसमाज कर रही है ग्रन्थ नही । इस प्रकार जो महर्षि दयानन्द न प्रत्यक्ष क्षत्र में जो वैचारिक कान्ति की वह सदा ही सदा प्रगुकरणीय की और रहेगी ।

चतुर्वेद पारायण यज्ञ

१६ सितम्बर में २० सितम्बर ८५ तक समय प्रातः ७.३० से १३.३० तक

ब्राह्मणोद्धार या यज्ञ
अन्वेद तथा यजुर्वेद
राशि ७.३० से ८.३० तक
मन्त्र पाठ पारायण
मानवद अक्षरवेद

स्थान श्री मनोहर विद्यालय का
निवास १०० छात्रा सभा
शक, फतेहपुरा (विष्णु)
लाल की वमभाषा के सामने)

प्रवचन प्रतिदिन दोनो समय यज्ञ
३ बार दन दन मन्द

श्री सत्यपूजन योगी धर्मवा
५० हरिप्रण सदातासकार आर्य

मन्त्री

मानव का कल्याण मानवता से बुरों की भलाई करना आदर्श परोपकार

—धामनी प्रकाश सूर एम००— श्रीनार्पक

ससार में ईश्वर का बना मे मानव को मन्वा-कष्ट कर्म की मन्वा नी गई है। अथ मन्व प्राणी केवन अपने कल्याण की सोचते हैं और दूसरे ज्ञानवर् म कीर छोनकर खाने में ना नही हिचकिचान ब्योक्ति उनमे बुद्धि का प्रभाव है। मनुष्य को इसी-लिए सर्वोच्च माना गया है कि उसमे एक विलक्षण शक्ति है जिसका नाम हमारे शास्त्रों ने बुद्धि व विवेक कहा है। वेक के कारण ही मानव धर्म-कर्म करके मानवता का कल्याण कर सकता है। यदि मानव मे यह भिन्नता नहीं तो निम्नलिखित ब्रह्मावत के अनुसार यह मानव कहलाने का अधिकार ही नहीं रहता—

आहारनिद्राव्रज अनञ्च,
सामभवेत्पु पशुभिर्निराणाम्।
धर्मो हि विषयमवका विवेचो,
धर्मेण हीना पशुभि समाना ॥

एषात आहार निद्रा भय कीर जिलास भानना मारी बात मनुष्य और पशु मे एक समान ही हुआ करती है। धर्म ही वह मूल विवेकदा है जो मनुष्य और पशु मे भेद करती है। धर्म के अभाव मे मनुष्य पशु से भी गण बीता है। जिसे मनुष्य के लिए धर्म कर्म गया है। वह कामन्व मे यही है कि मनुष्य केवल अपने लिए जीने वाला और कदल अपने कुछ स्वार्थों का ध्यान रखने वाला प्राणी नहीं है। वह एक सामाजिक प्राणी है अतः उसका प्रत्येक कार्य-व्यापार प्रत्येक कदम अपना ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज और जीवन का हित साधन करने वाला होता चाहिए यही मनुष्यता का मन्वा लक्षण है।

किन्तु धर्मविषय के साथ यह स्वीकार करना पड़गा कि धर्म का मनुष्य सहित स्वार्थों और धर्म-जीवी होता जा रहा है। वह जन्मा-वृत्त अपने स्वार्थ साधना मे तो व गति मे गमन रहा है। उसे दूसरों के दुःख ग्रन्थाय प्रयाचात्र प्रविशाय दुखने को विन्ता नहीं। यही कारण है कि धर्म नारो और धर्म और प्रभाति का वातावरण बना हुआ है, हाह-कार भय भ्रमा है। वैदिक, दैविक, भौतिक नागा धर्म जलाए सब को प्राप्ता 'धर्म प्रसात का ही लक्षण कहा जाएगा। धर्म सांने जीवन मे और मन्वा मे प्रभु-वृत्तिया वर कर गई है। वह 'स कमीटी पर पूरा नहीं—'नञ्च' कि 'बनो मनुष्य है कि जो

मनुष्य के लिए मरे।' जब तक सब के कल्याण की भावना मनुष्य मे जागृत नहीं होती तब तक जाति दश और राष्ट्र का उत्थान सम्भव नहीं होगा। इस मानव कल्याण की भावना से प्रोत-प्रोत होकर ही हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी मध्य-प्रदेश के धार्मिकवासियों मे कंसे धर्मिक व्यक्तित्वन दुःख माथाए सुनने गए। उसके पश्चात उड़ीसा के दोन बुद्धियों को पुकार सुनकर धर्मवाच व अथ से तत्त्व लोगों को पूर्ण धार्मिकवाचन देकर उनके कष्ट निवारण के लिए पूर्ण सहयोग के लिए कहा है। यह मानव योगि हो ऐसी दुर्लभ योगि है जिसमे मानव दूसरों के कष्ट हरण कर सकता है और मानवता का कल्याण करने मे समर्थ हो सकता है। धर्म मनुष्य मे प्रवृत्तार व चरित्र हतन का बीजबाला धर्मिक हुआ गया है क्योंकि यह मानवता के हित को मूल गया है। धर्म एक देश दूसरे देश को निगलना चाहता है और शक्तिवाली राष्ट्र अपनी प्रभु सत्ता से छोटे राष्ट्रों को धर्म खिला रहे हैं और महाशक्तिरों के बस पर उन्हें मयभीत कर रहे हैं। जब तक समाज की देव की, राष्ट्र की प्रवृत्ति धर्म विमुख रहेगी राष्ट्र का कल्याण यथासम्भव नहीं है। सुख व समृद्धि उसी के पाव चपटों है जो मानवता के कल्याण के लिए अग्रसर होता है।

इन नर नन को पाकर कोई न कोई सामाजिक कार्य प्रवर्धन करना चाहिए। यह पत्र भौतिक बरों तो प्रवर्धनमात्रो नखर है या धार्मिक धर्म है और उसी व्यक्तियों की धार्मिक बलवाणी व पवित्र होती है जो पाप वृत्ति से दूर रहकर सत्सर्गाने मे धर्मिक समय अवलोक करता है। धर्म के अनुसार धार्मिक करता है अपने वृत्तियों का बाह्यमुद्रा न करके अन्त-मूल करता है उसका धर्म मानव मात्र का कल्याण हो होता है और परोपकार को वह अपनी पीडा समझता है और दूसरों के पीडा मे दुःख को भी महान समझकर उसके निवारण का पूर्ण प्रयास करता हुआ सच्चे पिता ईश्वर की पीडा का अधिकारी हो जाता है। जन्म-मरण के चक्कर से दूर होकर वह अमरता ही जाता है।

(अथ पृष्ठ १२ पर)

टेक

—पृथ्वीसिंह बेखड धार्य भजनीक

नुरो की भलाई करना सबसे अच्छा काम है। छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥ छडाकर नुराई नुरा धन्ये काम करने लगे शायद उसकी देव उसकी भी सुचरने लगे। बताओ नो इससे अच्छा और क्या प्रोग्राम है छडा दे नुराई उसकी जिस से वह बदनम है ॥ १॥ ॥ कोई नुरा होता नही बुरी हो नुराइया लुटता था राजाना जो लोग और लुगाइया। जिसका धर्म विद्ध हृदि धार्मिक नाम है छडा दे नुराई उसकी जिस से वह बदनम है ॥ १॥ ॥ विधा देकर दूर करे प्रजानी की प्रजानता, धर्म विधा देने पर भी किसी की मानता। फिर तो उस पापी के लिए नाम है धनधाम है, छडा दे नुराई उसकी जिस से वह बदनम है ॥ १॥ ॥ मुसलमान ने भी मुसलमान को बरबाद किया, भारत ने कुर्बानी करके बलना को धाराद किया। प्रूथी को देखा धर्म की खतरे मे इस्लाम है, छडा दे नुराई उसकी जिस से वह बदनम है ॥ १॥ ॥ बहुराष्ट्रवाद जफर का बेटा एक रोक मधुर मया, वजानन्द के पुर कपडे पाच गिल्ली देकर कहा। लुदा के फरिस्ते तुम्हे बाह का मन्वा है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥ १॥ ॥ स्वामी दयानन्द ने कहा था तहसीलवार को, छोड दो गारा सुनो वेद के प्रचार को। धर्मोन्मत्त हो गए पर वेदार्थों का गुनाम है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥ १॥ ॥ पिलाया था पूष जहर गेर करके किसी ने, पाँच सौ रुपये दे करके कहा था यह—'हृदि न। दयानन्द की तरफ से यह धार्मिको लाना है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥ १॥ ॥ ईश्वर की प्रसली शक्ति मत्प्राय-सकाश मे, यम नाम महबल धार्यदे से समुल्लास म। ज्ञान से प्रच्छा जाप धर्मो नाम न्याय नाम है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥ १॥ ॥ एक डेड मित्र बाकी रह गया था फासी का, रिता जन्म फिकरा था वह अन्त ईसा मसी का। दू गुड ऐन्थ कोरेड धार्मिको कलाम है ॥ १॥ ॥ छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥ १॥ ॥ कृष्ण जैसी शक्ति रहे गारा ली मर्यादा रहे, पृथ्वीसिंह बेखड कहै सासन प्रजावाह है। जिसने भेट धान्य जिसका शिकोहुर धाम है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥ १॥ ॥

टिप्पणी—धर्मोन्मत्त के सुविख्यात धार्य भजन उपदेशक श्री बाबु कवि चौधरी पृथ्वीसिंह बेखड ने धन स्वर्णवास से कुछ पहले, दुर्बनी के सवार तथा उनके कोष निवारणार्थ १० पद्याओं का यह गीत बनाया था। जैसे माधुर्मी के मत्स्य से रत्नाकर डाक कवि बाल्मीकि हृदि बना था। भारत ने वगैराने स्वतंत्र कराया। प्रभु बुजानन्द की राजनेतिक मुक्त मधुरा पचायत लोकशासन जन्माष्टमी स० १९१३ वि० मे दिल्ली नरेश बहादुर शाह का नेत्र फिरोजशाह ने गुरु को पाच गिल्ली भेटकर सम्मान किया तथा अपने पिता का भा सम्मान देवदिया था। वह शाहजादा प्रथम हार के पश्चात मक्का पदवीन जाकर सन १८९६ ई० मे गुजरा था। महर्षि दयानन्द के उपदेश से अयोध्या धर्मोन्मत्त बनो। विषदाता जलन्याय की महर्षि ने पाच सौ रुपये दिए बहु पश्चाताप पूर्वक दुर्गति सहित मरा। कहा है ईसा मसीह ने फासी के मयम मो वटोपकार की बात कही थी, ईश्वर शक्ति नाम धर्मोन्मत्त स्वर्णवास सर्वोच्च उपासना है, दुराष्ट्रों को हटाने के लिए रामकृष्ण का दण्ड चाहिए। चौधरी पृथ्वीसिंह का धाम शिकोहुर है।

शेषक निहालसिंह धार्य
पता उज्जैन सेठी रोहतक

पुस्तक समीक्षा—

‘प्रभुदर्शन’

लेखक श्री यशपाल जी ‘धार्मिक’
प्रकाशक महिला धार्मिकमाग, र.‘शान रोड, मुरादाबाद। मूल्य केवल प्रचार

‘प्रभुदर्शन’ की बात प्रायः सभी मत मतांतर करते हैं और इस सब में धार्मिक जितना भ्रम व्याप्त है शायद ही धर्म्य किसी विषय में हो। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने प्रभुदर्शन का वैदिक दृष्टिकोण धर्म्यतः सरस और सरल शब्दों में सुन्दर तर्क और शारदीय प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया है।

श्री यशपाल जी धार्मिक पुस्तकें वर्षों से अपने आपको तथा लघु पुस्तकों के माध्यम से इस वैदिक मान्यता की निरन्तर सेवा कर रहे हैं। हमारा निश्चय है कि धार्मिकता में इस प्रकार के प्रयत्न प्रचार की न केवल मुराहना होगी और अधिक से अधिक पुस्तक विनिरण द्वारा प्रचार प्रसार

होगा अर्थात् साहित्य प्रकाशन की सेवा हेतु प्रयत्न धार्मिकमाग के प्रकाशन विभाग की सहायता करने।

श्री ‘धार्मिक’ स्वाध्यायीय और धार्मिकमाग हरपला कालीनी मुरादाबाद के सन्धि सदस्य हैं। उनकी बीस के लगभग इस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

मैं उन्हें और धार्मिकमाग के महिला विभाग की जिन्होंने उनको प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन कराया है बधाई देता हूँ।

प्रमचन्द्र श्रीधर एम ए
३६/१ रणजीतसिंह मार्ग
आवर्गमगर दिल्ली-११००३३

देवदयानन्द बता गये

लखन—स्वर्गाय १० देवैन्द्र जी तुफान
स्वान पी० सूरनपुर बि० गाजियाबाद (२०पी०)

भावन देख हमारा याग बन जाए स्वर्ग नग्निया।
देव दयानन्द बना गए हमें वैदिक वर्म डगरिया ॥

एक जल्ला का पूजन हो ना पूज दर दीवारी की।
मन्थ्या हुवन कर नर-नारी रख गुड बिचारी की।
धर्म के घट-घट परे हुए हो कौड लाख कुटरिया।

सभा सचिव मन्त्री सदस्य में अनु बंद के जाता हो।
गज्य की गद बनाकर खेल राम भरण से आता हो।
मीठा जैसी माता हो जो तज दे महल अटरिया ॥

शिल्प शस्त्र के पंडित हो और सुखी ममी किसान हो।
कान पकड़ जाए शेरों के बच्चे भरत ममान हो।
गुग के नृत्य नगर में उद्वल बहल गद्य बळिया।

घाई है शुभ घड़ी दस में फिर न बन निमाणा की।
गुड भावना बनो रह प्रम देवैन्द्र तुफान की
चाह कोई उछाने मोना चादी बीच बजरिया ॥

गाजर के गुण

ले० स्वामी म्यकपानन्द सरस्वती

गांव शहर बिकते हैं

यज्ञ भन हो जाता है
जब समिधा और द्राघुति में
हम्य तो बड़ी रहता है
मन दृष्टि हो जाता है
और जब—

इदम मन का स्थान
सह ग्रहन् लेता है
तब अन्तरित होता है जयचन्द
और सोमनाथ का मन्थ शिवालय
रह-रह होकर बिखर जाता है
गौरी के राक्षसी कदमों में।

गम का बन गमन
दयानन्द का वैराग्य
महावीर का अपरिग्रह
गुड का राज्य त्याग
मान ऐतिहासिक घटनाएँ नहो यो
इमकी पुष्टभूमि में था
प्रमाण की समष्टिगत
गुड जीवन के सत्त्व का पाठ
हम्य सद्ग्राह्यकरुण की भगिनी
रहती की अपरार्थ
और वैशाली की आश्रपाली
इष्टीय जीवन, बन छवि लेबर भी
राजित हो रह गई थी

क्यों वृषमा रहा गांधी मान नगोटी में
हैंसे समक पाये आधुनिकवासी उसकी
माया
हॉकड, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु
हैंसे बन गए उसके अनुगामी

निरन्तर उपास सुद्धि सत्याग्रह
इन सब का सुदम क्या था ?

दो पैसे सेर के नमक हेतु
दाखी योगा, लाठी और
चौसठ हजार व्यक्तियों का
कारावास भर देना
हैंस कर सहना सभी याननाएँ

क्या केवल घटतीस वर्षों में
राष्ट्र का चरित्र बदल जाता है
यज्ञ बड़ी रहता है
मन कुलुषित हो जाता है
नग जाती है मेवादारों की
नन्ही चक्रव्यूह पक्षिपदा
और राजनयिक भवनों में
सेवादा छुटते हैं
सेवक की प्रज्ञा पर
हज़र की मर्जी पर
गांधी बिकते हैं।
सेवाधिकारी बन जाते हैं
लारकिस बन्धु, और व्यापारी-
मणिकाना कुपर नारायण
सेवक हनुमान् की गरिमा भूलकर
डुगने लगते हैं स्वामी के रहस्य
अर्थात् गुड
अपनी सुदृढा पर उतर आते हैं
बलबे लगते हैं सविधान के पुष्ट
देख जायदाद का रूप ले लेता है

वन्दे लवते हैं उसके पू गाग
यज्ञ भन हो जाता है
और बिखर जाते हैं और और
राखस हो राखस!

—नरेश मुख ‘नौरव’

आजकल गाजर की फलन बुक
हो गई है और बाजार में सभी प्रकार
की गाजर उपलब्ध है। गाजर कई
रंगों में होती है जैसे कि काली
नारंगी बैंगनी और नाल रंग की
गाजर। इन सभी प्रकार की गाजरों
में अनेकों प्रकार के गुण होते हैं।
किन्तु विशेष लाभ की दृष्टि से देशी
गाजर अधिक लाभदायक होती है।

कहावत है कि—

गाजर, बबला घमाला
आमला मन लाय।
क्षपा बडे कम्बो मिटे,
सुन साफ हो जाब ॥

गाजर के उपयोग करने व खाने
का ढंग इस प्रकार—गाजर कच्ची
खाने से तथा चबा-बना कर खाने से
पेट साफ रहता है। गाजर में १२
किस्म के लवण पाये जाते हैं। इसमें
सल्फर, सोडियम क्लोरीन, मैग्ने-
शियम, कैल्शियम सिलिकन पो-
शियम इत्यादि सभी तत्व मौजूद है।
जो कि कच्ची दूर करने में सहयोगी
है।

गाजर स्वास्थ्य वर्धक और गुण-
कारी तत्वों का मण्डार है। गाजर
के रस में उपरोक्त सभी तत्व पाये
जाते हैं जो सामकरी व पुष्टिकारक
होते हैं। गाजर का हलुवा बना कर

भी खाया जाता है। गाजर की छील
कर बीच की नली को निकाल देना
चाहिए। फिर पानी में धोकर पीया
कस म कस कर दूध में पकाना चाहिए
गंगा होने पर मोठा मिला कर
हलुवा तैयार होता है। कुछ लोग
माया (सोडा) भी मिलाते हैं जिससे
मायाम पिस्ता काह इलायची
मिलाकर तयार करने हैं जिसके
सेवन करने में सरीर पुष्ट होता है।

गाजर की सब्जी बना कर खाने
से पेट साफ रहता है नया पेट की
बीमारी खत्म होती है। रक्त शुद्ध
होता है। इसलिए गाजर का उपयोग
प्रशस्त करना चाहिए। गाजर की
बाग्य में भून कर खाने में बहुत गुण
बढ़ जाते हैं किन्तु ठण्डा करके खाना
चाहिए नहीं जो पानी की जड़ खराब
हो जाती है।

गाजर का मुरब्बा भी बनाया
जाता है जो कि कच्ची को खत्म कर
के भुल बढाता है। गाजर के रस में
पोडा सा गुड मिलाकर पोने से भून
बिकार दूर होता है। साथ ही चम
रोग ठोक होते हैं। सन्तो मिसली है।
आजकल सोसमें है प्रयोग कर लाभ
उठाया।



समाचार सन्देश

**आगामी १५ फरवरी १९८६ को दिल्ली में
डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर
विशाल गोभा यात्रा कार्यक्रम
ममी आर्यसमाजों व आर्यजनों में
इसमें भाग लेने की अपील**

दिल्ली, ४ दिसम्बर

नागदेशिक धर्म्य प्रतिनामि मन्त्र के प्रधान श्री रामगोपाल दासदासे ने आगामी १५ फरवरी १९८६ को डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर निकलन वाले विशाल गोभा यात्रा में शामिल होन के लिए सभी आर्य समाजों व कार्यकर्ताओं को विशेषकर दिल्ली की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि इस दिन सभी लोग धर्म्य कार्यक्रमों को छोड़कर इस गोभा यात्रा में बड़ी संख्या में भाग लें।

यह गोभा यात्रा प्रातः ११ बजे

**विस्थापितों और पुसपेटियों में भेद किया जाए
हिन्दू रक्षा समिति की अथ्यन्ता पब्लिका रोकेश्वर नन्दी
का वक्तव्य**

धर्म्य समझौते के धर्मगुरु बगलादेश में धर्म्य में आए लोगों को १० साल के लिए मरदान से बर्षित करने का नियम बिदाय का विषय बन गया है। इसके कारण बगलादेश से आए हिन्दू विस्थापितों के मन में आक्रोश उत्पन्न रहा है। उनका कहना है कि भारत विभाजन के समय उन की हल्का के बिन्दु उन्हें बगलादेश तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में रहने के लिए बिदाय किया गया था। उन्होंने कभी पाकिस्तान बनाने का न तो समर्थन किया था और न ही उन्होंने मातृभूमि भारत से अपना सम्बन्ध विच्छेद किया था। इसलिए वे पुसपेटियों नहीं बल्कि विस्थापित हैं और मातृभूमि में मरदान बापस लौटना उनका अधिकार है। बगला देश से आये हिन्दुओं के इस कथन में कल्ल है। वे पुसपेटिये नहीं बल्कि विस्थापित हैं इनके विषयों पर धर्म्य में भूमि हड़पने और राजस्विक स्वाधीन की दुष्टियल रक्षक इसे बगलादेश में मिलाने की योजना मन में रखने वाले मुस्लिम तत्त्व पुसपेटिये हैं। पुसपेटिया और शरणार्थियों में अन्तर समझना चाहिए।

लालकिला मदन में प्रारम्भ हुआ और बाद में लोक धण्डावर नई सड़क चारदो बाजार होजकाजी धर्म्यरी गेट, मिण्टो राव, कनाट जेस रीगल बिल्डिंग, पासिमासेट स्ट्रीट सरदार पटेल चौक गोस बाकलाना, बिबला मन्दिर से होती हुई साय ५ बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में समाप्त होगी।

इस अवसर पर धर्म्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा,

दिल्ली

भारत सरकार ने पहले जो विषयों पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुओं को विस्थापित माना था। अब जो लका से भागकर आने वाले पंडित तमिल हिन्दुओं की भी सड़क विस्थापित हो जानती है और उन्हें पुरा सखण दे रही है। फिर इन बगलादेश के विस्थापितों की हिन्दुओं के साथ ही सीतेलापन क्यों? बगलादेश से निहित स्वार्थों के कारण वृत्ते मुस्लिम पुसपेटियों के स्तर पर रखने के पीछे केवल मोट की राजनीति की भावसिका काम कर रही है। हवावा सभी राहुवादी नागरिकों और सस्थाओं से अनुदोष है कि वे बगला देश से आए, इन हिन्दू विस्थापितों के हितों के लिए आवाज उठाए। इनका नागरिकार दूध कस्ता इनके साथ और धन्यवाद है।

महदीय

शार्वस्याक संधी

**महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा, जिला राजकोट
(सौराष्ट्र) भारत सरकार द्वारा अकस्मिक प्रस्तुत क्षेत्र घोषित**

धर्म्य जनता की सूचनाय निवेदन है कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टंकारा, बाज धकाक के कराल गाँवों में जा रहा है। भारत सरकार ने टंकारा (जिला-राजकोट) सहित समस्त सौराष्ट्र की धकाकप्रस्त घोषित कर दिया है।

टंकारा में दन समय उपदेशक विद्यालय गोधाला प्रादि कार्य महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा चलाये जा रहे हैं। इसके कारण टंकारा ट्रस्ट की काफ़ी धार्मिक सकट का सामना करना पड़ रहा है। बहा पर पानी बिकुलन सूख गया है, जिस से काफ़ी सकट उत्पन्न हो गया है।

येसे समस्त धर्म्यसमाजों स्त्री-

वेद प्रचार गोष्ठी

धर्म्य १८-११-१९८५ परीष-कार्मिक सभा के सस्थाबन्धान में ज्वलिते के अवसर पर मध्याह्न सत्र में चर्चा की गई। रामस्वरूप खोसब गोष्ठी में कदा कि (१) ज्वलित वेद धर्म्य उसी धैर्य में पुरा हो (२) सब धार्मिकों में इसका धनुवाद हो (३) धर्म्यों का निरा करण हो। (४) एक निश्चित रूप रेखा धनुवाद विमल देवों के सुन-वासियों में वैदिक धर्म के उपदेश की व्यवस्था हो। इन पुरी पर गोभी विचार करने के लिए सध्वप्रतिष्ठ वैज्ञानिक विद्या वेत्ता स्वामी सत्य प्रकाश जी की धर्म्यवता में गोष्ठी हुई।

कमल स्वामी धोमानन्द जी महाराज (प्रधान, परीषकार्मिक सभा) सध्वप्रिय धार्मिक (हिंसा) प० धर्म्यधर्म्य जी (महोपा), डा० मजनीलाल जी मारवणी (बनोय), धो० मेरासह जी (नई दिल्ली), वैद्य प० ब्रह्मानन्द जी (धर्म्यमेर), पु० खोसबजी (प्राचार्य-कमल गुरुकुल बिष्टोरी), प० धर्म्यनारायण जी (ज्य-वर) बजरंग लाल जी (होडियागला), बर्बोरी जी (खालोरी), बधीलाल जी (देवस), सोहनलाल शरदा जी (शाहपुरा नीलावाडा) वृत्त सत्यम सिद्ध जी, धोमरी मिर्चिलेय (महिषा धर्म्यसमाज धर्म्यमेर), मजनीलाल देवराय जी, धोमलाल धर्म्यजी (विषयक), प्रदीप (धार्मिक), वैद्य धर्म्यसिंह जी कोठारी ने विचार व्यक्त किये। धार्मिक पाठ किरीडीसक जी पुण्य में किम्बा।

सब धर्म्यों में से सध्व प० व सत्य धामा में धर्म्यों बात कही। उप-

धर्म्यसमाजों एवं धर्म्य धर्म्य सस्थाओं से तथा सभी धर्म्यजनों से भी धार्मिक है कि इस सकट की वही में हमारी धार्मिक सहायता करने की कृपा कर इसके लिए हम धर्म्य के धार्मिक रहेंगे। यह सहायता की सति आप बेकाइफ धर्म्य मनीषाईर द्वारा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा ३६३६५० (सौराष्ट्र) गुजरात धर्म्य इसके उप कार्यालय महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, धर्म्यसमाज (धर्म्यरकली), मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-१ के पते पर बिजबा सकते हैं।

रामनाथ सहगल
मन्त्री

रोमन पार्सी विषयों के बारे में क्या कमिया रही है? क्यों रही है? कभी कभी दूर हो सकती है? इन सब पर चर्चा की गई। कस्ताधर्म में धर्म्य के कार्य की विद्या की ओर सकेत किए। धोलाधर्म का यह धर्म्य 'हम कि दन प्रचार की गोष्ठी बाज धार हो। उपरोक्त धर्म्य विषयों पर धर्म्य जलन से कई कई दिन 'गोष्ठी' धर्म्य धर्म्य रहें। इन धर्म्यों पर गोष्ठी हुए धर्म्य, हर सत्र में हो, भारत के धर्म्य धर्म्य देवों में भी हो। धर्म्य गोष्ठी से ही सत्योप न कर दिया जाये बरन धर्म्य प्रचार के धर्म्य-धर्म्य कार्य 'वर्षित गति से चल। वे जपेसाए धर्म्यधर्म्य की रही। विषयान है इन धर्म्यपूजक धर्म्य के सध्वन में धर्म्यसमाज सध्वन का सध्वन सध्वन परीषकार्मिक सभा को मिलन रहेगा।

रामस्वरूप
गोष्ठी सध्वनक

धार्मिक विवरण

प्रचार पर धर्म्य भी धर्म्य धर्म्यसमाज में कराए।

गोहत्या, दहेज, महासमुद्रा के बिन्दु तथा धर्म्यसमाज क शाहो की धर्म्य कीर्तना स्वाइदम द्वारा दिल्लीई बाती है। धोलासे गीत भी होते हैं। बिजबी का धर्म्य धर्म्य धर्म्य हो।

धार्मानन्द मजनीक
धर्म्य धर्म्य

१/९३५९ धर्म्यधर्म्य, मनी न० २
वेस्ट रोहतास नगर
बाहदुरा, दिल्ली-३२

ग्रेटर कैलाश १ में श्राव्य युवा सम्मेलन सम्पन्न

श्राव्यसमाज ग्रेटर कैलाश १ के वार्षिकोत्सव पर आयु युवा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए आ प्रथम सहभाग ने सामाजिक संस्थाओं से भाग की कि वे युवकों की उचित प्रतिनिधित्व व। युवा समूह के उपस्थिति में कुछ श्राव्य संस्थाएं हा काय कर्मों में युवाओं का स्थान दे पाई है। श्राव्यसमाज के प्रारम्भिक इतिहास में हम देखते हैं कि युवा वय की प्रचार शक्ती व उम्र व हंस हा श्राव्यसमाज ने बहुमुखी उत्पत्ति की।

प्रसिद्ध धार्मिक श्री बमवार एम

श्राव्य सत्याग्रह हैदराबाद पेशन का मामला

दिल्ली २ दिसम्बर।

जिन लोगों ने हैदराबाद श्राव्य सत्याग्रह १९३३-३६ में [सर्वोदय] संस्था द्वारा संचालित निजाम हैदराबाद के विरुद्ध श्राव्योत्पत्ति व मांग लिखा था और [अन्तर्] जेल का सजा हुई था। उन सब सत्याग्रहियों से निवेदन है कि अपनी प्राप्ति व प्रथम नाम पिता के नाम स्थान बहाल से सत्याग्रह के लिए एए वे आर का बहाल निरन्तर हुए [तिथि] जेल का नाम बहाल प्रारम्भ में यंत्र एए और बहाल से छूट तथा छूटने की [तिथि] के

ए ने श्राव्यसमाजों से अपील की कि वे युवकों को भागविन करने के लिए मॉन्ट्रो में प्रकाश मायामशास्त्र ए जको कराट्टे के ड और योगासन कलाओं का प्रायोजन कर।

युवा वयका श्री नरेन्द्र धर्मस्थी ने कहा कि ई श्री संस्था युवकों के धाने में ही गतिशील होती है। युवाओं को ब्यसनों से मुक्ति दिला कर राष्ट्र की सेवा में उड़े श्राव्य समाज ही लया सक्ता है।

चन्द्र मोहन श्राव्य

विवरण सहित अधिकतम २० दिसम्बर १९८४ तक साप्ताहिक श्राव्य प्रतिनाशक श्राव्य महर्षि दयानन्द प्रबन्ध रामलीला स्थान नहीं दिल्ली २ के पते पर भिजवा देवे ताकि उनका मामला केन्द्रीय सरकार के सामने पेशन हेतु स्वीकृत करया जा सके। इसके उपरान्त यदि कोई व्यक्ति छुट गया तो साप्ताहिक [समा] का उम्मेद नामसे में किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए उत्तरदायी नहीं होगी।

श्राव्यसमाज शासनाले

प्रधान साप्ताहिक समा दिल्ली

मातृ मन्दिर कन्या गुच्छल की छात्राओं के वेदमन्त्र की धूम

२६ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक मातृ मन्दिर की छात्राओं ने पलायन विहार के छात्रागत विद्यामण्डल में श्राव्योत्पत्ति विद्यालय यजुर्वेद पारायण यज्ञ में श्रद्धालु का काय सफलता युक्त सम्पन्न किया। बालिकाओं के मन्त्र वेद मन्त्रोच्चारण से दूर २ के अनेक धार्मा का साक्षी की संस्था में जानता [अभ्युत्पत्ति] श्रोत्र उन्होंने बालिकाओं को स्नेह से संकाह किया बन्धन, तथा १९०१ २० की बली श्रुति की।

बालिकाओं के मावयुग प्रणय

लुधियाना में विशाल पारिवारिक सत्संग

श्राव्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के सहयोग से श्राव्य युवक समा की श्रोत्र से रविवार ३ दिसम्बर १९७५ को साय ३ १५ बजे से ६ बजे तक श्री राम गुच्छल की याद के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ग्रेटर कुमारा श्री शास्त्रा ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा उनका मनोहर प्रवचन हुआ। वेद प्रचार, अन्नम व कला लुधियाना की श्रोत्र से श्री किरपा राम आ श्राव्य तथा श्री यशपाल की श्राव्य से अन्नम

प्रद कायकर्मो साक्षा का मोल, दहेज का वापस, हिन्दी वेदपाठ प्रविशालम सत्याग्र प्रकाशस्थ बन्धन (संस्कृत) प्रादि कायकर्मो का वृत्त रही।

धार्मार्थों डा० गुप्ताजी जी के प्रवचन में जनता धार्मिक प्रभावित रही। श्राव्यो जनता के स्नेह से प्रभावित होकर धार्मार्थों आ से मन्त्रिय में धार्मिक सहयोग देवे तथा बहा कन्या गुच्छल कोना का धार्मिक दिया। धार्मार्थों जी ने उन्हे क्षमि दयानन्द प्रवर्षित बहिक पत्र मन्त्रपत्र की प्रवर्षा दा।

का कायकर्म प्रस्तुत किया। इस सारे समारोह की अध्यक्षता श्री नवनील नाल की श्रोत्रा प्रधान श्राव्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, ने की। बहुत बड़ी संख्या में सत्संग प्रमियों से इस सत्संग में, भाव मेकर वय लय उठाया।

श्रीधर नाथ धार

धर्मस्थ

वेद प्रचार विद्याम

श्राव्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार

लुधियाना

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

श्राव्यसमाज बरहई दारापुर रतन पाक रामगढ़ ए एएस श्राई कालोनी नई दिल्ली १९०१५५ से ५ नवम्बर से १० नवम्बर १९८५ तक वेदप्रचार सप्ताह का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें यज्ञ के बह्ना डा० बम देव शर्मा तथा सतदेव जी रेडियो, कला कार के प्रतिनिध प्रजन और श्राव्य हर्षिदेव जी तत्केशरी द्वारा कथा के माध्यम से वेद भाग पर चलने का सहपदेश हुआ। पुष्पहृति के दिन श्री० मारत मित्र जी शास्त्रां बुधो राम जी ने यज्ञ एवं वेद के सम्पन्न में सहपदेश दिया। इसी अवसर पर श्री रामकुमार जी यागो सदस्य दिल्ली नगर निगम न श्री० कुनोचन्द

पुस्तकालय एवं वचनालय का प्रयत्न कर कमलों से उदघाटन किया और ३१०० रुपये प्रदान कर सभी लोगों को वेद उपनिषद् गायत्री प्रादि यमों के अध्ययन को प्रवर्षा दी। स्व० श्री० कुनोच दे जी का पुत्री श्रीमती शान्ति सन्तवास ने ५००/ रुपये तथा धार्मिक पुस्तक प्रदान की। श्री प्रगताराम जी भूतपुत्र की संस्मरण न सभी का बन्धनदार और समय समय पर श्रद्धे-श्रद्धे श्रोत्रों के श्राव्य यत्न के लिए धान का निमन्त्रण दिया।

कृष्ण कुमार छाबडा

अन्त्री

श्राव्यसमाज बरहई दारापुर नई दिल्ली १९०१५

श्राव्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली में

योग प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह सम्पन्न

माननीय श्री स्वामी श्रवरोषा मन्द की महाराज के निदेशन में २० ११ १९८५ से चलाये जा रहे योग प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह निम्न कार्यक्रमानुसार श्राव्योत्पत्ति किया गया है—

रविवार दिनांक ११ १९ १९८५

प्रातः ५ ३० बजे यज्ञ

६ ०० बजे योगाभ्यास

७ ३० बजे योग प्रशिक्षण

शिविर समापन

समारोह

धर्मस्थला स्वामी श्रवरोषा मन्द की वचना बह्नाचारी शिवेन्द्र व साधो

सर्वप्रिय दानवीर प्रधान श्री सोहनलाल जी चुली के आकस्मिक निधन पर भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

श्राव्यसमाज किशनगज (मिल एरिया) दिल्ली के अध्यक्ष प्रधान श्री सोहनलाल जी चुली निनका आकात्मिक निधन ११ १९८५ को हुआ और किया रतन कुम्हार दिनांक २० ११ ८५ को हुई उसमें श्राव्यसमाज किशनगज (मिल एरिया) की श्रोत्र से निम्नलिखित श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत की गई।

अब य श्री सोहनलाल जी चुली श्राव्यसमाज किशनगज (मिल एरिया) दिल्ली के अन्तर् वे शोके इत महा पुत्रों से वे एक महान पुत्र वे जो कि धाने चलकर वे एक श्राव्यसमाज के कर्म कार्यगत के रूप में उमरे और यमों तक इस श्राव्यसमाज के प्रधान पर जो सुशोभित करते रहे। उनके अन्धक पश्चिम त्याग नि-स्वाय सेवा तथा उनकी निष्ठावान कुशल श्राव्यों की हा मह अय है कि इस श्राव्य में शैविक बर्ष के प्रवा-जर्ष इस श्राव्यसमाज का अपना एक

डा० रज्जुवीर वेदालकार डा० बम

पान।

प्रातः ८ ४५ बजे शान्तिपाठ व

प्रसाद वितरण

श्राव्य सत्यप्रकाश सावर धाम

जित ही।

निवेदक

श्रीमन्मन्त्र मारडाक मन्त्रोत्पत्ति श्रोत्र श्राव्य हर्षिराम गुप्त नगदील चन्द्र गुप्ता देवराज कलरा कमला तल गाढा डा० आर०० मोहन मोला चकर श्राव्य वेदप्रकाश महता नानक चन्द गुप्ता।

महत्त्वपूर्ण ऊँचा स्थान है। इन श्राव्यों के साथ विद्यमान धार्मिक के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि धार्मिक की गई।

इसके अतिरिक्त इस श्राव्यसमाज के सत्संग प्रधान डा० एस एस कावरा एए [कवि] वर जो श्री श्रोत्रो प्रधान बाजार कनेटी किशन गज दिल्ली ६ के अतिरिक्त श्राव्य समाज के एक प्रमुख नेता शक्ति रामपाल की मोक्षप्रकाश श्राव्यो श्रीमती कोशला शक्ति भूतपुत्र कान्सलर श्री बलवीर मित्र श्राव्य श्रोत्र की कामेश्वर शास्त्री ने श्री श्राव्यो श्रद्धाञ्जलि दिवस का श्राव्य की शान्ति एवं सत्संग के लिए सट। इस शोक तथा में १५०० से श्री शक्ति बह्ना और श्राई सत्संग वे।

[वे जी पाठक]

मन्त्री

श्राव्यसमाज किशन गज (मिल एरिया) दिल्ली-६

दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

दंत मंजन
लोगा युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

उत्तम का ट्यूबर



उब नये पैकिंग
में उपलब्ध

विन्दी मूल्य

महाशिया वी हट्टी (प्रा०) लि०

9 44 इण्डस्ट्रियल एरिया बीकानेर जयपुर जयपुर 315
फोन 539608 531987 537341



मन्मोही जी मजूमदार



गुरु जी मजूमदार



ठाकुर जी पाणी



दात का दर्द

बाबा पृथ्वीसिंह

(पृष्ठ ६ का पृष्ठ)

कार व महान समाज सुधारक
है बताया। उ होने कहा कि पञ्जाब के
लिए उनकी नवाबों को विधायक
पिछड़ वर्गों के लिए किए गए कों
को लम्बे समय तक याद किया
जाएगा। उनका मृत्यु म अग्रणीय
वर्तित हुई है।

पञ्जाब और हरियाणा के मुख्य
मन्त्रियों और धनक नवाबों ने भी
बाबा आजाद का धर्मोपदेश मान्यमान
प्रदान किया है।

सावदेशिक धर्म प्रतिनिधि सभा
के प्रधान श्री रामगोपाल खानवाले
ने कहा—श्री आचार्य पृथ्वीसिंह
आजाद स्वतंत्रता सभा के प्रथम
योग्य महाविद्वान् के सच्चे धर्म
यात्री महात्मा गांधी के शिक्षा निदेशन
के धर्मक धारोपना में बड़ बड़ कर
में आगे आने वाले राष्ट्र सेवक थे।

राज्या के

महात्मा गांधी ने कहा निश्चय ही
उन्होंने हरिजनो के बीच रहकर उन
की शिक्षा सहयोग कर सही रास्ता
दिखाया और उन्हें धर्म परिवर्तन से
बचाया। प० मदनमोहन मालवीय ने
उन्हें काशी बुलाकर सम्मानित किया
और आचार्य शब्द से सम्बोधित

किया श्री आचार्य का मानसिक
समाज के उपप्रधान रहे। गुरुकुल
कागड़ी के कुलाधिपति और पञ्जाब
प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान रहे हैं।
जीवन के अन्तिम काल में उनकी
इच्छा सत्याग्रहकाश का गुरुमुखी से
अनुवाद करने की था जो पूर्ण नहीं
हो पाई। उनके जाने में धर्म्य जगत
को गहरा खालि पड़ा है।

सावदेशिक धर्म प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली दिल्ली आर्य प्रतिनिधि
सभा धर्म के द्वारा सभा दिल्ली
धर्मसमाज दोबारा हाल गुरुकुल
कागड़ी हरिद्वार आदि अनेक संस्थाओं
में शोक सवेदना के म दश मिले हैं।

मानव का कल्याण

(पृष्ठ ६ का पृष्ठ)

ऐसे मनुष्य हमेशा अपने सामने इस
उर्विन का अनुसरण करते हैं। होरा
जनम प्रभाव है तू इसे सच्चा प्यारे
और वह इससे सदैव यही प्राप्ति
करता हुआ इस ससार में विचरता
करता है।

सब का भला कभी भगवान।
सबका सब विधि हो कायाण ॥



उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

बाबा कार्यालय—६३, गली राजा कैलाशपुर,
बाबाजी बाबा, दिल्ली-६ फोन: २६१८३८

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी
हरिद्वार

विन्दी मूल्य प्रतिनिधि सभा १५, सुभाष रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१३० के लिए डा० बसपराज द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक वेद, पृष्ठ १० १५, वैदिकवेद वेदिका-११ में मुद्रित। पृष्ठ ०० ३० (१०) ३२६

